क़ुर्आन-मजीद

— का —

हिन्दी अनुवाद

-: प्रकाशक :-

नज़ारत दावत-व-तब्लीग़

क़ादियान

क़ुर्आन-मजीद के पारों तथा सूरतों की सूची

पृष्ठ सूरः	नाम सूरः	पृष्ठ पारः	पारः नं०	पृष्ठ सूरः	नाम सूरः	पृष्ठ पारः	पारः नं०
७८५	अल्-शुअरा	७७३	१९	१	अल्-फ़ातिहः	—	—
८१३	अल्-नम्ल			५	अल्-बक़रः	५	१
८३६	अल्-क़सस	८२८	२०		अल्-बक़रः	५०	२
८६०	अल्-अन्कबूत			१२०	आले इम्रान	१०२	३
८७७	अल्-रूम	८७१	२१	१७०	अल्-निसा	१४३	४
८९१	अल्-लुक़मान				अल्-निसा	१७९	५
८९९	अल्-सजदः			२२४	अल्-माइदः	२१५	६
९०७	अल्-अहज़ाब			२६६	अल्-अन्आम	२५३	७
९३०	सबा	९१६	२२	३१०	अल्-आराफ़	२९५	८
९४६	फ़ातिर			३६४	अल्-अन्फ़ाल	३३५	९
९५८	यासीन			३८५	अल्-तौबः	३७४	१०
९७२	अल्-साफ़्फ़ात	९६२	२३	४२४	यूनुस	४१४	११
९९३	साद			४५२	हूद		
१००९	अल्-ज़ुमर			४८५	यूसुफ़	४५४	१२
१०२७	अल्-मोमिन	१०१७	२४	५१५	अल्-राद	४९९	१३
१०४६	हा-मीमअल्-सजदः			५२८	इब्राहीम		
१०६०	अल्-शूरा	१०५८	२५	५४२	अल्-हिज्र	५४२	१४
१०७४	अल्-ज़ुख़रुफ़			५५७	अल्-नहल		
१०९१	अल्-दुख़ान			५८८	बनी-इस्राईल	५८८	१५
११००	अल्-जासियः			६१६	अल्-कहफ़		
११०८	अल्-अहक़ाफ़	११०८	२६	६४७	मर्यम	६३८	१६
१११९	मुहम्मद			६६५	ताहा		
११२८	अल्-फ़तह			६९०	अल्-अम्बिया	६९०	१७
११३९	अल्-हुजुरात			७१२	अल्-हज्ज		
११४५	क़ाफ़			७३१	अल्-मोमिनून	७३१	१८
११५३	अल्-ज़ारियात			७४९	अल्-नूर		
११६२	अल्-तूर	११५८	२७	७६८	अल्-फ़ुर्क़ान		

११६९ अल्-नज्म
११७८ अल्-क़मर
११८६ अल्-रहमान
११९७ अल्-वाकिअ:
१२०७ अल्-हदीद
१२१६ अल्-मुजादल: १२१६ २८
१२२३ अल्-हश्र
१२३१ अल्-मुम्तहिन:
१२३७ अल्-सफ़्फ़
१२४१ अल्-जुमुअ:
१२४४ अल्-मुनाफ़िक़ून
१२४७ अल्-तग़ाबुन
१२५१ अल्-तलाक़
१२५६ अल्-तहरीम
१२६२ अल्-मुल्क १२६२ २९
१२६८ अल्-क़लम
१२७६ अल्-हाक़्क़ा
१२८३ अल्-मआरिज
१२८९ नूह
१२९४ अल्-जिन्न
१३०० अल्-मुज़्ज़म्मिल
१३०४ मुद्दस्सिर
१३१० अल्-क़ियामत
१३१४ अल्-दहर
१३१९ अल्-मुर्सलात
१३२६ अल्-नबा १३२६ ३०
१३३१ अल्-नाज़िआत
१३३७ अबस
१३४१ अल्-तकवीर
१३४६ अल्-इन्फ़ितार
१३४९ अल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन
१३५४ अल्-इन्शिक़ाक़
१३५८ अल्-बुरूज
१३६२ अल्-तारिक़
१३६५ अल्-आला
१३६९ अल्-ग़ाशिय:
१३७२ अल्-फ़ज्र
१३७७ अल्-बलद
१३८१ अल्-शम्स
१३८४ अल्-लैल
१३८७ अल्-ज़ुहा
१३८९ अलम्-नश्रह
१३९१ अल्-तीन
१३९४ अल्-अलक़
१३९७ अल्-क़द्र
१३९९ अल्-बय्यिन:
१४०१ अल्-ज़िल्ज़ाल
१४०३ अल्-आदियात
१४०५ अल्-क़ारिअ:
१४०७ अल्-तकासुर
१४०९ अल्-अस्र
१४१० अल्-हुमज:
१४१२ अल्-फ़ील
१४१३ क़ुरैश
१४१४ अल्-माऊन
१४१६ अल्-कौसर
१४१८ अल्-काफ़िरून
१४१९ अल्-नस्र
१४२० अल्-लहब
१४२२ अल्-इख़्लास
१४२४ अल्-फ़लक़
१४२६ अल्-नास

अल्लाह के गुणवाचक नाम

क़ुर्आन-मजीद में ईश्वर के अनेक नाम बताए गए हैं। इन में एक नाम 'अल्लाह' उस का निजी नाम है और शेष सब नाम गुणवाचक हैं।

१. अल्लाह—अर्थात् वह सत्ता जो सर्वशक्तिमान एवं सर्वव्यापक है और जो समस्त सद्गुणों का भण्डार तथा प्रत्येक अवगुण से पवित्र है।

२. अल्-रहमान—असीम कृपा करने वाला, बिना माँगे देने वाला।

३. अल्-रहीम—बार-बार दया करने वाला, किसी की मेहनत तथा परिश्रम का बदला बढ़ा-चढ़ा कर देने वाला।

४. रब्ब—मालिक, स्वामी, पैदा करने के बाद अपनी सृष्टि को क्रमशः प्रगति प्रदान करके पूर्ण प्राकष्ठा तक पहुँचाने वाला, स्वामी, पालनहार।

५. मालिके-यौमिद्दीन—सर्वशक्तिमान् जिसे प्रत्येक पदार्थ पर क़ब्ज़ा और समस्त अधिकार एवं प्रभुत्व प्राप्त है। पुरस्कार एवं दण्ड के समय का स्वामी।

६. अल्-मलिक—सम्राट, समस्त धन सम्पत्ति, सत्कार, साम्राज्य का पूरा और वास्तविक स्वामी। पदार्थों की सृष्टि तथा उन्हें क़ायम रखने पर पूरा अधिकार रखने वाला स्वामी।

७. आलिमुल्ग़ैब—परोक्ष की बातों का ज्ञान रखने वाला।

८. अल्-क़ुद्दूस—समस्त त्रुटियों और कलंकों से पवित्र, अपनी सत्ता में, गुणों में और ज्ञान में अद्वितीय पवित्र। दूसरों को पवित्र रखने वाला।

९. अल्-सलाम—सलामती वाला, दूसरों को शान्ति देने वाला, प्रत्येक त्रुटि से सुरक्षित।

१०. अल्-मोमिन—शान्ति प्रदान करने वाला।

११. अल्-मुहैमिन—शरण दाता, निरीक्षक।

१२. अल्-अज़ीज़—प्रभुत्वशाली।

१३, अल्-जब्बार—तेजस्वी, टूटे हुए दिलों को जोड़ने वाला, बिगाड़ का सुधार करने वाला।

१४. अल्-मुतकब्बिर—गौरव, ऊँची शान और उच्च पद का स्वामी और अधिकारी।

१५. अल्-ख़ालिक़—प्रत्येक पदार्थ का पूर्ण हिक्मत के साथ अनुमान करने वाला, सर्जनहार।

१६. अल्-बारी—बनाने वाला, प्रत्येक पदार्थ का आविष्कारक,

१७. अल्-मुसब्बिर—अपनी सृष्टि में से प्रत्येक को उसकी परिस्थिति के अनुकूल उचित रूप और आकार देने वाला।

१८. अल्-हकीम—प्रत्येक काम हिक्मत से करने वाला, पदार्थों के तत्त्व का ज्ञाता।

१९. अल्-ग़फ़्फ़ार—बहुत क्षमा करने वाला, त्रुटियों पर पर्दा डालने वाला, जिसकी क्षमा और मुक्ति सर्व श्रेष्ठ एवं सर्वोत्तम हो।

२०. अल्-क़ह्हार—सामर्थ्यवान, अपने निर्णय को मनवाने वाला।

२१. अल्-वह्हाब—बहुत प्रदान करने वाला, महादानी।

२२. अल्-रज़्ज़ाक़—आजीविका प्रदान करने वाला।

२३. अल्-फ़त्ताह—खोलने वाला, सत्यासत्य को स्पष्ट करने वाला।

२४. अल्-अलीम—महाज्ञानी, अक्षुण और असीम ज्ञान वाला, पदार्थों के तत्त्व का पूर्ण ज्ञान रखने वाला।

२५. अल्-समी—बहुत सुनने वाला, व्याकुल, उत्पीड़ित की प्रार्थना शीघ्र सुनने वाला।

२६. अल्-बसीर—बहुत देखने वाला, प्रत्येक परिस्थिति में तथा हर समय में देखने वाला।

२७. अल्-लतीफ़—अतिगुप्त रहस्यों का ज्ञाता, दया और मृदुलता का व्यवहार करने वाला।

२८. अल्-ख़बीर—पदार्थों के तत्त्व का ज्ञाता, पूर्ण चैतन्य।

२९. अल्-अज़ीम—महान् गौरवशाली, वह सत्ता जिस का अनुशासन समस्त सृष्टि पर आच्छादित है।

३०. अल्-ग़फ़ूर—बहुत क्षमा करने वाला, पापों को क्षमा करने वाला।

३१. अल्-अलिय्यो—उच्चपद का स्वामी, जिस के पद में कोई साझी न बन सके।

३२ अल्-कबीर—बड़ाई वाला, बड़ाई प्रदान करने वाला।

३३. अल्-मुतआल—ऊँची शान वाला, समस्त अवगुणों से पवित्र।

३४. अल्-क़विय्यो—शक्तिशाली और शक्ति प्रदान करने वाला।

३५. अल्-मतीन—बहुत बड़ी शक्ति रखने वाला, सुदृढ़।

३६. अल्-क़दीर—सर्व शक्तिमान, वह सत्ता जो जिस बात के करने का इरादा कर ले उस के पूरा करने पर पूरा-पूरा सामर्थ्य रखने वाला।

३७. अल्-अफ़ुव्वो—बहुत क्षमा करने वाला।

३८. अल्-वदूद—अगाध प्रेम करने वाला, भले लोगों को मित्र बनाने वाला।

३९. अल्-हादी—सम्मार्ग की ओर हिदायत देने वाला।

४०. अल्-रऊफ़—लोगों पर बहुत नरमी और दया करने वाला।

४१. अल्-बिर्र—श्रेष्ठ व्यवहार करने वाला, नेकी का प्रतिफल कई गुना बढ़ा कर देने वाला।

४२. अल्-हलीम—अत्यन्त सहनशील, सामर्थ्य रखने पर भी क्रोध में न आने वाला अपितु क्षमा कर देने वाला।

४३. अल्-तव्वाब—सच्ची तौबः स्वीकार करने वाला, बारम्बार दया करने वाला।

४४. अल्-वकील—वास्तविक कार्य साधक।

४५. अल्- शदीदुल इक़ाब—पापों पर कठोर दण्ड देने वाला।

४६. अल्-वासेउल् मग़फ़िरः—पापों को ढाँपने वाला, बहुत क्षमा करने वाला।

४७. अल्-हमीद—सर्व स्तुति का स्वामी।

४८. अल्-मजीद—प्रत्येक प्रकार के गौरव, बड़ाई और शान का स्वामी।

४९. अल्-तौल—बहुत एहसान करने वाला।

५०. अल्-वाली—अनुशासक, संरक्षक, स्वामी, सहायक, प्रेम करने वाला, शरण देने वाला।

५१. अल्-मुन्तक़िम—बुरे कर्मों का उचित दण्ड देने वाला, बदला लेने में पूरा-पूरा सामर्थ्य रखने वाला।

५२. अल्-ग़नी—बेपरवाह. वह सत्ता जो किसी की मुहताज न हो किन्तु सब उस के मुहताज हों। सब की आवश्यकताएँ पूरी करने वाला।

५३. अल्-हसीव—हिसाब लेने वाला।

५४. अल्-मोह्यी—जीवित करने वाला।

५५. अल्-ह्य्यो सदा सर्वदा जीवित, प्रत्येक पदार्थ के जीवन का आधार।

५६. अल्-क़य्यूम—अपनी सत्ता में क़ायम तथा दूसरों को क़ायम रखने का वास्तविक साधन।

५७. अल्-अव्वल—सर्व प्रथम, सदासर्वदा स्थिर रहने वाला।

५८. अल्-आख़िर – सब से अन्त में रहने वाली सत्ता, आदि और अनादि। अल्लाह का न तो आदि है न अन्त, उक्त अर्थ मानव को दृष्टि में रखते हुए किया गया है अन्यथा अल्लाह सदा सर्वदा के लिए क़ायम है।

५९. अल्-ज़ाहिर—सब से ज्यादा ज़ाहिर (अर्थात् स्पष्ट) प्रत्येक पदार्थ अन्ततः उसकी सत्ता को स्पष्ट करती है।

६०. अल्-वातिन—अतिगुप्त, प्रत्येक वस्तु का तत्व उस के द्वारा प्रकट होता है, प्रत्येक वस्तु के तत्व का ज्ञाता।

६१. अल्-फ़ालिक़—किसी वस्तु को इस ढंग से फाड़ने वाला कि उसमें से श्रेष्ठ पदार्थ की उत्पत्ति हो।

६२. अल्-हक़्क़ो—पूर्ण तथ्य और सच्चाई।

६३. अल-मुबीन—पूर्ण रूप में प्रकट करने वाला, पूर्ण प्रकाश!

६४. अल-वाहिद—कामिल रंग में एक, जिस के एकत्व में कोई दूसरा साझी न हो।

६५. अल-अहद—अकेला, अपनी सत्ता और गुणों, कर्मों, ज्ञान और सामर्थ्य में अद्वितीय और अकेला।

६६. अल-मुक़ीत—पूरा सामर्थ्य रखने वाला, समस्त सृष्टि को आजीविका प्रदान करने वाला, समस्त शक्तियों का स्वामी, प्रत्येक पदार्थ की शक्तियों को ठीक रखने वाला।

६७. अल-जामिओ—एकत्रित करने वाला, समस्त गुणों का भण्डार।

६८. अल-मौला—स्वामी, प्रेम करने वाला, जोखिम और आड़े समय में सहायता करने वाला।

६९. अल-नसीर—सहायक, सफलता और प्रसन्नता प्रदान करने वाला।

७०. ज़िल्-मआरिज—प्रत्येक पदार्थ को क्रमशः प्रगति दे कर उन्नति के शिखर पर पहुँचाने वाला।

७१. अल-रफ़ी—श्रेष्ठ पदों वाला, समस्त प्रकार की ऊँचाई और शान का स्वामी।

७२. ज़ुल्-अर्श—अर्श का स्वामी, समस्त सद्‌गुणों की प्रकाष्ठा के साथ अनुशासन के सिंहासन पर बैठने वाला।

७३. अल-बदीओ—बिना किसी पहले आदर्श के नवसृष्टि करने वाला, शून्य से अस्तित्व सत्ता प्रदान करने वाला।

७४. अल-फ़ातिर—प्रथम बार उत्पन्न करने वाला।

७५. अल-शकूर—गुणग्य, कृतज्ञ को और भी अधिक पुरस्कार देने वाला।

७६. अल-करीम—सब से बढ़ कर दान करने वाला, बिना माँगे उपकार करने वाला।

७७. अल-हफ़ीज़—रक्षा करने वाला, अणु, प्रमाणु का निरीक्षक।

७८. अल-क़रीब—पास रहने वाला, पास से सहायता करने वाला।

७९. अल-मुजीब—प्रार्थना स्वीकार करके उत्तर देने वाला, व्याकुल की पुकार सुनने वाला।

८०. अल-मुहीत—घेरने वाला, सामर्थ्यवान, निरीक्षक, जिसका आतंक प्रत्येक पदार्थ पर आच्छादित हो।

८१. अल-मालिकुल्मुल्क—साम्राज्य और अनुशासन का स्वामी और प्रत्येक प्रकार के प्रबन्ध का वास्तविक स्वामी।

८२. ज़ुल्-जलाल वल् इकराम—दबदबा और सत्कार का स्वामी और दूसरों को सामर्थ्य और सत्कार प्रदान करने वाला, अति महान।

८३. ज़ुल्-क़ुव्वत—अति शक्तिशाली, समस्त शक्तियों का स्वामी, दूसरों को शक्ति प्रदान करने वाला।

८४. अल-रक़ीब—संरक्षक, अपनी सृष्टि से असावधान न होने वाला।

८५. अल-बासित—प्रत्येक पदार्थ में विस्तार प्रदान करने वाला।

८६. अल-नूर—प्रकाश प्रदान करने वाला।

८७. अल-शाफ़ी—स्वास्थ्य प्रदान करने वाला।

८८. अल-हादी—हिदायत देने वाला।

भूमिका

पवित्र क़ुर्आन-मजीद जो एक अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक विधान है और जो अल्लाह के आदेश एवं उसकी वाणी से सुसज्जित है तथा जिस के अनुसरण से मानव प्राणी के लौकिक एवं पारलौकिक तथा आध्यात्मिक जीवन सफल हो जाता है और जिस में मानव जाति के समस्त समस्याओं का पूर्ण रूप से समाधान किया गया है। हाँ! यह जीवन के सभी मार्गों पर हमारा पथ प्रदर्शक है। इस का अनुसरण करना सांसारिक जीवन एवं आध्यात्मिक जीवन को सफल बनाने के लिए बहुत ज़रूरी है। हम इसका हिन्दी अनुवाद अपने देश वासियों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए सीमातीत प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय अहमदिय्या सम्प्रदाय इस ओर प्रयत्नशील है कि प्रत्येक राष्ट्र में बोले जाने वाली भाषा में पवित्र क़ुर्आन-मजीद का अनुवाद करके इस बहुमूल्य ख़ज़ाना और आध्यात्मिकता के मोती को सारे संसार में फैला दिया जाए।

अहमदिय्या सम्प्रदाय की दूसरी ख़िलाफ़त के समय में पवित्र क़ुर्आन-मजीद के भाष्य जो तफ़सीर कबीर और तफ़सीर सग़ीर के नाम से प्रसिद्ध हैं का अनुवाद डच, डैनिश, सवाहिली, लोगण्डा, जर्मन और आसामी भाषाओं में हुआ तदुपरांत तीसरी ख़िलाफ़त के समय में स्प्रेन्टो, यूरुबा भाषाओं में अनुवाद हुआ।

अहमदिय्या सम्प्रदाय के चौथे अधिनायक हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब की हार्दिक अभिलाषा एवं चेष्टा है कि संसार की अन्य भाषाओं में (जिनमें से अटालियन भाषा में अनुवाद हो चुका है) इस पवित्र क़ुर्आन-मजीद का अनुवाद करके फैला दिया जाए। फलस्वरूप फ्रेंच, इन्डोनेशियन और यूरोप तथा अफ्रीका की भाषाओं में अनुवाद एवं उस के वितरण के कामों के साथ-साथ भारत में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में पवित्र क़ुर्आन-मजीद के अनुवाद देश वासियों के समक्ष प्रस्तुत कर दिए जाएँ।

इस हार्दिक अभिलाषा के फलस्वरूप इस समय भारत के मलियालम, तामिल, बंगला, गुजराती, मराठी, तेलगू, आसामी, उड़िया, डोगरी, कश्मीरी, भूटानी, नैपाली जैसे प्रान्तीय भाषाओं में क़ुर्आन-मजीद के अनुवाद का काम अपने अन्तिम चरण को छू रहा है।

क़ुर्आन-मजीद का गुरमुखी अनुवाद १९८३ में प्रकाशित हो चुका है और अब इस समय हम भारत में अत्यधिक बोली जाने वाली राष्ट्रीय भाषा हिन्दी में क़ुर्आन-मजीद का अनुवाद प्रस्तुत कर के अपने-आप को सौभाग्यशाली समझते हैं।

यह अनुवाद अहमदिय्या सम्प्रदाय के चौथे अधिनायक हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब के आदेशानुसार किया गया है तथा अहमदिय्या सम्प्रदाय के दूसरे अधिनायक हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब की रचित तफ़सीर सग़ीर का सरल हिन्दी भाषा में रूप दिया गया है। यह अनुवाद अलहाज मौलाना बशीर अहमद साहिब देहलवी विशेषज्ञ संस्कृत एवं अरबी तथा मौलवी बशीर अहमद साहिब ताहिर द्विवेदी एच०ए० द्वारा किया गया, जिसे नज़ारत दावत-व-तब्लीग़ सदर अंजुमन अहमदिय्या ने प्रकाशित किया। अति उत्तम कागज़ (क़ुर्आन पेपर) प्रयोग में लाया गया है।

अल्लाह से प्रार्थना है कि वह इसे मानवप्राणी के लिए पथ-प्रदर्शक बनाए। आमीन।
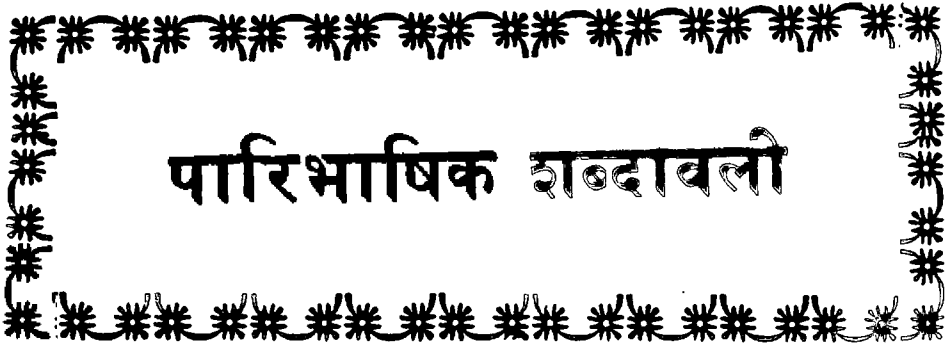
मिर्ज़ा वसीम अहमद
नाज़िर दावत-व-तब्लीग़, क़ादियान

नम्र निवेदन
और
क्षमा-प्रार्थना

***

पवित्र क़ुर्आन का हिन्दी रूपान्तर अपने पाठक-प्रेमियों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए विनम्र निवेदन है कि निश्चय ही इस पवित्र और महान् कार्य की पूर्ति पर हमें हर्ष हो रहा है तथापि मानवीय दुर्बलताओं तथा हमारी प्रबन्धक-समिति की अव्यवस्थित कार्य-विधि और कर्मचारियों की असावधानियों के फलस्वरूप इसमें प्रिंटिंग और प्रूफ़-रीडिंग आदि कतिपय सोपानों पर कुछ न्यूनताएँ और त्रुटियाँ देखने में आई थीं जिनका उपलब्ध सम्भव साधनों द्वारा यथाशक्ति सुधार कर दिया गया है और साधारण अशुद्धियों की अन्त में पृष्ठ १४२९ से १४३४ तक एक संशोधन-तालिका भी लगा दी गई है। अत: हम इस महान् पवित्र कार्य में हुई अफ़सोसनाक असावधानियों, त्रुटियों और न्यूनताओं के लिए क्षमा-प्रार्थना करते हुए आशावादी हैं कि श्रद्धालु पाठक-गण अध्ययन के समय इसको दृष्टि में रखने की कृपा करेंगे और इसके अतिरिक्त भी यदि कहीं कोई कमी या त्रुटि का आभास हो तो इस कार्यालय को भी सूचित करने की कृपा करेंगे। इन्शा अल्लाह आगामी संस्करण में उसका मूलरूप में ही सुधार कर दिया जाएगा।

नाज़िर दावत-व-तब्लीग़
सदर अन्जुमन अहमदिय्या
क़ादियान।

पारिभाषिक शब्दावली

पारिभाषिक शब्दावली

अस्सलात-नमाज़—मुसलमानों की विशेष उपासना-विधि, जिस में क़ियाम, रुकू और सजदः आदि होता है ।

अह्ले-किताब— किताब वाले, यहूदी और ईसाई जो तौरात नामक किताब को ईशवाणी मानते हैं ।

अज़ाब—अल्लाह् की अवज्ञा करने पर संसार में आने वाली बरबादी, विनाश, बुरे कर्मों का फल, दुःख, कष्ट, संकट, विपत्ति और दण्ड ।

अरफ़ात—मक्का नगर से लगभग नौ मील की दूरी पर एक मैदान जहाँ हज्ज के महीने की नवीं तिथि को सब हाजी एकत्रित हो कर प्रार्थना तथा उपासना करते हैं । इस स्थान पर प्रत्येक हाजी के लिए पहुँचना अनिवार्य है ।

अर्श—राज्य सिंहासन, आंतक, ग़ल्बा, आदर-सत्कार, अल्लाह् के पवित्र एवं त्रुटि रहित गुणों का नाम है जो अनादि और अनन्त तथा अपरिवर्तनशील है ।

अन्सार—सहायक, साथी, मित्र । मदीना के वे लोग जिन्हों ने मक्का से हिजरत के पश्चात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम और आप के साथियों की सहायता की ।

अह्लेबैत—घर वाले । किसी नबी या रसूल के परिवार को विशेष रूप से हज़रत मुहम्मद-मुस्तफ़ा सल्लअम के परिवार को अह्लेबैत कहते हैं ।

आयत—क़ुर्आन-मजीद की सूरः का एक भाग, निशान, चमत्कार, युक्ति, प्रमाण, हिदायत और अज़ाब दिखाने वाली बात ।

आख़िरत—क़ियामत, महाप्रलय, पीछे आने वाली घड़ी और भविष्य में होने वाली वह बातें जिन का वादा दिया गया है ।

आदम—मानव-मात्र का प्रथम सुधारक एवं पथ प्रदर्शक, धरती पर बसने वाला और गेहूँ रंग का मनुष्य ।

आराफ़—ऊँचा आदर वाला स्थान व पद । आराफ़ वालों से अभिप्राय सब नबी हैं और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की उम्मत के कामिल ईमान वाले लोग हैं ।

इमाम—धार्मिक नेता, सरदार, लीडर, नबी, रसूल, पथ-प्रदर्शक तथा वह व्यक्ति जिस का अनुसरण किया जाए ।

इन्जील—शुभ-समाचार । वे शुभ-समाचार जो हज़रत मसीह अलैहिस्लाम को अल्लाह् की ओर से दिए गए थे ।

इद्दत—एक मुसलमान स्त्री के विधवा होने या तलाक़ पाने पर किसी दूसरे व्यक्ति से विवाह करने के लिए इस्लामी शरीअत की निर्धारित अवधि बिताने का नाम इद्दत है, जो तलाक़ होने पर तीन महीने तथा विधवा होने पर चार महीने दस दिन और स्त्री के गर्भवती होने की दशा में बच्चे के पैदा होने तक है ।

इल्हाम—संकेत करना, शीघ्रता से संकेत करना, बात दिल में डालना, अल्लाह की ओर से उतरने वाली वाणी।

इस्लाम—आज्ञा पालन करना। अल्लाह के सिद्धान्तों तथा प्राकृतिक नियमों का पालन करना। इस्लाम वह धर्म है जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने लोगों के सामने पेश किया, जो अमन और शान्ति की शिक्षा देता है।

इफ़्तरा—जान-बूझ कर झूठ गढ़ना। अपनी ओर से कोई बात गढ़ कर उसे अल्लाह से सम्बन्धित करना।

इस्राईल—अल्लाह का पहलवान या सैनिक। हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का एक गुणवाचक नाम है जिस के कारण उन की सन्तान को बनी-इस्राईल (अर्थात् इस्राईल की सन्तान कहते हैं) और फ़लस्तीन का एक भू-भाग जिस में यहूदियों ने अपना राज्य स्थापित कर के उस का नाम इस्राईल रखा है।

ईमान—किसी मन्तव्य को मानना, जैसे ईश्वर, फ़रिश्तों, रसूलों, आसमानी किताबों और पारलौकिक जीवन को मानना। उपरोक्त बातों के मानने वाले को मोमिन कहते हैं।

ईला—पति का क़सम खा कर अपनी पत्नी से अलग हो जाना और प्रत्येक प्रकारे के सम्बन्ध को तोड़ देना।

उम्मुल क़ुरा—बस्तियों की माँ, केन्द्र, उम्मुल्क़ुरा से अभीष्ट मक्का नगर है।

उमरः—हज्ज के दिनों के सिवा दूसरे दिनों में 'काबा' के चारों ओर चक्कर लगाना और सफ़ा और मरवाह पहाड़ियों के भीतर क्रमशः चलना और दौड़ना।

उम्मत—सम्प्रदाय, गिरोह, दल, किसी नबी या रसूल पर ईमान लाने वाले लोगों की जमाअत उस की उम्मत कहलाती है।

एतिकाफ़—रमज़ान के महीने के अन्तिम दस दिन मस्जिद में उपासना आदि के लिए रात-दिन रहना।

एहराम—हाजियों का दो अन्सिला चादरों वाला विशेष पहनावा या वस्त्र, जो हज्ज या उमरः करते समय पहना जाता है।

क़ियामत—मरने के बाद अल्लाह के सामने खड़ा होने का समय, व्यक्तिगत मौत, जातीय विनाश, पतन, परलोक और महाप्रलय।

क़ब्र—शव दफ़नाने का स्थान, वह स्थान या वातावरण जहाँ आत्मा भौतिक शरीर छोड़ने के पश्चात् अपने कर्मों के अनुसार नवीन आध्यात्मिक शरीर पा कर रहती है।

क़िब्ला—आमने-सामने, वह दिशा जो मुँह के सामने हो, वह दिशा जिधर मुसलमान मुँह कर के नमाज़ पढ़ते हैं, काबा, जो मक्का में स्थित है वह मुसलमानों का क़िब्ला कहलाता है और सारे संसार के मुसलमान उसकी ओर मुँह करके नमाज पढ़ते हैं।

क़ुर्आन-मजीद—मुसलमानो की धार्मिक आसमानी किताब।

क़िसास—बराबर का बदला। किसी व्यक्ति से वही व्यवहार करना जो उस ने दूसरे से किया हो इस रूप में कि यदि उसने किसी को किसी प्रकार का कष्ट या दुःख पहुँचाया हो तो उसे उसी के अनुसार कष्ट या दुःख पहुँचाना या अन्य यथोचित दण्ड देना।

कुर्सी—ज्ञान, शासन, आतंक, शान, गौरव, अनुशासन और साम्राज्य।

कफ़्फ़ारा—फ़िद्यः, प्रतिकर, बदला। पापों के फल के निवारणार्थ कोई वस्तु बदले के रूप में अल्लाह के नाम पर देना।

काफ़िर—इन्कार करने वाला अर्थात् अल्लाह, फ़रिश्ते, रसूल और उसकी किताब का इन्कार करने वाला।

कलाला—(क) वह पुरुष जो मर जाए और उस की सन्तान न हो, सन्तानहीन।

(ख) वह जिस की न सन्तान हो और न माता-पिता हों।

कश्फ़—ज़ाहिर होना। जागते हुए किसी ग़ैवी दृश्य का देखना। स्वप्न और कश्फ़ में यह अन्तर है कि स्वप्न सोते में देखा जाता है, परन्तु कश्फ़ जागते में होता है।

कौसर—हर प्रकार की वस्तुओं की बहुतात एवं ऐसे व्यक्ति के भी होते हैं जो महादानी हो।

ख़ुला—पत्नी का अपने कुछ अधिकार छोड़ कर अपने पति से तलाक़ लेना।

ख़लीफ़ा—अधिनायक एवं उत्तराधिकारी। नबी या रसूल के पश्चात् उस का स्थान लेने वाला और उस के काम को चलाने वाला।

ग़नीमत—वह धन-दौलत जो युद्ध क्षेत्र में विजेता के हाथ आता है।

ग़ैब—परोक्ष। वह सत्ता जो इन्द्रियों द्वारा न जानी जा सके और न ही इन आँखों से दीख पड़े किन्तु वह मौजूद हो जैसे अल्लाह, फ़रिश्ते, क़ियामत आदि।

ग़ुलाम—लड़का, दास। वह व्यक्ति जो युद्ध में सम्मिलित हो और बन्दी बना लिया जाए।

जन्नत—स्वर्ग, बैकुण्ठ, बाग़, उपवन, छायादार वृक्षों वाला, सुखद-सुहावना और शान्तिमय स्थान तथा आध्यात्मिक दृष्टिकोण से वह स्थान जहाँ मरने के पश्चात् नेक आत्माएँ रहेंगीं।

जिन्न—छिपी रहने वाली मख़्लूक़, बड़े लोग, शक्तिशाली लोग, जो द्वारपालों तथा ड्योढ़ियों के पीछे छिपे रहते हैं।

जुनुबी—स्त्री से सम्भोग करने के बाद तथा स्वप्न-दोष होने पर मनुष्य जुनुबी कहलाता है स्नान करने के बाद पवित्र हो जाता है।

जिज़्या—वह कर जो विमुस्लिम प्रजा से उन की जान-माल और मान-मर्यादा की रक्षा तथा सैन्य-सेवाओं के बदले में लिया जाता है।

जिब्राईल—ईशवाणी लाने वाले फ़रिश्ते का नाम।

जिहाद—प्रयत्नशील होना। अपने सुधार के लिए प्रयत्न करना, अपना धर्म फैलाने के लिए शान्ति पूर्ण प्रयत्न करना, अपने धर्म की रक्षा के लिए प्रति-रक्षात्मक युद्ध करना।

जहन्नम—नरक, आध्यात्मिक-दृष्टि कोण से वह स्थान है जहाँ मरने के बाद बुरे कर्मों का फल भोगने के लिए बुरी आत्माएँ रहेंगीं।

ज़कात—इस्लाम का वह आर्थिक कर जो धनवान मुसलमानों से निश्चित दर से लिया जाता है तथा निर्धनों में बाँट दिया जाता है। यह देश की भलाई के लिए भी ख़र्च किया जा सकता है। पवित्र करना।

तअव्वुज़—अल्लाह की शरण में आना। क़ुर्आन-मजीद का पाठ करने से पहले "आऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शै-तानिर्रजीम" अर्थात् मैं धुतकारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण चाहता हूँ।

तौरात—वह इल्हामी किताब जो हज़रत मूसा अलैहिस्लाम पर उतरी थी। यहूदियों की धार्मिक किताब।

तौबः—पश्चाताप। पापों पर लज्जित होना, तौबः की तीन श्रेणियाँ हैं (क) दोष मान कर उस पर हार्दिक पश्चाताप करना (ख) पापों से बेजार हो कर उन के निवारण के लिए अच्छे कर्म करना (ग) भविष्य के लिए नेकियाँ और परोपकार करना।

तरका विरसा। मरने वाले की छोड़ी हुई सम्पत्ति।

तवाफ़—परिक्रमा। किसी वस्तु या स्थान के चारों ओर घूमना, हज्ज या उमरः करते हुए सात बार काबा के चारों ओर चक्कर लगाना।

तलाक़—छुटकारा। पति की ओर से निकाह की प्रतिज्ञा की ज़िम्मेदारी छोड़ देने तथा स्त्री को छोड़ देने की घोषणा।

तलाक़-रज्ई—ऐसी तलाक़ जिस में पति-पत्नी आपस में सहमति या तालमेल कर सकते हैं। पति को ऐसा अधिकार दो बार की तलाक़ों तक है, यदि तीसरी तलाक़ हो जाए, तो फिर रुजुअ अर्थात् परस्पर सम्बन्ध स्थापित न हो सकेगा, बल्कि जुदाई होगी। तीसरी तलाक़ को तलाक-बत्तः या तलाक़-बाइनः अर्थात् जुदा करने वाली तलाक़ कहते हैं।

तुहर—पवित्रता। स्त्री के मासिक धर्म के पश्चात् पवित्र-अवस्था।

तक़दीर—अनुमान, भाग्य। अल्लाह का किसी बात के बारे में निर्णय।

तयम्मुम—पानी न मिलने या रोगी होने के कारण पवित्र मिट्टी पर हाथ मार कर उन हाथो को अपने मुँह और हाथों पर मलने की क्रिया का नाम तयम्मुम है।

दिय्यत—प्रतिकार, प्रतिशोध, बदला। वह धन जो हत्या करने पर हत्यारे को हरजाने के रूप में देना पड़ता है।

नसारा—हज़रत ईसा मसीह के अनुयायियों या ईसाइयों को नसारा कहते हैं।

निकाह – वह प्रतिज्ञा जिस के घोषणा द्वारा एक पुरुष और स्त्री आपस में पति-पत्नी बनते हैं।

निअमत—अल्लाह की ओर से मिलने वाली प्रत्येक भलाई। बख्शिश, पुरस्कार।

निशान—युक्ति, प्रमाण, चमत्कार,

फ़िद्यः—देखिए कफ़्फ़ारा।

फ़ुर्क़ान—निशान, चमत्कार, सत्य और झूठ में स्पष्ट रूप से अन्तर करने वाली बात, निशान, चमत्कार।

बैअत--बिक जाना, मान लेना, चेला बनना, अनुयायी बनना, अनुयायी बनने के लिए गुरु के हाथ पर हाथ रख कर उस के आदेशों को मानने की प्रतिज्ञा करना।

मस्जिद—मुसलमानों का उपासना गृह।

मस्जिदे-हराम—आदरणीय मस्जिद। काबा बैतुल्लाह अर्थात् अल्लाह का घर जो मक्का में विद्यमान है।

मक्की सूरतें—क़ुर्आन-मजीद की वे सूरतें जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के हिजरत करने से पहले आप पर उतरी थीं।

मदनी सूरतें—क़ुर्आन-मजीद की वे सूरतें जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर हिजरत करने के बाद आप पर उतरी थीं।

महर—वह धन या वस्तु जो एक पुरुष अपने विवाह के उपलक्ष्य में अपनी पत्नी को देने की प्रतिज्ञा करता है। महर पत्नी की निजी सम्पत्ति होता है।

मश्अरुल्हराम—यह हज्ज का एक स्थान है, जो अरफ़ात और मिना के बीच मक्का से लग-भग छः मील की दूरी पर है। इसे मुज्दलफ़ा भी कहते हैं।

मुत्तक़ी—संयमी, नेक। अल्लाह के आदेशों का पूर्ण रूप से पालन करके उस के संरक्षक में आने वाला।

मुकातबत—स्वामी और दास का परस्पर वह समझौता जिस के फलस्वरूप दास निश्चित धन स्वामी को दे कर स्वतन्त्र हो जाता है।

मुनाफ़िक़—वह व्यक्ति जो ज़ाहिर में ईमान लाने का प्रदर्शन करे, किन्तु दिल से इन्कार करने वाला हो।

मुसलमान—वह व्यक्ति जो कलिमा 'लाइलाहा इल्लल्लाह मुहमदुर्रसूलुल्लाह' पढ़े अर्थात् अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं और (हज़रत) मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम उस के रसूल हैं और अपने-आप को मुसलमान कहे।

मुश्रिक—वह जो अल्लाह को छोड़ कर दूसरी सत्ताओं को उस का साझी माने या अल्लाह के सिवा दूसरों को अपना उपास्य बनाए।

मन्नत—मनौती, नज़र मानना।

मलक—फ़रिश्ते। वे आध्यात्मिक सूक्ष्म, शक्ति सम्पन्न सत्ताएँ जो अल्लाह के इरादा को संसार में लागू करती और उसे चालू करती हैं। यह शब्द संयमी एवं नेक प्रवृत्ति लोगों के लिए रूपक के तौर पर भी प्रयुक्त होता है।

मीकाईल—एक फ़रिश्ता का नाम है, जिस का काम प्रायः सांसारिक उन्नति के साधन उपलब्ध करना है। शाब्दिक अर्थ है, अल्लाह जैसा।

मुहाजिर—अपने देश को छोड़ कर किसी दूसरे स्थान में जा कर निवास करने वाला व्यक्ति मुहाजिर कहलाता है और देश को छोड़ देना हिजरत कहलाती है।

यहूदी—हजरत मूसा अलैहिस्सलाम का अनुयायी। वह व्यक्ति जो तौरात को अपनी शरीअत माने।

रसूल—नबी पैग़म्बर। लोगों के सुधार के लिए अल्लाह की ओर से भेजा हुआ वह व्यक्ति जिसे अल्लाह नबी या रसूल के नाम से पुकारे तथा बड़ी संख्या में परोक्ष की बातों से उसे अवगत करे।

रुकू—आज्ञा पालन करना। नमाज़ में घुटनों पर हाथ रख कर झुकना।

रुजू—किसी मुसलमान पुरुष का अपनी पत्नी को सौगन्ध खा कर अलग कर देने या तलाक़ देने की कुछ परिस्थितियों में पुनः उस की ओर झुकने का नाम रुजू है जो कुछ प्रतिबन्धों के साथ होता है।

रूह—हर वस्तु का तत्त्व। जान-प्राण, शरीर के अतिरिक्त वह वस्तु जो जीवित प्राणी में विद्यमान है।

रूहुल्‌कुदुस—अल्लाह की पवित्र वाणी, ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता, पाक रूह, पवित्र आत्मा।

रोज़ा—व्रत, धैर्य। इस्लामी शरीअत के अनुसार पौ-फटने से ले कर सूर्यास्त होने तक बिना खाये-पीये तथा मनो-कामनाओं का त्याग कर के प्रार्थनाओं में समय बिताना।

रोया—स्वप्न।

लौंडी—दासी। ऐसी स्त्री जो युद्ध में सम्मिलित हो और बन्दी बना ली जाए।

वक़्फ़—सौंप देना, दे देना, अर्पित कर देना। धर्म की सेवा के लिए अपने तन-मन-धन को अल्लाह की राह में अर्पित कर देना।

वसीय्यत—पक्की और ताकीदी बात। वसीय्यत ऐसी बातों को कहा जाता है जो मरने वाला अपने लोगों को ताकीद के रूप में कह जाता है।

वह्य—संकेत करना। फ़रिश्ते के द्वारा अल्लाह की वाणी का उतरना। क़ुर्आन-मजीद अल्लाह की वह वाणी है जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर वह्य द्वारा उतरी।

शरीअत—इस्लामी विधान। धार्मिक आदेश।

शफ़ाअत—सिफ़ारिश। कामिल श्रेणी का पुरस्कार या पद दिलाने के लिए किसी की साधारण सी त्रुटियों को क्षमा कर देने की सिफ़ारिश करना।

शैतान—पापों की प्रेरणा देने वाला, अल्लाह से दूर ले जाने वाला, भड़कने वाला स्वभाव रखने वाला, सरकश, उद्दण्डी, विद्रोही, सीमोल्लंघी तथा घमण्डी।

शहीद—साक्षी, गवाह। साक्ष्य देते समय बहुत सच बोलने वाला, वह जिस से ज्ञान की कोई बात छिपी हुई न हो। अल्लाह के रास्ते में जान देने वाला। हर-एक बात का ज्ञान रखने वाला, निरीक्षक और शहीद अल्लाह का एक गुणवाचक नाम भी है।

सजदः—आज्ञा पालन करना। नमाज़ पढ़ते समय धरती पर माथा रख कर उपासना करने की दशा।

सफ़ा-मरवा—काबा के पास दो पहाड़ियों का नाम है। हज्ज और उमरः करते समय इन दो पहाड़ियों के बीच सात चक्कर लगाए जाते हैं।

सहाबी—हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का साथी। ऐसा व्यक्ति जिस ने आप को देखा और आप पर ईमान लाया हो।

सई—सफ़ा और मरवा के बीच एक किनारे से दूसरे किनारे तक आने-जाने का नाम सई है।

सब्त—शनिवार। यहूदियों में यह दिन त्योहार के रूप में मनाया जाता है।

सलीब—फाँसी पर चढ़ना, फाँसी पर मारना। फाँसी वाले की हड्डियाँ तोड़ना, यहाँ तक कि उस की जान निकल जाए।

सिद्दीक़—बड़ा नेक, संयमी, बहुत सच्च बोलने वाला, सच्चाई में कामिल। अपने कर्म से अपनी बात सच्ची सिद्ध करने वाला। सिद्दीक़ीय्यत का पद पाने वाला।

सालिह—नेक-संयमी। परिस्थिति के अनुसार कर्म करने वाला। जिस में सालिहिय्यत का पद पाने के गुण पाए जाएँ।

सीना—एक पर्वत का नाम है, जो सीनाई में है। इस के आस-पास के मैदान और जंगल को सीना का जंगल कहते हैं।

सूर—बिगुल। सूर फूँकने से अभिप्राय विशाल परिवर्तन है।

सूरः—क़ुर्आन-मजीद का एक पूर्ण भाग। क़ुर्आन मजीद ११४ भागों में विभाजित है और इन में से प्रत्येक भाग को सूरः कहा जाता है।

हद्द—इस्लामी शरीअत की निश्चित की हुई सीमा।

हज्ज—इस्लाम धर्म का एक महत्वपूर्ण रुक्न (अंग) और एक विशेष उपासना-विधि। हज्ज ज़ुल्हज्ज के महीने में विशेष आदेशों के साथ मक्का जा कर काबा की परिक्रमा तथा अरफ़ात आदि में उपस्थित होने से पूरा किया जाता है।

हज्जे-अक्बर—मक्का की विजय के बाद इस्लामी अनुशासन के अधीन होने वाला पहला हज्ज।

हक़्क़—सच, तथ्य, भाग, ठीक, हिस्सा अधिकार।

हरम—मक्का नगर के आस-पास का क्षेत्र, जो चारों ओर चार-चार मील तक फैला हुआ है। सत्कार योग्य स्थान, जहाँ किसी की हत्या करना वर्जित है।

हराम—नाजायज़, नापाक, अवैध, अपवित्र।

हलाल—जायज़, ज़िबह या हलाल किया हुआ, पवित्र, वैध। इस्लामी शरीअत के अनुसार ज़िबह किया हुआ जानवर।

हवारी —सहायक, साथी, हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के साथी।

हिक्मत—तत्वज्ञान, दार्शनिकता, न्याय, नम्रता, विद्वता, बात का तत्त्व, सार और वास्तविकता, अज्ञानता से रोकने वाली बात, परिस्थिति के अनुकूल काम, किसी वस्तु को ठीक अवसर पर रखना, किसी समस्या का ठीक और सुधार होना।

हिजरत—देश परित्याग करके किसी अन्य स्थान की ओर चले जाना। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के मक्का से मदीना आ जाने का नाम भी हिजरत है।

हिदायत—राह दिखाना, रास्ते पर चलाना और उद्देश्य पर पहुँचाना, पथ प्रदर्शन, पथ प्रदर्शक।

सूर: अल्-फ़ातिह:

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की सात आयतें हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ②

हर प्रकार की स्तुति[1] का केवल अल्लाह ही अधिकारी है जो सब लोकों[2] (जहानों) का रब्ब है।२।

---

1. क़ुर्आन-मजीद में मूल शब्द 'अल्हम्दु लिल्लाहि' है। जिस का अर्थ है—(क) हर प्रकार की स्तुति का केवल अल्लाह ही अधिकारी है और इस का एक अर्थ यह भी है कि प्रत्येक सद्‌गुण पूर्णरूप से अल्लाह ही में पाया जाता है और जब हम किसी गुण को अल्लाह से सम्बन्धित करते हैं तो इस का यह मतलब होता है कि वह गुण अपनी चरम सीमा तक केवल अल्लाह ही में पाया जाता है। (ख) इस का दूसरा अर्थ यह है कि प्रत्येक वस्तु का वास्तविक गुण अल्लाह ही बता सकता है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के विषय में पूरा-पूरा ज्ञान न रखने के कारण उस का परिचय कराने में भूल कर सकता है। इसी प्रकार वह पदार्थों के तत्वों से पूर्ण रूप से परिचित न होने के कारण उन के गुण बताने में भी भूल कर सकता है। केवल वही अन्तर्यामी सत्ता पदार्थों के तत्वों का भेद बता सकती है जिसे ग़ैब (परोक्ष) का भी ज्ञान हो। (ग) इसका तीसरा अर्थ यह है कि भिन्न-भिन्न जातियाँ अपनी-अपनी धार्मिक किताबों के आधार पर जिस प्रकार की पूर्ण प्रशंसा करती हैं तथा एक पूर्ण सत्ता (अल्लाह) का अनुमान लगाती हैं वह कामिल सत्ता केवल अल्लाह ही है। (घ) इस का चौथा अर्थ यह है कि मनुष्य जिस कामिल सत्ता का चित्र अपने मन में बनाए हुए है यदि वह चित्र ठीक हो तो वह कामिल सत्ता अल्लाह के सिवा कोई दूसरी हो ही नहीं सकती, क्योंकि 'हम्द' शब्द का अर्थ वास्तविक प्रशंसा है,बनावटी प्रशंसा के लिए 'हम्द' शब्द प्रयुक्त नहीं होता।

2. 'लोकों का रब्ब' —रब्ब का अर्थ है --स्वामी, मालिक, पालनहार। 'लोकों का रब्ब' शब्द से

(शेष पृष्ठ २ पर)

अनन्त कृपा करने वाला(और) बार-बारदया करने वाला है ।३।	الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝٣
जज़ा (अच्छा बदला देने) तथा सज़ा[1] (दण्ड देने) के समय का मालिक[2] है ।४।	مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝٤

(पृष्ठ १ का शेष)

विभिन्न लोकों की ओर संकेत किया गया है। विशाल सृष्टि में भिन्न-भिन्न लोक दिखाई देते हैं जो रंग-बिरंगे, छोटे-बड़े और एक-दूसरे के विपरीत हैं, परन्तु इस रंगारंगी के होते हुए भी उन के पीछे एक ही सिद्धान्त काम करता दिखाई देता है तथा उनके पीछे एक ही संचालक शक्ति काम कर रही है, तो फिर स्तुति जो प्राकृतिक सौन्दर्य को मान लेने का नाम है वह भी कार्यकर्त्ता अल्लाह् की सम्पत्ति और उसी का हक़ समझी जाएगी।

1. मूल शब्द 'मालिकेयौमिद्दीन है। जिस का अर्थ है कि अल्लाह जज़ा सज़ा के समय का मालिक है अर्थात् क़ियामत के दिन का मालिक है। यहाँ पर इस दुनिया और उस दुनिया (परलोक) में कर्मों के फलों का अन्तर बताया है कि क़ियामत के दिन कर्मों का प्रतिफल देने में किसी दूसरे का हस्तक्षेप नहीं होगा। इस संसार में तो कर्मों का फल मनुष्यों द्वारा भी मिलता है और उन से भूल भी हो सकती है, किन्तु क़ियामत के दिन कर्मों का प्रतिफल केवल अल्लाह् ही देगा और ऐसा नहीं होगा कि निर्दोष को तो दण्ड मिले और दोषी बचा रहे तथा ऐसा भी न होगा कि अपराधी छल-कपट से काम ले कर दण्ड भोगने से बचा रहे।

2. 'मालिक' शब्द का प्रयोग कर के इस ओर संकेत किया गया है कि अल्लाह् कर्मों का प्रतिफल देने के समय राजा या किसी कर्मचारी की तरह नहीं होगा बल्कि मालिक या स्वामी के रूप में काम करेगा, क्योंकि राजा तो निर्णय करते समय न्याय को सामने रखता है। उसका निर्णयवादी तथा प्रतिवादी के हक़ से सम्बन्धित होता है। अत: उसे किसी को क्षमा करने का अधिकार नहीं होता, किन्तु अल्लाह् मालिक या स्वामी होने के नाते अपने अधिकार से जितना चाहे क्षमा कर सकता है। इस प्रकार यहाँ मनुष्य को आशा दिला कर निराशा से बचाया गया है। दूसरी ओर मनुष्य को सचेत भी किया गया है कि दयावान् अल्लाह् की दयालुता से अनुचित लाभ उठाने का विचार तक भी न करे, क्योंकि जहाँ वह लोकों का मालिक होने के नाते लोगों पर दया और उनके पाप क्षमा कर सकता है वहाँ वह उन को पापों में पड़ा हुआ भी नहीं देख सकता। मानो यहाँ आशा तथा भय के विचार एक जैसे पैदा कर के मानव-समाज को साहस और स्फूर्ति की प्रेरणा दी गई है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ ؕ۝

(हे अल्लाह !) हम तेरी ही उपासना[1] करते हैं और तुझ से ही सहायता माँगते हैं ।५।

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ۝

हमें सीधी राह[2] पर चला ।६।

(पृष्ठ २ का शेष)

इसका एक अर्थ यह भी है कि अल्लाह दीन अर्थात् धर्म के दिन का मालिक है। जब कभी संसार में कोई सच्चा धर्म जन्म लेता है तो उस समय ईश्वर की शक्तियाँ भी प्रकट होना प्रारम्भ हो जाती हैं, परन्तु जब संसार से सच्चे धर्म का लोप हो जाता है तो ऐसा लगता है कि इस संसार का कोई मालिक और संचालक नहीं, क्योंकि उसके प्रभुत्व, उसके अनुशासन तथा उसकी किसी शक्ति का प्रदर्शन नहीं हो रहा होता, परन्तु किसी सुधारक के आने पर अल्लाह की तक़दीरें, उसकी प्रभुता के अनेक चमत्कार तथा उसके फ़रिश्ते तुरन्त संसार में प्रकट होने लगते हैं और उसकी योजनाओं की अभिव्यक्ति इस प्रकार होती है कि खुले-खुले रूप में पता चलता है कि अल्लाह एक योजना के अनुसार संसार को चलाना चाहता है।

1. जब संसार में अल्लाह के प्रभुत्व के विशेष चमत्कार प्रकट होने लगते हैं तो वह मनुष्य के निकट हो जाता है तथा पवित्र व्यक्ति आध्यात्मिक शक्ति द्वारा अल्लाह के दर्शन करने लग जाते हैं तो उन में एक विशेष ईमान उजागर हो जाता है। सो अदृष्ट अल्लाह उन्हें दृष्टिगोचर होने लगता है तब वे पुकार उठते हैं 'हे अल्लाह ! हम तेरी ही उपासना करते हैं और तुझ से ही सहायता माँगते हैं'।

2. इस में बताया गया है कि दर्शन के बाद उन के दिलों में अपने प्रियतम से मिलाप की एक तीव्र अभिलाषा जागृत हो जाती है। अतः उसकी उपासना करने और उस से सहायता माँगने के साथ ही वे यह भी चाहते हैं कि अल्लाह से उनका मिलाप हो जाए।

इस आयत में इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि एक मोमिन भक्त जब 'इय्याकानाबुदो' का प्रतिष्ठित स्थान पा लेता है तो विवश हो कर पुकार उठता है, 'हे अल्लाह ! मुझे अपने पास आने का निकटतम मार्ग दिखा।

उन लोगों की राह पर (चला) जिन पर तूने इन्आम[1] किया (अर्थात् जिन को पुरस्कार प्रदान किया) जिन पर बाद में न तो तेरा ग़ज़ब (प्रकोप) उतरा और न वे (बाद में) गुमराह[2] हो गए हैं ।७। (रुकू नं० १)	صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝ ع

1. 'निअमत से पुरस्कृत होने वालों की राह' अर्थात्—

(क) अल्लाह तक पहुँचने का सरल, सुगम और निकटतम रास्ता ।

(ख) वह रास्ता ऐसा न हो जो अल्लाह से दूर ले जाने वाला हो ।

2. पुरस्कार पाने वाले उन लोगों की राह दिखा जो तेरे प्रकोप का पात्र नहीं बने और न वे पथभ्रष्ट ही हुए हैं ।

प्रत्येक जाति कुछ समय तक पुरस्कार पाने वाली बनी रहती है । फिर धीरे-धीरे बिगड़ते-बिगड़ते अल्लाह के अज़ाब की पात्र बन जाती है । इस प्रार्थना में बताया गया है कि हमारा प्रारम्भ भी पुरस्कार पाने वाले लोगों जैसा हो तथा हमारा अन्त भी, परन्तु ऐसा कभी न हो कि हमारी जाति पुरस्कार पाने के बाद धीरे-धीरे उन से वंचित हो जाए और अल्लाह के अज़ाब में फंस जाए ।

व्यक्तिगत रूप से किसी व्यक्ति का पथभ्रष्ट हो जाना और अज़ाब का पात्र बन जाना संभव है, किन्तु इस प्रार्थना का आशय यह है कि सारी जाति सामूहिक रूप से पथभ्रष्ट न हो तथा न ही अज़ाब का पात्र बन सके ।

इस आयत में भविष्य में होने वाले मुसलमानों के पतन की ओर भी संकेत किया गया है, किन्तु इस भविष्यवाणी ने आशंका दिखा कर आशा की किरण भी डाली है कि यदि किसी समय के पुरस्कार पाने वाले मुसलमान यह प्रयत्न करें कि वे पथभ्रष्ट हो कर अज़ाब के पात्र न बन सकें तो उन की कोशिशों के सफल होने की सम्भावना पाई जाती है और किसी बात का द्वार खुला होने से भी एक बहुत बड़ी आशा बनी रहती है और उत्साह बढ़ता रहता है ।
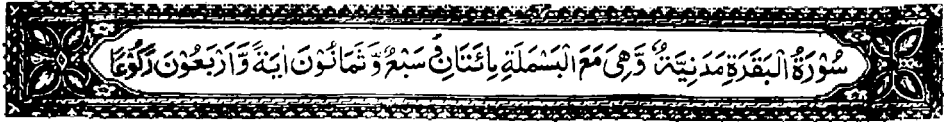
सूर: अल्-बक़र:

[यह सूर: मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की दो सौ सतासी आयतें और चालीस रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम लेकर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला(और) बार-बारदया करने वाला है।१।

الٓمّٓ ②

अलिफ़[1], लाम, मीम। मैं अल्लाह सब से ज़्यादा जानने वाला हूँ।२।

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۚۛ فِيْهِ ۚۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ③

यही कामिल किताब है। इस में कोई सन्देह नहीं। यह संयमियों[2] को हिदायत देने वाली है।३।

---

1. अलिफ़, लाम, मीम और इस प्रकार के दूसरे अक्षर जो क़ुर्आन-मजीद की सूरतों के आरम्भ में आए हैं खण्डाक्षर कहलाते हैं। इन में से प्रत्येक अक्षर एक-एक शब्द के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है जैसे 'अलिफ़'—'आलमो' के अर्थ में बोला गया है। ये तीनों अक्षर मिल कर 'अना अल्लाहो आलमो' अर्थात् मैं अल्लाह सब से ज़्यादा जानने वाला हूं, ऐसा भाव प्रकट करते हैं। इन खण्डाक्षरों द्वारा सूरतों में आए हुए अल्लाह के गुणों की ओर संकेत होता है। कुछ सूरतों के आरम्भ में कोई खण्डाक्षर नहीं आया। ऐसी सूरतें अपने से पहली सूरतों के अधीन होती हैं जिन के आरम्भ में कोई खण्डाक्षर आया होता है।

2. इस में बताया गया है कि हर-एक ऐसा व्यक्ति जो मुत्तक़ी अर्थात् संयमी बनना चाहे या तक़वा (संयम) की कुछ श्रेणियाँ पूरी कर चुका हो या वह अपने-आप को उच्चकोटि का संयमी समझता हो, ऐसे सभी लोगों के लिए इस पवित्र क़ुर्आन में आध्यात्मिक उन्नति करने के साधन पाए जाते हैं। इस प्रकार यह क़ुर्आन उन्नति के श्रेष्ठ स्थान से ऊपर सर्वश्रेष्ठ स्थान तक पहुँचाने के लिए पथ-प्रदर्शक है।

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣﴾

जो ग़ैब[1] पर ईमान लाते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं तथा हम ने जो कुछ उन्हें दिया है उस में से ख़र्च करते हैं ।४।

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾

और जो तुझ पर उतारा गया है और जो तुझ से पहले उतारा गया था उस पर ईमान रखते हैं तथा भविष्य में होने वाली (मौऊद बातों अर्थात् जिन बातों का वादा दिया गया है उन) पर भी विश्वास रखते हैं ।५।

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾

निस्सन्देह ये लोग उस हिदायत पर क़ायम हैं जो उन के रब्ब की ओर से आई है और यही लोग सफल होने वाले हैं ।६।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾

ऐसे लोग जिन्हों ने इन्कार किया उन्हें तेरा डराना या न डराना एक जैसा (प्रभाव डालता) है जब तक वे अपनी इस हालत को नहीं बदलेंगे ईमान नहीं लाएँगे ।७।

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ۗ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۫ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٧﴾ ع

अल्लाह ने उन के दिलों[2] और कानों पर मुहर कर दी है और उन की आँखों पर पर्दा पड़ा हुआ है तथा उन के लिए एक बड़ा अज़ाब निश्चित है ।८। (रुकू १/१)

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨﴾

और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर तथा आने वाले दिन पर ईमान रखते हैं। हालाँकि वे बिल्कुल ईमान नहीं रखते ।९।

يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ

वे अल्लाह और उन लोगों को जो ईमान ला चुके हैं धोखा देना चाहते हैं, परन्तु वातस्व में

1. यहाँ 'ग़ैब' से अभिप्राय अल्लाह है जो निराकार है परन्तु हर जगह विद्यमान है ।

ग़ैब शब्द फ़रिश्तों, क़ियामत, स्वर्ग तथा नरक पर भी बोला जाता है । भाव यह है कि संयमी इन सारी बातों की सत्यता पर पूरा-पूरा ईमान रखते हैं ।

2. दिलों पर मुहर लगने से अभिप्राय यह है कि वे ऐसे कट्टर विरोधी हैं कि सच्ची बात उन के

(शेष पृष्ठ ७ पर)

إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٠﴾

वे अपने सिवा किसी को भी धोखा नहीं देते और वे यह बात नहीं समझते ।१०।

فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿١١﴾

उन के दिलों में एक रोग था। अल्लाह ने उनके रोग को और भी बढ़ा[1] दिया और उन्हें एक दुःख दायक अज़ाब मिल रहा है, क्योंकि वे झूठ बोला करते थे ।११।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ﴿١٢﴾

और जब उन्हें कहा जाता है कि धरती[2] पर फ़साद न करो तो वे कहते हैं कि हम तो केवल सुधार करने वाले हैं ।१२।

أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا يَشْعُرُونَ ﴿١٣﴾

(ध्यान से) सुनो ! निस्सन्देह यही लोग फ़साद फैलाने वाले हैं, किन्तु ये उस हक़ीक़त को समझते नहीं ।१३।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَٰكِن لَّا يَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾

और जब उन्हें कहा जाता है कि उसी तरह ईमान लाओ जिस तरह दूसरे लोग ईमान लाए हैं तो वे कहते हैं कि क्या हम उसी तरह ईमान लाएँ जिस तरह मूर्ख लोग ईमान लाए हैं ? सुनो ! (यह झूठ बोल रहे हैं) वे स्वयं ही मूर्ख हैं, परन्तु वह इस बात को नहीं जानते ।१४।

(पृष्ठ ६ का शेष)

दिलों में दाखिल नहीं हो सकती और न कुफ़्र ही उन के दिलों से बाहर निकल सकता है। कर्मों का फल तो अल्लाह की ओर से मिलता है। अतः मुहर लगाने को अल्लाह से सम्बन्धित किया गया है। अल्लाह किसी पर अत्याचार नहीं करता, अपितु लोग स्वयं ही अपने बुरे कर्मों के कारण दण्ड के भागी बनते हैं।

1. 'बढ़ा दिया'—तात्पर्य यह है कि अल्लाह ने बार-बार ऐसे चमत्कार दिखाए जिन के कारण मुनाफ़िक़ लोग मुसलमानों से पहले से भी अधिक डरने लगे तथा वे अपनी मुनाफ़िक़त में और भी बढ़ने लगे।

मुनाफ़िक़—वह व्यक्ति जिस के दिल में कुछ हो और ज़बान पर कुछ हो।

2. अर्थात् देश और संसार में।

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا ۚ وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِئُونَ ﴿١٥﴾

और जब वे ईमान लाने वालों से मिलते हैं तो (ज़बान से) कह देते हैं कि हम तो (इस रसूल को) मानते हैं और जब वे अपने सरदारों[1] से एकान्त में मिलते हैं तो कहते हैं कि निस्सन्देह हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो उन मोमिन लोगों से केवल हँसी कर रहे थे।१५।

اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٦﴾

अल्लाह उन्हें उन की हँसी का दण्ड देगा और उन्हें उन के अहंकार में भटकते हुए छोड़ देगा।१६।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَتْ تِجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٧﴾

ये ऐसे लोग हैं जिन्हों ने हिदायत को छोड़ कर गुमराही को अपना लिया। जिस का परिणाम यह निकला कि न तो उन्हें सांसारिक लाभ प्राप्त हुआ तथा न उन्हें सम्मार्ग ही मिला।१७।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَاتٍ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٨﴾

उन की हालत उस व्यक्ति जैसी है जिस ने आग[2] जलाई, परन्तु जब उस आग ने उस के आस-पास को प्रकाशित कर दिया तो अल्लाह उन की ज्योति को ले गया और उन्हें (नाना प्रकार के) अन्धेरों[3] में ऐसी दशा में छोड़ दिया कि वे उस में से बच निकलने की कोई राह नहीं पाते।१८।

---

1. मूल शब्द 'शैतान' से अभिप्राय मुनाफ़िक़ों के वे सरदार हैं जो स्वयं हक़ से दूर हो चुके हैं और दूसरों को भी बहका रहे हैं।

2. अरबी भाषा में 'नार' —आग शब्द युद्ध के लिए भी प्रयुक्त होता है। अतः आयत का भाव यह हुआ कि मुनाफ़िक़ों ने मुसलमानों को पराजित करने के लिए इन्कार करने वालों से भिड़ा दिया, परन्तु जब युद्ध फैल गया तो परिणाम उलटा निकला। मुसलमान जीत गए तथा अल्लाह ने मुनाफ़िक़ों को ऐसी हालत में छोड़ दिया कि उन्हें इस उलझन से निकलने की कोई राह दिखाई नहीं देती थी और वे अंधों की भाँति इधर-उधर मारे-मारे फिरते थे।

3. 'अंधेरों' शब्द का प्रयोग इस बात को प्रकट करने के लिए किया गया है कि केवल बाहरी अंधकार ही नहीं बल्कि उसके सिवा अनेक प्रकार की और भी आशंकाएँ सामने आ गई थीं। पाप और दुराचार अकेले नहीं रहते बल्कि एक पाप दूसरे पाप को तथा एक विपत्ति दूसरी विपत्ति को खींचती है।

صُمٌّۢ بُكۡمٌ عُمۡیٌ فَهُمۡ لَا یَرۡجِعُونَ ﴿١٩﴾

वे बहरे, गूँगे और अन्धे हैं। अत: वे (सम्मार्ग की ओर) लौट नहीं पाएँगे।१९।

أَوۡ كَصَیِّبٍ مِّنَ ٱلسَّمَاۤءِ فِیهِ ظُلُمَـٰتٌ وَرَعۡدٌ وَبَرۡقٌ یَجۡعَلُونَ أَصَـٰبِعَهُمۡ فِیۤ ءَاذَانِهِم مِّنَ ٱلصَّوَ ٰعِقِ حَذَرَ ٱلۡمَوۡتِۚ وَٱللَّهُ مُحِیطُۢ بِٱلۡكَـٰفِرِینَ ﴿٢٠﴾

या फिर उन की दशा उस वर्षा जैसी है जो (घटाटोप) बादलों से बरस रही हो। (ऐसी वर्षा) जिस के साथ नाना प्रकार के अन्धेरे, गर्जन और बिजली होती है। वे गर्जन के कारण मौत के डर से अपनी अंगुलियाँ अपने कानों में डाल लेते हैं। हालाँकि अल्लाह सभी इन्कार करने वालों का विनाश करने वाला है।२०।

یَكَادُ ٱلۡبَرۡقُ یَخۡطَفُ أَبۡصَـٰرَهُمۡۖ كُلَّمَاۤ أَضَاۤءَ لَهُم مَّشَوۡا۟ فِیهِ وَإِذَاۤ أَظۡلَمَ عَلَیۡهِمۡ قَامُوا۟ۚ وَلَوۡ شَاۤءَ ٱللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمۡعِهِمۡ وَأَبۡصَـٰرِهِمۡۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَیۡءٍ قَدِیرٌ ﴿٢١﴾

सम्भव है कि बिजली उन की आँखों की ज्योति को उचक ले। जब भी वह उन पर चमकती है तो वे उस के उजाले में चलने लगते हैं और जब वह उन पर अन्धेरा कर देती है तो वे खड़े हो जाते हैं। यदि अल्लाह चाहता तो निश्चय ही उन की सुनने की शक्ति और आँखों की ज्योति नष्ट कर देता। निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक कार्य (जो भी वह करना चाहे) करने का सामर्थ्य[1] रखता है।२१। (रुकू २/२)

یَـٰۤأَیُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُوا۟ رَبَّكُمُ ٱلَّذِی خَلَقَكُمۡ وَٱلَّذِینَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ﴿٢٢﴾

हे लोगो! अपने उस रब्ब की उपासना करो जिस ने तुम्हें तथा तुम से पहले हो चुके लोगों को पैदा किया है ताकि तुम (समस्त प्रकार के संकटों से) बचो।२२।

---

1. इस आयत का मतलब यह है कि अल्लाह जिस काम के करने का इरादा कर लेता है तो निश्चय ही उसे पूर्णरूप से पूरा करने का अधिकार, शक्ति और सामर्थ्य रखता है।

الَّذِیۡ جَعَلَ لَکُمُ الۡاَرۡضَ فِرَاشًا وَّ السَّمَآءَ بِنَآءً ۪ وَّ اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخۡرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزۡقًا لَّکُمۡ ۚ فَلَا تَجۡعَلُوۡا لِلّٰهِ اَنۡدَادًا وَّ اَنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۳﴾

उसी ने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना और आकाश को छत के रूप में बनाया तथा बादलों से पानी उतारा, फिर उस के द्वारा तुम्हारे लिए फलों जैसी जीविका पैदा की। सो तुम जानते-बूझते हुए अल्लाह के साझी न बनाओ।२३।

وَ اِنۡ کُنۡتُمۡ فِیۡ رَیۡبٍ مِّمَّا نَزَّلۡنَا عَلٰی عَبۡدِنَا فَاۡتُوۡا بِسُوۡرَۃٍ مِّنۡ مِّثۡلِهٖ ۪ وَ ادۡعُوۡا شُهَدَآءَکُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اِنۡ کُنۡتُمۡ صٰدِقِیۡنَ ﴿۲۴﴾

यदि तुम इस (ईशवाणी) के बारे में जो हम ने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर उतारी है किसी प्रकार के सन्देह में हो तो यदि तुम सच्चे हो तो इस जैसी एक सूर: ले आओ और अल्लाह के सिवा अपने सहायकों को भी सहायता के लिए बुला लो।२४।

فَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلُوۡا وَ لَنۡ تَفۡعَلُوۡا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیۡ وَقُوۡدُهَا النَّاسُ وَ الۡحِجَارَۃُ ۚۖ اُعِدَّتۡ لِلۡکٰفِرِیۡنَ ﴿۲۵﴾

और यदि तुम ने ऐसा न किया और याद रखो तुम कदापि ऐसा न कर सकोगे, तो उस आग से बचो जिस का ईंधन मनुष्य तथा पत्थर[1] हैं और जो इन्कार करने वालों के लिए तय्यार की गई है।२५।

وَ بَشِّرِ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِیۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ؕ کُلَّمَا رُزِقُوۡا مِنۡهَا مِنۡ

और जो लोग ईमान लाए हैं तथा जिन्होंने शुभ कर्म किए हैं। तू उन्हें शुभ-समाचार सुना दे कि उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे[2] नहरें बहती हैं। जब भी उन्हें उन बाग़ों के फलों में से कुछ खाने को चीज़ें दी

---

1. यहाँ 'पत्थर' से तात्पर्य वे मूर्तियाँ हैं जिन में उनके पुजारी ईश्वरीय-गुण मानते थे। निस्सन्देह जड़-पदार्थ होने के कारण पत्थरों को तो कोई दण्ड न मिलेगा, किन्तु अपने आराध्य एवं इष्ट देवों को नरक में पड़ा हुआ देख कर उन लोगों को दुःख होगा जो उन्हें उपास्य मानते थे।

यदि पत्थर से साधारण पत्थर समझा जाए तो इस से अभीष्ट पत्थर का कोयला होगा जिस से आग और भी तेज़ हो जाती है।

2. इस से यह अभिप्राय है कि वे नहरें उन बाग़ों से सम्बन्धित होंगी और मोमिनों के अधीन उन्हीं की सम्पत्ति होंगी।

ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَ
اُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ۭ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ڎ وَّهُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٢٦

जाएँगी तो वे कहेंगे कि ये तो वही चीज़ें हैं जो हमें इस से पहले दी गई थीं और उनके पास वह चीजें मिलती-जुलती लाई जाएँगी एवं उनके लिए उन बाग़ों में पवित्र जोड़े[1] होंगे और वे उन बाग़ों में सदैव निवास करेंगे।२६।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً
فَمَا فَوْقَهَا ۭ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ
بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ۭ وَمَا
يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ۝٢٧

अल्लाह किसी बात के बताने में कदापि नहीं झिझकता, चाहे वह बात मच्छर जैसी हो या उस से भी बढ़[2] कर। फिर जो लोग मोमिन हैं वे तो जान लेते हैं कि निस्सन्देह वह बात उनके रब्ब की ओर से निश्चय ही हक़ (सच) है, परन्तु जो लोग इन्कार करने वाले हैं कहते हैं, भला इस बात के वर्णन करने से अल्लाह का क्या अभिप्राय है? (वास्तविक बात यह है कि) वह बहुत से लोगों को इस (क़ुर्आन) के द्वारा गुमराह ठहराता है और बहुतों को इस (क़ुर्आन) के द्वारा हिदायत देता है और वह इसके द्वारा उन नाफ़रमानों के सिवा किसी को गुमराह नहीं ठहरता।२७।

---

1. मूल शब्द 'अज़्वाज' से अभीष्ट ऐसे साथी हैं जिन से मिल कर उनके विकास एवं समस्त सुखों की पूर्ति होगी। पवित्र क़ुर्आन से पता चलता है कि अल्लाह के सिवा हर-एक चीज़ स्वाभाविक रूप में अपने साथी या जोड़े की मुहताज है। इस नियम के अनुसार स्वर्ग-वासी भी जोड़े के मुहताज होंगे। चाहे वे पुरुष हों या स्त्रियां।

2. मूल शब्द 'फ़ौक़' का अर्थ अरबी भाषा में दोनों तरह से होता है। यदि बड़ाई में तुलना हो तो इस शब्द का अर्थ 'अधिक बड़ा' हो सकता है और यदि छोटाई में तुलना हो तो यह शब्द 'अधिक छोटा' होने का अर्थ दे सकता है। अतः इस स्थान पर आयत के दोनों ही अर्थ किए जा सकते हैं। यह भी कि मच्छर से बड़ी बात या यह कि मच्छर से भी छोटी बात। (मुफ़रदाते राग़िब)

الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللّٰهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٢٨﴾

जो अल्लाह से किए गए प्रण को उसके पक्का हो चुकने के बाद तोड़ देते हैं और उस वस्तु को—जिसे अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया है—काटते हैं तथा धरती पर फ़साद करते हैं। वे लोग ही हानि पाने वाले हैं।२८।

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٩﴾

(हे लोगो !) तुम अल्लाह की बातों का कैसे इन्कार कर सकते हो ? सच तो यह है कि तुम मुर्दा थे उसने तुम्हें ज़िन्दा किया। (फिर एक दिन ऐसा आएगा कि) वह तुम्हें मौत देगा, फिर तुम्हें जीवित[1] करेगा। इसके बाद तुम्हें उसी की ओर लौटाया जाएगा।२९।

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوٰى إِلَى السَّمَاءِ فَسَوّٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣٠﴾ ع

(अल्लाह) वही तो है जिस ने उन सब चीज़ों को तुम्हारे भले के लिए पैदा किया है जो धरती में हैं। इसके बाद उसने आसमानों की ओर ध्यान दिया और उन्हें मुकम्मल अर्थात् पूरे रूप में सात आसमान बना[2] दिया और वह हर बात की वास्तविकता और हक़ीक़त को अच्छी तरह जानता है।३०। (रुकू ३/३)

---

1. हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का इन्कार करने वाले लोग मरने के बाद जीवित होने और कर्मों का प्रतिफल भोगने पर विश्वास नहीं रखते थे। उनके इस विचार का खण्डन इस आयत में किया गया है कि देखो ! अल्लाह ने ही तुम्हें जिन्दगी दी, वही तुम्हें इस लौकिक जीवन के बाद मौत देगा। मानों ईशसत्ता के ये दो प्रमाण तुम परख चुके हो। इस सांसारिक-जीवन के बाद वह तुम्हें फिर जीवन देगा। इसके बाद तुम अपने-अपने कर्मों का लेखा लेने के लिए अल्लाह के सामने पेश किए जाओगे और तुम्हें अपने-अपने कर्मों का प्रतिफल अवश्य मिलेगा।

इस आयत मे आवागमन का सिद्धान्त सिद्ध नहीं होता। यहाँ केवल चार परिवर्तनों का वर्णन है जब कि आवागमन के सिद्धान्तानुसार कई लाख जूनों में जाना होता है।

2. मूल शब्द 'सव्वा' का अर्थ है मुकम्मल अर्थात् पूरे रूप में बना दिया। इस का भावार्थ यह है कि किसी चीज़ को इस तरह बनाना कि उस में सारी ज़रूरतों और आवश्यकताओं का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया हो।

وَاِذۡ قَالَ رَبُّكَ لِلۡمَلٰٓٮِٕكَةِ اِنِّىۡ جَاعِلٌ فِى الۡاَرۡضِ خَلِيۡفَةً ؕ قَالُوۡٓا اَتَجۡعَلُ فِيۡهَا مَنۡ يُّفۡسِدُ فِيۡهَا وَيَسۡفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحۡنُ نُسَبِّحُ بِحَمۡدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّىۡٓ اَعۡلَمُ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۝

और (हे मानव ! तू उस समय को भी याद कर) जब तेरे रब्ब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती पर एक ख़लीफ़ा[1] बनाने वाला हूँ। इस पर उन्होंने कहा कि क्या तू उस में (ऐसे लोग भी) पैदा करेगा जो उसमें उपद्रव फैलाएँगे तथा रक्त-पात करेंगे, परन्तु हम (तो वे हैं जो) तेरी स्तुति के साथ-साथ तेरी पवित्रता का गुणगान करते हैं और तुझ में सब बड़ाइयों के पाए जाने का इक़रार करते हैं। इस पर अल्लाह ने कहा, निस्सन्देह मैं वह कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।३१।

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الۡاَسۡمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمۡ عَلَى الۡمَلٰٓٮِٕكَةِ

और अल्लाह ने आदम को सब नाम सिखाए। फिर (जिन के वे नाम[2] थे) उन्हें फ़रिश्तों के

1. 'ख़लीफ़ा' या अधिनायक उसे कहते हैं जो शासक का स्थान पाने वाला हो। अतः जब अल्लाह ने कहा कि मैं धरती पर अपना ख़लीफ़ा बनाने वाला हूं तो फ़रिश्तों ने कहा कि इस की ज़रूरत तो तब होती जब धरती में ऐसे लोग पैदा करने का निश्चय होता जो आपस में लड़-भिड़ सकते हों और एक-दूसरे का ख़ून बहा सकते हों। अतः फ़रिश्तों का यह कहना कि क्या तू धरती में उपद्रव फैलाने और रक्तपात करने वाले लोग पैदा करेगा न तो अल्लाह पर कोई आरोप है तथा न हज़रत आदम पर अपनी बड़ाई सिद्ध करने के लिए है बल्कि यह बात केवल मानव-जाति में से कुछ लोगों की कमज़ोरी बतलाने के लिए है जिन पर हज़रत आदम ने शासन करना था।

2. इस आयत में 'नामों' से अभिप्राय ईश्वरीय गुण हैं। जिन का वास्तविक ज्ञान अल्लाह के सिखाने से ही हो सकता है। हज़रत आदम का प्रादुर्भाव धर्म की स्थापना करने और अल्लाह तथा मानव-जाति में सम्बन्ध स्थापित करने के लिए हुआ था। इसलिए यह ज़रूरी था कि उन्हें ईश्वरीय गुण सिखाए जाते ताकि उनके मानने वाले उन गुणों द्वारा अल्लाह की पहचान कर सकते और उस से अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकते। यदि यह नाम (गुण) न सिखाए जाते तो उन के मानने वालों के नास्तिक और और गुमराह होने का डर रहता।

इसका एक अर्थ यह भी हो सकता है कि मानव-जाति के सभ्य होने की अवस्था में उन के लिए एक भाषा की ज़रूरत थी। अल्लाह ने आदम को भाषा के सिद्धान्त सिखाए जिन के आधार पर आदम ने भाषा-विज्ञान को जारी किया। ऐसा मालूम होता है कि वह भाषा अरबी थी, क्योंकि प्रत्येक वस्तु का

(शेष पृष्ठ १४ पर)

فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِيْ بِاَسْمَآءِ هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۳۲﴾

के सामने पेश कर के कहा, यदि तुम ठीक बात कह रहे हो तो तुम मुझे इन के नाम बताओ[1] ।३२।

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿۳۳﴾

उन्होंने कहा, तू पवित्र है। तुझ में कोई बुराई नहीं। जो कुछ तू ने हमें सिखाया है उस के सिवा हमें (किसी प्रकार का) ज्ञान नहीं। निस्सन्देह तू ही कामिल ज्ञान वाला एवं हर-एक बात में हिक्मत को ध्यान में रखने वाला है।३३।

قَالَ يٰۤاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْۤ اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

(इस पर अल्लाह ने) कहा, हे आदम! इन फ़रिश्तों को इनके नाम[2] बताओ। फिर जब उसने उन्हें उन के नाम बताए तो कहा, क्या मैंने तुम्हें नहीं कहा था कि निस्सन्देह मैं

(पृष्ठ १३ का शेष)
नाम उसकी विशेषताओं और उसके गुणों के आधार पर रखा गया था और यह विशेषता केवल अरबी भाषा में ही पाई जाती है।

1. फ़रिश्तों को हज़रत आदम के ख़लीफ़ा (अधिनायक) बनाए जाने पर इसलिए हैरानी थी कि उसके कारण उपद्रव और रक्तपात की सम्भावना थी। अत: अल्लाह ने फ़रिश्तों को भविष्य में प्रकट होने वाले नेक कामिल लोगों को कश्फ़ (देव ज्ञान) द्वारा दिखा दिया और ऐसे लोगों को भी कश्फ़ द्वारा दिखा दिया जो नास्तिकता और इन्कार की दृष्टि से कामिल बनने वाले व्यक्ति भी थे। अत: अल्लाह ने फ़रिश्तों से पूछा कि यदि तुम्हारी बात ठीक है तो उनके नाम बताओ अर्थात् अल्लाह की परम दयालुता तथा प्रकोप के गुण जिस प्रकार उन लोगों द्वारा प्रकट होने वाले हैं। क्या उनका विवरण तुम दूसरों को बता सकते हो?

इस आयत का एक दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि हज़रत आदम की सन्तान में से जो लोग नेकी में कामिल होने वाले थे उनको सामने रख कर पूछा कि क्या तुम इनके गुणों और इनकी विशेषताओं को विस्तार रूप से बता सकते हो। इसका मतलब यह था कि अल्लाह यह बताना चाहता था कि आदम द्वारा जो लोग पैदा होंगे वे उपद्रव फैलाने वाले या रक्तपात करने वाले नहीं होंगे बल्कि इनके शत्रु ही झगड़ा करके लड़ाई की सूरत पैदा करने वाले होंगे गोया ख़ून बहाने वाले हज़रत आदम के शत्रु होंगे इसलिए वे ही अपराधी होंगे।

2. हज़रत आदम ने उन वस्तुओं के गुण गिना दिए जो उसे बताई गई थीं तो अल्लाह ने फ़रिश्तों से
(शेष पृष्ठ १५ पर)

وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۝٣٤

आसमानों और ज़मीन की छिपी हुई बातों को जानता हूँ और मैं उसे भी जानता हूँ जो तुम प्रकट करते हो और उसे भी जो तुम छिपाते हो।३४।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوٓا إِلَّآ إِبْلِيسَ أَبٰى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِينَ ۝٣٥

और (उस समय को भी याद करो) जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम की आज्ञा[1] का पालन करो। इस पर उन्होंने तो आज्ञा का पालन किया, किन्तु इब्लीस[2] (ने पालन न किया उस) ने इन्कार किया और अभिमान किया। वह पहले से ही इन्कार करने वालों में से था।३५।

(पृष्ठ १४ का शेष)

कहा कि क्या मैं ने तुम से पहले ही नहीं कह दिया था कि मुझे उन बातों का भी ज्ञान है जो तुम्हारे दिलों में हैं और उन बातों को भी जिन को तुम व्यक्त करते हो। तुम्हारा यह विचार था कि आदम लोगों पर किस प्रकार शासन कर सकेगा? जब कि उसे लोगों के गुणों का ज्ञान नहीं, परन्तु अब तुम्हें मालूम हो गया है कि मैंने इसके भीतर प्रकृति के गुणों का ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति रख दी है। अतः उस ने पदार्थों के गुण बता दिए हैं। इस से सिद्ध हो गया कि मेरा ही ज्ञान ठीक था तुम्हारा नहीं।

1. यहाँ मूल शब्द 'सजदः' है। अरबी भाषा में सजदः का अर्थ है ज़मीन पर माथा रख कर अल्लाह को प्रणाम करना। इसके सिवा इसका एक अर्थ 'आज्ञाकारी बनना अर्थात् फ़रमाँबरदारी करना' भी है। (अक़्रब)

फ़रिश्तों को हज़रत आदम के सामने सजदः करने का यही अर्थ था कि उन को कहा गया कि हज़रत आदम के आज्ञाकारी बनो।

इसका दूसरा अर्थ यह है कि हज़रत आदम के जन्म के कारण अल्लाह को सजदः करो। भाव यह है कि अल्लाह ने एक कामिल वजूद (विभूति) की रचना की है। इस के शुभ-जन्म पर अल्लाह की महिमा बताने के लिए अल्लाह को सजदः करो।

2. इब्लीस का अर्थ है—

(क) वह व्यक्ति जो अल्लाह की कृपा से निराश हो चुका हो।

(ख) वह व्यक्ति जिस से परोपकार की आशा कम हो गई हो।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۖ وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٣٦

और हम ने (आदम से) कहा कि तू और तेरी पत्नी जन्नत[1] (स्वर्ग) में रहो तथा उस में से जहाँ से चाहो जी भर कर खाओ, किन्तु इस (अमुक) वृक्ष[2] के समीप न जाना अन्यथा तुम अत्याचारियों में से हो जाओगे।३६।

(पृष्ठ १५ का शेष)

(ग) ऐसा व्यक्ति जो अपनी समस्या सुलझाने में असमर्थ हो तथा जिसे सफलता का कोई मार्ग दिखाई न देता हो ।

(घ) वह व्यक्ति जिस का धैर्य समाप्त हो चुका हो और वह संताप ग्रस्त हो । (अक़्ब)

पवित्र क़ुर्आन में 'इब्लीस' का नाम ग्यारह स्थानों में आया है । जहाँ हज़रत आदम को सजद: करने का उल्लेख है 'इब्लीस' शब्द प्रयुक्त हुआ है, परन्तु जहाँ आदम को पथभ्रष्ट करने का उल्लेख है वहाँ 'शैतान' शब्द प्रयुक्त हुआ है इब्लीस नहीं । इस प्रकार क़ुर्आन मजीद ने 'इब्लीस' और 'शैतान' दोनों शब्दों के प्रयोग में विशेष अन्तर रखा है ।

इब्लीस उसे कहा गया है जो फ़रिश्तों के लिए बुराई का प्रेरक है और शैतान एक साधारण नाम है । इब्लीस को भी शैतान कह सकते हैं और उन सब लोगों को भी जो इब्लीस के प्रतिनिधि हैं । वे बुरे कामों की राह दिखाने वाले हैं तथा वे नबियों और उनकी शिक्षा-दीक्षा का विरोध करने वाले हैं ।

1. अरबी भाषा में बाग़ों और वृक्षों वाली छायादार सुखदाई भूमि को 'जन्नत' कहते हैं । इस स्थान पर मरने के पश्चात् प्राप्त होने वाली जन्नत या स्वर्ग अभीष्ट नहीं, क्योंकि उस स्वर्ग में से स्वर्ग--वासियों को कदापि नहीं निकाला जाएगा । (सूर: अल्-हिज्र आयत नं० ४८)

परन्तु ऊपर बताए हुए स्वर्ग में से हज़रत आदम को निकलना पड़ा था । भग्नावशेष (आसारे-क़दीमा) के खोज के अनुसार यह इराक़ का प्रान्त सिद्ध हुआ है जहाँ से हज़रत आदम को निकलना पड़ा था ।

2. इस स्थान पर मूल शब्द 'शजर:'--वृक्ष से अभिप्राय वंश है । अरबी भाषा में 'शजराए-नसब' शब्द इसके लिए प्रयुक्त होता है और आयत का अर्थ यह है कि शैतान तथा उसकी संतान के पास न जाओ ।

فَاَزَلَّهُمَا الشَّیْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِیْهِ ۪ وَ قُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَ لَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰی حِیْنٍ ۝

और इस के बाद यह हुआ कि शैतान ने उस (वृक्ष) के द्वारा उन दोनों को (उन के स्थान अर्थात् पद मे) हटा दिया और इस प्रकार उस ने उन्हें उस (अवस्था) से जिस में वे थे निकाल दिया और हम ने उन्हें कहा कि निकल जाओ। तुम में से कुछ व्यक्ति एक-दूसरे के शत्रु हैं और (याद रखो कि) तुम्हारे लिए एक निश्चित समय तक इसी धरती पर रहना तथा ज़िन्दगी का सामान (लिखा हुआ) है।३७।

فَتَلَقّٰۤی اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَیْهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ۝

इस के बाद आदम ने अपने रब्ब से प्रार्थना की कुछ बातें सीखीं और उन के अनुसार प्रार्थना की तो उस (अल्लाह) ने उस की ओर कृपा दृष्टि से देखा। निस्सन्देह वही (लोगों पर विपत्ति के समय) ध्यान देने वाला और बार-बार दया करने वाला है।३८।

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِیْعًا ۚ فَاِمَّا یَاْتِیَنَّكُمْ مِّنِّیْ هُدًی فَمَنْ تَبِعَ هُدَایَ فَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ۝

तब हमने कहा कि तुम सब के सब इस में से निकल[1] जाओ (और याद रखो कि) यदि फिर कभी तुम्हारे पास मेरी ओर से कोई हिदायत आए तो जो लोग मेरी हिदायत[2] की पैरवी (अनुसरण) करेंगे उन्हें न तो भविष्य में भय होगा और न ही गुजरी हुई किसी कोताही पर उन्हें कोई पछतावा होगा।३९।

---

1. अरबी मुहावरा के अनुसार इस वाक्य का कि 'तुम सब के सब इस में से निकल जाओ' यह भाव होता है कि तुम सारे के सारे इस स्थान से चले जाओ और दूसरे स्थान पर जाकर रहो। यहाँ हज़रत आदम के हिजरत करने अर्थात् अपने देश को छोड़ जाने की ओर संकेत पाया जाता है।

2. 'हिदायत' का अर्थ राह दिखाना और राह दिखाने वाला दोनों होता है। यहाँ इन दोनों अर्थों की ओर संकेत पाया जाता है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ ع

और जो लोग हिदायत का इन्कार करेंगे और हमारी आयतों को झुठलाएँगे वे अवश्य नरक में पड़ने वाले हैं वे उस में निवास करते चले जाएँगे ।४०। (रुकू ४/४)

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ۝

हे बनीइस्राईल[1] ! मेरे उस उपकार को याद करो जो मैं तुम पर कर चुका हूँ और तुमने जो प्रण मेरे साथ किया था उस को पूरा करो। तब जो प्रण मैंने तुम्हारे साथ किया था उसे पूरा करूँगा तथा मुझ से ही डरो। (मैं फिर कहता हूँ कि) मुझ से ही डरो ।४१।

وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍۭ بِهٖ ۖ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۡ وَّاِيَّايَ فَاتَّقُوْنِ ۝

और इस कलाम (वाणी) पर ईमान लाओ जो मैंने अब उतारा है और जो उस (कलाम) को जो तुम्हारे पास है सत्य सिद्ध करने वाला है। तुम इस के सब से पहले इन्कार करने वाले न बनो और मेरी आयतों के बदले में थोड़ा[2] (कम) मूल्य न लो और मुझ से ही डरो। फिर (मैं कहता हूँ कि) मुझ से ही डरो ।४२।

---

1. हज़रत याक़ूब का पर्यायवाची नाम इस्राईल है। इब्रानी भाषा के शब्द कोष 'An alytical Helrew and choloe' में लिखा है कि इस्राईल शब्द याक़ूब के पर्यायवाची नाम के सिवा उनकी संतान पर भी बोला जाता है।

पवित्र क़ुर्आन में बनी इस्राईल शब्द अड़तालीस स्थानों में तथा यहूद शब्द नौ स्थानों में प्रयुक्त हुआ है। 'बनीइस्राईल' शब्द जाति की ओर संकेत करने के लिए और 'यहूद' शब्द धर्म की ओर संकेत करने के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

यहूद शब्द का भाष्य एक विख्यात यहूदी विद्वान 'जोजेफ़स' ने यह किया है कि 'जो व्यक्ति धर्म परिवर्तन करके यहूदी रीति-रिवाजों को अपना ले और यहूदी विधान का अनुसरण करे वह यहूदी है।

(जयूश इन्साइक्लोपीडिया प्रति नं० 10 पृष्ट नं 220)

और देखिए (निर्गमन 12:48.49)

2. थोड़ा या कम मूल्य से यह तात्पर्य है कि अल्लाह की बातें सर्वथा धर्म हैं। उनके बदले में सांसारिक माया न अपनाओ, क्योंकि माया धर्म के सामने बिलकुल तुच्छ वस्तु है।

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾

और जानते-बूझते हुए सच को झूठ के साथ न मिलाओ और न ही सत्य को (जान-बूझ कर) छिपाओ ।४३।

وَأَقِيمُوا الصَّلَوٰةَ وَآتُوا الزَّكَوٰةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ ﴿٤٤﴾

और नमाज़ को क़ायम करो अर्थात् विधिवत पढ़ा करो और ज़कात दिया करो और अल्लाह की उपासना करने वालों के साथ मिल कर अल्लाह की उपासना करो ।४४।

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٤٥﴾

क्या तुम दूसरे लोगों को तो भलाई करने को कहते हो, परन्तु अपने-आप को भूल जाते हो ? हालाँकि तुम किताब (तौरात) पढ़ते हो । क्या तुम फिर भी समझ से काम नहीं लेते ? ।४५।

وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَوٰةِ ۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ ﴿٤٦﴾

और सब्र (धैर्य) एवं दुआ (प्रार्थना) द्वारा (अल्लाह से) सहायता माँगो । निस्सन्देह यह बात नम्रता प्रकट करने वाले लोगों के सिवा दूसरों के लिए कठिन है ।४६।

الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلَاقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿٤٧﴾ ع

वे (विनम्र लोग) जो इस बात पर विश्वास रखते हैं कि वे अपने रब्ब से मिलने वाले हैं और इस बात पर भी कि वे उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं ।४७। (रुकू ५/५)

يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٤٨﴾

हे बनीइस्राईल ! मेरी उस भलाई और उपकार को याद करो जो मैं तुम पर कर चुका हूँ और उस भलाई को भी कि मैंने तुम्हें तमाम जहानों पर फ़ज़ीलत अर्थात् प्रधानता दी थी ।४८।

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ

और उस दिन से डरो कि जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति का स्थान न ले सकेगा न उसकी ओर से कोई सिफ़ारिश स्वीकार की जाएगी और न उससे किसी प्रकार का

يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٨﴾

बदला **स्वीकार** किया जाएगा और न उनकी सहायता की जाएगी ।४९।

وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿٤٩﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब हमने तुम्हें फ़िरऔन की जाति से उस अवस्था में **छुटकारा** दिलाया जब कि वह तुम्हें कड़ा अज़ाब दे रही थी। वह **तुम्हारे** लड़कों की हत्या कर देती थी और **तुम्हारी** स्त्रियों को जीवित रखती थी। इस बात में तुम्हारे रब्ब की ओर से तुम्हारे लिए एक बड़ी परीक्षा थी ।५०।

وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٠﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब हमने तुम्हारे लिए समुद्र को फाड़[1] दिया। इसके बाद तुम्हें नजात (छुटकारा) दिलाया और तुम्हारी आँखों के सामने फ़िरऔन की जाति को डुबो दिया ।५१।

وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٥١﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब हम ने मूसा से चालीस रातों का वादा किया। फिर तुम ने उसके (चले जाने के) बाद अत्याचारी बन कर बछड़े को उपास्य बना लिया ।५२।

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٢﴾

फिर भी हम ने तुम्हें क्षमा कर दिया ताकि तुम कृतज्ञ बन जाओ ।५३।

وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿٥٣﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब हम ने मूसा को किताब (तौरात) और फ़ुर्क़ान (चमत्कार) दिए ताकि तुम हिदायत पा सको ।५४।

---

1. उस समय ज्वार-भाटा के नियमानुसार भाटे के कारण समुद्र का पानी पीछे हट गया और हज़रत मूसा और उनके साथी समुद्र से पार हो गए, किन्तु फ़िरऔन की सेना के आने पर ज्वार के कारण समुद्र के बढ़ने का समय आ गया। अतः वह डूब गए।

(शेष पृष्ठ २१ पर)

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٥﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति के लोगों से कहा कि हे मेरी जाति के लोगो ! तुमने बछड़े को उपास्य बना कर निश्चय ही अपनी जानों पर अत्याचार किया है । इसलिए तुम अपने पैदा करने वाले की ओर झुक जाओ तथा प्रत्येक व्यक्ति[1] अपने आप को क़त्ल कर दे । यह बात तुम्हारे पैदा करने वाले के निकट तुम्हारे लिए बहुत अच्छी है । (जब तुम ने ऐसा कर लिया) तब उसने पुन: कृपा-दृष्टि से तुम्हारी ओर ध्यान दिया । निस्सन्देह वह (अपने बन्दों पर) बहुत ध्यान देने वाला और बार-बार दया करने वाला है ।५५।

وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٦﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब तुम ने कहा था कि हे मूसा ! हम तेरी तब तक नहीं मानेंगे जब तक हम अल्लाह को आमने-सामने न देख लें । इस पर तुम्हें एक घातक अज़ाब ने पकड़ लिया और तुम (अपनी आँखों से अपने बुरे कर्मों के बुरे परिणाम को) देख रहे थे ।५६।

(पृष्ठ २० का शेष)

वास्तव में ज्वार-भाटा अल्लाह के नियम के अनुसार आता है और अल्लाह ही उस समय हज़रत मूसा तथा फ़िरऔन को समुद्र पर ले गया था जब कि ज्वार-भाटा का प्रभाव अल्लाह की इच्छा के अनुसार फ़िरऔन और हज़रत मूसा पर पड़ने वाला था । इसलिए अल्लाह ने कहा कि हम ने समुद्र को फाड़ कर तुम्हें छुटकारा दिलाया ।

1. तौरात से विदित होता है कि यहूदियों को यह आदेश दिया गया था कि प्रत्येक भाई अपने भाई की और प्रत्येक मित्र अपने मित्र की तथा हर-एक पड़ोसी अपने पड़ोसी की हत्या करे । बाइबिल के कथनानुसार उस दिन तीन हज़ार व्यक्तियों की हत्या हुई । (निर्गमन 32:27.28) परन्तु तौरात की शिक्षा के अनुसार किसी व्यक्ति की हत्या करना सिवाय इसके कि उस व्यक्ति ने किसी व्यक्ति की हत्या की हो बिल्कुल हराम (निषिद्ध) है । अतएव यह अर्थ ठीक नहीं । यहाँ शाब्दिक अर्थ आत्महत्या भी अभीष्ट नहीं है । यह सारी घटना एक रूपक है और भाव यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने अहंकार एवं विषयवासनाओं का संयम और सदाचार द्वारा वध करे ।

ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۞

फिर हम ने तुम्हारी तबाही के बाद तुम्हें इसलिए उठाया[1] कि तुम कृतज्ञ बनो ।५७।

وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۞

और हमने तुम पर बादलों की छाया की और तुम्हारे लिए मन्न[2] और सल्वा उतारा और कहा कि इन पवित्र चीज़ों में से खाओ जो हमने तुम्हें दी हैं और उन्हों ने (नाफ़रमानी करके) हमें कोई हानि नहीं पहुँचाई बल्कि वे अपने आप को ही हानि पहुँचा रहे थे ।५८।

وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ۚ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۞

(उस समय को भी याद करो) जब हम ने तुम्हें कहा था कि इस बस्ती[3] में प्रवेश कर जाओ और उसमें से जहाँ से चाहो जी भर कर खाओ और उस के दरवाज़े से पूरी फ़रमाँबरदारी करते हुए दाखिल हो जाओ और कहते जाओ कि हम बोझ[4] हल्का करने की प्रार्थना करते हैं। तब हम तुम्हारे अपराधों को क्षमा कर देंगे और उपकार करने वालों को अवश्य बढ़ाएँगे ।५९।

---

1. अर्थात् हम ने तुम्हारे ईमान को और भी बढ़ाया और तुम्हारी संतान की भी वृद्धि करके फिर से तुम्हें शक्तिशाली बना दिया।

2. अरबी भाषा में 'मन्न' का अर्थ उपकार होता है। अतः जो वस्तु अल्लाह की कृपा से बिना किसी विशेष परिश्रम के प्राप्त हो जाए उसे 'मन्न' कहते हैं। खुम्ब और तुरन्जबीन को भी 'मन्न' कहते हैं। 'सल्वा' अरबी भाषा में बटेर पक्षी से मिलते-जुलते एक पक्षी का नाम है। आयत का अभिप्राय यह है कि हमने तुम्हारे लिए उस जगह खुम्बें और तुरन्जबीन पैदा कर दी थीं और वहाँ बटेर जैसे पक्षी भेज दिए थे।

3. बनी इस्राईल जिस समय मिस्र देश से निकल कर सीना नामक वन में से होते हुए किन्आन देश की ओर जा रहे थे तो रास्ते में वे कुछ ऐसे लोगों के पास से हो कर गए जो वनों में कुछ नगर और उपनगर बसा कर रहते थे। बनी इस्राईल को अपनी उदासीनता दूर करने के लिए उन नगरों में कुछ समय गुज़ारने की अनुमति मिल जाती थी। यहाँ ऐसे ही किसी एक नगर या ग्राम का वर्णन है।

4. अर्थात् पापों का बोझ।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝٦٠

फिर (उनकी दुष्टता देखो कि) उन अत्याचारियों ने उस बात को बदल[1] कर एक और ही बात कहनी शुरू कर दी जो हमारी बताई हुई बात के विपरीत थी। तब हम ने अत्याचारियों पर उन के नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) बन जाने के कारण आसमान से अज़ाब उतारा।६०। (रुकू ६/६)

وَإِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝٦١

(उस समय को भी याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति के लिए पानी माँगा तो हमने उसे कहा कि अपनी लाठी अमुक पत्थर पर मार। इस पर उस में से बारह स्रोत फूट पड़े, फिर हर-एक गिरोह ने अपना-अपना घाट पहचान लिया। (तब उन से कहा गया कि) अल्लाह की दी हुई रोजी में से खाओ पीयो और फ़सादी बन कर धरती पर फ़साद न फैलाओ।६१।

وَإِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْأَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا قَالَ أَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِيْ هُوَ أَدْنٰى بِالَّذِيْ هُوَ خَيْرٌ اهْبِطُوْا مِصْرًا فَإِنَّ

और (उस समय को भी याद करो) जब तुमने कहा था कि हे मूसा! हम एक ही प्रकार के भोजन पर सन्तोष नहीं कर सकेंगे। अतः तू हमारे लिए अपने रब्ब से प्रार्थना कर कि वह धरती से ऐसी चीजें जो उस में उगती हैं हमारे लिए पैदा करे जैसे साग, ककड़ियाँ, गेहूँ, मसूर और प्याज़। इस पर अल्लाह ने कहा, क्या तुम उत्तम वस्तु की अपेक्षा घटिया वस्तु को लेना चाहते हो? तो फिर किसी नगर में चले जाओ वहाँ जो कुछ तुम ने माँगा है वह तुम्हें वहाँ अवश्य

1. कुछ भाष्यकार कहते हैं कि मूल शब्द 'हित्ततुन' अर्थात् 'क्षमा कर' के स्थान पर उन्होंने हिन्ततुन अर्थात् गेहूँ शब्द कहना शुरू कर दिया था, परन्तु इस कल्पना की आवश्यकता नहीं। दुष्ट व्यक्ति हँसी के रूप में अनेक प्रकार के शब्दों में परिवर्तन कर देता है।

لَكُمْ مَّا سَأَلْتُمْ ۗ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٦١﴾ ع

मिलेगा। तब उनहें सदा के लिए तिरस्कृत (ज़लील) और विवश बना दिया गया और वे अल्लाह् के अज़ाब के पात्र बन गए। इसका यह कारण था कि वे अल्लाह् के आदेशों का इन्कार किया करते थे और बिना किसी कारण के नबियों की हत्या करना चाहते थे। यह पाप उनमें अवज्ञा करने और सीमोल्लंघन के कारण पैदा हो गया था।६२। (रुकू ७/७)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾

जो लोग ईमान लाए हैं और जो यहूदी हैं तथा ईसाई और साबी हैं उनमें से जो सम्प्रदाय भी अल्लाह् पर और क़ियामत के दिन पर कामिल ईमान[1] रखता है और उस ने ईमान के अनुकूल कर्म भी किए हैं। निस्सन्देह उनके लिए उनके रब्ब के पास उचित प्रतिफल है। न तो उन्हें भविष्य के सम्बन्ध में किसी प्रकार का भय होगा और न ही भूतकाल की किसी कोताही पर पछतावा होगा।६३।

---

1. इस आयत से कुछ लोग भूल-वश यह समझते हैं कि मानों पवित्र क़ुर्आन का इस से यह अभिप्राय है कि यहूदी, ईसाई और साबी (नक्षत्र-पूजक) आदि अपने-अपने धर्म में आस्था रखते हुए भी मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। मानों उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं, परन्तु यह विचार ठीक नहीं। पवित्र क़ुर्आन इस आयत के द्वारा यह बताता है कि चाहे कोई व्यक्ति मुसलमान होने का दावा करे या वह यहूदी हो या ईसाई या साबी आदि वह तभी सफलता प्राप्त कर सकता है जब कि क़ुर्आन के बताए हुए समस्त सिद्धान्तों पर पूरा-पूरा ईमान रखता हो। केवल मौखिक ईमान लाभ नहीं देगा। ऐसा व्यक्ति अल्लाह् से लेकर क़ियामत तक के सारे सिद्धान्तों को मानता हो और इस्लाम के बनाए हुए ढंग के अनुसार शुभ एवं उचित कर्म करता हो।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٤﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब हम ने तुम से प्रण लिया था और तुम्हारे ऊपर[1] तूर पर्वत को ऊँचा किया था एवं कहा था कि जो कुछ हम ने तुम्हें दिया है उसे मज़बूती से पकड़ लो तथा जो उस में है उसे अच्छी तरह याद रखो ताकि तुम संयमी बन जाओ।६४।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ ۚ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٥﴾

फिर इस स्पष्ट अनुदेश मिल जाने के बाद भी तुम विमुख हो गए। यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती तो निस्सन्देह तुम हानि उठाने वालों में से हो जाते।६५।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿٦٦﴾

और तुम उन लोगों के परिणाम को जान चुके हो जिन्होंने तुम में से सब्त[2] के बारे में ज़्यादती की थी। इस पर हम ने उन्हें कहा था कि जाओ तुच्छ[3] बन्दर बन जाओ।६६।

فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ ﴿٦٧﴾

अतः हम ने इस घटना को उस समय के मौजूद लोगों के लिए और उन के बाद आने वालों के लिए शिक्षा का तथा संयमियों के लिए उपदेश का साधन बना दिया।६७।

---

1. अर्थात् तुम्हें तूर पर्वत की तलहटी में खड़ा किया था। देखिए निर्गमन अध्याय नं० 18।

2. यहूदियों के लिए सब्त अर्थात् शनिवार का दिन पवित्र रखा गया था। उस दिन यहूदियों को अल्लाह की उपासना के सिवा कोई कारोबार करने की आज्ञा न थी। देखिए निर्गमन 20:11.12।

3. पवित्र क़ुर्आन, अहादीस तथा इतिहास से सिद्ध होता है कि आप के पास बन्दरों के से गुणों वाले लोग तो अवश्य आया करते थे, किन्तु शारीरिक रूप में बन्दर बने हुए लोग कदापि नहीं आए थे। इसलिए मूल शब्द 'किरदतन ख़ासेईन' अर्थात् तुच्छ बन्दर से यह मतलब नहीं कि वे रूप, आकार और आकृति में बन्दर बने हुए थे, बल्कि उन को बन्दरों जैसे गुण ग्रहण कर लेने के कारण बन्दरों से उपमा दी गई है।

(शेष पृष्ठ २६ पर)

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِۦٓ إِنَّ ٱللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تَذْبَحُوا۟ بَقَرَةً ۖ قَالُوٓا۟ أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۖ قَالَ أَعُوذُ بِٱللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ ٱلْجَٰهِلِينَ ﴿٦٧﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि अल्लाह तुम को गो[1] ज़िबह् कहने का आदेश देता है। उन्होंने कहा, क्या तू हमें हँसी का निशाना बनाता है ? (मूसा ने) कहा, मैं इस बात से अल्लाह् की शरण माँगता हूँ कि मैं (ऐसा काम करके) मूर्ख लोगों में शामिल हो जाऊँ।६८।

قَالُوا۟ ٱدْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِىَ ۚ قَالَ إِنَّهُۥ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌۢ بَيْنَ ذَٰلِكَ ۖ فَٱفْعَلُوا۟ مَا تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾

उन्होंने कहा, हमारे लिए अपने रब्ब से प्रार्थना कीजिए कि वह हमें स्पष्ट रूप से बताए कि वह गो कैसी है। उस (मूसा) ने कहा कि वह (अल्लाह्) कहता है कि वह गो ऐसी है कि न तो बूढ़ी है और न बछिया बल्कि वह इस के बीच पूरी जवान है। इसलिए जो अनुदेश तुम्हें दिया जाता है उस का पालन करो।६९।

(पृष्ठ २५ का शेष)

क़ुर्आन-मजीद के भाष्यकारों के महान् नेता 'मुजाहिद' ने भी इस का यही अर्थ किया है कि उन के दिलों में बिगाड़ पैदा हो गया था, परन्तु उन के बाहरी रूप, आकार तथा आकृति में किसी प्रकार का कोई विकार या बिगाड़ पैदा नहीं हुआ था।

यहाँ मूल शब्द 'किरदतन' का विशेषण 'ख़ासेईन' रखा गया है जो विवेकशील अर्थात् मानव जाति के लिए प्रयुक्त होता है। चौपायों जैसी जाति वाले बन्दरों के लिए 'ख़ासिया' आना चाहिए था। अत: यहाँ बन्दर शब्द से अभीष्ट पशु जाति वाले बन्दर नहीं बल्कि बन्दर शब्द उपमेय के रूप में प्रयुक्त हुआ है। इससे तात्पर्य यह है कि बनी इस्राईल के बहुत से लोगों के दिलों में बिगाड़ पैदा हो गया था कि उन में अल्लाह का भय नाम मात्र को भी नहीं रह गया था। उन के सारे काम केवल दिखाने के थे उन में वास्तविकता कुछ भी नहीं थी।

1. अरबी मूल शब्द 'बक़रतुन'—गो जाति-वाचक संज्ञा है जो गाय और बैल दोनों के लिए प्रयुक्त होता है। इतिहास से पता चलता है कि बनीइस्राईल फ़िरऔन की मिस्र-निवासी जाति के लोगों से प्रभावित थे, क्योंकि मिस्र के लोग बैल की पूजा किया करते थे। अत: क़ुर्आन ने दोनों प्रकार के विचार रखने वाले लोगों को सामने रख कर 'बक़रतुन' (गो-बैल) शब्द प्रयोग किया है।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ﴿٧٠﴾

उन्होंने कहा, हमारे लिए अपने रब्ब से पुनः निवेदन किजिए कि वह हमें स्पष्ट रूप से बताए कि उस का रंग क्या है? मूसा ने कहा, वह कहता है कि वह एक पीले रंग की गो है। उसका रंग बहुत गहरा है और वह देखने वालों को बहुत भाती है।७०।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧١﴾

वे बोले, हमारे लिए अपने रब्ब से फिर प्रार्थना कीजिए कि वह स्पष्ट रूप से बताए कि वह (गो) कैसी है? हमें तो ऐसी सब गायें एक समान दिखाई देती हैं और (विश्वास रखिए कि) यदि अल्लाह चाहे तो हम अवश्य ही इस हिदायत को मान लेंगे।७१।

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيهَا ۚ قَالُوا الْآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۚ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧٢﴾ ع

(मूसा ने) कहा, वह (अल्लाह) कहता है कि वह ऐसी गो है जो न तो जुए के नीचे लाई गई है कि हल चलाती हो और न खेती की सिंचाई करती है। वह बिलकुल स्वस्थ है। उस में कोई दूसरा रंग नहीं पाया जाता। वे बोले, अब तूने हम पर वास्तविक बात खोल दी है। अतः उन्होंने उस गो को जिबह कर दिया। वास्तव में वे पहले ऐसा करने को तय्यार न थे।७२। (रुकू ८/८)

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا ۖ وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٧٣﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब तुम ने एक व्यक्ति की हत्या[1] करने का दावा किया। फिर उस के बारे में तुम ने मतभेद किया। वास्तव में जो कुछ तुम छिपाते थे अल्लाह उसे प्रकट करने वाला था।७३।

---

1. इस से अभीष्ट हज़रत मसीह की फाँसी वाली घटना है। इस विषय में ईसाइयों ने तो यह कह दिया कि मसीह अपनी इच्छा से फाँसी पर चढ़ गए थे, क्योंकि वे संसार वालों के लिए कफ़्फ़ारा बनना चाहते थे और यहूदियों ने दावा किया कि निस्सन्देह हम ने मसीह को क़त्ल कर दिया है। अल्लाह कहता है कि

(शेष पृष्ठ २८ पर)

فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ۭ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۙ وَ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝

इस पर हम ने कहा कि इस (घटना) को उस (जान) के साथ घटने वाली कुछ दूसरी घटनाओं से मिला कर देखो (तो तुम्हें वास्तविकता का ज्ञान हो जाएगा)। अल्लाह इसी प्रकार मुर्दों को जीवित[1] करता है और तुम्हें अपने चमत्कार दिखाता है ताकि तुम समझ से काम लो।७४।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ۭ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ۭ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاۗءُ ۭ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

इस के बाद फिर तुम्हारे दिल सख़्त उन गए चुनाँचे वह पत्थरों की तरह बल्कि उन से भी ज़्यादा सख़्त हैं और निस्सन्देह पत्थरों में से तो कुछ ऐसे भी होते हैं जिन में से नदियाँ बहती हैं और कुछ ऐसे भी होते हैं कि जब वे फट जाते हैं तो उन में से पानी निकलने लगता है और इन (दिलों) में से भी कुछ ऐसे हैं जो अल्लाह के डर से (क्षमा माँगते हुए) गिर[2] जाते हैं और जो कुछ तुम कर रहे तो अल्लाह उस से कदापि बे ख़बर नहीं है।७५।

(पृष्ठ २७ का शेष)

वे दोनों झूठे हैं। वास्तव में हज़रत मसीह जीवित ही फाँसी से उतर आए थे। यदि ऐसी ही दशा में फाँसी से उतरने वालों की परिस्थितियों को देखो तो तुम्हें भाँली-भाँति विदित हो जाएगा कि इतिहास तथा चिकित्सा-शास्त्र के अनुसार वे लोग जीवित ही होते हैं। अत: मसीह भी फाँसी से जीवित ही उतरे थे और पवित्र क़ुर्आन ने यदि उनके विषय में यह कहा है कि तुम ने एक जान की हत्या की तो इस से तात्पर्य यह है कि तुम ने इस बात का दावा किया कि हम ने उसे क़त्ल कर दिया है जैसे यहूदियों का यह कहना कि हम ने मर्यम के पुत्र ईसा को क़त्ल कर दिया है और जैसा कि ईसाई कहते हैं कि वह हमारे पापों का कफ़्फ़ारा होने के लिए मर गया।

1. अर्थात् ऐसे उपाय बताता है जिस से वे लोग जो तुम्हारे विचार में मुर्दा थे वस्तुत: सजीव सिद्ध हो जाते हैं।

2. इस आयत के दोनों प्रकार से अर्थ किए जा सकते हैं :—

(शेष पृष्ठ २९ पर)

أَفَتَطْمَعُونَ أَن يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُ مِن بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٦﴾

हे मुसलमानों ! क्या तुम आशा रखते हो कि वे (यहूदी) तुम्हारी बात मान लेंगे ? हालाँकि उन में से कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह् के कलाम को सुनते हैं फिर उसे समझ लेने के बाद उस के भाव को बिगाड़ देते हैं और वे (इस कुकर्म के बुरे परिणाम को भली-भाँति) जानते हैं ।७६।

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ قَالُوا أَتُحَدِّثُونَهُم بِمَا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُم بِهِ عِندَ رَبِّكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٧٧﴾

और जब ये लोग मोमिनों से मिलते हैं तो कह देते हैं कि हम भी मोमिन हैं तथा जब आपस में एकान्त में मिलते हैं तो (एक-दूसरे को दोष देते हुए) कहते हैं कि क्या तुम उन्हें वे बातें बताते हो जो अल्लाह् ने तुम पर खोली हैं ? इस का परिणाम[1] यह निकलेगा कि वे (मुसलमान) उन जानकारियों के आधार पर अल्लाह् के सामने तुम्हारे विरुद्ध प्रमाण रख देंगे । क्या तुम समझ से काम नहीं लेते ? ।७७।

أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٨﴾

क्या ये लोग (इस बात को) नहीं जानते कि जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ प्रकट करते हैं अल्लाह् उसे जानता है ।७८।

وَمِنْهُمْ أُمِّيُّونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٧٩﴾

और उन में से कुछ अनपढ़ हैं । उन्हें कुछ झूठी बातों के सिवा अपनी किताब का कुछ भी ज्ञान नहीं । वे केवल अटकल-पच्चू बातें करते रहते हैं ।७९।

(पृष्ठ २८ का शेष)

(क) अल्लाह् से भय दिलाने वाली बातों से जैसे आँधियाँ, बाढ़, भूकम्प आदि के कारण कुछ पत्थर गिर पड़ते हैं ।

(ख) यह कि मानव-हृदयों में से कुछ ऐसे होते हैं जो अल्लाह् के डर से क्षमा माँगते हुए उस के आगे गिर जाते हैं ।

1. यहाँ मूल शब्द में 'ल' परिणाम बोधक अक्षर है । इस का तात्पर्य यह है कि पहली बात का परिणाम यह होगा कि मुसलमान तुम्हें दोषी बनाने के लिए प्रमाण उपस्थित कर देंगे ।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ۤ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ۝٨٠

जो लोग अपने हाथों से किताब लिखते हैं और उस के द्वारा थोड़ा सा मूल्य प्राप्त करने के लिए कह देते हैं कि यह (किताब) अल्लाह की ओर से है उन के लिए एक कड़ा अज़ाब (निश्चित) है। फिर (हम कहते हैं कि) उन के लिए उस के कारण जो उन के हाथों ने लिखा है एक कड़ा अज़ाब (निश्चित) है और जो वे कमाते हैं उसके कारण भी अज़ाब (निश्चित) है।८०।

وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ۭ قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٨١

और वे कहते हैं कि हमें कुछ इने-गिने दिनों को छोड़ कर जहन्नम (नरक) की आग कदापि नहीं छूएगी। तू उन से पूछ, क्या तुम ने अल्लाह से कोई बचन लिया है? (यदि ऐसा है) तब तो वह कदापि अपने बचन के विरुद्ध कुछ नहीं करेगा या तुम अल्लाह के विषय में ऐसी बात कहते हो जिस का तुम्हें कोई ज्ञान नहीं है।८१।

بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْۗئَتُهٗ فَاُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٨٢

हाँ! जो लोग किसी प्रकार के बुरे कर्म करेंगे उन के बुरे कर्म उन्हें (चारों ओर से) घेर लेंगे। वे नरक (की आग में पड़ने) वाले हैं और इस में पड़े रहेंगे।८२।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٨٣ ع

और जो लोग ईमान लाए हैं तथा शुभ कर्म किए हैं वे उस में सदैव निवास करेंगे।८३। (रुकू ९/९)

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۣ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى

और (उस समय को भी याद करो) जब हम ने बनी इस्राईल से दृढ़ प्रतिज्ञा ली थी कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की उपासना नहीं करोगे और माता-पिता से अच्छा व्यवहार[1] करोगे तथा (इसी प्रकार) निकट

1. देखिए निर्गमन 20:12।

وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۭ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٨٤﴾

सम्बन्धियों, अनाथों और दीन-दुखियों के साथ भी और (उन से यह भी प्रतिज्ञा ली थी) कि लोगों के साथ विनम्रता पूर्वक सद्व्यवहार किया करो, नमाज़ को क़ायम रखा करो और ज़कात दिया करो, परन्तु (इस के बाद) तुम में से थोड़े से लोगों के सिवा शेष सभी विमुख हो गए।८४।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٨٥﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब हम ने तुम से वादा लिया था कि तुम (परस्पर एक-दूसरे का) रक्त-पात[1] नहीं करोगे तथा अपने-आप[2] को अपने घरों से नहीं निकालोगे। तुम ने इसे स्वीकार कर लिया था और (इस वादा के बारे में हमेशा ही) तुम गवाही[3] देते रहे हो।८५।

ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۭ وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ ۭ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ

फिर तुम ही तो हो कि (इस वादा के होते हुए) आपस में एक-दूसरे की हत्या करते हो और अपने में से एक समूह को पाप तथा अत्याचार के साथ (उनके शत्रुओं की) सहायता करते हुए उन्हें उन के घरों से निकालते हो और यदि वह तुम्हारे पास बन्दी हो कर (सहायतार्थ) आएँ तो तुम फिद्या (अर्थ दण्ड) दे कर छुड़ा लेते हो जब कि उन का घरों से निकालना ही तुम पर हराम किया था। सो क्या तुम तौरात के एक भाग पर तो ईमान रखते हो और एक भाग का इन्कार करते हो? सो तुम में से जो लोग

---

1. अर्थात् एक यहूदी वंश दूसरे यहूदी वंश को हानि नहीं पहुँचाएगा। (विवरण के लिए देखिए निर्गमन 20:16.17)
2. अर्थात् अपनी जाति के लोगों को।
3. देखिए निर्गमन 20:3.4 ।

ذٰلِكَ مِنكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّونَ إِلَىٰ أَشَدِّ الْعَذَابِ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٨٥﴾

ऐसा करते हैं उन का दण्ड इसी (सांसारिक) जीवन में अपमान के सिवा और क्या है ? जो उन्हें मिलेगा तथा वे क़ियामत के दिन उस से भी कड़े अज़ाब की ओर लौटाए जाएँगे और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उस से कदापि बे-ख़बर नहीं ।८६।

أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٨٦﴾ ع

और यही वे लोग हैं जिन्होंने सांसारिक जीवन को बाद में आने वाले जीवन पर प्रधानता दे रखी है। अतः न तो उन पर से अज़ाब हल्का किया जाएगा न उनकी (किसी अन्य रूप से) सहायता की जाएगी ।८७।(रुकू १०/१०)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ وَاٰتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُولٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ ﴿٨٧﴾

और निस्सन्देह हम ने मूसा को किताब दी थी। इसके बाद हमने उन रसूलों को (जिनको तुम जानते हो) उसके पीछे[1] भेजा और हम ने मर्यम के पुत्र ईसा को भी खुले-खुले निशान और चमत्कार दिए तथा रुहुलक़ुदुस[2] द्वारा उसे शक्ति दी (किन्तु तुम ने सब का विरोध किया)। फिर तुम ही बताओ कि क्या यह बात बहुत बुरी नहीं कि जब भी तुम्हारे पास कोई रसूल ऐसी शिक्षा ले कर आया जिसे तुम्हारे दिल पसन्द नहीं करते थे, तब तुम ने अभिमान (का प्रदर्शन) किया। फलस्वरूप कुछ रसूलों को तो तुम ने झुठलाया तथा कुछ रसूलों की हत्या[3] की ।८८।

---

1. पीछे भेजने से अभिप्राय यह है कि उस के पदचिन्हों का अनुकरण करना तथा उस के धर्म की सेवा करना।

2. रुहुलक़ुदुस—पाकरूह, पवित्र आत्मा।

3. अभिप्राय यह है कि वह ऐसा घिनौना कर्म था कि आज भी उस की कल्पना करें तो वह आँखों के सामने आ जाता है।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۭ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝٨٨

और (हमें मालूम है कि) उन्होंने (यह भी) कहा है (कि) हमारे दिल तो पर्दों में हैं, (किन्तु यह बात) नहीं, बल्कि अल्लाह ने उनके इन्कार के कारण उन्हें फटकार दिया है। अतः वे बहुत ही थोड़े हैं जो ईमान लाते हैं।८९।

وَلَمَّا جَاۗءَھُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَھُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَي الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ښ فَلَمَّا جَاۗءَھُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۡ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَي الْكٰفِرِيْنَ ۝٨٩

और जब उनके पास अल्लाह की ओर से एक किताब आई जो उस किताब (की भविष्य-वाणियों) को जो उनके पास है सत्य सिद्ध करने वाली है तो इस बात के होते हुए कि वे लोग (पहले अल्लाह से) इन्कार करने वालों पर विजय पाने की प्रार्थना किया करते थे। जब उनके पास वह बात आ गई तो उन्होंने उसे पहचान लेने के बाद उस का इन्कार कर दिया। अतः ऐसे इन्कार करने वालों पर अल्लाह की फटकार है।९०।

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَھُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَاۗءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰي غَضَبٍ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٩٠

वह बात अत्यन्त बुरी है जिसके बदले में उन्होंने अपने-आप को बेच रखा है और वह उनका अल्लाह की उतारी हुई वाणी से इस बात से बिगड़ कर इन्कार करना है कि अल्लाह अपने भक्तों में से जिस पर चाहता है क्यों अपनी कृपा करता है ? इस कारण ये लोग अज़ाब पर अज़ाब के पात्र बन गए हैं। ऐसे ही इन्कार करने वालों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब निश्चित है।९१।

وَاِذَا قِيْلَ لَھُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَاۗءَهٗ ۤ وَھُوَ الْحَقُّ

और जब उन से कहा जाए कि जो कुछ अल्लाह ने उतारा है उस पर ईमान लाओ तो वे कहते हैं कि हम उस पर ईमान लाते हैं जो हम पर उतारा गया है और (यह कहते हुए) उसके बाद आने वाले कलाम का इन्कार कर देते हैं, हालांकि वह उस कलाम को जो उनके पास है सच्चा करके (स्वयं भी) पूरे

مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۗ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٢﴾

तौर पर सच्चा (सिद्ध हो चुका) है। तू उनसे कह दे कि यदि तुम वास्तव में मोमिन हो तो फिर तुम इस से पहले क्यों अल्लाह के नबियों की हत्या करने के पीछे पड़े रहे हो।९२।

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٣﴾

निस्सन्देह मूसा तुम्हारे पास खुले-खुले निशान ले कर आया था, फिर भी तुम ने उसके (तूर पर्वत पर जाने के) बाद अन्याय करते हुए अल्लाह को छोड़ कर बछड़े को उपास्य बना लिया।९३।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ۗ وَاُشْرِبُوْا فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ؕ قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖٓ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٤﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब हमने तुम से प्रण लिया था एवं तूर पर्वत को तुम्हारे ऊपर ऊँचा[1] किया था (यह बताते हुए कि) जो कुछ हम ने तुम्हें प्रदान किया है उसे दृढ़ता से पकड़ो और अल्लाह की आज्ञा का पालन करो। इस पर (तुम में से जो लोग हमारे सम्बोधित थे) उन्होंने कहा था कि (बहुत अच्छा) हमने सुन लिया (हम यह भी कह देते हैं कि इस आज्ञा को) ना मानने का हमने फ़ैसला कर लिया है। इन के इन्कार के कारण उनके दिलों में बछड़ा (अर्थात् उसका प्रेम) घर कर गया। तू उन से कह दे कि यदि तुम (अपने कथनानुसार) मोमिन हो तो वह काम बहुत बुरा है जिस के करने का तुम्हें तुम्हारा ईमान आदेश देता है।९४।

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٥﴾

तू उन्हें कह दे कि यदि अल्लाह के पास दूसरे लोगों को छोड़ कर केवल तुम्हारे ही लिए स्वर्ग-धाम (आख़िरत का घर) है तो यदि तुम (अपने इस कथन में) सच्चे हो तो मौत[2] की इच्छा करो।९५।

---

1. अर्थात् तुम्हें तूर पर्वत की तलहटी में खड़ा किया था। (देखिए निर्गमन 19:18)

2. अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से मुबाहिला करो जैसा कि सूर: आले-इम्रान आयत नं० 62 में विवरण है। 'मुबाहिला'—एक दूसरे को शाप देते हुए परमात्मा से न्याय माँगना है।

وَلَنْ يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٩٦﴾

और (हे मुसलमानो ! याद रखो कि) उन के हाथ कर्म रूप में जो कुछ आगे भेज चुके हैं उन कुकर्मों के कारण वे इस (प्रकार की मौत) की कदापि इच्छा नहीं करेंगे। अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।९६।

وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَىٰ حَيَاةٍ ۚ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعَمَّرَ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾

और निस्सन्देह तू उन को भी तथा कुछ और लोगों को भी जो मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) हैं सभी लोगों से बढ़ कर सांसारिक जीवन का लोभी पाएगा। उन में से हर-एक यही चाहता है कि उसे हज़ार वर्ष की आयु मिल जाए। वास्तव में उसका लम्बी आयु पाना उसे अज़ाब से नहीं बचा सकता और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे देख रहा है।९७। (रुकू ११/११)

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٩٨﴾

तू (उन से) कह दे कि जो व्यक्ति जिब्राईल का इसलिए विरोधी हो कि उस ने तेरे दिल पर इस (क़ुर्आन) को अल्लाह के आदेश के अनुसार उतारा है जो उस (ईशवाणी) को सत्य सिद्ध करने वाला है जो इस से पहले मौजूद है और वह मोमिनों के लिए हिदायत एवं शुभ-सूचना है।९८।

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ ﴿٩٩﴾

(याद रहे कि) जो व्यक्ति अल्लाह और उसके फ़रिश्तों तथा उसके रसूलों, जिब्राईल और मिकाईल का शत्रु हो तो निस्सन्देह ऐसे इन्कार करने वालों का अल्लाह भी शत्रु है।९९।

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۖ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ ﴿١٠٠﴾

और निस्सन्देह हम ने तुझ पर खुले-खुले चमत्कार उतारे हैं तथा नाफ़रमानों के सिवा उनका कोई भी इन्कार नहीं करता।१००।

أَوَكُلَّمَا عَاهَدُوا عَهْدًا نَبَذَهُ فَرِيقٌ مِنْهُمْ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٠﴾

और क्या (यह बुरी बात नहीं कि) जब भी उन लोगों ने कोई प्रण किया तो उन में से एक दल ने उसे फेंक दिया, यही नहीं बल्कि उन में से बहुत से तो ईमान के पास भी नहीं फटकते ।१०१।

وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ كِتَابَ اللَّهِ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾

और जब उन के पास अल्लाह की ओर से एक ऐसा रसूल आया जो उस किताब को जो उन के पास है सत्य सिद्ध करने वाला है तो उन लोगों में से जिन्हें वह किताब दी गई थी एक गिरोह ने अल्लाह की किताब (क़ुर्आन) को अपनी पीठों के पीछे फेंक दिया, मानों वे उसे जानते ही नहीं ।१०२।

وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُو الشَّيَاطِينُ عَلَىٰ مُلْكِ سُلَيْمَانَ ۖ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ وَلَٰكِنَّ الشَّيَاطِينَ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ وَمَا أُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ ۚ وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۖ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا

और वे (यहूदी) उस राह पर चल पड़े जिस राह पर सुलेमान की हुकूमत के समय में उस की हुकूमत के विद्रोही और बाग़ी चलते थे और सुलेमान इन्कार करने वाला न था बल्कि उस के विद्रोही ही इन्कार करने वाले थे। वे लोगों को धोखा देने वाली बातें सिखाते थे और वे (अपने विचार में) उस बात का भी अनुसरण करते हैं जो बाबिल में हारूत और मारूत[1] नामक दो फ़रिश्तों पर उतारी गई थी, हालाँकि वे दोनों तो किसी को तब तक कुछ नहीं सिखाते थे जब तक यह नहीं कह देते थे कि हम (अल्लाह की ओर से) तुम्हारे लिए परीक्षा के रूप में (नियुक्त हुए) हैं। इसलिए (हे सम्बोधित गण ! हमारे आदेशों का) इन्कार न करना। इस पर वे लोग उन दोनों से ऐसी बात सीखते

1. फ़रिश्तों जैसे गुण रखने वाले मानव।

مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ۗ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۗ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۗ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ۗ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝١٠٣

थे जिस से पति-पत्नी के बीच विभेद[1] डाल देते थे। वे दोनों अल्लाह की आज्ञा के बिना किसी को इस से हानि[2] नहीं पहुँचाते थे तथा (इस के विपरीत) ये लोग (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के शत्रु) तो वह बात सीख रहे हैं जो उन्हें हानि पहुँचाएगी लाभ नहीं देगी। निस्सन्देह ये लोग जान चुके हैं कि जो इस ढंग को अपनाएगा आख़िरत में उस का कोई भी हिस्सा नहीं होगा और वह वस्तु जिसके बदले में उन्होंने अपने-आप को बेच रखा है अत्यन्त बुरी है। काश वे समझते।१०३।

1. वे लोगों को एक विशेष धार्मिक शिक्षा देते थे। यदि पति-पत्नी में से पत्नी दीक्षित हो जाती थी तो वह उस शिक्षा-दीक्षा को प्रधानता देते हुए अपनी संस्था की बातों को अपने पति से गुप्त रखने लग जाती थी और यदि पति दीक्षित हो जाता था तो वह भी अपनी पत्नी से अपनी संस्था की बातें गुप्त रखने लग जाता था। इस प्रकार वे दोनों एक-दूसरे को अपना भेद नहीं बताते थे।

2. इस में बताया गया है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के प्रादुर्भाव से पहले यहूदियों ने दो बार षड्यन्त्र रचे। एक बार हज़रत सुलेमान के विरुद्ध गुप्त समितियाँ बना कर हज़रत सुलेमान को इन्कार करने वाला और मूर्ति का पूजा करने वाला कहना प्रारम्भ कर दिया और उन के राज्य का सर्वनाश करने के लिए प्रयत्न किए। ('राजाओं का वृत्तांत' पहला भाग 11:16 और 'इतिहास' नामक पुस्तक दूसरा भाग 10:3.4)

वास्तव में यह षड्यन्त्र अल्लाह के एक सच्चे नबी के विरुद्ध था। फलस्वरूप उन का यह प्रयत्न सफल न हो सका और धीरे-धीरे यहूदियों की शक्ति क्षीण होती चली गई। अन्त में वे अपने देश से निकाल दिए गए।

दूसरी बार हारूत-मारूत फ़रिश्ता स्वभाव दो ईश भक्तों के सम्पर्क में 'सायरस' फ़ारस और मेद के राजा के समर्थन में बाबिल के सम्राट के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा गया। यह प्रयास अल्लाह की इच्छा के अनुकूल था। उस समय यहूदी उत्पीड़ित थे और सरकार अत्याचारी थी। अत: यह गुप्त प्रयास सफल हुआ। यहूदियों के शत्रुओं का विनाश हो गया और वे विदेशों से स्वदेश लौट आए।

(शेष पृष्ठ ३८ पर)

وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ۚ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٤﴾ ع ١٢ / ١٢

और यदि ये लोग ईमान लाते तथा संयम धारण करते तो (इन्हें विदित हो जाता कि) अल्लाह् की ओर से प्राप्त होने वाला प्रतिफल ही उत्तम है। काश ये लोग समझते।१०४। (रुकू १२/१२)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ۗ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٠٥﴾

हे ईमान लाने वालो ! (रसूल को सम्बोधित करते हुए) राइना[1] मत कहा करो अपितु उन्ज़ुर्ना कहा करो और उसकी बात ध्यान से सुना करो और (याद रखो कि) इन्कार करने वालों के लिए दुःखदायक अज़ाब निश्चित है।१०५।

(पृष्ठ ३७ का शेष)

(विवरण के लिए देखिए History of the world Vol. I, Page 126)

यह बताने के लिए कि अब यहूदी लोग हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के सर्वनाश के लिए प्रयत्न कर रहे हैं और गुप्त रूप से ईरान के सम्राट 'किस्रा' को हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के विरुद्ध भड़का रहे हैं। इस षड्यन्त्र का क्या फल निकलेगा ? बाबिल की घटना में ये उत्पीड़ित थे और अल्लाह् की इच्छा के अनुसार दो ईश भक्तों की प्रेरणा से सफल हुए थे, किन्तु अब ये लोग अल्लाह् के सच्चे रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के विरुद्ध षड्यन्त्र रच रहे हैं। अतः बाबिल की घटना की भाँति सफल न हो सकेंगे बल्कि असफल रहेंगे तथा हानि उठाएँगे। इन का परिणाम हज़रत सुलेमान के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने वालों जैसा होगा। फिर ऐसा ही हुआ और उनकी कोशिशों का फल यह निकला कि किस्रा-इरान के सम्राट का भी सर्वनाश हुआ और ये लोग स्वयं भी असफल हुए।

1. अरबी भाषा में यदि किसी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करना हो तो 'राइना' कहते हैं; किन्तु यह उस समय कहा जाता है कि जब दोनों पक्ष परस्पर बराबर हों, क्योंकि 'राइना' का अर्थ है—'तू हमारा ध्यान रख हम तुम्हारा ध्यान रखेंगे', परन्तु जब सम्बोधित पद और सम्मान आदि में बढ़ कर हो तो उस समय 'राइना' की अपेक्षा 'उनज़ुर्ना' कहते हैं अर्थात् हे महामन ! हमारा भी ध्यान रखिए तथा इस प्रकार बात कीजिए कि हम भी समझ सकें। इस आयत में मुसलमानों को यह शिक्षा दी गई है कि तुम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को 'राइना' न कहा करो। सम्भव है इस से तुम्हारे अन्दर अविश्वास की भावनाओं का संचार होने लगे, क्योंकि इस शब्द का वास्तविक अर्थ यह है कि हम और तुम बराबर हैं। इसलिए तुम 'उनज़ुर्ना' कहा करो ताकि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का आदर व सम्मान सदैव तुम्हारे दिलों में जमा रहे।

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿١٠٦﴾

किताब वालों और मुश्रिकों में से जिन लोगों ने (हमारे रसूल का) इन्कार किया है वह पसन्द नहीं करते कि तुम पर तुम्हारे रब्ब की ओर से किसी प्रकार की भलाई उतारी जाए और (वह भूल जाते हैं कि) अल्लाह् जिसे चाहता है अपनी कृपा का विशेष पात्र बना लेता है और अल्लाह् बड़ा कृपा करने वाला है।१०६।

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ۗ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٠٧﴾

जिस किसी भी सन्देश को हम मन्सूख़[1] कर दें अथवा उसे भुलवा दें तो हम उस से उत्तम या उस जैसा (सन्देश फिर से संसार में) ले आते हैं। क्या तुझे ज्ञान नहीं कि अल्लाह् प्रत्येक बात पर (जिस के करने का वह निश्चय कर ले) पूर्ण रूप से सामर्थ्य रखता है।१०७।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٠٨﴾

क्या तू नहीं जानता कि आसमानों और ज़मीन पर अल्लाह् ही की हुकूमत है और अल्लाह् को छोड़ कर न तो कोई तुम्हारा मित्र है और न ही कोई सहायक।१०८।

اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْــَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۗ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٠٩﴾

क्या तुम अपने रसूल से उसी प्रकार से प्रश्न करना चाहते हो जिस प्रकार इस से पहले मूसा से प्रश्न किए गए थे और (याद रखो) जिस व्यक्ति ने इन्कार को ईमान से बदल लिया तो समझो कि वह सीधे रास्ते से भटक गया।१०९।

---

1. इस से यह अभिप्राय नहीं कि हम पवित्र क़ुर्आन की किसी आयत को मन्सूख़ कर दें बल्कि तात्पर्य यह है कि जब हम किसी चमत्कार को टला देते हैं तो उस से श्रेष्ठतर चमत्कार ले आते हैं अथवा उसी जैसा दूसरा चमत्कार प्रकट कर देते हैं ताकि हिदायत का साधन बने।

इस आयत का एक अर्थ यह भी है कि पवित्र क़ुर्आन से पहले जो-जो शिक्षाएँ तौरात या इन्जील में उतरी हुई थीं उन्हें पवित्र क़ुर्आन के उतरने के समय निरस्त किया गया, क्योंकि उन से उत्तम शिक्षाएँ

(शेष पृष्ठ ४० पर)

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١١٠﴾

किताब वालों में से बहुत से लोग इस बात के बाद कि सच उन पर अच्छी तरह खुल गया है फिर उस ईर्ष्या के कारण जो उन के अपने ही अंदर से पैदा हुई है कि तुम्हारे ईमान ला चुकने के बाद तुम्हें फिर इन्कार करने वाला बना दें। इसलिए तुम उस समय तक जब कि अल्लाह अपना आदेश उतारे उन्हें क्षमा करो तथा उन से सहनशीलता का व्यवहार करो। निस्सन्देह अल्लाह हर-एक बात के करने का पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है।११०।

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۭ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١١١﴾

और नमाज़ को नियमानुसार क़ायम करो और ज़कात दिया करो (और याद रखो कि) जो नेकी और भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे तुम अल्लाह के पास पाओगे। निस्सन्देह अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा है।१११।

وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ۭ تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ ۭ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١١٢﴾

और वे (यहूदी और ईसाई) यह भी कहते हैं कि जन्नत में उन लोगों के सिवा (जो यहूदी हों या ईसाई[1] हों) दूसरा कोई भी कदापि प्रवेश नहीं करेगा। यह केवल उनकी मनो-कामनाएँ हैं। तू उन्हें कह दे कि यदि तुम सच्चे हो तो अपने प्रमाण प्रस्तुत करो।११२।

(पृष्ठ ३९ का शेष)

क़ुर्आन के रूप में उतारी गई हैं। प्रसंग से भी यही अर्थ सिद्ध होता है। जहाँ तक पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा और आदेशों का प्रश्न है वे कदापि निरस्त (मन्सूख़) न होंगे अपितु वे क़ियामत तक चलते चले जाएँगे जैसा कि क़ुर्आन शरीफ़ में बार-बार इस का स्पष्टी-करण किया गया है।

1. इस वाक्य का यह अर्थ है कि यहूदी कहते हैं कि केवल यहूदी ही स्वर्ग में जाएंगे और ईसाई कहते हैं कि केवल ईसाई ही स्वर्ग में जाएँगे। यह अर्थ नहीं कि ईसाई यह समझते हों कि ईसाई तथा यहूदी दोनों ही स्वर्ग में जाएँगे और यहूदी यह समझते हों कि यहूदी और ईसाई दोनों ही स्वर्ग के अधिकारी हैं।

بَلٰى مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗٓ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١١٢﴾

(भला बताओ कि दूसरे लोग स्वर्ग में) क्यों नहीं प्रवेश करेंगे ? जो व्यक्ति अपने-आप को अल्लाह् को सौंप देगा तथा वह शुभ कर्म करने वाला भी होगा तो उस के रब्ब के पास उस के लिए बदला निश्चित है एवं ऐसे लोगों को न (तो भविष्य में) किसी प्रकार का भय होगा और न (गुज़री हुई किसी कोताही पर) पछतावा होगा ।११२। (रुकू १३/१३)

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ ۪ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ ۙ وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١١٣﴾

और यहूदी कहते हैं कि ईसाई किसी सत्य बात पर क़ायम नहीं हैं और ईसाई कहते हैं यहूदी किसी सत्य बात पर क़ायम नहीं हैं, हालाँकि वे दोनों एक ही किताब (तौरात) पढ़ते हैं । इसी प्रकार वे लोग जिन को ज्ञान नहीं उन जैसी ही बात कहा करते थे । सो जिस बात में ये मतभेद करते हैं उस के बारे में अल्लाह् क़ियामत के दिन उन के बीच फ़ैसला करेगा ।११४।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ۬ؕ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١٥﴾

और उस व्यक्ति से बढ़ कर अत्याचारी कौन हो सकता है जिस ने अल्लाह् की मस्जिदों से लोगों को रोका कि उनमें उसका नाम लिया जाए और उन्हें उजाड़ने के पीछे पड़ गया । इन लोगों के लिए उचित न था कि (मस्जिदों) में प्रवेश करते, किन्तु (अल्लाह् से) डरते हुए । उन के लिए संसार में भी अपमान है और आख़िरत में भी बड़ा अज़ाब (निश्चित) है ।११५।

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٦﴾

पूर्व और पश्चिम अल्लाह् ही के हैं । अतः तुम जिधर भी अपना मुँह करोगे उधर ही अल्लाह् का ध्यान होगा । निस्सन्देह अल्लाह् बहुत बढ़ा-चढ़ा कर देने वाला और बहुत जानने वाला है ।११६।

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿۱۱۷﴾

और वे कहते हैं कि अल्लाह् ने (अपने लिए) एक पुत्र[1] बना लिया है। (उनकी यह् बात ठीक नहीं) वह् तो हर-एक कमज़ोरी से पाक है बल्कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है उसी का है। सभी उसी के आज्ञाकारी हैं।११७।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۱۱۸﴾

वह् आसमानों और ज़मीन की रचना करने वाला है। जब वह् किसी चीज़ (को वजूद में लाने) का फ़ैसला कर लेता है तो उसके बारे में केवल यह् कहता है कि हो जा! तो वह् हो जाती है।११८।

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿۱۱۹﴾

वे लोग जिन्हें (अल्लाह् की हिक्मतों का) ज्ञान नहीं वे कहते हैं कि अल्लाह् हम से (स्वयं) क्यों बात नहीं करता अथवा क्यों हमारे पास उस का चमत्कार नहीं आता? ठीक इसी प्रकार इन जैसी बात वे लोग भी कहा करते थे जो इनसे पहले थे। इन सब के दिल एक जैसे हो गए हैं। हम तो ऐसे लोगों के लिए जो ईमान ला चुके हैं हर तरह् के निशान खोल-खोल कर वर्णन कर चुके हैं (परन्तु ये लोग मानते ही नहीं)।११९।

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْئَلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿۱۲۰﴾

निस्सन्देह हम ने तुम्हें शुभ-समाचार देने वाला और डराने वाला बना कर सत्य एवं तथ्य के साथ भेजा है और तुझ से नरक में जाने वालों के सम्बन्ध में पूछ-ताछ नहीं की जाएगी।१२०।

1. मूल शब्द 'वलद' का अर्थ है—पुत्र और पुत्री। यह शब्द एक के लिए भी, दो के लिए भी तथा इस से अधिक के लिए भी बोला जाता है। यहूदियों और ईसाइयों के मंतव्य और विचार के अनुसार यहाँ एक पुत्र अनुवाद किया गया है अन्यथा आयत का अर्थ यह है कि अल्लाह् का न कोई पुत्र है, न पुत्री, न एक पुत्र-पुत्री, न अनेक पुत्र-पुत्रियाँ।

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۗ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِىْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝

और (याद रखो कि) जब तक तू उन के मत का अनुसरण नहीं करेगा यहूदी तुझ से कदापि प्रसन्न नहीं होंगे और न ईसाई ही। तू (उन्हें) कह दे कि अल्लाह की हिदायत ही वास्तविक हिदायत है और (हे सम्बोधित!) तू इस ज्ञान के बाद भी जो तेरे पास आ चुका है यदि उनकी इच्छाओं का अनुसरण करेगा तो अल्लाह की ओर से न तो तेरा कोई मित्र होगा और न कोई सहायक ही।१२१।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ۗ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۗ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

जिन लोगों को हम ने किताब[1] दी है वे उसका अनुसरण (उसी प्रकार) करते हैं जिस प्रकार उसका अनुसरण करना चाहिए। वे लोग उस पर पूरा-पूरा ईमान रखते हैं और जो लोग उस का इन्कार करेंगे वही हानि पाने वाले हैं।१२२। (रुकू १४/१४)

يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝

हे बनी इस्राईल! मेरे उस उपकार को याद करो जो मैं तुम पर कर चुका हूँ और (उस बात को भी) कि मैंने तुम्हें सारे संसार पर प्रधानता[2] प्रदान की थी।१२३।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝

और उस दिन से डरो कि जब कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का स्थान न ले सकेगा और न उस से किसी प्रकार का कोई बदला स्वीकार किया जाएगा और न उसे कोई सिफ़ारिश फ़ायदा देगी तथा न उन की कोई सहायता की जाएगी।१२४।

---

1. यहाँ किताब से अभिप्राय पवित्र क़ुर्आन है। इस आयत में अल्लाह ने यहूदियों को दोषी ठहराया है कि तुम ने तो तौरात से लापरवाही की, किन्तु अब ये लोग जिन्हें हम ने क़ुर्आन दिया है इसे पूर्ण रूप से अपनाते हैं तथा इस पर इन लोगों का साधारण ईमान ही नहीं बल्कि पक्का ईमान है।

2. इस प्रधानता का अभिप्राय उसी समय के लोगों से है। उन में अगले-पिछले लोग सम्मिलित नहीं हैं। (मुफ़्रदाते राग़िब)

وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّىْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ ؕ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٢٥﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब कि इब्राहीम के रब्ब ने उसकी कुछ बातों द्वारा परीक्षा ली और उस ने उन्हें पूरा कर दिया। (इस पर अल्लाह ने) कहा, निस्सन्देह मैं तुझे लोगों का इमाम नियुक्त करने वाला हूँ। (इब्राहीम ने) कहा, और मेरी सन्तान में से भी (इमाम बनाइयो)। अल्लाह ने कहा, (ठीक है परन्तु) मेरे बचन से अत्याचारियों को कोई लाभ नहीं पहुँचेगा[1]।१२५।

وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَعَهِدْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿١٢٦﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब हम ने इस घर (काबा) को लोगों के लिए बार-बार एकत्रित होने का स्थान बनाया था और अमन देने वाला भी तथा (आदेश दिया था कि) इब्राहीम के खड़े होने के स्थान को नमाज़ की जगह बनाओ और हम ने इब्राहीम एवं इस्माईल को ताकीदी हुक्म दिया था कि मेरे घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों, एतकाफ़[2] करने वालों, रुकू करने वालों और सजदः करने वालों के लिए पाक और साफ़ रखो।१२६।

---

1. अर्थात् इब्राहीम की सन्तान में से जो व्यक्ति अत्याचारी हो जाएँगे उन को इमाम नही बनाया जाएगा।

2. 'एतकाफ़' का शाब्दिक अर्थ—एकान्त में ध्यान मग्न होना है। परिभाषा में एतकाफ़ रमज़ान की बीसवीं तिथि को मस्जिद में एकान्त-वास करके आसन, प्रार्थना तथा जप-तप करते हुए ध्यान मग्न हो कर बैठ जाने को कहते हैं। ऐसे एकान्त तपस्वी के लिए रोज़ेदार होना ज़रूरी है। एकान्त तपस्वी सांसारिक बन्धनों तथा अन्य विषयों से अलग हो जाता है तथा अधिकतर समय प्रार्थना करने, दरूद पढ़ने, (एक प्रार्थना का नाम है) ईश्वर की स्तुति और विधिवत् नमाज़ पढ़ने, अपनी त्रुटियों और भूलों की क्षमा माँगने तथा पवित्र क़ुर्आन का पाठ करने में व्यतीत करता है। उपासना का यह ढंग आत्म-शुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का उत्तम साधन है जिसे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने स्वयं अपनाया तथा मुसलमानों को भी अपनाने की प्रेरणा दी।

(शेष पृष्ठ ४५ पर)

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۲۷﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब इब्राहीम ने कहा था कि हे मेरे रब्ब ! इस स्थान को एक शान्तिमय नगर बना दे तथा इस के निवासियों में से जो भी अल्लाह पर और आख़िरत पर ईमान रखें उन्हें (सब प्रकार के) फल प्रदान कर। (इस पर अल्लाह ने) कहा कि जो व्यक्ति इन्कार करेगा मैं उसे भी कुछ समय तक फ़ायदा पहुँचाऊँगा फिर उसे विवश करके नरक के अज़ाब की ओर ले जाऊँगा और यह परिणाम अत्यन्त बुरा है।१२७।

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۲۸﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब इब्राहीम इस घर (काबा) की नींव उठा रहा था और (उस के साथ) इस्माईल भी तथा वे दोनों प्रार्थना करते जाते थे कि हे हमारे रब्ब ! हमारी ओर से इस सेवा को स्वीकार कर। तू ही है जो बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है।१२८।

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَاۤ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۲۹﴾

हे हमारे रब्ब ! और (हम यह भी प्रार्थना करते हैं कि) हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना ले और हमारी सन्तान में से भी एक जमाअत को अपना आज्ञाकारी बना तथा हमें हमारी (स्थिति के अनुसार) उपासना का ढंग बता और हमारी ओर अपनी कृपा के साथ प्रवृत्त हो। निस्सन्देह तू अपने भक्तों की ओर बहुत ध्यान देने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।१२९।

(पृष्ठ ४४ का शेष)

इस्लाम ने सन्यास और वैराग्य आदि से रोका है, परन्तु उपासना में तल्लीनता व एकाग्रता लाने के लिए एतकाफ़ की प्रथा प्रचलित की है। यह सन्यास-जीवन का संतुलित तथा सुगम मार्ग है। इस में एकान्त तपस्वी संसार में रहते हुए भी संसार से अलग हो जाता है। इस प्रकार इस आसन विधि से तपस्वी अल्लाह के निकट हो जाता है तथा उसकी कृपा का विशेष पात्र बन जाता है।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

और हे हमारे रब्ब ! (हमारी यह भी प्रार्थना है कि) तू उन्हीं में से एक ऐसे रसूल[1] का प्रादुर्भाव कर जो उन्हें तेरी आयतें पढ़ कर सुनाए और उन्हें किताब और हिक्मत सिखाए और पवित्र करे। निस्सन्देह तू ही ग़ालिब और हिक्मतों वाला है।१३०। (रुकू १५/१५)

وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ۭ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

और उस व्यक्ति के सिवा जिस ने अपना सर्वनाश कर लिया हो इब्राहीम के धर्म से कौन विमुख हो सकता है। निस्सन्देह हम ने उसे इस संसार में भी सर्वश्रेष्ठ बनाया था और निश्चय ही वह आख़िरत में भी नेक लोगों में सम्मिलित होगा।१३१।

اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

जब उस के रब्ब ने उस से कहा कि तू हमारा आज्ञाकारी बन जा तो उस ने (उत्तर में) कहा, मैं तो पहले से ही सारे जहानों के रब्ब की आज्ञा का पालन करने वाला हूँ।१३२।

وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ۭ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝

और इब्राहीम ने अपने पुत्रों को और याक़ूब ने भी अपने पुत्रों को इस बात की वसीय्यत की कि हे मेरे पुत्रो ! निस्सन्देह अल्लाह ने इस धर्म को तुम्हारे लिए चुन लिया है। अतः तुम कदापि न मरना[2]; किन्तु इस हालत में कि तुम अल्लाह के पूर्ण रूप से आज्ञाकारी हो।१३३।

1. इस आयत में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के संसार में आने के लिए प्रार्थना की गई है। अतः आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल की इन्हीं प्रार्थनाओं के फलस्वरूप अरब देश के मक्का नगर में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का प्रादुर्भाव हुआ।

2. मौत किसी के बस में नहीं है। आयत का अभिप्राय यह है कि प्रति क्षण आज्ञाकारी बने रहो, कहीं ऐसा न हो कि मौत अचानक ही आ जाए।

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۳﴾

क्या तुम उस समय मौजूद थे जब याक़ूब की मौत का समय आया और जब उस ने अपने पुत्रों से कहा कि तुम मेरे बाद किस की उपासना करोगे? तो उन्होंने (उत्तर में) कहा कि हम तेरे उपास्य तथा तेरे पूर्वजों इब्राहीम, इस्माईल और इस्हाक़ के उपास्य की उपासना किया करेंगे जो अकेला ही उपास्य है और यह कि हम सब उसी के आज्ञाकारी हैं।१३४।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۴﴾

यह वह गिरोह है जो अपना समय पूरा कर के मर चुका है। उस ने जो कुछ कमाया (उस का हानि-लाभ) उस के लिए है तथा जो कुछ तुम ने कमाया (उस का हानि-लाभ) तुम्हारे लिए है और जो कुछ वे किया करते थे उस के बारे में तुम से पूछ-ताछ नहीं की जाएगी।१३५।

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۳۵﴾

और (क्या तुम ने सुना है कि) वे यह भी कहते हैं कि यहूदी या ईसाई हो जाओ। इस प्रकार तुम हिदायत पा जाओगे। तू (उन से) कह दे कि यूँ नहीं, बल्कि इब्राहीम के धर्म का अनुसरण करो, जो (अल्लाह की ओर ही) झुकने वाला था और (याद रखो कि) वह मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) में से नहीं था।१३६।

قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ

तुम कहो कि हम अल्लाह पर और जो कुछ हमारी ओर उतारा गया है तथा जो कुछ इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब और उसकी संतान पर उतारा गया था तथा जो कुछ मूसा और ईसा को प्रदान किया गया था और (इसी प्रकार) जो कुछ दूसरे नबियों को उन के

لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾

रब्ब की ओर से दिया गया था उस (सारी वह्य पर) ईमान रखते हैं। हम उन में से किसी (नबी) के बीच कोई भेद-भाव नहीं करते और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।१३७।

فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣٧﴾

सो यदि वे लोग (उसी प्रकार) ईमान लाएँ जिस प्रकार तुम इस (शिक्षा) पर ईमान ला चुके हो तो मानों वे हिदायत पा गए और यदि वे मुंह मोड़ लें तो (जान लो कि) वे केवल मत-भेद करने पर तुले हुए हैं। इस अवस्था में अल्लाह तुझे अवश्य उन (की दुष्टता) से सुरक्षित रखेगा। वह बहुत ही सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है।१३८।

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَّنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ﴿١٣٨﴾

हे मुसलमानों! तुम उन से कहो कि हम तो अल्लाह का ही धर्म अपनाएँगे और धर्म सिखाने (के बारे) में अल्लाह से बढ़ कर दूसरा और कौन हो सकता है? और हम उसी के उपासक हैं।१३९।

قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِي اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿١٣٩﴾

तू (उन से) कह दे कि क्या तुम हमारे साथ अल्लाह के बारे में झगड़ते हो? हालाँकि वह हमारा भी रब्ब है और तुम्हारा भी। हमारे कर्म हमारे लिए हैं तथा तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए। हम तो उस से श्रद्धा रखते हैं।१४०।

اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ۗ قُلْ

(हे किताब वालो!) क्या तुम यह कहते हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उस की सन्तान यहूदी या ईसाई

ءَاَنۡتُمۡ اَعۡلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنۡ كَتَمَ شَهَادَةً عِنۡدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۴۱﴾

थे'? तू उन से पूछ कि क्या तुम अधिक जानते हो या अल्लाह? और उस से बढ़ कर अत्याचारी कौन हो सकता है जो उस गवाही को छिपाए जो उस के पास अल्लाह की ओर से है और अल्लाह उस से कदापि अनजान नहीं जो तुम करते हो।१४१।

تِلۡكَ اُمَّةٌ قَدۡ خَلَتۡ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتۡ وَلَكُمۡ مَّا كَسَبۡتُمۡ ۚ وَلَا تُسۡـَٔلُوۡنَ عَمَّا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۴۲﴾ ع

यह वह गिरोह है जो अपना समय पूरा कर के मर चुका है। उस ने जो कुछ कमाया (उस का हानि-लाभ) उसी के लिए है और जो कुछ तुम ने कमाया (उस का हानि-लाभ) तुम्हारे लिए है और जो कुछ वे किया करते थे उस के बारे में तुम से पूछ-ताछ नहीं की जाएगी।१४२। (रुकू १६/१६)

1. तौरात में लिखा है कि हज़रत इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़ और याक़ूब ये सारे लोग हज़रत मूसा तथा ईसा से वर्षों पहले हो चुके हैं। फिर वे यहूदी और ईसाई किस प्रकार हो सकते हैं।

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

मूर्ख लोग अवश्य कहेंगे कि इन (मुसलमानों) को इन के उस क़िब्ले[1] से जिस पर वे पहले थे किस बात ने फिरा[2] दिया है। (जब वे ऐसा कहें) तो उन से कहिए कि पूर्व-पश्चिम अल्लाह ही के हैं। वह जिसे चाहता है सीधी राह दिखा देता है।१४३।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝

और (हे मुसलमानो ! जिस प्रकार हम ने तुम्हें सीधी राह दिखाई है) उसी प्रकार हम ने तुम्हें सर्वश्रेष्ठ जाति भी बनाया है ताकि तुम दूसरे लोगों के निगरान (निरीक्षक) बनो और यह रसूल तुम्हारा निगरान हो और हम ने उस क़िब्ले को जिस पर तू (इस से पहले) था केवल इस लिए नियुक्त किया था कि हम उस व्यक्ति को जो इस रसूल का आज्ञाकारी है उस व्यक्ति की अपेक्षा जो अपनी एड़ियों पर फिर जाता है (स्पष्ट रूप में) जान लें और यह बात उन लोगों के सिवा जिन को अल्लाह ने सीधी राह दिखा दी है (दूसरे लोगों के लिए) अवश्य कठिन है तथा अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान को व्यर्थ जाने दे। निस्सन्देह अल्लाह सारी मानव-जाति पर अपार दया करने वाला एवं बार-बार कृपा करने वाला है।१४४।

---

1. क़िब्ला —वह पवित्र स्थान जिस की ओर संसार के सारे मुसलमान मुंह करके नमाज़ पढ़ते हैं और यह मक्का में स्थित है। इसे पवित्र क़ुर्आन ने काबा, बैतुल हराम और मस्जिदे हराम का भी नाम दिया है।

2. क़िब्ला परिवर्तन की घटना मदीना में हुई। मक्का में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम नमाज़ के समय ऐसे स्थान पर खड़े होते थे कि आप के सामने 'काबा' भी रहता था और 'बैतुल मक़्दस' भी। यहूदी इस बात पर प्रसन्न थे कि हमारे क़िब्ला (बैतुल मक़्दस) की ओर भी मुंह है। जब आप मदीना में आए तो कुछ समय गुज़रने पर आप को वह्य द्वारा बताया गया कि 'काबा' की ओर मुंह करके नमाज पढ़ा करो।

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝

हम तेरे ध्यान का बार-बार आकाश की ओर फिरना देख रहे हैं। अतः हम तुझे उस क़िब्ले की ओर अवश्य फेर देंगे जिसे तू पसंद करता है। सो अब तू अपना मुंह 'मस्जिदे-हराम' (काबा) की ओर फेर ले और (हे मुसलमानो !) तुम भी जहाँ कहीं हो उस (क़िब्ला) की ओर मुँह किया करो और जिन लोगों को **किताब** (तौरात) दी गई है निस्सन्देह वे जानते हैं कि यह (क़िब्ला के परिवर्तन का आदेश) तेरे रब्ब की ओर से (भेजी हुई एक) सच्चाई है तथा जो कुछ ये लोग कर रहे हैं अल्लाह उस से कदापि बेख़बर नहीं है।१४५।

وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَاۤ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

और जिन लोगों को (तुम से पहले) किताब दी गई है यदि तू उन के पास प्रत्येक प्रकार का चमत्कार भी ले आए तो भी वे तेरे क़िब्ले का अनुसरण नहीं करेंगे और न ही तू उन के क़िब्ले का अनुसरण कर सकता है और न ही उन में से कोई पक्ष अपने विपक्षी के क़िब्ले का अनुसरण[1] करेगा और (हे सम्बोध्य !) यदि इस के बाद भी जब कि तेरे पास ईश्वरीय ज्ञान आ चुका है तूने उन की मनोकामनाओं का अनुसरण किया तो निस्सन्देह तू ऐसी हालत में अत्याचारियों में सम्मिलित होगा।१४६।

(पृष्ठ ५० का शेष)

अतः आप ने ऐसा ही किया। इस पर मूर्खों ने आक्षेप किया जिस का उत्तर इन आयतों में दिया गया है कि काबा अपने-आप में कोई विशेषता नहीं रखता। वास्तविक सत्ता अल्लाह की ही है तथा इस सर्व-व्यापक अल्लाह के लिए पूर्व-पश्चिम एक समान है।

1. ईसाई लोग पूर्व दिशा की ओर मुंह करके उपासना किया करते हैं जैसा कि नज्रान के ईसाई जब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के पास धार्मिक बात के लिए आए तो उन्होंने पूर्व की ओर मुंह कर के

(शेष पृष्ठ ५२ पर)

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۗ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤٧﴾

वे लोग जिन्हें हम ने किताब दी है इस सच्चाई को (उसी तरह) पहचानते हैं जिस तरह अपने पुत्रों को पहचानते हैं और निस्सन्देह उन में कुछ लोग जान-बूझ कर सच को छिपाते हैं।१४७।

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١٤٨﴾

यह सच्चाई तेरे रब्ब की ओर से है। अतः तू सन्देह करने वालों में से कदापि न बन। १४८। (रुकू १७/१)

وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۗ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٤٩﴾

और प्रत्येक व्यक्ति का कोई न कोई उद्देश्य[1] और दृष्टिकोण होता है जिस की ओर वह पूरा-पूरा ध्यान देता है। अतः (तुम्हारा दृष्टिकोण यह होना चाहिए कि) तुम भलाई में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो। तुम जहाँ कहीं भी होगे अल्लाह तुम्हें इकट्ठा करके ले आएगा। अल्लाह निश्चय ही हर उस बात के करने का सामर्थ्य रखता है जिस के करने का-वह इरादा कर ले।१४९।

(पृष्ठ ५१ का शेष)

उपासना की थी। ईसाई इस का कारण यह बताते कि हज़रत ईसा की शुभ-सूचना देने वाला नक्षत्र पूर्व दिशा में उदय हुआ था। यहूदियों में सामरी वंश के लोग जैसा कि इन्जील यूहन्ना 4:20 से सिद्ध होता है युरोशलम के एक पर्वत की ओर मुँह करके उपासना किया करते थे और दूसरे यहूदी बैतुलमक़्दस की ओर मुंह करके उपासना किया करते थे। अतः इन सब में क़िब्ले के विषय में मतभेद था। इसी की ओर इस आयत में संकेत किया गया है कि उन में से कोई एक भी दूसरे के क़िब्ले की ओर मुंह नही करेगा।

1. मूल शब्द 'विज्हतुन' का अर्थ है वह उद्देश्य जिस की ओर मनुष्य अपना ध्यान दे। (मुफ़दाते राग़िब)

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ مِن رَّبِّكَ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٥٠﴾

और तू जिस स्थान से भी निकले अपना ध्यान 'मस्जिदे हराम' (काबा) की ओर फेर[1] ले और निस्सन्देह यह (आदेश) तेरे रब्ब की ओर से आई हुई सच्चाई है और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उस से कदापि बेख़बर नहीं है ।१५०।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا

और तू जिस जगह से भी निकले अपना ध्यान 'मस्जिदे हराम' की ओर फेर दे और तुम भी जहाँ कहीं हो अपने मुँह उसी की ओर[2] किया करो ताकि उन लोगों के सिवा जो इन (विरोधियों) में से अत्याचारी बने हैं अन्य लोगों की ओर से तुम पर कोई आरोप[3] न

1. पवित्र स्थान 'काबा' की ओर उपासना करते समय मुँह करना तो किसी स्थान से बाहर निकलने से सम्बन्ध नहीं रखता, अपितु मनुष्य चाहे किसी स्थान से निकले अथवा किसी स्थान में प्रवेश करे हर हालत में मुसलमानों के लिए ज़रूरी है कि वे नमाज़ पढ़ते समय पवित्र काबा की ओर मुँह किया करें। अतः इस आयत के शब्दों से स्पष्ट होता है कि इस स्थान पर युद्ध का वर्णन है क्योंकि यहाँ 'ख़रूज' (निकलना) शब्द युद्ध के लिए निकलने के अर्थों में प्रयुक्त किया गया है। भाव यह है कि हे मुसलमानो! अब तुम्हें युद्ध करने के लिए विवश कर दिया जाएगा और तुम जहाँ कहीं भी होगे तुम पर दबाव डाला जाएगा कि तुम मक्का-निवासियों से युद्ध करो। ऐसे अवसर के लिए अल्लाह आज्ञा देता है कि जब वे तुम्हें विवश करें तो अवश्य युद्ध करो, परन्तु युद्ध का केन्द्रीय उद्देश्य काबा को विजय करना हो। सारांश यह कि इस स्थान पर काबा के विजय करने की ओर संकेत है।

2. इस स्थान पर उन मुसलमानों का वर्णन है जो युद्ध-क्षेत्र से बाहर थे और उन्हें कहा गया था कि जो मुसलमान युद्ध में फंस गए हैं उन का तो यह कर्त्तव्य है कि जहाँ से भी वे युद्ध करने के लिए निकलें वे काबा की विजय को अपना केन्द्रीय दृष्टिकोण बनाएँ तथा उन मुसलमानों का जो युद्ध क्षेत्र से बाहर हैं यह कर्त्तव्य है कि वे काबा की ओर मुँह करके उपासना किया करें और अपना ध्यान तथा प्रार्थनाएँ सदैव इसी उद्देश्य के लिए करते रहें कि अल्लाह हमें काबा दे दे।

3. यदि तुम मक्का विजय नहीं करोगे तो शत्रु का तुम पर आरोप रहेगा किन्तु, यदि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम अपने युद्धों की धारा क़िब्ला-विजय की ओर मोड़ देंगे तथा दूसरे मुसलमान भी नमाज़ों और प्रार्थनाओं में इस बात का ध्यान रखेंगे तो काबा विजय हो जाएगा और इन्कार करने वाले लोगों तथा यहूदियों का किसी प्रकार का कोई आक्षेप मुसलमानों पर नहीं रहेगा।

مِنْهُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥١﴾

रहे। अतः तुम उन (अत्याचारियों) से न डरो तथा मुझ से ही डरो। (यह आदेश मैंने इस कारण दिया है कि तुम पर लोगों का कोई आक्षेप न रहे) और ताकि मैं तुम पर अपनी निअमत (पुरस्कार) पूरी करूँ और यह कि तुम हिदायत पाओ।१५१।

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِّنكُمْ يَتْلُوا عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿١٥٢﴾

(उसी प्रकार) जिस प्रकार हम ने तुम्हीं में से एक रसूल तुम्हारे लिए भेजा है जो तुम्हें हमारी आयतें पढ़ कर सुनाता है और तुम्हें पवित्र करता है तथा किताब (क़ुर्आन) और हिक्मत सिखाता है और तुम्हें वह कुछ सिखाता है जिस का तुम्हें पहले ज्ञान नहीं था।१५२।

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ﴿١٥٣﴾

सो (जब मैं इतना कृपालु हूँ तो) तुम मुझे याद रखो मैं भी तुम्हें याद रखूँगा और मेरे कृतज्ञ (शुक्र करने वाले) बनो तथा मेरे कृतघ्न (नाशुक्री करने वाले न) बनो।१५३। (रुकू १८/२)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٤﴾

हे ईमान वाले लोगो ! धैर्य और प्रार्थना द्वारा अल्लाह से सहायता माँगो। निस्सन्देह अल्लाह धैर्य करने वाले लोगों के साथ होता है।१५४।

وَلَا تَقُولُوا لِمَن يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَٰكِن لَّا تَشْعُرُونَ ﴿١٥٥﴾

और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाते हैं उन के बारे यह मत कहो कि वे मुर्दा हैं। (वे मुर्दा) नहीं बल्कि जीवित हैं; किन्तु तुम नहीं समझते।१५५।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۗ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٦﴾

और हम तुम्हारी परीक्षा कुछ भय से, भूख से और जान-माल तथा फलों की कमी द्वारा अवश्य लेंगे और (हे रसूल!) तुम इन धैर्य करने वाले लोगों को शुभ-समाचार सुना दे ।१५६।

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿١٥٧﴾

उन पर जब भी कोई विपत्ति या दुःख आ पड़े (तो वे व्याकुल नहीं होते बल्कि यह) कहते हैं कि हम तो अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं ।१५७।

أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٨﴾

यही वे लोग हैं जिन पर उन के रब्ब की ओर से बरकतें उतरती हैं और रहमत (दया) भी तथा यही लोग सीधी राह पर चलने वाले हैं ।१५८।

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِن شَعَائِرِ اللَّهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٩﴾

सफ़ा[1] और मर्वा निश्चय ही अल्लाह के निशानों में से हैं। अतः जो व्यक्ति इस घर (काबा) का हज्ज या उम्रा करे तो उसे (काबा की परिक्रमा तथा) इनके बीच तेज़ चलने में कोई पाप[2] नहीं। जो व्यक्ति भी अपनी ख़ुशी से अच्छे कर्म करे (तो वह समझ ले कि) अल्लाह शुभ कर्मों का गुणज्ञ (क़द्रदान) है और वह बहुत जानने वाला है ।१५९।

---

1. 'सफ़ा' और 'मर्वा' मक्का नगर में दो पहाड़ियाँ हैं। इन दोनों के बीच एक छोर से दूसरे छोर तक नियमानुसार हाजी लोगों को तेज-तेज चलना तथा कुछ भाग में दौड़ना होता है।

2. मदीना के लोग इस स्थान में घूमना-फिरना अवैध जानते थे। इसलिए कहा गया है कि घूमने-फिरने में कोई पाप नहीं।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ﴿۱۶۰﴾

जो लोग इस (कलाम) को जिसे हम ने सुस्पष्ट युक्तियों तथा हिदायतों से सुसज्जित उतारा है (इस बात के बाद कि) हम ने उसे इस किताब (क़ुर्आन) में स्पष्ट रूप से वर्णन कर दिया है, छिपाते हैं। ये ऐसे ही लोग हैं जिन पर अल्लाह की फटकार है और दूसरे फटकार करने वाले भी उन पर फटकार करते हैं।१६०।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۱﴾

हाँ! जिन लोगों ने तौबः (प्रायश्चित) की और सुधार कर लिया तथा (अल्लाह के आदेशों को) स्पष्ट रूप से वर्णन कर दिया तो ऐसे लोगों की तौबः स्वीकार करूँगा अर्थात् इन पर मैं अपनी कृपा करूँगा और मैं (अपने भक्तों का) बहुत ध्यान रखने वाला एवं बार-बार दया करने वाला हूँ।१६१।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۶۲﴾

जिन लोगों ने इन्कार किया और इन्कार की अवस्था में ही मर गए। निस्सन्देह ऐसे लोगों पर अल्लाह की और फ़रिश्तों तथा सब लोगों की फटकार है।१६२।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۱۶۳﴾

वे उस में पड़े रहेंगे। न तो उन का अज़ाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें (सांस लेने का) अवसर दिया जाएगा।१६३।

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۴﴾ ع

और तुम्हारा उपास्य केवल एक ही उपास्य है उस के सिवा कोई उपास्य नहीं। वह बहुत कृपा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।१६४। (रुकू १९/३)

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِن مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيَٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَٰتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٥﴾

आसमानों और ज़मीन के बनाने में, रात और दिन के आगे-पीछे आने में तथा उन नौकाओं में जो मानव-समाज के लाभार्थ सामान लेकर समुद्र में चलती हैं तथा उस पानी में जो अल्लाह ने बादल से उतारा, फिर उसके द्वारा धरती को उसके मरने के बाद जीवित किया तथा उस में प्रत्येक प्रकार के जीव-जन्तु फैलाए और वायु के इधर-उधर चलने में तथा उन बादलों में जो आसमान और जमीन के बीच सेवा के लिए लगाए हुए हैं। निस्सन्देह जो लोग बुद्धि से काम लेते हैं उनके लिए (इन में) अनेक प्रकार के निशान हैं।१६५।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِن دُونِ اللَّهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِّلَّهِ ۗ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ ﴿١٦٦﴾

और कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अल्लाह के सिवा दुसरों को (अल्लाह का) साझी बनाते हैं और उन से ऐसा ही प्रेम करते हैं जैसा अल्लाह से, किन्तु जो लोग ईमान लाए हैं वे सब से बढ़ कर अल्लाह ही से प्रेम करते हैं और जो लोग इस अत्याचार के अपराधी हैं। यदि वे (उस समय को) जब कि वे अज़ाब को (अपने सामने) देखेंगे किसी तरह अब देख लेते तो समझ जाते कि सब शक्तियों का मालिक अल्लाह ही है और यह कि अल्लाह कड़ा अज़ाब (दण्ड) देने वाला है। १६६।

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتُّبِعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ﴿١٦٧﴾

और (काश कि वे लोग उस समय को अब देख लेते) जब कि वे लोग जिन का अनुसरण किया जाता था अपने उन श्रद्धालुओं से जो उन के आज्ञाकारी थे अलग हो जाएँगे तथा अज़ाब को अपनी आँखों से देख लेंगे और उन के (शिर्क के कारण मुक्ति के) सारे साधन कट जाएँगे।१६७।

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا ۗ كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٨﴾

और जो लोग (इन्कार करने वालों के सरदारों के) आज्ञाकारी थे कहेंगे, काश ! हमारे भाग्य में एक बार (पुन: संसार में) लौट जाना (लिखा) होता तो हम भी इन से इसी प्रकार अलग हो जाते जिस प्रकार आज ये हम से अलग हो गए हैं। इस तरह अल्लाह उन्हें बताएगा कि उन के कर्मों का फल कुछ कोरी कल्पनाएँ हैं जो उन पर ही विपत्ति बन कर आ पड़ेंगी और वे नरक की आग में से कदापि नहीं निकल सकेंगे।१६८। (रुकू २०/४)

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿١٦٩﴾

हे लोगो ! जो कुछ ज़मीन में है उस में से जो कुछ हलाल और पवित्र है उसे खाओ तथा शैतान[1] के पदचिन्हों पर न चलो। वह तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है।१६९।

إِنَّمَا يَأْمُرُكُم بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَن تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾

वह तुम्हें केवल बुराई की तथा अश्लील बातों की प्रेरणा देता है और अल्लाह के बारे में झूठ बाँध कर वह बात कहो जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं।१७०।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۗ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٧١﴾

और जब उन्हें कहा जाए कि उस (ईशवाणी) का अनुसरण करो जो अल्लाह ने उतारी है तो वे कहते हैं कि (नहीं) हम तो उसी रीति का अनुसरण करेंगे जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया। भला यदि उन के पूर्वज कुछ भी समझ न रखते हों और न ही वे सीधी राह पर चलते रहे हों (तो क्या फिर भी वे ऐसा ही करेंगे ?)।१७१।

1. अर्थात् शैतान के मार्ग, ढंग, तरीक़े और रीतियों को न अपनाओ।

وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً ۚ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٧١﴾	और उन लोगों की दशा जिन्होंने इन्कार किया है उस व्यक्ति की सी है जो ऐसी चीज़ को पुकारता[1] है जो पुकार और आवाज़ के सिवा और कुछ नहीं सुनती। ये लोग बहरे[2], गूँगे और अन्धे हैं। इसलिए समझते नहीं। ।१७२।
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١٧٢﴾	हे लोगो ! जो ईमान ला चुके हो उन पवित्र चीज़ों में से खाओ जो हम ने तुम्हें दी हैं और यदि तुम वास्तव में अल्लाह ही की उपासना करते हो तो उसका धन्यवाद भी करो ।१७३।
إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنزِيرِ وَمَا أُهِلَّ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ ۖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَ	उस ने तुम्हारे लिए केवल मुर्दार, ख़ून, सूअर का माँस और उन चीज़ों को जिन्हें अल्लाह के सिवा किसी और के लिए मनोनीत[3] कर दिया गया हो हराम (निषिद्ध) किया है, परन्तु जो व्यक्ति (इन चीज़ों के प्रयोग के लिए) विवश हो जाए और वह न तो क़ानून

1. अरबी के मूल शब्द 'यनएक़ो' का अर्थ पशु को आवाज देना होता है। पशु आवाज़ सुन कर अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करता है, परन्तु उस के शब्दों का तात्पर्य नहीं समझता। अल्लाह कहता है कि इन्कार करने वालों की हालत भी ऐसी ही है। ये लोग एक-दूसरे का अनुसरण भेड़-चाल की तरह करते हैं तथा यह विचार नहीं करते कि कहने वाला क्या कहता है और सुनने वाला क्या सुनता है। इस के विपरीत इस्लाम धर्म की ओर बुलाने वाला बुद्धि संगत बात कहता है और समझा कर कहता है। उस के अनुयायी समझ कर ही उसका अनुसरण करते हैं न कि केवल पशुओं की भाँति आवाज़ सुनते हैं।

2. मानो उनकी समस्त इन्द्रियों को ईर्ष्या-द्वेष ने बेकार कर दिया है। अतः वे अपने बुरे कामों की बुराइयों का अनुभव नहीं करते।

3. मूल शब्द 'उहिल्ला' का अर्थ है उच्च-स्वर से कुछ कहना। मुहावरे में यह शब्द पशु अथवा किसी और निअमत के बारे में अल्लाह या किसी देवता का नाम पुकारने के लिए भी बोला जाता है।

इस आयत में अल्लाह ने कहा है कि ऐसी चीज़ों का प्रयोग हराम है जिन पर अल्लाह के सिवा किसी दूसरे का नाम लिया गया हो चाहे वह चढ़ावा ही हो या उस पर ज़िबह करते समय किसी और आराध्य का नाम लिया गया हो।

لَا عَادٍ فَلَآ اِثۡمَ عَلَيۡهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۷۴﴾

को भंग करने वाला हो और न सीमा का उल्लंघन करने वाला हो। उस पर कोई दोष नहीं। निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।१७४।

اِنَّ الَّذِيۡنَ يَكۡتُمُوۡنَ مَآ اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ الۡكِتٰبِ وَ يَشۡتَرُوۡنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيۡلًا ۙ اُولٰٓٮِٕكَ مَا يَاۡكُلُوۡنَ فِىۡ بُطُوۡنِهِمۡ اِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيۡهِمۡ ۖۚ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۱۷۵﴾

जो लोग उस शिक्षा को छिपाते हैं जो अल्लाह ने (अपनी) किताब में उतारी है और उस के बदले में थोड़ा[1] सा मूल्य लेते हैं वे अपने पेटों में केवल आग भरते हैं तथा क़ियामत के दिन अल्लाह न तो उन से बात-चीत करेगा और न ही उन्हें पवित्र ठहराएगा और उन के लिए दुःखदायक अज़ाब निश्चित है।१७५।

اُولٰٓٮِٕكَ الَّذِيۡنَ اشۡتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالۡهُدٰى وَالۡعَذَابَ بِالۡمَغۡفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصۡبَرَهُمۡ عَلَى النَّارِ ﴿۱۷۶﴾

यही वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत को छोड़ कर गुमराही (पथभ्रष्टता) को और बख़्शिश को छोड़ कर अज़ाब को अपनाया। सो आग (के अज़ाब) पर उन का सब्र करना बड़ी ही आश्चर्यजनक और हैरानी में डालने वाला है।१७६।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الۡكِتٰبَ بِالۡحَـقِّ ؕ وَاِنَّ الَّذِيۡنَ اخۡتَلَفُوۡا فِى الۡكِتٰبِ لَفِىۡ شِقَاقٍۢ بَعِيۡدٍ ﴿۱۷۷﴾ ع

यह अज़ाब इस कारण होगा कि अल्लाह ने इस किताब (क़ुर्आन) को सत्य पर आधारित उतारा है और जिन लोगों ने इस किताब के बारे में मतभेद से काम लिया है वे निस्सन्देह घोर शत्रुता में पड़े हुए हैं।१७७। (रुकू २१/५)

1. इस का यह अर्थ नहीं कि बहुत मूल्य लेने ठीक हैं अपितु तात्पर्य यह है कि सांसारिक माया चाहे वह ढेरों-ढेर हो वह इस हानि और अपराध की अपेक्षा थोड़ी है।

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَ
الْمَغْرِبِ وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَ الْمَلٰٓئِكَةِ وَ الْكِتٰبِ وَ النَّبِيّٖنَ ۚ وَ اٰتَى الْمَالَ عَلٰى
حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنَ وَ ابْنَ السَّبِيْلِ ۙ
وَ السَّآئِلِيْنَ وَ فِى الرِّقَابِ ۚ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَى
الزَّكٰوةَ ۚ وَ الْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَ الصّٰبِرِيْنَ
فِى الْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ حِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
صَدَقُوْا ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝

तुम्हारा पूर्व और पश्चिम की ओर मुँह करना कोई बड़ी नेकी नहीं है, परन्तु कामिल नेक वह व्यक्ति है जो अल्लाह, आख़िरत, फ़रिश्तों, ईश्वरीय किताब और सब नबियों पर ईमान रखे और उस के प्रेम के कारण निकट नातेदारों और अनाथों और निर्धनों और मुसाफ़िरों और माँगने वालों और दासों (की स्वतन्त्रता) के लिए अपना धन दे और नमाज़ को क़ायम रखे और ज़कात दे और अपनी प्रतिज्ञा को, जब भी वे (किसी प्रकार की कोई) प्रतिज्ञा करें, उसे पूरा करने वाले और विशेष कर निर्धनता, रोग और युद्ध के समय धैर्य से काम लेने वाले (कामिल नेक) हैं। यही लोग हैं जो (अपने कथन में) सच्चे सिद्ध हुए हैं और ये लोग पूर्ण रूप से संयमी हैं।१७८।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلٰى ؕ
اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَ الْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَ الْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ

हे लोगो! जो ईमान लाए हो क़त्ल किए गए लोगों के बारे में बराबर का बदला लेना तुम्हारा कर्तव्य ठहराया गया है। यदि क़त्ल करने वाला स्वतन्त्र[1] हो तो उसी स्वतन्त्र हत्यारे से और यदि क़त्ल करने वाला दास हो तो उसी दास हत्यारे से और यदि स्त्री क़त्ल करने वाली हो तो उसी स्त्री से (बदला लिया जाएगा) परन्तु जिस

1. इस से यह अभिप्राय है कि यदि कोई स्वतन्त्र पुरुष किसी की हत्या कर दे तो मारा हुआ भले ही स्वतन्त्र पुरुष हो या स्वतन्त्र स्त्री हो, चाहे दास हो या दासी, प्रतिशोध में उसी स्वतंत्र हत्यारे की हत्या की जाएगी। इसी प्रकार यदि हत्यारा कोई दास हो तो उसी दास हत्यारे से बदला लिया जाएगा और यदि स्त्री स्वतन्त्र अथवा दासी हत्यारिन हो तो उसी हत्यारिन से बदला लिया जाएगा।

عُفِيَ لَهُ مِنْ اَخِيْهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَاۤءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٩﴾

क़त्ल करने वाले को उस के भाई की ओर से (जुर्माना में से) कुछ क्षमा कर दिया जाए तो (मरे हुए का वारिस अर्थात् उत्तराधिकारी शेष जुर्माना को) उचित ढंग से ले सकता है तथा (हत्यारे पर शेष जुर्माना) उचित ढंग से उसे देना ज़रूरी है। यह तुम्हारे रब्ब की ओर से रिआयत (कमी) और दयालुता है। अतः जो व्यक्ति इस (आज्ञा) के बाद फिर अत्याचार से काम ले उस के लिए दुःखदायक अज़ाब निश्चित है।१७९।

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٨٠﴾

हे बुद्धिमानो! तुम्हारे लिए बदला[1] लेने में ज़िन्दगी का सामान है और यह (आदेश इसलिए है) कि तुम बच जाओ।१८०।

كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۖۚ اِلْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٨١﴾

तुम में से जब किसी पर मौत का समय आ पहुँचे तो यदि वह (मरने वाला) ढेरों-ढेर[2] धन-सम्पत्ति छोड़े तो माता-पिता[3] और नातेदारों को अच्छी बात की वसीय्यत कर जाना तुम्हारा कर्त्तव्य ठहराया गया है। यह बात संयमियों के लिए ज़रूरी है।१८१।

---

1. मूल शब्द 'क़िसास' का अर्थ है बदला या प्रतिशोध लेना। भाव यह है कि किसी व्यक्ति से वही व्यवहार किया जाए जो उस ने दूसरे के साथ हत्या करने या आघात अथवा घाव आदि पहुँचाने के रूप में किया हो अर्थात् उस व्यक्ति के साथ उस के कर्म के अनुसार वैसा ही वर्ताव किया जाए। (ताजुल उरूस) इस स्थान पर ऐसे व्यक्ति के दण्ड का वर्णन है जो जान-बूझ कर दूसरे की हत्या करता है यहाँ सरकार को उत्तरदायी ठहराया गया है कि वह प्रजा के जान-माल की रक्षा करे।

2. मूल शब्द 'ख़ैर' का अर्थ साधारण धन भी है और ढेरों-ढेर धन भी। इस स्थान पर आयत के प्रसंग से पता चलता है कि यहाँ ढेरों-ढेर धन **अभीष्ट** है।

3. इस आयत के प्रसंग से स्पष्ट है कि यहाँ युद्ध का वर्णन है और यह बताया गया है कि जब कोई मनुष्य युद्ध के लिए किसी भयंकर स्थान की ओर जाए और उस के पास बहुत सा धन भी हो तो उसे अपने निकट-सम्बन्धियों और नातेदारों को **वसीय्यत** कर देनी चाहिए कि मेरे बाद 'मारूफ़' अर्थात् उचित ढंग से मेरे धन का बटवारा हो। 'मारूफ़' से तात्पर्य विरासत के अनुदेश हैं अर्थात् पवित्र क़ुर्आन के बताए हुए क़ानून के अनुसार उस की सम्पत्ति का बटवारा हो। इसी प्रकार कुछ अधिकार ऐसे

(शेष पृष्ठ ६३ पर)

فَمَنْ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ؕ

परन्तु जो व्यक्ति इस वसीय्यत को सुनने के बाद बदल[1] दे तो उस का पाप केवल उन्हीं को होगा जो उसे बदल दें। निस्सन्देह अल्लाह भली-भाँति सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है।१८२।

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ؕ

फिर जो व्यक्ति किसी वसीय्यत करने वाले से पक्षपात या पाप के हो जाने से डरे और उन के बीच समझौता[2] करा दे तो फिर उस पर कोई दोष नहीं। निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।१८३। (रुकू २२/६)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۙ

हे ईमान लाने वाले लोगो! तुम्हारे लिए रोज़े रखने उसी प्रकार ज़रूरी ठहराए गए हैं जिस प्रकार उन लोगों के लिए ज़रूरी ठहराए गए थे जो तुम से पहले हो चुके हैं ताकि तुम (आध्यात्मिक और नैतिक त्रुटियों से) सुरक्षित रहो।१८४।

(पृष्ठ ६२ का शेष)

हैं जो विरासत के आदेशों से बाहर हैं जिन्हें विधान के रूप में तो वर्णन नहीं किया गया, परन्तु उन्हें धार्मिक और नैतिक तथा आध्यात्मिक रूप से सराहा गया है। उन के लिए इस्लामी शरीअत ने तीसरे भाग तक वसीय्यत करने का द्वार खुला रखा है। अतएव इस स्थान पर उन बातों को पूरा करने की ओर ध्यान दिलाया गया है।

1. 'बदल दे' शब्दों में यह संकेत पाया जाता है कि जब मरने वाला यह वसीय्यत कर जाए कि उस की सम्पत्ति का बटवारा इस्लामी शरीअत के अनुसार किया जाए तो फिर यदि कोई व्यक्ति उस के ख़िलाफ़ कुछ परिवर्तन करेगा तो वह पापी होगा।

2. वसीय्यत करने वाले और उसके नातेदारों में समझौता करा दे जिन को हानि पहुँचाने या उन्हें उपेक्षित कर देने का उस का विचार हो या ऐसे व्यक्ति जिन के बारे में वसीय्यत है उन्हें पारस्परिक समझौते द्वारा राज़ी कर दे कि वे वसीय्यत के होते हुए भी एक-दूसरे को उस का हक़ दे दें और यह भी हो सकता है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी सम्पत्ति के तीसरे भाग की वसीय्यत कर जाए, परन्तु उसके नातेदारों की संख्या इतनी अधिक हो कि शेष सम्पत्ति में से उन्हें थोड़ा सा भाग मिलना हो तो ऐसी हालत में वसीय्यत में कुछ तबदीली करवा दी जाए तो कोई दोष नहीं।

أَيَّامًا مَّعْدُودَٰتٍ ۚ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى ٱلَّذِينَ يُطِيقُونَهُۥ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ۖ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُۥ ۚ وَأَن تَصُومُوا۟ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٥﴾

(अतएव तुम रोज़े रखो) ये गिनती के कुछ दिन हैं और तुम में से जो व्यक्ति रोगी हो अथवा मुसाफ़िर हो तो उसे दूसरे दिनों में गिनती पूरी करनी होगी तथा उन लोगों के लिए जो इस[1] (रोज़े) की शक्ति न रखते हों (आर्थिक शक्ति होने पर) एक निर्धन का भोजन देना ज़रूरी है एवं जो व्यक्ति पूर्ण रूप से आज्ञाकारी बन कर अच्छे कर्म करेगा तो यह उस के लिए अच्छा होगा और यदि तुम ज्ञान रखते हो तो (समझ सकते हो कि) तुम्हारा रोज़े रखना तुम्हारे लिए अच्छा है।१८५।

شَهْرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِىٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلْقُرْءَانُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَٰتٍ مِّنَ ٱلْهُدَىٰ وَٱلْفُرْقَانِ ۚ فَمَن شَهِدَ مِنكُمُ ٱلشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَن كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ

रमज़ान वह महीना है जिस के बारे में क़ुर्आन उतारा गया है। वह (क़ुर्आन) सारे मानव-समाज के लिए हिदायत बना कर भेजा गया है और जो सुस्पष्ट युक्तियाँ[2] (खुली दलीलें) रखता है, ऐसी युक्तियाँ जो हिदायत देती हैं तथा इस के सिवा क़ुर्आन में अल्लाह के निशान भी हैं। अतः तुम में से जो व्यक्ति इस महीने को (इस अवस्था में) पाए (कि रोगी और यात्री न हो) उसे चाहिए कि वह इस महीने में रोज़े रखे तथा जो व्यक्ति[3] रोगी हो अथवा यात्रा[4] पर हो तो उस को दूसरे

1. इस आयत का भाव यह है कि वे लोग जिन का शारीरिक बल शिथिल पड़ गया हो या मानों नष्ट ही हो चुका हो यदि वे रोज़े न रखें तो सामर्थ्य होने की शर्त पर एक निर्धन का भोजन दान दे दिया करें।

2. इस से तात्पर्य यह है कि संसार में बहुत से दार्शनिक और वैज्ञानिक भी सांसारिक युक्तियाँ रखते हैं जिन के द्वारा वह केवल सांसारिक बातें पेश करके लोगों को गुमराही एवं पथभ्रष्टता की ओर ले जाते हैं, परन्तु पवित्र क़ुर्आन की युक्तियाँ हिदायत देती हैं। व्यर्थ एवं निरुद्देश्य नहीं होती हैं।

3. अर्थात् स्थायी रोगी या स्थायी रोगी की भाँति न हो।

4. ऐसा व्यक्ति जो यात्रा पर हो और स्वस्थ हो, स्थायी रोगी भी न हो तो उस के लिए दूसरे दिनों में रोज़े रख कर गिनती पूरी करना ज़रूरी है।

سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ؗ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٨٦﴾

दिनों में गिनती पूरी करनी चाहिये। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और तुम्हारे लिए दुःख या तंगी नहीं चाहता तथा यह आज्ञा उस ने इसलिए दी है ताकि तुम कष्ट में न पड़ो और यह कि तुम गिनती पूरी कर लो और इस बात पर अल्लाह की बड़ाई करो कि उस ने तुम्हें हिदायत दी है और यह कि तुम उस के कृतज्ञ बनो।१८६।

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ﴿١٨٧﴾

और (हे रसूल!) जब तुझ से मेरे बन्दे (भक्त) मेरे बारे में पूछें तो (तू उत्तर दे कि) मैं (उन के) पास ही हूँ। जब दुआ करने वाला मुझे पुकारे तो मैं उस की दुआ को क़ुबूल करता हूँ। अतएव चाहिए कि वे मेरी आज्ञाओं का पालन करें तथा मुझ पर ईमान लाएँ ताकि वे हिदायत पाएँ।१८७।

اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ ؕ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ

तुम्हें रोज़ा रखने की रातों में अपनी धर्म-पत्नियों के पास[1] जाने की अनुमति है। वे तुम्हारे लिए एक प्रकार का लिबास (वेश-भूषा)[2] हैं और तुम उन के लिए एक प्रकार का लिबास (वेश-भूषा) हो। अल्लाह

---

1. मक्के वालों का विचार था कि रोज़ा-दार व्यक्ति को रात में भी अपनी धर्म पत्नी के साथ सम्भोग करना वर्जित है। यहाँ इस का शंका समाधान किया गया है।

2. लिबास अर्थात् वेश-भूषा से यह तात्पर्य है कि पति के होते हुए लोग पत्नी पर और पत्नी के होते हुए पति पर आरोप लगाने से डरते हैं। अतः पति और पत्नी एक-दूसरे के लिए वेष-भूषा हैं। अर्थात् एक दूसरे की रक्षा करते हैं।

كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَ عَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَ ابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۠ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۪ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ ۙ فِى الْمَسٰجِدِ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝

जानता है कि तुम अपने आप से अन्याय[1] करते थे इसलिए उस ने तुम पर कृपा पूर्वक ध्यान दिया और तुम्हारी इस हालत का सुधार कर दिया। अतः अब तुम (बिना सोचे) उन के पास जाओ तथा जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारे भाग्य में निश्चित कर दिया है उसे ढूँढ़ो और खाओ–पीयो। यहाँ तक कि प्रातः काल की सफ़ेद धारी काली धारी से अलग दिखाई देने लगे, इस के बाद संध्या तक रोज़ों को पूरा करो और जब तुम मस्जिदों में एतकाफ़ बैठो तो उन (पत्नियों) के पास न जाओ। यह अल्लाह की निश्चित की हुई सीमाएँ हैं। अतः तुम (इन सीमाओं) के पास भी न जाओ। इस प्रकार अल्लाह लोगों के हित के लिए अपने आदेश वर्णन करता है ताकि वे (सर्वनाश होने से) सुरक्षित रहें।१८८।

وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ ع

और तुम अपने[2] (भाइयों के) धन परस्पर मिल–जुल कर झूठ और धोखे से मत खाओ और न उस धन को (इस उद्देश्य से) हाकिमों के पास ले जाओ ताकि तुम लोगों के धन का कुछ भाग जान–बूझ कर अनुचित ढंग से हड़प कर जाओ।१८९। (रुकू २३/७)

1. इस्लाम के प्रारम्भ में कुछ लोगों का विचार था कि रोज़े वाले दिनों की रातों में भी उन्हें अपनी पत्नियों के पास नहीं जाना चाहिए और इस प्रकार अकारण ही वे अपने-आप को कष्ट में डाल रहे थे। इस स्थान पर बताया गया है कि तुम्हारा यह विचार ठीक नहीं। हम ने शरीअत का आदेश बता दिया है कि तुम्हें रमज़ान के महीने की रातों में अपनी पत्नियों के पास जाना जायज है और इस की मनाही नहीं।

2. पवित्र क़ुर्आन प्रायः क़ौमी ज़िन्दगी के उत्थान पर बल देता है इसी लिए सर्व साधारण और (शेष पृष्ठ ६७ पर)

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ۭ قُلْ هِىَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ
وَالْحَجِّ ۭ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا
وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۠
وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٨٩﴾

वे तुझ से चाँदों के बारे में पूछते हैं। तू कह दे, ये लोगों के साधारण कामों और हज्ज के समय की जानकारी प्राप्त करने का साधन है और यह कोई नेकी नहीं कि तुम घरों में पिछवाड़े[1] से प्रवेश करो बल्कि पूरा नेक वह व्यक्ति है जो तक़्वा (संयम) धारण करे और तुम घरों में उन के द्वारों से प्रवेश किया करो तथा अल्लाह के लिए संयम धारण करो ताकि तुम सफलता प्राप्त कर सको।१९०।

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا
تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿١٩٠﴾

और तुम अल्लाह की राह में उन लोगों से युद्ध करो जो तुम्हारे साथ युद्ध करते हैं और किसी पर अत्याचार न करो। (याद रखो) अल्लाह अत्याचारियों से कदापि प्रेम नहीं करता।१९१।

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ
حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَ

और तुम जहाँ कहीं भी उन (अकारण युद्ध करने वालों) को पाओ उन्हें क़त्ल करो और तुम भी उन्हें उस स्थान से निकाल बाहर करो जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाल दिया था और (यह) फ़ित्ना क़त्ल से (भी) अधिक हानिकारक है और तुम उन से मस्जिदे-हराम

(पृष्ठ ६६ का शेष)

देश-वासियों या सजाति की वस्तुओं को 'अपनी वस्तुएं' कहता है ताकि इस ओर संकेत करके बताए कि जो व्यक्ति अपनी जाति के लोगों को हानि पहुँचाता है मानों वह अपने आप को हानि पहुँचाता है। इस स्थान में धन से तात्पर्य है मानव-समाज का धन, किन्तु ऊपर लिखित सिद्धान्त की ओर ध्यान दिलाने के लिए उसे अपना धन कहा है।

1. अरब देश के लोग जब हज्ज के लिये निकल जाते, तब किसी आवश्यकता पड़ने पर घर को लौटना पड़ता तो द्वार की अपेक्षा दीवार फाँद कर घरों में घुसते थे। इस आयत में इस बात का खण्डन किया गया है कि घर में दीवार फाँद कर प्रवेश करना कोई नेकी या पुण्य का काम है। नेक काम तो एक आध्यात्मिक बात है। अतः प्रत्येक बात के लिए उचित मार्ग अपनाना चाहिए।

لَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩٢﴾

के आस-पास (उस समय तक) युद्ध न करो जब तक कि वे स्वयं तुम से उस में युद्ध शुरू न करें और यदि वे तुम से वहाँ भी युद्ध करें तो तुम भी उन्हें क़त्ल करो। इन इन्कार करने वालों का यही दण्ड है।१९२।

فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٣﴾

फिर यदि वे रुक जाएँ तो निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।१९३।

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩٤﴾

और तुम उन से उस समय तक युद्ध करते रहो कि कोई फ़ित्ना-फ़साद न रह जाए और धर्म[1] अल्लाह ही के लिए हो जाए। फिर यदि वे रुक जाएँ तो (याद रखो कि) अत्याचारियों के सिवा किसी के लिए पकड़ नहीं होगी।१९४।

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٥﴾

इज़्ज़त वाला महीना इज़्ज़त वाले महीने के बदले में है और सब ही इज़्ज़त वाली चीज़ों (के अनादर) का बदला लिया जाता है। इसलिये जो व्यक्ति तुम पर अत्याचार करे तुम भी उस से उसके अत्याचार के अनुसार जो उस ने तुम्हारे ऊपर किया हो बदला ले लो और अल्लाह के लिए संयम धारण करो और समझ लो कि निस्सन्देह अल्लाह संयमियों ही के साथ होता है। १९५।

---

1. 'धर्म अल्लाह ही के लिए हो जाए' से यह अभिप्राय है कि धर्म ग्रहण करना केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिए हो जाए और धर्म में हस्ताक्षेप या बल-प्रयोग या दमन न किया जाए। जब्र करना किसी के लिए जायज़ नहीं। इस आयत में बताया गया है कि मुसलमानों के सुरक्षार्थ उन के युद्धों का उद्देश्य धार्मिक स्वतन्त्रता की स्थापना है। इस्लाम में धर्म के नाम पर दमन या बल-प्रयोग करने की मनाही है।

وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ
وَأَحْسِنُوا ۛ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٩٦﴾

और अल्लाह की राह में (तन-मन-धन) ख़र्च करो और अपने ही हाथों अपने-आप का सर्वनाश न करो और परोपकार से काम लो। अल्लाह निश्चय ही परोपकारियों से प्रेम करता है।१९६।

وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ
مِنَ الْهَدْيِ ۖ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْهَدْيُ
مَحِلَّهُ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَأْسِهِ
فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ ۚ فَإِذَا أَمِنْتُمْ
فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ
الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ

और हज्ज और उम्रा को अल्लाह (की प्रसन्नता) के लिए पूरा करो। यदि तुम (किसी कारण हज्ज और उम्रा से) रोक दिए जाओ तो जो क़ुर्बानी (बलि) सुलभ हो ज़िबह करो तथा जब तक कि क़ुर्बानी अपने निश्चित स्थान तक न पहुँच जाए अपना मुण्डन[1] न कराओ और तुम में से जो व्यक्ति रोगी हो अथवा उसे अपने सिर के रोग के कारण कष्ट हो रहा हो (और वह मुण्डन करवा ले) तो उस के लिए इस के कारण रोज़े रखना या दान देना अथवा क़ुर्बानी के रूप में कुछ फ़िद्या[2] (बदला) देना (ज़रूरी) होगा। फिर जब तुम अमन में आ जाओ तो (उस समय) जो व्यक्ति (ऐसे) हज्ज के साथ मिला कर उम्रा का लाभ प्राप्त करे तो उसे जो क़ुर्बानी भी सुलभ हो सके ज़िबह कर दे और जो व्यक्ति किसी भी क़ुर्बानी की ताक़त न रखता हो उस के लिए हज्ज के दिनों में तीन दिन रोज़े रखना ज़रूरी होगा तथा सात रोज़े (हे मुसलमानो!)

1. इस का तात्पर्य यह है कि यदि हाजी रोग के कारण रोका गया हो तो हाजी क़ुर्बानी के काबा पहुँचने तक मुण्डन न कराए और यदि कोई शत्रु हज्ज में बाधा बन जाए तो हाजी जहाँ रोका जाए वहीं क़ुर्बानी के जानवर को ज़िबह कर दे और अपना मुण्डन करवा ले।

2. पवित्र क़ुर्आन ने तीन प्रकार का फ़िद्या बताया है और इन्हें असीमित रखा है, परन्तु हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने इसे सीमित करते हुए उजरः के पुत्र काब को आज्ञा दी कि अपना मुण्डन करवा दे और छः निर्धनों को भोजन करा दे। या एक बकरा क़ुर्बान करे या तीन रोज़े रखे।

وَ سَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ۚ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۚ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٧﴾ ع

जब तुम अपने घरों को वापस लौट कर आओ। यह पूरे दस हुए। यह आदेश उस व्यक्ति के लिए है जिसका परिवार मस्जिदे-हराम (काबा) के पास निवास न रखता हो तथा तुम अल्लाह के लिए संयम धारण करो और समझ लो कि अल्लाह का दण्ड निश्चय ही बड़ा कड़ा होता है।१९७। (रुकू २४/८)

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ۗ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۚ وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿١٩٨﴾

हज्ज (के महीने सब के) जाने-मान हुए महीने हैं। अतः जो व्यक्ति उन में हज्ज करने का दृढ़ निश्चय कर ले (उसे याद रहे कि) हज्ज (के दिनों) में न तो काम वासना की बात, न कोई नाफ़रमानी और न किसी प्रकार का झगड़ा करना उचित होगा और तुम भलाई का जो भी काम करोगे अल्लाह उस के महत्व को जान लेगा तथा पाथेय (अर्थात् रास्ते का ख़र्च) साथ ले लिया करो और याद रखो कि उत्तम पाथेय संयम है तथा हे बुद्धिमानो ! मेरे लिए संयम धारण करो। ।१९८।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ

तुम्हारे लिए यह कोई पाप की बात नहीं कि हज्ज के दिनों में तुम अपने रब्ब से किसी फ़ज़्ल[1] (कृपा) के पाने की कोशिश करो फिर

1. कुछ लोगों का विचार है कि यहाँ फ़ज़्ल (कृपा) से अभिप्राय व्यापार है। हमारे विचार में यह बात भी ठीक है, किन्तु फ़ज़्ल से केवल व्यापार ही समझना एक विस्तृत विषय को सीमित कर देना है। वास्तव में आज इस्लाम को जिस भयंकर विपत्ति का सामना करना पड़ रहा है वह यह है कि संसार में चारों ओर नास्तिकता का राज्य है और मुसलमान अपने आध्यात्मिक और नैतिक स्थान से नीचे गिर चुके हैं। उन के दिलों में यह अनुभूति जागृत ही नहीं होती कि वे इस्लाम के प्रचार के लिए उस जोश

(शेष पृष्ठ ७१ पर)

فَإِذَآ أَفَضْتُم مِّنْ عَرَفَٰتٍ فَٱذْكُرُوا۟ ٱللَّهَ عِندَ ٱلْمَشْعَرِ ٱلْحَرَامِ ۖ وَٱذْكُرُوهُ كَمَا هَدَىٰكُمْ وَإِن كُنتُم مِّن قَبْلِهِۦ لَمِنَ ٱلضَّآلِّينَ ﴿١٩٩﴾

जब तुम अरफ़ात[1] से लौटो तो मश्अरे[2] हराम के पास आ कर अल्लाह को याद करो तथा जिस प्रकार उसने तुम्हें अनुदेश दे रखा है (उसी के अनुसार) उसे याद करो। निस्सन्देह तुम इस से पहले पथभ्रष्टों में से थे।१९९।

ثُمَّ أَفِيضُوا۟ مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ ٱلنَّاسُ وَٱسْتَغْفِرُوا۟ ٱللَّهَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٠٠﴾

और जहाँ से लोग (वापस) लौटते रहे हैं वहीं से तुम भी (वापस) लौटो[3] तथा अल्लाह से (अपने पापों की) क्षमा माँगो। निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।२००।

(पृष्ठ ७० का शेष)

और उत्साह से काम लें जिस जोश से पहले समय के मुसलमानों ने काम लिया था और थोड़े ही समय में उन्होंने इस्लाम को संसार भर में फैला दिया था। अतः हज्ज के वृत्तांत के साथ फ़ज़्ल (कृपा) पाने का प्रयास कह कर इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि तुम इस महा सम्मेलन से कुछ दूसरे लाभ भी पाने का प्रयत्न किया करो तथा जिस के पाने के पश्चात् मुसलमान अपमान के गढ़े से निकल कर उन्नति के शिखर पर पहुंच जाएं। इस्लाम के प्रचार के लिए विभिन्न देशों के प्रभावशाली और प्रमुख व्यक्तियों के सहयोग से ऐसी योजनाएं सोची जाएँ जिन के फलस्वरूप अल्लाह का फ़ज़्ल उतरे और इस्लाम संसार में शान्ति आ जाए।

1. 'अरफ़ात' मक्का नगर से उत्तर-पूर्व में मक्का से नौ मील तथा 'मिना' से छः मील की दूरी पर एक खुला मैदान है। ज़िल्हज्ज की नौ तिथि को सारे हाजी इस मैदान में एकत्रित होते हैं और 'मिना' यह स्थान मक्का से पूर्व तीन मील की दूरी पर स्थित है। यहाँ आठवीं से नवीं ज़िल्हज्ज की तिथि तक ठहर कर पाँच नमाज़ें पूरी करने का आदेश है और फिर अरफ़ात से लौटने पर दसवीं से तेरहवीं तिथि तक पुनः यहाँ रुकना पड़ता है।

2. 'मश्अरे हराम' यह भी हज्ज का स्थान है जो अरफ़ात और मिना के बीच है। अरफ़ात से वापसी पर हाजी लोग यहाँ रात गुज़ारते हैं। इसे मुज़्दल्फ़ः के नाम से भी याद किया जाता है।

3. इस्लाम ने इस आदेश में इन्कार करने वालों के रीति-रिवाजों से अलग कोई अनुदेश नहीं दिया, अपितु उन की ही प्रचलित रीतियों को हज़रत इब्राहीम के रीति-रिवाज बताया है और उन्हें ही जारी रखा है।

فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿٢٠١﴾

फिर जब तुम अपनी उपासनाओं को पूरा कर चुको तो (गुज़रे ज़माने में) पूर्वजों को याद करने की भाँति अल्लाह् को याद करो या (यदि हो सके तो उस से भी) बढ़ कर (हार्दिक प्रेरणा से) याद करो और कुछ लोग ऐसे हैं जो यही कहते हैं कि हे हमारे रब्ब ! हमें इस संसार में सुख दे। ऐसे लोगों का आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं होगा।२०१।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠٢﴾

और उन में से कुछ (लोग ऐसे भी होते) हैं जो कहते हैं कि हे हमारे रब्ब ! हमें इस संसार (के जीवन) में भी सफलता[1] प्रदान कर तथा आख़िरत में भी सफलता दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।२०२।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٣﴾

यही वे लोग हैं जिन के लिए उन के नेक कामों के कारण (बदले के रूप में) एक बहुत बड़ा हिस्सा (निश्चित) है और अल्लाह् शीघ्र ही लेखा[2] चुका देता है।२०३।

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْۤ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِىْ يَوْمَيْنِ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ

और इन गिनती के निश्चित दिनों में अल्लाह् को याद करो फिर जो व्यक्ति शीघ्रता से काम ले और दो दिनों[3] में (वापस लौट जाए) तो उस पर कोई दोष नहीं तथा जो व्यक्ति

---

1. मूल शब्द 'अल् हसनात' का अर्थ विजय अर्थात् सफलता भी होता है। (ताजुल्उरूस) और इस का दूसरा अर्थ है हृदय को प्रसन्न करने वाली निअमत। (मुफ़्रदात)

2. मूल शब्द 'हिसाब' का अर्थ लेखा लेना और लेखा देना दोनों हैं। इस स्थान पर इसी ओर संकेत है कि सदाचारी व्यक्तियों को इसी जीवन में साथ-साथ पुरस्कार मिलता रहेगा क्योंकि अल्लाह् नहीं चाहता कि भले लोगों को दिए जाने वाले पुरस्कार क़ियामत तक रोके जाएं। स्वर्ग में भी उन्हें पुरस्कार प्राप्त होंगे तथा इस लोक में भी अल्लाह् उन्हें पुरस्कार देगा।

3. 'मुज़्दलफ़:' स्थान से वापस लौटने पर मिना में तीन दिन ठहरने का आदेश है, परन्तु दो दिनों

(शेष पृष्ठ ७३ पर)

لِمَنِ اتَّقٰىؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ۝

पीछे रह जाए उस पर भी कोई दोष नहीं। यह वादा उस व्यक्ति के लिए है जो संयम धारण करे और तुम अल्लाह का संयम धारण करो और जान लो कि एक दिन तुम सब को इकट्ठा कर के उस (अल्लाह) के सामने ले जाया जाएगा।२०४।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَیُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِیْ قَلْبِهٖۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ۝

और कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिन की बात इस सांसारिक जीवन के बारे में तुझे बहुत अच्छी लगती हैं और वे (बातें करते समय) अल्लाह को उस (श्रद्धा) पर जो उन के दिल में है गवाह ठहराते जाते हैं। हालाँकि वे सब झगड़ालुओं से बढ़ कर झगड़ालू होते हैं।२०५।

وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِی الْاَرْضِ لِیُفْسِدَ فِیْهَا وَیُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَؕ وَاللّٰهُ لَا یُحِبُّ الْفَسَادَ۝

और जब वे हाकिम बन जाते हैं तो फ़साद फैलाने, खेती तथा मख़्लूक़ (मानव-जाति) का विनाश करने के विचार से सारे देश में दौड़ते-फिरते हैं। हालाँकि अल्लाह फ़साद को पसंद नहीं करता।२०६।

وَاِذَا قِیْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ۝

और जब उन्हें कहा जाए कि अल्लाह से डरो तो उन्हें अपनी मान-मर्यादा (की पच्च) पाप करने के लिए उकसाती है। अतः इस (प्रकार के लोगों) के लिए नरक ही निवास-स्थान है और निस्सन्देह यह एक बहुत बुरा ठिकाना है।२०७।

(पृष्ठ ७२ का शेष)

के बाद भी लौटने की अनुमति है। इस स्थान पर इसी का वर्णन है। यह ज़रूरी नहीं कि यदि तीन दिन रुके तो चौथे दिन भी उसे वहाँ रुकना पड़ेगा अपितु तात्पर्य यह है कि दो दिन में भी लौट सकता है और तीसरे दिन भी वापस आ सकता है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِىْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝٢٠٨

और कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह की **प्रसन्नता** प्राप्त करने के लिए अपनी जान को बेच (ही) डालते हैं और अल्लाह अपने ऐसे श्रद्धालुओं पर अपार कृपा करने वाला है।२०८।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِى السِّلْمِ كَآفَّةً ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝٢٠٩

हे लोगो ! जो ईमान ला चुके हो तुम सारे के सारे आज्ञाकारी बन जाओ तथा शैतान के पद-चिन्हों पर मत चलो। निस्सन्देह वह **तुम्हारा खुला-खुला** शत्रु है।२०९।

فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٢١٠

और यदि इस बात के होते हुए भी कि तुम्हारे पास खुले-खुले निशान आ चुके हैं, तुम डगमगा गए तो जान लो कि निस्सन्देह अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है।२१०।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِىْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِىَ الْاَمْرُ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٢١١ ع ٢٥ / ٩

वे (लोग) इस के सिवा किस (बात) की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अल्लाह उन के पास बादलों की छाया में आए तथा फ़रिश्ते भी आयें और बात का निर्णय कर दिया जाए क्योंकि समस्त बातें अल्लाह की ओर ही तो फेरी जाती हैं।२११। (रुकू २५/९)

سَلْ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٢١٢

बनी-इस्राईल से पूछो तो कि हम ने उन्हें कितने खुले-खुले निशान दिए थे और जो व्यक्ति अल्लाह की किसी निअमत को बदल दे जब कि वह उसे मिल जाए (तथा वह इस वास्तविकता को समझ चुका हो) तो वह याद रखे कि अल्लाह भी कड़ा[1] दण्ड देने वाला है।२१२।

1. इस से यह तात्पर्य नहीं कि अल्लाह दण्ड देने में कड़ाई से काम लेता है अपितु इस से यह आशय है कि मनुष्य को उस का दण्ड कड़ा ही जान पड़ता है।

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۲۱۳﴾

जिन लोगों ने **इन्कार** किया है उन्हें सांसारिक जीवन सुन्दर रूप में दिखाया गया है और वे ईमान लाने वालों से हँसी-ठट्ठा करते हैं और (इस के मुक़ाबिले पर) जिन लोगों ने संयम धारण किया है वे इन इन्कार करने वालों पर क़ियामत के दिन ग़ालिब (विजयी) होंगे तथा अल्लाह जिसे चाहता है **उसे** बे हिसाब देता है।२१३।

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۫ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۪ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۱۴﴾

सभी लोग एक ही विचार के थे, फिर अल्लाह ने **नबियों** को शुभ-समाचार देने वाला एवं डराने वाला बना कर भेजा और उन के साथ सच्चाई पर आधारित किताब उतारी ताकि वह (अल्लाह) लोगों के बीच उन बातों के बारे में निर्णय करे जिन में उन्होंने मत-भेद कर लिया था तथा (हुआ यह कि) केवल उन्हीं लोगों ने जिन्हें वह किताब दी गई थी और उन के पास खुले-खुले निशान भी आ चुके थे आपस के विद्रोह एवं फ़साद के कारण उस (किताब) के बारे में मतभेद[1] से काम लिया। सो अल्लाह मोमिनों को उस सच तक ले गया जिस के बारे में दूसरे लोगों ने मतभेद से काम लिया था और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह पर चला देता है।२१४।

1. इस आयत में बताया गया है कि नबी तो मतभेद मिटाने आता है; परन्तु लोग अपने-अपने मतभेदों को वहीं छोड़ कर उस के पीछे पड़ जाते हैं और वही जाति सब से बढ़ कर उस का विरोध करती है जिस के हित के लिए नबी का प्रादुर्भाव होता है। दूसरी जातियाँ उस की बातों को ज्ञान का विषय समझ कर उस से रुचि प्रकट करती हैं और कभी-कभी उस की शिक्षा की प्रशंसा भी करती हैं, किन्तु वह जाति जिस के लिए वह शिक्षा एवं किताब आती है वह विरोध अथवा ईर्ष्या में इतनी आगे बढ़ जाती है कि उसे शिक्षा में कोई भी गुण दीख नहीं पड़ता। अल्लाह कहता है कि बड़े खेद और दुःख की बात है कि जिन लोगों के हितार्थ वह ज्ञान-पूर्ण किताब आई थी वही लोग उस के सब से बढ़ कर

(शेष पृष्ठ ७६ पर)

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوا حَتَّىٰ يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَىٰ نَصْرُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ ﴿٢١٥﴾

क्या तुम ने यह समझ रखा है कि तुम जन्नत में प्रवेश कर जाओगे जब कि अभी तक तुम पर उन लोगों जैसी कष्ट की हालतें नहीं आईं जो तुम से पहले हो चुके हैं? उन्हें दुःख और कष्ट पहुँचे एवं उन्हें अत्यन्त भयभीत किया गया ताकि (उस समय का) रसूल एवं उस के साथ मोमिन भी पुकार उठें कि अल्लाह की सहायता कब[1] आएगी। याद रखो कि निस्सन्देह अल्लाह की सहायता निकट ही है।२१५।

(पृष्ठ ७५ का शेष)

विरोधी बन जाते हैं। यहाँ बताया गया है कि जब जाति के बहुत से लोग कट्टर विरोधी बन जाते हैं तो मोमिन अवश्य ही लोगों के विरोध का निशाना बन जाते हैं और उन पर घोर विपत्ति आ पड़ती है। मोमिन जब उस विपत्ति की परीक्षा में सफल हो जाते हैं तो अल्लाह उन्हें उन समस्त पुरस्कारों का अधिकारी बना देता है जो अल्लाह की किताब को स्वीकार कर लेने में सारी जाति के लिए निश्चित थे। इन्कार करने वालों ने अकारण ही क़ुर्आन का विरोध किया, फलस्वरूप मोमिनों को महा दुःख झेलने पड़े। अतएव अल्लाह ने आज्ञा दी कि वे समस्त पुरस्कार जो सारी जाति के लिए नियत थे मुट्ठी भर मुसलमानों को दे दिए जाएं और जाति के दूसरे लोगों को उन के अत्याचारी बन जाने के कारण उन पुरस्कारों से वंचित कर दिया जाए।

1. यहाँ अल्लाह ने दार्शनिकता की दृष्टि से उन कष्टों और विपत्तियों का मर्म एवं भेद बताया है जो नबियों और मोमिनों को झेलने पड़ते हैं। अल्लाह ने कहा है कि यदि हम चाहते तो उन्हें कोई भी कष्ट और विपत्ति न आने देते; किन्तु हम ने ऐसा नहीं किया अपितु विरोधियों की ओर से निरन्तर दुःख और कष्ट नबियों और उन पर ईमान लाने वालों को पहुंचते रहे। इस से तात्पर्य यह है कि उन के दिलों में प्रार्थना की प्रेरणा जागृत रहे और वे हमारी ओर झुके रहें ताकि उन के दिलों में अल्लाह का प्रेम जागृत हो तथा जब अल्लाह की सहायता चमत्कार रूप में आए तो उन के ईमान में वृद्धि हो और इन्कार करने वालों में से जो लोग सोच-विचार से काम लेने वाले हों उन्हें हिदायत मिल सके। सो जब ऐसा हो जाता है तो फिर अल्लाह कहता है कि लो! अब हमारी सहायता आ गई है और वह सारे पुरस्कार उन्हीं को दे देता है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۥ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢١٦﴾

वे तुझ से पूछते हैं कि वे क्या ख़र्च करें ? तू कह दे कि तुम जो भी अच्छा[1] माल ख़र्च करो उस में तुम्हारे माता-पिता, नातेदारों, अनाथों, निर्धनों और मुसाफ़िरों का (सब से पहले) हक़ है और तुम जो भी शुभ-कर्म करो निस्सन्देह अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।२१६।

---

1. इस आयत में बताया गया है कि :—

(क) दान देने के लिए कोई सीमा निश्चित नहीं। जितना दान देने की शक्ति हो उतना दान दे सकते हो।

(ख) इस बात का ध्यान रखा जाए कि दान में जो कुछ भी दिया जाए वह पवित्र धन में से दिया जाए।

(ग) दान में दिया जाने वाला धन अच्छे साधनों द्वारा कमाया गया हो और शुद्ध हो जिसे लेने वाला ख़ुशी से ले ले।

(घ) यदि कोई व्यक्ति घूस ले कर, चोरी करके या अत्याचार कर के दूसरों का धन ले ले, चाहे वह धन थोड़ा सा ही हो, परन्तु दान अपने पवित्र माल में से दे, तो भी वह व्यक्ति इस आज्ञा का पालन करने वाला नहीं होगा, क्योंकि बुरे साधनों से कमाया हुआ धन उस के सारे माल को अपवित्र बना देगा।

इस आयत में यह भी संकेत किया गया है कि दान देना इतना कठिन नहीं जितना उसे उचित स्थान पर ख़र्च करना। अतः बताया गया है कि जो कुछ भी ख़र्च करो सावधानी से ख़र्च करो और ऐसे लोगों को दो जो वास्तव में सहायता के योग्य हों।

यह केवल क़ुर्आन-मजीद की ही विशेषता है कि वह थोड़े से शब्दों में विस्तृत विषय को बता देता है। यहाँ यह भी बता दिया कि हलाल माल ख़र्च करो और यह भी कि वह माल शुद्ध और पवित्र हो जिसे लेने वाला ख़ुशी से ले ले, ऐसा नहीं कि फटी-पुरानी जूती जो किसी काम की नहीं दान में दे दी या कोई भूखा जिसे भोजन करने की इच्छा है उसे सूखा आटा दे दिया, जब कि घर में भोजन तय्यार है।

यह सब कुछ बता कर यह भी स्पष्ट कर दिया कि अमुक-अमुक स्थानों पर ख़र्च करना अधिक उपयोगी है। यह बात भी याद रखनी चाहिए कि 'क्या ख़र्च करें' में दान की शाखाओं का पूछना भी अभीष्ट हो सकता है अर्थात् दान किस अवसर पर और किन लोगों को देना चाहिए।

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسَىٰ أَن تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَعَسَىٰ أَن تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٦﴾

(रक्षात्मक) युद्ध करना तुम्हारा कर्त्तव्य ठहराया जाता है और वह (ऐसी हालत में कि युद्ध करना) तुम्हें पसन्द नहीं है, किन्तु यह बात बिल्कुल सम्भव है कि तुम किसी बात को पसन्द नहीं करते, परन्तु वह बात वास्तव में तुम्हारे लिए बहुत ही अच्छी हो और यह भी सम्भव है कि तुम किसी बात को पसन्द करते हो, किन्तु वह तुम्हारे लिए दूसरी बात की अपेक्षा बुरी हो क्योंकि अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। ।२१७। (रुकू २६/१०)

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهِ ۖ قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ ۖ وَصَدٌّ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَكُفْرٌ بِهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِندَ اللَّهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتَّىٰ يَرُدُّوكُمْ عَن دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا ۚ وَمَن يَرْتَدِدْ مِنكُمْ عَن دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢١٧﴾

ये लोग तुझ से इज़्ज़त वाले महीने के बारे में अर्थात् उस में युद्ध करने के बारे में पूछते हैं। तू कह दे कि इस में युद्ध करना बहुत बुरी बात है और अल्लाह की राह से रोकना तथा उसका (अर्थात् अल्लाह का) और मस्जिदे-हराम का इन्कार[1] करना और उस के निवासियों को उस में से निकाल देना अल्लाह के निकट इस से भी बड़ी बात है और फ़ित्ना एवं फ़साद क़त्ल से भी बड़ा (पाप) है और यह लोग यदि इन में शक्ति हो तो ये तुम्हारे साथ लड़ते ही चले जाएँ ताकि तुम्हें तुम्हारे धर्म से फिरा दें और तुम में से जो भी अपने धर्म से फिर जाए और फिर इन्कार ही की हालत में मर भी जाए (तो वह याद रखे कि) ऐसे लोगों के कर्म इस लोक में भी और परलोक में भी अकारथ चले जाएँगे और ऐसे लोग नरक (की आग में पड़ने) वाले हैं। वे उस में (देर तक) रहेंगे।२१८।

1. अर्थात् इन दोनों की मर्यादा को भंग करने की चेष्टा करना।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢١٩﴾

जो लोग ईमान लाए हैं और जिन्होंने हिजरत की है तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया है निस्सन्देह ऐसे लोग अल्लाह की रह्‌मत की आशा रखते हैं और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।२१९।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۖ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِن نَّفْعِهِمَا ۗ وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ قُلِ الْعَفْوَ ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ

वे तुझ से शराब और जुए के बारे में पूछते हैं। तू कह दे कि इन (कामों) में बड़ा पाप (और हानि[1]) है तथा इन में (कई एक) लाभ भी हैं, क़िन्तु इन का पाप (और हानि) इन के लाभ से बहुत बड़ा है तथा वे लोग तुझ से यह भी पूछते हैं कि वे क्या ख़र्च करें?

---

1. मूल शब्द 'इस्मुन' का अर्थ है—पाप, पाप का दण्ड और हानि। इस का एक अर्थ भले कामों से रोकना भी है। (मुफ़रदात)

शराब और जुए से इस लिए रोका गया है कि ये नेक कामों से रोकते हैं। शराब पीने वाला व्यक्ति उपासना और आध्यात्मिकता के विषय में चिन्तन नहीं कर सकता, अपितु उस की रुचि व्यर्थ बातों की ओर बढ़ जाती है। उस में वीरता की अपेक्षा व्यर्थ मर-मिटने की भावनाएँ उत्तेजित हो उठती हैं और बुद्धि-संगत वीरता का अभाव हो जाता है।

यही हालत जुए की है। जुवारी प्राय: अपने पवित्र धन को नष्ट कर देता है और भले काम करने से महरूम (वंचित) हो जाता है। यदि वह जुए में जीत जाता है तो उस की यह सफलता अनेक परिवारों के विनाश का कारण बन जाती है। जुवारियों में अपने धन को नष्ट करने की आदत पैदा हो जाती है। नाम-मात्र ही कोई ऐसा जुवारी होगा जो अपने धन को संभाल कर रखता हो। प्राय: सभी जुवारी बड़ी असावधानी से अपना धन लुटाते हैं। वे एक ओर तो लोगों का विनाश करते हैं, परन्तु दूसरी ओर अपने धन से स्वयं भी लाभ नहीं उठाते। इस का कारण यह है कि उन्हें धन पैदा करने में कोई विशेष परिश्रम नहीं करना पड़ता। जुवा सोच-विचार की शक्ति को भी कमज़ोर कर देता है। परिणाम स्वरूप जुवारी ऐसी वस्तुओं को भी नष्ट करने पर तय्यार हो जाता है जिन्हें कोई बुद्धिमान व्यक्ति कभी भी नष्ट करने पर तय्यार न होगा।

لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۲۰﴾

तू कह दे कि जितना कष्ट[1] और तकलीफ़ में न डाले। इसी प्रकार अल्लाह अपने आदेश तुम्हारे लिए वर्णन करता है ताकि तुम सोच-बिचार से काम लो।२२०।

فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ۭ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۭ وَاِنْ تُخَالِطُوْھُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۲۱﴾

इस लोक के बारे में (भी) और परलोक के बारे में भी और ये लोग तुझ से अनाथों के बारे में भी पूछते हैं। तू कह दे कि उन का सुधार करना बहुत अच्छा काम है और यदि तुम उन से मिल-जुल कर रहो तो इस में कोई नुक़सान नहीं, क्योंकि वे तुम्हारे भाई-बन्धु ही तो हैं और अल्लाह फ़साद करने वाले को सुधार करने वाले के मुक़ाबिले में भली-भाँति जानता है और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें कठिनाई में डाल देता। निस्सन्देह अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है।२२१।

---

1. मूल शब्द 'अफ़्व' के तीन अर्थ हैं—

(क) सर्व श्रेष्ठ और शुद्ध वस्तु।

(ख) जो अपनी आवश्यकता से बच जाए और दानी को उस के दान करने में कोई कष्ट न हो।

(ग) बिना माँगे दान करना। (अक़्रब)

यहाँ यह प्रश्न है कि दान कितना देना चाहिए ? इस के लिए 'अफ़्व' शब्द का प्रयोग किया गया है कि जिन लोगों की ईमानी अवस्था उच्च-कोटि की नहीं उन के लिए यह अर्थ है कि उतना दान करो कि उस के बाद तुम्हारा ईमान डगमगाने न लग जाए और तुम कष्ट में भी न पड़ो और फिर लोगों से माँगते न फिरो तथा न तुम्हारे धर्म और ईमान ही को किसी प्रकार की कोई क्षति पहुंचे।

दूसरा गिरोह अल्लाह पर पूरा भरोसा रखने वालों का है। उन के लिए यह आज्ञा है कि वे अपने धन का उत्तम भाग अल्लाह के मार्ग में दें। इन लोगों का ईमान मज़बूत होता है। अत: इन के लिए आदेश दूसरे मोमिनों से अलग है। यह पवित्र क़ुर्आन का ही गुण है कि उस ने दोनों प्रकार के लोगों को एक ही शब्द से आदेश दे दिया।

(शेष पृष्ठ ८१ पर)

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۚ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ۚ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ۚ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۖ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٢٢﴾ ع

और तुम मुश्रिक[1] स्त्रियों से विवाह न करो जब तक कि वे ईमान न ले आएँ। निस्सन्देह एक मोमिन दासी एक मुश्रिक स्त्री से अच्छी[2] है चाहे वह तुम्हें (कितनी ही) पसन्द हो और मुश्रिकों से (मुसलमान स्त्रियों का) विवाह मत करो जब तक कि वे ईमान न ले आएँ। निस्सन्देह एक मोमिन दास एक मुश्रिक से अच्छा[3] है चाहे वह तुम्हें कितना ही पसन्द हो। ये लोग (तो नरक की) आग की ओर बुलाते हैं और अल्लाह अपनी आज्ञा से जन्नत (स्वर्ग) तथा मोक्ष की ओर बुलाता है और लोगों के लिए अपनी पहचान की निशानियाँ खोल-खोल कर बताता है ताकि वह नसीहत हासिल करें।२२२।

(रुकू २७/११)

(पृष्ठ ८० का शेष)

इस आयत का तीसरा अर्थ यह है कि मोमिनों को उन्नति करते-करते अपनी अवस्था ऐसी बना लेनी चाहिए कि आवश्यकता वालों को माँगना ही न पड़े, अपितु वे स्वयं ही अपने पड़ोसियों की आवश्यकताओं का ध्यान रखें तथा उन्हें बिना माँगे पूरा करें। 'क्या ख़र्च करें' के उत्तर में यह भी बताया कि माँगने पर दिया तो क्या दिया। वास्तव में वही दान, दान है जो बिना माँगे दिया जाए। जिस प्राकर एक बालक माँगे या न माँगे उस की माता स्वयं ही उस का ध्यान रखती है। इसी प्रकार लोगों के साथ एक मोमिन की सहानुभूति माता-पिता की भाँति होनी चाहिए।

1. मूल शब्द 'मुश्रिक' का अर्थ है—अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्यों एवं शक्तियों में आस्था रखने वाला।

2. क्योंकि मोमिन स्त्री शरीर तथा आत्मा दोनों की सुविधा का ध्यान रख सकती है।

3. इस्लाम में दास का निरादर जायज़ नहीं और जब वह मुसलमान भी हो तो वह मुस्लिम स्त्री के लिए आध्यात्मिक एवं शारीरिक दृष्टि-कोण से अति उत्तम होगा।

وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ۭ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَاۗءَ فِي الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَ يُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ۝

और ये लोग तुझ से हैज (मासिक धर्म) के (दिनों में स्त्री के पास जाने के) बारे में भी प्रश्न करते हैं। तू कह दे कि वह नुकसान देने वाली बात है। अत: तुम मासिक धर्म के दिनों में अपनी पत्नियों से अलग रहो और जब तक वे पवित्र और स्वच्छ न हो जाएँ उन के पास न जाओ। फिर जब वे स्नान आदि करके पवित्र एवं स्वच्छ हो जाएँ तो जिधर से अल्लाह ने तुम्हें आज्ञा दी है उन के पास जाओ। निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों से प्रेम करता है जो उस की ओर बार-बार झुकते हैं तथा वह निश्चय ही उन लोगों से भी प्रेम करता है जो (शारीरिक और मानसिक) पवित्रता रखते हैं।२२३।

نِسَاۗؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۠ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۡ وَ قَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ۭ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ۭ وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हारे लिए (मानों एक प्रकार की) खेती हैं। अतएव तुम जिस तरह चाहो अपनी खेती के पास जाओ और अपने लिए (कुछ)[1] आगे भेजो और अल्लाह के लिए संयम धारण करो तथा जान लो कि तुम उस के सामने पेश होने वाले हो और तू मोमिनों को उस दिन के बारे में शुभ-समाचार सुना दे।२२४।

---

1. इस का एक भाव तो यह है कि तुम्हारी पत्नियाँ एक प्रकार से खेती के समान हैं अतएव उन से ऐसा अच्छा व्यवहार करो कि जिस से कोई परिणाम निकल सके अर्थात् संतान पैदा हो। दूसरा अर्थ यह है कि खेती लाभ उठाने के लिए होती है सो तुम उन से ऐसे अच्छे ढंग से सम्बन्ध रखो कि अल्लाह प्रसन्न हो जाए।

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝

और तुम लोगों से सद्व्यवहार करने, संयम धारण करने, तथा लोगों का सुधार करने के लिए अल्लाह को अपनी क़समों का निशाना[1] मत बनाओ और अल्लाह बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है ।२२५।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ

अल्लाह तुम्हारी व्यर्थ[2] सौगन्धों पर तुम्हें नहीं पकड़ेगा, हाँ ! जो पाप तुम्हारे दिलों ने (जान-बूझ कर) कमाया उसी पर तुम्हारी पकड़ होगी और अल्लाह

---

1. अरबी के मूल शब्द 'उर्ज़तुन' का अर्थ है (क) ढाल (ख) दाव-पेच (ग) निशाना (घ) रोक, ओट, आड़ । (अक़्व)

दूसरा मूल शब्द 'ऐमान' है जिस का अर्थ है (क) शपथ, क़सम (ख) शक्ति (ग) वरकत या वरदान (घ) दाहिनी ओर या शरीर का दाहिना भाग (ङ) मुहावरे में उस वस्तु को भी कहते हैं जिस के लिए क़सम ली जाए ।

आयत का भाव यह है कि अल्लाह को अपनी सौगन्धों का निशाना या ढाल, ओट और आड़ आदि रोकें न बनाओ अर्थात् यदि भली वातों के न करने की शपथ लोगे तो तुम सुधार करने, भलाई और संयम आदि उत्तम गुण ग्रहण करने से वंचित हो जाओगे ।

2. 'व्यर्थ क़सम' वह है जो—

(क) विना सोचे-समझे खाई जाए ।

(ख) सौगन्ध खाने वाला इस विश्वास से सौगन्ध खाए कि वह सत्य है, परन्तु उस का यह विश्वास असत्य हो ।

(ग) अत्यन्त क्रोध की अवस्था में सौगन्ध खाना जब कि समझ-बूझ और होश ठिकाने न हो ।

(घ) हराम चीजों को प्रयोग में लाने की सौगन्ध ।

(ङ) कर्त्तव्य पालन न करने की सौगन्ध ।

(च) आवेश में आ कर सौगन्ध खानी ।

ये सारी सौगन्धें व्यर्थ हैं । इन के भंग करने में कोई दोष नहीं । ऐसी सौगन्धों पर तौव: या पश्चाताप करने का आदेश है । यदि जान-बूझ कर सौगन्ध खाई जाए तो फिर पाप भी होगा ।

بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ

बहुत क्षमा करने वाला और सहनशील[1] है ।२२६।

لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِن نِّسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ فَإِن فَاءُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

जो लोग अपनी पत्नियों के बारे में सौगन्ध[2] खा कर उन से अलग हो जाते हैं उन के लिए चार महीने तक प्रतीक्षा करना (जायज) है, फिर यदि वे (इस अवधि में संधि की ओर) लौट[3] आएँ तो निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है ।२२७।

---

1. अरबी के मूल शब्द 'हलीम' का अर्थ है—(क) धैर्यवान। (ख) ऐसा व्यक्ति जो क्रोध का वशीभूत न हो। (ग) सहनशील। (घ) ज्ञान और बुद्धि। (ङ) अज्ञान एवं मूर्खता के विपरीत अर्थ। (अक़्रब)

2. मूल शब्द 'ईला' का अर्थ क़ुर्आनी मुहावरे के अनुसार वह सौगन्ध है जो इस बात पर खाई जाए कि पुरुष अपनी पत्नी से सम्बन्ध नहीं रखेगा। (मुफ़रदात)

वास्तव में ऐसी सौगन्ध स्त्री-जाति के अधिकारों के लिए हानिकारक है। अत: इस से रोका गया है।

3. मूल शब्द 'फाऊ' भलाई के कामों की ओर ध्यान देने के लिए प्रयुक्त होता है। (मुफ़रदात)

वास्तव में यह शब्द सहयोग देने, एक-दूसरे की सहायता करने और मिल-जुल कर काम करने के अर्थों में प्रयुक्त होता है।

अरब देश में इस्लाम से पहले यह रीति प्रचलित थी कि कुछ लोग अपनी पत्नियों को तलाक़ तो नहीं देते थे, किन्तु सौगन्ध खा लेते थे कि हम उन से सम्बन्ध नहीं रखेंगे। इस प्रकार वे अपने विचार में अपनी पत्नी के सारे अधिकारों को पूरा करने की ज़िम्मेदारी से अपने आप को आज़ाद समझ लेते थे। उन के विचार में पत्नियों के हक़ और अधिकारों को पूरा न करना कोई पाप नहीं रहता था। ऐसा अपवित्र विचार आज भी संसार में पाया जाता है। क़ुर्आन-मजीद कहता है कि यदि कोई मुसलमान ऐसा करेगा तो उसे याद रखना चाहिए कि उसे चार महीने तक का समय दिया जाता है। इस समय के अन्दर वह अपनी पत्नी से सन्धि कर ले अन्यथा चार महीने गुज़रने पर न्यायाधीश उस की ओर से तलाक़ दिला देगा। इस आयत में स्त्री को अनिश्चित काल तक लटकाए रखने के ख़िलाफ़ फ़ैसला दिया गया है।

साराँश यह कि पवित्र क़ुर्आन पत्नी को लटका कर रखने से रोकता है और जो व्यक्ति अपनी पत्नी के बारे में ऐसा करे उसे विवश करता है कि या तो वह उस के साथ मेल-मिलाप से रहे या फिर उसे तलाक़ दे दे।

وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللّٰهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٨﴾

और यदि वे तलाक़ का फ़ैसला कर लें तो निस्सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है।२२८।

وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْءٍ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَبُعُوْلَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ إِنْ أَرَادُوْٓا إِصْلَاحًا وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٩﴾

और जिन स्त्रियों को तलाक़ मिल जाए तो वे तीन बार हैज़ (मासिक धर्म) आने तक अपने-आप को रोके रखें। यदि वे अल्लाह तथा आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हैं तो (वे याद रखें कि) अल्लाह ने जो कुछ उन के गर्भाशयों में पैदा किया है उन के लिए उस का छिपाना उचित नहीं और यदि उन के पति परस्पर सुधार कर लेने का निश्चय कर लें तो वे उस समय के अन्दर-अन्दर उन्हें पत्नी के रूप में वापस ले लेने के विशेष अधिकारी हैं तथा जिस प्रकार उन (स्त्रियों) पर कुछ ज़िम्मेदारी है उसी प्रकार नियमानुसार उन्हें कुछ अधिकार भी प्राप्त हैं। हाँ! पुरुषों[1] को उन पर एक प्रकार की प्रधानता प्राप्त है और अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है।२२९। (रुकू २८/१२)

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوْفٍ أَوْ تَسْرِيْحٌ بِإِحْسَانٍ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَأْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا إِلَّآ

ऐसी तलाक़[2] जिस में रुजूअ हो सके दो बार हो सकती है फिर या तो उचित रीति से स्त्री को रोक लेना होगा या अच्छा बर्ताव करते हुए उसे विदा कर देना होगा और तुम्हारे लिए उस धन का कोई भाग वापस

1. यहाँ स्त्री-जाति का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराया गया है कि हम ने तुम्हारे अधिकार और हक़ सुरक्षित कर दिए हैं। जिस प्रकार पुरुषों को तुम्हारे ऊपर कुछ अधिकार दिए गए हैं उसी प्रकार तुम्हें भी उन पर कुछ अधिकार दिए गए हैं। हाँ! यह बात अवश्य है कि कुछ विशेष हालतों में अन्तिम निर्णय का अधिकार पुरुषों को दिया गया है।

2. (क) तलाक़ देने का ठीक और सही ढंग यह है कि तुहर (पवित्रता) की अवस्था में पति एक (शेष पृष्ठ ८६ पर)

أَن يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا وَمَن يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣٠﴾

लेना जायज़ नहीं जो तुम उन्हें पहले दे चुके हो, सिवाय इस के कि उन दोनों को यह डर हो कि वे अल्लाह की नियमित सीमाओं को क़ायम नहीं रख सकेंगे। सो यदि तुम्हें यह आशंका[1] हो कि वे दोनों अल्लाह की नियमित सीमाओं को क़ायम नहीं रख सकेंगे तो वह स्त्री जो कुछ फ़िद्या अर्थात् बदले के रूप में दे उस के बारे में उन दोनों (में से किसी) को कोई पाप नहीं होगा। यह अल्लाह की नियमित सीमाएँ हैं। अतएव तुम इन का उल्लंघन न करो और जो लोग अल्लाह की नियमित सीमाओं का उल्लंघन करें तो (समझ लो कि) वही लोग वास्तव में अत्याचारी हैं।२३०।

(पृष्ठ ८५ का शेष)

तलाक़ दे, इस के बाद किसी तुहर में कोई तलाक़ न दे। तीन क़ुरू (मासिक धर्म) जो इद्दत का समय है बीतने पर पति-पत्नी का सम्बन्ध टूट जाएगा और वह स्त्री किसी दूसरे से विवाह कर सकेगी।

(ख) यह एक रजई अर्थात् वापस ली जाने वाली तलाक़ है। ऐसी रजई तलाक़ दो बार हो सकती है, जिस का ढंग यह है :—

(अ) यदि पुरुष तलाक़ दे तो इद्दत (तीन क़ुरू—तीन मासिक धर्म अर्थात् तीन महीने) के अन्दर अन्दर रुजूअ हो सकता है। यदि इद्दत बीत जाए और रुजूअ न करे तो नए महर के साथ नया निकाह हो सकता है। (आ) यदि वह इस निकाह के बाद फिर उसे तलाक़ दे दे तो निश्चित इद्दत (तीन क़ुरू) के अन्दर वह रुजूअ कर सकता है। यदि यह इद्दत भी बीत जाए तथा रुजूअ न करे तो नए महर के साथ नया निकाह हो सकता है।

(इ) परन्तु यदि फिर तीसरी बार तलाक़ दे तो यह तलाक़ 'बत्तः' होगी। अब वह इद्दत के अन्दर रुजूअ नहीं कर सकता और न ही इद्दत के बाद नए महर के साथ नया निकाह हो सकता है। हाँ! यदि वह स्त्री किसी दूसरे पुरुष के साथ विवाह करने के बाद बिना किसी हीले या पाखंड के तलाक़ पा ले या विधवा हो जाए तो फिर पहला पति उस से विवाह कर सकता है।

(ग) यदि कोई व्यक्ति एक ही समय में एक से अधिक तलाक़ दे चाहे दो हों या तीन, या इस से ज़्यादा तो वह एक ही रजई तलाक़ समझी जाएगी न कि एक से अधिक।

1. इस में बताया गया है कि यदि न्यायालय यह निर्णय करे कि स्त्री अपने पति के पास रहने के

(शेष पृष्ठ ८७ पर)

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّىٰ تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ ۗ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يَتَرَاجَعَا إِنْ ظَنَّا أَنْ يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۗ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٢٣٠﴾

फिर (पहले बताई हुई दो तलाक़ों का समय बीतने के पश्चात् यदि पति उसे तीसरी) तलाक़ दे दे तो वह स्त्री उस के लिए हराम हो जाएगी, जब तक कि वह उस के सिवा किसी दूसरे पति के पास[1] न जाए। यदि वह भी उसे तलाक़ दे दे तो उन दोनों को इस शर्त पर कि उन्हें यह पूर्ण विश्वास हो कि वे अल्लाह की नियमित सीमाओं को क़ायम रख सकेंगे तो आपस में दोबारा रुजूअ (विवाह) कर लेने में कोई पाप नहीं होगा और यह अल्लाह की (निश्चित) सीमाएँ हैं जिन्हें वह ज्ञान रखने वाले लोगों के लिए खोल-खोल कर वर्णन करता है।२३१।

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ

और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दे दो और वे अपनी (इद्दत के) निश्चित समय (की अन्तिम सीमा) तक पहुँच[2] जाएँ तो उन्हें

(पृष्ठ ८६ का शेष)

लिए तय्यार नहीं और उस के राज़ी न होने के कारण पुरुष भी उस के साथ न्याय न कर सकेगा तो स्त्री यदि कुछ बदले के रूप में देना चाहे तो पुरुष को आज्ञा है कि वह कुछ धन ले कर उसे तलाक़ दे दे, किन्तु यह केवल उतना ही धन ले सकता है जितना उस ने अपनी उस पत्नी को स्वयं दिया था। उस से अधिक कुछ नहीं ले सकता।

1. अर्थात् वह स्त्री दूसरे पति से विवाह करके उस के घर रहे और फिर उस पति से किसी कारण उसे तलाक़ मिल जाए या उस की मृत्यु हो जाए।

2. 'पहुँच जाने' के दो अर्थ हैं—

(क) यह कि निश्चित समय के अन्त के निकट पहुंच जाना।

(ख) निश्चित समय को पूरा कर लेना।

इस स्थान पर पहला अर्थ अभीष्ट है।

अल्लामा क़ुरतबी हस्पानवी प्राष्यकार लिखते हैं कि सारे मुसलमान विद्वान इस आयत के पहले अर्थों पर सहमत हैं। किसी ने भी मतभेद नहीं किया।

بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ
ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوا ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ
وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا ۚ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ
وَمَا أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُم
بِهِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

या तो उचित ढंग से रोक[1] लो अथवा उन्हें उचित ढंग से विदा कर दो और उन पर अत्याचार करने के विचार से उन्हें कदापि न रोको तथा जो व्यक्ति ऐसा करे तो (समझ लो कि) उस ने अपने आप पर ही अत्याचार किया है और तुम अल्लाह के आदेशों की हँसी न उड़ाओ और तुम पर जो अल्लाह की कृपा हुई है उसे याद रखो तथा (इसे भी याद रखो) जो उसने किताब एवं हिक्मत के रूप में तुम पर उतारा है जिस के द्वारा वह तुम्हें सदुपदेश देता है और अल्लाह के लिए संयम धारण करो तथा समझ लो कि अल्लाह प्रत्येक बात को भली-भाँति जानता है।२३२। (रुकू २९/१३)

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ
أَن يَنكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُم بِالْمَعْرُوفِ ۗ
ذَٰلِكَ يُوعَظُ بِهِ مَن كَانَ مِنكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ ۗ ذَٰلِكُمْ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَأَطْهَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ۝

और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दो और वे अपनी इद्दत[2] पूरी कर लें और जब कि वे अच्छे ढंग से आपस में राज़ी हो जाएँ तो फिर तुम उन्हें अपने (नए) पतियों के साथ विवाह कर लेने से मत रोको। यह ऐसी बात है जिस का तुम में से हर उस व्यक्ति को जो अल्लाह तथा रोज़े आख़िरत (क़ियामत के दिन) पर ईमान रखता है उपदेश दिया जाता है और (समझ लो कि) यह बात तुम्हारे लिए सब से ज़्यादा बरकत वाली और सब से ज़्यादा पवित्र है एवं अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।।२३३।

---

1. 'रोक लो' से यह तात्पर्य है कि अच्छे ढंग से रुजूअ कर लो और तलाक़ वापस ले लो। ऐसा न हो कि स्त्री का अनादर हो।

2. इद्दत :—इस्लामी क़ानून के मुताबिक़ वह मुद्दत जिस में स्त्री दूसरा विवाह न कर सके, मुतल्लक़ा के लिए तीन महीने, विधवा के लिए 4 माह 10 दिन और हामिला (गर्भवती) के लिये बच्चा पैदा होने तक है।

وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا

और माताएँ पूरे दो वर्ष तक अपने बच्चों को दूध पिलाएँ। यह (हिदायत) उन के लिए है जो (अपने बच्चों को निश्चित समय तक) दूध पिलाना चाहें तथा जिस व्यक्ति का बच्चा है उस पर रीति-रिवाज[1] के अनुसार उन (दूध पिलाने वालियों) के भोजन[2] और वस्त्र की ज़िम्मेदारी है। किसी व्यक्ति[3] पर उस की शक्ति से अधिक जिम्मेदारी नहीं डाली जाती। किसी माता[4] को उस के बच्चे के कारण दुःख न दिया जाए तथा न ही पिता को उस के बच्चे के कारण दुःख दिया जाए और वारिस पर भी ऐसा ही करना ज़रूरी है और यदि वे दोनों अपनी

---

1. अभिप्राय यह है कि निर्धन पिता अपनी तथा धनवान पिता अपनी शक्ति के अनुसार ख़र्च करें। इस आयत में साधारण दूध पिलाने वालियों का वर्णन नहीं अपितु माताओं का है। यह वर्णन तलाक़ के प्रसंग में किया गया है कि यदि दूध पिलाने वाली स्त्री को तलाक़ दे दी जाए तो बच्चे के हितार्थ उस की माता के लिए अनिवार्य है कि वह उसे पूरी अवधि दूध पिलाए और इस के बदले में बच्चे के पिता का कर्त्तव्य है कि एक साधारण नौकरानी की भाँति उस से व्यवहार न करे अपितु अपनी शक्ति के अनुसार उसे ख़र्च दे, क्योंकि यह स्त्री के मनोभावों को ठेस पहुँचाने वाली होगी कि एक ओर उसे तलाक़ के पश्चात् बच्चे को दूध पिलाने के लिए विवश किया जाए तथा दूसरी ओर उस से ऐसा व्यवहार किया जाए जो उस के लिए अपमान-जनक हो।

2. 'भोजन और वस्त्र' देने का अर्थ समस्त आवश्यकताओं को पूरा करना है।

3. अर्थात् बच्चे के पिता से यह माँग करना कि वह अपनी शक्ति से बढ़ कर ख़र्च करे यह बात अनुचित है और स्त्री से यह माँग करना कि वह तलाक़ पाने के बाद भी एक सेविका की भाँति बच्चे को दूध पिलाने के लिए एक समय तक उस के घर रहे यह भी अनुचित है।

4. अर्थात् बच्चे को एक-दूसरे पर दबाव डालने का साधन न बनाओ। यह आदेश अति उत्तम है। कई लोग ऐसी मूर्खता कर बैठते हैं जिस का परिणाम यह निकलता है कि या तो बच्चे नष्ट हो जाते हैं या उन की शिक्षा आदि नहीं हो सकती। वास्तव में इस प्रकार का व्यवहार बच्चों की हत्या कर देने के समान है। क़ुर्आन-मजीद ने इस प्रकार की घिनौनी बातों से रोक कर आने वाली सन्तान पर बहुत बड़ा उपकार किया है।

فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَإِنْ أَرَدتُّمْ أَن تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُم مَّا آتَيْتُم بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٣﴾

ख़ुशी[1] और सम्मति से (निश्चित समय दो वर्ष से पहले ही) दूध छुड़ाना चाहें तो भी उन पर कोई दोष नहीं और यदि तुम अपने बच्चों को (किसी दूसरी स्त्री से) दूध पिलवाना चाहो तो फिर भी तुम पर कोई दोष नहीं जब कि वह (बदला) जो तुम ने उसे देना किया है उचित रूप से दे दो तथा अल्लाह से डरो और जान लो कि जो कुछ तुम करते हो निस्सन्देह अल्लाह उसे देखता है ।२३४।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ۖ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٣٤﴾

और तुम में से जिन लोगों की मृत्यु हो जाती है तथा वे अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जाते हैं तो वे (विधवाएँ) अपने-आप को चार महीने दस दिन तक रोके रखें। फिर जब वे अपना निश्चित समय (इद्दत) पूरा कर लें और जो कुछ भी वे अपने बारे में उचित रूप से करें तो उस का तुम्हें कोई पाप नहीं और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे जानता है ।२३५।

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُم بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنتُمْ فِي أَنفُسِكُمْ ۚ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ

और इस में तुम पर कोई पाप नहीं कि (विधवा) स्त्रियों को विवाह का सन्देश संकेत रूप में दो या उसे अपने मन में छिपाए रखो। अल्लाह जानता है कि तुम्हें अवश्य ही उन का ध्यान आएगा, किन्तु तुम

1. इस आयत से विदित होता है कि क़ुर्आन-मजीद ने दूध पिलाने या छुड़ाने के बारे में माता-पिता दोनों को एक जैसा अधिकार दिया है। समस्त धार्मिक सिद्धान्तों में इस्लाम का यह सिद्धान्त सर्व श्रेष्ठ है, क्योंकि गृहस्थ जीवन में स्त्री-पुरुष दोनों को एक जैसे अधिकार दिए हैं। पवित्र क़ुर्आन ने दूध पिलाने की जो अवधि निश्चित की है उस से अधिक समय दूध पिलाने के लिए न तो पति विवश कर सकता है और न ही पत्नी दबाव डाल सकती है। सो तलाक़ के बाद भी पुरुष को स्त्री के मनोभावों का इतना ध्यान रखने के लिए विवश किया गया है तो स्पष्ट है कि धर्म-पत्नी होने की अवस्था में उस के मनोभावों को ध्यान में रखना कितना आवश्यक होगा।

وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۚ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِىْٓ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٣٦﴾ ع ٣٠/١٤

गुप्त रूप से उन से कोई प्रतिज्ञा न करो। हाँ! यह (इजाज़त है) कि तुम उन से कोई उचित[1] बात कह दो तथा जब तक (इद्दत का) आदेश अपने निश्चित समय तक न पहुँच जाए तब तक तुम विवाह का दृढ़ संकल्प न करो और यह जान लो कि जो कुछ तुम्हारे दिलो में है अल्लाह उसे जानता है। अतः तुम इस बात से डरो और जान लो कि अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और सहनशील है।२३६। (रुकू ३०/१४)

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ

तुम पर कोई पाप नहीं कि यदि तुम स्त्रियों को उस समय भी तलाक़ दे दो जब कि तुम ने उन्हें छुआ[2] तक न हो या महर[3] नियुक्त

1. विधवा स्त्रियों के साथ विवाह करने की यदि तुम्हारी इच्छा हो तो इद्दत बीतने तक उसे प्रकट न करो, हाँ! संकेत रूप में इधर ध्यान दिलाए जाने में कोई दोष नहीं है।

2. साधारण दृष्टि से यह बात भद्दी सी जान पड़ती है कि जो व्यक्ति संभोग करने से पहले ही स्त्री को तलाक़ दे देगा वह निकाह ही क्यों करेगा, परन्तु निकाह के पश्चात् कुछ ऐसी बाधाएं, विवशताएं और मजबूरियाँ आ जाती हैं जिनके कारण तलाक़ देनी ही पड़ती है। जैसे निकाह के तुरन्त पश्चात् ऐसी गवाहियाँ मिल जाएं जिन से निकाह अवैध हो जाए या दिलों में उस निकाह से घृणा पैदा हो जाए। जैसे एक गवाही ऐसी मिल जाए कि यह स्त्री अपने पति की दूध की बहन है, इस से पति के दिल में घृणा पैदा हो जाएगी और कभी-कभी ऐसी गवाहियाँ निकाह के बाद मिल जाया करती हैं या वंश के बड़े लोग जिन को पहले हालतों का ज्ञान नहीं था इस आधार पर तलाक़ का निर्णय कर दें कि दोनों कुटुम्बों के आपस के सम्बन्ध ऐसे हैं कि तुम दोनों पति-पत्नी के रूप में निबाह नहीं कर सकोगे। इस्लामी धर्म-शास्त्र के अनुसार एक माता का दूध पीए बच्चों का आपस में विवाह हराम और अवैध है। ऐसे बच्चों को परिभाषा में रज़ाई भाई-बहन कहते हैं अर्थात् दूध के भाई-बहन।

3. महर—निकाह के समय एक मुसलमान पति प्रतिज्ञा करता है कि वह अपनी शक्ति के अनुसार इतना निश्चित धन या वस्तु अपनी पत्नी को देगा। यह महर पत्नी की निजी सम्पत्ति और उस का हक़ होता है।

اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۚۖ وَّمَتِّعُوْهُنَّ عَلَى الْمُوْسِعِ
قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا ۢبِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا
عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۲۳۷﴾

न किया हो[1] और (चाहिए कि ऐसी अवस्था में) उन्हें उचित ढंग से कुछ सामान दे दो। धनवान के लिए उस की शक्ति के अनुसार तथा निर्धन[2] के लिए उस की शक्ति के अनुसार। (हमने ऐसा करना) उपकारी लोगों के लिए जरूरी (कर दिया) है।२३७।

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ
فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ
يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَ
اَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۚ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ
اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۳۸﴾

और यदि तुम उन्हें छूने से पहले तलाक़ दे दो और तुम ने महर निश्चित कर लिया हो तो (ऐसी हालत में) जो महर तुम ने निश्चित किया हो उस का आधा देना होगा सिवाय इस बात के कि वे स्त्रियाँ स्वयं छोड़ दें या वह व्यक्ति छोड़ दे जिस के हाथ[3] में विवाह की गाँठ है और तुम्हारा छोड़ देना ही तक़वा के ज़्यादा क़रीब है और तुम आपस में (व्यवहार करते समय) परोपकार करना न भूलो। (याद रखो कि) जो कुछ तुम करते हो निस्सन्देह अल्लाह उसे देखता है।२३८।

1. इस्लाम में 'हक़ महर' निश्चित किए बिना निकाह अवैध ठहराया है, परन्तु इस आयत से प्रतीत होता है कि ऐसा भी सम्भव हो सकता है। शरीअत ने इस का यह अर्थ किया है कि यदि रुपया के रूप में महर निश्चित न भी हो तो भी यह समझा जाएगा कि महर निश्चित ही है और ऐसी अवस्था में महर की नियुक्ति का अनुमान उस वंश के दूसरे व्यक्तियों के महर को देख कर किया जाएगा।

2. यदि इस बदले के बारे में मतभेद हो जाए तो क़ुर्आन-मजीद ने सिद्धान्तिक रूप में निर्णय कर दिया है कि इस प्रकार के झगड़ों को हाकिमों के पास ले जाओ। न्यायाधीश इस बात का निर्णय करेगा कि पति ने अपने सामर्थ्य के अनुसार तलाक़ दी हुई स्त्री की क्षति पूर्ति की है या नहीं।

3. इस से यह तात्पर्य है कि ऐसी स्त्रियाँ तलाक़ के समय अपना आधा महर पतियों को छोड़ सकती हैं और उन के वकील भी छोड़ सकते हैं। इस आयत का यह भी अभिप्राय हो सकता है कि यदि पति में सामर्थ्य हो तो वह उसे आधे महर की अपेक्षा पूरा महर दे दे।

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿٢٣٩﴾

तुम सारी नमाज़ों का और (ख़ासकर) दरमियानी (मध्यम में आने वाली) नमाज़ का पूरा ध्यान[1] रखो तथा अल्लाह के लिए आज्ञाकारी बन कर खड़े हो जाओ ।२३९।

فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٤٠﴾

यदि तुम्हें भय हो तो पैदल अथवा सवार होने की हालत में ही (नमाज़ पढ़ लो) फिर जब तुम्हें शान्ति मिल जाए तो अल्लाह को याद करो, क्योंकि उस ने तुम्हें वह कुछ सिखाया है जो तुम (पहले) न जानते थे ।२४०।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۚۖ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ

और तुम में से जो लोग मर जाएँ और पत्नियाँ छोड़ जाएँ तो वे अपनी पत्नियों के भले के लिए एक वर्ष तक लाभ[2] पहुँचाने अर्थात् उन्हें (घरों से) न निकालने की वसीय्यत[3] कर जाएँ, किन्तु यदि वे अपने आप

---

1. अर्थात् तुम सारी नमाज़ों का ध्यान रखो और उन का निरीक्षण करो परिणाम यह निकलेगा कि नमाज़ के कारण तुम पापों तथा भूलों से बचे रहोगे, क्योंकि नमाज़ मनुष्य को पापों, दुराचारों और बुरी बातों से रोकती है (सूर: अन्कबूत आयत 46) और अल्लाह नमाज़ पर क़ायम रहने वाले भक्त का सहायक और मित्र बन जाता है। 'ध्यान रखो' में यह भी बताया गया है कि इस्लामी उपासना दूसरे धर्मों की उपासनाओं की भाँति एक पक्षीय नहीं है अपितु इस का फल इस लोक में तथा परलोक में भी मिलेगा ।

2. 'लाभ पहुँचाने' से तात्पर्य यह है कि जिन लोगों के हाथ में वसीय्यत लागू करने का अधिकार हो वे उन विधवा स्त्रियों को उन के स्वर्गीय पतियों के घरों से न निकालें। यदि मरने वाले का मकान किसी दूसरे नातेदार को भी मिला हो तो भी मरने वाले की स्त्री को उस मकान में एक वर्ष रहने दें। हाँ! यदि वह स्त्री स्वयं अपनी इच्छा से जाना चाहे तो इद्दत का समय (चार महीने दस दिन) पूरा करके जा सकती है। एक वर्ष की शर्त केवल स्त्री के सुख-सुविधा के लिए है। इस आदेश से लाभ उठाना या न उठाना उस का काम है।

3. वसीय्यत—मरते समय यह कह जाना कि मेरे बाद ऐसा-ऐसा किया जाए ।

خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِيٓ أَنفُسِهِنَّ مِن مَّعْرُوفٍ ۗ وَٱللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٤١﴾

चली जाएँ तथा अपने बारे में जो भी भली[1] बात करें उस का तुम पर कोई दोष नहीं और अल्लाह ग़ालिब एवं हिक्मत वाला है।२४१।

وَلِلْمُطَلَّقَٰتِ مَتَٰعٌۢ بِٱلْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى ٱلْمُتَّقِينَ ﴿٢٤٢﴾

और जिन स्त्रियों को तलाक़ दे दी जाए उन्हें भी अपने हालात[2] के अनुकूल कुछ सामान[3] देना अति आवश्यक है। हम ने यह बात संयमियों के लिए ज़रूरी ठहराई है।२४२।

---

1. 'भली बात' अरबी के मूल शब्द '**मारूफ़**' का अनुवाद किया गया है जिस का अर्थ है—विधान या स्वाभाविक नियम अथवा जाति के रीति-रिवाज के अनुसार जिसे लोग भली-भाँति जानते हों। इस स्थान पर इस का अर्थ उचित और भली बात कहना है। तात्पर्य यह है कि चाहे विधवाएं इद्दत के पश्चात् दूसरा विवाह करें चाहे अपने माता-पिता या अपने नातेदारों के पास चली जाएं या कोई नौकरी करें तो तुम पर कोई दोष नहीं। इस आदेश के अनुसार उन्हें रोकने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं।

2. मूल शब्द 'मारूफ़' क़ुर्आन-मजीद में कई बार प्रयुक्त हुआ है। 'मारूफ़' उस काम को कहते हैं जिस के गुण और विशेषताएं बुद्धि-संगत हों और इस्लामी धर्म-शास्त्र से पहचानी जाएं। अतएव जब मारूफ़ शरीअत के अनुसार हो तो वह काम विधान के अनुकूल कहलाएगा और जब साम्य बुद्धि (Common sense) से उस के गुण पहचानें जाएँ तो उसे रीति-रिवाज के अनुकूल कहा जाएगा। इस का वास्तविक अर्थ 'पहचाना हुआ' है। जब किसी काम की विशेषता किसी विशेष व्यक्ति की बुद्धि से पहचानी जाए तो उसे हालात के अनुकूल कहा जाएगा।

3. यहाँ तलाक़ दी हुई स्त्री से उत्तम व्यवहार करने के आदेश को दुहराया गया है क्योंकि तलाक़ दी हुई स्त्री पर एक प्रकार का क्रोध होता है। अतः पुरुष को विशेष रूप से उस के साथ व्यवहार करने का आदेश दिया गया है। यदि इस आदेश का पूर्ण रूप से पालन किया जाए तो अनेक झगड़े समाप्त हो सकते हैं और तलाक़ जो किसी मजबूरी की हालत में जायज़ है किसी प्रकार के दुःख और कष्ट का कारण नहीं बन सकती, क्योंकि दोनों पक्ष यह समझेंगे कि यह तलाक़ मजबूरी की हालत में हो रही है अन्यथा परस्पर कोई झगड़ा नहीं। इस आदेश से इस ओर भी संकेत होता है कि जहाँ विधान ने विधवा को एक वर्ष तक अपने स्वर्गीय पति के मकान में रहने की सुविधा दे रखी है वहाँ एक मोमिन को चाहिए कि तलाक़ दी हुई स्त्री को भी उस की आवश्यकता के अनुसार कुछ अधिक समय तक मकान से लाभ उठाने दे।

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٣﴾

इसी प्रकार[1] अल्लाह् अपने आदेश[2] तुम्हारे भले के लिए खोल-खोल कर बताता है ताकि तुम समझो ।२४३। (रुकू ३१/१५)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ثُمَّ اَحْيَاهُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٢٤٤﴾

क्या तुझे उन लोगों की ख़बर नहीं मिली जो हज़ारों (की संख्या में) थे और मौत से बचने के लिए अपने घरों से निकले[3] थे। इस पर अल्लाह् ने उन्हें कहा कि तुम मर[4] जाओ। इस के बाद उस ने उन्हें ज़िन्दा कर दिया। निस्सन्देह अल्लाह् लोगों पर बड़ी कृपा करने वाला है, किन्तु फिर भी बहुत से लोग कृतज्ञ नहीं बनते ।२४४।

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٥﴾

और तुम अल्लाह् की राह् में (रक्षात्मक) युद्ध करो तथा जान लो कि अल्लाह् बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है ।२४५।

---

1. अर्थात् शरीअत की बातें बताने में यह बात सामने रखी गई है कि सारे महत्वपूर्ण विषयों और आवश्यकताओं की पूर्ति के सम्बन्ध में शिक्षा बता दी जाए और उस का विवरण ऐसे सरल ढंग से हो कि मानव-समाज पापों एवं दुर्बलताओं से बचा रहे।

2. मूल शब्द 'आयत' का अर्थ है—
(क) आदेश (ख) अनुदेश (ग) चिन्ह, निशान, चमत्कार (घ) हिदायत (ङ) युक्ति (च) ईमान की ओर ले जाने वाली बात (छ) दु:ख से बचाने वाली बात (ज) सभ्यता (झ) सम्मार्ग दिखाने वाली बात (ञ) अल्लाह् की ओर ध्यान दिलाने वाली बात।

3. अपने घरों से निकलने वाले लोग बनी-इस्राईल थे जो सम्राट फ़िरऔन से भयभीत हो कर मिस्र देश से निकल गए थे। पवित्र क़ुर्आन के कथनानुसार वे हज़ारों की संख्या में थे। इस से तौरात की इस बात का खण्डन होता है कि मिस्र से निकलने वाले इस्राइलियों की संख्या छ: लाख तीन हज़ार पाँच सौ पचास थी, क्योंकि छ: लाख का यात्री दल ज़्यादा सामान के बिना जंगल में सैकड़ों कोस की यात्रा नहीं कर सकता।

4. 'मर जाओ' से यह अभिप्राय है कि तुम्हारी अवज्ञा के कारण तुम से विजय पाने वाली शक्तियाँ वापस ले ली जाती हैं, परन्तु फिर अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया और विजय पाने वाली शक्तियाँ उन्हें वापस दे दीं।

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗۤ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ؕ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ۪ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۴۵﴾

क्या कोई है जो अल्लाह् को (अपने धन का) एक अच्छा भाग काट[1] कर दे ताकि वह उस के लिए उसे बहुत बढ़ाए? और अल्लाह् (का यह भी नियम है कि मनुष्य से धन) लेता है तथा उसे बढ़ाता है और (अन्ततः) तुम्हें उसी की ओर लौटाया जाएगा।२४६।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ؕ قَالُوْا وَمَا لَنَاۤ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَاَبْنَآئِنَا ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۴۶﴾

क्या तुझे बनी-इस्राईल के उन नेताओं का हाल मालूम नहीं जो मूसा के बाद हुए हैं? जब उन्हों ने अपने एक नबी[2] से कहा कि हमारे लिए किसी व्यक्ति को राजा नियुक्त कीजिए ताकि हम (उस की अध्यक्षता में) अल्लाह् की राह में युद्ध करें। उस ने कहा कि कहीं ऐसा तो नहीं होगा कि यदि तुम्हारे लिए युद्ध ज़रूरी कर दिया जाए तो तुम युद्ध न करो? उन्हों ने (उत्तर में) कहा (ऐसा नहीं होगा) और हमें क्या हो गया है कि हम अल्लाह् की राह में युद्ध न करेंगे जब कि हमें अपने घरों से निकाल दिया गया है तथा अपनी संतान से भी अलग किया गया है, परन्तु जब उन के लिए युद्ध करना ज़रूरी कर दिया गया तो उन में से थोड़े से लोगों के सिवाय अन्य सभी विमुख हो गए और अल्लाह् ज़ालिमों और अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।२४७।

1. अरबी के मूल शब्द क़र्ज़ का अर्थ है—

(क) ऋण (ख) ऋण देना (ग) काट कर अलग करना (घ) काटना।

आयत का भाव यह है कि जो व्यक्ति अपने पवित्र धन में से कुछ भाग अल्लाह् के लिए दान दे अल्लाह् उसे ऐसे कर्मों का फल अवश्य देगा। शुभ कर्मों को अल्लाह् कदापि व्यर्थ जाने नहीं देता अपितु उन का प्रतिफल बहुत बढ़ा-चढ़ा कर देता है। अल्लाह् को अपने लिए न तो किसी ऋण आदि की तथा न किसी दूसरी वस्तु की कोई आवश्यकता है। वह तो धनवानों को निर्धनों के हितार्थ दान देने और शुभ कर्म करने की प्रेरणा देता है, फिर उन के कर्मों का प्रतिफल बढ़ा-चढ़ा कर देने की प्रतिज्ञा करता है।

2. देखिए तौरात, न्यायियों का वृत्तान्त 6:7.8

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًا ۚ قَالُوا أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ۚ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۖ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٨﴾

और उन के नबी ने उन से कहा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत[1] को बादशाह के रूप में (इस काम के लिए) खड़ा किया है। उन्हों ने कहा कि उसे हमारे ऊपर हुकूमत[2] किस तरह मिल सकती है जब कि हम उस की अपेक्षा हुकूमत करने का ज़्यादा हक़ रखते हैं और उसे धन-दौलत में भी कोई अधिक वृद्धि नहीं मिली। उस ने कहा कि निस्सन्देह अल्लाह ने उसे तुम पर फ़ज़ीलत (प्रधानता) दी है और तुम्हारी अपेक्षा उसे ज्ञान तथा शारीरिक बल में भी बहुतात दे रखी है और अल्लाह जिसे पसन्द करता है उसे अपना राज्य[3] प्रदान करता है और अल्लाह वृद्धि प्रदान करने वाला एवं बहुत जानने वाला है।२४८।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَن يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا

और उन के नबी ने उन से कहा कि उस की हुकूमत का यह भी प्रमाण है कि तुम्हें एक ऐसा ताबूत[4] (सन्दूक़) मिलेगा जिस में तुम्हारे

---

1. तालूत गुण वाचक संज्ञा है। इस का अर्थ है लम्बा और प्रौढ़ और इस से अभिप्राय जद्ऊन है। इब्रानी भाषा में जद्ऊन का अर्थ काटना या गिराना है। मानों ऐसा व्यक्ति जो अपने शत्रुओं को काटता तथा भूमिसात् करता हो। जद्ऊन को तौरात में वीर और बलवान कहा गया है। (न्यायों का वृत्तांत 6:12) अत: तालूत और जद्ऊन समानार्थक शब्द है।

2 मूल शब्द 'मुल्क' का अर्थ है—हुकूमत राज्याधिकार, ग़लबा, प्रभुत्व, अनुशासन, साम्राज्य। (अक़्रब)

आयत का अर्थ यह है कि तालूत को हमारे ऊपर अनुशासन करने या प्रभुत्व जमाने का अधिकार कैसे, कब और कहाँ से मिल गया।

3. 'अपना राज्य'—इस में यह संकेत किया है कि समस्त साम्राज्य अल्लाह का ही है। अत: इस के पाने का वही अधिकारी हो सकता है जिसे अल्लाह नियुक्त करे।

4. मूल शब्द 'ताबूत' का अर्थ है—

(क) सन्दूक़ (ख) नाव (अक़्रब) इस्तेआरा अर्थात् रूपक के रूप में यह शब्द हृदय के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है (मुफ़रदात)

(शेष पृष्ठ ९८ पर)

تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝

रब्ब की ओर से तुम्हारे लिए शान्ति होगी तथा उस वस्तु का अवशेष[1] (अर्थात् बचा हुआ) होगा जो मूसा और हारून से सम्बन्ध रखने वालों ने (अपने पीछे) छोड़ा। उसे फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे। यदि तुम मोमिन हो तो निस्सन्देह इस बात में तुम्हारे लिए एक बड़ा निशान है।२४९। (रुकू ३२/१६)

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ لَّمْ

इस के बाद जब तालूत अपनी सेनाओं को ले कर निकला तो उसने कहा कि निस्सन्देह अल्लाह एक नदी[2] द्वारा तुम्हारी परीक्षा करने

(पृष्ठ ९७ का शेष)

इस स्थान पर 'ताबूत' से अभिप्राय हृदय है क्योंकि यहाँ बताया गया है कि उस सन्दूक़ में तुम्हारे लिए शान्ति और तसल्ली होगी। यह बात स्पष्ट है कि शान्ति दिलों में होती है न कि सन्दूकों में। आयत का भाव यह है कि तालूत के अनुयायियों के दिलों में फ़रिश्ते उत्साह भरते थे तथा उन्हें त्याग और बलिदान की प्रेरणा देते थे।

1. बक़िय्या अवशेष अर्थात् बचा हुआ, लेकिन इस स्थान पर 'अवशेष' का मतलब उत्तम पदार्थ है। तात्पर्य यह है कि अल्लाह तालूत के साथियों में वही उच्च-कोटि की नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियाँ पैदा कर देगा जो हज़रत मूसा एवं हज़रत हारून के मानने वालों में थीं। सारांश यह है कि उस समय के रसूल ने तालूत पर आपत्ति करने वालों को यह उत्तर दिया कि छिपी हुई शक्तियों का ज्ञान केवल अल्लाह ही को है। जब उस ने अनुशासन के लिए तालूत को चुन लिया है तो निश्चय ही वह तुम से उत्तम है। फिर अनुशासन केवल धन से ही नहीं अपितु ज्ञान, त्याग और बलिदान द्वारा भी होता है। सो वह इन बातों में तुम लोगों से बढ़ कर है और अल्लाह की राह में बलिदान होने के लिए हर घड़ी तय्यार है। उसे वीरता, धीरता, सहनशीलता और त्याग का गुण प्रदान किया गया है तथा उस का अपना और उस के साथियों के दिल अल्लाह की सहायता से सन्तुष्ट होंगे और उन्हें वही संयम एवं तक़वा (नेकी-भलाई) मिलेगी जो मूसा और हारून तथा उस के साथियों को प्राप्त हुआ था।

2. मूल शब्द 'नहर' के दो अर्थ हैं—
(क) नदी (ख) धन-दौलत। (मुफ़रदात)

यहाँ इस आयत के दोनों अर्थ हो सकते हैं। (क) धन-दौलत के अनुसार यह अर्थ होगा कि धन द्वारा तुम्हारी परीक्षा की जाएगी। यदि तुम धन-दौलत के पीछे पड़ गए तो अल्लाह का काम न कर सकोगे और यदि धन-दौलत से प्रभावित न हुए तो तुम्हें सफलता प्राप्त होगी।

(शेष पृष्ठ ९९ पर)

يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّيٓ إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهٖ ۚ
فَشَرِبُوْا مِنْهُ إِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۚ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ هُوَ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ
بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ۚ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا
اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةً ۢ بِاِذْنِ
اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝

वाला है। अत: जिस ने उस नदी में से (पेट भर कर पानी) पी लिया वह मुझ से (सम्बन्धित) नहीं (रहेगा) तथा जिस ने उस से न चखा निस्सन्देह वह मुझ से सम्बन्धित होगा, सिवाय उस के जिस ने उस में से अपने हाथों से (केवल) एक चुल्लू ले कर पी लिया (उस पर कोई आरोप नहीं होगा) फिर (हुआ यह कि) उन में से थोड़े से लोगों के सिवा (अन्य सभी ने) उस में से पानी पी लिया। फिर जब वह स्वयं और वे लोग जो उस पर ईमान लाए थे उस नदी से पार उतर गए तो उन (पेट भर कर पानी पीने वालों) ने कहा कि आज हम में जालूत और उस की सेना से युद्ध करने की लेश-मात्र शक्ति नहीं, परन्तु जो लोग ईमान रखते थे कि वह एक दिन अल्लाह से मिलने वाले हैं वे बोले कि अल्लाह के आदेश से अनेक छोटे जत्थे बड़े जत्थों पर विजय पा चुके हैं तथा अल्लाह धैर्यवानों के साथ होता है (अत: भयभीत होने का कोई कारण नहीं)।२५०।

(पृष्ठ ९८ का शेष)

(ख) तौरात में न्यायियों का वृत्तान्त 7:5.7 से विदित होता है कि जद्ऊन (तालूत) के साथियों की एक नदी के द्वारा परीक्षा ली गई थी। सो शाब्दिक अर्थ लेने में भी कोई रोक नहीं। अल्लाह ने उन्हें आदेश दिया था कि हल्के पेट रहो और थोड़ा पानी पीयो ताकि युद्ध में तीव्र-गति से काम कर सको। बहुतों ने इस के रहस्य को न समझा और पेट भर कर पानी पी लिया। बाइबिल के कथनानुसार केवल तीन सौ व्यक्तियों ने थोड़े-थोड़े घूंट पानी पीया ताकि वे लड़ाई के मैदान में तत्परता से काम कर सकें। अल्लाह ने उन के बलिदान का प्रतिफल देने एवं उन की श्रद्धा को मान्यता देने के लिए यह निर्णय किया कि केवल उन्हीं तीन सौ को युद्ध में सम्मिलित किया जाए दूसरे लोगों को नहीं। अत: उन्हीं तीन सौ को तालूत या जद्ऊन ने युद्ध में सम्मिलित किया और अल्लाह ने उन को ही विजय दी।

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

और जब वे जालूत और उस की सेना (से युद्ध करने) के लिए निकले तो उन्हों ने कहा कि हे हमारे रब्ब ! हमें धैर्य प्रदान कर और (लड़ाई के मैदान में) हमारे पैर जमाए रख तथा इन शत्रुओं के विरुद्ध हमारी सहायता कर ।२५१।

فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ

फिर (वे लड़ाई में कूद पड़े और) उन्हों ने अल्लाह की आज्ञानुसार उन्हें पराजित कर दिया और दाऊद ने जालूत को मार[1] डाला तथा अल्लाह ने उसे हुकूमत और हिक्मत प्रदान की और जो कुछ वह (अल्लाह) चाहता था उस का ज्ञान उस (दाऊद) को दिया और यदि अल्लाह लोगों को (शरारत मे) न हटाए रखता अर्थात् कुछ लोगों को कुछ दूसरों के द्वारा (न रोकता) तो धरती उथल-पुथल हो जाती, किन्तु अल्लाह सब जहानों (लोकों) पर बड़ी कृपा करने वाला है (अत: फ़साद को रोक देता है) ।२५२।

1. इस से पहले जद्ऊन की घटना का वर्णन हो चुका है। अब इन आयतों में हज़रत दाऊद की घटना का वर्णन है। हज़रत दाऊद की घटना जद्ऊन या तालूत की घटना के समान है। जद्ऊन के समय फ़लस्तीन-निवासियों ने इस्राइलियों को फ़लस्तीन से निकालने के लिए प्रयत्न किए थे, किन्तु ये प्रारम्भिक प्रयत्न थे जो धीरे-धीरे हज़रत दाऊद के समय तक आ कर समाप्त हुए। अत: दोनों घटनाओं का विषय एक समान होने के कारण एक स्थान पर वर्णन किया गया है अन्यथा पहली घटना जद्ऊन की है और दूसरी हज़रत दाऊद की। दोनों घटनाओं में दो सौ वर्ष की दूरी है।

बाइबिल के कथनानुसार दाऊद ने जालूत की हत्या की थी, परन्तु पवित्र क़ुर्आन ने जद्ऊन (तालूत) की घटना में भी जालूत का वृत्तान्त किया है। इस बारे में यह याद रखना चाहिए कि इब्रानी और अरबी भाषा में 'जालूत' भी एक गुणवाचक संज्ञा है। जालूत उस व्यक्ति को कहते हैं जो देश में डाके डाले और फ़साद फैलाए। प्राय: सुगठित साम्राज्यों के विरोधी इसी प्रकार के काम किया करते हैं। अतएव समानार्थक संज्ञाओं के कारण जद्ऊन और हज़रत दाऊद दोनों के शत्रुओं को जालूत कहा गया है।

(शेष पृष्ठ १०१ पर)

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝

यह अल्लाह की आयतें हैं जिन्हें हम तुझे पढ़ कर सुनाते हैं इस हालत में कि तू सत्य पर क़ायम है और निश्चय ही तू रसूलों में से है।२५३।

(पृष्ठ १०० का शेष)

जद्ऊन का शत्रु भी एक डाकू था जो देश में फ़साद और अशान्ति फैलाता था जिस के कारण उसे जालूत कहा गया है। हजरत दाऊद ने देश में शान्ति बनाए रखने के लिए जिस शत्रु से युद्ध किया वह भी एक उपद्रवी एवं डाकू था। अत: दोनों के शत्रुओं को जालूत कहा गया है।

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ مِّنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ۚ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۚ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ؑ

ये (उल्लिखित) रसूल वे हैं जिन में से हम ने कुछ रसूलों को दूसरों पर श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) दी थी। उन में से कुछ ऐसे हैं जिन से अल्लाह ने कलाम[1] किया और उन में से कुछ रसूलों के (केवल) दर्जे ऊँचे किए और मर्यम के पुत्र ईसा को हम ने खुले-खुले निशान दिए थे एवं रूहुलक़ुदुस[2] के द्वारा उसे (आध्यात्मिक) शक्ति दी थी और यदि अल्लाह चाहता तो जो लोग उन के बाद (आए) थे वे खुले-खुले निशानों के आने के बाद आपस में न लड़ते-झगड़ते, किन्तु आश्चर्य है कि फिर भी उन्हों ने मत भेद किया। फिर ऐसा हुआ कि उन में से कुछ तो ईमान ले आए तथा कुछ ने इन्कार कर दिया और यदि अल्लाह चाहता तो ये लोग आपस में लड़ाई-झगड़ा न करते, परन्तु अल्लाह जो चाहता है करता है।२५४।

(रुकू ३३/१)

1. 'कलाम' से तात्पर्य शरीअत (आध्यात्मिक विधान) है अर्थात् कुछ नबी शरीअत लाए थे और कुछ नबियों को हम ने केवल नबुव्वत से विभूषित किया था, उन्हें शरीअत नहीं दी गई थी। यह आयत इस बात का प्रमाण है कि कुछ नबी शरीअत लाते हैं और कुछ नबियों को केवल आदर के तौर पर रसूल कहा जाता है, किन्तु वे शरीअत ले कर नहीं आते।

दूसरा अर्थ इस का यह है कि 'कुछ' से तात्पर्य केवल नबी है और इस दृष्टि से इस आयत में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम निर्दिष्ट हैं, जिन को ज़िल्ली तौर पर (इश्वरीय बिम्ब रूप में) प्रभुसत्ता के महान चमत्कारों के चिह्न प्रदान किए गए।

2. पाक रूह, पवित्र आत्मा, जिब्राईल फ़रिश्ते का नाम भी है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۵۵﴾

हे ईमान वालो ! जो कुछ हम ने तुम्हें दिया है उस में से (अल्लाह की राह में) खर्च करो, उस दिन के आने से पहले कि जिस में न किसी प्रकार का व्यापार होगा न मित्रता और न सिफ़ारिश काम आएगी तथा (इस आदेश का) इन्कार करने वाले (स्वयं अपने आप पर) अत्याचार करने वाले हैं ।२५५।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

अल्लाह—वह है जिस के सिवा दूसरा कोई भी पूजा के योग्य नहीं। वह कामिल[1] ज़िन्दगी वाला, सदा क़ायम रहने वाला एवं दूसरों को क़ायम[2] रखने वाला है। उसे न ऊँघ आती है और न नींद आती है। जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब उसी का है। कौन है जो उस की आज्ञा के बिना उस के पास सिफ़ारिश करे? जो कुछ उन के सामने है तथा जो कुछ उन के पीछे है वह (सब कुछ) जानता है और वे उस की इच्छा के बिना उस के ज्ञान का अंश मात्र भी प्राप्त नहीं कर सकते। उस

1. मूल शब्द 'अल्हय्यो' का अर्थ है कि अल्लाह कामिल ज़िन्दगी रखता है अर्थात् जो अपने आप को ज़िन्दा रखने में किसी दूसरे का मुहताज न हो। उसे किसी और ने ज़िन्दगी न दी हो। वह अनादि और अनन्त है।

2. जो अपने-आप क़ायम हो और दूसरों को क़ायम रखने वाला हो। प्रत्येक वस्तु का निरीक्षक हो तथा उन्हें ऐसी शक्ति प्रदान करे जिस से उन के रचनात्मक तत्त्व जुड़े रहें और वे क़ायम रह सकें एवं वे अपने कर्त्तव्य का पूरे तौर पर पालन करती रहें।

अल्लाह का यह गुण इस ओर संकेत करता है कि सूर्य-मण्डल के नक्षत्र-गणों में गुरुत्वाकर्षण शक्ति पाई जाती है। सूक्ष्म दर्शक-यन्त्र द्वारा दीख पड़ने वाले परमाणुओं का परस्पर संयोग, समन्वय, समावेश तथा उन के एक-दूसरे के इर्द-गिर्द घूमने आदि क्रियाओं की ओर बड़े अच्छे ढंग से संकेत किया गया है।

وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝

का ज्ञान[1] आसमानों पर भी और ज़मीन पर भी व्यापक है तथा उन की रक्षा (करना) उसे थकाती नहीं एवं वह बड़ी शान रखने वाला और महिमाशाली है।२५६।

لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ ۖ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

धर्म के सम्बन्ध में किसी प्रकार की ज़बरदस्ती (की आज्ञा) नहीं, क्योंकि हिदायत[2] तथा गुमराही का अन्तर भली-भाँति स्पष्ट हो चुका है। सो जान लो कि जो व्यक्ति (अपनी इच्छा से) भले कामों में बाधा डालने[3] वाले की बात मानने से इन्कार करे और अल्लाह पर ईमान रखे तो उस ने एक मज़बूत एवं विश्वसनीय[4] वस्तु को जो कभी टूटने वाली नहीं है दृढ़ता से पकड़ लिया है और अल्लाह बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है।२५७।

اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلِيَاؤُهُمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُمْ مِنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ ۗ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ ع

अल्लाह उन लोगों का मित्र है जो ईमान लाते हैं। वह उन्हें अन्धेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लाता है और जो इन्कार करने वाले हैं उन के मित्र नेकी से रोकने वाले हैं। वे उन्हें प्रकाश से निकाल कर अन्धकार की ओर ले जाते हैं। वे लोग आग में पड़ने वाले हैं। वे उस में निवास करेंगे। ।२५८। (रुकू ३४/२)

1. मूल शब्द 'कुर्सी' है जिस का अर्थ ज्ञान और शासन है।

2. मूल शब्द 'रुश्द' (हिदायत) का अर्थ है सत्य पर दृढ़ता से क़ायम रहना। यह 'ग़य्युन' का विपरीतार्थक है जिस का अर्थ है गुमराही (पथभ्रष्टता), विनाश तथा असफलता। (अक़्रब)

3. अरबी मूल शब्द 'तागूत' का अर्थ है सीमा का उल्लंघन करने वाला, शैतान, भले कामों से रोकने वाला तथा ऐसा व्यक्ति जो पथभ्रष्टता का नेता हो। (अक़्रब)

4. मूल शब्द 'उर्वाह' का अर्थ है किसी वस्तु का किसी अन्य वस्तु से चिमट जाना। इसी कारण

(शेष पृष्ठ १०५ पर)

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرٰهِمَ فِي رَبِّهِ أَنْ آتٰهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرٰهِمُ رَبِّيَ الَّذِي يُحْيِ وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا أُحْيِ وَأُمِيتُ قَالَ إِبْرٰهِمُ فَإِنَّ اللّٰهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ ﴿٢٥٩﴾

क्या तुझे उस व्यक्ति का समाचार नहीं मिला जो इस (अहंकार के) कारण कि अल्लाह् ने उसे हुकूमत[1] दे रखी थी—इब्राहीम से उस के रब्ब के बारे में वाद-विवाद करने लग गया था ? (यह उस समय हुआ) जिस समय इब्राहीम ने उसे कहा कि मेरा रब्ब वह है जो ज़िन्दा करता है और मारता है। (इस पर) उस ने कहा कि मैं भी ज़िन्दा करता तथा मारता हूँ। इब्राहीम ने कहा कि (यदि यह बात है) तो अल्लाह् तो सूर्य को पूर्व दिशा से लाता है अब तू उसे पश्चिम दिशा से ले आ। इस पर वह आश्चर्य-चकित[2] हो गया और ऐसा होना ही था (क्योंकि) अल्लाह् अत्याचारियों को (सफलता की) राह नहीं दिखाता।२५९।

(पृष्ठ १०४ का शेष)

वर्तन के दस्ते को और कपड़े के काज को उर्वाह् कहते हैं क्योंकि इस के द्वारा वटन चिमट जाता है। उर्वाह् उन सभी पदार्थों को कहा जा सकता है जिन पर भरोसा किया जा सके और उन से सहारा लिया जा सके। अतः उर्वाह् का अर्थ विश्वसनीय वस्तु है।

1. इस का दूसरा अर्थ यह भी है कि वह हज़रत इब्राहीम से इस ईर्ष्या के कारण वाद-विवाद करने लगा कि अल्लाह् ने इब्राहीम को क्यों आध्यात्मिक बादशाहत दी है।

2. पवित्र क़ुर्आन के कुछ भाष्यकार यह कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम ने अपनी कमज़ोरी देख कर बहस का पहलू बदल दिया, किन्तु यह बात ठीक नहीं। असल बात यह है कि हज़रत इब्राहीम की जाति नक्षत्रों की पुजारी थी। वे लोग समझते थे कि प्राणी-मात्र का जीवन-मरण सूर्य से सम्बन्धित है। जब विपक्षियों ने हठ से काम लिया तो हज़रत इब्राहीम ने कहा कि मेरा उस जीवन-मरण से कोई मतलब नहीं जो तेरे अधिकार में है, अपितु मेरा अभिप्राय यह था कि संसार में जो जीवन-मरण का चक्र चल रहा है वह अल्लाह् के अधिकार में है, जिस के विषय में तेरा विचार यह है कि वह सूर्य के अधिकार में है। सो यदि वास्तव में तू वही अल्लाह है जिस के अधिकार में जीवन-मरण है तो सूर्य को पूर्व दिशा की अपेक्षा पश्चिम की ओर से ले आ।

(शेष पृष्ठ १०६ पर)

اَوْ كَالَّذِىْ مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ وَّهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى يُحْىٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ۭ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۭ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۭ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ

और (क्या तूने) उस व्यक्ति जैसा (कोई व्यक्ति देखा है) जो एक ऐसे नगर के पास से गुज़रा[1] जिस की यह हालत थी कि वह अपनी छतों के बल गिरा[2] हुआ था। (उसे देख कर) उस ने कहा कि अल्लाह इस के उजड़ने के बाद इसे कब बसाएगा? इस पर अल्लाह ने उसे सौ वर्ष (स्वप्न में) मारे रखा, फिर उसे उठाया और कहा, (हे मेरे बन्दे!) तू कितने समय तक (इस हालत में) रहा है? उस ने कहा, 'मैं इस हालत में एक दिन या दिन का कुछ भाग रहा हूँ। तब (अल्लाह ने)

(पृष्ठ १०५ का शेष)

यह एक ऐसी युक्ति थी जिस से उन का शत्रु चकित रह गया। यदि वह यह कहता कि तेरा अल्लाह सूर्य को पूर्व से प्रकट नहीं करता, अपितु मैं ही करता हूँ तो उस की जाति उस की विरोधी बन जाती और कहती कि तू अपने आप को सूर्य देवता से श्रेष्ठ समझता है। इस पर उसे मौन रहना पड़ा।

1. इस से पहले हज़रत इब्राहीम के साथ वाद-विवाद का वृत्तान्त है। इन आयतों में एक मुर्दा नगर का वर्णन है। यह इस बात का प्रमाण है कि हज़रत इब्राहीम ने अपने प्रतिद्वन्द्वी से व्यक्तिगत जीवन का वर्णन नहीं किया था, अपितु जातीय-जीवन अथवा सामूहिक जीवन का वर्णन किया था, क्योंकि इस उदाहरण में भी जातीय-जीवन का ही वर्णन है, व्यक्तिगत जीवन का नहीं।

2. इस वाक्य का अर्थ यह हुआ कि वह नगर अपनी छतों पर गिरा हुआ था अर्थात् पहले छतें गिरीं फिर उन पर दीवारें गिर गईं। कुछ भाष्यकारों ने इस का अर्थ 'खाली हो गया' किया है अर्थात् वह नगर-निवासियों से खाली था। दोनों अर्थ ठीक हैं। यह शब्द लम्बी वीरानी को स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त हुए हैं, क्योंकि जो मकान प्रयोग में न लाने के कारण गिरते हैं पहले उन की छतें गिरती हैं और जब छतें गिर जाती हैं तो वर्षा आदि के कारण नंगी दीवारें भी गिरने लगती हैं और इस प्रकार वे दीवारें छतों पर आ कर गिरती हैं। इस स्थिति को बताने के लिए 'छतों पर गिरा हुआ था' कहा गया है। जो मकान भूकम्प आदि घटनाओं से गिरते हैं उन की दीवारें पहले गिरती हैं और छत उन पर गिरती है। इन शब्दों में एक सूक्ष्म संकेत यह किया गया है कि उस नगर की वीरानी का कारण भूकम्प आदि न था, अपितु उस का कारण नगर-निवासियों का उसे छोड़ कर चले जाना था।

مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ وَانْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٦٠﴾

कहा, (यह भी ठीक है)[1] और तू (इस हालत में) सौ[2] वर्ष तक भी रहा है। अब तू अपने खाने-पीने के (सामान की) ओर ध्यान दे कि वह सड़ा नहीं और अपने गधे की ओर भी देख (इन दोनों का सुरक्षित रहना देख कर समझ ले कि तेरा विचार भी ठीक है तथा हमारा विचार भी) और हमने ऐसा इसलिए किया कि हम तुझे लोगों के लिए एक निशान बनाएँ तथा हड्डियों की ओर भी देख कि हम उन्हें किस प्रकार अपने-अपने स्थान पर रख कर जोड़ते हैं, फिर हम उन पर माँस चढ़ाते हैं। अत: जब उस पर हक़ीक़त अच्छी तरह खुल गई तो उस ने कहा कि मैं जानता हूँ कि अल्लाह हर-एक काम के करने का पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है।२६०।

---

1. "यह भी ठीक है" कह कर अरबी भाषा के मूल शब्द 'बल्' का भाव व्यक्त किया गया है। 'बल्' अरबी भाषा में दो अर्थों में प्रयुक्त होता है। कभी पहले कही हुई बात के खण्डन के लिए इस का प्रयोग होता है और कभी पहले कही हुई बात का खण्डन तो अभीष्ट नहीं होता, अपितु इस के साथ ही दूसरी बात की ओर भी ध्यान आकर्षित करना अभीष्ट होता है। इस अवस्था में दोनों ही बातें ठीक होती हैं। यहाँ पर अल्लाह का अभिप्राय नबी के विचार का खण्डन करना नहीं, अपितु एक और विषय की ओर ध्यान आकर्षित कराया गया है कि एक अन्य दृष्टि-कोण से देखो तो तुम ने सौ वर्ष इस दशा में व्यतीत किए हैं, किन्तु नबी का कथन भी अपने स्थान पर सत्य था। अत: इस विचार से भी कि नबी अल्लाह के कथन को प्रधानता दे कर अपने विचार को मिथ्या न ठहराते, अल्लाह ने साथ ही बता दिया कि हम तुम्हारे विचार का खण्डन नहीं करते। वह भी ठीक है।

2. इस आयत में नगर से तात्पर्य युरोशलम है जिसे बुख़्तनसर नामक राजा ने ध्वस्त कर दिया था। वह व्यक्ति जो युरोशलम के निकट से गुज़रा था, हिज़्क़ील नबी था। अल्लाह ने कश्फ़ द्वारा उस पर रहस्य खोला कि एक सौ वर्ष तक वह नगर दो-बारा बस जाएगा। (देखिए बाइबिल 'यहेज़केल' 37)

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِيْ كَيْفَ تُحْيِ الْمَوْتٰى قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِيْ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

और (उस घटना को भी याद करो) जब इब्राहीम ने कहा था कि हे मेरे रब्ब ! मुझे बता कि तू मुर्दों को कैसे जिन्दा करता है। (अल्लाह ने) कहा, क्या तू ईमान नहीं ला चुका ? (इब्राहीम ने) कहा, क्यों नहीं (ईमान तो रखता हूँ) किन्तु मैंने अपने हृदय की संतुष्टि के लिए (यह प्रश्न पूछा है)। (अल्लाह ने) कहा, अच्छा ! तू चार पक्षी ले ले तथा उन्हें अपने साथ सिधा[1] ले, फिर प्रत्येक पर्वत पर उन में से एक-एक[2] को रख दे, फिर उन्हें बुला वे तेरी ओर तेज़ी[3] से चले आएँगे तथा समझ ले कि अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) और हिक्मत वाला है ।२६१। (रुकू ३५/३)

---

1. कुछ लोगों ने मूल शब्द 'सुरहुन्ना' का अर्थ क़त्ल करना किया है, परन्तु क़ुर्आन में 'सुरहुन्ना इलैक' शब्द है। अरबी मुहावरे के अनुसार जब 'सुर' शब्द के पश्चात् 'ईला' शब्द जोड़ा जाए तो अर्थ सिधाना, सिखाना और प्रेम से अपने साथ हिला-मिला लेना बन जाता है।

2. एक-एक का अभिप्राय यह है कि पर्वत की चार चोटियों पर चारों पक्षियों को बिठा दो। मूल शब्द 'जुज़' का अर्थ एक पक्षी के टुकड़े नहीं अपितु चारों पक्षियों का एक भाग है अर्थात् एक-एक पक्षी।

3. मूल शब्द 'सायुन' का अर्थ है :—

(अ) चलना (आ) भागना (इ) प्रयत्न करना (ई) किसी कार्य को कोशिश से करना चाहे वह काम अच्छा हो या बुरा।

पक्षी भागता नहीं, अपितु उड़ता है। अतः 'तेज़ी से तेरी ओर चले आएँगे' अनुवाद किया गया है। इन आयतों में हज़रत इब्राहीम के एक कश्फ़ का वृत्तान्त है और चार पक्षियों से यह तात्पर्य है कि हज़रत इब्राहीम की सन्तान चार बार उन्नति करेगी तथा चार बार अधोगति को प्राप्त होगी।

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦١﴾

जो लोग अपना धन अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उन (के इस दान) की हालत उस दाने की हालत जैसी है जो सात बालियाँ उगाए तथा प्रत्येक बाली में सौ दाने हों और अल्लाह जिस के लिए चाहता है उसे (इस से भी) बढ़ा-चढ़ा कर देता है और अल्लाह देने वाला और बहुत जानने वाला है।२६२।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾

जो लोग अपने धन अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, फिर ख़र्च करने के बाद न तो किसी तरह का एहसान (उपकार) जताते हैं और न किसी प्रकार का दुःख ही देते हैं। उन के लिए उन के रब्ब के पास उन के (कर्मों) का बदला (सुरक्षित) है और उन्हें न तो किसी प्रकार का भय होगा और न वे चिन्तित होंगे। २६३।

قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ۗ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ﴿٢٦٣﴾

अच्छी बात (कहना) और (अपराध) क्षमा करना उस दान से अच्छा है जिस के पीछे दुःख (देना प्रारम्भ कर) दिया जाए और अल्लाह बेनियाज़ और बुर्दबार (अर्थात् निःस्पृह और सहनशील) है।२६४।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ۗ لَا

हे ईमान लाने वालो ! तुम अपने दान को एहसान (उपकार) जताने तथा दुःख देने से उस व्यक्ति की तरह नष्ट न कर दो जो लोगों को दिखाने के लिए धन ख़र्च करता है और अल्लाह एवं आख़िरत के दिन[1] पर ईमान नहीं रखता, क्योंकि उस की हालत तो उस पत्थर जैसी है जिस पर कुछ धूल पड़ी हुई हो तथा उस पर तेज़ वर्षा हो और

1. महाप्रलय, परलोक, क़ियामत। (अक़्ब)

يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝

वह उसे (धोकर) फिर साफ़ पत्थर (का पत्थर) कर दे। ये (ऐसे लोग हैं कि) जो कुछ कमाते हैं उस में से कुछ भी उन के हाथ नहीं आता और अल्लाह इस प्रकार के इन्कार करने वालों को (सफलता की) राह नहीं दिखाता।२६५।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۢ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

और जो लोग अपने धन को अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए तथा अपने-आप को मज़बूत करने के लिए ख़र्च करते हैं, उन के ख़र्च की हालत उस बाग़ की हालत जैसी है जो ऊँचे स्थान पर हो और उस पर तेज़ वर्षा हुई हो जिस के कारण वह अपना फल दोगुना लाया हो और (उस की यह हालत हो कि) यदि उस पर ज़ोर की वर्षा न भी हो तो थोड़ी सी वर्षा ही (उस के लिए काफ़ी हो जाए) और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे देख रहा है।२६६।

اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۚ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۝ ع ٣٦

क्या तुम में से कोई व्यक्ति चाहता है कि उस का खजूरों और अँगूरों का एक बाग़ हो जिस के नीचे नहरें बहती हों और उसे उस में से सब प्रकार के फल मिलते रहते हों तथा उसे बुढ़ापे ने भी आ घेरा हो और उसके छोटे-छोटे बच्चे हों, फिर उस बाग़ पर एक ऐसा बगोला चले जिस में आग (जैसी गर्मी) हो और वह बाग़ जल जाए। (देखो !) अल्लाह तुम्हारे भले के लिए इस प्रकार अपने आदेश वर्णन करता है ताकि तुम सोच-विचार (से काम लिया) करो।।२६७। (रुकू ३६/४)

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَنفِقُوا۟ مِن طَيِّبَٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ أَخْرَجْنَا لَكُم مِّنَ ٱلْأَرْضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُوا۟ ٱلْخَبِيثَ مِنْهُ تُنفِقُونَ وَلَسْتُم بِـَٔاخِذِيهِ إِلَّآ أَن تُغْمِضُوا۟ فِيهِ ۚ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ غَنِىٌّ حَمِيدٌ ۝

हे ईमान वालो ! जो कुछ तुम ने कमाया है उस में से पवित्र चीज़ें और जो कुछ हम ने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाला है उस में से अपनी शक्ति के अनुसार अल्लाह की राह में खर्च करो, परन्तु उन में से ऐसी दूषित वस्तुओं को निश्चित रूप से दान के लिए न चुना करो जिन्हें तुम स्वयं लेने के लिए कदापि तय्यार नहीं होते, सिवाय इस के कि तुम इन्हें अनजान बन कर ले लो और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़ है (अर्थात् उस को किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है) और केवल वही स्तुति के योग्य है ।२६८।

ٱلشَّيْطَٰنُ يَعِدُكُمُ ٱلْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِٱلْفَحْشَآءِ ۖ وَٱللَّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ۗ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ۝

शैतान तुम्हें मुहताजी से डराता[1] है और तुम्हें निर्लज्जता की प्रेरणा देता है और अल्लाह तुम्हें अपनी ओर से एक बड़ी क्षमा एवं कृपा का वचन देता है और अल्लाह बढ़ा कर देने वाला और बहुत जानने वाला है ।२६९।

يُؤْتِى ٱلْحِكْمَةَ مَن يَشَآءُ ۚ وَمَن يُؤْتَ ٱلْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِىَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ ۝

वह जिसे चाहता है हिक्मत (समझ-बूझ) प्रदान करता है और जिसे हिक्मत दी गई हो तो (समझ लो कि) उसे एक अत्यन्त लाभदायक वस्तु मिल गई और (याद रहे कि) बुद्धिमानों के सिवा कोई भी नसीहत से लाभ नहीं उठाता ।२७०।

---

1. मूल शब्द 'वाऽदा' अच्छी और और बुरी दोनों प्रकार की बातों के लिए प्रयुक्त होता है । इस आयत में इस के दोनों अर्थ किए गए हैं । एक स्थान पर 'डराना' तथा दूसरे स्थान पर 'वचन देना' शब्दों का प्रयोग किया गया है ।

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ۗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٢٧٠﴾

और जो कुछ भी तुम (अल्लाह के लिए) ख़र्च[1] करो या जो कुछ भी तुम मन्नत मानो, निस्सन्देह अल्लाह उसे जानता है (वह उस का अच्छा बदला देगा) और अत्याचारियों का कोई भी सहायक नहीं होगा।२७१।

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۗ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٧١﴾

यदि तुम खुले-खुले रूप में दान दो तो यह भी बहुत उत्तम (ढंग) है और यदि तुम वह दान छिपा कर निर्धनों को दो तो यह तुम्हारे लिए और भी अच्छा है तथा वह (अल्लाह इस के कारण) तुम्हारी बहुत सी बुराइयों[2] को तुम से दूर कर देगा और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे जानता है।२७२।

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٢﴾

उन्हें सीधी राह पर लाना तेरे ज़िम्मा नहीं है। हाँ! अल्लाह जिसे चाहता है राह पर ले आता है और तुम जो भी पवित्र[3] धन (अल्लाह की राह में) दान दो उस का लाभ तुम्हें ही मिलेगा और हक़ीक़त यह है कि तुम ऐसा ख़र्च केवल अल्लाह की कृपा पाने के लिए ही करते हो और तुम जो भी अच्छा धन ख़र्च करो, वह तुम्हें पूरा-पूरा (लौटा) दिया जाएगा तथा तुम पर कोई अत्याचार नहीं किया जाएगा।२७३।

---

1. अरबी शैली के अनुसार इस वाक्य का यह अर्थ निकलता है कि जो पदार्थ दान में दिए जाएँ वह ख़र्च के योग्य हों तथा जो मन्नत दो वह मन्नत में देने के योग्य हो।

2. इस का यह भी अर्थ है कि अल्लाह तुम्हारी सभी बुराइयों को मिटा देगा।

3. मूल शब्द 'ख़ैर' का अर्थ है दान तथा पवित्र धन अर्थात् वह धन जो उचित ढंग से कमाया गया हो।

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِى الْاَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝٢٧٤

ये (ऊपर बताए गए) सदक़ात (दान) उन निर्धनों के लिए हैं जो अल्लाह की राह में (दूसरे कामों से) रोके[1] गए हैं। वे देश में (आज़ादी से) चल-फिर नहीं सकते। एक अपरिचित व्यक्ति उन के न माँगने के कारण उन्हें धनवान समझता है (परन्तु) तुम उन के चेहरों से उन्हें पहचान सकते हो। वे लोगों से चिमट-चिमट कर नहीं माँगते तथा तुम जो भी अच्छा धन (अल्लाह की राह में) ख़र्च करो, अल्लाह उसे निश्चय ही भली-भाँति जानता है।२७४। (रुकू ३७/५)

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝٢٧٥

जो लोग रात और दिन अपना धन (अल्लाह की राह में) छिप कर (भी) और खुले रूप में भी ख़र्च करते रहते हैं, उन के लिए उन के रब्ब के पास उन का प्रतिफल (सुरक्षित) है और न तो उन्हें कोई भय होगा और न वे चिन्तित होंगे।२७५।

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِىْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا

जो लोग ब्याज खाते हैं वे बिल्कुल उसी तरह खड़े होते हैं, जिस तरह वह व्यक्ति खड़ा होता है जिस पर शैतान[2] (अर्थात् पागलपन) का आक्रमण हुआ हो। इस (अवस्था) का यह कारण है कि वे कहते (रहते) हैं कि व्यापार भी तो बिल्कुल ब्याज के समान है, जब कि अल्लाह ने व्यापार को हलाल

1. अर्थात् वे लोग दूसरे काम करने से रोके गए और केवल धर्म की सेवा में लगे हुए हैं।

2. यहाँ पर प्रयुक्त हुए मूल वाक्य का अर्थ है शैतान ने उसे कष्ट दिया तथा उसे कड़ी मार मारी और 'मस्स' शब्द का अर्थ है जनून अथवा पागलपन। अतएव अर्थ यह हुआ कि जिस व्यक्ति पर शैतान अर्थात् पागलपन के रोग का भयानक आक्रमण हुआ हो।

فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

(जायज़) ठहराया है और ब्याज को हराम। अतः (याद रखो कि) जिस व्यक्ति के पास उस के रब्ब की ओर से कोई उपदेश की बात आए तथा वह (उसे सुनकर उस का विरोध करने से) रुक जाए तो जो (लेन-देन) वह पहले कर चुका है उस का लाभ उसी को है और उस का मामला अल्लाह के सुपुर्द है और जो लोग फिर वही काम करें तो वे (अवश्य ही) आग में पड़ने वाले हैं। वे उस में पड़े रहेंगे।२७६।

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِى الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ۝

अल्लाह ब्याज को मिटाएगा[1] और सद्क़ात (दान) को बढ़ाएगा और अल्लाह किसी भी इन्कार करने वाले एवं महापापी को पसन्द नहीं करता।२७७।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

जो लोग ईमान लाते हैं तथा अच्छे और भले काम करते हैं तथा नमाज़ को क़ायम रखते हैं और ज़कात देते हैं, निस्सन्देह उन के लिए उन के रब्ब के पास उन का प्रतिफल (सुरक्षित) है और उन्हें न तो किसी प्रकार का भय होगा और न वे चिन्तित होंगे।२७८।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝

हे ईमान वालो! अल्लाह के लिए संयम धारण करो और उस से डरो और यदि तुम मोमिन हो तो ब्याज (के हिसाब) में जो कुछ बाकी रह गया हो उसे छोड़ दो।२७९)

1. इस पर प्रश्न होता है कि ईसाई, यहूदी और हिन्दू आदि लोग ब्याज लेते हैं। उन का कारोबार प्रगतिशील है, परन्तु मुसलमानों का कारोबार पतन की ओर जा रहा है? इस का उत्तर यह है कि यह भविष्यवाणी है जिस में चेतावनी दी गई है कि अन्ततः ब्याज लेने वाली जातियों को अल्लाह नष्ट कर देगा और ब्याज न लेने वाले लोग विनाश से बचे रहेंगे।

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَأْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَإِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ أَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ۝

और यदि तुम ने ऐसा न किया तो अल्लाह और उस के रसूल की ओर से (होने वाले) युद्ध को यक़ीनी समझ लो (और उस के लिए सावधान हो जाओ) यदि तुम ब्याज से तौबः कर लो तो (तुम्हारी कोई हानि नहीं क्योंकि) अपना मूल धन प्राप्त करने का तुम्हें अधिकार है। इस अवस्था में न तुम किसी पर अत्याचार करोगे और न तुम पर कोई अत्याचार होगा।२८०।

وَإِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلٰى مَيْسَرَةٍ ۚ وَأَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝

यदि कोई ऋण लेने वाला तंगी में हो तो अच्छी हालत होने तक उसे छूट देनी होगी और यदि तुम समझ-बूझ रखते हो तो समझ लो कि तुम्हारा (उसे मूल धन भी) दान के (रूप में) दे देना सब से अच्छा (काम) है।२८१।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ إِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ ع

और उस दिन से डरो कि जिस में तुम्हें अल्लाह की ओर लौटाया जाएगा, फिर प्रत्येक व्यक्ति को जो उस ने कमाया होगा पूरा-पूरा दे दिया जाएगा तथा उन पर कुछ भी अत्याचार नहीं किया जाएगा।२८२। (रुकू ३८/६)

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ۚ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ ۚ وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ

हे ईमान वालो! जब तुम एक-दूसरे से किसी निश्चित समय के लिए उधार का लेन-देन करो तो उसे लिख लिया करो और चाहिए कि कोई तुम्हारे बीच (निश्चित समझौते को) न्याय पूर्वक लिख[1] दे तथा कोई लिखने वाला लिखने से इन्कार न करे, क्योंकि अल्लाह ने उसे लिखना सिखाया है। अतः चाहिए कि

1. 'तुम्हारे बीच लिख दे' का यह अर्थ भी हो सकता है कि तुम्हारे बीच जो समझौता (Agreement) हुआ है उसे लिख दे और यह भी कि लिखने वाला तुम्हारे अपने पक्ष का व्यक्ति हो और वह दोनों दलों की उपस्थिति में लिखे।

وَلْيُمْلِلِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا ۚ فَإِن كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ أَن يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهُ بِالْعَدْلِ ۚ وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِن رِّجَالِكُمْ ۖ فَإِن لَّمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ مِمَّن تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَن تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَىٰ ۚ وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَاءُ إِذَا مَا دُعُوا ۚ وَلَا تَسْأَمُوا أَن تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ أَقْسَطُ عِندَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا ۖ إِلَّا أَن

वह (अवश्य) लिखे और दस्तावेज़ वह लिखवाए जिस पर ज़िम्मेदारी हो और चाहिए कि वह (लिखवाने वाला लिखवाते समय) अपने सामने अल्लाह का डर रखे जो उस का रब्ब है और उस में से कुछ भी कम न करे तथा वह व्यक्ति जिस की ज़िम्मेदारी है ना समझ हो, निर्बल हो या स्वयं लिखवाने के योग्य न हो तो चाहिए कि (उस के स्थान पर) उस का वली (कार्यकर्ता) न्याय-पूर्वक (दस्तावेज़) लिखवाए और तुम (ऐसे अवसर पर) अपने पुरुषों में से दो को गवाह ठहरा लिया करो। हाँ! यदि दोनों गवाह पुरुष न हों तो (उस अवसर के) गवाहों[1] में से जिन लोगों को (गवाही के लिए) तुम पसन्द करते हो उन में से एक पुरुष तथा दो स्त्रियों को गवाह ठहरा लिया करो। (दो स्त्रियों की शर्त इस कारण है) ताकि उन में एक के भूल जाने पर दोनों में से हर-एक दूसरी को बात याद दिला दे और जब गवाहों को बुलाया जाए तो वे इन्कार न करें तथा चाहे (लेन-देन) थोड़ा हो या बहुत, तुम उस की अवधि-समेत लिखने में सुस्ती न किया करो। यह बात अल्लाह के निकट अधिक न्याय-वाली है और गवाही को मज़बूत करने वाली है और (तुम्हारे लिए इस बात को) क़रीब कर देने वाली है कि तुम किसी सन्देह में न पड़ो।

1. अभिप्राय यह है कि जिस समय दस्तावेज़ लिखी जा रही हो उस समय यदि लिखने वाले के अतिरिक्त जो पुरुष और स्त्रियाँ मौजूद हों उन में से वह यदि दो पुरुषों को गवाह न रखना चाहे, बल्कि किसी स्त्री को भी गवाह बनाना चाहता हो तो इस अवस्था में जो लोग अवसर पर मौजूद हों उन में से दोनों पक्षों के विश्वास-पात्र लोगों में से एक पुरुष एवं दो स्त्रियों की गवाही लिखी जा सकती है।

تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ۭ وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۠ وَلَا يُضَاۗرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ۥ وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

(उस लेन-देन की बात का लिखना आवश्यक है) सिवाय इस के कि व्यापार हाथों-हाथ[1] हो जिसे परस्पर (माल एवं रुपये) ले दे (कर उसी समय बात समाप्त कर) लेते हो, इस अवस्था में इस लेन-देन के न लिखने में तुम पर कोई आपत्ति[2] नहीं तथा जब तुम परस्पर ख़रीदो फ़रोख़्त[3] (क्रय-विक्रय) करो तो गवाह बना लिया करो और (यह बात याद रहे कि) न तो लिखने वाले को दुःख दिया जाए और न गवाह को और यदि तुम ऐसा करो तो यह तुम्हारी ओर से आज्ञा का उल्लंघन समझा जाएगा और चाहिए कि तुम अल्लाह के लिए संयम धारण करो और (यदि तुम ऐसा करोगे तो) अल्लाह तुम्हें ज्ञान देगा और अल्लाह प्रत्येक बात को भली-भाँति जानता है।२८३।

وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰي سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ۭ فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ۭ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ

और यदि तुम यात्रा पर हो तथा तुम्हें कोई लिखने वाला न मिले तो (दस्तावेज़ के बदले में) बन्धक रूप में कोई वस्तु क़ब्ज़ा में ले लो। अतः यदि तुम में से कोई व्यक्ति किसी दूसरे को अमीन (विश्वस्त) समझे (और उसे कुछ धन दे दे) तो जिसे अमीन समझा गया हो उसे चाहिए कि उस (धरोहर रखने वाले की) धरोहर को (माँगने पर) तुरन्त वापस लौटा दे तथा अपने पालन-पोषण करने वाले अल्लाह के लिए संयम

1. जब माल उसी समय क़ब्ज़ा कर लिया गया हो और मूल्य नक़द दे दिया गया हो।

2. इस आयत में यह संकेत है कि ऐसी अवस्था में भी लिख लेना अच्छा है जैसे अंग्रेज़ी दुकानदार वौचर (Voucher) देते हैं। इस से झगड़े कम हो जाते हैं।

3. यह बात बड़े-बड़े सौदों से सम्बन्ध रखती है कि उन्हें लिखना भी चाहिए तथा गवाह भी रख लेने चाहिए ताकि कोई कलह न हो।

وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ آثِمٌ قَلْبُهُ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨٣﴾

धारण करे। तुम गवाही को कभी न छिपाओ तथा जो इसे छिपाए, निस्सन्देह वह ऐसा व्यक्ति है जिस का मन पापी है और (याद रखो कि) जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।२८४। (रुकू ३९/७)

لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَإِنْ تُبْدُوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللَّهُ ۖ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٨٤﴾

जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है चाहे तुम उसे ज़ाहिर करो अथवा उसे छिपाए रखो अल्लाह तुम से उस का लेखा लेगा, फिर जिसे चाहेगा उसे क्षमा करेगा और जिसे चाहेगा अज़ाब देगा और अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।२८५।

آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ ۚ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾

जो कुछ भी इस रसूल पर उस के रब्ब की ओर से उतारा गया है उस पर वह स्वयं भी और दूसरे मोमिन भी ईमान रखते हैं। ये सब के सब अल्लाह और उस के फ़रिश्तों एवं उस की किताबों तथा उस के रसूलों पर ईमान रखते हैं (और कहते हैं कि) हम उस के रसूलों में से किसी में भी कोई अन्तर नहीं करते तथा यह भी कहते हैं कि हम ने (अल्लाह का आदेश) सुन लिया है और हम (दिल से) उस के आज्ञाकारी बन चुके हैं। (ये लोग प्रार्थना करते हैं कि) हे हमारे रब्ब! हम तुझ से क्षमा माँगते हैं और हमें तेरी ओर ही लौटना है।२८६।

لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا

अल्लाह किसी पर भी उस की शक्ति से अधिक कोई ज़िम्मेदारी नहीं डालता। जो उस ने अच्छा काम किया हो वह उस के लिए (लाभदायक) होगा और जो उस ने बुरा काम किया होगा वह उसी पर (विपत्ति

تُؤَاخِذْنَآ إِنْ نَّسِيْنَآ أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

बन कर) पड़ेगा। (वे यह भी कहते हैं कि) हे हमारे रब्ब! यदि हम से कभी कोई भूल हो जाए अथवा हम ग़लती कर बैठें तो हमें दण्ड न दीजियो। हे हमारे रब्ब! और तू हमारे ऊपर (उस प्रकार) ज़िम्मेदारी[1] न डालियो जिस प्रकार तू ने उन लोगों पर डाली थी, जो हम से पहले हो चुके हैं। हे हमारे रब्ब! और इसी प्रकार हम से (वह बोझ) न उठवाना[2] जिस के उठाने की हमें शक्ति नहीं और हमें क्षमा कर एवं बख़्श दे और हम पर दया कर, क्योंकि तू हमारा स्वामी है। अत: इन्कार करने वाले लोगों[3] के मुक़ाबिले में हमारी सहायता कर।२८७। (रुकू ४०/८)

1. इस आयत का यह आशय नहीं कि पहले लोगों पर ज़िम्मेदारी का अधिक बोझ था और हम पर कम डालियो, अपितु इस से अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार उन लोगों पर अल्लाह के आदेश भंग करने की ज़िम्मेदारी डाली गई थी तथा वे शुभ और भले कामों के करने से वंचित हो गए थे उसी प्रकार हम पर ज़िम्मेदारी न डाली जाए अर्थात् हम बचन तोड़ने वाले बन कर भले कामों के करने से वंचित न हो जाएं।

वास्तव में इस प्रार्थना में इस्लाम के सदैव क़ायम रहने की प्रार्थना सिखाई गई है तथा मुसलमानों को इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि मुसलमान सामूहिक रूप से अल्लाह को अप्रसन्न न करें और अल्लाह उन्हें सदा उपकार करने का सामर्थ्य प्रदान करता रहे तथा उन में ऐसी विभूतियों का प्रादुर्भाव होता रहे जो इस्लाम को जिन्दा रखें और पहली जातियों की भांति उन को मिलने वाले पुरस्कारों का सिलसिला टूट न जाए।

2. अर्थात् हम पर ऐसा अज़ाब न आए जिस से हम कुचले जाएँ और पुन: उठने की शक्ति न रहे।

3. मूल शब्द 'क़ौम' का अर्थ है 'लोगों का एक दल'। यह शब्द निकटवर्ती सम्बन्धियों और रिश्तेदारों के लिए भी बोला जाता है। अत: क़ौम या जाति शब्द हर ऐसे दल पर बोला जाता है जिस का उद्देश्य एक हो।

चूंकि इन्कार करने वाले लोग मुसलमानों के विरुद्ध एक-मत हो कर एकत्रित हुए थे। अत: वे एक जाति कहलाने के अधिकारी थे। क़ौम का एक अर्थ शत्रु भी होता है। इस अर्थ के अनुसार आयत का अभिप्राय यह होगा कि शत्रुओं के विरुद्ध हमारी सहायता कर।
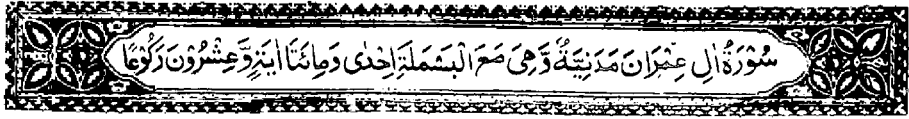
सूर: आले-इम्रान

[यह सूर: मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की दो सौ एक आयतें तथा बीस रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

الٓمّٓ ۝

अलिफ़, लाम, मीम[1]। (मैं अल्लाह बहुत जानने वाला हूँ) ।२।

اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۝

अल्लाह (ऐसी सत्ता है कि उस) के सिवा कोई उपास्य नहीं। वह कामिल जिन्दगी वाला, क़ायम रहने वाला और दूसरों को क़ायम रखने वाला है।३।

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۝

उस ने सत्य पर आधारित यह किताब तुझ पर उतारी है जो उस (ईशवाणी) को जो इस (किताब) से पहले आई थी पूरा करने वाली है तथा उसने तौरात और इन्जील को उतारा था।४।

مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۥ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝

(जो) इस से पहले लोगों को हिदायत देने के लिए थी, फिर निर्णय कर देने वाला निशान उतारा है। जिन लोगों ने अल्लाह के चमत्कारों का इन्कार किया है, निस्सन्देह उन के लिए कठोर अज़ाब निश्चित है और अल्लाह ग़ालिब (तथा बुरे कामों का) दण्ड देने वाला है।५।

1. इन शब्दों की व्याख्या देखिए सूर: बक़र: टिप्पणी आयत नं० 2

إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ⑥

अल्लाह् से कदापि कोई वस्तु छिपी हुई नहीं, न ज़मीन में और न आसमान में ।६।

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑦

वही है जो गर्भाशयों (माँ के पेट) में जैसी चाहता है तुम्हें वैसी ही शक्ल और सूरत देता है। उस के सिवा कोई उपास्य नहीं। वह ग़ालिब और हिक्मत वाला है ।७।

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ۖ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۗ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ ۘ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ⑧

वही है जिस ने तुझ पर यह किताब उतारी है जिस की कुछ आयतें तो मोहकम[1] हैं जो इस किताब की जड़ (अर्थात् मूल) हैं तथा कुछ और (हैं जो) मुतशाबिह[2] (मिलती-जुलती) हैं। अतः जिन लोगों के दिलों में टेढ़ापन है वे तो फ़साद फैलाने के उद्देश्य से तथा इस किताब को (इस की हक़ीक़त से) फेर देने के लिए ऐसी आयतों के पीछे पड़ जाते हैं जो इस (किताब) में से मुतशाबिह[3] हैं, हालाँकि इन के सही और हक़ीक़ी अर्थों की पूरी जानकारी सिवाय अल्लाह् तथा पूर्ण ज्ञान रखने वालों के (कि) जो कहते हैं कि हम इस (ईशवाणी) पर ईमान रखते हैं और यह सब हमारे रब्ब की ओर से ही है किसी को नहीं है और बुद्धिमानों के सिवा कोई भी शिक्षा हासिल नहीं करता ।८।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ⑨

हे हमारे रब्ब ! तू हमें हिदायत देने के बाद हमारे दिलों को टेढ़ा न कर और अपनी ओर से हम पर दया कर। निस्सन्देह तू महादाता है ।९।

---

1. 'मोहकमात' से अभिप्राय वे आयतें हैं जिन में पवित्र क़ुर्आन की विशेष शिक्षा का उल्लेख है।

2. 'मुतशाबिहात' से अभिप्राय वे आयतें हैं जिन में ऐसी शिक्षा है जिस का उल्लेख पहले धर्म-शास्त्रों में भी हो चुका है।

3. अर्थात् वे आयतें जो पहली किताबों की शिक्षा से मिलती-जुलती हैं। वे उन्हें बिगाड़ कर अपनी जातियों के पुराने रीति-रिवाज के अनुसार कर देते हैं और इस प्रकार वे पवित्र क़ुर्आन की विशेषता को छिपा देते हैं।

رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ⑩

हे हमारे रब्ब ! निस्सन्देह तू उस दिन (जिस के आने में) कोई सन्देह नहीं, सब को एकत्रित करेगा। अल्लाह् कदापि अपने बचन को भंग नहीं करता।१०। (रुकू १/९)

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُھُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَـيْـــًٔا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ ھُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ⑪

जो लोग इन्कार करने वाले हैं उन की धन सम्पत्ति और उन की सन्तान अल्लाह् के मुक़ाबिले में उन के कुछ काम नहीं आएँगे तथा यही लोग नरक के ईंधन हैं।११।

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَھُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ⑫

उन का आचरण फ़िरऔन के अनुयायियों और उन लोगों के आचरण के अनुकूल है जो उन से पहले थे। उन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया था इस पर अल्लाह् ने उन के अपराधों के कारण उन्हें पकड़ लिया तथा अल्लाह् का अज़ाब कठोर होता है।१२।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ۭ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ⑬

जो लोग इन्कार करने वाले हैं उन्हें कह दे कि तुम्हें अवश्य पराजित किया जाएगा और नरक की ओर एकत्रित कर के ले जाया जाएगा तथा वह अत्यन्त बुरा ठिकाना है।१३।

قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۭ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ ۭ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ⑭

उन दो दलों में जो परस्पर युद्ध कर रहे थे निश्चय ही तुम्हारे लिए एक निशान था। (उन में से) एक दल तो अल्लाह् की राह में युद्ध करता था और दूसरा इन्कार करने वाला था। वे (मुसलमान) इन इन्कार करने वालों को अपनी आँखों से दो गुना देख रहे थे और अल्लाह् जिसे चाहता है अपनी सहायता दे कर शक्ति प्रदान करता है। इस बात में निश्चय ही (ज्ञान की) आँखें रखने वालों के लिए एक शिक्षा है।१४।

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿١٥﴾

लोगों को (साधारणतया) पसन्द की जाने वाली वस्तुओं अर्थात् स्त्रियों, बेटों एवं सोने और चाँदी के सुरक्षित भण्डारों और सुन्दर घोड़ों और चौपायों एवं खेती का प्रेम सुन्दर रूप में दिखाया गया है। यह भौतिक-जीवन के साधन मात्र हैं और अल्लाह तो वह है जिस के पास बहुत अच्छा ठिकाना है।१५।

قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِ ﴿١٦﴾

तू कह दे कि क्या मैं तुम्हें इस से भी अच्छी चीज़ बताऊँ? जो लोग संयम धारण करें उन के लिए उन के रब्ब के पास ऐसे बाग़ हैं जिन में नहरें बहती हैं वे उन में निवास करेंगे तथा (उन के लिए वहाँ) पवित्र जोड़े और अल्लाह की प्रसन्नता (निश्चित) है एवं अल्लाह अपने भक्तों को देख रहा है।१६।

اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٧﴾

जो कहते हैं कि हे हमारे रब्ब! हम निश्चय ही ईमान ला चुके हैं। इस लिए तू हमारे अपराध क्षमा कर दे तथा नरक के अज़ाब से हमें बचा ले।१७।

اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿١٨﴾

जो धैर्यवान, सत्यवादी, आज्ञाकारी एवं (अल्लाह के लिए अपना धन) खर्च करने वाले तथा रात की अन्तिम घड़ियों में इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) करने वाले हैं।१८।

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٩﴾

अल्लाह न्याय के अनुसार यह गवाही देता है कि उस के सिवा दूसरा कोई उपास्य नहीं और फ़रिश्ते और ज्ञानी लोग भी (यही गवाही देते हैं) कि उस के सिवा कोई भी उपासना के योग्य नहीं और वह ग़ालिब और हिक्मत वाला है।१९।

إن الدين عند الله الإسلام وما اختلف الذين أوتوا الكتب إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم ومن يكفر بايت الله فإن الله سريع الحساب ﴿٢٠﴾

निस्सन्देह अल्लाह के निकट वास्तविक धर्म पूर्ण रूप से आज्ञा का पालन करना है और केवल उन्हीं लोगों ने जिन को किताब दी गई थी आपस के फ़साद के कारण मतभेद किया यद्यपि उन के पास (ईश्वरीय) ज्ञान आ चुका था और जो अल्लाह के निशानों को न माने तो (वह याद रखे कि) अल्लाह निस्सन्देह शीघ्र ही लेखा लेने वाला है ।२०।

فإن حاجوك فقل أسلمت وجهي لله ومن اتبعن وقل للذين أوتوا الكتب والأميين ءأسلمتم فإن أسلموا فقد اهتدوا وإن تولوا فإنما عليك البلغ والله بصير بالعباد ﴿٢١﴾ ع

अब यदि ये लोग तुझ से झगड़ें तो तू उन्हें कह दे कि मैं ने तथा उन लोगों ने जो मेरे अनुयायी हैं अपने आप को अल्लाह के आज्ञा-पालन करने में लगा दिया है तथा जिन लोगों को किताब दी गई है उन्हें एवं उम्मियों[1] को कह दे कि क्या तुम भी (अल्लाह की) आज्ञा का पालन करते हो। यदि वे आज्ञा का पालन करें तो समझ लो कि वे हिदायत पा गए और यदि वे आज्ञा का उल्लंघन करें तो तेरे ज़िम्में केवल सन्देश पहुँचा देना है और अल्लाह लोगों को देख रहा है ।२१। (रुकू २/१०)

إن الذين يكفرون بايت الله ويقتلون النبيين بغير حق ويقتلون الذين يأمرون بالقسط من الناس فبشرهم بعذاب أليم ﴿٢٢﴾

जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं और अकारण नबियों की हत्या करना चाहते हैं तथा लोगों में से जो न्याय की शिक्षा देते हैं उन की भी हत्या करना चाहते हैं। तू उन्हें दर्दनाक अज़ाब की सूचना दे दे ।२२।

أولئك الذين حبطت أعملهم في الدنيا والآخرة وما لهم من نصرين ﴿٢٣﴾

ये वे लोग हैं जिन के कर्म इस संसार में भी और परलोक में भी नष्ट हो जाएँगे तथा उन का कोई भी सहायक नहीं होगा ।२३।

1. मूल शब्द 'उम्मी' का अर्थ है अनपढ़ और 'उम्मुलकुरा' से मक्का-निवासी अभीष्ट हैं।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٤﴾

क्या तुझे उन लोगों का ज्ञान नहीं हुआ जिन्हें शरीअत का एक हिस्सा दिया गया है (कि जब) उन्हें अल्लाह की किताब की ओर बुलाया जाता है, ताकि वह उन में फ़ैसला कर दे तो उन में से कुछ लोग ही (इस से) बेपरवाही करते हुए मुँह फेर लेते हैं ।२४।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ۖ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٥﴾

यह (बेपरवाही) इस कारण है कि वे कहते हैं कि हमें सिवाय थोड़े दिनों के (नरक की) आग कदापि नहीं छुएगी और जो कुछ वे झूठ गढ़ते हैं उस ने उन्हें (उन के) धर्म (के बारे) मे धोखा दिया हुआ है ।२५।

فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنَاهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

जब हम उस दिन उन्हें इकट्ठा करेंगे जिस के आने में कोई सन्देह नहीं, उन की क्या दशा होगी ? और प्रत्येक व्यक्ति ने जो कुछ कमाया होगा (उस दिन) वह उसे पूरा-पूरा दे दिया जाएगा तथा उन पर कुछ भी अत्याचार नहीं किया जाएगा ।२६।

قُلِ اللَّهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَن تَشَاءُ وَتَنزِعُ الْمُلْكَ مِمَّن تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَاءُ ۖ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٧﴾

तू कह दे कि हे अल्लाह जो राज्य सत्ता का स्वामी है ! तू जिसे चाहता है राज्य प्रदान करता है तथा जिस से चाहता है राज्य छीन लेता है, जिसे चाहता है सम्मानित करता है और जिसे चाहता है अपमानित कर देता है। हर प्रकार की भलाई तेरे हाथ में है। निस्सन्देह तू हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है ।२७।

تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۖ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۖ وَتَرْزُقُ مَن تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٨﴾

तू रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करता है और निर्जीव से सजीव तथा सजीव से निर्जीव निकालता है और जिस के लिए चाहता है उसे बे-हिसाब देता है ।२८।

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكٰفِرِينَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۗ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٢٩﴾

मोमिन, मोमिनों को छोड़ कर इन्कार करने वालों को मित्र न बनाएँ उन से पूर्ण रूप से सावधान रहना ही तुम्हारे लिए उचित है और (तुम में से) जो व्यक्ति ऐसा करे उस का अल्लाह से किसी बात में भी कोई सम्बन्ध न होगा और अल्लाह तुम्हें अपने अज़ाब से डराता है और तुम्हें उसी की ओर लौटना होगा।२९।

قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ۗ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٠﴾

तू उन्हें कह दे कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है चाहे तुम उसे छिपा कर रखो अथवा ज़ाहिर करो (हर हाल में) अल्लाह उसे जान[1] लेगा और जो कुछ आसमानों में तथा ज़मीन में है वह उसे जानता है और अल्लाह (प्रत्येक काम करने पर) पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है।३०।

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۖ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا بَعِيْدًا ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۗ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٣١﴾ ع

(उस दिन से डरो) जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपनी हर-एक नेकी को अपने सामने पाएगा जो उस ने की होगी और जो पाप किया होगा उसे भी (अपने सामने पाएगा) उस की इच्छा होगी कि काश! उस पाप और उस (व्यक्ति) के बीच एक लम्बी दूरी होती और अल्लाह तुम्हें अपने अज़ाब से डराता है तथा वह अपने बन्दों पर बहुत दया करने वाला है।३१। (रुकू ३/११)

---

1. साहित्यिक दृष्टि से अल्लाह के ज्ञान को दो प्रकार का बताया गया है। एक सनातन या स्थायी ज्ञान जिस में कदापि कोई परिवर्तन नहीं होता तथा दूसरा घटना के समय का ज्ञान अर्थात् जब कोई बात हो जाती है तो उसे यह भी ज्ञान हो जाता है कि अमुक बात हो गई है। इसी की ओर आयत में संकेत किया गया है।

तू कह दे, (हे लोगो !) यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो (ऐसी अवस्था में) वह भी तुम से प्रेम करेगा और तुम्हारे अपराध क्षमा कर देगा तथा अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है ।३२।	قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
तू कह दे कि तुम अल्लाह और इस के रसूल के आज्ञाकारी बनो । इस पर यदि वे मुँह फेर लें तो (याद रखो कि) अल्लाह इन्कार करने वालों से कदापि प्रेम नहीं करता ।३३।	قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۝
निस्सन्देह अल्लाह ने आदम और नूह को तथा इब्राहीम एवं इम्रान के वंश को सारे जहानों[1] (लोकों) पर फ़ज़ीलत दी थी ।३४।	اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ وَ نُوْحًا وَّ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَ اٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝
(उस ने) एक ऐसी नस्ल[2] (सन्तति) को फ़ज़ीलत (प्रधानता) दी जो एक-दूसरे से पूरी समानता रखने वाली थी और अल्लाह बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है ।३५।	ذُرِّيَّةً ۢ بَعْضُهَا مِنْ ۢ بَعْضٍ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝
(याद करो) जब इम्रान-वंश की महिला ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! जो कुछ मेरे पेट में है मैंने उसे आज़ाद कर के तेरी भेंट कर दिया है । अतएव तू उसे मेरी ओर से जिस तरह	اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّيْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ

1. 'सारे जहानों' से अभिप्राय यह नहीं कि भूत एवं भविष्यत सभी कालों के लोगों पर प्रतिष्ठा प्रदान की थी, अपितु अभिप्राय यह है कि वे लोग जो उन के समकालीन थे उन लोगों पर प्रधानता दी थी अन्यथा यदि हज़रत आदम को समस्त लोकों पर प्रधानता प्राप्त हो तो फिर हज़रत नूह को प्राप्त नहीं हो सकती और यदि हज़रत नूह को प्रधानता मिले तो हज़रत इब्राहीम को प्राप्त नहीं हो सकती और यदि हज़रत इब्राहीम को मिले तो आले-इम्रान को नहीं मिल सकती ।

2. इस स्थान पर 'नस्ल' से तात्पर्य यह नहीं कि वे शारीरिक दृष्टिकोण से उन की नस्ल में से थे, अपितु आशय यह है कि वे आध्यात्मिक दृष्टिकोण से परस्पर एक जैसे थे ।

الْعَلِيْمُ ﴿٣٦﴾

हो स्वीकार[1] कर। निस्सन्देह तू बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है।३६।

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ۭ وَاللّٰهُ
اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ۭ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّيْ
سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّىْٓ اُعِيْذُھَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا
مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٣٧﴾

फिर जब उसने उसे जन्म दिया तो उस ने कहा, हे मेरे रब्ब ! मैंने तो इसे कन्या के रूप में जन्म दिया है और जो कुछ उस ने जन्म दिया था अल्लाह उसे ख़ूब जानता था तथा उस का (काल्पनिक) पुत्र इस कन्या के समान नहीं हो सकता और (कहा कि) मैंने उस का नाम मर्यम रखा है और मैं उसे तथा उस की सन्तान को फटकारे हुए शैतान के आक्रमण से तेरी शरण में देती[2] हूँ।३७।

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَـنًا ۙ
وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۚ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ
وَجَدَ عِنْدَھَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ ھٰذَا ۭ
قَالَتْ ھُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۗءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾

तब उस के रब्ब ने उसे अच्छे रूप में स्वीकार किया और अच्छे ढंग से बढ़ाया तथा ज़करिया उस का संरक्षक (देख-भाल करने वाला) बना। जब कभी ज़करिया घर के अच्छे[3] स्थान में उस के पास जाता तो उस के पास कोई न कोई भोजन पाता। (एक दिन ऐसा देख कर) उस ने कहा, हे मर्यम ! यह तेरे लिए कहाँ से आया है ? उस ने कहा, अल्लाह की ओर से। निस्सन्देह अल्लाह जिसे चाहता है उसे बे-हिसाब देता है।३८।

---

1. इस आयत में 'स्वीकार कर' शब्दों से विदित होता है कि हज़रत मसीह कामिल पुरुष न थे उन की नानी ने मसीह की माता के सम्बन्ध में कहा कि उस की दुर्बलता पर पर्दा डालते हुए स्वीकार करने की कृपा करे, क्योंकि अभीष्ट तो मर्यम का पुत्र (मसीह) था। अतः उस का यह वाक्य वास्तव में हज़रत मसीह से सम्बन्धित है। मुसलमानों पर अफ़सोस है जो इस तथ्य को नहीं समझे और मसीह को बहुत सी बातों में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) देते हैं।

2. इस प्रार्थना से स्पष्ट है कि किसी सत्य स्वप्न के द्वारा मर्यम की माता को ज्ञान हो चुका था कि इस पर तथा इस की सन्तान पर शैतान हमला करेगा।

3. अरबी शब्द कोष के अनुसार मूल शब्द 'मेहराब' का अनुवाद 'अच्छा स्थान' किया गया है।

(शेष पृष्ठ १२९ पर)

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۖ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٩﴾

तब ज़करिया ने अपने रब्ब को पुकारा और कहा कि हे मेरे रब्ब ! तू मुझे भी अपने पास से पवित्र सन्तान प्रदान कर। निस्सन्देह तू प्रार्थना को बहुत स्वीकार करने वाला है।३९।

فَنَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٤٠﴾

इस पर फ़रिश्तों ने उसे जब कि वह घर के सर्वोत्तम[1] भाग में नमाज़ पढ़ रहा था आवाज़ दी कि अल्लाह तुझे यह्या का शुभ-समाचार देता है, जो अल्लाह की एक बात को पूरा करने वाला होगा और सरदार और (पापों से) रोकने वाला तथा भले लोगों में से (उन्नति कर के) नबी होगा।४०।

قَالَ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ ۖ قَالَ كَذَٰلِكَ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ﴿٤١﴾

उस ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! मुझे (मेरे जीवन में आयु पाने वाला) बालक कैसे मिलेगा जब कि मुझ पर बुढ़ापा आ चुका है तथा मेरी पत्नी बाँझ[2] है। कहा, अल्लाह ऐसा ही (क़ादिर) है, वह जो चाहता है करता है।४१।

قَالَ رَبِّ اجْعَل لِّي آيَةً ۖ قَالَ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْزًا ۗ وَاذْكُر رَّبَّكَ كَثِيرًا وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿٤٢﴾

(फिर) उस ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! मेरे लिए कोई आदेश दे। उस ने कहा कि तुझे यह आदेश है कि तू तीन दिन तक लोगों से संकेत करने के सिवाय कोई बात-चीत न कर तथा अपने रब्ब को बहुत याद कर और साँझ-सवेरे उस की स्तुति कर।४२। (रुकू ४/१२)

(पृष्ठ १२८ का शेष)

भाव यह है कि मर्यम को उस के धर्म के लिए वक़्फ़ होने तथा ज़करिया के वात्सल्य के कारण घर के सर्वोत्तम भाग में ठहराया गया था।

1. 'सर्वोत्तम भाग' अरबी शब्द 'मेहराब' का अनुवाद है और इस से तात्पर्य यह है कि घर का शुद्ध और पवित्र भाग।

2. बाँझ होने का भाव है कि लड़का पैदा होना असम्भव है और वृद्ध होने का भाव है कि वह अपने जीवन में युवा पुत्र नहीं देख सकता।

وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾

और (उस समय को याद करो) जब फ़रिश्ते ने कहा कि हे मर्यम ! निस्सन्देह अल्लाह ने तुझे सम्मानित किया है तथा पवित्र ठहराया है और संसार की समस्त महिलाओं के मुक़ाबिले में तुझे चुन लिया है ।४३।

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِىْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِىْ وَارْكَعِىْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٤﴾

हे मर्यम ! तू अपने रब्ब की आज्ञाकारिणी बन और सजदः कर तथा केवल एक अल्लाह की उपासना करने वालों के साथ मिल कर एक अल्लाह की उपासना कर ।४४।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾

यह परोक्ष[1] की सूचनाओं में से (एक) है जिसे हम तुझ पर वह्य (के द्वारा प्रकट) करते हैं और जब वे अपने बाणों को (शुकनार्थ) फेंकते थे कि उन में से मर्यम का कौन संरक्षक होगा, तो तू (उस समय) उन के पास न था और न ही तू (उस समय) उन के पास था जब वे परस्पर झगड़ रहे थे ।४५।

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٦﴾

फिर (उस समय को याद कर) जब फ़रिश्तों ने कहा था कि हे मर्यम ! अल्लाह तुझे अपने एक कलाम (वाणी) द्वारा (एक पुत्र का) शुभ-सूचना देता है। उस का नाम मर्यम का पुत्र ईसा मसीह होगा जो इस लोक में तथा परलोक में गौरवशाली होगा और (अल्लाह का) क़ुर्ब (नज़दीकी) हासिल करने वाला होगा ।४६।

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٧﴾

और पालने में (अर्थात् छोटी आयु में) लोगों से बातें करेगा तथा प्रौढ़ावस्था में भी (बातें करेगा) और नेक लोगों में से होगा ।४७।

1, अर्थात् यह बातें तौरात की कपोल कल्पित बातों के विरुद्ध हैं और अन्तर्यामी अल्लाह ने तुझ पर प्रकट की हैं ।

قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٨﴾

उस (मर्यम) ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! मेरे यहाँ बच्चा कैसे होगा, जब कि किसी पुरुष ने (भी) मुझे छुआ नहीं ? कहा, अल्लाह (का काम) ऐसा ही होता है। वह जो चाहता है पैदा करता है और जब वह किसी बात का फ़ैसला कर लेता है तो उस के बारे में केवल इतना ही कहता है कि 'हो जा' तो वह हो जाती है।४८।

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٤٩﴾

और (यह भी शुभ-सूचना दी कि अल्लाह) उसे किताब एवं हिक्मत की बातें सिखाएगा और तौरात तथा इन्जील भी सिखाएगा। ।४९।

وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَ

और इस्राईल की सन्तान की ओर रसूल (बना कर इस सन्देश के साथ भेजेगा) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से एक निशान (चमत्कार) ले कर आया हूँ। (वह यह है कि) मैं तुम्हारे भले के लिए गीली मिट्टी का स्वभाव रखने वालों (अर्थात् विनम्र स्वभाव वालों) से पक्षी (के पैदा करने) की तरह (प्राणी) पैदा[1] करूँगा, फिर मैं उन में एक नई रूह फूँकूँगा जिस से वे अल्लाह के आदेश के साथ उड़ने वाले हो जाएँगे तथा मैं अल्लाह के आदेश से अन्धों एवं कोढ़ियों को अच्छा करूँगा और मुर्दों को जीवित[2] करूँगा

---

1. जिस प्रकार पक्षी अण्डे को 'से' कर उन में से बच्चे निकालता है उसी प्रकार मैं भी लोगों में से आध्यात्मिक योग्यता रखने वाले व्यक्तियों को अपने सम्पर्क में ले कर एक दिन इस योग्य बना देता हूँ कि वे अल्लाह की ओर आध्यात्मिक उड़ान करने वाले बन जाते हैं। इस से यह अभिप्राय नहीं कि मैं ख़ुदा बन जाऊंगा और न ही यह तात्पर्य है कि मैं सचमुच पक्षी पैदा करूँगा।

2. यहूदियों को आदेश था कि वे अन्धों और कोढ़ियों को अपवित्र समझें (लैव्यवस्था 13.21)

(शेष पृष्ठ १३२ पर)

اُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ فِیْ بُیُوْتِكُمْ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ

और जो कुछ तुम खाओगे एवं जो कुछ तुम अपने घरों में इकट्ठा[1] करोगे उस का तुम्हें पता दूंगा और यदि तुम मोमिन हो तो निश्चय ही इस में तुम्हारे लिए एक निशान होगा ।५०।

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِیْ حُرِّمَ عَلَیْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِاٰیَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوْنِ

और (मैं उस वह्य को) जो मुझ से पहले (आ चुकी) है अर्थात् तौरात उसे पूरा करने वाला (बन कर आया) हूँ और इसलिए (आया हूँ) कि कुछ ऐसे पदार्थ जो तुम्हारे लिए हराम ठहराए[2] गए थे उन्हें तुम्हारे लिए हलाल करूँ तथा मैं तुम्हारे लिए तुम्हारे रब्ब की ओर से एक निशान लेकर आया हूँ । अतः तुम अल्लाह के लिए संयम धारण करो और मेरा अनुसरण करो ।५१।

اِنَّ اللّٰهَ رَبِّیْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِیْمٌ

निस्सन्देह अल्लाह मेरा भी रब्ब है और तुम्हारा भी रब्ब है। अतः तुम उसी की उपासना करो। यही सीधा मार्ग है ।५२।

(पृष्ठ १३१ का शेष)

अल्लाह ने हज़रत मसीह द्वारा इस अत्याचार को दूर कराया है। उसी का इस स्थान पर वर्णन है। लोगों ने भूल वश यह समझ लिया है कि जन्मजात अन्धों और कोढ़ियों को वह अच्छा कर दिया करते थे, परन्तु जन्मजात के शब्द पवित्र क़ुर्आन में नहीं हैं और मोतियाबिन्द के रोगियों तथा कोढ़ियों को तो डाक्टर और वैद्य लोग भी अच्छा कर देते हैं, किन्तु जो आयतें हज़रत मसीह के सम्बन्ध में आई हैं दुर्भाग्य वश मुसलमान उन का ऐसा अर्थ करते हैं कि जिस से मसीह की ख़ुदाई सिद्ध हो।

1. अर्थात् तुम्हें उन भले कामों की सूचना दूंगा जिन के करने से एक मनुष्य अल्लाह का सामीप्य और उस की नज़दीकी प्राप्त कर सकता है।

2. अर्थात् तुम्हारी शरारतों के कारण वह्य (ईशवाणी) का आना बन्द हो गया था। अब उसे मेरे द्वारा फिर जारी किया जाएगा।

فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٥٣﴾

फिर जब ईसा ने उन के इन्कार को भांप लिया तो कहा कि अल्लाह के लिए कौन लोग मेरे सहायक बनते हैं? हवारियों ने कहा कि हम अल्लाह (के धर्म) के सहायक हैं। हम अल्लाह पर ईमान रखते हैं और तू गवाह रह कि हम आज्ञाकारी हैं।५३।

رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٤﴾

हे हमारे रब्ब ! जो कुछ तूने उतारा है हम उस पर ईमान ला चुके हैं तथा हम इस रसूल के अनुयायी हो चुके हैं। इस लिए तू हमें गवाहों में लिख ले।५४।

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٥٥﴾

और उन्होंने (अर्थात् मसीह के विरोधियों ने उन के विरुद्ध) योजनाएँ बनाईं और अल्लाह ने भी योजनाएँ बनाईं और अल्लाह योजनाएँ बनाने वालों में से सर्वोत्तम[1] योजना बनाने वाला है।५५। (रुकू ५/१३)

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٥٦﴾

(उस समय को भी याद करो) जब अल्लाह ने कहा, हे ईसा ! मैं तुझे (स्वाभाविक) मौत दूँगा और तुझे अपनी ओर से प्रतिष्ठा[2] प्रदान करूँगा तथा इन्कार करने वालों (के आरोपों) से तुझे पवित्र ठहराऊँगा और तेरे अनुयायियों को उन लोगों पर जो इन्कार करने वाले हैं क़ियामत के दिन तक ग़ालिब रखूँगा, फिर तुम्हें मेरी ओर ही लौटना होगा, तब मैं उन बातों में तुम्हारे बीच फ़ैसला करूँगा जिन में तुम मतभेद करते हो।५६।

---

1. तात्पर्य यह है कि हज़रत मसीह के शत्रुओं ने उन के विरुद्ध षड्यन्त्र रचे और अल्लाह ने भी उन के षड्यन्त्रों को तोड़ने के लिए योजना बनाई।

2. मूल शब्द 'रफ़ा' का अर्थ सत्कार और प्रतिष्ठता प्रदान करना भी है।

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٥٧﴾

पस जो लोग इन्कार करने वाले हैं उन्हें मैं इस लोक में भी तथा परलोक में भी कड़ा अज़ाब दूँगा और उन का कोई भी सहयाक नहीं होगा ।५७।

وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٥٨﴾

और जो लोग मोमिन हैं तथा उन्होंने शुभ और नेक कर्म किए हैं वह उन्हें उन का पूरा-पूरा प्रतिफल देगा और अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता ।५८।

ذَٰلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ﴿٥٩﴾

इस को अर्थात् निशानों वाली और हिक्मत वाली शिक्षा को हम तुझे पढ़ कर सुनाते हैं ।५९।

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِندَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ مِن تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٦٠﴾

(याद रखो) ईसा का हाल अल्लाह के निकट निश्चय ही आदम के हाल जैसा है। उस (आदम) को उस ने सूखी[1] मिट्टी[2] से पैदा किया, फिर उस के बारे में कहा कि तू वजूद में आ जा, तो वह वजूद में आने लगा ।६०।

الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُن مِّنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٦١﴾

यह तेरे रब्ब की ओर से सच है। इस लिए तू सन्देह करने वालों में से न बन ।६१।

---

1. इस से ज्ञात हुआ कि पवित्र क़ुर्आन के अनुसार हज़रत मसीह भी शेष व्यक्तियों की भाँति मिट्टी से पैदा हुए थे और उन्हें कोई महत्वपूर्ण विशेषता प्राप्त न थी, क्योंकि जितने लोग माता-पिता से पैदा होते हैं वे क़ुर्आन के अनुसार मिट्टी से ही पैदा होते हैं।

2. शैतान के वृत्तान्त में तथा कई दूसरी आयतों में आदम की उत्पत्ति 'तीन' (मिट्टी) से बताई गई है अर्थात् ऐसी मिट्टी जिस में इल्हाम (ईशवाणी) का पानी समोया हुआ था, किन्तु इस स्थान पर हज़रत आदम और हज़रत ईसा की उत्पत्ति 'तुराब' (मिट्टी) से बताई गई है अर्थात् ऐसी मिट्टी जिस में ईशवाणी का पानी समोया हुआ न था। इन दोनों बातों में कोई विभेद नहीं है, क्योंकि यहाँ आदम से अभीष्ट स्वयं हज़रत आदम नहीं एवं ईसा से तात्पर्य हज़रत ईसा नहीं, अपितु आदम एवं आदम की सन्तान तथा ईसा और उन के अनुयायी अभीष्ट हैं और उन लोगों में से एक समुदाय ईशवाणी की अवहेलना करने वाला था।

अतः साधरणतया दोनों की सृष्टि 'तुराब' अर्थात् सूखी मिट्टी से बताई गई है।

فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ۝

अब जो (व्यक्ति) तेरे पास (अल्लाह) का ज्ञान आ चुकने के बाद उस के बारे में तुझ से विवाद[1] करे, तो तू उसे कह दे कि आओ हम अपने पुत्रों को तथा तुम अपने पुत्रों को और हम अपनी स्त्रियों को तथा तुम अपनी स्त्रियों को और हम अपने लोगों को तथा तुम अपने लोगों को बुलाएँ, फिर गिड़गिड़ा कर प्रार्थना करें और झूठों पर अल्लाह की फटकार डालें।६२।

---

1. पवित्र क़ुर्आन की इस आयत में मुबाहिला का वर्णन है, जिस का शाब्दिक अर्थ दो पक्षों का एक-दूसरे को अभिशाप देना है। मुबाहिला करने से पहले यह ज़रूरी है कि :—

(क) दोनों पक्ष अपने-अपने धर्म और मन की सच्चाई प्रमाणों द्वारा एक दूसरे पर स्पष्ट कर दें इस के बाद यदि फिर भी कोई पक्ष दूसरे पक्ष के मंतव्य को न माने और हठ करे तो वे एक-दूसरे को मुबाहिला के लिए बुला सकते हैं।

(ख) मुबाहिला में प्रतिद्वन्दियों की ओर से उन के परिजन एवं परिवार के लोग स्त्री-पुरुष और बच्चों के अतिरिक्त एक बड़ी संख्या में उन के सहधर्मियों का सम्मिलित होना भी ज़रूरी है ताकि मुबाहिला का प्रभाव विस्तृत जन-समूह पर पड़े और झूठ-सच में खुला-खुला अन्तर प्रकट हो सके।

(ग) उस सम्मेलन में दोनों पक्षों के नेताओं का होना भी अति आवश्यक है। यह उचित नहीं कि दो-चार व्यक्ति एक पक्ष के तथा दो-चार दूसरे पक्ष के मुबाहिले की योजना बना लें और फिर मैदान में निकल कर एक-दूसरे को अभिशाप दें।

इस्लाम के प्रसिद्ध इतिहासकार मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने अपनी पुस्तक 'सीरत' में लिखा है कि नज्रान के ईसाइयों का प्रतिनिधि-मण्डल जिन के सम्बन्ध में यह आयत उतरी थी, साठ हज़ार की संख्या में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के पास आया था। उन लोगों में उन की जाति के नेता भी थे, जिन में 'आक़िब' (अब्दुल मसीह) और 'अब्हम' का नाम भी लिया जाता है। 'आक़िब' उन का लीडर था और मैदान का मुख्य पादरी था। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने उन के सामने मसीह के ख़ुदा होने के खण्डन तथा एक ख़ुदा के समर्थन में प्रमाण रखे, जब वे लोग न माने तो आप ने उन्हें मुबाहिले के लिए कहा, परन्तु वे डर गए। इस पर रसूले करीम ने कहा कि यदि ये लोग मुबाहिला कर लेते तो एक वर्ष बीतने से पहले इन लोगों का सर्वनाश हो जाता। (तफ़सीर कबीर प्रति नं० 1 पृष्ठ 699)

(घ) आप के कथनानुसार मुबाहिला होने पर दण्ड या ईश्वरीय अज़ाब की अवधि कम से कम एक वर्ष होनी चाहिए।

(शेष पृष्ठ १३६ पर)

إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ إِلٰهٍ إِلَّا اللّٰهُ ۚ وَإِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٣﴾

निस्सन्देह यही सच्चा बयान है और अल्लाह के सिवा कोई भी उपासना के योग्य नहीं और अल्लाह निश्चय ही ग़ालिब और हिक्मत वाला है।६३।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللّٰهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٦٤﴾ ع ٦/١٤

फिर यदि वे मुँह फेर लें तो (याद रखें कि) निस्सन्देह अल्लाह फ़साद फैलाने वालों को अच्छी तरह जानता है।६४। (रुकू ६/१४)

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا إِلٰى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللّٰهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٦٥﴾

तू कह दे कि हे अहले किताब[1]! (कम से कम) एक ऐसी बात की ओर तो आ जाओ जो हमारे तथा तुम्हारे बीच समान है। (और वह यह है कि) हम अल्लाह के सिवा किसी की उपासना न करें तथा किसी को उस का साझी न ठहराएँ और न हम अल्लाह को छोड़ कर परस्पर एक-दूसरे को रब्ब बनाया करें। यदि इस के बाद वे मुँह फेर लें तो उन से कह दे कि तुम गवाह रहो कि हम (अल्लाह के) आज्ञाकारी हैं।६५।

يَا أَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرٰهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٦﴾

हे अहले किताब! तुम इब्राहीम के बारे में क्यों विवाद (झगड़ा) करते हो? जब कि तौरात और इन्जील उस के बाद उतारी गई हैं। फिर क्या तुम समझते नहीं हो।६६।

(पृष्ठ १३५ का शेष)

(ङ) मुबाहिले की प्रार्थना में झूठों पर अल्लाह की फटकार की माँग करना आवश्यक है।

(च) मुबाहिले के फलस्वरूप अज़ाब का कोई रूप निश्चित नहीं किया जा सकता। यह बात अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है, वह जैसा चाहे परिणाम प्रकट करे। परिणाम (अज़ाब) स्वयं स्पष्ट कर देगा कि कौन सा पक्ष सच्चा था तथा कौन सा पक्ष झूठा था।

(छ) मुबाहिले के पश्चात् आने वाले ऐसे अज़ाब को अल्लाह का प्रकोप समझा जाएगा जिस में किसी मनुष्य के प्रयत्नों की लेशमात्र भी सम्भावना न हो।

1. 'किताब' का तात्पर्य है धार्मिक विधान। अहले किताब का भाव है धार्मिक विधान रखने वाले अर्थात् यहूदी और ईसाई।

هَاَنْتُمْ هٰۤؤُلَاۤءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاۤجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٦٧

सुनो ! तुम वे लोग हो जो ऐसी बातों में विवाद करते रहे हो जिन का तुम्हें ज्ञान था, फिर अब तुम क्यों उन बातों के बारे में विवाद करने लगे हो, जिन का तुम्हें कुछ भी ज्ञान नहीं। हालाँकि अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।६७।

مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّ لَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝٦٨

इब्राहीम न तो यहूदी था और न ही नसरानी[1] अपितु वह (अल्लाह की ओर) झुकने[2] वाला तथा आज्ञाकारी था और मुश्रिकों[3] में से नहीं था।६८।

اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَ هٰذَا النَّبِىُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ وَلِىُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٦٩

निस्सन्देह लोगों में से इब्राहीम के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रखने वाले वे लोग हैं जो उस के अनुयायी हैं और यह नबी तथा वे लोग भी जो इस (नबी) पर ईमान लाए हैं (घनिष्ट सम्बन्ध रखने वाले हैं) और अल्लाह मोमिनों का मित्र है।६९।

وَدَّتْ طَّاۤئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝٧٠

अहले किताब में से एक गिरोह यह चाहता है कि काश ! वह तुम्हें गुमराह (पथ-भ्रष्ट) कर दें और वे अपने आप को ही गुमराह कर रहे हैं, परन्तु समझते नहीं।७०।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ۝٧١

हे अहले किताब ! क्यों तुम जानते-बूझते हुए अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हो, हालाँकि तुम तो गवाही दे चुके हो।७१।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٧٢ ع ١٥

हे अहले किताब ! तुम जानते-बूझते हुए सच को झूठ के साथ क्यों मिलाते हो और सच को छिपाते हो।७२। (रुकू ७/१५)

1. 'ईसाई' ईसाइयों के मंतव्य में आस्था रखने वाला।
2. मूल शब्द 'हनीफ़' का अर्थ है आज्ञाकारी, झुकने वाला, एकेश्वरवादी।
3. अनेकश्वर वादी, अल्लाह को छोड़ कर या अल्लाह के साथ दूसरी सत्ताओं को उस का साझीदार और उपास्य मानने वाला।

وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٧٣﴾

और अहले किताब में से एक गिरोह कहता है कि मोमिनों पर जो कुछ उतारा गया है उस पर दिन के आरम्भ में तो ईमान लाया करो, परन्तु उस के अन्त में उस से इन्कार कर दिया करो। सम्भव है इस ढंग से वे फिर जाएँ।७३।

وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَآجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٧٤﴾

और (कहते हैं कि) जो व्यक्ति तुम्हारे धर्म का अनुयायी हो उस के सिवा किसी की बात न मानो। तू कह दे कि वास्तविक हिदायत अर्थात् अल्लाह की हिदायत तो यह है कि किसी को वैसा ही कुछ मिले जैसा कि तुम्हें मिला था या फिर वे तुम्हारे रब्ब के पास तुम से झगड़ा करें एवं कह दे कि कृपा तो निश्चय ही अल्लाह के हाथ में है। वह जिस पर चाहता है अपनी कृपा करता है और अल्लाह बहुत बढ़ाने वाला एवं बहुत जानने वाला है।७४।

يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٥﴾

वह जिसे चाहता है उसे अपना कृपा-पात्र बनाने के लिए चुन लेता है और अल्लाह बहुत कृपा करने वाला है।७५।

وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِى الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٦﴾

और अहले किताब में से (कोई तो) ऐसा है कि यदि तू उसे धन का ढेर अमानत के रूप में दे दे तो वह उसे वापस लौटा देगा और (कोई) उन में से ऐसा है कि यदि तू उसे एक दीनार भी अमानत के रूप में दे तो वह भी तुझे वापस नहीं लौटाएगा सिवाय इस के कि तू उस के (सर के) ऊपर खड़ा रहे। इस का कारण यह है कि वे कहते हैं कि हम पर अनपढ़ों के बारे में कोई पकड़ नहीं होगी और वे जान-बूझ कर अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं।७६।

بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝

यों नहीं[1], बल्कि जो व्यक्ति अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करे तथा संयम धारण करे तो (वह संयमी है) अल्लाह निश्चय ही संयमियों से प्रेम करता है ।७७।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

जो लोग अल्लाह के साथ किए गए अपने प्रतिज्ञाओं और शपथों के बदले में थोड़े दाम[2] लेते हैं उन लोगों का परलोक में कोई हिस्सा नहीं होगा तथा क़ियामत के दिन अल्लाह उन से बात तक नहीं करेगा और न उन की ओर देखेगा और न उन्हें पवित्र ठहराएगा तथा उन के लिए पीड़ादायक अज़ाब निश्चित है ।७८।

وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝

और उन में से एक गिरोह ऐसा है जो अपनी जबानों को किताब (तौरात) के उच्चारण की तरह मरोड़ता[3] है ताकि तुम उस को किताब में से समझो, हालाँकि वह किताब में से नहीं होता और वे कहते हैं कि वह अल्लाह की ओर से है, हालाँकि वह अल्लाह की ओर से नहीं होता और वे जान-बूझ कर अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं ।७९।

مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ

यह बात किसी (सच्चे) मनुष्य को शोभा देने वाली नहीं कि अल्लाह तो उसे किताब (धार्मिक-विधान), हुकूमत और नुबुव्वत दे और वह यह कहे कि तुम अल्लाह को छोड़ कर मेरे पुजारी बन जाओ बल्कि

1. उन का यह कथन कि अनपढ़ों के बारे में उन्हें कोई पकड़ नहीं होगी बिल्कुल झूठी बात है ।

2. भौतिक सम्पत्ति जो धर्म के मुक़ाबिले में तुच्छ है । यहाँ पर यह अभिप्राय नहीं कि धर्म बेचने के लिए थोड़ा मूल्य लेना अनुचित है और अधिक धन ले लेना उचित है ।

3. अर्थात् मनुष्य के बनाए हुए वाक्यों को तौरात का अध्ययन करने की भाँति उच्चारण करता है ताकि लोगों को धोखा लग जाए कि यह भी तौरात ही के भाग हैं ।

اللهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ﴿٧٩﴾

(ऐसा व्यक्ति तो यही कहता है कि) तुम अल्लाह के ही बन जाओ, क्योंकि तुम (अल्लाह की) किताब की शिक्षा देते हो और इसलिए कि तुम उसे याद करते हो ।८०।

وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾ ع ١٦

और न (ही उस के लिए) यह (सम्भव है) कि तुम्हें यह शिक्षा दे कि तुम फ़रिश्तों और नबियों को अपना रब्ब बना लो। तुम्हारे मुसलमान हो चुकने के बाद भी क्या वह तुम्हें इन्कार करने की शिक्षा[1] देगा ? ।८१। (रुकू ८/१६)

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨١﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब अल्लाह ने (अहले किताब से) सब नबियों[2] वाला पक्का वादा लिया था कि जो किताब और हिक्मत मैं तुम्हें दूँ, फिर तुम्हारे पास कोई ऐसा रसूल आए जो उस कलाम (ईशवाणी) को पूरा करने वाला हो जो तुम्हारे पास है तो तुम उस पर अवश्य ही ईमान लाना तथा उस की सहायता भी करना और कहा था कि क्या तुम इसे मानते हो और इस पर मेरी (ओर से डाली गई) ज़िम्मेदारी स्वीकार करते हो ? (और) उन्हों ने कहा था हाँ ! हम प्रतिज्ञा करते हैं। कहा, अब तुम गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में से एक गवाह हूँ ।८२।

فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾

अब जो व्यक्ति इस वादा से फिर जाए तो ऐसे लोग ही फ़ासिक़[3] होंगे ।८३।

---

1. मूल शब्द 'अम्र' का अर्थ है आदेश देना इस के अतिरिक्त कहना और शिक्षा देना भी है ।
2. जो संकल्प समस्त रसूल अपने-अपने अनुयायियों से लेते चले आए हैं ।
3. 'फ़ासिक़' का अर्थ है संकल्प भंग करने वाला, वादा तोड़ने वाला, अवज्ञाकारी ।

اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗۤ اَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٤﴾

फिर क्या वे अल्लाह के धर्म के सिवा कोई और धर्म चाहते हैं ? हालाँकि आसमानों और ज़मीन में जो (कोई भी) है अपनी ख़ुशी से भी और लाचारी से भी उसी का आज्ञाकारी है और वह उसी की ओर लौटाया जाएगा ।८४।

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَاۤ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٥﴾

तू कह दे कि हम अल्लाह पर और जो कुछ हम पर उतारा गया है तथा जो कुछ इब्राहीम एवं इस्माईल और इस्हाक़ तथा याक़ूब और (उस की) सन्तान पर उतारा गया था और जो कुछ मूसा, ईसा तथा दूसरे सब नबियों को उन के रब्ब की ओर से प्रदान किया गया था उस पर ईमान रखते हैं और उन में से किसी एक को दूसरे से अलग नहीं समझते तथा हम उस के आज्ञाकारी हैं ।८५।

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٦﴾

और जो मनुष्य इस्लाम के सिवा किसी दूसरे धर्म को अपनाना चाहे तो (वह याद रखे कि) वह धर्म उस से कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह परलोक में हानि उठाने वालों में से होगा ।८६।

كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْۤا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

जो लोग ईमान लाने के बाद फिर इन्कार करने वाले बन गए हों और यह गवाही दे चुके हों कि यह रसूल सच्चा है और फिर उन के पास स्पष्ट युक्तियाँ भी आ चुकी हों, उन्हें अल्लाह किस तरह हिदायत पर लाए तथा अल्लाह तो अत्याचारियों को हिदायत नहीं देता ।८७।

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٨﴾

ये लोग ऐसे हैं कि इन का दण्ड यह है कि इन पर अल्लाह और फ़रिश्तों की और सभी लोगों की फटकार हो ।८८।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَ لَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٩﴾

वे इस (फटकार) में रहेंगे न तो उन से अज़ाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें ढील दी जाएगी।८९।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَ اَصْلَحُوْا ۫ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٠﴾

(हाँ) उन लोगों को छोड़ कर जो बाद में तौबः (पश्चाताप) कर लें और सुधार कर लें और अल्लाह निस्सन्देह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।९०।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿٩١﴾

जो लोग ईमान ला चुकने के बाद इन्कार करने वाले बन चुके हों और इन्कार करने में और भी बढ़ गए हों उन की तौबः कदापि स्वीकार नहीं की जाएगी तथा यही लोग पथ-भ्रष्ट हैं।९१।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ مَاتُوْا وَ هُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ ع

जो लोग इन्कार करने वाले हो गए हों और इन्कार की हालत में ही मर गए हों उन में से किसी से ज़मीन के बराबर भी सोना स्वीकार नहीं किया जाएगा, जिसे वह बदले के रूप में पेश करें। इन लोगों के लिए पीड़ादायक अज़ाब निश्चित है तथा इन का कोई भी सहायक नहीं होगा।९२। (रुकू ९/१७)

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۚ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٩٢﴾

तुम कामिल नेकी कदापि नहीं पा सकते, जब तक कि अपनी प्यारी चीज़ों में से (अल्लाह के लिए) ख़र्च न करो और तुम जो चीज़ भी ख़र्च करोगे, निस्सन्देह अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है ।९३।

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ۗ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٣﴾

खाने के समस्त पदार्थ इस्राईल की सन्तान[1] के लिए हलाल (वैध) थे सिवाय उन पदार्थों के जो इस्राईल[2] ने तौरात के उतारे जाने से पहले अपने लिए हराम (अवैध) ठहरा लिए थे। तू कह दे कि यदि तुम सच्चे हो तो तौरात लाओ तथा उसे पढ़ो ।९४।

فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩٤﴾

अब जो लोग इस के बाद भी अल्लाह पर झूठ गढ़ें तो वही लोग अत्याचारी होंगे ।९५।

قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۗ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٥﴾

तू कह दे कि अल्लाह ने सच कहा है। इस लिए तुम इब्राहीम के धर्म का **अनुसरण** करो जो (अल्लाह की ओर) झुकने वाला था तथा वह मुश्रिकों में से नहीं था ।९६।

اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٦﴾

सब से पहला घर[3] जो (संसार के) सब लोगों के भले के लिए बनाया गया था वह मक्का[4] में है। वह सारे संसार के लिए बरकत वाला और हिदायत का साधन है ।९७।

---

1. हज़रत याक़ूब को उन के रोग के कारण कुछ पदार्थ खाने से रोका गया था, परन्तु उन की सन्तान ने भ्रमवश उन्हें अवैध समझ लिया। (उत्पत्ति 32:32)

2. 'इस्राईल' हज़रत याक़ूब का गुण-वाचक नाम है। (उत्पत्ति 32:29)

3. इस आयत में बताया गया है कि सब लोगों को अपनी ओर बुलाने वाला सब से पहला धर्म केवल इस्लाम है जो मक्का से ज़ाहिर हुआ। ईसाई धर्म का यह कहना निराधार है कि वह मानव-समाज के लिए आया है।

4. आयत में 'बक्का' शब्द है, जो अरबी मुहावरा में 'मक्का' ही है, क्योंकि कुछ अवसरों पर अरबी में 'म' के स्थान पर 'ब' का प्रयोग कर लिया जाता है। (फ़तहुलबयान)

(शेष पृष्ठ १४४ पर)

فِيهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ۗ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ۗ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٨﴾

उस में अनेक खुले-खुले निशान हैं। वह इब्राहीम के खड़े होने का स्थान है तथा जो व्यक्ति उस में प्रवेश करे वह सुरक्षित हो जाता है और अल्लाह ने लोगों का यह कर्त्तव्य ठहराया है कि जो उस तक पहुँचने का सामर्थ्य रखे वे इस घर का हज्ज करें और जो कोई इन्कार करे तो (वह याद रखे कि) अल्लाह सब जहानों (समस्त लोगों) से बे-परवाह है।९८।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾

तू कह दे कि हे अहले किताब ! तुम अल्लाह की आयतों (आदेशों) का क्यों इन्कार करते हो ? जब कि अल्लाह तुम्हारे कर्मों का निरीक्षक है।९९।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٠﴾

(फिर तू) कह दे कि हे अहले किताब ! जो ईमान लाता है तुम उसे अल्लाह की राह से क्यों रोकते हो ? तुम टेढ़े चलते हुए इस (टेढ़ी राह) को अपनाना चाहते हो, हालाँकि तुम उस पर गवाह हो (कि यह सीधी राह नहीं) तथा जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से कदापि बे-ख़बर नहीं।१००।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠١﴾

हे मोमिनो ! यदि तुम उन लोगों में से जिन को किताब दी गई थी, किसी भी सम्प्रदाय की आज्ञा का पालन करोगे तो वे तुम्हारे ईमान ला चुकने के बाद फिर तुम्हें इन्कार करने वाले बना देंगे।१०१।

(पृष्ठ १४३ का शेष)

अक़्रबुलमुवारिद में लिखा है कि 'बक्का' मक्का की ही वादी का नाम है। उस का यह नाम वहाँ जनता की भीड़-भाड़ के कारण पड़ गया है।

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِىَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ع

और तुम इन्कार किस तरह कर सकते हो, जब कि तुम वे लोग हो जिन्हें अल्लाह की आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तथा तुम्हारे बीच उस का रसूल मौजूद है और जो मनुष्य अल्लाह की शरण ले ले तो (समझ लो कि) उसे सीधी राह पर चला दिया गया।१०२। (रुकू १०/१)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ

हे मोमिनो! अल्लाह के लिए संयम को उसकी सभी शर्तों के साथ अपनाओ और तुम पर ऐसी हालत में मौत आए कि तुम पूरे आज्ञाकारी हो।१०३।

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ص وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖۤ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ

और तुम सब के सब अल्लाह की डोरी को मज़बूती से थाम लो और तितर-बितर मत हो और अल्लाह के उस उपकार को याद करो जो उस ने तुम पर किया है जब कि तुम एक-दूसरे के शत्रु थे उस ने तुम्हारे दिलों में प्रेम पैदा कर दिया, जिस के फलस्वरूप तुम उस की कृपा से भाई-भाई बन गए और तुम आग के एक गढ़े के किनारे खड़े थे, परन्तु उस ने तुम्हें उस से बचा लिया। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों को बयान करता है ताकि तुम हिदायत पाओ।१०४।

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ

और तुम में से एक गिरोह ऐसा होना चाहिए जिस का काम केवल यह हो कि वह लोगों को नेकी की ओर बुलाए तथा नेक बातों की शिक्षा दे और बुराई से रोके। ऐसे लोग ही सफलता पाने वाले हैं।१०५।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَٰتُ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٦﴾

और तुम उन लोगों की तरह न बनो जो खुले-खुले चमत्कार और निशान आ चुकने के बाद तितर-बितर हो गए और उन्हों ने आपस में मतभेद पैदा कर लिया तथा उन्हीं लोगों के लिए बड़ा अज़ाब (निश्चित) है ।१०६।

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿١٠٧﴾

जिस दिन कुछ चेहरे सफ़ेद होंगे तथा कुछ काले और जिन लोगों के चेहरे काले हो जाएँगे (उन से कहा जाएगा कि) क्या (यह सच नहीं कि) तुम ईमान ला चुकने के बाद इन्कार करने वाले बन गए थे। इस लिए अपने इन्कार के कारण यह अज़ाब चखो ।१०७।

وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٠٨﴾

और जिन लोगों के चेहरे सफ़ेद हो जाएँगे वे अल्लाह की रहमत (दया) में होंगे। वे उस में रहते चले जाएँगे ।१०८।

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِلْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾

यह अल्लाह की आयतें हैं जो सच पर निर्भर हैं, जिन्हें हम तुझे पढ़ कर सुनाते हैं और अल्लाह सब जहानों पर किसी प्रकार का अत्याचार करना नहीं चाहता ।१०९।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿١١٠﴾ ع

और जो कुछ आसमानों तथा ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है तथा अल्लाह ही की ओर सारे कामों को लौटाया जाएगा ।११०। (रुकू ११/२)

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۗ وَلَوْ آمَنَ

तुम सर्वोत्तम सम्प्रदाय हो, जिसे लोगों के भले[1] के लिए पैदा किया गया है। तुम भलाई का उपदेश देते हो और बुराई से रोकते हो तथा अल्लाह पर पूरा ईमान रखते हो और

1. मुसलमानों के सर्वश्रेष्ठ होने का कारण यह है कि उन्हें केवल अपनी भलाई करने के लिए ही नहीं, बल्कि समस्त संसार के भले के लिए पैदा किया गया है। काश ! मुसलमान इस रहस्य को समझें और इस प्रकार अपमानित न हों।

أَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُونَ وَأَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿١١١﴾

यदि अहले किताब भी ईमान लाते तो उन के लिए अच्छा होता। उन में से कुछ मोमिन भी हैं तथा उन में से बहुत से अवज्ञाकारी हैं।१११।

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ۭ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۣ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١١٢﴾

ये लोग (साधारण सा) दुःख देने के सिवा तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकते और यदि वे तुम्हारे साथ युद्ध करेंगे तो तुम्हारी ओर पीठ फेर कर भाग जाएँगे, फिर उन्हें किसी ओर से भी सहायता नहीं मिल सकेगी।११२।

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَاۗءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۭ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿١١٣﴾

वे जहाँ कहीं भी पाए जाएँ उन पर फटकार डाली गई है सिवाय इस बात के कि वे अल्लाह की किसी प्रतिज्ञा अथवा लोगों की किसी प्रतिज्ञा की शरण में आ जाएँ (इस फटकार से बच नहीं सकते) और वे अल्लाह के अज़ाब का पात्र बन गए हैं और बे-बसी (की हालत) उन के साथ चिपटा दी गई है। इस का कारण यह है कि वे अल्लाह की आज्ञाओं का इन्कार किया करते थे तथा अकारण ही नबियों[1] की हत्या करना चाहते थे और यह बात उन के अवज्ञाकारी और सीमोल्लंघी बन जाने के कारण उन में पाई जाती थी।११३।

لَيْسُوْا سَوَاۗءً ۭ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَاۗىِٕمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَاۗءَ الَّيْلِ وَھُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٤﴾

वे सब लोग एक समान नहीं हैं। अहले किताब में से ही एक ऐसा सम्प्रदाय भी है जो अपनी प्रतिज्ञा पर क़ायम है। वे रात के समय अल्लाह की आयतों का पठन-पाठन करते हैं तथा सजदे[2] भी करते हैं।११४।

1. 'नबियों की हत्या' से तात्पर्य हत्या करने की कोशिश है, क्योंकि बनी-इस्राईल ने सारे नबियों की हत्या नहीं की। अत: हम ने ऐतिहासिक घटनाओं के अनुसार 'हत्या करने' के स्थान पर 'हत्या करने की कोशिश' अनुवाद किया है।

2. आज्ञा पालन करना, विनम्रता।

يُؤْمِنُونَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٥﴾

वे अल्लाह और आने वाले दिन (अर्थात् क़ियामत) पर ईमान रखते हैं तथा नेकी करने का अनुदेश देते हैं और कुकर्मों से रोकते हैं तथा भलाई के कामों में एक-दूसरे से आगे बढ़ते हैं और ये लोग नेकों (सदाचारियों) में से हैं।११५।

وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ وَاللهُ عَلِيْمٌ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٦﴾

और वे जो नेकी करें उस का अपमान नहीं किया जाएगा तथा अल्लाह संयम धारण करने वालों को भली-भाँति जानता है।११६।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللهِ شَيْئًا وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١١٧﴾

जो लोग इन्कार करने वाले हैं उन्हें अल्लाह के अज़ाब से उन की दौलत और उन की सन्तानें बचा न सकेंगे। वे लोग आग (में पड़ने) वाले हैं। वे उस में निवास करते चले जाएँगे।११७।

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾

ये लोग जो कुछ इस सांसारिक जीवन के लिए ख़र्च करते हैं उस की दशा उस वायु के समान[1] है, जिस में बहुत ठंडक हो और वह एक ऐसी जाति की खेती पर चले जिस ने अपने-आप पर अत्याचार किया हो, फिर वह उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दे और अल्लाह ने उन लोगों पर अत्याचार नहीं किया, हाँ ! ये लोग स्वयं ही अपने-आप पर अत्याचार कर रहे हैं।११८।

---

1. तात्पर्य यह है कि मनुष्य तो ख़र्च इसलिए करता है कि उसे उन्नति मिले, परन्तु ये लोग मुनाफ़िक़त से ख़र्च करते हैं। इस लिए उन के ख़र्च करने का परिणाम वैसा ही निकलता है जैसा कि उत्तर दिशा से चलने वाली शीतल वायु होती है जो कृषि को नष्ट-भ्रष्ट कर देती है। इसी तरह वह ख़र्च भी उन के कर्मों के परिणाम निष्फल बना देता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ۭ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاۗءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ښ وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ۭ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۱۹﴾

हे मोमिनो ! अपने लोगों को छोड़ कर (दूसरों को) अपना राज़दार दोस्त (भेदी) न बनाओ। वे तुम से दुर्व्यवहार करने में कोई कमी नहीं करते एवं तुम्हारे दुःख में पड़ जाने को पसंद करते हैं। उन की शत्रुता उन के चेहरों से प्रकट हो चुकी है और जो कुछ उन के सीनों में छिपा है वह (इस से भी) बढ़ कर है। यदि तुम बुद्धि से काम लेने वाले हो तो हम ने तुम्हारे (हित के) लिए अपनी आयतों (अर्थात् आदेशों) को खोल-खोल कर बता दिया है।११९।

هٰٓاَنْتُمْ اُولَاۗءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ښ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۭ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۲۰﴾

सुनो ! तुम वे लोग हो जो उन से प्रेम रखते हो, परन्तु वे तुम से प्रेम नहीं रखते और तुम पूरी किताब पर ईमान रखते हो और जब वे तुम से मिलते हैं तो कह देते हैं कि हम भी ईमान रखते हैं और जब वे तुम से अलग होते हैं, तो तुम्हारे विरुद्ध क्रोध-वश अपनी अँगुलियाँ काटते हैं। तू उन से कह दे कि तुम अपने क्रोध के कारण मर जाओ। निस्सन्देह अल्लाह सीनों के रहस्य तक को जानता है।१२०।

اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۡ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ۭ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۱۲۱﴾ ع

यदि तुम्हें कोई सफलता प्राप्त हो तो उन्हें बुरा लगता है और यदि तुम्हें कोई दुःख पहुँचे तो वे इस से प्रसन्न होते हैं और यदि तुम धैर्य तथा संयम धारण करोगे तो उन की (प्रतिकूल) चाल तुम्हें कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकेगी तथा वे जो कुछ भी करते हैं, निस्सन्देह अल्लाह उसे बिलकुल नष्ट-भ्रष्ट करने वाला है।१२१। (रुकू १२/३)

وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢٢﴾

और (उस समय को याद कर) जब तू प्रातः काल अपने घर के लोगों से निकल कर इस लिए गया था कि मोमिनों को युद्ध के लिए उन के निश्चित मोर्चों[1] पर बिठा दे और अल्लाह (तेरी प्रार्थनाओं को) बहुत सुनने वाला एवं (तुम्हारी हालत को) भली-भाँति जानने वाला है।१२२।

اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٣﴾

(फिर उस समय को भी याद कर) जब (इस दशा को देख कर) तुम में से दो दल[2] साहस छोड़ देने पर तय्यार हो गए थे, हालाँकि अल्लाह उन का मित्र था और मोमिनों को तो अल्लाह पर ही पूरा-पूरा भरोसा रखना चाहिए।१२३।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢٤﴾

और निस्सन्देह (इस से पहले) बद्र के युद्ध में अल्लाह तुम्हारी सहायता कर चुका है जब कि तुम हीन और कमज़ोर थे। अतः अल्लाह के लिए संयम धारण करो, ताकि तुम कृतज्ञ बन जाओ।१२४।

اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٥﴾

(उस समय को भी याद कर) जब तू मोमिनों से कह रहा था कि क्या तुम्हारे लिए यह बात काफ़ी न होगी कि तुम्हारा रब्ब (आसमान से) उतारे हुए तीन हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी सहायता करे।१२५।

بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٦﴾

क्यों नहीं ! यदि तुम धैर्य और संयम धारण करो तथा वे (इन्कार करने वाले) तुम पर तुरन्त ही चढ़ाई करें तो तुम्हारा रब्ब पाँच हज़ार भयंकर आक्रमण करने वाले फ़रिश्तों के द्वारा तुम्हारी सहायता करेगा।१२६।

1. इस आयत में 'उहद' के युद्ध का वृत्तान्त है।
2. यह दो दल ख़ज़रज-वंश में से बनू-मुसल्लमः तथा औस वंश में से बनू-हारिसः थे।

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰی لَکُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُکُمْ بِهٖ ؕ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِیْزِ الْحَکِیْمِ ۝

और अल्लाह ने यह (बात) केवल तुम्हारे लिए शुभ-समाचार[1] के रूप में निश्चित की है और इस उद्देश्य से कि तुम्हारे दिल संतुष्ट हो जाएँ, अन्यथा सहायता तो केवल अल्लाह ही की ओर से आती है जो ग़ालिब और हिक्मत वाला है ।१२७।

لِیَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِیْنَ کَفَرُوْۤا اَوْ یَکْبِتَهُمْ فَیَنْقَلِبُوْا خَآئِبِیْنَ ۝

(और) इसलिए (निश्चित की है) ताकि वह (अल्लाह) इन्कार करने वाले लोगों के एक भाग को काट दे अथवा उन्हें अपमानित कर दे, ताकि वे असफ़ल लौट जाएँ ।१२८।

لَیْسَ لَکَ مِنَ الْاَمْرِ شَیْءٌ اَوْ یَتُوْبَ عَلَیْهِمْ اَوْ یُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝

तेरा इस बात में कुछ (भी अधिकार) नहीं । (यह सारी समस्या अल्लाह के हाथ में है) चाहे तो उन्हें क्षमा कर दे और चाहे तो उन्हें अज़ाब दे दे (और वे वास्तव में दण्ड पाने वाले के ही भागी हैं) क्योंकि वे अत्याचारी हैं ।१२९।

وَلِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ یَغْفِرُ لِمَنْ یَّشَآءُ وَیُعَذِّبُ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ۝ ع

और जो कुछ आसमानों तथा ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है । वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है अज़ाब देता है एवं अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है ।१३०। (रुकू १३/४)

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْکُلُوا الرِّبٰۤوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۪ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّکُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

हे मोमिनो ! तुम (अपने धन का) ब्याज मत[2] खाओ जो धन को अत्यधिक बढ़ाता है और अल्लाह के लिए संयम धारण करो ताकि तुम सफलता प्राप्त करो ।१३१।

1. इस में बताया गया है कि फ़रिश्तों का वर्णन केवल इसलिए है कि स्वप्न अथवा कश्फ़ में शुभ-समाचार प्राप्त होने से मानव के उत्साह को प्रेरणा मिलती है अन्यथा वास्तविक तात्पर्य तो यही था कि अल्लाह सहायता करेगा ।

2. ब्याज मूल धन को आसानी से बढ़ा देता है । अतः अल्लाह ने कहा कि तुम ब्याज न खाया करो, जो परिश्रम के विना धन को बढ़ाता चला जाता है ।

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ

और उस (नरक की) आग से डरो जो इन्कार करने वालों के लिए तय्यार की गई है।१३२।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ

और अल्लाह तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो ताकि तुम पर दया की जाए।१३३।

وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ

और अपने रब्ब की ओर से मिलने वाली क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर बढ़ो जिस का मूल्य आसमान और ज़मीन हैं और जो संयमियों के लिए तय्यार की गई है।१३४।

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ

जो संयमी धनवान एवं निर्धन होने की अवस्था में (अल्लाह की राह में) ख़र्च करते हैं और क्रोध का दमन करने वाले तथा लोगों को क्षमा करने वाले हैं, अल्लाह ऐसे उपकार करने वालों से प्रेम करता है।१३५।

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۠ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ڞ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰي مَا فَعَلُوْا وَھُمْ يَعْلَمُوْنَ

हां! (उन लोगों के लिए) जो कोई बुरा काम करने अथवा अपने-आप पर अत्याचार करने की अवस्था में अल्लाह को याद करते हैं एवं अपने अपराधों के लिए क्षमा मांगते रहते हैं और अल्लाह के सिवा दूसरा कौन अपराध क्षमा कर सकता है और जो कुछ वे कर चुके होते हैं उस पर जान-बूझ कर हठ नहीं करते।१३६।

اُولٰۗىِٕكَ جَزَاۗؤُھُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ

ये लोग ऐसे हैं कि इन का बदला इन के रब्ब की ओर से प्राप्त होने वाली क्षमा और ऐसे बाग़ होंगे, जिन के नीचे[1] नहरें बहती होंगी और ये उन में निवास करते चले जाएँगे तथा काम करने वालों का यह बदला क्या ही अच्छा है।१३७।

1. तात्पर्य यह है कि वे नहरें बाग़ों से सम्बन्धित होंगी और उन के बसने वाले उन नहरों के स्वामी होंगे।

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ○

तुम से पहले बहुत से विधि-विधान हो चुके हैं (यदि उन का परिणाम देखना हो) तो धरती में चल-फिर कर देखो कि (उन विधि-विधानों को) झुठलाने वालों का कैसा बुरा परिणाम निकला ।१३८।

هَٰذَا بَيَانٌ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِلْمُتَّقِينَ ○

यह (क़ुर्आन) लोगों के लिए खुली-खुली व्याख्या करने वाला और संयमियों के लिए हिदायत एवं उपदेश है ।१३९।

وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ○

और तुम कमज़ोरी न दिखाओ और न भय ही खाओ और यदि तुम मोमिन हो तो तुम ही ऊँचे रहोगे ।१४०।

إِنْ يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِثْلُهُ ۚ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ○

यदि तुम्हें कोई चोट पहुँचे तो उन लोगों को भी तो वैसी ही चोट पहुँच चुकी है और ये (ग़ल्बा के) दिन ऐसे हैं कि हम उन्हें लोगों में बारी-बारी से अदलते-बदलते रहते हैं ताकि वे शिक्षा ग्रहण करें और ताकि अल्लाह उन लोगों को प्रकट कर दे जो ईमान ला चुके हैं और ताकि तुम में से कुछ लोगों को शहीद (गवाह) बनाए और अल्लाह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता ।१४१।

وَلِيُمَحِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَقَ الْكَافِرِينَ ○

और ताकि जो मोमिन हैं, अल्लाह उन्हें पवित्र एवं शुद्ध कर दे तथा इन्कार करने वालों को विनष्ट कर दे ।१४२।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصَّابِرِينَ ○

क्या तुम ने समझ लिया है कि तुम स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे, हालाँकि अल्लाह ने तुम में से उन लोगों को अभी प्रकट नहीं किया जो मुजाहिद[1] हैं और न ही अभी उस ने उन लोगों को प्रकट किया है जो धैर्यवान हैं ।१४३।

1. मूल शब्द 'मुजाहिद' का अर्थ है—प्रयत्नशील, कर्मवीर, अल्लाह के मार्ग में प्रयत्न करने वाले।

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿١٤٣﴾

और तुम लोग तो इस मौत[1] की इच्छा उस के समय आने से पहले ही किया करते थे। सो अब तुम ने उसे ऐसी अवस्था में देख लिया है कि तुम पर उस के सारे गुण-दोष प्रकट हो गए हैं। (तो फिर अब कुछ लोग उस से क्यों मुँह मोड़ रहे हैं?) ।१४४। (रुकू १४/५)

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

और मुहम्मद केवल एक रसूल है। इस से पहले सब रसूल मृत्यु पा चुके हैं। अतः यदि उन का देहान्त हो जाए या हत्या कर दी जाए तो क्या तुम (उन से) मुँह मोड़ लोगे? तथा जो व्यक्ति अपना मुँह मोड़ लेगा तो वह अल्लाह को कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकता और अल्लाह धन्यवाद करने वालों को अवश्य ही प्रतिफल प्रदान करेगा ।१४५।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾

और अल्लाह की आज्ञा के बिना कोई जीव मर नहीं सकता। (क्योंकि अल्लाह ने) एक निश्चित समय वाला निर्णय (किया हुआ) है और जो मनुष्य सांसारिक बदला चाहे तो हम उसे उस में से देंगे और जो व्यक्ति पारलौकिक बदला लेना चाहता हो तो हम उसे उस में से देंगे तथा कृतज्ञ व्यक्तियों को अवश्य ही बदला देंगे ।१४६।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا

और बहुत से नबी ऐसे (हो चुके) हैं, जिन के साथ मिल कर उन के समुदाय के बहुत से लोगों ने युद्ध किया, फिर न तो वे उस (कष्ट) के कारण शिथिल हुए जो उन्हें अल्लाह की राह में पहुँची थी तथा न ही

1. अर्थात् जिहाद तथा वीरगति वाली मौत।

وَمَا اسْتَكَانُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ۝

कमजोरी दिखाई और न उन्होंने (शत्रुओं के सामने) निर्बलता ही दिखाई और अल्लाह धैर्यवानों से प्रेम करता है ।१४७।

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

और इस बात के सिवाय उन्हों ने कुछ भी न कहा कि हे हमारे रब्ब ! हमारे अपराध (त्रुटियाँ) तथा हमारे कर्मों में हमारी भूलें क्षमा कर एवं हमारे पैरों को जमा दे और इन्कार करने वालों के मुक़ाबिले में हमारी सहायता कर ।१४८।

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

इस पर अल्लाह ने उन्हें सांसारिक बदला तथा परलोक का सब से अच्छा बदला भी दिया और अल्लाह नेकी करने वालों से प्रेम रखता है ।१४९। (रुकू १५/६)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝

हे मोमिनो ! यदि तुम इन्कार करने वाले लोगों के आज्ञाकारी बन जाओगे तो वे तुम्हें उलटे पाँव लौटा देंगे, जिस के कारण तुम घाटा पाने वालों में से हो जाओगे ।१५०।

بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ۝

(तुम हानि उठाने वाले नहीं) अपितु अल्लाह तुम्हारा सहायक है और वह सब सहायकों से अच्छा सहायक है ।१५१।

سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَآ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۝

और जो लोग इन्कार करने वाले हैं, निस्सन्देह हम उन के दिलों में इस कारण धाक बिठा देंगे कि उन्हों ने उस चीज़ को अल्लाह का साझी ठहराया है जिस की (सच्चाई के लिए) उस ने कोई प्रमाण नहीं उतारा और उन का ठिकाना (नरक की) आग है तथा अत्याचारियों का ठिकाना क्या ही बुरा है ।१५२।

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٣﴾

और अल्लाह ने (उस समय) जब कि तुम उस के आदेश से उन्हें मार-मार कर उन का नाश कर रहे थे, उस ने तुम्हारे साथ अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर दी यहाँ तक कि तुम ने जब सुस्ती से काम लिया और अल्लाह के रसूल के आदेश के बारे में परस्पर झगड़ा किया और इस के बाद कि जो कुछ तुम्हें पसन्द था उस ने वह तुम्हें दिखा दिया फिर भी तुम ने अवज्ञा से काम लिया (तो उस ने अपनी सहायता रोक दी) तुम में कुछ लोग सांसारिक लोभ[1] के अभिलाषी थे तथा कुछ परलोक के इच्छुक थे, फिर उस ने तुम्हारी परीक्षा करने के लिए (उन शत्रुओं के आक्रमण से) तुम्हें बचा लिया और उस ने तुम्हें निश्चय ही क्षमा कर दिया है और अल्लाह मोमिनों पर बहुत कृपा करने वाला है। १५३।

اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰۤى اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِىْۤ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّاۢ بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَاۤ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥٤﴾

जब तुम भागे चले जा रहे थे और किसी की ओर मुड़ कर नहीं देखते थे, हालाँकि तुम्हारे सब से पीछे वाले दल में रसूल तुम्हें बुला रहा था, इस पर उस (अल्लाह) ने तुम्हें एक दुःख[2] के बदले में एक और दुःख दिया ताकि जो कुछ तुम से खोया गया तथा जो दुःख तुम्हें पहुँचा है उस पर तुम भयभीत न हो और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे जानता है।१५४।

1. इस से सांसारिक या युद्ध में लूट का धन अभीष्ट नहीं, अपितु उन लोगों का यह विचार अभीष्ट है जो यह समझते थे कि हम भी 'मुजाहिद' (योधा) समझे जाएँगे। बताया कि यह भी सांसारिक लोभ है।

2. इस से तात्पर्य यह है कि जो हार्दिक दुःख तुम्हें मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का आदेश भंग करके

(शेष पृष्ठ १५७ पर)

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۭ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۭ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ۭ يُخْفُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ۭ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ۭ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٥٤﴾

फिर उस ने इस दुःख के बाद तुम पर दिलों की शान्ति (की हालत) अर्थात् नींद उतारी जो तुम्हारे एक गिरोह पर छा रही थी और एक गिरोह ऐसा था जिन्हें उन की जानों ने चिन्तित[1] कर रखा था। वे अल्लाह के बारे में अज्ञानता (जाहिलिय्यत) के विचारों की तरह झूठे विचार कर रहे थे वह कह रहे थे कि क्या अनुशासन में हमारा भी कुछ अधिकार है ? तू कह दे कि हुकूमत सारी की सारी अल्लाह ही की है। वे (मुनाफ़िक़) अपने दिलों में वह कुछ छिपाते हैं जिसे वे तेरे सामने ज़ाहिर नहीं करते। वे कहते हैं कि यदि हमारा भी अनुशासन में कोई अधिकार होता तो हम यहाँ मारे न जाते। तू कह दे कि यदि तुम अपने घरों में भी रहते तो भी जिन लोगों पर युद्ध करना अनिवार्य किया गया है वे अपने (शहीद होकर) लेटने की जगहों की ओर अवश्य निकलते (ताकि अल्लाह अपना आदेश पूरा करे) और यह कि जो तुम्हारे सीनों में है अल्लाह उस की परीक्षा करे तथा जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे पवित्र एवं शुद्ध करे और अल्लाह सीनों की बातों को भली-भाँति जानता है।१५५।

(पृष्ठ १५६ का शेष)

'उहद' नामक पहाड़ी से हट जाने का था, उस का तुरन्त दण्ड पराजय के रूप में दे दिया ताकि अवज्ञा का दुःख हल्का प्रतीत हो कि अल्लाह ने उसी समय दण्ड दे कर क्षमा कर दिया।

1. अर्थात् अपने प्राणों की चिन्ता पड़ी हुई थी और इस्लाम के मान-मर्यादा की चिन्ता न थी।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ

जिस दिन दोनों सेनाएँ एक-दूसरे के आमने-सामने हुई थीं उस दिन तुम में से जिन्हों ने पीठ फेर ली थी उन्हें शैतान ने उन के कुछ कर्मों के कारण गिराना चाहा था और निश्चय ही अब अल्लाह उन्हें क्षमा कर चुका है। निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और सहनशील है।१५६। (रुकू १६/७)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا غُزًّى لَّوْ كَانُوا عِندَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَٰلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

हे मोमिनो ! तुम उन लोगों की तरह न बनो जो इन्कार करने वाले हो गए हैं और अपने भाइयों के बारे में जब वे देश में (जिहाद के लिए) निकलें अथवा युद्ध के लिए प्रस्थान करें तो कहते हैं कि यदि वे हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते। (यह इसलिए हुआ) कि अल्लाह उन के इस कथन को उन के दिलों में सन्ताप[1] (अफ़सोस) पैदा करने का कारण बना दे और अल्लाह ही जीवन देता है और मारता है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है।१५७।

وَلَئِن قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ

और यदि तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो निस्सन्देह अल्लाह की (ओर से तुम्हारी ओर आने वाली) क्षमा और दया उस से बहुत अच्छी होगी जो वे इकट्ठा करते हैं।१५८।

وَلَئِن مُّتُّمْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ

और यदि तुम मर जाओ या मारे जाओ तो निस्सन्देह तुम्हें अल्लाह ही की ओर इकट्ठा कर के ले जाया जाएगा।१५९।

1. इन्कार करने वालों के कथन का उद्देश्य यह है कि इस बात को सुन कर मुसलमान कायर बन जाएँगे; परन्तु जब मुसलमान उन की बातों से प्रभावित नहीं होंगे तो वे स्वयं निराश हो जाएँगे तथा उन की अपनी ही बात उन के दिलों में सन्ताप का कारण बन जाएगा।

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿۱۶۰﴾

और तू उस महान् दयालुता के कारण ही जो तुझे अल्लाह की ओर से मिली है, उन के लिए तू कोमल हृदय वाला है और यदि तू बुरे स्वभाव वाला और दिल का कठोर होता तो ये लोग तेरे पास से तितर-बितर हो जाते। अतः तू उन्हें क्षमा कर दे एवं उन के लिए (अल्लाह से) क्षमा माँग तथा हुकूमत के (कामों) में उन से परामर्श लिया कर। फिर जब तू (किसी बात का) इरादा कर ले तो अल्लाह पर भरोसा कर, निस्सन्देह अल्लाह भरोसा करने वालों से प्रेम करता है।१६०।

اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ بَعْدِهٖ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۶۱﴾

यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे तो तुम पर कोई भी ग़ालिब नहीं आ सकता और यदि वह तुम्हारी सहायता न करे तो उस के सिवा कौन है जो तुम्हारी सहायता करेगा ? और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा रखना चाहिए।१६१।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ۗ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۲﴾

और किसी नबी के लिए यह उचित नहीं कि वह ख़यानत करे। जो व्यक्ति ख़यानत करेगा वह अपनी ख़यानत से प्राप्त किए हुए (माल) को क़ियामत के दिन स्वयं ही प्रकट कर देगा, फिर प्रत्येक जान को जो कुछ उस ने कमाया होगा पूरा-पूरा दे दिया जाएगा और उन पर कुछ भी अत्याचार नहीं किया जाएगा।१६२।

اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۶۳﴾

क्या वह मनुष्य जो अल्लाह की इच्छा के अनुसार चलता है उस मनुष्य जैसा हो सकता है जो अल्लाह की ओर से उतरने वाले अज़ाब को ले कर लौटे? तथा उस का ठिकाना जहन्नम हो और यह स्थान (निवास की दृष्टि से) अत्यन्त ही बुरा है।१६३।

هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶۴﴾

अल्लाह के हाँ उन लोगों के अलग-अलग दर्जे हैं और वे जो कुछ करते हैं अल्लाह उसे देख रहा है।१६४।

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۶۵﴾

अल्लाह ने ईमान लाने वालों में से ही एक ऐसा रसूल भेज कर उन पर बहुत बड़ा उपकार किया है जो उन्हें उस की आयतें पढ़ कर सुनाता है तथा उन्हें पवित्र करता है और किताब तथा हिक्मत सिखाता है और निस्सन्देह वे इस से पहले खुली-खुली गुमराही में (पड़े हुए) थे।१६५।

اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ؕ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۶۶﴾

और क्या (यह सच नहीं है कि) जब भी तुम्हें कोई ऐसा कष्ट पहुँचा जिस से दो गुना कष्ट तुम स्वयं पहुँचा चुके थे, तो तुम ने कह दिया कि यह कष्ट कहाँ से (आ गया) है। तू उन्हें कह दे कि वह तुम्हारी अपनी ओर से ही आया है। निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक बात पर पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है।१६६।

وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۶۷﴾

और जिस दिन दोनों दल एक-दूसरे के आमने-सामने हुए थे, उस दिन जो दुःख तुम्हें पहुँचा था, अल्लाह की आज्ञा से (ही पहुँचा) था और इसलिए (पहुँचा था) कि वह मोमिनों को जाहिर कर दे।१६७।

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۖ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ۗ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنٰكُمْ ۗ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿١٦٨﴾

और उन मुनाफ़िक़ों को भी ज़ाहिर कर दे जिन्हें कहा गया था कि आओ, अल्लाह की राह में युद्ध करो एवं (शत्रु के आक्रमण) को रोको। (जिस पर) उन्हों ने कहा कि यदि हम युद्ध करना जानते तो अवश्य तुम्हारे साथ चलते। वे लोग उस दिन ईमान की अपेक्षा इन्कार के अधिक निकट थे। वे अपने मुँह से वह कुछ कहते थे जो उन के दिलों में नहीं था और जो कुछ वे छिपाते हैं अल्लाह उस को सब से ज्यादा जानता है।१६८।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ۗ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٦٩﴾

ये वे लोग हैं जो स्वयं तो पीछे बैठे रहे और अपने भाइयों के बारे में यह कहा कि यदि वे हमारी बात मान लेते तो मारे न जाते। तू उन्हें कह दे कि यदि तुम सच्चे हो तो अब अपने आप से ही मौत को हटा (कर दिखा) दो।१६९।

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ۗ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿١٧٠﴾

जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए हैं तुम उन्हें कदापि मुर्दा न समझो। वे तो अपने रब्ब के पास जीवित हैं और उन्हें जीविका प्रदान की जाती है।१७०।

فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١٧١﴾

वे उस पर बहुत प्रसन्न हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपनी कृपा से प्रदान किया है और उन लोगों के विषय में भी प्रसन्न हैं जो उन के पीछे हैं और अभी उन से मिले नहीं हैं। उन्हें न कोई भय होगा तथा न कोई चिन्ता ही होगी।१७१।

يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٢﴾

(हाँ) वे उस महान उपकार और बड़ी निअमत पर प्रसन्न हो रहे हैं जो उन्हें अल्लाह की ओर से मिली है तथा इस बात पर भी प्रसन्न हैं कि अल्लाह मोमिनों का प्रतिफल नष्ट नहीं करता ।१७२। (रुकू १७/८)

اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٣﴾

जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल का आदेश अपने घायल हो चुकने के बाद भी स्वीकार किया और जिन्हों ने भली-भाँति अपने कर्त्तव्य का पालन किया एवं संयम धारण किया, इन सब के लिए बहुत बड़ा प्रतिफल है ।१७३।

اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿١٧٤﴾

ये वे लोग हैं जिन्हें शत्रुओं ने कहा था कि लोगों[1] ने तुम्हारे विरुद्ध सेना एकत्रित की है । अतः तुम उन से डरो, तो इस बात ने उन के ईमान को और भी बढ़ाया तथा उन्हों ने कहा कि हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है और वह क्या ही अच्छा कार्य-साधक है ।१७४।

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿١٧٥﴾

सो वे अल्लाह की ओर से किसी हानि के बिना बड़ी निअमत तथा महा-कृपा पा कर लौटे और अल्लाह की इच्छा के अनुकूल चल पड़े और अल्लाह बहुत कृपा करने वाला है ।१७५।

اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۖ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٦﴾

यह (भय दिलाने वाला) केवल एक शैतान है । वह अपने मित्रों को डराता है । यदि तुम मोमिन हो तो उन (शैतानों) से न डरो तथा मुझ अल्लाह से डरो ।१७६।

1. मूल शब्द 'अन्नास' का अर्थ साधारण लोग है, परन्तु यहाँ इस से तात्पर्य हैं ऐसे मनुष्य जो मुसलमानों के शत्रु थे ।

और जो लोग इन्कार में जल्दी-जल्दी आगे बढ़ रहे हैं, वे तुझे दुःख में न डालें। वे अल्लाह का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। अल्लाह चाहता है कि परलोक में उन के लिए कोई हिस्सा न रखे तथा उन के लिए बड़ा अज़ाब (निश्चित) है।१७७।

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي الْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٦﴾

जिन लोगों ने ईमान को छोड़ कर इन्कार को अपना लिया है वे अल्लाह को तो कदापि कोई हानि नहीं पहुंचा सकते और उन्हें पीड़ादायक अज़ाब मिलेगा।१७८।

إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٧﴾

और जो लोग इन्कार करने वाले हैं वे कहीं यह न समझ लें कि हमारा उन्हें ढील देना उन के लिए लाभदायक है। हम जो उन्हें ढील देते हैं, इस का परिणाम केवल (उन का) पापों में बढ़ जाना होगा तथा उन के लिए अपमान-जनक अज़ाब निश्चित है।१७९।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ خَيْرٌ لِأَنْفُسِهِمْ إِنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ لِيَزْدَادُوا إِثْمًا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٧٨﴾

यह सम्भव ही न था कि जिस हालत में तुम लोग हो अल्लाह उसी हालत में (तुम जैसे) मोमिनों को छोड़ देता, जब तक कि वह अपवित्र को पवित्र से अलग-अलग न कर देता और अल्लाह तुम्हें ग़ैब (परोक्ष) की बातों से कदापि अवगत नहीं कर सकता था, हाँ! अल्लाह अपने रसूलों में से जिसे चाहता है चुन लेता है। अतः तुम अल्लाह पर तथा उस के रसूलों पर ईमान लाओ और यदि तुम ईमान लाओगे तथा संयम धारण करोगे तो तुम्हें महान प्रतिफल प्राप्त होगा।१८०।

مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مِنْ رُسُلِهِ مَنْ يَشَاءُ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٨٠﴾

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٨١﴾

और जो लोग उस धन के देने में कंजूसी से काम लेते हैं, जो अल्लाह ने अपनी कृपा से उन्हें प्रदान किया है, वे उसे अपने लिए कदापि अच्छा न समझें, अपितु वह (कंजूसी) उन के लिए बुरी है। जिस धन में वे कंजूसी से काम लेते हैं निस्सन्देह वह क़ियामत के दिन उन (लोगों के गले) का हार बनाया जाएगा और उन की गर्दनों में डाला जाएगा तथा आसमानों और ज़मीन की मीरास (स्वामित्व) अल्लाह ही के लिए है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे जानता है।१८१। (रुकू १८/९)

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨٢﴾

जिन लोगों ने कहा है कि अल्लाह[1] तो निर्धन है और हम धनवान हैं। निस्सन्देह अल्लाह ने उन की इस बात को सुन लिया है। निश्चय ही हम उन की इस बात को तथा उन का अकारण ही नबियों की हत्या करने के पीछे पड़े रहने को लिख रखेंगे एवं हम उन्हें कहेंगे कि जलन वाला अज़ाब चखो।१८२।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٣﴾

यह (अज़ाब) जो कुछ तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा है उस के कारण होगा तथा सच बात यह है कि अल्लाह अपने भक्तों पर अत्याचार नहीं करता।१८३।

---

1. मुसलमानों को दान देने के लिए प्रेरणा देने वाली बातों को सुन कर यहूदी कहते थे कि पता चला कि हम धनी हैं और अल्लाह निर्धन। इस का उत्तर दिया है कि वह दिन दूर नहीं जब कि तुम्हारे धन आदि तुम से छिने जाएंगे। फिर इतिहास से सिद्ध है कि यहूदी मदीना और उस के आस-पास के सारे धन-दौलत छोड़ कर भाग गए थे।

الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَا أَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُولٍ
حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ ۗ قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ
رُسُلٌ مِّن قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالَّذِي قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ
إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝

जिन लोगों ने कहा है कि निस्सन्देह अल्लाह ने हमें यह ताकीदी आदेश दिया है कि हम (उस समय तक) किसी रसूल की बात स्वीकार न करें जब तक कि वह ऐसी क़ुर्बानी (बलि का आदेश) न लाए, जिसे आग खा[1] जाती हो। तू उन से कह दे कि तुम्हारे पास मुझ से पहले कई रसूल खुले-खुले निशान ला चुके हैं और वह (वस्तु) भी जो तुम ने बताई है। अतः यदि तुम सच्चे हो तो बताओ कि तुम उन की हत्या करने के पीछे क्यों पड़े थे ?।१८४।

فَإِن كَذَّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ جَاءُوا
بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ۝

फिर यदि वे तुझे झुठलाएँ (तो क्या हुआ) तुझ से पहले भी बहुत से रसूलों को झुठलाया जा चुका है, जो खुले चमत्कार और लिखी हुई किताबें तथा रोशन शरीअत लाए थे।१८५।

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ فَمَن زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ
فَقَدْ فَازَ ۗ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ۝

प्रत्येक जान मौत का स्वाद चखने वाली है और तुम्हें केवल क़ियामत के दिन ही तुम्हारे (कर्मों का) पूरा-पूरा[2] प्रतिफल दिया जाएगा। अतः जिसे (नरक की) आग से दूर रखा जाए तथा उसे स्वर्ग में दाख़िल किया जाए,वह सफल हो गया और सांसारिक-जीवन (का सामान) केवल धोखा देने वाला अस्थायी सामान है।१८६।

1. इस से यह तात्पर्य नहीं है कि आग कहीं से आ कर उसे भस्म कर देती थी, बल्कि इस बलि देने से यह आशय होता था कि वह आग में जलाई जाती थी और उसे 'दाह्य बलिदान' कहा जाता था। ऐसे बलिदान की प्रथा हिन्दुओं, इरानियों तथा यहूदियों में प्रचलित थी।

2. यद्यपि संसार में भी प्रतिफल मिलता है, परन्तु वह पूरा-पूरा प्रतिफल नहीं होता। मोमिनों की शान के अनुसार **प्रतिफल** जो अल्लाह की दयालुता का खुला-खुला प्रमाण होता है, वह क़ियामत के दिन ही मिल सकता है।

لَتُبْلَوُنَّ فِيٓ أَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوٓا أَذًى كَثِيرًا ۚ وَإِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٨٦﴾

तुम्हारे धन-दौलत और तुम्हारी जानों के बारे में तुम्हारी अवश्य परीक्षा की जाएगी तथा तुम अवश्य उन लोगों से बड़ी दुःख देने वाली बातें सुनोगे, जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई थी और उन लोगों से भी जो मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) हैं और यदि तुम धैर्य करोगे और संयम धारण करोगे तो निस्सन्देह यह बड़ी हिम्मत (साहस) के कामों में से है।१८७।

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ فَنَبَذُوهُ وَرَآءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِۦ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُونَ ﴿١٨٧﴾

और (उस समय को याद करो) जब अल्लाह ने उन लोगों से बचन लिया था जिन्हें किताब दी गई है कि तुम अवश्य लोगों के पास इस (किताब) को ज़ाहिर करोगे तथा उसे छिपाओगे नहीं, परन्तु इस के होते हुए भी उन्हों ने उसे अपनी पीठों के पीछे फेंक दिया और इसे छोड़ कर थोड़े[1] से दाम ले लिए। जो कुछ वे लेते हैं, वह क्या ही बुरा है।१८८।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَآ أَتَوا وَّيُحِبُّونَ أَن يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُم بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨٨﴾

तू उन लोगों को जो अपने किए पर इतराते हैं और जो काम उन्होंने नहीं किया उस के बारे में भी चाहते हैं कि उन की सराहना की जाए। तू ऐसा कदापि न समझ कि वे अज़ाब से सुरक्षित हैं। वे पकड़े जाएँगे और उन के लिए पीड़ा-दायक अज़ाब निश्चित है।१८९।

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَٰوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٨٩﴾

और आसमानों तथा ज़मीन का राज्य अल्लाह ही का है एवं अल्लाह हर-एक बात के करने पर पूर्ण रूप से सामर्थ्य रखता है।१९०। (रुकू १९/१०)

1. इस आयत की व्याख्या के लिए देखिए सूरः बक़रः आयत नं० 175।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿١٩١﴾

निस्सन्देह आसमानों तथा ज़मीन की सृष्टि में और रात-दिन के आगे-पीछे आने में बुद्धिमानों के लिए अनेक निशान हैं।१९१।

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُودًا وَّعَلٰى جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩٢﴾

(वे बुद्धिमान) जो खड़े और बैठे तथा अपने पहलुओं पर लेटे अल्लाह को याद करते रहते हैं और आसमानों तथा ज़मीन की सृष्टि के बारे में सोच-विचार से काम लेते हैं (तथा कहते हैं कि) हे हमारे रब्ब ! तूने यह (संसार) व्यर्थ पैदा नहीं किया। तू (ऐसे निरुद्देश्य काम करने से) पवित्र है। अतः तू हमें (नरक की) आग के अज़ाब से बचा (और हमारे जीवन को भी निरुद्देश्य बनने से बचा)।१९२।

رَبَّنَآ إِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهٗ وَمَا لِلظّٰلِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿١٩٣﴾

हे हमारे रब्ब ! जिसे तू (नरक की) आग में डालेगा, निस्सन्देह उसे तूने अपमानित कर दिया तथा अत्याचारियों का कोई भी सहायक नहीं होगा। १९३।

رَبَّنَآ إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ اٰمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ﴿١٩٤﴾

हे हमारे रब्ब ! निस्सन्देह हम ने एक ऐसे पुकारने वाले की आवाज़ सुनी है जो ईमान लाने की ओर आमन्त्रित करता है कि अपने रब्ब पर ईमान लाओ। अतः हम ईमान ले आए। इसलिए हे हमारे रब्ब ! तू हमारे अपराध क्षमा कर और हमारी बुराइयाँ मिटा दे और हमें सदाचारी व्यक्तियों के साथ (मिला कर) मौत दे।१९४।

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿١٩٥﴾

और हे हमारे रब्ब ! हमें वह कुछ दे जिस की तूने अपने रसूलों के द्वारा हम से प्रतिज्ञा की है तथा क़ियामत के दिन हमें अपमानित न करना। तू अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध कदापि नहीं करता।१९५।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَآ أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنكُم مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ ۚ بَعْضُكُم مِّن بَعْضٍ ۚ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّـَٔاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ ثَوَابًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عِندَهُۥ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٦﴾

सो उन के रब्ब ने (यह कहते हुए) उन की (प्रार्थना) सुन ली कि मैं तुम में से किसी कर्त्ता के कर्म को नष्ट नहीं करूँगा, भले ही वह पुरुष हो या स्त्री। तुम एक-दूसरे से (सम्बन्ध रखने वाले) हो। अतः जिन्हों ने हिजरत (स्वदेश-त्याग) की और उन्हें उन के घरों से निकाला गया तथा मेरी राह में दुःख दिया गया और उन्हों ने युद्ध किया और मारे गए, निस्सन्देह मैं उन के पापों के प्रभाव को उन के शरीर से मिटा दूंगा और निस्सन्देह मैं उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा, जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। (यह सब कुछ) अल्लाह की ओर से प्रतिफल के रूप में मिलेगा और अल्लाह तो वह है कि जिस के पास सब से उत्तम प्रतिफल है।१९६।

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَٰدِ ﴿١٩٧﴾

जो लोग इन्कार करने वाले हैं उन का देश में स्वतन्त्रता से घूमना-फिरना तुझे कदापि भ्रम में न डाले।१९७।

مَتَٰعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٨﴾

यह थोड़ा सा अस्थाई लाभ है जिस के पश्चात् उन का ठिकाना नरक होगा और वह ठिकाना बहुत ही बुरा है।१९८।

لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّٰتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ ۗ وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّلْأَبْرَارِ ﴿١٩٩﴾

किन्तु जिन लोगों ने अपने रब्ब के लिए संयम धारण किया है उन के लिए ऐसे बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं। वे उन में निवास करते चले जाएँगे। यह अल्लाह की ओर से आतिथ्य (मेहमानी) के रूप में होगा तथा जो कुछ अल्लाह के पास है वह भद्र-पुरुषों के लिए और भी अच्छा है।१९९।

وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

और निस्सन्देह अहले किताब में से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर तथा जो कुछ तुम पर एवं जो कुछ उन पर उतारा गया था उस पर ईमान रखते हैं एवं साथ ही वे अल्लाह के सामने विनम्रता दिखाने वाले हैं तथा अल्लाह की आयतों के बदले में थोड़ा[1] मूल्य नहीं लेते। ये ऐसे लोग हैं कि जिन के कर्मों का प्रतिफल उन के रब्ब के पास सुरक्षित है। निस्सन्देह अल्लाह शीघ्र ही लेखा लेने वाला है।२००।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ ع

हे ईमान लाने वालो ! धैर्य से काम लो और (शत्रुओं से बढ़ कर) धैर्य का प्रदर्शन करो और सीमाओं का निरीक्षण करते रहो तथा अल्लाह के लिए संयम धारण करो ताकि तुम सफल हो जाओ।२०१। (रुकू २०/११)

1. वे धर्म के बदले में सांसारिक तुच्छ धन स्वीकार नहीं करते।
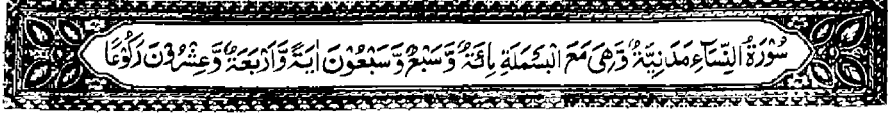
सूरः अल्-निसा

[यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की एक सौ सतहत्तर आयतें तथा चौबीस रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम लेकर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ②

हे लोगो! अपने रब्ब के लिए संयम धारण करो जिस ने तुम्हें एक ही जान से पैदा किया और उस की जिन्स (जाति) से ही उस का जोड़ा पैदा किया तथा उन दोनों में से बहुत बड़ी संख्या में स्त्री-पुरुष (पैदा कर के) संसार में फैलाए और अल्लाह के लिए (इसलिए भी) संयम धारण करो कि तुम इस के द्वारा[1] परस्पर प्रश्न करते हो एवं विशेष कर निकट सम्बन्धियों (की समस्याओं) में संयम से काम लो। निस्सन्देह अल्लाह तुम्हारा निरीक्षक है।२।

وَاٰتُوا الْيَتٰمٰۤى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَهُمْ اِلٰۤى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ③

और अनाथों को उन का धन दे दो तथा पवित्र (धन) के बदले में अपवित्र (धन) न लो एवं उन का धन अपने धन में मिलाकर हड़प न करो, निस्सन्देह यह महापाप है।३।

1. अर्थात् तुम अल्लाह के नाम का वास्ता दे कर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की इच्छा प्रकट करते हो।

وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِي الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ﴿٤﴾

और यदि तुम्हें यह डर हो कि तुम अनाथों के बारे में न्याय न कर सकोगे तो जो ढंग तुम्हें पसन्द हो (अपना लो अर्थात् अनाथों को छोड़ कर) दूसरी स्त्रियों में से दो-दो से और तीन-तीन से और चार-चार से विवाह कर लो, किन्तु यदि तुम्हें डर हो कि तुम न्याय[1] नहीं कर सकोगे तो एक ही स्त्री से अथवा उन[2] (दासियों) से जो तुम्हारे हाथ में हैं विवाह करो। (यह उपाय इस बात के) अधिक निकट है कि तुम अत्याचारी[3] न बन जाओ।४।

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـًٔا مَّرِيْٓـًٔا ﴿٥﴾

और पत्नियों को उन के महर हार्दिक प्रसन्नता से दे दो, फिर यदि वे अपनी ख़ुशी से उस में से कुछ लौटा दें तो तुम यह जानते हुए उसे खाओ कि वह तुम्हारे लिए आनन्द-दायक तथा परिणाम की दृष्टि से अच्छा है।५।

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِيْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٦﴾

और समझ न रखने वालों को अपना वह धन न दो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए सहारा बनाया है तथा उसी में से उन्हें खिलाओ और उन्हें पहनाओ तथा उन्हें उचित एवं अच्छी बातें कहो।६।

---

1. अनाथ स्त्रियों में से एक से अधिक के साथ विवाह करना श्रेष्ठकर नहीं, क्योंकि अन्याय होने का डर रहता है। हाँ! उन के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों में से दो-दो, तीन-तीन, चार-चार से विवाह कर सकते हो, क्योंकि उन के संरक्षक उन के हक़ की रक्षा कर सकते हैं।

2. ऐसी स्त्रियाँ जो युद्ध में सम्मिलित हों अथवा समर-भूमि में सेना को युद्ध करने की प्रेरणा दें और फिर बन्दी बना ली जाएँ, उन को दासी कहा जाता है।

3. इस ढंग से व्यवहार कर के तुम अत्याचार तथा पाप से बच सकते हो।

وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰىٓ اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ۗ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝

और अनाथों की परीक्षा उस समय तक करते रहो कि वे विवाह की आयु को पहुँच जाएँ, तत्पश्चात् यदि तुम उन में समझ-बूझ देखो तो उन के धन उन्हें वापस लौटा दो तथा उन के जवान हो जाने के डर से उन के धन अनुचित रूप से और उतावले हो कर न खा जाओ और जो कोई धनवान हो तो उस के लिए उचित है कि वह (इस धन के प्रयोग से) पूर्णतया बचा रहे, किन्तु जो निर्धन हो वह उचित ढंग से (इस धन में से) खा सकता है, फिर जब तुम उन्हें उन के धन लौटाओ तो उन (अनाथों) के सामने गवाह बना लो एवं लेखा लेने के लिए अल्लाह अकेला ही पर्याप्त है।७।

لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۠ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ۗ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝

पुरुषों का भी और स्त्रियों का भी उस माल में एक भाग है जो उन के माता-पिता और उन के निकट-सम्बन्धी छोड़ कर मर जाएँ, चाहे इस (पैतृक-सम्पत्ति) में से थोड़ा बचा हो अथवा बहुत। यह एक निश्चित भाग है जो (अल्लाह की ओर से) नियुक्त किया गया है।८।

وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝

और जब (पैतृक सम्पत्ति के) बटवारे के समय दूसरे नातेदार तथा अनाथ एवं दरिद्र लोग भी आ जाएँ तो इस में से उन्हें भी दे दो और उन्हें उचित एवं अच्छी बातें कहो।९।

وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا
خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝

और जो लोग इस बात से डरते हों कि यदि वे अपने पीछे कमज़ोर संतान छोड़ गए तो उस का क्या होगा ? तो उन्हें दूसरे अनाथों के विषय में भी अल्लाह से डरना चाहिए और उचित होगा कि वे स्पष्ट और सीधी बात कहें ।१०।

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ
فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۚ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ۝ ع

जो लोग अनाथों का धन अत्याचार से हड़प करते हैं, निस्सन्देह वे अपने पेटों में केवल आग भरते हैं और निस्सन्देह वे भड़कने वाली आग में झोंके जाएँगे ।११। (रुकू १/१२)

يُوصِيكُمُ اللّٰهُ فِي أَوْلَادِكُمْ ۖ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنْثَيَيْنِ ۚ
فَإِنْ كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۖ
وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ
وَاحِدٍ مِنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ ۚ
فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ
فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ
يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ
أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ۚ فَرِيضَةً مِنَ اللّٰهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ
عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

अल्लाह तुम्हें तुम्हारी संतान के विषय में आदेश देता है कि एक पुरुष का भाग दो स्त्रियों के भाग के बराबर है और यदि संतान में केवल दो से अधिक स्त्रियाँ ही हों तो उन के लिए जो कुछ मरने वाले ने छोड़ा है उसका दो तिहाई भाग नियुक्त है और यदि वह एक ही स्त्री हो तो उस के लिए आधा भाग है और यदि उस (मरने वाले) की संतान हो तो उस के माता-पिता में से हर-एक के लिए उस के छोड़े हुए माल का छटा भाग निश्चित है और यदि उस की कोई संतान न हो और माता-पिता ही उस के वारिस हों तो उस की माता का तीसरा भाग निश्चित है, लेकिन यदि उस के भाई-बहन हों तो माता का छटा भाग निश्चित है। ये सारे भाग उस की वसीय्यत और उस का ऋण चुकाने के बाद दिए जाएँगे। तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पूर्वजों तथा तुम्हारे पुत्रों में से कौन तुम्हारे लिए अधिक लाभदायक है। यह अल्लाह की ओर से ज़रूरी ठहराया गया है। निस्सन्देह अल्लाह बहुत जानने वाला और हिक्मत वाला है ।१२।

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ
وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ
مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۗ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ
مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ
فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ
بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۗ وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ
وَّلَهٗٓ اَخٌ اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَاِنْ
كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِى الثُّلُثِ مِنْۢ
بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً
مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ۝١٢

और तुम्हारी पत्नियाँ मरने के पश्चात् जो कुछ छोड़ जाएं, यदि उन की संतान न हो तो उन के छोड़े हुए माल का आधा भाग तुम्हारा है और यदि उन की संतान हो तो जो कुछ उन्हों ने छोड़ा है उस में से चौथा भाग तुम्हारा है। (ये भाग उन की) वसीय्यत तथा ऋण चुकाने के बाद (बचे हुए धन में से) होंगे। यदि तुम्हारी संतान न हो तो जो कुछ तुम छोड़ जाओ उस में से चौथा भाग उन (पत्नियों) का है और यदि तुम्हारी संतान हो तो जो कुछ तुम छोड़ जाओ उस में से आठवाँ भाग उन (पत्नियों) का है। (ये भाग) तुम्हारी वसीय्यत और ऋण चुकाने के बाद होंगे तथा जिस पुरुष अथवा स्त्री के छोड़े हुए माल का बटवारा किया जाता है, यदि उस का पिता और कोई संतान न हो और उस का एक भाई या एक बहन[1] हो तो उन में से प्रत्येक का छटा भाग होगा और यदि वे इस से अधिक हों तो वे सब तीसरे भाग में सम्मिलित होंगे। ये भाग मरने वाले की वसीय्यत और ऋण चुकाने के बाद बचे हुए धन में से होंगे। इस बटवारे में किसी को हानि पहुँचाने का उद्देश्य नहीं होना चाहिए और अल्लाह की ओर से तुम्हें यह आदेश दिया जाता है और अल्लाह भली-भाँति जानने वाला और सहनशील है।१२।

---

1. मूल शब्द 'कलाला' के जिन भाई-बहनों के उत्तराधिकारी होने का यहाँ वर्णन किया गया है वे ऐसे भाई-बहन हैं जो उस की माता की ओर से हों।

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٤﴾

यह अल्लाह की (निश्चित की हुई) सीमाएँ हैं और जो लोग अल्लाह तथा उस के रसूल के आज्ञाकारी हों उन्हें वह ऐसे बाग़ों में प्रविष्ट करेगा जिन में नहरें बहती होंगी तथा वे उन में निवास करते चले जाएँगे और यही महान सफलता है ।१४।

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۠ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٥﴾ ع ٢ / ١٣

और जो व्यक्ति अल्लाह तथा उस के रसूल की अवज्ञा करे और उस की सीमाओं का उल्लंघन करे वह उसे (नरक की) आग में झोंक देगा, जिस में वह दीर्घ काल[1] तक रहता चला जाएगा और उस के लिए अपमान-जनक अज़ाब निश्चित है ।१५। (रुकू २/१३)

وَالّٰتِيْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَاۗىِٕكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰىهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿١٦﴾

और तुम्हारी स्त्रियों में से जो भी किसी नापसंद (अश्लील[2]) काम के निकट जाएँ उन के सम्बन्ध में उन पर अपने (नातेदारों अथवा पड़ोसियों) में से चार गवाह लाओ, सो यदि वे (चार गवाह) गवाही दे दें तो तुम उन्हें अपने घरों में उस समय तक रोक रखो कि उन्हें मौत आ जाए या अल्लाह उन के लिए कोई दूसरा रास्ता निकाल दे ।१६।

---

1. स्वर्ग के लिए भी 'ख़ुलूद' (सदैव) शब्द प्रयुक्त हुआ है अर्थात् यह कि स्वर्ग में रहने वाले लोग लम्बे समय तक उस में निवास करेंगे और नरक के लिए भी यही 'ख़ुलूद' शब्द प्रयुक्त हुआ है, किन्तु पवित्र क़ुर्आन में दूसरे स्थानों पर इस का स्पष्टीकरण हुआ है कि स्वर्ग-निवासी उस में निरन्तर निवास करेंगे, परन्तु नरक के अज़ाब की अवधि कुछ समय के बाद समाप्त हो जाएगी ।

2. इस आयत नं० 16 तथा अगली आयत नं० 17 में मारूफ़ (विशेष अरुचिकर) कामों का दण्ड निश्चित किया गया है । स्त्री के लिए यह कि कुटुम्ब के चार गवाहों की गवाही पर उसे घर से मनमाने ढंग से निकलने से रोका जाए तथा पुरुषों के लिए यह है कि सभ्यता-सम्बन्धी प्रतिबन्ध उस पर लगाए जाएँ । इस में कदापि किसी काम-वासना सम्बन्धी अपराध का वर्णन नहीं है, क्योंकि सूरः नूर में ऐसे अपराधों का वर्णन भी किया गया है, परन्तु सूरः नूर का वर्णित दण्ड और इस आयत में वर्णित दण्ड परस्पर विभिन्न हैं । अतः प्रतीत हुआ कि इस आयत में जिन बातों का दण्ड वर्णित है, वह बुरे काम तथा दुराचार की बातें हैं ।

وَالَّذٰنِ يَأْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ۝

और तुम में से जो दो पुरुष अश्लील[1] काम (झगड़ा-फ़साद) के निकट जाएँ तो तुम उन्हें दुःख पहुँचाओ, फिर यदि वे दोनों पश्चाताप कर लें एवं (अपना) सुधार कर लें तो उन का पीछा छोड़ दो। निस्सन्देह अल्लाह तौबः को बहुत ही स्वीकार करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।१७।

اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝

अल्लाह पर केवल उन ही लोगों की तौबः स्वीकार करना ज़रूरी है जो नासमझी से बुरा काम कर बैठे हों, फिर वे शीघ्र ही तौबः कर लें और ये लोग ऐसे हैं कि अल्लाह उन पर दया करता है तथा अल्लाह बहुत जानने वाला एवं हिक्मत वाला है।१८।

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۗ اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝

और तौबः का स्वीकार किया जाना उन लोगों के लिए नहीं है जो पाप करते ही चले जाते हैं यहाँ तक कि जब उन में से किसी के सामने मौत की घड़ी आ जाती है तो कहता है कि निस्सन्देह अब मैं ने तौबः कर ली है तथा न उन लोगों के लिए है जो इन्कार करने की हालत में मर जाते हैं। ये लोग ऐसे हैं कि हम ने उन के लिए पीड़ा-दायक अज़ाब तय्यार कर रखा है।१९।

---

1. इस आयत का अभिप्राय यह है कि यदि दो पुरुष अरुचिकर बात करें और प्रसंग से व्यक्त है कि इस स्थान पर तात्पर्य झगड़ा एवं उपद्रव है न कि व्यभिचार।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ؕ وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْئًا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ۝

हे ईमान वालो ! तुम्हारे लिए यह जायज़ नहीं कि तुम ज़बरदस्ती स्त्रियों के वारिस (उत्तराधिकारी) बन जाओ और तुम उन्हें इस उद्देश्य से न सताओ कि जो कुछ तुम ने उन्हें दिया है, उस में से कुछ छीन लो[1]। हाँ ! यदि वे खुले रूप में बुरा काम करने वाली हों (तो उस के विषय में आदेश पहले आ चुका है) तथा उन से अच्छा व्यवहार करो और यदि वे तुम्हें पसंद न हों तो (याद रखो कि यह) सम्भव है कि एक वस्तु तुम्हें पसंद न हो, परन्तु अल्लाह उस में बहुत सी भलाई का सामान पैदा कर दे।२०।

وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْئًا ؕ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ۝

और यदि तुम एक पत्नी के बदले दूसरी पत्नी बदलना चाहो तथा तुम उस में से किसी एक को माल का एक ढेर दे चुके हो तो भी उस धन में से कुछ भी वापस न लो। क्या तुम उस पर झूठा आरोप लगा कर और खुले-खुले पाप द्वारा उस धन को लोगे ?।२१।

وَكَيْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝

और तुम किस प्रकार उस धन को वापस ले सकते हो जब कि तुम परस्पर मिल चुके हो और वे पत्नियाँ तुम से एक दृढ़ प्रण ले चुकी हैं।२२।

---

1. अर्थात् पहली आयत के आदेशानुसार उन के बाहर निकलने का प्रतिबन्ध लगा सकते हो, परन्तु धन का अपहरण करने के लिए ऐसा न करो और यह तात्पर्य नहीं कि यदि वे व्यभिचार-ग्रसित हों तो उन का धन छीन लो।

وَلَا تَنْكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُمْ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿٢٢﴾

और तुम उन स्त्रियों में से किसी के साथ विवाह मत करो, जिन से तुम्हारे बाप-दादे विवाह कर चुके हों, किन्तु जो पहले हो चुका सो हो चुका। निस्सन्देह यह अपवित्र तथा रोशजनक काम था और वह अत्यन्त बुरी रीति थी।२३। (रुकू ३/१४)

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ وَبَنَاتُ الْأُخْتِ وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ مِنَ الرَّضَاعَةِ وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ وَرَبَائِبُكُمُ اللَّاتِي فِي حُجُورِكُمْ مِنْ نِسَائِكُمُ اللَّاتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَإِنْ لَمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ وَأَنْ تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٢٣﴾

तुम पर हराम (अवैध) की गई हैं तुम्हारी माताएँ, तुम्हारी लड़कियाँ, तुम्हारी बहनें, तुम्हारी फूफियाँ, तुम्हारी मौसियाँ, तुम्हारी भतीजियाँ, तुम्हारी भाँजियाँ, तुम्हारी दूध पिलाने वाली माएँ जिन्हों ने तुम्हें दूध पिलाया हो, तुम्हारी दूध में शरीक बहनें, तुम्हारी सासें तथा तुम्हारी सौतेली पुत्रियाँ जो तुम्हारी उन पत्नियों से हों, जिन से तुम सम्भोग कर चुके हो और उन का तुम्हारे घरों में पालन-पोषण होता रहा हो, किन्तु यदि तुम ने उन (की माताओं) से सम्भोग न किया हो तो तुम्हें (उन की लड़कियों से विवाह करने में) कोई पाप नहीं और (इसी प्रकार) तुम्हारे उन पुत्रों की पत्नियाँ जो तुम्हारे वीर्य्य से हों (तुम्हारे लिए हराम हैं) और यह भी कि तुम दो बहनों को (पत्नी के रूप में) एक समय में इकट्ठा करो। हाँ ! जो बीत चुका (सो बीत चुका)। निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।२४।

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٢٥﴾

और (पहले से) विवाहित स्त्रियाँ भी (तुम्हारे लिए हराम हैं) सिवाय उन स्त्रियों के जो (लौंडी के रूप में क़ैद हो कर) तुम्हारे अधिकार[1] में आ जाएँ। अल्लाह का यह आदेश तुम्हारे लिए अनिवार्य (फ़र्ज़) है और जो इन (ऊपर बताई गई स्त्रियों) के अतिरिक्त हों, वे (निकाह के बाद) तुम्हारे लिए हलाल (वैध) हैं। (इस प्रकार) कि तुम अपने धन (महर) से उन्हें प्राप्त करो, शर्त यह है कि तुम विवाह करने वाले हो, व्यभिचार[2] करने वाले न हो। फिर यह शर्त भी है कि यदि तुम ने उन से लाभ उठाया हो तो तुम उन्हें उन के निर्धारित महर दे दो तथा महर निर्धारित हो चुकने के बाद जिस (कमी-बेशी) पर तुम आपस में समझौता कर लो तो उस के बारे में तुम पर कोई पाप नहीं होगा। निस्सन्देह अल्लाह बहुत जानने वाला और हिक्मत वाला है।२५।

---

1. अभिप्राय यह है कि जिन स्त्रियों से निकाह (विवाह) जायज़ है वे तो निकाह के बाद हलाल ही होंगी, परन्तु पहली सूची वाली स्त्रियाँ निकाह के साथ भी हलाल नहीं हो सकतीं। हाँ! युद्ध में बन्दी बनाई गई स्त्रियाँ निकाह के साथ हलाल हो सकती हैं, जब कि उन्हें कोई मुक्त न कराए तो फिर उन से आज्ञा लेने की आवश्यकता नहीं। जातीय-शिष्टाचार को ठीक रखने के लिए सरकार ऐसी बन्दी स्त्रियों का संरक्षक नियुक्त कर के उन का विवाह कर सकती है।

2. इस से यह अभिप्राय नहीं कि मोमिन व्यभिचार करेगा, अपितु यह तात्पर्य है कि मोमिन से यह आशा की जाती है कि वह विवाह करते समय तक़वा और संयम को ध्यान में रखेगा और व्यभिचार के निकट भी नहीं फटकेगा।

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ
الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ
الْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ۗ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ
بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ
اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ
وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ
بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ
الْعَذَابِ ۗ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۗ وَاَنْ
تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ ع

और तुम में से जो व्यक्ति आज़ाद मोमिन स्त्री से विवाह करने का सामर्थ्य न रखता हो तो वह तुम्हारे अधिकार में आई हुई स्त्रियों अर्थात् तुम्हारी मोमिन दासियों में से किसी के साथ निकाह कर ले और अल्लाह तुम्हारे ईमान को सब से बढ़ कर जानता है। तुम एक-दूसरे से सम्बन्ध रखते हो। अतः उन से उन के मालिकों की आज्ञा से विवाह करो तथा उन्हें उनके महर—जबकि वे पवित्र आचरण[1] वाली हों, व्यभिचारिणी अथवा लुक-छिप कर मित्र बनाने वाली न हों—नियम के अनुसार दे दो। फिर जब वे विवाह के बन्धन में बँध जाएँ और फिर भी वे कोई बुरा काम कर बैठें, तो उन का दण्ड आज़ाद स्त्रियों की अपेक्षा आधा होगा। यह (अनुमति) उस के लिए[2] है जो तुम में से पाप से डरता हो और तुम्हारा धैर्य धारण करना तुम्हारे लिए अच्छा है और अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।२६। (रुकू ४/१)

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

अल्लाह चाहता है कि जो लोग तुम में से पहले हो चुके हैं उन के रीति-रिवाज तुम्हारे पथ-प्रदर्शन के लिए वर्णन करे और तुम पर कृपा करे एवं अल्लाह बहुत जानने वाला तथा हिक्मत वाला है।२७।

---

1. इस का यह अभिप्राय नहीं कि यदि वे अच्छे आचरण की हों तब उन के महर दो, अन्यथा न दो, अपितु अभिप्राय यह है कि ऐसी ही दासियों से विवाह करो जिन का पवित्र होना तुम पर सिद्ध हो चुका हो और फिर उन के महर आज़ाद स्त्रियों की भाँति दे दो।

2. दासियों से विवाह करना विवशतावश है, क्योंकि वे दूसरी जाति और दूसरे धर्म से सम्बन्ध रखती हैं। अच्छा तो यही है कि अपनी जाति और अपने धर्म ही से सम्बन्ध रखने वाली आज़ाद स्त्रियों से विवाह किया जाए।

وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿٢٨﴾

और अल्लाह तो यह चाहता है कि तुम पर कृपा करे, परन्तु जो लोग विषय-वासनाओं का अनुसरण करते हैं वे चाहते हैं कि तुम (दुराचार की ओर) बिल्कुल झुक जाओ।२८।

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿٢٩﴾

अल्लाह चाहता है कि तुम्हारा बोझ तुम से हल्का करे और मनुष्य तो कमज़ोर पैदा किया गया है।२९।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٣٠﴾

हे ईमानदारो! तुम अपने धन अनुचित ढंग से आपस में न खाओ। हाँ! यह उचित बात है कि (धन का लेना) आपस की अनुमति से व्यापार द्वारा हो और तुम अपनी हत्या अपने-आप न करो। निस्सन्देह अल्लाह तुम पर बार-बार दया करने वाला है।३०।

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣١﴾

और जो व्यक्ति अपनी अत्याचार की आदत के कारण ऐसा (पराया धन हड़प) करेगा हम उसे अवश्य आग में डालेंगे और यह बात अल्लाह के लिए बहुत आसान है।३१।

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿٣٢﴾

जिन बातों से तुम्हें रोका जाता है यदि तुम उन में से बड़ी-बड़ी बातों से दूर रहो तो हम तुम से तुम्हारी त्रुटियाँ दूर कर देंगे और तुम्हें सम्मान वाले स्थानों में प्रविष्ट करेंगे।३२।

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا

अल्लाह ने तुम में से कुछ लोगों को दूसरे कुछ लोगों पर (जिस बात के कारण) प्रधानता दे रखी है उस की कामना न करो। जो कुछ पुरुषों ने कमाया है उस में से उन का हिस्सा है और जो कुछ स्त्रियों ने कमाया

اکْتَسَبْنَ ؕ وَاسْـَٔلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ کَانَ بِکُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمًا ۝

है उस में से उन का हिस्सा है और अल्लाह ही से उस की कृपा माँगो। निस्सन्देह अल्लाह हर-एक बात को बहुत जानने वाला है।३३।

وَلِکُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِیَ مِمَّا تَرَکَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُکُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ کَانَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ شَهِيْدًا ۝

और हम ने हर-एक (मरने-वाले व्यक्ति) के छोड़े हुए धन के बारे में वारिस निर्धारित कर दिए हैं, वे (वारिस) माता-पिता और निकट-सम्बन्धी हैं, और वे (पति या पत्नियाँ) भी जिन से तुम प्रण[1] कर चुके हो। अतएव उन्हें भी उन के निश्चित हिस्से दे दो। निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक बात का निरीक्षक है।३४। (रुकू ५/२)

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَی النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰی بَعْضٍ وَّ بِمَاۤ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِیْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِی الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَکُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ کَانَ عَلِيًّا کَبِيْرًا ۝

पुरुष उस प्रधानता के कारण स्त्रियों के संरक्षक हैं जो अल्लाह ने उन में से कुछ लोगों को दूसरे कुछ लोगों पर दी है तथा इस कारण भी कि वे अपने मालों में से (स्त्रियों पर) ख़र्च कर चुके हैं। अतः नेक स्त्रियाँ वे हैं जो आज्ञा पालन करने वाली और अल्लाह के कृपा से रहस्यमयी बातों की रक्षा करने वाली होती हैं, परन्तु जिन से तुम्हें अवज्ञा[2] का भय हो तो उन्हें समझाओ तथा उन्हें उन के बिस्तरों में अकेले छोड़ दो, फिर (भी न समझें तो) उन्हें मारो। तत्पश्चात् यदि वे तुम्हारी आज्ञा का पालन करने लगें तो उन के विरुद्ध कोई बहाना न ढूँढ़ो। निस्सन्देह अल्लाह सर्वोच्च और सब से बड़ा है।३५।

1. इससे तात्पर्य पत्नियाँ या पति हैं और वे पवित्र क़ुर्आन की आज्ञा के अनुसार वारिस हैं तथा अब तक वारिस चले आ रहे हैं।

2. यहाँ अवज्ञा से अभिप्राय व्यभिचार नहीं, अपितु साधारण बुराइयाँ हैं जिन के कारण मनुष्य

(शेष पृष्ठ १८३ पर)

وَ اِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ﴿٣٦﴾

और यदि तुम्हें उन (पति-पत्नी) के बीच बिगाड़ हो जाने का डर हो तो एक पञ्च इस (पुरुष) के नातेदारों में से तथा एक (पञ्च) उस (स्त्री) के नातेदारों में से नियुक्त करो, फिर यदि वे दोनों (पञ्च) संधि कराना चाहें तो अल्लाह उन दोनों (पति-पत्नी) में अनुकूलता पैदा कर देगा। निस्सन्देह अल्लाह बहुत जानने वाला और सावधान है।३६।

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّ بِذِی الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِی الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۙ﴿٣٧﴾

और तुम अल्लाह की उपासना करो तथा किसी को भी उस का साझी न बनाओ और माता-पिता तथा निकट-सम्बन्धियों, अनाथों, निर्धनों, सम्बन्धी पड़ोसियों, सम्बन्ध-रहित-पड़ोसियों, पास में रहने वाले लोगों, यात्रियों तथा जिन के तुम स्वामी बन चुके हो उन सब के साथ भी परोपकार करो और जो घमण्डी एवं इतराने वाले हों अल्लाह उन्हें कदापि पसंद नहीं करता।३७।

اِلَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَ يَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۚ﴿٣٨﴾

जो स्वयं कन्जूसी करते हैं और दूसरे लोगों को भी कन्जूसी की प्रेरणा देते हैं तथा जो कुछ अल्लाह ने अपनी कृपा से उन्हें प्रदान किया है उसे छिपाते हैं और हम ने ऐसे इन्कार करने वालों के लिए अपमान-जनक अज़ाब तय्यार कर रखा है।।३८।

(पृष्ठ १८२ का शेष)

अपने पड़ोसियों में अपमानित हो जाता है। अत: ऐसा दण्ड निश्चित किया जिस से स्त्री मुहल्ले में खुले रूप से घूमती न फिरे। हाँ! यदि पुरुष अत्याचार से काम ले तो स्त्री को न्यायाधीश के पास शिकायत करने की आज्ञा है।

وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿۳۹﴾

और जो लोग अपना धन लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं तथा वे न तो अल्लाह् पर ईमान रखते हैं और न ही पीछे आने वाले दिन पर। (उन का परिणाम बुरा होगा) और जिस व्यक्ति का शैतान साथी हो (उसे याद रखना चाहिए कि) वह बहुत बुरा साथी है।३९।

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾

और उन का क्या (बिगड़ जाता) था कि यदि वे अल्लाह् पर तथा पीछे आने वाले दिन पर ईमान लाते और जो कुछ अल्लाह् ने उन्हें दिया है उस में से (उस की राह में) ख़र्च करते और अल्लाह् उन के बारे में भली-भाँति जानता है।४०।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۴۱﴾

अल्लाह् किसी पर रञ्चमात्र भी अत्याचार नहीं करेगा और यदि किसी की कोई नेकी होगी तो वह उसे बढ़ाएगा और अपनी ओर से भी बहुत बड़ा बदला देगा।४१।

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ﴿۴۲﴾

(उस समय) उन की क्या दशा होगी जब हम हर-एक सम्प्रदाय में से एक गवाह लाएँगे और तुझे इन लोगों पर गवाह के रूप में लाएँगे।४२।

يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿۴۳﴾ ع

उस दिन जिन्हों ने इन्कार किया है और इस रसूल की बात नहीं मानी, वे चाहेंगे काश! उन्हें धरती में गाड़ दिया जाता। उस दिन वे अल्लाह् से कोई बात छिपा न सकेंगे।४३।
(रुकू ६/३)

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِىْ سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٤٤﴾

हे ईमान लाने वालो ! जब तक तुम होश में न हो तब तक नमाज़ के निकट न जाओ अर्थात् उस समय तक कि जो कुछ तुम कह रहे हो उसे समझने न लगो और न ही अपवित्र अवस्था में (नमाज़ पढ़ो) जब तक कि स्नान न कर लो, सिवाय इस के कि तुम यात्रा पर हो और यदि तुम रोगी हो या यात्रा पर हो (और तुम अपवित्र अवस्था में हो तो तयम्मुम् कर लिया करो) या तुम में से कोई शौच आदि से आया हो (और पानी न मिले) या तुम पत्नियों से मिलाप कर चुके हो (अर्थात् तुम अपवित्र हो) और तुम्हें पानी न मिल सके, तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम्[1] करो, फिर तुम वे मिट्टी वाले हाथ अपने मुँह और हाथों पर मलो । निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला और बहुत बख़्शने वाला है ।४४।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ﴿٤٥﴾

क्या तुझे उन लोगों का हाल मालूम नहीं हुआ जिन्हें (अल्लाह की) किताब में से कुछ हिस्सा दिया गया था । वे गुमराही को अपना रहे हैं और चाहते हैं कि तुम भी ठीक राह से भटक जाओ ।४५।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ﴿٤٦﴾

और अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं को तुम से बढ़ कर जानता है तथा अल्लाह की मित्रता ही पर्याप्त है और अल्लाह सहायक होने की दृष्टि से भी पर्याप्त है ।४६।

---

1. नमाज़ आदि उपासना के लिए पानी से वुज़ु किया जाता है । तयम्मुम् वुज़ु के बदले में है । पवित्र मिट्टी पर दोनों हाथ दो बार मार कर फिर उन्हें मुँह और हाथों पर मलने की क्रिया का नाम तयम्मुम् है ।

مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّ رَاعِنَا لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِى الدِّيْنِ ۭ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٤٧

जो लोग यहूदी हैं उन में से कुछ (अल्लाह् की) बातों को उन की जगहों से अदल-बदल देते हैं और कहते हैं कि हम ने सुना, परन्तु इस पर भी हम ने अवज्ञा की तथा (कहते हैं कि) तू हमारी बातें सुन ! (ईशवाणी) तुझे कभी न सुनाई जाए[1] और तू हमारा लिहाज़ कर। यह बात अपनी ज़ुबान से झूठ[2] बोलते हुए तथा धर्म पर व्यंग करते हुए कहते हैं और यदि वे यों कहते कि हम ने सुना और हम ने मान लिया और (कहते कि) सुन ! तथा हम पर कृपा-दृष्टि कर ! तो यह उन के लिए अधिक अच्छा और अधिक सुधारात्मक होता, किन्तु वे इस से न केवल वञ्चित रहे अपितु अल्लाह् ने उन के इन्कार के कारण उन पर धिक्कार डाली। अत: वे ईमान नहीं[3] लाते।४७।

---

1. मूल शब्द 'ग़ैरा मुस्मइन' के दो अर्थ हैं—(क) तू बुरी बात न सुने।

(ख) तू कोई शुभ-समाचार न सुने, तू ऐसी बात सुने जो सहन न हो सके और यह कि तू बहरा हो जाए।

2. अर्थात् मुँह से तो 'रायना'—'हमारा लिहाज़ कर' कहते हैं, परन्तु उन के दिल इस बात से सहमत नहीं होते। वे अपने मन में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को हीन व्यक्ति समझते हैं और विचार करते हैं कि हमें इस से कोई लाभ या सुविधा नहीं चाहिए।

3. अरबी के मूल शब्द 'क़लील' का अर्थ है—बहुत थोड़ा, परन्तु मुहावरे में इस का अर्थ है—नाम-मात्र, रञ्चमात्र भी नहीं, बिल्कुल नहीं, मानों वे बिल्कुल ईमान नहीं लाते।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰٓى اَدْبَارِهَآ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٤٧﴾

हे लोगो ! जिन्हें (अल्लाह की) किताब दी गई थी, इस किताब पर भी जिसे हम ने अब उतारा है और जो उस वाणी की पुष्टी करने वाली है जो तुम्हारे पास पहले से मौजूद है उस (समय) से पहले ईमान ले आओ जब कि हम तुम में से बड़े-बड़े लोगों को नष्ट कर दें और उन्हें उन की पीठों के बल फिरा[1] दें अथवा जिस प्रकार हम ने सब्त वालों पर धिक्कार[2] डाली थी उसी प्रकार उन पर भी डालें और अल्लाह की बात (अवश्य पूरी) हो कर रहने वाली है ।४८।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿٤٩﴾

निस्सन्देह अल्लाह (यह बात) कदापि क्षमा नहीं करेगा कि किसी को उस का साझी बनाया जाए, परन्तु जो पाप इस से छोटा होगा उसे जिस के लिए चाहेगा क्षमा कर देगा और जिस ने अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराया हो तो समझो कि उस ने बहुत बड़ी बुराई की बात बनाई ।४९।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٥٠﴾

क्या तुझे उन लोगों का हाल मालूम नहीं जो अपने-आप को पवित्र ठहराते हैं (हालाँकि यह उन का अधिकार नहीं) अपितु अल्लाह जिसे पसन्द करता है उसे पवित्र ठहराता है तथा उन पर खजूर की गुठली की रेखा के बराबर भी अत्याचार नहीं किया जाएगा ।५०।

---

1. अर्थात् उन्हें पराजित कर दें जिस के फलस्वरूप उन का सारा जोश ठंडा पड़ जाए ।
2. इस धिक्कार के विवरण के लिए देखिए सूरः आराफ़ आयत नं० 164 से 167 तक ।

اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۭ وَكَفٰى بِهٖٓ اِثْمًا مُّبِيْنًا ۝٥١

देख ! वे किस प्रकार अल्लाह पर झूठ गढ़ रहे हैं और यह (झूठ गढ़ना) बहुत बड़ा और खुला-खुला पाप है ।५१। (रुकू ७/४)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَاۗءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ۝٥٢

क्या तुझे उन लोगों का हाल मालूम नहीं जिन्हें (अल्लाह की) किताब में से कुछ हिस्सा दिया गया था कि वे व्यर्थ[1] बातों और हद से बढ़ने वालों पर ईमान लाते हैं तथा इन्कार करने वालों के बारे में कहते हैं कि ये लोग मोमिनों से बढ़ कर हिदायत पाए हुए हैं ।५२।

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۭ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ۝٥٣

ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने फटकार डाली है और अल्लाह जिस पर फटकार डाले तो तू कदापि किसी को उस का सहायक नहीं पाएगा ।५३।

اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ۝٥٤

क्या इन का हुकूमत में कोई हिस्सा है ? तब तो वे लोगों को खजूर की गुठली के छेद के बराबर भी हिस्सा नहीं देंगे ।५४।

اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰي مَآ اٰتٰىھُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰھُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ۝٥٥

या (क्या) जो कुछ अल्लाह ने अपनी कृपा से लोगों को प्रदान किया है वे उस के आधार पर उन से इर्ष्या करते हैं ? (यदि ऐसा है) तो हम ने इब्राहीम की सन्तान को भी किताब तथा हिक्मत प्रदान की थी और हम ने उन्हें एक बड़ा राज्य प्रदान किया था ।५५।

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ۭ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ۝٥٦

फिर उन में से कुछ लोग तो उस (नई किताब) पर ईमान ले आए और कुछ उस से रुक गये तथा नरक ताप की दृष्टि से बहुत बढ़ कर है ।५६।

1. मूल शब्द 'जिब्त' से तात्पर्य ऐसी वस्तु है जिस का कोई लाभ न हो । (अक़्रब)

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا ۚ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۗ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٥٦﴾

जिन लोगों ने हमारे आदेशों को मानने से इन्कार किया है हम उन्हें शीघ्र ही आग में डालेंगे। जब भी उन की त्वचाएँ पक जाएँगी तो हम उन के स्थान पर दूसरी त्वचाएँ बदल देंगे और हम यह इसलिए करेंगे ताकि वे अज़ाब का स्वाद चखें। निस्सन्देह अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है।५७।

وَالَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ ۖ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا ﴿٥٧﴾

और जो लोग ईमान लाए हैं और शुभ कर्म किए हैं हम उन्हें ऐसे बाग़ों में प्रविष्ट करेंगे, जिन के नीचे नहरें बहती हैं। वे सदैव उन में रहते चले जाएँगे। उन के लिए उन में पवित्र जोड़े होंगे और हम उन्हें घनी छाया में रहने के लिए प्रविष्ट करेंगे।५८।

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمٰنٰتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٥٨﴾

निस्सन्देह अल्लाह तुम्हें यह आदेश देता है कि तुम अमानतें[1] उन के हक़दारों को सौंप दो और यह कि जब तुम उन लोगों के बीच निर्णय करने लगो तो न्याय से निर्णय करो। अल्लाह जिस बात का तुम्हें उपदेश देता है निश्चय ही वह बहुत उत्तम है। निस्सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला और देखने वाला है।५९।

---

1. इस स्थान पर राज्य-प्रबन्ध का वर्णन हो रहा है। अतः आयत का अभिप्राय यह है कि जब तुम राज्य-कर्मचारियों का निर्वाचन किया करो तो योग्यता को सामने रखा करो तथा पक्षपात से काम न लो। आयत के दूसरे भाग में निर्वाचित कर्मचारियों को बताया गया है कि हे राज्य-कर्मचारियो ! जब तुम निर्वाचित किए जाओ तो तुम सदैव न्याय को सामने रखा करो तथा पक्षपात से सदा ही बचते रहा करो, चाहे तुम्हारे पास आने वालों में से कोई तुम्हारे अपने पक्ष का हो या अन्य पक्ष का ही क्यों न हो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٦٠﴾ ع

हे ईमान वालो ! अल्लाह् की आज्ञा का पालन करो और रसूल के तथा अपने राज्याधिकारियों के भी आज्ञाकारी रहो। फिर यदि तुम्हारा पदाधिकारियों से कभी कोई मतभेद हो जाए तो यदि तुम अल्लाह् और पीछे आने वाले दिन पर ईमान रखते हो तो उसे अल्लाह् और रसूल की ओर लौटा[1] दो। वह बात सर्वश्रेष्ठ एवं परिणाम की दृष्टि से उत्तम है।६०। (रुकू ८/५)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْٓا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْٓا اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ ۭ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿٦١﴾

क्या तूने उन लोगों का हाल नहीं देखा जो (दावा तो) करते हैं कि जो कुछ तेरी ओर उतारा गया है और जो तुझ से पहले उतारा गया था, वे उस पर ईमान ला चुके हैं और इस के बावजूद कि उन्हें आदेश दिया गया था कि वे उद्दण्ड[2] व्यक्तियों से निर्णय न कराएँ तथा उन के कहने पर न चलें। वे चाहते हैं कि उन्हीं से निर्णय कराएँ, क्योंकि शैतान चाहता है कि उन्हें घोर पथभ्रष्टता में डाल दे।६१।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ الْمُنٰفِقِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ﴿٦٢﴾

और जब उन से कहा जाता कि जो कुछ अल्लाह् ने उतारा है उस की ओर एवं रसूल की ओर आओ तो तू मुनाफ़िक़ों को देखता है कि वे तुझ से बिल्कुल पीछे हट जाते हैं।६२।

1. अर्थात् उन के आदेशों के अनुसार समस्या को सुलझाओ।

2. यह आयत ऐसे (मुनाफ़िक़ों) के सम्बन्ध में है जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से निर्णय कराने की अपेक्षा दूसरे लोगों से निर्णय कराना अच्छा समझते थे।

فَكَيْفَ إِذَآ أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَآءُوكَ يَحْلِفُونَ بِٱللَّهِ إِنْ أَرَدْنَآ إِلَّآ إِحْسَٰنًا وَتَوْفِيقًا ﴿٦٣﴾

फिर ऐसा क्यों होता है कि जब उन पर उनके कर्मों के फलस्वरूप कोई विपत्ति आ पड़ती है तो वे (व्याकुल हो जाते हैं और) तेरे पास अल्लाह की शपथ लेते हुए आते हैं कि हमने तो केवल सद्व्यवहार और समझौता कराने का इरादा किया था।६३।

أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ يَعْلَمُ ٱللَّهُ مَا فِى قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُل لَّهُمْ فِىٓ أَنفُسِهِمْ قَوْلًۢا بَلِيغًا ﴿٦٤﴾

ये वे लोग हैं कि जो कुछ उन के दिलों में है अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है। अतएव तू उन से उलझने से बचता रह और उन्हें उपदेश दे तथा उन के बारे में प्रभाव डालने वाली बात कह।६४।

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذ ظَّلَمُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ جَآءُوكَ فَٱسْتَغْفَرُوا۟ ٱللَّهَ وَٱسْتَغْفَرَ لَهُمُ ٱلرَّسُولُ لَوَجَدُوا۟ ٱللَّهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ﴿٦٥﴾

और हम ने कोई रसूल भी इस उद्देश्य के बिना नहीं भेजा कि अल्लाह के आदेश से उस की आज्ञा का पालन किया जाए और जब उन्होंने अपनी जानों पर अत्याचार किया था तो यदि (उस समय) वे तेरे पास आ जाते और अल्लाह से क्षमा माँगते तथा रसूल भी उन के लिए क्षमा कर देने की प्रार्थना करता तो वे अवश्य ही अल्लाह को बड़ा क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला पाते।६५।

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا۟ فِىٓ أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا۟ تَسْلِيمًا ﴿٦٦﴾

सो तेरे रब्ब की सौगन्ध! वे कदापि ईमानदार नहीं हो सकते जब तक कि वे हर उस बात में जिस के बारे में उन में झगड़ा हो जाए, तुझे फ़ैसला करने वाला न बनाएँ और फिर जो फ़ैसला तू करे उस से अपने मन में किसी प्रकार की तंगी न पाएँ और पूर्णरूप से आज्ञाकारी न बन जाएँ।६६।

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ أَوِ اخْرُجُوا مِن دِيَارِكُم مَّا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِّنْهُمْ ۖ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا ﴿٦٦﴾

और यदि हम उन्हें यह आदेश देते कि तुम अपने-आप को क़त्ल[1] कर दो या अपने घरों से **निकल**[2] जाओ तो उन में से कुछ ही लोगों को छोड़ कर दूसरे ऐसा न करते और यदि वे उस काम को कर लेते जिस का उन्हें आदेश दिया जाता है तो उन के लिए लाभदायक होता और दृढ़ता का साधन भी बनता।६७।

وَإِذًا لَّآتَيْنَاهُم مِّن لَّدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٦٧﴾

और ऐसी दशा में हम उन्हें निश्चय ही अपने पास से बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करते।६८।

وَلَهَدَيْنَاهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٦٨﴾

और यह कि हम उन्हें अवश्य ही सम्मार्ग दिखाते।६९।

وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ ۚ وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ﴿٦٩﴾

और जो लोग भी अल्लाह तथा इस रसूल के आज्ञाकारी होंगे वे उन लोगों में शामिल होंगे[3], जिन्हें अल्लाह ने पुरस्कृत किया है अर्थात् नबी, सिद्दीक़[4], शहीद और सालिह (लोगों में शामिल होंगे) और यह लोग बहुत अच्छे साथी हैं।७०।

ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عَلِيمًا ﴿٧٠﴾ ع

यह अल्लाह की ओर से कृपा है और अल्लाह बहुत जानने वाला है।७१। (रुकू ९/६)

---

1. अर्थात् कठोर तपस्या करो।

2. इस से तात्पर्य जिहाद के लिए निकलना है न कि व्यर्थ ही घरों से निकलना।

3. मूल शब्द 'मआ' का अर्थ है—साथ, में से। इस स्थान पर 'में से' अर्थ अभीष्ट है अर्थात् उन लोगों में से और उन जैसे होंगे।

4. 'सिद्दीक़' का अर्थ है—सत्यवादी, सच्चाई में कामिल, अपने कथन को अपने कर्म से सत्य सिद्ध करने वाला, प्रमाणक, जिस का बाहर-भीतर पवित्र हो। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से सिद्दीक़ियत की उपाधि से विभूषित।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿٧٢﴾

हे ईमान वालो ! अपनी रक्षा के सामान अपने पास रखा करो फिर चाहे छोटे दलों या बड़े दलों के रूप में घरों से निकलो (सदैव अपनी प्रतिरक्षा के सामान अपने पास रखा करो) ।७२।

وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ﴿٧٣﴾

और तुम में से निश्चय ही कुछ लोग ऐसे होते हैं जो (हर काम के अवसर पर) अवश्य ही पीछे रहते हैं और यदि तुम पर कोई विपत्ति आ पड़े तो कहते हैं कि अल्लाह ने मुझ पर कृपा की है कि मैं उन के साथ न था ।७३।

وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧٤﴾

और यदि अल्लाह की ओर से तुम्हें कोई फ़ज़्ल (कृपा की बात) पहुँचे तो अवश्य ही कह उठते हैं काश ! हम भी उन के साथ होते ताकि बहुत बड़ी सफलता प्राप्त करते । मानो इस से पहले उन के और तुम्हारे बीच मित्रता का कोई सम्बन्ध था ही नहीं ।७४।

فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۗ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٧٥﴾

सो जो लोग सांसारिक-जीवन को छोड़ कर पारलौकिक-जीवन को अपनाते हैं, उन्हें अल्लाह की राह में (रक्षात्मक) युद्ध करना चाहिए और जो अल्लाह की राह में (रक्षात्मक) युद्ध करे और फिर वीरगति पा ले या विजय पा ले तो हम उसे शीघ्र ही बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे ।७५।

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ

और तुम्हें क्या (हो गया) है कि तुम अल्लाह (की राह में) तथा उन निर्बल पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के लिए युद्ध[1] नहीं करते ? जो कहते हैं कि हे हमारे रब्ब ! हमें इस बस्ती

1. अर्थात् उन्हें स्वतन्त्र करने के लिए युद्ध क्यों नहीं करते जो इन्कार करने वालों के अत्याचारों से उत्पीड़ित और पददलित हैं ।

وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ۝

से निकाल जिस के निवासी अत्याचारी हैं और अपनी ओर से हमारा कोई मित्र बना (कर भेज) और अपनी ओर से (किसी को) हमारा सहायक बना (कर खड़ा कर) ।७६।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ۝

जो लोग मोमिन हैं वे अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं और जो लोग इन्कार करने वाले हैं वे शैतान की राह में युद्ध करते हैं। अतः तुम शैतान के मित्रों से युद्ध करो। निस्सन्देह शैतान का उपाय निर्बल होता है ।७७। (रुकू १०/७)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۗ وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝

क्या तुझे उन लोगों का हाल मालूम नहीं जिन्हें कहा गया था कि तुम अपने हाथों को लड़ाई से रोके रखो और नमाज़ का विधिवत पालन करो तथा ज़कात दिया करो (किन्तु वे युद्ध की ओर झुक गए थे) फिर जब उन के लिए (रक्षात्मक) युद्ध करना ज़रूरी ठहराया गया तो अचानक उन में से कुछ लोग दूसरों से उसी प्रकार डरने लगे जिस प्रकार अल्लाह से डरना चाहिए, बल्कि उस से भी बढ़ कर और कहने लगे कि हे हमारे रब्ब ! तूने हमारे लिए युद्ध करना क्यों ज़रूरी कर दिया है, क्यों न तूने हमें कुछ समय के लिए और ढील दी ? तू कह दे कि सांसारिक लाभ तुच्छ वस्तु है तथा जो व्यक्ति संयम धारण करे उस के लिए पीछे आने वाला जीवन अधिक अच्छा है और तुम पर खजूर की गुठली के अन्दर की रेखा के बराबर (तनिक भी) अत्याचार नहीं किया जाएगा ।७८।

أَيْنَ مَا تَكُونُوا يُدْرِكْكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ مُشَيَّدَةٍ ۗ وَإِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ عِنْدِكَ ۚ قُلْ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ فَمَالِ هَٰؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ⑦٩

तुम जहाँ कहीं भी हो मौत तुम्हें आ घेरेगी भले ही तुम मज़बूत किलों में (ही क्यों न) रहो और यदि उन्हें कोई भलाई पहुँचती है तो कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है और यदि कोई बुराई की बात पहुँचती है तो कहते हैं कि यह तेरी[1] ओर से है। तू कह दे कि सब कुछ अल्लाह की ओर से है। सो उन लोगों को क्या हो गया है कि किसी बात के समझने के निकट (तक) नहीं जाते।७९।

مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۖ وَمَا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَفْسِكَ ۚ وَأَرْسَلْنَاكَ لِلنَّاسِ رَسُولًا ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ⑧٠

जो भलाई तुझे पहुँचे वह तो अल्लाह की ओर से है तथा जो बुराई तुझे पहुँचे वह तेरी ओर से है और हम ने तुझे लोगों के लिए रसूल बना कर भेजा है और (इस बात पर) अल्लाह बहुत अच्छा गवाह है।८०।

مَنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ ۖ وَمَنْ تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ⑧١

जो व्यक्ति रसूल की आज्ञा का पालन करे (तो समझो कि) उस ने अल्लाह की आज्ञा का पालन किया तथा जो लोग विमुख हो गए तो (याद रहे कि) हम ने तुझे उन का संरक्षक बना कर नहीं भेजा।८१।

---

1. मुनाफ़िक़ लोगों का चलन ऐसा ही होता है कि वे सफलता को अल्लाह से सम्बन्धित करते हुए कहते हैं कि यह ईश्वरीय लोगों का सम्प्रदाय है, इस ने तो उन्नति करनी ही थी, परन्तु दुःख और हानि की बात पर कहते हैं कि रसूल से या उस के ख़लीफ़ा (अधिनायक) से भूल हुई। यह दुःख उसी भूल का फल है। अल्लाह कहता है कि सुख-दुःख दोनों ही अल्लाह की ओर से हैं, परन्तु सुख का सम्बन्ध अल्लाह से जोड़ना तथा दुःख का रसूल से, कहीं इस का उद्देश्य यह तो नहीं कि लोगों के दिलों से रसूल की श्रद्धा, उस का आदर और सम्मान जाता रहे? किन्तु याद रहे कि अल्लाह ने सब शक्तियों को नेकी और भलाई के लिए पैदा किया है। सो मनुष्य जब उन शक्तियों का दुरुपयोग करता है तो वह दुःख में फँस जाता है। अतएव मानव-जाति को चाहिए कि नेकी को अल्लाह से तथा बुरी बात को अपने-आप से सम्बन्धित करे, क्योंकि दुःख या हानि उन के अपने कुकर्मों के कारण है। उसे इमाम या धार्मिक नेता से सम्बन्धित करना उचित नहीं।

(शेष पृष्ठ १९६ पर)

وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۡ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ۚ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٨٢﴾

और वे दावा तो आज्ञा-पालन करने का करते हैं, परन्तु जब तेरे पास से चले जाते हैं तो उन में से एक गिरोह जो कुछ तू कहता है उस के विरुद्ध उपाय सोचता है और जो उपाय वे सोचते हैं अल्लाह उन्हें सुरक्षित[1] करता जाता है। इसलिए तू उन से मुँह मोड़ ले और अल्लाह पर भरोसा रख तथा अल्लाह को छोड़ कर किसी दूसरे कार्य-साधक की आवश्यकता नहीं।८२।

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ﴿٨٣﴾

सो क्या वे लोग क़ुर्आन पर सोच-विचार नहीं करते और नहीं समझते कि यदि यह अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की ओर से होता तो वे इस में बहुत सा भेद-विभेद पाते।८३।

وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ۚ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَاِلٰۤى اُولِي الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ۚ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٤﴾

और जब भी उन के पास शान्ति या भय की कोई बात पहुँचती है तो वे उसे फैला देते हैं और यदि वे उसे रसूल और अपने अनुशासकों के पास ले जाते तो उन में से वे लोग जो ऐसी बातों के तत्त्व को जान लिया करते हैं उस (की सच्चाई) को पा लेते और यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और उस की अनुकम्पा न होती तो थोड़े से लोगों को छोड़ कर शेष सारे ही शैतान के पीछे चल पड़ते।८४।

(पृष्ठ १९५ का शेष)

यह एक साधारण सिद्धान्त बताया है और सम्बोधित हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम हैं, किन्तु प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि जो कष्ट उसे पहुँचे उसे दूसरों से सम्बन्धित करने की अपेक्षा अपने-आप से सम्बन्धित करे।

1. अर्थात् अल्लाह उन का हिसाब रखता जाता है और समय आने पर उन्हें उस का दण्ड देगा।

فَقَاتِلْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِیْنَ ۚ عَسَی اللّٰهُ اَنْ یَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ وَ اللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّ اَشَدُّ تَنْكِیْلًا ﴿۸۵﴾

सो तू अल्लाह की राह में युद्ध कर। तुझे अपनी जान के सिवा किसी दूसरे का ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाता और (तेरा काम केवल यह है कि) तू मोमिनों को प्रेरणा दे। सम्भव है कि अल्लाह इन्कार करने वालों की लड़ाई (के ज़ोर) को रोक दे और अल्लाह की लड़ाई सब से बढ़ कर कड़ी होती है तथा उस का अज़ाब भी अत्यन्त कड़ा जान पड़ता है।८५।

مَنْ یَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً یَّكُنْ لَّهٗ نَصِیْبٌ مِّنْهَا ۚ وَ مَنْ یَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَیِّئَةً یَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ مُّقِیْتًا ﴿۸۶﴾

जो व्यक्ति अच्छी सिफ़ारिश करे उस के लिए उस में से एक हिस्सा होगा और जो बुरी सिफ़ारिश करे उस के लिए भी उस में से वैसा ही हिस्सा होगा और अल्लाह हर बात पर पूरा सामर्थ्य रखता है।८६।

وَ اِذَا حُیِّیْتُمْ بِتَحِیَّةٍ فَحَیُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ حَسِیْبًا ﴿۸۷﴾

और जब तुम्हें कोई दुआ दी जाए तो तुम उस से अच्छी दुआ दिया करो या फिर (कम से कम) उसे ही लौटा दो। निस्सन्देह अल्लाह हर-एक बात का लेखा लेने वाला है।८७।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَیَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ لَا رَیْبَ فِیْهِ ؕ وَ مَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِیْثًا ﴿۸۸﴾ ع

अल्लाह वह सत्ता है कि उस के सिवा कोई उपास्य नहीं। निस्सन्देह वह तुम्हें क़ियामत के दिन तक इकट्ठा करता चला जाएगा, जिस के आने में कोई सन्देह नहीं और अल्लाह से बढ़ कर किस की बात सच्ची हो सकती है।८८। (रुकू ११/८)

فَمَا لَكُمْ فِی الْمُنٰفِقِیْنَ فِئَتَیْنِ وَ اللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ اَتُرِیْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ

और तुम्हें क्या (हो गया) है कि तुम मुनाफ़िक़ों के बारे में दो गिरोह हो रहे हो? वास्तव में जो कुछ उन्हों ने कमाया है उस के कारण अल्लाह ने उन्हें औंधा (बुद्धिहीन) कर दिया है। क्या जिस का अल्लाह ने विनाश कर दिया हो उसे तुम सम्मार्ग पर

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿٨٩﴾

लाओगे ? तथा अल्लाह् जिस का विनाश कर दे तू उस के लिए कोई भी राह नहीं पाएगा ।८९।

وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٩٠﴾

वे चाहते हैं कि जिस प्रकार वे स्वयं इन्कार करने वाले बन चुके हैं, काश ! तुम भी उसी प्रकार इन्कार करने वाले बन जाओ और दोनों बराबर हो जाओ। सो जब तक वे अल्लाह् की राह में हिजरत न करें तुम उन में से किसी को मित्र न बनाओ । फिर यदि वे विमुख[1] हो जाएँ तो तुम उन्हें पकड़ो और जहाँ पाओ उन्हें क़त्ल कर दो और उन में से न तो किसी को मित्र बनाओ और न सहायक ।९०।

اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ ۭ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿٩١﴾

उन लोगों को छोड़ कर जो किसी ऐसी जाति से सम्बन्ध रखते हों जिस का तुम्हारे साथ कोई समझौता हो और वे तुम्हारे पास इस हालत में आएँ कि तुम्हारे साथ युद्ध करने से या अपनी जाति के साथ युद्ध करने से उन के दिलों में तंगी[2] हो और यदि अल्लाह् चाहता तो निस्सन्देह उन्हें तुम्हारे ऊपर ग़ल्बा (प्रभुत्व) दे देता, तब वे अवश्य ही तुम्हारे साथ युद्ध करते । सो यदि वे तुम लोगों से अलग हो जाएँ तथा तुम्हारे साथ युद्ध न करें और तुम्हारी ओर संधि का सन्देश भेजें, तो अल्लाह् ने तुम्हारे लिए उन के विरुद्ध अत्याचार करने की कोई राह खुली नहीं रखी ।९१।

1. 'विमुख हो जाएँ' से यह अभिप्राय है कि रसूल की आज्ञा का पालन करने के विषय में हमारे आदेशों का इन्कार करें ।

2. वे लोग तुम्हारे साथ समझौता करने वाली जाति में से हों और वे इस समझौता के कारण न तो तुम्हारे साथ युद्ध कर सकें तथा न ही अपनी जाति के साथ ।

سَتَجِدُونَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ وَيَاْمَنُوْا
قَوْمَهُمْ كُلَّمَا رُدُّوْٓا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ
يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْٓا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ
فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكُمْ
جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿٩١﴾ ع

और तुम अवश्य ही कुछ और लोगों को ऐसा पाओगे[1] कि वे चाहते हैं कि तुम से भी तथा अपनी जाति के लोगों से भी अमन से रहें, जब भी उन्हें फ़ितना और फ़साद की ओर लौटाया गया है तो वे उस में औंधे मुँह गिराए जाते रहे हैं। अतएव यदि वे तुम से अलग न हो जाएँ और तुम्हारी ओर संधि का सन्देश न भेजें तथा अपने हाथों को (युद्ध से न) रोक लें, तो तुम उन्हें पकड़ो और जहाँ कहीं पाओ उन्हें क़त्ल करो तथा ये लोग ऐसे हैं कि हम ने उन के विरुद्ध चमकते हुए प्रमाण दिए हैं।९२। (रुकू १२/९)

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ
قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ
مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ۚ فَاِنْ كَانَ مِنْ
قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ
وَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ

और यह बात किसी भी मोमिन को शोभा नहीं देती कि वह किसी मोमिन की हत्या करे सिवाय भूल-चूक के। फिर भी जो मोमिन भूल-चूक से किसी दूसरे मोमिन की हत्या कर बैठे तो उसे एक मोमिन दास स्वतन्त्र करना और दीय्यत[2] (बदला) देना अनिवार्य होगा, जो उस के वारिसों को दिया जाएगा सिवाय इस के कि वे उसे दान के रूप में छोड़ दें और यदि वह मरने वाला तुम्हारी किसी शत्रु जाति में से हो और वह स्वयं मोमिन हो तो फिर केवल एक मोमिन दास स्वतंत्र करना होगा और यदि वह मरने वाला किसी ऐसी जाति में से हो जिस

1. इस आयत में मुनाफ़िक़ों का वर्णन है। इस से पहले इन्कार करने वालों की समझौता करने वाली जाति का वृत्तान्त था। दोनों की अलग-अलग परिस्थितियों के कारण उन से किए जाने वाला व्यवहार भी अलग-अलग है।

2. 'दीय्यत' उस प्रतिकर या मुआवज़े का नाम है जो किसी की हत्या करने पर हत्यारा मरने वालों के वारिसों को हर्जाने के रूप में देता है।

مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِّنَ اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٩٢﴾

के साथ तुम्हारा समझौता हो तो (हत्यारे के लिए) दीय्यत देना अनिवार्य होगा, जो मरने वाले के वारिसों को दिया जाएगा। इसी प्रकार एक मोमिन को दासता से मुक्त करना भी अनिवार्य होगा और जो व्यक्ति इस का सामर्थ्य न रखता हो उस के लिए निरन्तर दो महीने के रोज़े (व्रत) रखना अनिवार्य होगा। यह आसानी अल्लाह की ओर से कृपा के रूप में है तथा अल्लाह बहुत जानने वाला और हिक्मत वाला है।९३।

وَمَن يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ﴿٩٣﴾

और जो व्यक्ति जान-बूझ कर किसी मोमिन की हत्या कर दे तो उस का दण्ड नरक होगा। वह उस में देर तक रहता चला जाएगा और अल्लाह का उस पर प्रकोप होगा और वह उसे अपने पास से दूर कर देगा तथा उस के लिए बहुत बड़ा अज़ाब तय्यार करेगा।९४।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَىٰ إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِندَ اللَّهِ مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ ۚ كَذَٰلِكَ كُنتُم مِّن قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٩٤﴾

हे ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में निकलो तो छान-बीन कर लिया करो और जो व्यक्ति तुम्हें सलाम करे उसे यह न कहो कि तू मोमिन नहीं। तुम सांसारिक[1]-जीवन का सामान चाहते हो, सो अल्लाह के पास अनेक ग़नीमतें (परिहार) हैं। इस से पहले तुम भी ऐसे ही थे, फिर अल्लाह ने तुम्हारे ऊपर उपकार किया। अतएव तुम्हारा कर्त्तव्य है कि तुम छान-बीन कर लिया करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे निश्चय ही जानता है।९५।

---

1. अर्थात् यदि उसके सलाम करने पर बदगुमानी करोगे और उसे धोखा देने वाला ठहराओगे तो उस का अर्थ यह होगा कि तुम सांसारिक लोभ को पारलौकिक-जीवन पर प्रधानता देते हो और यह चाहते हो कि उसे लड़ाई करने वाला इन्कारी ठहरा कर उस के धन-दौलत पर अधिकार जमा लो।

لَا يَسْتَوِى الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِى الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۚ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ۚ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۚ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٩٦﴾

मोमिनों में से ऐसे बैठ रहने वाले जिन्हें कोई कष्ट नहीं पहुँचा तथा (वे मोमिन जो) अपने जान-माल के साथ अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले हैं वह बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने अपने जान-माल के साथ जिहाद करने वालों को (पीछे) बैठ रहने वालों पर प्रधानता दी है और अल्लाह ने सब को ही भलाई का बचन दे रखा है और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को बहुत बड़े प्रतिफल का बचन देकर पीछे बैठ रहने वालों पर (अवश्य ही) प्रधानता दी है।९६।

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ۚ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٩٧﴾ ع ١٣

(इस प्रधानता का अर्थ) उस (अल्लाह) की ओर से बहुत बड़े सत्कार, क्षमा एवं दयालुता का मिलना है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।९७।(रुकू १३/१०)

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِىْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ۚ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ۚ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٨﴾

जिन लोगों को फ़रिश्तों ने इस हालत में मौत दी कि वे अपनी जानों पर अत्याचार[1] कर रहे थे, तो वे उन से कहेंगे कि तुम किस विचार में थे? वे कहेंगे कि हम देश में निर्बल समझे जाते थे (अतः हम ने हिजरत नहीं की)। वे (फ़रिश्ते) उत्तर देंगे क्या अल्लाह की धरती विस्तृत न थी कि तुम उस में हिजरत कर जाते? सो उन लोगों का ठिकाना नरक होगा और वह रहने की दृष्टि से बहुत ही बुरा ठिकाना है।९८।

1. वे देश में इन्कार करने वालों के द्वारा दुःख झेल रहे थे, परन्तु हिजरत नहीं करते थे।

إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ﴿٩٩﴾

हाँ ! वे लोग जो पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों में से वास्तव में निर्बल थे और उन में किसी भी प्रयत्न की शक्ति नहीं थी तथा न ही उन्हें कोई राह सूझती थी ।९९।

فَأُولَٰئِكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْفُوَ عَنْهُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿١٠٠﴾

ऐसे लोगों के लिए अल्लाह की क्षमा निकट है, क्योंकि अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बख़्शने वाला है ।१००।

وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرَاغَمًا كَثِيرًا وَسَعَةً ۚ وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٠١﴾

और जो कोई अल्लाह की राह में हिजरत करेगा वह देश में रक्षा के बहुत से स्थान और समृद्धि (के सामान) पाएगा और जो कोई अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर अपने घर से हिजरत कर के निकले, फिर उसे मौत आ जाये तो समझो कि उस का प्रतिफल अल्लाह के ज़िम्मा हो गया और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है ।१०१। (रुकू १४/११)

وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا مُبِينًا ﴿١٠٢﴾

और यदि तुम्हें भय हो कि इन्कार करने वाले लोग तुम्हें दुःख में डाल देंगे, तो जब तुम देश में यात्रा करो तो तुम पर कोई दोष नहीं कि तुम नमाज़ को छोटा[1] कर लिया करो। निस्सन्देह इन्कार करने वाले लोग तुम्हारे खुले-खुले शत्रु हैं ।१०२।

---

1. हज़रत आइशा सिद्दीक़ा की हदीस है कि प्रारम्भ में नमाज़ दो रकअत फ़र्ज़ थी, फिर यात्रा में तो वही दो रकअत रही, परन्तु घर पर रहने की अवस्था में चार रकअत कर दी गई। (बुख़ारी शरीफ़) अतः नमाज़ को छोटा करने से तात्पर्य यह है कि वह जल्दी-जल्दी पढ़ ली जाए ताकि समय थोड़ा लगे।

इस आयत में बताया गया है कि यदि शत्रु के आक्रमण का डर हो तो तुम जल्दी-जल्दी नमाज़ पढ़ लिया करो तो भी तुम्हारी नमाज़ व्यर्थ नहीं जाएगी। यदि कोई मुसलमान यात्रा पर हो तो चाहे शत्रु का डर हो या न हो उस के लिए दो रकअत नमाज़ पढ़ना ही उचित है।

وَإِذَا كُنتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ
مِّنْهُم مَّعَكَ وَلْيَأْخُذُوٓا أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا
فَلْيَكُونُوا مِن وَرَآئِكُمْ وَلْتَأْتِ طَآئِفَةٌ أُخْرٰى لَمْ
يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ
وَدَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ
فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُم مَّيْلَةً وَاحِدَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ
إِن كَانَ بِكُمْ أَذًى مِّن مَّطَرٍ أَوْ كُنتُم مَّرْضٰى أَن تَضَعُوٓا
أَسْلِحَتَكُمْ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ إِنَّ اللّٰهَ أَعَدَّ لِلْكٰفِرِينَ
عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٠٢﴾

और जब तू उन में मौजूद हो और तू उन्हें नमाज़ पढ़ाए तो उन में से जमाअत (समूह) के एक भाग (को चाहिए कि) तेरे साथ खड़ा हो तथा वे अपने अस्त्र-शस्त्र साथ रखें, फिर जब वे सजदः कर लें तो वे तुम्हारे पीछे (रक्षार्थ) खड़े हो जाएँ, फिर उस जमाअत का दूसरा भाग जिस ने नमाज़ नहीं पढ़ी थी आगे आ कर तेरे साथ नमाज़ पढ़े तथा वे भी अपनी रक्षा की वस्तुएँ और अपने अस्त्र-शस्त्र संभाले रहें, क्योंकि इन्कार करने वाले लोग चाहते हैं काश ! तुम अपने अस्त्र-शस्त्र और अपनी वस्तुओं से असावधान हो जाओ तो वे तुम पर अचानक टूट पड़ें और यदि वर्षा के कारण तुम्हें कष्ट हो या तुम रोगी हो तो अपने अस्त्र-शस्त्र उतार देने में तुम्हें कोई पाप नहीं होगा, किन्तु फिर भी पूरी सावधानी से काम लो। निस्सन्देह अल्लाह ने इन्कार करने वाले लोगों के लिए अपमान-जनक अज़ाब तय्यार कर रखा है।१०२।

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَقُعُودًا وَعَلٰى
جُنُوبِكُمْ فَإِذَا اطْمَأْنَنتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ إِنَّ
الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتٰبًا مَّوْقُوتًا ﴿١٠٣﴾

और जब तुम नमाज़ पूरी कर चुको तो अल्लाह को खड़े, बैठे और अपने पहलुओं पर लेटे हुए याद करो, फिर जब तुम को शान्ति मिले तो नमाज़ को संवार[1] कर पढ़ो। निस्सन्देह नियत समय पर विधिवत नमाज़ पढ़ना मोमिनों के लिए अनिवार्य (फ़र्ज़) ठहराया गया है।१०३।

1. अर्थात् युद्ध और भय वाली दशा की भाँति जल्दी-जल्दी नमाज़ न पढ़ो।

وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا

और तुम उस (शत्रु) जाति की खोज में सुस्ती न दिखाओ। यदि तुम्हें कष्ट होता है तो जिस प्रकार तुम्हें कष्ट होता है (उसी प्रकार) उन्हें भी कष्ट होता है और तुम तो अल्लाह से उस असीम-कृपा की आशा रखते हो जिस की वे आशा नहीं रखते तथा अल्लाह बहुत जानने वाला एवं हिक्मत वाला है।१०५। (रुकू १५/१२)

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ۭ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآىِٕنِيْنَ خَصِيْمًا

निस्सन्देह हम ने तेरी ओर सच्चाई पर आधारित यह किताब इसलिए उतारी है कि तू लोगों के बीच इस (सच) के द्वारा निर्णय करे, जो अल्लाह ने तुझे दिखाया है और तू ख़यानत करने वालों की ओर से झगड़ने वाला न बन।१०६।

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا

और अल्लाह से (उस की) क्षमा माँग। निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।१०७।

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَھُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِــيْمًا

और तू उन लोगों की ओर से झगड़ा न कर जो अपने-आप से ख़यानत करते हैं और जो लोग ख़यानत करने में आगे बढ़े हुए एवं महापापी हों अल्लाह उन्हें पसन्द नहीं करता।१०८।

يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَھُوَ مَعَھُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا

वे लोगों से तो छिपते हैं, परन्तु अल्लाह से नहीं छिप सकते, क्योंकि जब रात को वे ऐसी बातों के बारे में परामर्श कर रहे होते हैं जिन्हें अल्लाह पसन्द नहीं करता तो वह उन के पास होता है तथा जो कुछ वे कर रहे हैं अल्लाह उसे मिटाने वाला है।१०९।

هَآنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿١١٠﴾

सुनो ! तुम वे लोग हो जो उन का पक्ष लेकर इस जीवन में झगड़ते रहे हो, परन्तु क़ियामत के दिन उनकी ओर से अल्लाह के साथ कौन झगड़ेगा या कौन उन का संरक्षक होगा ? ।११०।

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١١١﴾

और जो व्यक्ति बुरा काम करेगा अथवा अपनी जान पर अत्याचार करेगा, फिर अल्लाह से (अपने पापों की) क्षमा माँगेगा तो वह अल्लाह को बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला पाएगा ।१११।

وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١١٢﴾

और जो व्यक्ति कोई भी बुराई करेगा तो उस का कर्म उसी पर (उलटा हो कर) पड़ेगा और अल्लाह बहुत जानने वाला एवं हिक्मत वाला है ।११२।

وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓئَةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿١١٣﴾ ع

और जो व्यक्ति कोई अपराध या पाप करे, फिर उसे किसी निरपराध पर थोप दे (तो समझो) उस ने एक झूठ और खुले-खुले पाप का बोझ उठा लिया।११३। (रुकू १६/१३)

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَىْءٍ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٤﴾

और यदि तुझ पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती तो (शत्रु अपने बुरे इरादे में सफल हो जाते, सो) उन में से एक दल इस बात का दृढ़ संकल्प कर चुका था कि तेरी हत्या कर दे और वे अपने सिवा किसी की हत्या नहीं करते और तुझे कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकते तथा अल्लाह ने तुझ पर किताब और हिक्मत उतारी है और जो कुछ तू नहीं जानता था वह तुझे सिखाया है और तुझ पर अल्लाह की बड़ी कृपा है ।११४।

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١١٥﴾

उन लोगों के परामर्शों को छोड़ कर जो दान देने, भलाई की बात करने या लोगों में सुधार करने की आज्ञा देते हैं उन के बहुत से परामर्शों में कोई भलाई नहीं होती और जो व्यक्ति अल्लाह की प्रसन्नता पाने के लिए ऐसा करे (अर्थात् नेक परामर्श दे) हम उसे शीघ्र ही बहुत बड़ा प्रतिफल देंगे ।११५।

وَمَن يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٦﴾ ع

और जो व्यक्ति भी हिदायत के भली-भाँति खुल जाने के बाद इस रसूल से मतभेद ही करता चला जाएगा और मोमिनों के मार्ग को छोड़ कर किसी दूसरे मार्ग का अनुसरण करेगा, हम उसे उसी वस्तु के पीछे लगाएँगे जिस के पीछे वह[1] पड़ा हुआ है तथा उसे नरक में डालेंगे और वह बहुत बुरा ठिकाना है ।११६। (रुकू १७/१४)

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١١٧﴾

अल्लाह इस पाप को कदापि क्षमा नहीं करेगा कि उस का कोई साझी बनाया जाए और जो पाप इस से छोटा होगा उसे जिस के लिए चाहेगा क्षमा कर देगा, परन्तु जो किसी को अल्लाह का साझी बनाए तो (समझो) वह सीधी राह से दूर भटक गया ।११७।

إِن يَدْعُونَ مِن دُونِهِ إِلَّا إِنَاثًا وَإِن يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَّرِيدًا ﴿١١٨﴾

वे अल्लाह को छोड़ कर निर्जीव[2] चीज़ों के सिवा किसी को नहीं पुकारते बल्कि वे उद्दण्डी शैतान के सिवा और किसी को नहीं पुकारते ।११८।

1. अर्थात् वह रसूल और आप के साथियों को नष्ट करना चाहता है, हम वही विनाश उस के भाग में लिख देंगे।

2. हम ने अरबी मुहावरा के अनुसार मूल शब्द 'इनासा' का अर्थ निर्जीव किया है। देखिए मुफ़रदाते राग़िब, लिसानुल् अरब, तफ़सीर फ़तहुल्बयान प्रति नं० 2 पृष्ठ नं० 316 ।

لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿۱۱۹﴾

उस शैतान को जिसे अल्लाह ने अपने पास से दूर कर दिया है और जिस ने यह कहा था कि मैं अवश्य ही तेरे बन्दों से एक निश्चित भाग लूँगा ।११९।

وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿۱۲۰﴾

और उन्हें निश्चय ही पथभ्रष्ट करूँगा और निश्चय ही उन्हें बड़ी-बड़ी आशाएँ दिलाऊँगा तथा अवश्य ही उन से यह इच्छा करूँगा कि वे चौपायों के कान काटें। इसी प्रकार यह भी चाहूँगा कि वे अल्लाह की मख़्लूक़[1] में परिवर्तन करें और जो अल्लाह को छोड़ कर शैतान को मित्र बनाए तो समझो कि वह खुले-खुले घाटे में पड़ गया ।१२०।

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۱۲۱﴾

वह (शैतान) उन से प्रतिज्ञा करता है तथा उन्हें आशाएँ दिलाता है और शैतान उन से छल-कपट की बातों के सिवा किसी दूसरी बात की प्रतिज्ञा नहीं करता ।१२१।

اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۡ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ﴿۱۲۲﴾

इन लोगों का ठिकाना तो नरक है और वे उस से भागने की कहीं जगह नहीं पाएँगे। ।१२२।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿۱۲۳﴾

और जो लोग ईमान लाए हैं और उन्होंने शुभ-कर्म किए हैं हम उन्हें अवश्य ऐसे बागों में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती होंगी तथा वे उन में सदा निवास करते चले जाएँगे। यह अल्लाह का सच्चा वादा है और अल्लाह से बढ़ कर किस की बात सच्ची हो सकती है ? ।१२३।

1. अर्थात् वे मानव-स्वभाव को जो तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर ध्यान दिलाता है—**बदल कर** शिर्क (अनेकेश्वरवाद) का रिवाज क़ायम करना चाहते हैं।

لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۲۴﴾

न तो तुम्हारी मनोकामनाओं के अनुसार और न अहले किताब की मनोकामनाओं के अनुसार (होने वाला) है, अपितु जो व्यक्ति बुरे काम करेगा उसे उन के अनुसार बदला दिया जाएगा तथा वह अल्लाह के सिवा न तो किसी को अपना मित्र पाएगा और न ही सहायक ।१२४।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿۱۲۵﴾

और जो लोग चाहे पुरुष हों अथवा स्त्रियाँ मोमिन होने की अवस्था में नेक काम करेंगे तो वे स्वर्ग में प्रवेश करेंगे तथा उन पर खजूर की गुठली के छेद के बराबर (तनिक) भी अत्याचार नहीं किया जाएगा ।१२५।

وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿۱۲۶﴾

और उस व्यक्ति से बढ़ कर किस का धर्म अच्छा हो सकता है जिस ने अच्छे ढंग से काम करते हुए अपने-आप को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया हो और इब्राहीम के धर्म पर चलने वाला हो जो सीधी राह पर चलने वाला था तथा अल्लाह ने इब्राहीम को अपना घना मित्र बनाया था ।१२६।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿۱۲۷﴾ ع ۱۸/۱۵

और जो कुछ आसमानों तथा ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और अल्लाह प्रत्येक बात का पूरा-पूरा ज्ञान रखता है ।१२७। (रुकू १८/१५)

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا

और लोग तुझ से (एक से अधिक) स्त्रियों (से विवाह करने) के बारे में (आदेश) पूछते हैं। तू उन्हें कह दे कि अल्लाह तुम्हें उन के बारे में आदेश दे चुका है तथा जो आदेश इस किताब में (दूसरे[1] स्थान पर) तुम्हें पढ़ कर सुनाया गया है, वह उन अनाथ स्त्रियों के

1. देखिए सूरः निसा आयत नं० 4।

تُؤْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ اَنْ تَنْكِحُوهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿۱۲۸﴾

सम्बन्ध में है जिन्हें तुम उन के नियुक्त किए हुए हक़ (महर) नहीं देते, परन्तु उन से विवाह करना चाहते हो एवं कमज़ोर[1] लड़कियों[2] के बारे में है और तुम्हें यह आदेश दिया गया था कि अनाथों के साथ न्याय का व्यवहार करते रहो तथा जो भला काम भी तुम करो निस्सन्देह अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।१२८।

وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا وَالصُّلْحُ خَيْرٌ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۲۹﴾

और यदि किसी स्त्री को अपने पति की ओर से बुरा व्यवहार करने अथवा (अपनी ओर से) मुँह मोड़ लेने का भय हो तो उन दोनों पर कोई पाप नहीं कि वे किसी प्रकार आपस में समझौता[3] कर लें और मेल कर लेना सब से अच्छा है और लोगों में कंजूसी[4] (का विचार) पैदा कर दिया गया है और यदि तुम भले काम करो तथा संयम धारण करो तो (याद रखो) जो कुछ तुम करते हो निस्सन्देह अल्लाह उस से जानकारी रखता है।१२९।

---

1. अर्थात् अनाथ लड़कियाँ, क्योंकि वे स्वयं अपने अधिकार नहीं ले सकतीं।

2. मूल शब्द 'विल्दान' सन्तान (बालक और बालिका दोनों) पर बोला जाता है, किन्तु इस स्थान पर लड़कियाँ अभीष्ट हैं क्योंकि विवाह की सम्भावना उन्हीं से हो सकती है।

3. यदि स्त्री यह समझे कि बात बिगड़ जाएगी और यह कि दुःख बढ़ता ही रहेगा अतः उचित यही है कि मैं अपने अधिकारों में से कुछ छोड़ दूँ। यदि न्यायाधीश समझे कि ऐसा करने में कोई आपत्ति नहीं तो वह ऐसा करने की आज्ञा दे सकता है।

4. लोग कन्जूसी की ओर झुके रहते हैं और ख़र्च करने से कतराते हैं, चाहे ख़र्च करना लाभदायक ही क्यों न हो।

وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ۭ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

और चाहे तुम न्याय करने की कितनी भी इच्छा करो फिर भी तुम अपनी पत्नियों में न्याय नहीं कर सकते। अतः तुम (एक की ओर ही) न झुक[1] जाओ (जिसका परिणाम यह निकले) कि उस दूसरी को बीच में लटकती हुई चीज की तरह छोड़ दो और यदि तुम आपस में मेल-मिलाप कर लो तथा संयम से काम लो तो (याद रखो) निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।१३०।

وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ۝

और यदि वे दोनों अलग-अलग हो जाएँ तो अल्लाह उन में से हर-एक को अपनी ओर से वृद्धि प्रदान कर के धनवान बना देगा। अल्लाह वृद्धि प्रदान करने वाला और हिक्मत वाला है।१३१।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ۭ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ۝

और जो कुछ आसमानों में है तथा जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और जिन लोगों को तुम से पहले किताब दी गई थी हम ने उन्हें भी तथा तुम्हें भी ताकीदी आदेश दे रखा है कि तुम अल्लाह के लिए संयम धारण करो और यदि तुम इन्कार करोगे तो (याद रखो कि) जो कुछ आसमानों में है तथा जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और अल्लाह ग़नी (बेपरवा) एवं अनगिनत स्तुतियों का मालिक है।१३२।

1. साधारण रूप में बराबरी का व्यवहार न करने की दशा में एक से अधिक पत्नियाँ करने से रोका गया है अन्यथा सब से हार्दिक व्यवहार एक जैसा नहीं हो सकता तथा न ही दिल पर कोई प्रतिबन्ध लग सकता है।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٣٢﴾

और जो कुछ आसमानों में है तथा जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और हर प्रकार की आवश्यक रक्षा करने वाला है ।१३३।

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّھَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿١٣٣﴾

हे लोगो ! यदि वह चाहे तो तुम्हें मार दे और फिर दूसरे लोगों को ले आए तथा अल्लाह ऐसा करने का सामर्थ्य रखता है ।१३४।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ﴿١٣٤﴾ ع

जो व्यक्ति सांसारिक बदला चाहता हो तो (वह सुन ले कि) अल्लाह के पास लौकिक एवं पारलौकिक (दोनों प्रकार के) बदले हैं और अल्लाह बहुत सुनने वाला एवं देखने वाला है ।१३५। (रुकू १९/१६)

يٰٓاَيُّھَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاۗءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓي اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۣ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٣٥﴾

हे ईमान वालो ! तुम पूर्ण रूप से न्याय पर क़ायम रहने वाले और अल्लाह[1] के लिए गवाही देने वाले बन जाओ, यद्यपि तुम्हारी गवाही तुम्हारे अपने या माता-पिता और परिजनों के विरुद्ध ही पड़ती हो। यदि वह (जिस के लिए गवाही दी जाए) धनवान है या निर्धन है तो (प्रत्येक दशा में) अल्लाह उन दोनों से (तुम) सब से बढ़ कर भलाई करने वाला है। अतः तुम तुच्छ कामना का अनुसरण न किया करो ताकि तुम न्याय कर सको और यदि तुम (किसी गवाही को) छिपाओगे अथवा (सच्चाई प्रकट करने से) कतराओगे तो (याद रखो कि) जो कुछ तुम करते हो निस्सन्देह अल्लाह उस से जानकारी रखता है ।१३६।

1. अर्थात् अल्लाह के लिए सच्ची गवाही दिया करो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ
نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ
يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿١٣٧﴾

हे ईमान वालो ! अल्लाह और उस के रसूल पर एवं इस किताब पर ईमान लाओ जो उस ने अपने रसूल पर उतारी है तथा उस किताब पर भी जो इस से पहले उस ने उतारी है और जो व्यक्ति अल्लाह और उस के फ़रिश्तों तथा उस की किताबों एवं उस के रसूलों और पीछे आने वाले दिन का इन्कार करे तो (समझ लो कि) वह घोर पथ-भ्रष्टता में पड़ गया है ।१३७।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا
لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ؕ ﴿١٣٨﴾

और जो लोग ईमान लाए फिर उन्होंने इन्कार कर दिया, फिर ईमान लाए फिर इन्कार कर दिया, फिर इन्कार में और भी बढ़ गए । अल्लाह उन्हें कभी क्षमा नहीं कर सकता और न उन्हें कोई (मुक्ति का) मार्ग दिखा सकता है ।१३८।

بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ ﴿١٣٩﴾

तू मुनाफ़िक़ों को यह समाचार सुना दे कि उन के भाग्य में दुःखदाई अज़ाब है ।१३९।

الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ
الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ
لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ ﴿١٤٠﴾

जो लोग मोमिनों को छोड़ कर इन्कार करने वालों को मित्र बनाते हैं । क्या वे उन से अपनी इज़्ज़त (सम्मान) चाहते हैं तो (वे याद रखें कि) हर तरह की इज़्ज़त अल्लाह ही के हाथ में है ।१४०।

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِى الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ
اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ
حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِىْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ۖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ

और उस ने इस (क़ुर्आन) में तुम्हारे लिए यह आदेश उतारा है कि जब तुम अल्लाह की आयतों के बारे में इन्कार की बातें सुनो अथवा उन की हँसी उड़ाते सुनो तो उन (हँसी उड़ाने वालों) के साथ (उस समय तक) न बैठो जब तक कि वे उस को छोड़ कर किसी दूसरी बात में न लग जाएँ, अन्यथा तुम इस दशा में निश्चय ही उन्हीं जैसे समझे

إِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعًا ﴿۱۴۱﴾

जाओगे। निस्सन्देह अल्लाह मुनाफ़िक़ों और इन्कार करने वालों को नरक में इकट्ठा कर के ही छोड़ेगा।१४१।

الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْا أَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ وَإِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ قَالُوْا أَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿۱۴۲﴾ ع ۲۰

जो (मुनाफ़िक़) तुम्हारे सर्वनाश की प्रतीक्षा करते रहते हैं और यदि तुम्हें अल्लाह की ओर से विजय प्राप्त हो तो तुम्हें कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और यदि इन्कार करने वालों का पल्ला कुछ भारी रहे तो उन्हें कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे ऊपर ग़ालिब नहीं आ गए थे तथा हम ने तुम्हें मोमिनों से नहीं बचाया था? अतएव अल्लाह तुम्हारे बीच क़ियामत के दिन निर्णय करेगा और अल्लाह इन्कार करने वालों को मोमिनों पर कभी ग़लबा नहीं देगा।१४२। (रुकू २०/१७)

إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوْا إِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ إِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۴۳﴾

मुनाफ़िक़ निश्चय ही अल्लाह को धोखा देना चाहते हैं और वह (अल्लाह) उन्हें उन के धोखे का दण्ड देगा तथा जब वे नमाज़ (की ओर जाने) के लिए खड़े होते हैं तो सुस्ती से खड़े होते हैं। वे लोगों के लिए दिखावा करते हैं और अल्लाह को कम ही याद करते हैं।१४३।

مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ لَآ إِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ إِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۱۴۴﴾

उन की हालत (अल्लाह के ध्यान और सुस्ती के) बीच-बीच होती है। न वे इन (मोमिनों) के साथ हैं तथा न वे उन (इन्कार करने वालों) के साथ हैं और जिस का अल्लाह विनाश कर दे तू उस के लिए कोई (मुक्ति का) मार्ग नहीं पाएगा।१४४।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٤٥﴾

हे ईमान वालो ! मोमिनों को छोड़ कर इन्कार करने वालों को अपना मित्र न बनाओ। क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह को अपने ख़िलाफ़ खुले रूप में आरोप लगाने का अवसर दो।१४५।

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ﴿١٤٦﴾

निस्सन्देह मुनाफ़िक़ नरक की गहराई के सब से निचले हिस्से में होंगे और तू उन का कोई भी सहायक नहीं पाएगा।१४६।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٤٧﴾

सिवाय उन लोगों के जिन्हों ने तौबः (पश्चाताप) कर ली और अपना सुधार कर लिया तथा अल्लाह के द्वारा अपनी रक्षा चाही एवं अपनी उपासना को अल्लाह ही के लिए विशिष्ट कर लिया। सो ये लोग मोमिनों में शामिल हैं और अल्लाह मोमिनों को शीघ्र ही बहुत बड़ा प्रतिफल देगा।१४७।

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ﴿١٤٨﴾

यदि तुम धन्यवाद करो और ईमान ले आओ तो अल्लाह तुम्हें अज़ाब दे कर क्या करेगा ? और अल्लाह क़दरदान अर्थात् परख करने वाला और जानने वाला है।१४८।

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿١٤٩﴾

अल्लाह् बुरी बात के ज़ाहिर करने को पसन्द नहीं करता, किन्तु जिस पर अत्याचार किया गया हो (वह उस अत्याचार को ज़ाहिर कर सकता है) और अल्लाह् बहुत ही सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है।१४९।

اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿١٥٠﴾

यदि तुम किसी नेकी को ज़ाहिर करो अथवा उसे छिपाए रखो या किसी की बुराई को क्षमा कर दो तो (जान लो कि) निस्सन्देह अल्लाह् बहुत क्षमा करने वाला और बड़ा शक्तिशाली है।१५०।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١٥١﴾

जो लोग अल्लाह् और उसके रसूलों का इन्कार करते हैं और अल्लाह् एवं उस के रसूलों में फ़र्क़ (विभेद) करना चाहते हैं और कहते हैं कि हम कुछ (रसूलों) को मानेंगे तथा कुछ (रसूलों) का इन्कार करेंगे और चाहते हैं कि इस के बीच का कोई रास्ता अपनाएँ।१५१।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٥٢﴾

वे लोग निश्चय ही पक्के इन्कारी हैं और इन्कार करने वालों के लिए हम ने अपमान-जनक अज़ाब तय्यार किया हुआ है।१५२।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٥٣﴾ ع

और जो लोग अल्लाह् तथा उस के सब रसूलों पर ईमान ले आए और उन्होंने इन रसूलों में से किसी के बीच भी फ़र्क़ नहीं किया वे लोग ऐसे हैं कि वह उन्हें शीघ्र ही उनके प्रतिफल प्रदान करेगा और अल्लाह् बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।१५३। (रुकू २१/१)

يَسْـَٔلُكَ أَهْلُ الْكِتٰبِ أَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ
السَّمَآءِ فَقَدْ سَأَلُوْا مُوْسٰٓى أَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا
أَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ
ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ
فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا
مُّبِيْنًا ﴿۱۵۳﴾

अहले किताब[1] तुझ से पूछते हैं कि तू आसमान से **एक किताब** उन पर उतारे (इस पर आश्चर्य न कर) क्योंकि उन्होंने मूसा से इस से भी बड़ा प्रश्न किया था। उन्होंने उससे कहा था कि तू हमें अल्लाह को प्रत्यक्ष रूप में दिखा दे। तब उनके अत्याचार के कारण उन्हें **घातक** अज़ाब ने पकड़ लिया और उन्होंने बछड़े को जब कि उनके पास खुले-खुले चमत्कार आ चुके थे (अपना पूज्य) बना लिया। फिर हम ने इस (अपराध) को भी क्षमा कर दिया तथा हम ने मूसा को खुला-खुला ग़ल्बा (प्रभुत्व) दिया।१५४।

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ
ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي
السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿۱۵۴﴾

और हम ने उन से दृढ़ प्रतिज्ञा लेते हुए उन पर तूर[2] को ऊँचा किया तथा हम ने उन से कहा कि इस द्वार से विनम्रता-पूर्वक प्रवेश करो और हम ने उन से यह भी कहा कि सब्त (शनिवार के सम्बन्ध) में सीमा का उल्लंघन न करो और हम ने उन से एक दृढ़ प्रतिज्ञा ली।१५५।

---

1. 'अहले किताब' से तात्पर्य ईसाई और यहूदी हैं, किन्तु इस स्थान पर केवल यहूदी अभीष्ट हैं, क्योंकि आगे इस बात का वर्णन है कि वे हज़रत मर्यम पर झूठा आरोप लगाते थे और इन्होंने हज़रत मसीह की फाँसी द्वारा हत्या करने का प्रयत्न किया तथा यह यहूदियों का ही कुकर्म था, ईसाइयों का नहीं।

2. अर्थात् उन्हें तूर-पर्वत की तलहटी तक ले गए और उन्हें अपने सामने ऊँचा पर्वत दिखाई देने लगा।

हज़रत अबूबकर फ़रमाते हैं कि हमें सामने एक ऊँची चट्टान दिखाई दी जिस की छाया थी। (बुख़ारी शरीफ़, बाबुल हिजरत)।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۭ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝

फिर उन के अपनी प्रतिज्ञा भंग करने के कारण तथा अल्लाह् की आयतों का इन्कार करने और उन के नबियों की हत्या[1] करने के विफल प्रयत्नों के कारण और उन के इस कथन के कारण कि हमारे दिल पर्दों में हैं, किन्तु (पर्दों में) नहीं, अपितु अल्लाह् ने उन के इन्कार करने के कारण उन (के दिलों) पर मुहर कर दी है। अत: वे बिल्कुल ईमान नहीं लाते।१५६।

وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ۝

और उनके इन्कार करने और मर्यम पर एक बहुत बड़ा झूठा आरोप[2] लगाने के कारण।१५७।

وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ

और उनके (यह बात) कहने के कारण कि हम ने अल्लाह् के रसूल मसीह्-ईसा पुत्र-मर्यम की निश्चय ही हत्या कर दी है (यह दण्ड उन्हें मिला है) वास्तव में न उन्हों ने उस की हत्या की और न उन्होंने उसे सलीब पर लटका कर मारा, अपितु वह उन के लिए (मस्लूब के) सदृश[3] बना दिया गया तथा जिन लोगों ने उस (मसीह के सलीब से जीवित उतारे जाने) के बारे

1. इस स्थान पर समस्त नबियों की हत्या करने का वृत्तान्त है और सब इतिहास इस बात पर सहमत हैं कि सारे नबियों की यहूदियों ने हत्या नहीं की। अतएव इस स्थान पर हत्या करने के प्रयत्नों का वृत्तान्त है। इस स्थान पर हत्या से अभिप्राय हत्या करने का इरादा है अथवा ऐसे कष्ट तथा दु:ख हैं जिन का परिणाम प्राय: हत्या निकलता है।

2. देखिए सूर: 'निसा' टिप्पणी आयत नं० 154।

3. अभिप्राय यह है कि हज़रत मसीह् को सलीब पर लटकाने के बाद उस के मूर्छित हो जाने के कारण कुछ लोगों को भ्रम हुआ कि सलीब पर उस की मृत्यु हो गई है। अरबी में 'सलब' शब्द सलीब पर चढ़ाने तथा हड्डियाँ तोड़ने के लिए प्रयुक्त होता है, परन्तु वास्तविकता यह है कि मसीह की हड्डियाँ नहीं तोड़ी गईं। इसीलिए कहा गया है कि उसे सलीब पर नहीं मारा गया।

لَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ ۚ مَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ﴿١٥٨﴾

में मतभेद किया है, निस्सन्देह वे उस (के जीवित उतारे जाने के कारण) आशंका में पड़े हुए हैं। उन्हें उस के बारे में कुछ भी वास्तविक ज्ञान नहीं है। हाँ! केवल एक भ्रम[1] का अनुसरण कर रहे हैं और उन्होंने इस (घटना की वास्तविकता) को पूर्ण-रूप से नहीं समझा (और जो समझा वह भी ग़लत समझा[2] है) ।१५८।

بَل رَّفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٥٩﴾

(वास्तव में) अल्लाह ने उसे सम्मानित किया था (सलीब[3] पर उस की मौत नहीं हुई) क्योंकि अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है ।१५९।

وَإِن مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ﴿١٦٠﴾

अहले किताब में से एक भी ऐसा नहीं जो इस (घटना) पर अपनी मृत्यु[4] से पहले ईमान न लाता रहे और वह क़ियामत के दिन उन पर गवाह होगा ।१६०।

---

1. अर्थात् समस्त परिस्थितियाँ हज़रत मसीह के सलीब पर मरने के विरुद्ध थीं, किन्तु यहूदी चाहते थे कि मसीह सलीब पर मरें। अतः वे अपने ही भ्रम का शिकार हो गए और वे मसीह की सलीब पर मृत्यु हो जाने का विश्वास करते रहे।

2. आयत का अर्थ यह है कि उन्होंने इस घटना की वास्तविकता को पूर्ण रूप से नहीं समझा और न ही अपने भ्रम को पूर्ण विश्वास में बदला। इस आयत का एक अर्थ यह भी है कि यहूदियों ने हज़रत ईसा की हत्या नहीं की।

3. तौरात में लिखा है कि जिस की सलीब पर मौत हो जाए वह लानती होता है। (व्यवस्था विवरण नामक पुस्तक 21:23)

4. अहले किताब में से यहूदी तथा ईसाई अपनी मृत्यु से पहले यह स्वीकार करते रहेंगे कि मसीह सलीब पर मारे गए। यहूदी इस कारण कि वे मसीह को लानती सिद्ध करना चाहते हैं तथा ईसाई इसलिए कि वे कफ़्फ़ारा की नींव इस पर रखते हैं। अल्लाह कहता है कि जब उन में से कोई व्यक्ति मरेगा तो उस पर यह रहस्य खुल जाएगा कि हज़रत मसीह की मौत सलीब पर नहीं हुई अपितु वह सलीब से जीवित ही उतार लिए गए थे।

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ﴿۱۶۱﴾

अतः उस अत्याचार के कारण जो यहूदियों की ओर से हुआ हम ने वे पवित्र पदार्थ जो पहले उन के लिए हलाल किए गए थे उन के लिए हराम[1] ठहरा दिए और फिर अल्लाह की राह से बहुतों को रोकने के कारण (उन्हें यह दण्ड मिला) ।१६१।

وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶۲﴾

और उन के सूदी कारोबार करने के कारण भी, जब कि उन्हें इस से रोका[2] गया था तथा लोगों का धन बिना किसी अधिकार के हड़प करने के कारण (उन को यह दण्ड मिला) और हमने उन में से इन्कार करने वालों के लिए पीड़ा-दायक अज़ाब तय्यार किया है ।१६२।

لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِى الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۶۳﴾ ع ۲۲/۲

किन्तु इन (यहूदियों) में से जो लोग ज्ञान में पक्के हैं वे तथा मोमिन (मुसलमान) भी उस (ईशवाणी) पर ईमान लाते हैं जो तुझ पर उतारी गई है और जो कुछ तुझ से पहले उतारा गया था और विशेष कर नमाज़ को विधिवत पूरा करने वाले तथा ज़कात देने वाले और अल्लाह पर एवं पीछे आने वाले दिन पर ईमान रखने वाले लोगों को हम बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे ।१६३।
(रुकू २२/२)

1. अर्थात् हज़रत मसीह की शिक्षा के इन्कार के कारण उन पर धर्म का द्वार वन्द कर दिया गया ।

2. निर्गमन 22:25 और लैव्यव्यवस्था 25:36,37 में यहूदियों से व्याज लेना अवैध ठहराया गया है, किन्तु व्यवस्था विवरण नामक किताब 23:20 में यहूदियों को छोड़ कर दूसरे लोगों से इस्राइलियों को व्याज लेने की अनुमति दी गई है । वास्तव में यह शब्दों का हेर-फेर है जो क़ुर्आन करीम के कथनानुसार यहूदियों ने अपने कारोवार के लिए बाइबिल में किया है अन्यथा अल्लाह ने उन्हें प्रत्येक प्रकार के व्याजी कारोबार से रोका हुआ था । अतः जो कुछ बाइबिल में लिखा हुआ है वह यहूदियों की ओर से शब्दों में हेर-फेर और तवदीली के कारण है ।

إِنَّآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ كَمَآ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ نُوحٍ وَٱلنَّبِيِّـۧنَ مِنۢ بَعْدِهِۦ ۚ وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰٓ إِبْرَٰهِيمَ وَإِسْمَـٰعِيلَ وَإِسْحَـٰقَ وَيَعْقُوبَ وَٱلْأَسْبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَـٰرُونَ وَسُلَيْمَـٰنَ ۚ وَءَاتَيْنَا دَاوُۥدَ زَبُورًا ﴿١٦٣﴾

जिस प्रकार हम ने नूह पर और उस के बाद दूसरे सभी नबियों पर वह्य उतारी थी। निस्सन्देह हम ने तुम पर भी वह्य उतारी है तथा हम ने इब्राहीम और इस्माईल तथा इस्हाक़ और याक़ूब एवं (उस की) सन्तान पर और ईसा, अय्यूब, यूनुस, हारून तथा सुलेमान पर भी वह्य उतारी थी और हम ने दाऊद को भी एक किताब दी थी।१६४।

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَـٰهُمْ عَلَيْكَ مِن قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ ٱللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا ﴿١٦٤﴾

और कुछ ऐसे रसूल हैं जिन का समाचार हम (इस से) पहले तुझे दे चुके हैं तथा कुछ ऐसे रसूल हैं जिन की चर्चा हम ने तुझ से नहीं की और अल्लाह ने मूसा से बड़े अच्छे ढंग से बात-चीत की थी।१६५।

رُّسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى ٱللَّهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ ٱلرُّسُلِ ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٦٥﴾

और हम ने उन्हें (मूसा के साथ वर्णित रसूलों) को शुभ-समाचार देने वाले तथा सावधान करने वाले बना कर भेजा था ताकि लोगों का इन रसूलों के (प्रादुर्भाव के) बाद अल्लाह पर कोई आरोप न रहे और अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है।१६६।

لَّـٰكِنِ ٱللَّهُ يَشْهَدُ بِمَآ أَنزَلَ إِلَيْكَ ۖ أَنزَلَهُۥ بِعِلْمِهِۦ ۖ وَٱلْمَلَـٰٓئِكَةُ يَشْهَدُونَ ۚ وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ شَهِيدًا ﴿١٦٦﴾

किन्तु अल्लाह उस (वाणी) के द्वारा जो उसने तुझ पर उतारी है गवाही देता है कि उस ने उसे अपने ज्ञान के आधार पर उतारा है और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं और अल्लाह की गवाही सब से बढ़ कर है।१६७।

إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَصَدُّوا۟ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ قَدْ ضَلُّوا۟ ضَلَـٰلًۢا بَعِيدًا ﴿١٦٧﴾

जिन लोगों ने इन्कार किया और लोगों को अल्लाह की राह से रोका है वे निश्चय ही घोर पथ-भ्रष्टता में पड़ गए हैं।१६८।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ﴿١٦٩﴾

जिन्होंने इन्कार किया और अत्याचार से काम लिया है, अल्लाह उन्हें कभी क्षमा नहीं कर सकता तथा न ही उन्हें नरक के सिवा कोई राह दिखा सकता है ।१६९।

إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٧٠﴾

वे उस (नरक) में लम्बे समय तक रहते चले जाएँगे और यह बात अल्लाह के लिए बहुत आसान है ।१७०।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ مِن رَّبِّكُمْ فَآمِنُوا خَيْرًا لَّكُمْ ۚ وَإِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧١﴾

हे लोगो ! यह रसूल तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से सच ले कर आ चुका है अतएव तुम ईमान ले आओ, यह तुम्हारे लिए अच्छा होगा और यदि तुम इन्कार करोगे तो (याद रखो कि) जो कुछ आसमानों तथा जमीन में है वह निश्चय ही अल्लाह का है और अल्लाह बहुत जानने वाला एवं हिक्मत वाला है ।१७१।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَىٰ مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِّنْهُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۖ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةٌ ۚ انتَهُوا خَيْرًا لَّكُمْ ۚ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ سُبْحَانَهُ أَن يَكُونَ

हे अहले किताब[1] ! तुम अपने धर्म के विषय में हद से न बढ़ो और अल्लाह के सम्बन्ध में सच्ची बात के सिवाय कुछ न कहा करो । मर्यम का पुत्र ईसा-मसीह केवल अल्लाह का एक रसूल था और उस (अल्लाह) की ओर से एक बशारत[2] थी जो उस ने मर्यम पर उतारी थी और उसकी ओर से एक दया थी । अतः तुम अल्लाह पर तथा उस के सारे रसूलों पर ईमान लाओ और यूँ न कहो कि खुदा तीन हैं, (इस बात से) रुक जाओ । यह तुम्हारे हित में है । अल्लाह ही अकेला उपास्य है । वह इस बात से पवित्र है कि उस की

1. इस स्थान पर 'अहले किताब' से तात्पर्य ईसाई हैं यहूदी नहीं, क्योंकि यह मन्तव्य जिस का खण्डन किया गया है ईसाइयों का है ।

2. मूल शब्द 'कलिमा' का अर्थ बशारत अर्थात् शुभ-समाचार भी होता है । (देखिए फ़तहुल्बयान)

لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٧١﴾

सन्तान हो। जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब उसी का है तथा अल्लाह की सुरक्षा के बाद किसी दूसरी रक्षा की आवश्यकता नहीं।१७२। (रुकू २३/३)

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَ لَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَ مَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ يَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿١٧٢﴾

मसीह कदापि इस बात का बुरा नहीं मनाएगा कि वह अल्लाह का एक बन्दा (भक्त) समझा जाए और न ही ख़ुदा के क़रीबी (फ़रिश्ते इस बात का बुरा मनाएँगे) और जो लोग उस (अल्लाह) की उपासना करने को बुरा मनाएँ तथा अभिमान करें तो वह (अल्लाह) उन सब को अपने पास एकत्रित करेगा।१७३।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَ يَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَ اسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّ لَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّ لَا نَصِيْرًا ﴿١٧٣﴾

फिर जो लोग मोमिन थे और उन्होंने (ईमान के अनुकूल) शुभ कर्म किए थे, वह उन्हें उन का पूरा-पूरा प्रतिफल प्रदान करेगा तथा अपनी कृपा से उन्हें और भी बढ़ा कर देगा एवं जिन लोगों ने बुरा मनाया था और अभिमान किया था उन्हें वह पीड़ादायक अज़ाब देगा। वे अल्लाह के सिवा न तो किसी को अपना मित्र पाएँगे तथा न ही सहायक।१७४।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿١٧٤﴾

हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से एक सुस्पष्ट प्रमाण आ चुका है और हम ने तुम्हारी ओर एक अति उज्ज्वल नूर (प्रकाश) उतारा है।१७५।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ اعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَ فَضْلٍ ۙ وَّ يَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿١٧٥﴾

अत: जो लोग अल्लाह पर ईमान ला चुके हैं और (उन्होंने) उस के द्वारा अपनी रक्षा की है, उन को वह अवश्य अपनी एक महान दया और एक महान कृपा में प्रविष्ट करेगा तथा उन्हें अपनी ओर आने वाली एक सीधी राह दिखाएगा।१७६।

يَسْتَفْتُوْنَكَ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِي الْكَلٰلَةِ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗٓ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَآ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ وَاِنْ كَانُوْٓا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۷۷﴾

वे तुझ से (एक प्रकार के 'कलाला'[1] के विषय में) धर्म का आदेश (फ़तवा) पूछते हैं। तू कह दे कि अल्लाह तुम्हें ऐसे 'कलाला' के विषय में आदेश सुनाता है। यदि कोई ऐसा व्यक्ति मर जाए जिस की कोई सन्तान न हो, परन्तु उसकी एक बहन हो तो जो कुछ उस ने छोड़ा हो उस माल का आधा भाग उस बहन का होगा और यदि वह (बहन) मर जाए और उस की सन्तान न हो तो वह (उस का भाई) उस (के सारे माल) का वारिस होगा और यदि दो बहनें हों तो जो कुछ उस भाई ने छोड़ा हो उस का दो तिहाई भाग उन बहनों का होगा और यदि वारिस भाई-बहन हों, पुरुष भी तथा स्त्रियाँ भी, तो उन में से पुरुष का भाग दो स्त्रियों के भाग के बराबर होगा। अल्लाह तुम्हारे लिए यह बातें पथ-भ्रष्ट हो जाने (के डर) के कारण वर्णन करता है और अल्लाह प्रत्येक बात को भली-भाँति जानता है।१७७। (रुकू २४/४)

1. मेरे एक अध्यापक कहा करते थे कि इस आयत में 'कलाला से अभिप्राय हज़रत मसीह हैं, क्योंकि पहले उन्हीं का वृत्तान्त है। कलाला के छोड़े हुए माल के बटवारे के सम्बन्ध में एक आदेश सूर: निसा आयत नं० 13 में आया है जिस का भाव यह था कि यदि कलाला की मृत्यु हो जाए और यदि उसकी माता की ओर से बहन-भाई हों तो उन को माल का छठा या तीसरा भाग मिलेगा, किन्तु इस आयत में ऐसे कलाला का वर्णन है जिस के बहन-भाई माता और पिता दोनों की ओर से हों या केवल बाप की ओर से।
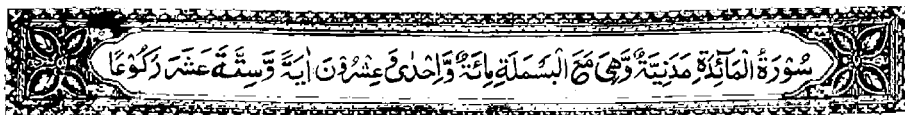
सूरः अल्-माइदः

[यह सूरः मदनी[1] है और बिसमिल्लाह् सहित इस की एक सौ इक्कीस आयतें एवं सोलह रुकू हैं ।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह् का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ۛ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ②

हे ईमान वालो ! अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करो । तुम्हारे लिए (चरने वाले) चौपाए हलाल (वैध) ठहराए गए हैं सिवाय उन चौपायों के जो तुम्हें (क़ुर्आन में) पढ़ कर सुनाए जाएँगे, परन्तु शर्त यह है कि तुम (इस आज्ञा के कारण) एहराम की अवस्था में शिकार करना वैध न समझ लो । निस्सन्देह अल्लाह् जो चाहता है निर्णय करता है ।२।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَاۗىِٕرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَاۗىِٕدَ وَلَآ اٰۗمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۭ وَاِذَا

हे ईमान वालो ! अल्लाह् के निर्धारित निशानों (शाएरुल्लाह्) का अपमान न करो और न आदर वाले महीने का तथा न (हरम की ओर ले जाई जाने वाली) बलि का और न (ऐसी बलियों का) जिन की गरदनों में हरम के लिए बलि होने के चिन्ह के रूप में हार पहनाए गए हों तथा न बैतुलहराम की ओर जाने वाले लोगों का जो अपने रब्ब की कृपा एवं प्रसन्नता की खोज में हैं और जब

1. यह सूरः मदनी है । हुदैबियः की सन्धि से लौटते समय उतरी थी । इस का कुछ भाग मक्का-विजय के वर्ष और कुछ भाग हज्जतुलविदा में उतरा था ।

حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ
صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا وَتَعَاوَنُوْا
عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٣

तुम एहराम खोल दो, तो भले ही शिकार करो, परन्तु किसी जाति के लोगों की यह शत्रुता कि उन्होंने तुम्हें आदरणीय-उपासनागृह (काबा) से रोका था, तुम्हें इस बात पर न उभारे कि तुम ज्यादती करो और तुम नेकी एवं संयम के कामों में परस्पर एक-दूसरे की सहायता करो तथा पाप और अत्याचार की बातों में एक दूसरे की सहायता न किया करो और अल्लाह के लिए संयम धारण करो। अल्लाह का दण्ड निश्चय ही कड़ा होता है।३।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَ
مَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ
وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ
عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ
اَلْيَوْمَ يَىِٕسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ
وَاخْشَوْنِ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ
اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ

तुम्हारे लिए मुर्दार, रक्त, सुअर का माँस और वह जानवर जिस पर (ज़िबह के समय) अल्लाह को छोड़ कर किसी दूसरे का नाम पुकारा गया हो और गला घोंटने या किसी कुण्ठित शस्त्र के घाव से मरा हुआ या ऊँचे स्थान से गिर कर या सींग लगने से मरा हुआ अथवा जिसे किसी हिंसक-पशु ने फाड़ खाया हो सिवाय इस के कि जिसे मरने से पहले तुम ने जिबह कर लिया हो और जिस को किसी देवी-देवता के स्थान पर ज़िबह किया गया हो, हराम (अवैध) ठहराया गया है और तीरों द्वारा हिस्सा मालूम करना भी। यह सब कुछ आज्ञा का उल्लंघन है। जो लोग इन्कार करने वाले हैं वे आज तुम्हारे धर्म (को हानि पहुँचाने) से निराश हो गए हैं। इस लिए तुम उन से न डरो और मुझ से डरो। आज मैं ने तुम्हारे (हित के) लिए तुम्हारा धर्म मुकम्मल (सर्वांगपूर्ण) कर दिया है और तुम पर अपने उपकार को पूरा कर दिया है तथा तुम्हारे लिए धर्म के रूप में इस्लाम को पसन्द किया है, किन्तु जो व्यक्ति

دِينًا فَمَنِ اضْطُرَّ فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّإِثْمٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⓶

भूख के कारण विवश हो जाए तथा वह पाप की ओर झुकने वाला न हो (और वह हराम वस्तुओं में से कुछ खा ले) तो (याद रखो कि) अल्लाह (विवशतावश होने वाली) भूल-चूक को क्षमा करने वाला है एवं बार-बार दया करने वाला है ।४।

يَسْـَٔلُونَكَ مَاذَآ أُحِلَّ لَهُمْ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَٰتُ وَمَا عَلَّمْتُم مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ فَكُلُوا مِمَّآ أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ⓹

(मुसलमान) तुझ से पूछते हैं कि उन के लिए क्या कुछ हलाल (वैध) ठहराया गया है। तू कह दे कि तुम्हारे लिए समस्त पवित्र पदार्थ[1] हलाल (वैध) ठहराए गए हैं और शिकारी जानवर जिन्हें तुम शिकार करने की शिक्षा दे कर सिधा लो। वास्तव में तुम उन्हें उस ज्ञान के द्वारा सिखाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया[2] है। अतः वे जिस शिकार को तुम्हारे लिए रोक रखे उस में से खाओ तथा उस पर अल्लाह का नाम लेलिया करो और अल्लाह के लिए संयम धारण करो। निस्सन्देह अल्लाह शीघ्र लेखा लेने वाला है ।५।

---

1. इस्लाम धर्म का मूल सिद्धान्त यह है कि खाने की वस्तुएँ हलाल हैं, परन्तु शर्त यह है कि वे पवित्र और स्वच्छ हों अर्थात् वे स्वास्थ्य और चाल-चलन पर बुरा प्रभाव न डालती हों अथवा उन का प्रयोग समाज में अशान्ति का कारण भी न बने।

2. अर्थात् सिधाया हुआ शिकारी जानवर जो काम करता है वह उस प्रशिक्षण दाता से मनोनीत किया जाता है और वह मनुष्य है। अतएव सिधाए हुए शिकारी जानवर का मारा हुआ ज़िबह किए हुए के समान होता है। हदीस शरीफ़ में लिखा है कि शिकारी जानवर को छोड़ने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ लिया करो ताकि उस का मारा हुआ हलाल ठहराए गए के समान हो जाए।

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۪ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۫ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۫ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦﴾ ع

आज तुम्हारे लिए सारे पवित्र पदार्थ हलाल (वैध) ठहराए गए हैं और तुम्हारे लिए उन लोगों का (पकाया हुआ) भोजन[1] वैध है जिन्हें किताब दी गई थी और तुम्हारा (पकाया हुआ) भोजन उन के लिए वैध है और पवित्राचरण मोमिन स्त्रियाँ और जिन लोगों को तुम से पहले किताब दी गई थी उन में से पवित्राचरण स्त्रियाँ जब कि तुम उन से विवाह करके उन के महर दे दो तो वे तुम्हारे लिए वैध हैं, किन्तु न तो व्यभिचार करो और न चोरी छिपे मित्र बनाओ और जो व्यक्ति ईमान रखते हुए इन्कार से काम लेता है तो (समझो कि) उस के कर्म नष्ट हो गए और वह परलोक में हानि पाने वालों में से हो गया ।६। (रुकू १/५)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا

हे ईमान लाने वालो ! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने मुँह भी और कुहनियों तक अपने हाथ भी धो लिया करो तथा अपने सिरों का मसह किया करो एवं टखनों तक अपने पाँव (भी धो लिया करो) और यदि तुम जुनुबी (अपवित्र) हो तो स्नान कर लिया करो एवं यदि तुम रोगी हो या यात्रा पर हो (तथा जुनुबी हो) अथवा तुम में से कोई शौचालय से आए और तुम ने स्त्रियों

1. अर्थात् उन का ज़िबह किया हुआ तुम्हारे लिए हलाल है शर्त यह है कि उन पर तक्बीर पढ़ ली जाए। (बुख़ारी किताबुस्सैद) यह आदेश इसलिए दिया कि तौरात के अनुसार हज़रत मूसा के अनुयायियों के सारे भोजन भी वही हैं जिन को इस्लाम ने वैध ठहराया है और यदि ईसाई हज़रत ईसा की शिक्षा के अनुसार तौरात के आदेशों को अपनाएँ तो वे भी इसी कोटि में आ जाते है और यदि पता लग जाए कि वे अवैध पदार्थों का प्रयोग करते हैं तो फिर उस परिस्थिति के अनुसार फ़तवा (धर्म का आदेश) लागू होगा, केवल यहूदी या ईसाई होना पर्याप्त न होगा, क्योंकि कई पुराने तथा नए ईसाई सम्प्रदाय तौरात की शिक्षा को अपनाते हैं।

صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ مِنْهُ ۚ مَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ وَلَٰكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

से मिलाप भी किया हो और तुम्हें पानी न मिले तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम् करो तथा उस से (पवित्र मिट्टी से कुछ मिट्टी ले कर) अपने मुँहों एवं अपने हाथों को मलो। अल्लाह तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं देना चाहता। हाँ! वह तुम्हें पवित्र करना और तुम पर अपना उपकार पूरा करना चाहता है ताकि तुम धन्यवाद करो।७।

وَاذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي وَاثَقَكُمْ بِهِ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

और जो तुम पर अल्लाह का उपकार हुआ उसे (भी) याद रखो तथा उस वचन को भी जो उस ने तुम से उस समय लिया था जब तुम ने कहा था कि हम ने सुन लिया है और हम आज्ञाकारी हो गए हैं तथा अल्लाह के लिए संयम धारण करो। निस्सन्देह अल्लाह दिलों की बातों को भी भली-भाँति जानता है।८।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا تَعْدِلُوا ۚ اعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

हे ईमान लाने वालो! तुम न्यायपूर्वक गवाही देते हुए अल्लाह (की प्रसन्नता हासिल करने) के लिए खड़े हो जाओ और किसी जाति की शत्रुता तुम्हें कदापि इस बात के लिए तय्यार न कर दे कि तुम न्याय न करो। तुम न्याय से काम लो, यह बात संयम के अधिक निकट है तथा अल्लाह के लिए संयम धारण करो एवं जो कुछ तुम करते हो निस्सन्देह अल्लाह उसे जानता है।९।

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۙ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

जो लोग ईमान लाए हैं और उन्हों ने शुभ-कर्म किए हैं उन से अल्लाह ने प्रतिज्ञा की है कि उन के लिए बख़्शिश एवं बहुत बड़ा बदला निश्चित है।१०।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ⑪

और जिन लोगों ने इन्कार किया तथा हमारी आयतों को झुठलाया है वे लोग नरक में जाने वाले हैं।११।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑫

हे ईमान लाने वालो! तुम अल्लाह की निअमत (उपकार) को याद करो जो उस ने तुम पर (उस समय) की जब कि एक जाति के लोगों ने तुम्हारे ऊपर हाथ बढ़ाने (अर्थात् अत्याचार करने) का निश्चय कर लिया था। तब उस ने उन के हाथों को तुम से रोक लिया। अतः अल्लाह के लिए संयम धारण करो और मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।१२। (रुकू २/६)

وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ⑬

और (अल्लाह कहता है कि) निस्सन्देह हम ने बनी-इस्राईल से एक पक्का वचन लिया हुआ है तथा हम ने उन में से बारह सरदार खड़े किए थे और उन से कहा था कि यदि तुम नमाज़ को संवार कर पढ़ोगे एवं ज़कात दोगे और मेरे रसूलों पर ईमान लाओगे तथा उन की हर प्रकार से सहायता करोगे और अल्लाह को अपने धन का अच्छा भाग काट कर दोगे तो निश्चय ही मैं तुम्हारे साथ हूँ और मैं अवश्य तुम्हारे अपराध मिटा दूँगा एवं निश्चय ही मैं तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी, परन्तु तुम में से जो व्यक्ति इस के बाद भी इन्कार करे तो (समझ ले कि) वह सीधी राह से भटक गया है।१३।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤﴾

और उन के अपने पक्के वचन को भंग कर देने के कारण हम ने उन पर फटकार डाली थी और उन के दिलों को सख़्त कर दिया था, फिर ऐसा हुआ कि वे (किताब के) शब्दों को उन के स्थानों से अदल-बदल देते हैं तथा जिस बात का उन्हें उपदेश दिया गया था उस के एक भाग को भुला बैठे हैं और तुझे उन में से थोड़े से लोगों को छोड़ कर (दूसरों के सम्बन्ध में) सदैव किसी न किसी विश्वासघात (ख़यानत) की सूचना मिलती रहेगी। अतः तू उन्हें क्षमा कर और सहनशीलता का व्यवहार कर। निस्सन्देह अल्लाह परोपकार करने वालों से प्रेम करता है।१४।

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۪ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١٥﴾

और जो लोग कहते हैं कि हम ईसाई हैं हम ने उन से भी पक्का वचन लिया था, फिर उन्हों ने भी उस का एक हिस्सा भुला दिया जिस का उन्हें उपदेश दिया गया था। तब हम ने उन के बीच क़ियामत के दिन तक के लिए वैर और अमिट शत्रुता[1] डाल दी और जो कुछ वे करते थे अल्लाह उस से उन को शीघ्र ही अवगत (आगाह) कर देगा।१५।

---

1. यह कैसी उत्कृष्ट भविष्यवाणी है जिस में ईसाई जातियों के पारस्परिक शत्रुता की सूचना दी गई है ताकि मुसलमान अपनी निर्बलता के समय निराश न हों और इस भविष्यवाणी के कारण उन की ढारस बंधी रहे।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۬ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٦﴾

हे अहले किताब ! हमारा रसूल तुम्हारे पास आ चुका है और जो कुछ तुम किताब में से छिपाते थे उस में से वह बहुत सा हिस्सा तुम्हें बताता है तथा बहुत से अपराधों को भी क्षमा करता है। हाँ ! तुम्हारे लिए अल्लाह की ओर से एक प्रकाश (नूर) और रोशन किताब आ चुकी है।१६।

يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٧﴾

अल्लाह इस (क़ुर्आन) के द्वारा उन लोगों को जो उस की प्रसन्नता की राह पर चलते हैं सलामती की राहों पर चलाता है और अपनी कृपा से उन्हें अंधकार से निकाल कर प्रकाश (नूर) की ओर ले जाता है तथा उन्हें सीधी राह दिखाता है।१७।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۭ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۭ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٨﴾

और जो लोग कहते हैं कि निस्सन्देह मर्यम का पुत्र ईसा[1] ही अल्लाह है, वे निश्चय ही इन्कार करने वाले हो गए हैं। तू उन्हें कह दे यदि अल्लाह[2] मर्यम के पुत्र और उस की माता तथा उन सारे लोगों को जो पृथ्वी में (पाए जाते) हैं नष्ट करना चाहे तो कौन उस के मुक़ाबिले में किसी बात की शक्ति रखता है ? और आसमानों एवं ज़मीन तथा जो कुछ उन के बीच पाया जाता है उन सब पर (केवल) अल्लाह की ही हुकूमत है। वह जो चाहता है पैदा करता है और अल्लाह प्रत्येक बात के करने की पूरी-पूरी शक्ति रखता है।१८।

---

1. अर्थात् दोनों एक समान हैं।

2. यह आयत हज़रत ईसा की मौत का प्रबल प्रमाण है कि अल्लाह ने हज़रत मसीह तथा उन की माता को मौत दे दी है।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؗ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۹﴾

और यहूदी तथा ईसाई कहते हैं कि हम अल्लाह के पुत्र हैं तथा उस के प्यारे हैं। तू कह दे कि फिर वह तुम्हारे अपराधों के कारण तुम्हें अज़ाब क्यों देता है ? (बात यूँ है कि) जिन लोगों को उस ने पैदा किया है तुम भी उन्हीं जैसे लोग हो। वह जिसे पसंद करता है उसे क्षमा करता है तथा जिसे चाहता है अज़ाब देता है और आसमानों, ज़मीन तथा जो कुछ उन दोनों के बीच है उन सब पर अल्लाह ही का शासन है और उस की ओर सब ने लौट कर जाना है।१९।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ؗ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۰﴾ ع

हे अहले किताब ! एक समय तक रसूलों के आने का सिल्सिला बन्द रहने के बाद तुम्हारे पास हमारा रसूल आ चुका है जो तुम को हमारी बातें बताता है ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास न कोई बशारत (शुभ-समाचार) देने वाला आया और न ही कोई डराने वाला आया। सो तुम्हारे पास एक बशारत (शुभ-समाचार) देने वाला तथा डराने वाला आ गया है और अल्लाह प्रत्येक बात पर पूरी-पूरी शक्ति रखता है।२०। (रुकू ३/७)

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖ

और (तुम उस समय को याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति के लोगों से कहा था कि हे मेरी जाति के लोगो ! तुम अल्लाह के उस उपकार को याद करो जो उस ने (उस समय) तुम पर किया था जब उस ने तुम में नबी नियुक्त किए थे और तुम्हें अनुशासक[1] बनाया

1. इतिहास से सिद्ध होता है कि प्राचीन काल में जब इस्राईली लोग स्वदेश-त्याग कर मिस्र देश पहुँचे तो उन्होंने वहाँ धीरे-धीरे इतना अधिकार जमा लिया कि मिस्र के राजा बन गए। बाइबिल में भी लिखा है, इस्राईल की सन्तान फली-फूली और असंख्य एवं शक्तिशाली हो गई और वह देश उन से भर गया। (निर्गमन 1:14)

وَ اٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ⑳

था तथा तुम्हें वह कुछ दिया था जो संसार की जातियों[1] में से किसी को नहीं दिया था ।२१।

يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِىْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ㉑

हे मेरी (मूसा की) जाति के लोगो ! तुम इस पवित्र भूमि में प्रवेश करो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख रखी है और तुम अपनी पीठ न दिखाना अन्यथा तुम हानि उठा कर लौटोगे ।२२।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖ وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ㉒

उन्हों ने (उत्तर में) कहा कि हे मूसा ! निस्सन्देह इस देश में एक उद्दण्ड[2] (सरकश) जाति (निवास करती) है और जब तक वे लोग इस देश से चले न जाएँ हम उस में कभी प्रवेश नहीं करेंगे । हाँ ! यदि वे उस में से निकल जाएँ तो फिर निश्चय ही हम उस में दाख़िल हो जाएँगे ।२३।

قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ㉓

तब जो लोग अल्लाह से डरते थे उन में से दो व्यक्तियों[3] ने जिन पर अल्लाह ने उपकार किया था (उन्हें) कहा कि तुम उन के विरुद्ध (चढ़ाई करते हुए) इस द्वार में प्रवेश कर जाओ । जब तुम उस में दाख़िल हो जाओगे तो निस्सन्देह तुम विजयी होगे और यदि तुम मोमिन हो तो अल्लाह ही पर भरोसा करो हम फिर कहते हैं कि उसी पर भरोसा करो ।२४।

---

1. अर्थात् जिन का इतिहास इस्राइलियों के पास सुरक्षित था ।

2. उस समय वहाँ अमालिक़ा और अरब की दूसरी जातियाँ निवास करती थीं । यहूदी उन से डर गए ।

3. पवित्र क़ुर्आन के अनुसार सम्भवतः हज़रत मूसा और हज़रत हारून अभीष्ट हैं, परन्तु बाइबिल के कथनानुसार कालब और यूशा अभीष्ट हैं जो देश के हालात का पता लगाने के लिए भेजे गए थे । (गिनती 14:5.6)

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿٢٥﴾

उन्हों ने कहा कि हे मूसा ! जब तक वे लोग उस में हैं हम कदापि उस धरती में दाख़िल नहीं होंगे। अतः तू और तेरा रब्ब दोनों जाओ तथा उन से युद्ध करो। हम तो इसी स्थान पर बैठे रहेंगे।२५।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِيْ وَاَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾

मूसा ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! मैं अपनी जान तथा अपने भाई के सिवा किसी दूसरे पर कुछ भी अधिकार नहीं रखता। अतः तू हमारे और विद्रोहियों के बीच फ़र्क़ कर दे।२६।

قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً يَتِيْهُوْنَ فِي الْاَرْضِ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٧﴾ ع

(अल्लाह ने) कहा, (यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो) निस्सन्देह उन्हें इस देश से चालीस वर्ष के लिए महरूम (वञ्चित) किया जाता है। वे धरती पर दुःखी हो कर भटकते रहेंगे। अतः तू विद्रोही लोगों पर खेद न कर।२७। (रुकू ४/८)

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٨﴾

और तू (अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम) उन्हें आदम के दो पुत्रों का हाल[1] ठीक-ठीक सुना (अर्थात् उस समय का हाल) जब कि उन दोनों ने एक क़ुर्बानी (बलि) पेश की, तो उन में से एक की क़ुर्बानी तो स्वीकार कर ली गई, परन्तु दूसरे की अस्वीकार कर दी गई। (जिस पर) उस ने अपने भाई से कहा कि मैं अवश्य ही तेरी हत्या करूँगा। (उस ने) उत्तर में कहा कि अल्लाह तो केवल संयमियों की क़ुर्बानी को ही स्वीकार किया करता है।२८।

1. इस उपमा में इस्राइलियों और इस्माइलियों की तुलना की गई है। बनी-इस्राईल मुहम्मदी नबुव्वत के कारण क़ाबील की भाँति मुसलमानों से ईर्ष्या रखते थे। वास्तविक बात यह है कि बलिदान स्वीकार करना परमात्मा का काम है, बलिदान देने वाले का काम नहीं।

لَئِنْ بَسَطتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾

यदि तूने मेरी हत्या के लिए मेरी ओर हाथ बढ़ाया भी तो मैं अपना हाथ[1] तेरी ओर कदापि नहीं बढ़ाऊँगा। मैं उस अल्लाह से निश्चय ही डरता हूँ जो सारे जहानों (लोकों) का रब्ब है।२९।

إِنِّي أُرِيدُ أَن تَبُوءَ بِإِثْمِي وَإِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿٣٠﴾

निस्सन्देह मैं यह चाहता[2] हूँ कि तू सदा के लिए मेरा पाप भी तथा अपना पाप भी उठा ले जिस का परिणाम यह हो कि तू नरक वालों में से हो जाए और यही अत्याचारियों का प्रतिफल है।३०।

فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٣١﴾

फिर उस भाई का दिल (जिस की क़ुर्बानी स्वीकृत न हुई थी) अपने भाई की हत्या कर देने पर तय्यार हो गया तथा उस ने उस की हत्या कर दी जिस से वह हानि उठाने वालों में शामिल हो गया।३१।

فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُوَارِي سَوْءَةَ أَخِيهِ قَالَ يَا وَيْلَتَىٰ أَعَجَزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَٰذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَةَ أَخِي فَأَصْبَحَ مِنَ النَّادِمِينَ ﴿٣٢﴾

तब अल्लाह ने एक कौवे[3] को जो ज़मीन को कुरेदता था इसलिए भेजा ताकि वह उसे बताए कि वह अपने भाई के शव को कैसे छिपाए। उस ने कहा कि हाय अफ़सोस! मुझ से इतना भी न हो सका कि मैं इस कौवे की भाँति हो जाऊँ तथा अपने भाई के शव को ढाँक दूँ। तब वह पछताने वालों में से हो गया।३२।

---

1. इस का यह अर्थ नहीं कि मैं प्रतिरक्षा भी नहीं करूँगा अपितु इस का यह अर्थ है कि मैं प्रतिरक्षा इतने कड़े ढंग से नहीं करूँगा जिस का परिणाम शत्रु की हत्या ही के रूप में निकला करता है।

2. इस से यह तात्पर्य नहीं कि मेरी यह हार्दिक इच्छा है अपितु इस से यह अभिप्राय है कि मैं अख़लाक़ी मजबूरियों (नैतिक विवशताओं) के कारण प्रतिरक्षा में भी कठोरता से काम नहीं लूँगा जिस से तू मेरे पाप भी सहन करेगा। यही दशा यहूदियों की हुई। मुसलमानों ने सन्धि का हाथ बढ़ाया, परन्तु वे युद्ध के लिए निकल आए और इन्कार करने वाले लोगों को भी प्रेरणा दी, अन्तत: महापापी हो कर दण्ड भोगा।

3. दैवयोग से वहाँ एक कौवा उड़ता हुआ आ गया और उसने दूसरे कौवे के शव को देखा तो (शेष पृष्ठ २३६ पर)

مِنْ أَجْلِ ذَٰلِكَ كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ بَعْدَ ذَٰلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ ﴿٣٢﴾

इस कारण हम ने बनी-इस्राईल के लिए ज़रूरी[1] कर दिया था कि (वे सावधान रहें) जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को सिवाय इस के जिस ने किसी दूसरे व्यक्ति की हत्या की हो अथवा देश में फ़साद फैलाया हो मार दे तो मानों उस ने सारे लोगों की हत्या कर दी और जो उसे जीवित करे तो मानों उस ने सारे मानव-समाज को सजीव बना दिया और निस्सन्देह हमारे रसूल उन के पास खुले-खुले चमत्कार लेकर आए थे फिर भी उन में से बहुत से लोग देश में अत्याचार करते जा रहे हैं।३३।

إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِنْ خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ۚ

जो लोग अल्लाह तथा उस के रसूल से युद्ध करते हैं और फ़साद फैलाने के लिए (युद्ध की आग भड़काने के लिए) भागते फिरते हैं उन का उचित दण्ड यही है कि उन में से हर-एक को मौत के घाट उतार दिया जाए अथवा सलीब पर लटका कर मौत का दण्ड दिया जाए या उन के हाथ तथा उन के पाँव विरोध करने के कारण काट दिए जाएँ या उन्हें देश से निकाल दिया जाए[2]। (यदि)

(पृष्ठ २३५ का शेष)

अपने पञ्जों एवं चोंच से मिट्टी कुरेद कर उस पर डाल दी। यह देख कर हत्यारे भाई के दिल में भ्रातृ-प्रेम जागृत हुआ और उस ने विलाप बोधक शब्द कहे। अल्लाह के वहाँ कौवा भेजने का अर्थ केवल इतना है कि एक कौवा अल्लाह के साधारण नियम के अनुसार उड़ता हुआ वहाँ पहुँच गया था।

1. इस में तौरात की शिक्षा की ओर संकेत किया गया है कि जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे महापुरुष की हत्या कर दे जो संसार के लिए महत्व रखता हो तो उसे ऐसा ही समझा जाएगा मानों उस ने प्राणी-मात्र की हत्या कर दी।

2. यह सारी बातें बता रही हैं कि यह काम सरकार से सम्बन्धित है न कि जनता में से जिस का जी चाहे दूसरों पर फ़तवा लगा कर ऐसा दण्ड देने लग जाए।

ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٤﴾

यह (दण्ड मिलता तो) उन के लिए संसार में भी अपमान का कारण होता तथा परलोक में भी उन के लिए बहुत बड़ा अज़ाब निश्चित है ।३४।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۖ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣٥﴾ ع ٥ ٩

किन्तु वे लोग इस से पहले कि तुम उन्हें अपने वश[1] में कर लो तौब: कर लें तो समझ लो कि अल्लाह निश्चय ही बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला[2] है ।३५।(रुकू ५/९)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣٦﴾

हे ईमान लाने वालो ! अल्लाह के लिए संयम धारण करो और उस का क़ुर्ब (निकटता) हासिल करने अर्थात् उस तक पहुँचने की राहों को तलाश करो तथा उस की राह में कोशिश करो ताकि तुम सफल हो जाओ ।३६।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٧﴾

जो लोग इन्कार करने वाले हैं यदि धरती में जो कुछ पाया जाता है वह सब और उतना ही उस के साथ और (धन) भी उन के पास होता कि वे क़ियामत के दिन के अज़ाब के बदले में उसे दे देते तो भी उन से स्वीकार नहीं किया जाता और उन के लिए पीड़ा-दायक अज़ाब निश्चित है ।३७।

1. इस आदेश से स्पष्ट है कि यह अनुदेश अनुशासकों के लिए है प्रजा के लिए नहीं, क्योंकि पुलिस और सेना सरकार के ही अधीन होती है । प्रजा के अधीन नहीं होती ।

2. दयालुता के उपलक्ष्य ही तो उस ने तौब: (पश्चाताप) करने वालों को दण्ड भोगने से बचा दिया है । इस आदेश से स्पष्ट है कि इस्लाम धर्म की नींव दया पर है और यदि कोई व्यक्ति दण्ड भोगने से पहले पश्चाताप कर ले तो उस का पश्चाताप स्वीकार कर लिया जाता है तथा उस के साथ निर्पराधी जैसा व्यवहार किया जाता है ।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۘ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٨﴾

वे नरक की आग से निकलना चाहेंगे, परन्तु उस में से कदापि निकल[1] नहीं सकेंगे और उन के लिए न टलने वाला अज़ाब निश्चित है ।३८।

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٣٩﴾

और जो पुरुष चोर हो और जो स्त्री चोर हो उन दोनों के हाथ उस दोष के कारण काट दो जो उन्हों ने किया है । यह अल्लाह की ओर से दण्ड के रूप में है और अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है ।३९।

فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤٠﴾

और जो व्यक्ति अत्याचार करने के बाद तौबः (पश्चाताप) कर ले और सुधार भी कर ले तो निश्चय ही अल्लाह उस पर कृपा करेगा । निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है ।४०।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤١﴾

क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह वह सत्ता है कि आसमानों और ज़मीन की हुकूमत उसी की है । वह जिसे चाहता है अज़ाब देता है और जिसे (क्षमा करना) चाहता है क्षमा कर देता है और अल्लाह प्रत्येक बात का जिसे वह करना चाहे उस के करने का पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है ।४१।

---

1. अभिप्राय यह है कि अपनी शक्ति से कोई व्यक्ति नरक से बच नहीं सकेगा, किन्तु दूसरे स्थान पर लिखा है कि अल्लाह दया कर के लोगों को नरक से निकाल लेगा ।

(देखिए सूरः अल्-क़ारिअ रुकू १/२६)

يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوۡلُ لَا يَحۡزُنۡكَ الَّذِيۡنَ يُسَارِعُوۡنَ فِى الۡكُفۡرِ مِنَ الَّذِيۡنَ قَالُوۡۤا اٰمَنَّا بِاَفۡوَاهِهِمۡ وَلَمۡ تُؤۡمِنۡ قُلُوۡبُهُمۡ ۛۚ وَمِنَ الَّذِيۡنَ هَادُوۡا ۛۚ سَمّٰعُوۡنَ لِلۡكَذِبِ سَمّٰعُوۡنَ لِقَوۡمٍ اٰخَرِيۡنَۙ لَمۡ يَاۡتُوۡكَ‌ؕ يُحَرِّفُوۡنَ الۡـكَلِمَ مِنۡۢ بَعۡدِ مَوَاضِعِهٖ‌ۚ يَقُوۡلُوۡنَ اِنۡ اُوۡتِيۡتُمۡ هٰذَا فَخُذُوۡهُ وَاِنۡ لَّمۡ تُؤۡتَوۡهُ فَاحۡذَرُوۡا‌ ؕ وَمَنۡ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتۡنَـتَهٗ فَلَنۡ تَمۡلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيۡـئًـا‌ ؕ اُولٰٓـئِكَ الَّذِيۡنَ لَمۡ يُرِدِ اللّٰهُ اَنۡ يُّطَهِّرَ قُلُوۡبَهُمۡ‌ ؕ لَهُمۡ فِى الدُّنۡيَا خِزۡىٌ ۖۚ وَّلَهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ﴿۴۲﴾

हे रसूल ! जो लोग अपने मुँहों से कहते हैं कि हम ईमान लाए हैं और उन के दिल ईमान नहीं लाए। उन में से जो लोग इन्कार (की बातें मानने) में जल्दी करते हैं वे तुझे दुःख में न डालें और यहूदियों में से भी कुछ (लोग ऐसे हैं जो) झूठी बातों पर कानधरते हैं (वे ये बातें) एक और गिरोह (को सुनाने) के लिए सुनते हैं, जो तेरे पास नहीं आया। वे (अल्लाह की) बातों को उन के (अपने) ठिकाने पर रखे जाने के बाद (उन के अपने स्थानों से) अदल-बदल[1] देते हैं। वे कहते हैं कि यदि तुम्हें इस प्रकार का आदेश दिया जाए तो मान लो और यदि तुम्हें इस तरह का आदेश न दिया जाए तो उस से बचो तथा उसे न मानो और अल्लाह जिस की परीक्षा लेने का निश्चय कर ले तो तू उस के लिए अल्लाह के मुक़ाबिला में कुछ भी नहीं कर सकेगा। ये लोग ऐसे हैं कि अल्लाह ने उन के दिल पवित्र करने का विचार ही नहीं किया, क्योंकि उन के लिए (उन के कर्मों के कारण) इस लोक में भी अपमान (निश्चित) है तथा परलोक में भी उन के लिए बहुत बड़ा अज़ाब निश्चित है।४२।

سَمّٰعُوۡنَ لِلۡكَذِبِ اَكّٰلُوۡنَ لِلسُّحۡتِ‌ ؕ فَاِنۡ جَآءُوۡكَ فَاحۡكُمۡ بَيۡنَهُمۡ اَوۡ اَعۡرِضۡ عَنۡهُمۡ‌ ۚ وَاِنۡ تُعۡرِضۡ

वे लोग झूठी बातों को ख़ूब सुनते हैं और हराम (चीज़ों) को अधिक से अधिक मात्रा में खाते हैं। तो यदि वे तेरे पास (कोई झगड़ा ले कर) आएँ तो चाहे तू उन के झगड़े का निपटारा करे, चाहे उन से अलग

1. अर्थात् पवित्र क़ुर्आन सुनने के बाद उस का ग़लत अर्थ लोगों में फैलाते हैं ताकि लोग मुसलमानों पर आरोप लगाया करें।

عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٤٣﴾

रहे (दोनों हालतों में) वे तुझे हानि नहीं पहुँचा सकेंगे और यदि तू निर्णय करे तो (हमारा आदेश याद रख कि) उन में हर हाल में न्याय-पूर्वक निर्णय कर। निस्सन्देह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है।४३।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾ ع

और वे तुझे कैसे फ़ैसला करने वाला बना सकते हैं जब कि उन के पास उनके कथनानुसार ईश्वरीय आदेशों पर आधारित[1] तौरात मौजूद है। इस के होते हुए भी तो वे विमुख हो जाते हैं। वे बिल्कुल मोमिन नहीं है।४४। (रुकू ६/१०)

اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٥﴾

निस्सन्देह हम ने तौरात को हिदायत और नूर से भरपूर उतारा था। उस के द्वारा नबी जो हमारे आज्ञाकारी थे और (जो लोग) ज्ञानी एवं विद्वान थे वे यहूदियों के लिए इस आधार पर निर्णय किया करते थे कि उन के द्वारा अल्लाह की किताब की रक्षा चाही गई थी और वे उस के संरक्षक थे। अतः तुम लोगों से न डरो और मुझ से डरो तथा तुम मेरी आयतों के बदले में थोड़े दाम न लो और जो लोग इस (वाणी) के अनुसार निर्णय न करें जो अल्लाह ने उतारी है तो वास्तव में वे ही इन्कार करने वाले हैं।४५।

---

1. यद्यपि मुसलमानों के मंतव्य के अनुसार तौरात के कुछ आदेश अब भी ठीक हैं, किन्तु यहूदियों के मंतव्य के अनुसार तो सारी तौरात ही आज तक सुरक्षित है।

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَآ اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۞

और हम ने उस (तौरात) में उन का कर्त्तव्य ठहराया था कि जान के बदले जान[1], आँख के बदले आँख, नाक के बदले नाक, कान के बदले कान, दाँत के बदले दाँत और (घावों के बदले में) घाव बराबर का बदला है परन्तु जो व्यक्ति (अपने) इस (अधिकार) को छोड़ दे तो (उस का यह त्याग) उस के लिए उस के पापों को क्षमा करने का साधन बन जाएगा और जो लोग इस (ईश-वाणी) के अनुसार निर्णय न करें जो कि अल्लाह ने उतारी है तो वही वास्तविक रूप से इन्कार करने वाले हैं।४६।

وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۞

और हम ने मर्यम के पुत्र ईसा को जब कि वह इस (वाणी) अर्थात् तौरात को पूरा करने वाला था, उन (पहले वर्णित नबियों) के पद चिह्नों पर चलाया और हम ने उसे इञ्जील दी थी जिस में हिदायत और नूर था और वह उस वाणी को पूरा[2] करने वाली थी जो उस से पहले आ चुकी थी और वह संयमियों के लिए हिदायत तथा उपदेश थी।४७।

وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۞

और इञ्जील वालों को चाहिए कि अल्लाह ने जो कुछ उस में उतारा है उस के अनुसार निर्णय करें और जो लोग इस वाणी के अनुसार निर्णय न करें जो अल्लाह ने उतारी है तो वही कट्टर विद्रोही हैं।४८।

---

1. तौरात में लिखा है—"और जो कोई किसी को मार डाले वह अवश्य ही मारा जाए और यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी को कलंकित करे तो जैसा उस ने किया वैसा ही उस के साथ व्यवहार किया जाए अर्थात् अंग-भंग करने के बदले में अंग-भंग और आँख के बदले में आँख तथा दाँत के बदले में दाँत।" (देखिए लव्य व्यवस्था 14:19.20)

2. अर्थात् तौरात की भविष्य-वाणियों को पूरा करती थी।

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝٤٩

और हम ने तुझ पर यह किताब (क़ुर्आन) सच्चाई पर आधारित उतारी है। वह अपने से पहली किताब (की बातों) को पूरा करने वाली है तथा उस की रक्षा करने वाली है। अतः तू इस (किताब) के अनुसार उन में निर्णय कर जो अल्लाह ने (तुझ पर) उतारी है और जो सच तेरी ओर आया है उसे छोड़ कर उन की मनोकामनाओं का अनुसरण न कर। हम ने तुम में से हर-एक के लिए (अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार इल्हामी) पानी तक पहुँचने का एक छोटा अथवा बड़ा[1] रास्ता बनाया है और यदि अल्लाह चाहता तो तुम (सब) को एक ही सम्प्रदाय बना देता, परन्तु (इस कलाम के बारे में) जो उस ने तुम पर उतारा है तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए (ऐसा नहीं किया)। अतः तुम एक-दूसरे से नेकियों में बढ़ने के लिए मुक़ाबिला करो, क्योंकि तुम सब को अल्लाह की ओर ही लौट कर जाना है। अतः वह तुम्हें उन सब बातों से जानकारी कराएगा, जिन में तुम मतभेद किया करते थे।४९।

وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ

और हे रसूल! तू उन में इस वाणी द्वारा निर्णय कर जो अल्लाह ने (तुझ पर) उतारी है तथा तू उन की इच्छाओं के पीछे न चल और तू उन से सावधान रह कि वे तुझे फ़ितना में डाल कर अल्लाह की उतारी हुई वाणी से दूर न ले जाएँ। इस के बाद यदि वे फिर जाएँ तो जान लो कि अल्लाह चाहता है कि उन्हें उन के कुछ पापों के कारण दण्ड दे

---

1. इस आयत में बताया गया है कि ईश-वाणी के नूर को प्राप्त करने के लिए पवित्र क़ुर्आन में प्रत्येक व्यक्ति की योग्यता के अनुसार शिक्षा पाई जाती है और वह एक कामिल किताब है।

ذُنُوبِهِمْ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ لَفَاسِقُونَ ۝٥٠

और लोगों में से अनेक प्रतिज्ञा भंग करने वाले हैं।५०।

أَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۚ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝٥١ ع

क्या वे ईश-वाणी के उतरने से पहले के निर्णय को पसन्द करते हैं, किन्तु मोमिनों के विचार में तो अल्लाह से बढ़ कर अच्छा निर्णय करने वाला कोई नहीं।५१। (रुकू ७/११)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ ۘ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝٥٢

हे ईमान लाने वालो ! यहूदियों और ईसाइयों को अपना सहायक न बनाओ (क्योंकि) उन में से कुछ लोग कुछ दूसरों के सहायक हैं और तुम में से जो भी उन्हें अपना सहायक बनाएगा निस्सन्देह वह उन्हीं में से होगा। अल्लाह अत्याचारियों को कदापि (सफलता का) मार्ग नहीं दिखाता।५२।

فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰ أَن تُصِيبَنَا دَائِرَةٌ ۚ فَعَسَى اللَّهُ أَن يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِندِهِ فَيُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا أَسَرُّوا فِي أَنفُسِهِمْ نَادِمِينَ ۝٥٣

और तू उन लोगों को देखेगा जिन के दिलों में रोग है कि वे (यह कहते हुए) उन (इन्कार करने वालों) की ओर दौड़-दौड़ कर जाते हैं कि हम (इस बात से) डरते हैं कि हम पर कोई विपत्ति न आ पड़े। सो सम्भव है कि अल्लाह तुम्हारी विजय (के साधन कर दे) या अपने पास से कोई और बात (प्रकट) करे जिस से वे उस बात के कारण लज्जित हो जाएँ जिसे उन्होंने अपने दिलों में छिपा रखा है।५३।

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ۚ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خَاسِرِينَ ۝٥٤

और मोमिन लोग कहेंगे कि क्या यही वे लोग हैं जिन्होंने अल्लाह की पक्की क़समें खा कर कहा था कि हम पूर्ण रूप से तुम्हारे साथ हैं। उन के कर्म नष्ट हो गए। अतः वे हानि पाने वाले हो गए।५४।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٥﴾

हे ईमान लाने वालो ! तुम में से जो व्यक्ति अपने धर्म से विमुख हो जाए तो (वह याद रखे कि) अल्लाह (उस के बदले) शीघ्र ही एक ऐसी जाति को ले आएगा जिन से वह प्रेम करता होगा और वे उस से प्रेम करते होंगे। वे मोमिनों पर दया करने वाले होंगे इन्कार करने वालों के मुक़ाबिले में कठोर होंगे। वे अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले होंगे और किसी निन्दा करने वाले की निन्दा से नहीं डरेंगे। यह अल्लाह की अपार कृपा है। वह जिसे पसन्द करता है उसे (यह कृपा) दे देता है और अल्लाह समृद्धि प्रदान करने वाला और बहुत जानने वाला है।५५।

اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿٥٦﴾

तुम्हारा सहायक केवल अल्लाह और उस का रसूल तथा वे मोमिन हैं जो नमाज़ को क़ायम करते हैं एवं ज़कात देते हैं और साथ ही वे पक्के एकेश्वरवादी हैं।५६।

وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٥٧﴾ ع

और वे लोग जो अल्लाह तथा उस के रसूल को एवं मोमिनों को अपना सहायक बनाते हैं वे (समझ लें कि) अल्लाह का सम्प्रदाय निश्चय ही ग़ालिब (हो कर रहने वाला) है।५७। (रुकू ८/१२)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٥٨﴾

हे ईमान लाने वालो ! जिन लोगों को तुम से पहले किताब दी गई थी उन्हें तथा दूसरे इन्कार करने वालों को अपना सहायक न बनाओ, जिन्होंने तुम्हारे धर्म को हँसी और खेल बना रखा है। यदि तुम मोमिन हो तो अल्लाह के लिए संयम धारण करो।५८।

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّلَعِبًا ۚ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿٥٩﴾

और जब तुम लोगों को नमाज़ के लिए बुलाते हो तो वे उसे हँसी और खेल (का विषय) बना लेते हैं। यह (बात उन में) इस कारण पाई जाती है कि वे ऐसे लोग हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते।५९।

قُلْ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّآ إِلَّآ أَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَآ أُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٦٠﴾

तू उन से कह कि हे अहले किताब! तुम हमारे ऊपर इस के सिवा कोई आरोप नहीं लगा सकते कि हम अल्लाह पर और जो (वाणी) हम पर उतारी गई है तथा जो पहले उतारी गई थी उस पर भी ईमान ले आए हैं और तुम इसलिए भी (कीड़े निकालते हो) कि तुम में से बहुत से (अल्लाह के) विद्रोही हैं।६०।

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۚ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ۚ أُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّأَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٦١﴾

तू (उन से) कह कि क्या मैं तुम्हें उन लोगों की हालत बताऊँ जिन का बदला अल्लाह के पास उस व्यक्ति से भी बुरा है जिसे तुम पसन्द नहीं करते। वे ऐसे लोग[1] हैं जिन पर अल्लाह ने फटकार डाली है और जिन पर उस ने अज़ाब उतारा है तथा जिन में से कुछ लोगों को बन्दर और सुअर बना दिया है और जिन्होंने शैतान की पूजा की है उन लोगों का ठिकाना बहुत बुरा है और वे सम्मार्ग से बहुत दूर भटके हुए हैं।६१।

وَإِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ۚ وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ﴿٦٢﴾

और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए हैं, हालाँकि वे इन्कार को अपनाते हुए ही इस्लाम में आए थे और फिर वे उसी (मंतव्य) के साथ निकल गए थे और जो कुछ वे छिपाते हैं अल्लाह उसे सब से बढ़ कर जानता है।६२।

1. अर्थात् तुम दूसरों को तुच्छ समझते हो, परन्तु वास्तव में तुम स्वयं ही तुच्छ हो, जिन पर वे अज़ाब उतरे हैं जो इसी आयत में वर्णित हैं।

وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِي الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَ اَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٦٢

और तू उन में से बहुतों को देखता है कि वे पाप, अत्याचार तथा हराम खाने की ओर दौड़ कर जाते हैं। जो कुछ वे करते हैं निस्सन्देह वह बहुत बुरा है।६३।

لَوْلَا يَنْهٰىهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝٦٣

ज्ञानी और विद्वान लोग उन्हें झूठ बोलने तथा हराम खाने से क्यों नहीं रोकते ? जो कुछ वे करते हैं वह निश्चय ही अत्यन्त बुरा है।६४।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ۭ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاۗءُ ۭ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۭ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاۗءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۭ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٦٤

और यहूदी कहते हैं कि अल्लाह के हाथ बंधे हुए हैं। जो कुछ उन्हों ने कहा है उस के कारण उन्हीं के हाथों में हथकड़ियाँ डाली जाएँगी और उन पर फटकार पड़ेगी। (वे झूठ बोलते हैं) वास्तविकता यह है कि उस (अल्लाह) के हाथ खुले हुए हैं। वह जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है तथा जो कुछ तेरे रब्ब की ओर से तुझ पर उतारा गया है वह बहुतों को निश्चय ही सरकशी (उद्दण्डता) और इन्कार करने में और भी बढ़ा देगा तथा हम ने क़ियामत तक उन के बीच द्वेष एवं ईर्ष्या पैदा कर दी है। जब कभी भी उन्हों ने युद्ध के लिए किसी प्रकार की आग भड़काई है तो अल्लाह ने उसे बुझा दिया है और वे देश में फ़साद फैलाने के लिए भागते फिरते हैं तथा अल्लाह फ़साद फैलाने वालों को पसंद नहीं करता।६५।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝٦٥

और यदि अह्ले किताब ईमान ले आते और संयम धारण करते तो अवश्य ही हम उन से उन के पाप दूर कर देते और अवश्य उन्हें (अनेक प्रकार की) निअमतों वाले बाग़ों में प्रविष्ट करते।६६।

وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَآ أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَأَكَلُوا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ ۚ مِنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُونَ ﴿٦٧﴾

और यदि वे तौरात एवं इन्जील को तथा जो कुछ उन के रब्ब की ओर से अब उन पर उतारा गया है उसे प्रकट करते रहते तो वे अवश्य अपने ऊपर से भी खाते तथा अपने पाँव के नीचे से भी खाते। हाँ ! उन में से एक सम्प्रदाय मध्यवर्गी भी है, किन्तु उन में से बहुत से लोग ऐसे हैं कि जो काम वे करते हैं वह बहुत बुरा है।६७। (रुकू ९।१३)

يٰٓأَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَآ أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۖ وَإِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ ۚ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِينَ ﴿٦٨﴾

हे रसूल ! तेरे रब्ब की ओर से जो कलाम तुझ पर उतारा गया है उसे लोगों तक पहुँचा दे और यदि तू ने ऐसा न किया तो (मानो) तू ने उस का संदेश बिल्कुल पहुँचाया ही नहीं और अल्लाह तुझे लोगों (के आक्रमणों) से सुरक्षित रखेगा। निस्सन्देह अल्लाह इन्कार करने वालों को कदापि (सफलता का) मार्ग नहीं दिखाएगा।६८।

قُلْ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَيْءٍ حَتّٰى تُقِيمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَآ أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۗ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ مَّآ أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِينَ ﴿٦٩﴾

तू कह दे कि हे अहले किताब ! जब तक तुम तौरात एवं इन्जील को और जो कुछ तुम्हारे रब्ब की ओर से तुम पर उतारा गया है उसे प्रकट नहीं करोगे तब तक तुम किसी अच्छी बात पर क़ायम नहीं तथा जो कुछ तुझ पर तेरे रब्ब की ओर से उतारा गया है वह उन में से बहुतों को सरकशी एवं इन्कार में अवश्य ही बढ़ा देगा। अतएव तू इस इन्कार करने वाली जाति पर अफ़सोस न कर।६९।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

जो लोग ईमान ला चुके हैं और जो यहूदी हैं और साबी[1] तथा ईसाई हैं (इन में से जो भी) अल्लाह पर तथा पीछे आने वाले दिन (क़ियामत) पर पूर्ण रूप से ईमान लाए तथा फिर उन्हों ने नेक कर्म किए तो न उन्हें (भविष्य में) कोई भय[2] होगा और न वे (भूतकाल के विषय में) चिन्तित होंगे ।७०।

لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ۝

निस्सन्देह हम ने इस्राईल की संतान से पक्का बचन लिया था और उन की ओर कई रसूल भेजे थे। जब कभी कोई रसूल उन के पास उस शिक्षा को ले कर आया जिसे उन के दिल पसंद नहीं करते थे तो कुछ रसूलों को उन्हों ने झुठला दिया तथा कुछ रसूलों की हत्या करना चाहते थे ।७१।

---

1. अरबों की प्राचीन कथाओं से जो हदीसों में भी लिखी हैं पता चलता है कि अरब लोग हर उस व्यक्ति को जो यहूदी या ईसाई तो नहीं होता था, परन्तु अपने-आप को अहले किताब कहता था उसे साबी कहते थे। फिर जो व्यक्ति मुसलमान हो जाता था तो मक्का वाले उसे कहते कि यह साबी हो गया है।

खोज करने से ऐसा प्रतीत होता है कि साबी लोग हर्रान से सम्बन्ध रखते थे जो हज़रत इब्राहीम के स्थान 'ऊर' से फलस्तीन जाने वाले मार्ग पर है। उन लोगों के रीति-रिवाज अरबों जैसे थे। अतएव प्रबल विश्वास है कि वे लोग आद-जाति में से थे और इब्राहीम-वंशज जातियों से प्रभावित थे तथा इसी कारण किताब एवं नबियों का अनिश्चित रूप से आदर करते थे। अतएव अपरिचित जातियाँ उन्हें अहले किताब समझने लग गई थीं।

2. इस स्थान पर चिन्ता और भय से सुरक्षित रहना ईमान का चिन्ह ठहराया गया है। अतएव आयत का अर्थ यह नहीं कि यहूदी, ईसाई और साबी मोमिन हैं, अपितु अभिप्राय यह है कि केवल मुँह से ईमान का इक़रार करना काफ़ी नहीं। यह सारी जातियाँ अपने मुँह से ईमान लाने का ढिंढोरा पीटती हैं, परन्तु उस का कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं करतीं कि अल्लाह ने भी उन के ईमान को स्वीकार कर लिया है। अल्लाह के स्वीकार कर लेने का चिन्ह यह है कि सच्चे मोमिनों को न तो भविष्य सम्बन्धी चिन्ता होती है और न ही विगत त्रुटियों का कोई भय। अतः जिसे यह चिन्ह अर्थात् सन्तुष्टि प्राप्त हो जाए वह ईमान वाला होगा और जिसे यह सन्तुष्टि प्राप्त न होगी वह केवल मुँह से ईमान लाने वाला कहलाएगा, परन्तु अल्लाह के निकट मोमिन न होगा।

وَحَسِبُوٓا أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةٌ فَعَمُوا وَصَمُّوا ثُمَّ تَابَ ٱللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِّنْهُمْ ۚ وَٱللَّهُ بَصِيرٌۢ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾

और उन्हों ने यह समझा कि इस से कोई फ़साद नहीं होगा। इसलिए वे अन्धे और बहरे हो गए। अल्लाह ने पुनः दया-भाव से उन की ओर ध्यान दिया, किन्तु फिर भी उन में से बहुत से लोग अन्धे एवं बहरे हो गए और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे देखता है।७२।

لَقَدْ كَفَرَ ٱلَّذِينَ قَالُوٓا إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْمَسِيحُ ٱبْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ ٱلْمَسِيحُ يَٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱعْبُدُوا ٱللَّهَ رَبِّى وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُۥ مَن يُشْرِكْ بِٱللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ ٱللَّهُ عَلَيْهِ ٱلْجَنَّةَ وَمَأْوَىٰهُ ٱلنَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ﴿٧٣﴾

जिन लोगों ने यह कहा है कि निस्सन्देह मसीह पुत्र-मर्यम ही अल्लाह है, अवश्य इन्कार करने वाले बन गए हैं और मसीह ने तो कहा था कि हे इस्राईल की सन्तान! तुम अल्लाह की उपासना करो जो मेरा भी रब्ब है तथा तुम्हारा भी रब्ब है। सच बात यही है कि जो (व्यक्ति किसी को) अल्लाह का साझी ठहराए तो (समझो कि) अल्लाह ने उस के लिए स्वर्ग को हराम कर दिया और उस का ठिकाना नरक है तथा अत्याचारियों का कोई भी सहायक न होगा।७३।

لَّقَدْ كَفَرَ ٱلَّذِينَ قَالُوٓا إِنَّ ٱللَّهَ ثَالِثُ ثَلَٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّآ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ ۚ وَإِن لَّمْ يَنتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٤﴾

जिन लोगों ने यह कहा कि निस्सन्देह अल्लाह तीन में से एक है वे निश्चय ही इन्कार करने वाले हो गए और सिवाय एक उपास्य के दूसरा कोई उपास्य नहीं तथा जो कुछ वे कहते हैं यदि उस से न रुके तो उन में से जिन्होंने इन्कार किया है उन्हें अवश्य ही पीड़ा-दायक अज़ाब मिलेगा।७४।

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى ٱللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُۥ ۚ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٥﴾

फिर क्या वे लोग अल्लाह के सामने नहीं झुकते और उस से (अपने पापों की) क्षमा नहीं माँगते? वास्तव में अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।७५।

مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٦﴾

मर्यम का पुत्र मसीह केवल एक रसूल था। उस से पहले रसूल भी मर चुके[1] हैं और उसकी माता बड़ी सत्यवती महिला थी। वे दोनों भोजन[2] किया करते थे। देख! हम किस प्रकार उन के (हित के) लिए प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, फिर देख!! उन का विचार किस तरह बदल दिया[3] जाता है।७६।

قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٧﴾

तू कह दे कि क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर उन की पूजा करते हो जिन में न तो तुम्हें हानि पहुँचाने की शक्ति है तथा न लाभ पहुँचाने की और अल्लाह ही है जो बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है।७७।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٧٨﴾ ع

तू कह दे कि हे अहले किताब! अपने धर्म के विषय में अनुचित (ढंग से) अतिशयोक्ति[4] (बढ़ा-चढ़ा कर बातें करने) से काम न लो और उन लोगों की मनोकामनाओं के पीछे न चलो जो इस से पहले पथ-भ्रष्ट हो चुके हैं और उन्हों ने कई दूसरे लोगों को भी पथ-भ्रष्ट किया है तथा वे सीधी राह से भटक गए हैं।७८। (रुकू १०/१४)

---

1. मूल शब्द 'ख़ला' का अर्थ निधन, मौत या मृत्यु है। (लिसानुल अरब) अतः यह आयत हज़रत मसीह की मौत का प्रमाण है, क्योंकि पवित्र क़ुर्आन में लिखा है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से पहले वाले समस्त रसूलों का निधन हो चुका है जिन में मसीह शामिल हैं। (सूर: आले-इम्रान रुकू नं० 15)

2. हज़रत मसीह का भोजन करना इस बात का प्रमाण है कि वह अल्लाह न थे। इन्जील इस पर गवाह है। (मरक़स 14:17.18)

3. अर्थात् प्रमाणों के होते हुए भी धर्म के ठेकेदार, लोगों को कुमार्ग पर ले जाते हैं।

4. देखने में तो अतिशयोक्ति उचित नहीं समझी जाती, किन्तु यदि किसी वस्तु में अनेक गुण हों तो उस में यदि कोई व्यक्ति अत्युक्ति से भी काम ले तो भी यह बात अनुचित नहीं होती अपितु ठीक ही

(शेष पृष्ठ २५१ पर)

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٩﴾

इस्राईल की सन्तान में से जिन्होंने इन्कार किया है उन पर दाऊद और ईसा पुत्र मर्यम की ज़ुबान से फटकार डाली गई थी और यह इस कारण हुआ था कि उन्हों ने अवज्ञा की थी और वे सीमोल्लंघी (हद से बढ़ने वाले) बन गए थे ।७९।

كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٨٠﴾

वे एक-दूसरे को किसी बुरी बात से नहीं रोकते थे जिसे वे स्वयं कर चुके हों। जो कुछ वे करते थे निस्सन्देह वह बहुत बुरा था ।८०।

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿٨١﴾

तू उन में से बहुतों को देखेगा कि जो लोग इन्कार करने वाले हैं वे उन्हें अपना सहायक बनाते हैं। उन्होंने अपने लिए जो कुछ अपनी इच्छा[1] से आगे भेजा है वह बहुत बुरा है, वह यह है कि अल्लाह उन से अप्रसन्न हो गया है तथा वे अज़ाब में पड़े रहेंगे ।८१।

وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾

और यदि वे अल्लाह पर एवं इस रसूल पर तथा उस पर जो इस (नबी) पर उतारा गया है ईमान लाते तो वे उन्हें अपना सहायक न बनाते, परन्तु उन में से बहुत से लोग अवज्ञाकारी हैं ।८२।

(पृष्ठ २५० का शेष)

मानी जाती है। इस आयत में इस ओर संकेत किया गया है कि धर्म अपने अन्दर अनेक इश्वरीय गुण रखता है और यदि कोई व्यक्ति उस की स्तुति में साधारण रूप में अत्युक्ति से भी काम ले तो वह अतिशयोक्ति उचित ही होगी।

1. अर्थात् अल्लाह की अप्रसन्नता, जो ऐसी वस्तु नहीं जिसे मानव अपने हितार्थ परलोक के लिए संचय कर सके।

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ
وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ
اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ
وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٣﴾

तू यहूदियों और अनेकेश्वरवादियों को निश्चय ही मोमिनों के साथ शत्रुता रखने में सब से बढ़ कर कठोर पाएगा और तू मोमिनों के साथ प्रेम करने की दृष्टि से निश्चय ही उन लोगों को सब से अधिक निकट पाएगा, जो यह कहते हैं कि हम नसारा हैं। इस का कारण यह है कि उन में से कुछ (लोग) विद्वान तथा तपस्वी हैं और यह कि वे अभिमान नहीं करते।८३।

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَى أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨٤﴾

और जब वे उस (अल्लाह के कलाम) को सुनते हैं जो इस रसूल पर उतारा गया है तो (हे सम्बोध्य!) तू देखता है कि जो सत्य उन्होंने पहचान लिया है उस के कारण उनकी आँखें आँसू बहाती हैं। वे कहते हैं कि हे हमारे रब्ब! हम ईमान ले आए हैं। अतः तू हमारा नाम भी गवाहों में लिख ले।८४।

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ﴿٨٥﴾

और (वे कहते हैं कि) हमें क्या हो गया है कि हम अल्लाह पर तथा उस सत्य पर जो हमारे पास आया है ईमान न लाएँ और वास्तव में हमारी यह इच्छा है कि हमारा रब्ब हमें नेक लोगों में शामिल करे।८५।

فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٦﴾

सो अल्लाह उन की इस बात के बदले में उन्हें ऐसा स्वर्ग प्रदान करेगा जिस में नहरें बहती होंगी। वे उस में निवास करते चले जाएँगे तथा यही नेक लोगों का बदला है।८६।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٨٧﴾

और जिन लोगों ने इन्कार किया है और हमारी आयतों को झुठलाया है वे लोग नरक वाले हैं।८७। (रुकू ११/१)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٨٨﴾

हे ईमान लाने वालो! जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल (वैध) ठहराया है तुम उस में से पवित्र पदार्थ अवैध (हराम) न ठहराओ और नियमित सीमाओं से आगे न बढ़ो तथा अल्लाह सीमा से आगे बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता।८८।

وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾

और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से हलाल (वैध) और पवित्र चीज़ें खाओ और अल्लाह के लिए संयम धारण करो, जिस पर तुम ईमान रखते हो ।८९।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ۖ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ۖ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ۖ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ۖ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٩٠﴾

अल्लाह तुम्हारी शपथों में से व्यर्थ[1] शपथों पर तुम्हें दण्ड नहीं देगा, अपितु तुम्हारे पक्की शपथ लेने (और उसे भंग कर देने) पर तुम्हें दण्ड देगा। सो उस (के भंग करने) का कफ़्फ़ारा (बदला) दस निर्धनों को दरमियाने दर्जे का खाना खिलाना है जो तुम अपने परिवार को खिलाते हो अथवा उन (दस) के वस्त्र देना या एक दास का स्वतन्त्र करना है। फिर जिसे (यह भी आसानी से) न मिले तो उसे तीन दिन के रोज़े रखना जरूरी है। जब तुम शपथें लो (और फिर उन्हें भंग करो) तो यह तुम्हारी शपथों का कफ़्फ़ारा (बदला) है और तुम अपनी शपथों की रक्षा किया करो। अल्लाह अपनी आयतों को तुम्हारे लिए इसी प्रकार वर्णन करता है ताकि तुम कृतज्ञ बन जाओ ।९०।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩١﴾

हे ईमान लाने वालो! शराब, जुआ और मूर्तियाँ तथा पाँसे केवल अपवित्र एवं शैतान के काम हैं। अतः तुम इन से बचो ताकि तुम सफल हो जाओ ।९१।

اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩٢﴾

शैतान केवल यह चाहता है कि वह तुम्हारे बीच शराब और जुए के द्वारा शत्रुता और वैर डाल दे तथा अल्लाह की याद एवं नमाज़ से रोक दे। अब क्या तुम इन बातों से रुक सकते हो? ।९२।

---

1. विवरण के लिए देखिए सूरः बकरः टिप्पणी आयत नं० 226।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا ۚ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٩٣﴾

और तुम अल्लाह् की आज्ञा का पालन करो और इस रसूल के आज्ञाकारी रहो एवं सचेत रहो और यदि तुम ने (इस चेतावनी के बाद भी) मुँह मोड़ लिए तो जान लो कि हमारे रसूल के ज़िम्मा तो खोल कर पहुँचा देना ही है।९३।

لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوا وَّآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوا وَّآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوا وَّأَحْسَنُوا ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٤﴾ ع ١٢/٢

जो लोग ईमान लाए हैं और उन्हों ने शुभ कर्म किए हैं जब वे संयम धारण करें तथा ईमान लाएँ और शुभ कर्म करें, फिर संयम (में और आगे) बढ़ें तथा ईमान लाएँ, फिर संयम में (पहले से अधिक) प्रगति करें और परोपकार करें तो जो कुछ भी वे खाएँ उस पर उन्हें कोई पाप नहीं होगा और अल्लाह् उपकार करने वालों से प्रेम करता है।९४। (रुकू १२/२)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللَّهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهُ أَيْدِيكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَخَافُهُ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٥﴾

हे ईमान लाने वालो ! अल्लाह् एक साधारण सी बात अर्थात् शिकार के द्वारा तुम्हारी परीक्षा करेगा जिस तक तुम्हारे हाथ और भाले पहुँच सकेंगे ताकि अल्लाह् उन लोगों को ज़ाहिर कर दे जो एकान्त में उस से भय खाते हैं, फिर जो व्यक्ति इस आदेश के सुनने के बाद भी ज़्यादती से काम लेगा तो उसे पीड़ा-दायक अज़ाब दिया जाएगा।९५।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنتُمْ حُرُمٌ ۚ وَمَن قَتَلَهُ مِنكُم مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ هَدْيًا بَالِغَ الْكَعْبَةِ

हे ईमान लाने वालो ! तुम एहराम की हालत में शिकार को न मारो और तुम में से जो कोई जान-बूझ कर उसे मारेगा तो जो चौपाया उस ने मारा होगा उसी जैसा चौपाया उसे बदले में देना होगा। जिस का निर्णय तुम में से दो न्यायवादी व्यक्ति करेंगे एवं जिसे काबा तक क़ुर्बानी (बलि)[1] के लिए

أَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ أَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ أَمْرِهٖ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٥﴾

पहुँचाना जरूरी होगा और (यदि इस का सामर्थ्य न हो तो) कफ़्फ़ारा (बदला) देना होगा अर्थात् कुछ निर्धनों को भोजन कराना अथवा उस के बराबर रोज़े रखना होगा ताकि वह (अपराधी) अपने कुकर्म के परिणाम को भोगे। हाँ! जो (पहले) हो चुका है उसे अल्लाह ने क्षमा कर दिया है तथा जो व्यक्ति फिर ऐसा करेगा अल्लाह उसे (उस के दोषों का) दण्ड देगा और अल्लाह ग़ालिब और (कुकर्मों का) दण्ड देने वाला है।९६।

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٩٦﴾

समुद्री शिकार करना और उस का खाना तुम्हारे लिए तथा यात्रियों के भले के लिए हलाल (वैध) ठहराया गया है, किन्तु जब तक तुम एहराम की हालत में हो (उस समय तक) थल का शिकार तुम्हारे लिए हराम ठहराया गया है और तुम अल्लाह के लिए संयम धारण करो, जिस के सामने तुम्हें इकट्ठा कर के ले जाया जाएगा।९७।

جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَآئِدَ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا أَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٩٧﴾

अल्लाह ने काबा अर्थात् सुरक्षित घर को लोगों की सदा-सर्वदा[1] उन्नति का साधन बनाया है और आदर वाले महीने तथा बलि को और जिन चौपायों के गले में पट्टा डाला गया हो उन को भी। यह इसलिए (किया गया) है कि तुम जान लो कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है अल्लाह उसे जानता है।९८।

اِعْلَمُوْٓا أَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٨﴾

याद रखो कि अल्लाह अज़ाब देने में भी बड़ा कठोर है और निस्सन्देह वह बहुत क्षमा करने वाला एवं दया करने वाला है।९९।

---

1. अर्थात् वह शिक्षा जो कभी मन्सूख (निरस्त) नहीं होती। (मुफ़रदात)

مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿۱۰۰﴾

रसूल पर केवल बात का पहुँचाना (जरूरी) है और जो (बात कार्य रूप में) तुम से जाहिर हो जाती है और उस को भी जो अभी तुम से (कार्य रूप में) जाहिर नहीं हुई, अल्लाह भली-भाँति जानता है ।१००।

قُلْ لَّا یَسْتَوِی الْخَبِیْثُ وَ الطَّیِّبُ وَ لَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِیْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ یٰۤاُولِی الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ ع

तू कह दे कि बेकार और निकम्मी चीज लाभदायक चीज़ के समान नहीं हो सकती, भले ही तुम्हें निकम्मी और बेकार चीज की बहुतात कितनी ही पसंद हो। इसलिए हे बुद्धिमानों ! अल्लाह के लिए संयम धारण करो ताकि तुम सफल हो जाओ ।१०१। (रुकू १३/३)

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْیَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَ اِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِیْنَ یُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ ﴿۱۰۲﴾

हे मोमिनो ! उन बातों के बारे में प्रश्न न किया करो जो यदि तुम पर जाहिर कर दी जाएँ तो वे तुम्हारे लिए कष्ट का कारण बन जाएँ और यदि तुम उन के बारे में इस समय प्रश्न करोगे जब कि क़ुर्आन उतारा जा रहा है तो तुम पर वे जाहिर कर दी जाएँगी। अल्लाह स्वयं जान-बूझ कर उन्हें वर्णन करने से रुका रहा है। अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं समझ-बूझ से काम लेने वाला है ।१०२।

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِیْنَ ﴿۱۰۳﴾

तुम से पहले एक जाति (के लोग) ऐसी बातों के बारे में सवाल कर चुके हैं, किन्तु (जब उत्तर मिला तो) उन्हों ने उस (के मानने) से इन्कार कर दिया ।१०३।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٣﴾

न तो अल्लाह ने बहीरः[1] (के बनाने) का आदेश दिया है न साइबः[2] का, न वसीलः[3] का, न हाम[4] का, किन्तु जो लोग इन्कार करने वाले हैं वे अल्लाह पर झूठ गढ़ कर आरोप लगाते हैं और उन में से बहुत से लोग ना समझ हैं।१०४।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْئًا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٤﴾

और जब उन्हें कहा जाता है कि अल्लाह के उतारे हुए कलाम और उस के रसूल की ओर आओ तो वे कहते हैं कि हम ने जिस रीति पर अपने पूर्वजों को पाया था वह हमारे लिए काफ़ी है। क्या यदि (यह हालत हो कि) उन के पूर्वज कुछ भी न जानते हों और न ही ठीक रास्ते पर चलते रहे हों। (तब भी वे अपनी हठ पर जमे रहेंगे ?)।१०५।

---

1. 'बहीरः' वह ऊँटनी जिस के कान छेद दिए गए हों। इस्लाम धर्म से पहले अरबों में यह प्रथा प्रचलित थी कि जब एक ऊंटनी दस बच्चे दे देती तो वे उन के कान छेद देते थे, फिर उसे खुला छोड़ देते थे, उस पर न तो कोई सवार होता था न उस पर बोझ ही लादा जाता था। (मुफ़रदात)

2. 'साइबः' वह ऊँटनी जो चारागाह में खुली छोड़ दी जाए और उसे पानी पीने के घाट से तथा चारागाह से न रोका जाए। इस्लाम धर्म से पहले अरब लोग ऐसा उस समय करते थे जब कोई ऊँटनी पाँच बच्चों को जन्म दे लेती थी।

3. 'वसीलः' यह भी इस्लाम से पहले की एक प्रथा थी कि जब एक बकरी एक ही समय में नर-मादा दो बच्चे एक साथ दे तो उन में से किसी को जिबह नहीं करते थे ताकि एक को जिबह करने से दूसरे को कष्ट न पहुँचे।

4. 'हाम' वह ऊँट (साँड) जिसकी नस्ल से दस बच्चे हो जाएँ, उसे अरब लोग छोड़ देते थे, उस पर न तो सवार होते तथा न उससे दूसरा कोई काम लेते और न उसे चारागाह और पानी से रोकते थे।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝١٠٦

हे मोमिनो ! तुम अपनी जानों (की रक्षा) पर ध्यान दो। जब तुम हिदायत पा लो तो फिर किसी की गुमराही तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकेगी। तुम सब को अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है। सो जो कुछ तुम करते हो उस से वह तुम्हें सूचित करेगा।१०६।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِىْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللّٰهِ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ۝١٠٧

हे मोमिनो ! जब तुम में से किसी की मौत (का समय निकट) आ जाए तो वसीय्यत के समय तुम्हारी आपस की गवाही (का ढंग) यूँ होना चाहिए कि तुम में से दो न्याय करने वाले गवाह लिए जाएँ अथवा दो गवाह (जो तुम मुसलमानों में से न हों अपितु) दूसरे लोगों में से हों। (यह नियम उस हालत में लागू होगा) जब कि तुम देश में यात्रा कर रहे हो और तुम्हें मौत की विपत्ति आ पहुंचे (तथा तुम्हें अपने में से गवाह न मिल सकें) ऐसी हालत में तुम उन दोनों गवाहों को नमाज़ के बाद रोक लो एवं वे दोनों (इस हालत में कि) तुम्हें (उन की गवाही के बारे में) सन्देह हो, अल्लाह की शपथ ले कर कहें कि हमें इस (गवाही) से अपना कोई लाभ हासिल नहीं करना है चाहे वह (जिस के बारे में हम गवाही दे रहे हैं) हमारा निकट सम्बन्धी ही क्यों न हो तथा हम अल्लाह की (निर्धारित) गवाही (अर्थात् सच बोलने) को नहीं छिपाएँगे। यदि हम ऐसा करें तो (इस हालत में) हम पापी होंगे।१०७।

فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰٓ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّآ إِثْمًا فَـَٔاخَرٰنِ يَقُومٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهٰدَتُنَآ أَحَقُّ مِنْ شَهٰدَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَآ إِنَّآ إِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِينَ ﴿١٠٨﴾

(तत्पश्चात्) यदि यह (बात) खुल जाए कि उन दोनों ने (अपने ऊपर) पाप ले लिया है तो दूसरे दो व्यक्ति अर्थात् मरने वाले के (वारिसों में से) जिन के विरुद्ध पहले दो व्यक्तियों ने हक़ क़ायम किया था (गवाही के लिए) खड़े हों तथा वे अल्लाह की शपथ ले कर कहें कि हमारी गवाही पहले दो गवाहों की गवाही से ज़्यादा सच्ची है और हम ने (अपनी गवाही में) कोई ज़्यादती नहीं की, यदि हम ने ऐसा किया हो तो हमें अत्याचारियों में से समझना चाहिए।१०८।

ذٰلِكَ أَدْنَىٰٓ أَنْ يَّأْتُوا بِالشَّهٰدَةِ عَلَىٰ وَجْهِهَآ أَوْ يَخَافُوٓا أَنْ تُرَدَّ أَيْمٰنٌۢ بَعْدَ أَيْمٰنِهِمْ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوا ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِينَ ﴿١٠٩﴾ ع

यह ढंग उन (पहले गवाहों) को इस बात से अधिक निकट कर देगा कि वे (घटना के) अनुकूल ठीक-ठीक गवाही दें, अथवा (इस बात से) डरें कि सम्भवतः उन के शपथ लेने के पश्चात् कोई दूसरी शपथ (उन की शपथ के खण्डन के लिए) पेश की जाएगी और अल्लाह के लिए संयम धारण करो एवं (उसके आदेशों) का भली-भाँति पालन करो और (याद रखो कि) अल्लाह उद्दण्डी लोगों को हिदायत नहीं देता।१०९। (रुकू १४/४)

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَآ أُجِبْتُمْ ۖ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ عَلّٰمُ الْغُيُوبِ ﴿١١٠﴾

और (उस दिन को याद करो) जिस दिन अल्लाह रसूलों को इकट्ठा करेगा तथा कहेगा कि तुम्हें क्या उत्तर दिया गया था? वे कहेंगे हमें हक़ीक़ी जानकारी नहीं है। परोक्ष (ग़ैब) की बातों का (ठीक) ज्ञान केवल तुझे ही है।११०।

اِذۡ قَالَ اللّٰهُ یٰعِیۡسَی ابۡنَ مَرۡیَمَ اذۡکُرۡ نِعۡمَتِیۡ عَلَیۡکَ وَعَلٰی وَالِدَتِکَ ۘ اِذۡ اَیَّدۡتُّکَ بِرُوۡحِ الۡقُدُسِ ۟ تُکَلِّمُ النَّاسَ فِی الۡمَهۡدِ وَکَهۡلًا ۚ وَاِذۡ عَلَّمۡتُکَ الۡکِتٰبَ وَالۡحِکۡمَةَ وَالتَّوۡرٰىةَ وَالۡاِنۡجِیۡلَ ۚ وَاِذۡ تَخۡلُقُ مِنَ الطِّیۡنِ کَهَیۡـَٔةِ الطَّیۡرِ بِاِذۡنِیۡ فَتَنۡفُخُ فِیۡهَا فَتَکُوۡنُ طَیۡرًۢا بِاِذۡنِیۡ وَتُبۡرِیُٔ الۡاَکۡمَهَ وَالۡاَبۡرَصَ بِاِذۡنِیۡ ۚ وَاِذۡ تُخۡرِجُ الۡمَوۡتٰی

उस समय अल्लाह् (मर्यम के पुत्र ईसा से भी) कहेगा कि हे मर्यम के पुत्र ईसा ! मैं ने जो निअमत तुझ पर और तेरी माता पर उतारी थी उसे याद कर अर्थात् जब मैं ने पवित्र वाणी (वह्य) से तेरी सहायता की थी । तू लोगों से बचपन में भी तथा अधेड़ आयु में भी (आध्यात्मिक) बातें करता था और (उस समय को भी याद कर) जब कि मैं ने तुझे किताब और हिक्मत (की बातें) सिखाई थीं और तौरात एवं इन्जील सिखाई तथा जब तू मेरी आज्ञा से मिट्टी[1] (विनम्र भाव रखने वालों में) से पक्षी[2] के पैदा करने की तरह् मख़्लूक़ पैदा करता था, फिर तू उन में फूँक मारता था तो वे मेरी आज्ञा से उड़ने के योग्य बन जाते थे और तू अन्धों और कोढ़ियों को मेरे आदेश से पवित्र[3] ठहराता था और

1. अर्थात् जिस प्रकार पक्षी अपने नीचे अण्डे रख कर और उन्हें गर्म कर के बच्चे निकालता है उसी प्रकार तू भी मानव-समाज में से आध्यात्मिक वृत्ति वाले लोगों को अपने सम्पर्क में ले कर एक दिन इस योग्य बना देता है कि वे अल्लाह् की ओर आध्यात्मिक उड़ान करने लग जाते हैं ।

2. कुछ भाष्यकार कहते हैं कि इस आयत से सिद्ध होता है कि हज़रत मसीह् अल्लाह् की भाँति पक्षी बनाया करते थे, परन्तु आयत के शब्दों से यह भाव नहीं निकलता, क्योंकि कोई पक्षी भी मिट्टी से पक्षी बना कर फिर उन में फूँक मार कर उन्हें जीवन नहीं दिया करता, अपितु अण्डे देकर उन पर बैठता और उन्हें गर्म कर के बच्चे निकालता है । इसी प्रकार हज़रत ईसा किया करते थे कि भौतिक स्वभाव वाले लोगों को अपने सम्पर्क में लेकर उनका आध्यात्मिक प्रतिशिक्षण करते थे और अपनी वाणी से उनको गर्मी पहुँचाते थे । यहाँ तक कि धर्म से कोरे लोग उनके सम्पर्क में आ आकर आध्यात्मिक व्यक्ति बन जाते थे और समस्त नबी ऐसा ही किया करते हैं । इस में हज़रत मसीह् की कोई विशेषता नहीं है ।

3. विवरण के लिए देखिए सूरः आले इम्रान टिप्पणी आयत नं० 50 ।

بِإِذْنِيْ وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ إِنْ هٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١١﴾

जब तू मेरी आज्ञा से मुर्दों[1] को निकालता था और जब इस्राईल की सन्तान को (जो तेरी हत्या[2] करने का निश्चय किए हुए थी) मैं ने उन्हें तुझ से रोके रखा, (उस समय) जब कि तू उन के पास युक्तियाँ ले कर आया तथा उन में से इन्कार करने वाले लोगों ने कहा कि यह तो खुले रूप से छल-कपट की बातें हैं।१११।

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيّٖنَ أَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿١١٢﴾

और (उस समय को याद कर) जब मैं ने तेरे हवारियों (शिष्यों) को वह्य की कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ तो उन्होंने कहा, हम ईमान लाते हैं तथा तू गवाह रह कि हम आज्ञाकारियों में से हैं।११२।

---

1. कुछ भाष्यकार कहते हैं कि इस आयत से सिद्ध होता है कि हज़रत मसीह मुर्दे जीवित किया करते थे, परन्तु पवित्र क़ुर्आन में सुस्पष्ट लिखा है कि मुर्दों को सिवाय अल्लाह के कोई भी जीवित नहीं कर सकता। (सूरः दुख़ान आयत नं० ९) हाँ ! मुर्दे जीवित करने का शब्द हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के लिए भी प्रयुक्त हुआ है जैसे कि "हे मोमिनो ! जब अल्लाह और उसका रसूल जीवित करने के लिए तुम को बुलाएँ तो उन की बात मान लिया करो।" (सूरः अनफ़ाल रुकू ३)

इस आयत में आध्यात्मिक जीवन अभीष्ट है न कि शारीरिक जीवन। अतः हज़रत मसीह के लिए भी इस आयत में आध्यात्मिक मुर्दे जीवित करने का वर्णन है न कि शारीरिक मुर्दे।

2. इस से सिद्ध होता है कि यहूदी हज़रत मसीह को सलीब पर मार देने में सफल नहीं हुए थे। भाष्यकारों के मतानुसार इसका यह अर्थ करना कि किसी दूसरे व्यक्ति का काया पलट करके उसे हज़रत मसीह के बदले में सलीब पर लटकाया गया था, उपहास जनक विचार है। यदि किसी दूसरे व्यक्ति की काया कल्प करके उसे सलीब पर लटका दिया गया था तो फिर तो यहूदी सच्चे हुए, क्योंकि वे तो यही समझते थे कि हमने मसीह को सलीब पर लटका दिया है और वह सलीब पर ही मर गया है। कुछ लोगों को इस स्थान में भूल हो जाती है कि इस प्रकार के समस्त शब्द हज़रत मसीह के लिए क्यों प्रयोग में लाए जाते हैं।

इस का उत्तर यह है कि हज़रत मसीह के विषय में यह भविष्यवाणी थी कि वह उपमा के रूप में बातें किया करेगा। (मत्ती 13:1.18) सो उनके विषय में जो बातें पवित्र क़ुर्आन में आई हैं वह इन्जील के कथानानुसार ही आई हैं।

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يٰعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١١٣﴾

और (उस समय को भी याद करो) जब हवारियों ने कहा कि हे मर्यम के पुत्र ईसा ! क्या तेरे रब्ब में यह सामर्थ्य है कि वह हमारे लिए आसमान से परोसा हुआ थाल उतारे ? इस पर मसीह ने कहा कि यदि तुम सच्चे मोमिन हो तो अल्लाह के लिए संयम धारण करो ।११३।

قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَّأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِينَ ﴿١١٤﴾

उन हवारियों ने कहा कि हमारी इच्छा है कि हम उस में से खाएँ तथा हमारे हृदय सन्तुष्ट हो जाएँ (कि हमारा अल्लाह ऐसा कर सकने का सामर्थ्य रखता है) और हमें विश्वास हो जाए कि तू ने हमारे साथ सच्ची बात की है और हम इस के बारे में गवाही देने के योग्य हो जाएँ ।११४।

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِّأَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِينَ ﴿١١٥﴾

इस पर मर्यम के पुत्र ईसा ने कहा कि हे अल्लाह ! हे हमारे रब्ब ! हमारे ऊपर आसमान से परोसा हुआ थाल उतार, जो हम (ईसाइयों) में से पहलों[1] के लिए भी ईद हो और पिछलों के लिए भी ईद हो तथा तेरी ओर से एक चमत्कार हो तथा तू अपने पास से हमें जीविका प्रदान कर। तू जीविका प्रदान करने वालों में से सब से बढ़ कर अच्छी जीविका प्रदान करने वाला है ।११५।

---

1. इस प्रार्थना के फलस्वरूप ईसाइयों के पहले समूह को इस संसार में राज्य प्राप्त हुआ था और अन्तिम समूह को भी मिला है, बीच में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के सेवकों ने उन की शक्ति और अभिमान को चूर-चूर किया था। अब जब कि पवित्र क़ुर्आन की भविष्यवाणी पूरी हो चुकी है तो मुसलमान एक ओर तो ऐसी बातें बढ़ा-चढ़ा कर कहते हैं कि आसमान पर हज़रत जिब्रील स्वादिस्ट पदार्थ तय्यार करवाकर और फ़रिश्तों के सिरों पर रख कर साँझ-सवेरे ईसाइयों के खाने के लिए लाते हैं और फिर दूसरी ओर ईसाई अनुशासकों के अत्याचारों के विरुद्ध चीत्कार भी करते हैं।

قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١١٦﴾

अल्लाह ने कहा कि निस्सन्देह मैं तुम पर ऐसा (परोसा हुआ) थाल उतारूँगा। सो यदि उस के उतरने के बाद तुम में से जो कोई भी नाशुक्री (कृतघ्नता) करेगा तो मैं उसे ऐसा अज़ाब दूँगा कि संसार में किसी दूसरी जाति को ऐसा अज़ाब[1] नहीं दूँगा।११६।(रुकू१५/५)

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ۗ بِحَقٍّ ۗ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ۗ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ۗ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١١٧﴾

और जब अल्लाह ने कहा[2] कि हे मर्यम के पुत्र ईसा ! क्या तू ने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माता को अल्लाह के सिवा दो उपास्य (ख़ुदा) बना लो ? तो उस ने उत्तर दिया कि हम तुझे (समस्त त्रुटियों से) पवित्र ठहराते हैं। मुझे यह शोभा नहीं देता था कि मैं यह बात कहता जिस का मुझे अधिकार न था और यदि मैं ने ऐसा कहा था तो तुझे उस का अवश्य ज्ञान होगा। जो कुछ मेरे मन में है तू उसे भी जानता है तथा जो कुछ तेरे मन में है मैं उसे नहीं जानता। निस्सन्देह तू ग़ैब (परोक्ष) की समस्त बातों को भली-भाँति जानता है।११७।

---

1. इस आयत में बताया गया है कि ईसाइयों के अनेकेश्वरवाद के कारण उन्हें असाधारण अज़ाब मिलेगा। (सूर: आले इम्रान रुकू ६)

यह बात ईसाई जाति से सम्बन्धित थी, हवारियों से नहीं। ईसाइयों को प्रथम चरण में रूमी साम्राज्य के समय बड़ी-बड़ी सफलताएँ प्राप्त हुई तथा अन्तिम चरण अर्थात् अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में भी इन को बड़ी-बड़ी सफलताएँ प्राप्त हुईं।

इस आयत में भविष्यवाणी द्वारा यह बताया गया है कि अल्लाह अपने प्रतिज्ञा के अनुसार उन्हें बहुत मात्रा में खाद्य पदार्थ प्रदान करेगा, जो उन्हें साँझ-सवेरे मिलते रहेंगे, परन्तु जो लोग इस बात के होते हुए भी अवज्ञा करते रहेंगे अल्लाह उन्हें कड़ा अज़ाब देगा जो किसी दूसरे को नहीं मिला होगा।

सो इस आयत का विषय ईसाइयों के दो युगों से सम्बन्ध रखने वाली भविष्यवाणी से है। हवारियों से इसका कोई सम्बन्ध नहीं। आगामी आयत में भी स्पष्ट है कि यह विषय अनेकेश्वरवादी ईसाइयों से सम्बन्ध रखता है, क्योंकि हवारी अनेकेश्वरवादी न थे।

2. अर्थात् अल्लाह क़ियामत के दिन ऐसा कहेगा। इस का प्रमाण यह है कि ईसाइयों ने मसीह और उस की माता को मसीह की मौत के बहुत समय बाद अल्लाह ठहराया था।

مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِیْ بِهٖۤ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّیْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَیْهِمْ شَهِیْدًا مَّا دُمْتُ فِیْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّیْتَنِیْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِیْبَ عَلَیْهِمْ ؕ وَاَنْتَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ شَهِیْدٌ ﴿۱۱۸﴾

मैं ने केवल उन से वही बात कही थी जिस का तू ने मुझे आदेश दिया था अर्थात् यह कि अल्लाह की उपासना करो जो मेरा भी रब्ब है और तुम्हारा भी रब्ब है। फिर जब तक मैं उन में रहा मैं उन का निरीक्षक रहा, परन्तु जब तू ने मुझे मौत दे दी तो तू ही उन की देख-भाल करने वाला था (मैं न था) और तू हर-एक चीज़ की देख-भाल करने वाला है।११८।

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۱۱۹﴾

यदि तू उन्हें अजाब देना चाहे तो वे तेरे ही बन्दे हैं और यदि तू उन्हें क्षमा करना चाहे तो तू ग़ालिब और हिक्मत वाला है।११९।

قَالَ اللّٰهُ هٰذَا یَوْمُ یَنْفَعُ الصّٰدِقِیْنَ صِدْقُهُمْ ؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ؕ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ﴿۱۲۰﴾

अल्लाह ने कहा कि यह दिन ऐसा है जिस में सच बोलने वालों को उन की सच्चाई लाभ देगी उन्हें ऐसे बाग मिलेंगे जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। वे उस में सदैव रहते चले जाएँगे। अल्लाह उन से ख़ुश हुआ तथा वे उस से ख़ुश हुए और यह एक बहुत बड़ी सफलता है।१२०।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِیْهِنَّ ؕ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۲۱﴾ ع

आसमानों और ज़मीन तथा जो कुछ इन दोनों के बीच है उस सारे की हुकूमत भी अल्लाह ही के लिए है और वह प्रत्येक बात के करने का पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है।१२१। (रुकू १६/६)
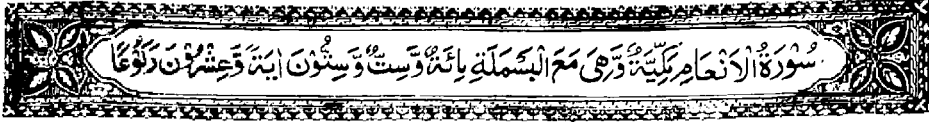
सूरः अल्-अन्आम

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की एक सौ छियासठ आयतें एवं बीस रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَ النُّوْرَ ۬ؕ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ②

हर प्रकार की स्तुति का अल्लाह ही अधिकारी है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है और अन्धेरों और नूर को भी बनाया है, किन्तु इस बात के होते हुए भी इन्कार करने वाले लोग अपने रब्ब का साझी बनाते हैं।२।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰۤى اَجَلًا ؕ وَ اَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ③

वह अल्लाह ही है जिस ने गीली मिट्टी से तुम को पैदा किया फिर (जीवन के लिए) एक अवधि निर्धारित की एवं एक निश्चित अवधि[1] और भी है जिस का ज्ञान केवल उसी (अल्लाह) को है, फिर भी तुम सन्देह करते हो।३।

وَ هُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ فِي الْاَرْضِ ؕ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَ جَهْرَكُمْ وَ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ④

और आसमानों तथा ज़मीन में वही अल्लाह है जो तुम्हारी छिपी बातों को भी जानता है और तुम्हारी खुली बातों को भी जानता है एवं जो कुछ तुम कमाते हो उस को भी जानता है।४।

1. अर्थात् सामूहिक रूप में संसार के जीवन का समय।

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٥﴾

और उन लोगों के पास उन के रब्ब के निशानों में से कदापि कोई निशान नहीं आया, किन्तु इन की रीति यही रही है कि वह उस से मुँह ही मोड़ते रहे हैं ।५।

فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٦﴾

सो जब उन के पास कामिल हक़ (क़ुर्आन) आया तो उन्हों ने इस का भी इन्कार कर दिया । अब इस का परिणाम यह निकलेगा कि जिन बातों के बारे में वे हँसी[1] किया करते थे शीघ्र ही उन के पूरा होने के समाचार उन्हें मिलने लग जाएँगे ।६।

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ مَكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِمْ مِدْرَارًا وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ﴿٧﴾

क्या उन्हें ज्ञात नहीं कि हम उन से पहले कितने ही युगों के लोगों को नष्ट कर चुके हैं जिन्हें हम ने पृथ्वी में इतना सामर्थ्य प्रदान किया था जितना सामर्थ्य तुम्हें (अर्थात् इस समय के लोगों को) प्रदान नहीं किया तथा हम ने उन पर बादलों को मूसलाधार वर्षा बरसाते हुए भेजा था और उन से ऐसी नहरें चलाई थीं जो उन के अधीन थीं, फिर हम ने उन्हें उन के पापों के कारण नष्ट कर दिया तथा उन के बाद एक और जाति को पैदा किया ।७।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿٨﴾

और यदि हम तुझ पर कागज़ों पर लिखी हुई एक किताब उतारते जिसे वे अपने हाथों से छू लेते, तो फिर भी इन्कार करने वाले लोग यही कहते कि यह तो एक खुला-खुला छल-कपट है ।८।

---

1. अर्थात् उनकी हँसी के कारण शीघ्र ही उन पर अज़ाब आ जाएगा ।

وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ⑨

और (विरोधी) कहते हैं कि इस पर कोई फ़रिश्ता[1] क्यों नहीं उतारा गया और यदि हम कोई फ़रिश्ता उतारते तो निर्णय ही हो जाता, फिर उन्हें कोई ढील नहीं दी जाती।९।

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ⑩

और (यह भी याद रखना चाहिए कि) यदि हम इस (नबी) को फ़रिश्तों में से नियुक्त करते तब भी हम इसे मानव का रूप ही प्रदान करते और उन के लिए फिर भी वह बात मुश्तबह (सन्देहात्मक) कर देते जिसे अब वे मुश्तबह समझ रहे हैं।१०।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑪

और तुझ से पहले जो रसूल हो चुके हैं उन की भी हँसी उड़ाई गई थी। परिणाम यह निकला था कि उन में से जिन्हों ने हँसी उड़ाई थी उन्हें उसी अज़ाब[2] ने घेर लिया जिस की वे हँसी उड़ा रहे थे।११। (रुकू १/७)

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ⑫

तू उन्हें कह दे कि धरती पर घूम फिर कर देखो कि झुठलाने वालों का क्या परिणाम हुआ करता है।१२।

---

1. अर्थात् जब इन्कार करने वालों के लिए कोई फ़रिश्ता उतारा जाता है तो वह भयानक समाचार लेकर ही उतरता है।

2. अर्थात् जिन आने वाले अज़ाबों के बारे में वे परिहास कर रहे थे वे अज़ाब आ गए और इन्कार करने वाले लोगों का विनाश हो गया।

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲﴾
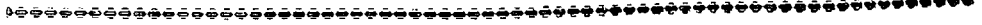
तू उन से पूछ कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह किसका है ? (इसका उत्तर वह क्या देंगे। अतः तू ही उन्हें) कह दे कि अल्लाह का। उसने परोपकार करना अपने लिए अनिवार्य कर रखा है। वह तुम्हें क़ियामत के दिन तक इकट्ठा करता चला जाएगा। इस बात में कोई सन्देह नहीं कि वे लोग जिन्हों ने अपने-आप को घाटे में डाल दिया है, वे (उस कुकर्म के कारण) ईमान नहीं लाएँगे[1]।१३।

وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۳﴾

और जो कुछ रात (के अन्धेरे) तथा दिन (के प्रकाश) में मौजूद है वह सारा उस (अल्लाह) का है और वह बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है।१४।

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۴﴾

तू कह दे कि क्या मैं अल्लाह को छोड़ कर दूसरे को मित्र बनाऊँ ! जो (अल्लाह) आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, हालाँकि वही (प्राणी-मात्र को) खिलाता है, परन्तु (किसी की ओर से) उसे जीविका प्रदान नहीं की जाती। तू कह दे कि मुझे आदेश दिया गया है कि मैं सब से बढ़ कर आज्ञाकारी बन जाऊँ और यह कि (हे रसूल !) तू मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) में से न बन।१५।

قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۵﴾

तू कह दे कि यदि मैं अपने रब्ब की आज्ञा का उल्लंघन करूँ तो मैं एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूँ।१६।

---

1. अर्थात् ईमान लाने से वञ्चित रहना अल्लाह की ओर से नहीं अपितु मनुष्य के अपने कुकर्म ही उसे वञ्चित कर देने का कारण बन जाते हैं।

مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ۗ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿١٧﴾

जिस व्यक्ति से वह अज़ाब टला दिया गया तो (जान लो कि) उस दिन अल्लाह् ने उस पर दया कर दी और यह बहुत बड़ी सफलता है।१७।

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۗ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٨﴾

और यदि अल्लाह् तुझे कोई दुःख पहुँचाए तो उसे उस (अल्लाह्) के सिवा कोई दूर करने वाला नहीं और यदि वह तुझे कोई भलाई पहुँचाए तो भी वह जिस बात के करने का निश्चय कर ले उस के करने पर पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है।१८।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ۗ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٩﴾

वह अपने बन्दों पर ग़ालिब[1] है और वह बड़ी हिक्मतों वाला और सब हालात की ख़बर रखने वाला है।१९।

قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ۗ قُلِ اللّٰهُ ۙ شَهِيْدٌ ۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۗ وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ۗ اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ۗ قُلْ لَّآ اَشْهَدُ ۚ

तू कह दे कि सब से बढ़ कर सच्ची गवाही देने वाला कौन है? फिर (स्वयं ही उत्तर में) कह दे कि अल्लाह् ! वह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह है तथा मेरी ओर यह क़ुर्आन वह्य किया गया है ताकि मैं इस के द्वारा तुम्हें और उन सारे लोगों को जिन तक यह पहुँचे (आने वाले अज़ाब से) सावधान करूँ। क्या तुम यह गवाही देते हो कि अल्लाह् के सिवा कोई दूसरे उपास्य भी हैं ? (और फिर अपनी ओर से) कह दे कि (तुम भले ही

1. यहाँ यह प्रश्न हो सकता है कि जब अल्लाह् प्रत्येक बात के करने का पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है तो फिर तत्काल ही दण्ड क्यों नहीं देता है ? इस का उत्तर यह दिया गया है कि अल्लाह् दूरदर्शी भी हैं और महाज्ञानी भी और सूक्ष्मदर्शी भी है। इसलिए वह व्यवहार भी इस प्रकार करता है कि परिणाम ठीक निकले ताकि कुछ लोग हिदायत पा सकें। वह महाज्ञानी है, उसे ज्ञान है कि भविष्य में अनेक लोग ईमान लाने वाले हैं। यदि अब इन लोगों को नष्ट कर दिया गया तो वे भी विनष्ट हो जाएंगे जो बाद में ईमान लाने वाले हैं। अतः अल्लाह् सामर्थ्य रखने पर भी तुरन्त दण्ड नहीं देता।

قُلۡ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ اِنَّنِیۡ بَرِیۡٓءٌ مِّمَّا تُشۡرِكُوۡنَ ﴿۱۹﴾

ऐसी झूठी गवाही देते फिरो) मैं तो यह गवाही नहीं देता। (पुनः उन से) कह दे कि वह अल्लाह तो अकेला है और मैं तो उन चीज़ों से बेज़ार[1] हूँ जिन्हें तुम अल्लाह का साझी ठहराते हो।२०।

اَلَّذِیۡنَ اٰتَیۡنٰهُمُ الۡكِتٰبَ یَعۡرِفُوۡنَهٗ كَمَا یَعۡرِفُوۡنَ اَبۡنَآءَهُمۡ ۘ اَلَّذِیۡنَ خَسِرُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ فَهُمۡ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۲۰﴾

वे लोग जिन को हम ने किताब दी है वे इस (सच्चाई) को उसी प्रकार पहचानते हैं जिस प्रकार वे अपने पुत्रों को पहचानते हैं, परन्तु जो लोग घाटे में पड़ गए तथा अपने-आप को घाटे में डाल दिया वे ईमान नहीं लाते।२१। (रुकू २/८)

وَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا اَوۡ كَذَّبَ بِاٰیٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا یُفۡلِحُ الظّٰلِمُوۡنَ ﴿۲۱﴾

(और उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी दूसरा कौन हो सकता है) जो अल्लाह पर झूठ गढ़ता है अथवा उस की आयतों को झुठलाता है। सच्ची बात तो यह है कि अत्याचारी लोग कदापि सफल नहीं होते।२२।

وَیَوۡمَ نَحۡشُرُهُمۡ جَمِیۡعًا ثُمَّ نَقُوۡلُ لِلَّذِیۡنَ اَشۡرَكُوۡۤا اَیۡنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِیۡنَ كُنۡتُمۡ تَزۡعُمُوۡنَ ﴿۲۲﴾

और जिस दिन हम उन सब को इकट्ठा करेंगे, फिर जिन्होंने हमारे साथ साझी ठहराए हैं उन से कहेंगे कि तुम्हारे बनाए हुए वे साझी कहाँ हैं? जिन के बारे में तुम ज़ोर दे कर कहा करते थे (कि वे अल्लाह के साझी हैं)।२३।

ثُمَّ لَمۡ تَكُنۡ فِتۡنَتُهُمۡ اِلَّاۤ اَنۡ قَالُوۡا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشۡرِكِیۡنَ ﴿۲۳﴾

फिर इस के उत्तर में वे केवल इतना ही कहेंगे कि अल्लाह की क़सम! जो हमारा रब्ब है, हम तो मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) थे ही नहीं।२४।

1. बेज़ार जो किसी बात से तंग आ गया हो।

انْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٥﴾

देख ! (इस अवसर पर) वे अपनी जानों के बारे में किस प्रकार झूठ बोलेंगे और इस से पहले वे जो कुछ गढ़ा करते थे सब उन्हें भूल जाएगा ।२५।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾

और उन में से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो तेरी बातों की ओर कान रखते हैं, हालाँकि हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं ताकि वे इसे न समझें और उन के कानों में बहरापन (पैदा कर दिया) है और यद्यपि वे हर-एक (प्रकार का) चमत्कार देख भी लें तब भी वे उस पर ईमान नहीं लाएँगे । (उन की हालत) यहाँ तक (पहुँची हुई है) कि वे जब तेरे पास आते हैं तो तुझ से झगड़ते हैं । इन्कार करने वाले लोग कहते हैं कि यह (क़ुर्आन) केवल पहले[1] लोगों की कहानियाँ हैं ।२६।

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٧﴾

और वे इस से (दूसरों को भी) रोकते हैं और (स्वयं भी) इस से दूर रहते हैं, परन्तु वे सिवाय अपने-आप के किसी का विनाश नहीं करते, किन्तु वे समझते नहीं ।२७।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٨﴾

और यदि तू उन्हें (उस समय) देखे जब वे नरक के सामने खड़े किए जाएँगे और जब वे कहेंगे काश ! हमें ईमान की हालत में वापस लौटा दिया जाए और हम भविष्य में कभी भी अपने रब्ब के आदेशों को नहीं झुठलाएँगे । (तो तुझे उन के झुठलाने की हक़ीक़त का ज्ञान हो जाएगा) ।२८।

1. इन्कार करने वालों का यह कहना है अन्यथा पवित्र क़ुर्आन में समस्त प्राचीन घटनाएँ भविष्य-वाणी के रूप में वर्णित हुई हैं और ऐसी ही घटनाएँ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम और आप के अनुयायियों के साथ भी घटी हैं ।

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَا كَانُوا يُخْفُونَ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٢٩﴾

हक़ीक़त यह है कि जो कुछ वे इस से पहले छिपाया करते थे वह उन पर भली-भाँति खुल गया है और यदि उन्हें वापस लौटाया जाता तो वे अवश्य (इस बात की ओर) आ जाते जिस से उन्हें रोका जाता था और निस्सन्देह वे (अपने इस कथन में) झूठे हैं।२९।

وَقَالُوا إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٣٠﴾

और वे कहते हैं कि हमारे लौकिक जीवन के सिवा कोई और जीवन नहीं और न हमें (पुनः जीवित कर के) उठाया जाएगा।३०।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣١﴾

और यदि तू उन्हें (उस समय) देखे जब उन्हें उन के रब्ब के सामने खड़ा किया जाएगा तो वह उन से कहेगा कि क्या यह (दूसरा जीवन) सत्य नहीं है? वे उत्तर में कहेंगे कि हमें अपने रब्ब की शपथ! क्यों नहीं (अवश्य सत्य है) वह कहेगा कि तब तुम अपने इन्कार पर हठ करने के कारण अज़ाब का स्वाद चखो।३१। (रुकू ३/९)

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا يَا حَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۚ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٣٢﴾

निस्सन्देह वे लोग घाटा पाने वाले हो गए जिन्होंने अल्लाह से मिलने (की बात) को झुठलाया यहाँ तक कि जब अचानक वह घड़ी उन पर आ जाएगी तो वे कहेंगे अफ़सोस! उस कोताही पर जो इस घड़ी के सम्बन्ध में हम से हुई। वे उस समय अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे। सुनो! जो बोझ वे उठाएँगे वह बहुत ही बुरा होगा।३२।

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٣﴾

और सांसारिक जीवन खेल-तमाशा के सिवा (और कुछ) नहीं है और जो लोग संयम धारण करते हैं उन के लिए पीछे आने वाला घर निश्चय ही सर्वश्रेष्ठ है, फिर क्या तुम समझ-बूझ से काम नहीं लेते ? ।३३।

قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٤﴾

निस्सन्देह हम जानते हैं और यही बात सच्ची है कि जो कुछ वे कहते हैं वह अवश्य तुझे दुःखी बनाता है, क्योंकि वे तुझे नहीं झुठलाते अपितु अत्याचारी लोग जान-बूझ कर अल्लाह की आयतों का इन्कार[1] करते हैं ।३४।

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِی الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٥﴾

और निस्सन्देह तुझ से पहले रसूलों को भी झुठलाया जा चुका है, फिर इस के होते हुए कि उन्हें झुठलाया गया और उन्हें कष्ट दिया गया तब भी उन्हों ने धैर्य धारण किए रखा, यहाँ तक कि उन के पास हमारी सहायता पहुँच गई और अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं और निस्सन्देह तेरे पास रसूलों के कुछ समाचार आ चुके हैं ।३५।

وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٦﴾

और यदि तुझ पर इन इन्कार करने वालों का मुँह फेर लेना दूभर गुज़रता है तो यदि तुझ में शक्ति है कि धरती में किसी सुरंग की या आकाश की ओर सीढ़ी की खोज कर सके और फिर उन के लिए कोई चमत्कार ला सके (तो निस्सन्देह ऐसा कर ले) और यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें अवश्य हिदायत पर इकट्ठा कर देता । अतएव तू अनजान[2] लोगों में से कदापि न बन ।३६।

---

1. अर्थात् अल्लाह को झुठलाने के कारण तुझे दुःख होता है । तुझे अपनी चिन्ता नहीं है ।
2. अर्थात् अल्लाह की इच्छा पर सन्तुष्ट रहो ।

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۘ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۝٣٧

जो लोग सुनते हैं वही (बात को) मानते हैं और जो मुर्दे[1] हैं अल्लाह उन्हें उठाएगा, फिर उन्हें उसी की ओर लौटाया जाएगा।३७।

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۚ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَن يُنَزِّلَ آيَةً وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝٣٨

और वे कहते हैं कि इस के रब्ब की ओर से इस पर कोई निशान (चमत्कार) क्यों नहीं उतारा गया ? तू कह दे कि निस्सन्देह अल्लाह इस बात का सामर्थ्य रखता है कि कोई निशान उतारे, परन्तु उन में से बहुत से (इस बात को) नहीं जानते।३८।

وَمَا مِن دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَائِرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَالُكُم ۚ مَّا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِن شَيْءٍ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ۝٣٩

और धरती पर चलने वाले सब के सब जानवर तथा अपने दोनों पंखों से उड़ने वाले पक्षी तुम्हारी तरह की जमाअतें (दल)[2] हैं। हम ने इस किताब में कुछ भी कमी[3] नहीं की, फिर उन (में से मानव-जाति) को उन के रब्ब की ओर इकट्ठा करके ले जाया जाएगा।३९।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمٌّ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ ۗ مَن يَشَإِ اللَّهُ يُضْلِلْهُ وَمَن يَشَأْ يَجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝٤٠

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया है वे बहरे तथा गूंगे हैं और अंधेरों में (पड़े हुए) हैं। जिसे अल्लाह चाहे पथ-भ्रष्ट कर दे तथा जिसे चाहे सीधी राह पर क़ायम कर दे।४०।

---

1. इस आयत से विदित होता है कि पवित्र क़ुर्आन में मुर्दों का शब्द सच्चाई से वञ्चित रहने वाले लोगों के लिए भी प्रयुक्त होता है। इन अर्थों को भाष्यकारों ने हज़रत मसीह के लिए प्रयुक्त नहीं किया और पवित्र क़ुर्आन में अनेकेश्वरवाद के विचारों को दाख़िल कर दिया है।

2. अर्थात् अल्लाह के नियमानुसार आज्ञाकारी हैं।

3. अर्थात् समस्त प्रकार की शिक्षाएँ क़ुर्आन में मौजूद हैं।

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝

तू कह दे कि बतलाओ तो सही कि यदि तुम पर अल्लाह का अज़ाब आ जाए अथवा तुम्हारे ऊपर वह निश्चित घड़ी आ जाए तो यदि तुम सच्चे हो तो क्या तुम उस समय अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे ?४१।

بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ۝ ع

नहीं ! अपितु तुम उसी को पुकारोगे, फिर यदि वह चाहेगा तो जिस कष्ट को दूर करने के लिए तुम उसे पुकारोगे वह उसे अवश्य ही दूर कर देगा और तुम उस को जिसे (अल्लाह का) साझी ठहराते हो भूल जाओगे।४२। (रुकू ४/१०)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ۝

और हम तुझ से पहली जातियों की ओर रसूल भेज चुके हैं तथा (उन रसूलों के आने के बाद) हम ने उन (इन्कार करने वाले लोगों) को इस कारण आर्थिक तथा शारीरिक कष्टों में डाला[1] था कि वे विनम्रता ग्रहण करें।४३।

فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

फिर ऐसा क्यों न हुआ कि जब उन पर हमारा अज़ाब आया था तो वे विनम्रता धारण करते, परन्तु उन के दिल और भी कठोर हो गए एवं वे जो कुछ किया करते थे शैतान ने उन्हें वह ख़ूबसूरत करके दिखलाया।४४।

---

1. इस से विदित हुआ कि अज़ाब शिक्षा देने के लिए आता है।

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿٤٥﴾

और फिर जब वह उस बात को भूल गए जो उन्हें याद दिलाई जाती थी तो हम ने उन पर हर-एक चीज़ के द्वार खोल दिए, यहाँ तक कि जब वे उस पर प्रसन्न हो गए जो उन्हें दिया गया था तो हम ने उन्हें अचानक अज़ाब में पकड़ लिया जिस पर वे तुरन्त निराश हो गए।४५।

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ؕ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٦﴾

सो जिन्हों ने अत्याचार किया था उन की जड़ काट दी गई और (सिद्ध हुआ कि) सारी स्तुतियों का अधिकारी केवल अल्लाह ही है, जो सब जहानों (लोकों) का रब्ब है।४६।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٧﴾

तू कह दे कि बताओ तो सही यदि अल्लाह तुम्हारी सुनने और देखने की शक्ति को नष्ट कर दे तथा तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे, तो अल्लाह के सिवा दूसरा कौन उपास्य है जो (नष्ट चीज़) को तुम्हें वापस ला देगा ? देख ! हम किस प्रकार आयतों को बार-बार (विभिन्न रूपों) में वर्णन करते हैं, परन्तु फिर भी वे मुंह फेर कर चले जाते हैं।४७।

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٨﴾

तू कह दे कि बताओ तो सही कि यदि अल्लाह का अज़ाब तुम पर अचानक (बिना सूचित किए) या ज़ाहिर रूप में आ जाए तो क्या अत्याचारियों को छोड़ कर (किसी दूसरे का) विनाश किया जाएगा ?।४८।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٩﴾

और हम रसूलों को केवल शुभ-समाचार देने वाला तथा डराने वाला बना कर भेजते हैं, फिर जो लोग ईमान ले आएँ और अपना सुधार कर लें तो उन्हें न तो (भविष्य का) भय होगा और न (विगत भूलों पर) चिन्तित होंगे।४९।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٥٠﴾

और जिन्होंने हमारी आयतों का इन्कार किया उन को उन के अवज्ञा के कारण अज़ाब मिलेगा ।५०।

قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّىْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۗ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٥١﴾ ع

तू कह दे कि मैं तुम्हें यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न यह कि मैं परोक्ष (ग़ैब) का जानने वाला हूँ और न मैं तुम्हें यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ । मैं तो केवल उस का अनुसरण करता हूँ जो मेरी ओर वह्य (आकाशवाणी) उतारी जाती है । तू कह दे कि क्या अन्धा और आँखों वाला एक समान हो सकते हैं ? फिर क्या तुम सोच-विचार नहीं करते ? ।५१। (रुकू ५/११)

وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِىٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٥٢﴾

और तू इस (ईशवाणी) के द्वारा उन लोगों को जो इस बात से डरते हैं कि उन्हें उन के रब्ब के सामने इकट्ठा कर के ले जाया जाएगा, जब कि उस के सिवा उन का न तो कोई सहायक होगा और न कोई सिफ़ारिश करने वाला । इसलिए तू उन्हें सचेत कर ताकि वे संयमधारण करें ।५२।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِىِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ۗ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَىْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَىْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٣﴾

और तू उन लोगों को मत धुतकार जो अपने रब्ब का ध्यान अपनी ओर खींचते हुए उसे साँझ-सवेरे पुकारते है । उन के हिसाब का कोई भाग भी तेरे ज़िम्मा नहीं और तेरे हिसाब का कोई भाग उन के ज़िम्मा नहीं । अतः यदि तू उन्हें धुतकारेगा तो तू अत्याचारी हो जाएगा ।५३।

وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ۭ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ۝

और हम ने उन की एक-दूसरे के द्वारा यूँ परीक्षा ली है ताकि वे (परीक्षा में पड़े लोग) कहें कि क्या हम में से इन (तुच्छ) व्यक्तियों पर अल्लाह ने उपकार किया है? क्या अल्लाह उन लोगों को सब से बढ़ कर नहीं जानता जो कृतज्ञ हैं? (अर्थात् जो शुक्रिया अदा करने वाले हैं) ।५४।

وَاِذَا جَاۗءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰي نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْۗءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

और जब वे लोग तेरे पास आएँ जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो तू उन्हें कह दे कि तुम पर सदैव शान्ति हो। तुम्हारे रब्ब ने तुम्हारे ऊपर दया करना अपने लिए अनिवार्य कर लिया है। (इस प्रकार) कि तुम में से जो व्यक्ति भूल से कोई बुराई कर बैठेगा और फिर इस के बाद वह तौबः (पश्चाताप) कर लेगा एवं सुधार कर लेगा तो उस (अल्लाह) का गुण यह है कि वह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है ।५५।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ ع

और इसी प्रकार हम निशानों को खोल-खोल कर वर्णन करते हैं (ताकि सत्य स्पष्ट हो जाए) और अपराधियों की राह खुल जाए ।५६। (रुकू ६/१२)

قُلْ اِنِّىْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قُلْ لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَاۗءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ۝

तू उन से कह दे कि मुझे बिल्कुल रोक दिया गया है कि मैं उन (झूठे उपास्यों) की उपासना करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। तू उन से कह दे कि मैं तुम्हारी तुच्छ कामनाओं का अनुसरण नहीं करता। (यदि मैं ऐसा करूँ तो) इस हालत में (समझो कि) मैं पथ-भ्रष्ट हो चुका तथा मैं हिदायत पाने वाले लोगों में से नहीं हूँ ।५७।

قُلْ اِنِّیْ عَلٰی بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِیْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ یَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَیْرُ الْفٰصِلِیْنَ ﴿۵۷﴾

तू उन से कह दे कि मैं अपने रब्ब की ओर से ठोस दलील (युक्ति) पर क़ायम हूँ तथा तुम ने इस दलील (युक्ति) का इन्कार किया है। जिस बात के बारे में तुम जल्दी करते हो वह मेरे पास नहीं है। फ़ैसला करना तो अल्लाह ही के अधिकार में है। वह सच्चाई वर्णन करता है और वह फ़ैसला करने में सब से अच्छा है।५८।

قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِیْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِیَ الْاَمْرُ بَیْنِیْ وَبَیْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِیْنَ ﴿۵۸﴾

तू उन्हें कह दे कि जिस चीज़ के बारे में तुम जल्दी चाहते हो यदि वह मेरे पास होती तो मेरे तथा तुम्हारे बीच इस बात का कभी का निपटारा हो चुका होता और अल्लाह अत्याचारियों को सब से बढ़ कर जानता है। (जब चाहेगा निर्णय कर देगा)।५९।

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَیْبِ لَا یَعْلَمُهَاۤ اِلَّا هُوَ ؕ وَیَعْلَمُ مَا فِی الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا یَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِیْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا یَابِسٍ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ﴿۶۰﴾

उस के पास परोक्ष (ग़ैब) की कुन्जियाँ हैं। उस के सिवा उन्हें कोई नहीं जानता और जो कुछ जल और स्थल में है वह उसे जानता है एवं कोई पत्ता नहीं गिरता, परन्तु उसे उस का ज्ञान होता है तथा धरती के अन्धेरों में कोई बीज नहीं और न कोई गीली तथा सूखी वस्तु जो कि पूर्ण रूप से उस की रक्षा में न हो।६०।

وَهُوَ الَّذِیْ یَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّیْلِ وَیَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ یَبْعَثُكُمْ فِیْهِ لِیُقْضٰۤی اَجَلٌ مُّسَمًّی ۚ ثُمَّ اِلَیْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ یُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۶۱﴾ ع

और वही है जो रात के समय तुम्हारे प्राण वश में कर लेता है तथा जो कुछ दिन के समय तुम करते हो उसे भी जानता है, फिर तुम्हें दिन के समय उठाता है ताकि एक निश्चित अवधि पूरी की जाए जिस के बाद उस की ओर तुम्हारा लौटना होगा और जो कुछ तुम करते रहे हो वह तुम्हें बताएगा।६१। (रुकू ७/१३)

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ۝٦٢

और वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है तथा तुम्हारे लिए देख भाल करने वाले (निरीक्षक) नियुक्त करके भेजता[1] रहता है यहाँ तक कि जब तुम में से किसी को मौत आ जाती है तो हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उस के प्राण ग्रस्त कर लेते हैं और वे आज्ञा पालन करने में कोई कमी नहीं करते ।६२।

ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ۭ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۣ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ۝٦٣

फिर उन्हें अल्लाह की ओर लौटाया जाएगा जो उन का सच्चा मालिक है। सुनो ! निर्णय करना उसी के अधिकार में है और वह लेखा लेने वालों में से शीघ्र लेखा लेने वाला है ।६३।

قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَىِٕنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝٦٤

तू उन से कह दे कि तुम्हें जल और स्थल की विपत्तियों से कौन बचाता है ? जब कि तुम उसे विनम्रता पूर्वक एकान्त में पुकारते हो कि यदि वह इस विपत्ति से हमारी रक्षा करेगा तो हम अवश्य धन्यवादी बन जाएँगे ।६४।

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ۝٦٥

तू उन से कह दे कि अल्लाह ही तुम्हें इस से भी और हर-एक (दूसरी) घबराहट से भी बचाता है, फिर भी तुम शिर्क (अनेकेश्वरवाद) को अपनाते हो ।६५।

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓي اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ۭ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ۝٦٦

तू (उन्हें) कह दे कि वह इस बात का भी सामर्थ्य रखता है कि तुम्हारे ऊपर से तथा तुम्हारे पाँव के नीचे से अज़ाब उतारे अथवा तुम्हें (एक-दूसरे के खिलाफ़) विभिन्न दलों के रूप में आपस में लड़ा दे और तुम में से कुछ लोगों को एक-दूसरे से कष्ट पहुँचाए। देख ! हम किस प्रकार आयतों को बार-बार वर्णन करते हैं ताकि वे समझें ।६६।

---

1. अर्थात् रसूल । देखिए सूर: निसा रुकू नं० 6 "उस दिन क्या होगा जिस दिन हम प्रत्येक जाति में से एक-एक निरीक्षक (रसूल) ला कर गवाही देने के लिए खड़ा करेंगे ।"

وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۭ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ۝٦٦

और तेरी जाति के लोगों ने इस (मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के सन्देश) को झूठा ठहराया है। हालाँकि वह सच्चा है। तू उन्हें कह दे कि मैं तुम्हारा ज़िम्मेदार नहीं हूँ।६७।

لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۡ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٦٧

हर-एक भविष्यवाणी की एक सीमा निश्चित होती है और तुम शीघ्र ही हक़ीक़त को जान लोगे।६८।

وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ۭ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٦٨

और जब तू उन लोगों को देखे जो हमारी आयतों के बारे में बे-लगाम हो कर बातें करते हैं तो तू उस समय तक उन से अलग रह जब तक कि वे इस (अश्लील बात) को छोड़ कर किसी दूसरी बात में न लग जाएँ और यदि शैतान तुझे भुला ही दे तो याद आने पर तू अत्याचारी जाति के पास न बैठ।६९।

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝٦٩

और जो लोग संयम धारण करते हैं उन के ऊपर उन (मिथ्यावादी लोगों) के लेखे का कोई ज़िम्मा नहीं, अपितु उपदेश देना (उनके ज़िम्मा) है ताकि वे संयम धारण करें।७०।

وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۭ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ

और तू उन लोगों को छोड़ दे जिन्हों ने अपने धर्म को हँसी-खेल बना लिया है और सांसारिक जीवन ने उन्हें धोखे में डाल रखा है और उन्हें इस (क़ुर्आन) के द्वारा उपदेश दे ताकि (ऐसा न हो कि) किसी जान को उस की कमाई (कुकर्मों) के कारण इस प्रकार तबाही में डाला जाए कि अल्लाह के सिवा उस का न कोई सहायक हो और न कोई सिफ़ारिश करने वाला और यदि वे प्रत्येक प्रकार का बदला भी दें तो भी उन से

أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾

स्वीकार नहीं किया जाएगा। ये ऐसे लोग हैं जिन्हें उन की कमाई के कारण नष्ट कर दिया जाएगा और उन्हें उन के इन्कार के कारण पीने के लिए खौलता हुआ पानी और पीड़ा जनक अज़ाब मिलेगा।७१। (रुकू ८/१४)

قُلْ أَنَدْعُوا مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَانَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۖ وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٧١﴾

तू उन्हें कह दे कि क्या हम अल्लाह को छोड़ कर उसे पुकारें जो न हमें कोई लाभ पहुँचा सकता है तथा न हानि और क्या अल्लाह की हिदायत के बाद हम उस व्यक्ति की तरह अपनी एड़ियों पर लौटाए जाएँ जिसे उद्दण्डी लोग बहका कर धरती में ले गए हों और वह हैरान (व्याकुल) हो रहा हो। उस के कुछ साथी तो ऐसे हैं जो उसे (यह कहते हुए) पुकारते हैं कि हमारे पास आ ताकि तू हिदायत पाए। तू उन इन्कार करने वाले लोगों से कह दे कि निस्सन्देह अल्लाह की हिदायत ही असल हिदायत है और हमें आदेश दिया गया है कि हम सब जहानों (समस्त लोकों) के रब्ब की आज्ञा का पालन करें।७२।

وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَاتَّقُوهُ ۚ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٧٢﴾

और यह (भी आदेश दिया गया है) कि नमाज़ों को विधिवत पूरा किया करो तथा उस (अल्लाह) को अपनी ढाल बनाओ और वही है जिस की ओर तुम इकट्ठे करके ले जाए जाओगे।७३।

وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۭ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ڛ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۭ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ۭ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝٧٣

और वही है जिस ने आसमानों तथा ज़मीन को हक़ और हिक्मत के साथ पैदा किया है और जिस दिन वह कहेगा कि (मेरी इच्छा के अनुसार ऐसा) हो जाए (तो उसी प्रकार) हो जाएगा। उस की बात पूरी हो कर रहने वाली है और जिस दिन सूर (बिगुल) फूँका जाएगा तो हुकूमत केवल उसी की होगी। वह छिपी हुई और ज़ाहिर बातों का जानने वाला है तथा वह हिक्मत एवं ज्ञान रखने वाला है।७४।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّىْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٧٤

और (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र से यह कहा कि तू कुछ मूर्तियों को उपास्य बनाता है? मैं तुझे तथा तेरी जाति के लोगों को खुली-खुली गुमराही[1] में पाता हूँ।७५।

وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ۝٧٥

और इस तरह हम इब्राहीम को आसमानों तथा ज़मीन में अपनी हुकूमत दिखाते थे (ताकि उस का ज्ञान कामिल हो) और ताकि वह विश्वास करने वालों में से हो जाए।७६।

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ۝٧٦

(एक दिन ऐसा हुआ कि) जब उस पर रात छा गई तो उस ने एक नक्षत्र देखा, (उसे देख कर) उस ने कहा कि क्या यह मेरा रब्ब (हो सकता) है? फिर जब वह (नक्षत्र) डूब गया तो उस ने कहा कि मैं डूबने वालों को पसन्द नहीं करता।७७।

---

1. गुमराही—बुरी राह, पथ-भ्रष्टता।

فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَىِٕنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّاۤلِّيْنَ ۝

(इस के बाद) जब उस ने चन्द्रमा को चमकते हुए देखा तो उस ने कहा कि क्या यह मेरा रब्ब (हो सकता) है ? फिर जब वह भी छिप गया तो उस ने कहा कि यदि मेरा रब्ब मुझे हिदायत न देता तो मैं अवश्य ही गुमराह[1] लोगों में से होता ।७८।

فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْۤءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝

फिर जब उस ने सूर्य को चमकते हुए देखा तो उस ने कहा कि क्या यह मेरा रब्ब (हो सकता) है ? निश्चय ही यह तो सब से बड़ा है, फिर जब वह भी डूब गया तो उस ने कहा कि हे मेरी जाति ! मैं निश्चय ही उसे पसन्द नहीं करता जिसे तुम अल्लाह का साझी बनाते हो ।७९।

اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝

निस्सन्देह मैं ने अपना ध्यान सब टेढ़ी राहों से बचते हुए उस अल्लाह की ओर फेर लिया है जिस ने आसमानों तथा जमीन को पैदा किया है और मैं मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) में से नहीं हूँ ।८०।

وَحَاۤجَّهٗ قَوْمُهٗ ۗ قَالَ اَتُحَاۤجُّوْۤنِّيْ فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ۗ وَلَآ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَاۤءَ رَبِّيْ شَيْـًٔا ۗ وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝

और उस की जाति के लोगों ने उस से वाद-विवाद कर के जीतना चाहा तो उस ने कहा कि तुम मुझ से अल्लाह के बारे में वाद-विवाद करते हो ! हालाँकि उस ने मुझे स्वयं हिदायत दी है तथा जिसे तुम अल्लाह का साझी बनाते हो मैं उस से नहीं डरता। हाँ ! यदि मेरा रब्ब किसी बात के करने का निश्चय कर ले (तो उस से डरता हूँ)। मेरे रब्ब ने प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान के घेरे में लिया हुआ है, फिर भी क्या तुम नहीं समझते ?८१।

1. गुमराह :—बुरे रास्ते पर जाने वाला, कुपथगामी, पथभ्रष्ट ।

وَكَيْفَ اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ؕ فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۘ﴿۸۲﴾

और मैं उस से जिसे तुम अल्लाह का साझी बनाते हो किस तरह डर सकता हूँ जब कि तुम उस (चीज़ को) अल्लाह का साझी बनाने से नहीं डरते जिस के सम्बन्ध में उस ने तुम पर कोई प्रमाण नहीं उतारा। सो यदि तुम्हें कुछ ज्ञान है तो (बताओ कि) हम दोनों पक्षों में से कौन सा पक्ष सब से बढ़ कर सुख-शान्ति का अधिकारी है।८२।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۸۳﴾ ع

जो लोग ईमान ले आए और उन्हों ने अपने ईमान को अत्याचार से नहीं मिलाया, उन्हीं लोगों के लिए सुख-शान्ति है और वही हिदायत पाने वाले हैं।८३। (रुकू ९/१५)

وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۸۴﴾

और यह हमारी ओर से (दी हुई एक) युक्ति थी जो हम ने इब्राहीम को उस की जाति[1] के विरुद्ध सिखाई थी। हम जिसे चाहते हैं उस के दर्जे[2] ऊँचे करते हैं। निस्सन्देह तेरा रब्ब हिक्मत वाला एवं बहुत जानने वाला है।८४।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۸۵﴾

और हम ने उस (इब्राहीम) को इस्हाक़ और याक़ूब प्रदान किए थे। हम ने इन सब को हिदायत दी थी और इस से पहले हम ने नूह को हिदायत दी थी और उस (इब्राहीम) की सन्तान में से दाऊद और सुलेमान एवं अय्यूब और यूसुफ़ तथा मूसा और हारून को भी और इसी प्रकार हम भली-भाँति काम करने वालों को बदला दिया करते हैं।८५।

---

1. विदित हुआ कि हज़रत इब्राहीम ने दुविधा से काम नहीं लिया, अपितु जो ऊपर लिखा गया है वह सब अल्लाह का सिखाया हुआ था और अल्लाह शिर्क की शिक्षा नहीं देता।

2. दर्जाः- उँचाई-निचाई के क्रम के विचार से निश्चित स्थान, श्रेणी, मरतबा।

وَ زَكَرِيَّا وَ يَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٦﴾

और ज़करिय्या[1] एवं यह्या तथा ईसा और इल्यास को भी (हिदायत दी थी)। ये सब के सब नेक लोगों में से थे।८६।

وَاِسْمٰعِيْلَ وَ الْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ؕ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾

और इस्माईल तथा अल्यसअ एवं यूनुस और लूत को भी हिदायत दी थी और इन सब को हम ने तमाम जहानों (समस्त लोकों) पर प्रधानता दी थी।८७।

وَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَ هَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٨٨﴾

और हम ने उन के पूर्वजों, उन की सन्तान एवं उन के भाइयों को भी (हिदायत दी थी) और हम ने उन्हें चुन लिया था और उन्हें सीधी राह की ओर चलाया था।८८।

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٩﴾

अल्लाह के हिदायत देने का यही ढंग है जिस के द्वारा वह अपने भक्तों में से जिसे चाहता है हिदायत देता है और यदि वे शिर्क (अनेकेश्वरवाद) को अपनाते तो जो कुछ वे कर्म करते थे उन के वे कर्म नष्ट हो जाते।८९।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿٩٠﴾

ये वही लोग हैं जिन्हें हम ने किताब तथा निर्णय करने का ज्ञान और नुबुव्वत प्रदान की थी। सो यदि ये लोग इस (नुबुव्वत) से इन्कार करें तो हम ने उसे एक और जाति (अर्थात् मुसलमानों) के सुपुर्द कर दिया है जो इस से इन्कार करने वाली नहीं है।९०।

---

1. हज़रत ज़करिय्या का वृत्तान्त हज़रत यह्या के साथ इसलिए किया गया है कि वह उनके पिता थे और हज़रत ईसा का इसलिए कि हज़रत यह्या हज़रत मसीह के लिए इर्हास (अग्रदूत) थे तथा इल्यास का इस लिए कि हज़रत ईसा के प्रादुर्भाव से पहले इल्यास के आसमान से आने का समाचार दिया गया था और हज़रत इस्माईल का इस कारण कि वह भी हज़रत ईसा की तरह जमाली (विनम्र) नबी थे एवं अल्यसअ अर्थात् यसायह का इसलिए किया गया है कि उन्हें भी इल्यास से उपमा दी जाती है और हज़रत

(शेष पृष्ठ २८८ पर)

أُولَٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ؕ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾

इन्हीं (उपर्युक्त लोगों) को अल्लाह् ने हिदायत दी। अतः तू उन की हिदायत का अनुसरण कर। तू उन से कह दे कि मैं इस पर तुम से कोई मज़दूरी नहीं माँगता। यह तो केवल समस्त लोकों के लिए उपदेश है।९१। (रुकू १०/१६)

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ إِذْ قَالُوْا مَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ مَنْ أَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا أَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٢﴾

और जब उन्हों ने यह बात कही थी कि अल्लाह् ने किसी बन्दे पर कुछ नहीं उतारा तो उन्हों ने अल्लाह् (के गुणों) का अनुमान इस प्रकार नहीं लगाया जिस प्रकार अनुमान लगाना चाहिए था। तू उन से कह दे कि वह किताब जो मूसा लाए थे वह लोगों के लिए नूर तथा हिदायत थी। उसे किस ने उतारा था? तुम उसे पन्ना-पन्ना[1] कर रहे हो। उसे प्रकट भी करते हो तथा (उस में से) कई भाग छिपाते भी हो। वास्तविक बात तो यह है कि तुम्हें वह कुछ सिखाया गया है जिसे न तुम जानते थे और न तुम्हारे पूर्वज ही। तू उन्हें कह दे कि अल्लाह् ने (ही उसे उतारा था) फिर तू उन्हें उन के झूठ में खेलते हुए छोड़ दे।९२।

(पृष्ठ २८७ का शेष)

यूनुस का इसलिए कि उन की तथा हज़रत मसीह् की घटना को एक जैसा समझा जाता है। हज़रत लूत का वर्णन इसलिए किया गया कि उन का हज़रत इस्माईल से घनिष्ट सम्बन्ध था। अतएव यहाँ यह आक्षेप नहीं होता कि ये नबी एक-दूसरे के आगे-पीछे आए थे और क़ुर्आन ने इन सब का वर्णन एक ही स्थान पर कर दिया है, क्योंकि पवित्र क़ुर्आन ने हिक्मत के अनुसार इनका वृत्तान्त इकट्ठा किया है न कि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से।

1. अर्थात् उस का निरादर कर रहे हैं।

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ۭ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰي صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝

और यह (क़ुर्आन) एक बड़ी शान वाली किताब (धर्मग्रन्थ) है, जिसे हम ने उतारा है। वह बरकतों का भण्डार है और जो ईशवाणी इस से पहले उतरी थी उसे पूरा करने वाला है और हम ने इसे इसलिए उतारा है कि तू इस के द्वारा लोगों को हिदायत दे और ताकि तू उम्मुल्क़ुरा (मक्का) वालों को तथा जो इस के इर्द-गिर्द रहते हैं उन्हें डराए एवं जो लोग पीछे आने वाली (प्रतिज्ञात बातों)[1] पर ईमान लाते हैं, वे इस (क़ुर्आन) पर भी ईमान रखते हैं और वे अपनी नमाज़ों का सदा ध्यान रखते हैं।९३।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ۭ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝

और उस व्यक्ति से बढ़ कर दूसरा कौन अत्याचारी हो सकता है जो जान-बूझ कर अल्लाह पर झूठ गढ़े अथवा यह कहे कि मुझ पर वह्य उतारी गई है, हालाँकि उस पर वह्य न उतारी गई हो तथा उस व्यक्ति से बढ़ कर और कौन अत्याचारी हो सकता है जो कहता है कि जो कुछ अल्लाह ने उतारा है निश्चय ही वैसी ही वाणी मैं भी उतार दूंगा और यदि तू (उस समय को) देखे जब कि अत्याचारी लोग मौत का कष्ट झेल रहे होंगे तथा फ़रिश्ते (यह कहते हुए) अपने हाथ फैला रहे होंगे कि अपनी जानें निकालो। जो कुछ तुम अल्लाह के बारे में व्यर्थ बातें कहा करते थे और उस की आयतों के सम्बन्ध में अभिमान से काम लिया करते थे, आज तुम्हें उस के कारण अपमान-जनक अज़ाब दिया जाएगा (तो तुझे एक शिक्षाप्रद दृश्य दृष्टिगोचर होगा)।९४।

1. प्रतिज्ञात बातें—वह बातें जिन का वादा दिया गया हो।

وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُم مَّا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَد تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنكُم مَّا كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٩٥﴾

और (उस समय हम कहेंगे कि) जिस प्रकार हम ने पहली बार तुम्हें पैदा किया था (उसी प्रकार अब तुम) अकेले-अकेले हमारे पास पहुँचे हो और जो कुछ हम ने तुम्हें उपकार के रूप में प्रदान किया था उसे तुम ने अपनी पीठों के पीछे फेंक दिया है और (यह क्या बात है कि) हम आज तुम्हारे साथ उन सिफ़ारिश करने वालों को नहीं देखते, जिन के बारे में तुम दावे से कहा करते थे कि वे तुम (पर हुकूमत करने) में (अल्लाह के) साझी हैं। (अब) तुम्हारे आपस के सारे सम्बन्ध बिल्कुल टूट चुके हैं और जो कुछ तुम कहा करते थे वह सब कुछ तुम से खोया गया है!९५। (रुकू ११/१७)

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٩٦﴾

निस्सन्देह अल्लाह बीज और गुठलियों को फाड़ने वाला है। वह सजीव को निर्जीव से निकालता है और निर्जीव को सजीव से निकालने वाला है। तुम्हारा अल्लाह तो ऐसा है। अतः बताओ तुम कहाँ से वापस लौटाए जाते हो? ।९६।

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٩٧﴾

वह सुबह को ज़ाहिर करने वाला है और उस ने रात को विश्राम का साधन तथा सूर्य एवं चन्द्रमा को गणित का आधार बनाया है। यह अनुमान उस का है जो ग़ालिब और बहुत जानने वाला है।९७।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٩٨﴾

और वही है जिस ने तुम्हारे लिए नक्षत्रों की रचना की है ताकि तुम उन के द्वारा विपत्ति के समय जल और स्थल में राह पा सको। हम ने ज्ञान रखने वाली जाति के लिए अपने निशान खोल-खोल कर बता दिए हैं।९८।

وَهُوَ الَّذِیۡۤ اَنۡشَاَكُمۡ مِّنۡ نَّفۡسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسۡتَقَرٌّ وَّمُسۡتَوۡدَعٌ ؕ قَدۡ فَصَّلۡنَا الۡاٰیٰتِ لِقَوۡمٍ یَّفۡقَهُوۡنَ ﴿۹۹﴾

और वही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया है, फिर उस ने तुम्हारे लिए एक अस्थायी[1] निवास-स्थान एवं एक लम्बे समय के लिए निवास-स्थान नियुक्त किया है। हम ने बुद्धिमानों के लिए प्रमाण खोल-खोल कर बता दिए हैं।९९।

وَهُوَ الَّذِیۡۤ اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخۡرَجۡنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَیۡءٍ فَاَخۡرَجۡنَا مِنۡهُ خَضِرًا نُّخۡرِجُ مِنۡهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخۡلِ مِنۡ طَلۡعِهَا قِنۡوَانٌ دَانِیَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنۡ اَعۡنَابٍ وَّالزَّیۡتُوۡنَ وَالرُّمَّانَ مُشۡتَبِهًا وَّغَیۡرَ مُتَشَابِهٍ ؕ اُنۡظُرُوۡۤا اِلٰی ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثۡمَرَ وَیَنۡعِهٖ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِكُمۡ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ یُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۰۰﴾

और वही है जिस ने आकाश से पानी उतारा है। फिर (देखो किस प्रकार) उस के द्वारा हम ने हर प्रकार की वनस्पति उगाई है और उस के द्वारा खेती पैदा की, जिस से हम तले-ऊपर चढ़े हुए दाने निकालते हैं तथा खजूर के गाभे में से लटकते हुए गुच्छे निकालते हैं और अंगूर एवं ज़ैतून तथा अनार के ऐसे बाग़ निकालते हैं जिन में से कुछ आपस में एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं और कुछ एक-दूसरे से विभिन्न हैं। जब (उन में से प्रत्येक प्रकार के वृक्षों को) फल लगता है तो उस के फल को तथा उस के पकने (की अवस्था) को देखो। निस्सन्देह उस में ईमान लाने वाले लोगों के लिए अनेक प्रमाण हैं।१००।

وَجَعَلُوۡا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الۡجِنَّ وَخَلَقَهُمۡ وَخَرَقُوۡا لَهٗ بَنِیۡنَ وَبَنٰتٍۭ بِغَیۡرِ عِلۡمٍ ؕ سُبۡحٰنَهٗ وَتَعٰلٰی عَمَّا یَصِفُوۡنَ ﴿۱۰۱﴾ ع ١٢/١٨

और उन्हों ने अल्लाह के साथ जिन्नों में से साझी ठहराए हुए हैं। वास्तविक बात तो यह है कि उस (अल्लाह) ने उन्हें पैदा किया है और उन्हों ने उस के लिए बिना ज्ञान के झूठ-मूठ ही पुत्र-पुत्रियाँ बनाई हैं। वह पवित्र है तथा जो कुछ वे वर्णन करते हैं उस से वह बहुत ऊँचा है।१०१। (रुकू १२/१८)

1. (क) अस्थायी निवास-स्थान से तात्पर्य क़ब्र है और लम्बे समय के निवास-स्थान से तात्पर्य मृत्यु के बाद वाला जीवन है। (ख) अस्थायी निवास-स्थान से तात्पर्य सांसारिक जीवन है और स्थायी जीवन से पारलौकिक जीवन अभीष्ट है।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٠٢﴾

वह आसमानों और ज़मीन को बिना किसी नमूना के पैदा करने वाला है। उस का पुत्र कैसे हो सकता है जब कि उस की कोई पत्नी नहीं थी और उस ने तो हर चीज़ को पैदा किया है और वह हर-एक बात को जानता है।१०२।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٠٣﴾

यह है तुम्हारा अल्लाह जो तुम्हारा रब्ब भी है। उस के सिवा कोई उपास्य नहीं और वह प्रत्येक वस्तु का पैदा करने वाला है। अतएव उस की उपासना करो और वह प्रत्येक बात का निरीक्षक है।१०३।

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٠٤﴾

उस तक दृष्टि नहीं पहुँच सकती, किन्तु वह दृष्टि तक पहुँचता[1] है तथा वह दया करने वाला और हक़ीक़त को जानता है।१०४।

قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿١٠٥﴾

तुम्हारे रब्ब की ओर से युक्तियाँ आ चुकी हैं। सो जिस ने सूझ-बूझ से काम लिया (उस का यह काम) उस के अपने हित के लिए ही होगा, परन्तु जो टेढ़े रास्ते पर चलेगा (उस का यह कर्म) उसी पर पड़ेगा और मैं तो तुम्हारा संरक्षक[2] नहीं हूँ।१०५।

---

1. अर्थात् मानव अपनी विद्या के बल पर उसे नहीं देख सकता। हाँ! अल्लाह अपनी अपार कृपा से उस के निकट आकर अपनी छवि (जलवा) दिखाता है और इस प्रकार मनुष्य को उस के दर्शन हो जाते हैं।

2. अर्थात् तुम्हें तुम्हारी अवज्ञा के कारण जो अज़ाब पहुँचे, रसूल तुम्हें उस से बचा नहीं सकता और न तुम्हें पाप करने से ज़बरदस्ती हटा सकता है।

وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٦﴾

और इसी प्रकार हम आयतों को अनेक प्रकार से फेर-फेर कर लाते हैं (ताकि उन पर हुज्जत (तर्क) क़ायम हो जाए) और ताकि वे कह दें कि तू ने पढ़ कर सुना दिया है (एवं तर्क क़ायम कर दिया है) और ताकि हम उसे ज्ञान रखने वाली जाति के लाभ के लिए वर्णन कर दें।१०६।

اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٧﴾

जो कुछ तेरे रब्ब की ओर से तुझ पर उतारा जाता है उस का अनुसरण कर। उस के सिवा और कोई उपास्य नहीं तथा तू मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) से मुँह फेर ले।१०७।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ۗ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾

और यदि अल्लाह चाहता तो वे शिर्क न करते और हम ने तुझे उन के लिए रक्षक नियुक्त नहीं किया और न तू उन का निरीक्षक ही है।१०८।

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٩﴾

और तुम उन्हे, जिन्हें वे अल्लाह के सिवा (प्रार्थना में) पुकारते हैं, गाली न दो अन्यथा वे शत्रु बन कर अज्ञानवश अल्लाह को गालियाँ देंगे। इस प्रकार हम ने प्रत्येक जाति के लोगों को उन के कर्म शोभायमान[1] कर के दिखाए हैं, फिर उन्हें लौट कर अपने रब्ब की ओर ही जाना है जिस पर वह उन्हें उस की ख़बर देगा जो वे किया करते थे।१०९।

---

1. जो जाति किसी काम को सक्रिय-रूप में अपना लेती है तो वह काम धीरे-धीरे उसे अच्छा तथा सुन्दर लगने लगता हैं। इस आयत में बताया गया है कि अब इस जाति के स्वभाव में शिर्क रच गया है। अब यह जाति शिर्क के विरुद्ध बात सुनते ही उत्तेजित हो जाएगी तथा अल्लाह को भी गालियाँ देने लग जाएगी।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١١٠﴾

और उन्हों ने अल्लाह की पक्की सौगन्धें खाईं कि यदि उन के पास कोई निशान आए तो वे अवश्य ही मान लेंगे। तू मोमिनों से कह कि चमत्कार भी तथा वह वस्तु[1] भी अल्लाह ही के पास है जो तुम्हें बता देगी कि जब निशान आ जाएँ तो वे (लोग फिर भी) ईमान नहीं लाएँगे।११०।

وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١١﴾ ع

ع ١٣/١٩

और हम लोग उन के दिलों को तथा उन की आँखों को इस कारण फेर देंगे कि वह इस (वह्य) पर पहली बार ईमान नहीं लाए एवं उन्हें उन की उद्दण्डता में बहकते हुए छोड़ देंगे।१११। (रुकू १३/१९)

1. अर्थात् उनके पहले कुकर्म जो उन को ईमान लाने से वञ्चित कर देंगे वे अल्लाह के पास सुरक्षित हैं, जब वह उन्हें प्रकट कर देगा तो उन्हें प्रतीत हो जाएगा कि जब तक वे दिलों का सुधार न कर लें तथा शिर्क की पुरानी आदतों को न छोड़ दें तब तक कदापि ईमान नहीं लाएँगे।

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿١١٢﴾

और यदि हम उन पर फ़रिश्ते उतारते तथा मुर्दे उन से बात-चीत करते एवं प्रत्येक वस्तु को हम उन के आमने-सामने खड़ा कर देते तब भी वे अल्लाह की इच्छा के विना ईमान न लाते बल्कि उन में से बहुत से मूर्ख हैं ।११२।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ۭ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٣﴾

और इसी प्रकार हम ने मनुष्यों तथा जिन्नों में से उद्दण्डियों को हर-एक नबी का शत्रु वनाया था उन में से कुछ लोग दूसरों को धोखा देने के लिए (उन के दिलों में) बुरे विचार डालते हैं जो केवल चिकनी-चुपड़ी बातें होती हैं । यदि तेरा रब्ब चाहता तो वे ऐसा न करते । अतएव तू उन से तथा उन के झूठ से मुँह मोड़ ले ।११३।

وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٤﴾

और (अल्लाह ने यह इसलिए चाहा है) ताकि क़ियामत पर ईमान न रखने वालों के दिल (अपने कर्मों के कारण) ऐसी ही बातों की ओर झुकें और ताकि वे उस झूठ को अच्छा समझें और ताकि वे अपने कर्मों का फल देख लें ।११४।

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ۭ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٥﴾

(तू कह दे कि) क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी दूसरे फ़ैसला करने वाले की खोज करूँ ? हालाँकि उस ने तुम पर खुली-खुली किताव उतारी है और जिन्हें हम ने किताव दी है वह जानते हैं कि वह तेरे रब्ब की ओर से सच्चाई के साथ उतारी गई है । अत: तू सन्देह करने वालों में से न वन ।११५।

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾

और तेरे रब्ब की बात तो सत्य एवं न्याय के साथ पूरी हो कर रहेगी क्योंकि उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं और वह बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है ।११६।

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾

और यदि तू धरती पर निवास करने वाले लोगों में से अधिकतर की बात का अनुसरण करे तो वे तुझे अल्लाह के मार्ग से पथभ्रष्ट कर देंगे । वे केवल भ्रम का अनुसरण करते हैं और अटकल से बातें करते हैं ।११७।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١١٧﴾

निस्सन्देह तेरा रब्ब ही उस व्यक्ति को भली-भाँति जानता है जो उस के मार्ग से भटक जाता है तथा वही हिदायत पाने वालों को भी भली-भाँति जानता है ।११८।

فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾

सो यदि तुम उस की आयतों पर ईमान रखते हो तो जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया है उस में से खाओ ।११९।

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ۗ وَاِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿١١٩﴾

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम उस में से नहीं खाते हो जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया है हालाँकि उस (अल्लाह) ने तुम्हारे सामने वह सब कुछ खोल कर बता दिया है, जो उस ने तुम्हारे लिए हराम किया है, सिवाय इस के कि तुम बे-बस हो जाओ और निस्सन्देह बहुत से लोग किसी सच्चे ज्ञान के बिना अपनी इच्छाओं के अनुसार दूसरे लोगों को बहकाते रहते हैं । निस्सन्देह तेरा रब्ब सीमा से आगे निकल जाने वालों को भली-भाँति जानता है ।१२०।

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ یَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَیُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا یَقْتَرِفُوْنَ ﴿۱۲۱﴾

और ज़ाहिर तौर पर पाप करने से और छिप कर पाप करने से बचो। जो लोग पाप करते हैं, निस्सन्देह जो कुछ वे करते हैं उन्हें उसका बदला दिया जाएगा।१२१।

وَلَا تَاْكُلُوْا مِمَّا لَمْ یُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَیْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَاِنَّ الشَّیٰطِیْنَ لَیُوْحُوْنَ اِلٰۤى اَوْلِیٰٓـِٕهِمْ لِیُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ﴿۱۲۲﴾

और तुम उस में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम नहीं लिया गया और निस्सन्देह ऐसा करना नाफ़रमानी (अवज्ञा) है और निस्सन्देह शैतान अपने मित्रों के दिलों में (ऐसे विचार) डालते रहते हैं ताकि वे तुम से झगड़ा करें और यदि तुम उन की आज्ञा का पालन करोगे तो निश्चय ही तुम अनेकेश्वरवादी बन जाओगे।१२२। (रुकू १४/१)

اَوَمَنْ كَانَ مَیْتًا فَاَحْیَیْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا یَّمْشِیْ بِهٖ فِی النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِی الظُّلُمٰتِ لَیْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ زُیِّنَ لِلْكٰفِرِیْنَ مَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

और क्या जो व्यक्ति मुर्दा हो फिर हम ने उसे ज़िन्दा किया हो तथा उस के लिए ऐसा प्रकाश कर दिया हो कि जिस के द्वारा वह लोगों में चलता-फिरता हो, वह उस व्यक्ति के समान हो सकता है जिस की यह दशा है कि वह अन्धेरों में (पड़ा हुआ) है और उन से किसी समय भी नहीं निकलता। इसी प्रकार इन्कार करने वाले लोगों के लिए उन के कर्म शोभायमान कर के दिखाए गए हैं।१२३।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِیْ كُلِّ قَرْیَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِیْهَا لِیَمْكُرُوْا فِیْهَا ؕ وَمَا یَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا یَشْعُرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾

और हम ने प्रत्येक नगरी में उस के बड़े-बड़े अपराधियों को ऐसा ही बना दिया है (अर्थात् वह अपने बुरे कर्मों को अच्छा समझते हैं) जिस का परिणाम[1] यह होता है कि वे इस नगरी में नबियों के विरुद्ध षड्यन्त्र करते हैं, किन्तु वास्तव में वे अपनी ही जानों के विरुद्ध षड्यन्त्र करते हैं और वे समझते नहीं।१२४।

1. यह कोई अत्याचार नहीं, क्योंकि अपराध का परिणाम अवश्य ही यह होता है कि बुरी बात धीरे-धीरे अच्छी प्रतीत होने लगती है। अत: यह प्राकृतिक परिणाम है, अन्यथा अल्लाह किसी पर अत्याचार नहीं करता।

وَاِذَا جَآءَتۡهُمۡ اٰيَةٌ قَالُوۡا لَنۡ نُّؤۡمِنَ حَتّٰى نُؤۡتٰى مِثۡلَ مَاۤ اُوۡتِىَ رُسُلُ اللّٰهِ ؔ‌ؕ اَللّٰهُ اَعۡلَمُ حَيۡثُ يَجۡعَلُ رِسَالَـتَهٗ‌ؕ سَيُصِيۡبُ الَّذِيۡنَ اَجۡرَمُوۡا صَغَارٌ عِنۡدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيۡدٌۢ بِمَا كَانُوۡا يَمۡكُرُوۡنَ ۝١٢٥

और जब उन के पास कोई निशान आता है तो कहते हैं कि जब तक हमें वैसा ही कलाम न दिया जाए जैसा अल्लाह के रसूलों को दिया गया है (तब तक) हम कदापि ईमान नहीं लाएँगे, किन्तु अल्लाह भली-भाँति जानता है कि वह अपनी रिसालत[1] कहाँ रखे। जिन लोगों ने पाप किया है उन्हें इस कारण कि वे नबियों के विरुद्ध षड्यन्त्र करते हैं अल्लाह की ओर से अवश्य अपमान तथा कड़ा अज़ाब पहुँचेगा।१२५।

فَمَنۡ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنۡ يَّهۡدِيَهٗ يَشۡرَحۡ صَدۡرَهٗ لِلۡاِسۡلَامِ‌ۚ وَمَنۡ يُّرِدۡ اَنۡ يُّضِلَّهٗ يَجۡعَلۡ صَدۡرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى السَّمَآءِ‌ؕ كَذٰلِكَ يَجۡعَلُ اللّٰهُ الرِّجۡسَ عَلَى الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۝١٢٦

और जिसे अल्लाह हिदायत देने का इरादा कर लेता है उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देता है और जिसे पथभ्रष्ट करने का निश्चय कर लेता है उस का सीना तंग कर देता है मानों वह ऊँचाई पर चढ़ रहा है और इसी प्रकार अल्लाह उन लोगों पर अज़ाब उतारता है जो ईमान नहीं लाते।१२६।

وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسۡتَقِيۡمًا‌ؕ قَدۡ فَصَّلۡنَا الۡاٰيٰتِ لِقَوۡمٍ يَّذَّكَّرُوۡنَ ۝١٢٧

और यह तेरे रब्ब की सीधी राह है। हम शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए अपनी आयतों (निशानों) को खोल-खोल कर बता चुके हैं।१२७।

لَهُمۡ دَارُ السَّلٰمِ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ‌ وَهُوَ وَلِيُّهُمۡ بِمَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ۝١٢٨

उन के लिए उन के रब्ब के पास शान्ति का घर तय्यार है तथा जो कुछ वे करते हैं उस के कारण वह उन का सहायक है।१२८।

1. अर्थात् रसूल बनने के कौन योग्य है और कौन नहीं।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّ بَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ۭ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۹﴾

और उस दिन (को याद करो) जब वह उन सब लोगों को इकट्ठा करेगा (फिर कहेगा) हे जिन्नों[1] के गिरोह ! तुम ने मानव-जाति में से बहुतों को अपने साथ मिला लिया तथा उन की सहायता करने वाले मनुष्य[2] कहेंगे कि हे हमारे रब्ब ! हम में से कुछ लोगों ने एक-दूसरे से लाभ उठाया है और हम अपने उस समय को पहुँच चुके हैं जो तूने हमारे लिए निश्चित किया था। वह कहेगा (नरक की) आग तुम्हारा ठिकाना है। इस में तुम देर तक रहोगे सिवाय इस के कि अल्लाह कुछ और चाहे। तेरा रब्ब निश्चय ही हिक्मत वाला और बहुत जानने वाला है।१२९।

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۳۰﴾ ع

और इस प्रकार हम कुछ अत्याचारियों को कुछ दूसरे लोगों का, उन के कामों के आधार पर मित्र बना देते हैं जो कि वे किया करते हैं।१३०। (रुकू १५/२)

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۭ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓي اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿۱۳۱﴾

हे जिन्नो तथा इन्सानों के गिरोहो ! क्या तुम में से ही तुम्हारे पास रसूल नहीं आए जो तुम्हें मेरी आयतें पढ़ कर सुनाया करते थे और तुम्हें आज के दिन की मुलाक़ात से डराया करते थे ? वे कहेंगे कि हम अपने ख़िलाफ स्वयं गवाही देते हैं और सांसारिक (दुनिया की) जिन्दगी ने उन्हें धोखे में डाल दिया और उन्हों ने अपने ख़िलाफ़ स्वयं यह गवाही दी कि वे इन्कार करने वाले लोग थे।१३१।

1. जिन्नों से तात्पर्य बड़े-बड़े लोग हैं।
2. अर्थात् उन के पक्ष की साधारण जनता।

ذٰلِكَ اَنۡ لَّمۡ يَكُنۡ رَّبُّكَ مُهۡلِكَ الۡقُرٰى بِظُلۡمٍ وَّ اَهۡلُهَا غٰفِلُوۡنَ ﴿١٣٢﴾	यह रसूलों का भेजना इस कारण से था कि तेरा रब्ब नगरों को उन के निवासियों के असावधान होने की दशा में निर्दयता[1] (ज़ुल्म) के साथ नष्ट नहीं कर सकता[2] था।१३२।
وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوۡا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿١٣٣﴾	और प्रत्येक मनुष्य (अथवा जाति) के लिए उस के कर्मों के अनुसार दर्जे निश्चित हैं तथा तेरा रब्ब उस से असावधान नहीं जो वे करते हैं।१३३।
وَرَبُّكَ الۡغَنِىُّ ذُو الرَّحۡمَةِ ؕ اِنۡ يَّشَاۡ يُذۡهِبۡكُمۡ وَيَسۡتَخۡلِفۡ مِنۡۢ بَعۡدِكُمۡ مَّا يَشَآءُ كَمَاۤ اَنۡشَاَكُمۡ مِّنۡ ذُرِّيَّةِ قَوۡمٍ اٰخَرِيۡنَ ﴿١٣٤﴾	तेरा रब्ब किसी का मुहताज नहीं और वह दया करने वाला है। यदि वह चाहे तो तुम्हें विनष्ट कर दे तथा जिस प्रकार उस ने तुम्हें एक दूसरी जाति की नस्ल से खड़ा किया है (इसी प्रकार) जिसे चाहे तुम्हारे सर्वनाश के पश्चात् तुम्हारा स्थान लेने वाला बना दे।१३४।
اِنَّ مَا تُوۡعَدُوۡنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَاۤ اَنۡتُمۡ بِمُعۡجِزِيۡنَ ﴿١٣٥﴾	जिस बात की तुम से प्रतिज्ञा की जा रही है वह अवश्य हो कर रहेगी और तुम हमें किसी प्रकार भी असमर्थ नहीं बना सकते।१३५।
قُلۡ يٰقَوۡمِ اعۡمَلُوۡا عَلٰى مَكَانَتِكُمۡ اِنِّىۡ عَامِلٌ ۚ فَسَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ۙ مَنۡ تَكُوۡنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفۡلِحُ الظّٰلِمُوۡنَ ﴿١٣٦﴾	तू कह दे कि हे मेरी जाति के लोगो ! तुम अपने ढंग से काम करो, मैं भी अपने ढंग से काम करूँगा, फिर तुम्हें शीघ्र ही पता चल जाएगा कि इस घर (संसार) का परिणाम किस के लिए अच्छा निकलता है। सत्य बात यह है कि अत्याचारी कदापि सफल नहीं होते।१३६।

1. अर्थात् बिना नबी भेजने तथा युक्तियाँ स्पष्ट करने के अज़ाब उतारना निर्दयता और अन्याय है।
2. अर्थात् दैवी प्रकोप सच्चाई के विषय में प्रमाण प्रस्तुत करने तथा मानव-समाज को सावधान

(शेष पृष्ठ ३०१ पर)

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَ هٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَ مَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٧﴾

जो खेती और जानवर अल्लाह ने पैदा किए हैं उन्हों ने उस में से एक भाग अल्लाह के लिए निश्चित कर दिया है, फिर अपने ही भ्रमानुसार कहते हैं कि इतना तो अल्लाह के लिए है तथा इतना हमारे शरीकों के लिए है, फिर वे यह बात भी कहते हैं कि जो उनके (विचार में) शरीकों का भाग होता है वह तो अल्लाह को नहीं पहुँचता, परन्तु जो अल्लाह का भाग है वह उन के साझियों को पहुँच जाता है। वे क्या ही बुरा निर्णय करते हैं।१३७।

وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٨﴾

और इसी प्रकार मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) में से बहुत से लोगों को उन के साझियों ने उन का सर्वनाश करने के लिए तथा उन के धर्म को उन पर मुश्तबह[1] कर के उन्हें अपनी सन्तान की हत्या कर देना शोभायमान कर के दिखाया था और यदि अल्लाह चाहता तो वे (मुश्रिक) ऐसा न करते। अतः तू उन से और उन के झूठ से मुँह मोड़ ले।१३८।

وَقَالُوْا هٰذِهٖۤ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَاۤ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ

और वे अपने विचार से कहते हैं कि अमुक-अमुक जानवर तथा खेती ऐसे हैं कि जिन का खाना वर्जित है, उन्हें केवल वही खा सकता है जिसे हम खाने की आज्ञा दें तथा (कहते हैं कि) कुछ जानवर ऐसे हैं कि जिन की पीठें (सवारी के लिए) हराम कर दी गई हैं और कुछ जानवर ऐसे हैं कि उन पर अल्लाह का

(पृष्ठ ३०० का शेष)

करने के बिना नहीं आया करता। इसी सिद्धान्त के अनुसार अल्लाह अपनी ओर से नबी और सुधारक भेजा करता है।

1. मुश्तबह—संदिग्ध, जिस में सन्देह हो, भ्रम।

بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٩﴾

नाम नहीं लेते (उन का यह कहना और करना) उस (अल्लाह) पर झूठ गढ़ने के रूप में होता है। वह उन्हें उन के इस झूठ गढ़ने के कारण अवश्य दण्ड देगा।१३९।

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَٰذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا ۖ وَإِن يَكُن مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۚ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٤٠﴾

और वे कहते हैं कि जो कुछ इन जानवरों के पेटों (गर्भो) में है वह केवल हमारे पुरुषों के लिए है और हमारी स्त्रियों के लिए हराम किया गया है। हाँ! यदि वह मरा हुआ हो तो वे सब उस में शामिल हैं। वह अवश्य उन्हें उन की बात का दण्ड देगा। याद रखो कि वह हिक्मत वाला और बहुत जानने वाला है।१४०।

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ ۚ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٤١﴾

वे लोग घाटा पाने वाले हो गए जिन्हों ने मूर्खता वश बिना ज्ञान के अपनी सन्तान की हत्या कर दी है तथा जो कुछ अल्लाह ने उन्हें प्रदान किया था उसे अल्लाह पर झूठ गढ़ते हुए (अपने लिए) हराम कर लिया है। अतः वे पथ-भ्रष्ट हो गए हैं और वे हिदायत पाने वालों में से नहीं बने।१४१। (रुकू १६/३)

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّاتٍ مَّعْرُوشَاتٍ وَغَيْرَ مَعْرُوشَاتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أُكُلُهُ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ كُلُوا مِن ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ ۖ وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ

और वह अल्लाह ही है जिस ने लकड़ियों के सहारे खड़े होने वाले तथा सहारे के बिना खड़े होने वाले बाग़ तथा खजूरें और खेतियाँ पैदा की हैं, जिन के स्वाद भिन्न-भिन्न हैं और ज़ैतून एवं अनार को इस रूप में पैदा किया है कि वे आपस में मिलते-जुलते भी हैं तथा कुछ बातों में नहीं भी मिलते हैं। सो जब इन वृक्षों को फल लगे तो तुम उन के फल खाओ और उस फल के काटने के दिन उस (अल्लाह) का हक़ दे दो[1] और

1. अर्थात् निर्धन व्यक्तियों की सहायता करो।

الْمُسْرِفِيْنَ ۝١٤٢

फ़ज़ूलख़र्ची से काम न लो क्योंकि वह फ़ज़ूलख़र्ची करने वालों को पसन्द नहीं करता ।१४२।

وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۚ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝١٤٣

और चौपायों में से लादू जानवर भी हैं तथा छोटे भी हैं। अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिया है उस में से खाओ और शैतान के पद-चिन्हों का अनुसरण न करो। निस्सन्देह वह तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है ।१४३।

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ ءٰۤالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۗ نَبِّئُوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝١٤٤

उस ने आठ जोड़ों को पैदा किया है। दुम्बे में से दो को और बकरे में से दो को! तू उन से कह कि क्या उस ने दो नरों को हराम ठहराया है अथवा दो मादीनों को या दो मादीनों के गर्भ ने जिस चीज़ को भी अपने भीतर लपेटा हुआ है? (उसे हराम ठहराया है) यदि तुम सच्चे हो तो मुझे किसी ज्ञान के आधार पर (यह बात) बताओ ।१४४।

وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ ءٰۤالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۗ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٤٥ ع

और उस ने ऊँट में से दो को तथा गौ में से दो को पैदा किया है। तू उन्हें कह कि क्या उस ने दोनों नरों को हराम (अवैध) ठहराया है अथवा दोनों मादीनों को या मादीनों के गर्भों ने जिस चीज को भी अपने भीतर लपेटा हुआ है? कहो, क्या तुम उस समय मौजूद थे जब तुम्हें अल्लाह ने इस बात का आदेश दिया था? (यदि नहीं) तो फिर उस व्यक्ति से बढ़ कर कौन अत्याचारी हो सकता है जो जान-बूझकर अल्लाह पर इसलिए झूठ गढ़े कि वह लोगों को बिना ज्ञान के पथ-भ्रष्ट कर दे। निस्सन्देह अल्लाह अत्याचारी लोगों को राह नहीं दिखाता ।१४५। (रुकू १७/४)

قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٦﴾

तू उन से कह दे कि जो कुछ मेरी ओर उतारा गया है मैं तो उस में उस व्यक्ति के लिए जो किसी वस्तु के खाने का इच्छुक हो कोई चीज़ हराम नहीं पाता सिवाय मुर्दार अथवा बहता हुआ रक्त या सूअर के माँस के। इसलिए कि (सूअर का माँस) अपवित्र है या 'फ़िस्क़' को (हराम पाता हूँ) अर्थात् उस वस्तु को जिस पर अल्लाह के सिवा किसी दूसरे का नाम लिया गया हो, किन्तु जो व्यक्ति (उस के खाने के लिए) बे-बस[1] हो जाए, परन्तु वह शरीअत का विरोधी न हो तथा सीमा का उल्लंघन करने वाला भी न हो तो (वह याद रखे कि) निस्सन्देह तेरा रब्ब बहुत क्षमा[2] करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।१४६।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿١٤٧﴾

और जो लोग यहूदी हैं हम ने उन के लिए नाख़ून[3] वाले सब जानवर हराम ठहरा दिए थे तथा गौ और भेड़-बकरी में से दोनों की चर्बी भी हराम[4] ठहरा दी थी सिवाय उस चर्बी के जो उन की पीठों या अंतड़ियों पर हो या जो हड्डी से लगी हुई हो। हम ने यह उन्हें उन की नाफ़रमानी का दण्ड दिया था और निस्सन्देह हम सच्चे हैं।१४७।

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾

यदि फिर भी वे तुझे झुठलाएँ तो तू उन्हें कह दे कि तुम्हारा रब्ब बहुत बड़ी रहमत वाला है और उस का **अज़ाब** अपराधियों से हटाया नहीं जा सकता।१४८।

1. अर्थात् जो कुछ इस्लाम ने वैध ठहराया है यदि वह देश में उपलब्ध न हो तो वह व्यक्ति अपनी जान बचाने के लिए उतना ही खाए जिस से कि मृत्यु टल जाए।
2. अर्थात् उस व्यक्ति के लिए कोई दण्ड नहीं होगा।
3. अर्थात् शिकारी जानवर।
4. देखिए लैव्यवस्था अध्याय 3:14.7।

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ قُلْ هَلْ عِندَكُم مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٩﴾

जिन्हों ने शिर्क किया वे लोग अवश्य कहेंगे कि यदि अल्लाह चाहता तो हम और हमारे पूर्वज शिर्क को कभी न अपनाते और न ही किसी वस्तु को हराम ठहराते। जो लोग उन से पहले हो चुके हैं उन्हों ने भी इसी तरह (हमारी वह्य को) उस समय तक झुठलाया था जब तक कि उन्हों ने हमारे अज़ाब का स्वाद नहीं चख लिया था। तू उन्हें कह दे कि क्या तुम्हारे पास कोई ऐसा ज्ञान है जिसे तुम हमें ख़ामोश करने के लिए पेश कर सको ? तुम तो भ्रम के सिवा किसी बात का अनुसरण नहीं करते हो और तुम केवल अटकलों से बातें करते हो।१४९।

قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۖ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٥٠﴾

तू कह दे (तुम्हारी मूर्खता-पूर्ण बातें सिद्ध करती हैं) कि प्रभावशाली[1] युक्ति केवल अल्लाह ही के अधिकार में है और यदि उस की इच्छा होती तो तुम सब को हिदायत दे देता।१५०।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَٰذَا ۖ فَإِن شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُم بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١٥١﴾ ع ١٨

तू उन्हें कह दे कि अपने उन गवाहों को बुलाओ जो यह गवाही दें कि अल्लाह ने इस (अर्थात् अमुक) चीज़ को हराम ठहराया है, फिर यदि वे ऐसी गवाही दें तो तू उन के साथ शामिल हो कर गवाही न दे तथा उन लोगों की मनोकामनाओं का अनुसरण न कर जो हमारी आयतों को झुठला चुके हैं और जो लोग पीछे आने वाली बातों पर ईमान नहीं लाते तथा वे अपने रब्ब के साझी भी बनाते हैं।१५१। (रुकू १८/५)

1. असर करने वाली दलील।

قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۵۲﴾

तू उन से कह दे कि आओ ! जो तुम्हारे रब्ब ने तुम्हारे लिए हराम ठहराया है वह मैं तुम्हें पढ़ कर सुनाऊँ। (उस का आदेश है) कि तुम उस का कोई साझी न बनाओ तथा माता-पिता से नेकी (परोपकार) करो और ग़रीब हो जाने के डर से अपनी सन्तान की हत्या न करो। हम तुम्हें भी आजीविका (रोज़ी) देते हैं और उन्हें भी तथा बुराइयों के निकट भी न जाओ न इन में से ज़ाहिर (बुराइयों के) न छिपी (बुराइयों) के और यह कि उस जान को जिस की हत्या से अल्लाह ने रोका है (शरीअत या विधान की) आज्ञा के बिना हत्या न करो। इस बात का अल्लाह तुम्हें ताकीद से आदेश देता है ताकि तुम पापों से रुको।१५२।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۵۳﴾

और यह कि तुम यतीम (अनाथ) के धन के पास उस के युवावस्था तक पहुँचने से पहले बुरे ढंग से मत जाओ तथा नाप-तौल न्याय के साथ (पूरे-पूरे) दो। हम किसी व्यक्ति को उस की शक्ति से बढ़ कर आदेश नहीं देते और जब तुम कोई बात कहो तो न्याय से काम लो, चाहे वह बात अपने निकट सम्बन्धी के बारे में ही हो और अल्लाह के साथ किए गए वादा (प्रण) को भी पूरा करो। वह इस बात की तुम्हें इस लिए ताकीद करता है ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो।१५३।

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۵۴﴾

और निश्चय ही यह मेरा सीधा मार्ग है। अतएव इस का अनुसरण करो तथा विभिन्न मार्गों के पीछे मत पड़ो नहीं तो वह तुम्हें उस (अल्लाह) के मार्ग से इधर-उधर ले जाएँगे। वह इस बात की तुम्हें इसलिए ताकीद करता है कि तुम संयमी बन जाओ।१५४।

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَ تَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّ هُدًى وَّ رَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٥﴾

और जिस व्यक्ति ने नेकी को अपनाया है उस पर निअमत को पूरा करने, प्रत्येक बात का स्पष्टीकरण करने, हिदायत देने और दया करने के उद्देश्य से हम ने मूसा को किताब दी थी ताकि वे अपने रब्ब की मुलाक़ात पर ईमान लाएँ।१५५। (रुकू १९/६)

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٥٦﴾

और यह (क़ुर्आन) ऐसी किताब है जिसे हम ने उतारा है और यह बरकत वाली है। सो इस का अनुसरण करो तथा संयम धारण करो ताकि तुम पर दया की जाए।१५६।

اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۪ وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿١٥٧﴾

(ताकि ऐसा न हो कि) तुम (कभी) यह कहो कि हम से पहले केवल दो जातियों[1] पर किताब उतारी गई थी और हम उन के पढ़ने से सर्वथा बे-ख़बर थे।१५७।

اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ؕ سَنَجْزِي الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿١٥٨﴾

अथवा (यूँ न) कहो कि यदि हम पर किताब उतारी जाती तो निस्सन्देह हम उन से बढ़ कर हिदायत पाते। सो तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से खुले-खुले तर्क और हिदायत एवं दयालुता आ चुकी है। (सो याद रखो) जिस ने अल्लाह की आयतों को झुठलाया तथा उन (पर ईमान लाने) से रुका रहा उस से अधिक अत्याचारी दूसरा कौन होगा जो लोग हमारी आयतों (पर ईमान लाने) से रुके रहते हैं उन के रुके रहने के कारण हम उन्हें अवश्य ही दुःखदायक अज़ाब का दण्ड देंगे।१५८।

---

1. अर्थात् यहूदियों और ईसाइयों पर यह अनजान मुश्रिकों का विचार था अन्यथा हज़रत मसीह स्वयं कहते हैं कि वह तौरात की ही बातों को पूरा करने के लिए आए थे और कोई नवीन शरीअत नहीं लाए थे। मती 5:17। अर्थात् इन्जील कोई शरीअत की किताब नहीं।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٥٩﴾

वे केवल इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आएँ या तेरा रब्ब आए अथवा तेरे रब्ब के कुछ चमत्कार आएँ। जिस दिन तेरे रब्ब के कुछ निशान प्रकट होंगे उस दिन किसी जान को जो उस से पहले ईमान न ला चुकी होगी या अपने ईमान के कारण भलाई न पा चुकी होगी उस का ईमान लाना उसे कोई लाभ नहीं देगा। तू कह दे कि तुम प्रतीक्षा करो, निस्सन्देह हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।१५९।

اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ ؕ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿١٦٠﴾

जिन लोगों ने अपने धर्म को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और गिरोहों में बट गए हैं तुझे उन से कुछ सम्बन्ध नहीं है। उन का लेखा अल्लाह के हाथ में है फिर जो कुछ वे करते थे वह उस की उन्हें जानकारी देगा।१६०।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦١﴾

जिन्हों ने नेकी की है उस नेकी से दस-गुना (अधिक) उन का प्रतिफल होगा तथा जिन्हों ने पाप कमाया है उन्हें केवल उतना ही दण्ड दिया जाएगा और उन पर कुछ भी अत्याचार नहीं किया जाएगा।१६१।

قُلْ اِنَّنِيْ هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٦٢﴾

तू उन्हें कह दे कि निस्सन्देह मेरे रब्ब ने मुझे सम्मार्ग दर्शाया है ऐसे धर्म की ओर जिस में कोई टेढ़ा-पन नहीं अर्थात् इब्राहीम का धर्म जो सच्चाई पर क़ायम था और मुश्रिकों में से न था।१६२।

قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٣﴾

तू उन्हें कह दे कि मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी और मेरा जीवन-मरण (सब कुछ) अल्लाह ही के लिए हैं जो समस्त लोकों अर्थात् सब जहानों का रब्ब है।१६३।

لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٤﴾

उस का कोई साझी नहीं और मुझे इसी बात का आदेश दिया गया है और मैं सब से पहला आज्ञाकारी हूँ ।१६४।

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ؕ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٥﴾

तू कह दे कि क्या मैं अल्लाह के सिवा (किसी दूसरे की) रब्ब के रूप में माँग करूँ ? वास्तव में वह हर चीज़ का पालन-पोषण करने वाला है और प्रत्येक जान जो कुछ वह कमाती है उस का (बोझ) उसी पर है और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठा सकता[1] । फिर अपने रब्ब की ओर ही तुम्हारा लौटना होगा । फिर वह तुम्हें उस बात की जानकारी देगा जिस में तुम मतभेद किया करते थे ।१६५।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٦﴾ ع

और वही है जिस ने तुम्हें संसार में (पहले लोगों) का खलीफ़ा (स्थान लेने वाला) बनाया तथा तुम में से कुछ लोगों को दूसरों पर दर्जों में इसलिए प्रधानता दी कि उस ने तुम्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में वह तुम्हारी परीक्षा ले । निस्सन्देह तेरे रब्ब का अज़ाब शीघ्र आ जाता है और वह निश्चय ही बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है ।१६६। (रुकू २०/७)

1. ईसाई इस आयत से यह प्रमाण देते हैं कि कोई पापी कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) नहीं हो सकता और यह कि इस्लामी शिक्षा के अनुसार केवल हज़रत मसीह ही निर्दोष थे, परन्तु यहाँ बोझ उठाने वाले का अर्थ पापी नहीं अपितु यह है कि जो अल्लाह के सामने उत्तरदायी है और यह भी कि वह निर्दोष नहीं । लूका 18:19, मती 19:17 और मरक़ुस 10:18 । अत: वह कफ़्फ़ारा नहीं हो सकते ।
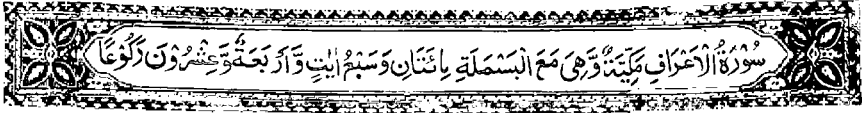
सूरः अल्-आराफ़

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की दो सौ सात आयतें एवं चौबीस रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्तकृपा करने वाला(और)बार-बार दया करने वाला है।१।

الٓمّٓصٓ ②

अलिफ़, लाम, मीम, साद[1]। मैं अल्लाह बहुत जानने वाला और सच्चा हूँ।२।

كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ③

यह (क़ुर्आन) एक (बड़ी शान वाली) किताब है जो तेरी ओर उतारी गई है (यह तेरी अपनी बनाई हुई नहीं)। अतएव तेरे दिल में इस के कारण कोई तंगी न आने पाए। (इस के उतारने का उद्देश्य यह है कि) तू इस के द्वारा (सुनने वालों को आने वाली भयानक विपत्ति से) सावधान करे और यह (किताब) मोमिनों के लिए एक अनुदेश है।३।

اِتَّبِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ

(हम इन लोगों से कहते हैं कि) जो कलाम तुम्हारे रब्ब की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है उस का अनुसरण करो तथा उस (अल्लाह) के सिवा उन का अनुसरण मत करो जो तुम्हारे (विचार में) दूसरे कार्यसाधक

1. विवरण के लिए देखिए सूरः बक़रः टिप्पणी आयत नं० 2। मूल शब्द 'साद' का अर्थ है 'मैं सच्चा हूँ' भाव यह है कि मेरी ओर से जो शिक्षा आए वह सच पर निर्धारित होती है।

اَوْلِيَآءَ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ٤

हैं, किन्तु तुम लोग बिल्कुल[1] शिक्षा ग्रहण नहीं करते ।४।

وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَأْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ٥

और बहुत सी बस्तियाँ ऐसी हैं जिन का हम ने सर्वनाश कर दिया। (जिस का विवरण यह है कि) उन के पास हमारा अज़ाब रात को सोते हुए अथवा दोपहर को आराम करते हुए आया ।५।

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَأْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ٦

सो उस समय जब कि हमारा अज़ाब उन के पास आया उन की ज़बान पर केवल यह शब्द थे कि हम निश्चय ही अत्याचारी थे ।६।

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ٧

अतः हम (उन लोगों से भी) अवश्य पूछेंगे जिन की ओर रसूल भेजे गए थे तथा रसूलों से भी अवश्य पूछेंगे ।७।

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ٨

फिर हम अवश्य ही उन्हें अपने ज्ञान के अनुसार वास्तविकता बताएँगे, क्योंकि हम कभी भी उन लोगों से ओझल[2] नहीं रहे। (उन के हालात सदा देखते थे) ।८।

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ٩

और उस (क़ियामत के) दिन समस्त कर्मों का तौला जाना एक हक़ (सच्ची) बात है। अतएव जिन लोगों के कर्मों का बोझ भारी होगा वे लोग सफलता प्राप्त करने वाले होंगे ।९।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ١٠

और जिन लोगों के बोझ हल्के हुए तो समझ लो, ऐसे लोग अपनी जानों को घाटे में डालने वाले हैं। यह इसलिए हुआ कि वे हमारी आयतों के सम्बन्ध में अत्याचार से काम लिया करते थे ।१०।

1. मूल शब्द 'क़लील' का शाब्दिक अर्थ है 'बहुत थोड़ा'। मुहावरे में इस का भाव बिलकुल नहीं, रञ्चमात्र भी नहीं होता है।

2. अर्थात् सदैव उन का निरीक्षण करते थे।

ولقد مكنكم في الأرض وجعلنا لكم فيها معايش ۚ قليلا ما تشكرون ﴿١٠﴾

और हम ने तुम्हें पृथ्वी में शक्ति प्रदान की थी तथा उस में तुम्हारे लिए (नाना प्रकार) के जिन्दगी गुज़ारने के साधन बनाए थे, परन्तु तुम बिल्कुल धन्यवाद नहीं करते ।११। (रुकू १/८)

ولقد خلقنكم ثم صورنكم ثم قلنا للملئكة اسجدوا لادم ۖ فسجدوا الا ابليس ۚ لم يكن من السجدين ﴿١١﴾

और हम ने तुम्हें पहले (अस्पष्ट रूप में) पैदा किया था, फिर तुम्हें (तुम्हारी परिस्थिति के अनुसार) रूप प्रदान किए थे, फिर फ़रिश्तों से कहा था कि आदम के आज्ञाकारी बनो। इस पर फ़रिश्तों ने तो आज्ञा का पालन किया, किन्तु इब्लीस[1] आज्ञाकारी न बना ।१२।

قال ما منعك الا تسجد اذ امرتك ۖ قال انا خير منه ۚ خلقتني من نار وخلقته من طين ﴿١٢﴾

(इस पर अल्लाह ने उसे) कहा कि मेरे आदेश[2] के होते हुए तुझे किस ने सजदः (आज्ञापालन) करने से रोका था ? उस ने उत्तर दिया कि मैं तो उस (आदम) से उत्तम हूँ । तूने मेरे स्वभाव में आग रखी है तथा उस के स्वभाव में गीली[3] मिट्टी का गुण रखा है ।१३।

---

1. इब्लीस और सजदः के लिए देखिए सूरः बक़रः टिपणी आयत नं० 35 ।

2. यद्यपि आदेश तो सीधे रूप में फ़रिश्तों को था, परन्तु जब किसी बड़े पदाधिकारी को आदेश दिया जाए तो उसके अधीन कर्मचारी उस में सम्मिलित होते हैं । पवित्र क़ुर्आन में कई बार बात का सम्बन्ध तो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से होता है, किन्तु उस से तात्पर्य आप के सारे अनुयायी होते हैं । जैसा कि कहा गया है कि जब तेरे जीवन में माता-पिता वृद्धावस्था को पहुँच जाएँ तो तू उन्हें 'उफ़' तक न कह । (सूरः बनी-इस्राईल आयत नं० 24) और वास्तविक बात यह है कि आप अनाथ थे । अतः इस में अभिप्राय आप के अनुयायी हैं आप स्वयं नहीं ।

3. अर्थात् गीली मिट्टी की भाँति मनुष्य की प्रकृति को विभिन्न प्रकार के गुणों में ढाला जा सकता है । यदि एक मानव चाहे तो सर्वोत्तम सत्ता के अधीन भी हो सकता है, परन्तु मेरे (शैतान के) स्वभाव में तू ने आग के गुण रखे हैं । अतएव मैं किसी के अधीन नहीं रह सकता । सो इस आयत का यह आशय नहीं कि मानव-समाज की सृष्टि मिट्टी से की गई है तथा शैतान की आग से । अपितु तात्पर्य यह है कि मानव-प्रकृति में यह गुण रखा गया है कि वह परिस्थिति के अनुकूल ढल जाता है, परन्तु शैतान के स्वभाव में प्रचण्ड आग की सी उत्तेजना पाई जाती है और वह अवज्ञा से काम लेता है ।

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ⑭
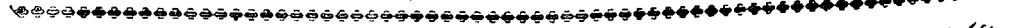
(अल्लाह ने) कहा कि (यदि यह बात है तो) तू इस (स्वर्ग) से चला जा, क्योंकि तेरे लिए उचित नहीं कि तू इस में अभिमान से काम ले। अतः तू यहाँ से निकल जा। तू तुच्छ तथा अधम लोगों में से है।१४।

قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ⑮

उस ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! मुझे उस दिन तक ढील दे जब कि वह उठाए जाएँगे[1]।१५।

قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ⑯

(अल्लाह ने) उत्तर दिया तुझे (तेरी माँग के अनुसार) ढील दी गई है।१६।

قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ⑰

उस ने कहा बात यूँ है कि तूने मेरा विनाश[2] किया है। अतएव मैं उन (मानव-समाज) के लिए तेरे सीधे मार्ग पर बैठ जाऊँगा।१७।

ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ⑱

फिर मैं उन के सामने से, पीछे से, दाहिने तथा बाईं ओर से (बहकाने के लिए) उन के पास आऊँगा और तू उन में से बहुतों को धन्यवादी नहीं पाएगा।१८।

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ⑲

(अल्लाह ने) कहा कि यहाँ से निकल जा। तेरी सदैव निन्दा की जाएगी और तू अल्लाह के क़ुर्ब (निकटता) से भी दूर रहेगा और जो भी इन लोगों में से तेरा अनुसरण करेंगे (मैं उन से कहता हूँ कि) तुम सब से नरक को भर दूँगा।१९।

1. इस से यह अभिप्राय नहीं कि क़ियामत तक ढील दे, अपितु यह तात्पर्य हैं कि आध्यात्मिक सूझ-बूझ होने तक मुझे ढील दे।

2. इस से यह तात्पर्य नहीं कि अल्लाह ने शैतान का विनाश किया था, अपितु शैतान ने तो अपने कुकर्मों के कारण स्वयं अपना सर्वनाश किया था।

وَيَادَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٢٠

और हे आदम ! (मैं तुझ से कहता हूँ कि) तू और तेरा साथी स्वर्ग में रहो । सो तुम जहाँ से चाहो खाओ-पियो[1] तथा इस (मना किये हुए) वृक्ष[2] के निकट भी न जाना अन्यथा तुम अत्याचारी हो जाओगे ।२०।

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ۝٢١

इस पर शैतान ने उन दोनों (आदम और उस के साथी) के दिल में शंका पैदा कर दी ताकि जो कुछ उन के नंग में से उन के लिए छिपाया गया था उसे ज़ाहिर[3] कर दे और कहा कि इस वृक्ष से तुम्हारे रब्ब ने तुम्हें केवल इसलिए रोका है कि ऐसा न हो कि कहीं तुम दोनों फ़रिश्ते बन जाओ अथवा तुम दोनों अमर[4] न हो जाओ ।२१।

وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝٢٢

और शैतान ने शपथ लेकर उन्हें कहा कि मैं तुम दोनों की भलाई चाहने वाला हूँ ।२२।

---

1. इस वाक्य से विदित होता है कि शरीअत की नींव पवित्रता पर रखी गई है । केवल वही पदार्थ हराम ठहराए गए हैं जो आध्यात्मिक तथा शारीरिक दृष्टिकोण से हानिकारक हैं ।

2. वर्जित (मना किए हुए) वृक्ष से अभिप्राय वे आदेश हैं जिन में कुछ बातों से आदम को रोका गया था विशेषकर इब्लीस की सन्तान से सम्पर्क रखने से । आदरणीय क़ुर्आन में लिखा है कि पवित्र वृक्ष से तात्पर्य अच्छे आदेश होते हैं । (देखिए सूरः इब्राहीम रुकू नं० 4) यहाँ भी वर्जित वृक्ष से अभिप्राय वे आदेश हैं जिन से बचने के लिए हज़रत आदम को कहा गया था और जिन में से एक बड़ा आदेश इब्लीस और उस की सन्तान से बचने का था ।

3. बुरे विचार जहाँ मनुष्य का सर्वनाश कर देते हैं वहाँ उनके द्वारा मनुष्य पर उसकी त्रुटियाँ भी प्रकट हो जाती हैं ।

4. बुरे विचार मनुष्य को यह बताते हैं कि जिन बातों से अल्लाह ने उसे रोका है उन्हीं के करने में उसकी उन्नति और प्रगति है । एक चोर या एक घूसखोर यही समझता है कि लोगों का धन हड़प करने से ही संसार में उसे सुखदायक जीवन प्राप्त हो सकता है ।

فَدَلّٰهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٣﴾

फिर उन दोनों को धोखा दे कर उन के स्थान से हटा दिया। फिर जब उन दोनों ने उस वर्जित वृक्ष में से कुछ खा लिया तो उन का नंग उन पर खुल गया और वे स्वर्ग की शोभा[1] के सामानों को अपने ऊपर चिमटाने लगे और उन दोनों को उन के रब्ब ने बुलाया[2] और कहा कि क्या मैं ने तुम दोनों को इस वृक्ष से रोका नहीं था तथा यह नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुल्लम-खुल्ला शत्रु है ? ।२३।

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ٚ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٤﴾

उन दोनों ने कहा कि हे हमारे रब्ब ! हम ने अपने-आप पर अत्याचार किया। यदि तू हमें क्षमा नहीं करेगा एवं हम पर दया नहीं करेगा तो हम अवश्य घाटा पाने वालों में से हो जाएँगे ।२४।

---

1. अर्थात् जब मनुष्य से पाप हो चुकता हैं तो उसकी अन्तरात्मा उसे सावधान करती है कि देख ! तू कितना निर्बल था। इस कुकर्म ने तुझे कोई लाभ नहीं पहुँचाया और यदि तू यह कुकर्म न भी करता तो भी तुझे कोई घाटा न था तब उस मनुष्य को समझ आती है और वह स्वर्ग की शोभा के सामानों अर्थात् उन कर्मों के द्वारा अपने पापों को ढाँपने का प्रयास करता है जिन के फलस्वरूप एक मनुष्य स्वर्ग में जा सकता है। पवित्र क़ुर्आन में मूल शब्द 'वरक़िलजन्नत' है जिस का अर्थ शोभा भी होता है। आयत का भाव यह है कि जिन कामों से स्वर्ग की शोभा प्राप्त होती है वे काम हज़रत आदम तथा हज़रत हव्वा ने करने प्रारम्भ कर दिए ताकि उनकी त्रुटियाँ ढाँकी जाएँ।

2. इस से यह अभिप्राय नहीं कि पापी लोगों को वास्तव में कोई इल्हाम या ईशवाणी होती है, अपितु यह आशय है कि जब तक मानव के दिल में लज्जा और ग्लानि पैदा होती है तो उसकी शुद्ध आत्मा उसे बताती है कि जो कुछ अल्लाह ने कहा था वह सर्वथा सत्य था और जो कुछ उसने कर्म किए थे वह अनुचित थे। तब वह विनय-पूर्वक प्रार्थना एवं क्षमा माँगने में लग जाता है और अल्लाह की अपार कृपा प्राप्त कर लेता है।

قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٥﴾

तब उस (अल्लाह) ने कहा कि तुम सारे के सारे यहाँ से चले[1] जाओ। तुम में से कुछ लोग दूसरे कुछ लोगों के शत्रु होंगे और तुम्हारे लिए इसी धरती में ठिकाना[2] तथा कुछ समय तक (भाग्य में) लाभ उठाना होगा।२५।

قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٦﴾

फिर कहा कि इसी पृथ्वी में तुम जीवित रहोगे और इसी में मरोगे और इसी में से निकाले[3] जाओगे।२६। (रुकू २/९)

1. इस आयत से प्रतीत होता है कि पहले जिन शैतानों का वृत्तान्त हो चुका है वे मनुष्य ही थे, क्योंकि इस आयत से सिद्ध होता है कि मानव तथा दानव दोनों को एक साथ ही निकलने का आदेश था और सूचित किया गया था कि वे परस्पर शत्रुता से काम लिया करेंगे। अब इस संसार में मनुष्य ही दिखाई देते हैं, परन्तु शैतान कोई भी दृष्टिगोचर नहीं होता और फिर मनुष्य ही एक-दूसरे के वैरी हैं। शैतानों का अपना कोई ऐसा समूह दिखाई नहीं देता जो मानव-समाज से शत्रुता एवं ईर्ष्या-द्वेष रखता हो।

2. इससे भी विदित होता है कि यहाँ मानव-प्राणी का ही वृत्तान्त है और इब्लीस एवं उस के अनुयायियों से अभीष्ट एक प्रकार के मनुष्य ही है, क्योंकि अल्लाह कहता है कि मानव-जाति इब्लीस, शैतान तथा उस का अनुसरण करने वाले इसी संसार में काम करेंगे और इसी पृथ्वी में निवास करने तथा काम करने वाले सब के सब मनुष्य ही हैं।

3. इस आयत से स्पष्ट है कि कोई मनुष्य पृथ्वी से बाहर नहीं जा सकता न ही आकाश पर जा सकता है जैसा कि कुछ लोगों का भ्रम हैं कि हज़रत ईसा-मसीह और हज़रत इद्रीस आकाश पर चले गये हैं। यदि वे दोनों आकाश पर बैठे हैं तो फिर या तो यह आयत असत्य है कि तुम इसी पृथ्वी में जीवित रहोगे या फिर हज़रत ईसा और हज़रत इद्रीस मनुष्य नहीं थे। इस आयत से यह भी सिद्ध होता है कि हज़रत ईसा और हज़रत इद्रीस और सारे ऐसे मनुष्य जिन के विषय में कहा जाता है कि वे आकाश पर मौजूद हैं वास्तव में इसी धरती पर अपना जीवन व्यतीत करेंगे, इसी में गाड़े जाएँगे और इसी में से पुनः जीवित हो कर उठेंगे।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۭ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ۭ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝

हे आदम की सन्तान ! हम ने तुम्हारे लिए एक ऐसा लिबास[1] पैदा[2] किया है जो तुम्हारे छिपाने वाले अंगों को ढाँपता है और शोभा का साधन भी है एवं संयम का लिबास तो सब से उत्तम लिबास है। यह (लिबास का आदेश) अल्लाह के आदेशों में से एक आदेश है ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।२७।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۭ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

हे आदम की सन्तान ! शैतान तुम्हें (अल्लाह की राह से) बहका न दे। जिस प्रकार कि उस ने तुम्हारे माता-पिता को स्वर्ग से निकाल दिया था। उस ने उन दोनों से उनके लिबास (वस्त्र) छीन लिए थे ताकि उन पर उन की छिपाने वाली चीज़ प्रकट कर दे। वह और उस का दल[3] तुम्हें वहाँ से देखते हैं जहाँ से तुम उन्हें नहीं देखते। हम ने शैतानों को इन्कार करने वालों का मित्र[4] बनाया है।२८।

---

1. लिबास :-पहनने के वस्त्र-पोषाक।

2. मूल शब्द 'अन्ज़लना' का एक अर्थ पैदा करना भी होता है जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में है, हम ने लोहा उतारा (पैदा किया) है। (देखिए सूरः हदीद आयत नं॰ 26) और अल्लाह ने तुम पर रसूल उतारा है अर्थात् रसूल भेजा है। (सूरः तलाक़ रुकू नं॰ 2)।

3. अर्थात् शैतान की सन्तान इस संसार में बड़ी धूर्तता से काम लेती है और मोमिनों को ताड़ती रहती है ताकि उन के कर्मों को बिगाड़ कर लोगों को सुनाएँ और ताकि उन्हें उन का शत्रु बना दें।

4. अर्थात् इन्कार करने वाले लोग यह प्रेरणा देते हैं कि बाप-दादा की बातों पर जमे रहो, बुद्धि से काम न लो।

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَاۗءِ ۭ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾

और जब वे (इन्कार करने वाले) लोग कोई बुरा काम करते हैं तो कहते हैं कि हम ने अपने पूर्वजों को इसी रीति पर पाया था और अल्लाह ने हमें इसी का आदेश दिया है। तू कह दे कि अल्लाह बुरी बातों के करने का कभी आदेश नहीं देता। क्या तुम अल्लाह के बारे में वे बातें झूठ ही कहते हो जिन का तुम्हें स्वयं ज्ञान नहीं ? ।२९।

قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۣ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ڛ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿٣٠﴾

तू कह दे कि मुझे मेरे रब्ब ने न्याय करने का आदेश दिया है और यह कि हर-एक मस्जिद के पास (उपासना के समय) अपना ध्यान ठीक कर लिया करो एवं अल्लाह की उपासना को ठीक उसी का हक़ समझते हुए उसी को पुकारो। जिस प्रकार उस ने तुम्हारा प्रारम्भ किया था। तुम फिर एक दिन उसी पहली हालत की ओर लौटोगे।३०।

فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۭ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣١﴾

उस ने एक गिरोह को हिदायत दी है, किन्तु एक दूसरे गिरोह पर गुमराही (पथ-भ्रष्टता) सिद्ध हो चुकी है, क्योंकि उन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को अपना मित्र बना लिया है तथा वे इस भ्रम में हैं कि वे हिदायत पा चुके हैं।३१।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣٢﴾ ع

हे आदम की सन्तान! हर-एक मस्जिद के पास (उपासना के समय) ज़ीनत[1] (सौन्दर्य का सामान) धारण कर लिया करो तथा खाओ-पियो और फ़ुज़ूलख़र्ची न करो, क्योंकि वह (अल्लाह) फ़ुज़ूल[2] ख़र्च करने वालों को पसन्द नहीं करता।३२। (रुकू ३/१०)

1. अर्थात् मस्जिद में आने से पहले ही अपने मन तथा विचारों को शुद्ध कर लिया करो और शरीर एवं वेशभूषा को भी स्वच्छ एवं पवित्र कर लिया करो।

2. 'मस्जिद' के साथ खाने-पीने और अपव्यय का कोई सम्बन्ध नहीं जान पड़ता, परन्तु इस के यहाँ

(शेष पृष्ठ ३१९ पर)

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۭ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝
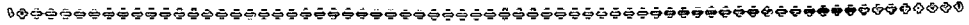
तू कह दे कि अल्लाह की उस सुन्दरता को जिसे उस ने अपने बन्दों के लिए निकाला है किस ने हराम[1] ठहराया है। इसी प्रकार आजीविका में से पवित्र पदार्थों को भी किस ने हराम[2] ठहराया है ? तू कह दे कि यह तो वास्तव में इस संसार में भी मोमिनों के लिए है तथा क़ियामत के दिन तो केवल उन्हीं के लिए होंगी। इसी प्रकार हम अपनी आयतें ज्ञान रखने वाले लोगों के लिए खोल-खोल कर वर्णन करते हैं।३३।

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

तू कह दे कि मेरे रब्ब ने केवल बुरे कामों को हराम ठहराया है चाहे वे छिपे हों या खुले और पाप एवं बिना हक़ के उद्दण्डता को भी हराम ठहराया है तथा इस बात को भी कि तुम किसी ऐसी सत्ता को अल्लाह का साझी ठहराओ जिस की सच्चाई के लिए उस (अल्लाह) ने कोई युक्ति नहीं उतारी एवं इस बात को भी (अवैध ठहराया है) कि तुम अल्लाह पर ऐसे झूठे आरोप लगाओ जिन को तुम नहीं जानते।३४।

(पृष्ठ ३१८ का शेष)

वर्णन करने में हिक्मत यह है कि भोजन का शरीर पर गहरा प्रभाव पड़ता है। उपासना अच्छे और उपयोगी कर्मों की शक्ति प्रदान करती है। इस प्रकार शरीर, आत्मा तथा उपासना का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। अतः बताया है कि विधिवत नमाज़ पढ़ो ताकि यथोचित शुभ कर्मों के करने का सामर्थ्य प्राप्त हो। जिस में से एक महान् शिक्षा यह है कि खाने-पीने में फ़ुज़ूलख़र्ची न करो।

1. अभिप्राय यह है कि खाने-पीने और वेष-भूषा आदि में दूषित वस्तुओं का प्रयोग इस्लाम धर्म के आदेश के विरुद्ध है। यह मुश्रिकों एवं ईसाइयों की शिक्षा थी, परन्तु पवित्र क़ुर्आन कहता है कि अल्लाह अपवित्र एवं गन्दा रहने की आज्ञा नहीं देता। इसका आदेश तो सदैव पवित्र और स्वच्छ रहने के लिए है।

2. ईसाइयों और हिन्दुओं का विचार है कि ईश-भक्त श्रेष्ठ और स्वादिष्ट भोजन कदापि नहीं करते, परन्तु इस्लाम कहता है कि समस्त पवित्र भोजन सारे मोमिनों के लिए वैध है, क्योंकि अल्लाह ने इन पदार्थों को प्रयोग में लाने के लिए ही पैदा किया है।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٥﴾
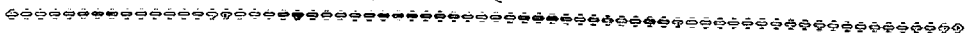
प्रत्येक जाति की समाप्ति का समय[1] निश्चित है। अतएव जब उन की समाप्ति का समय आ जाए तो उस से वे न तो एक क्षण पीछे रह सकते हैं तथा न ही एक क्षण आगे बढ़ सकते हैं।३५।

يَا بَنِي آدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي ۙ فَمَنِ اتَّقَىٰ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٦﴾

हे आदम की सन्तान! यदि तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल बना कर भेजे जाएँ इस प्रकार कि वे तुम्हारे सामने मेरी आयतें पढ़ कर सुनाते हों, तो जो लोग संयम धारण करें तथा सुधार करें, उन्हें (भविष्य का) कोई भय नहीं होगा और न वे भूत की बातों पर चिन्तित होंगे।३६।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٧﴾

और वे लोग जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं तथा अभिमान करते हुए उन से मुँह मोड़ लेते हैं वे नरक में पड़ने वाले हैं। वे उस में चिरकाल तक पड़े रहेंगे।३७।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ أُولَٰئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُمْ مِنَ الْكِتَابِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوا أَيْنَ مَا كُنْتُمْ

अतएव (बताओ कि) उस व्यक्ति से बढ़ कर दूसरा कौन अत्याचारी हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ[2] गढ़ता हो अथवा अल्लाह की आयतों को झुठलाया हो। ऐसे लोगों को निश्चित दण्ड में से उन का हिस्सा उन्हें मिलता रहेगा यहाँ तक कि जब उन के पास

---

1. इस से यह अभिप्राय नहीं कि विधाता ने कोई समय निश्चित कर रखा है अपितु उस ने कर्म निर्धारित कर दिए हैं जिन के आधार पर किसी जाति की आयु घटती-बढ़ती है। जब शुभ कर्मों से कोई जाति दूर हटेगी तो वह नष्ट हो जाएगी। अतः समय से तात्पर्य वह विधान है जिसके अधीन किसी जाति की आयु घटती-बढ़ती रहती है।

2. पवित्र क़ुर्आन में 'इफ़्तरा' शब्द है। इफ़्तरा सच्चा भी होता है और झूठा भी। सच्चा इस प्रकार कि जो बात वक्ता ने किसी की ओर सम्बन्धित करके कही हो, वह बात हो तो सच्ची, परन्तु जिस की ओर सम्बन्धित किया गया था उस ने वह बात न कही हो तथा झूठा इफ़्तरा इस प्रकार कि जो बात वक्ता की ओर सम्बन्धित की जाए, वह हो भी झूठी तथा न ही उस ने उसे कहा हो।

تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ۝۳۷

हमारे फ़रिश्ते उन के प्राण लेने के लिए जाएँगे तो वे पूछेंगे कि वे (साझी) कहाँ हैं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे? उस समय वे तो हम से गुम हो गए और वे अपने विरुद्ध स्वयं ही गवाही देंगे कि वे इन्कार करने वालों में सम्मिलित थे।३८।

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِي النَّارِ ۭ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ۭ حَتّٰٓي اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۗءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ڛ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ۝۳۸

तब अल्लाह उन से कहेगा कि जाओ और जा कर आग में उन जिन्नों तथा मनुष्यों के दलों में शामिल हो जाओ जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं। जब कोई जाति आग में प्रवेश करेगी तो (अपने से पहले वाली) अपनी बहन (जाति) पर फटकार डालेगी यहाँ तक कि जब सभी उस में दाख़िल हो जाएँगे तो उन में से अन्तिम (प्रविष्ट होने वाली) जाति अपने से पहले वाली जाति के विषय में कहेगी कि हे हमारे रब्ब! इन लोगों ने हमें पथभ्रष्ट किया। अतः तू नरक में उन्हें कई गुना बढ़ा कर अज़ाब दे। इस पर वह (अल्लाह) कहेगा कि सब को ही अधिक[1] अज़ाब मिल रहा है, किन्तु तुम समझते नहीं।३९।

وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۝۳۹ ع ۴

और (इस पर) उन में से पहली जाति के लोग अपने से पीछे आने वाली जाति के लोगों से कहेंगी कि तुम्हें हम पर कोई प्रधानता नहीं थी (कि तुम्हें कम अज़ाब दिया जाए)। अतः तुम अपने कुकर्मों के कारण अज़ाब का स्वाद चखो।४०। (रुकू ४/११)

1. अज़ाब सदा अधिक ही प्रतीत होता है यहाँ तक कि समस्त रोगी यही समझते हैं कि हमारा ही रोग और कष्ट सब से बड़ा एवं असह्य है दूसरे का रोग कम है।

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ﴿٤١﴾

वे लोग जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया है और घमण्ड करते हुए उन से मुँह मोड़ लिया है, उन के लिए आकाश के द्वार नहीं खोले जाएँगे तथा वे स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकेंगे यहाँ तक कि ऊँट सूई के छेद में प्रवेश[1] करे एवं हम अपराधियों को इसी तरह बदला देते हैं ।४१।

لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٤٢﴾

और उन का ओढ़ना-बिछौना नरक ही होगा और हम इसी तरह अत्याचारियों को बदला देते हैं ।४२।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٤٣﴾

और जो लोग ईमान लाए तथा उन्हों ने शुभ कर्म किए हैं (उन्हें याद रहे कि) हम किसी जान पर उस की शक्ति से ज़्यादा ज़िम्मेदारी नहीं डालते। वे लोग स्वर्ग में प्रवेश करने वाले हैं और वे उस में सदैव रहते चले जाएँगे ।४३।

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۖ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ ۖ لَقَدْ جَاءَتْ

और हम उन स्वर्ग-निवासियों के सीनों में से (एक-दूसरे के प्रति) मलिनता निकाल देंगे एवं उन के दख़ल और क़ब्ज़े[2] में नहरें बहती होंगी तथा वे कहेंगे हर-एक प्रकार की स्तुति का केवल अल्लाह ही अधिकारी है जिस ने हमें (इस स्वर्ग का) मार्ग दिखाया और यदि अल्लाह हमें इस का मार्ग न दिखाता तो हम इस का मार्ग कदापि नहीं पा सकते थे। निस्सन्देह हमारे रब्ब के

1. अर्थात् जिस प्रकार एक ऊँट का सूई के छेद में प्रविष्ट होना असम्भव है इसी प्रकार ऐसे पापियों का केवल अपने कर्मों के आधार पर स्वर्ग में प्रविष्ट होना भी असम्भव होगा। हाँ! यदि अल्लाह किसी पर दया कर दे तो और बात है।

2. संसार की नहरें तो बड़े-बड़े ज़मीमदारों या सरकार की होती हैं, परन्तु परलोक में स्वर्ग-निवासियों को पानी देने वाली नहरों पर उन्हीं का अपना अधिकार होगा।

رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ وَنُودُوا أَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝٤٣

रसूल सत्य लेकर हमारे पास आए थे तथा उन को ऊँची आवाज़ से कह दिया जाएगा कि यह वह स्वर्ग है जिस का तुम्हें उन कर्मों के कारण वारिस बनाया गया है जो तुम किया करते थे।४४।

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ قَالُوا نَعَمْ ۚ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ۝٤٤

और स्वर्ग वाले लोग नरक वालों से कहेंगे कि हमारे रब्ब ने जो प्रतिज्ञा हमारे साथ की थी उसे हम ने सच पाया है। क्या तुम ने भी उस प्रतिज्ञा को सच पाया है जो तुम से तुम्हारे रब्ब ने की थी? इस पर नरक वाले कहेंगे, हाँ, हाँ! सो एक पुकारने वाला उन के बीच ज़ोर से पुकारेगा कि इन अत्याचारियों पर अल्लाह की फटकार हो।४५।

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كَافِرُونَ ۝٤٥

जो अल्लाह की राह से (लोगों को) रोकते थे और इस राह में टेढ़ापन ढूंढ़ा करते थे एवं साथ ही वे परलोक (के जीवन) का इन्कार करने वाले थे।४६।

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَاهُمْ ۚ وَنَادَوْا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۚ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ۝٤٦

और उन दोनों (स्वर्ग वालों तथा नरक वालों) के बीच एक रोक होगी और आराफ़[1] पर कुछ लोग ऐसे होंगे जो सब को उन के चेहरे से पहचानते होंगे। वे स्वर्ग वालों को देख कर पुकारेंगे कि तुम पर शान्ति हो, वह अभी स्वर्ग में तो प्रविष्ट नहीं हुए होंगे, परन्तु उस में जाने की आशा रखते होंगे।४७।

1. मूल शब्द 'आराफ़' वालों से अभिप्ट कामिल हैं।

وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

जब उन (स्वर्ग-निवासियों) की दृष्टि नरक वालों की ओर फिराई जाएगी तो वे कहेंगे कि हे हमारे रब्ब ! हमें अत्याचारी लोगों में से मत बनाइयो ।४८। (रुकू ५/१२)

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُم بِسِيمَاهُمْ قَالُوا مَا أَغْنَىٰ عَنكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ۝

और आराफ़ वाले कुछ लोगों को जिन्हें वे उन के चेहरे से पहचानते थे कहेंगे कि न तो तुम्हारी जनसंख्या ने तुम्हें कोई लाभ पहुँचाया और न ही तुम्हारे उन बड़े-बड़े बोलों (दावों) ने जिन के आधार पर तुम घमण्ड किया करते थे ।४९।

أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ۚ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ ۝

(फिर वे स्वर्ग वालों की ओर संकेत करते हुए नरक वालों से कहेंगे) क्या ये वे ही लोग हैं जिन के सम्बन्ध में तुम सौगन्ध खा कर कहा करते थे कि अल्लाह उन के साथ कदापि दयालुता का व्यवहार नहीं करेगा। (फिर उन स्वर्ग वालों को जो स्वर्ग में प्रवेश करने की प्रतीक्षा कर रहे होंगे, अल्लाह कहेगा कि) जाओ तुम स्वर्ग में प्रवेश करो, तुम्हें न तो (भविष्य के प्रति) कोई भय[1] होगा तथा न ही तुम्हें भूत की कोई घटना दुःखी करेगी ।५०।

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۚ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

और नरक वाले स्वर्ग वालों को पुकार कर कहेंगे कि थोड़ा सा पानी हमारी ओर भी फेंको या जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है उस में से कुछ हमें भी दो। (इस पर स्वर्ग वाले) कहेंगे कि अल्लाह ने ये दोनों पदार्थ इन्कार करने वालों के लिए हराम ठहरा दिए हैं ।५१।

1. मूल शब्द 'ख़ौफ़' का अर्थ है भविष्य में होने वाले किसी संकट का भय और 'हुज़्न' का अर्थ है दिल पर भूतकाल की घटना के दुःख का प्रभाव।

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسٰهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٥٢﴾

(ऐसे इन्कार करने वाले लोग) जिन्हों ने अपने धर्म को हँसी-खेल बना रखा था और सांसारिक जीवन ने उन्हें धोखे में डाल रखा था। सो आज हम भी उन्हें छोड़ देंगे जिस प्रकार उन्हों ने अपने इस दिन के मिलने (के विचार) को छोड़ रखा था और इस कारण से भी कि वे हमारी आयतों का हठपूर्वक इन्कार करते थे।५२।

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٣﴾

और हम ने उन्हें एक बड़ी शान वाली किताब प्रदान की है जिसे हम ने अपने ज्ञान के आधार पर खोल-खोल कर वर्णन किया है और वह मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है।५३।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٥٤﴾ ع

क्या आज ये लोग इस किताब में लिखी हुई बातों की हक़ीक़त खुलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ? जिस दिन इस की हक़ीक़त खुल जाएगी तब वे लोग जिन्हों ने इस से पहले इसे छोड़ दिया था, कहेंगे हमारे रब्ब के रसूल बिल्कुल सच कहते थे। अत: क्या हमारे लिए कोई सिफ़ारिश करने वाले हैं जो हमारी सिफ़ारिश करें अथवा क्या यह सम्भव है कि हमें पुन: संसार में लौटा दिया जाए तो हम जो कुछ कुकर्म किया करते थे उनकी अपेक्षा सुकर्म करने लग जाएँ। निस्सन्देह उन लोगों ने अपनी जानों को घाटे में डाल दिया और जो वे झूठी बातें गढ़ा करते थे (आज) उन से खोई गईं।५४। (रुकू ६/१३)

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرٰتٍ بِأَمْرِهِ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِينَ ﴿٥٥﴾

निस्सन्देह तुम्हारा रब्ब अल्लाह ही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दौरों में पैदा किया है, फिर वह राज-सिंहासन पर दृढ़ता-पूर्वक विराजमान हो गया। वह रात को दिन पर ढाँकता है जो उसे शीघ्रता से पकड़ना चाहती है और उस ने सूर्य, चाँद एवं नक्षत्रगणों की इस प्रकार रचना की है कि वे सब उस के आदेश के अधीन (वेतन लिए बिना) मानव-सेवा के काम कर रहे हैं[1]। सुनो! पैदा करना भी उसी का काम है तथा विधान बनाना भी। अल्लाह बहुत बरकत वाला है जो सब जहानों का रब्ब है।५५।

اُدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٥٦﴾

तुम अपने रब्ब को गिड़गिड़ा[2] कर भी तथा चुपके-चुपके भी पुकारो। निस्सन्देह वह सीमा से आगे बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता।५६।

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٧﴾

और देश में उस के सुधार के बाद फ़साद मत फैलाओ तथा उस (अल्लाह) को भय और आशा से पुकारो। निश्चय ही अल्लाह की दयालुता भले काम करने वालों (परोपकारियों[3]) के निकट है।५७।

---

1. मूल शब्द 'मुसख्खर' का अर्थ है बिना वेतन के काम करना।

2. साधारण रूप में विनय-पूर्वक प्रार्थना करने के लिए गिड़गिड़ाने का शब्द प्रयुक्त किया गया है, क्योंकि साधारण रूप की प्रार्थना में ही एक मनुष्य बनावट से काम ले सकता है, परन्तु गुप्त रूप में की जाने वाली प्रार्थना के साथ गिड़गिड़ाने की शर्त नहीं लगाई, क्योंकि जो व्यक्ति एकान्तावस्था में प्रार्थना या उपासना करेगा वह विनम्रभाव से ही करेगा। उसे आडम्बर की आवश्यकता नहीं होती।

3. मूल शब्द 'मुहसिन' का अर्थ है जो समस्त शर्तों के साथ काम को पूरा करे। अतः इस शब्द के प्रयोग से इस ओर संकेत किया गया है कि ऐसा व्यक्ति जो अल्लाह को अपने पापों के दण्ड से भयभीत हो कर तथा उसकी अपार कृपा की आशा पर समस्त शर्तों के साथ उसे पुकारता है उस पर अल्लाह की कृपा अवश्य ही इतनी शीघ्रता से उतरती है कि देखने वाला चकित हो जाता है।

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ حَتّٰٓى إِذَآ أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَأَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾

और वही है जो वायु को अपनी दयालुता से पहले शुभ-समाचार देने वाली बना कर भेजता है। यहाँ तक कि जब वह बोझल बादलों को उठा लेती हैं तो हम उसे एक मुर्दा[1] देश की ओर चला देते हैं, फिर हम उन में से पानी उतारते हैं, फिर उस पानी द्वारा हर प्रकार के फल पैदा करते हैं। इसी प्रकार हम मुर्दों को निकाला[2] करते हैं ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।५८।

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِإِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ﴿٥٩﴾ ع

और अच्छा देश (जिस की मिट्टी अच्छी हो) अपने रब्ब के आदेश[3] से अपनी वनस्पति निकालता है और जिस देश की मिट्टी अच्छी न हो निकम्मी पैदावार निकलती है। इस प्रकार हम शुक्र करने वाली जाति के लोगों के लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर वर्णन करते हैं।५९। (रुकू ७/१४)

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوْحًا إِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ إِنِّيْٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٦٠﴾

हम ने निश्चय ही नूह को उस की जाति के लोगों की ओर रसूल बना कर भेजा तो उस ने उन्हें कहा कि हे मेरी जाति के लोगो ! अल्लाह की उपासना करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई उपास्य नहीं। मैं तुम्हारे ऊपर एक बड़े भारी दिन के अज़ाब के आने से डरता हूँ।६०।

1. अर्थात् ऐसा देश जो वर्षा न होने के कारण बंजर और सूखा से पीड़ित अर्थात् मुर्दा हो चुका हो।

2. इस का यह अर्थ है कि हम मुर्दा जातियों को उन्नति प्रदान करते हैं यहाँ परलोक का वर्णन नहीं है। यदि यहाँ परलोक का वर्णन होता तो "ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो" के शब्द न होते, क्योंकि परलोक तो आँखों से ओझल है। वहाँ जो जीवन मिलेगा उस से मनुष्य इस संसार में शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता।

3. "अपने रब्ब के आदेश से" यह तात्पर्य नहीं कि उस के लिए विशेष आज्ञा उतरती है, अपितु अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार की शक्ति भूमि में रखी हुई होती है उसी के अनुसार वह उपज देती है।

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۶۱﴾

उस की जाति के बड़े-बड़े लोगों ने कहा कि हे नूह ! हम तुझे खुली गुमराही (पथ-भ्रष्टता) में पड़ा हुआ देखते हैं ।६१।

قَالَ یٰقَوْمِ لَیْسَ بِیْ ضَلٰلَةٌ وَّ لٰكِنِّیْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶۲﴾

तब उस (नूह) ने कहा कि हे मेरी जाति के लोगो ! मुझ में तो कोई गुमराही की बात नहीं पाई जाती, अपितु मैं सारे लोकों के रब्ब की ओर से रसूल हो कर आया हूँ ।६२।

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّیْ وَ اَنْصَحُ لَكُمْ وَ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۳﴾

और तुम्हें अपने रब्ब के सन्देश पहुँचाता हूँ एवं तुम्हारा भला चाहता हूँ तथा अल्लाह के दिए हुए ज्ञान से वह कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते ।६३।

اَوَ عَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِیُنْذِرَكُمْ وَ لِتَتَّقُوْا وَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۶۴﴾

क्या तुम्हें इस बात पर आश्चर्य है कि तुम्हीं में से एक व्यक्ति पर तुम्हारे रब्ब की ओर से उपदेश से भरा हुआ कलाम उतरा है ताकि वह तुम्हें सावधान करे और ताकि तुम संयमी बन जाओ और उस के फलस्वरूप तुम पर दया की जाए ? ।६४।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَیْنٰهُ وَ الَّذِیْنَ مَعَهٗ فِی الْفُلْكِ وَ اَغْرَقْنَا الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِیْنَ ﴿۶۵﴾ ع

परन्तु फिर भी उन्हों ने उसे झुठलाया । अतएव हम ने उसे और उस के साथियों को एक नाव के द्वारा बचा लिया तथा हम ने उन लोगों को डुबो दिया जिन्हों ने हमारी आयतों का इन्कार किया था, मानो वह एक अन्धी जाति के लोग थे ।६५। (रुकू ८/१५)

وَ اِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۶۶﴾

और निस्सन्देह हम ने आद जाति के लोगों की ओर उन के भाई हूद को रसूल बना कर भेजा था । तब उस ने कहा कि हे मेरी जाति के लोगो ! अल्लाह की उपासना करो । उस के सिवा तुम्हारा कोई दूसरा उपास्य नहीं । तो क्या तुम संयम धारण नहीं करते ।६६।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

तब उस की जाति के इन्कार करने वाले सरदारों ने कहा कि हे हूद ! हम तुझे निश्चय ही अज्ञानता में पड़ा हुआ देखते हैं और निस्सन्देह हम तुझे झूठों में से समझते हैं ।६७।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾

उस (हूद) ने कहा कि हे मेरी जाति के लोगो ! मुझ में अज्ञानता की तो कोई बात नहीं, किन्तु (यह अवश्य है कि) मैं सारे लोकों के रब्ब की ओर से रसूल हूँ ।६८।

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾

मैं अपने रब्ब के संदेश तुम्हें पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा भला चाहने वाला और अमानतदार हूँ ।६९।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ وَاذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾

क्या तुम इस बात पर अचम्भा करते हो कि तुम्हीं में से एक व्यक्ति पर तुम्हारे रब्ब की ओर से उपदेश की बात उतरी है ताकि वह तुम्हें आने वाले अज़ाब से सावधान करे ? और याद रखो जब उस (अल्लाह) ने तुम्हें नूह की जाति के बाद उस का उत्तराधिकारी बनाया था और तुम्हारे शरीर को सुदृढ़[1] बनाया था । अतएव अल्लाह के पुरस्कारों को याद करो ताकि तुम सफल हो जाओ ।७०।

قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾

उन्हों ने कहा कि हे हूद ! क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि हम अल्लाह (को एक समझ कर उस) की उपासना करें और जिनकी उपासना हमारे पूर्वज किया करते थे उन्हें छोड़ दें । सो जिस बात से तू हमें डराता है, यदि तू सच्चा है तो उस को ले आ ।७१।

1. इस आयत का दूसरा अर्थ यह भी है कि तुम्हारी सन्तान को बढ़ाया ।

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ۚ أَتُجَادِلُونَنِي فِي أَسْمَاءٍ سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ ۚ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ﴿٧١﴾
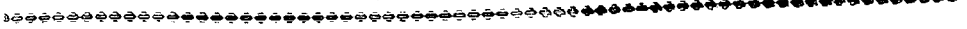
उस ने कहा कि तुम्हारे रब्ब की ओर से तुम पर अज़ाब और प्रकोप उतर चुका है। क्या तुम उन नामों के बारे में मुझ से वाद-विवाद करते हो जो तुम ने और तुम्हारे पूर्वजों ने अपनी ओर से रख लिए थे? अल्लाह ने तो उन के लिए कोई प्रमाण नहीं उतारा। अतः तुम भी (मेरे लिए) अज़ाब आने की प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ (तुम पर अज़ाब आने की) प्रतीक्षा करता रहूँगा। (फिर देखेंगे कि किस की आशाएँ पूरी होती हैं) ।७२।

فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٧٢﴾ ع

अन्ततः हम ने उसे और उस के साथियों को अपनी कृपा से बचा लिया तथा जिन लोगों ने हमारी आयतों का इन्कार किया था और ईमान लाने वालों में शामिल नहीं हुए थे उन की जड़ काट दी ।७३। (रुकू ९/१६)

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ هَٰذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً ۖ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ ۖ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾

और हम ने समूद जाति की ओर उन के भाई सालिह को रसूल बना कर भेजा था। उस ने उन से कहा कि हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की उपासना करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई उपास्य नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से एक खुली-दलील (युक्ति) आ चुकी है। (वह यह है कि) यह अल्लाह की ऊँटनी है जो तुम्हारे लिए एक निशान के रूप में है। सो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की धरती में चरती फिरे तथा इसे कोई कष्ट न दो अन्यथा तुम्हें पीड़ा-जनक अज़ाब पहुँचेगा'।७४।

وَاذْكُرُوٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِى الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝٧٥

और याद करो जब उस (अल्लाह) ने तुम्हें आद जाति के बाद उन का जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया था तथा धरती में तुम्हारा इस प्रकार ठिकाना बनाया कि तुम उस के मैदानों में दुर्ग बनाते थे एवं पर्वतों को खोद कर घर बनाते थे। अतः अल्लाह की निअमतों को याद करो और धरती में जान-बूझ कर फ़साद मत फैलाओ।७५।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۗ قَالُوٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝٧٦

इस पर सालिह की जाति में से उन बड़े-बड़े लोगों ने जो घमंडी थे सालिह की जाति में से ईमान लाने वाले निर्बल लोगों से कहा कि क्या वास्तव में तुम समझते हो कि सालिह अपने रब्ब की ओर से रसूल है? उन्हों ने कहा कि हम तो उस शिक्षा पर ईमान रखते हैं जिस के साथ वह भेजा गया है।७६।

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِىْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝٧٧

इस पर वे लोग जिन्हों ने अभिमान से काम लिया था बोले कि जिस शिक्षा पर तुम ईमान लाए हो हम उसे नहीं मानते।७७।

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٧٨

फिर उन्हों ने (आवेश में आ कर) ऊँटनी[1] की कूँचें काट दी और अपने रब्ब के आदेश की अवज्ञा की और कहा कि हे सालिह! जिस अज़ाब के आने की तू हमें धमकी देता है यदि तू सच्चा रसूल है तो उसे ले आ।७८।

1. वास्तव में उन लोगों को ऊँटनी से तो वैर न था और न ही ऊँटनी की हत्या करना इतना बड़ा पाप है, परन्तु हज़रत सालिह उस ऊँटनी पर सवार हो कर देश में प्रचार किया करते थे। उन लोगों ने ऊँटनी की हत्या इसलिए की ताकि हज़रत सालिह के प्रचार का काम समाप्त हो जाए तथा वह लोगों में बदनाम हो जाए। इस कारण उन पर अज़ाब आया।

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝

इस पर उन्हें भूकम्प ने आ पकड़ा और वे अपने घरों में घुटनों के बल गिरे हुए रह गए[1] ।७९।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ۝

तब सालिह अपनी जाति के लोगों को छोड़ कर दूसरी ओर चला गया और कहा कि हे मेरी जाति के लोगो ! मैं ने तुम्हें अपने रब्ब का सन्देश पहुँचा दिया था और तुम्हारी भलाई की बातें तुम्हें बता दी थीं, किन्तु तुम लोग भलाई चाहने वालों को पसन्द नहीं करते ।८०।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝

और हम ने लूत को भी (उस की जाति की ओर रसूल बना कर भेजा था)। जब उस ने अपनी जाति के लोगों से कहा कि क्या तुम ऐसा दुराचार करते हो कि तुम से पहले सारी जातियों में से किसी ने भी ऐसा नहीं किया ।८१।

اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝

क्या तुम स्त्रियों को छोड़ कर पुरुषों के पास काम-वासना के विचार से आते हो? अपितु तुम सीमा से आगे बढ़ने वाली जाति हो ।८२।

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝

इस पर उस की जाति के लोगों ने केवल यह कहा कि (हे लोगो !) लूत और उस के साथियों को नगर से निकाल दो। वे ऐसे लोग हैं जो अपनी पवित्रता पर इतराते हैं ।८३।

1. अज़ाब के समय वे अपने घुटनों पर प्रार्थना के लिए झुक गए, किन्तु ऐसे समय में तौबः (पश्चाताप) काम नहीं देती। अतः वे उसी दशा में मर गए और भूकम्प के कारण उन के ऊपर मकान गिर गए।

فَاَنۡجَیۡنٰهُ وَاَهۡلَهٗۤ اِلَّا امۡرَاَتَهٗ ۖ كَانَتۡ مِنَ الۡغٰبِرِيۡنَ ۝

अतः हम ने उसे और उस के परिवार को बचा लिया सिवाय उस की पत्नी के, क्योंकि वह पीछे रहने वालों में से हो गई[1] ।८४।

وَاَمۡطَرۡنَا عَلَيۡهِمۡ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرۡ كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ۝

और हम ने उन पर (भूकम्प के कारण पत्थरों की) एक वर्षा की । सो देख अपराधियों का परिणाम क्या निकला[2] ! ।८५। (रुकू १०/१७)

وَاِلٰى مَدۡيَنَ اَخَاهُمۡ شُعَيۡبًا ؕ قَالَ يٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمۡ مِّنۡ اِلٰهٍ غَيۡرُهٗ ؕ قَدۡ جَآءَتۡكُمۡ بَيِّنَةٌ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ فَاَوۡفُوا الۡكَيۡلَ وَالۡمِيۡزَانَ وَلَا تَبۡخَسُوا النَّاسَ اَشۡيَآءَهُمۡ وَلَا تُفۡسِدُوۡا فِى الۡاَرۡضِ بَعۡدَ اِصۡلَاحِهَا ؕ ذٰلِكُمۡ خَيۡرٌ لَّكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ۝

और हम ने मद्यन[3] की ओर उन के भाई शुऐब को भी (रसूल बना कर) भेजा । उस ने कहा कि हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो । उस के सिवा तुम्हारा कोई उपास्य नहीं । तुम्हारे रब्ब की ओर से एक खुला चमत्कार आ चुका है (अर्थात् स्वयं हज़रत शुऐब) । अतएव चाहिए कि नाप और तौल दोनों पूरे-पूरे दिया करो तथा लोगों को उन की वस्तुएँ उन के हक़ से कम न दिया करो और देश में उस के सुधार के बाद फ़साद मत फैलाओ । यदि तुम मोमिन हो तो यह बात तुम्हारे लिए बहुत ही अच्छी है ।८६।

---

1. अज़ाब आने से पहले हज़रत लूत को बताया गया था कि वहाँ से निकल जाएँ, परन्तु उन की दो पुत्रियाँ उसी नगर में ब्याही हुई थीं । उन की पत्नी ने परमात्मा के आदेश को न माना और पुत्रियों की ममता के कारण पीछे रह गई और अज़ाब में फँस गई ।

2. हज़रत लूत की जाति के देश में एक भयंकर भूकम्प आया था । जिस के कारण पृथ्वी का विध्वंस हो गया था । भयंकर भूकम्पों में प्रायः ऐसा ही हुआ करता है कि मिट्टी सैंकड़ों फुट ऊपर जा कर फिर नीचे गिरती है । मानों मिट्टी तथा पत्थरों की वर्षा होती है । पुम्पयाई (Pompyai) में भी ऐसा ही हुआ और सन् 1905 ई० में काँगड़ा में भी ऐसा ही हुआ था । थोड़ा समय बीता कि काबुल के उत्तर में एक बड़ा भयानक भूकम्प आया तथा उस में भी ऐसा ही हुआ ।

3. तौरात से विदित होता है कि हज़रत इब्राहीम की हज़रत सारः और हज़रत हाजरः के अतिरिक्त

(शेष पृष्ठ ३३४ पर)

وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۪ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨٦﴾

और हर राह पर इस लिए न बैठा करो कि जो अल्लाह पर ईमान लाए उसे अल्लाह की राह से डराओ और रोको तथा उस में भूलें पैदा करने की कोशिश करते रहो और याद रखो जब कि तुम थोड़े थे तो अल्लाह ने तुम्हें बढ़ा दिया और यह बात सदा सामने रखो कि उपद्रव फैलाने वालों का परिणाम क्या होता रहा है ? ।८७।

وَاِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا بِالَّذِيْٓ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

और यदि तुम में से कोई गिरोह उस पर ईमान लाया है जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ तथा कोई गिरोह ऐसा है जो ईमान नहीं लाया तो धैर्य से काम लो यहाँ तक कि अल्लाह हम (मोमिनों तथा इन्कार करने वालों) में निर्णय कर दे और वही सब से अच्छा निर्णय करने वाला है ।८८।

(पृष्ठ ३३३ का शेष)

एक तीसरी धर्म-पत्नी और भी थी। हज़रत इब्राहीम का एक पुत्र उस पत्नी के गर्भ से भी हुआ था जिस का नाम आप ने मद्यन रखा था। उस की सन्तान फैल कर हिजाज़ के उत्तर तथा फलस्तीन के दक्षिणी भू-भाग में बस गई। हज़रत शुऐब का प्रादुर्भाव उसी जाति में हुआ था और उसी जाति का नगर मद्यन था जिस में वह रहे थे। मद्यन नगर की जन संख्या अधिकतर इस्माईली जाति के लोगों की थी। (इन्साइकलु-पीडिया आफ़ वर्टीनीक शब्द मद्यन)।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ۭ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ۸۹

उस की जाति में से जो लोग घमण्डी थे उन में से बड़े लोगों ने कहा कि हे शुऐब ! हम तुझे तथा उन लोगों को अपने देश से निकाल[1] देंगे जो तुझ पर ईमान लाए हैं या तुम्हें पुनः हमारे धर्म में लौट आना होगा। इस पर उस ने कहा कि चाहे हमें यह बात बुरी ही लगे (तो क्या फिर भी निकाल दोगे ?) ।८९।

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ۭ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ۭ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۭ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۭ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ۹۰

(वास्तविक बात यह है कि) यदि हम लौट कर तुम्हारे धर्म में आ भी जाएँ जब कि अल्लाह ने इस से हमें छुटकारा दे दिया है फिर भी इस का यह अर्थ नहीं होगा कि तुम सच्चे हो बल्कि हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे, परन्तु अब ईमान लाने के बाद अल्लाह की इच्छा के बिना उस पहले धर्म की ओर लौट कर आना हमारे वश में नहीं है। हमारा रब्ब हर चीज़ का पूरा ज्ञान रखता है। हम अल्लाह ही पर भरोसा रखते हैं एवं कहते हैं कि हे हमारे रब्ब ! हमारे और हमारी जाति के लोगों के बीच सच्चा फ़ैसला कर दे तथा तू फ़ैसला करने वालों में से सब से उत्तम है ।९०।

وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَىِٕنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۹۱

और जो लोग उस (शुऐब) की जाति में से इन्कार करने वाले थे उन के सरदारों ने कहा कि यदि तुम शुऐब की राह पर चलोगे तो तुम हानि पाने वाले लोगों में से हो जाओगे ।९१।

---

1. किसी देश की अत्याचार करने वाली बड़ी जाति के लोग घमण्ड में आकर छोटी जातियों को सदा ऐसी ही धमकियाँ दिया करते हैं, हालाँकि उन्हें इस बात का भी ज्ञान होता है कि यदि हम ने उन्हें देश से निकाल दिया तो उन्हें कहीं भी रहने का स्थान नहीं मिलेगा। विदेशी सरकारें उन्हें अपने देश में आने नहीं देंगी।

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩٢﴾

अतएव उन्हें एक भूकम्प ने पकड़ लिया और वे अपने घरों में घुटनों के बल गिरने की हालत में पड़े रहे।९२।

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۛ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٣﴾

वे लोग जिन्हों ने शुऐब को झुठलाया था ऐसे विनष्ट हुए कि मानो वह अपने देश में बसे[1] ही नहीं थे। वे लोग जिन्हों ने शुऐब को झुठलाया था घाटा पाने वालों में से हो गए।९३।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّىْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٤﴾

इस पर वह (शुऐब) उन से पीठ फेर कर चल दिए और यह कहते गए कि हे मेरी जाति के लोगो ! मैं ने अपने रब्ब के सन्देश तुम तक पहुँचा दिए थे एवं तुम्हें उपदेश दे दिया था। अतः अब मैं इन्कार करने वाली जाति पर किस प्रकार खेद प्रकट करूं।९४। (रुकू ११/१)

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِىْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِىٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٥﴾

और हम ने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा (परन्तु ऐसा हुआ कि) हम ने उस में निवास करने वालों को कष्ट तथा विपत्ति द्वारा पकड़ लिया ताकि वह विनम्र हों और गिड़गिड़ाएँ।९५।

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٦﴾

फिर हम ने उन के दुःख की हालत को सुख से बदल दिया यहाँ तक कि जब वे उन्नति कर गए और कहने लगे कि ऐसे दुःख-सुख तो हमारे पूर्वजों को भी आया करते थे (यदि हमें आये तो कोई आश्चर्य नहीं)। अतः हम ने उन्हें अचानक अज़ाब से पकड़ लिया और वे नहीं समझते थे कि ऐसा क्यों हुआ।९६।

---

1. अर्थात् बड़ी जाति के लोग अपने घमण्ड में छोटी जातियों के लोगों को अपने देश से निकाल देना चाहते हैं, हालाँकि विदेशों में उन लोगों का कोई ठिकाना नहीं होता तो अल्लाह भी उस बड़ी जाति को अपने पैदा किए हुए देश से निकाल देता है अर्थात् उस जाति का सर्वनाश कर देता है।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۶﴾

और यदि उन बस्तियों के निवासी ईमान लाते और संयमी बनते तो हम आकाश तथा धरती से उन के लिए बरकतों के द्वार खोल देते, किन्तु उन्हों ने (नबियों को) झुठलाया। अतएव हम ने उन्हें उन के कर्मों के कारण अज़ाब में पकड़ लिया।९७।

اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآىِٕمُوْنَ ﴿۹۷﴾

क्या इन नगरों[1] के रहने वाले (मक्का और आस-पास के लोग) इस बात से निडर हो गए हैं कि हमारा अज़ाब उन पर रात के समय आ जाए जब कि वह सो रहे हों ?।९८।

اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿۹۸﴾

या इन नगरों के निवासी इस बात से निडर हो गए हैं कि हमारा अज़ाब उन पर दोपहर के समय आ जाए जब कि वे खेल[2] रहे हों ?।९९।

اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۹۹﴾ ع ۱۲

क्या वे अल्लाह के उपाय से सुरक्षित हो गए हैं ? यदि ऐसा है तो याद रखें कि घाटा उठाने वाली जाति के सिवा कोई जाति भी अल्लाह के उपाय से अनजान नहीं होती।१००। (रुकू १२/२)

1. हज़रत शुऐब के नगरों का परिणाम देख कर फिर भी क्या मक्का और उस के आस-पास के लोग शिक्षा प्राप्त नहीं करते ?

2. भारत में दोपहर के समय लोग बाज़ारों और बरामदों में चौसर आदि खेलते हैं। ऐसा लगता है कि वह जाति भी व्यापार करती थी। उन में भी कोई ऐसी ही रीति थी।

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠١﴾

क्या उन लोगों को जो धरती के मूल निवासियों के बाद उस के वारिस (उत्तराधिकारी) बने, इस बात से समझ नहीं आई कि यदि हम चाहें तो उन के पापों के कारण उन पर भी अज़ाब उतार सकते हैं और उन के दिलों पर मुहर भी लगा सकते हैं जिस के कारण वह हिदायत की बातों को सुन नहीं सकेंगे ।१०१।

تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَائِهَا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ﴿١٠٢﴾

ये ऐसी बस्तियाँ हैं जिन के समाचार हम तुम्हें सुना रहे हैं और उन के पास उन्हीं में से रसूल निशान ले कर आए थे, किन्तु वे (इस पर भी) ईमान नहीं लाए, क्योंकि वे पहले ही इन्कार कर चुके थे। अल्लाह इसी प्रकार इन्कार करने वालों के दिलों पर मुहर लगाता है ।१०२।

وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ ۖ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ﴿١٠٣﴾

और हम ने उन में से बहुतों को अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला नहीं पाया बल्कि उन में से बहुतों को प्रतिज्ञा भंग करने वाला ही पाया ।१०३।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٤﴾

फिर हम ने उन नबियों के बाद मूसा को अपने निशान दे कर फ़िरऔन और उस के सरदारों की ओर भेजा तो उन्हों ने उन (निशानों) से अत्याचार का व्यवहार किया। अतएव तू देख कि फ़साद फैलाने वालों का क्या परिणाम निकला ? ।१०४।

وَقَالَ مُوسَىٰ يَا فِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٥﴾

और मूसा ने फ़िरऔन से कहा कि मैं सब जहानों (समस्त लोकों) के रब्ब की ओर से रसूल हूँ ।१०५।

حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۭ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِيَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ۝١٠٥

और इस बात का हक़ (अधिकार) रखता हूँ कि अल्लाह के बारे में सच्ची बात के सिवा और कुछ न कहूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से एक खुला निशान ले कर आया हूँ। अतः बनी-इस्राईल को मेरे साथ भेज दे।१०६।

قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝١٠٦

उस (फ़िरऔन) ने कहा कि यदि तू कोई चमत्कार लेकर आया है और तू वास्तव में सच्चा है तो तू उसे ज़ाहिर कर।१०७।

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ۝١٠٧

इस पर उस (मूसा) ने अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दी और वह अचानक खुला-खुला एक साँप दिखाई देने लगा।१०८।

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِىَ بَيْضَاۗءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۝١٠٨

फिर उस ने अपना हाथ बाहर निकाला तो वह देखने वालों को बिल्कुल उजला दिखाई देने लगा।१०९। (रुकू १३/३)

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ۝١٠٩

इस पर फ़िरऔन की जाति के सरदारों ने कहा कि यह तो बहुत बड़ा जानकार जादूगर है।११०।

يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ۝١١٠

जो तुम्हें तुम्हारे देश से बाहर निकालना चाहता है (सो इस के बारे में) तुम्हारा क्या परामर्श है।१११।

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِي الْمَدَاۗىِٕنِ حٰشِرِيْنَ ۝١١١

इस पर सरदारों ने कहा कि मूसा और उस के भाई को कुछ ढील दें और सारे नगरों में ढंढोरची भेज दें।११२।

يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝١١٢

ताकि वे आप के पास सभी जानकार ज़ादूगरों को ले कर आएँ।११३।

وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٣﴾

और (इस दौड़ धूप के नतीजा में) सारे जादूगर फ़िरऔन के पास इकट्ठे हो गए तथा वे बोले कि यदि हम ग़ालिब (विजयी) हुए तो क्या हमें कुछ इन्आम (पुरस्कार) भी मिलेगा ? ।११४।

قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿١١٤﴾

इस पर फ़िरऔन ने कहा कि क्यों नहीं ! उस के अतिरिक्त तुम मेरे पसंदीदा और करीबी (निकटवर्ती भी हो जाओगे ।११५।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿١١٥﴾

उन्हों ने कहा कि हे मूसा ! क्या तू पहले फेंकेगा या हम (पहले) फेंकने का साहस करें ? ।११६।

قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ﴿١١٦﴾

मूसा ने कहा कि तुम पहले फेंको। फिर जब उन्हों ने अपनी लाठियाँ और रस्सियाँ फेंक दी तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया तथा उन्हें डरा दिया और उन्हों ने लोगों के सामने एक बहुत बड़ा जादू पेश किया ।११७।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿١١٧﴾

और हम ने मूसा पर वह्य उतारी कि तू अपनी लाठीं डाल दे (जब उस ने ऐसा किया) तो अचानक ऐसा प्रतीत हुआ कि वह जादूगरों के रचे हुए स्वांग को निगलती[1] जा रही है ।११८।

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٨﴾

अतः सच्चाई खुल गई और जादूगरों ने जो कुछ किया था वह नष्ट हो गया ।११९।

---

1. भाव यह है कि उन का **प्रभाव** नष्ट करती जाती थी। वास्तविक बात यह है कि उन्हों ने अपनी रस्सियों के भीतर लोहे के पेच छिपा रखे थे और लाठियों में पारा भरा हुआ था जिस के कारण वह हिलते-जुलते थे जैसे आज-कल युरोप के खिलौने होते हैं। मूसा ने जब उन पर अपनी लाठी मारी तो पेच टूट कर **बिखर** गए और पारा निकल गया जिस से सारा छल-कपट खुल गया। इसे मुहावरे में निगलता कहा गया है।

فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ﴿١٢٠﴾

तब वे जादूगर परास्त हो गए और अपमानित हो गए ।१२०।

وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿١٢١﴾

और वे (जादूगर) विनम्र भाव से सजदः में गिर गए ।१२१।

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٢﴾

और कहने लगे हम समस्त लोकों के रब्ब पर ईमान लाते हैं ।१२२।

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

जो मूसा और हारून का रब्ब है ।१२३।

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٤﴾

फ़िरऔन ने कहा कि क्या तुम इस पर ईमान ले आए, इस से पहले कि मैं तुम्हें आज्ञा देता ? (ऐसा लगता है कि) यह एक योजना है जो तुम सब ने नगर में मिल कर बनाई है, ताकि उस में से उस के निवासियों को निकाल दो । अतः तुम इस का परिणाम शीघ्र ही जान लोगे ।१२४।

لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٥﴾

मैं तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पाँव अपनी नाफ़रमानी[1] के कारण काट दूँगा फिर तुम सब को फाँसी पर लटका दूँगा ।१२५।

قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٦﴾

वे बोले फिर क्या होगा । हम तो अपने रब्ब ही की ओर लौट कर जाने वाले हैं ।१२६।

---

1. कुछ भाष्यकारों ने मूल-शब्द 'ख़िलाफ़' का अर्थ 'बायाँ और दाहिना हाथ' अथवा प्रतिकूल दिशाओं के हाथ-पाँव किया है, परन्तु इस का अर्थ 'नाफ़रमानी' के कारण' भी होता है और यही अर्थ हम ने किया है ।

وَمَا تَنقِمُ مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِآيَاتِ رَبِّنَا لَمَّا جَاءَتْنَا ۚ رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ ۝

और तू हम से केवल इस बात पर बिगड़ा है कि हम अपने रब्ब के निशानों पर ईमान ले आए हैं, जब कि वे हमारे पास आ चुके हैं। (और हम प्रार्थना करते हैं कि) हे हमारे रब्ब! हमें धैर्य प्रदान कर तथा हम को मुसलमान (आज्ञाकारी) होने की हालत में मौत दे।१२७। (रुकू १४/४)

وَقَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوسَىٰ وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَيَذَرَكَ وَآلِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ أَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ ۝

और फ़िरऔन की जाति में से कुछ सरदारों ने कहा कि क्या तू ने मूसा और उस की जाति के लोगों को स्वतन्त्र छोड़ दिया है कि हमारे देश में फ़साद फैलाएँ और तुझे तथा तेरे उपास्यों को छोड़ दें। उस (फ़िरऔन) ने कहा कि हम अवश्य उन के पुत्रों की हत्या करेंगे और उनकी स्त्रियों को जीवित रखेंगे तथा हम उन पर ग़ालिब हैं।१२८।

قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا ۖ إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝

(इस पर) मूसा ने अपनी जाति के लोगों से कहा कि अल्लाह से सहायता माँगते रहो और धीरता से काम लो। देश तो अल्लाह का है। वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उस का उत्तराधिकारी बना देता है तथा शुभपरिणाम संयमियों का ही होता है।१२९।

قَالُوا أُوذِينَا مِن قَبْلِ أَن تَأْتِيَنَا وَمِن بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۚ قَالَ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ۝

वे (मूसा की जाति के लोग) बोले कि तेरे आने से पहले भी हमें कष्ट दिया जाता था और तू जब से हमारे पास आया है उस समय से भी हमें दुःख दिया जाता है। उस (मूसा) ने उत्तर में कहा कि सम्भव है कि तुम्हारा रब्ब तुम्हारे शत्रु को विनष्ट कर दे और देश में तुम्हें अपना जानशीन (अधिनायक) बना दे और फिर देखे कि तुम कैसे कर्म करते हो!।१३०। (रुकू १५/५)

وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣١﴾

और हम ने फ़िरऔन की जाति के लोगों को अकाल-पीड़ित सालों तथा फलों की पैदावार में कमी (और सन्तान के मर जाने) से पकड़ा ताकि वे शिक्षा ग्रहण करें।१३१।

فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ؕ اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾

जब उन पर सुख का समय आता तो वह कहते कि यह तो हमारा हक़ (अधिकार) है और यदि उन पर संकट का समय आता तो उसे मूसा और उस के साथियों की नहूसत का फल समझते थे। सावधान! उन की नहूसत (का सामान) अल्लाह के पास सुरक्षित है, परन्तु उन में से बहुत से लोग जानकारी नहीं रखते।१३२।

وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٣﴾

और उन[1] लोगों ने कहा कि तू जब भी कोई चमत्कार हमारे पास लाएगा ताकि तू उस के आधार पर हमें धोखा दे सके तो हम तुझ पर कदापि ईमान नहीं लाएँगे।१३३।

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۟ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿١٣٤﴾

तब हम ने उन पर तूफ़ान, टिड्डियाँ, जुएँ और मेंढक तथा लहू[2] भेजा। यह अलग-अलग चमत्कार थे। फिर भी उन्हों ने घमंड किया और वे अपराधी लोग बन गए।१३४।

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ ﴿١٣٥﴾

और जब (कभी भी) उन पर अज़ाब उतरा तो चिल्ला उठते कि हे मूसा! अपने रब्ब को वे सारे वादे (प्रतिज्ञाएँ) याद दिला कर पुकार, जो उस ने तेरे साथ किए हैं यदि तू ने हम पर से अज़ाब दूर कर दिया तो हम तुझ पर ईमान ले आएँगे और इस्राईल की सन्तान को तेरे साथ भेज देंगे।१३५।

1. फ़िरऔन की जाति के लोगों की ओर संकेत है।

2. इन इश्वरीय प्रकोपों का उल्लेख बाइबिल में भी आता है। देखिए 'नदी लहू बन गई' निर्गमन 7:11; 'मेंढक, जुएँ' निर्गमन 8, 'तूफ़ान' निर्गमन 9, 'टिड्डियाँ' निर्गमन 10।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلَىٰ أَجَلٍ هُمْ بَالِغُوهُ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿١٣٦﴾

परन्तु जब हम ने उन से उस समय तक के लिए अज़ाब को टाल दिया जो उन के लिए निश्चित था तो वे तुरन्त ही प्रतिज्ञा भंग करने लग गए ।१३६।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ﴿١٣٧﴾

अतएव हम ने उन से (उन की शरारतों का) बदला लिया तथा उन को समुद्र में डुबो[1] दिया, क्योंकि वे हमारी आयतों को झुठलाया करते थे और उन से बे-परवाही किया करते थे ।१३७।

وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا ۖ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ بِمَا صَبَرُوا ۖ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ﴿١٣٨﴾

और हम ने उस जाति[2] को जिसे निर्बल समझा जाता था उस देश[3] के पूर्बी और पश्चिमी भू-भागों का उत्तराधिकारी बना दिया जिसे हम ने बरकत दी थी तथा तेरे रब्ब का बनी-इस्राईल से किया गया अच्छे से अच्छा कलाम (अर्थात् अच्छे से अच्छा वादा) पूरा हो गया इस कारण कि उन्हों ने (अत्याचार किए जाने पर) धैर्य से काम लिया तथा फ़िरऔन एवं उस की जाति के लोग जो कुछ बना रहे थे और जो वे ऊँचे-ऊँचे भवनों का निर्माण कर रहे थे उन सब को हम ने नष्ट कर दिया ।१३८।

1. अर्थात् जब वे हज़रत मूसा को पकड़ने के लिए समुद्र की ओर गए थे ।
2. अर्थात् हज़रत मूसा की जाति ।
3. अर्थात् फ़लस्तीन ।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ۗ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿١٣٩﴾

और हम ने बनी-इस्राईल को समुद्र के पार कर दिया यहाँ तक कि वह (चलते-चलते) एक ऐसी जाति[1] के लोगों के पास पहुँचे जो अपनी मूर्तियों की उपासना में मग्न थे तब वे बोले कि हे मूसा ! हमारे लिए भी कुछ ऐसे ही उपास्य बना दीजिए जैसा कि इन लोगों के उपास्य हैं। मूसा ने कहा कि तुम तो एक मूर्ख जाति हो।१३९।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٠﴾

जिस काम में वे लगे हुए हैं निस्सन्देह वह नष्ट होने वाला है और जो कुछ वे कर रहे हैं वह सब व्यर्थ चला जाएगा।१४०।

قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤١﴾

फिर कहा कि क्या मैं तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई दूसरा उपास्य ढूँढ़ूँ ! हालाँकि उस ने तुम्हें समस्त लोकों पर प्रधानता दी है।१४१।

وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۗ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿١٤٢﴾ ع

और (याद करो) जब कि हम ने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुटकारा दिलाया था जो तुम्हें अत्यन्त दुःखदायक अज़ाब देते थे। तुम्हारे पुत्रों की हत्या करते थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते थे तथा इस में तुम्हारे रब्ब की ओर से एक बहुत बड़ा पुरस्कार[2] था।१४२। (रुकू १६/६)

1. वे फ़लस्तीन के लोग थे जो उस समय मूर्ति-पूजक थे और सम्भवतः इस्राइलियों की शाखा में से आद जाति के लोग थे।

2. मूल शब्द 'बलाउन' का अर्थ परीक्षा और पुरस्कार व उपकार दोनों प्रकार से है। इस स्थान पर अभिप्राय यह है कि इस परीक्षा के बाद एक महान पुरस्कार उन्हें प्राप्त होने वाला था।

وَوٰعَدْنَا مُوسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤٣﴾

और हम[1] ने मूसा से तीस रातों की प्रतिज्ञा की, फिर उन तीस को दस और मिला कर पूरा चालीस कर दिया। इस प्रकार उस के रब्ब की निश्चित प्रतिज्ञा चालीस रातों के रूप में पूरी हुई और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि (मेरे बाद) मेरी जाति में मेरी प्रतिनिधित्व कर और उन के सुधार को सामने रख और फ़साद फैलाने वालों की राह पर न चल।१४३।

وَلَمَّا جَآءَ مُوسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ؕ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٤٤﴾

और जब मूसा हमारे नियमित समय के अनुसार निश्चित स्थान पर आ गया और उस के रब्ब ने उस से कलाम किया तो उस (मूसा) ने कहा कि हे मेरे रब्ब! (अपने-आप को) मुझे दिखा ताकि मैं तेरा दर्शन करूँ। उस ने उत्तर दिया तू कदापि मुझे नहीं देख सकेगा, परन्तु पर्वत की ओर देख। यदि वह अपने स्थान पर क़ायम रहा तब तू मेरा दर्शन कर लेगा। फिर जब उस (मूसा) के रब्ब ने पर्वत पर अपना जलवा दिखाया (अर्थात् दर्शन दिया) तो उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया तथा मूसा मूर्छित हो कर गिर पड़ा। तत्पश्चात् जब उसे होश आया तो उस ने कहा कि (हे रब्ब!) तू निष्कलंक है। मैं तेरी ओर ही झुकता हूँ और (मैं इस युग में) ईमान लाने वालों में से सब से पहला मोमिन हूँ।१४४।

1. इस स्थान पर जो घटनाएँ वर्णित हुई हैं वे भौगोलिक क्रम से नहीं हुईं अपितु शिक्षा और उपदेश के उपलक्ष्य से हुई हैं और यही पवित्र क़ुर्आन का वास्तविक उद्देश्य है यद्यपि वे समय तथा भौगोलिक क्रम की दृष्टि से आगे पीछे हो गई हैं।

قَالَ يٰمُوسٰىٓ اِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ وَبِكَلَامِيْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾

अल्लाह ने कहा कि हे मूसा ! मैं ने तुझे इस युग के मानव-समाज पर पैग़म्बरी और अपने कलाम के द्वारा प्रधानता दी है। अतएव जो कुछ मैं ने तुझे प्रदान किया है उसे ज़ोर से पकड़ ले और शुक्र करने वाले लोगों में शामिल हो जा।१४५।

وَكَتَبْنَا لَهٗ فِي الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۚ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٤٦﴾

और हम ने उस के लिए कुछ तख़्तियों में ऐसे आदेश लिखे जिन में प्रत्येक प्रकार के उपदेश थे तथा उन में (उस समय के लिए) हर ज़रूरी चीज़ का ब्योरा भी था (और फिर हम ने उसे कहा कि) इन आदेशों को मज़बूती से थाम लो तथा अपनी जाति से भी कह दो कि वह उस के उत्तम भागों को दृढ़ता से पकड़ लें। मैं शीघ्र ही तुम्हें दुराचारियों का घर दिखाऊँगा[1]।१४६।

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٤٧﴾

मैं शीघ्र ही ऐसे लोगों को अपने निशानों से वञ्चित कर के दूर कर दूँगा जिन्हों ने व्यर्थ इस संसार में घमंड किया है और यदि वे प्रत्येक (सम्भव) निशान भी देख लें तो भी वे उन आयतों पर ईमान नहीं लाएँगे और यदि वह सीधी राह देख भी लें तो भी उसे कदापि नहीं अपनाएँगे और यदि वह गुमराही की राह देखें तो उसे अपना लेंगे। इस का कारण यह है कि उन्हों ने हमारे आदेशों को झुठलाया है और उन से बे-परवाही कर रहे हैं।१४७।

1. अर्थात् दुराचारियों को दण्ड दे कर उन का परिणाम प्रकट कर दूँगा।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٨﴾

और वे लोग जिन्हों ने हमारी आयतों को तथा मरने के बाद मुलाक़ात को झुठलाया है उन के सारे कर्म व्यर्थ चले गए। वे केवल अपने कर्मों का प्रतिफल पाएँगे।१४८। (रुकू १७/७)

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٩﴾

और मूसा की जाति ने उस के (यात्रा[1] पर चले जाने के) बाद अपने आभूषणों से एक बछड़ा (का पुतला) बनाया। जिस में से एक निरर्थक[2] आवाज़ निकलती[3] थी। क्या उन्हों ने इतना भी विचार नहीं किया कि वह उन से न तो बुद्धि-संगत बात करता है और न ही उन्हें कोई हिदायत की राह दिखाता है। उन्हों ने उसे अकारण ही अपना उपास्य बना लिया है तथा वे अनेकेश्वरवादी बन गए।१४९।

وَلَمَّا سُقِطَ فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٥٠﴾

और जब वे लज्जित हो गए और उन्हों ने समझ लिया कि वे पथ-भ्रष्ट हो गए थे तो उन्हों ने कहा कि यदि हमारा रब्ब हम पर दया नहीं करेगा और हमें क्षमा नहीं करेगा तो हम घाटा पाने वालों में से हो जाएँगे।१५०।

1. इस यात्रा का वृत्तान्त इसी सूरः की आयत नं० 143 में हो चुका है अर्थात् जब हज़रत मूसा अल्लाह के निमन्त्रण पर चालीस रातों के लिए पर्वत पर गए थे।

2. मूल शब्द 'ख़ुवार' का अर्थ है गाय, बैल, भेड़, बकरी की आवाज़ जो निरर्थक होती है। (अक़्रब)।

3. अर्थात् वह बछड़ा ऐसा था कि उस में एक ओर से वायु जाती थी तो उस में से सीटी जैसी आवाज़ निकलती थी जिस प्रकार खिलौनों में होती है।

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي مِن بَعْدِي ۖ أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۖ وَأَلْقَى الْأَلْوَاحَ وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ ۚ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُونِي وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١٥١﴾

और जब मूसा क्रोध एवं दुःख से भरा हुआ अपनी जाति की ओर लौट कर आया तो उस ने कहा कि तुम ने मेरे बाद जो मेरी प्रतिनिधित्व की वह बहुत बुरी थी। क्या तुम ने अपने रब्ब के आदेश के बारे में जल्दी की ? (और घबरा गए कि मूसा अब तक क्यों नहीं आए) उस समय मूसा ने वह्य वाली तख़्तियाँ धरती पर रख दीं तथा अपने भाई के सिर के बाल पकड़ कर उसे अपनी ओर घसीटने लगे तो उस ने कहा कि हे मेरी माँ के बेटे ! जाति के लोगों ने मुझे निर्बल समझा और सम्भव था कि वह मुझे मार डालते। अत: तू शत्रुओं को मेरे ख़िलाफ़ हँसी[1] का अवसर न दे तथा मुझे अत्याचारी लोगों में शामिल न कर ।१५१।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي وَأَدْخِلْنَا فِي رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٥٢﴾ ع ١٨ ٨

(यह सुन कर मूसा ने) कहा कि हे मेरे रब्ब ! मुझे और मेरे भाई को क्षमा कर और हम दोनों को अपनी रहमत (दयालुता) में दाख़िल कर तथा तू दया करने वालों में से सब से बढ़ कर दया करने वाला है ।१५२। (रुकू १८/८)

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٣﴾

(इस पर अल्लाह ने कहा) वे लोग जिन्हों ने बछड़े को (पूज्य) बना लिया है उन पर उन के रब्ब की ओर से प्रकोप भड़केगा और साथ ही सांसारिक अपमान भी और हम झूठ गढ़ने वालों को इसी प्रकार का दण्ड दिया करते हैं ।१५३।

1. हज़रत मूसा अपनी जाति के शिर्क में फँस जाने के कारण क्रोध में भरे हुए थे और उन का क्रोध अपने भाई पर अधिक था कि जब उन्हों ने जाति में शिर्क के लक्षण भाँप लिए थे तो उन से क्यों नहीं लड़े-भिड़े थे ? अत: उन्हीं पर अधिक क्रोध प्रकट किया ताकि जाति के शेष सभी लोग भयभीत हो कर अपना सुधार कर लें ।

وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٥٤﴾

और वे लोग जिन्हों ने कुकर्म किए फिर (उन कुकर्मों को छोड़ कर) अल्लाह की ओर झुक गए और उस पर ईमान ले आए, निस्सन्देह तेरा रब्ब इस तौबः के बाद बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१५४।

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۖ وَ فِيْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿١٥٥﴾

और जब मूसा का क्रोध कुछ शान्त हुआ तो उस ने वे तख़्तियाँ उठा लीं (जिन पर अल्लाह के आदेश लिखे हुए थे) और उन के लेखों में उन लोगों के लिए रहमत एवं हिदायत थी, जो अपने रब्ब से डरते हैं ।१५५।

وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّاۤ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ؕ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاۤءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَاۤءُ وَتَهْدِيْ مَنْ تَشَاۤءُ ؕ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿١٥٦﴾

और मूसा ने अपनी जाति के लोगों में से सत्तर व्यक्तियों को हमारे निश्चित किए हुए स्थान पर लाने के लिए चुन लिया, फिर जब उन पर भूकंप[1] आया तो उस (मूसा) ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! यदि तू चाहता तो तू उन्हें भी और मुझे भी पहले ही नष्ट कर देता । क्या तू हमें मूर्खों की मूर्खता के दण्ड में नष्ट करना चाहता है ? यह (जो कुछ हुआ) केवल तेरी ओर से एक परीक्षा थी । तू इन परीक्षाओं के द्वारा जिन लोगों को चाहता है पथभ्रष्ट ठहराता है तथा जिन लोगों को चाहता है हिदायत देता है । तू हमारा कफ़ील (काम बनाने वाला) और मित्र है । अतः तू हमें क्षमा कर एवं हम पर दया कर और तू क्षमा करने वालों में से सब से अच्छा है ।१५६।

---

1. भूकम्प तो प्राकृतिक नियमों के अनुसार आया था, किन्तु जाति के शिर्क के कारण हज़रत मूसा ने यह समझा कि कदाचित हमें दण्ड देने के लिए ऐसा हुआ है ।

وَاكْتُبْ لَنَا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُدْنَا إِلَيْكَ ۚ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۖ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٧﴾

और तू हमारे लिए इस संसार में भी भलाई लिख तथा अंतिम जीवन में भी भलाई लिख, हम तो तेरी ओर आ गए हैं। (तो अल्लाह ने) कहा कि मैं अपना अज़ाब जिसे चाहता हूँ उसे पहुँचाता हूँ (जो अज़ाब का पात्र होता है) और मेरी दयालुता प्रत्येक वस्तु पर छाई हुई है। अतएव मैं अवश्य उसे उन लोगों के लिए लिखूंगा[1] जो संयम धारण करते हैं और ज़कात देते हैं तथा ऐसे लोग जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं।१५७।

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِندَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنزِلَ مَعَهُ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٥٨﴾ ع ١٩ ٩

वे लोग जो हमारे इस रसूल (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम) का अनुसरण करते हैं जो नबी है और उम्मी (अनपढ़) है। जिस का समाचार तौरात एवं इन्जील में उन (यहूदियों और ईसाइयों) के पास लिखा हुआ मौजूद है। वह उन्हें नेक बातों का आदेश देता है तथा बुरी बातों से रोकता है और सब पवित्र चीज़ें उन के लिए हलाल (वैध) ठहराता है तथा सारी बुरी चीज़ें उन के लिए हराम (अवैध) ठहराता है और उन की (रीति-रिवाज के) बोझ तथा उन के गले में डाले हुए तौक़ उन से दूर करता है। अतः जो लोग उस पर ईमान लाए एवं उसे सहयोग-दान से शक्ति पहुँचाई, फिर उसे सहायता दी तथा वह उस नूर के पीछे चल पड़े, जो उस पर उतारा गया था तो ऐसे लोग ही सफल होंगे।१५८। (रुकू १९/९)

1. अर्थात् दया से इन्कार करने वाले लोग भी लाभ प्राप्त करेंगे, परन्तु मोमिनों के लिए तो उसे ज़रूरी कर दिया गया है।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا ِۨالَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۖ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٨﴾

तू कह दे कि हे लोगो ! मैं तुम सब की ओर अल्लाह् का रसूल (बन कर आया हूँ)। आसमानों तथा ज़मीन पर उसी को बादशाहत हासिल है। उस के सिवा कोई उपास्य नहीं। वह जीवित भी करता है तथा मारता भी है। अत: अल्लाह् और उस के रसूल पर ईमान लाओ जो नबी भी है और उम्मी भी। जो अल्लाह् और उस की बातों पर ईमान रखता है। उस का अनुसरण करो ताकि तुम हिदायत पा सको।१५९।

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥٩﴾

और मूसा की जाति के लोगों में से एक गिरोह ऐसा भी है जो सच्चाई द्वारा हिदायत पा रहा है और वे इसी के आधार पर (संसार में) न्याय कर रहे हैं।१६०।

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ۗ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۗ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۗ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۗ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ۗ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٠﴾

और हम ने उन्हें बारह घरानों में बाँट दिया (जो अब उन्नति कर के जातियाँ बन गए हैं) और उस (मूसा) की जाति के लोगों ने जब उस से पानी माँगा तो हम ने मूसा की ओर वह्य की कि जा और अपनी लाठी (अमुक) पत्थर पर मार (जब उस ने ऐसा किया) तो उस में से बारह स्रोत फूट पड़े और हर घराने ने अपना-अपना घाट जान लिया और हम ने उन पर बादलों की छाया की तथा हम ने उन के लिए खुम्ब[1] एवं बटेर पैदा किए और कहा कि जो कुछ हम ने तुम को दिया है उस में से पवित्र चीज़ें खाओ और उन्हों ने हम पर अत्याचार नहीं किया, अपितु वे अपने-आप पर ही अत्याचार कर रहे थे।१६१।

1. मूल शब्द 'मन्न-व-सल्वा' के लिए देखिए सूर: बक़र: टिप्पणी आयत नं० 58।

وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰتِكُمْ ۚ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٦٢﴾

और याद करो जब उन से कहा गया कि इस क्षेत्र में रहो तथा इस में से जहाँ से चाहो खाओ और कहते जाओ हम बोझ[1] हल्का किए जाने के लिए निवेदन करते हैं तथा (इस सामने वाले नगर के) द्वार में आज्ञा पालन करते हुए प्रवेश कर जाओ। तब हम तुम्हारी भूलें क्षमा कर देंगे और पूर्ण रूप से आज्ञा पालन करने वालों को और भी अधिक पुरस्कार प्रदान करेंगे।१६२।

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٦٣﴾ ع ٢٠/١٠

इस पर बनी-इस्राईल में से अत्याचारियों ने उस बात को बदल कर जो उन से कही गई थी एक दूसरी[2] बात कहनी प्रारम्भ कर दी। तब हम ने उन पर उन के अत्याचारों के कारण आकाश से अज़ाब उतारा।१६३। (रुकू २०/१०)

وَسْئَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ يَوْمَ

और (हे रसूल !) इन (बनी-इस्राईल) से उस बस्ती के बारे में पूछ जो समुद्र के किनारे पर थी जब कि वे सब्त[3] (शनिवार के दिन) के आदेश का उल्लंघन करते थे। जब उन की

---

1. देखिए सूर: बक़र: टिप्पणी आयत नं० 59।

2. बनी इस्राईल को नगर में विनम्रता पूर्वक प्रविष्ट होने और प्रार्थना करने का आदेश था, परन्तु उन्हों ने हँसी-ठट्ठा से काम लिया तथा निरर्थक वाक्य मुँह से निकालने लग गए जिस के कारण अज़ाब आ गया।

3. 'सब्त'—शनिवार के दिन यहूदियों को आदेश था कि उस दिन किसी प्रकार का सांसारिक काम न करें अपितु अल्लाह को याद करें।

سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَأْتِيْهِمْ ۚ كَذٰلِكَ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝

मछलियाँ सब्त के दिन उन के पास झुंड[1] बना-बना कर आती थीं और जिस दिन वह सब्त नहीं मनाते थे तो वे नहीं आती थीं। इस प्रकार हम उन की नाफ़रमानी (अवज्ञा) के कारण उन की परीक्षा करते थे।१६४।

وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۗ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝

और जब उन (बनी-इस्राईल) में से एक गिरोह ने (दूसरे गिरोह से) कहा कि तुम इस जाति के लोगों को क्यों उपदेश देते हो जिन्हें अल्लाह नष्ट करने वाला है अथवा बड़ा अज़ाब देने वाला है? तो उन्हों ने उत्तर दिया कि तुम्हारे रब्ब के सामने बरी (मुक्त) होने के लिए (कि हम ने उन लोगों को उपदेश दे दिया था) और ताकि वे संयम धारण करें।१६५।

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَئِيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝

अत: जब उन लोगों ने उस सदुपदेश को भुला दिया जो उन्हें दिया गया था तो हम ने उन लोगों को जो बुरी बातों से रोकते थे मुक्ति प्रदान कर दी, परन्तु जो लोग अत्याचारी थे उन्हें एक पीड़ा-दायक अज़ाब में डाल दिया, क्योंकि वे आज्ञा पालन करने से बाहर निकल रहे थे।१६६।

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِئِيْنَ ۝

फिर जब उन्हों ने उन बातों से रुकने की अपेक्षा जिन से उन्हें रोका गया था और भी आगे बढ़ना शुरू किया तो हम ने उन्हें कहा कि तुच्छ (ज़लील) बन्दर[2] बन जाओ।१६७।

1. जानवर भी दिनों को पहचान जाते हैं। हिन्दुओं के यहाँ जिन घाटों और स्रोतों पर लोग आटा आदि सामग्री डालते हैं उस दिन वहाँ बड़ी संख्या में मछलियाँ आ जाती हैं।

2. देखिए सूर: बकर: टिप्पणी आयत नं० 77।

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٨﴾

और याद कर जब तेरे रब्ब ने घोषित किया कि वह उन (यहूदियों) पर क़ियामत तक ऐसे लोग नियुक्त करता रहेगा जो उन्हें दुःख-दायक अज़ाब देते चले जाएँगे (फिर क्या ऐसा ही हुआ या नहीं ?) निस्सन्देह तेरा रब्ब दण्ड देने में शीघ्रता[1] से काम लेता है और निश्चय ही वह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है ।१६८।

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٦٩﴾

और हम ने उन्हें धरती में अनेक गिरोहों में फैला दिया है (किन्तु अब भी) उन में कुछ लोग सदाचारी हैं तथा कुछ दुराचारी[2] और हम अच्छी और बुरी परिस्थितियों के द्वारा उन की परीक्षा करते रहते हैं ताकि वे (अपने भूलों से) रुक जाएँ ।१६९।

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا

परन्तु पहले बनी-इस्राईल के बाद कुछ और (बनी-इस्राईल) खड़े हो गए हैं जो देखने में तो मूसा की किताब के वारिस हैं, किन्तु वे वास्तव में इस संसार की माया समेटते रहते हैं और लोगों से कहते हैं कि अल्लाह हमें अवश्य क्षमा कर देगा और यदि उन के पास उसी प्रकार का कुछ और धन आ जाए तो वे उसे भी लेने का प्रयत्न करते हैं । क्या उन से मूसा की किताब में यह बचन नहीं लिया गया था कि अल्लाह के सम्बन्ध में केवल

1. पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध होता है कि अल्लाह दण्ड देने में ढील से काम लेता है । अतः इस आयत से केवल यह अभिप्राय है कि जब अल्लाह किसी व्यक्ति को दण्ड देता है तो वह उसे शीघ्रता से पकड़ लेता है और कोई रोक उस के मार्ग में बाधा नहीं डाल सकती । इस आयत का यह अभिप्राय नहीं कि इधर किसी ने पाप किया और उधर तुरन्त ही अज़ाब में फँस गया ।

2. इस से सिद्ध हुआ कि यह बन्दर मनुष्य ही थे केवल उन के गुण बन्दरों जैसे हो गए थे । अन्यथा बन्दरों के सदाचारी होने का क्या अर्थ ? क्या बन्दर भी विधिवत नमाज़ पढ़ा करते थे या सजदः किया करते थे अथवा दान दिया करते थे ?

فِيْهِ ۗ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝

सत्य बोला करें ? और जो कुछ उस किताब में है वह उन्हों ने पढ़ लिया है तथा (यह जानते हैं) कि आख़िरत का घर संयमियों के लिए अच्छा है। क्या वे (इतनी बात भी) नहीं समझते ?।१७०।

وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۗ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ۝

और जिन लोगों ने मूसा की किताब को मज़बूती से पकड़ा हुआ है और उन्हों ने नमाज़ को क़ायम रखा है हम ऐसे नेक लोगों के प्रतिफल को नष्ट नहीं करेंगे।१७१।

وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝

और जब हम ने पर्वत को उन के ऊपर[1] उठाया, मानो वह एक मंडप था और उन्हों ने समझा कि वह उन के ऊपर गिरने ही वाला है और हम ने कहा कि जो कुछ हम ने तुम्हें दिया है उसे दृढ़ता से पकड़ लो और जो कुछ उस में है उसे याद रखो ताकि तुम संयमी बन जाओ।१७२। (रुकू २१/११)

وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۗ قَالُوْا بَلٰى ۛ شَهِدْنَا ۛ اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ۝

और जब तेरे रब्ब ने बनी-आदम की पीठों में से उन की सन्तान को निकाला तथा उन्हें उन की जानों पर गवाह ठहराया (एवं पूछा) क्या मैं तुम्हारा रब्ब नहीं ? उन्हों ने कहा कि हाँ हाँ ! हम (इस बात की) गवाही देते हैं (हम ने यह इस लिए किया) ताकि तुम क़ियामत के दिन कहीं यह न कहने लगो कि हम तो इस शिक्षा से बिल्कुल अनजान थे।१७३।

1. अर्थात् उन के प्रमुख व्यक्तियों को तूर पर्वत की तलहटी में खड़ा कर दिया था ताकि वे भी उस का दृश्य देख लें। (ख़रुज 19:17) जब पर्वत के नीचे मनुष्य खड़ा होता है तो ऐसा प्रतीत होता है मानो पर्वत मंडप के समान उस के ऊपर है।

اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝

या यह कह दो कि हम से पहले केवल हमारे पूर्वजों ने शिर्क किया था और हम तो उन के बाद एक कमज़ोर सन्तान थे। क्या तू हमें उन लोगों के कर्मों के बदल में नष्ट करेगा जो झूठे थे ?।१७४।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝

और इसी प्रकार हम आयतों को खोल-खोल कर वर्णन करते हैं और आशा रखते हैं कि वह (इन्कार करने वाले) अपनी भूलों से रुक जाएँगे।१७५।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ۝

और तू उन्हें उस व्यक्ति का हाल पढ़ कर सुना जिसे हम ने अपने निशान दिये थे फिर वह उन से फिसल कर अलग[1] हो गया था। सो शैतान उस के पीछे पड़ गया था और वह पथ-भ्रष्ट लोगों में शामिल हो गया।१७६।

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۭ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝

और यदि हम चाहते तो उन निशानों के द्वारा उसे श्रेष्ठता प्रदान कर देते, परन्तु वह स्वयं धरती की ओर झुक गया एवं अपनी कामनाओं के पीछे चल पड़ा। सो उस की हालत उस कुत्ते की सी है जिसे मारने के लिए तू कोई वस्तु उठाए तो भी हाँफता है और यदि तू उसे छोड़ दे तो भी हाँफता रहता है। यही हालत उस जाति के लोगों की है जो हमारे निशानों को झुठलाते हैं। अतएव तू यह हालत उन्हें सुना ताकि वे कुछ सोचे-समझें।१७७।

1. तौरात और भाष्यकार 'बलअम् बाऊर' नामक एक व्यक्ति का वृत्तान्त करते हैं जिस की घटनाएँ इस परिस्थिति से मिलती-जुलती हैं, किन्तु वास्तव में यह एक दृष्टांत है। जो व्यक्ति भी अपने-आप को ऐसा बना ले यह उपमा उसी पर चरितार्थ हो जाएगी और वही 'बल्अम् बाऊर' बन जाएगा।

سَآءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٧٧﴾

उस जाति के लोगों की हालत बहुत बुरी है जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया है और वे इस काम से केवल अपनी ही जानों पर अत्याचार करते थे।१७८।

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٧٨﴾

जिन को अल्लाह हिदायत दे वे ही हिदायत पाने वाले होते हैं और जिन्हें पथभ्रष्ट कर दे वही लोग घाटा पाने वाले होते हैं।१७९।

وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۖ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۖ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ۚ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٧٩﴾

और हम ने जिन्नों तथा इन्सानों को रहमत के लिए पैदा किया है, परन्तु परिणाम यह निकलता है कि उन में से अधिकतर लोग जहन्नम (नरक) के पात्र बन जाते हैं, क्योंकि उन के दिल तो हैं, परन्तु वे उन से समझते नहीं, उन की आँखें तो हैं परन्तु वे उन से देखते नहीं, उन के कान तो हैं परन्तु वे उन से सुनते नहीं। वे लोग चौपायों के समान हैं अपितु उन से भी बुरे हैं। (वास्तव में) वे बिल्कुल मूर्ख हैं।१८०।

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۖ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ۚ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٠﴾

और अल्लाह के अनेक अच्छे गुण हैं। अतः तुम उन गुणों के द्वारा उस से प्रार्थना किया करो तथा उन लोगों को छोड़ दो जो उस के गुणों के सम्बन्ध में असत्य (एवं भ्रम पूर्ण) बातें करते हैं। उन्हें उन के कर्मों का प्रतिफल दिया जाएगा।१८१।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٨١﴾

और जो मख़लूक़ हम ने पैदा की है उस में से एक गिरोह ऐसा है जो सत्य द्वारा लोगों को हिदायत देता है एवं सत्य के आधार पर ही न्याय करता है।१८२। (रुकू २२/१२)

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٣﴾

और वे लोग जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं हम उन्हें धीरे-धीरे ऐसे रास्तों से विनाश की ओर खींचते हुए लाएँगे, जिन्हें वे नहीं जानते ।१८३।

وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿١٨٤﴾

और मैं (कुछ समय) उन्हें ढील दे रहा हूँ। मेरा उपाय सुदृढ़ है ।१८४।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا ۗ مَا بِصَاحِبِهِم مِّن جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١٨٥﴾

क्या वे यह नहीं सोचते कि उन के साथी (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम) को किसी प्रकार का जनून नहीं है । वह तो केवल एक खुला-खुला सावधान करने वाला है ।१८५।

أَوَلَمْ يَنظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ وَأَنْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۖ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٦﴾

क्या वे आसमानों और ज़मीन के अनुशासन पर तथा हर उस वस्तु पर जिसे अल्लाह ने पैदा किया है विचार नहीं करते (और इस बात पर भी कि) कदाचित् उन के विनाश का समय निकट आ चुका है। फिर वे इस खुली बात के बाद किस बात के आधार पर ईमान लाएँगे ? ।१८६।

مَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٨٧﴾

जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट (गुमराह) ठहराए उसे कोई भी हिदायत देने वाला नहीं और वह उन को अपनी उद्दण्डता[1] में भटकते हुए छोड़ देता है । १८७।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي ۖ لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ ۚ ثَقُلَتْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً ۗ يَسْأَلُونَكَ

(हे रसूल !) तेरे विरोधी तुझ से क़ियामत के बारे में प्रश्न करते हैं कि वह कब आएगी ? तू कह दे कि उस का ज्ञान केवल मेरे रब्ब को ही है। उसे उस के (नियमित) समय पर वही प्रकट करेगा । हाँ ! वह आसमानों में भी

1. अर्थात् जो सरकशी करता है उसे हिदायत नहीं देता, परन्तु जो तौबः करता है उसे हिदायत देता है ।

كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ اللَّهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾

और ज़मीन में भी भारी होगी और तुम्हारे पास अचानक ही आ जाएगी। वे तुझ से क़ियामत के बारे में भी इस तरह सवाल करते हैं कि मानो तुझ पर भी उस का समय जानने की धुन सवार है। तू कह दे (मेरे लिए तो इतना काफ़ी है) कि उस का ज्ञान केवल अल्लाह को है, किन्तु बहुत से लोग इसे नहीं जानते।१८८।

قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ وَلَوْ كُنتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ ۚ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٩﴾ ع ٢٣/١٣

फिर तू कह दे कि मैं अपनी जान के लिए न किसी लाभ का मालिक हूँ और न किसी हानि का। हाँ! मुझे वही मिलेगा जो अल्लाह को पसन्द होगा और यदि मैं ग़ैब (परोक्ष) का जानकार होता तो अपने लिए भलाइयों में से बहुत सी समेट लेता तथा मुझे कभी कोई कष्ट न पहुँचता, परन्तु मैं तो केवल मोमिनों को सावधान करने वाला और शुभ-समाचार देने वाला हूँ।१८९। (रुकू २३/१३)

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ۖ فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِ ۖ فَلَمَّا أَثْقَلَت دَّعَوَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٩٠﴾

वही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया है और उसी की जाति से उस का जोड़ा बनाया है ताकि वह उस से लगाव रख कर शान्ति प्राप्त करे। अतएव जब वह उसे ढाँप लेता है तो वह हल्का सा बोझ उठा लेती है और उसे लिए फिरती है। फिर जब वह कुछ बोझल हो जाती है तो दोनों (दम्पति) अपने अल्लाह से जो उन का रब्ब है प्रार्थना करते हैं कि यदि तू हमें एक स्वस्थ बालक देगा तो हम तेरे कृतज्ञ बन्दे बन जाएँगे।१९०।

فَلَمَّآ اٰتٰهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩١﴾

किन्तु जब वह उन्हें स्वस्थ बालक प्रदान करता है तो वे दोनों उस सन्तान में जो उन्हें अल्लाह ने प्रदान की होती है उस के साझी बनाने लग जाते हैं, परन्तु अल्लाह उन के शिर्क से बहुत ऊँचा है।१९१।

اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩٢﴾

क्या वे उन्हें अल्लाह का साझी बनाते हैं जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते, अपितु वे स्वयं ही पैदा किए जाते हैं।१९२।

وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٣﴾

और वे उन (मुश्रिकों) की कुछ सहायता करने की थोड़ी सी शक्ति भी नहीं रखते और न ही वे अपनी ही सहायता कर सकते हैं।१९३।

وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿١٩٤﴾

और यदि तू उन झूठे उपास्यों को हिदायत की ओर बुलाए तो वे तुम्हारा अनुसरण नहीं कर सकेंगे। तुम्हारा उन्हें बुलाना या चुप रहना उन के लिए एक समान है।१९४।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٥﴾

जिन लोगों को तुम अल्लाह के सिवा बुलाते हो वे तुम्हारे ही जैसे बन्दे हैं। सो तुम उन्हें पुकारते जाओ और यदि तुम सच्चे हो तो वे तुम्हारी पुकार का उत्तर तो दे कर दिखलाएँ ? ।१९५।

اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ ۚ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ۚ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ۚ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۗ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿١٩٦﴾

क्या उन के पाँव हैं जिन से वे चलते हैं या उन के हाथ हैं जिन से वे पकड़ते हैं अथवा उन की आँखें हैं जिन से वे देखते हैं या उन के कान हैं जिन से वे सुनते हैं ? तू उन से कह दे कि अपने सारे साझियों को बुला लो और फिर सब मिल कर मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र रचो और मुझे कोई ढील भी न दो।१९६।

إِنَّ وَلِـِّۧيَ ٱللَّهُ ٱلَّذِي نَزَّلَ ٱلْكِتَٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿١٩٧﴾

निस्सन्देह मेरा मित्र वह अल्लाह है जिस ने यह कामिल किताब उतारी है और वह सदाचारी लोगों का साथ देता है।१९७।

وَٱلَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَآ أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ ﴿١٩٨﴾

और वे लोग जिन्हें तुम उस को छोड़ कर पुकारते हो वे न तो तुम्हारी सहायता करने का सामर्थ्य रखते हैं और न अपनी ही सहायता कर सकते हैं।१९८।

وَإِن تَدْعُوهُمْ إِلَى ٱلْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا۟ ۖ وَتَرَىٰهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٩٩﴾

और यदि तुम उन्हें हिदायत की ओर बुलाओ तो वे सुन नहीं सकते तथा तू उन्हें यों देखता है कि मानो वे तुझे देख रहे हैं। वास्तव में वे तुझे नहीं देख रहे।१९९।

خُذِ ٱلْعَفْوَ وَأْمُرْ بِٱلْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ ٱلْجَٰهِلِينَ ﴿٢٠٠﴾

(हे नबी ! सदैव) सहनशीलता से काम ले। मानव प्रकृति के अनुसार (बातों की) आज्ञा देता रह तथा मूर्ख लोगों से मुँह फेर ले।२००।

وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ نَزْغٌ فَٱسْتَعِذْ بِٱللَّهِ ۚ إِنَّهُۥ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٠١﴾

और यदि शैतान की ओर से तुझे कोई दुःख पहुँचे तो तू अल्लाह से शरण माँग, जो बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है।२०१।

إِنَّ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَوْا۟ إِذَا مَسَّهُمْ طَٰٓئِفٌ مِّنَ ٱلشَّيْطَٰنِ تَذَكَّرُوا۟ فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ ﴿٢٠٢﴾

निस्सन्देह वे लोग जिन्हों ने उस समय संयम धारण किया जब उन्हें शैतान की ओर से आने वाले किसी विचार का आभास हुआ और वे सावधान हो गए और उन की आँखें खुल गईं। (वे हिदायत पा जाते हैं)।२०२।

وَإِخْوَٰنُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِى ٱلْغَىِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ﴿٢٠٣﴾

और इन इन्कार करने वालों के भाई-बन्धु तो उन्हें बुरे मार्ग की ओर खींचते हैं और फिर किसी प्रकार की कोई कमी नहीं करते।२०३।

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ مِنْ رَبِّي هَٰذَا بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝٢٠٤

और जब तू उन के पास कोई खुला-खुला चमत्कार न लाए तो कहते हैं कि तू उस चमत्कार को क्यों न खींच कर ले आया ? तू कह दे कि मैं तो केवल अपने रब्ब की ओर से अपने ऊपर उतरने वाली वह्य का अनुसरण करता हूँ। यह वह्य तुम्हारे रब्ब की ओर से युक्तियों से पूर्ण है और मोमिनों के लिए हिदायत एवं रहमत भी है।२०४।

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝٢٠٥

और (हे लोगो !) जब क़ुर्आन पढ़ा जाए तो उसे सुना करो और मौन रहा करो ताकि तुम पर दया की जाए।२०५।

وَاذْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِينَ ۝٢٠٦

और (हे रसूल !) तू अपने मन में अपने रब्ब को विनम्रता से तथा भय से याद करते रहा कर और धीमी आवाज़ से भी, प्रातःकाल और सायंकाल (ऐसा ही किया कर) तथा असावधान लोगों में कभी शामिल न हो।२०६।

إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ۝٢٠٧

जो लोग तेरे रब्ब के निकट[1] हैं, निस्सन्देह वे अपने रब्ब की उपासना करने से अपने-आप को बड़ा नहीं समझते और उस की स्तुति करते हैं एवं उसी को सजदः करते हैं।२०७। (रुकू २४/१४)

1. अर्थात् जिन्हें सम्मान मिला हुआ है।
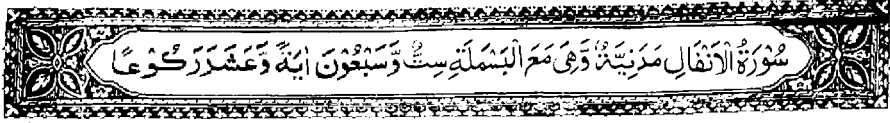
सूरः अल्-अन्फ़ाल

[यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की छिहत्तर आयतें एवं दस रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ۗ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۖ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ②

(हे रसूल !) लोग तुझ से ग़नीमत के धन के बारे में पूछते हैं तू (उन से) कह दे कि ग़नीमत का धन अल्लाह तथा उस के रसूल के लिए है। अतएव अल्लाह के लिए संयम धारण करो तथा आपस में सुधार का प्रयत्न करो यदि तुम मोमिन हो तो अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो।२।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ③

मोमिन तो केवल वही हैं कि जब (उन के सामने) अल्लाह का वर्णन किया जाए तो उन के दिल डर जाएँ और जब उन के सामने उस की आयतें पढ़ी जाएँ तो वे उन के ईमान को और बढ़ा दें एवं वे अपने रब्ब पर भरोसा रखते हैं।३।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ④

(वास्तविक मोमिन वे हैं) जो नमाज़ों को विधिवत् पूरा करते हैं एवं जो कुछ हम ने उन्हें प्रदान किया है उस में से ख़र्च करते हैं।४।

أُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَّهُمْ دَرَجَٰتٌ عِندَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ⑤

ये लोग ही सच्चे मोमिन हैं। उन के लिए उन के रब्ब के पास बड़े ऊँचे दर्जे और मोक्ष का सामान और इज़्ज़त वाली रोज़ी है।५।

كَمَآ أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَٰرِهُونَ ⑥

ये (पुरस्कार उन्हें) इस कारण (मिलेगा) कि तेरे रब्ब ने तुझे एक विशेष उद्देश्य से तेरे घर से निकाला है और मोमिनों में से एक गिरोह को यह बहुत बुरा[1] लग रहा था।६।

يُجَٰدِلُونَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنظُرُونَ ⑦

वे[2] तुझ से सत्य के खुल जाने के बाद इस प्रकार वाद-विवाद करते हैं मानों (इस्लाम का निमन्त्रण देने से) उन्हें मौत की ओर ढकेला जा रहा है और (यूँ लगता है कि) वे मौत को आँखों से देख रहे हैं।७।

وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَن يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمَٰتِهِۦ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَٰفِرِينَ ⑧

और (उस समय को याद करो) जब अल्लाह दो दलों में से एक की तुम से प्रतिज्ञा करता था कि वह तुम्हें मिलेगा (अर्थात् उस से मुठ-भेड़ होगी) तथा तुम्हारी इच्छा यह थी कि जिस दल के पास अस्त्र-शस्त्र नहीं हैं वह तुम से मिले और अल्लाह यह चाहता था कि वह अपने आदेशों द्वारा हक़ को हक़ सिद्ध कर दे तथा इन्कार करने वाले लोगों की जड़ काट दे।८।

---

1. इस आयत से ईसाइयों के वे सारे आरोप निराधार सिद्ध हो जाते हैं कि मुसलमान ग़नीमत के लोभ वश आक्रमण करते थे, क्योंकि पवित्र क़ुर्आन का कथन है कि मोमिन जिहाद करने से नहीं डरते, परन्तु उन्हें रक्त-पात के कारण इस से घृणा अवश्य थी।

2. अर्थात् इन्कार करने वाले लोग। मोमिन लोग तो युद्ध को पसन्द नहीं करते, परन्तु वे अल्लाह के आदेश को स्वीकार करने के लिए तय्यार थे जैसा कि पहले वाली और दूसरी कई आयतों से सिद्ध है। कुछ भाष्यकारों ने इस का यह अर्थ किया है कि सहाबा जिहाद के आदेश पर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से वाद-विवाद करते थे कि यह आदेश क्यों मिला है, किन्तु यह बात पवित्र क़ुर्आन तथा इतिहास से निराधार सिद्ध होती है।

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۝٩

ताकि वह इस प्रकार हक़ को क़ायम कर दे और झूठ का सर्वनाश कर दे। चाहे अपराधी लोग उसे पसन्द न भी करते हों।९।

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِأَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ۝١٠

और (उस समय को भी याद करो) जब कि तुम अपने रब्ब से सविनय प्रार्थना करते थे। इस पर तुम्हारे रब्ब ने तुम्हारी प्रार्थनाओं को स्वीकार किया (और कहा कि) मैं हज़ारों फ़रिश्तों द्वारा तुम्हारी सहायता करूँगा जिन की सेना उत्तरोत्तर बढ़ रही होगी।१०।

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝١١ ع

और अल्लाह ने इसे केवल शुभ-समाचार[1] के रूप में उतारा था ताकि इस के द्वारा तुम्हारे दिल सन्तुष्ट हो जाएँ और सहायता तो केवल अल्लाह के पास से ही आती है (फ़रिश्ते तो केवल एक लक्षण-मात्र हैं)। निस्सन्देह अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है।११। (रुकू १/१५)

إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِيُطَهِّرَكُمْ بِهِ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ۝١٢

(यह निशान उस समय प्रकट हुआ) जब कि अल्लाह (अपनी ओर से) शान्ति एवं संतुष्टि का शुभ-समाचार देने के लिए तुम पर ऊँघ उतार रहा था और तुम पर बादलों से पानी बरसा रहा था ताकि उस के द्वारा[2] तुम्हें पवित्र कर दे और शैतान की गंदगी (अर्थात् उस के भय) को तुम से दूर कर दे और ताकि तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और इस (वर्षा) के द्वारा तुम्हारे पैरों को मज़बूत कर दे।१२।

---

1. यह तात्पर्य नहीं कि सचमुच फ़रिश्ते ही इन्कार करने वाले लोगों से युद्ध करेंगे, अपितु यदि फ़रिश्तों की सहायता कश्फ़ में दिखाई जाए तो उस से यह अभिप्राय होता है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह अवश्य सहायता करेगा और इस प्रकार मोमिन को शुभ-समाचार मिल जाता है।

2. यह 'बद्र' नामक युद्ध की घटना है और बद्र के स्थान पर मोमिनों तथा इन्कार करने वाले

(शेष पृष्ठ ३६७ पर)

اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ؕ﴿۱۳﴾

(यह वह समय था) जब तेरा रब्ब फ़रिश्तों को भी वह्य कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। अतएव तुम मोमिनों के पैरों को जमाए रखो। मैं इन्कार करने वाले लोगों के दिलों में धाक बिठा दूँगा। सो (हे मोमिनो !) तुम उन की गर्दनों पर हमले करते जाओ और उन के पोर-पोर पर चोटें लगाते जाओ।१३।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۴﴾

यह इस कारण होगा कि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल का विरोध किया तथा जो कोई अल्लाह एवं उस के रसूल का विरोध करता है (उसे समझ लेना चाहिए कि) अल्लाह कड़ा अज़ाब[1] देने वाला है।१४।

ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۵﴾

(हे लोगो सुनो ! अल्लाह का दण्ड) ऐसा ही होता है। अतः उसे चखो और (याद रखो कि) इन्कार करने वाले लोगों को निश्चय ही आग का अज़ाब मिलने वाला है।१५।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿۱۶﴾

हे मोमिनो ! जब तुम्हारी सेना के रूप में इन्कार करने वाले लोगों के साथ मुठ-भेड़ हो तो उन्हें कभी पीठ न दिखाया करो।१६।

(पृष्ठ ३६६ का शेष)

लोगों के बीच रेत का एक मैदान था जिस के उस पार चिकनी मिट्टी थी। वर्षा होने से रेत जम गई और चिकनी मिट्टी में फिसलन हो गई। युद्ध प्रारम्भ होने के बाद मुसलमानों के पाँव तो भली-भाँति जमे रहे, परन्तु शत्रुओं की सैन्य सहायता जब पीछे से आई तो फिसलन के कारण उन के पाँव फिसलते थे। अतः सहायता पहुँच नहीं सकती थी। दूसरी ओर जब मुसलमान आक्रमण करते तो इन्कार करने वाले लोग भागते समय चिकनी मिट्टी की फिसलन में फँस जाते थे।

1. इस से यह अभिप्राय नहीं कि अल्लाह के जो दण्ड हैं उन में से कठोर से कठोर दण्ड देता है, अपितु तात्पर्य यह है कि अल्लाह के सभी दण्ड कड़े और असह्य प्रतीत होते हैं।

وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَىِٕذٍ دُبُرَهٗٓ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۶﴾

और जो कोई ऐसे अवसर पर पीठ दिखाएगा, सिवाय इस के कि वह युद्ध के लिए जगह बदल रहा हो या किसी (मुसलमान) दल की ओर उस की सहायता के लिए जा रहा हो तो वह अल्लाह का प्रकोप ले कर लौटेगा और उस का ठिकाना नरक होगा तथा वह निवास करने की दृष्टि से बहुत बुरा ठिकाना है।१७।

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۷﴾

सो (याद रखो कि) इन (इन्कार करने वाले लोगों) को तुम ने नहीं मारा था बल्कि अल्लाह ने मारा था और जब तू ने कंकड़ियाँ[1] फेंकी थी तो तू ने नहीं फेंकी थी अपितु अल्लाह ने फेंकी थी जिस का परिणाम यह हुआ कि उस (अल्लाह) ने उस के द्वारा मोमिनों पर एक बहुत बड़ा उपकार किया और निस्सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है।१८।

ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۸﴾

यह बात उसी तरह होगी (जिस तरह हम ने कही थी) और निश्चय ही अल्लाह इन्कार करने वाले लोगों की चालों को कमज़ोर करने वाला है।१९।

1. बद्र के युद्ध के अवसर पर मुट्ठी भर मुसलमानों पर जब शत्रुओं की बहुत बड़ी सेना का रेला हुआ तो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने छोटे-छोटे कंकड़ों की एक मुट्ठी भर कर शत्रु-सेना की ओर फेंकी थी। इसी क्षण अल्लाह की आज्ञा के अनुसार आप के पीछे से इन्कार करने वाले लोगों की ओर आँधी सी चली तथा सारे कंकड़ उड़ कर इन्कार करने वाले लोगों पर गिरे और वे आँखों में कुंकरीली रेत भर जाने के कारण कुछ भी नहीं देख सकते थे। यहाँ उसी घटना की ओर संकेत किया गया है।

إِنْ تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَإِنْ تَنْتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ ۚ وَإِنْ تَعُودُوا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٠﴾

हे मक्का के इन्कार करने वाले लोगो ! यदि तुम विजय का निशान माँगते थे, तो लो विजय तुम्हारे पास आ गई है और यदि तुम अब भी रुक जाओ तो निस्सन्देह यह तुम्हारे लिए अच्छा होगा। यदि तुम (शरारत की ओर) लौटोगे तो हम भी (सज़ा की ओर) लौटेंगे और तुम्हारा जत्था कितना भी सुदृढ़ हो वह तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं देगा। अल्लाह मोमिनों के साथ है।२०। (रुकू २/१६)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ﴿٢١﴾

हे मोमिनो ! अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो तथा उन में से किसी से भी मुँह न मोड़ो इस हालत में कि तुम (उस का आदेश) सुन रहे हो।२१।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٢﴾

और उन लोगों की भाँति न हो जाओ जिन्हों ने यह कहा था कि हम सुनते हैं, परन्तु वे सुनते नहीं।२२।

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٢٣﴾

अल्लाह के निकट वे लोग जानवरों से भी बुरे हैं जो बहरे और गूँगे हैं, जो कुछ भी बुद्धि नहीं रखते।२३।

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ ۖ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٢٤﴾

और यदि अल्लाह उन (इन्कार करने वाले लोगों) में कुछ भी भलाई देखता तो उन्हें क़ुर्आन सुना देता और यदि उन्हें इसी अवस्था में क़ुर्आन सुना देता तब भी वे पीठ फेर लेते और (क़ुर्आन से) मुँह मोड़ लेते।२४।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ

हे मोमिनो ! अल्लाह और उस के रसूल की बात सुनो जब कि वह तुम्हें जीवन[1] प्रदान करने के लिए बुलाए और यह समझ लो कि

1. विदित हुआ कि एक मनुष्य दूसरे आध्यात्मिक मुर्दा मनुष्य को हिदायत दे कर ही जीवित कर सकता है न कि क़ब्रों में गाड़े हुए मुर्दों को जीवित कर के।

الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

अल्लाह् मनुष्य और उस के दिल के बीच में आ जाता है एवं यह कि तुम्हें जीवित कर के उसी की ओर लौटाया जाएगा ।२५।

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

और उस फ़ित्ने से डरते रहो जो तुम में से विशेष कर अत्याचारियों को ही नहीं लपेटेगा (अपितु सभी को) और याद रखो कि निश्चय ही अल्लाह् का अज़ाब अत्यन्त कड़ा होता है ।२६।

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

और (याद करो) जब तुम थोड़े थे तथा धरती में निर्बल समझे जाते थे और तुम्हें भय था कि लोग तुम्हें उचक कर न ले जाएँ। फिर इस बात के होते हुए भी उस ने तुम्हें (मदीना में) स्थान दिया और अपनी ओर से सहायता कर के तुम्हारा समर्थन किया तथा पवित्र वस्तुओं से तुम्हें रोज़ी प्रदान की ताकि तुम शुक्र करने वाले (कृतज्ञ) बन जाओ ।२७।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾

हे मोमिनो ! अल्लाह् और उस के रसूल की ख़यानत न किया करो और न अपनी अमानतों में ख़यानत करो ऐसी दशा में कि तुम जानते-बूझते[1] हो ।२८।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ ع

और याद रखो कि तुम्हारे माल-दौलत और तुम्हारी सन्तान केवल एक फ़ित्ना हैं और अल्लाह् वह है जिस के पास बहुत बड़ा प्रतिफल है ।२९। (रुकू ३/१७)

---

1. इस से यह अभिप्राय नहीं कि बिना जाने ख़यानत करना जायज़ है अपितु तात्पर्य यह है कि तुम पर वास्तविकता खुल चुकी है । यदि इस के बाद भी ख़यानत करोगे तो इस अपराध के कारण कठोर दण्ड पाओगे ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِنۡ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجۡعَلْ لَّكُمۡ فُرۡقَانًا وَّيُكَفِّرۡ عَنۡكُمۡ سَيِّاٰتِكُمۡ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِيۡمِ ۝٣٠

हे मोमिनो ! यदि तुम अल्लाह के लिए संयम धारण करोगे तो वह तुम्हारे लिए एक बहुत बड़ी कसौटी (का सामान) पैदा कर देगा और तुम्हारी कमजोरियों को दूर कर देगा और तुम्हें क्षमा कर देगा तथा अल्लाह बड़ी कृपा करने वाला है।३०।

وَاِذۡ يَمۡكُرُ بِكَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لِيُثۡبِتُوۡكَ اَوۡ يَقۡتُلُوۡكَ اَوۡ يُخۡرِجُوۡكَ ؕ وَيَمۡكُرُوۡنَ وَيَمۡكُرُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيۡرُ الۡمٰكِرِيۡنَ ۝٣١

और (हे रसूल ! उस समय को याद कर) जब कि इन्कार करने वाले लोग तेरे बारे योजनाएं बना रहे थे ताकि तुझे बन्दी[1] बना दें अथवा तेरी हत्या कर दें या तुझे (मक्का से) निकाल दें। वे भी योजनाएँ बना रहे थे तथा अल्लाह भी योजना बना रहा था और अल्लाह योजना बनाने वालों में से सब से अच्छा योजना बनाने वाला है।३१।

وَاِذَا تُتۡلٰى عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتُنَا قَالُوۡا قَدۡ سَمِعۡنَا لَوۡ نَشَآءُ لَقُلۡنَا مِثۡلَ هٰذَاۤ ۙ اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيۡرُ الۡاَوَّلِيۡنَ ۝٣٢

और जब उन्हें हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वे कहते हैं. (बस रहने दीजिए) हम ने तुम्हारी बात सुन ली, यदि हम चाहें तो इस प्रकार का कलाम हम भी बना सकते हैं। यह क़ुर्आन तो केवल पहले लोगों की बातें हैं।३२।

---

1. अर्थात् घर में बन्दी बना दे, परन्तु वे इस में असफल रहे। दूसरी योजना हत्या करने की थी वे उस में भी असफल रहे। तीसरी योजना देश से निकाल देने की थी उस में सफल हो गए, परन्तु अल्लाह ने मदीना नगर के निवासियों के दिल हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के लिए खोल दिए। आप को मक्का वालों का घर से निकाल देना ही उन के सर्वनाश का कारण बन गया।

और (याद कर) जब उन्हों ने कहा कि हे अल्लाह ! यदि तेरी ओर से यही धर्म सत्य है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या हमें कोई दूसरा पीड़ा-दायक अज़ाब[1] पहुँचा ।३३।

وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۳﴾

परन्तु अल्लाह उन्हें इस परिस्थिति में कोई अज़ाब नहीं दे सकता था जब कि तू उन में विराजमान था और न अल्लाह उन को इस अवस्था में अज़ाब दे सकता था जब कि वे इस्तिग़फ़ार[2] (पश्चाताप) कर रहे हों ।३४।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۳۴﴾

और क्या उन्हें कोई अधिकार है कि जिस के आधार पर वे इज़्ज़त वाली मस्जिद (काबा) से लोगों को रोकते हैं, तो फिर भी अल्लाह उन्हें अज़ाब नहीं देगा ? और वास्तव में वे उस के मुतवल्ली (प्रबन्धक) नहीं। उस के (वास्तविक) मुतवल्ली तो केवल संयमी लोग ही हैं, किन्तु इन्कार करने वाले लोगों में से बहुत से लोग इस बात को समझते नहीं ।३५।

وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ۭ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۵﴾

और काबा के पास उन की नमाज़ केवल सीटियाँ और तालियाँ बजाने के सिवा कुछ नहीं। सो हे अधर्मियों! अपने इन्कार के कारण अज़ाब का स्वाद चखो ।३६।

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ۭ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۶﴾

जिन्हों ने इन्कार किया है निश्चय ही वे अपने धन लोगों को अल्लाह की राह से रोकने के लिए ख़र्च करते हैं। वे इसी प्रकार

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً

1. इस स्थान पर बद्र के युद्ध का वृत्तान्त है। उस अवसर पर अबूजहल ने ऐसे ही शब्दों में प्रार्थना की थी। फलस्वरूप वह दण्ड पा कर मारा गया।

2. आयत का भाव यह है कि पश्चाताप तो वे पहले ही नहीं करते थे। यदि तू भी वहाँ से चला गया तो उन के बचने के दोनों साधन समाप्त हो जाएँगे तथा वे बे-सहारा रह कर नष्ट हो जाएँगे।

ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ۬ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ۝

अपने धन खर्च करते जाएँगे। अन्ततः यही (ख़र्च) उन के लिए पछतावे का कारण बन जाएगा और वे परास्त कर दिए जाएँगे तथा जिन लोगों ने इन्कार किया है उन्हें इकट्ठा कर के नरक की ओर ले जाया जाएगा ।३७।

لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

ताकि अल्लाह पवित्र तथा अपवित्र में अन्तर कर दे और अपवित्र वस्तुओं के कुछ भागों को एक-दूसरे के ऊपर रखता चला जाए, फिर सब को एक ढेर के रूप में बना दे और फिर उस सारे ढेर को नरक की आग में झोंक दे। (सुनो!) यही लोग हानि उठाने वाले हैं ।३८। (रुकू ४/१८)

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ۝

तू इन्कार करने वाले लोगों से कह दे कि यदि वे रुक जाएँ तो जो अपराध उन से पहले हो चुका है वह उन्हें क्षमा कर दिया जाएगा और यदि वे (उन्हीं पापों को) बार-बार करेंगे तो जो बरताव पहले लोगों से हो चुका है वही उन से भी किया जाएगा ।३९।

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

और उन (इन्कार करने वाले लोगों) से युद्ध करते जाओ यहां तक कि जब्र का नाम-निशान न रह जाए और दीन-धर्म सारे का सारा केवल अल्लाह के लिए ही हो जाए और यदि वे रुक जाएँ तो निस्सन्देह अल्लाह उन के कर्मों को देखता है ।४०।

وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

और यदि वे पीठ दिखा जाएँ तो समझ लो कि निश्चय ही अल्लाह तुम्हारा संरक्षक है और क्या ही अच्छा संरक्षक है और क्या ही अच्छा सहायक है ।४१।

وَاعْلَمُوٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰكِیْنِ وَابْنِ السَّبِیْلِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰی عَبْدِنَا یَوْمَ الْفُرْقَانِ یَوْمَ الْتَقَی الْجَمْعٰنِ وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝

और जान लो कि तुम्हें जो कुछ भी ग़नीमत के रूप में मिले उस में से अल्लाह एवं उस के रसूल के लिए और (रसूल के) निकटवर्ती[1] लोगों, अनाथों, निर्धनों और यात्रियों के लिए पाँचवाँ हिस्सा है। यदि तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो और उस पर भी जो हम ने अपने बन्दे पर सच तथा झूठ में फ़ैसला कर देने वाले दिन में उतारा था, जिस दिन कि दोनों सेनाएँ लड़ने के लिए आमने-सामने हुई थीं (तो इस पर चलो) और अल्लाह हर-एक चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्य रखने वाला) है।४२।

اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْیَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰی وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِی الْمِیْعٰدِ وَلٰكِنْ لِّیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا لِّیَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَیِّنَةٍ وَّیَحْیٰی مَنْ حَیَّ عَنْ بَیِّنَةٍ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ۝

(उस दिन) जब कि तुम (रण-भूमि के) इधर के किनारे पर थे तथा वे (शत्रु) उधर परले किनारे पर थे और क़ाफ़िला (यात्री दल) तुम से नीचे की ओर था और यदि तुम उन से प्रतिज्ञा भी करते तो भी तुम्हारा (युद्ध करने के) समय के बारे में उन से मतभेद हो जाता (किन्तु अल्लाह ने तुम्हें इकट्ठा कर दिया) ताकि वह उस बात को पूरा कर दे जिसे पूरा करने का उस ने निश्चय कर लिया था। (यह चमत्कार इसलिए भी दिखाया गया था) कि वह व्यक्ति जो तर्क से विनष्ट हो चुका है उस का सर्वनाश हो जाए तथा जिसे तर्क द्वारा जीवन मिला है वह जीवित हो जाए और निस्सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है।४३।

---

1. इस का दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि सम्बन्धियों और नातेदारों के लिए।

إِذْ يُرِيكَهُمُ اللّٰهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا ۖ وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤٤﴾

(यह उस समय की घटना है) जब कि अल्लाह् ने तेरे स्वप्न[1] में उन (शत्रुओं) की संख्या तुझे कम कर के दिखाई थी और यदि वे बड़ी संख्या में दिखाए जाते तो तुम अवश्य कमज़ोरी दिखाते तथा इस समस्या (अर्थात् युद्ध) के बारे में परस्पर झगड़ते (कि युद्ध किया जाए या न) किन्तु अल्लाह् ने तुम्हें सुरक्षित रखा (क्योंकि) वह दिलों के भेदों को भली-भाँति जानता है ।४४।

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۗ وَإِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤٥﴾ ع

और (याद करो) जब वह (अल्लाह्) युद्ध के समय उन (शत्रुओं) को तुम्हारी दृष्टि में निर्बल[2] दिखा रहा था तथा तुम्हें उन की दृष्टि में निर्बल[3] दिखा रहा था ताकि वह उस बात को पूरा कर दे जिस का वह फ़ैसला कर चुका है और सारी बातें अल्लाह् की ओर ही लौटाई जाएँगी ।४५। (रुकू ५/१)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٦﴾

हे मोमिनो ! जब तुम शत्रुओं की किसी सेना के मुक़ाबिल पर आओ तो अपने पैर जमाए रखो और अल्लाह् को बहुत[4] याद किया करो ताकि तुम सफल हो जाओ ।४६।

---

1. स्वप्न में शत्रु की संख्या कम कर के दिखाए जाने का स्वप्न-फल यह होता है कि शत्रु पर विजय प्राप्त होगी और यदि शत्रु की जन-संख्या अधिक दिखाई जाए तो स्वप्न-फल यह होता है कि शत्रु-पक्ष विजयी होगा ।

2. इस स्थान पर जागरणावस्था का वर्णन है स्वप्न का नहीं । अरबी भाषा में 'क़लील' शब्द का अर्थ निर्बल भी होता है और आशय यह है कि तुम्हारे दिल इतने निडर बना दिए गए थे कि इन्कार करने वाले लोगों की संख्या अधिक होने पर भी तुम उन्हें तुच्छ समझते थे और सिंह की भाँति तुम ने उन पर आक्रमण करते हुए उन का सर्वनाश कर दिया ।

3. अर्थात् मोमिन अपने ईमान के कारण शत्रुओं को डरपोक और निर्बल समझते थे तथा शत्रु ईर्ष्या-द्वेष और अभिमान के कारण मोमिनों की ईमानी शक्ति की परवाह नहीं करते थे ।

4. अल्लाह् को याद करने से दिल पर अल्लाह् के गुणों का प्रकाश पड़ता है और ईमान तथा साहस बढ़ता है ।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ

और अल्लाह् तथा उस के रसूल की आज्ञा का पालन करते रहा करो एवं परस्पर मतभेद न रखा करो अन्यथा तुम दिल छोड़ बैठोगे तथा तुम्हारी शक्ति व्यर्थ चली जाएगी और धैर्य रखो। निस्सन्देह अल्लाह् धैर्य धारण करने वालों के साथ होता है।४७।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِم بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ

और उन लोगों की तरह न बनो जो अपने घरों से इतराते हुए और लोगों को (अपनी वीरता और धार्मिक शान) दिखाने के लिए निकले और जो लोगों को अल्लाह् की राह से रोकते हैं, अल्लाह् ऐसे लोगों के कर्मों को नष्ट करने का फ़ैसला कर चुका है।४८।

وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَّكُمْ فَلَمَّا تَرَاءَتِ الْفِئَتَانِ نَكَصَ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنكُمْ إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ

और (याद करो) जब इन्कार करने वाले लोगों को शैतान ने उन के कर्म सुन्दर बना कर दिखाए और कहा कि आज लोगों में से कोई भी तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता और मैं तुम्हारा संरक्षक हूँ, फिर जब दोनों सेनाएँ एक-दूसरे के आमने-सामने हुईं तो वह (शैतान) अपनी एड़ियों पर फिर गया और बोला कि मैं तुम से बेज़ार (विरक्त) हूँ, मुझे वह कुछ दिखाई देता है जो तुम्हें दिखाई नहीं देता। मैं अल्लाह् से डरता हूँ और अल्लाह् का अज़ाब अत्यन्त कड़ा होता है।४९। (रुकू ६/२)

إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ غَرَّ هَٰؤُلَاءِ دِينُهُمْ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ

और (याद करो) जब मुनाफ़िक़ एवं जिन के दिलों में रोग था कहते थे कि इन मुसलमानों को इन के धर्म ने घमंडी[1] बना दिया है।

---

1. इन्कार करने वाले लोगों की सेना ने अभिमान के वशीभूत हो कर युद्ध के लिए प्रस्थान किया था क्योंकि वे मुसलमानों को अपने जैसा ही अहंकारी समझते थे, किन्तु उन्हे मुसलमानों के ईमान का प्रभाव दिखाई नहीं देता था।

حَكِيمٌ ۝٥٠

हालाँकि जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करता है वह देख लेता है कि अल्लाह बड़ा ग़ालिब और हिक्मत वाला (अर्थात् प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी) है ।५०।

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ يَتَوَفَّى ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ۙ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَٰرَهُمْ وَذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلْحَرِيقِ ۝٥١

काश ! तू उस समय का विचार करे जब फ़रिश्ते इन्कार करने वाले लोगों की जान निकालते हैं और उन के मुँहों एवं पीठों पर (यह कहते हुए) चोटें मारते हैं कि जलने वाले अज़ाब का मज़ा चखो ।५१।

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ ٱللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝٥٢

यह अज़ाब तुम्हारे हाथों की पहली करतूतों का फल है (और समझ लो कि) अल्लाह अपने बन्दों पर लेश-मात्र भी अत्याचार नहीं करता ।५२।

كَدَأْبِ ءَالِ فِرْعَوْنَ ۙ وَٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَفَرُوا۟ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ فَأَخَذَهُمُ ٱللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ قَوِىٌّ شَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ۝٥٣

तुम्हारी दुर्दशा फ़िरऔन की जाति के लोगों और उन से पहले के लोगों जैसी होगी उन्हों ने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया था। अतएव अल्लाह ने उन्हें उन के पापों के कारण पकड़ लिया था। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा शक्तिशाली एवं कड़ा दण्ड देने वाला है ।५३।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا۟ مَا بِأَنفُسِهِمْ ۙ وَأَنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝٥٤

यह (इसलिए होगा) कि अल्लाह जब कभी किसी जाति को पुरस्कार देता है तो उस पुरस्कार को (उस समय तक) नहीं बदलता जब तक कि वह जाति स्वयं अपने दिल की हालत न बदल[1] ले। निस्सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है ।५४।

1. मुसलमान इस आयत के कारण इस भ्रम में हैं कि जब तक कोई जाति सांसारिक साधन न जुटा ले तब तक उसे उन्नति प्राप्त नहीं हो सकती, परन्तु इस आयत में यह बताया गया है कि अल्लाह (शेष पृष्ठ ३७८ पर)

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝

(हे इन्कार करने वाले लोगो ! तुम्हारी दुर्दशा भी) फ़िरऔन की जाति के लोगों और उन से पहले के लोगों जैसी होगी। उन्हों ने अपने रब्ब की आयतों को झुठलाया था, तब हम ने उन के पापों के कारण उन का सर्वनाश कर दिया और हम ने फ़िरऔन की जाति को डुबो दिया, क्योंकि वे सारे ही अत्याचारी थे।५५।

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

निस्सन्देह अल्लाह की दृष्टि में वे लोग जानवरों से भी बुरे हैं जिन्हों ने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया और वे ईमान नहीं लाते।५६।

اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ۝

वे लोग जिन से तूने प्रतिज्ञा की, किन्तु वे हर-बार अपनी प्रतिज्ञा भंग कर देते हैं तथा वे संयम से भी काम नहीं लेते।५७।

فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝

सो यदि तू युद्ध में उन पर अधिकार जमा ले तो उन के द्वारा उन सेनाओं को भी भगा[1] दे जो उन के पीछे हैं ताकि वे शिक्षा प्राप्त करें।५८।

(पृष्ठ ३७७ का शेष)

जब किसी जाति को कोई पुरस्कार प्रदान करता है तो उस पुरस्कार को उस समय तक नहीं छीनता जब तक कि उस जाति के दिलों में बिगाड़ पैदा न हो जाए और जो अर्थ इस से मुसलमान समझ रहे हैं वह तो सभी नबियों के समय में असत्य सिद्ध हो चुका है अर्थात् सांसारिक साधनों के न होने पर भी तथा अपने घर का सारा धन अल्लाह की राह में ख़र्च कर देने पर भी रसूलों के अनुयायी सदैव उन्नति करते रहे एवं शत्रुओं पर विजय पाते रहे। हाँ ! दूसरी आयतों में यह विषय भी वर्णित हुआ है कि मोमिनों को प्राकृतिक नियमों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, परन्तु वह तो प्राकृतिक सिद्धान्तों में से एक नियम है, वह कोई आध्यात्मिक नियम नहीं।

1. अर्थात् ऐसी सावधानी और ईमानदारी से युद्ध करो कि दूर-दूर के शत्रु भी भयभीत हो जाएँ तथा कोई आगे बढ़ कर आक्रमण करने का साहस न कर सके।

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِن قَوْمٍ خِيَانَةً فَانبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ﴿٥٨﴾

और यदि तुझे किसी जाति की ओर से समझौता तोड़ देने का डर हो तो तू इस प्रकार उस समझौते को समाप्त कर दे जिस से वे समझ लें कि अब तुम दोनों (पक्ष अपने-अपने प्रतिबन्धों में) मुक्त हो और अल्लाह समझौता तोड़ने वालों को पसन्द नहीं करता।५९। (रुकू ७/३)

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ﴿٦٠﴾

और इन्कार करने वाले लोग कभी यह न समझें कि वे (अपने छल-कपट से) आगे बढ़ गए हैं। वे मोमिनों को कभी विवश नहीं कर सकते।६०।

وَأَعِدُّوا لَهُم مَّا اسْتَطَعْتُم مِّن قُوَّةٍ وَمِن رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَآخَرِينَ مِن دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُوا مِن شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٦١﴾

और (हे मुसलमानो ! चाहिए कि) तुम उन (लड़ने वालों) के लिए जहाँ तक हो सके अपनी शक्तियाँ इकट्ठी करो। अनुशासन द्वारा भी और सीमा पर छावनियाँ बना कर भी। इन छावनियों द्वारा तुम अल्लाह के शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को डराते हो और इन के अतिरिक्त दूसरे शत्रुओं को भी, जो इन (सीमास्थित शत्रुओं) के परे हैं जिन को तुम नहीं जानते[1], किन्तु अल्लाह उन्हें जानता है और जो कुछ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे वह तुम्हें उस का पूरा-पूरा प्रतिफल प्रदान करेगा एवं तुम्हारे साथ अन्याय का व्यवहार नहीं किया जाएगा।६१।

---

1. इस में रोम के सम्राट क़ैसर और ईरान के सम्राट किस्रा की सेनाओं की ओर संकेत है तथा बताया गया हैं कि तुम्हारा कर्त्तव्य केवल अरब के वंशों को ही उपदेश देना नहीं, अपितु तुम्हें क़ैसर और और किस्रा की सैनिक शक्ति से भी लोहा लेना होगा। अतः उन के दिलों में भी आतंक जमाना चाहिए।

وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

और (यदि तुम्हारी युद्ध सम्बन्धी तय्यारियों को देख कर) शत्रु सन्धि करने की ओर झुकें तो (हे रसूल !) तू भी सन्धि की ओर आ जा और अल्लाह पर भरोसा रखो[1]। निस्सन्देह अल्लाह प्रार्थनाओं को बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है।६२।

وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ۭ هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝

और यदि वे मन में यह इरादा रखते हों कि बाद में तुझे धोखा दें तो (याद रखो कि) अल्लाह निश्चय ही तेरे लिए पर्याप्त है। वही है जिस ने तुझे मोमिनों की सहायता और अपनी सहायता द्वारा सुदृढ़ बनाया।६३।

وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ۭ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

और उन के दिलों को परस्पर बाँध दिया[2]। यदि तू उन के लिए जो कुछ पृथ्वी में है ख़र्च कर देता तो भी उन के दिलों को इस प्रकार नहीं बाँध सकता था, परन्तु अल्लाह ने उन में पारस्परिक प्रेम (और तेरे साथ भी प्रेम) पैदा कर दिया। निस्सन्देह वह ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है।६४।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ ع

हे नबी ! अल्लाह और वे मोमिन जो तेरे अनुयायी बन चुके हैं तेरे लिए पर्याप्त हैं।६५। (रुकू ८/४)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ۭ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ

हे नबी ! मोमिनों को इन्कार करने वाले लोगों से युद्ध करने की बार-बार प्रबल प्रेरणा देता रह। यदि तुम में से बीस[3]

---

1. इस विचार से तुम भयभीत न हो कि वे लोग उस के बाद छल-कपट का व्यवहार करेंगे।

2. यहाँ तक कि सहाबा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के पसीना के स्थान पर अपने प्राण न्योछावर करने पर कटिबद्ध रहते थे।

3. यहाँ अल्लाह ने बताया है कि मोमिन अपने से दस गुना अधिक इन्कार करने वाले लोगों पर (शेष पृष्ठ १८१ पर)

يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٦﴾
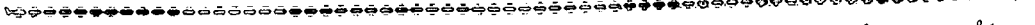
धैर्यवान मोमिन होंगे तो वे दो सौ (इन्कार करने वाले लोगों) पर विजय प्राप्त करेंगे और यदि एक सौ धैर्यवान (मोमिन) होंगे तो एक हज़ार इन्कार करने वाले लोगों पर विजयी होंगे, क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं (जब कि मोमिन समझ-बूझ कर अपने ईमान पर क़ायम हैं)।६६।

اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ۚ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٦٧﴾

अल्लाह ने अभी तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया है और जान लिया है कि तुम में अभी कुछ कमज़ोरी है। अतः यदि तुम में से सौ धैर्यवान मोमिन हों तो दो सौ इन्कार करने वाले लोगों पर विजयी[1] होंगे और यदि तुम में से एक हज़ार धैर्यवान मोमिन होंगे तो वे अल्लाह की आज्ञा के अनुसार दो हज़ार शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे और अल्लाह धैर्यवान व्यक्तियों के साथ है।६७।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ ۗ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۗ

किसी नबी की यह शान नहीं कि वह बन्दी बनाए जब तक कि वह देश में रक्तपात न कर ले[2]। (यदि तुम नियमित लड़ाई के बिना बन्दी बनाओगे) तो तुम सांसारिक धन के लोभी ठहराए जाओगे। हालाँकि अल्लाह

(पृष्ठ ३७९ का शेष)

विजय पाएँगे, क्योंकि उस समय तक उन का ईमान और भी बढ़ चुका होगा और अल्लाह की प्रतिज्ञाएँ भी पूरी हो चुकी होंगी। यह बात वर्तमान परिस्थिति के पश्चात् होगी। वर्तमान दशा में उन के ईमान और अल्लाह की प्रतिज्ञा के उपलक्ष्य उन्हें अपने से दो गुना शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी।

1. अल्लाह का यह आदेश ईमान पर निर्धारित है। क़ैसर और किस्रा के साथ युद्धों में अपने से दस गुना छोड़ अस्सी गुना और सौ-सौ गुना अधिक शत्रुओं से मुसलमानों ने लोहा लिया तथा उन्हें पराजित किया। इस का कारण यह है कि उन्हों ने सहाबा का समय भी देखा था और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के बाद नए-नए निशान तथा चमत्कार भी देखे थे।

2. इस से यह तात्पर्य नहीं कि रसूल रक्तपात किया करे, क्योंकि इस के विरुद्ध क़ुर्आन में शिक्षा

(शेष पृष्ठ ३८२ पर)
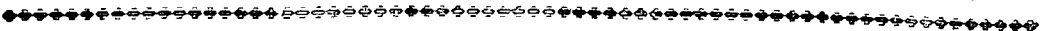
وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٨﴾

तुम्हारे लिए परलोक की निअमतें चाहता है। अल्लाह बड़ा ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है।६८।

لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٩﴾

और यदि अल्लाह की ओर से इस से पहले एक खुला-खुला[1] आदेश न आ चुका होता तो जो कुछ तुम ने (बंदियों का) फ़िद्यः लिया था उस के कारण तुम्हें बड़ा अज़ाब पहुँचता।६९।

فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٠﴾

सो (फ़िद्यः लेने के सम्बन्ध में आदेश पहले आ चुका है) जो कुछ तुम्हें ग़नीमत के रूप में मिले और वह अल्लाह के आदेश के अनुसार हलाल और पवित्र हो तो उसे खाओ तथा अल्लाह के लिए संयम धारण करो। अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।७०। (रुकू ९/५)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ

हे नबी! जो लोग तुम्हारे हाथों में बन्दियों के रूप में हैं उन से कह दे कि यदि अल्लाह तुम्हारे दिलों में भलाई देखेगा तो जो कुछ तुम से (युद्ध के दण्ड के रूप में) लिया गया है उस से अच्छा तुम्हें प्रदान करेगा और

(पृष्ठ ३८१ का शेष)

पाई जाती है। इस आयत से केवल यह आशय है कि यदि वह (नबी) शत्रुओं के आक्रमणों के कारण अपनी प्रतिरक्षा के लिए रक्तपात करने पर विवश किया जाए तो ऐसी परिस्थिति में वह बन्दी भी बना सकता है। सारांश यह है कि विशेष ध्यान इस बात पर दिया गया है कि नियमानुसार युद्ध के बिना बन्दी बनाना अनुचित बात है। यदि दो जातियों के लोगों में घोर युद्ध हो जाए तो उस के उपरांत बन्दी बनाना उचित हो सकता है।

1. फ़िद्यः लेना पहले से ही वैध ठहराया जा चुका है। अतएव जो भाष्यकार यह लिखते हैं कि अल्लाह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से फ़िद्यः लेने के कारण अप्रसन्न हुआ, वे एक बड़ी भूल में हैं। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने वही काम किया है जिस के करने का अल्लाह ने आप को आदेश दिया था।

مِّنكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧١﴾

(उस के अतिरिक्त) तुम्हारे पाप भी क्षमा कर देगा तथा अल्लाह् बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है ।७१।

وَإِن يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِن قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٧٢﴾

और यदि वे (स्वतन्त्र होने के बाद) तुझ से विश्वासघात करने का विचार रखते हों तो समझ लो कि वे इस से पहले अल्लाह् से भी विश्वासघात कर चुके हैं, फिर भी उस ने उन्हें तुम्हारे आधिपत्य में दे दिया और अल्लाह् बहुत जानने वाला एवं बड़ा हिक्मत वाला है ।७२।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا لَكُم مِّن وَلَايَتِهِم مِّن شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ وَإِنِ اسْتَنصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٧٣﴾

वे लोग जो ईमान लाए हैं और जिन्हों ने हिजरत की तथा अल्लाह् की राह में अपने तन-मन-धन से जिहाद किया और जिन्हों ने (हिजरत करने वालों को अपने घरों में) शरण दी एवं उन की सहायता की है, उन में कुछ लोग दूसरों के हार्दिक मित्र हैं तथा वे लोग जो ईमान ला चुके हैं और उन्हों ने हिजरत नहीं की उन से हार्दिक मित्रता करना तुम्हारा काम नहीं जब तक कि वे हिजरत न करें और यदि वे तुम से धर्म के सम्बन्ध में सहायता माँगें तो उन की सहायता करना तुम्हारा कर्त्तव्य है सिवाय ऐसी जाति के कि जिस के और तुम्हारे बीच कोई समझौता हो चुका हो एवं अल्लाह् तुम्हारे कर्मों को देख रहा है ।७३।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُن فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ﴿٧٤﴾

और जिन लोगों ने इन्कार किया है वे आपस में एक-दूसरे के मित्र हैं। यदि तुम वही कुछ जिस की हम ने आज्ञा दी है न करो तो धरती में बड़ा फ़साद तथा बड़ी अशान्ति फैल जाएगी ।७४।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٧٥﴾

और वे लोग जो ईमान लाए हैं और जिन्हों ने हिजरत की है एवं जिन्हों ने अल्लाह की राह में जिहाद किया है तथा जिन्हों ने (हिजरत करने वालों को) अपने घरों में शरण दी है और उन की सहायता की है वही सच्चे मोमिन हैं। उन के पाप भी क्षमा किए जाएँगे तथा उन्हें उत्तम आजीविका मिलेगी।७५।

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنكُمْ ۚ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧٦﴾ ع

और जो लोग (इस समय के बाद) ईमान लाएँगे और हिजरत भी करेंगे तथा तुम्हारे साथ सहयोग करते हुए जिहाद में भी भाग लेंगे, वे भी तुम्हारे गिरोह में ही समझे जाएँगे और कुछ निकट सम्बन्धी दूसरे लोगों की अपेक्षा अल्लाह की किताब के अनुसार अधिक निकट होते हैं। अल्लाह प्रत्येक बात को भली-भाँति जानता है।७६। (रुकू १०/६)
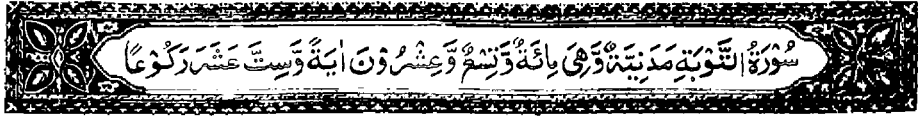
सूर: अल्-तौब:

[यह सूर: मदनी है और इसकी एक सौ उन्तीस आयतें एवं सोलह रुकू हैं।]

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ①

अल्लाह¹ और उस के रसूल की ओर से (इन आयतों में) उन मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) के आरोप से मुक्त होने की घोषणा की जाती है जिन से तुम ने शर्त बाँधी थी (कि तुम्हें विजय प्राप्त होगी तथा उन की पराजय) ।१।

---

1. मूल शब्द 'बराअतुन' के दो अर्थ हैं :—
   (क) विरक्त होना अर्थात् बेज़ार होना ।
   (ख) आरोप को दूर करना ।

इस स्थान में आरोप को दूर करना बेहतर अर्थ है ।

इस आयत में मक्का-निवासियों को बताया गया है कि तुम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर यह आरोप लगाया करते थे कि आपका यह कहना था कि मैं मक्का का रसूल हूँ, जिस की भविष्यवाणी हज़रत इब्राहीम ने की थी क्योंकर सत्य हो सकता है जब कि आप मदीना चले गये थे ? बात यह है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पवित्र क़ुर्आन द्वारा और स्वयं भी यह बताया करते थे कि मक्का नगर पुन: मुसलमानों के हाथ में दिया जाएगा । यह भविष्यवाणी पूर्ण रूप से पूरी हो जाएगी कि मैं मक्का का नबी हूँ । सो इस आयत में बताया गया है कि अब अल्लाह ने अरब देश की विजय के बाद हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को इस आरोप से मुक्त कर दिया है तथा आप और आप के साथी इस आक्षेप से मुक्त हो चुके हैं ।

इस सूर: की आयत नं० 3,5,13 जिन में मुश्रिकों से युद्ध करने की आज्ञा दी गई है उन में उन पर किसी प्रकार का कोई अत्याचार नहीं किया गया, क्योंकि इस सूर: के प्रारम्भ में ही बताया गया है कि जिन लोगों से तुम ने समझौता किया हुआ है तुम उन के समझौते को भंग नहीं करोगे, अपितु उस समझौते को उस की अवधि तक पूरा करना होगा, परन्तु समझौता करने वाले उन मुश्रिकों के सिवा जो दूसरे

(शेष पृष्ठ ३८६ पर)

فَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ ②

सो अरब देश में चार महीने[1] तक घूम-फिर कर देख लो और जान लो कि तुम अल्लाह को परास्त नहीं कर सकते तथा यह (भी जान लो कि) अल्लाह इन्कार करने वालों को अपमानित करके छोड़ेगा।२।

(पृष्ठ ३८५ का शेष)

लोग तुम्हारे साथ युद्ध कर रहे हैं और उन्हों ने अभी तक युद्ध बन्द नहीं किया, उन से उस समय तक युद्ध करते रहना ज़रूरी है जब तक कि वे युद्ध समाप्त न कर दें। यह सिद्धान्त सारे संसार ने स्वीकार किया हुआ है। अतएव यदि इस सूर: में यह बात कही गई है कि युद्ध करने वालों से तुम उस समय तक युद्ध करते रहो जब तक वे स्वयं युद्ध बन्द न कर दें या तुम्हारे साथ सन्धि अथवा शान्ति का समझौता न कर लें तो यह बात बिल्कुल न्याय संगत है। इस में अत्याचार की लेशमात्र भी शिक्षा नहीं।

1. इस आयत में जिन लोगों को चार महीने की छूट दी गई है उन से अभीष्ट वे मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) हैं जिन्हों ने मुसलमानों से कोई समझौता नहीं किया था और उन्हों ने क्रियात्मक रूप में मुसलमानों से लड़ाई जारी रखी हुई थी। अतएव जो लोग ऐसे हों उन का कोई अधिकार न था कि वे अरब देश में रहते, क्योंकि वे सरकार के विरुद्ध लड़ाई जारी रखे हुए थे और ऐसे लोगों को कोई सरकार अपने देश में नहीं रहने देती। यहाँ किसी व्यक्ति को यह शंका हो सकती है कि चार महीने के बाद मक्का-निवासियों को निकल जाने का क्यों आदेश दिया गया था? शंका समाधान के लिए यह याद रखना चाहिए कि ऐसा आदेश पवित्र क़ुर्आन में कहीं नहीं है, अपितु चार महीने की आज्ञा का वर्णन है कि चार महीने तक सारे अरब में घूम-फिर कर देख लो कि सारा अरब-देश इस्लामी छत्र-छाया के नीचे जा चुका है तथा तुम्हारे सभी आरोप असत्य सिद्ध हो चुके हैं। शेष रही यह बात कि चार महीने बीतने के बाद क्या होगा? इस का क़ुर्आन मजीद में कहीं वर्णन नहीं, किन्तु यदि यह मान भी लिया जाए कि चार महीने के बाद उन के निकलने का ही आदेश था तो भी यह कोई अत्याचार नहीं, क्योंकि ये ऐसे लोग थे जिन्हों ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम और आप के साथियों को मक्का से निकाल दिया था जब कि वे भी मक्का के नागरिक थे? अतएव जो कुछ उन्हों ने किया था वैसा ही व्यवहार उन के साथ भी किया गया।

फिर इस बात पर भी तो विचार करना चाहिए कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने उन मुश्रिकों की सन्तान को मक्का में रहने की अनुमति दे दी थी। जैसे अबुजहल जो कि मुश्रिक एवं इस्लाम का सब से बड़ा शत्रु था। मक्का विजय हो जाने के अवसर पर उस के पुत्र इकमा ने मक्का से भाग कर एबेसीनिया जाने का इरादा कर लिया तो उस की पत्नी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के पास आई और उसने निवेदन की कि

(शेष पृष्ठ ३८७ पर)

(पृष्ठ ३८६ का शेष)

हे अल्लाह के रसूल! आप का (स्वजाति) भाई यदि आप के देश में रहे तो अच्छा है या ईसाइयों के देश में चला जाए तो अच्छा है ? आप ने कहा कि मैं ने उसे नहीं निकाला। तब वह बोली हे अल्लाह् के रसूल ! वह डर कर भाग गया है क्या मैं उसे वापस लौटा लाऊँ ? आप ने कहा, हाँ! ले आओ। वह फिर कहने लगी कि हे अल्लाह् के रसूल ! वह बड़ा स्वाभिमानी (ग़ैरत रखने वाला) पुरुष है वह यह बात कभी नहीं मानेगा कि जब तक इस्लाम की सत्यता उसे समझ न आए वह उसे मान ले। क्या वह मुश्रिक रहते हुए आप के साम्राज्य में रह सकता है ? आप ने कहा, हाँ! रह सकता है। तब वह चली गई और अपने पति इक्रमा को समझा कर वापस लौटा लाई। पहले तो इक्रमा ने विश्वास न किया, परन्तु पत्नी के विश्वास दिलाने पर तथा आग्रह करने पर वापस लौट आया। उस की पत्नी उसे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की सेवा में ले आई। इक्रमा ने कहा कि हे अल्लाह् के रसूल ! मेरी पत्नी कहती है कि आप ने मुझे मक्का में रहने की आज्ञा दे दी है ? आप ने कहा कि हाँ! सत्य है। फिर उस ने पूछा, हे अल्लाह् के रसूल ! जब तक इस्लाम की सत्यता मेरी समझ में न आए मैं उसे मान नहीं सकता, क्या मुझे विमुस्लिम और मुश्रिक होने की हालत में मक्का में रहने की आज्ञा होगी ? आप ने कहा कि हाँ! इस पर वह सहसा पुकार उठा, 'ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदर्रसूलुल्लाह' (अर्थात् अल्लाह् के सिवा कोई उपास्य नहीं और मुहम्मद अल्लाह् के रसूल हैं) आप ने कहा यह क्या ! अभी तो तुम यह कह रहे थे कि इस्लाम मेरी समझ में नहीं आया ? उस ने कहा कि हे अल्लाह् के रसूल ! आप ने अपने सब से बड़े और इस्लाम के पुराने शत्रु के बेटे से यह व्यवहार किया है कि वह मुश्रिक रहते हुए भी मक्का में रह सकता है, ऐसा व्यवहार सच्चे रसूल के सिवा दूसरा नहीं कर सकता। अतः आप के इस निर्णय से मेरा मन पवित्र हो गया है और मुझे समझ आ गई है कि आप सच्चे रसूल हैं।

इस घटना से सिद्ध होता है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम भी यही समझते थे कि इस सूरः का यह आशय नहीं कि मुश्रिकों को अरब से निकाल दिया जाए बल्कि केवल फ़साद फैलाने वाले लोगों को निकालने की आज्ञा है। जो इन्कार करने वाले इस बात के लिए तय्यार हों कि वे मुसलमानों के साथ प्रेम पूर्वक रहेंगे उन्हें निकालने का कहीं भी आदेश नहीं है। पवित्र क़ुर्आन के शब्द और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का व्यवहार सिद्ध करते हैं कि इस सूरः में इन्कार करने वाले लोगों को जब्र और अत्याचार से निकालने का कोई आदेश नहीं बल्कि ऐसे लोगों को निकालने का आदेश है जो पाजी और उद्दण्डी हों तथा मुसलमानों के विरुद्ध षड्यन्त्र रचते रहते हों। ऐसे लोगों को संसार की सभी सरकारें अपने देश से निकालती हैं और इस में किसी प्रकार की कोई बुराई नहीं समझी जाती। यह उन लोगों की अपनी करतूत होती है और अपने कुकर्मों का फल उन्हें स्वयं ही भोगना पड़ता है।

اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ ۚ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۗ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝

लोगों में हज्जे[1] अक्बर (बड़े हज्ज) के दिन यह घोषणा की जाती है कि अल्लाह और उस का रसूल मुश्रिकों (के सारे आरोपों) से मुक्त हो चुके हैं (और यह कि मक्का विजय हो चुका है)। सो यदि तुम (इस चमत्कार को देख कर) तौब: करो तो यह तुम्हारे लिए सर्वोत्तम होगा और यदि तुम पीठ फेर लो तो जान लो कि तुम कदापि अल्लाह को हरा नहीं सकते एवं तू इन्कार करने वाले लोगों को सूचित कर दे कि उन के लिए पीड़ा-जनक अजाब निश्चित है।३।

اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْــًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝

हाँ! मुश्रिकों में से जिन के साथ तुम्हारा समझौता है, फिर उन्हों ने तुम्हारे साथ किसी भी समझौते को नहीं तोड़ा और न तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता ही की, तो तुम उन के साथ किए गए समझौते को उस की निश्चित अवधि तक पूरा करो (और उन को देश से न निकालो)। निस्सन्देह अल्लाह संयमियों से प्रेम करता है।४।

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ

अतएव जब वे चार महीने[2] व्यतीत हो जाएँ जिन में (अरब के इन्कार करने वाले लोगों से ऊपर की आयतों में) लड़ाई करने से रोका गया था (किन्तु वे तब भी समझौता करने की ओर नहीं आए बल्कि उन्हों ने लड़ाई को जारी रखा था) तो मुश्रिकों के

1. बड़ा हज्ज प्राय: उस हज्ज को कहा जाता है जो शुक्रवार को आए, परन्तु इस स्थान पर उस हज्ज को भी हज्जे अक्बर कहा गया है जो मक्का विजय होने के दूसरे वर्ष हुआ था, क्योंकि इन से पहले हज्ज इन्कार करने वाले लोगों के अनुशासन में हुआ करते थे, परन्तु यह पहला हज्ज था जो इस्लामी अनुशासन में हुआ।

2. अर्थात् निश्चित चार महीने जिन में उन को देश भर में घूमने-फिरने की अनुमति दी गई है।

حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا
لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا
الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٥

इस विशेष दल को जहाँ भी पाओ क़त्ल करो तथा उन्हें बन्दी बना लो और उन्हें (उन के दुर्गों) में बन्द कर दो और हर घात के स्थान पर उन की ताक में बैठो। सो यदि वे तौब: (पश्चाताप) करें तथा नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो उन का रास्ता छोड़[1] दो। निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।५।

وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ
كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا
يَعْلَمُوْنَ ۝٦ ع

और यदि मुश्रिकों में से कोई व्यक्ति तुझ से शरण माँगे तो तू उसे शरण दे, यहाँ तक कि वह अल्लाह की बातें सुन ले। तदुपरांत उसे उस के सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दे, क्योंकि वे ऐसी जाति के लोग हैं जिन्हें (वास्तविकता का) ज्ञान नहीं।६। (रुकू १/७)

كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ
اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا

अल्लाह और उस के रसूल का मुश्रिकों से किस प्रकार समझौता हो सकता[2] है सिवाय

1. इस से यह नतीजा नहीं निकलता कि इन्कार करने वाले लोगों से उस समय तक युद्ध करते रहना चाहिए जब तक वे मुसलमान न हो जाएँ, परन्तु इस स्थान पर साधारण इन्कार करने वाले लोगों का उल्लेख नहीं अपितु उन विशेष इन्कार करने वाले लोगों का उल्लेख हैं जो आठ वर्ष तक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से युद्ध करते रहे और मक्का विजय हो जाने के बाद भी उन्हों ने मुसलमानों से समझौता करने की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

2. मक्का नगर वाले यह बात फैलाते थे कि समस्त इन्कार करने वाले लोगों को क्षमा मिल चुकी है और उन से समझौता हो चुका है। पवित्र क़ुर्आन कहता हैं कि यह बात झूठी है, क्योंकि जब तक वे स्वयं अधीन हो कर समझौता करने की प्रार्थना न करें उन से कोई समझौता किस प्रकार किया जा सकता है।

उन मुश्रिकों[1] के जिन के साथ तुम्हारा समझौता मस्जिदे हराम के पास हुआ था। अतः जब तक वे (तुम्हारे साथ) अपने समझौते पर क़ायम रहें तुम भी उन के साथ किए गए समझौते पर क़ायम रहो। निस्सन्देह अल्लाह (समझौता तोड़ने से) बचने वालों को ही पसन्द करता है।७।	اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٧﴾
(हाँ! इस प्रकार के मुश्रिकों को कोई छूट) किस प्रकार दी जा सकती है, क्योंकि वे यदि तुम पर ग़ालिब आ जाएँ तो तुम्हारी किसी नातेदारी या समझौते की परवाह नहीं करेंगे. वे तुम्हें अपनी मुँह की बातों से प्रसन्न करते हैं। वास्तव में उन के दिल इन बातों को नहीं मानते और उन में से अधिकतर समझौता भंग[2] करने वाले होते हैं।८।	كَيْفَ وَإِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ يُرْضُونَكُم بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٨﴾
उन्हों ने अल्लाह की आयतों के बदले में तुच्छ माया प्राप्त की है और उस की राह से लोगों को रोका है। निस्सन्देह उनके कर्म बहुत बुरे हैं।९।	اشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَن سَبِيلِهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩﴾
वे किसी मोमिन के बारे में किसी रिश्ते-नाते की परवाह नहीं करते और न ही किसी प्रतिज्ञा की तथा वे हद से बढ़े हुए हैं।१०।	لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ﴿١٠﴾

1. अर्थात् उन मुश्रिकों के साथ समझौता क़ायम है जिन्हों ने केवल मक्का की विजय को ही समझौता का आधार नहीं ठहराया था बल्कि अपने लिए प्रार्थना कर के शरण दिए जाने की घोषणा करवा ली थी।

2. यह कोरी कल्पना नहीं। इस्लामी इतिहास का एक-एक पृष्ठ इस पर गवाह है।

فَإِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ ۗ وَنُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿١١﴾

सो यदि वे तौब: कर लें और नमाज़ों को क़ायम करें एवं ज़कात दें तो वे तुम्हारे धर्म के भाई हैं तथा हम अपनी आयतें जानकारी रखने वाली जाति के लिए खोल-खोल कर वर्णन करते हैं ।११।

وَإِن نَّكَثُوا أَيْمَانَهُم مِّن بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنتَهُونَ ﴿١٢﴾

और यदि वे लोग अपने बचन और प्रतिज्ञा के पश्चात् अपनी क़समों को तोड़ दें और तुम्हारे धर्म पर आक्षेप करें तो ऐसे इन्कार करने वाले लोगों के सरदारों से युद्ध करो ताकि वे शरारतों से रुक जाएँ क्योंकि उन की क़समों का कोई विश्वास नहीं ।१२।

أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُم بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَن تَخْشَوْهُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾

हे मोमिनो ! क्या तुम उस जाति से युद्ध नहीं करोगे जिन्हों ने अपनी क़समों को तोड़ दिया और रसूल को (उस के घर से) निकाल देने का निर्णय कर लिया और तुम्हारे साथ लड़ाई छेड़ने में उन्हों ने ही पहल की थी। क्या तुम उन से डरते हो ? यदि तुम मोमिन हो तो समझ लो कि अल्लाह इस बात का ज़्यादा हक़दार है कि तुम उसी से डरो ।१३।

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٤﴾

उन से युद्ध करो। अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथों से अज़ाब दिलवाएगा और उन्हें अपमानित करेगा तथा तुम्हें उन पर प्रभुता प्रदान करेगा और इस प्रकार मोमिनों के दिलों को (कष्ट एवं भय से) मुक्त करेगा ।१४।

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۗ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ ۗ

और उन (विरोधियों) के दिलों से क्रोध को दूर कर देगा तथा अल्लाह जिस पर चाहता है

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

कृपा करता है और अल्लाह बहुत जानने वाला एवं बड़ी हिक्मत वाला है।१५।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ ع

क्या तुम समझते हो कि तुम्हें यों ही छोड़ दिया जाएगा, हालांकि अल्लाह ने अब तक उन लोगों को जिन्हों ने तुम मे जिहाद किया है (उन लोगों मे जिन्हों ने जिहाद नहीं किया) अलग नहीं किया जो अल्लाह और उस के रसूल एवं मोमिनों के विरुद्ध इन्कार करने वाले लोगों मे गुप्त रूप मे गठ-जोड़ नहीं करते और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति जानता है।१६। (रुकू २/८)

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ښ وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝

ऐसे मुश्रिकों का कोई अधिकार नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें जब कि वे अपने विरुद्ध स्वयं ही इन्कार की गवाही दे रहे हैं। यही लोग हैं जिन के कर्म अकारथ चले गए और वे (नरक की) आग में एक दीर्घ काल तक रहते चले जाएंगे।१७।

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰۗىِٕكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ۝

अल्लाह की मस्जिदों को तो वही आबाद करता है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है और नमाज़ को (विधिवत) क़ायम करता है तथा ज़क़ात देता है एवं अल्लाह के सिवा किसी से भयभीत नहीं होता। सो सम्भव है कि ऐसे लोग सफलता की ओर ले जाए जाएँ।१८।

اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاۗجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ

क्या तुम ने हाजियों को पानी पिलाने और काबा को आबाद रखने के काम को उस व्यक्ति[1] के काम के समान समझ लिया है

1. कुछ विवश एवं निर्बल व्यक्ति जो हिजरत करने से डरते थे, किन्तु मक्का में हाजियों की सेवा (शेष पृष्ठ ३९३ पर)

اللّٰهِ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ⑲

जो अल्लाह् एवं आख़िरत के दिन पर पूरा-पूरा ईमान रखता है और उस ने अल्लाह की राह् में जिहाद किया। अल्लाह् के निकट ये दोनों गिरोह् एक समान नहीं तथा अल्लाह अत्याचारी जाति को कदापि सफलता की ओर नहीं ले जाता।१९।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ⑳

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिजरत की फिर अल्लाह् की राह् में अपने माल और जान से जिहाद किया वे अल्लाह् के निकट बड़ा दर्जा रखते हैं और वे ही सफल होने वाले हैं।२०।

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ㉑

उन का रब्ब उन्हें अपनी बहुत बड़ी दयालुता का समाचार देता है और अपनी प्रसन्नता एवं ऐसे स्वर्ग की भी जिन में उन के लिए सदा रहने वाली निअमत होगी।२१।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ㉒

वे उन में सदा निवास करते चले जाएँगे। निस्सन्देह् अल्लाह् के पास बहुत बड़ा प्रतिफल है।२२।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ㉓

हे मोमिनो ! यदि तुम्हारे बाप-दादे और भाई ईमान की अपेक्षा इन्कार से अधिक प्रेम करते हों तो उन्हें अपना (वास्तविक) मित्र न बनाओ और तुम में से जो लोग उन से ऐसी मित्रता करेंगे तो वे निश्चय ही अत्याचारी होंगे।२३।

(पृष्ठ ३९२ का शेष)

किया करते थे, मक्का विजय हो जाने पर हिजरत करने वाले कुछ व्यक्तियों पर अपनी प्रधानता और शान जताने लगे। इस आयत में अल्लाह् ने उन के इस विचार का खण्डन किया है कि हिजरत करने वाले और मुजाहिद बड़ी शान वाले हैं तथा दूसरे व्यक्ति उन के सम्मान को नहीं पा सकते।

قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٤﴾ ع

तू (मोमिनों से) कह दे कि यदि तुम्हारे पूर्वज और तुम्हारे पुत्र तथा तुम्हारे भाई एवं तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारे दूसरे नातेदार तथा वह धन जिसे तुम ने कमाया है और वे व्यापार जिन में तुम को हानि का भय लगा हुआ है एवं वे भवन जिन को तुम पसंद करते हो, यदि तुम्हें अल्लाह और उस के रसूल तथा उस की राह में जिहाद करने की अपेक्षा अधिक प्रिय हों, तो तुम प्रतीक्षा करो यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला ज़ाहिर कर दे तथा अल्लाह आज्ञा भंग करने वाली जाति को कदापि सफलता का मार्ग नहीं दिखाता।२४। (रुकू ३/९)

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۙ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُدْبِرِينَ ﴿٢٥﴾

अल्लाह अनेक अवसरों पर तुम्हारी सहायता कर चुका है विशेष रूप से हुनैन (के युद्ध) के दिन जब कि तुम्हारी बहुतात ने तुम्हें घमण्डी बना दिया था। फिर वह (बहुतात) तुम्हारे किसी काम न आई और पृथ्वी कुशादा (विस्तृत) होने पर भी तुम्हारे लिए तंग हो गई और तुम ने पीठ दिखाते हुए मुंह मोड़ लिया।२५।

ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿٢٦﴾

और अल्लाह ने अपने रसूल तथा मोमिनों पर अपनी ओर से शान्ति उतारी और ऐसी सेनाएं भी उतारीं जिन्हें तुम नहीं देख रहे थे तथा इन्कार करने वाले लोगों को अज़ाब पहुँचाया और इन्कार करने वाले लोगों का यही बदला होता है।२६।

ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٧﴾

और अल्लाह ऐसे दण्ड के बाद जिस पर चाहता है दया कर देता है और अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।२७।

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖٓ اِنْ شَآءَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾

हे मोमिनो ! वास्तव में मुश्रिक गन्दे[1] (और अपवित्र) हैं। अतएव वे इस वर्ष के बाद मस्जिदे-हराम (काबा) के पास न आएँ और यदि तुम्हें निर्धनता[2] का डर हो तो वह (अल्लाह) चाहे तो तुम्हें अपनी कृपा से अवश्य धनवान बना देगा। निस्सन्देह अल्लाह बहुत जानने वाला एवं बड़ी हिक्मत वाला है।२८।

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٢٩﴾ ع

जो लोग अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं लाते तथा उस वस्तु को हराम नहीं ठहराते हैं जिसे अल्लाह और उस के रसूल ने हराम ठहराया है तथा न ही सच्चे दीन (धर्म) को अपनाते हैं अर्थात् वे लोग जिन्हें किताब दी गई है उन से युद्ध[3] करो जब तक कि वे अपनी इच्छा से जिज़िया (रक्षा कर) न दें और जब तक वे तुम्हारे अधीन न आ जाएँ।२९। (रुकू ४/१०)

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ اِبْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۭ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٠﴾

और यहूदी कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह का पुत्र है तथा ईसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह का पुत्र है। यह केवल उन के मुँह की डींग है। वे अपने से पहले इन्कार करने वाले लोगों जैसी बातें कर रहे हैं। अल्लाह की उन पर मार हो, वे (वास्तविकता से) कैसे दूर होते जा रहे हैं।३०।

---

1. अर्थात् उन के विचारों में शिर्क की गन्दगी भरी हुई है।

2. अर्थात् इन्कार करने वालों के चले जाने के कारण व्यापार के मंदा पड़ जाने का विचार हो और यह कि उस से आय भी कम हो जाएगी।

3. इस का यह अर्थ नहीं कि यहूदियों से अकारण युद्ध छेड़ा जाए। युद्ध की शर्तें दूसरे स्थान पर वर्णन की गई हैं। उन में से एक बड़ी शर्त यह है कि जब शत्रु अत्याचारात्मक आक्रमण कर दे तो

(शेष पृष्ठ ३९६ पर)

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣١﴾

उन्हों ने अपने विद्वानों और राहिबों (सन्यासियों) को अल्लाह के सिवा अपना रब्ब बना लिया है। इसी प्रकार मसीह पुत्र मर्यम को भी। हालाँकि उन्हें केवल यह आदेश दिया गया था कि वे एक अल्लाह की उपासना करें जिस के सिवा कोई उपास्य नहीं। वह उन के शिर्क से पवित्र है।३१।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٣٢﴾

वे चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह की फूँकों से बुझा दें और अल्लाह अपने नूर को पूरा करने के सिवा दूसरी हर बात से इन्कार करता है। चाहे इन्कार करने वाले लोगों को कितना ही बुरा लगे।३२।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾

वही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सत्य धर्म दे कर भेजा ताकि उसे दूसरे सारे धर्मों पर ग़ालिब कर दे भले ही यह बात मुश्रिकों को बुरी लगे।३३।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٤﴾

हे मोमिनो ! बहुत से अह्बार (विद्वान) और राहिब[1] दूसरे लोगों का धन अनुचित रीति से हड़प करते हैं तथा लोगों को अल्लाह की राह से रोकते हैं और वे लोग भी जो सोना-चाँदी इकट्ठा करते हैं तथा अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें पीड़ादायक अज़ाब का समाचार सुना दे।३४।

(पृष्ठ ३९५ का शेष)

मुसलमान केवल प्रतिरक्षा (Defence) कर सकता है। अतएव यदि शत्रु आक्रमण करे तो उन से जिहाद करना वैध है, परन्तु यदि वे पराजित हो जाएँ और अधीनता स्वीकार करके रक्षा कर (जिज़िया) देने को तय्यार हो जाएँ तो युद्ध को लम्बा न किया जाए, अपितु उन की पहली भूलों को भी क्षमा कर देना चाहिए।

1. 'राहिब'—साधु, सन्यासी और यहूदी मन्दिरों के पुजारी।

يَوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِىْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ۭ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ۝٣٥

(यह अज़ाब) उस दिन होगा जब कि उस (इकट्ठा किए हुए सोना चाँदी) पर नरक की आग भड़काई जाएगी। फिर उस (सोने चाँदी) से उन के माथों, पहलुओं और पीठों पर दाग लगाए जाएंगे (और कहा जाएगा) यह वे पदार्थ हैं जिन्हें तुम अपनी जानों के लिए इकट्ठा किया करते थे। अतएव जिन वस्तुओं को तुम इकट्ठा किया करते थे उन का स्वाद चखो।३५।

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ڏ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَاۗفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَاۗفَّةً ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝٣٦

निस्सन्देह महीनों की गिनती अल्लाह के निकट बारह महीने[1] ही होती है। यह अल्लाह का नियम उस दिन से है जब से कि उस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है। इन में से चार महीने सम्मान वाले हैं। यही पक्का धर्म है। अतः (चाहिए कि) इन महीनों में अपनी जानों पर अत्याचार[2] न किया करो तथा समस्त मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) से युद्ध करो। जिस प्रकार कि वे सब के सब तुम्हारे साथ युद्ध करते हैं एवं याद रखो कि अल्लाह संयमियों के साथ है।३६।

اِنَّمَا النَّسِيْۗءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ

नसी[3]—यह केवल (इस्लाम से पहले) इन्कार के समय की ज़्यादती है। जिस के

1. इस्लाम ने चन्द्रमा के हिसाब से महीनों की गिनती की है। इस प्रकार एक वर्ष के केवल बारह महीने बनते हैं। सूर्य के हिसाब से महीनों की गिनती करने वालों ने भी वर्ष के बारह महीने ही बनाए हैं, परन्तु बहाइयों ने वर्ष के उन्नीस महीने बनाए हैं। वास्तव में चन्द्रमा की गिनती के अनुसार उन्नीस महीने हो ही नहीं सकते। उधर सूर्य को महीनों का जन्म दाता मानने वालों ने भी बारह महीनों से अधिक की कल्पना नहीं की।

2. अर्थात् वास्तविक उद्देश्य महीने नहीं अपितु पवित्र जीवन व्यतीत करना है।

3. मूल शब्द 'नसी' अर्थात् महीनों का अदल-बदल यह था कि इस्लाम के प्रादुर्भाव से पहले मक्का

(शेष पृष्ठ ३९८ पर)

بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ۚ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ أَعْمَالِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِينَ ﴿٣٧﴾ ع

द्वारा इन्कार करने वाले लोग गुमराह होते रहते हैं। वे उसे एक वर्ष वैध (हलाल) ठहरा लेते हैं और दूसरे वर्ष अवैध, (हराम) ताकि वे महीनों को वर्ष की नियमित गिनती के अनुकूल कर लें और उन महीनों के अनुसार बना लें जिन में युद्ध करने से रोका गया है (और अपने बनाए हुए अदल-बदल के कारण जो अन्तर हो गया है उसे पूरा कर दें) इन कामों की खराबी (शैतान की ओर से) इन को सुन्दर कर के दिखाई गई है और अल्लाह इन्कार करने वाले लोगों को सफलता का मार्ग नहीं दिखाता।३७। (रुकू ५/११)

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ انْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ ۚ أَرَضِيتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٣٨﴾

हे मोमिनो ! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम्हें कहा जाता है कि अल्लाह की राह में युद्ध के लिए (मिलकर) निकलो तो तुम अपने देश-प्रेम की ओर झुक जाते हो। क्या तुम्हें आख़िरत की अपेक्षा सांसारिक-जीवन पसन्द है ? (यदि ऐसा है) तो याद रखो कि सांसारिक-जीवन का सामान आख़िरत की अपेक्षा अत्यन्त तुच्छ वस्तु है।३८।

إِلَّا تَنْفِرُوا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۙ وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا

यदि तुम (अल्लाह की राह में सब मिल कर) युद्ध करने के लिए नहीं निकलोगे तो वह तुम्हें दुःखदायक अज़ाब पहुँचाएगा तथा तुम्हारे स्थान पर एक दूसरी जाति को बदल कर ले आएगा। फिर तुम उस (अल्लाह)

(पृष्ठ ३९७ का शेष)

वाले किसी वर्ष मुहर्रम (के महीनों) को वैध ठहरा लेते ताकि उस में लूट-खसूट और रक्तपात करने में उन्हें खुली छुट्टी हो और फिर सफ़र (के महीनों) को मुहर्रम बना लेते। इस प्रकार सारे महीनों में परिवर्तन करके वर्ष के तेरह मास बना देते। फिर पुनः परिवर्तन करके वर्ष को उस की पहली दशा पर ले आते।

غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

को किसी प्रकार की कोई हानि नहीं पहुँचा सकोगे और अल्लाह् प्रत्येक बात पर (जिस के करने का निश्चय कर ले) पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है ।३९।

إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ۖ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٠﴾

यदि तुम इस रसूल की सहायता न करो तो (याद रखो कि) अल्लाह् उस समय भी उस की सहायता कर चुका है जब उसे इन्कार करने वाले लोगों ने दो में से एक के रूप में देश से निकाल दिया था जब कि वे दोनों गुफ़ा में थे और जब वह अपने साथी (अबूबकर) से कह रहा था कि विगत भूल-चूक पर दुःखी न हो। निस्सन्देह अल्लाह् हमारे साथ है। अतः अल्लाह् ने उस पर अपनी (ओर से) शान्ति उतारी तथा ऐसी सेनाओं से उस की सहायता की जिन्हें तुम नहीं देखते थे और उन लोगों की बात को नीचा दिखा दिया जिन्हों ने इन्कार को अपनाया था और अल्लाह् ही की बात ऊँची हो कर रहती है और अल्लाह् बड़ा ग़ालिब और हिकमत वाला (अर्थात् प्रभुत्वशाली एवं तत्त्वदर्शी) है ।४०।

انفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

हे मोमिनो ! जिहाद के लिए निकल जाओ, चाहे तुम अस्त्र-शस्त्र रखते हो अथवा अस्त्र-शस्त्र से ख़ाली हो और अपने तन-मन-धन से अल्लाह् की राह में जिहाद करो। यदि तुम जानते हो तो यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा होगा ।४१।

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوكَ وَلَٰكِن بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۚ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ

यदि शीघ्र ही प्राप्त होने वाला लाभ होता या यात्रा छोटी होती तो ये लोग अवश्य ही तेरे पीछे चल पड़ते, परन्तु उन्हें यात्रा दूर

لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُونَ أَنفُسَهُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٤٢﴾

प्रतीत हुई। अब तेरे लौटने के बाद अल्लाह की सौगन्ध खा कर कहेंगे कि यदि हमारे वश की बात होती तो हम अवश्य ही तुम्हारे साथ निकल खड़े होते। ये लोग अपनी जानों का ही विनाश करते हैं और अल्लाह जानता है कि ये लोग झूठे हैं।४२। (रुकू ६/१२)

عَفَا اللَّهُ عَنكَ لِمَ أَذِنتَ لَهُمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ الْكَاذِبِينَ ﴿٤٣﴾

अल्लाह ने तेरी भूल के बुरे प्रभाव को मिटा दिया और तुझे सत्कार प्रदान किया। भला तुम ने उन को पीछे रहने की अनुमति क्यों दी थी? (तुम उन के साथ जाने पर जोर देते) यहाँ तक कि सच्चे लोग तेरे लिए जाहिर हो जाते तथा झूठे लोगों को भी तू जान लेता।४३।

لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَن يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ﴿٤٤﴾

जो लोग अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं वे अपनी जान-माल से जिहाद करने से बचने के लिए आज्ञा नहीं माँगते और अल्लाह संयमियों से भली-भाँति परिचित है।४४।

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ﴿٤٥﴾

पीछे रहने की आज्ञा केवल वे लोग ही माँगते हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं लाते तथा उन के दिलों में आशंकाएँ जागृत हो गई हैं। अतएव वे अपनी आशंकाओं के कारण कभी इधर और कभी उधर भटकते फिरते हैं।४५।

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَٰكِن كَرِهَ اللَّهُ انبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ

और यदि वे लड़ाई के लिए निकलने का पक्का इरादा करते तो उस के लिए कुछ तय्यारी भी करते, किन्तु अल्लाह ने लड़ाई के लिए उन का निकलना पसन्द नहीं किया। अतएव उन्हें उन के स्थानों पर ही

القٰعِدِيْنَ ۝

बैठा दिया और (उन के इन्कार करने वाले मित्रों की ओर से) उन्हें यह कह दिया गया कि जो लोग बैठ रहे हैं तुम भी उन्हीं के साथ बैठ रहो।४६।

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَا۟اَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝

यदि वे तुम्हारे साथ मिल कर निकलते तो गड़बड़ और फ़साद फैलाने के सिवा तुम्हारी कुछ भी सहायता न करते और वे तुम्हारे बीच (फसाद फैलाने के लिए) खूब घोड़े दौड़ाते एवं तुम्हारे बीच उपद्रव फैलाने की कामना करते तथा तुम में भी कुछ लोग ऐसे हैं जो उन तक पहुँचाने के लिए बातें सुनते हैं और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।४७।

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝

उन्हों ने इस से पहले भी फ़साद फैलाना चाहा था तथा तेरे लिए हालात को कई तरह से बदला था यहाँ तक कि सत्य आ गया तथा अल्लाह का फ़ैसला ज़ाहिर हो गया और वे उस फ़ैसले को पसन्द नहीं करते थे।४८।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ۗ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ۗ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝

और उन में से कुछ मुनाफ़िक़ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हमें (पीछे रहने की) अनुमति दी जाए तथा हमें (लड़ाई में जाने की) परीक्षा में न डालिए। याद रखो ये लोग पहले से ही विपत्ति में घिर चुके हैं और नरक निश्चय ही इन्कार करने वाले लोगों का नाश करने वाला है।४९।

اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُوْنَ ۝

यदि तुझे कोई लाभ पहुँचे तो उन को बुरा लगता है और यदि तुझ पर कोई विपत्ति आ पड़े तो कहते हैं कि हम ने तो पहले से ही इन आने वाले दिनों का प्रबन्ध कर लिया था और वे प्रसन्नता से पीठ फेर कर चले जाते हैं।५०।

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾

तू उन्हें कह दे कि हमें तो वही पहुँचता है जो अल्लाह ने हमारे लिए निश्चित कर रखा है। वही हमारे काम करने वाला है और मोमिनों को चाहिए कि वे अल्लाह पर ही भरोसा रखें।५१।

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۭ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ فَتَرَبَّصُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿٥٢﴾

तू उन से कह दे कि तुम दो भलाइयों[1] में से एक के सिवा हमारे बारे में किसी दूसरी बात की प्रतीक्षा नहीं करते और हम तुम्हारे लिए केवल इस बात की प्रतीक्षा करते हैं कि अल्लाह तुम्हें अपने पास से या हमारे हाथों से अज़ाब देगा। सो तुम भी प्रतीक्षा करो हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करेंगे।५२।

قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ۭ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٣﴾

तू उन से कह दे कि चाहे ख़ुशी से ख़र्च करो, चाहे ना ख़ुशी से, तुम से किसी रूप में भी (तुम्हारा दान) स्वीकार नहीं किया जाएगा, क्योंकि तुम तो आज्ञा भंग करने वाले लोग हो।५३।

وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٥٤﴾

और अल्लाह एवं उस के रसूल के इन्कार के सिवा और इस बात के सिवा कि वह नमाज़ बहुत सुस्ती से पढ़ते थे और अल्लाह की राह में ना ख़ुशी से ख़र्च करते थे उन के दान स्वीकार करने को किस बात ने रोका है ?।५४।

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ

अतएव तू उन के मालों और उन की सन्तान पर आश्चर्य न कर। अल्लाह केवल यह चाहता है कि इस धन तथा सन्तान के द्वारा

1. अर्थात् वे या तो यह आशा लगाए बैठे हैं कि हम युद्ध में वीरगति पा जाएं जो हमारे लिए शहादत तथा सम्मान है या युद्ध का दूसरा रूप जो विजय है वह भी हमारे लिए मंगलमय है।

أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَٰفِرُونَ ﴿٥٥﴾

उन्हें इसी संसार में अज़ाब दे और उन के प्राण ऐसे समय में निकलें कि वे इन्कार करने वाले ही हों ।५५।

وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنكُمْ وَمَا هُم مِّنكُمْ وَلَٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ﴿٥٦﴾

और वे इस बात पर अल्लाह की क़समें खाते हैं कि वे तुम में से ही हैं। वास्तव में वे तुम में से नहीं हैं बल्कि वे एक ऐसा गिरोह है जो बहुत डरपोक है ।५६।

لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَغَارَاتٍ أَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ ﴿٥٧﴾

यदि वे कोई शरणगार या छिप रहने के लिए गुफ़ा अथवा बैठ रहने के लिए कोई ठिकाना पाएँ तो वे पीठ फेर कर दौड़ते हुए उधर चले जाएँगे ।५७।

وَمِنْهُم مَّن يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِن لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ﴿٥٨﴾

और उन में से कुछ (मुनाफ़िक़) ऐसे हैं जो दान के सम्बन्ध में तुझ पर आरोप लगाते हैं। यदि उस धन में से उन्हें कुछ दे दिया जाए तो वे प्रसन्न हो जाते हैं और यदि उस में से कुछ न दिया जाए तो तुरन्त अप्रसन्न हो जाते हैं ।५८।

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ﴿٥٩﴾

और यदि वे अल्लाह एवं उस के रसूल के दिए हुए पर प्रसन्न हो जाते तथा यह कहते कि अल्लाह ही हमारे लिए काफ़ी है (यदि हमें कभी कोई अर्थ संकट आया तो) अल्लाह हमें अपनी अपार कृपा से प्रदान करेगा और इसी प्रकार उस का रसूल भी। हम तो अपने अल्लाह की ओर झुकने वाले हैं, तो यह उन के लिए अच्छा होता ।५९। (रुकू ७/१३)

إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِينِ وَالْعَامِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغَارِمِينَ

सदक़ात (दान) तो केवल निर्धनों और मुहताजों के लिए हैं और उन के लिए जो दान इकट्ठा करने के लिए नियुक्त किए गए हैं तथा उन

وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٦٠﴾

के लिए जिन के दिलों को (अपने साथ[1]) मिलाना अभीष्ट हो और इसी प्रकार क़ैदियों और ऋणियों के लिए तथा (उन के लिए जो) अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं और यात्रियों के लिए हैं। यह अल्लाह की ओर से नियुक्त किया हुआ फ़र्ज़ (कर्त्तव्य) है और अल्लाह बहुत जानने वाला एवं बड़ी हिक्मत वाला है।६०।

وَمِنْهُمُ الَّذِينَ يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ هُوَ أُذُنٌ قُلْ أُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦١﴾

और उन में से कुछ (मुनाफ़िक़) ऐसे भी हैं जो नबी को दुःख देते हैं और कहते हैं कि वह तो केवल (कान ही) कान[2] है। तू कह दे कि उस के कान तुम्हारी भलाई[3] सुनने के लिए हैं और वह अल्लाह पर ईमान रखता है तथा तुम में से जो मोमिन हैं उन (की प्रतिज्ञा) पर भी विश्वास रखता है तथा मोमिनों के लिए दया का कारण है और वे लोग जो अल्लाह के रसूल को दुःख देते हैं उन के लिए दुःखदायक अज़ाब है।६१।

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيُرْضُوكُمْ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ أَحَقُّ أَن يُرْضُوهُ إِن كَانُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٦٢﴾

वे तुम्हें प्रसन्न करने के लिए अल्लाह की क़समें खाते हैं, हालाँकि अल्लाह और उस का रसूल विशेष अधिकार रखते हैं कि उन्हें प्रसन्न रखा जाए, परन्तु शर्त यह है कि ये (मुनाफ़िक़) सच्चे मोमिन हों।६२।

---

1. ऐसे विमुस्लिम जो इस्लाम की सत्यता का अनुसंधान करना चाहें तो इस प्रसंग से उन की कुछ सहायता की जाए। इस का यह अर्थ नहीं कि विमुस्लिमों को घूस दे कर ख़रीदा जा सकता है।

2. अर्थात् लोगों की शिकायतें ही सुनता रहता है।

3. अर्थात् सुनता तो अवश्य है, परन्तु वह तुम्हारी भलाई के लिए सुनता है ताकि तुम्हारा कल्याण करे और इस प्रकार सुनाने वाले लोगों पर उपकार करता है।

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَنْ يُحَادِدِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَأَنَّ
لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ذَٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ﴿٦٣﴾

क्या उन्हें यह ज्ञात नहीं कि जो कोई अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करता है उस के लिए जहन्नम की आग (निश्चित) है। वह उस में निवास करता चला जाएगा और यह एक बड़ी भारी रुसवाई है।६३।

يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ
بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ قُلِ اسْتَهْزِئُوا إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ
مَا تَحْذَرُونَ ﴿٦٤﴾

मुनाफ़िक़ दिखावे के रूप में भय का प्रदर्शन करते हैं कि उन के विरुद्ध कोई ऐसी सूरः न उतरे जो उन्हें (और मुसलमानों को) उन बातों से परिचित कर दे जो उन के दिलों में छिपी हुई हैं। तू कह दे कि हँसी करते चले जाओ। अल्लाह (वस्तुतः इस बात को) प्रकट कर देगा जिस (के प्रकट होने) से तुम डरते हो।६४।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ
قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ ﴿٦٥﴾

और यदि तू उन से पूछे (कि तुम ऐसी बातें क्यों करते हो) तो वे अवश्य यही उत्तर देंगे कि हम तो केवल हँसी-ठट्ठा करते थे। तो तू उन से कह दे कि क्या तुम अल्लाह और उस की आयतों तथा उस के रसूल से हँसी-ठट्ठा करते थे ?।६५।

لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ إِنْ نَعْفُ عَنْ
طَائِفَةٍ مِنْكُمْ نُعَذِّبْ طَائِفَةً بِأَنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٦٦﴾ ع

अब कोई बहाना न करो। तुम ने ईमान लाने के बाद इन्कार किया है। (अतः इस का दण्ड भोगो)। यदि हम तुम में से एक गिरोह को क्षमा कर दें तथा दूसरे को अज़ाब दें, इसलिए कि वे अपराधी थे (तो यह हमारा काम है)।६६। (रुकू ८/१४)

الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ
بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ

मुनाफ़िक़ पुरुष और मुनाफ़िक़ स्त्रियाँ आपस में सम्बन्ध रखते हैं। वे बुरी बातों के करने का आदेश देते हैं और अच्छी बातों के विरुद्ध शिक्षा देते हैं एवं अपने हाथों को (अल्लाह की राह में दान देने से) रोकते हैं। उन्हों ने

अल्लाह को छोड़ दिया है। अतः अल्लाह ने भी उन्हें छोड़ दिया है। निश्चय ही मुनाफ़िक अवज्ञाकारी हैं।६७।

نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ۗ إِنَّ الْمُنٰفِقِينَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿٦٧﴾

अल्लाह ने मुनाफ़िक पुरुषों और मुनाफ़िक स्त्रियों तथा इन्कार करने वाले लोगों से जहन्नम की आग की प्रतिज्ञा कर रखी है। वे उस में निवास करते चले जाएंगे। वही उन के लिए काफ़ी है और (इस के सिवा) अल्लाह ने उन्हें अपने पास से धुतकार भी दिया है तथा उन के लिए एक स्थायी अज़ाब निश्चित है।६८।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِينَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٦٨﴾

(हे मुनाफ़िको ! यह अज़ाब) उन लोगों (के दण्ड) की भाँति होगा जो तुम से पहले हो चुके हैं। वे तुम से अधिक शक्तिशाली थे तथा अधिक धनवान थे और अधिक संतान वाले थे। अतः उन्हों ने अपने हिस्से के अनुसार लाभ उठाया तथा तुम ने अपने हिस्से के अनुसार लाभ उठाया, जिस प्रकार कि तुम से पहले लोगों ने अपने हिस्से के अनुसार लाभ उठाया था और तुम ने उसी प्रकार हँसी ठट्ठा किया जिस प्रकार उन लोगों ने हँसी ठट्ठा किया था। उन के लोक और परलोक सम्बन्धी सारे कर्म विनष्ट हो गए एवं वे लोग हानि पाने वालों में शामिल हो गए।६९।

كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَأَكْثَرَ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا ۚ فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِي خَاضُوا ۚ أُولٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَأُولٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٦٩﴾

क्या इन लोगों के पास उन लोगों के समाचार नहीं आए जो इन से पहले हो चुके हैं अर्थात् नूह, आद, समूद और इब्राहीम की जाति के तथा मद्यन के लोगों के और उलटाई गई बस्तियों (लूत की जाति)

أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۬ وَقَوْمِ إِبْرٰهِيمَ وَأَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ

اَتَتۡهُمۡ رُسُلُهُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ‌ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظۡلِمَهُمۡ وَلٰكِنۡ كَانُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ يَظۡلِمُوۡنَ ۝٧٠

के लोगों के समाचार। उन के पास उन के रसूल खुले-खुले चमत्कार ले कर आए थे, (परन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया और फलस्वरूप दण्ड भोगा)। अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया अपितु वे स्वयं ही अपने-आप पर अत्याचार कर रहे थे।७०।

وَالۡمُؤۡمِنُوۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتُ بَعۡضُهُمۡ اَوۡلِيَآءُ بَعۡضٍ‌ۘ يَاۡمُرُوۡنَ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَيَنۡهَوۡنَ عَنِ الۡمُنۡكَرِ وَيُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤۡتُوۡنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيۡعُوۡنَ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ‌ؕ اُولٰٓـئِكَ سَيَرۡحَمُهُمُ اللّٰهُ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ۝٧١

और मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्रियाँ परस्पर एक-दूसरे के मित्र हैं। वे भलाई का आदेश देते हैं तथा बुरी बातों से रोकते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह एवं उस के रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं। ये ऐसे लोग हैं कि अल्लाह अवश्य उन पर दया करेगा। अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला (अर्थात् प्रभुत्वशाली एवं तत्त्वदर्शी) है।७१।

وَعَدَ اللّٰهُ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِىۡ جَنّٰتِ عَدۡنٍ‌ؕ وَرِضۡوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكۡبَرُ‌ؕ ذٰلِكَ هُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ۝٧٢ ع ٩/١٥

अल्लाह ने मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों से ऐसी जन्नतों (स्वर्ग) की प्रतिज्ञाएँ की हैं, जिन के नीचे नहरें बहती हैं। वे उस में सदैव निवास करेंगे और सदा क़ायम रहने वाली जन्नतों में पवित्र निवास-स्थानों की भी प्रतिज्ञा की हुई है तथा उन के अतिरिक्त अल्लाह की प्रसन्नता सब से बड़ा पुरस्कार है (जो उन्हें मिलेगा) और उस का मिलना एक बहुत बड़ी सफलता है।७२। (रुकू ९/१५)

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ جَاهِدِ الۡكُفَّارَ وَالۡمُنٰفِقِيۡنَ وَاغۡلُظۡ عَلَيۡهِمۡ‌ؕ وَمَاۡوٰهُمۡ جَهَنَّمُ‌ؕ

हे नबी! इन्कार करने वाले लोगों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो और (पक्का प्रबन्ध कर के) उन पर सख़्ती (से आक्रमण) करो। उन का ठिकाना नरक है और वह

وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝٧٣

स्थान निवास की दृष्टि से बहुत बुरा है।७३।

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوا بِمَا لَمْ يَنَالُوا وَمَا نَقَمُوا إِلَّا أَنْ أَغْنَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ فَضْلِهِ فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ خَيْرًا لَهُمْ وَإِنْ يَتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝٧٤

वे अल्लाह की क़समें खाते हैं कि उन्हों ने कोई बुरी बात नहीं की, हालांकि उन्हों ने इन्कार की बात कही है और इस्लाम को मान लेने के बाद इन्कार किया है और इस्लाम धर्म के विरुद्ध ऐसी बुरी बातों का इरादा किया है जिन को वे प्राप्त नहीं कर सकते और उन्हों ने मुसलमानों से केवल इसलिए शत्रुता की है कि अल्लाह एवं उस के रसूल ने अपनी कृपा से उन्हें धनवान बना दिया था। सो यदि वे तौबः करें तो यह उन के लिए अच्छा होगा और यदि वे पीठ फेर कर चले जाएँ तो अल्लाह उन्हें इस लोक में भी तथा परलोक में भी पीड़ादायक अज़ाब देगा एवं इस लोक में उन का न कोई मित्र होगा और न ही कोई सहायक।७४।

وَمِنْهُمْ مَنْ عَاهَدَ اللَّهَ لَئِنْ آتَانَا مِنْ فَضْلِهِ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝٧٥

और इन में से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह से यह प्रण करते हैं कि वह (अल्लाह) अपनी कृपा से जो कुछ हमें प्रदान करेगा तो हम अवश्य उस की राह में दान करेंगे और हम अवश्य ही भले लोग बन जाएँगे।७५।

فَلَمَّا آتَاهُمْ مِنْ فَضْلِهِ بَخِلُوا بِهِ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ۝٧٦

और जब अल्लाह ने उन्हें अपनी कृपा से धन प्रदान किया तो उन्हों ने (उस की राह में ख़र्च करने में) कंजूसी की तथा अपनी पुरानी डगर की ओर लौट गए और (अल्लाह एवं रसूल की बातों से) विमुखता प्रकट करते हुए चले गए।७६।

فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ يَلْقَوْنَهُ بِمَا أَخْلَفُوا اللَّهَ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿٧٧﴾

(परिणाम यह निकला कि) उस (अल्लाह) ने उस दिन तक के लिए उन के दिलों में फूट डाल दी जिस दिन कि वे उस से भेंट करेंगे, क्योंकि उन्हों ने जो वादा अल्लाह से किया था उस के ख़िलाफ़ किया और इस कारण कि वे झूठ बोला करते थे।७७।

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَأَنَّ اللَّهَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿٧٨﴾

क्या उन्हें ज्ञात नहीं था कि अल्लाह उन के गुप्त एवं स्पष्ट परामर्शों को जानता है और यह कि अल्लाह पूर्णरूप से ग़ैब की बातों को भी जानने वाला है।७८।

الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ ۙ سَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٩﴾

ये (मुनाफ़िक़ ही) हैं जो मोमिनों में से ख़ुशी से बढ़-चढ़ कर दान करने वाले लोगों पर व्यंग करते हैं और उन से भी हँसी करते हैं जो अपने (परिश्रम से) कमाए हुए धन के अतिरिक्त कोई शक्ति नहीं रखते। अल्लाह उन (में से कट्टर शत्रुओं) को हँसी का दण्ड देगा और उन्हें दुःखदायक अज़ाब पहुँचेगा।७९।

اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِن تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٨٠﴾ ع

तू उन के लिए क्षमा माँग या न माँग (उन के लिए एक जैसा है)। यदि तू उन के लिए सत्तर[1] बार भी क्षमा कर देने की प्रार्थना करेगा तो भी अल्लाह उन्हें कभी क्षमा नहीं करेगा। यह इसलिए होगा कि उन्हों ने अल्लाह तथा रसूल का इन्कार किया और अल्लाह आज्ञा भंग करने वाली जाति को कदापि सफलता का मार्ग नहीं दिखाता।८०। (रुकू १०/१६)

---

1. यह अरबी का मुहावरा है जैसा कि हमारे देश में 'सौ बार' का मुहावरा प्रचलित है। भाव यह है कि चाहे असंख्य बार भी उन के लिए प्रार्थना करो अल्लाह उन के बारे में कभी प्रार्थना स्वीकार नहीं करेगा।

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَ
كَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ؕ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ
حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨١﴾

अल्लाह के रसूल के आदेश के ख़िलाफ़ (जिहाद से) पीछे छोड़े हुए मुनाफ़िक़ लोग अपनी जगह पर बैठे रहने पर बहुत प्रसन्न हैं और उन्हों ने अपने प्राणों तथा अपने धन से जिहाद करना बुरा समझा था और एक-दूसरे से कहा था कि ऐसी गर्मी में युद्ध के लिए इकट्ठे हो कर मत निकालो। तू उन्हें कह दे कि नरक की आग (इस ताप से भी) अधिक तेज़ है। काश! वे इस बात को समझें।८१।

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾

सो चाहिए कि वे अपने छल-कपट पर प्रसन्न तो थोड़ा हों, परन्तु (अपने कर्म के प्रतिफल पर) विलाप अधिक करें।८२।

فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ
لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا
مَعِيَ عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ
فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾

फिर यदि तुझे अल्लाह उन में से किसी एक गिरोह की ओर लौटा लाए और वे लोग तुझ से (किसी भावी) युद्ध में सम्मिलित होने की आज्ञा माँगे तो तू उन्हें कह दे कि भविष्य में तुम्हें मेरे साथ युद्ध के लिए जाने की कदापि आज्ञा नहीं होगी और तुम कभी मेरे साथ मिल कर शत्रु से युद्ध नहीं कर सकोगे (क्योंकि) तुम पहली बार (पीछे) बैठ रहने पर प्रसन्न हो गए थे। अतएव (भविष्य में) पीछे रह जाने वालों के साथ सदैव बैठे रहा करो।८३।

وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ
عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَ
هُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٤﴾

और यदि उन में से कोई मर जाए तो उस की नमाज़ (जनाज़ा) न पढ़ा कर और न उस की क़ब्र पर (प्रार्थना के लिए) खड़ा हुआ कर, क्योंकि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल का इन्कार किया तथा ऐसी हालत में मरे जब कि वे अवज्ञाकारी थे।८४।

وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ۗ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

और उन के धन-दौलत तथा उन की सन्तान तुझे आश्चर्य में न डाले। अल्लाह् उन्हें इन के द्वारा इस लोक में दु:ख पहुँचाना चाहता है एवं उन के प्राण इस दशा में निकल जाएँगे कि वे इन्कार करने वाले ही होंगे।८५।

وَاِذَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٨٦﴾

और जब कोई सूर: (इस आदेश के साथ) उतरती है कि अल्लाह् पर ईमान लाओ तथा उस के रसूल से मिल कर जिहाद करो तो उन में से धनवान लोग तुझ से आज्ञा माँगने लग जाते हैं कि हमें पीछे छोड़ जाएँ ताकि हम उन लोगों के साथ रहें जो पीछे बैठने वाले होंगे।८६।

رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾

वे इस बात से प्रसन्न हैं कि पीछे बैठे रहने वाले लोगों में शामिल हो जाएँ और उन के दिलों पर मुहर कर दी गई है। सो वे (अपने कुकर्मों के कारण) समझते नहीं।८७।

لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾

किन्तु यह रसूल (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम) और वे जो इस के साथ (अल्लाह् पर) ईमान रखते हैं एवं जिन्हों ने अपने तन-मन-धन से जिहाद किया है उन के लिए हर प्रकार की भलाइयाँ हैं और अन्तत: वे ही सफलता प्राप्त करने वाले हैं।८८।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾ ع

अल्लाह् ने उन के लिए ऐसे स्वर्ग तय्यार किए हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं। वे उन बागों में सदैव रहते चले जाएँगे। यह एक बड़ी सफलता है।८९। (रुकू ११/१७)

وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ

और मदीना नगर के आस-पास के जंगलों (तथा छोटे ग्रामों) के निवासियों में से बहाना

وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُولَهُ ۚ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٠﴾

बनाने वाले कुछ लोग आ कर कहते हैं कि उन्हें भी पीछे रहने की आज्ञा दी जाए तथा वे लोग जो अल्लाह और रसूल से झूठ बोलते हैं (बिना आज्ञा लिए ही) पीछे बैठे रहे हैं। उन में से इन्कार करने वाले लोगों को निश्चय ही पीड़ा-जनक अज़ाब पहुँचेगा।९०।

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَىٰ وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنْفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلّٰهِ وَرَسُولِهِ ۚ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ ۚ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩١﴾

(किन्तु हे रसूल !) जो वास्तव में निर्बल हैं और रोगी हैं और जो लोग रास्ते का ख़र्च नहीं पाते, उन पर (पीछे रह जाने के कारण) कोई दोष नहीं जब कि वे अल्लाह तथा उस के रसूल के हार्दिक श्रद्धालू हैं। (ये परोपकारी लोग हैं) और परोपकारी लोगों पर कोई आरोप नहीं एवं अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।९१।

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۖ تَوَلَّوْا وَأَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يُنْفِقُونَ ﴿٩٢﴾

और न उन लोगों पर (कोई दोष है) जो तेरे पास उस समय आए जब कि युद्ध की घोषणा की गई थी ताकि तू उन्हें कोई सवारी[1] दे, तो तूने उत्तर दिया कि मेरे पास कोई चीज नहीं है जिस पर मैं तुम्हें सवार कराऊँ और (यह उत्तर सुन कर) वे चले गए तथा दुःख के कारण उन की आँखों से आँसू बह रहे थे कि खेद! उन के पास कुछ नहीं जिसे वे (अल्लाह की राह में) ख़र्च करें।९२।

---

1. हदीसों में इन लोगों का कथन यों आता है कि उन्हों ने कहा कि अल्लाह की सौगन्ध! हम सवारी की प्रार्थना ले कर नहीं गए थे अपितु सवारी से हमारा तात्पर्य जूते आदि था ताकि हम उन्हें पहन कर तपती हुई पथरीली धरती पर चल सकें। पवित्र क़ुर्आन के शब्द भी इसे सहन करते है, क्योंकि उन का शाब्दिक अर्थ यही है कि हमें कोई ऐसी वस्तु दीजिए जिस को आधार बना कर हम समर-भूमि तक पहुंच सकें और इस से जूते-चप्पल आदि भी समझे जा सकते हैं। वह ऐसा निर्धनता का समय था कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम मुजाहिदों को जूते या चप्पल तक भी नहीं दे सकते थे। (फ़त्हुलबयान)

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ ۚ رَضُوا بِأَن يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٩٣﴾

आरोप केवल उन लोगों पर है जो इस दशा में अनुमति चाहते हैं जब कि वे धनवान हैं और वे पीछे बैठ रहने वालों के साथ (बैठ रहने पर) प्रसन्न हो गए तथा अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी, परन्तु वे (ऐसे हैं कि) समझते नहीं।९३।

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ۗ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ۗ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾

जब तुम युद्ध से लौट कर वापस इन की ओर आते हो तो वे तुम्हारे पास आकर कई तरह के बहाने बनाते हैं। तू उन से कह दे कि बहाने न बनाओ। हम (तुम्हारे बहानों को) कभी नहीं मानेंगे। अल्लाह ने तुम्हारे हालात से हमें आगाह कर दिया है और अल्लाह तथा उस का रसूल तुम्हारे कर्मों को भाँपते रहेंगे, फिर तुम खुली और छिपी बातों के जानने वाले अल्लाह के सामने ले जाए जाओगे, सो वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों की वास्तविकता बताएगा।९४।

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۗ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۗ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ۡ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾

जब तुम उन की ओर लौट कर आओगे तो वे तुम्हारे सामने अल्लाह की सौगन्ध खाएँगे ताकि तुम उन्हें क्षमा कर दो। सो (हम भी तुम से कहते हैं कि) तुम उन्हें क्षमा कर दो, क्योंकि वे अपवित्र हैं और उन के कर्मों के कारण उन का निवास-स्थान पहले से ही जहन्नम निश्चित हो चुका है।९५।

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾

वे तुम्हारे सामने क़समें खाएँगे ताकि तुम उन से प्रसन्न हो जाओ। सो यदि तुम उन से प्रसन्न भी हो जाओ तो भी अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों से प्रसन्न नहीं होगा।९६।

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٩٧﴾

गाँवों (और जंगलों) में रहने वाले अरब लोग इन्कार करने में और मुनाफ़िक़त में (सारे अरबों से) बढ़े हुए हैं और (मूर्खता के कारण) इस बात के अधिकारी हैं कि जो कुछ अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारा है उस की सीमाओं को न पहचानें और अल्लाह बहुत जानने वाला एवं बड़ी हिक्मत वाला है।९७।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۹۸﴾

और गाँवों (तथा जंगलों) में रहने वाले (अरब) लोगों में से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह की राह में ख़र्च किए हुए धन को चट्टी समझते हैं तथा तुम्हारे लिए (दैवी) विपत्ति की प्रतीक्षा करते रहते हैं। सुनो! बुरा चक्कर उन्हीं पर आएगा और अल्लाह बहुत सुनने वाला एवं जानने वाला है।९८।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ اَلَاۤ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۹۹﴾ ع

और गाँवों (तथा जंगलों) में रहने वाले (अरब) लोगों में से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर तथा आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ (अल्लाह की राह में) ख़र्च करते हैं वे उसे अल्लाह की निकटता और रसूल की प्रार्थनाओं की प्राप्ति का साधन समझते हैं। सुनो! यह कर्म उन के लिए अवश्य अल्लाह की निकटता का आधार बनेगा। अल्लाह अवश्य उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, क्योंकि अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।९९। (रुकू १२/१)

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۰۰﴾

और मुहाजरीन तथा अन्सार में से जो आगे निकलने वाले हैं तथा वे लोग भी जिन्हों ने पूर्ण-रूप से आज्ञा पालन करते हुए उन का अनुसरण किया अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया और वे अल्लाह से प्रसन्न हो गए। उस (अल्लाह) ने उन के लिए ऐसा स्वर्ग तय्यार किया है जिस के नीचे नहरें बहती हैं। वे उस में सदा निवास करते चले जाएँगे। यह बहुत बड़ी सफलता है।१००।

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛؕ وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛؔ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ

और गाँवों (तथा जंगलों) में रहने वाले (अरब) लोगों में से जो तुम्हारे आस-पास रहते हैं मुनाफ़िक़ भी हैं और मदीना के निवासियों में

نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ إِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ۝

से भी (कुछ लोग ऐसे हैं) जो मुनाफ़िक़त पर हठ करते हैं। तू उन्हें नहीं जानता, किन्तु हम उन्हें जानते हैं। हम उन को दो बार[1] अज़ाब देंगे। फिर वे एक और बड़े अज़ाब की ओर ले जाए जाएँगे।१०१।

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

और कुछ दूसरे ऐसे लोग हैं जिन्हों ने अपने अपराधों को मान लिया। उन्हों ने भले कर्मों को कुछ दूसरे बुरे कर्मों के साथ मिला दिया था। निकट है कि अल्लाह् उन पर अपनी अनुकम्पा करे। अल्लाह् बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।१०२।

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝

(हे रसूल !) इन मोमिनों के धन में से सदक़ा (दान) ले ताकि तू उन्हें पवित्र करे और उन की उन्नति के साधन उपलब्ध करे और उन के लिए प्रार्थना भी करता रह, क्योंकि तेरी प्रार्थना उन के सन्तोष का कारण है एवं अल्लाह् तेरी प्रार्थनाओं को बहुत सुनने वाला तथा (हालात को) जानने वाला है।१०३।

اَلَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَأْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝

क्या उन्हें ज्ञात नहीं कि अल्लाह् ही है जो अपने भक्तों की तौबः को स्वीकार करता है और उन से दान भी लेता[2] है (रसूल नहीं लेता) एवं अल्लाह् ही है जो तौबः स्वीकार करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।१०४।

---

1. प्रथम बार जब कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के स्वर्गवास के बाद मुनाफ़िक़ों और उन के साथियों का सर्वनाश हुआ। दूसरी बार तो इन मुनाफ़िक़ों की आशाओं का भण्डार ही विनष्ट हो गया अर्थात् ईसाई धर्म ग्रहण करने वाले अरबों का सर्वनाश हुआ।

2. सदक़ा या दान निर्धन और असहाय लोगों के लिए ख़र्च किया जाता है। वह न तो अल्लाह् के लिए ख़र्च होता है न उस के रसूल के लिए।

وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ وَسَتُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾

और उन से कह दे कि अपने ढंग से काम करते जाओ। अल्लाह एवं उस का रसूल और मोमिन लोग अवश्य तुम्हारे कर्मों की हक़ीक़त को देखते रहेंगे और तुम अवश्य ही व्यक्त अव्यक्त के जानने वाले अल्लाह की ओर लौटाए जाओगे वह और तुम्हारे कर्मों की हक़ीक़त तुम्हें बताएगा।१०५।

وَآخَرُونَ مُرْجَوْنَ لِأَمْرِ اللّٰهِ إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠٦﴾

और कुछ ऐसे लोग भी हैं जो अल्लाह के आदेश की प्रतीक्षा में छोड़े[1] गए हैं। चाहे वह उन्हें अज़ाब दे अथवा उन की तौब: स्वीकार करे और अल्लाह बहुत जानने वाला और हिक्मत वाला है।१०६।

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ مِن قَبْلُ ۚ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنَىٰ ۖ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٠٧﴾

और वह लोग जिन्हों[2] ने एक मस्जिद हानि पहुँचाने, कुफ़्र (नास्तिकता) का प्रचार करने और मोमिनों के बीच फूट डालने के लिए बनाई है तथा जो व्यक्ति अल्लाह और उस के रसूल से लड़ चुका है उस के लिए घात में बैठने का स्थान बनाने के लिए वे अवश्य शपथ लेंगे कि इस मस्जिद के बनाने में हमारा उद्देश्य केवल भलाई करना था और अल्लाह गवाही देता है कि वे निश्चय ही झूठ बोल रहे हैं।१०७।

---

1. अर्थात् उन के विरुद्ध कोई कारवाई नहीं की जाएगी जब तक कि अल्लाह की आज्ञा न आ जाए।

2. जब इस्लाम धर्म उन्नति कर गया और मुनाफ़िक़ निराश हो गए तो उन्हें अबू-आमिर राहिब ने सन्देश भेजा कि मेरे लिए मुसलमानों से अलग एक भवन का निर्माण करो, उस स्थान पर आ कर परामर्श कर के रोम के बादशाह क़ैसर के पास जाऊँगा तथा उस की सेनाओं द्वारा मदीना पर आक्रमण करा दूंगा। उस समय मस्जिदे-नबवी के सिवा एक और मस्जिद मदीना के एक छोर पर मुसलमानों

(शेष पृष्ठ ४१८ पर)

لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ۝

(हे नबी !) तू इस (मस्जिद) में कदापि खड़ा न हो। वह मस्जिद जिस की नींव पहले दिन से ही संयम पर रखी गई है यह अधिक हक़ रखती है कि तू उस में (नमाज़ पढ़ाने के लिए) खड़ा हो। उस में (आने वाले) ऐसे लोग हैं जिन की अभिलाषा यह है कि वे बिल्कुल पवित्र हो जाएँ और अल्लाह पूर्ण रूप से पवित्र रहने वालों को पसन्द करता है।१०८।

اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

क्या वह मनुष्य अधिक अच्छा है जो अपने मकान की नींव अल्लाह के तक़वा और उस की प्रसन्नता पर रखता है या वह मनुष्य जो अपने मकान की नींव एक फिसलने वाले किनारे पर रखता है जो गिर रहा होता है ? फिर वह किनारा उस मकान सहित नरक की आग में गिर जाता है एवं अल्लाह अत्याचारी जाति को सफलता का मार्ग नहीं दिखाता।१०९।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا رِيْبَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ ع

वह नींव जो उन्हों ने रखी थी वह उन के दिलों में सदैव दुविधा का कारण बनी रहेगी, सिवाय इस के कि उन के दिल टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ (वे मर जाएँ) और अल्लाह बहुत जानने वाला और बड़ी हिक्मत वाला है। ११०। (रुकू १३/२)

(पृष्ठ ४१७ का शेष)

की थी। मुनाफ़िक़ों ने अबू-आमिर के रहस्य को गुप्त रखने के लिए एक दूसरी मस्जिद का निर्माण किया और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की सेवा में उस में नमाज़ पढ़ाने की प्रार्थना की, परन्तु अल्लाह ने आप को रोक दिया। अबू-आमिर ने मूर्खतावश यह समझा कि किसी ने जासूसी कर दी है और वह मदीना छोड़ कर भाग गया। उस का भाग जाना मुसलमानों और रूमियों में युद्ध की आधार भूत-शिला बना तथा मुसलमानों की विजय हुई।

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُم بِهِ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾

अल्लाह ने मोमिनों से उन की जानों और उन के मालों को (इस वादा पर) ख़रीद लिया है कि उन्हें जन्नत मिलेगी, क्योंकि वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं। अत: (या तो वह) अपने शत्रुओं को मार देते हैं या स्वयं मारे जाते हैं। यह एक ऐसा वादा है जिसे पूरा करना उस (अल्लाह) के लिए जरूरी है और तौरात एवं इञ्जील (में भी वर्णित किया गया है) तथा क़ुर्आन में भी और अल्लाह से बढ़ कर अपने वादा को पूरा करने वाला दूसरा कौन हो सकता है ? अतएव (हे मोमिनो !) अपने इस व्यापार पर प्रसन्न हो जाओ, जो तुम ने किया है और यही वह महान् सफलता है (जिस की मोमिनों से प्रतिज्ञा की गई है) ।१११।

التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾

(जो लोग) तौब: करने वाले हैं, उपासना करने वाले हैं (अल्लाह की राह में) यात्रा करने वाले हैं, रुकू करने वाले हैं, सजद: करने वाले हैं, भली बातों की आज्ञा देने वाले हैं, बुरी बातों से रोकने वाले हैं और अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करने वाले हैं, तू ऐसे मोमिनों को शुभ-समाचार सुना दे ।११२।

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَن يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١١٣﴾

इस बात के खुल जाने के बाद कि मुश्रिक लोग नरक वाले हैं— यह बात नबी और मोमिनों की शान के ख़िलाफ़ थी कि वे उन के लिए क्षमा की प्रार्थना करते। भले ही वे निकट सम्बन्धी क्यों न हों ।११३।

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَن مَّوْعِدَةٍ

और इब्राहीम का अपने पिता के लिए क्षमा की प्रार्थना करना केवल इस लिए था कि

وَعَدَهَآ إِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُۥٓ أَنَّهُۥ عَدُوٌّ لِّلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ
إِنَّ إِبْرَٰهِيمَ لَأَوَّٰهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٤﴾

उस ने उस से एक प्रतिज्ञा की थी, किन्तु जब उस पर खुल गया कि वह अल्लाह का शत्रु है तो वह उस प्रतिज्ञा से पूरे तौर से अलग हो गया। इब्राहीम अत्यन्त कोमल हृदय वाला एवं बुद्धिमान था।११४।

وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًۢا بَعْدَ إِذْ هَدَىٰهُمْ
حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُم مَّا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

और यह अल्लाह की शान के ख़िलाफ़ है कि वह किसी जाति को हिदायत देने के बाद गुमराह ठहरा दे, जब तक कि वह उन के सामने वे बातें न बता दे जिन से उन्हें बचना चाहिए। अल्लाह हर-एक बात को जानता है।११५।

إِنَّ ٱللَّهَ لَهُۥ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ يُحْىِۦ
وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ مِن
وَلِىٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١١٦﴾

निस्सन्देह आसमानों तथा जमीन का अनुशासन अल्लाह का ही है। वह जीवित भी करता है तथा मौत भी देता है और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई मित्र है और न कोई सहायक।११६।

لَقَد تَّابَ ٱللَّهُ عَلَى ٱلنَّبِىِّ وَٱلْمُهَٰجِرِينَ وَٱلْأَنصَارِ
ٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوهُ فِى سَاعَةِ ٱلْعُسْرَةِ مِنۢ بَعْدِ مَا
كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۚ
إِنَّهُۥ بِهِمْ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٧﴾

अल्लाह ने नबी, मुहाजरीन और अन्सार पर बड़ी कृपा की (अर्थात् उन लोगों पर) जिन्हों ने उस विपत्ति-काल में उस (नबी) का अनुसरण किया जब कि उन में से कुछ लोगों के दिल भ्रम में पड़ गए थे। उस ने पुनः उन (निर्बलों) पर भी कृपा की। निस्सन्देह वह उन (मोमिनों) से प्रेम करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।११७।

وَعَلَى ٱلثَّلَٰثَةِ ٱلَّذِينَ خُلِّفُوا۟ حَتَّىٰٓ إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ ٱلْأَرْضُ بِمَا

इसी प्रकार उस ने उन तीनों[1] पर भी

1. यह उन तीन सहाबा (साथियों) की ओर संकेत हैं जो मुनाफ़िक़ तो न थे, परन्तु भूलवश तबूक नामक युद्ध से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के साथ जाने से पीछे रह गए थे। वास्तव में वे पक्के मोमिन थे। अतः उन्हें हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने अल्लाह की आज्ञा के अनुसार दण्ड दिया और जो मुनाफ़िक़ थे उन्हें बिना दण्ड दिए छोड़ दिया था।

رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَن لَّا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١١٨﴾

(कृपा की) जो कि पीछे छोड़े गए थे यहाँ तक कि धरती विस्तृत होते हुए भी उन के लिए तंग हो गई तथा उन की जानें उन पर बोझ बन गईं और उन्हों ने यह समझ लिया कि अब अल्लाह के अज़ाब से सुरक्षित रहने के लिए उस (अल्लाह) की शरण के सिवा कोई शरणागार नहीं। फिर उन की दशा देख कर अल्लाह ने उन पर दया की ताकि वे भी तौबः करें। अल्लाह निश्चय ही तौबः (पश्चाताप) स्वीकार करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।११८। (रुकू १४/३)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ﴿١١٩﴾

हे मोमिनो! अल्लाह के लिए संयम धारण करो और सत्यवादियों में शामिल हो जाओ।११९।

مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُم مِّنَ الْأَعْرَابِ أَن يَتَخَلَّفُوا عَن رَّسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنفُسِهِمْ عَن نَّفْسِهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطَئُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُم بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢٠﴾

मदीना के निवासी और जो लोग उन के आस-पास ग्रामीण (और जंगली) रहते हैं उन के लिए यह उचित न था कि अल्लाह के रसूल को अकेला छोड़ कर आप पीछे रह जाते और न यह कि उस की जान से बे-परवाह हो कर अपनी जानों की चिन्ता में लग जाते। यह (निर्णय) इसलिए किया जाता है कि अल्लाह की राह में उन पर प्यास या थकान या भूख की कोई घड़ी नहीं आती और न ही वे किसी जमीन पर चलते हैं जिस के कारण इन्कार करने वाले लोगों में क्रोध पैदा होता हो तथा न वे शत्रुओं पर कोई विजय पाते हैं, परन्तु इन के फलस्वरूप कोई न कोई नेकी उन के लिए न लिखी जाती हो। अल्लाह उपकार करने वाले लोगों के प्रतिफल को कदापि नष्ट नहीं करता।१२०।

وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾

और वे अल्लाह की राह में कुछ थोड़ा सा या बहुत सा खर्च नहीं करते और न वे किसी घाटी को पार करते हैं, किन्तु (तुरन्त ही उन की कर्म-सूची में) वह नेकी लिख ली जाती है ताकि अल्लाह उन के कर्मों का उत्तम से उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।१२१।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾ ع

और मोमिनों के लिए यह सम्भव न था कि वे सब के सब (इकट्ठे हो कर धार्मिक शिक्षा के लिए) निकल पड़े। अत: ऐसा क्यों नहीं हुआ कि उन में से एक गिरोह निकल खड़ा होता ताकि वे पूर्ण-रूप से धार्मिक शिक्षा ग्रहण करते और वापस लौट कर अपनी जाति के लोगों को (अधर्म से) सावधान करते तो वे (पथ-भ्रष्टता से) डरने लगे।१२२। (रुकू १५/४)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُم مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

हे मोमिनो ! उन इन्कार करने वाले लोगों से (रक्षात्मक) युद्ध करो जो तुम्हारे आस-पास रहते हैं और चाहिए कि वे तुम्हारे भीतर मज़बूती अनुभव करें तथा समझ लो कि अल्लाह संयमियों के साथ है।१२३।

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُم مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِ إِيمَانًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾

और जब कोई सूर: उतरती है तो उन में से कुछ (मुनाफ़िक़) कहते हैं कि इस सूर: ने तुम में से किस का ईमान बढ़ाया है ? सो (याद रखो कि) जो लोग मोमिन हैं (उनके पहले ईमान के फलस्वरूप) इस सूर: ने उन के ईमान को और भी बढ़ाया है तथा वे प्रसन्न हो रहे हैं।१२४।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۲۵﴾

और जिन लोगों के दिलों में रोग है इस सूरः ने उन के (पहले) गंद पर और भी गंद चढ़ा दिया है यहाँ तक कि वे ऐसी दशा में मरेंगे कि वे इन्कार करने वाले ही होंगे ।१२५।

اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾

क्या वे देखते नहीं कि उन की प्रत्येक वर्ष एक बार या दो बार परीक्षा की जाती है, परन्तु फिर भी वे तौबः नहीं करते और न उपदेश स्वीकार करते हैं ।१२६।

وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿۱۲۷﴾

और जब कोई सूरः उतरती है तो उन में से कुछ लोग एक-दूसरे को देखने लग जाते हैं ताकि वे जान लें कि क्या कोई व्यक्ति तुम्हें देख तो नहीं रहा । फिर (संतुष्ट होने के बाद) ये (लोग सभा से) चले जाते हैं। अल्लाह ने उन के दिलों को फेर दिया है क्यों कि वे ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं ।१२७।

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾

(हे मोमिनो !) तुम्हारे पास तुम्हारी ही जाति में से एक व्यक्ति रसूल हो कर आया है। तुम्हारा कष्ट में पड़ना उसे असहनीय है और वह तुम्हारे लिए भलाई का बहुत इच्छुक है तथा मोमिनों के साथ प्रेम करने वाला और बहुत कृपा करने वाला है ।१२८।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۲۹﴾ ع

सो यदि वे विमुख हो जाएँ तो तू कह दे कि मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है। उस के सिवा कोई उपास्य नहीं। मैं उसी पर भरोसा करता हूँ और वह बड़े अर्श (सिंहासन) का रब्ब है ।१२९। (रुकू १६/५)
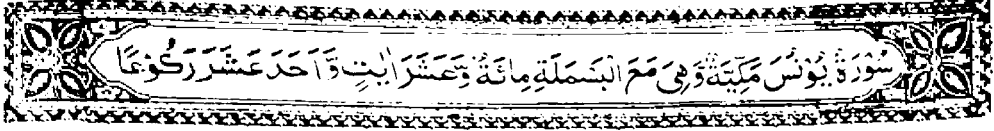
सूरः यूनुस

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की एक सौ दस आयतें एवं ग्यारह रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ②

अलिफ़. लाम. रा। मैं अल्लाह देखने वाला हूँ। ये कामिल एवं हिक्मत वाली किताब की आयतें हैं।२।

اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ③

क्या लोगों के लिए हमारा उन्हीं में से एक व्यक्ति पर यह वह्य उतारना कि लोगों को सावधान कर और जो लोग ईमान लाए हैं उन्हें शुभ-समाचार सुना कि उन के लिए उन के रब्ब के पास एक ऊँचा और कामिल दर्जा है (ऐसी) अचम्भे की बात थी कि इन इन्कार करने वाले लोगों ने कह दिया कि यह व्यक्ति अवश्य ही खुला-खुला कपटी है?।३।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مَا

निस्सन्देह तुम्हारा रब्ब अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन की रचना छः दौरों में की, तदुपरांत वह अर्श (अर्थात् ज्ञान के सिंहासन) पर क़ायम हुआ। वह प्रत्येक बात का प्रबन्ध करता है। (उस के सामने) कोई भी उस की

مِن شَفِيعٍ إِلَّا مِنۢ بَعْدِ إِذْنِهِۦ ذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ رَبُّكُمْ فَٱعْبُدُوهُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝

आज्ञा के बिना किसी की सिफ़ारिश करने वाला नहीं हो सकता। सुनो! यह अल्लाह तुम्हारा रब्ब है। इसलिए तुम उसी की उपासना करो। क्या तुम (इन बातों के होते हुए) फिर भी शिक्षा ग्रहण नहीं करोगे? ।४।

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا وَعْدَ ٱللَّهِ حَقًّا إِنَّهُۥ يَبْدَؤُا۟ ٱلْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُۥ لِيَجْزِىَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ بِٱلْقِسْطِ وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌۢ بِمَا كَانُوا۟ يَكْفُرُونَ ۝

तुम सभी को उसी की ओर लौट कर जाना है। यह अल्लाह की प्रतिज्ञा है जो पूरी हो कर रहने वाली है। निस्सन्देह वह सृष्टि रचता है फिर उसे दोहराता है ताकि जो लोग ईमान लाए हैं और उन्हों ने भले (एवं परिस्थिति के अनुकूल) कर्म किए उन्हें पूरा-पूरा प्रतिफल प्रदान करे तथा जिन लोगों ने इन्कार किया उन के लिए खौलता हुआ पानी होगा और एक दुःखदायक अज़ाब होगा, क्योंकि वे इन्कार करते चले जाते थे ।५।

هُوَ ٱلَّذِى جَعَلَ ٱلشَّمْسَ ضِيَآءً وَٱلْقَمَرَ نُورًا وَقَدَّرَهُۥ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا۟ عَدَدَ ٱلسِّنِينَ وَٱلْحِسَابَ مَا خَلَقَ ٱللَّهُ ذَٰلِكَ إِلَّا بِٱلْحَقِّ يُفَصِّلُ ٱلْءَايَٰتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

वही है जिस ने सूर्य को निजी प्रकाश वाला एवं चन्द्रमा को उज्जवल बनाया और एक अनुमान के अनुसार उस की राशियाँ बनाई हैं ताकि तुम्हें वर्षों की गिनती और हिसाब का ज्ञान हो सके। इस (क्रम) की रचना अल्लाह ने हक़ और हिक्मत के साथ की है। वह इन आयतों को ज्ञान रखने वाले लोगों के लिए खोल-खोल कर वर्णन करता है ।६।

إِنَّ فِى ٱخْتِلَٰفِ ٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ ٱللَّهُ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يَتَّقُونَ ۝

रात और दिन के आगे-पीछे आने में तथा जो कुछ अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा किया है, उस में संयमी लोगों के लिए निश्चय ही बहुत से निशान हैं ।७।

إِنَّ ٱلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَآءَنَا وَرَضُوا۟ بِٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا

जिन लोगों को हमारी भेंट की आशा नहीं और वे इसी सांसारिक जीवन पर मोहित

وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝٨

हो गए हैं एवं इसी पर संतुष्ट हो गए हैं और फिर जो लोग हमारे निशानों से ग़ाफिल हो गए हैं ।८।

اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٩

निस्सन्देह इन की कमाई के कारण इन सब का ठिकाना (नरक की) आग है ।९।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝١٠

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे एवं उचित कर्म किए, उन्हें उन का रब्ब उन के ईमान के कारण सफलता की राह दिखाएगा और सुख देने वाले जन्नतों में (प्रवेश करेगा जिस में) उन्हीं के अधिकार के नीचे नहरें बहती होंगी ।१०।

دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١١

उन (जन्नतों) में (अल्लाह के सामने) उन की पुकार यह होगी कि हे अल्लाह ! तू पवित्र है। उन का (एक-दूसरे के लिए) यह आशीर्वाद होगा कि तुम पर सदैव शान्ति हो तथा अन्त में वे उच्चस्वर से यह कहेंगे कि सारी स्तुतियों का अधिकारी केवल अल्लाह ही है' ।११। (रुकू १/६)

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ۗ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَاۗءَنَا

और यदि अल्लाह लोगों को उन के बुरे कर्मों का फल उसी प्रकार शीघ्र दे देता जिस प्रकार वे धन पा लेने में शीघ्रता करते हैं तो उन के जीवन का अन्तिम समय

---

1. स्वर्ग में निवास करने पर उन के मुँह से इन शब्दों के सिवा कि 'सारी स्तुतियों का अधिकारी केवल अल्लाह ही है' और कुछ नहीं निकलेगा, क्योंकि वे अपने प्रतिफल पर पूर्ण रूप से संतुष्ट होंगे। इस का एक और अर्थ यह है कि मोमिनों का परिणाम ऐसा ही उत्तम हुआ करता है कि अन्तिम परिणाम के समय वे अल्लाह की स्तुति एवं उस की पवित्रता के गुणों का गान करते हैं मानों वे सदा सफलता प्राप्त करते रहते हैं।

فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ۝

उन पर कभी का लाया जा चुका होता (किन्तु हमें ऐसा पसंद नहीं)। अतः हम ने उन लोगों को जो हमारी भेंट की आशा नहीं रखते हैं इस दशा में छोड़ दिया है कि वे अपनी उद्दण्डता में भटकते फिर रहे हैं।१२।

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖۤ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَاۤ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ۝

और जब मनुष्य को कोई दुःख पहुँचता है तो वह अपने पहलू पर लेटे हुए अथवा बैठे हुए अथवा खड़े हुए हमें पुकारता है, तत्पश्चात् जब हम उस का दुःख दूर कर देते हैं तो वह (इस प्रकार कतरा कर) चला जाता है कि मानों उस ने अपने किसी दुःख को जो उसे पहुँचा था दूर करने के लिए हमें पुकारा ही नहीं था। इसी प्रकार सीमा उल्लंघन करने वाले लोगों को उन के कर्म सुन्दर कर के दिखाए गए हैं।१३।

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ۝

और निस्सन्देह हम तुम से पहले कई जातियों को विनष्ट कर चुके हैं जब कि उन के पास रसूल खुले-खुले निशान ले कर आए थे, परन्तु फिर भी वे ईमान नहीं लाए, बल्कि उन्हों ने अत्याचार से काम लिया था। हम अपराधियों को इसी प्रकार बदला दिया करते हैं।१४।

ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ۝

फिर हम ने तुम्हें उन के बाद धरती में उन का स्थान लेने वाला बनाया ताकि हम देखें कि तुम कैसे कर्म करते हो?।१५।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ

और जब उन्हें हमारी रोशन आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो जो लोग हमारी भेंट की

لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ۚ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ⑮

आशा नहीं रखते वे कह देते हैं कि (हे मुहम्मद !) तू इस के सिवा कोई दूसरा क़ुर्आन ले आ या इसी में कुछ परिवर्तन कर दे। तू उन्हें कह दे कि यह मेरा काम नहीं कि मैं अपनी ओर से इस में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन कर दूँ। मैं तो उस वह्य का अनुसरण करता हूँ जो मुझ पर उतारी जाती है और यदि मैं अपने रब्ब की अवज्ञा करूँ तो मैं एक बड़े भारी दिन के अज़ाब से डरता हूँ (कि वह मुझे पकड़ न ले) ।१६।

قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ⑯

और तू उन्हें कह दे कि यदि अल्लाह की यही इच्छा होती (कि इस की अपेक्षा कोई और शिक्षा दी जाए) तो मैं इस (क़ुर्आन) को तुम्हारे सामने पढ़ कर न सुनाता और न वह तुम्हें इस शिक्षा से आगाह करता। हक़ीक़त तो यह है कि मैं इस से पहले अपनी आयु का एक लम्बा समय[1] तुम में व्यतीत कर चुका हूँ। क्या फिर भी तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?।१७।

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۗ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ⑰

फिर (तुम ही बताओ कि) जो व्यक्ति अल्लाह पर झूठ गढ़े या उस के निशानों को झुठलाए तो उस से बढ़ कर दूसरा कौन अत्याचारी हो सकता है? (सारांश) यह विश्वसनीय बात है कि अपराधी लोग सफलता प्राप्त नहीं कर सकते ।१८।

1. क्या तुम लोग मेरे विगत जीवन पर विचार नहीं करते कि अल्लाह तो बहुत बड़ी बात है मैं ने तो किसी मनुष्य से भी कभी कोई झूठी बात नहीं कही।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ۭ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ⑱

और ये लोग अल्लाह को छोड़ कर ऐसी वस्तु की पूजा करते हैं जो न तो उन के लिए हानिकारक है तथा न लाभदादयक और कहते हैं कि ये (हमारे उपास्य) अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिशी हैं। तू उन्हें कह दे कि क्या तुम अल्लाह को वह बात बताते हो जिस[1] के आसमानों तथा ज़मीन में पाए जाने का उसे कोई पता नहीं। वह पवित्र है और उन के शरीक ठहराने से बहुत ऊँचा है।१९।

وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ۭ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ⑲

और सारे लोग एक ही गिरोह[2] थे, फिर उन्हों ने आपस में मतभेद पैदा कर लिया और जो बात तेरे रब्ब की ओर से पहले (प्रतिज्ञा के रूप में) आ चुकी[3] है यदि वह रोक न बनती तो जिस बात में वे मतभेद कर रहे हैं उस के बारे में उन के बीच बहुत पहले से ही निर्णय किया जा चुका होता।२०।

وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا

और वे कहते हैं कि इस रसूल पर उस के रब्ब की ओर से कोई निशान क्यों नहीं उतारा गया? तू उन्हें कह दे कि ग़ैब (परोक्ष) की हर बात का ज्ञान अल्लाह को ही है। अत: तुम उस की प्रतीक्षा करो।

---

1. जिस बात का अन्तर्यामी अल्लाह को ज्ञान नहीं वह बात हो ही कैसे सकती है।

2. सारे लोग इन्कार करने और गुमराही के सम्बन्ध में एक मत थे। विवरण के लिए देखिए सूर: बकर: टिप्पणी आयत नं० 214।

3. यह इस ईशवाणी की ओर संकेत है कि मेरी दयालुता सब पर छाई हुई है। (आराफ़ आयत नं० 157)

الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝٢١ ع

मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ।२१। (रुकू २/७)

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُمْ مَكْرٌ فِي آيَاتِنَا ۚ قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ۝٢٢

और जब हम लोगों को किसी दुःख के बाद जो उन्हें पहुँच चुका हो अपनी रहमत का रसास्वादन कराते हैं तो तुरन्त ही उन की ओर से हमारी आयतों के विरुद्ध कोई न कोई उपाय होने लगता है। तू उन्हें कह दे कि अल्लाह का उपाय शीघ्र ही सिद्ध हुआ करता है तथा तुम जो उपाय करते हो हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उन्हें लिखते रहते हैं।२२।

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝٢٣

वह (अल्लाह) ही है जो तुम्हें (सामर्थ्य प्रदान कर के) थल और जल में चलाता है यहाँ तक कि जब तुम नौकाओं में (सवार) होते हो और वे अनुकूल वायु द्वारा उन को लिए जा रही होती हैं तथा वे उन (के चलने) पर इतरा रहे होते हैं, तो अचानक उन पर एक तेज हवा आ जाती है और प्रत्येक ओर से उन पर लहरें चढ़ने लगती हैं और वे समझने लगते हैं कि अब वे हलाकत (के मुँह) में आ गए हैं, तो (ऐसे अवसर पर) वे अपनी आज्ञापालन को अल्लाह के लिए मुख्य रूप से विशेष करते हुए उसे पुकारते हैं कि हे अल्लाह ! यदि तू ने हमें इस विपत्ति से बचा लिया तो हम अवश्य ही तेरे कृतज्ञ लोगों में शामिल हो जाएँगे।२३।

فَلَمَّا أَنْجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ ۖ مَتَاعَ الْحَيَاةِ

फिर जब वह उन्हें इस (अज़ाब से) निकाल कर भूस्थल पर पहुँचा देता है तो वे अकारण धरती पर उपद्रव करने लगते हैं। (हे लोगो !) तुम्हारा केवल

الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾

इसी सांसारिक जीवन को पसन्द करना तुम्हारी जानों पर (विपत्ति बन कर) पड़ेगा, फिर हमारी ओर लौट कर तुम्हें आना होगा तब जो कुछ तुम करते रहे होंगे उस से हम तुम्हें सूचित करेंगे।२४।

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ أَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَ الْأَنْعَامُ ۭ حَتّٰٓى إِذَآ أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَ ازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَآ أَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ أَتٰهَآ أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَأَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْأَمْسِ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

इस सांसारिक जीवन की हालत तो उस पानी की तरह है जिसे हम ने बादल से बरसाया हो, फिर उस के साथ धरती की वनस्पति मिल गई हो जिसे मनुष्य तथा पशु-पक्षी खाते हैं, यहाँ तक कि जब धरती ने अपनी कमाल दर्जे की ज़ीनत को पा लिया और रूपवती हो गई और उस के मालिकों ने यह समझ लिया कि अब वे उस पर अधिकार जमा चुके हैं तो उस पर रात या दिन को हमारा (अज़ाब के बारे में) आदेश आ गया और हम ने उसे कटे हुए खेत की तरह बना दिया, मानों वहाँ कल कुछ भी न था। सो जो लोग समझ से काम लेते हैं उन के लिए हम अपनी आयतें खोल-खोल कर वर्णन करते हैं।२५।

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا إِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ۭ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

और अल्लाह शान्ति के घर की ओर बुलाता है और वह जिसे पसन्द करता है उसे सम्मार्ग पर चला कर निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचा देता है।२६।

لِلَّذِيْنَ أَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ۭ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ۭ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا

उन लोगों का परिणाम बहुत अच्छा होगा जिन्हों ने अच्छे काम किए और (इस के सिवा उन के लिए दूसरे पुरस्कार) भी होंगे। उन के चेहरों पर न तो कालिख छाई हुई होगी और न अपमान के चिन्ह ही

خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷﴾

होंगे। यह लोग स्वर्ग के निवासी हैं और उस में सदैव निवास करते चले जाएँगे।२७।

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍۢ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۸﴾

और जिन्हों ने पाप किए होंगे उन के लिए पाप का बदला उसी पाप के बराबर होगा तथा उन्हें रुसवाई पहुँचेगी और उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाला कोई नहीं होगा (एवं उन की दशा ऐसी होगी) मानों उन के चेहरों पर रात के काले टुकड़े[1] डाल दिए गए हैं। ये लोग आग में रहने वाले हैं। उस में लम्बे समय तक निवास करते चले जाएँगे।२८।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿۲۹﴾

और हे लोगो! उस दिन को याद करो जिस दिन हम उन सब (इन्कार करने वाले) लोगों को इकट्ठा करेंगे, फिर जिन्हों ने शिर्क किया होगा हम उन्हें कहेंगे कि तुम तथा तुम्हारे (बनाए हुए अल्लाह के) साझेदार दूर खड़े रहो, फिर हम उन में भी आपस में दूरी डाल देंगे और उन के (बनाए हुए अल्लाह के) साझी उन्हें कहेंगे कि तुम हमारी उपासना (तो बिल्कुल) नहीं किया करते थे।२९।

فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿۳۰﴾

अतः हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह ही काफ़ी गवाह है हम तुम्हारी पूजा से बिल्कुल बे-ख़बर थे।३०।

هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ

तब वहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने बोए हुए का रसास्वादन करेगा तथा उन्हें उन के सच्चे स्वामी अल्लाह की ओर लौटा कर लाया

1. अर्थात् उन के चेहरे बहुत काले होंगे।

مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝

जाएगा और जो कुछ वे अपने पास से गढ़ते थे वह उन्हें सब भूल जाएगा।३१। (रुकू ३/८)

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝

तू उन्हें कह (कि बताओ) आसमान और ज़मीन से तुम्हें कौन जीविका प्रदान करता है अथवा कानों और आँखों पर किस का अधिकार है तथा कौन एक निर्जीव वस्तु से सजीव वस्तु को निकालता है और सजीव वस्तु से निर्जीव वस्तु निकालता है और कौन है जो यह सारा प्रबन्ध करता है? इस पर वे अवश्य कहेंगे कि अल्लाह (करता है) तब उन्हें कह कि क्यों तुम संयम धारण नहीं करते?।३२।

فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝

सो वह अल्लाह ही है जो ऐसा करता है। वास्तव में वही तुम्हारा रब्ब है और सच्चाई को छोड़ कर गुमराही के सिवा क्या मिल सकता है। अतएव (बताओ तो सही कि) तुम किस प्रकार (इधर-उधर) फेरे जा रहे हो?।३३।

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

इसी प्रकार जिन लोगों ने इन्कार से काम लिया उन के लिए तेरे रब्ब का कथन पूरा हो गया है कि वे ईमान नहीं लाते।३४।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ

तू उन्हें कह कि क्या तुम्हारे (कल्पित) साझियों में से कोई एक भी ऐसा है जो पहली बार पैदा करता हो और फिर उस पैदाइश को दोहराता हो? तू उन्हें कह कि अल्लाह ही है जो पहली बार पैदा करता है और फिर

يُعِيْدُهٗ ۚ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾

उस (पैदाइश) को दोहराता[1] भी रहता है। अतः बताओ फिर भी तुम्हें किधर फेरा जा रहा है? ।३५।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ۗ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ۗ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۗ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾

तू कह दे कि क्या तुम्हारे बनाए हुए साझियों में से कोई भी ऐसा है जो लोगों को सच्चाई की राह दिखाता हो? (वे तो इस का क्या उत्तर देंगे) तू (स्वयं ही उन्हें) कह दे कि अल्लाह (ही है जो) लोगों को सच्चाई की राह दिखाता है। क्या वह (अल्लाह) जो सच्चाई की राह दिखाता है इस बात का अधिक अधिकारी है कि उस (के आदेशों) का अनुसरण किया जाए या वह (बनाए हुए उपास्य) जो स्वयं भी सीधी राह नहीं पा सकते जब तक कि उन्हें सच्चाई की राह न दिखाई जाए। बताओ, तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसे निर्णय करते हो? ।३६।

وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ۗ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

और उन में से अधिकतर लोग अपने भ्रम के सिवा किसी का अनुसरण नहीं करते। हालाँकि भ्रम सत्य के मुक़ाबिला में लेशमात्र भी काम नहीं देता। जो कुछ ये करते हैं अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।३७।

وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ

और इस क़ुर्आन का अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की ओर से झूठे तौर पर बना लिया जाना असम्भव है अपितु यह तो उस (वाणी) का समर्थक है जो इस से पहले आ चुकी है और (अल्लाह की) किताब में जो कुछ पाया जाना चाहिए उस का विवरण बताता है और

1. अर्थात् सृष्टि करता रहता है।

لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٨﴾

इस में भी कोई सन्देह नहीं कि यह सारे जहानों के रब्ब की ओर से आया है ।३८।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٩﴾

क्या वे कहते हैं कि इस ने इसे अपनी ओर से गढ़ लिया है ? तू उन्हें कह दे कि यदि तुम सच्चे हो तो इस जैसी कोई एक ही सूरः ले आओ और अल्लाह को छोड़ कर तुम जिसे बुलाने की शक्ति रखते हो (अपनी सहायता के लिए) बुला लो ।३९।

بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

वास्तव में उन्हों ने एक ऐसी बात को झुठलाया है जिस का पूरा ज्ञान उन्हों ने प्राप्त ही नहीं किया था और न उन पर अभी तक उस की वास्तविकता ही ज़ाहिर हुई थी। जो लोग उन से पहले थे उन्हों ने भी इसी प्रकार झुठलाया था। फिर देख ! उन अत्याचारियों का क्या परिणाम निकला था ।४०।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤١﴾ ع

और उन (ईसाइयों) में से कुछ लोग ऐसे हैं जो इस पर ईमान[1] लाएँगे तथा कुछ ऐसे हैं जो इस पर ईमान नहीं लाएँगे और तेरा रब्ब फ़साद करने वालों को भली-भाँति जानता है ।४१। (रुकू ४/९)

وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ

यदि वे तुझे झुठलाएँ तो तू उन्हें कह कि मेरा कर्म मेरे लिए (लाभदायक या हानिकारक) होगा और तुम्हारा कर्म तुम्हारे लिए। जो कुछ मैं करता हूँ उस की जिम्मेदारी तुम

1. यह एक भविष्यवाणी है कि किसी न किसी समय ईसाइयों की बहुसंख्या क़ुर्आन पर ईमान ले आएगी।

بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

पर नहीं तथा जो कुछ तुम करते हो उस की ज़िम्मेदारी मुझ पर नहीं ।४२।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ۝

उन में से कुछ लोग ऐसे हैं जो तेरी बातों की ओर हर समय कान लगाए रखते हैं। तो क्या तू ऐसे बहरों को जो बुद्धि से काम नहीं लेते (अपनी बात) सुनवा सकेगा ? ।४३।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِى الْعُمْىَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ۝

और उन में से कुछ लोग ऐसे हैं जो तेरी ओर (आँखें लगा कर) देखते रहते हैं। तो क्या तू इन अन्धों को जिन्हें कुछ भी सुझाई नहीं देता राह दिखा सकेगा ? ।४४।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝

निस्सन्देह अल्लाह लोगों पर कुछ भी अत्याचार नहीं करता अपितु लोग स्वयं ही अपने-आप पर अत्याचार करते हैं ।४५।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝

और जिस दिन वह उन्हें ऐसी अवस्था में इकट्ठा करेगा कि मानों वे अनुभव करते होंगे कि वे दिन की एक घड़ी के सिवा (संसार में) नहीं रहे थे। उस दिन उन्हें एक-दूसरे (की दशा) का ज्ञान हो जाएगा। (याद रखो) जिन लोगों ने अल्लाह के सामने उपस्थित होने (की बात) को झुठलाया और उन्हों ने हिदायत को स्वीकार नहीं किया, उन्हों ने हानि ही उठाई ।४६।

وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ

और हम उन से जिस अज़ाब के भेजने की प्रतिज्ञा करते हैं यदि हम उस का कुछ अंश तुझे दिखा दें (तो तू भी देख लेगा) और यदि हम (उस से पहले) तुझे मौत दे दें तो (भी तुझे मौत के बाद इस की वास्तविकता का

أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٧﴾

ज्ञान हो जाएगा और चूँकि) उन्हों ने हमारी ओर ही लौट कर आना है (तो उन्हें भी इस की वास्तविकता का ज्ञान हो जाएगा) और (याद रखो कि) जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है ।४७।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٨﴾

और प्रत्येक जाति के लिए एक न एक रसूल (का आना अनिवार्य) है । अतः जब उन के रसूल का प्रादुर्भाव होता है तो उन के बीच न्यायपूर्वक निर्णय कर दिया जाता है और उन पर कुछ भी अत्याचार नहीं किया जाता ।४८।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٩﴾

और वे कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह प्रतिज्ञा कब पूरी होगी ? ।४९।

قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٥٠﴾

तू उन्हें कह कि मैं तो स्वयं अल्लाह की इच्छा के बिना अपने लिए भी न तो किसी हानि का तथा न किसी लाभ का अधिकार रखता हूँ (हाँ ! यह सच है कि) प्रत्येक जाति के लोगों (के दण्ड भोगने) के लिए एक समय निश्चित है । जब वह समय आ जाता है तो फिर न कोई उस से क्षण भर पीछे रह कर बच सकता है और न ही आगे बढ़ कर बच सकता है ।५०।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥١﴾

तू उन्हें कह दे कि बताओ तो सही कि यदि उस का अज़ाब रात को या दिन को (तुम्हारे देखते-देखते) तुम पर आ जाए तो अपराधी लोग उस से क्यों कर भाग सकेंगे ? ।५१।

أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ آمَنتُم بِهِ ۚ آلْآنَ وَقَدْ كُنتُم بِهِ

फिर क्या जब वह (अज़ाब) आ जाएगा तो (उस समय) तुम उस पर ईमान लाओगे ?

تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝

(इस का कोई लाभ न होगा। उस समय तो तुम से कहा जाएगा कि) क्या अब ईमान लाते हो जब कि तुम (इस से पूर्व) उस के शीघ्र आने की माँग करते रहे हो? ।५२।

ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۝

फिर जिन लोगों ने अत्याचार किया होगा उन्हें कहा जाएगा कि तुम स्थायी अज़ाब का स्वाद चखो। तुम्हें तुम्हारे कर्मों के सिवा किसी और चीज़ का बदला नहीं दिया जा रहा ।५३।

وَيَسْتَنْۢبِئُوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ قُلْ اِيْ وَرَبِّيْ اِنَّهٗ لَحَقٌّ وَمَا اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝ ع

और वे तुझ से पूछते हैं कि क्या वह (अज़ाब) आएगा भी? तू उन्हें कह दे हाँ! मुझे अपने रब्ब की सौगन्ध! वह निश्चय ही आ कर रहने वाला है और तुम (अल्लाह को) ऐसा करने से असमर्थ नहीं बना सकते ।५४। (रुकू ५/१०)

وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝

और यदि हर-एक अत्याचारी को सब कुछ मिल जाता जो कि धरती में है तो वह उस को दे कर अपने-आप को मुक्त कराने का यथा-सम्भव प्रयत्न करता (अर्थात् यदि ऐसा हो सकता परन्तु ऐसा न हो सकेगा) और वे जब अज़ाब को देखेंगे तो वे अपनी लज्जा को छिपाएँगे तथा उन में न्यायपूर्वक फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर कुछ भी अत्याचार नहीं किया जाएगा ।५५।

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَلَآ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

सुनो! जो कुछ आसमानों तथा ज़मीन में है निस्सन्देह वह सारा अल्लाह का ही है और अल्लाह का वादा निश्चय ही पूरा होने वाला है, परन्तु उन में से अधिकतर लोग नहीं जानते ।५६।

هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٥٦

वह जीवन देता है तथा मारता भी है और उसी की ओर तुम्हें लौटाया जाएगा ।५७।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٥٧

हे लोगो ! निस्सन्देह तुम्हारे रब्ब की ओर से तुम्हारे पास एक ऐसी किताब आ चुकी है जो (सरासर) उपदेश है और वह सीनों में पाए जाने वाले रोगों को दूर करने वाली और ईमान लाने वालों के लिए हिदायत और रहमत है ।५८।

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ۭ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝٥٨

तू उन्हें कह दे कि यह सब अल्लाह ही की कृपा है और उस की दया है। अतः उन्हें इसी पर प्रसन्न होना चाहिए। जो धन वे इकट्ठा कर रहे हैं उस से यह निअमत कहीं बढ़ कर उत्तम है ।५९।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ۭ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۝٥٩

तू उन्हें कह दे कि क्या तुम ने कभी इस बात को सोचा है कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए आसमान से रोज़ी उतारी है, फिर तुम ने उस में से कुछ चीज़ें हराम तथा कुछ हलाल ठहरा ली हैं। तू उन्हें कह दे कि क्या अल्लाह ने तुम्हें (इस बात की) आज्ञा दी है या तुम अल्लाह पर झूठ गढ़ रहे हो ? ।६०।

وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝٦٠ ع

जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं उन का क़ियामत के दिन के बारे में क्या विचार है ? अल्लाह निश्चय ही लोगों को बड़े-बड़े पुरस्कार देने वाला है, परन्तु उन में से बहुत से लोग धन्यवादी नहीं होते ।६१। (रुकू ६/११)

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِن قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ وَمَا يَعْزُبُ عَن رَّبِّكَ مِن مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِن ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝

और तू न तो किसी काम में लगा होता है, न इस किताब में से कोई भाग क़ुर्आन का पढ़ता है और न ही तुम लोग कोई और काम कर रहे होते हो, परन्तु इन सब हालतों में जब तुम अपने कामों में पूरे ध्यान से लगे होते हो तो हम तुम्हें देख रहे होते हैं और ज़मीन तथा आसमान में लेशमात्र वस्तु भी तेरे रब्ब से ओझल नहीं होती और न (ही कण से) कोई छोटी या कोई बड़ी वस्तु ऐसी है जो (हर एक हक़ीक़त को) खोल कर बताने वाली एक किताब में (अंकित) न हो ।६२।

أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

सुनो ! जो लोग अल्लाह से सच्चा प्रेम करने वाले हैं उन्हें न तो कोई भय होता है और न वे चिन्तित ही होते हैं ।६३।

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝

(अर्थात् ऐसे लोग) जो ईमान लाए और सदा संयम को अपनाए रखते थे ।६४।

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

(अल्लाह की ओर से) उन के लिए इस लोक में भी शुभ-समाचार है तथा परलोक में भी। अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। यही वह सफलता है जो बड़ी शान वाली है ।६५।

وَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

और चाहिए कि तुम्हें उन की कोई बात दुःख न दे, क्योंकि प्रभुता तो केवल अल्लाह को ही है और वह बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है ।६६।

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ وَمَا

सुनो ! जो भी आसमानों तथा ज़मीन में पाया जाता है वह सब अल्लाह का ही है

يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ۚ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿۶۶﴾

तथा जो लोग अल्लाह के सिवा (दूसरी चीज़ों को) पुकारते हैं वे वास्तव में अल्लाह के साझियों का अनुसरण नहीं करते बल्कि वे अपने भ्रम का ही अनुसरण करते हैं तथा वे अटकलों से काम लेते हैं।६७।

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿۶۷﴾

वह (अल्लाह) ही है जिस ने तुम्हारे लिए रात को इसलिए अन्धकारमय बनाया है कि उस में तुम विश्राम करो और इस के मुक़ाबिले में दिन को (काम-काज के लिए) प्रकाशमय बनाया है। जो लोग (सत्य बात को) सुनते (और उस से लाभ उठाते) हैं निस्सन्देह उन के लिए इस (व्यवस्था) में अनेक निशान हैं।६८।

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۖ هُوَ الْغَنِيُّ ۖ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۢ بِهٰذَا ۚ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۸﴾

और उन्हों ने (तो यहाँ तक) कह दिया कि अल्लाह ने भी अपने लिए सन्तान बना ली है। (हालाँकि हम मुसलमान तो उसे) इस बात से पवित्र ठहराते हैं। वह बड़ा बे-नियाज़ है (अर्थात् किसी का मुहताज नहीं)। जो कुछ आसमानों तथा ज़मीन में है सब उसी का है। (जो दावा तुम करते हो) इस का तुम्हारे पास कोई भी प्रमाण नहीं है, तो क्या तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बात कहते हो जिस के बारे में तुम कुछ नहीं जानते ?।६९।

قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ۝

तू उन्हें कह दे कि जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं वे कदापि सफल नहीं होते।७०।

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ

संसार में (उन का हिस्सा कुछ दिनों के लिए) लाभ प्राप्त करना है फिर उन्हें हमारी ओर ही लौट कर आना होगा, फिर इस कारण

الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧١﴾ ع	कि वे इन्कार करते (चले जाते) हैं हम उन्हें कड़े अज़ाब का मजा चखाएँगे ।७१। (रुकू ७/१२)
وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُم مَّقَامِي وَتَذْكِيرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنظِرُونِ ﴿٧٢﴾	और तू उन्हें नूह का हाल भी सुना, क्योंकि उस ने अपनी जाति से कहा था कि हे मेरी जाति के लोगो ! यदि तुम्हें मेरा (अल्लाह की ओर से दिया हुआ) पद तथा मेरा अल्लाह के चमत्कारों के द्वारा तुम्हें (तुम्हारा कर्त्तव्य) याद दिलाना बुरा लगता है तो याद रखो कि मैं केवल अल्लाह पर भरोसा रखता हूँ और तुम अपने बनाए हुए (अल्लाह के) साझियों सहित अपनी बात (पक्की करने के सारे साधन) जुटा लो और तुम्हारी बात (किसी दृष्टिकोण से भी) तुम पर मुश्तबह (संदिग्ध) नहीं रहनी चाहिए। फिर उसे मुझ पर लागू कर दो और मुझे कोई ढील न दो ।७२।
فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٧٣﴾	यदि फिर भी तुम मुँह मोड़ लो तो इस में मेरी कोई हानि नहीं (अपितु तुम्हारी ही है) क्योंकि मैं ने (इस के बदले में) तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगा। मेरा प्रतिफल अल्लाह के सिवा किसी दूसरे पर नहीं है तथा मुझे आदेश दिया गया है कि मैं पूर्ण रूप से उस की आज्ञा का पालन करने वाले लोगों में से बन जाऊँ ।७३।
فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلَائِفَ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا	इस पर भी उन्हों ने उसे झुठला दिया। तब हम ने उसे और उस के साथ नौका में बैठने वालों को बचा लिया तथा उन्हें पहले लोगों का स्थान लेने वाला बना दिया, परन्तु जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया

بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾

था उन्हें हम ने डुबो दिया। सो देखो! जिन लोगों को (इस अज़ाब के बारे में) जानकारी दे दी गई थी उन का परिणाम कैसा हुआ ? ।७४।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾

तत्पश्चात् हम ने और भी कई रसूल अपनी-अपनी जाति की ओर भेजे और वे उन के पास खुले-खुले निशान लेकर आए तो वे लोग उन पर इस कारण ईमान न लाए कि वे (इस से पहले) उस सच्चाई को झुठला चुके थे। अतः हम सीमा उल्लंघन करने वालों के दिलों पर इसी प्रकार मुहर लगाया करते हैं ।७५।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾

फिर उन के बाद हम ने मूसा और हारून को अपने चमत्कार देकर फ़िरऔन एवं उस की जाति के बड़े लोगों की ओर भेजा तो उन्हों ने अभिमान किया और वे लोग पहले ही से एक अपराधी जाति के लोग थे ।७६।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾

तत्पश्चात् जब हमारी ओर से उन के पास हक़ (सच्चाई) आया तो उन्हों ने कह दिया कि यह अवश्य ही (भाई-चारे को) काट देने वाला एक छल है ।७७।

قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ۭ اَسِحْرٌ هٰذَا ۭ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾

इस पर मूसा ने उन से कहा कि क्या तुम हक़ के बारे में ऐसा कहते हो और वह भी उस समय जब कि वह तुम्हारे पास आ चुका है। क्या यह छल-कपट हो सकता है ? हालाँकि छल-कपट करने वाले कभी सफल नहीं होते ।७८।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَ تَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي الْاَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾

वे बोले कि क्या तू इसलिए हमारे पास आया है कि जिस बात पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है उस से हमें हटा दे और तुम दोनों को देश में बड़ाई मिल जाए? तथा हम तो तुम पर कदापि ईमान नहीं लाएँगे।७९।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿٧٩﴾

और फ़िरऔन ने (अपने लोगों से) कहा कि मेरे पास (देश भर के) सब जानकार जादूगरों को ले आओ।८०।

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٨٠﴾

सो जब जादूगर लोग आए तो मूसा ने उन्हें कहा कि जो कुछ तुम्हें फेंकना हो फेंको। ।८१।

فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨١﴾

इस पर जब उन्हों ने जो कुछ फेंकना था फेंक दिया तो मूसा ने कहा कि जो कुछ तुम लोगों ने प्रस्तुत किया है पूरा-पूरा छल-कपट है और अल्लाह उसे अवश्य नष्ट कर देगा। अल्लाह बिगाड़ पैदा करने वालों के कामों को कभी सफल नहीं होने देता।८२।

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع

और अल्लाह अपने बचन द्वारा सच्चाई को क़ायम करता है, यद्यपि अपराधी लोग इस बात को बुरा ही मानें।८३। (रुकू ८/१३)

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٨٣﴾

फिर भी इस की जाति के कुछ ही नवयुवक उस पर ईमान लाए शेष दूसरे लोगों ने फ़िरऔन और अपनी जाति के बड़े लोगों के डर से मूसा का अनुसरण न किया कि वे उन्हें किसी विपत्ति में न डाल दें और वस्तुतः फ़िरऔन अत्याचारी था एवं सीमा उल्लंघन करने वालों में से था।८४।

وَقَالَ مُوسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ۝

और मूसा ने अपनी जाति के लोगों से कहा कि हे मेरी जाति के लोगो ! यदि यह बात सच है कि तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो तो यदि तुम (इस के साथ) अल्लाह के सच्चे आज्ञाकारी भी हो तो उसी पर भरोसा रखो।८५।

فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

इस पर उन्हों ने कहा कि हम अल्लाह पर ही भरोसा रखते हैं। हे हमारे रब्ब ! हमें इन अत्याचारी लोगों के लिए फ़ित्ना (का साधन) न बना।८६।

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

और अपनी दया से इन्कार करने वालों के अत्याचार से हमारी रक्षा कर।८७।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

और हम ने मूसा तथा उस के भाई की ओर वह्य की कि तुम मिस्र में अपनी जाति के लोगों के लिए कुछ मकानों की जगह चुन लो और तुम सभी लोग अपने घर आमने-सामने बनाओ तथा उन में अच्छी तरह नमाज़ पढ़ा करो और (यह भी वह्य की कि हे मूसा !) तू मोमिनों को (सफलता का) शुभ-समाचार सुना दे।८८।

وَقَالَ مُوسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ

और मूसा ने कहा कि हे हमारे रब्ब ! तू ने फ़िरऔन और उस की जाति के बड़े लोगों को सांसारिक जीवन में शोभा (का सामान) और धन-दौलत दे रखी है, परन्तु हे हमारे रब्ब ! परिणाम यह निकल रहा है कि वे तेरे रास्ते से लोगों को बहका रहे हैं। अत: हे हमारे रब्ब ! उन के धन-दौलत को विनष्ट

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٨٨﴾

कर दे और उन के दिलों को चोट लगा जिस का फल यह निकले कि जब तक व दुःखदायी अज़ाब न देख लें, ईमान न लाएँ'[1] ।८९।

قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

(इस पर अल्लाह ने) कहा कि तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई है। अतः तुम धैर्य दिखाओ और जो लोग ज्ञान नहीं रखते उन की राह का अनुसरण न करो ।९०।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ۭ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩٠﴾

और हम ने बनी-इस्राईल को समुद्र से पार किया तो फ़िरऔन और उस की सेना ने अभिमान और ज़्यादती करते हुए उन का पीछा किया, यहाँ तक कि जब उसे (तथा उस की सेना को) डूबने की विपत्ति ने आ पकड़ा तो उस ने कहा कि जिस पर बनी-इस्राईल ईमान लाए हैं मैं भी उस पर ईमान लाता हूँ। उस के सिवा कोई भी उपास्य नहीं और मैं आज्ञा पालन करने वालों में से (होता) हूँ ।९१।

آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٩١﴾

(हम ने कहा कि) क्या तू अब ईमान लाता है, हालाँकि तू ने पहले अवज्ञा की और दंगा-फ़साद करने वालों में से था ।९२।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً

अतः अब हम तेरे शरीर को सुरक्षित कर के

---

1. इस से यह अभिप्राय नहीं कि अल्लाह ज़बरदस्ती लोगों पर अज़ाब उतारता है बल्कि भाव यह है कि वे लोग पथभ्रष्टता में इतने बढ़ चुके हैं कि ईमान लाने के सम्बन्ध में उन्हें अल्लाह की ओर से ढील नहीं मिलनी चाहिए। हाँ ! अज़ाबों को देख कर वे स्वयं ही तौबः कर लें तो यह उन के लिए अच्छा है।

وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿٩٣﴾

तुझे[1] (एक प्रकार की) मुक्ति देंगे, ताकि जो लोग तेरे बाद आने वाले हैं उन के लिए तू एक निशान[2] हो और निस्सन्देह बहुत से लोग हमारे निशानों से ग़ाफ़िल हैं।९३। (रुकू ९/१४)

وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٤﴾

और निस्सन्देह हम ने बनी-इस्राईल को खुले तथा छिपे समस्त प्रकार के गुणों वाला श्रेष्ठ स्थान प्रदान किया था और उन्हें हर-प्रकार के उत्तम पदार्थ भी दिए थे, फिर उस समय[3] तक कि उन के पास वास्तविक ज्ञान आ गया उन्हों ने किसी बात में मतभेद नहीं किया था। तेरा रब्ब उन में क़ियामत के दिन अवश्य ही निर्णय कर देगा जिस बात में वे अब मतभेद[4] से काम ले रहे हैं।९४।

فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ

(हे क़ुर्आन के पढ़ने[5] वाले !) यदि तू इस वाणी के कारण सन्देह में हो, जो हम ने तेरी ओर उतारी है तो तू उन लोगों से पूछ जो तुझ

---

1. इस आयत के द्वारा अब तक क़ुर्आन की सत्यता सिद्ध हो रही है, क्योंकि मिस्र के सम्राट फ़िरऔन के समुद्र में डूबने के पश्चात् उस का शव ढूंढ़ कर निकाला गया और आज तक सुरक्षित रखा गया है और आज कल मिस्र के अजायब घर में मौजूद है।

2. अर्थात् शिक्षा प्रद साधन।

3. अर्थात् जब भी उस के पास रसूल आए तो उन्हों ने मतभेद से काम लिया। रसूलों की शिक्षा आने से पहले वे पुरानी डगर पर चलते रहे।

4. अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से सब से बड़ा मतभेद था। इस का निर्णय क़ियामत के दिन अवश्य होगा।

5. यह संकेत क़ुर्आन करीम के पढ़ने वालों की ओर है न कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के लिए, क्योंकि आप पवित्र क़ुर्आन के कथानानुसार प्रत्येक शंका से परे हैं। आप के विषय में क़ुर्आन करीम में लिखा है कि 'मैं सब से पहला आज्ञाकारी हूँ।' (सूर: अन्आम रुकू 20)

يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٩٥﴾

से पहले इस किताब को पढ़ रहे हैं। (और तुझे प्रतीत हो जाएगा कि) निस्सन्देह तेरे रब्ब की ओर से तुझे एक सच्चाई दी गई है। अतः तू शंका करने वालों में से न बन।९५।

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٦﴾

और तू उन लोगों में से न बन जिन्हों ने अल्लाह की आयतों को झुठलाया है अन्यथा तू घाटा पाने वालों में से हो जाएगा।९६।

اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٩٧﴾

जिन लोगों के बारे में तेरे रब्ब की ओर से विनाश का समाचार आ चुका है, वे कदापि ईमान नहीं लाएंगे।९७।

وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٩٨﴾

और यदि उन के पास सब प्रकार के निशान आ जाएँ तो भी वे उस समय तक ईमान नहीं लाएँगे जब तक दुःखदायक अज़ाब न देख लें।९८।

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ۚ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٩﴾

और यूनुस की जाति के सिवा क्यों कोई और ऐसी बस्ती न हुई जो सारी की सारी ईमान ले आती और उस का ईमान लाना उस के लिए लाभदायक होता। जब वे (यूनुस की जाति के लोग) ईमान ले आए तो हम ने उन से इस लोक के जीवन में अपमान-जनक अज़ाब दूर कर दिया तथा उन्हें एक समय तक सभी प्रकार के सुख प्रदान किए।९९।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا

और यदि अल्लाह हिदायत के बारे में अपनी ही इच्छा को लागू करता तो ज़मीन के सब लोग ईमान ले आते। (अतः जब अल्लाह भी विवश नहीं करता) तो क्या तू लोगों को

اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝

इतना विवश करेगा कि वे मोमिन बन जाएँ ? ।१००।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝

और अल्लाह् की आज्ञा के बिना किसी के वश में नहीं कि वह ईमान लाए तथा उस का प्रकोप उन लोगों पर भड़कता है जो बुद्धिमान होते हुए भी बुद्धि से काम नहीं लेते ।१०१।

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝

तू उन्हें कह दे कि देखो ! आसमान और ज़मीन में क्या हो रहा है तथा सारे निशान चाहे शान्ति वाले हों या डराने वाले, ऐसे लोगों को लाभ नहीं पहुँचाते जो ईमान न लाने पर अड़े हुए हों ।१०२।

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوْۤا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝

फिर क्या ये लोग अपने से पहले होने वाले लोगों के बुरे दिनों जैसे दिनों के सिवा किसी दूसरी चीज़ की प्रतीक्षा कर रहे हैं ? तू उन से कह कि अच्छा ! (यदि वही दृश्य देखना हो तो) फिर तुम लोग कुछ प्रतीक्षा करो । निस्सन्देह मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ ।१०३।

ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ ع

और (जब वह अज़ाब आ जाएगा तो उस समय) हम अपने रसूलों और उन पर ईमान लाने वालों को बचा लेंगे । इसी प्रकार हमारे लिए अनिवार्य है कि हम मोमिनों की रक्षा किया करते हैं ।१०४। (रुकू १०/१५)

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَاۤ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ

तू कह दे कि हे लोगो ! यदि तुम मेरे धर्म के सम्बन्ध में किसी प्रकार की शंका में हो तो (सुनो !) तुम अल्लाह् को छोड़ कर जिन (उपास्यों) की उपासना करते हो मैं उन की उपासना नहीं करता, अपितु मैं अल्लाह् की

اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِیْ یَتَوَفّٰىكُمْ ۖۚ وَ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ ۟

उपासना करता हूँ जो तुम्हें मृत्यु देगा तथा मुझे आदेश दिया गया है कि मैं ईमान लाने वालों में से बनूं ।१०५।

وَ اَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّیْنِ حَنِیْفًا ۚ وَ لَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ۟

और (इस आदेश के पहुँचाने की भी आज्ञा दी गई है) कि (हे सम्बोधित !) तू हर प्रकार के बिगाड़ से बच कर सदा के लिए अपना ध्यान धर्म के लिए अर्पित कर दे और तू मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) में से न बन ।१०६।

وَ لَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا یَنْفَعُكَ وَ لَا یَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِیْنَ ۟

और तू अल्लाह के सिवा किसी को भी न पुकार जो तुझे न तो कोई लाभ पहुँचा सकता है और न कोई हानि ही। यदि तू ने ऐसा किया तो फिर निश्चय ही तेरी गणना अत्याचारियों में होगी ।१०७।

وَ اِنْ یَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَ اِنْ یُّرِدْكَ بِخَیْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ یُصِیْبُ بِهٖ مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ۟

और यदि अल्लाह तुझे कोई कष्ट पहुँचाए तो उस (अल्लाह) के सिवा कोई भी उस को दूर करने वाला नहीं और यदि वह तेरे लिए कोई भलाई चाहे तो उस की कृपा को रोकने वाला भी कोई नहीं। वह अपने भक्तों में से जिसे चाहता है उसे अपनी कृपा प्रदान करता है और वह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है ।१०८।

قُلْ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰی فَاِنَّمَا یَهْتَدِیْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا

तू उन से कह कि हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से सच्चाई आ गई है। अतएव जो व्यक्ति (उस की बताई हुई) हिदायत का अनुसरण करता है तो वह अपने ही भले के लिए उसे अपनाता है तथा जो कोई इस राह से भटक जाए तो उस का

بَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ۞

भटकना उसी के लिए (हानिकारक) होगा और मैं तुम्हारा कोई उत्तरदायी नहीं हूँ।१०९।

وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۞

और जो कुछ तेरी ओर वह्य उतारी जाती है तू उस का अनुसरण कर तथा धैर्य धारण कर, यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे और वह सब निर्णय करने वालों में से सब से अच्छा निर्णय करने वाला है।११०। (रुकू ११/१६)
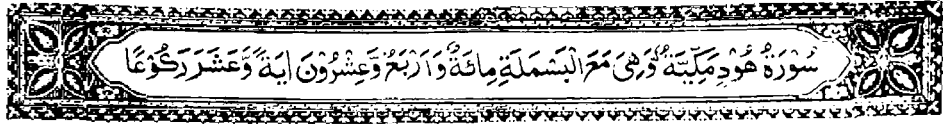
सूरः हूद

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की एक सौ चौबीस आयतें एवं दस रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम लेकर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

الٓرٰ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ②

अलिफ़, लाम, रा[1]। मैं अल्लाह देखने वाला हूँ। यह ऐसी किताब है जिस की आयतों को मुहकम (सुदृढ़) बनाया गया है और उन्हें स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है तथा यह हिक्मत वाले और बहुत जानने वाले (अल्लाह) की ओर से है।२।

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ③

(और इस में यह शिक्षा दी गई है कि) तुम अल्लाह के सिवा किसी की उपासना न करो। निस्सन्देह मैं अल्लाह की ओर से तुम्हें सावधान करने वाला एवं महत्वपूर्ण समाचार देने वाला बना कर भेजा गया हूँ।३।

وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ

और (यह भी शिक्षा दी गई है कि) तुम अपने रब्ब से क्षमा माँगो तथा उस की ओर (सच्चे दिल से) झुको तब वह तुम्हें एक निश्चित

1. विवरण के लिए देखिए सूरः बक़रः टिप्पणी आयत नं० 2।

مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِىْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ۝

समय तक सुख-शान्ति के अच्छे साधन प्रदान करेगा एवं हर-एक प्रमुख व्यक्ति को अपनी कृपा प्रदान करेगा और यदि तुम विमुख हो जाओगे तो निस्सन्देह मैं तुम्हारे ऊपर एक भयंकर अजाब के आने के दिन से डरता हूं।४।

اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝

तुम सब को अल्लाह की ओर ही लौटना है और वह प्रत्येक बात पर पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है।५।

اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ۭ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

सुनो! निस्सन्देह वह अपने सीनों को इसलिए मोड़ते रहते हैं कि उस (अल्लाह) से छिपे रहें। सुनो! जिस समय वे अपने वस्त्र पहनते हैं उस समय भी वे जो कुछ छिपाते हैं तथा जो कुछ जाहिर करते हैं वह उसे जानता है। निस्सन्देह वह दिलों के भेदों को भी भली-भांति जानता है।६।

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِي كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝

और धरती में कोई भी ऐसा जीवधारी नहीं जिस की आजीविका का दायित्व अल्लाह पर न हो। वह उस के अस्थायी[1] निवास-स्थान तथा उस के स्थायी निवास-स्थान को जानता है। यह सब कुछ स्पष्ट कर देने वाली किताब में (मौजूद) है।७।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

और वही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दौरों में पैदा किया है ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में से किस के कर्म अधिक अच्छे हैं और उस का अर्श[2] पानी पर है और यह पक्की बात है कि यदि तू उन्हें कहे कि तुम मरने के बाद अवश्य उठाए जाओगे तो जिन लोगों ने इन्कार किया है वे क़समें खा कर कहेंगे कि यह बात केवल एक धोखा है।८।

وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰٓى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ۗ اَلَا يَوْمَ يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ ع

और यह भी अटल बात है कि यदि हम इस अज़ाब को एक निश्चित समय तक पीछे हटाए रखें तो फिर ये अवश्य कहेंगे कि कौन सी बात इसे रोक रही है? सुनो! जिस समय वह अज़ाब उन पर आ जाएगा तो फिर वह उन से दूर नहीं किया जाएगा और जिस अज़ाब के बारे में वे हंसी उड़ाया करते थे वह उन्हें घेर लेगा।९। (रुकू १/१)

1. "अस्थायी तथा स्थायी" शब्दों के अर्थ के लिए देखिए सूरः अनआम टिप्पणी आयत नं० ९९

2. अर्श से अभिप्राय अनुशासन अथवा उसका सिद्धांत होता है और 'पानी' शब्द पवित्र क़ुर्आन में ब्रह्म के लिए बोला गया है। सो आयत का भाव यह हुआ कि अल्लाह के अनुशासन का सिद्धांत वह्य

(शेष पृष्ठ ४५५ पर)

وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَـُٔوْسٌ كَفُوْرٌ ﴿١٠﴾

और यदि हम मनुष्य को अपनी ओर से किसी प्रकार की रहमत का मजा चखाएँ और फिर हम उसे उस से हटा लें तो वह अत्यधिक निराश और कृतघ्न हो जाता है।१०।

وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ ۭ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ﴿١١﴾

और यदि हम उसे किसी विपत्ति के बाद जो उसे पहुँची हो किसी निअमत का मज़ा चखाएँ तो वह कहने लग जाता है कि अब मुझ से मेरी सारी विपत्तियाँ दूर हो गई हैं। निस्सन्देह वह बहुत इतराने वाला और बड़ा घमण्ड करने वाला है।११।

اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١٢﴾

सिवाय उन लोगों के जो धैर्य धारण करें और शुभ कर्म करें। यही ऐसे लोग हैं जिन के लिए मोक्ष और बड़ा बदला (निश्चित) है।१२।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَضَاۗىِٕقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَاۗءَ

अतः सम्भव है (इन्कार करने वाले लोग तुझ से यह आशा रखते हैं) कि तू उस वह्य का जो तुझ पर उतारी जाती है कुछ भाग (लोगों तक पहुँचाने की अपेक्षा) उसे छोड़ देने पर तय्यार हो जाए (परन्तु यह नहीं हो सकता) और (वे यह भी आशा रखते हैं कि) उन के इस आरोप के कारण कि उस पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतरा या उस के पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया ?

(पृष्ठ ४५४ का शेष)

के द्वारा अपने आदेशों को लागू करना है, यह तात्पर्य नहीं कि भौतिक पानी पर उस का कोई सिंहासन रखा हुआ है। अल्लाह के बारे में तो यह आता है कि उस के समान कोई भी वस्तु नहीं। अतः भौतिकता पर उसका अनुमान करना ठीक नहीं।

مَعَهُ مَلَكٌ ۗ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝۱۳

तेरा दिल तंग हो जाए। तू केवल सावधान करने वाला है और अल्लाह हर-एक बात का कार्यसाधक है।१३।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۗ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝۱۴

क्या वह कहते हैं कि उस ने इस किताब को स्वयं बना लिया है? तू उन्हें कह दे कि यदि तुम (इस कथन में) सच्चे हो तो तुम भी इस जैसी दस सूरतें स्वयं बना कर ले आओ और अल्लाह को छोड़ कर जिस (को भी अपनी सहायता के लिए लाने) की शक्ति हो उसे बुला लो।१४।

فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝۱۵

सो यदि वे तुम्हारी यह बात स्वीकार न करें तो समझ लो कि जो कलाम (वाणी) तुम पर उतारा गया है वह अल्लाह के विशेष ज्ञान पर आधारित है और यह कि उस के सिवा कोई भी उपासना के योग्य नहीं। अतः क्या तुम पूर्ण आज्ञाकारी बनोगे (या नहीं?)।१५।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ۝۱۶

जो लोग सांसारिक जीवन (के साधन) को और उस की शोभा को अपना उद्देश्य बनाएंगे उन्हें हम उन के कर्मों का फल इसी जीवन में पूरा-पूरा देंगे और उन्हें इस में से कम नहीं दिया जाएगा।१६।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۱۷

ये ही वे लोग हैं जिन के लिए आख़िरत में नरक की आग के सिवा और कुछ नहीं होगा तथा जो कुछ उन्हों ने इस सांसारिक जीवन के लिए किया होगा वह उस (आख़िरत) में व्यर्थ चला जाएगा तथा जो कुछ वे करते रहे होंगे वह सारा नष्ट हो जाएगा।१७।

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ⑱

अतः क्या वह व्यक्ति[1] जो अपने रब्ब की ओर से एक रोशन दलील पर (क़ायम) है और जिस के पीछे भी उस (अल्लाह) की ओर से एक गवाह[2] आएगा (जो उस का आज्ञाकारी होगा) और उस से पहले भी मूसा की किताब आ चुकी है (जो उस का समर्थन कर रही थी और) जो (इस ईश वाणी से पहले) लोगों के लिए इमाम तथा रहमत थी (क्या वह एक कपटी के समान हो सकता है?) वे (अर्थात् मूसा के सच्चे अनुयायी) उस पर (अवश्य ही एक दिन) ईमान ले आएँगे तथा इन विरोधी-गिरोहों में से जो कोई इन्कार करता रहेगा तो नरक उस का वादा किया हुआ ठिकाना है। अतः (हे सम्बोध्य!) तू इस के बारे में किसी शंका में न पड़। निस्सन्देह वह सत्य है और तेरे रब्ब की ओर से है, किन्तु बहुत से लोग ईमान नहीं लाते।१८।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ

और उस व्यक्ति से बढ़ कर दूसरा कौन अत्याचारी हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े। ऐसे लोग अपने रब्ब के सामने

1. अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम।

2. अर्थात् इस के अनुयायियों में से भी एक सुधारक पैदा होगा जो अपनी ईशवाणी द्वारा उसका समर्थन करेगा। मानो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की सहायता के लिए तीन गवाह हैं।

(क) यह स्वयं अपने पास युक्तियाँ और स्पष्ट दलीलें रखता है।

(ख) उस के अनुयायियों में से औलिया और ईशभक्त पैदा होते रहेंगे जो उस की सच्चाई पर गवाह होंगे।

(ग) इस से पहले हज़रत मूसा की किताब उस की सच्चाई पर गवाही दे रही है।

उपस्थित किए जाएँगे तथा सारे गवाह कहेंगे कि ये वे लोग हैं जिन्हों ने अपने रब्ब पर झूठ गढ़ा था। सुनो! इन अत्याचारियों पर अल्लाह की फटकार है।१९।	الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾
ये वे लोग हैं जो दूसरों को अल्लाह की (ओर जाने वाली) राह से रोकते हैं और उस में बिगाड़ पैदा करना चाहते हैं और यही लोग पीछे आने वाली घड़ी के (सब से) बढ़ कर इन्कार करने वाले हैं।२०।	الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۗ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٠﴾
ये लोग देश में (अल्लाह की जमाअत को) कमजोर नहीं कर सकते और न ही अल्लाह को छोड़ कर उन का कोई मित्र होता है। इन को दो गुना अज़ाब दिया जाता है (संसार में भी तथा परलोक में भी) न तो वे कुछ सुन सकते हैं और न कुछ देख सकते हैं।२१।	اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۗ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢١﴾
यही वे लोग हैं जिन्हों ने अपने-आप को घाटे में डाला और जिस उद्देश्य के लिए वे अल्लाह पर झूठ गढ़ा करते थे वह उन से जाता रहेगा।२२।	اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٢﴾
यह पक्की बात है कि परलोक में सब से अधिक घाटा पाने वाले वही होंगे।२३।	لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٢٣﴾
जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक (एवं परिस्थिति के अनुकूल) कर्म किए और वे अपने रब्ब के सामने झुक गए वे अवश्य ही स्वर्ग वाले हैं। वे उस में निवास करते चले जाएँगे।२४।	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٤﴾

مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَ السَّمِيْعِ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۞

इन दोनों गिरोहों की हालत अन्धे और आँखों वाले तथा बहरे और ख़ूब सुनने वाले की (हालत) की तरह है। क्या इन दोनों की हालत एक समान हो सकती है? क्या तुम फिर भी नहीं सोचते? ।२५। (रुकू २/२)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖۤ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۞

और हम ने ही नूह को उस की जाति की ओर (रसूल बना कर) भेजा था। (उस ने उन्हें कहा था) सुन लो! मैं तुम्हारी ओर खुले रूप में सावधान करने वाला बना कर भेजा गया हूँ।२६।

اَنْ لَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ اِنِّىْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ۞

यह (सन्देश दे कर) कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की उपासना न करो। निस्सन्देह मैं तुम्हारे ऊपर एक बड़े दुःख वाले दिन के अज़ाब (के आने) से डरता हूँ।२७।

فَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِىَ الرَّاْىِ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ۞

इस पर उन में से सरदारों ने जिन्हों ने उसकी जाति में से उस का इन्कार किया था उसे कहा कि हम तुझे अपने जैसे एक व्यक्ति से बढ़ कर कुछ नहीं समझते और न हम यह देखते हैं कि हम में से तुच्छ दिखाई देने वाले लोगों के सिवा किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति ने तेरा अनुसरण किया हो और हम अपने ऊपर किसी प्रकार की विशेषता तुझ में नहीं पाते हैं, अपितु हमारा विश्वास है कि तुम झूठे हो।२८।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ

उस ने कहा कि हे मेरी जाति के लोगो! बताओ तो सही कि (यदि यह सिद्ध हो जाए) कि मेरा दावा अपने रब्ब की ओर से दिए

مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ۭ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ۝۲۸

हुए किसी स्पष्ट चमत्कार पर आधारित है तथा उस ने मुझे अपनी ओर से एक बहुत बड़ी रहमत प्रदान की है और वह तुम पर संदिग्ध रही है (तो तुम्हारा क्या हाल होगा)? क्या हम उस (स्पष्ट चमत्कार) को तुम से ज़बरदस्ती मनवा लेंगे चाहे तुम उसे पसन्द[1] नहीं करते हो? ।२९।

وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ۝۲۹

और हे मेरी जाति के लोगो! मैं इस के लिए तुम से कोई धन नहीं माँगता। मेरा बदला अल्लाह के सिवा किसी दूसरे पर नहीं है और मैं उन लोगों को जो मुझ पर ईमान ला चुके हैं कदापि नहीं धुतकारूँगा। वे तो अपने रब्ब से मिलने वाले हैं, किन्तु तुम्हारा उन्हें तुच्छ समझना मुझ पर यह सिद्ध करता है कि तुम मूर्ख लोग हो।३०।

وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝۳۰

और हे मेरी जाति के लोगो! यदि मैं इन को धुतकार दूं तो अल्लाह की ओर से (आने वाले दण्ड से बचाने के लिए) कौन मेरी सहायता करेगा! क्या तुम फिर भी नहीं समझते? ।३१।

وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَاۗىِٕنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّىْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ۭ اَللّٰهُ

और मैं तुम से यह नहीं कहता कि अल्लाह के ख़ज़ाने मेरे पास हैं और न यह कि मैं ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता हूँ और न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ तथा न मैं उन लोगों के बारे में जिन्हें तुम्हारी आँखें घृणा से देखती हैं यह कहता हूँ कि अल्लाह उन्हें कभी कोई भलाई प्रदान नहीं करेगा।

1. धर्म को जब्र से मनवाना नबियों की रीति नहीं है।

اَعْلَمُ بِمَا فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ ۚۖ اِنِّیْۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝

जो कुछ उन के मन में है उसे अल्लाह् सब से बढ़ कर जानता है। यदि मैं तुम्हारी बात से सहमत हो जाऊँ तो मैं निश्चय ही अत्याचारियों में शामिल हो जाऊँगा।३२।

قَالُوْا یٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۝

उन्हों ने कहा कि हे नूह्! तू हमारे साथ वाद-विवाद कर चुका है बल्कि बहुत-बहुत तर्क-वितर्क कर चुका है अब यही रह गया है कि यदि तू सच्चों में से है तो तू जिस अज़ाब से हमें डराता है उसे हम पर ले आ।३३।

قَالَ اِنَّمَا یَاْتِیْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَ مَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِیْنَ ۝

उस ने कहा कि यदि अल्लाह् चाहेगा तो उसे ले आएगा और तुम उसे उस के लाने से कदापि असमर्थ नहीं कर सकते।३४।

وَ لَا یَنْفَعُكُمْ نُصْحِیْۤ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ یُرِیْدُ اَنْ یُّغْوِیَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۫ وَ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

और यदि मैं तुम्हारा भला भी चाहूँ तो मेरा भला चाहना तुम्हें अल्लाह् के अज़ाब से बचाने में लाभ नहीं देगा। यदि अल्लाह् यह चाहता हो कि वह तुम्हारा सर्वनाश करे तो फिर भी वह तुम्हारा रब्ब है और उसी की ओर तुम्हें लौटाया जाएगा।३५।

اَمْ یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَیْتُهٗ فَعَلَیَّ اِجْرَامِیْ وَ اَنَا بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ۝

क्या वे कहते हैं कि उस ने इस (अज़ाब के वादा) को अपने पास से गढ़ लिया है? तू उन्हें कह दे कि यदि मैं ने उसे अपने पास से गढ़ लिया है तो मेरे इस घोर अपराध का दण्ड अवश्य मुझे ही मिलेगा (किन्तु तुम्हारे अपराधों का दण्ड मुझे नहीं मिलेगा) क्योंकि जो घोर अपराध तुम करते हो उन से मैं बेज़ार (अर्थात् विरक्त) हूँ।३६। (रुकू ३/३)

وَ اُوْحِیَ اِلٰی نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ یُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا

और नूह् की ओर यह भी वह्य की गई थी कि जो लोग ईमान ला चुके हैं उन के सिवा

مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٧﴾

तेरी जाति में से अब कोई और व्यक्ति तुझ पर कदापि ईमान नहीं लाएगा। इसलिए जो कुछ वे कर रहे हैं उस के कारण तू अफ़सोस न कर।३७।

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٣٨﴾

और तू हमारी आँखों के सामने तथा हमारी वह्य के अनुसार नौका बना और जिन लोगों ने अत्याचार की राह अपना रखी है उन के बारे में मुझ से कोई बात न कर। वे अवश्य ही डुबो दिए जाएंगे।३८।

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ ۫ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ۭ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ﴿٣٩﴾

और वह (नूह) हमारी आज्ञा के अनुसार नौका बनाता जाता था तथा जब भी उस की जाति में से बड़े लोगों का कोई गिरोह उस के पास से गुज़रता था तो वह उस पर हँसी करता था। इस पर उस ने उन से कहा कि यदि आज तुम लोग हम से हँसी करते हो तो कल हम भी तुम्हारी हँसी उड़ाएंगे जैसा कि आज तुम हमारी हँसी उड़ा रहे हो।३९।

فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٤٠﴾

फिर तुम्हें शीघ्र ही मालूम हो जाएगा कि वह कौन (सा गिरोह) है जिस पर ऐसा अज़ाब आ रहा है जो उसे अपमानित कर देगा तथा जिस पर स्थायी अज़ाब आ रहा है।४०।

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ

यहाँ तक कि जब हमारा (अज़ाब का) आदेश[1] आ जाए और स्रोत फूट कर बह पड़ें तब हम कहेंगे कि समस्त प्रकार के जानवरों में

1. इस स्थान पर भूत कालिक क्रिया के शब्द प्रयुक्त हुए हैं, परन्तु पवित्र क़ुर्आन प्रायः भविष्य वाणियों में भूतकाल के शब्दों का प्रयोग करता है केवल यह बताने के लिए कि यह ऐसी विश्वसनीय बात है जैसे कि भूत में बीती हुई बात विश्वसनीय होती है।

اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ؕ وَمَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٤١﴾

से नर-मादा एक-एक जोड़ा इस नौका में सवार कर दे और अपने परिवार को भी, सिवाय उस के जिस के विनाश के सम्बन्ध में (इस भयंकर अज़ाब के आने से) पहले ही हमारा अटल आदेश आ चुका है और जो तुझ पर ईमान ला चुके हैं उन्हें भी सवार कर ले और उस पर थोड़े से लोगों के सिवा कोई भी ईमान नहीं लाया था।४१।

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤٢﴾

फिर जब तूफ़ान आ गया तो उस ने (अपने साथियों से) कहा कि इस नौका में सवार हो जाओ। इस का चलना और इस का ठहराया जाना अल्लाह के शुभ नाम की बरकत से ही होगा। मेरा रब्ब निस्सन्देह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।४२।

وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۫ وَنَادٰى نُوْحُ ۨابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٣﴾

और वह (नौका) पहाड़ों जैसी ऊँची लहरों में उन्हें लिए जा रही थी तथा उस समय नूह ने अपने पुत्र को पुकारा जब कि वह (उस से अलग) एक दूसरी ओर चला गया था कि हे मेरे पुत्र! हमारे साथ सवार हो जा और इन्कार करने वाले लोगों के साथ न हो।४३।

قَالَ سَاٰوِيْۤ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ

उस ने कहा कि मैं अभी किसी पहाड़ पर जा ठहरूँगा (और शरण लूँगा) जो मुझे इस पानी से बचा लेगा। उस (नूह) ने कहा कि अल्लाह के (इस अज़ाब के) आदेश से आज कोई भी किसी को बचाने वाला नहीं सिवाय उस के जिस पर वह (स्वयं) दया कर दे। उसी समय एक लहर उन के बीच आ गई

بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ ۝

तथा वह डूब जाने वालों में शामिल हो गया।४४।

وَقِيلَ يَا أَرْضُ ابْلَعِي مَاءَكِ وَيَا سَمَاءُ أَقْلِعِي وَغِيضَ الْمَاءُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

इस के बाद (धरती से भी) कह दिया गया कि हे धरती ! अब तू अपने पानी को निगल जा और (आकाश से भी कि) हे आकाश ! तू (अब बरसने से) थम जा और पानी सुखा दिया गया और यह समस्या समाप्त कर दी गई एवं वह नौका जूदी[1] नामक पर्वत पर ठहर गई तथा कह दिया गया कि हे अजाब के फ़रिश्तो ! अत्याचारी लोगों के लिए विनाश निश्चित कर दो।४५।

وَنَادَىٰ نُوحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحَاكِمِينَ ۝

और नूह ने अपने रब्ब को पुकारा और कहा कि हे मेरे रब्ब ! निस्सन्देह मेरा पुत्र मेरे परिवार में से है और तेरा वादा भी सच्चा है तथा तू फ़ैसला करने वालों में से सब से बढ़ कर अच्छा और ठीक फ़ैसला करने वाला है।४६।

قَالَ يَا نُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا تَسْأَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنِّي أَعِظُكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝

अल्लाह ने कहा कि हे नूह ! वह तेरे परिवार में से बिल्कुल नहीं, क्योंकि वह निश्चय ही बुरे कर्म करने वाला है। अतएव तू मुझ से ऐसी प्रार्थना न कर जिस के सम्बन्ध में तुझे मेरी ओर से जानकारी नहीं दी गई तथा मैं तुझे उपदेश देता हूँ कि मूर्खों की भाँति कदापि काम न करो।४७।

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ

नूह ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! मैं इस बारे में तेरी शरण चाहता हूँ कि तुझ से कोई

1. कहते हैं कि जूदी एक पर्वत का नाम था। यह स्थान आधुनिक खोज के अनुसार आरमीनिया में सिद्ध हुआ है।

عِلْمٌ ۗ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُن مِّنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٤٨﴾

ऐसा प्रश्न करूँ जिस के बारे में मुझे वास्तविक ज्ञान न हो और यदि तू पहले हो चुकी मेरी भूल को क्षमा न करे एवं मुझ पर दया न करे तो मैं घाटा पाने वालों में से हो जाऊँगा।४८।

قِيلَ يَا نُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِّنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ أُمَمٍ مِّمَّن مَّعَكَ ۚ وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٩﴾

(इस पर उसे) कहा गया कि हे नूह ! तू हमारी ओर से (प्रदान की हुई) शान्ति और तरह-तरह की बरकतों के साथ जो तुझ पर और तेरे साथ वाले सम्प्रदायों[1] पर (उतारी गई) हैं यात्रा[2] कर तथा कुछ सम्प्रदाय ऐसे भी हैं जिन्हें हम अवश्य ही (सांसारिक) वस्तु प्रदान करेंगे, किन्तु फिर उन्हें हमारा पीड़ादायक अज़ाब पकड़ लेगा।४९।

تِلْكَ مِنْ أَنبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ ۖ مَا كُنتَ تَعْلَمُهَا أَنتَ وَلَا قَوْمُكَ مِن قَبْلِ هَٰذَا ۖ فَاصْبِرْ ۖ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٥٠﴾ ع

यह[3] (डराने वाला वृत्तान्त) ग़ैब के महत्वपूर्ण समाचारों में से है जिन्हें हम तुझ पर वह्य के द्वारा उतारते हैं। तू इस से पहले इन्हें नहीं जानता था और न तेरी जाति के लोग ही जानते थे। अतः तू धैर्य धारण कर। निस्सन्देह शुभ परिणाम संयमियों का ही होता है।५०। (रुकू ४/४)

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ

और हम ने आद जाति की ओर उन के भाई हूद को रसूल बना कर भेजा था।

---

1. विदित हुआ कि हज़रत नूह की नबुव्वत का समय एक लम्बे समय तक प्रचलित रहा और उस के समय में कई धार्मिक सम्प्रदाय बने और बिगड़े।

2. इस स्थान पर यात्रा से अभिप्राय नौका की यात्रा नहीं, अपितु नबुव्वत के समय की यात्रा है।

3. यह हज़रत नूह की कहानी का वृत्तान्त नहीं अपितु हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की जाति पर आने वाले अज़ाब की ओर संकेत है।

مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ۝

उस ने उन्हें कहा कि हे मेरी जाति के लोगो ! तुम अल्लाह की उपासना करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई उपास्य नहीं है (उस के साझी ठहराने में) तुम केवल झूठ गढ़ने वाले हो ।५१।

يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔـلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝

हे मेरी जाति ! मैं इस काम का कोई बदला नहीं माँगता। मेरा बदला उस सत्ता पर है जिस ने मुझे पैदा किया है। क्या फिर भी तुम समझ से काम नहीं लेते ।५२।

وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاۗءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ۝

और हे मेरी जाति ! तुम अपने रब्ब से क्षमा की प्रार्थना करो फिर उस की ओर झुक जाओ जिस के फलस्वरूप वह तुम्हारे लिए अच्छी वर्षा करने वाला बादल भेजेगा और तुम्हें शक्ति पर शक्ति प्रदान करेगा। अतः तुम अपराधी बन कर अल्लाह से मुँह न फेरो । ५३।

قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝

उन्हों ने कहा कि हे हूद ! तू हमारे सामने (अपने दावा का) कोई खुला-खुला प्रमाण नहीं लाया और हम केवल तेरे कहने पर अपने उपास्य देवताओं को छोड़ नहीं सकते और न ही हम तुझ पर ईमान लाएँगे ।५४।

اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْۗءٍ ۭ قَالَ اِنِّىْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝

(तेरे बारे में) हम इस के सिवा और कुछ नहीं कहते कि हमारे उपास्यों में से कोई उपास्य बुरे विचार से तेरे पीछे पड़ गया है। उस ने कहा कि मैं अल्लाह को इस बात का गवाह ठहराता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि जिस किसी को तुम अल्लाह का साझी ठहराते हो मैं उस से बेजार (विरक्त) हूँ ।५५।

مِن دُونِهِۦ فَكِيدُونِى جَمِيعًا ثُمَّ لَا تُنظِرُونِ ۝

(सो यदि यह मेरी भूल है) तो उस (अल्लाह) के सिवा तुम सब मिल कर मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र रचो तथा मुझे कोई ढील न दो ।५६।

إِنِّى تَوَكَّلْتُ عَلَى ٱللَّهِ رَبِّى وَرَبِّكُم ۚ مَّا مِن دَآبَّةٍ إِلَّا هُوَ ءَاخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَآ ۚ إِنَّ رَبِّى عَلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝

मैं अल्लाह पर भरोसा करता हूँ जो मेरा भी रब्ब है और तुम्हारा भी रब्ब है और कहता हूँ कि धरती पर चलने-फिरने वाला कोई भी जीव-जन्तु ऐसा नहीं जिस की चोटी वह (अल्लाह) पकड़े[1] हुए न हो। मेरा रब्ब निश्चय ही मोमिनों की सहायता के लिए सीधी राह पर खड़ा है (और अपनी ओर आने वालों की रक्षा कर रहा है) ।५७।

فَإِن تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُم مَّآ أُرْسِلْتُ بِهِۦٓ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّى قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُۥ شَيْـًٔا ۚ إِنَّ رَبِّى عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ حَفِيظٌ ۝

अतः यदि तुम मेरी ओर से मुँह फेर लो तो इस में मेरी कोई हानि नहीं, क्योंकि जो शिक्षा दे कर मुझे तुम्हारी ओर भेजा गया है वह मैं तुम्हें पहुँचा चुका हूँ और (यदि तुम मुँह फेर लोगे तो) मेरा रब्ब किसी दूसरी जाति को तुम्हारा स्थान लेने वाला बना देगा और तुम उसे कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकोगे। निस्सन्देह मेरा रब्ब प्रत्येक वस्तु का रक्षक है ।५८।

وَلَمَّا جَآءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَهُۥ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَنَجَّيْنَٰهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝

और जब हमारे (अज़ाब का) आदेश आ गया तो उस समय हम ने हूद को भी और जो लोग उस पर ईमान ला चुके थे उन्हें भी उस (अज़ाब) से अपनी रहमत से बचा लिया तथा हम ने उन्हें एक भयंकर अज़ाब से सुरक्षित रखा ।५९।

1. अर्थात् उस के वश और क़ाबू में न हो।

وَتِلْكَ عَادٌ جَحَدُوا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝

और ये (घमण्डी) आद ही थे जिन्हों ने (जान-बूझ कर) अपने रब्ब के निशानों का इन्कार किया था और उस के रसूलों की अवज्ञा की थी तथा प्रत्येक उद्दण्डी और सत्य के शत्रु की आज्ञा का अनुसरण करने लग गए थे।६०।

وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۭ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ۝

उन के पीछे इस संसार में लानत लगा दी गई है और क़ियामत के दिन (भी लगा दी जाएगी) सुनो ! आद ने निश्चय ही अपने रब्ब के उपकारों के प्रति कृतघ्नता प्रकट की थी। सुनो ! (हम अज़ाब के फ़रिश्तों से कहते हैं कि) आद अर्थात् हूद की जाति के लिए लानत (निश्चित) कर दो।६१। (रुकू ५/५)

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۭ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ۝

और समूद की ओर उन के भाई सालिह को भेजा था। उस ने उन्हें कहा कि हे मेरी जाति के लोगो ! तुम अल्लाह की उपासना करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई भी उपास्य नहीं। उसी ने धरती से तुम्हें उठाया (और श्रेष्ठता प्रदान की) तथा उस में तुम्हें बसाया। अतएव तुम उस से क्षमा मांगो एवं पूर्ण रूप से उस की ओर झुक जाओ। निस्सन्देह मेरा रब्ब बहुत निकट है और प्रार्थना स्वीकार करने वाला है।६२।

قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰىنَآ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ

वे बोले कि हे सालिह ! इस से पहले तो तू हमारे बीच आशा का केन्द्र (समझा जाता) था। अब क्या तू बुद्धिमान हो कर भी हमें उस चीज़ की उपासना करने से रोकता

اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِیْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَاۤ اِلَیْهِ مُرِیْبٍ ﴿٦٢﴾

है जिस की उपासना हमारे पूर्वज करते आए हैं ? तथा (सच तो यह है कि) जिस बात की ओर तू हमें बुलाता है उस के बारे में हम एक व्याकुल कर देने वाले सन्देह में पड़े हुए हैं ।६३।

قَالَ یٰقَوْمِ اَرَءَیْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰی بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَاٰتٰىنِیْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ یَّنْصُرُنِیْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَیْتُهٗ فَمَا تَزِیْدُوْنَنِیْ غَیْرَ تَخْسِیْرٍ ﴿٦٣﴾

उस ने कहा कि हे मेरी जाति के लोगो ! (सोचो तो सही) यदि मैं अपने रब्ब की ओर से मिले हुए किसी सुस्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उस ने मुझे अपने पास से एक विशेष रहमत प्रदान की है तो (उस के होते हुए) यदि मैं उस की नाफ़रमानी (अर्थात् अवज्ञा) करूँ तो अल्लाह के मुक़ाबिला में कौन मेरी सहायता करेगा। तब तो तुम मुझे घाटा के सिवा किसी दूसरी बात में नहीं बढ़ाओगे ।६४।

وَیٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰیَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِیْۤ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَیَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِیْبٌ ﴿٦٤﴾

और हे मेरी जाति के लोगो ! यह ऊँटनी[1] (वह) है जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए एक निशान बनाया है। अतः तुम इसे स्वतन्त्र फिरने दो ताकि यह अल्लाह की धरती में (चल फिर कर) खाए-पीए तथा इसे कोई दुःख न पहुँचाओ अन्यथा तुम्हें शीघ्र आने वाला एक अज़ाब पकड़ लेगा ।६५।

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِیْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَیَّامٍ

इस पर उन्हों ने उस की कूँचे काट दीं जिस पर उस ने उन्हें कहा कि तुम तीन दिन तक

1. हज़रत सालिह उस ऊँटनी पर सवार हो कर यात्रा और प्रचार किया करते थे। अल्लाह ने उसी ऊँटनी को उन की जाति के लोगों के लिए निशान बना दिया और कहा कि इस की हत्या कर देने का यह अर्थ होगा कि तुम लोग हज़रत सालिह के धर्म-प्रचार को रोकते हो। यह ऐसा काम हैं जिस पर अज़ाब का आना निर्भर है।

ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ

अपने घरों में (अपने सामानों से) लाभ उठा लो। यह प्रतिज्ञा ऐसी है जो झूठी नहीं होगी।६६।

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِىِٕذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ

फिर जब हमारा (अज़ाब के बारे में) आदेश आ गया तो हम ने सालिह को और उस पर ईमान लाने वालों को अपनी विशेष रहमत द्वारा प्रत्येक विपत्ति से विशेष कर उस दिन की रुसवाई से बचा लिया। निस्सन्देह तेरा रब्ब बहुत शक्तिशाली और सामर्थ्यवान है।६७।

وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ

और जिन्हों ने अत्याचार किया था उन्हें उस अज़ाब ने पकड़ लिया तथा वे अपने-अपने घरों में (अज़ाब के कारण) धरती से चिमटे[1] हुए रह गए।६८।

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَاۤ اِنَّ ثَمُوْدَاۡ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ

मानों उन्हों ने उस देश में कभी निवास ही नहीं किया था। सुनो! समूद ने अपने रब्ब (के उपकारों) की कृतघ्नता की थी। सुनो! (अज़ाब के फ़रिश्तों को आदेश दिया गया कि) समूद की जाति के लिए लानत (फटकार) नियत कर दो।६९। (रुकू ६/६)

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ

और निस्सन्देह हमारे दूत इब्राहीम के पास शुभ-सूचना लाए थे एवं कहा था कि हमारी ओर से आप को सलाम हो उस ने कहा कि तुम्हारे लिए भी हमेशा की सलामती हो। फिर वह जल्दी से भूना हुआ एक बछड़ा ले आया।७०।

---

1. मूल शब्द 'जाममीन' के लिए देखिए सूरः आराफ़ टिप्पणी आयत नं० 79।

فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ۝٧١

सो उस ने जब उन के हाथों को देखा कि उस (भोजन) तक नहीं पहुँचते तो उस ने उन के इस व्यवहार को असाधारण[1] समझा और इस से खटके का आभास हुआ[2]। इस पर उन्हों ने कहा कि तू भयभीत मत हो। हमें तो लूत की जाति की ओर भेजा गया है।७१।

وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ۝٧٢

और उस की पत्नी भी पास ही खड़ी थी, इस पर वह भी व्याकुल[3] हो उठी। तब हम ने उसे उस की संतुष्टि के लिए इस्हाक़ और इस्हाक़ के पश्चात् याक़ूब के पैदा होने का शुभ-समाचार सुनाया।७२।

قَالَتْ يٰوَيْلَتٰۤى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ۝٧٣

उस ने कहा कि हाय ! मेरा अभाग्य। क्या मैं (बच्चे को) जन्म दूंगी हालाँकि मैं बूढ़ी हो चुकी हूँ और मेरे पतिदेव भी वृद्धावस्था में हैं ? निश्चय ही यह बात आश्चर्य जनक है।७३।

قَالُوْۤا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝٧٤

वे बोले कि क्या तू अल्लाह की बात पर आश्चर्य करती है ? हे इस घर वालो ! तुम्हारे लिए अल्लाह की रहमतें और उस की हर प्रकार की बरकतें (उतर रही) हैं। (अतएव तुम्हारे लिए यह बात आश्चर्य का कारण नहीं बननी चाहिए)। निस्सन्देह वह (अल्लाह) बड़ी प्रशंसा वाला तथा बड़े गौरव वाला है।७४।

1. इस का एक अर्थ यह भी हो सकता है कि उन्हें विचित्र प्रकृति के मनुष्य समझा।
2. अर्थात् कदाचित् वे कोई अशुभ समाचार ले कर आए हुए हैं।
3. मूल शब्द 'ज़हिकत' का अर्थ व्याकुल हो जाना भी होता है।

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَٰهِيمَ ٱلرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ ٱلْبُشْرَىٰ يُجَٰدِلُنَا فِى قَوْمِ لُوطٍ ۝

फिर जब इब्राहीम से घबराहट दूर हो गई और उसे शुभ समाचार भी मिल गया तो फिर वह लूत की जाति के बारे में हम से झगड़ने लगा।७५।

إِنَّ إِبْرَٰهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّٰهٌ مُّنِيبٌ ۝

इब्राहीम अत्यन्त सहनशील, कोमल चित्त और हमारे सामने बार-बार झुकने वाला था।७६।

يَٰٓإِبْرَٰهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَآ إِنَّهُۥ قَدْ جَآءَ أَمْرُ رَبِّكَ وَإِنَّهُمْ ءَاتِيهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ۝

(इस पर हम ने उसे कहा कि) हे इब्राहीम! तू इस (सिफ़ारिश) से रुक जा, क्योंकि तेरे रब्ब का अन्तिम आदेश आ चुका है और इन इन्कार करने वालों की ऐसी हालत है कि इन पर न टलने वाला अज़ाब अवश्य आ कर रहेगा।७७।

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِىٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالَ هَٰذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ۝

और जब हमारे भेजे हुए दूत लूत के पास आए तो उसे उन के कारण सन्ताप[1] हुआ तथा उस ने अपने दिल में तंगी महसूस की तथा कहा कि आज का दिन बहुत कठोर मालूम होता है।७८।

وَجَآءَهُۥ قَوْمُهُۥ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِن قَبْلُ كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ٱلسَّيِّـَٔاتِ قَالَ يَٰقَوْمِ هَٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِى هُنَّ

और उस की जाति के लोग क्रोध से भागते हुए उस के पास आए और (यह पहला अवसर न था) पहले भी वह लोग अत्यन्त घिनौने पाप किया करते थे। उस ने कहा कि हे मेरी जाति के लोगो! ये मेरी सुपुत्रियाँ हैं जो तुम्हारे ही घरानों में विवाही हुई हैं।

---

1. हज़रत लूत हज़रत इब्राहीम के भतीजे थे। वह पहले इराक़-देश में निवास करते थे फिर फ़लस्तीन में रहने लगे इस देश में वे अपरचित थे। उन की जाति ने उन्हें अपरचित लोगों को अपने पास ठहराने से रोका हुआ था। देखिए सूर: हुज्रात आयत नं० 7। किन्तु वे अतिथि धर्म का पालन करने के कारण विवश थे। जब उन्हों ने अतिथियों को देखा तो विचार किया कि यदि वह उन्हें अपने घर ले गए तो जाति के लोग उन से अप्रसन्न हो जाएंगे। अतः इस विचार से उन को दुःख और संताप हुआ।

اَطۡهَرُ لَكُمۡ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخۡزُوۡنِ فِىۡ ضَيۡفِىۡ ؕ اَلَيۡسَ مِنۡكُمۡ رَجُلٌ رَّشِيۡدٌ ۝

वे तुम्हारे लिए (तथा तुम्हारी मान-मर्यादा सुरक्षित रखने के लिए) पवित्र दिल वाली एवं पवित्र विचारों वाली हैं[1]। अतः तुम अल्लाह के लिए संयम धारण करो और मेरे अतिथियों के सामने मुझे अपमानित न करो। क्या तुम में से कोई समझ वाला नहीं है? ।७९।

قَالُوۡا لَقَدۡ عَلِمۡتَ مَا لَنَا فِىۡ بَنٰتِكَ مِنۡ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعۡلَمُ مَا نُرِيۡدُ ۝

वे बोले कि निस्सन्देह तुझे ज्ञात हो चुका है कि तेरी सुपुत्रियों[2] के बारे में हमें कोई अधिकार प्राप्त नहीं है और जो कुछ हम चाहते हैं तू उसे जानता है।८०।

قَالَ لَوۡ اَنَّ لِىۡ بِكُمۡ قُوَّةً اَوۡ اٰوِىۡۤ اِلٰى رُكۡنٍ شَدِيۡدٍ ۝

उस ने कहा कि हाय अफ़सोस! मुझे तुम्हारे मुक़ाबिले में किसी प्रकार की कोई शक्ति प्राप्त होती तो मैं तुम से निपट लेता, परन्तु यदि यह नहीं तो फिर यही एक राह है कि मैं एक शक्तिशाली सत्ता का सहारा[3] लूं।८१।

---

1. हज़रत लूत की दो पुत्रियाँ उसी नगर में ब्याही हुई थीं (उत्पत्ति 1 :15) कुछ मुसलमान भाष्यकार भूलवश यह अर्थ करते हैं कि मेरी पुत्रियों से भोग-विलास कर लो, परन्तु मेरे अतिथियों को कुछ न कहो। यह एक लज्जाजनक तथा घिनौना विचार है और एक नबी की मान-मर्यादा पर कठोर घात है। पवित्र क़ुर्आन और बाइबिल से ज़ाहिर है कि उन लोगों को क्रोध इस बात पर था कि वह अपरचित व्यक्तियों को अपने घर क्यों लाए। यह इच्छा न थी कि उन अतिथियों से भोग-विलास करें। तौरात के कथनानुसार हज़रत लूत की दो पुत्रियाँ पहले से ही उन लोगों में ब्याही हुई थीं उन की ओर संकेत करना हज़रत लूत को मूर्ख बनाना है। हज़रत लूत तो केवल यह कहते हैं कि मेरी इन पुत्रियों के होने के कारण तुम्हें विश्वास हो सकता है कि मैं तथा मेरे अतिथि तुम्हारे साथ किसी प्रकार का विश्वासघात नहीं करेंगे। अतः क्रोधित क्यों होते हो।

2. अर्थात् वे तो पहले ही हमारी बहू-बेटियाँ हैं। हमारा आरोप तो आने वाले लोगों के बारे में है।

3. अर्थात् तुम्हारे बुरे कर्मों से सुरक्षित रहने के लिए अल्लाह से प्रार्थना करूँ।

(इस पर) उन (अतिथियों) ने कहा कि हे लूत ! निस्सन्देह हम तेरे रब्ब के भेजे हुए[1] हैं और हम जानते हैं कि वे तुझ तक कदापि नहीं पहुँच सकते। अतः तू रात के किसी हिस्से में अपने परिवार को ले कर यहाँ से जल्दी चला जा और तुम में से कोई भी इधर-उधर न देखे। इस प्रकार तुम सुरक्षित रहोगे। हाँ ! तेरी पत्नी ऐसी है कि जो अज़ाब उन पर आया हुआ है, निस्सन्देह वह उस पर भी आने वाला है और उन के विनाश का निश्चित समय आने वाली प्रातः काल है और क्या प्रातः काल निकट नहीं है ? ।८२।

قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ۗ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ۗ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۗ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ۝٨٢

फिर जब हमारा (अज़ाब-सम्बन्धी) आदेश आ गया तो हम ने उस (बस्ती) को उथल-पुथल कर के रख दिया और उस पर सूखी मिट्टी से बने हुए पत्थरों की निरन्तर वर्षा की ।८३।

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ۝٨٣

जो तेरे रब्ब के ज्ञान में (उन्हीं के लिए) निश्चित किए हुए थे तथा यह अज़ाब इन[2] अत्याचारियों से भी दूर नहीं ।८४। (रुकू ७/७)

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ۗ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ۝٨٤ ع

और मद्यन जाति की ओर हम ने उन के भाई शुऐब को (नबी बना कर) भेजा। उस ने उन्हें कहा कि हे मेरी जाति के लोगो !

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا

1. वे व्यक्ति देश-भक्त थे जिन को अल्लाह ने इस लिए भेजा था कि चूँकि वे विदेशी हैं इस लिए इन लोगों के पथप्रदर्शन में कोई ठिकाना पा सकें और परेशान न हों।

2. अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के समय के अत्याचारियों से यह अज़ाब टल नहीं सकता।

اللهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّاِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ۝

तुम अल्लाह की उपासना करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई भी उपास्य नहीं और माप एवं तौल में कमी न किया करो। मैं (इस समय) निश्चय ही तुम्हारी दशा अच्छी देखता हूँ और (साथ ही) मैं तुम्हारे सम्बन्ध में विनाश करने वाले एक भारी दिन के अज़ाब से डर रहा हूँ।८५।

وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ۝

और हे मेरी जाति के लोगो! तुम माप और तौल न्याय के साथ पूरा किया करो और लोगों को उन की वस्तुएँ कम कर के न दिया करो तथा फ़सादी बन कर धरती (देश) में फ़साद मत फैलाओ।८६।

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ۝

यदि तुम सच्चे मोमिन हो तो (विश्वास रखो कि) अल्लाह का तुम्हारे पास शेष छोड़ा हुआ धन ही तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है और मैं तुम पर कोई निरीक्षक (बना कर) नहीं (भेजा गया। मैं तो केवल एक उपदेशक हूँ)।८७।

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَاۤ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِيْۤ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ۝

वे बोले कि हे शुऐब! क्या तुझे तेरी नमाज़ आदेश देती है कि जिस वस्तु की हमारे पूर्वज उपासना करते आए हैं उसे हम छोड़ दें? या इस (बात) को (छोड़ दें) कि अपने धन-दौलत के बारे में जो कुछ चाहें करें। यदि यह सत्य है तब तो तू निश्चय ही बड़ा बुद्धिमान (एवं समझ वाला है)।८८।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى

उस ने कहा कि हे मेरी जाति के लोगो! भला बताओ तो सही यदि यह (सिद्ध हो जाए) कि मैं (अपने दावे की नींव) अपने

بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ وَرَزَقَنِىْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِىْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٩﴾

रब्ब की दी हुई किसी रोशन दलील पर रखता हूँ तथा उस ने मुझे अपने पास से उत्तम आजीविका प्रदान की है (तो तुम कल को अल्लाह के सामने क्या उत्तर दोगे) ? और मैं यह नहीं चाहता कि जिस बात से मैं तुम्हें रोकूँ उस से तुम तो रुक जाओ, परन्तु मैं स्वयं तुम्हारे विरुद्ध[1] उसी काम के करने का प्रयत्न करूँ ? मैं तो केवल सुधार करने के सिवा जिस की जितनी मुझ में शक्ति है और कुछ नहीं चाहता और मेरा सामर्थ्य पाना अल्लाह ही (की कृपा एवं दया) से है। मेरा उसी पर भरोसा है और मैं उसी की ओर बार-बार झुकता हूँ।८९।

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِىْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿٩٠﴾

और हे मेरी जाति के लोगो! (सावधान रहो) मेरे साथ तुम्हारी शत्रुता तुम को कहीं इस बात के लिए उत्तेजित न कर दे कि तुम वैसी ही विपत्ति सुहेड़ लो जैसी कि नूह की जाति या हूद की जाति अथवा सालिह की जाति के लोगों पर विपत्ति आई थी तथा लूत की जाति तो तुम से कुछ ऐसी दूर भी नहीं है।९०।

وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّىْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿٩١﴾

और तुम अपने रब्ब से क्षमा के लिए प्रार्थना करो और फिर उस की ओर पूर्ण रूप से झुक जाओ। निस्सन्देह मेरा रब्ब बार-बार दया करने वाला एवं बहुत ही प्रेम करने वाला है।९१।

---

1. इन्कार करने वाले लोगों ने यह समझा कि शुऐब हमें छल-कपट दे कर अपने व्यापार को बढ़ाना चाहता है। हज़रत शुऐब ने इस विचार का खण्डन करते हुए जो उत्तर दिया वह इस आयत में वर्णित है।

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۫ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿٩٢﴾

वे बोले कि हे शुऐब ! जो कुछ तू कहता है उस में से बहुत सा हिस्सा हमारी समझ में नहीं आता और हम तुझे अपने बीच एक निर्बल व्यक्ति समझते हैं। यदि तेरा जत्था न होता तो हम तुझे संगसार[1] कर देते और तू स्वयं भी हमारी दृष्टि में कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति नहीं है।९२।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَاۗءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٩٣﴾

उस ने कहा कि हे मेरी जाति के लोगो ! क्या मेरा जत्था[2] तुम्हारी दृष्टि में अल्लाह की अपेक्षा अधिक प्रतिष्ठित है ? हालाँकि तुम ने उस से मुँह मोड़ रखा है और जो कुछ तुम करते हो मेरा रब्ब उसे भली-भाँति जानता है।९३।

وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۭ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۭ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٤﴾

और हे मेरी जाति के लोगो ! तुम अपने स्थान पर अपना काम करते जाओ मैं भी अपने स्थान पर अपना काम कर रहा हूँ। तुम्हें शीघ्र ही पता चल जाएगा कि वह कौन है जिस पर अपमान-जनक अज़ाब आता है और कौन झूठा है (तथा कौन सच्चा) और तुम (मेरे और अपने परिणाम की) प्रतीक्षा करो। निस्सन्देह मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करूँगा।९४।

وَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ

और जब हमारा (अज़ाब-सम्बन्धी) आदेश आ पहुँचा तो हम ने शुऐब को तथा उन

1. अपराधी को ज़मीन में आधा गाड़ कर लोगों द्वारा पत्थरों से मार-मार कर हत्या कर देने का एक दण्ड जो अरब देशों में प्रचलित था।

2. मूल शब्द 'रहत' ऐसे जत्थे को कहते हैं जिस में तीन से नौ तक पुरुष ही पुरुष हों स्त्री कोई न हो अर्थात् केवल पुरुषों का जत्था।

بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَأَخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٩٥﴾

लोगों को जो उस पर ईमान लाए थे अपनी विशेष रहमत से (उस अज़ाब) से बचा लिया और जिन्हों ने अत्याचार किया था उन को उस अज़ाब ने पकड़ लिया तथा वे अपने घरों में धरती से चिमटे हुए नष्ट हो गए।९५।

كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۗ أَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُودُ ﴿٩٦﴾

मानों वे उन घरों में कभी बसे ही नहीं थे। सुनो! मद्यन के लिए भी अल्लाह ने धिक्कार निश्चित कर रखी थी जैसा कि उस ने समूद के लिए धिक्कार निश्चित कर रखी थी।९६। (रुकू ८/८)

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٩٧﴾

और निश्चय ही हम ने मूसा को सब प्रकार के चमत्कार और रोशन दलील दे कर भेजा था।९७।

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۖ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ﴿٩٨﴾

फ़िरऔन और उस की जाति के बड़े लोगों की ओर (भेजा था) किन्तु उन्हों ने (मूसा को छोड़ कर) फ़िरऔन के आदेश का अनुसरण किया और फ़िरऔन का आदेश बिल्कुल ठीक न था।९८।

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۖ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُودُ ﴿٩٩﴾

क़ियामत के दिन वह (फ़िरऔन) अपनी जाति के आगे-आगे चलेगा और वह उन को नरक की आग में जा उतारेगा, फिर वह घाट भी तथा उस में उतरने वाले भी बुरे होंगे।९९।

وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ بِئْسَ الرِّفْدُ

और इस लोक में भी उन के पीछे फटकार लगा दी गई है और क़ियामत के दिन भी

الْمَرْفُوْدُ ۝	लगा दी जाएगी। यह पुरस्कार[1] जो उन्हें दिया जाने वाला है अत्यन्त बुरा है।१००।
ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ۝	यह (नष्ट की हुई) बस्तियों के समाचारों का एक हिस्सा है। हम उसे तेरे सम्मुख वर्णन करते हैं। उन में से कुछ (बस्तियाँ अभी तक) खड़ी हैं (अर्थात् उन के निशान मौजूद हैं) और कुछ उजड़ी हुई हालत में हैं (अर्थात् उन के चिन्ह तक भी मिट चुके हैं)।१०१।
وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ۝	और हम ने उन पर कोई अत्याचार नहीं किया था अपितु उन्हों ने स्वयं अपने-आप पर अत्याचार किया था। फिर जब तेरे रब्ब (के अज़ाब) का आदेश आ गया तो उन्हें उन के उपास्यों ने जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारा करते थे लेश-मात्र भी लाभ न पहुँचाया और तबाही में डालने के सिवा उन को किसी बात में न बढ़ाया।१०२।
وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ۝	और तेरे रब्ब की पकड़, जब वह बस्तियों को इस दशा में कि वे अत्याचार पर अत्याचार कर रही हों पकड़ता है इसी प्रकार हुआ करती है और निस्सन्देह उस की पकड़ बड़ी ही पीड़ा-दायक एवं कड़ी हुआ करती है।१०३।
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ذٰلِكَ	जो व्यक्ति आख़िरत (महाप्रलय) के अज़ाब से डरता हो, निस्सन्देह उस के लिए इस पकड़ में एक (शिक्षा देने वाला) निशान पाया जाता है। यह एक ऐसा दिन (आने वाला)

1. व्यंग रूप में दण्ड का नाम पुरस्कार रखा है, क्योंकि इन्कार करने वाले लोग संसार में यही कहा करते हैं कि अल्लाह के पास भी हमें उत्तम पदार्थ मिलेंगे।

يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ۝

है जिस के लिए लोगों को इकट्ठा किया जाएगा तथा वह ऐसा दिन होगा जिसे सभी लोग देखेंगे ।१०४।

وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ۝

और हम उसे केवल एक निश्चित समय तक पीछे डाल रहे हैं ।१०५।

يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ۝

जिस समय वह आ जाएगा कोई भी उस (अल्लाह) की आज्ञा के बिना बात न कर सकेगा। फिर उन में से कुछ तो अभागे सिद्ध होंगे तथा कुछ भाग्यवान होंगे ।१०६।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ۝

सो जो दुर्भाग्यशाली सिद्ध होंगे वे आग में (प्रविष्ट) होंगे। उस में कभी तो पीड़ा के मारे उन की लम्बी साँसें निकल रही होंगी तथा कभी हिचकी जैसी साँस रही होंगी ।१०७।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۚ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝

वे उस में उस समय तक निवास करते चले जाएँगे जब तक कि आसमान और ज़मीन क़ायम हैं[1] सिवाय उस समय के जो तेरा रब्ब चाहे। तेरा रब्ब जो चाहता है उसे पूरा करके रहता है ।१०८।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِى الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۚ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ۝

और जो भाग्यवान होंगे वे स्वर्ग में उस समय तक रहते चले जाएँगे जब तक कि आसमान और ज़मीन क़ायम हैं, सिवाय उस समय के जो तेरा रब्ब चाहे। यह ऐसी देन है जो कभी समाप्त[2] नहीं की जाएगी ।१०९।

---

1. यह केवल एक मुहावरा है अन्यथा पवित्र क़ुर्आन से यही सिद्ध है कि एक दिन नरक में से सारे नरक वाले निकल जाएंगे ।

2. पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध होता है कि स्वर्गवासियों के आसमान और ज़मीन सदैव क़ायम रहेंगे और उन का पुरस्कार कभी समाप्त नहीं होगा। अतः यह वाक्य केवल ईश्वरीय सम्मान के लिए हैं ।

فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ۚ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ۚ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿۱۱۰﴾

अतएव (हे सम्बोध्य) ! जो उपासना ये लोग करते हैं तू उस के मिथ्या होने में किसी प्रकार का सन्देह न कर। ये उसी प्रकार की उपासना करते हैं जिस प्रकार की उपासना उन से पहले उन के पूर्वज किया करते थे और हम निश्चय ही उन को भी उन का पूरा-पूरा हिस्सा देंगे, जिस में से कुछ भी कम नहीं किया जाएगा।११०। (रुकू ९/९)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۱۱۱﴾

और निश्चय ही हम ने मूसा को (मतभेद मिटाने के लिए) किताब (अर्थात् तौरात) दी थी। फिर कुछ समय के बाद उस के बारे में भी मतभेद किया गया और यदि वह (रहमत के वादे वाली) बात जो तेरे रब्ब की ओर से पहले से उतर चुकी है (रोक) न होती तो उन के बीच कभी का निर्णय किया जा चुका होता और अब तो वे इस (किताब अर्थात् क़ुर्आन) के बारे में भी व्याकुल कर देने वाले एक सन्देह में पड़े हुए हैं।१११।

وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ۗ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۱۲﴾

और निस्सन्देह तेरा रब्ब उन्हें उन के कर्मों का पूरा-पूरा फल देगा और जो कुछ वे करते हैं उस को वह भली-भाँति जानता है।११२।

فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۗ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱۳﴾

अतएव (हे रसूल !) तू उन लोगों समेत जो तेरे साथ मिल कर (हमारी ओर) झुके हैं उसी तरह सीधी राह पर क़ायम रह जिस तरह तुझे आदेश दिया गया है और हे मोमिनो ! तुम कदापि सीमा का उल्लंघन न करना। जो कुछ तुम करते हो वह उसे देख रहा है।११३।

وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ

और तुम उन लोगों की ओर न झुकना जिन्हों ने अत्याचार किया है अन्यथा तुम्हें भी नरक की आग लपेट में ले लेगी और (उस समय) अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई भी मित्र नहीं होगा तथा न ही तुम्हें किसी दूसरी ओर से कोई सहायता मिलेगी।११४।

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ۭ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّـيِّاٰتِ ۭ ذٰلِكَ ذِكْرٰي لِلذّٰكِرِيْنَ

और (हे सम्बोध्य !) तू दिन के दोनों किनारों और रात के विभिन्न भागों में अच्छे ढंग से नमाज़ पढ़ा कर। निस्सन्देह नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं। यह (शिक्षा अल्लाह को) याद करने वालों के लिए एक उपदेश है।११५।

وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ

और धैर्य से काम ले, क्योंकि अल्लाह सदाचारियों के प्रतिफल को कदापि नष्ट नहीं किया करता।११६।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ

फिर इन जातियों में से जो तुम से पहले युगों में थीं, क्यों ऐसे बुद्धिमान व्यक्ति न निकले जो लोगों को देश में बिगाड़ पैदा करने से रोकते सिवाय थोड़े से लोगों के जिन्हें हम ने (उन के पापों से रुकने तथा दूसरों को रोकने के कारण) बचा लिया और जिन्हों ने अत्याचार को अपना लिया था वे उस (धन-दौलत के आनन्द) में व्यस्त हो गए, जिस में उन्हें संतुष्टी प्रदान की गई थी। अतः वे अपराधी बन गए।११७।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا

और तेरा रब्ब कदापि ऐसा नहीं कि वह बस्तियों को इस अवस्था में नष्ट कर दे

مُصْلِحُوْنَ ﴿١١٨﴾

कि उन में रहने वाले सुधार के काम कर रहे हों ।११८।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿١١٩﴾

और यदि तेरा रब्ब अपनी इच्छा लागू करता तो सारे लोगों को एक ही सम्प्रदाय बना देता (परन्तु उस ने ऐसा नहीं किया तथा उन्हें उन की बुद्धि पर छोड़ दिया)। अतः वे सदैव परस्पर एक-दूसरे से मतभेद करते रहेंगे ।११९।

اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۚ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٠﴾

सिवाय उन लोगों के जिन पर तेरे रब्ब ने दया की और इसी (दया) के लिए उस ने उन्हें पैदा किया है। (मतभेद करने वालों के सम्बन्ध में) तेरे रब्ब का यह कथन अवश्य पूरा होगा कि निस्सन्देह मैं जिन्नों तथा मनुष्यों से नरक को भर दूंगा ।१२०।

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

और तेरे दिल को मज़बूत बनाने के लिए हम तेरे सामने नबियों के समस्त महत्व-पूर्ण समाचार वर्णन करते हैं तथा इस (सूरः) में वे समस्त बातें तुझ पर उतारी गई हैं जो सच और हिक्मत से भरी हुई हैं तथा उपदेश देने वाली एवं मोमिनों को उन का कर्त्तव्य याद दिलाने वाली हैं ।१२१।

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿١٢٢﴾

और तू उन लोगों से जो ईमान नहीं लाते कह दे कि तुम अपनी परिस्थिति के अनुसार कर्म करो हम भी अपनी परिस्थिति के अनुसार कर्म करेंगे ।१२२।

وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

और तुम प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।१२३।

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٣﴾
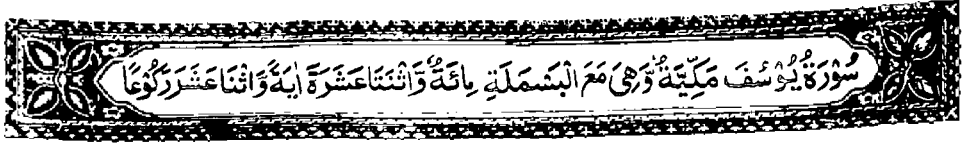
और आसमानों तथा ज़मीन के परोक्ष का ज्ञान केवल अल्लाह को ही है तथा सब बातें अन्ततः उसी की ओर लौट कर जाती हैं। अतः तू उसी की उपासना कर और उसी पर भरोसा रख तथा तेरा रब्ब उन कामों से कदापि अनजान नहीं जो तुम करते हो।१२४। (रुकू १०/१०)

सूर: यूसुफ़

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की एक सौ बारह आयतें एवं बारह रुकू हैं ।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ②

मैं अल्लाह देखने[1] वाला हूँ । ये (सच्चाई को) स्पष्ट करने वाली किताब की आयतें हैं ।२।

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ③

अपने अर्थों को अच्छी तरह स्पष्ट करने वाले क़ुर्आन को हम ने उतारा है ताकि तुम समझ से काम लो ।३।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ④

हम तेरे पास हर-एक बात को अच्छे ढंग से वर्णन करते हैं, क्योंकि हम ने इस क़ुर्आन को तेरी ओर (सच्चाइयों पर आधारित) वह्य के द्वारा उतारा है और इस से पहले तू (इन सच्चाइयों से) बे-ख़बर (अर्थात् अनजान) लोगों में शामिल था ।४।

اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ

(तू उस समय को याद कर) जब यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा था कि हे मेरे पिता ! मैं ने (स्वप्न में) ग्यारह नक्षत्रों तथा सूर्य एवं

---

1. मूल शब्द अलिफ़, लाम, रा है । जिस का अर्थ है मैं अल्लाह देखने वाला हूँ । विवरण के लिए देखिए सूर: बक़र: टिप्पणी आयत 2 ।

أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سٰجِدِيْنَ ۝

चन्द्रमा को देखा है (और आश्चर्य-जनक बात यह है कि) मैं ने उन्हें अपने सामने सजदः करते हुए देखा है ।५।

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝

उस ने कहा कि हे मेरे प्रिय पुत्र ! अपना यह स्वप्न अपने भाइयों के सामने वर्णन न कीजियो अन्यथा वे तेरे बारे में कोई षड्यन्त्र रचेंगे, क्योंकि निस्सन्देह शैतान मनुष्य का खुला-खुला शत्रु है ।६।

وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ ع

और (जैसा कि तू ने देखा है) उसी प्रकार तेरा रब्ब तुझे चुन लेगा और अपनी बातों का तुझे ज्ञान प्रदान करेगा और तुझ पर तथा याक़ूब की समस्त सन्तान पर अपना पुरस्कार पूरा करेगा जैसा कि उस ने इस से पहले तेरे दो पूर्वजों--इब्राहीम एवं इस्हाक़ पर पूरा किया था । निस्सन्देह तेरा रब्ब बहुत जानने वाला एवं हिक्मत वाला है ।७। (रुकू १/११)

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ ۝

यूसुफ़ और उस के भाइयों की घटनाओं में (सच्चाई के) जिज्ञासुओं के लिए निश्चय ही अनेक निशान (पाए जाते) हैं ।८।

اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ۭ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِۨ ۝

(अर्थात् उस समय की घटनाओं में) जब उन्हों ने (अर्थात् यूसुफ़ के भाइयों ने परस्पर एक-दूसरे से) कहा कि निस्सन्देह यूसुफ़ और उस का भाई[1] हमारी अपेक्षा हमारे पिता को अधिक प्रिय हैं, हालाँकि हम एक शक्तिशाली जत्था हैं। इस बात में हमारे पिता खुली-खुली भूल में हैं ।९।

1. हज़रत यूसुफ़ और बिनयामीन माता-पिता से सगे भाई थे और दूसरे ग्यारह भाई माता की ओर से सौतेले थे ।

اِقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِاطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ﴿١٠﴾	(इस लिए या तो) यूसुफ़ की हत्या कर दो अथवा उसे किसी और देश में दूर फेंक दो। (ऐसा करोगे) तब तुम्हारे पिता का ध्यान विशेषतः तुम्हारी ओर हो जाएगी और (इस काम से डरने का कोई कारण नहीं क्योंकि) इस के बाद (तौबः कर के फिर) तुम एक नेक गिरोह बन सकोगे।१०।
قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿١١﴾	इस पर उन में से एक कहने वाले ने कहा कि तुम यूसुफ़ की हत्या न करो और यदि तुम्हें कुछ करना ही है तो उसे किसी बावली की तह में फेंक दो, किसी यात्री दल का कोई व्यक्ति उसे देख कर उठा लेगा (इस प्रकार बिना हत्या के तुम्हारा उद्देश्य पूरा हो जाएगा)।११।
قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ﴿١٢﴾	फिर उन्हों ने (अपने पिता से) कहा कि हे हमारे पिता ! आप को हमारे बारे में क्या शंका है कि आप यूसुफ़ के विषय में हमारे ऊपर विश्वास नहीं करते ? हालाँकि हम उस से हार्दिक प्रेम रखते हैं।१२।
اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿١٣﴾	प्रातः उसे हमारे साथ घूमने के लिए बाहर भेजिए, वह वहाँ स्वतन्त्र रूप से खान-पान करेगा तथा खेलेगा और हम उस की रक्षा करेंगे।१३।
قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْۤ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ﴿١٤﴾	उस (याक़ूब) ने कहा कि निस्सन्देह उसे तुम्हारा (अपने साथ) ले जाना मुझे चिन्तित करता है और मैं इस बात से भी डरता हूँ कि कहीं ऐसी हालत में कि तुम उस से असावधान हो जाओ तो उसे कोई भेड़िया ही आ कर न खा जाए।१४।

قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿١٥﴾

वे बोले कि यदि इस बात के होते हुए भी कि हम एक शक्तिशाली जत्था हैं, उसे भेड़िया खा जाए ! तो अल्लाह की सौगन्ध ! ऐसी हालत में तो हम निश्चय ही घाटे में पड़ने वाले होंगे ।१५।

فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٦﴾

फिर जब वह उसे ले गए और उसे किसी बावली के तह में डाल देने का एक मत हो कर फ़ैसला कर लिया तो इधर उन्हों ने अपना इरादा पूरा किया और उधर हम ने उस पर वह्य (के द्वारा यह शुभ-समाचार) उतारा कि तू (अर्थात् यूसुफ़ सुरक्षित रहेगा और) उन्हें उन के इस बुरे काम की जानकारी देगा और वे इस बात को नहीं समझते थे ।१६।

وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿١٧﴾

और वे इशा (घोर संध्या) के समय अपने पिता के पास रोते हुए आए ।१७।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿١٨﴾

और कहा कि हे हमारे पिता ! विश्वास कीजिए हम जा कर खेलने और एक-दूसरे से बढ़-बढ़ कर दौड़ने लगे तथा यूसुफ़ को अपने वस्त्र आदि सामान के पास छोड़ गए तो (दुर्भाग्यवश) उसे एक भेड़िया खा गया। (और यह तो हम जानते हैं कि) आप हमारी बात को सच नहीं मानेंगे यद्यपि हम उस बात में सच्चे (ही क्यों न) हों ।१८।

وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا

और (उसे विश्वास दिलाने के लिए) वे उस (यूसुफ़) के कुर्ते पर झूठ-मूठ लहू लगा लाए (जिसे देख कर) उस ने कहा कि (यह बात सच नहीं है) अपितु तुम्हारे मन ने तुम्हारे

فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١٩﴾

लिए एक ऐसी (बुरी) बात को अच्छा कर के दिखलाया है जिसे तुम कर चुके हो। अब (मेरे लिए) पूर्ण रूप से धैर्य धारण करना ही उचित है तथा जो बात तुम बताते हो उस के (दूर करने के) लिए अल्लाह ही से सहायता माँगी जा सकती है। (सो उसी से ही माँगी जाएगी) ।१९।

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُ ۖ قَالَ يَا بُشْرَىٰ هَٰذَا غُلَامٌ ۚ وَأَسَرُّوهُ بِضَاعَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٢٠﴾

और (उसी बीच) एक क़ाफ़िला (अर्थात् यात्रियों का एक दल) आया तथा उन्हों ने अपने पानी लाने वाले एक व्यक्ति को भेजा और उस ने (बावली में) अपना डोल डाला तो (बालक को देख कर) उस ने कहा कि हे (यात्रीगण) सुनो! देखो, मुझे एक बालक मिला है और उन्हों ने (अर्थात् यात्रियों ने) उसे एक व्यापारिक सामग्री समझते हुए छिपा लिया तथा जो कुछ ये करते थे अल्लाह उसे भली-भाँति जानता था ।२०।

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ﴿٢١﴾

और (फिर जब यूसुफ़ के भाइयों को यूसुफ़ के पकड़े जाने का पता चला तो) उन्हों ने (उसे अपना दास प्रकट कर के) कुछ थोड़े से दामों पर अर्थात् कुछ गिनती के दिरहमों पर (उसी यात्री दल के पास) उसे बेच दिया तथा उन को (इन थोड़े से पैसों)[1] के लिए भी कोई लालच न थी ।२१। (रुकू २/१२)

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي

और मिस्र (निवासियों) में से जिस व्यक्ति ने उसे मोल लिया था उस ने अपनी पत्नी

1. अर्थात् यूसुफ़ को अपने देश से निकालने के लिए बेचा अन्यथा उन्हें धन का कोई लोभ न था।

مَثْوٰىهُ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾

से कहा कि इस के रहने के स्थान को अच्छा बना। आशा है कि यह बालक हमारे लिए लाभदायक सिद्ध होगा अथवा हम इसे अपना पुत्र ही बना लेंगे और इस प्रकार हम ने यूसुफ़ को उस देश में आदर और सम्मान दिया और (हम ने उसे यह आदर का स्थान) इसलिए भी दिया ताकि हम उसे स्वप्न फल का ज्ञान दें और अल्लाह अपनी बात (को पूरा करने) पर सामर्थ्य रखता है, किन्तु बहुत से लोग इस (हक़ीक़त को) नहीं जानते।२२।

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾

और जब वह अपनी शक्ति और मज़बूती की आयु (अर्थात् जवानी) को पहुँचा तो हम ने उसे फ़ैसला (करने की समझ) और विशेष ज्ञान प्रदान किया और हम सदाचारियों को इसी प्रकार बदला दिया करते हैं।२३।

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّىْٓ اَحْسَنَ مَثْوَاىَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾

और जिस स्त्री के घर में वह रहता था उस ने उस से उस की इच्छा के विरुद्ध एक काम करवाना चाहा तथा (उस घर के) सारे द्वार बन्द कर दिए और कहा कि (मेरी ओर) आ जा! उस ने कहा कि मैं (ऐसा करने से) अल्लाह की शरण चाहता हूँ। निस्सन्देह वह मेरा रब्ब है। उस ने ही मेरे रहने का स्थान अच्छा बनाया है। सच्ची बात यही है कि अत्याचारी लोग सफलता प्राप्त नहीं किया करते।२४।

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ؕ وَهَمَّ بِهَا ۚ لَوْلَآ اَنْ

और उस स्त्री ने उस के लिए अपना पक्का इरादा बना लिया और उस (यूसुफ़) ने भी उस स्त्री के बारे में (अर्थात् उस से सुरक्षित

رَّا بُرۡهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصۡرِفَ عَنۡهُ السُّوۡٓءَ وَالۡفَحۡشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنۡ عِبَادِنَا الۡمُخۡلَصِيۡنَ ﴿٢٥﴾	रहने का) पक्का इरादा कर लिया और यदि उस ने अपने रब्ब का रोशन निशान न देखा होता (तो वह ऐसा पक्का इरादा न कर सकता) फिर ऐसा ही हुआ ताकि हम उस से हर-एक बुराई और निर्लज्जता की बात को दूर कर दें। निस्सन्देह वह हमारे भक्तों और (पवित्र किए हुए) बन्दों में से था।२५।
وَاسۡتَبَقَا الۡبَابَ وَقَدَّتۡ قَمِيۡصَهٗ مِنۡ دُبُرٍ وَّ اَلۡفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الۡبَابِ ؕ قَالَتۡ مَا جَزَآءُ مَنۡ اَرَادَ بِاَهۡلِكَ سُوۡٓءًا اِلَّاۤ اَنۡ يُّسۡجَنَ اَوۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿٢٦﴾	और वे दोनों द्वार की ओर भागे और इस (खींचातानी में उस स्त्री) ने उस के कुर्ते को पीछे से फाड़ दिया (जब वे द्वार तक पहुँचे तो) उन्हों ने द्वार पर उस स्त्री के पति को पाया जिस पर उस स्त्री ने अपने पति से कहा कि जो व्यक्ति आप की पत्नी से बुरा काम करना चाहे उस का दण्ड इस के सिवा और कोई नहीं (होना चाहिए) कि उसे क़ैद कर दिया जाय या उसे कोई और पीड़ादायक अज़ाब पहुँचाया जाए।२६।
قَالَ هِيَ رَاوَدَتۡنِيۡ عَنۡ نَّفۡسِيۡ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنۡ اَهۡلِهَا ۚ اِنۡ كَانَ قَمِيۡصُهٗ قُدَّ مِنۡ قُبُلٍ فَصَدَقَتۡ وَهُوَ مِنَ الۡكٰذِبِيۡنَ ﴿٢٧﴾	उस (यूसुफ़) ने कहा कि (बात यह नहीं) अपितु इस ने मेरी इच्छा के विरुद्ध एक काम करवाना चाहा था और उस (स्त्री) के ही कुटुम्ब में से एक गवाह ने गवाही दी कि (इस स्त्री के कपड़े ठीक हैं, परन्तु इस मनुष्य का कुर्ता फटा हुआ है) यदि इस का कुर्ता आगे से फाड़ा गया है तो इस स्त्री ने सच कहा है और निस्सन्देह वह मनुष्य झूठा है।२७।
وَاِنۡ كَانَ قَمِيۡصُهٗ قُدَّ مِنۡ دُبُرٍ فَكَذَبَتۡ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿٢٨﴾	और यदि इस (पुरुष) का कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है तो इस (स्त्री) ने झूठ बोला है तथा वह (पुरुष) सच्चा है।२८।

فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۭ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ۝٢٩

सो जब उस के पति ने उस (अर्थात् यूसुफ़ के) कुर्ते को देखा कि पीछे से फाड़ा गया है तो उस ने अपनी पत्नी से कहा कि निस्सन्देह यह (झगड़ा) तुम्हारी चतुराई से पैदा हुआ है। तुम स्त्रियों की चतुराई बहुत बड़ी होती है।२९।

يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٚ وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ښ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـــِٕيْنَ ۝٣٠

हे यूसुफ़ ! तू इस (स्त्री की शरारत से) दरगुज़र (अर्थात् क्षमा) कर और (हे स्त्री !) तू अपने अपराधों की क्षमा माँग। निस्सन्देह तू अत्याचारियों में से है।३०। (रुकू ३/१३)

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۭ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٣١

और उस नगर की कुछ महिलाओं ने परस्पर कहा कि अज़ीज़[1] की स्त्री अपने दास से उस की इच्छा के विरुद्ध एक बुरा काम करवाना चाहती है और उस के प्रेम ने उस के दिल में घर कर लिया है। हम उसे इस बारे में खुली-खुली भूल में देखती हैं।३१।

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗٓ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ

और जब उस ने उनकी कानाफूसियों की चर्चा सुनी तो उन्हें (भोजन का) निमन्त्रण भेजा तथा उन के लिए बैठने के लिए एक विशेष गद्दी तय्यार की और (उन के आने पर) उन में से हर-एक को (भोजन काटने के लिए) एक-एक छुरी दी तथा (हज़रत यूसुफ़ से) कहा कि इन के सामने आ जा। सो जब उन्हों ने उसे देखा तो उसे बड़ी शान का मनुष्य पाया एवं (उसे देख कर

1. मिस्र देश के शासन में एक पद का नाम 'अज़ीज़' था जो मंत्री पद (Ministari) के बराबर था।

اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ۭ اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ۝

आश्चर्य से) अपने हाथ काटे[1] और कहा कि यह (व्यक्ति केवल) अल्लाह के लिए (बुराई में पड़ने से) बचा है। यह तो मानव (है ही) नहीं अपितु यह तो एक आदरणीय फ़रिश्ता है।३२।

قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ۭ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ۭ وَلَىِٕنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَآ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝

तब उस स्त्री ने उन से कहा कि यह वही व्यक्ति है जिस के बारे में तुम मेरी निन्दा करती हो और मैं ने इस की इच्छा के विरुद्ध एक बुरा काम करवाने की अवश्य कोशिश की थी पर यह उस से बचा रहा और यदि वह बात जिस के करने का मैं उसे आदेश देती हूँ इस ने न की तो निश्चय ही उसे क़ैद कर दिया जाएगा और निस्सन्देह वह अपमानित होगा।३३।

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ ۚ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝

(यह सुन कर) उस (यूसुफ़) ने (प्रार्थना करते हुए) कहा कि हे मेरे रब्ब! जिस बात की ओर यह मुझे बुलाती है उस की अपेक्षा कारावास में जाना मुझे अधिक अच्छा लगता है और यदि तू उन की योजनाओं के बुरे परिणाम को मुझ से दूर नहीं करेगा तो मैं उन की ओर झुक जाऊँगा एवं मूर्खों[2] में से हो जाऊँगा।३४।

فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۭ اِنَّهٗ

पस उस के रब्ब ने उस की प्रार्थना सुन ली और उन की योजनाओं के बुरे परिणाम को उस से हटा दिया। निस्सन्देह वही है जो

---

1. अर्थात् उन्हों ने अपनी अंगुलियाँ अपने दाँतों में दबा लीं।

2. अर्थात् तेरी ही सहायता से मैं सुरक्षित रह सकता हूँ अन्यथा तेरी सहायता के बिना यह सम्भव है कि मैं मूर्खों जैसे काम करने लगूँ।

هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾

बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है।३५।

ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٦﴾

फिर उन (सरदारों) का इन बातों को देख कर यह विचार हुआ कि (अपमान से बचने के लिए) वे उसे कुछ समय के लिए अवश्य ही बन्दी बना दें।३६। (रुकू ४/१४)

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَآ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ؕ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٧﴾

और कारावास में दो युवक और भी उस के साथ प्रविष्ट हुए जिन में से एक ने उसे यह कहा कि मैं (स्वप्न में) अपने-आप को (इस दशा में) देखता हूँ कि मैं अंगूर निचोड़ रहा हूँ और दूसरे ने कहा मैं (स्वप्न में) अपने आप को (इस दशा में) देखता हूँ कि मैं अपने-सिर पर रोटियाँ उठाए हुए हूँ जिन में से पक्षी खा रहे हैं। फिर उन दोनों ने उस से कहा कि आप हमें इस की वास्तविकता बताएँ। निस्सन्देह हम आप को भले पुरुषों में से समझते हैं।३७।

قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ؕ اِنِّيْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٨﴾

उस ने कहा कि इस समय का भोजन अभी नहीं आएगा कि मैं उस के आने से पहले तुम्हें इस (स्वप्न) की वास्तविकता बता दूंगा। यह (स्वप्न फल बताने की योग्यता मुझ में) इसलिए है कि मेरे रब्ब ने इस का मुझे ज्ञान दिया है। मैं ने उन लोगों का धर्म छोड़ दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते तथा वे क़ियामत के इन्कारी हैं।३८।

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ

और मैं ने अपने पूर्वजों इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब के सम्मार्ग का अनुसरण किया

مَا كَانَ لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٨﴾

है। हमें किसी वस्तु को भी अल्लाह का साझी ठहराने का अधिकार नहीं है। यह (एकेश्वरवाद की शिक्षा का पाना) हमारे लिए और दूसरे लोगों के लिए अल्लाह की विशेष कृपा है, परन्तु बहुत से लोग उस के उपकारों का धन्यवाद नहीं करते।३९।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَأَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾

हे मेरे कारावास के दोनों साथियो! क्या एक-दूसरे से मतभेद रखने वाले रब्ब अच्छे हैं या अल्लाह जो अकेला एवं पूरा-पूरा प्रभुत्व रखने वाला है?।४०।

مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءً سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مَّا أَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلّٰهِ ۚ أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ۚ ذٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾

तुम उसे छोड़ कर किसी की उपासना नहीं करते हो सिवाय कुछ थोड़े से नामों के, जिन्हें तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने बना रखा है और जिन के बारे में अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा। (याद रखो) निर्णय करना अल्लाह के सिवा किसी के अधिकार में नहीं है तथा उस ने यह आदेश दिया है कि तुम उस के सिवा किसी दूसरे की उपासना न करो। यही सत्य धर्म है, किन्तु बहुत से लोग जानते नहीं।४१।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمَا فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا ۖ وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّأْسِهِ ۚ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ﴿٤١﴾

हे कारागार के मेरे दोनों साथियो! (अब अपने स्वप्न का फल सुनो)। तुम में से एक तो अपने स्वामी को मदपान कराया करेगा और दूसरे को फाँसी द्वारा मारा जाएगा, फिर पक्षी उस के सिर से (माँस आदि) खाएँगे। लो जिस बात के बारे में तुम पूछ रहे थे उस का फ़ैसला कर दिया गया है।४२।

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْدَ

और उस ने उन में से उस व्यक्ति से जिस के बारे में उस का विचार था कि वह छुटकारा

رَبِّكَ فَاَنْسٰهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ﴿٤٢﴾

पाने वाला है कहा कि अपने स्वामी के पास मेरी चर्चा भी करना, किन्तु शैतान ने उस (छुटकारा पाने वाले बंदी) को उस के स्वामी के पास यह चर्चा करना भुला दिया और वह (यूसुफ़) कई वर्ष कारागार में पड़ा रहा।४३। (रुकू ५/१५)

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْۤ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ﴿٤٣﴾

और (कुछ समय के बाद) राजा ने (अपने सभा के सदस्यों से) कहा कि मैं (स्वप्न में) सात हृष्ट-पुष्ट गौवें देखता हूँ जिन्हें सात दुबली (गौवें) खा रही हैं तथा सात हरी-भरी बालियाँ देखता हूँ एवं कुछ और बालियाँ भी जो सूखी हैं (देखता हूँ)। हे सरदारो ! यदि तुम स्वप्न का फल बताना जानते हो तो मुझे मेरे इस स्वप्न का ठीक मतलब बताओ ?।४४।

قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾

वे बोले कि यह तो उलटे-पुलटे व्यर्थ स्वप्न हैं और हम लोग ऐसे उलटे-पुलटे स्वप्नों की हक़ीक़त नहीं जानते।४५।

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ﴿٤٥﴾

और उन (दो बन्दियों) में से उस ने जिसे छुटकारा मिला था और जिस ने एक समय के बाद (यूसुफ़ के साथ अपनी बीती हुई घटना को) याद किया तो कहा कि इस की हक़ीक़त मैं तुम्हें बताऊँगा। पस तुम (इस की हक़ीक़त मालूम करने के लिए) मुझे भेजो।४६।

يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ

(और उस ने जा कर यूसुफ़ से कहा कि) हे यूसुफ़ ! हे सत्यावादी ! हमें उन सात मोटी गौवों को (स्वप्न में) देखने के बारे में जिन्हें

يَّأْكُلْهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ لَّعَلِّيْٓ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝

सात दुबली (गौवें) खा जाएं तथा सात हरी-भरी बालियों और उन के मुक़ाबिल कुछ और सूखी बालियों के बारे में विस्तार से बताइए ताकि मैं उन लोगों के पास जाऊँ कि उन को स्वप्न फल का ज्ञान हो जाए ।४७।

قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ۝

उस ने कहा कि तुम लगातार सात वर्ष परिश्रम से खेती करोगे। अतः इस समय में जो कुछ तुम काटो उस में से थोड़े से भाग को जो तुम खा लो शेष सारे को उस की बालियों में ही रहने देना ।४८।

ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ۝

फिर इस के बाद सात भयानक (अकाल के वर्ष) आएँगे और उस थोड़ी मात्रा को छोड़ कर जिसे तुम जमा कर लोगे वे उस सारे ग़ल्ले को खा जाएँगे जो तुम ने पहले से उस समय के लिए इकट्ठा कर रखा होगा ।४९।

ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ۝ ع ١٦

फिर इस के बाद एक ऐसा वर्ष आएगा जिस में लोगों की पुकार[1] सुनी जाएगी और लोग सुखी हो जाएँगे तथा उस अवस्था में वे एक-दूसरे को उपहार[2] भेंट करेंगे ।५०। (रुकू ६/१६)

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ

और सम्राट ने (यह सुन कर) कहा कि तुम उसे मेरे पास ले आओ। अतः जब (सम्राट

1. मूल शब्द 'युग़ास' का एक अर्थ पुकार सुनना भी होता है।

2. मूल शब्द 'यासेरून' का साधारण अर्थ निचोड़ना होता है, किन्तु शब्द कोश में इस का अर्थ उपहार भेंट करना भी लिखा है जो प्रसन्नता के अवसरों पर भेंट किए जाते हैं। अकाल के पश्चात् सारे देश में ख़ुशी का समारोह मनाना ही था और एक-दूसरे को उपहार देने ही थे। अतः हम ने मूल शब्द का अर्थ यह किया है कि 'वे परस्पर उपहार भेंट करेंगे'।

الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَسْئَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ﴿٥١﴾

का) दूत उस के पास आया तो उस (यूसुफ़) ने उस दूत से कहा कि तू अपने स्वामी के पास लौट जा तथा उस से पूछ कि जिन स्त्रियों ने अपने हाथ काटे थे उन की इस समय क्या हालत है। मेरा रब्ब उन के षड्यन्त्र को निश्चय ही भली-भाँति जानने वाला है ।५१।

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْۗءٍ ۭ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۡ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥٢﴾

(यह सन्देश सुन कर) उस (राजा) ने उन (स्त्रियों) से कहा कि तुम्हारी उस बात (की वास्तविकता) क्या थी जब कि तुम ने यूसुफ़ से उस की इच्छा के विरुद्ध एक बुरा काम करवाने का प्रयत्न[1] किया था ? उन स्त्रियों ने कहा कि वह अल्लाह के लिए (कुकर्म करने से) डरा था और उस में बुराई की कोई बात हमें दिखाई नहीं दी थी। तब अज़ीज़ की पत्नी ने कहा कि अब सच्चाई बिल्कुल खुल गई है मैं ने ही उस की इच्छा के विरुद्ध बुरा काम कराने का प्रयत्न किया था। निस्सन्देह वह सत्यवादियों में से है ।५२।

ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَاۗىِٕنِيْنَ ﴿٥٣﴾

और यूसुफ़ ने उसे यह भी कहा कि मैं ने यह बात इसलिए कही है कि उस (अज़ीज़) को पता लग जाए कि मैं ने उस की अनुपस्थिति में उस के साथ कोई विश्वासघात नहीं किया और यह कि मेरा ईमान है कि अल्लाह विश्वासघात करने वालों की योजना को सफलता प्रदान नहीं करता ।५३।

---

1. उन महिलाओं ने कोई बुरा काम नहीं करवाना चाहा था अपितु यूसुफ़ के स्वामी की पत्नी की कामना थी, परन्तु वे महिलाएँ स्वामी की पत्नी की सखियाँ थीं और उन्हों ने सच्ची गवाही को छिपाए रखा ! अत: उन को भी अपराधी ठहराया गया है ।

وَمَآ أُبَرِّئُ نَفْسِيٓ إِنَّ ٱلنَّفْسَ لَأَمَّارَةٌۢ بِٱلسُّوٓءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيٓ إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

और मैं अपने-आप को (हर प्रकार की भूल से) निर्दोष नहीं ठहराता, क्योंकि मन बुरी बातों का आदेश देने में बड़ा साहसी है सिवाय उस के जिस पर मेरा रब्ब दया करे। मेरा रब्ब (त्रुटियों पर) बहुत पर्दा डालने वाला और बार-बार दया करने वाला है।५४।

وَقَالَ ٱلْمَلِكُ ٱئْتُونِي بِهِۦٓ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي ۖ فَلَمَّا كَلَّمَهُۥ قَالَ إِنَّكَ ٱلْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ۝

और सम्राट ने आदेश दिया कि उस (यूसुफ़) को मेरे पास लाओ ताकि मैं उसे अपने विशेष कामों के लिए चुन लूँ। (जब हज़रत यूसुफ़ आए) तो उस ने उस से बात-चीत की तो (उन्हें योग्य पा कर) कहा कि तू आज से हमारे यहाँ इज्ज़त और एतबार वाला व्यक्ति गिना जाएगा।५५।

قَالَ ٱجْعَلْنِي عَلَىٰ خَزَآئِنِ ٱلْأَرْضِ ۖ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ ۝

(तो यूसुफ़ ने) कहा कि मुझे राज्य-कोष का अध्यक्ष नियुक्त कर दीजिए, क्यों कि मैं निश्चय ही (ख़ज़ानों की) अच्छे ढंग से रक्षा करने वाला और (उन के ख़र्च के कारणों को) अच्छी तरह जानने वाला हूँ।५६।

وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي ٱلْأَرْضِ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ۚ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَن نَّشَآءُ ۖ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُحْسِنِينَ ۝

और इस तरह हम ने (उचित वातावरण पैदा कर के) यूसुफ़ को उस देश में अधिकार वाला ऊँचा पद प्रदान किया। वह (अपनी इच्छा के अनुसार) जहाँ कहीं चाहता ठहरता। हम जिसे चाहते हैं (इसी संसार में ही) अपनी दया प्रदान करते हैं और हम सदाचारियों का प्रतिफल नष्ट नहीं किया करते।५७।

وَلَأَجْرُ ٱلْءَاخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ ءَامَنُوا۟

और (इस लौकिक प्रतिफल के सिवा) बाद में आने वाले जीवन का बदला ईमान वालों

وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝ ع

एवं अल्लाह के लिए संयम धारण करने वालों के लिए कहीं बढ़-चढ़ कर होगा ।५८। (रुकू ७/१)

وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنكِرُونَ ۝

और (इस अकाल के समय में) यूसुफ़ के भाई भी (उस देश में) आए और फिर उस के सामने उपस्थित हुए तथा उस ने उन्हें देखते ही पहचान लिया, किन्तु वे उसे न पहचान सके ।५९।

وَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِأَخٍ لَّكُم مِّنْ أَبِيكُمْ ۚ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أُوفِي الْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ۝

और जब उस ने उन्हें उन का सामान दे कर वापसी के लिए तय्यार किया तो उन से कहा कि तुम्हारे पिता की ओर से जो तुम्हारा एक और भाई है अब उसे भी अपने साथ ले कर मेरे पास आना। क्या तुम देखते नहीं कि मैं माप पूरा देता हूँ तथा मैं अतिथियों की सेवा करने वालों में से सब से अच्छा हूँ ।६०।

فَإِن لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِندِي وَلَا تَقْرَبُونِ ۝

और यदि तुम उसे मेरे पास न लाए तो (समझ लो) मेरे पास तुम्हें तौल कर देने को कुछ नहीं होगा एवं (ऐसी हालत में) तुम मेरे पास भी न फटकना ।६१।

قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ۝

वे बोले कि हम उस के पिता को उस के बारे में फुसलाने का अवश्य प्रयत्न करेंगे और हम निश्चय ही यह (काम) कर के रहेंगे ।६२।

وَقَالَ لِفِتْيَانِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ

और उस (यूसुफ़) ने अपने सेवकों से कह दिया कि इन लोगों की पूंजी उन के बोरों में रख दो, सम्भव है जब वे लौट कर अपने घर वालों के पास जाएँ तो इस उपकार

يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٣﴾

को मानें और हो सकता है वे (इसी कारण) पुनः लौट कर आएँ।६३।

فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٤﴾

सो जब वे लौट कर अपने पिता के पास गए तो उन्हों ने कहा कि हे हमारे पिता! हमें (आगे के लिए) ग़ल्ला से रोक दिया गया है। इस लिए अब हमारे भाई (बिनयामीन) को भी हमारे साथ भेज दें ताकि हम पुनः ग़ल्ला प्राप्त कर सकें और निस्सन्देह हम उस की रक्षा करेंगे।६४।

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ۗ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۠ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٥﴾

उस (याक़ूब) ने कहा कि (तुम ही बताओ) क्या मैं इसे तुम्हारे सुपुर्द कर सकता हूँ सिवाय इस के कि इस का वही परिणाम निकले जो इस से पहले इस के भाई को तुम्हारे सुपुर्द करने का निकला था। अतः (मैं इसे तुम्हारे सुपुर्द तो करता हूँ, परन्तु इस विश्वास से कि तुम नहीं अपितु) अल्लाह ही सब से बढ़ कर रक्षक है तथा वही सब से बढ़ कर दया करने वाला है।६५।

وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ۗ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ۗ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ۗ ذٰلِكَ

और जब उन्हों ने अपना सामान खोला तो देखा कि उन की पूंजी उन की ओर वापस कर दी गई है तो उन्हों ने कहा कि हे हमारे पिता! (इस से बढ़ कर) हमारी और क्या इच्छा हो सकती है? (देखिए) यह हमारी पूंजी है। इसे भी हमारी ओर वापस कर दिया गया है। (यदि हमारे साथ हमारा भाई भी जाएगा तो) हम अपने परिवार के लिए ग़ल्ला लाएँगे तथा अपने भाई की (हर प्रकार से) रक्षा करेंगे ओर एक ऊँट का बोझ अधिक भी लाएँगे। यह

كَيْلٌ يَسِيرٌ ﴿٦٥﴾

बोझ (जो हमें बिना दाम के मिलेगा) एक बड़ी निअमत है ।६६।

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهٖٓ إِلَّآ أَن يُحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٦٦﴾

उस ने कहा कि मैं इसे तुम्हारे साथ कभी नहीं भेजूंगा जब तक तुम अल्लाह की ओर से निश्चित (क़सम खा कर मुझ से यह) पक्का वादा न करो कि तुम उसे अवश्य ही मेरे पास वापस लाओगे, सिवाय इस के कि तुम सब ही किसी विपत्ति में फँस जाओ, फिर जब उन्हों ने उसे अपना पक्का बचन दे दिया तो उस ने कहा कि जो कुछ हम इस समय कर रहे हैं अल्लाह इस का निरीक्षक है ।६७।

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوا مِنْ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ۗ وَمَآ اُغْنِي عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۗ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٦٧﴾

और उस (याक़ूब) ने उन्हें कहा कि हे मेरे पुत्रो ! तुम नगर के एक ही द्वार में से इकट्ठे प्रवेश न करना बल्कि अलग-अलग[1] द्वारों से भीतर जाना और मैं अल्लाह की पकड़ से (बचाने के लिए) कुछ भी तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता। फ़ैसला करना (वास्तव में) अल्लाह ही का काम है। मैं ने उसी पर भरोसा किया है तथा भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए ।६८।

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ۗ مَا كَانَ يُغْنِي

और जब वे उस योजना के अनुसार जिसका आदेश उन्हें उन के पिता ने दिया था, नगर

1. ऐसा लगता है कि सारी घटनाओं को सुन कर हज़रत याक़ूब को विश्वास हो गया था कि ग़ल्ला बाँटने वाला यूसुफ़ ही है अन्यथा फ़िरऔन के किसी मन्त्री को क्या पड़ी थी कि वह यूसुफ़ के भाई बिनयामीन को लाने पर ज़ोर देता। अतएव हज़रत याक़ूब ने यह चाहा कि सारे भाई नगर में अलग-अलग द्वारों से जाएँ ताकि राज्य-सैनिक बिनयामीन को दूसरे भाइयों से पहले यूसुफ़ से मिला सकें और दोनों भाई परस्पर परिचित हो कर एक दूसरे का हाल पूछ सकें।

عَنْهُم مِّنَ اللّٰهِ مِن شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰهَا ۚ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٩﴾ ع

में प्रविष्ट हुए तो (वह उद्देश्य पूरा हो गया जिस के लिए उन्हें आदेश दिया गया था) परन्तु याक़ूब अपने उपाय से उन (पुत्रों) को अल्लाह की योजना से बचा नहीं सकता था। हाँ ! परन्तु याक़ूब के दिल में एक अभिलाषा थी जिसे उस ने (इस रूप में) पूरा[1] कर लिया और चूँकि हम ने उस (याक़ूब) को ज्ञान प्रदान किया था। वह महाज्ञानी था, किन्तु बहुत से लोग (इस तत्त्व को) नहीं जानते।६९। (रुकू ८/२)

وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْٓ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٧٠﴾

और जब वे यूसुफ़ के सामने पेश हुए तो उस ने अपने भाई को अपने पास स्थान दिया तथा कहा कि निस्सन्देह मैं ही तेरा (खोया हुआ) भाई हूँ। अतः जो कुछ वे करते रहे हैं उस के कारण अब तू दुःखी न हो।७०।

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧١﴾

फिर जब उस ने उन का सामान दे कर वापसी के लिए तय्यार किया तो उस ने (पानी पीने का) एक कटोरा अपने भाई के बोरे[2] में रख दिया फिर (यों हुआ कि) किसी सरकारी ढिंढोरची ने घोषणा की कि हे यात्रीगण ! निस्सन्देह तुम चोर हो।७१।

---

1. और इस प्रकार दूसरे पुत्रों से पहले बिनयामीन को हज़रत यूसुफ़ से मिलाप करवाने में सफल हो गया।

2. इस से यह अभिप्राय नहीं कि बिनयामीन को फाँसने के लिए ऐसा किया गया, अपितु तात्पर्य यह है कि हज़रत यूसुफ़ ने पीने के लिए पानी माँगा था, फिर भूल से वह बर्तन उस बोरे में रख दिया जो उस के भाई का था। ऐसा प्रतीत होता है कि यूसुफ़ ने थक कर पीने के लिए पानी माँगा, सेवक पानी लाए, जलपान के पश्चात् उस ने भूल से वह बर्तन जो जलपान के काम भी आता था और मापने के काम भी, अपने भाई के बोरे में रख दिया। हमारे इस युग में भी साधारण रीति से गल्ला और दूध बर्तनों से मापे जाते हैं और वे बर्तन पानी पीने के भी काम आते हैं।

قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ۝

उन्हों ने अर्थात् (यूसुफ़ के भाइयों ने) उन (राज्य कर्मचारियों) की ओर ध्यान दे कर कहा कि तुम क्या चीज़ गुम पाते हो ? ।७२।

قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ۝

वे बोले कि हम ग़ल्ला मापने[1] का सरकारी बर्तन गुम पाते हैं और जो व्यक्ति उसे (खोज कर) ले आए तो एक ऊँट के बोझ जितना ग़ल्ला उस का (पुरस्कार) होगा और (घोषणा करने वाले ने यह भी कहा कि) मैं इस पुरस्कार का उत्तरदायी हूँ ।७३।

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ۝

वे बोले कि अल्लाह की क़सम ! तुम जानते हो कि हम यहाँ इसलिए नहीं आए कि देश में फ़साद करें और न ही हम चोर हैं ।७४।

قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ۝

उन्हों ने कहा कि यदि तुम झूठे सिद्ध हुए तो इस (चोरी) का क्या दण्ड होगा ? ७५ ।

قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝

वे बोले कि इस का दण्ड यह है कि जिस व्यक्ति के सामान में से वह (बर्तन) मिले (वह स्वयं ही) उस कर्म का बदला हो। हम लोग तो इसी प्रकार अत्याचारियों को दण्ड दिया करते हैं ।७६।

---

1. कुछ लोगों का कथन है कि गुम तो उन का पानी पीने का बर्तन हुआ था, परन्तु घोषणा की गई ग़ल्ला मापने वाले बर्तन की । विदित होता है कि हज़रत यूसुफ़ ने पानी पीने का बर्तन रखना चाहा था, किन्तु भूल वश मापने का बर्तन रखा गया, परन्तु यह स्पष्टीकरण ठीक नहीं है । वास्तव में मूल शब्द 'सुवाअ' का अर्थ मापने का बर्तन भी होता है तथा पानी पीने का बर्तन भी । अतः एक ही शब्द का अनुवाद मापने का पात्र भी है और पानी पीने का बर्तन भी ।

فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿۷۷﴾

तब उस (घोषणा करने वाले) ने उस (यूसुफ़) के भाई के बोरे से पहले उन (दूसरे[1] भाइयों) के बोरों की पड़ताल शुरू की फिर उस के भाई के बोरे को देखा और उस में से उस बर्तन को निकाला। इस प्रकार हम ने यूसुफ़ के लिए एक उपाय किया अन्यथा सरकार के क़ानून के अन्दर रहते हुए अल्लाह के उपाय के बिना वह अपने भाई को रोक नहीं सकता था। हम जिसे चाहते हैं सत्कार प्रदान करते हैं और (हक़ीक़त यह है कि) प्रत्येक ज्ञान वाले के ऊपर उस से अधिक ज्ञान रखने वाली सत्ता पाई जाती है।७७।

قَالُوْۤا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿۷۸﴾

वे (युसुफ़ के भाई) कहने लगे कि यदि इस ने चोरी की हो तो (कुछ आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि) इस का एक भाई भी पहले चोरी कर चुका है। इस पर यूसुफ़ ने (अपने दिल की बात को) अपने दिल में ही छिपाए रखा और उसे उन पर प्रकट न होने दिया। (हाँ! अपने मन में केवल यह) कहा कि तुम लोग अत्यन्त दुर्भाग्यशाली हो और जो बात तुम कहते हो उसे अल्लाह ही भली-भाँति जानता है। ७८।

1. सेवक यह समझ चुके थे कि बिनयामीन हज़रत यूसुफ़ की दृष्टि में सम्मान वाले एवं सर्व-प्रिय हैं। अतः उन्हों ने उस के बोरे की पड़ताल सब से पीछे की, परन्तु अल्लाह ने यूसुफ़ से भूल करवा कर मापने के बर्तन को जो पानी पीने के काम भी आता था, उस के भाई के बोरे में रखवा दिया था। यह अल्लाह की एक योजना थी न कि हज़रत यूसुफ़ की। इसी लिए अल्लाह कहता है कि यह उपाय हम ने यूसुफ़ के लिए किया था ता कि वह अपने भाई को रोक कर अपने पास रख सके, अन्यथा सरकारी

(शेष पृष्ठ ४०६ पर)

وे बोले कि हे सरदार ! इस का एक बहुत बूढ़ा पिता है। (उसे इस के दुःख से बचाने के लिए) आप इस के स्थान पर हम में से किसी एक को बन्दी बना लें। निस्सन्देह हम आप को परोपकारियों में से समझते हैं।७९।

قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٧٩﴾

उस ने कहा कि हम उस व्यक्ति को छोड़ कर जिस के पास हम ने अपनी चीज़ पाई है, किसी दूसरे को पकड़ने से अल्लाह की शरण चाहते हैं। यदि हम ऐसा करें तो हम निश्चय ही अत्याचारियों में से होंगे।८०। (रुकू ९/३)

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾ ع

अतः जब वे उस (यूसुफ़) से निराश हो गए तो आपस में एक-दूसरे से बात करते हुए लोगों से अलग हो गए। तब उन में से बड़े ने कहा कि क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे पिता ने तुम से एक दृढ़ वचन लिया हुआ है जिस की (पुष्टि) अल्लाह की क़सम से की हुई है और यह कि तुम इस से पहले यूसुफ़ के बारे में भी भूल कर चुके हो। अतः जब तक मेरा पिता मुझे (विशेष रूप से) आज्ञा न दे या स्वयं अल्लाह मेरे लिए कोई राह न निकाल दे, मैं इस देश को नहीं छोड़ूँगा और वह (अल्लाह) निर्णय करने

فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ۗ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ

(पृष्ठ ४०५ का शेष)

विधान के अनुसार किसी दोष के बिना वह उस को रोक नहीं सकता था। इस आयत से सिद्ध होता है कि हज़रत यूसुफ़ ने किसी छल-कपट से काम नहीं लिया बल्कि अल्लाह ने उस से भूल करवा दी ताकि वह अपने भाई को रोक सके। भाई को भी कोई हानि नहीं हुई, क्योंकि उसे मन्त्रियों का सम्पर्क और सम्मान प्राप्त हुआ।

حَتّٰى يَأْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝

वालों में से सब से अच्छा निर्णय करने वाला है।८१।

اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ۝

तुम अपने पिता के पास लौट जाओ और कहो कि हे हमारे पिता! आप के छोटे पुत्र ने अवश्य चोरी की है तथा हम ने आप के सामने वही बताया है जिस का हमें ज्ञान है और हम अपनी दृष्टि से ओझल बात की रक्षा नहीं कर सकते थे।८२।

وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ۭ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝

और आप अवश्य उन लोगों से भी पूछ लें जिन में हम रहते थे और उस यात्री-दल से भी जिस के साथ हम आए हैं तथा पूर्ण विश्वास कीजिए कि हम इस बात में सच्चे हैं।८३।

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۭ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝

उस (याक़ूब) ने कहा (कि यह बात सत्य प्रतीत) नहीं (होती) बल्कि मालूम होता है कि तुम्हारे मन की कामनाओं ने कोई बात सुन्दर रूप में तुम को दिखाई है। अब मेरे लिए यही रह गया है कि अच्छी[1] तरह धैर्य धारण करूँ। यह असम्भव नहीं कि अल्लाह उन सब को मेरे पास ले आए। निस्सन्देह वही है जो बहुत जानने वाला और बड़ी हिक्मत वाला है। ८४।

وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى عَلٰي يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ

और उस ने अपना मुंह उन से फेर लिया (तथा एकान्त में जाकर प्रार्थना की) और कहा कि हे (मेरे रब्ब!) यूसुफ़ के सम्बन्ध में मैं फिर निवेदन करता हूँ तथा दुःख के

1. अर्थात् बिनयामीन की शत्रुता के कारण एक साधारण सी घटना को चोरी ठहरा दिया है।

عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾

कारण उस की आँखों में आँसू[1] भर आए, परन्तु वह अपने दुःख को (सदैव) अपने दिल में ही) दबाए[2] रखता था ।८५।

قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾

वे कहने लगे कि अल्लाह की सौगन्ध ! (ऐसा प्रतीत होता है कि) आप उस समय तक यूसुफ़ की चर्चा करते रहेंगे जब तक आप रोगी न हो जाएँ या प्राण ही न दे दें ।८६।

قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾

उस ने कहा कि मैं अपनी व्याकुलता तथा दुःख की फ़रियाद अल्लाह ही के पास करता हूँ और अल्लाह की ओर से मुझे वह ज्ञान प्राप्त हुआ है जो तुम्हें प्राप्त नहीं ।८७।

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾

हे मेरे पुत्रो ! जाओ और जा कर यूसुफ़ एवं उस के भाई की खोज करो तथा अल्लाह की कृपा से निराश न हो । (वास्तविक) बात यह है कि अल्लाह के कृपा से इन्कार करने वाले लोगों के सिवा दूसरा कोई भी निराश नहीं होता ।८८।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا

सो जब वे (लौट कर फिर) उस (यूसुफ़) के पास आए तो उस से कहा कि हे सरदार ! हमें और हमारे परिवार को बड़ा कष्ट पहुँचा है और हम बिल्कुल थोड़ी सी पूंजी लाए हैं । अतएव आप (परोपकार के रूप में) हमें (हमारी माँग के अनुसार) ग़ल्ला दे दें और दान के रूप में (भी कुछ अधिक) प्रदान

1. मूल शब्द का अर्थ शब्द कोष में आँखों का आँसुओं से भर जाना भी लिखा है और यही अर्थ हम ने किया है, क्योंकि नबी के सम्मान को सामने रखते हुए यही अर्थ उचित है। वह अल्लाह से प्रार्थना करते हुए रो पड़ता है जैसा कि हमारे रसूले करीम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम रो पड़ा करते थे।

2. अर्थात् अल्लाह के सिवा किसी दूसरे पर प्रकट नहीं करता था।

إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ۝

करें। निस्सन्देह अल्लाह दान देने वालों को बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करता है।८९।

قَالَ هَلْ عَلِمْتُم مَّا فَعَلْتُم بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنتُمْ جَاهِلُونَ ۝

उस ने कहा कि क्या तुम्हें अपना वह व्यवहार याद है जो तुम ने यूसुफ़ तथा उस के भाई के साथ किया था जब कि तुम (अपने बुरे कर्मों के बुरे परिणाम से) अनजान थे।९०।

قَالُوا أَإِنَّكَ لَأَنتَ يُوسُفُ ۖ قَالَ أَنَا يُوسُفُ وَهَٰذَا أَخِي ۖ قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا ۖ إِنَّهُ مَن يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝

वे बोले कि क्या वास्तव में आप ही यूसुफ हैं? उस ने कहा कि हाँ! मैं ही यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर अपार कृपा की है। सच्ची बात यह है कि जो कोई संयम धारण करे और धैर्य से काम ले तो अल्लाह ऐसे परोपकारियों का प्रतिफल कदापि नष्ट नहीं करता।९१।

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ آثَرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِن كُنَّا لَخَاطِئِينَ ۝

उन्हों ने कहा कि हमें अल्लाह की क़सम है निस्सन्देह अल्लाह ने आप को हमारे ऊपर प्रधानता दी है और निस्सन्देह हम अपराधी थे।९२।

قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۖ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝

उस ने कहा कि अब तुम पर किसी प्रकार की लानत-मलामत[1] नहीं होगी और अल्लाह भी तुम्हें क्षमा कर देगा और वह सारे दया करने वालों से बढ़ कर दया करने वाला है।९३।

اذْهَبُوا بِقَمِيصِي هَٰذَا فَأَلْقُوهُ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ

तुम मेरा यह कुर्ता ले जाना और इसे मेरे पिता के सामने रखना इस से वह मेरे बारे

1. इस स्थान पर इतिहास से उस घटना का अध्ययन कर लेना चाहिए जो मक्का की विजय के पश्चात् इक्रमा और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के बीच बीती। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का क्षमादान निस्सन्देह हज़रत यूसुफ़ के क्षमा दान से बहुत बढ़ कर था क्योंकि हज़रत यूसुफ़ ने अपने पिता के पुत्रों को क्षमा किया था, परन्तु हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने अपने कट्टर शत्रु के पुत्र को क्षमा किया।

بَصِيْرًا ۚ وَأْتُوْنِيْ بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِيْنَ ۝٩٣

में सब बातों[1] को जान लेंगे और तुम अपना सारा परिवार भी मेरे पास ले आना।९४। (रुकू १०/४)

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ أَبُوْهُمْ إِنِّيْ لَأَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَا أَنْ تُفَنِّدُوْنِ ۝٩٤

और जब (उन का) यात्री-दल (मिस्र से) चल पड़ा तो उन के पिता ने लोगों से कहा कि ऐसा न हो कि तुम मुझे झुठलाने लगो, तो (मैं यह अवश्य कहूँगा कि) मुझे यूसुफ़ की महक आ रही है।९५।

قَالُوْا تَاللّٰهِ إِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ۝٩٥

वे (लोग) बोले कि तू निश्चय ही अपनी पुरानी भूल में पड़ा हुआ है।९६।

فَلَمَّآ أَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ أَلْقٰهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ ۚ إِنِّيْٓ أَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٩٦

अत: जैसे ही (यूसुफ़ के मिल जाने का) शुभ-समाचार देने वाला (हज़रत याक़ूब के पास) आया तो उस ने उस (कुर्ते) को उस के सामने रख दिया जिस से वह सारी बात समझ गया और कहा कि क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं अल्लाह की ओर से (ज्ञान पा कर) वह कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते ?।९७।

قَالُوْا يٰٓأَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ إِنَّا كُنَّا خٰطِئِيْنَ ۝٩٧

तब उन्हों ने (अर्थात् हज़रत यूसुफ़ के भाइयों ने) कहा कि हे हमारे पिता ! आप हमारे लिए (अल्लाह से) हमारे अपराधों की क्षमा की प्रार्थना करें। हम निश्चय ही अपराधी हैं।९८।

---

1. हज़रत यूसुफ़ को विश्वास था कि मेरे पिता को अब तक वह कुर्ता याद होगा जो मैं ने बन्दी बनाए जाने के समय तक पहन रखा था। जब कुर्ता उनके सामने रखा जाएगा तो वह समझ जाएँगे कि यूसुफ़ जीवित है और यह उसी का पुराना कुर्ता है।

قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيٓ ۖ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٩٩﴾

उस ने कहा कि मैं अवश्य तुम्हारे लिए अपने रब्ब से क्षमा कर देने की प्रार्थना करूँगा। निस्सन्देह वह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।९९।

فَلَمَّا دَخَلُوا۟ عَلَىٰ يُوسُفَ ءَاوَىٰٓ إِلَيْهِ أَبَوَيْهِ وَقَالَ ٱدْخُلُوا۟ مِصْرَ إِن شَآءَ ٱللَّهُ ءَامِنِينَ ﴿١٠٠﴾

फिर जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उस ने अपने माता-पिता को अपने पास स्थान दिया और सब से कहा कि अल्लाह की इच्छा के अनुसार सब के सब मिस्र में शान्ति के साथ प्रविष्ट हो जाओ।१००।

وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى ٱلْعَرْشِ وَخَرُّوا۟ لَهُۥ سُجَّدًا ۖ وَقَالَ يَٰٓأَبَتِ هَٰذَا تَأْوِيلُ رُءْيَٰىَ مِن قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّى حَقًّا ۖ وَقَدْ أَحْسَنَ بِىٓ إِذْ أَخْرَجَنِى مِنَ ٱلسِّجْنِ وَجَآءَ بِكُم مِّنَ ٱلْبَدْوِ مِنۢ بَعْدِ أَن نَّزَغَ ٱلشَّيْطَٰنُ بَيْنِى وَبَيْنَ إِخْوَتِىٓ ۚ إِنَّ رَبِّى لَطِيفٌ لِّمَا يَشَآءُ ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْعَلِيمُ ٱلْحَكِيمُ ﴿١٠١﴾

और उस ने अपने माता-पिता को अपने सिंहासन पर बिठाया तथा वे सब इस के कारण (अल्लाह का धन्यवाद करते हुए) सजदः में गिर गए और उस ने कहा कि हे मेरे पिता! यह मेरे पहले देखे हुए स्वप्न का स्वप्नफल[1] है। अल्लाह ने उसे पूरा कर दिया है और उस ने मुझ पर महान कृपा की है, क्योंकि उस ने पहले मुझे कारावास से निकाला, फिर (मुझे सम्मानित पद दे कर इस के बाद) तुम्हें जंगल (के क्षेत्र) से निकाल कर (इस समय मेरे पास) लाया जब शैतान ने मेरे तथा मेरे भाइयों के बीच बिगाड़ पैदा कर दिया था। मेरा रब्ब जिस से चाहता है कृपा (और दया) का व्यवहार करता है। निस्सन्देह वह बहुत जानने वाला और हिक्मत वाला है।१०१।

---

1. हज़रत यूसुफ़ ने स्वप्न में देखा था कि नक्षत्र और सूर्य एवं चन्द्र मेरे कारण सजदः कर रहे हैं। वह बात पूरी हो गई तथा आज आप लोग मेरे मिल जाने पर प्रसन्न हो कर अल्लाह को सजदः कर रहे हैं।

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۣ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٢﴾

हे मेरे रब्ब ! तूने मुझे हुकूमत का एक हिस्सा भी प्रदान किया है और तूने स्वप्न फल (बताने) का भी कुछ ज्ञान दिया है। हे आसमानों तथा ज़मीन के सर्जनहार ! तू ही इस लोक तथा परलोक दोनों में मेरा सहायक है। (जब भी मेरी मौत का समय आए तो) तू मुझे पूर्ण आज्ञाकारी होने की दशा में मौत दे और नेक लोगों के साथ मिला दे।१०२।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٣﴾

(हे हमारे रसूल !) यह (वृत्तान्त) परोक्ष के समाचारों[1] में से है। हम इसे वह्य (के द्वारा तुझ पर ज़ाहिर) करते हैं और जब वे (अर्थात् तेरे शत्रु तेरे विरुद्ध) योजनाएँ बनाते हुए अन्ततः सब सहमत हो गए थे तो तू (उस समय) उन के पास नहीं था।१०३।

وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾

और चाहे तेरी (कितनी भी) इच्छा हो (कि सारे लोग सच्चाई की राह पर चलने वाले बन जाएँ) फिर भी बहुत से लोग कदापि ईमान नहीं लाएँगे।१०४।

وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٥﴾ ع

और तू इस (शिक्षा तथा प्रचार) के बारे में उन से कुछ बदला नहीं माँगता। यह तो सब जहानों (तथा सब लोगों) के लिए प्रतिष्ठा का कारण है।१०५। (रुकू ११/५)

وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿١٠٦﴾

और आसमानों तथा ज़मीन में बहुत से निशान हैं जिन के पास से ये लोग मुँह मोड़ते हुए निकल जाते हैं।१०६।

1. अर्थात् यह एक कहानी नहीं अपितु एक भविष्यवाणी है कि मेरे साथ भी ऐसा ही होने वाला है। फिर समय आने पर आप के साथ भी ऐसा ही हुआ।

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُشْرِكُونَ ۝

और उन में से बहुत से लोग अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, परन्तु इस हालत में कि वे साथ-साथ शिर्क भी करते जाते हैं।१०७।

أَفَأَمِنُوا أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِنْ عَذَابِ اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

तो क्या ये लोग इस बात से निडर (और सुरक्षित) हो गए हैं कि उन पर अल्लाह के अज़ाबों में से कोई कड़ा अज़ाब आ जाए अथवा अचानक उन पर वह घड़ी आ जाए (जिस की सूचना पहले से दी जा चुकी है) और उन्हें पता भी न लगे।१०८।

قُلْ هَٰذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

तू कह कि यह मेरा व्यवहार[1] है। मैं तो अल्लाह की ओर बुलाता हूँ और जिन्हों ने सच्चे रूप से मेरा अनुसरण किया है, मैं तथा वे सब के सब अटल विश्वास[2] पर क़ायम हैं। अल्लाह (समस्त प्रकार की त्रुटियों से) पवित्र है और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ।१०९।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوحِي إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ

और तुझ से पहले भी हम (लोगों की हिदायत के लिए सदा) इन्हीं (संसार की) बस्तियों में रहने वाले पुरुषों ही को, जिन पर हम अपनी वह्य उतारते थे, रसूल बना कर भेजते रहे हैं। तो क्या इन लोगों ने धरती में घूम-फिर कर नहीं देखा कि जो लोग इन से पहले (नबियों के विरोधी) थे

---

1. अर्थात् मेरा व्यवहार अल्लाह के सच्चे मार्ग की ओर लोगों को प्रेम-पूर्वक बुलाना है न कि उन पर अत्याचार करना।

2. अर्थात् हम प्रत्येक बात को युक्ति और प्रमाण से माना करते हैं। कपोल-कल्पित बातों या ढकोसलों के आधार पर ईमान नहीं लाते।

كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ اتَّقَوْا ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١١٠﴾

उन का परिणाम कैसा निकला था? निस्सन्देह आख़िरत का घर उन लोगों के लिए अति उत्तम है जिन्हों ने संयम धारण किया। फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? ।११०।

حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْأَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوا جَاءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَاءُ ۖ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١١١﴾

और जब (एक ओर तो) रसूल उन से निराश[1] हो गए तथा (दूसरी ओर) उन (इन्कार करने वाले लोगों) का यह विचार पक्का हो गया कि उन से (वह्य के नाम पर) झूठी बातें कही जा रही हैं तो (उस समय) उन (रसूलों) के पास हमारी सहायता पहुँच गई और जिन्हें हम बचाना चाहते थे उन्हें बचा लिया गया और हमारा अज़ाब अपराधी लोगों से कदापि नहीं हटाया जाता ।१११।

لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۗ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١٢﴾ ع ١٢

इन लोगों के चर्चा में बुद्धिमानों के लिए शिक्षा है। यह ऐसी बात नहीं है जो मनगढ़त हो, अपितु यह अपने से पहले वाली (अल्लाह की किताब की भविष्यवाणियों) को पूर्ण रूप से पूरा करने वाली है और हर-एक बात को सविस्तार वर्णन करने वाली है तथा जो लोग ईमान लाते हैं उन के लिए हिदायत तथा रहमत है ।११२। (रुकू १२/६)

---

1. कुछ भाष्यकार लिखते हैं कि 'जब रसूल अल्लाह के अज़ाब के आने से निराश हो गए' परन्तु हमने यह अर्थ किया है कि जब रसूल लोगों के ईमान लाने से निराश हो गए और इन्कार करने वालों ने भी विश्वास कर लिया कि इन्हें जो कुछ सुनाया जा रहा है वह वह्य नहीं है अपितु वह रसूल की मनगढ़त और झूठी बातें हैं।
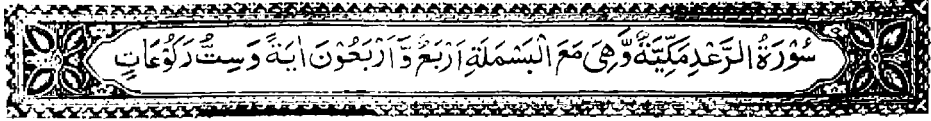
सूर: अल्-राद

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की चवालीस आयतें एवं छः रुकू हैं।]

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

الٓمّٓرٰ ۟ تِلۡکَ اٰیٰتُ الۡکِتٰبِ ؕ وَ الَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡکَ مِنۡ رَّبِّکَ الۡحَقُّ وَ لٰکِنَّ اَکۡثَرَ النَّاسِ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ ②

अलिफ़, लाम, मीम, रा'। मैं अल्लाह बहुत जानने वाला, बहुत देखने वाला हूँ। यह कामिल किताब की आयतें हैं और जो कलाम तेरे रब्ब की ओर से तुझ पर उतारा गया है वह बिलकुल सत्य है, किन्तु बहुत से लोग ईमान नहीं लाते ।२।

اَللّٰہُ الَّذِیۡ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَیۡرِ عَمَدٍ تَرَوۡنَہَا ثُمَّ اسۡتَوٰی عَلَی الۡعَرۡشِ وَ سَخَّرَ الشَّمۡسَ وَ الۡقَمَرَ ؕ کُلٌّ یَّجۡرِیۡ لِاَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ یُدَبِّرُ الۡاَمۡرَ یُفَصِّلُ الۡاٰیٰتِ لَعَلَّکُمۡ بِلِقَآءِ رَبِّکُمۡ تُوۡقِنُوۡنَ ③

अल्लाह वह है जिस ने बिना स्तम्भों के आसमानों को ऊँचा किया है जैसा कि तुम देख रहे हो और फिर वह अर्श पर विराजमान हुआ और उस ने सूर्य तथा चन्द्रमा को तुम्हारी सेवा में लगा रखा है। फिर प्रत्येक नक्षत्र एक निश्चित अवधि तक (अपने क्रमानुसार) चल रहा है। वह अल्लाह हर-एक बात का प्रबन्ध करता है और अपनी आयतें खोल-खोल कर वर्णन करता है ताकि तुम लोग अपने रब्ब से मिलने का पूरा-पूरा विश्वास रखो ।३।

1. विवरण के लिए देखिए सूर: बक़र: आयत 2।

وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا ۖ وَمِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ ۖ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ④

और वही है जिस ने धरती को फैलाया है और उस में दृढ़ता के साथ ठहरे रहने वाले पर्वत एवं नदियाँ बनाई हैं और उस में सब प्रकार के फलों से (नर-मादा) दोनों क़िस्में बनाई हैं। वह रात को दिन पर ला डालता है। जो लोग सोच-विचार से काम लेते हैं उन के लिए निश्चय ही इस बात में अनेक निशान पाए जाते हैं।४।

وَفِي الْأَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجَاوِرَاتٌ وَجَنَّاتٌ مِّنْ أَعْنَابٍ وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنْوَانٌ وَغَيْرُ صِنْوَانٍ يُسْقَىٰ بِمَاءٍ وَاحِدٍ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأُكُلِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ⑤

और धरती में एक-दूसरे के आस-पास अनेक प्रकार के टुकड़े हैं तथा कई प्रकार के अंगूरों के बाग़ एवं (अनेक प्रकार की) खेतियाँ तथा तरह-तरह के खजूर के पेड़ हैं। (जिन में से कुछ) एक-एक जड़ से कई-कई निकलने वाले होते हैं और कुछ एक-एक जड़ से कई-कई निकलने वालों के विपरीत (एक ही तने के होते हैं) जिन्हें एक ही प्रकार के पानी से सींचा जाता है और हम (इस पर भी) फल के उपलक्ष्य उन में से कुछ वृक्षों को दूसरे वृक्षों पर प्रधानता देते हैं। इस बात में उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं कई प्रकार के निशान हैं।५।

وَإِن تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ أَإِذَا كُنَّا تُرَابًا أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ

और (हे श्रोता!) यदि तुझे (इन सत्य के विरोधियों पर) आश्चर्य आए तो (ठीक ही है, क्योंकि) उन का यह कथन कि क्या जब हम मर कर मिट्टी हो जाएँगे तो हमें वास्तव में फिर किसी नए जन्म में आना होगा? तेरी बात से भी अधिक आश्चर्यजनक है। ये वे लोग हैं जिन्हों ने अपने रब्ब का इन्कार कर दिया और ये वे लोग हैं जिन की गर्दनों

الْأَغْلٰلُ فِیْۤ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

में तौक़[1] पड़े होंगे तथा ये लोग नरक की आग में पड़ने वाले हैं वे उस में रहते चले जाएँगे।६।

وَ یَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّیِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰی ظُلْمِهِمْ ۚ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَشَدِیْدُ الْعِقَابِ ۝

और वे तुझ से अच्छे बदले की अपेक्षा दण्ड को शीघ्र लाने की माँग कर रहे हैं, हालाँकि इन से पहले (ऐसे लोगों पर) सब प्रकार के शिक्षा प्रद अज़ाब आ चुके हैं और तेरा रब्ब निश्चय ही लोगों को उन के अत्याचार के होते हुए भी बहुत क्षमा करने वाला है और निस्सन्देह तेरा रब्ब कड़ा दण्ड देने वाला भी है।७।

وَ یَقُوْلُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْهِ اٰیَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّ لِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝ ع

और जिन लोगों ने इन्कार किया है कहते हैं कि इस पर उस के रब्ब की ओर से कोई निशान क्यों नहीं उतारा गया? हालाँकि तू केवल सावधान करने वाला और डराने वाला है और हर-एक जाति के लिए (अल्लाह की ओर से) एक पथ-प्रदर्शक भेजा जा चुका है।८। (रुकू १/७)

اَللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰی وَ مَا تَغِیْضُ الْاَرْحَامُ وَ مَا تَزْدَادُ ؕ وَ كُلُّ شَیْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝

अल्लाह उसे (भी ख़ूब) जानता है जिसे हर मादा उठाती है और जिसे गर्भाशय ख़राब कर (के गिरा) देते हैं तथा (उसे भी) जिसे वे बढ़ाते हैं और उस के पास आवश्यकता के अनुसार हर-एक चीज मौजूद है।९।

عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ الْكَبِیْرُ الْمُتَعَالِ ۝

वह छिपे हुए और जाहिर दोनों का जानने वाला है। वह बड़े सम्मान वाला और बड़ी शान वाला है।१०।

1. तौक़ –हँसुली के आकार की वह भारी गोल पटरी जो अपराधी के गले में डाली जाती है।

سَوَآءٌ مِّنكُم مَّنْ أَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَن جَهَرَ بِهِۦ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۭ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ⑪

तुम में से जो बात को छिपाता है और वह भी जो उसे ज़ाहिर करता है (उस के ज्ञान के अनुसार वे दोनों) बराबर हैं और वह भी जो रात को छिपा रहता है तथा जो दिन को चलता है (बराबर है)।११।

لَهُۥ مُعَقِّبَٰتٌ مِّنۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِۦ يَحْفَظُونَهُۥ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنفُسِهِمْ ۗ وَإِذَآ أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُۥ ۚ وَمَا لَهُم مِّن دُونِهِۦ مِن وَالٍ ⑫

उस की ओर से इस रसूल के आगे भी और उस के पीछे भी (एक-दूसरे के साथ-साथ) आने वाला (फ़रिश्तों का) एक दल (रक्षा के लिए) नियुक्त है, जो अल्लाह के आदेश के अनुसार इस की रक्षा कर रहा है। अल्लाह कभी भी किसी जाति की हालत को नहीं बदलता जब तक कि वह स्वयं अपनी हालत को न बदले[1] और जब अल्लाह किसी जाति के बारे में अज़ाब भेजने का फ़ैसला कर लेता है तो उस अज़ाब को हटाने वाला कोई नहीं होता तथा उस के सिवा उन का दूसरा कोई भी सहायक नहीं हो सकता।१२।

هُوَ الَّذِى يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ⑬

वही है जो तुम्हें बिजली (की चमक) दिखाता है। भय के लिए भी तथा लालच के लिए भी और बोझल बादल उठाता है।१३।

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِۦ وَالْمَلَٰٓئِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِۦ وَيُرْسِلُ الصَّوَٰعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَن يَشَآءُ وَهُمْ

और (बिजली की) कड़क उस की स्तुति के साथ-साथ उस की पवित्रता का गुणगान भी करती है तथा फ़रिश्ते भी उस के भय के कारण (ऐसा ही करते हैं) एवं वह गिरने वाली बिजलियाँ भी भेजता है, फिर जिन पर वह चाहता है उन्हें गिराता है और वे

1. विवरण के लिए देखिए सूरः अन्फ़ाल टिप्पणी आयत 54।

يُجَادِلُونَ فِي اللّٰهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْمِحَالِ ۝١٤

अल्लाह के बारे में झगड़ रहे हैं, हालाँकि वह कड़ा अज़ाब देने वाला है।१४।

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ وَمَا دُعَاءُ الْكٰفِرِينَ إِلَّا فِي ضَلٰلٍ ۝١٥

न टलने वाला बुलावा उसी का है और जिन को वे लोग उस के सिवा पुकारते हैं वे उन की पुकार का कोई उत्तर नहीं देते परन्तु उन का काम उस व्यक्ति की तरह है जो अपने दोनों हाथ पानी की ओर फैला रहा हो, किन्तु वह पानी उस तक कभी नहीं पहुँचेगा तथा इन्कार करने वाले लोगों की चीख़-पुकार व्यर्थ चली जाएगी।१५।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۝١٦ السجدة

और जो कोई आसमानों तथा ज़मीन में है और उन की छाया भी ख़ुशी से या नाख़ुशी से हर साँझ-सवेरे अल्लाह को ही सजद:[1] करते हैं।१६।

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللّٰهُ قُلْ أَفَاتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ لِأَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمٰى وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّورُ أَمْ جَعَلُوا لِلّٰهِ

तू उन्हें कह दे कि (बताओ) आसमानों और ज़मीन का रब्ब कौन है? (इस का उत्तर वे तो क्या देंगे) तू (स्वयं ही) कह दे कि अल्लाह! (फिर तू उन से) कह दे कि क्या फिर भी उस (अल्लाह) के सिवा तुम ने अपने लिए ऐसे सहायक बना रखे हैं जो स्वयं अपने-आप को भी लाभ पहुँचाने की शक्ति नहीं रखते और न ही किसी हानि को रोकने की? और उन से कह दे कि क्या अन्धा और देखने वाला बराबर हो सकता है? अथवा क्या अन्धेरा और रोशनी बराबर

1. इस का यह अर्थ नहीं कि वे मनुष्य की तरह सजद: करते हैं। सजद: का अर्थ आज्ञा-पालन करना होता है और आयत का अभिप्राय यह है कि सारा ब्रह्माण्ड रात-दिन प्राकृतिक नियमों की आज्ञा का पालन करने में लगा हुआ है।

شُرَكَآءَ خَلَقُوا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۚ
قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٧﴾

हो सकती है? क्या उन्हों ने अल्लाह के ऐसे साझी बना रखे हैं जिन्हों ने उस की तरह कुछ ऐसी मख़्लूक़ पैदा की है जिस के कारण (उस की तथा दूसरे साझियों की) पैदा की हुई मख़्लूक़ उन के लिए मुश्तबह (सन्दिग्ध) हो गई है? तू उन्हें कह दे कि अल्लाह ही प्रत्येक वस्तु का सर्जनहार है और वह पूर्ण रूप से अकेला (एवं हर-एक वस्तु पर) कामिल अधिकार रखने वाला है।१७।

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا
فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ
عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ
كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ
فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ
فِي الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ؕ ﴿١٨﴾

उस ने आसमान से कुछ पानी उतारा, फिर उस मे कई वादियाँ बह पड़ीं और उस बाढ़ ने ऊपर आ जाने वाले झाग को उठा लिया तथा जिस धातु को वे किसी भूषण अथवा घरेलू प्रयोग का सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं उस धातु में भी उस बाढ़ जैसा झाग होता है। अल्लाह इसी तरह सत्य और असत्य के अन्तर को स्पष्ट करता है। फिर झाग तो फेंका जा कर नष्ट हो जाता है, परन्तु जो वस्तु मानव-समाज के लिए लाभदायक होती है वह पृथ्वी[1] में स्थित रहती है। अल्लाह सब बातों को इसी प्रकार (खोल कर के) वर्णन करता है।१८।

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا
لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ

जिन लोगों ने अपने रब्ब की आज्ञा का पालन किया उन के लिए सफलता है और जिन्हों ने उस की आज्ञा का पालन नहीं किया (उन की हालत ऐसी होगी कि) जो कुछ भी पृथ्वी में है यदि वह सब का सब

1. अर्थात् अल्लाह की ओर से विपत्ति आने के फलस्वरूप जो लोग लाभदायक होंगे वे सुरक्षित रखे जाएँगे, किन्तु जो लोग अयोग्य एवं पतित होंगे उन का सर्वनाश कर दिया जाएगा।

لَا فْتَدَوْا بِهٖ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ سُوْۗءُ الْحِسَابِ ڏ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ۧ

उन का होता तथा उस के बराबर और भी, तो वे उस सारे धन को दे कर (अजाब से) बचने का प्रयत्न करते। उन के लिए बुरे परिणाम वाला हिसाब निश्चित है और उन का ठिकाना नरक है तथा वह निवास की दृष्टि से बहुत बुरा स्थान है।१९। (रुकू २/८)

اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ۭ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝

जो व्यक्ति जानता है कि जो कलाम तुम्हारे रब्ब की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है वह बिल्कुल सत्य है, तो क्या वह उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जो अन्धा है ? (नहीं, क्योंकि बुद्धिमान ही उपदेश प्राप्त करते हैं।२०।

الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ۝

ऐसे लोग जो अल्लाह से किए हुए वादा को पूरा करते हैं और उस पक्के वादा को नहीं तोड़ते।२१।

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْۗءَ الْحِسَابِ ۝ۭ

और जो लोग उन सम्बन्धों को सदैव क़ायम रखते हैं जिन को क़ायम रखने का अल्लाह ने आदेश दिया है तथा वे अपने रब्ब से डरते हैं और बुरे परिणाम वाले हिसाब से भय खाते हैं।२२।

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَاۗءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عُقْبَى

और वे लोग जिन्हों ने अपने रब्ब की प्रसन्नता पाने के लिए धैर्य से काम लिया है और नमाज़ को अच्छी तरह पूरा किया है तथा जो कुछ हम ने उन्हें दिया है उस में से छिप कर भी तथा खुले रूप में भी (हमारी राह में) ख़र्च किया है और जो बुराई को भलाई के द्वारा दूर करते रहते

الدَّارِ ﴿٢٣﴾

हैं, उन्हीं के लिए उस घर का उत्तम परिणाम निश्चित है ।२३।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٤﴾

अर्थात् सदैव रहने के बाग़ जिन में वे स्वयं भी प्रवेश करेंगे और उन के साथ उन के पूर्वजों एवं उन की पत्नियों और उन की संतान में से वे लोग भी, जिन्हों ने भलाई को अपनाया होगा (उस में प्रवेश करेंगे) तथा हर-एक द्वार से उन के पास फ़रिश्ते आएँगे ।२४।

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٥﴾

(और कहेंगे) तुम्हारे लिए सलामती है, क्योंकि तुम धैर्यवान रहे । अतः (अब देखो, तुम्हारे लिए) इस घर का क्या ही अच्छा परिणाम है ।२५।

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٢٦﴾

और जो लोग अल्लाह के (साथ की हुई) प्रतिज्ञा को पक्के इक़रार के बाद तोड़ते हैं और अल्लाह ने जिस नाते को क़ायम रखने का आदेश दिया था उसे तोड़ देते हैं और ज़मीन में फ़साद करते हैं, उन के लिए (अल्लाह की ओर से) धिक्कार निश्चित है और उन के लिए एक बुरा घर भी निश्चित है ।२६।

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٧﴾ ع

अल्लाह जिस के लिए चाहता है (उस के लिए) आजीविका बढ़ा देता है तथा (जिस के लिए चाहता है उस के लिए) तंग कर देता है और ये लोग सांसारिक जीवन पर ही प्रसन्न हो गए हैं, हालाँकि यह सांसारिक जीवन आख़िरत की अपेक्षा एक थोड़ा सा एवं अस्थायी सुख का सामान है ।२७। (रुकू ३/९)

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۚ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ أَنَابَ ﴿٢٧﴾

और जिन लोगों ने (तुम्हारा) इन्कार किया है वे कहते हैं कि इस पर इस के रब्ब की ओर से कोई निशान क्यों नहीं उतारा गया ? तू कह दे कि अल्लाह जिसे चाहता है उस का विनाश कर देता है तथा जो (उस की ओर) झुकता हो उसे अपनी ओर आने की राह दिखा देता है।२८।

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكْرِ اللَّهِ ۗ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ﴿٢٨﴾

अर्थात् जो लोग ईमान लाए हों और उन के दिल अल्लाह की याद से संतुष्टि पाते हों (उन्हें हिदायत देता है)। अतः समझ लो कि अल्लाह की याद से ही दिल संतुष्टि पाते हैं।२९।

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ ﴿٢٩﴾

जो लोग ईमान लाए हैं तथा उन्हों ने शुभ (एवं परिस्थिति के अनुकूल) कर्म किए हैं उन के लिए परम आनन्द है और लौटने का उत्तम स्थान निश्चित है।३०।

كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَٰنِ ۚ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾

ऐसा (ही प्रतिफल पाने के लिए) हम ने तुझे एक ऐसी जाति में भेजा है जिस से पहले कई जातियाँ (आने वाले की राह देखती-देखती) गुज़र चुकी थीं ताकि जो कलाम हम ने तेरी ओर वह्य की है तू उसे उन्हें पढ़ कर सुनाए, क्योंकि वे रहमान (ख़ुदा) की कृपा का इन्कार कर रहे हैं। तू कह दे कि यह मेरा रब्ब है, इस के सिवा कोई उपास्य नहीं। मैं ने उसी पर भरोसा किया है तथा मैं प्रति-क्षण उसी की ओर झुकता हूँ।३१।

وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝٣٢ ع

और यदि कोई ऐसा क़ुर्आन हो जिस के द्वारा (निशान के रूप में) पर्वतों को (उन के मूल स्थानों से हटा कर) चलाया गया हो या उस के द्वारा धरती को टुकड़े-टुकड़े किया गया हो या उस के द्वारा मुर्दों से बात-चीत की गई हो (तो क्या ये लोग उस पर ईमान लाएँगे ? (कदापि नहीं) अपितु (ईमान लाने का) निर्णय पूर्ण रूप से अल्लाह के हाथ में है। क्या जो लोग ईमान लाए हैं उन्हें (अब तक) मालूम नहीं हुआ कि यदि अल्लाह चाहता तो सभी लोगों को हिदायत दे देता और (हे रसूल !) जिन लोगों ने तुम्हारा इन्कार किया है उन पर इस के कारण सदा ही कोई न कोई विपत्ति आती रहेगी या उन के घरों के निकट उतरती रहेगी यहाँ तक कि अल्लाह का आख़िरी वादा (अर्थात् मक्का की विजय) आ जाएगा। अल्लाह इस वादा[1] के विरुद्ध कदापि नहीं करेगा।३२। (रुकू ४/१०)

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝٣٣

और तुझ से पहले (आने वाले) रसूलों से भी ठट्ठा किया गया था जिस पर मैं ने उन लोगों को जिन्हों ने इन्कार किया था (कुछ समय के लिए) ढील दी, फिर मैं ने उन का विनाश कर दिया। अब (देखो) मेरा दण्ड कैसा कड़ा था।३३।

اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

तो क्या वह (अल्लाह) जो प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों का निरीक्षक है (उन से न पूछेगा)

---

1. अर्थात् इन्कार करने वालों पर अज़ाब पर अज़ाब आएगा और एक सेना दल के पश्चात् अन्य सेना दल तदन्तर उन पर आक्रमण करेंगे तथा अन्तिम सेना दल उन के घरों के निकट जा उतरेगा अर्थात् मक्का पर आक्रमण होगा।

شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ تُنَبِّـُٔوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۳۳﴾

और उन्हों ने तो अल्लाह के अनेक साझी भी बनाए हुए हैं। उन से कहो कि तुम इन (बनावटी उपास्यों) के नाम तो बताओ! अथवा क्या तुम लोग उस (अल्लाह) को कोई ऐसी बात बताओगे जो पृथ्वी में मौजूद तो है, परन्तु वह उसे जानता नहीं या तुम केवल मुँह से ये बातें करते हो? अपितु जिन लोगों ने इन्कार किया है उन्हें (उन का ही) छल-कपट शोभायमान कर के दिखाया गया है तथा उन्हें ठीक राह से हटा दिया गया है और जिसे अल्लाह नष्ट कर दे उसे राह दिखाने वाला कोई नहीं (मिल सकता)।३४।

لَهُمْ عَذَابٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿۳۴﴾

उन के लिए एक अज़ाब तो इसी जीवन में निश्चित है तथा आख़िरत का अज़ाब तो निश्चय ही इस से भी बढ़ कर कठोर होगा और उन को अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाला कोई भी नहीं होगा।३५।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِىْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ؕ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿۳۵﴾

संयमी लोगों को जिस स्वर्ग का वादा दिया गया है उस का उदाहरण के तौर पर हाल यह है कि उस के (वृक्षों की छाया) तले नहरें बहती होंगी। उस का फल सदा रहने वाला होगा एवं उस की छाया (भी)। ये उन लोगों का परिणाम होगा जिन्हों ने संयम धारण किया तथा इन्कार करने वालों का अन्त नरक की आग होगी।३६।

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

और जिन लोगों को हम ने किताब दी है वे उस (कलाम) से जो तुझ पर उतारा गया

है। प्रसन्न होते हैं तथा उन (विभिन्न) गिरोहों में से कुछ ऐसे भी हैं जो उस के कुछ भागों का इन्कार करते हैं। तू कह दे कि मुझे तो यही आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह् की उपासना करूँ तथा किसी को भी उस का साझी न ठहराऊँ। मैं उसी की ओर (तुम को) बुलाता हूँ और मैं भी उसी की ओर झुकता हूँ।३७।

وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ۭ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ۭ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ٣٦

और इसी तरह हम ने इस (क़ुर्आन) को विस्तार के साथ आदेश के रूप में उतारा है तथा (हे सम्बोध्य) यदि तूने इस ज्ञान के बाद जो तुझे प्राप्त हो चुका है, इन इन्कार करने वालों का अनुसरण किया, तो अल्लाह् के मुक़ाबिले में तेरा न तो कोई मित्र होगा और न कोई रक्षक ही।३८। (रुकू ५/११)

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۭ وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَاۗءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ٣٧ ع

और हम ने तुझ से पहले भी कई रसूल भेजे थे तथा उन्हें पत्नियाँ और बच्चे भी दिए थे और किसी रसूल के लिए सम्भव न था कि वह अल्लाह् की आज्ञा के बिना (अपनी जाति के पास) कोई निशान लाता क्योंकि प्रत्येक कार्य-क्रम के लिए एक समय निश्चित है।३९।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۭ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ٣٨

अल्लाह् जिस वस्तु को चाहता है मिटाता है और जिसे चाहता है क़ायम रखता है और उसी के पास सब आदेशों का मूल (जड़) है।४०।

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَاۗءُ وَيُثْبِتُ ښ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ ٣٩

और हम जिस (अज़ाब के भेजने) की उन से प्रतिज्ञा करते हैं यदि उस का कोई

وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ

فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ۝

हिस्सा हम तेरे होते हुए भेज कर तुझे दिखा दें (तो तू भी उन का परिणाम देख लेगा) और यदि हम उस घड़ी से पहले तुझे मौत दे दें (तो मरने के बाद तुझे उस की वास्तविकता का ज्ञान हो जाएगा क्योंकि) तेरा दायित्व केवल (हमारे आदेश और सन्देश का) पहुंचा देना है और उन से लेखा लेना हमारा काम है।४१।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۚ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

और क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम देश को उस के किनारों से घटाते[1] चले आ रहे हैं तथा निर्णय तो अल्लाह करता है। उस के निर्णय को बदलने वाला कोई नहीं तथा वह शीघ्र लेखा लेने वाला है।४२।

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ۚ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۚ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ۝

और जो लोग इन से पहले थे उन्हों ने भी (नबियों के विरुद्ध) उपाय किए थे (परन्तु वे सफल न हुए)। सो उपाय करना तो पूर्ण रूप से अल्लाह के ही अधिकार में है। हर-एक व्यक्ति जो कुछ भी कर्म करता है वह (अल्लाह) उसे जानता है और इन इन्कार करने वालों को शीघ्र ही पता चल जाएगा कि उस आने वाले घर का उत्तम फल किस के लिए है।४३।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ۚ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ۝ ع

और जिन लोगों ने तेरा इन्कार किया है वे कहते हैं कि तू अल्लाह का भेजा हुआ नहीं है। तू उन्हें कह कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच काफ़ी गवाह है तथा वह व्यक्ति भी गवाह है जिस के पास इस पवित्र किताब का ज्ञान आ चुका है।४४। (रुकू ६/१२)

1. अर्थात् एक ओर तो देश के सीमा-प्रान्त भी मुसलमानों के हाथ में आ रहे हैं तो दूसरी ओर प्रभावशाली एवं प्रमुख घरानों के नवयुवक इस्लाम धर्म ग्रहण कर रहे हैं।
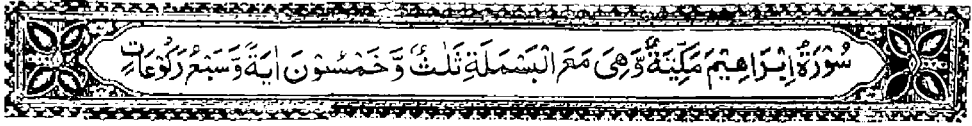
सूरः इब्राहीम

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की तिरपन आयतें एवं सात रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

الٓرٰ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ②

अलिफ़, लाम, रा'। मैं अल्लाह देखने वाला हूँ। यह एक किताब है जिसे हम ने तुझ पर इस लिए उतारा है कि तू सब लोगों को उन के रब्ब के आदेश से अन्धकार से निकाल कर प्रकाश की ओर ले आए अर्थात् प्रभुत्वशाली और स्तुतियों वाले अल्लाह के मार्ग की ओर (ले आए)।२।

اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ③

(वह प्रभुत्वशाली और स्तुतियों वाला रब्ब) अल्लाह ही है। और जो कुछ आसमानों तथा ज़मीन में है सब उसी का है तथा (उस का) इन्कार करने वालों के लिए एक कड़ा अज़ाब निश्चित है।३।

الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ

(इन्कार करने वाले) जो लोग आख़िरत के मुकाबिले में इस सांसारिक जीवन को प्रधानता देते हैं और (दूसरे लोगों को भी)

1. विवरणार्थ देखिए सूरः बक़रः टिप्पणी आयत 2।

وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ③

अल्लाह की राह से रोकते हैं और उसे (अर्थात् सांसारिक जीवन को अपने मन के) टेढ़ापन के द्वारा हासिल करना चाहते हैं। यह लोग दूर की गुमराही में पड़े हुए हैं।४।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۭ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ④

और हम ने प्रत्येक रसूल को उस की जाति की भाषा ही में (वह्य दे कर) भेजा है ताकि वह उन्हें हमारी बातें खोल-खोल कर बताए। फिर (इस उपाय के पश्चात्) अल्लाह जिस का (विनाश करना) चाहता है उस का विनाश कर देता है और जिसे (सफल करना) चाहता है उसे निर्दिष्ट[1] स्थान पर पहुंचा देता है और वह पूरे तौर पर ग़ालिब और हिक्मत वाला (अर्थात् प्रभुत्वशाली एवं तत्त्वदर्शी) है।५।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ڏ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ⑤

और (तुझ से पहले) हम ने मूसा को भी अपने निशानों के साथ (यह आदेश दे कर) भेजा था कि अपनी जाति के लोगों को अन्धेरे से निकाल कर रोशनी की ओर ले आ तथा उन्हें अल्लाह के इन्आम और उस के अज़ाबों को याद दिला (क्योंकि) उस में हर एक पूरे सब्र करने वाले और पूरे तौर पर शुक्र करने वाले लोगों के लिए निश्चय ही कई निशान पाए जाते हैं।६।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

और (हे सम्बोधित! तू उस समय को भी याद कर) जब मूसा ने अपनी जाति के लोगों से कहा था कि तुम अपने ऊपर अल्लाह का इन्आम याद करो जब उस ने

1. नियत किया हुआ स्थान-मन्ज़िले मक़सूद।

إِذْ أَنْجَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَٰلِكُمْ بَلَاءٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝

तुम्हें फ़िरऔन के साथियों से इस हालत में बचाया था कि वे तुम्हें कड़ा अज़ाब देते थे, तुम्हारे पुत्रों की हत्या कर देते थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते थे और इस में तुम्हारे रब्ब की ओर से तुम्हारे लिए एक बड़ी भारी परीक्षा थी ।७। (रुकू १/१३)

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ۝

और (उस समय को भी याद करो) जब तुम्हारे रब्ब ने (नबियों के द्वारा) घोषणा की थी कि हे लोगो ! यदि तुम शुक्र करने वाले बने तो मैं तुम्हें और भी अधिक दूँगा और यदि तुम ने नाशुक्री की तो (याद रखो कि) मेरा अज़ाब निश्चय ही बहुत कड़ा हुआ करता है ।८।

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنْ تَكْفُرُوا أَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝

और मूसा ने अपनी जाति के लोगों से यह भी कहा था कि यदि तुम और जो दूसरे लोग धरती पर बसते हैं सब के सब इन्कार कर दो तो इस में अल्लाह की कोई हानि नहीं हो सकती (क्योंकि) अल्लाह निश्चय ही बे-परवाह और बहुत स्तुतियों वाला है ।९।

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ

जो लोग तुम से पहले थे अर्थात् नूह की जाति और आद तथा समूद एवं जो लोग उन के पश्चात् हुए, क्या उन के बारे में दिल दहलाने वाले समाचार तुम्हें नहीं पहुँचे ? (वे ऐसे मिटाए गए कि) अल्लाह के सिवा अब उन्हें कोई भी नहीं जानता। जब उन के पास उन के रसूल हमारे खुले

وَقَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿۱۰﴾

खुले निशान ले कर आए तो उन्हों ने उन की बात न मानी और कहा कि जो शिक्षा तुम्हें दे कर भेजा गया है उस का तो हम इन्कार कर चुके हैं तथा जिस बात की ओर तुम हमें बुलाते हो उस के बारे में हम व्याकुल कर देने वाले एक सन्देह में पड़े हुए हैं।१०।

قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۱﴾

और उन के रसूलों ने उन्हें कहा कि क्या तुम्हें अल्लाह के बारे में कोई सन्देह है जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है? वह तुम्हें इसलिए बुला रहा है ताकि वह तुम्हारे पापों में से कुछ[1] पाप क्षमा कर दे और एक निश्चित समय तक तुम्हें ढील दे। वे बोले कि तुम तो हमारे जैसे ही मनुष्य हो। तुम चाहते हो कि हमारे पूर्वज जिस वस्तु की पूजा करते चले आए हैं उस से हमें हटा दो। सो (यदि तुम इस बात में सच्चे हो तो) हमारे पास कोई रोशन निशान लाओ।११।

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَمَا كَانَ

उन के रसूलों ने उन्हें कहा (कि यह बात सच है कि) हम तुम्हारे जैसे ही मनुष्य हैं, किन्तु (यह भी सच है कि) अल्लाह अपने भक्तों में से जिस पर चाहता है विशेष

1. 'कुछ पापों' से यह अभिप्राय नहीं कि अल्लाह केवल गिनती के थोड़े से पापों को क्षमा कर सकता है और शेष पाप क्षमा करने में असमर्थ है, अपितु अभिप्राय यह है कि कुछ पाप दूसरे व्यक्तियों से सम्बन्धित होते हैं। जब तक वे लोग उस पापी को क्षमा न करें तब तक वे पाप क्षमा नहीं किए जाते। हाँ! जब अपराधी क्षमा माँग लें और उन पापों पर लज्जित हो जाएँ तो अल्लाह स्वयं अपने बन्दों के दिलों में प्रेरणा करता है कि वे अत्याचार करने वालों को क्षमा कर के अल्लाह के प्रिय और उस के पुरस्कारों के अधिकारी बन जाएँ।

لَنَا أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ١٢

उपकार करता है तथा यह बात हमारे अधिकार में नहीं है कि अल्लाह के आदेश के सिवा तुम्हारे पास कोई निशान लाएँ और मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।१२।

وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰنَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَا آذَيْتُمُونَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ١٣

ع ٢

और हमें क्या हुआ है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, हालाँकि उस ने हमें (हमारी परिस्थिति के अनुकूल) राहें दिखाई हैं तथा जो दुःख तुम ने हमें दे रखा है उस पर हम निश्चय ही धैर्य धारण करते चले जाएंगे और भरोसा करने वालों को तो अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।१३। (रुकू २/१४)

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۖ فَأَوْحٰى إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِينَ ١٤

और जिन लोगों ने इन्कार किया उन्हों ने अपने-अपने (समय के) रसूलों से कहा कि हम तुम्हें अवश्य अपने देश से निकाल देंगे अथवा तुम विवश हो कर हमारे धर्म में लौट आओगे (तो इन कष्टों से बच सकोगे) जिस पर उन के रब्ब ने उन्हें वह्य की कि हम उन (अत्याचारियों) का अवश्य ही सर्वनाश कर देंगे।१४।

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ١٥

और उन के सर्वनाश के पश्चात् उस देश में अवश्य तुम्हें बसाएँगे। यह बचन उस के लिए है जो मेरे मुक़ाम (अर्थात् पद) से डरे और मेरी डराने वाली भविष्यवाणियों से डरे।१५।

وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ

और उन्हों ने अपनी विजय के लिए प्रार्थना की और उस के (फलस्वरूप) प्रत्येक उद्दण्डी

جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ⑮

तथा घमण्डी और सच्चाई का शत्रु असफल रहा ।१६।

مِّنْ وَّرَآىِٕهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ⑯

इस (सांसारिक अज़ाब) के बाद उस व्यक्ति के लिए नरक का अज़ाब भी है और उसे वहाँ खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा ।१७।

يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَأْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۭ وَمِنْ وَّرَآىِٕهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ⑰

वह उसे थोड़ा-थोड़ा कर के पीएगा और उसे आसानी से निगल न सकेगा तथा हर स्थान (और हर दिशा) से उसे मौत आएगी परन्तु वह मरेगा नहीं और इस के सिवा भी (उस के लिए) एक कड़ा अज़ाब निश्चित है ।१८।

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ۭ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰي شَيْءٍ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ⑱

जिन लोगों ने अपने रब्ब के आदेशों का इन्कार किया है उन के कर्म उस राख की तरह हैं जिसे एक तेज़ आँधी वाले दिन हवा तेज़ी से उड़ा ले गई हो। जो कुछ उन्हों ने (अपने भविष्य के लिए) कमाया है उस में से कोई हिस्सा भी उन के हाथ नहीं लगेगा। यही परले दर्जे की बरबादी है ।१९।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۭ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ⑲

(हे सम्बोधित !) क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमानों तथा ज़मीन की रचना हक़ एवं हिक्मत के साथ की है। यदि वह चाहे तो तुम्हारा सर्वनाश कर दे तथा तुम्हारे स्थान पर कोई और नई मख़लूक़ ले आए ।२०।

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ⑳

और यह बात अल्लाह के लिए कुछ कठिन नहीं है ।२१।

وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۭ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ۭ سَوَاۗءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ

और वह सब अल्लाह के सामने आ खड़े होंगे तब (उन में से) निर्बल समझे जाने वाले लोग अभिमान करने वालों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे। अतः क्या तुम अब अल्लाह के अज़ाब में से (इस समय) कुछ हम से दूर कर सकते हो ? वे (उत्तर में) कहेंगे कि यदि अल्लाह हमें हिदायत देता तो हम भी तुम्हें हिदायत देते. (किन्तु अब क्या हो सकता है)। हमारी (इस समय) धीरता अथवा अधीरता दिखाना हमारे लिए एक समान है और हमारे लिए बचने का कोई उपाय नहीं।२२। (रुकू ३/१५)

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ۭ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ۭ اِنِّىْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ۭ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ

और जब सारी बातों का फ़ैसला किया जा चुकेगा तो शैतान (लोगों को) कहेगा कि तुम्हारे साथ अल्लाह ने निश्चय ही अटल प्रतिज्ञा की थी तथा मैं ने भी तुम्हारे साथ एक प्रतिज्ञा की थी, परन्तु मैं ने वह प्रतिज्ञा पूरी नहीं की और मेरा तुम पर कोई अधिकार न था। हाँ ! मैं ने तुम्हें अपनी ओर बुलाया और तुम ने मेरी बात मान ली। इसलिए मेरी निन्दा न करो अपितु अपने-आप की निन्दा करो। (इस समय) न मैं तुम्हारी फ़रियाद सुन सकता हूँ और न तुम मेरी फ़रियाद सुन सकते हो। तुम ने मुझे जो अल्लाह का साझी बना रखा था मैं तुम्हारी इस बात का पहले से ही इन्कार कर चुका हूँ। (इस पर अल्लाह कहता है इस प्रकार के) अत्याचारियों के लिए निस्सन्देह पीड़ा-दायक अज़ाब निश्चित है।२३।

وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ﴿۲۳﴾

और जो लोग ईमान लाए होंगे तथा उन्हों ने (शुभ एवं) उचित कर्म किए होंगे उन्हें उन के रब्ब के आदेश से ऐसे बाग़ों में प्रविष्ट किया जाएगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी और वे उन में बसते चले जाएँगे तथा वहाँ उन की परस्पर एक-दूसरे के लिए यह प्रार्थना होगी (कि तुम पर) सलामती हो ।२४।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِى السَّمَآءِ ﴿۲۵﴾

(हे सम्बोधित !) क्या तूने देखा नहीं कि अल्लाह ने किस प्रकार एक पवित्र कलाम के बारे में वास्तविकता खोल कर बताई है । वह (कलाम) एक पवित्र वृक्ष की तरह होता है जिस की जड़ (मज़बूती से) क़ायम होती है और उस की हर-एक शाखा आसमान की ऊँचाई तक (पहुँची हुई होती) है ।२५।

تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۶﴾

वह (वृक्ष) हर समय अपने रब्ब की आज्ञा के अनुसार ताज़ा[1] फल देता है और अल्लाह लोगों के लिए (उन की आवश्यकता की) सारी बातों का वर्णन करता है ताकि वे शिक्षा प्राप्त करें ।२६।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ِۨاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿۲۷﴾

और बुरी बात का हाल बुरे वृक्ष के समान है जिसे ज़मीन से उखाड़ कर फेंक दिया गया हो और जिसे कहीं भी ठहराव न मिल सके ।२७।

---

1. इस आयत में यह बताया गया है कि इस्लाम धर्म के पवित्र पेड़ से यह अभिप्राय है कि इस में सदा ईश-भक्तों का प्रादुर्भाव होता रहेगा, किन्तु दूसरे धर्मों में नहीं । यह इस बात का प्रमाण होगा कि उन धर्मों का ईश्वर से सम्पर्क समाप्त हो चुका है ।

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٨﴾

जो लोग ईमान लाए अल्लाह उन्हें इस क़ायम रहने वाली और पवित्र बात के द्वारा सांसारिक जीवन में भी मजबूती प्रदान करता है तथा आख़िरत में भी (प्रदान करेगा) और अल्लाह अत्याचारियों का सर्वनाश करता है तथा अल्लाह जो चाहता है करता है।२८। (रुकू ४/१६)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٩﴾

(हे सम्बोधित !) क्या तूने उन लोगों (की हालत) को (ध्यान से) नहीं देखा जिन्हों ने अल्लाह की निअमत को नाशुक्री से बदल डाला। (उन का अपना ही सर्वनाश हुआ) और अपनी जाति को भी विनाश के घर में ला उतारा।२९।

جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۗ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٣٠﴾

अर्थात् नरक में। वे उस में प्रवेश करेंगे और वह स्थान (रहने की दृष्टि से) बहुत बुरा है।३०।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿٣١﴾

और उन्हों ने अल्लाह के समान साझी बना रखे हैं ताकि लोगों को उस की राह से भटका दें। तू उन्हें कह दे कि (ठीक है, कुछ दिन) अस्थायी लाभ प्राप्त कर लो, फिर तुम्हें अवश्य ही (नरक की) आग की ओर जाना होगा।३१।

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ

(हे रसूल !) मेरे उन भक्तों से जो ईमान ला चुके हैं कह दे कि वे उस दिन के आने से पहले जिस में न कोई व्यापार होगा और न ही कोई गहरी दोस्ती (काम आएगी) नमाज को अच्छे ढंग से पढ़ा करें और जो

يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خِلَٰلٌ ۝٣١

कुछ हम ने उन को (धन आदि) दिया है उस में से छिपा कर भी और ज़ाहिर में भी (हमारी राह में) ख़र्च किया करें ।३२।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَٰرَ ۝٣٢

अल्लाह वह (सत्ता) है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है और बादलों से वर्षा कर के उस के द्वारा तुम्हारे लिए फलों (की क़िस्म) से रोज़ी पैदा की है तथा उस ने नौकाओं को (चलाने वाली वायु को) बिना कुछ दिए तुम्हारी सेवा में लगा रखा है ताकि वे उस के आदेश से समुद्र में चलें और नदियों को भी उस ने बिना कुछ दिए तुम्हारी सेवा में लगा रखा है ।३३।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۝٣٣

और सूर्य तथा चन्द्रमा को भी कि वे दोनों लगातार अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं तथा उस ने रात और दिन को भी बिना कुछ दिए तुम्हारी सेवा में लगा रखा है ।३४।

وَآتَاكُم مِّن كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ ۚ وَإِن تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ الْإِنسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ۝٣٤ ع

और जो कुछ भी तुम ने उस से माँगा उस ने तुम्हें दिया है और यदि तुम अल्लाह के उपकारों की गणना करने लगो तो उन की गणना नहीं कर सकोगे। मनुष्य बड़ा ही अत्याचारी और बड़ा ही नाशुक्रा (अर्थात् उपकार को भूल जाने वाला) है ।३५। (रुकू ५/१७)

وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَٰذَا الْبَلَدَ آمِنًا

और (हे सम्बोधित ! उस समय को याद कर) जब इब्राहीम ने (प्रार्थना करते हुए) कहा था कि हे मेरे रब्ब ! इस नगर (मक्का)

وَاجْنُبْنِىْ وَبَنِىَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ

को शान्ति का स्थान बना और मुझे और मेरे पुत्रों को इस बात से दूर रख कि हम झूठे उपास्यों की उपासना करें।३६।

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ فَمَنْ تَبِعَنِىْ فَاِنَّهٗ مِنِّىْ وَمَنْ عَصَانِىْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

हे मेरे रब्ब ! उन्होंने बहुत से लोगों को पथभ्रष्ट कर रखा है। अतः जिस ने मेरा अनुसरण किया उस का तो मेरे साथ सम्बन्ध है तथा जिस ने मेरी अवज्ञा की उस के सम्बन्ध में भी मेरी यही प्रार्थना है कि उसे भी क्षमा करना क्योंकि निस्सन्देह तू बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला हैं।३७।

رَبَّنَآ اِنِّىْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِىْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِىْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِىْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ

हे हमारे रब्ब ! मैं ने अपनी संतान में से कुछ को तेरे आदर वाले घर के पास एक ऐसी वादी में ला बसाया है जिस में कोई खेती नहीं होती। हे मेरे रब्ब ! (मैं ने ऐसा इसलिए किया है) कि वे अच्छे ढंग से नमाज़ का पालन करें। सो तू लोगों के दिल उन की ओर फेर दे तथा उन्हें भिन्न-भिन्न फलों से जीविका प्रदान करता रह ताकि वे (सदैव तेरा) धन्यवाद करते रहें।३८।

رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِىْ وَمَا نُعْلِنُ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَىْءٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ

हे हमारे रब्ब ! जो कुछ हम छिपाते हैं और जो कुछ हम ज़ाहिर करते हैं तू निश्चय ही सब कुछ जानता और अल्लाह से कोई वस्तु न तो धरती में छिपी रह सकती है तथा न आकाश में।३९।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ وَهَبَ لِىْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ

हर प्रकार की स्तुति का केवल अल्लाह ही अधिकारी है जिस ने मुझे बुढ़ापे में (दो पुत्र) इस्माईल और इस्हाक़ प्रदान किए हैं। मेरा

وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَاۗءِ ۝۳۹

रब्ब प्रार्थनाओं को बहुत सुनने वाला है ।४०।

رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ڰ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاۗءِ ۝۴۰

हे मेरे रब्ब ! मुझे और मेरी संतान (में से हर-एक) को अच्छे ढंग से नमाज़ का पालन करने वाला बना। हे हमारे रब्ब ! (हमारे ऊपर कृपा कर) और मेरी प्रार्थना को स्वीकार कर ।४१।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ۝۴۱ ع

हे हमारे रब्ब ! जिस दिन हिसाब (अर्थात लेखा) होने लगे उस दिन मुझे और मेरे माता-पिता को और सब मोमिनों को क्षमा कर देना ।४२। (रुकू ६/१८)

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ڛ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ۝۴۲ۙ

(और हे सम्बोधित !) ये (मक्का वाले) लोग जो कुछ कर रहे हैं तू अल्लाह को कभी भी उस से बे-ख़बर मत समझ। वह केवल उन्हें उस दिन तक ढील दे रहा है जिस दिन उन की आँखें (आश्चर्य से) फटी की फटी रह जाएँगी ।४३।

مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـــِٕدَتُهُمْ هَوَاۗءٌ ۝۴۳ۭ

वे भयभीत हो कर अपने सिरों को ऊपर उठाए हुए भाग रहे होंगे और उन की निगाहें (लौट कर) वापस नहीं आएँगी तथा उन के दिल (आशाओं से) ख़ाली होंगे ।४४।

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ

और तू इन लोगों को उस दिन से डरा जब इन पर अज़ाब आएगा (जिस की प्रतिज्ञा की गई है) अत्याचारी उस समय कहेंगे कि हे हमारे रब्ब ! हमारे इस मामिला को कुछ थोड़े समय तक पीछे डाल दे। हम

دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۗ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُم مِّن قَبْلُ مَا لَكُم مِّن زَوَالٍ ﴿٤٥﴾

तेरी ओर से आए हुए निमन्त्रण को स्वीकार करेंगे तथा तेरे रसूलों का अनुसरण करेंगे। (जिस पर उन्हें उत्तर मिलेगा कि क्या अभी हुज्जत[1] के पूरा होने में कोई कमी रह गई है ?) और क्या तुम ने पहले क़सम पर क़सम नहीं खाई थी कि तुम्हारा कभी पतन नहीं होगा।४५।

وَسَكَنتُمْ فِي مَسَاكِنِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْأَمْثَالَ ﴿٤٦﴾

हालाँकि तुम ने उन लोगों के घरों को अपना घर बनाया हुआ है जिन्हों ने (तुम से पहले) अपने-आप पर अत्याचार किया था और तुम्हारे ऊपर यह बात अच्छी तरह खुल चुकी थी कि हम ने उन के साथ क्या व्यवहार किया था और हम सारी बातें तुम्हारे लिए खुले रूप में वर्णन कर चुके हैं।४६।

وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِندَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ وَإِن كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٧﴾

और ये लोग अपने हर-एक उपाय कर चुके हैं तथा उन की (हर-एक) योजना अल्लाह के पास (सुरक्षित[2]) है और चाहे उन की योजना ऐसी हो कि उस के फलस्वरूप पर्वत भी (अपने स्थान से) टल जाएँ, (ये लोग तुझे कोई हानि नहीं पहुँचा सकते)।४७।

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفَ وَعْدِهِ رُسُلَهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ﴿٤٨﴾

सो (हे सम्बोधित !) तू अल्लाह को अपने रसूलों से अपने वादा के ख़िलाफ़ (मामिला) करने वाला कदापि न समझ। निस्सन्देह अल्लाह ग़ालिब और (बुरे कर्मों का) दण्ड देने वाला है।४८।

---

1. हुज्जत का अर्थ है प्रमाण, युक्ति, तर्क, दलील। भाव यह है कि क्या प्रमाण के पूरा होने में कुछ कमी रह गई है ?

2. अर्थात् वह भुलाई नहीं गई बल्कि अल्लाह को ख़ूब याद है।

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝٤٩

(और वह दिन अवश्य आने वाला है) जिस दिन ज़मीन और आसमान को बदल कर दूसरी ज़मीन और आसमान लाए जाएँगे तथा ये लोग अल्लाह के सामने पेश होंगे जो अकेला और प्रत्येक वस्तु पर पूरा-पूरा प्रभुत्व रखने वाला है।४९।

وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْأَصْفَادِ ۝٥٠

और उस दिन तू अपराधियों को ज़न्जीरों में जकड़े हुए देखेगा।५०।

سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۝٥١

उन के कुरते (मानों) तारकोल के बने हुए (काले) होंगे और नरक की आग उन के मुँहों को ढाँप रही होगी।५१।

لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٥٢

(यह इसलिए होगा) कि अल्लाह प्रत्येक व्यक्ति को जो कुछ उस ने (अपने लिए) कमाया होगा उस का बदला दे। निस्सन्देह अल्लाह शीघ्र ही लेखा लेने वाला है।५२।

هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٥٢ ع

यह उपदेश लोगों के शिक्षा पाने के लिए पर्याप्त है और इस बात के लिए भी कि उन्हें (आने वाले अज़ाब से पूर्णतया) सावधान किया जाए तथा इसलिए भी कि उन्हें प्रतीत हो जाए कि केवल अल्लाह ही एक वास्तविक उपास्य है और इसलिए भी कि बुद्धिमान लोग शिक्षा ग्रहण करें।५३। (रुकू ७/१९)
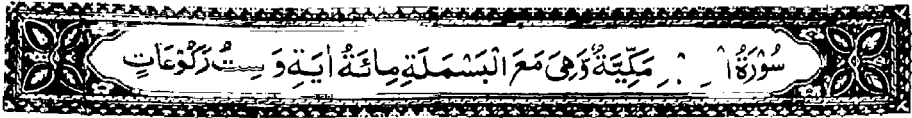
सूर: अल्-हिज्र

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की एक सौ आयतें एवं छ: रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَ قُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ②

अलिफ़, लाम, रा'। (मैं अल्लाह देखने वाला हूँ)। ये एक कामिल किताब और अपने अर्थों को खोल कर बताने वाले क़ुर्आन की आयतें हैं।२।

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ③

जिन लोगों ने (इस क़ुर्आन का) इन्कार किया है वे कभी-कभी यह इच्छा किया करते हैं कि काश वे भी इस के आज्ञाकारी और फ़रमाँबरदारी करने वाले होते।३।

ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَ يَتَمَتَّعُوْا وَ يُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ④

तू उन्हें खाने-पीने और अस्थायी साधनों से लाभ उठाने में व्यस्त छोड़ दे और (उन्हें छोड़ दे कि उन की झूठी) आशाएँ उन्हें ग़ाफ़िल करती रहें, क्योंकि वे शीघ्र ही (वास्तविकता को) जान लेंगे।४।

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا

और हम ने कभी किसी बस्ती का सर्वनाश नहीं किया सिवाय इस के कि उस बस्ती के

1. विवरण के लिए देखिए सूर: बक़र: टिप्पणी आयत 2।

كِتَابٌ مَّعْلُومٌ ٥

बारे में पहले से एक निश्चित निर्णय हो चुका हो ।५।

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ٦

कोई जाति भी अपने (विनाशक) निश्चित समय से भाग कर बच नहीं सकती और न ही पीछे रह कर उस से बच सकती है ।६।

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ٧

और उन्हों ने (ललकार कर) कहा कि हे वह मनुष्य ! जिस पर यह उपदेश उतारा गया है निस्सन्देह तू पागल है ।७।

لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَائِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ٨

यदि तू सच्चा है तो फ़रिश्तों को हमारे पास क्यों नहीं लाता ? ।८।

مَا نُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا مُنْظَرِينَ ٩

(क्या उन्हें मालूम नहीं कि) हम फ़रिश्तों को (जब भी उतारते हैं तो) सच्चाई के साथ उतारते हैं और (जब उन्हें इन्कार करने वालों के लिए उतारते हैं तो) उन्हें (क्षण भर की भी) ढील नहीं दी जाती ।९।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ١٠

इस ज़िक्र (अर्थात् क़ुर्आन) को हम ने ही उतारा है और निस्सन्देह हम ही इस की रक्षा करेंगे ।१०।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شِيَعِ الْأَوَّلِينَ ١١

और हम ने पहले समय के मानव-समूह में भी तुझ से पहले रसूल भेजे थे ।११।

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ١٢

और जो रसूल भी उन के पास आता था वे उस की हँसी उड़ाते थे ।१२।

كَذَٰلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ١٣

इसी प्रकार हम इस (हँसी की आदत) को अपराधियों के दिलों में दृढ़ता से गाड़ देते हैं ।१३।

لَا يُؤْمِنُونَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾

ये लोग इस (क़ुर्आन) पर ईमान नहीं लाते हालाँकि पहले लोगों (के सम्बन्ध में अल्लाह) की रीति बीत चुकी है।१४।

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ﴿١٤﴾

और यदि हम उन के लिए (पहचानने की) कोई आसमानी राह खोल भी देते तथा वे उस से (लाभ उठा कर) वास्तविकता को समझने भी लगते।१५।

لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ﴿١٥﴾

तो भी वे यही कहते कि हमारी आँखों पर केवल पर्दा डाला गया है (अन्यथा वास्तविकता कुछ भी नहीं) बल्कि हम लोगों पर कोई जादू कर दिया गया है।१६। (रुकू १/१)

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٦﴾

और निश्चय ही हम ने आकाश में नक्षत्रों की कई राशियाँ नियुक्त की हैं तथा हम ने उसे देखने वालों के लिए सुन्दर बनाया है।१७।

وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿١٧﴾

और हम ने उसे प्रत्येक उद्दण्डी एवं धुतकारे हुए (व्यक्ति की पहुँच) से सुरक्षित कर दिया है।१८।

اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾

परन्तु जो व्यक्ति चोरी से (अल्लाह की वह्य में से) कोई बात सुन ले और उसे विगाड़ कर फैलाए तो उस के पीछे एक उल्का[1] (रोशन लपट) लगा दी जाती है।१९।

---

1. पवित्र क़ुर्आन उतर चुका है तो विरोधी लोग इस में से कुछ भाग ले कर दूसरे लोगों में इस प्रकार फैलाते हैं कि उस से विरोध की आग धधक उठे, किन्तु अल्लाह उन की शरारत को देखता है। जब कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो अल्लाह उस की शरारत को प्रकट करने के लिए अलौकिक रूप में ऐसा प्रकाश कर देता है जिस से छल-कपट का सारा भेद खुल जाता है और शरारत करने वाले का पतन हो जाता है।

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ۝٢٠

और हम ने धरती को फैलाया है तथा हम ने उस में सुदृढ़ पहाड़ स्थित किए हैं और हम ने उस में हर प्रकार के उचित पदार्थों को (पैदा किया और) बढ़ाया है ।२०।

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ۝٢١

और हम ने उस में तुम्हारे लिए भी तथा (प्रत्येक उस प्राणी) के लिए भी जिन्दगी के सामान पैदा किए हैं जिन्हें तुम रोजी नहीं देते ।२१।

وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝٢٢

और कोई वस्तु ऐसी नहीं जिस के असीम भण्डार हमारे पास न हों, परन्तु हम उसे एक निश्चित अनुमान के अनुसार ही उतारा करते हैं ।२२।

وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ وَمَآ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ۝٢٣

और हम ने (भाप) उठाने वाली हवाएँ भी चला रखी हैं तथा हम ने उन के द्वारा बादलों से पानी उतारा है, फिर वह तुम्हें पिलाया है और तुम स्वयं उसे सुरक्षित[1] नहीं रख सकते थे (किन्तु हम ने उसे इस साधन के द्वारा सुरक्षित कर दिया है) ।२३।

وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ۝٢٤

निस्सन्देह हम ही ज़िन्दा करते और मारते हैं तथा हम ही सब के वारिस हैं ।२४।

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ۝٢٥

और हम तुम में से आगे निकल जाने वालों को भी जानते हैं और इसी तरह हम पीछे रह जाने वालों को भी जानते हैं ।२५।

---

1. बादलों के द्वारा मीठा पानी सुरक्षित रहता है। यदि यह कार्य प्रणाली न होती तो न नदियाँ और नहरें होतीं तथा न कुओं का पानी सुरक्षित रह सकता था और लोग प्यासे मर जाते एवं खेत भी सूख जाते।

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝

निस्सन्देह तेरा रब्ब ही उन्हें इकट्ठा करेगा। वह हिक्मत वाला और बहुत जानने वाला है।२६। (रुकू २/२)

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ۝

और हम ने मनुष्य को आवाज़ देने वाली मिट्टी अर्थात् काले गारे से पैदा किया है। जिस (मिट्टी) का रूप बदल चुका था।२७।

وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ مِن نَّارِ السَّمُومِ ۝

और इस से पहले हम ने जिन्नों को लू की सी लपटें[1] मारती हुई आग से पैदा किया था।२८।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ۝

(हे सम्बोधित ! उस समय को याद कर) जब तेरे रब्ब ने फ़रिश्तों से कहा था कि मैं आवाज़ देने वाली मिट्टी अर्थात् काले गारे से जिस का रूप बदल चुका हो, एक मनुष्य पैदा करने वाला हूँ।२९।

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ۝

सो जब मैं उसे पूरा-पूरा बना दूं और उस के दिल में अपना कलाम डाल दूं तो तुम सभी उस के साथ[2] (अल्लाह को) सजद: करते हुए गिर जाना।३०।

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۝

जिस पर सब के सब फ़रिश्तों ने उस के साथ (अल्लाह को) सजद: किया।३१।

---

1. जिन्नों अर्थात् बड़े लोगों में क्रोध पैदा किया गया है। देखने में आया है कि बड़े लोगों में स्वभावतः क्रोध पैदा हो जाता है और वे अपने विरुद्ध बात नहीं सुन सकते।

2. जिस प्रकार हज़रत आदम अल्लाह की उपासना करेगा उसी प्रकार तुम भी केवल अल्लाह ही की उपासना करना।

सिवाय इब्लीस के कि उस ने (अल्लाह को) सजद: करने वालों के साथ मिल कर सजद: करने से इन्कार किया ।३२।	إِلَّآ إِبْلِيسَ أَبَىٰٓ أَن يَكُونَ مَعَ ٱلسَّٰجِدِينَ ﴿٣٢﴾
(तो अल्लाह ने) कहा कि हे इब्लीस ! तुझे क्या हुआ कि तू (अल्लाह को) सजद: करने वालों के साथ नहीं होता ।३३।	قَالَ يَٰٓإِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ ٱلسَّٰجِدِينَ ﴿٣٣﴾
उस ने कहा कि मैं ऐसा नहीं हूँ कि एक ऐसे मनुष्य के ढंग पर चल कर आज्ञा पालन करूँ, जिसे तू ने आवाज़ देने वाली मिट्टी से अर्थात् ऐसे काले गारे से पैदा किया है, जिस का रूप बदल चुका था ।३४।	قَالَ لَمْ أَكُن لِّأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُۥ مِن صَلْصَٰلٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٣٤﴾
कहा कि (यदि तेरा यह विचार है) तो तू इस (स्थान) से निकल जा, क्योंकि तू निश्चय ही धुतकारा हुआ है ।३५।	قَالَ فَٱخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٥﴾
और (याद रख कि) जज़ा और सज़ा (अर्थात् क़ियामत) के दिन तक तुझ पर मेरी फटकार रहेगी ।३६।	وَإِنَّ عَلَيْكَ ٱللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلدِّينِ ﴿٣٦﴾
उस ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! (यदि तू मुझे तुरन्त दण्ड नहीं देता तो) तू मुझे उन के दो बारा उठाए जाने के दिन तक ढील[1] दे ।३७।	قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِىٓ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٧﴾
कहा कि तू ढील पाने वालों में से होगा ।३८।	قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ ٱلْمُنظَرِينَ ﴿٣٨﴾
उसी निश्चित समय तक (जिस का उल्लेख ऊपर हो चुका है) ।३९।	إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْوَقْتِ ٱلْمَعْلُومِ ﴿٣٩﴾

1. विवरणार्थ देखिए सूर: आराफ़ टिप्पणी आयत 15 ।

قَالَ رَبِّ بِمَآ أَغْوَيْتَنِى لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝٣٩

उस ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! इस लिए कि तू ने मुझे पथभ्रष्ट ठहराया है, मैं अवश्य उन के लिए संसार में (पथभ्रष्टता को) शोभायमान कर के दिखाऊँगा और उन सभी को पथभ्रष्ट करूँगा।४०।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ ٱلْمُخْلَصِينَ ۝٤٠

सिवाय तेरे श्रद्धालू भक्तों के (जो मेरे छल-कपट में नहीं आ सकते, वे बच जाएँगे)।४१।

قَالَ هَٰذَا صِرَٰطٌ عَلَىَّ مُسْتَقِيمٌ ۝٤١

फिर (अल्लाह ने) कहा कि मेरी ओर आने की यही सीधी राह है।४२।

إِنَّ عِبَادِى لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَٰنٌ إِلَّا مَنِ ٱتَّبَعَكَ مِنَ ٱلْغَاوِينَ ۝٤٢

जो मेरे भक्त हैं उन पर तेरा कभी भी ग़ल्बा नहीं होगा सिवाय ऐसे लोगों के जो तेरा अनुसरण करें अर्थात् वे स्वयं ही पथभ्रष्ट हों (उन की बात अलग है)।४३।

وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ۝٤٣

और निस्सन्देह नरक उन सब के लिए वह स्थान है जिस का वादा दिया गया है।४४।

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَٰبٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ۝٤٤ ع

उस के सात द्वार हैं। (और उस के) हर द्वार के लिए उन (इन्कार करने वालों) में से एक निश्चित भाग होगा।४५। (रुकू ३/३)

إِنَّ ٱلْمُتَّقِينَ فِى جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ۝٤٥

निस्सन्देह संयमी लोग बाग़ों और स्रोतों वाले स्थानों में प्रवेश करेंगे।४६।

ٱدْخُلُوهَا بِسَلَٰمٍ ءَامِنِينَ ۝٤٦

(उन्हें कहा जाएगा कि) तुम सलामती के साथ निडर हो कर उन में प्रवेश कर जाओ।४७।

وَنَزَعْنَا مَا فِى صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ إِخْوَٰنًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَٰبِلِينَ ۝٤٧

और उन के सीनों में जो ईर्ष्याद्वेष होगा, हम उसे निकाल देंगे। वे वहाँ भाई-भाई बन कर रहेंगे एवं एक-दूसरे के आमने-सामने सिंहासनों पर बैठे होंगे।४८।

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾

उन्हें उन में न तो थकान होगी और न वे उन में से कभी निकाले जाएँगे ।४९।

نَبِّئْ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٥٠﴾

(हे रसूल !) मेरे भक्तों को सूचित कर दे कि मैं बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला हूँ ।५०।

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٥١﴾

और यह कि (वास्तव में) मेरा अज़ाब ही दुःखदायी अज़ाब होता है ।५१।

وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٥٢﴾

और उन्हें इब्राहीम के अतिथियों के विषय में भी सूचित कर ।५२।

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٣﴾

जब वे उस के पास आए और कहा (कि हम तुम्हें) सलाम कहते हैं तो उस ने कहा कि हम तो (तुम्हारे आने के कारण) डर रहे हैं ।५३।

قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ﴿٥٤﴾

उन्हों ने कहा कि तू भयभीत न हो। हम तुझे एक बहुत ज्ञान पाने वाले बालक का शुभ-समाचार देते हैं ।५४।

قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَىٰ أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ ﴿٥٥﴾

उस ने कहा कि क्या तुम ने मेरे बूढ़ा होने पर भी मुझे यह शुभ-समाचार दिया है ? सो (बताओ) किस आधार पर तुम मुझे यह शुभ-समाचार देते हो ? ।५५।

قَالُوا بَشَّرْنَاكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْقَانِطِينَ ﴿٥٦﴾

वे बोले कि हम ने तुझे सच्चाई पर आधारित शुभ-समाचार दिया है। अतः तू निराश न हो ।५६।

قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ

उस ने कहा (कि मैं क्योंकर निराश हो सकता हूँ) और पथभ्रष्ट लोगों के सिवा दूसरा कौन

إِلَّا الضَّالُّونَ ۝٥٦

अपने रब्ब की रहमत से निराश हो सकता है ? ।५७।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۝٥٧

फिर कहा कि हे ईश-दूतो ! वह तुम्हारा महत्वपूर्ण काम क्या है जिस के लिए तुम्हें भेजा गया है ? ।५८।

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ۝٥٨

वे बोले कि हमें एक अपराधी जाति के लोगों की ओर (उन के सर्वनाश के लिए) भेजा गया है ।५९।

إِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ ۝٥٩

सिवाय लूत के अनुयायियों के कि हम उन सब को बचा लेंगे ।६०।

إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَا ۙ إِنَّهَا لَمِنَ الْغَابِرِينَ ۝٦٠

हाँ ! उस की पत्नी के बारे में हमारा अनुमान है कि वह पीछे रहने (और विनष्ट होने) वालों में से होगी ।६१। (रुकू ४/४)

فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ۝٦١

फिर जब वे (हमारे भेजे हुए लोग) लूत (और उस) के अनुयायियों के पास आए ।६२।

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ ۝٦٢

तो उस ने उन्हें कहा कि तुम यहां अनजान प्रतीत होते हो ।६३।

قَالُوا بَلْ جِئْنَاكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝٦٣

उन्हों ने कहा कि (वास्तव में) हम तुम्हारे पास उस (अज़ाब) की सूचना ले कर आए हैं, जिस के बारे में यह लोग सन्देह करते रहे हैं ।६४।

وَأَتَيْنَاكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝٦٤

और हम तुम्हारे पास सच्ची और पक्की सूचना लाए हैं तथा हम सच्चे हैं ।६५।

فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ

सो तुम रात के अन्तिम भाग में अपने परिवार को ले कर यहाँ से चले जाओ और स्वयं

مِنكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَيْثُ تُؤْمَرُونَ ۝٦٦

उन के पीछे-पीछे रहो तथा तुम से में कोई व्यक्ति पीछे मुड़[1] कर न देखे और जहां जाने का तुम्हें आदेश दिया जाता है वहाँ (सब) चले जाओ ।६६।

وَقَضَيْنَآ إِلَيْهِ ذَٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ۝٦٧

और हम ने उसे यह बात यक़ीनी तौर पर बता दी थी कि प्रातः होते ही इन लोगों की जड़ काट दी जाएगी ।६७।

وَجَآءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ۝٦٨

और उस नगर के लोग प्रसन्नता[2] से उस (लूत) के पास आए (इस विचार से कि अब लूत पर आरोप लगाने और उसे पकड़ने का अवसर मिल गया है) ।६८।

قَالَ إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِى فَلَا تَفْضَحُونِ ۝٦٩

(जिस पर) उस ने उन से कहा कि यह लोग मेरे अतिथि हैं तुम (इन्हें डरा कर) मेरा अपमान न करो ।६९।

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ ۝٧٠

और अल्लाह के लिए संयम धारण करो तथा मेरा निरादर न करो ।७०।

قَالُوٓا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعَٰلَمِينَ ۝٧١

वे कहने लगे क्या हम ने तुम्हें हर ऐरे-गैरे को अपने पास ठहराने से नहीं रोका था ? ।७१।

---

1. इस आदेश से हज़रत लूत के परिवार पर उपकार किया है कि यदि पीछे मुड़ कर देखेंगे तो सम्भव है कि पीछे रह जाने वाली विवाहिता पुत्रियों और दामादों के कारण किसी का मन फिसल जाए।

2. तौरात और क़ुर्आन-मजीद के अनुसार पहले लिखा जा चुका है कि वे लोग हज़रत लूत को रोकते थे कि वह अनजान अतिथियों को घर न लाया करें, परन्तु हज़रत लूत अतिथि धर्म का पालन करने के लिए स्वभावतः विवश थे। अतः जब वह रोकने पर भी आगन्तुकों को अपने घर में ले आए तो उन की जाति के लोग उछलते-कूदते हुए उन के पास आए कि अब लूत हमारे वश में आ गया है और अब उसे दण्ड देने का अवसर हम को मिल जाएगा !

قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ

उस ने कहा कि यदि तुम्हें (मेरे विरुद्ध) कुछ करना ही है तो यह मेरी पुत्रियाँ (तुम में मौजूद) हैं (जो ज़मानत[1] के लिए काफ़ी हैं) ।७२।

لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ

(हे हमारे नबी !) तेरे जीवन की सौगन्ध ! यह (तेरे विरोधी) भी निश्चय ही (उन्हीं की तरह) अपने नशे में बहक रहे हैं ।७३।

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ

इस पर उस अज़ाब ने (जिस का वादा दिया गया था) उन (लूत की जाति के) लोगों को सूर्योदय होते ही पकड़ लिया ।७४।

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ

सो हम ने (भूकम्प द्वारा) उस बस्ती की भूमि को उथल-पुथल कर दिया और उन पर कंकड़ों से बने हुए पत्थरों की बरसा की ।७५।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ

निस्सन्देह इस बात में समझ से काम लेने वालों के लिए कई निशान हैं ।७६।

وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ

और वह (लूत की बस्ती किसी अनजान स्थान पर नहीं बल्कि) खुले और स्थायी मार्ग पर स्थित[2] है ।७७।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ

निस्सन्देह इस घटना में मोमिनों के हित के लिए एक चमत्कार (मौजूद) है ।७८।

وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ

और निस्सन्देह ऐका[3] वाले भी अत्याचारी थे ।७९।

---

1. विवरणार्थ देखिए सूर: हूद टिप्पणी आयत 79 ।
2. हिजाज़ से शाम देश को जाने वाले मार्ग पर स्थित है ।
3. हज़रत शुऐब की जाति का दूसरा नाम 'ऐका' वाले भी है । ऐका घने जंगल को भी कहते है (शेष पृष्ठ ५५३ पर)

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٩﴾

इसलिए हम ने उन्हें भी दण्ड दिया था और ये दोनों स्थान एक (खुले एवं) स्पष्ट राह पर स्थित हैं।८०। (रुकू ५/५)

وَلَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٨٠﴾

निस्सन्देह हिज्र[1] वालों ने भी हमारे रसूलों को झुठलाया था।८१।

وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٨١﴾

और हम ने उन्हें भी अपनी ओर से हर प्रकार के निशान दिए थे, परन्तु जिस का उलटा परिणाम यह निकला कि वे उन से विमुख हो गए।८२।

وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾

और वे शान्ति से (जीवन बीताते हुए) पर्वतों के कुछ भागों को काट-काट कर घर बनाते थे।८३।

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ﴿٨٣﴾

और उन्हें (सज़ा देने के वादा के अनुकूल) प्रातः होते ही उस (निश्चित) अज़ाब ने पकड़ लिया।८४।

فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٤﴾

और जो (धन-दौलत) वे इकट्ठा किया करते थे उस ने उन्हें उस समय कुछ भी लाभ न दिया।८५।

(पृष्ठ ५५२ का शेष)

और ऐसे जंगल को भी जिस में बेरी तथा पीलू के घने वृक्ष पाए जाएं। ऐसा लगता है कि मद्यन के पास कोई घना वन था जिस में दोनों प्रकार के ये वृक्ष बड़ी मात्रा में पाए जाते थे। इस कारण मद्यन-निवासियों को 'ऐका वाले' कहा जाता था।

1. 'हिज्र' से तात्पर्य वह घेरा या दुर्ग अथवा नगर होता है जिस के चारों ओर पत्थरों से बनी हुई दीवार हो। 'हिज्र वालों' से अभिप्राय समूद अर्थात् हज़रत सालिह की जाति का नगर है इसे 'हिज्र' इस लिए कहते हैं कि उस नगर की चार दीवारी बहुत सुदृढ़ थी।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾

और हम ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के बीच है हक़ और हिक्मत के साथ पैदा किया है और वह (वादा वाली) घड़ी अवश्य ही आने वाली है। अत: तुम (उन के अत्याचारों पर) क्षमा से काम लो।८६।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٦﴾

निस्सन्देह तेरा रब्ब बहुत पैदा करने वाला और ख़ूब जानने वाला है।८७।

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾

और निश्चय ही हम ने तुझे दुहराई[1] जाने वाली सात आयतें और बहुत बड़ी प्रतिष्ठा वाला क़ुर्आन प्रदान किया है।८८।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

और हम ने उन में से कई गिरोहों को जो (अस्थायी लाभ का) सामान दिया है उस की ओर आँखें[2] फाड़-फाड़ कर मत देख और न उन (के सर्वनाश) पर दु:खी हो तथा मोमिनों पर अपनी (दया की) भुजा झुकाए रख।८९।

وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٩﴾

तू कह दे कि मैं खुले रूप से सावधान करने वाला हूँ।९०।

---

1. सूर: 'फ़ातिह:' जिस की सात आयतें नमाज़ों में बार-बार पढ़ी जाती हैं। मूल शब्द 'मसानी' को ध्यान में रखते हुए इस आयत के कई दूसरे अर्थ भी हो सकते हैं। (क) हम ने तुझे ऐसी सात आयतें प्रदान की हैं जिन में पूरे तौर से अल्लाह की स्तुति का गुणगान हुआ है। (ख) तुझे ऐसी सात आयतें दी हैं जिन में अल्लाह और बन्दे के पारस्परिक सम्बन्धों पर प्रकाश डाला गया है।

2. हे नबी ! इन्कार करने वालों के धन को आश्चर्य से न देख, क्योंकि उन का सर्वनाश निश्चित हो चुका है। अत: न तो उन्हें यह धन कोई लाभ देगा और न तेरा उन के लिए दु:खी होना उन को लाभ देगा। अत: यह विचार अपने दिल से निकाल दे।

كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ

इसलिए अल्लाह कहता है कि हम ने उन लोगों के लिए भी अज़ाब निश्चित कर रखा है जिन्हों ने (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के विरुद्ध योजनाएँ बना कर) अपने-अपने काम' बाँट रखे थे।९१।

الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ

(अर्थात्) वे लोग जिन्हों ने क़ुर्आन को झूठी बातों का भण्डार ठहराया था।९२।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ

सो तेरे रब्ब की सौगन्ध ! हम इन सब से अवश्य पूछ-ताछ करेंगे।९३।

عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ

उन कामों के बारे में जो वे किया करते थे।९४।

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ

अतः जिस बात का तुझे आदेश दिया जाता है, वह खोल कर लोगों को बता दे और तू उन मुश्रिकों (अर्थात् अनेकेश्वरवादियों) की बातों से मुँह मोड़ ले।९५।

اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ

निस्सन्देह हम तुझे इन हँसी-ठट्ठा करने वालों (की शरारत) से बचाएँगे।९६।

الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ

जो लोग अल्लाह के साथ कई और उपास्य बना रहे हैं उन को शीघ्र ही (इस के परिणाम का) पता चल जाएगा।९७।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ

और निश्चय ही हम जानते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं उस से तेरा दिल तंग पड़ता है।९८।

---

1. जैसे हिजरत के अवसर पर।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٩﴾

अतः तू अपने रब्ब की स्तुति करते हुए उसकी पवित्रता का गुणगान कर और उसके कामिल (अर्थात् पूर्ण) आज्ञाकारियों में से बन।९९।

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَأْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿١٠٠﴾ ع

और अपने रब्ब की उपासना करता रह, यहाँ तक कि तुझे मौत आ जाए।१००। (रुकू ६/६)
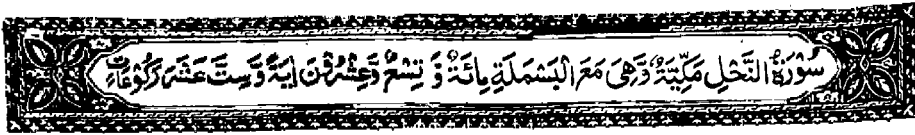
सूरः अल्-नह्ल

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की एक सौ उन्तीस आयतें एवं सोलह रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ②

(हे इन्कार करने वालो !) अल्लाह का आदेश आने ही वाला है। इसलिए अब तुम उस के शीघ्र आने की माँग मत करो। वह (अल्लाह) पवित्र है और वे (इन्कार करने वाले) जो बातें शिर्क के बारे में करते हैं, वह उन से बहुत ऊँचा है।२।

يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ③

वह फ़रिश्तों को अपने ऐसे बन्दों पर जिन्हें वह पसन्द करता है अपने आदेश से कलाम दे कर उतारता है। (और रसूलों को कहता है) कि लोगों को सावधान कर दो कि यही बात सच है कि मेरे सिवा कोई भी सच्चा उपास्य नहीं। इसलिए तुम विपत्तियों से सुरक्षित रहने का मुझे ही साधन बनाओ।३।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ④

उस ने आसमानों और ज़मीन को हक़ और हिक्मत के साथ पैदा किया है और वह उन के शिर्क के विचारों से बहुत ऊँचा है।४।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝

उस ने मनुष्य को एक (बूंद) वीर्य्य से पैदा किया है, फिर वह (अभिमान वश अपने-आप को इतना बड़ा समझने लगता है कि हमारे बारे में) खुल्लम-खुल्ला झगड़ालू बन जाता है।५।

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝

और अल्लाह ने चौपायों को पैदा किया है और उन को ऐसा बनाया है कि उन में तुम्हारे लिए गर्मी का सामान है तथा और भी अनेक लाभ हैं और तुम उन (के माँस) का कुछ भाग खाते हो।६।

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝

और (इस के सिवा) जब तुम उन्हें चरा कर शाम को वापस लाते हो तो उस में तुम्हारे लिए एक प्रकार की शोभा का सामान होता है। इसी प्रकार उस समय जब तुम उन्हें प्रातः चरने के लिए छोड़ते हो (तो भी तुम्हारे लिए उस में एक प्रकार की शोभा का सामान होता है)।७।

وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ۚ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝

और वे तुम्हारे बोझ उठा कर (दूर-दूर के) नगरों तक ले जाते हैं, जहाँ तुम अपने-आपको कड़े परिश्रम में डाले बिना नहीं ले जा सकते। निस्सन्देह तुम्हारा रब्ब तुम्हारे ऊपर बहुत कृपा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।८।

وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ۚ وَيَخْلُقُ

और उस ने घोड़ों, खच्चरों एवं गदहों को भी तुम्हारी सवारी और शोभा (तथा प्रतिष्ठा) के लिए पैदा किया है तथा वह भविष्य में भी

مَا لَا تَعْلَمُونَ ⑨

(तुम्हारे लिए सवारी के दूसरे[1] साधन) पैदा करेगा, जिन्हें तुम अभी नहीं जानते ।९।

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ أَجْمَعِينَ ⑩

और तुम्हें धर्म की सीधी राह दिखाना भी अल्लाह ही के ज़िम्मा है और इस की आवश्यकता इसलिए है कि उन (अर्थात् धर्म के रास्तों) में से कुछ टेढ़े होते हैं, परन्तु यदि वह (अल्लाह) अपनी इच्छा ही लागू करता तो तुम सभी को हिदायत ही देता ।१०। (रुकू १/७)

هُوَ الَّذِيٓ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ⑪

अल्लाह वही तो है जिस ने बादलों से पानी उतारा है । उसी में से तुम्हें पीने का पानी मिलता है और उसी से वे पेड़-पौधे तय्यार होते हैं जिन में से तुम (चौपायों को) चराते हो ।११।

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۗ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُونَ ⑫

वह तुम्हारे लिए उस पानी के द्वारा खेती, ज़ैतून और खजूर के वृक्ष तथा अंगूर एवं दूसरे सब प्रकार के फल पैदा करता है । इस बात में निश्चय ही उन लोगों के लिए एक खुला-खुला निशान है जो सोच-विचार से काम लेते हैं ।१२।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِأَمْرِهٖ ۗ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُونَ ⑬

और उस ने रात और दिन को और सूर्य तथा चन्द्रमा को तुम्हारी सेवा में लगा रखा है तथा दूसरे समस्त नक्षत्र भी उस के आदेश से सेवा के लिए नियुक्त हैं । निस्सन्देह जो लोग बुद्धि से काम लेते हैं उन के लिए इस में अनेक निशान पाए जाते हैं ।१३।

1. इस आयत में खुले रूप में बस, रेल, पानी के जहाज, वायुयान और दूसरे आविष्कारों की भविष्यवाणी की गई है ।

وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾

और उस ने तुम्हारे लिए भूमि में जो विभिन्न प्रकार के पदार्थ पैदा किए हैं (वे सभी तुम्हारे प्रयोग में आ रहे हैं)। इन चीज़ों के पैदा करने में भी इन लोगों के लिए जो उपदेश ग्रहण करते हैं, निस्सन्देह एक निशान पाया जाता है ।१४।

وَهُوَ الَّذِىْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۵﴾

उसी ने समुद्र को भी तुम्हारी सेवा में लगा रखा है ताकि तुम उस में से मछली का ताज़ा माँस खाओ और उस में से आभूषण (का सामान) निकालो, जिसे तुम लोग पहनने के काम में लाते हो। (हे सम्बोधित !) तू नौकाओं को पानी फाड़ कर उस में चलते हुए देखता है (जो इस लिए चलती है कि तुम समुद्र की यात्रा करो) और ताकि तुम अल्लाह के कुछ दूसरे उपकार भी ढूंढ़ो और ताकि तुम उस का धन्यवाद करो ।१५।

وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۶﴾

और उस ने धरती में सुदृढ़ पर्वत बनाए हैं ताकि वह (घूमते हुए) तुम्हें चक्कर[1] में न डाले तथा (उस ने तुम्हारे लिए) कई नदियाँ बहाई हैं और कई (सूखी धरती पर) रास्ते भी बनाए हैं ताकि तुम (आसानी से अपने पहुँचने के स्थान तक) राह पा सको ।१६।

وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۷﴾

और (इन के सिवा उस ने) कई और निशानियाँ भी क़ायम की हैं तथा नक्षत्रों के द्वारा भी वे (लोग) राह पाते हैं ।१७।

1. इस का दूसरा अर्थ यह है कि अल्लाह ने पृथ्वी में सुदृढ़ पर्वत क़ायम किए हैं ताकि वह तुम्हें उन के द्वारा खाने-पीने का सामान दे, क्योंकि समुद्र, पर्वत और नदियों का आजीविका से घनिष्ट सम्बन्ध है।

اَفَمَنۡ يَّخۡلُقُ كَمَنۡ لَّا يَخۡلُقُ‌ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوۡنَ ۝

फिर (बताओ कि) क्या जो पैदा करता है वह उस जैसा हो सकता है जो कुछ भी पैदा नहीं करता। क्या तुम फिर भी नहीं समझते ?।१८।

وَاِنۡ تَعُدُّوۡا نِعۡمَةَ اللّٰهِ لَا تُحۡصُوۡهَا ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۝

और यदि तुम अल्लाह के उपकारों की गिनती करने लगो तो तुम कदापि उन की गिनती नहीं कर सकोगे। निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।१९।

وَاللّٰهُ يَعۡلَمُ مَا تُسِرُّوۡنَ وَمَا تُعۡلِنُوۡنَ ۝

और जो कुछ तुम छिपाते हो तथा जो कुछ ज़ाहिर करते हो अल्लाह उसे जानता है।२०।

وَالَّذِيۡنَ يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ لَا يَخۡلُقُوۡنَ شَيۡـًٔا وَّهُمۡ يُخۡلَقُوۡنَ ۝

और अल्लाह को छोड़ कर वे जिन झूठे उपास्यों को पुकारते हैं, वे कुछ भी पैदा नहीं कर सकते और (इस से बढ़ कर यह है कि) वह स्वयं पैदा किए जाते हैं।२१।

اَمۡوَاتٌ غَيۡرُ اَحۡيَآءٍ‌ ۚ وَمَا يَشۡعُرُوۡنَ اَيَّانَ يُبۡعَثُوۡنَ ۝

वे सब मुर्दे हैं न कि ज़िन्दा और वे यह भी नहीं जानते कि वे कब दोबारा उठाए जाएँगे।२२। (रुकू २/८)

اِلٰهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ‌ ۚ فَالَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ قُلُوۡبُهُمۡ مُّنۡكِرَةٌ وَّهُمۡ مُّسۡتَكۡبِرُوۡنَ ۝

(अतः अच्छी तरह याद रखो कि) तुम्हारा उपास्य एक ही उपास्य है और जो लोग आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं लाते उन के दिल सच्चाई से अनजान हैं और वे घमण्ड से काम ले रहे हैं।२३।

لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ مَا يُسِرُّوۡنَ وَمَا يُعۡلِنُوۡنَ‌ ؕ

यह यक़ीनी बात है कि जो कुछ वे छिपा कर करते हैं और जो कुछ वे ज़ाहिरी तौर पर करते हैं अल्लाह उसे जानता

إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلْمُسْتَكْبِرِينَ ۝٢٣

है। वह घमण्ड करने वालों को कदापि पसन्द नहीं करता।२४।

وَإِذَا قِيلَ لَهُم مَّاذَآ أَنزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوٓا۟ أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ۝٢٤

और जब उन से कहा जाता है कि (वह कलाम) जो तुम्हारे रब्ब ने उतारा है क्या ही शान वाला है तो वे कहते हैं कि (यह अल्लाह का कलाम नहीं है बल्कि) यह तो पहले लोगों की कहानियाँ हैं।२५।

لِيَحْمِلُوٓا۟ أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۙ وَمِنْ أَوْزَارِ ٱلَّذِينَ يُضِلُّونَهُم بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُونَ ۝٢٥ ع ٩

(इस धोखा देने का यह परिणाम निकलेगा कि) वे क़ियामत के दिन अपने (पापों के) बोझ भी पूरे के पूरे उठाएँगे तथा उन मूर्खों के बोझ भी, जिन्हें वे पथभ्रष्ट कर रहे हैं। सुनो! जो बोझ वे उठा रहे हैं वह बहुत ही बुरा है।२६। (रुकू ३/९)

قَدْ مَكَرَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَى ٱللَّهُ بُنْيَٰنَهُم مِّنَ ٱلْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ ٱلسَّقْفُ مِن فَوْقِهِمْ وَأَتَىٰهُمُ ٱلْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۝

जो लोग उन से पहले थे उन्हों ने भी अपने अपने समय के नबियों के विरुद्ध उपाय किए थे, जिस के फलस्वरूप अल्लाह उन के (उपायों के) भवनों की नीवों के पास (उन्हें विनष्ट करने के लिए) आया जिस के कारण उन पर छतें उन के ऊपर से आ गिरीं और (उस का यह) अज़ाब उन पर उस राह से आया जिसे वे जानते भी न थे।२७।

ثُمَّ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآءِىَ ٱلَّذِينَ كُنتُمْ تُشَٰٓقُّونَ فِيهِمْ ۚ قَالَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ إِنَّ ٱلْخِزْىَ ٱلْيَوْمَ وَٱلسُّوٓءَ عَلَى ٱلْكَٰفِرِينَ ۝

फिर वह क़ियामत के दिन उन्हें अपमानित करेगा और कहेगा कि अब कहाँ हैं मेरे वे साझी जिन के कारण तुम (मेरे नबियों से) शत्रुता रखते थे? जिन लोगों को ज्ञान दिया गया होगा वे उस समय कहेंगे कि निस्सन्देह इन्कार करने वालों पर रुसवाई एवं विपत्ति आने वाली है।२८।

الَّذِينَ تَتَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِىٓ اَنْفُسِهِمْ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوٓءٍ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٢٩

जिन (इन्कार करने वालों) की जान फ़रिश्ते ठीक उस समय निकालते हैं जब कि वे अपने-आप पर अत्याचार कर रहे होते हैं, इस पर वे (यह कह कर) संधी की ओर आते हैं कि हम तो कोई भी पाप नहीं किया करते थे, (तब उन्हें कहा जाएगा कि वास्तविकता) यूँ नहीं बल्कि (इस के उलट है याद रखो) जो कुछ तुम करते थे अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है ।२९।

فَادْخُلُوٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝٣٠

इस लिए अब तुम सदा के लिए ठिकाना बनाते हुए नरक के द्वारों में से उस में दाखिल हो जाओ, क्योंकि घमण्ड करने वालों का ठिकाना बहुत ही बुरा (होता) है ।३०।

وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوْا خَيْرًا لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِىْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ۝٣١

और जब संयम धारण करने वाले लोगों से कहा गया कि तुम्हारे रब्ब ने कैसा शान वाला कलाम उतारा है तो उन्हों ने कहा कि (हाँ ! हाँ ! क्या ही) अच्छा कलाम है। अतः जिन्हों ने सदाचार की राह को अपनाया उन के लिए इस संसार में भी भलाई है तथा आखिरत का घर (तो उन के लिए) और भी उत्तम होगा और संयम धारण करने वालों का घर तो निश्चय ही बहुत ही अच्छा (होता) है ।३१।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ كَذٰلِكَ يَجْزِى اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ۝٣٢

वह घर सदा सर्वदा रहने वाले बाग़ हैं। जिन में वे प्रवेश करेंगे उन के नीचे नहरें बहती होंगी। जो कुछ वे चाहेंगे वह उन बाग़ों में उन्हें मिलेगा (याद रखो) अल्लाह संयम धारण करने वालों को इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान किया करता है ।३२।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٣٢

जिन (संयमियों) के प्राण, इस दशा में कि वे पवित्र हों फ़रिश्ते यह कहते हुए निकाल लेते हैं कि अब तुम्हारे लिए शान्ति ही शान्ति है। (लो अब अपने शुभ) कर्मों के बदले में तुम स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ।३३।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَأْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝٣٣

ये (इन्कार करने वाले लोग) इस के सिवा किस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आसमानी अज़ाब ले कर आएँ अथवा तेरे रब्ब का (फ़ैसला करने वाला) आदेश आ जाए। ऐसा ही उन लोगों ने किया था जो उन से पहले थे और अल्लाह ने उन पर कोई अत्याचार नहीं किया था, अपितु वे (स्वयं ही) अपनी जानों पर अत्याचार करते थे।३४।

فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٣٤ ع

सो उन के कर्मों के दण्ड ने उन्हें आ पकड़ा और जिस (अज़ाब के समाचार) पर वे हँसी उड़ाया करते थे उसी ने उन्हें घेर लिया (और विनष्ट कर दिया) ।३५। (रुकू ४/१०)

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

और जिन लोगों ने शिर्क का (रास्ता) अपनाया उन्होंने ने यह भी कहा है कि यदि अल्लाह यही चाहता (कि उस के सिवा किसी की उपासना न की जाए) तो हम उस के सिवा किसी की उपासना न करते और न हमारे बाप-दादा ही ऐसा करते और न हम उस के आदेश के बिना किसी वस्तु को अपने-आप हराम ठहराते। जो लोग उन से पहले (सच्चाई के शत्रु) थे उन्हों ने भी ऐसा ही किया था। भला (ये इतना

فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِينُ ۝٣٦

भी नहीं सोचते कि) रसूलों पर (अल्लाह का सन्देश) पहुँचा देने के सिवा और क्या ज़िम्मेदारी है ? ।३६।

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۚ فَمِنْهُم مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُم مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ۚ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝٣٧

निस्सन्देह हम ने हर-एक जाति में कोई न कोई रसूल (यह आदेश दे कर) भेजा है कि (हे लोगो !) तुम अल्लाह की उपासना करो और सीमा का उल्लंघन[1] करने वाले हर एक व्यक्ति से दूर रहो, इस पर उन में से कुछ लोग तो ऐसे (अच्छे सिद्ध) हुए कि अल्लाह ने उन्हें हिदायत दी तथा कुछ ऐसे कि उन का सर्वनाश अवश्य हो गया। सो तुम देश भर में फिरो और देखो कि नबियों को भुठलाने वालों का परिणाम कैसा हुआ था ? ।३७।

إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ۝٣٨

(हे रसूल!) यदि तू इन लोगों के हिदायत पाने की बहुत इच्छा रखता है तो (समझ लो कि) जो (दूसरे लोगों को जान-बूझ कर) पथ-भ्रष्ट कर रहे हों, अल्लाह उन्हें कदापि हिदायत नहीं दिया करता तथा न उन का कोई सहायक होता है ।३८।

وَأَقْسَمُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَن يَمُوتُ ۚ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ

और उन्हों ने अल्लाह की बड़ी पक्की सौगन्ध खाई कि जो व्यक्ति मर जाए उसे अल्लाह पुनः कदापि जीवित नहीं करेगा, परन्तु वास्तविकता) यूँ नहीं। यह (तो एक ऐसा) वादा है जिसे पूरा करने का वह (अल्लाह)

1. मूल शब्द 'तागूत' का अर्थ है—उद्दण्ड व्यक्ति या सीमा का उल्लंघन करने वाला और ऐसा व्यक्ति जो लोगों को नेकी से रोके।

لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

ज़िम्मेदार है, किन्तु बहुत से लोग (इस हक़ीक़त को) नहीं जानते ।३९।

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ﴿٤٠﴾

(यह दो बारा जीवन का मिलना) इस लिए होगा कि वह उन पर इस (सच्चाई) को ज़ाहिर कर दे जिस में वे आज मतभेद कर रहे हैं और ताकि जिन लोगों ने इन्कार किया है उन्हें पता चल जाए कि वे झूठे थे ।४०।

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤١﴾ ع

हमारा काम किसी (ऐसी) चीज़ के बारे में जिस (के करने) का हम इरादा कर लें केवल यह होता है कि हम उस के बारे में कह देते हैं कि हो जा और वह हो जाती है ।४१। (रुकू ५/११)

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾

और जिन लोगों ने अत्याचार सहन करने के पश्चात् अल्लाह के लिए हिजरत[1] की, (हमें अपनी ही सौगन्ध) हम उन्हें अवश्य संसार में ही अच्छा स्थान प्रदान करेंगे तथा परलोक का प्रतिफल तो और भी बड़ा होगा। काश ! ये (इन्कार करने वाले इस सच्चाई को) जानते ।४२।

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٣﴾

ये वे लोग हैं जो (अत्याचारों का निशाना बन कर भी) धैर्यवान सिद्ध हुए और (जो हमेशा ही) अपने रब्ब पर भरोसा रखते हैं ।४३।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوحِي إِلَيْهِمْ فَاسْأَلُوا

और हम तुझ से पहले भी सदा पुरुषों ही को रसूल बना कर भेजा करते थे और हम

1. हिजरत :—अपना देश छोड़ कर किसी दूसरे स्थान पर जा कर निवास करना।

اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

उन की ओर वह्य किया करते थे तथा (हे इन्कार करने वालो!) यदि तुम इस वास्तविकता को नहीं जानते तो इस (अल्लाह के भेजे हुए) ज़िक्र (अर्थात् इस किताब के मानने) वालों से ही पूछ लो (ताकि तुम पर हक़ीक़त खुल सके)।४४।

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ۭ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝

(हम ने उन्हें) खुले-खुले निशान और (इल्हामी) किताबें दे कर भेजा था और तुझ पर हम ने यह कामिल ज़िक्र (अर्थात् क़ुर्आन) उतारा है ताकि तू सब लोगों को वह (अल्लाह का आदेश) जो (तेरे द्वारा) उन की ओर उतारा गया है, खोल कर बताए और ताकि वे उस पर सोच-विचार करें।४५।

اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

फिर क्या जो लोग तेरे विरुद्ध बुरी योजनाएँ बनाते चले आ रहे हैं, वे इस बात से सुरक्षित हैं कि अल्लाह उन्हें उसी देश में अपमानित कर दे या वह अज़ाब (जिस की सूचना दी जा चुकी है) उन पर ऐसी राह से आ जाए जिसे वे जानते ही न हों?।४६।

اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝

अथवा वह उन्हें यात्रा में चलते-फिरते नष्ट कर दे। अतः वे याद रखें कि अल्लाह को इन बातों के पूरा करने में कदापि असमर्थ नहीं पाएँगे।४७।

اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ۭ فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝

या वह उन्हें धीरे-धीरे घटाते हुए नष्ट कर दे, क्योंकि तुम्हारा रब्ब निश्चय ही (मोमिनों) के साथ प्रेम का व्यवहार करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।४८।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّؤُا ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ۝٤٩

और क्या इस बात के होते हुए कि वह अपमानित हो रहे हैं उन्हों ने कभी अल्लाह के सामने नम्रता से झुकते हुए जो कुछ अल्लाह ने उन के लिए पैदा किया है उसे ध्यान पूर्वक नहीं देखा कि उस की छाया दाहिनी ओर से और उत्तरी दिशा से इधर-उधर[1] हो रही है। (अतः इसी तरह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की छाया बढ़ेगी और इन्कार करने वाले ज़लील हो कर रहेंगे)।४९।

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِن دَآبَّةٍ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝٥٠

और आसमानों में जो कुछ है तथा ज़मीन पर जो प्राणी पाए जाते हैं और सब फ़रिश्ते भी अल्लाह के सामने झुके रहते हैं और वे घमण्ड नहीं करते।५०।

يَخَافُونَ رَبَّهُم مِّن فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝٥١

वे अपने रब्ब से डरते रहते हैं जो उन पर ग़ालिब है और वे वही बात करते हैं जिस का उन्हें आदेश दिया जाता है।५१। (रुकू ६/१२)

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوٓا إِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ إِنَّمَا هُوَ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ۝٥٢

और अल्लाह ने हर एक जाति को सदा यही कहा है कि तुम दो उपास्य मत बनाओ। वह (सच्चा उपास्य तो) एक ही है। इस लिए तुम मुझ से ही डरो फिर (मैं कहता हूँ कि) मुझ से ही डरो।५२।

---

1. इस आयत में बताया गया है कि जिस प्रकार प्राकृतिक नियम के अनुकूल छाया घटती-बढ़ती है और अन्ततः विलुप्त हो जाती है, इसी प्रकार मक्का के इन्कार करने वालों का हाल होगा अर्थात् उन का आतंक, प्रभाव, प्रतिष्ठा, कीर्ति और यश आदि छाया की तरह घटते-घटते समाप्त हो जाएँगे तथा उस के विपरीत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की छाया क्रमशः बढ़ती रहेगी और उस के कारण इन्कार करने वाले लोग अपमानित हो जाएँगे।

وَلَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ۝

और जो कुछ भी आसमानों तथा ज़मीन में है सब का मालिक (वही अल्लाह) है तथा फ़रमाँबरदारी सदा उसी का हक़ है तो क्या तुम अल्लाह के सिवा दूसरे वजूदों को अपने बचाव का साधन बनाते हो ? ।५३।

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْئَرُوْنَ ۝

और तुम्हें जो निअमत भी मिली हुई है वह अल्लाह ही की ओर से है। फिर जब तुम्हें कोई तंगी और कष्ट पहुँचता है तो (उस समय भी) तुम उसी के पास फ़रियाद करते हो ।५४।

ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۝

फिर जब वह उस कष्ट को तुम से दूर कर देता है तो तुम में से कुछ लोग तुरन्त (दूसरों को) अपने रब्ब का साझी ठहराने लग जाते हैं ।५५।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَتَمَتَّعُوْا فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝

परिणाम यह होता है कि जो कुछ हम ने उन्हें दिया है वे उस का इन्कार कर देते हैं। अच्छा ! तुम कुछ दिन अस्थायी सामानों से लाभ उठा लो तथा तुम (उस का परिणाम भी) शीघ्र ही जान लोगे ।५६।

وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ تَاللّٰهِ لَتُسْئَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ۝

और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है वे उस में से एक भाग (अपने उन झूठे) उपास्यों के लिए निश्चित कर देते हैं जिन (की वास्तविकता) के बारे में उन्हें कुछ ज्ञान नहीं। अल्लाह की सौगन्ध ! तुम जो झूठ गढ़ रहे हो, निस्सन्देह तुम से (एक दिन) उस की पूछ-ताछ की जाएगी ।५७।

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ وَلَهُمْ

और वे लड़कियों को अल्लाह से सम्बन्धित करते हैं। (याद रखो) वह ऐसी (बातों से) पवित्र है और उन्हें वह कुछ मिला हुआ है

مَا يَشْتَهُوْنَ ۝٥٧

जो वे चाहते हैं (अर्थात् लड़के)।५८।

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ۝٥٨

और (इस के विपरीत उन की यह हालत है कि) उन में से जब किसी को लड़की के जन्म की सूचना मिले तो उस का मुँह काला हो जाता है और वह बहुत दुःखी होता है।५९।

يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝٥٩

जिस बात का उसे समाचार दिया गया है उस की (काल्पनिक) बुराई के कारण वह लोगों से छिपता-फिरता है (और सोचता है कि) क्या वह उसे (सामने आने वाली ज़िल्लत और अपमान के होते हुए भी) जीवित रहने दे या उसे मिट्टी में गाड़ दे? सुनो! वे जो फ़ैसला करते हैं वह बहुत बुरा है।६०।

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٦٠ ع

जो लोग क़ियामत पर ईमान नहीं रखते उन की दशा बहुत बुरी है और हर-एक उत्तम गुण और बड़ाई अल्लाह ही के लिए है तथा वही ग़ालिब और हिक्मत वाला है।६१। (रुकू ७/१३)

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝٦١

और यदि अल्लाह (का यह नियम होता कि वह) लोगों को अत्याचार करने पर तुरन्त पकड़ लेता (और तौबः के लिए ढील न देता) तो वह इस धरती पर किसी प्राणी को जीवित न छोड़ता, परन्तु (उस का यह नियम है कि) वह (सुधार के लिए) उन्हें एक निश्चित समय तक ढील देता (चला जाता) है, फिर जब उन के (दण्ड का समय आ जाता है तो वे न क्षण भर पीछे रह कर बच सकते हैं तथा न आगे निकल कर ही बच सकते हैं।६२।

وَيَجْعَلُونَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٣﴾

और वे अल्लाह के लिए वह वस्तु पसन्द करते हैं जिसे वे अपने लिए पसन्द नहीं करते और उन की ज़बानें (बड़ी ढिठाई से) यह भूठ बोलती हैं कि उन्हें अवश्य भलाई मिलेगी, किन्तु यह अटल बात है कि उन के लिए (नरक की) आग (का अज़ाब निश्चित्) है और यह कि उन्हें उस में छोड़ दिया जाएगा।६३।

تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰۤى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٤﴾

अल्लाह की क़सम ! हम ने तुभ से पहली जातियों की ओर रसूल भेजे थे, फिर शैतान ने उन के बुरे कर्म सुन्दर रूप में दिखाए। सो आज वही उन का स्वामी (बना बैठा) है और (वे उस का अनुसरण कर रहे हैं) उन के लिए एक पीड़ादायक अज़ाब निश्चित् है।६४।

وَمَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٥﴾

और हम ने इस किताब को तेरे ऊपर इसीलिए उतारा है कि जिस बात के बारे में उन्हों ने एक-दूसरे से मतभेद (पैदा) कर लिया है (यह किताब) उन्हें उस की वास्तविकता खोल कर बताए और जो लोग ईमान लाए हैं उन के लिए यह (किताब) हिदायत एवं रहमत सिद्ध हो।६५।

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٦﴾ ع

और अल्लाह ही ने आकाश से पानी उतारा है तथा उस ने उस के द्वारा भूमि को निर्जीव (बंजर) हो चुकने के पश्चात् पुनः जीवित किया है। जो लोग (सत्य बात को) सुनते और उसे मानने के लिए तय्यार होते हैं, उन के लिए निश्चय ही इस में एक बहुत बड़ा निशान (पाया जाता) है।६६। (रुकू ८/१४)

وَاِنَّ لَكُمۡ فِى الۡاَنۡعَامِ لَعِبۡرَةً ‌ؕ نُسۡقِيۡكُمۡ مِّمَّا فِىۡ بُطُوۡنِهٖ مِنۡۢ بَيۡنِ فَرۡثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيۡنَ ۞

निस्सन्देह तुम्हारे लिए चौपायों में भी शिक्षा हासिल करने का सामान पाया जाता है (क्या तुम्हें पता नहीं कि) जो कुछ उन के पेटों में (गन्द) भरा होता है हम तुम्हें उस गोबर तथा रक्त के बीच से पीने के लिए पवित्र और शुद्ध दूध प्रदान करते हैं जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट एवं आसानी से गले से उतरने वाला होता है।६७।

وَمِنۡ ثَمَرٰتِ النَّخِيۡلِ وَالۡاَعۡنَابِ تَتَّخِذُوۡنَ مِنۡهُ سَكَرًا وَّرِزۡقًا حَسَنًا‌ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ۞

और खजूर के फलों एवं अंगूरों से तुम मदिरा भी तय्यार करते हो और उत्तम जीविका भी। जो लोग बुद्धि से काम लेते हैं, निस्सन्देह उन के लिए इस में एक बहुत बड़ा निशान है।६८।

وَاَوۡحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحۡلِ اَنِ اتَّخِذِىۡ مِنَ الۡجِبَالِ بُيُوۡتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعۡرِشُوۡنَ ۞

और तेरे रब्ब ने मधुमक्खी की ओर वह्य की कि तू पर्वतों में, पेड़ों में तथा जो (अंगूरों आदि के लिए) सहारे बनाते हैं उन में अपने घर बना।६९।

ثُمَّ كُلِىۡ مِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسۡلُكِىۡ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا‌ ؕ يَخۡرُجُ مِنۡۢ بُطُوۡنِهَا شَرَابٌ مُّخۡتَلِفٌ اَلۡوَانُهٗ فِيۡهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ‌ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ يَّتَفَكَّرُوۡنَ ۞

फिर प्रत्येक प्रकार के फलों में से (रस ले कर) खा और अपने रब्ब के बताए हुए नियमों पर चल, जो (तेरे लिए) सरल (किए गए) हैं। इन (मधुमक्खियों) के पेटों में से पीने की एक तरल वस्तु निकलती है जो विभिन्न रंगों की होती है तथा उस में लोगों के लिए शिफ़ा' (अर्थात् स्वास्थ्य देने का गुण रखा गया) है। जो लोग सोच-विचार से काम लेते हैं उन के लिए निश्चय ही इस में कई निशान हैं।७०।

---

1. मधु अनेक रोगों में औषध का काम करता है।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ۙ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝

और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें मौत देता है और तुम में से कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि वे उम्र की बहुत बुरी हालत की ओर लौटाए जाते हैं। वे उस के फल स्वरूप ज्ञान वाले होने के बाद फिर अज्ञानी हो जाते हैं। अल्लाह निश्चय ही बहुत जानने वाला है और हर-एक बात के पूरा करने का सामर्थ्य रखता है।७१। (रुकू ९/१५)

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰي بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَاۗدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰي مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَاۗءٌ ۭ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝

और अल्लाह ने तुम में से कुछ लोगों को आजीविका में दूसरों से बढ़ाया हुआ है और जिन्हें प्रधानता दी गई है वे अपनी जीविका (किसी रूप में भी) उन लोगों को देने के लिए तय्यार नहीं जिन पर उन के दाहिने हाथ क़ाबिज़ हुए हैं (अर्थात् जो उन के अधीन[1] है) जिस का परिणाम यह हो कि वे उस धन में बराबर के हिस्सेदार बन जाएँ। फिर क्या वे इस (हक़ीकत) के जानने पर भी अल्लाह की निअमत का इन्कार करते हैं।७२।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ

और अल्लाह ने तुम ही में से तुम्हारे लिए जोड़े[2] बनाए हैं एवं उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारी पत्नियों से पुत्र और पोते पैदा किए हैं एवं उस ने तुम्हें सारी पवित्र वस्तुओं से

1. अर्थात् ऐसे साधारण व्यक्ति जो बड़े लोगों के दास अथवा सत्तारूढ़ गुट या प्रभावशाली लोगों के अधीन हों।

2. तुम्हारी पत्नियाँ ऐसे माता-पिता की पुत्रियाँ हैं जो तुम्हारे जैसे मानव हैं। अत: उन पत्नियों के मनोभाव भी तुम्हारे जैसे ही हैं।

أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَتِ اللَّهِ هُمْ يَكْفُرُونَ ﴿٧٢﴾

आजीविका प्रदान की है। क्या फिर भी उन का ईमान एक विनष्ट होने वाली वस्तु पर होगा तथा वे अल्लाह की निअमतों का इन्कार कर देंगे ?।७२।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَّلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٧٣﴾

और वे अल्लाह को छोड़ कर ऐसी वस्तुओं की पूजा करते हैं जो उन्हें आसमानों तथा ज़मीन में से कुछ देने का कोई भी अधिकार नहीं रखतीं और न रख सकती हैं।७४।

فَلَا تَضْرِبُوا لِلَّهِ الْأَمْثَالَ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧٤﴾

अतः (हे मुश्रिको !) तुम अल्लाह के विषय में मनगढ़त बातें मत कहो। निस्सन्देह अल्लाह सब कुछ जानता है, परन्तु तुम कुछ भी नहीं जानते।७५।

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا هَلْ يَسْتَوٗنَ اَلْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

अल्लाह तुम्हारे समझाने के लिए एक ऐसे व्यक्ति की दशा का वर्णन करता है जो दास हो तथा जो किसी बात की भी शक्ति न रखता हो और (एक-दूसरे व्यक्ति की दशा भी) जिसे हम ने अपने पास से अच्छी रोज़ी दी हो और वह उस में से छिप कर भी और ज़ाहिरी तौर पर भी (हमारी राह में) ख़र्च करता हो। क्या ये दोनों प्रकार के लोग एक समान हो सकते हैं ? (कदापि नहीं) हर-एक स्तुति का अल्लाह ही अधिकारी है, परन्तु उन में से बहुत से लोग जानते नहीं।७६।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ أَيْنَمَا يُوَجِّهْهُ لَا يَأْتِ

और अल्लाह दो और व्यक्तियों की दशा का वर्णन करता है जिन में से एक तो गूंगा हो जो किसी बात की शक्ति न रखता हो और वह अपने स्वामी पर व्यर्थ का बोझ

بِخَيْرٍ ۙ هَلْ يَسْتَوِي هُوَ ۙ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٧٦﴾

हो, उसे (उस का स्वामी) जिधर भी भेजे वह कोई भलाई (कमा कर) न लाए। अतः क्या वह और दूसरा व्यक्ति जो न्याय करने का आदेश देता हो तथा वह स्वयं भी सीधी राह पर क़ायम हो, वे परस्पर एक समान हो सकते हैं? ।७७। (रुकू १०/१६)

وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٧٧﴾

और आसमानों तथा ज़मीन के ग़ैब (अर्थात् परोक्ष) का ज्ञान अल्लाह ही को (हासिल) है और उस वादा वाली घड़ी के आने की बात तो ऐसी ही है जैसे आँख का झपकना, बल्कि वह (इस से भी) निकट से निकट (समय में हो जाने वाला है) अल्लाह निश्चय ही हर एक बात के करने का पूरा पूरा सामर्थ्य रखता है ।७८।

وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٨﴾

और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेटों से ऐसी हालत में पैदा किया है कि तुम कुछ भी नहीं जानते थे तथा उस ने तुम्हारे लिए कान, आँखें और दिल पैदा किए हैं ताकि तुम शुक्र करो ।७९।

أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِي جَوِّ السَّمَاءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٧٩﴾

क्या उन्हों ने पक्षियों को ध्यान से नहीं देखा जो अंतरिक्ष में निःशुल्क काम पर लगाए गए हैं। उन्हें (तुम पर झपटने और नोच खाने से) अल्लाह के सिवा कोई और नहीं रोक रहा। जो लोग ईमान रखते हैं उन के लिए इस में निश्चय ही कई प्रकार के निशान (पाए जाते) हैं ।८०।

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को निवास का साधन बनाया है तथा उस ने

جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝٨١

चौपायों की खालों से भी तुम्हारे लिए घर बनाए हैं, जिन्हें तुम यात्रा में हल्का-फुल्का पाते हो और अपने ठहरने के समय भी (उन से लाभ उठाते हो) और उन (जानवरों) की बारीक एवं मोटी ऊन तथा उन के वालों को भी स्थायी और एक समय तक के लिए अस्थायी सामान बनाने का साधन बनाया है।८१।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ۗ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ۝٨٢

और अल्लाह ने जो कुछ पैदा किया है उस में उस ने तुम्हारे लिए कई छाया देने वाली वस्तुएँ बनाई हैं (जिन के नीचे तुम आराम पाते हो) तथा पर्वतों में भी तुम्हारे लिए शरण लेने की जगहें बनाई हैं एवं उस ने तुम्हारे लिए कई प्रकार की कमीज़ें बनाई हैं जो तुम्हें गर्मी[1] से बचाती हैं और कुछ कमीज़ें (अर्थात् कवच) ऐसी हैं जो तुम्हें तुम्हारे आपस की लड़ाई (की सख़्ती) से बचाती हैं। इसी प्रकार वह तुम पर अपने आध्यात्मिक पुरस्कार भी पूरे करता है ताकि तुम उस के पूरे-पूरे आज्ञाकारी बन जाओ।८२।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝٨٣

सो यदि वे अब भी विमुख हो जाएँ तो (हे नबी ! इस के कारण तुझ पर कोई आरोप नहीं लगेगा, क्योंकि) तेरे ज़िम्मा केवल बात को खोल कर पहुँचा देना है।८३।

---

1. यहाँ केवल गर्मी का वर्णन किया है, किन्तु अरबी भाषा के मुहावरे के अनुसार आयत का यह अर्थ है कि अल्लाह ने ऐसे वस्त्र भी बनाए हैं जो गर्मी से बचाते हैं तथा ऐसे वस्त्र भी जो सर्दी से बचाते हैं।

يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝

वे अल्लाह के इस पुरस्कार को ख़ूब अच्छी तरह पहचानते हैं, परन्तु फिर भी उस का इन्कार कर रहे हैं और उन में से तो कई पक्के इन्कारी हैं।८४। (रुकू ११/१७)

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝

और (उस दिन को भी याद करो) जिस दिन हम हर एक जाति में से एक-एक गवाह खड़ा करेंगे, फिर (उस समय) उन लोगों को जिन्हों ने इन्कार की राह को अपनाया है (बहाने बनाने या क्षति-पूर्ति की) आज्ञा नहीं दी जाएगी और न ही उन का कोई बहाना स्वीकार किया जाएगा।८५।

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝

और जिन लोगों ने अत्याचार (की राह) को अपनाया है, वे जब उस अज़ाब को (जिस का वादा किया हुआ है) देखेंगे तो उस समय न तो वह अज़ाब उन से हल्का किया जाएगा और न उन्हें कोई ढील ही दी जाएगी।८६।

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝

और जिन लोगों ने अल्लाह के साझी बना रखे हैं, वे जब अपने (बनाए हुए) साझियों को देखेंगे तो कहेंगे कि हे हमारे रब्ब! ये हमारे (बनाए हुए) उपास्य हैं जिन्हें हम तुझे छोड़ कर पुकारा करते थे। जिस पर वे (बनाए हुए) साझी उन्हें शीघ्रता से कहेंगे, निस्सन्देह तुम झूठे हो।८७।

وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذِ اِۨالسَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝

और उस दिन वे (अत्याचारी जल्दी से) अल्लाह के सामने अपना आज्ञाकारी होना ज़ाहिर करेंगे, परन्तु उस दिन वह सब कुछ उन (के दिमाग़ों) से ओझल हो जाएगा जिसे वे अपने पास से गढ़ा करते थे।८८।

اَلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَصَدُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ زِدۡنٰهُمۡ عَذَابًا فَوۡقَ الۡعَذَابِ بِمَا كَانُوۡا يُفۡسِدُوۡنَ ﴿٨٩﴾

जिन लोगों ने (स्वयं भी) इन्कार की राह को अपनाया है और (दूसरे लोगों को भी) अल्लाह् की राह से रोका है हम उन्हें इस अज़ाब से बढ़ कर एक और अज़ाब देंगे, क्योंकि वे सदा बिगाड़ वाले काम किया करते थे।८९।

وَيَوۡمَ نَبۡعَثُ فِىۡ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيۡدًا عَلَيۡهِمۡ مِّنۡ اَنۡفُسِهِمۡ وَجِئۡنَا بِكَ شَهِيۡدًا عَلٰى هٰٓؤُلَاۤءِ ‌ؕ وَنَزَّلۡنَا عَلَيۡكَ الۡـكِتٰبَ تِبۡيَانًا لِّـكُلِّ شَىۡءٍ وَّهُدًى وَّرَحۡمَةً وَّبُشۡرٰى لِلۡمُسۡلِمِيۡنَ ﴿٩٠﴾ ع ١٢ ١٨

और (उस दिन को भी याद करो) जिस दिन हम प्रत्येक जाति में से एक गवाह उन्हीं के ख़िलाफ़ उन में से खड़ा करेंगे और (हे रसूल !) तुझे हम इन सब के ख़िलाफ़ गवाह बना कर लाएँगे और हम ने यह किताब हर-एक बात को खोल-खोल कर बताने, के लिए और सब लोगों की हिदायत (अर्थात् सम्मार्ग पर चलाने) के लिए और (उन पर) दया करने तथा सब लोगों को सत मार्ग दिखाने के लिए पूर्ण रूप से आज्ञा का पालन करने वालों को शुभ-समाचार देने के लिए उतारी है।९०। (रुकू १२/१८)

اِنَّ اللّٰهَ يَاۡمُرُ بِالۡعَدۡلِ وَالۡاِحۡسَانِ وَاِيۡتَآىِٕ ذِى الۡقُرۡبٰى وَيَنۡهٰى عَنِ الۡفَحۡشَآءِ وَالۡمُنۡكَرِ وَالۡبَغۡىِ‌ۚ يَعِظُكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَذَكَّرُوۡنَ ﴿٩١﴾

निस्सन्देह अल्लाह् न्याय करने का और परोपकार करने और (जो सम्बन्धी न हों उन को भी) नातेदारों की तरह (समझने और सहायता) देने का आदेश देता है और हर-एक प्रकार की निर्लज्जता तथा अरुचि-कर बातों एवं विद्रोह से रोकता है। वह तुम्हें उपदेश देता है ताकि तुम समझ जाओ।९१।

وَاَوۡفُوۡا بِعَهۡدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمۡ وَلَا تَنۡقُضُوا الۡاَيۡمَانَ بَعۡدَ تَوۡكِيۡدِهَا وَقَدۡ جَعَلۡتُمُ اللّٰهَ عَلَيۡكُمۡ كَفِيۡلًا‌ؕ

और (चाहिए कि) तुम अल्लाह के साथ किए हुए अपने प्रण पूरे करो और क़समों को उन के पक्का करने के बाद तोड़ा न

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩٢﴾

करो जब कि तुम ने अल्लाह को (उस की क़सम खा कर) अपना ज़ामिन भी ठहरा लिया हो। जो कुछ तुम करते हो निश्चय ही अल्लाह उसे जानता है।९२।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنكَاثًا تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَن تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ۚ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ۚ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩٣﴾

और उस स्त्री की तरह मत बनो जिस ने अपने काते हुए सूत को उस के मज़बूत हो जाने के बाद काट कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया था। (इसी प्रकार) इस डर से कि कोई जाति किसी दूसरी जाति के मुक़ाबिले में अधिक शक्तिशाली न हो जाए तुम अपनी क़समों को छल-कपट द्वारा आपस में एक-दूसरे से प्रभाव बढ़ाने का साधन बना लो। अल्लाह तो केवल इन आदेशों के द्वारा तुम्हारी परीक्षा कर रहा है और क़ियामत के दिन तुम पर सारी वास्तविकता अवश्य खोल देगा।९३।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِن يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَلَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

और यदि अल्लाह अपनी ही इच्छा लागू करता तो वह तुम (सभी लोगों) को एक ही गिरोह बना देता, परन्तु (वह ऐसा नहीं करता बल्कि) जो व्यक्ति (गुमराही अर्थात् पथ-भ्रष्टता को) चाहता है वह उसे गुमराह ठहरा देता है और जो व्यक्ति (हिदायत) चाहता है वह उसे हिदायत दे देता है तथा जो कुछ तुम किया करते हो उस के बारे में (क़ियामत के दिन) तुम से पूछा जाएगा।९४।

وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوءَ بِمَا صَدَدتُّمْ عَن

और तुम अपनी क़समों को आपस में धोखा देने का साधन न बनाओ अन्यथा तुम्हारे पैर जम चुकने के बाद फिर फिसल जाएँगे तथा तुम बुरा परिणाम देखोगे,

سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٥﴾

क्योंकि तुम ने (दूसरे लोगों को भी) अल्लाह की राह से रोका और तुम्हारे ऊपर बड़ा अज़ाब उतरेगा।९५।

وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾

और तुम अल्लाह के (साथ किए हुए) प्रण के बदले में तुच्छ (एवं थोड़े से) दामों वाली वस्तु न लो। यदि तुम बुद्धिमान हो तो समझ लो कि जो कुछ अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए (इस से कई गुना) उत्तम है।९६।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾

जो कुछ तुम्हारे पास है वह समाप्त हो जाएगा परन्तु जो अल्लाह के पास है वह सदा-सर्वदा रहने वाला है और (हमें अपनी सौगन्ध !) जो लोग धैर्यवान रहे हैं, निस्सन्देह हम उन्हें उन के अच्छे कर्मों के अनुसार उत्तम प्रतिफल प्रदान करेंगे।९७।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾

जो कोई मोमिन होने की अवस्था में भले एवं उचित कर्म करेगा वह पुरुष हो या स्त्री, निश्चय ही हम उसे पवित्र जीवन प्रदान करेंगे और हम उन सभी लोगों को उन के अच्छे कर्मों के अनुसार अच्छा बदला देंगे। ९८।

فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٩﴾

(हे सम्बोधित !) जब तू क़ुर्आन पढ़ने लगे तो फटकारे हुए शैतान (की बुराई) से बचे रहने के लिए अल्लाह की शरण माँग लिया कर।९९।

اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ○

निस्सन्देह (सच्ची) बात यही है कि जो लोग ईमान लाए हैं और वे अपने रब्ब पर भरोसा रखते हैं उन पर उस (शैतान) का कोई अधिकार नहीं है।१००।

إِنَّمَا سُلْطَانُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ هُم بِهِ مُشْرِكُونَ ١٠٠

उस का अधिकार केवल उन लोगों पर होता है जो उस से दोस्ती रखते हैं और जो उस के कारण शिर्क में फँसे हुए हैं।१०१। (रुकू १३/१९)

وَإِذَا بَدَّلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنتَ مُفْتَرٍ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ١٠١

और जब हम एक निशान के स्थान पर कोई दूसरा निशान लाते हैं और (इस में क्या सन्देह है कि) जो कुछ अल्लाह उतारता है उस (की आवश्यकता) को वही सब से अधिक जानता है तो उस समय विरोधी कहते हैं कि तू मनगढ़त झूठी बातें करने वाला है, (परन्तु ऐसा) नहीं अपितु उन में से बहुतों को ज्ञान नहीं है।१०२।

قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ١٠٢

तू (ऐसे लोगों से) कह दे कि रूहुल्क़ुदुस ने तेरे रब्ब की ओर से उसे हक़ और हिक्मत के साथ उतारा है ताकि जो लोग ईमान ला चुके हैं उन्हें वह सदा के लिए (ईमान पर) क़ायम कर दे तथा आज्ञाकारियों को सत्य-पथ दिखाने और उन्हें शुभ-समाचार देने के लिए उसे उतारा है।१०३।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ لِّسَانُ الَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجَمِيٌّ وَهَٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِينٌ ١٠٣

निस्सन्देह हम जानते हैं कि वे कहते हैं (कि यह अल्लाह का कलाम नहीं बल्कि) एक व्यक्ति इसे सिखाता है, (किन्तु वे समझते नहीं कि) जिस व्यक्ति की ओर (वे संकेत करते हैं एवं) उन का ध्यान उधर जाता है, उस की भाषा अजमी (गूँगी) है, परन्तु यह (क़ुर्आनी भाषा तो) खोल-खोल कर बताने वाली अरबी भाषा है।१०४।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ

जो लोग अल्लाह के निशानों पर ईमान नहीं लाते अल्लाह उन्हें हिदायत नहीं देता

وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

और उन के लिए दुःखदायक अज़ाब निश्चित है।१०५।

إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۝

वे लोग ही झूठ गढ़ते हैं, जो अल्लाह के निशानों पर ईमान नहीं रखते और यही लोग पक्के झूठे होते हैं।१०६।

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَٰكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

जो लोग ईमान लाने के बाद अल्लाह का इन्कार करें सिवाय इस बात के कि उन्हें (इन्कार पर) विवश किया गया हो, किन्तु उन के दिल ईमान पर संतुष्ट हों (उन्हें कोई पकड़ न होगी)। हाँ! वे लोग जिन्हों ने अपना सीना इन्कार के लिए खोल दिया हो उन पर अल्लाह का बहुत बड़ा प्रकोप भड़केगा तथा उन के लिए एक भयंकर अज़ाब निश्चित है।१०७।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝

इस का कारण यह है कि उन्हों ने इस सांसारिक जीवन से प्रेम करके उसे आख़िरत पर प्रधानता दे ली और (इस कारण से भी कि) अल्लाह इन्कार करने वालों को हिदायत नहीं देता।१०८।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ۝

ये वे लोग हैं जिन (के इन्कार के कारण) अल्लाह ने उन के दिलों, कानों तथा आँखों पर मुहर लगा दी है और ये वे लोग हैं जो पूरे ग़ाफ़िल हैं।१०९।

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝

इस बात में कोई सन्देह नहीं कि वे आख़िरत में सब से बढ़ कर हानि उठाने वाले होंगे।११०।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْۤا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١١﴾

और निस्सन्देह तेरा रब्ब उन लोगों के लिए जो दु:खों में डाले जाने के बाद हिजरत कर गए, फिर उन्हों ने जिहाद किया तथा (अपने प्रण पर) क़ायम रहे। निस्सन्देह तेरा रब्ब उस (शर्त को पूरा करने) के बाद उन के लिए बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला सिद्ध होगा।१११। (रुकू १४/२०)

يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١٢﴾

(यह बदला विशेष रूप से उस दिन ज़ाहिर होगा) जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपनी जान के बारे में झगड़ता हुआ आएगा और हर-एक व्यक्ति ने जो कुछ कमाया हुआ होगा (उस का) पूरा-पूरा (बदला) उसे दिया जाएगा तथा उन पर किसी भी रूप में अत्याचार नहीं किया जाएगा।११२।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٣﴾

और तुम्हें (समझाने के लिए) अल्लाह् एक बस्ती[1] का हाल बताता है जिसे (प्रत्येक प्रकार से) शान्ति प्राप्त है तथा संतुष्टि भी एवं सभी दिशाओं से उसे उस की रोज़ी बड़ी मात्रा में पहुँच रही है, फिर भी उस ने अल्लाह् की निअमतों की नाशुक्री की है। उस की इस नाशुक्री पर अल्लाह् ने उस (के निवासियों) पर उन के अपने घिनौने कर्मों के कारण भूख और भय का लिबास उतारा है।११३।

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ

निस्सन्देह हमारा एक रसूल उन्हीं में से उन के पास आ चुका है, परन्तु उन्हों ने उसे

1. यहाँ बस्ती से अभीष्ट आदरणीय मक्का नगर है।

الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١١٤﴾

झुठलाया, जिस पर उन्हें हमारे अज़ाब ने ऐसी हालत में आ पकड़ा कि वे अत्याचार कर रहे थे।११४।

فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١١٥﴾

अतः जो हलाल और पवित्र धन अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है तुम उस में से खाओ और यदि तुम अल्लाह ही की उपासना करते हो तो उस की निअमतों का धन्यवाद करो।११५।

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٦﴾

उस ने तुम्हारे लिए केवल मुर्दार, रक्त, सूअर का मांस और उन (सब वस्तुओं) को हराम ठहराया है जिन पर अल्लाह के सिवा किसी दूसरे का नाम लिया गया हो तथा जो व्यक्ति (उन में से किसी वस्तु को खाने के लिये) विवश किया जाए, ऐसी परिस्थिति में कि वह शरीअत का मुक़ाबिला करने वाला न हो और न सीमा का उल्लंघन करने वाला हो, तो (याद रहे कि) अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।११६।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿١١٧﴾

और अपनी ज़बानों की झूठी बातों के कारण यह मत कहो कि यह हलाल है तथा यह हराम; (ऐसा न हो कि) तुम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले हो जाओ। जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं वे कदापि सफल नहीं होते।११७।

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۖ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١٨﴾

(यह संसार) थोड़ा सा अस्थायी सामान है और (इस झूठ के फलस्वरूप) उन के लिए पीड़ादायक अज़ाब निश्चित है।११८।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِن قَبْلُ ۖ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٩﴾

और जिन लोगों ने यहूदी धर्म अपना लिया था, हम ने उन के लिए भी इस से पहले वे समस्त पदार्थ हराम ठहरा दिए थे जिन के बारे में हम ने तुझ से बयान किया है तथा हम ने यह आदेश देकर उन पर अत्याचार नहीं किया था बल्कि वे (उन आदेशों को भंग कर के) अपने-आप पर अत्याचार किया करते थे ।११९।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٠﴾ ع

फिर जिन लोगों ने अनजाने में कोई बुराई की हो, फिर (वे उस से) तौबः कर लें तथा (अपनी भूल का) सुधार भी कर लें तो उन के बारे में तेरा रब्ब इन (शर्तों के पूरा करने) के बाद बहुत ही क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला सिद्ध होगा ।१२०। (रुकू १५/२१)

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِّلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢١﴾

निस्सन्देह इब्राहीम हर-एक भलाई को इकट्ठा करने वाला, अल्लाह के लिए विनम्रता अपनाने वाला एवं सदा ही अल्लाह का पूरा आज्ञाकारी था और वह मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) में से नहीं था ।१२१।

شَاكِرًا لِّأَنْعُمِهِ ۚ اجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٢٢﴾

और उस (अल्लाह) की निअमतों का शुक्र करने वाला था। उस (के रब्ब) ने उसे चुन लिया था तथा उसे एक सीधी राह दिखाई थी ।१२२।

وَآتَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٢٣﴾

और हम ने उसे इस लोक में भी बड़ी सफलता प्रदान की थी तथा वह आख़िरत में भी निश्चय ही सदाचारी लोगों में होगा ।१२३।

ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًاؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ

और (हे रसूल !) हम ने तुझे वह्य के द्वारा आदेश दिया है कि हमारी पूर्ण रूप से आज्ञा का पालन करने वाले इब्राहीम के सिद्धान्त का अनुसरण कर और (हे मक्का वालो ! तुम्हें ज्ञात है कि) वह मुश्रिकों में से नहीं था ।१२४।

اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ

सब्त (की विपत्ति) उन्हीं लोगों पर डाली गई थी जिन्हों ने उस में मतभेद से काम लिया था और तेरा रब्ब निश्चय ही उस बात के बारे में क़ियामत के दिन निर्णय करेगा, जिस में वे मतभेद से काम लेते थे ।१२५।

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ

(हे रसूल !) तू लोगों को हिक्मत तथा सदुपदेश द्वारा अपने रब्ब की राह की ओर बुला । उन से उन के मतभेदों के विषय में अच्छे ढंग से वाद-विवाद कर । तेरा रब्ब उन लोगों को (भी सब से) बढ़ कर जानता है जो उस की राह से भटक गए हैं तथा उन्हें भी जो हिदायत पाते हैं ।१२६।

وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ

यदि तुम (अत्याचारियों को) दण्ड दो तो जितना अत्याचार तुम पर किया गया हो उतना ही तुम दण्ड दो और यदि तुम धैर्य धारण करोगे तो वह धैर्यवानों के लिए अच्छा होगा ।१२७।

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ

और (हे रसूल !) तू धैर्य से काम ले तथा तेरा धैर्य धारण करना अल्लाह् की सहायता से ही हो सकता है एवं तू उन (लोगों की दशा) पर दुःखी न हो और जो बुरे उपाय

وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ⑫٨

वे करते हैं उन के कारण भी तू दुःख न कर।१२८।

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوا وَّالَّذِينَ هُم مُّحْسِنُونَ ⑫٩

(और याद रख कि) निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों के साथ होता है जिन्हों ने **संयम** धारण किया हो तथा जो सदाचारी हों।१२९। (रुकू १६/२२)
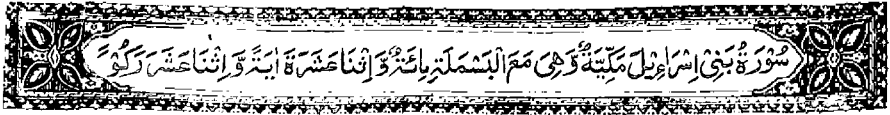
सूरः बनी-इस्राईल

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की एक सौ बारह आयतें एवं बारह रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

سُبْحٰنَ الَّذِىْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِىْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا ۗ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ②

(मैं) उस (अल्लाह) की पवित्रता (का वर्णन करता हूँ) जो रात के समय अपने भक्त को उस मस्जिदे-हराम (अर्थात् आदरणीय मस्जिद) से मस्जिदे-अक़्सा (अर्थात् उस दूर वाली मस्जिद) तक जिस के आस-पास को भी हम ने बरकत दी है, इसलिए ले गया ताकि हम उसे अपने कुछ चमत्कार दिखाएँ। निस्सन्देह वही (अल्लाह) है जो (अपने भक्तों की पुकार को) ख़ूब सुनने वाला है और उन की हालतों को ख़ूब अच्छी तरह देखने वाला है।२।

وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِىْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِىْ وَكِيْلًا ③

और हम ने मूसा को किताब (अर्थात् तौरात) प्रदान की थी एवं उसे हम ने बनी-इस्राईल के लिए हिदायत (का साधन) बनाया था (और आदेश दिया था) कि तुम मेरे सिवा किसी दूसरे को अपना कार्य-साधक न बनाओ।३।

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۗ اِنَّهٗ كَانَ

(और यह भी कहा था कि) हे उन लोगों की संतान! जिन्हें हम ने नूह के साथ (नौका

عَبۡدًا شَكُوۡرًا ۝

में) सवार किया था। (याद रखो कि) वह निश्चय ही हमारा बहुत शुक्र करने वाला भक्त था। अतएव तुम शुक्र करने वाले बनो।४।

وَقَضَيۡنَاۤ اِلٰى بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ فِى الۡكِتٰبِ لَتُفۡسِدُنَّ فِى الۡاَرۡضِ مَرَّتَيۡنِ وَلَتَعۡلُنَّ عُلُوًّا كَبِيۡرًا ۝

और हम ने उस किताब में बनी-इस्राईल को यह बात खोल कर बता दी थी कि निस्सन्देह तुम इस देश में दो बार फ़साद फैलाओगे और निश्चय ही तुम एक बहुत बड़ी उद्दण्डता का प्रदर्शन करोगे।५।

فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ اُوۡلٰٮهُمَا بَعَثۡنَا عَلَيۡكُمۡ عِبَادًا لَّنَاۤ اُولِىۡ بَاۡسٍ شَدِيۡدٍ فَجَاسُوۡا خِلٰلَ الدِّيَارِ‌ ؕ وَكَانَ وَعۡدًا مَّفۡعُوۡلًا ۝

और जब उन दो (बार के फ़सादों) में से पहली बार का वादा पूरा होने का समय आया तो हम ने तुम्हारे दबाने के लिए अपने बन्दों में से कुछ ऐसे लोगों को तुम्हारे मुक़ाबिले में खड़ा कर दिया, जो बड़े भयंकर योद्धा[1] थे और वे तुम्हारे घरों के अन्दर जा घुसे और यह वादा अवश्य ही पूरा हो कर रहने वाला था।६।

ثُمَّ رَدَدۡنَا لَـكُمُ الۡكَرَّةَ عَلَيۡهِمۡ وَاَمۡدَدۡنٰكُمۡ بِاَمۡوَالٍ وَّبَنِيۡنَ وَجَعَلۡنٰكُمۡ اَكۡثَرَ نَفِيۡرًا ۝

फिर हम[2] ने तुम्हें शत्रु पर आक्रमण करने की शक्ति प्रदान की तथा हम ने तुम्हारी सहायता दौलत और पुत्रों द्वारा की तथा तुम्हारे जत्थे को भी पहले से बढ़ा दिया।७।

1. यह बाबिल के राजा नबूकद्-नज़र के आक्रमण का वृत्तान्त है जिस ने फ़लस्तीन पर धावा बोल कर सद्क़ियाह को पराजित किया था और उस की आँखें निकाल दी थीं। (राजाओं का वृत्तान्त 25)

2. इस में 'मेद' और 'फ़ारिस' के सम्राट का वृत्तान्त हैं जिस ने बाबिल पर आक्रमण कर के नबूकद्-नज़र के कुटुम्ब का सर्वनाश कर दिया और बनी-इस्राईल से गुप्त समझौता कर लिया। फिर उस समझौते के अनुसार नहमिया नबी के द्वारा दो बारा बैतुल् मक़्दस को बसाया। (नहमिया 1,2)

إِنْ أَحْسَنتُمْ أَحْسَنتُمْ لِأَنفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۚ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا ⑧

सुनो! यदि तुम सदाचारी बनोगे तो सदाचारी बन कर अपने-आप को ही लाभ पहुँचाओगे और यदि तुम बुरे कर्म करोगे तो भी अपने-आप के लिए बुरा करोगे। फिर जब दूसरी बार[1] वाले वादा के पूरा होने का समय आ गया ताकि वे (तुम्हारे शत्रु) तुम्हारे प्रतिष्ठित व्यक्तियों से बुरा व्यवहार करें और उसी प्रकार मस्जिद में घुस जाएँ जिस प्रकार वे पहली बार उस में घुसे थे और जिस वस्तु पर भी अधिकार पा लें उसे बिलकुल नष्ट कर दें (तो यह बात भी पूरी हो गई) ।८।

عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يَرْحَمَكُمْ ۚ وَإِنْ عُدتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ⑨

अब भी सम्भव है कि तुम्हारा रब्ब तुम पर दया करे और यदि तुम फिर अपने अनुचित आचरण की ओर झुकोगे तो हम भी दण्ड देने की ओर लौटेंगे और (याद रखो कि) नरक को हम ने इन्कार करने वालों के लिए कारावास बनाया है।९।

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ⑩

निस्सन्देह यह क़ुर्आन उस पथ का पथप्रदर्शक है जो सब से ज़्यादा अच्छा है और उन मोमिन लोगों को जो परिस्थिति के अनुकूल कर्म करते हैं शुभ-समाचार देता है कि उन के लिए बहुत बड़ा प्रतिफल निश्चित है।१०।

1. इस विनाश के दूसरी बार पूरा होने के बचन से अभिप्राय रोम देश के राज कुमार टाईटस का आक्रमण है जिस ने फ़लस्तीन पर इसलिए चढ़ाई की थी कि उसे बताया गया था कि यहूदी लोग रूमी सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने वाले हैं! यह घटना सलीब की दुर्घटना से सत्तर वर्ष बाद की है। (देखिए इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, शब्द 'ज्यू' और हिस्ट्री आफ़ दी वर्ल्ड) उस समय टाईटस ने 'यरोशलम' का बड़ा अपमान किया था।

وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۱﴾ ع

और यह कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उन के लिए हम ने पीड़ादायक अज़ाब तय्यार किया है ।११। (रुकू १/१)

وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ﴿۱۲﴾

और मनुष्य बुराई को (उसी जोश से) बुलाता है जिस जोश से अल्लाह उसे भलाई की ओर बुला रहा होता है और मनुष्य बड़ा ही उतावला सिद्ध हुआ है ।१२।

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ﴿۱۳﴾

और हम ने रात और दिन इस प्रकार दो चमत्कार बनाए हैं कि रात वाले चमत्कार के प्रभाव को तो हम ने अन्धकार मय बना कर मिटा दिया तथा दिन वाले चमत्कार को प्रकाश देने वाला बनाया तथा ताकि तुम अपने रब्ब की कृपा को ढूँढ़ो तथा आसानी से वर्षों की गिनती और हिसाब जान सको और हम ने प्रत्येक वस्तु को खोल-खोल कर स्पष्ट कर दिया है ।१३।

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ؕ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿۱۴﴾

ओर हम ने प्रत्येक व्यक्ति की गर्दन[1] में उस के कर्म बाँध दिए हैं तथा हम क़ियामत के दिन उस (के कर्मों) की एक किताब निकाल कर उस के सामने रख देंगे जिसे वह बिल्कुल खुली हुई पाएगा ।१४।

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ﴿۱۵﴾

और (उसे कहा जाएगा) अपनी किताब स्वयं ही पढ़ कर देख ले। आज अपना लेखा लेने के लिए तू स्वयं ही काफ़ी है ।१५।

---

1. मूल शब्द 'तायर' का अर्थ पक्षी और कर्म होता है। (अक़्रब) गर्दन में कर्म बाँधने का अभिप्राय यह है कि कर्म करने वाले को अपने कर्मों का प्रतिफल अवश्य भोगना पड़ेगा।

مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۗ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿١٦﴾

(सो याद रखो) जो हिदायत को पा लेगा उस का हिदायत पाना उसी की जान के लिए लाभदायक है तथा जो व्यक्ति उस हिदायत की अवहेलना करेगा वह पथभ्रष्ट होगा। उस का पथभ्रष्ट होना उसी के विरुद्ध पड़ेगा और कोई बोझ उठाने वाली जान किसी दूसरी जान का बोझ नहीं उठाएगी और हम किसी जाति को अज़ाब नहीं देते जब तक उन की ओर किसी रसूल को न भेज लें।१६।

وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ﴿١٧﴾

और जब हम किसी बस्ती के सर्वनाश का निश्चय कर लें तो पहले हम उस के धनवान लोगों को नेकी करने का आदेश देते हैं, परन्तु वेउस के ख़िलाफ़ उस (बस्ती) में अवज्ञा की राह अपना लेते हैं। तब उस बस्ती के बारे में हमारा कथन पूरा हो जाता है तथा हम उसे पूर्ण रूप से नष्ट कर देते हैं।१७।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ۗ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿١٨﴾

और (इसी सिद्धान्त के अनुसार) हम ने नूह की जाति को और उस के बाद कई दूसरी नस्लों को बारी-बारी से नष्ट कर दिया और तेरा रब्ब अपने बन्दों के पाप अच्छी तरह जानने और देखने वाला है।१८।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿١٩﴾

जो व्यक्ति केवल सांसारिक माया का इच्छुक हो, हम इस प्रकार के लोगों में से जिसे चाहते हैं कुछ शीघ्र प्राप्त होने वाला सांसारिक लाभ इसी लोक में दे देते हैं, इस के बाद उस के लिए नरक का अज़ाब निश्चित् कर देते हैं। जिस में वह अपने ऊपर आरोप लगवाकर और धिक्कार उठा कर दाख़िल हो जाता है।१९।

وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُم مَّشْكُورًا ۝١٩

और जिन लोगों ने ईमान के साथ परलोक की अभिलाषा की तथा उस के लिए उस ईमान के अनुकूल प्रयत्न भी किए तो (याद रखो) वे ऐसे ही लोग हैं जिन के प्रयत्नों का सत्कार किया जाएगा ।२०।

كُلًّا نُّمِدُّ هَٰؤُلَاءِ وَهَٰؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ۚ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ۝٢٠

हम सभी की सहायता करते हैं, इन (धार्मिक) लोगों की भी तथा उन (सांसारिक) लोगों की भी और यह सहायता तेरे रब्ब की कृपा में से है तथा तेरे रब्ब की कृपा किसी वर्ग विशेष से रोकी नहीं जाती ।२१।

انظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلَلْآخِرَةُ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ۝٢١

देख ! हम ने किस प्रकार (सांसारिक साधनों की दृष्टि से भी) उन में से कुछ लोगों को दूसरे कुछ लोगों पर प्रधानता दे रखी है और निस्सन्देह परलोक का जीवन तो और भी बड़े दर्जों वाला एवं सम्मान वाला होगा ! ।२२।

لَّا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَّخْذُولًا ۝٢٢ ع

अतः (हे सम्बोधित !) अल्लाह के साथ कोई दूसरा उपास्य न बना अन्यथा तू आरोप लगवा कर (ज़लील होगा) एवं (अल्लाह की) सहायता से वंचित हो कर बैठ जाएगा ।२३। (रुकू २/२)

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۚ إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِندَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُل لَّهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُل لَّهُمَا

और तेरे रब्ब ने (इस बात का विशेष) आदेश दिया है कि तुम उस (अल्लाह) के सिवा किसी दूसरे की उपासना मत करो और यह कि अपने माता-पिता से अच्छा व्यवहार करो । यदि उन में से किसी एक पर या दोनों पर तेरे जीवन में बुढ़ापा आ जाए तो तू उन्हें उन की किसी बात पर (बुरा मनाते

قَوْلًا كَرِيمًا ﴿٢٤﴾

हुए) उफ़[1] तक न कह और न उन को भिड़की दे तथा उन से सदैव विनम्रता से बात कर।२४।

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿٢٥﴾

और दयाभाव से उन के सामने विनम्रता पूर्वक आचरण कर तथा (उन के लिए प्रार्थना करते समय) कहा कर कि हे मेरे रब्ब ! इन पर कृपा कर, क्योंकि इन्हों ने बाल्यावस्था में मेरा पालन-पोषण किया था।२५।

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿٢٦﴾

जो कुछ भी तुम्हारे दिलों में हो उसे तुम्हारा रब्ब सब से बढ़ कर जानता है। यदि तुम सदाचारी होगे (तो याद रखो) वह बार-बार झुकने वालों को बहुत ही क्षमा करने वाला है।२६।

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿٢٧﴾

और निकट के नातेदार को तथा असहाय और यात्री को उन का हक़ दो और किसी रूप में भी फ़ुजूल ख़र्च न करो।२७।

اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿٢٨﴾

फ़ुजूल ख़र्च करने वाले लोग निश्चय ही शैतानों के भाई होते हैं और शैतान अपने रब्ब का बहुत बड़ा नाशुक्री करने वाला है।२८।

وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ

और यदि तू अपने रब्ब की बहुत बड़ी रहमत के पाने के लिए जिस की तुझे आशा लगी

1. इस आयत से सिद्ध होता है कि पवित्र क़ुर्आन में कई स्थानों पर सम्बोधन तो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से किया जाता है, परन्तु उस से अभीष्ट आप के अनुयायी होते हैं, क्योंकि यह आदेश माता-पिता से अच्छा व्यवहार करने का है और आप के पिता जी का देहान्त आप के जन्म से पहले हो चुका था और आप की माता आप के युवावस्था को पहुंचने से पहले ही स्वर्गवास कर गई थीं।

تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ﴿٢٨﴾

हुई हो उन (नातेदारों आदि) से मुँह[1] फेरे (तो मुँह फेरना तो ठीक है किन्तु) तब भी उन से नरमी से बात कर।२९।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿٢٩﴾

और तू न तो अपने हाथ (कंजूसी से) बाँध कर अपनी गर्दन में डाल ले तथा न ही (व्यर्थ ख़र्च करते हुए) उसे बिल्कुल खुला छोड़ दे अन्यथा तू ज़लील हो कर या थक कर बैठ जाएगा।३०।

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًا ﴿٣٠﴾ ع

तेरा रब्ब जिस के लिए चाहता है रोजी में बढ़ोतरी कर देता है और जिस के लिए चाहता है तंगी कर देता है। वह निश्चय ही अपने बंदों की हालतों को जानने वाला और देखने वाला है।३१। (रुकू ३/३)

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ۭ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ﴿٣١﴾

और तुम निर्धनता के डर से अपनी संतान की हत्या मत करो। उन्हें हम ही आजीविका प्रदान करते हैं और तुम्हें भी। निस्सन्देह उन की हत्या करना बहुत बड़ा अपराध है।३२।

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ۭ وَسَاۗءَ سَبِيْلًا ﴿٣٢﴾

और व्यभिचार के निकट भी न जाओ। निस्सन्देह यह खुली-खुली निर्लज्जता और बहुत बुरी राह है।३३।

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ وَمَنْ

अल्लाह ने जिस जान की हत्या करना हराम ठहराया है उसे शरीअत के हक़ के सिवा

1. अर्थात् अपने निकट के नातेदारों से मुंह फेर लेना कंजूसी के कारण न हो अपितु इसलिए हो कि मैं अल्लाह से रोजी में बढ़ोतरी के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ और मुझे पूरी आशा है कि वह मुझे अवश्य ही मिल जाएगी। उस समय तक मैं बिना अपनी इच्छा के विवश हो कर मुंह फेर रहा हूँ।

قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ۝

क़त्ल न करो तथा जो व्यक्ति बिना किसी अपराध के अत्याचार से मारा जाए, हम ने उस के वारिसों को क़िसास[1] (बदला लेने) का अधिकार दिया है। सो (उस के लिए यह हिदायत है कि) वह (हत्यारे को) क़त्ल करने में (हमारी निश्चित की हुई) सीमा से आगे न बढ़े (यदि वह सीमा में रहेगा) तो निस्सन्देह हमारी सहायता उसे पहुँचती रहेगी।३४।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۠ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْــــُٔوْلًا ۝

और तुम उस रीति को छोड़ कर जो (अनाथ के पक्ष में) उत्तम हो किसी और ढंग से अनाथ के धन के पास मत फटको यहाँ तक कि वह अपनी युवावस्था को पहुँच जाए तथा अपना वादा पूरा करो, क्योंकि हर-एक वादा के बारे में (एक न एक दिन) अवश्य पूछा जाएगा।३५।

وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝

और जब तुम किसी को माप कर देने लगो तो माप पूरा दिया करो और (जब तौल कर दो तो भी) सीधे तराज़ू से तौल कर दिया करो। यह बात सर्वश्रेष्ठ तथा परिणाम की दृष्टि से बहुत अच्छी है।३६।

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْــــُٔوْلًا ۝

और (हे सम्बोधित !) जिस बात का तुझे ज्ञान न हो उस का पीछा न किया कर, क्योंकि कान, आँख और दिल, इन सब के बारे में पूछा जाएगा।३७।

وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ

और धरती पर अकड़ कर मत चल क्योंकि इस प्रकार न तो तू देश की अन्तिम सीमा

1. 'क़िसास' के लिए देखिए सूर: बक़र: टिप्पणी आयत 178।

وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿۳۸﴾

तक पहुँच सकता है तथा न ही तू जाति के सरदारों[1] का उच्च-पद पा सकता हैं ।३८।

كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ﴿۳۹﴾

इन (आदेशों) में से हर-एक (कर्म) का बुरा रूप तेरे रब्ब को पसंद नहीं है ।३९।

ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰۤى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِىْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۴۰﴾

यह (शानदार शिक्षा) उस ज्ञान एवं हिक्मत का एक भाग है जो तेरे रब्ब ने वह्य के द्वारा तेरी ओर भेजी है और तू अल्लाह के साथ कोई और उपास्य न बना अन्यथा तू निन्दित हो कर एवं धिक्कारा जा कर नरक में झोंक दिया जाएगा ।४०।

اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ﴿۴۱﴾ ع

क्या तुम्हारे रब्ब ने तुम्हें पुत्रों के लिए चुन लिया है और अपने लिए कुछ फ़रिश्तों को अपनी लड़कियाँ बना लिया है ? निस्सन्देह तुम यह बड़ी भयानक बात करते हो ।४१। (रुकू ४/४)

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِىْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿۴۲﴾

और हम ने इस क़ुर्आन में (प्रत्येक बात) इस लिए बार-बार वर्णन की है ताकि वे इस से शिक्षा ग्रहण करें, किन्तु इस बात के होते हुए भी वह (क़ुर्आन उन्हें घमण्ड और) घृणा में ही बढ़ा रहा है ।४२।

قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى

तू कह दे कि यदि उन के कथनानुसार उस (अल्लाह) के साथ कोई और उपास्य भी होते तो ऐसी दशा में वे (मुश्रिक उन उपास्यों की सहायता से) अर्श वाले अल्लाह तक

1. मूल शब्द 'जब्ल' का अर्थ सरदार भी होता है। (अक़्रब) आयत का अर्थ यह है कि अहंकार पूर्वक अकड़ कर चलने से न तो मनुष्य देश के लोगों की पकड़ से बच सकता है और न बहुत बड़ा विद्वान ही बन सकता है तथा न जाति का सरदार ही ।

ذِی الْعَرْشِ سَبِیْلًا

पहुँचने का कोई न कोई मार्ग अवश्य[1] निकाल लेते।४३।

سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا یَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِیْرًا

वह इन (मुश्रिकों) की इन शिर्क की बातों से पवित्र और बहुत ही ऊँचा है।४४।

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَ الْاَرْضُ وَ مَنْ فِیْهِنَّ وَ اِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَ لٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِیْحَهُمْ اِنَّهٗ كَانَ حَلِیْمًا غَفُوْرًا

सातों आसमान तथा ज़मीन और जो उन में रहते हैं उस की स्तुति करते हैं और संसार की प्रत्येक वस्तु उस का यशोगान करती हुई उस की स्तुति करती है, परन्तु तुम उन की स्तुति को नहीं समझते। निस्सन्देह वह पापों को ढाँपने वाला एवं बहुत ही क्षमा करने वाला है।४५।

وَ اِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَیْنَكَ وَ بَیْنَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا

और जब तू क़ुर्आन को पढ़ता है तो उस समय हम तेरे तथा उन लोगों के बीच छिपा हुआ एक पर्दा डाल देते हैं जो कि आख़िरत पर ईमान नहीं लाते।४६।

وَّ جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ یَّفْقَهُوْهُ وَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا وَ اِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِی الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا

और हम उन के दिलों पर कई पर्दे डाल देते हैं ताकि वे[2] इस सत्यता को समझ न सकें तथा उन के कानों में बहरापन पैदा कर दिया गया है और जब तू क़ुर्आन में अपने रब्ब को याद करता है जो अकेला है, तो वे घृणा करते हुए मुँह मोड़ कर चले जाते हैं।४७।

---

1. अर्थात् उन का यह कथन है कि हम ने शिर्क को इसलिए अपनाया है कि हमें अल्लाह की निकटता प्राप्त हो सके। (सूर: ज़ुमुर रुकू 1) यदि यह बात सत्य है तो उन्हें अल्लाह की निकटता क्यों प्राप्त नहीं होती।

2. अर्थात् उन के दिल गन्दे हैं। अत: हम उन्हें इस्लाम लाने से इसलिए रोक रहे हैं कि उन के बुरे कर्मों के कारण इस्लाम धर्म की बदनामी न हो।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهٖٓ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ
وَإِذْ هُمْ نَجْوٰٓى إِذْ يَقُولُ الظّٰلِمُونَ إِنْ
تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ۝

और जब वे (साधारण रूप में) तेरी बातें सुन रहे होते हैं तो जिस उद्देश्य से वे बातें सुन रहे होते हैं हम उस की हक़ीक़त को ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं और जब वे आपस में एक-दूसरे से काना-फूंसी कर रहे होते हैं (उस का भी हमें ज्ञान होता है)। जब वे अत्याचारी एक-दूसरे से कह रहे होते हैं कि तुम धोखा खाए हुए एक व्यक्ति के पीछे चल रहे हो, (तब भी हम सुन रहे होते हैं)।४८।

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
سَبِيْلًا ۝

देख! उन्हों ने तेरे बारे में किस प्रकार की बातें गढ़ ली हैं जिन के नतीजे में वे गुमराह हो गए हैं, अब उन्हें (हिदायत हासिल करने के लिए) कोई राह नहीं सूझती।४९।

وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ
خَلْقًا جَدِيْدًا ۝

और उन्हों ने यह भी कहा है कि जब हम मरने के बाद हड्डियाँ हो जाएँगे तथा कुछ समय के बाद हड्डियों का भी चूरा बन जाएँगे (तो क्या फिर भी हमें नए सिरे से नवजीवन दिया जाएगा) और क्या वास्तव में हमें नई मख़लूक़ के रूप में उठाया जाएगा।५०।?

قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ۝

तू उन्हें कह कि चाहे तुम पत्थर बन जाओ चाहे लोहा।५१।

اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ فَسَيَقُوْلُوْنَ
مَنْ يُّعِيْدُنَا قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ

या कोई और ऐसी मख़लूक़ जो तुम्हारे विचार में इन पदार्थों से भी अधिक कठोर दिखाई देती हो। (तो भी तुम्हें दो बारा जीवित किया जाएगा)। यह सुन कर वे अवश्य कहेंगे कि कौन हमें दो बारा (जीवित करके) साकार रूप देगा और वजूद में लाएगा? तू उन्हें कह दे कि वही अल्लाह, जिस ने तुम्हें

فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هُوَ ۖ قُلْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ قَرِيبًا

पहली बार पैदा किया था। इस पर वे अवश्य ही आश्चर्य से तुम्हारी ओर (देखते हुए) सिर हिला-हिला कर कहेंगे कि यह जीवित किए जाने की बात कब पूरी होगी? तब तू उन्हें कह कि बिल्कुल सम्भव है कि वह समय अब निकट[1] ही हो।५२।

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا

(यह प्रतिज्ञा[2] उस दिन पूरी होगी) जिस दिन वह तुम्हें बुलाएगा और तुम उस का गुणगान करते हुए उस की आज्ञा का पालन करोगे और (तुरन्त उपस्थित हो जाओगे) तुम यह समझ रहे होगे कि तुम संसार में थोड़ा समय ही ठहरे थे।५३। (रुकू५/५)

وَقُل لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنزَغُ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا

और तू मेरे बन्दों से कह दे कि वही बात कहा करें जो सब से अच्छी हो, क्योंकि शैतान सदा उन में झगड़ा-फ़साद डालता रहता है। निस्सन्देह शैतान मनुष्य का खुला-खुला शत्रु है।५४।

رَّبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۖ إِن يَشَأْ يَرْحَمْكُمْ أَوْ إِن يَشَأْ

तुम्हारा रब्ब तुम्हें (सब से बढ़ कर) जानता है। यदि वह चाहेगा तो तुम्हारे ऊपर दया करेगा और यदि वह चाहेगा तो तुम्हें अज़ाब

1. इस से विदित होता है कि यह आयत सांसारिक विनाश और उस के बाद के जीवन से सम्बन्ध रखती है, क्योंकि आख़िरत के जीवन के विषय में तो इन्कार करने वाले लोग समझ भी नहीं सकते थे कि उस का समय निकट आ चुका है न अभी हड्डियों के चूर्ण-विचूर्ण होने का समय ही आया था। अत: इस स्थान पर इसी लोक की राजनीतिक या जातीय मौत और फिर दोबारा उन्नति करना अभीष्ट है।

2. वास्तव में यहाँ अरब देश वालों के इस्लाम धर्म ग्रहण कर के नया जीवन पाने और उन्नति करने का वर्णन है।

يُعَذِّبۡكُمۡ ‌ؕ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ عَلَيۡهِمۡ وَكِيۡلًا ۝٥٥

देगा और (हे रसूल !) हम ने तुझे उन का ज़िम्मेदार बना कर नहीं भेजा ।५५।

وَرَبُّكَ اَعۡلَمُ بِمَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ‌ ؕ وَلَقَدۡ فَضَّلۡنَا بَعۡضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعۡضٍ‌ وَّاٰتَيۡنَا دَاوٗدَ زَبُوۡرًا‏ ۝٥٦

और जो भी आसमानों तथा ज़मीन में रहने वाले हैं, उन्हें तुम्हारा रब्ब सब से अधिक जानता है और निस्सन्देह हम ने कुछ नबियों को दूसरे कुछ नबियों पर प्रधानता दी है और दाऊद को भी हम ने ज़बूर[1] प्रदान की थी ।५६।

قُلِ ادۡعُوا الَّذِيۡنَ زَعَمۡتُمۡ مِّنۡ دُوۡنِهٖ فَلَا يَمۡلِكُوۡنَ كَشۡفَ الضُّرِّ عَنۡكُمۡ وَلَا تَحۡوِيۡلًا‏ ۝٥٧

तू उन्हें कह दे कि जिन लोगों के विषय में तुम्हारा दावा और विचार है (कि वे अल्लाह के सिवा उपास्य हैं) उन्हें (अपनी सहायता के लिए) पुकारो तो तुम्हें पता चल जाएगा कि वे तुम्हारा कष्ट दूर करने की कोई शक्ति नहीं रखते और न तुम्हारी हालत में कोई परिवर्तन ही लाने की (शक्ति रखते हैं) ।५७।

اُولٰۤـئِكَ الَّذِيۡنَ يَدۡعُوۡنَ يَبۡتَغُوۡنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الۡوَسِيۡلَةَ اَيُّهُمۡ اَقۡرَبُ وَيَرۡجُوۡنَ رَحۡمَتَهٗ وَيَخَافُوۡنَ عَذَابَهٗ‌ؕ

वे लोग जिन्हें[2] वे पुकारते हैं वे भी अपने रब्ब की निकटता हासिल करने के लिए कोई साधन ढूँढ़ते हैं (अर्थात् यह देखते रहते हैं) कि कौन अल्लाह का अधिक प्रिय है (ताकि हम उस से सहायता लें) और वे सदा उस की रहमत के इच्छुक रहते हैं

---

1. कुछ लोग 'ज़बूर' को शरीअत की किताब समझते है, परन्तु 'ज़बूर' का अर्थ टुकड़ा भी होता है । अतः 'ज़बूर' से तात्पर्य है छोटे-छोटे टुकड़ों में उपदेश देना । 'ज़बूर' के पढ़ने से स्पष्ट है कि वह ऐसी ही किताब है ।

2. प्रतीत होता है कि इस स्थान पर मनगढ़त उपास्यों से अभीष्ट नबी या फ़रिश्ते हैं जिन्हें मुश्रिक अल्लाह का साझी ठहराते थे अन्यथा मूर्तियों पर यह आयत लागू नहीं हो सकती ।

إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ۝٥٨

उस के अज़ाब से डरते रहते हैं। निस्सन्देह तेरे रब्ब का अज़ाब ऐसा है जिस से डरा जाता है।५८।

وَإِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۚ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُورًا ۝٥٩

और (सारी पृथ्वी[1] पर) कोई ऐसी बस्ती नहीं होगी जिसे हम क़ियामत के दिन से पहले-पहले नष्ट न कर दें या उसे अत्यन्त कड़ा अज़ाब न दें। यह बात अल्लाह की किताब में पहले से लिखी हुई है।५९।

وَمَا مَنَعَنَآ أَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ إِلَّآ أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ ۚ وَاٰتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۚ وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ۝٦٠

(क्या) हमें निशान प्रकट करने में इस बात के सिवा कोई और बात रोक बन सकती है कि पहले लोगों ने (उन निशानों को) झुठला दिया था (और उन से कोई लाभ न उठाया था, किन्तु निशान प्रकट करने में यह बात कुछ महत्व नहीं रखती)। जब हम ने समूद जाति के लोगों को एक ऊँटनी रोशन निशान के रूप में दी तो उन्हों ने उस पर अत्याचार किया और हम निशानों को (बुरे परिणाम से) डराने के लिए ही प्रकट किया करते हैं।६०।

وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ۚ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ أَرَيْنٰكَ إِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ

और जब हम ने तुझे कहा था कि तुम्हारा रब्ब अवश्य ही इन लोगों को विनष्ट (करने का निर्णय) कर चुका है (तब भी इन्हों ने कोई लाभ नहीं उठाया) तथा जो स्वप्न हम ने तुझे दिखाया था उसे भी और उस

---

1. इस स्थान पर यह भविष्यवाणी है कि अन्तिम युग में सारे विश्व में अल्लाह का अज़ाब आएगा और हज़रत मसीह के कथनानुसार एक जाति दूसरी जाति पर चढ़ाई करेगी। पवित्र क़ुर्आन के कथनानुसार विपत्ति आएगी तथा संसार इस प्रकार निरन्तर उत्पीड़ित होगा कि मानव-समाज आश्चर्य-चकित रह जाएगा। (सूरः नाज़िआत आयत 7-8)

وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ ؕ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ۝٦١ ع

वृक्ष[1] को भी जिसे क़ुर्आन में फटकारा[2] हुआ बताया गया है। हम ने लोगों के लिए परीक्षा का साधन बनाया था और (इस पर भी) हम इन्हें डराते चले जाते हैं, फिर भी वह (हमारा डराना) इन्हें एक भयानक उद्दण्डता में बढ़ाता चला जाता है।६१। (रुकू ६/६)

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ۝٦٢

और (याद करो) जब हम ने फ़रिश्तों को कहा था कि तुम आदम के साथ मिल कर सजदः करो तो उन्हों ने (इस आदेश के अनुसार) सजदः किया, परन्तु इब्लीस ने (नहीं किया था)। उस ने कहा था क्या मैं उस मनुष्य के साथ मिल कर सजदः करूँ जिसे तूने कीचड़ से पैदा किया है ?।६२।

قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ عَلَيَّ ۫ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٦٣

और उस ने यह भी कहा (हे अल्लाह ! तू ही) मुझे बता कि क्या यह (मेरा स्वामी हो सकता) है ? जिसे तूने मेरे ऊपर प्रधानता दे दी है। यदि तूने मुझे क़ियामत के दिन तक ढील दी तो मुझे तेरी ही क़सम ! मैं उस की सारी ही संतान को अपने वश में कर लूँगा सिवाय थोड़े से लोगों के (जिन्हें तू बचा ले)।६३।

---

1. मूल शब्द 'शजरः' से तात्पर्य वंश और जाति भी होता है, जैसे वंश या पूर्वजों की नामावली को 'शजरः-ए-नसब' या वंशावली कहते हैं। (अक़्रब) क़ुर्आन में यहूदियों पर लानत डाली गई है। अतएव इस स्थान पर इन्हीं का वृत्तान्त है।

2. यहाँ स्वप्न और फटकारे हुए पेड़ का इकट्ठा उल्लेख किया गया है। इस से विषय सुस्पष्ट हो जाता है, क्योंकि स्वप्न इसी सूरः में 'इस्रा' की घटना में वर्णन हुआ है और 'इस्रा' कश्फ़ी या तन्द्रावस्था की वह यात्रा थी जो फ़लस्तीन की ओर हुई जो यहूदियों का स्थान था तथा फटकारे हुए वृक्ष से भी यहूदी अभीष्ट हैं। अतः दोनों के इकट्ठा वर्णन करने से एक घटना ने दूसरी घटना का वास्तविक अभिप्राय प्रकट कर दिया।

قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاؤُكُمْ جَزَاءً مَوْفُورًا ۝

(अल्लाह ने) कहा, जा ! (दूर हो) क्योंकि तेरा भी और उन लोगों में से जो तेरे पीछे चलेंगे सब का दण्ड नरक है। यह पूरा-पूरा बदला है ।६४।

وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ۝

और (हम ने कहा कि जा !) उन में से जिसे तू अपने वश में कर सके उसे अपनी आवाज से छल-कपट दे कर अपनी ओर बुला तथा अपने सवारों और प्यादों को उन पर चढ़ा ला तथा उन के धन-दौलत और संतान में उन का साझी बन और उन से झूठे वादे कर (फिर अपनी कोशिशों का परिणाम देख) और शैतान जो वादे भी करता है धोखा देने के उद्देश्य से ही करता है ।६५।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ ۚ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ۝

परन्तु जो मेरे बन्दे और सेवक हैं उन पर तू कदापि क़ाबू नहीं पा सकता और (हे मेरे बन्दे !) तेरा रब्ब काम करने में तेरे लिए काफ़ी है ।६६।

رَبُّكُمُ الَّذِي يُزْجِي لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۝

(और हे मेरे बन्दो !) तुम्हारा रब्ब तो वह है जो तुम्हारे लिए समुद्रों में नौकाएँ चलाता है ताकि तुम उस की कृपा और फ़ज़्ल को ढूँढ़ो। वह निश्चय ही तुम पर बार-बार दया करने वाला है ।६७।

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ ۖ فَلَمَّا نَجَّاكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ ۚ وَكَانَ

और जब समुद्र में (बाढ़ के कारण) तुम्हें कष्ट पहुँचे तो उस के सिवा (दूसरी सत्ताएँ) जिन्हें तुम पुकारते हो (तुम्हारे मस्तिष्क से) ग़ायब हो जाती हैं, फिर जब वह तुम्हें बचा कर सूखी धरती पर लाता है तो तुम (उस की ओर से) मुंह मोड़ लेते हो और

الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ۝

मनुष्य बड़ा नाशुक्री करने वाला (अर्थात् कृतघ्न) है ।६८।

اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ۝

क्या फिर तुम (यह समझते हो कि तुम) इस बात से पूर्णतया निश्चिन्त हो चुके हो कि वह (या तो) तुम्हें सूखी धरती के किनारे धँसा दे या तुम्हारे ऊपर कंकड़ बरसाए और फिर तुम अपने लिए कोई कार्य-साधक और सहायक न पाओ ।६९।

اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ۝

या तुम इस बात से निडर हो चुके हो कि वह तुम्हें पुनः उस (समुद्र) में ले जाए और तुम पर एक तूफ़ान चला दे और तुम्हारे इन्कार करने के कारण तुम्हें डुबो दे, फिर तुम उस अज़ाब पर हमारे विरुद्ध अपना कोई सहायक न पाओ ।७०।

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ۝ ع

और हम ने आदम की संतान को बड़ी इज़्ज़त दी है तथा उस के लिए जल एवं थल में सवारी के साधन पैदा किए हैं और उन्हें पवित्र पदार्थों से आजीविका प्रदान की है तथा जो मख़्लूक़ (सृष्टि) हम ने पैदा की है उस में से एक बड़े भाग पर उन्हें फ़ज़ीलत (अर्थात् प्रधानता) दी है ।७१। (रुकू ७/७)

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝

और (याद करो) जिस दिन हम प्रत्येक गिरोह को उस के नेता सहित बुलाएँगे, फिर जिन के दाहिने हाथ में उन के कर्मों की किताब दी जाएगी वे अपनी किताब को बड़ी चाह से पढ़ेंगे और उन पर लेश मात्र भी अत्याचार नहीं किया जाएगा ।७२।

وَمَنْ كَانَ فِىْ هٰذِهٖۤ اَعْمٰى فَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝

और जो व्यक्ति इस (संसार) में अन्धा[1] रहेगा, वह परलोक में भी अन्धा रहेगा और फिर अपने चाल-ढाल में भी सब से बढ़ कर भटका हुआ होगा।७३।

وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِىْۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِىَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ۝

और सम्भव था कि इस (कलाम) के कारण जो हम ने तुझ पर वह्य के द्वारा उतारा है वे तुझे सख़्त से सख़्त अज़ाब में डाल देते ताकि तू (उस से डर कर) इस कलाम के सिवा कुछ दूसरी बातें (अपने पास से) गढ़ कर हमारी ओर सम्बोधित कर दे और (यदि तू ऐसा करता तो) वह ऐसी दशा में तुझे निश्चय ही अपना पक्का मित्र बना लेते।७४।

وَلَوْلَاۤ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ۝

और यदि हम तुझे (क़ुर्आन दे कर) मज़बूत न कर चुके होते तब भी तू (ईश-वाणी के बिना भी) उन की बातों पर बहुत ही कम ध्यान देता (परन्तु अब तो तुझे ईश-वाणी ने सत्य-पथ सुझा दिया है)।७५।

اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ۝

और यदि तू (उन के विचार के अनुसार) झूठ गढ़ने वाला होता तो ऐसी दशा में हम तुझे जीवन का बड़ा दुःख तथा मौत का कड़ा अज़ाब चखाते और तू हमारे मुक़ाबिले पर अपना कोई भी सहायक न पाता।७६।

1. इस आयत में साधारण दृष्टिगोचर होने वाला अन्धापन अभीष्ट नहीं अपितु इस से यह अभिप्राय है कि जिस व्यक्ति ने संसार में ज्ञान और अन्तर्दृष्टि से काम न लिया वह परलोक में भी आध्यात्मिक दृष्टि से वंचित रहेगा और अल्लाह का दर्शन न कर सकेगा। सो इस से तात्पर्य केवल आध्यात्मिक अन्धापन है।

وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّونَكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ مِنْهَا وَإِذًا لَّا يَلْبَثُونَ خِلٰفَكَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

और निश्चय ही वे तुझे इस देश से निकालने के लिए नानाप्रकार के हीले-बहाने करते रहते हैं ताकि तुझे डरा कर देश से बाहर निकाल दें, किन्तु (यदि ऐसा हुआ तो) वे (स्वयं भी) तेरे बाद कुछ ही समय सुरक्षित रहेंगे (और शीघ्र ही विनष्ट हो जाएँगे) ।७७।

سُنَّةَ مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ۝

यह व्यवहार हमारे उस व्यवहार के अनुकूल होगा जो हम ने तुझ से पहले गुज़रे हुए अपने रसूलों (की जातियों) के साथ किया था और तू हमारे काम के ढंग में किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं पाएगा ।७८। (रुकू ८/८)

أَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ۝

तू सूर्य ढलने (के समय) से ले कर रात के ख़ूब अंधकार हो जाने तक (विभिन्न घड़ियों में) नमाज़ को अच्छी तरह पढ़ा कर और प्रातःकाल क़ुर्आन के पढ़ने को भी (ज़रूरी समझ)। प्रातःकाल (क़ुर्आन) का पढ़ना निश्चय ही (अल्लाह के निकट एक) प्रिय कर्म है ।७९।

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ عَسٰى أَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ۝

और रात के समय कुछ सो लेने के बाद इस (क़ुर्आन) के द्वारा जागा कर जो तुझ पर एक विशेष उपकार है। (इस तरह) पूर्ण आशा है कि तेरा रब्ब तुझे प्रशंसा वाले स्थान पर खड़ा कर दे ।८०।

وَقُلْ رَّبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ

और कह दे, हे मेरे रब्ब ! मुझे अच्छे ढंग से (पुन: मक्का में) दाख़िल[1] कर तथा पीछे

1. हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम मक्का नगर से निकले तो पहले थे और फिर मदीना नगर

(शेष पृष्ठ ६०८ पर)

صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ۝٨١

रहने वाली अच्छी याद के रूप में ही मक्का से निकाल और अपनी ओर से मेरा कोई सहायक (एवं) गवाह नियुक्त[1] कर।८१।

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۚ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝٨٢

और सब लोगों से कह दे कि अब सत्य आ गया है तथा असत्य भाग गया है और असत्य तो है ही भाग जाने वाला।८२।

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝٨٣

और हम क़ुर्आन में से धीरे-धीरे वह शिक्षा उतार रहे हैं जो मोमिनो के लिए तो स्वास्थ्य देने वाली और रहमत (का कारण) है, किन्तु अत्याचारियों को घाटे में ही बढ़ाती है।८३।

وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ۝٨٤

और जब हम मनुष्य को पुरस्कार प्रदान करें तो वह विमुख हो जाता है और अपने पहलू को उस से हटा लेता है और जब उसे कष्ट पहुँचे तो वह अत्यन्त निराश हो जाता है।८४।

قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ۗ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ

तू उन्हें कह दे कि हम में से हर-एक गिरोह अपने-अपने ढंग से काम कर रहा है।

(पृष्ठ ६०७ का शेष)

में दाख़िल हुए परन्तु अल्लाह ने दाख़िल होने का वर्णन पहले किया है तथा निकलने का उस के बाद। दाख़िल करने से अभिप्राय मदीना में दाख़िल होना नहीं अपितु मक्का विजय करके पुन: उस में प्रवेश करना अभिष्ट है। इस प्रकार अल्लाह ने आप को उस दु:ख-सुख से बचा लिया जो मक्का छोड़ने के कारण आप को पहुँच सकता था। मानों मक्का छोड़ते ही आप को बता दिया कि आप दो बारा मक्का में आएँगे।

1. इस में हज़रत अबू-बकर की ओर संकेत है और प्रार्थना सिखाई है कि हे अल्लाह! मुझे अपने पास से सच्चाई का गवाह और सहायक प्रदान कर।

اَهْدٰی سَبِیْلًا ۝٨٤

इसलिए (अपने रब्ब पर ही फ़ैसला छोड़ दो) क्योंकि तुम्हारा रब्ब उस व्यक्ति को भली-भाँति जानता है जो ठीक रास्ते पर है। (अतः उस का फ़ैसला सच्चे की सच्चाई को अवश्य रोशन कर देगा)।८५। (रुकू ९/९)

وَ یَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّیْ وَ مَاۤ اُوْتِیْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِیْلًا ۝٨٦

और वे तुझ से रूह (आत्मा) के विषय में प्रश्न करते हैं। तू उन्हें कह कि रूह मेरे रब्ब के आदेश से (पैदा हुई) है और तुम्हें (उस के बारे में) बहुत थोड़ा सा ज्ञान दिया गया है।८६।

وَ لَىِٕنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِیْۤ اَوْحَیْنَاۤ اِلَیْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَیْنَا وَكِیْلًا ۝٨٧

निस्सन्देह यदि हम चाहें तो जो (अल्लाह का कलाम) हम ने तुझ पर वह्य (के द्वारा) उतारा है उसे (इस संसार से) उठा लें फिर तू इस बात में हमारे ख़िलाफ़ अपने लिए कोई काम बनाने वाला नहीं पाएगा।८७।

اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَیْكَ كَبِیْرًا ۝٨٨

सिवाय इस के कि तेरे रब्ब की विशेष दया हो (जो इसे वापस लौटा लाए, किन्तु यह क़ुर्आन मिट नहीं सकता क्योंकि) तुझ पर तेरे रब्ब की अपार कृपा है।८८।

قُلْ لَّىِٕنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَ الْجِنُّ عَلٰۤى اَنْ یَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا یَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَ لَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِیْرًا ۝٨٩

तू उन्हें कह दे कि यदि मनुष्य तथा जिन्न[1] इस क़ुर्आन जैसी कोई दूसरी किताब लाने के लिए इकट्ठा हो जाएँ, चाहे वे आपस में एक-दूसरे के सहायक ही बन जाएँ तो भी वे इस जैसी किताब नहीं ला सकेंगे।८९।

وَ لَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ

और निस्सन्देह हम ने इस क़ुर्आन में हर-एक ज़रूरी बात को विभिन्न रूप में वर्णन

1. मूल शब्द 'जिन्न' के लिए देखिए सूरः अन्आम टिप्पणी आयत 129।

فَاَبٰۤی اَکۡثَرُ النَّاسِ اِلَّا کُفُوۡرًا ﴿۹۰﴾
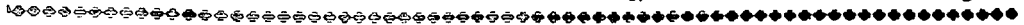
किया है, फिर भी बहुत से लोगों ने इन्कार की राह अपनाने के सिवा सब बातों का इन्कार कर दिया है।९०।

وَ قَالُوۡا لَنۡ نُّؤۡمِنَ لَکَ حَتّٰی تَفۡجُرَ لَنَا مِنَ الۡاَرۡضِ یَنۡۢبُوۡعًا ﴿۹۱﴾

और उन्हों ने यह भी कहा है कि हम कदापि तेरी कोई बात नहीं मानेंगे जब तक ऐसा न हो कि तू हमारे लिए धरती से कोई स्रोत न बहा दे।९१।

اَوۡ تَکُوۡنَ لَکَ جَنَّۃٌ مِّنۡ نَّخِیۡلٍ وَّ عِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الۡاَنۡہٰرَ خِلٰلَہَا تَفۡجِیۡرًا ﴿۹۲﴾

या तेरा खजूरों का या अंगूरों का कोई बाग़ हो और तू उस में बहुत सी नहरें निकाल दे।९२।

اَوۡ تُسۡقِطَ السَّمَآءَ کَمَا زَعَمۡتَ عَلَیۡنَا کِسَفًا اَوۡ تَاۡتِیَ بِاللّٰہِ وَ الۡمَلٰٓئِکَۃِ قَبِیۡلًا ﴿۹۳﴾

अथवा जैसा कि तेरा कहना है, तू हमारे ऊपर आकाश के टुकड़े[1] गिरा दे या फिर अल्लाह और फ़रिश्तों को हमारे आमने-सामने ला खड़ा कर दे।९३।

اَوۡ یَکُوۡنَ لَکَ بَیۡتٌ مِّنۡ زُخۡرُفٍ اَوۡ تَرۡقٰی فِی السَّمَآءِ ؕ وَ لَنۡ نُّؤۡمِنَ لِرُقِیِّکَ حَتّٰی تُنَزِّلَ عَلَیۡنَا کِتٰبًا نَّقۡرَؤُہٗ ؕ

या तेरा सोने का कोई घर हो अथवा तू आकाश[2] पर चढ़ जाए और तेरे (आकाश पर) चढ़ जाने पर भी विश्वास नहीं करेंगे जब तक तू (ऊपर जाकर) हम पर कोई किताब न उतारे जिसे हम स्वयं पढ़ें। तू उन्हें कह दे मेरा रब्ब ऐसी व्यर्थ बातें करने से पवित्र है। मैं तो केवल मानव-

---

1. इस से तात्पर्य अज़ाब है।

2. इस आयत से स्पष्ट है कि 'मेराज' का चमत्कार भी इन्कार करने वालों के लिए काफ़ी न था। वे इस बात की हठ करते थे कि आकाश पर जाने की बात हम तभी मानेंगे जब आप एक किताब भी ऊपर से उतार कर लाएँ जिसे हम छू कर देखें और पढ़ सकें, अन्यथा केवल यह कह देना कि मैं आकाश पर गया था हमारे लिए काफ़ी न होगा।

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ۝

रसूल[1] हूँ (आकाश पर नहीं जा सकता) ।९४। (रुकू १०/१०)

وَ مَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ۝

और उन लोगों को उस हिदायत पर ईमान लाने से जो उन के पास आई है केवल इस बात ने रोका है कि उन्हों ने (अपने दिलों में) कहा. क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बना कर भेज दिया है ? ।९५।

قُلْ لَّوْ كَانَ فِى الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ۝

तू उन्हें कह दे कि यदि धरती पर फ़रिश्ते निवास करते होते जो उस पर इतमीनान से चलते-फिरते तो (ऐसी दशा में) हम अवश्य उन पर आकाश से किसी फ़रिश्ते को ही रसूल बना कर भेजते ।९६।

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَ بَيْنَكُمْ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ۝

तू उन्हें कह कि मेरे और तुम्हारे बीच गवाह के रूप में अल्लाह ही काफ़ी है। वह अपने बन्दों को जानने वाला और देखने वाला है ।९७।

وَ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَ مَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ وَ نَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّ بُكْمًا وَّ صُمًّا مَاْوٰىهُمْ

और जिसे अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पर होता है तथा जिसे वह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो तुझे अल्लाह के मुक़ाबिल उस व्यक्ति का कोई भी सहायक नहीं मिलेगा और क़ियामत के दिन हम उन्हें उन के उद्देश्यों (एवं विचारों) के अनुसार अन्धे, गूँगे और बहरे होने की हालत में इकट्ठा करेंगे। उन का ठिकाना नरक होगा। जब भी नरक

1. अर्थात् एक मानव-रसूल आकाश पर नहीं जा सकता है। आश्चर्य है कि मुसलमान इस तथ्य के होते हुए भी हज़रत मसीह को इसी भौतिक शरीर सहित आकाश पर जीवित मानते हैं, जब कि वह क़ुर्आन के कथनानुसार केवल एक मानव-रसूल थे।

جَهَنَّمُ ۖ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿۹۷﴾

की आग कुछ मंद पड़ेगी तो उन के लिए अज़ाब तेज़ कर दिया जाएगा जो भड़कने वाली आग का होगा ।९८।

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿۹۸﴾

यह आग उन्हीं के कर्मों का बदला होगी, क्योंकि उन्हों ने हमारे निशानों का इन्कार किया और कहा कि क्या जब हम मरने के बाद हड्डियाँ और चूरा-चूरा हो जाएंगे (तो हमें पुनः नवजीवन प्रदान किया जाएगा (और) क्या वास्तव में एक नई मख़लूक़ के रूप में हमें उठाया जाएगा ? ।९९।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۗ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿۹۹﴾

क्या वे अभी तक नहीं समझ सके कि वह अल्लाह जिस ने आसमानों तथा ज़मीन को पैदा किया है वह इस बात का सामर्थ्य रखता है कि वह उन जैसे और लोग पैदा करे तथा इस बात में कोई सन्देह नहीं कि उस ने उन के लिए एक अवधि निश्चित कर दी है फिर भी उन अत्याचारियों ने केवल नाशुक्री की राह को ही अपनाया है ।१००।

قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْٓ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۗ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿۱۰۰﴾ ع

तू उन्हें कह कि यदि तुम मेरे रब्ब की रहमत के (अपार भण्डारों के भी) मालिक होते तो भी तुम उन के ख़र्च हो जाने के डर से (उन्हें) रोके ही रखते और मनुष्य बड़ा ही कंजूस है ।१०१। (रुकू ११/११)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ

और हम ने मूसा को नौ खुले-खुले निशान[1] प्रदान किए थे। अतः तू बनी-इस्राईल से (उन हालात के बारे में) पूछ, जब वह

1. इस के लिए देखिए सूरः आराफ़ टिप्पणी आयत 134 ।

إِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يَٰمُوسَىٰ مَسْحُورًا ﴿١٠٢﴾

(मूसा) उन (मिस्र-निवासियों) की ओर आया था तो फ़िरऔन ने उस से कहा था हे मूसा ! निस्सन्देह मैं तुझे धोखा में पड़ा हुआ समझता हूँ ।१०२।

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ أَنزَلَ هَٰٓؤُلَآءِ إِلَّا رَبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ بَصَآئِرَ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يَٰفِرْعَوْنُ مَثْبُورًا ﴿١٠٣﴾

उस ने उत्तर में कहा कि निस्सन्देह तुझे ज्ञात हो चुका है कि इन (निशानों) को आसमानों तथा ज़मीन के रब्ब ने आध्यात्मिक दृष्टि प्रदान करने वाला बना कर उतारा है और हे फ़िरऔन ! तेरे बारे में मेरा यह विश्वास है कि तू (अपने बुरे इरादों में) असफल रहेगा ।१०३।

فَأَرَادَ أَن يَسْتَفِزَّهُم مِّنَ ٱلْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَٰهُ وَمَن مَّعَهُۥ جَمِيعًا ﴿١٠٤﴾

इस पर उस ने उन (मूसा एवं उस की जाति) को देश से निकाल देने का इरादा कर लिया । इस का परिणाम यह निकला कि हम ने उसे और उस के सब साथियों को डुबो दिया ।१०४।

وَقُلْنَا مِنۢ بَعْدِهِۦ لِبَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱسْكُنُوا۟ ٱلْأَرْضَ فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ ٱلْءَاخِرَةِ جِئْنَا

और उस के डूब मरने के बाद हम ने बनी-इस्राईल को कह दिया कि तुम उस (वादा वाले फ़लस्तीन) देश में जा कर सुख से रहो । इस के बाद जब (मुसलमानों के लिए) दूसरी[1] बार अज़ाब का वादा पूरा होने का समय आएगा तो हम तुम सब को इकट्ठा कर के

1. इस से पहले भी मूल शब्द 'वादुल् आख़िरत' प्रयुक्त हुआ है जो यहूदियों के सम्बन्ध में था। इस के पश्चात् पुनः यह शब्द प्रयुक्त हुआ है । अतः इस से स्पष्ट है कि यह दूसरी प्रतिज्ञा कोई और है जो केवल मुसलमानों के सम्बन्ध में ही हो सकती है । अतएव हम ने मुसलमानों का शब्द कोष्ठ में लिख दिया है । इस विषय को पहले भाष्यकारों ने भी लिखा है । (देखिए 'फ़तहुल्बयान' जो वास्तव में अल्लामा शूकानी की रची हुई है) ।

بِكُمْ لَفِيفًا ۝

वहाँ[1] ले आएँगे ।१०५।

وَ بِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَ بِالْحَقِّ نَزَلَ وَ مَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ۝

और हम ने इस क़ुर्आन को हक़ एवं हिक्मत के साथ उतारा है तथा यह सत्य एवं हिक्मत के साथ ही उतरा है और हम ने तुझे केवल शुभ-समाचार देने वाला तथा अज़ाब से सावधान करने वाला बना कर भेजा है ।१०६।

وَ قُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّ نَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ۝

और हम ने इसे क़ुर्आन बनाया है और इस के टुकड़े-टुकड़े किए हैं (अर्थात् सूरतें बनाई हैं) ताकि तू इसे आसानी से ठहर-ठहर कर लोगों को पढ़ कर सुना सके तथा हम ने इसे थोड़ा-थोड़ा कर के उतारा है ।१०७।

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ۝

तू उन्हें कह कि तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ । जिन लोगों को इस (के उतरने) से पहले (इल्हामी किताबों या शुद्ध स्वभाव द्वारा) ज्ञान दिया गया है । जब उन के सामने इसे पढ़ा जाता है तो वे इसे सुन कर पूर्ण रूप से आज्ञा पालन करते हुए माथों के बल गिर जाते है ।१०८।

وَّ يَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ۝

और वे कहते हैं कि हमारा रब्ब (त्रुटियों से) पवित्र है तथा हमारे रब्ब की प्रतिज्ञा अवश्य[2] पूरी हो कर रहने वाली है ।१०९।

1. यहूदियों को तीसरी बार फ़लस्तीन में लाएँगे । इस भविष्यवाणी के अनुसार इस्राइलियों ने आज कल फ़लस्तीन पर अपना आधिपत्य जमा लिया है ।

2. इस स्थान पर यह बताया गया है कि जो यहूदी क़ुर्आन-मजीद पर ईमान ला चुके हैं वे इस बात पर भी ईमान लाते हैं कि वे एक बार फिर फ़लस्तीन में प्रवेश करेंगे ।

وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۩ ﴿١٠٩﴾

और जब वे माथों के बल गिर जाते हैं तो रोते जाते हैं तथा यह क़ुर्आन उन की विनम्रता को और भी बढ़ाता जाता है।११०।

قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمَٰنَ ۖ أَيًّا مَّا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١١٠﴾

तू उन्हें[1] कह दे कि चाहे तुम (ख़ुदा को) अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान। जो नाम ले कर भी उसे पुकारो (पुकार सकते हो) क्योंकि सब उत्तम गुण उसी के हैं और अपनी प्रार्थना के शब्द ऊँची आवाज़ से न कहा कर तथा न ही बहुत धीमी आवाज़ से, बल्कि इस के बीच-बीच[2] की कोई राह अपना।१११।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُن لَّهُ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ ۖ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ﴿١١١﴾

और (सारे संसार को सुना-सुना कर) कह दे कि प्रत्येक स्तुति का अधिकारी अल्लाह ही है जिस की न तो संतान है तथा न ही शासन में उस का कोई साझेदार है और न उसे असमर्थ देख कर (और उस पर दया करते हुए) कोई उस का मित्र बनता है (बल्कि जो भी उस का मित्र बनता है उस से सहायता लेने के लिए बनता है) और तू अच्छी तरह उस की बड़ाई कर।११२। (रुकू १२/१२)

1. अर्थात् ईसाइयों को जो यहूदियों का एक हिस्सा है और वे अल्लाह के रहमान-गुण को नहीं मानते। ईसाइयों की किताबों में बिस्मिल्लाह शब्द तो लिखा होता है, किन्तु रहमान शब्द नहीं लिखते, क्योंकि रहमान का गुण उन के आधार भूत मंतव्य कफ़्फ़ारा का खण्डन करता है।

2. बहुत ऊँची आवाज़ में प्रार्थना करने में इसलिए रोका कि उस में आडम्बर हो सकता है और अत्यन्त धीमी आवाज़ से इसलिए रोका कि बहुत धीमा पढ़ने से बात भूल सकती है तथा ध्यान इधर-उधर हो सकता है।

सूरः अल्-कहफ़

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की एक सौ ग्यारह आयतें एवं बारह रुकू हैं ।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ②

प्रत्येक स्तुति का केवल अल्लाह ही अधिकारी है जिस ने यह किताब अपने बन्दे पर उतारी है और इस में कोई टेढ़ापन नहीं रखा ।२।

قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ③

(और उस ने इसे) सत्य से भरी हुई और ठीक-ठीक राह दिखाने वाली बनाकर उतारा है ताकि वह लोगों को उस (अल्लाह) की ओर से आने वाले एक कड़े अज़ाब से सूचित करे तथा ईमान लाने वालों को जो नेक काम करते हैं शुभ-समाचार दे कि उन के लिए अल्लाह की ओर से अच्छा बदला निश्चित है ।३।

مّٰكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ④

वे इस (बदले के स्थान में) सदैव रहेंगे ।४।

وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ⑤

और (उस ने इसे इस लिए भी उतारा है) ताकि वह उन लोगों को (आने वाले अज़ाब से) सावधान करे जो यह कहते हैं कि अल्लाह ने (अमुक व्यक्ति को) पुत्र बना लिया है ।५।

مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ۚ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۚ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۞

उन्हें इस विषय में कुछ भी तो ज्ञान नहीं और न उन के पूर्वजों को ही कोई ज्ञान था। यह बहुत बड़ी भयानक बात है जो उन के मुँह से निकल रही है, अपितु वे केवल झूठ बोल रहे हैं।६।

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ۞

यदि वे इस महत्वपूर्ण कलाम पर ईमान न लाएँ तो क्या तू उन की चिन्ता में अपनी जान ही खो देगा ?।७।

اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۞

जो कुछ इस धरती पर है निश्चय ही उसे हम ने उस की शोभा का साधन बनाया है ताकि हम उन (भूमि-निवासियों) की परीक्षा लें कि उन में से कौन सब से बढ़ कर अच्छा काम करने वाला है।८।

وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ۞

और जो कुछ इस धरती पर है निश्चय ही हम उसे मिटा कर एक चटियल मैदान बना देंगे।९।

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ كَانُوْا

क्या तू समझता है कि कहफ़[1] और रक़ीम[2] वाले लोग हमारे निशानों में से कोई अचम्भा

---

1. मूल शब्द 'कहफ़' का अर्थ है—
   (क) घर की भाँति, घरौंदा।
   (ख) पर्वत में खोद कर बनाया हुआ मकान।
   (ग) लिखना।
   (घ) शरणागार।
2. मूल शब्द 'अर्रक़ीम' का अर्थ है—
   (क) मोटा, सुन्दर और सुस्पष्ट लिखा हुआ।
   (ख) किसी वस्तु पर चित्र बनाना।

(शेष पृष्ठ ५१८ पर)

مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ⑩

(निशान) थे (कि जिन की मिसाल अर्थात् उदाहरण फिर कभी न पाई जा सकती हो) ।१०।

اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ⑪

जब उन कुछ नवयुवकों ने खुली गुफ़ा में शरण ली और (प्रार्थना करते हुए) उन्हों ने कहा कि हे हमारे रब्ब ! हमें अपने पास से विशेष रहमत प्रदान कर तथा हमारे लिए इस समय के बारे में हिदायत और भलाई के साधन तय्यार कर ।११।

(पृष्ठ ३७९ का शेष)

(ग) लिखना ।

(घ) अंकित करना ।

इतिहास, उल्लेख और विभिन्न भाष्य 'कहफ़' वालों का सम्बन्ध प्रारम्भिक ईसाइयों से जोड़ते हैं । हमारी जाँच के अनुसार कहफ़ वाले लोग प्रारम्भिक ईसाई थे। वे कई शताब्दियों में अत्याचारों से उत्पीड़ित रहे । अत्याचारों का प्रारम्भ एक हवारी द्वारा हुआ। राजा डिसीस के राज्य-काल (249 से 251 ई०) में ये अत्याचार अपनी चरम-सीमा तक पहुँच चुके थे । ईसाइयों को विधान बना कर दण्ड दिया जाता था। उन्हें कारावास में ठूँसा जाता था, फिर उन की हत्या कर दी जाती थी। (इन्साइक्लोपीडिया आफ़ ब्रिटेनिका शब्द डिसीस और कलीसिया का इतिहास) राजा गलीस के राज्य काल (सन् 311 ई०) में उन्हें क्षमा दान दिया गया। उस ने अपनी मृत्यु के समय उस विधान को भंग कर दिया जो ईसाइयों के विरुद्ध था। फलस्तीन राजा के समय उन अत्याचारों को विधान बना कर रोक दिया गया और फिर थ्यूडीसीस के राज्य काल में ईसाइयों ने साधारण रूप से उन्नति की। ये लोग एक अल्लाह को मानने वाले थे और हज़रत ईसा को अल्लाह का रसूल मानते थे। वे अत्याचारों से बचे रहने के लिए गुफ़ाओं में जा छिपे जिन को कैटा कोम्बज़ कहते हैं जो रोम देश में इस्कन्द्रिया के आस पास माल्टा, सिस्ली और नेपल्स के पास अब तक खोजी जा चुकी है। उन गुफ़ाओं में अनेक शिला लेख भी मिले हैं जिन में उस समय की परिस्थितियाँ मूर्ति भाषा में अंकित है ।

वे लोग उन गुफ़ाओं के मुँहों पर कुत्ते भी रखते थे ताकि कुत्तों के भोंकने से आगन्तुक लोगों के आने का पता चल सके। सुरक्षा के लिए और भी कई साधन जुटाए गए थे। (कैटा कोम्बज़ आफ़ रोम लेखक मिस्टर बंजमैन स्काट) ।

فَضَرَبْنَا عَلَىٰٓ اٰذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ﴿١٢﴾

जिस पर हम ने उन्हें उस खुली गुफ़ा में गिनती के कुछ वर्षों के लिए बाहरी बातों के सुनने से रोक दिया।१२।

ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَيُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ﴿١٣﴾

फिर हम ने उन को उठाया ताकि हम जान लें कि जितना समय वे वहाँ ठहरे रहे उसे (मसीह के) दोनों अनुयायी दलों में से कौन-सा दल अधिक याद रखने वाला है।१३। (रुकू १/१३)

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَ زِدْنٰهُمْ هُدًى ﴿١٤﴾

अब हम उन का महत्व पूर्ण समाचार ठीक-ठीक तेरे सामने वर्णन करते हैं। वे कुछ ही नवयुवक थे जो अपने रब्ब पर सच्चा ईमान लाए थे। हम ने उन्हें हिदायत में और भी बढ़ाया था।१४।

وَّ رَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا۟ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا ﴿١٥﴾

और जब वे (अपना देश छोड़ने के लिए) उठे तो हम ने उन के दिलों को मज़बूत बना दिया तब उन्हों ने एक-दूसरे से कहा कि हमारा रब्ब तो आसमानों तथा ज़मीन का रब्ब है। हम उस के सिवा किसी दूसरे उपास्य को कदापि नहीं पुकारेंगे अन्यथा हम सत्य से हटी हुई एक बात कहने वाले होंगे।१५।

هٰٓؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَوْ لَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍ بَيِّنٍ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿١٦﴾

इन (हमारी जाति के) लोगों ने सच्चे उपास्य को छोड़ कर (अपने लिए) दूसरे उपास्य बना लिए हैं। वे उन की सच्चाई पर क्यों कोई रोशन और ठोस प्रमाण पेश नहीं करते? फिर (वे क्यों नहीं समझते कि) जो व्यक्ति अल्लाह पर झूठ गढ़े उस से बढ़ कर अत्याचारी दूसरा कौन हो सकता है?।१६।

وَ اِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗٓا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٧﴾

और अब जब कि तुम ने उन से और उस वस्तु से भी जिस की वे अल्लाह के सिवा पूजा करते हैं, किनारा कर लिया है तो अब तुम इस खुली पहाड़ी शरणागार में बैठे रहो। (ऐसा करोगे तो) तुम्हारा रब्ब अपनी रहमत की कोई राह तुम्हारे लिए खोल देगा तथा तुम्हारे लिए तुम्हारे इस काम में आसानी के सामान पैदा कर देगा।१७।

وَ تَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَ اِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَ هُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَ مَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٨﴾ ع ٢/١٤

और (हे सम्बोधित!) तू सूर्य को देखता है कि जब वह उदय होता है तो उन की खुली गुफ़ा[1] से दाहिनी ओर को हट कर गुज़रता है तथा जब वह अस्त होता है तो उन के बायें ओर से हट कर गुज़रता है और वे उस गुफ़ा के भीतर एक खुले स्थान में रहते थे। यह बात अल्लाह (की सहायता) के निशानों में से एक निशान है। जिसे अल्लाह हिदायत की राह दिखाए वही हिदायत पर होता है तथा जिसे वह गुमराह ठहराए तो तू उस का कभी कोई मित्र और राह दिखाने वाला नहीं पाएगा। ।१८। (रुकू २/१४)

وَ تَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّ هُمْ رُقُوْدٌ ۖ وَّ نُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَ ذَاتَ الشِّمَالِ ۖ وَ كَلْبُهُمْ بَاسِطٌ

और (हे सम्बोधित!) तू उन्हें जागते हुए समझता है, हालाँकि वे सो रहे हैं। हम[2] उन्हें दाहिनी ओर भी फिरायेंगे तथा बायें

1. कह्फ़ —गुफ़ा का स्थान इस प्रकार था कि सूर्य प्रात:काल को उन के दाहिनी ओर से हो कर गुज़रता था और सायंकाल को बायें ओर से गुज़रता था।

2. अर्थात् एक समय में कह्फ़ वालों का संसार भर में सर्वत्र प्रसार हो जाएगा और ये फैल जाने वाली जाति यूरोप के ईसाई हैं ! अतएव कह्फ़ से अभीष्ट यही यूरोपियन हैं।

ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ⑲

और भी उन का कुत्ता[1] भी (उन के पास) आँगन में हाथ फैलाए मौजूद रहेगा। यदि तू उन के हालात का जानकार हो जाए तो तू उन से भागने[2] के लिए अपनी पीठ फेर ले तथा उन का दबदबा और आतंक तेरे ऊपर छा जाए।१९।

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ

और इसी प्रकार हम ने उन्हें (बे-बसी की हालत से) उठाया, इस पर वे एक-दूसरे से आश्चर्य से प्रश्न करने लगे। उन में से एक ने कहा कि तुम यहाँ कितनी देर ठहरे रहे हो? (जो उस के सम्बोधित थे) वे बोले कि हम एक दिन या दिन का कुछ भाग ठहरे हैं। फिर उन्हों ने कहा कि जितनी देर तुम यहाँ ठहरे रहे हो उसे तुम्हारा रब्ब ही भली-भाँति जानता है। अतएव (इस वाद-विवाद को छोड़ो और[3]) ये अपने पुराने सिक्के दे कर अपने में से किसी एक को इस नगर की ओर भेजो, वह (वहाँ जा कर) देखे कि इस नगर में किस का ग़ल्ला सब से अच्छा है। फिर उस (अच्छे ग़ल्ले वाले) से खाने का कुछ सामान ले आए और वह सावधानी से लोगों

---

1. पालतू कुत्ते जब घर की रक्षा के लिए बाहर बैठते हैं तो धरती पर अपने हाथ फैला कर बैठते हैं। यूरोप के लोग अधिक संख्या में कुत्ते पालते हैं। यहाँ इसी की ओर संकेत किया गया है।

2. पश्चिम या उत्तर के निवासी पूर्व या दक्षिण के लोगों से इस प्रकार बच कर रहेंगे कि उन के घरों में बिना सूचना दिए जाना पूर्व के लोगों के लिए असम्भव होगा।

3. अर्थात् जब कह्फ़ वालों पर संसार का इतिहास सुस्पष्ट हो गया और उन्हों ने पहले की अपेक्षा कुछ शान्ति पाई तो उन्हों ने अपने पुराने सिक्के दे कर अपने में से कुछ लोगों को ग़ल्ला ख़रीदने के लिए भेजा।

وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿٢٠﴾

के भेद जानने का प्रयत्न करे, परन्तु तुम्हारे बारे में किसी को कुछ भी पता न होने दे।२०।

اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٢١﴾

क्योंकि यदि वे तुम पर ग़ल्बा (आधिपत्य) जमा लें तो निश्चय ही वे तुम्हें संगसार कर देंगे या (जब्रन) तुम्हें अपने धर्म में वापस लौटा लेंगे और इस दशा में तुम कदापि सफल नहीं हो सकते।२१।

وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۚ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ۚ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢٢﴾

और इसी प्रकार हम ने लोगों को उन के हालात से जानकारी कराई ताकि उन्हें मालूम हो जाए कि अल्लाह का वादा पूरा हो कर रहने वाला है और यह भी कि उस निश्चित घड़ी के आने में कुछ भी शंका नहीं (तथा उस समय को भी याद करो) जब वे अपने काम के बारे में आपस में बात-चीत करने लगे और उन्हों ने (एक-दूसरे से) कहा कि तुम उन के रहने के स्थान पर कोई भवन बनाओ। उन का रब्ब उन (की हालत) को सब से बढ़ कर जानता था। अन्ततः जिन्हों ने अपनी बात-चीत में विजय पा ली उन्हों ने कहा कि हम तो उन के रहने के स्थान पर मस्जिद[1] ही बनाएँगे।२२।

سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ

वे लोग (जो हक़ीक़त से बे-ख़बर हैं) ग़ैब (अर्थात् परोक्ष) के बारे में अटकल पच्चू बातें करते हुए कभी यह कहेंगे कि वे केवल

1. यहाँ मस्जिद से तात्पर्य गिर्जा है, क्योंकि ईसाई लोग मस्जिद के स्थान पर गिर्जा बनाते हैं और अब भी केटाकोम्ब्ज़ के द्वार पर गिर्जा बना हुआ है जिन में कहफ़ वाले रहते थे।

خَمۡسَةٌ سَادِسُهُمۡ كَلۡبُهُمۡ رَجۡمًۢا بِالۡغَيۡبِۚ وَ يَقُوۡلُوۡنَ سَبۡعَةٌ وَّثَامِنُهُمۡ كَلۡبُهُمۡ ؕ قُلۡ رَّبِّىۡۤ اَعۡلَمُ بِعِدَّتِهِمۡ مَّا يَعۡلَمُهُمۡ اِلَّا قَلِيۡلٌ ۙ فَلَا تُمَارِ فِيۡهِمۡ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۖ وَّلَا تَسۡتَفۡتِ فِيۡهِمۡ مِّنۡهُمۡ اَحَدًا ﴿٢٣﴾

तीन व्यक्ति थे जिन के साथ चौथा उन का कुत्ता था और (कभी[1] यह) कहेंगे कि वे पाँच थे जिन के साथ छठा उन का कुत्ता था और (उन में से कुछ यूँ भी) कहेंगे कि वे सात थे तथा उन के साथ आठवाँ उन का कुत्ता[2] था। तू उन्हें कह दे कि उन की ठीक-ठीक गिनती को अल्लाह ही जानता है और थोड़े[3] से लोगों के सिवा उन्हें कोई नहीं जानता। अतएव तू उन के बारे में मज़बूत और युक्ति-युक्त वाद-विवाद के सिवा कोई और विवाद न कर तथा उन के बारे में उन में से किसी से भी वास्तविक दशा न पूछ।२३। (रुकू ३/१५)

وَلَا تَقُوۡلَنَّ لِشَاۡىۡءٍ اِنِّىۡ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٤﴾

और तू[4] किसी बात के बारे में (निश्चित रूप से) कभी न कह कि मैं कल यह काम अवश्य करूँगा।२४।

اِلَّاۤ اَنۡ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَاذۡكُرۡ رَّبَّكَ

हाँ! (केवल इस तरह करूँगा) जिस तरह अल्लाह चाहेगा और जब (किसी समय) तू

---

1. यह पुरानी गुफ़ाओं के विभिन्न कमरों का विवरण है। कुछ कमरों के शिला-लेख बताते है कि वहाँ तीन व्यक्तियों ने शरण ली थी। इसी प्रकार विभिन्न कमरों के बारे में विभिन्न संख्या बताई गई है।

2. केटा कोम्बज़ में शरण लेने वाले ईसाइयों के साथ हर स्थान में कुत्ता भी दिखाया गया है।

3. क़ुर्आन-मजीद बताता है कि कहफ़ वालों की संख्या को केवल थोड़े से लोग जानते हैं, परन्तु आश्चर्य है कि भाष्य और टीकाएँ देखिए तो ऐसा लगता हैं कि कहफ़ वालों की संख्या का ज्ञान बच्चे-बच्चे को है।

4. कहफ़ वालों या इसाईयों का मुक़ाबिला मुसलमान अपनी शक्ति से नहीं कर सकेंगे अपितु अल्लाह की सहायता से ही कर सकेंगे। अतएव जब उन से मुक़ाबिले का अवसर आ जाए तो बड़ा बोल न बोलो कि हम ऐसा-ऐसा कर देंगे, अपितु यह कहा करो कि यदि अल्लाह चाहे तो हम उन का मुक़ाबिला इस-इस ढंग से करेंगे।

إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَىٰٓ أَن يَهْدِيَنِ رَبِّى لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا ﴿٢٥﴾

भूल जाए तो (याद आने पर) अपने रब्ब (के वादों) को याद कर लिया कर तथा कह दिया कर (कि मुझे पूर्ण) आशा है कि मेरा रब्ब (अन्ततः मुझे सफल कर देगा और) मुझे उस राह पर चलाएगा जो हिदायत पाने की दृष्टि से (मेरे सोचे हुए राह से भी) अधिक निकट होगी।२५।

وَلَبِثُوا۟ فِى كَهْفِهِمْ ثَلَٰثَ مِا۟ئَةٍ سِنِينَ وَٱزْدَادُوا۟ تِسْعًا ﴿٢٦﴾

और (कुछ लोग यह भी कहते हैं कि) वे अपने खुले शरणागार में तीन सौ वर्ष[1] तक रहे थे और उन्हों ने (इस समय पर) नौ वर्ष और बढ़ाए थे।२६।

قُلِ ٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا۟ ۖ لَهُۥ غَيْبُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ أَبْصِرْ بِهِۦ وَأَسْمِعْ ۚ مَا لَهُم مِّن دُونِهِۦ مِن وَلِىٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِى حُكْمِهِۦٓ أَحَدًا ﴿٢٧﴾

तू उन्हें कह कि जितना समय वे गुफ़ा में ठहरे रहे अल्लाह उसे सब से बढ़ कर जानता है। आसमानों तथा ज़मीन के ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान उसी को है। वह बहुत देखने वाला एवं भली-भाँति सुनने वाला है। उन लोगों का उस के सिवा कोई भी सहायक नहीं है और वह अपने निर्णय एवं आदेश में किसी को भी साझी नहीं बनाता।२७।

وَٱتْلُ مَآ أُوحِىَ إِلَيْكَ مِن كِتَابِ رَبِّكَ ۖ لَا مُبَدِّلَ

और तेरे रब्ब की किताब में से जो हिस्सा वह्य द्वारा तुझ पर उतारा जाता है उसे

1. इतिहास से पता चलता है कि ईसाइयों पर भिन्न-भिन्न देशों में अनेक अवसरों पर अत्याचार हुए थे। एक समय रोम में उन पर अधिक अत्याचार हुए तो दूसरे समय में इस्कन्द्रिया में, क्योंकि इस्कन्द्रिया भी रोमियों के अधीन आ गया था! इन अत्याचारों के कारण कभी तो वे लम्बे समय तक गुफ़ा में छिपने पर विवश हुए तथा कभी थोड़े समय के लिए। लोगों ने अज्ञानता से कष्टों के थोड़े-थोड़े समय को लगातार और स्थायी समझ लिया और फिर काल्पनिक अनुमान करने लगे। इन्हीं काल्पनिक अनुमान का इस आयत में खण्डन किया गया है और बताया गया है कि ये अनुमान भिन्न-भिन्न समय को सामने रख कर लगाया गया है, अन्यथा सारा समय जो उस जाति पर बीता, उस का ज्ञान केवल अल्लाह ही को है।

لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٨﴾

पढ़ (कर लोगों को सुना)। उस की बातों को बदलने वाला कोई नहीं है तथा उसे छोड़ कर तुझे शरण के लिए कोई स्थान नहीं मिलेगा।२८।

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿٢٩﴾

और अपना सम्बन्ध उन लोगों से रख जो अपने रब्ब की प्रसन्नता चाहते हुए उसे साँझ-सवेरे पुकारते हैं और तेरी दृष्टि उन्हें[1] पीछे छोड़ कर आगे न चली जाए, अन्यथा तू सांसारिक-जीवन की शोभा का चाहने वाला होगा तथा जिस के दिल को हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया हो और उस ने अपनी तुच्छ कामनाओं का अनुसरण किया हो तथा उस की बात सीमा से आगे निकल चुकी हो तो तू उस की फ़रमाँबरदारी न कर।२९।

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۙ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ ۚ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣٠﴾

और लोगों को कह दे कि यह सच्चाई तेरे रब्ब की ओर से ही उतरी हुई है। अतः जो चाहे (इस पर) ईमान लाए और जो चाहे इन्कार कर दे (किन्तु यह याद रखे कि) हम ने अत्याचारियों के लिए निश्चय ही एक आग तय्यार कर रखी है जिस की चारदीवारी ने अब भी उन्हें घेरा हुआ है और यदि वे फ़रियाद करेंगे तो ऐसे पानी से उन की फ़रियाद सुनी जाएगी जो पिघले हुए ताँबे की तरह होगा और मुँहों को झुलस देगा। वह पीने की बहुत बुरी वस्तु होगी और वह (आग) बहुत बुरा ठिकाना है।३०।

1. अर्थात् सहाबा के बलिदानों को न भूलियो।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ﴿۳۱﴾

हाँ ! जो लोग ईमान लाए हैं और उन्हों ने शुभ (एवं परिस्थिति के अनुकूल) कर्म किए हैं (ये निश्चय ही बड़े पुरस्कार पाएँगे)। जो लोग अच्छे कर्म करने वाले हों हम उन का प्रतिफल कदापि नष्ट नहीं किया करते।३१।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ؕ نِعْمَ الثَّوَابُ ؕ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۳۲﴾

(हाँ ! हाँ !) ऐसे ही लोगों के लिए स्थायी-निवास के बाग़ (निश्चित) हैं। उन में उन के (अपने प्रबन्ध के) नीचे नहरें बहती होंगी। उन के लिए उन बाग़ों में सोने के कंगनों की प्रकार के आभूषण बनाए जाएँगे तथा वे बारीक और मोटे रेशम के हरे वस्त्र पहनेंगे। वे उस स्वर्ग में सुसज्जित पलंगों पर तकिए लगाए बैठे होंगे। यह क्या ही अच्छा बदला है तथा वह बहुत ही अच्छा ठिकाना है।३२। (रुकू ४/१६)

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿۳۳﴾

और तू उन के सामने उन दो[1] व्यक्तियों की हालत बयान कर जिन में से एक को हम ने अंगूरों के दो बाग़[2] दिये थे और हम ने उन बाग़ों को चारों ओर से खजूरों के पेड़ों से घेर रखा था और हम ने उन (दोनों व्यक्तियों की सम्पत्ति) के बीच कुछ खेती भी पैदा की थी।३३।

كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا

उन दोनों बाग़ों ने अपना भरपूर फल दिया और उस में से कुछ भी कम न किया तथा

---

1. दो व्यक्तियों से अभिप्राय मुसलमान तथा ईसाई जातियाँ हैं।

2. 'बाग़' से तात्पर्य इस्राईली जाति को मिलने वाली दौलत और संतान है। यहाँ इस्राईली जाति के दो दलों का उल्लेख है और अभिप्राय यह है कि ईसाई जाति की प्रथम बार उन्नति के बाद उन की कमज़ोरी का समय आएगा फिर दो बारा भौतिक उन्नति करने लग जाएँगे।

وَفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۝

हम ने उन दोनों के बीच एक नहर[1] बहाई थी ।३४।

وَكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ۝

और उस व्यक्ति को बहुत फल प्राप्त होता था। इस कारण उस ने अपने साथी[2] को उस से बातें करते हुए (अभिमान से) कहा कि देख ! तेरी अपेक्षा मेरा धन अधिक है और मेरा जत्था भी इज़्ज़त वाला है ।३५।

وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ اَبَدًا ۝

और एक बार वह (ईसाई) अपनी जान पर अत्याचार करते हुए अपने बाग़ में गया तथा उस ने (अपने साथी से) कहा कि मैं यह नहीं समझता कि मेरा यह बाग़ कभी विनष्ट हो सकेगा ।३६।

وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ۝

और मैं नहीं समझता कि वह (विनाश की वादा वाली) घड़ी कभी आने वाली है और मुझे यदि मेरे रब्ब की ओर लौटा भी दिया जाए तो निश्चय ही मैं वहाँ भी इस से उत्तम निवास-स्थान पाऊँगा ।३७।

قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ۝

उस के साथी ने प्रश्नोत्तर के रूप में बात करते हुए उसे कहा कि क्या तू ने उस (सत्ता) का इन्कार कर दिया है जिस ने तुझे (सर्व प्रथम तो) मिट्टी से, फिर वीर्य्य से पैदा किया, फिर उस ने तुझे पूरा मनुष्य बना दिया ।३८।

---

1. 'नहर' से अभिप्राय हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का युग है जिस के द्वारा हज़रत मूसा और हज़रत ईसा की वास्तविक शिक्षा का कुछ भाग शेष रहा ।

2. अन्त में ईसाइयों ने उन्नति की और मुसलमानों को ताना देते हुए कहा कि हमारी जाति अधिक शक्तिशाली है ।

لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ۝

किन्तु सत्य तो यह है कि अल्लाह ही मेरा रब्ब है और मैं किसी को भी अपने रब्ब का साझी नहीं बनाता।३९।

وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۝

और जब तू अपने बाग़ में आया था तो तू ने क्यों न यह कहा कि जो अल्लाह चाहेगा वही होगा, क्योंकि अल्लाह की कृपा से प्रत्येक शक्ति मिलती है। यदि तू मुझ को अपनी अपेक्षा धन और सन्तान में कम समझता है।४०।

فَعَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ۝

तो बिल्कुल सम्भव है कि मेरा[1] रब्ब मुझे तेरे बाग़ से अच्छा बाग़ प्रदान करे और तेरे इस बाग़ पर ऊपर से आग की कोई चिंगारी गिरा दे जिस से वह बाग़ एक सपाट और चटियल मैदान बन जाए।४१।

اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ۝

या उस का पानी[2] सूख जाए और फिर तू (इस्लाम का विरोधी) उसे खोजने की भी शक्ति न पा सके (फिर ऐसा ही हुआ)।४२।

وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ۝

और उस के सब फलों को विनष्ट कर दिया गया तथा वह बाग़ अपने सहारों पर गिरा पड़ा था, तो वह (बाग़ का स्वामी) उस धन के कारण जो उस ने उस (बाग़ के बढ़ाने) पर ख़र्च किया था अपने दोनों हाथ मलने लगा और कहने लगा अफ़सोस ! मैं किसी को अपने रब्ब का साझी न बनाता।४३।

---

1. यह इस्लाम के विषय में भविष्यवाणी है कि वह देखने में कमज़ोर होते हुए भी बड़ी प्रतिष्ठा एवं शान पाएगा और मसीह एवं मूसा की जाति का बाग़ आसमानी आग से विनष्ट हो जाएँगे।

2. पानी सूख जाने से तात्पर्य ईश-वाणी की सूत्रधारा का टूट जाना है।

وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ۝

और उस समय कोई जत्था भी उस के साथ न हुआ जो अल्लाह के सिवा उस की सहायता करता तथा न वह बदला ही ले सका।४४।

هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّ خَيْرٌ عُقْبًا ۝

ऐसे अवसर पर अल्लाह की सहायता ही लाभदायक सिद्ध हुआ करती है जो वास्तविक उपास्य है और वह बदला देने में भी सब से अच्छा है और परिणाम की दृष्टि से भी सब से अच्छा है।४५। (रुकू ५/१७)

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝

और तू उन के सामने इस लौकिक-जीवन की हालत भी खोल कर बता कि वह उस पानी के समान है जिसे हम ने बादल से बरसाया, फिर उस में धरती की वनस्पति मिल-जुल गई। फिर अन्ततः वह (भूसे का) चूरा बन गई जिसे हवाएँ उड़ाए फिरती हैं तथा अल्लाह प्रत्येक बात के करने का सामर्थ्य रखता है।४६।

اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ۝

धन-दौलत और पुत्र इस सांसारिक-जीवन की शोभा हैं तथा शेष रहने वाले शुभ कर्म ही तेरे रब्ब के निकट बदले की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं और आशा की दृष्टि से भी उत्तम हैं।४७।

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ۝

और (उस दिन भी उन का उत्तम परिणाम निकलेगा) जिस दिन हम उन पर्वतों को (उन के स्थानों से) चला देंगे और तू धरती के सारे निवासियों को (एक-दूसरे के मुक़ाबिले में युद्ध के लिए) निकलता हुआ देखेगा तथा हम उन सब को एकत्रित[1] करेंगे और उन में से किसी को भी नहीं छोड़ेंगे।४८।

1. अर्थात् युद्ध के मैदान में एकत्रित करेंगे या यह कि उस समय समस्त जातियाँ एक-दूसरे से समझौता करके एक विश्व-युद्ध के लिए तय्यार हो जाएँगी।

وَعُرِضُوا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا لَّقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّن نَّجْعَلَ لَكُم مَّوْعِدًا

और वे पंक्तिबद्ध तेरे रब्ब के सामने हाज़िर किए जाएँगे (और उन्हें कहा जाएगा कि) देख लो तुम (उसी कमज़ोरी की अवस्था में) हमारे पास आ गए हो (जिस अवस्था में) हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था (और तुम्हें यह आशा नहीं थी) अपितु तुम्हारा कहना यह था कि हम तुम्हारे लिए किसी प्रतिज्ञा के पूरा होने की घड़ी निश्चित नहीं करेंगे ।४९।

وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يَا وَيْلَتَنَا مَالِ هَٰذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا

और (उन के कर्मों का) लेखा (उन के सामने) रख दिया जाएगा और (हे सम्बोधित !) तू उन अपराधियों को देखेगा कि जो कुछ उस में लिखा होगा वे उस के कारण डरते होंगे और वे उस समय कहेंगे कि हाय अफ़सोस ! हमारी तबाही (सामने खड़ी है) इस कर्म-लेखा को क्या हुआ है कि यह न किसी छोटी बात को घेरे बिना छोड़ती है तथा न किसी बड़ी बात को और जो कुछ उन्हों ने किया हुआ होगा उसे अपने सामने मौजूद पाएँगे और तेरा रब्ब किसी पर अत्याचार नहीं करता ।५०। (रुकू ६/१८)

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ

और उस समय को भी याद करो, जब हम ने फ़रिश्तों को कहा था कि आदम के साथ (मिल कर) सजदः करो। इस पर उन्हों ने तो (इस आदेश के अनुसार उस के साथ हो कर) सजदः किया, परन्तु इब्लीस ने न किया। वह जिन्नों[1] में से था। सो उस ने अपनी

1. अर्थात् धनवान और उद्दण्डी लोगों में से था। (विवरण के लिए देखिए सूरः अन्आम टिप्पणी आयत 129)

اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَ ذُرِّیَّتَهٗۤ اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِیْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِیْنَ بَدَلًا ﴿۵۱﴾

फितरत (अर्थात् प्रकृति) के अनुकूल अपने रब्ब के आदेश का उल्लंघन किया। (हे मेरे बन्दो !) क्या तुम मुझे छोड़ कर उस (शैतान) को एवं उस की सन्तान को मित्र बनाते हो ? हालाँकि वे तुम्हारे शत्रु हैं। वह शैतान अत्याचारियों के लिए बहुत ही बुरा बदला सिद्ध हुआ है।५१।

مَاۤ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّیْنَ عَضُدًا ﴿۵۲﴾

मैं ने उन्हें न तो आसमानों की पैदाइश (के अवसर) पर उपस्थित किया था और न उन की अपनी जानों की पैदाइश के अवसर पर ही तथा न ही मैं गुमराह करने वालों को अपना सहायक बना सकता था।५२।

وَ یَوْمَ یَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِیَ الَّذِیْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ یَسْتَجِیْبُوْا لَهُمْ وَ جَعَلْنَا بَیْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿۵۳﴾

और (उस दिन को याद करो) जिस दिन वह (अल्लाह मुश्रिकों को) कहेगा कि अब तुम मेरे उन साझियों को बुलाओ जिन्हें साझी ठहराने पर तुम ज़ोर दिया करते थे। जिस पर वे उन्हें बुलाएँगे, परन्तु वे उन्हें कोई उत्तर नहीं देंगे तथा उन के (और उन के बनाए हुए साझियों के) बीच हम एक आड़ खड़ी कर देंगे।५३।

وَ رَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَ لَمْ یَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿۵۴﴾

और अपराधी उस आग को देखेंगे तथा समझ जाएँगे कि वे उस में पड़ने वाले हैं और वे उस से पीछे हटने का कोई स्थान नहीं पाएँगे।५४। (रुकू ७/१९)

وَ لَقَدْ صَرَّفْنَا فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَیْءٍ جَدَلًا ﴿۵۵﴾

निस्सन्देह हम ने इस क़ुर्आन में प्रत्येक (ज़रूरी) बात को विभिन्न रूपों में वर्णन किया है, क्योंकि मनुष्य सब से बढ़ कर झगड़ा करने वाला है।५५।

और जब इन लोगों के पास हिदायत आई तो उस पर ईमान लाने और अपने रब्ब से क्षमा माँगने से केवल इस बात ने रोका कि पहले लोगों जैसे हालात उन पर भी आएँ या फिर उन के सामने अज़ाब ही आ खड़ा हो ।५६।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾

और हम रसूलों को केवल समाचार देने वाला (तथा आने वाले अज़ाब से) सावधान करने वाला बना कर भेजते हैं और जिन लोगों ने इन्कार किया है वे झूठ को साधन बना कर इस लिए झगड़ते हैं कि उस के द्वारा सत्य को मिटा दें तथा उन्हों ने मेरे निशानों एवं मेरी चेतावनी को हँसी का निशाना बना लिया है ।५७।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾

और उस व्यक्ति से बढ़ कर दूसरा कौन अत्याचारी हो सकता है जिसे उस के रब्ब के निशानों द्वारा समझाया गया हो, किन्तु फिर भी वह उस से विमुख हो गया हो तथा जो कुछ उस के हाथों ने कमा कर आगे भेजा था उसे उस ने भुला दिया। उन लोगों के दिलों पर हम ने निश्चय ही कई पर्दे डाल दिए हैं ताकि वे उसे न समझें[1] और उन के कानों में बहरापन पैदा कर दिया है और यदि तू उन्हें हिदायत की ओर बुलाए तो (वे तुझ से इतना ईर्ष्या रखते हैं कि) ऐसी दशा में वे हिदायत को भी कभी स्वीकार नहीं करेंगे ।५८।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾

और तेरा रब्ब बहुत ही क्षमा करने वाला और बहुत दया करने वाला है। यदि वह

وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا

1. विवरण के लिए देखिए सूरः बनी-इस्राईल टिप्पणी आयत 47।

كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۭ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىِٕلًا ۝

उन के बुरे कर्मों के कारण उन्हें नष्ट करना चाहता तो उन्हें तुरन्त अज़ाब दे देता (परन्तु वह ऐसा नहीं करता) अपितु उन के लिए एक समय निश्चित है। उस (अज़ाब के भोगने) से पहले वे कोई शरण का स्थान नहीं पाएँगे।५९।

وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ۝

और वे बस्तियाँ जिन्हें हम ने उन के अत्याचारों के कारण विनष्ट कर दिया है (उन के लिए शिक्षा देने वाली हो सकती थीं) तथा हम ने उन के विनाश के लिए पहले ही से समय निश्चित कर दिया था (ताकि वे यदि चाहें तो तौबः कर लें)।६०। (रुकू ८/२०)

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ۝

और (उस समय को भी याद करो) जब मूसा ने अपने नवयुवक[1] साथी से कहा था कि मैं (जिस राह पर जा रहा हूँ उस पर क़ायम रहने से नहीं हटूँगा यहाँ तक कि दोनों समुद्रों के संगम[2] पर पहुँच जाऊँ या शताब्दियों तक (आगे ही आगे) चलता जाऊँ।६१।

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ

सो जब वे दोनों उन दोनों समुद्रों[3] के संगम (अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के

1. 'नवयुवक साथी' से अभीष्ट हज़रत मसीह हैं जो हज़रत मूसा की यात्रा में उन के साथ थे।

2. इस आयत में उस युग की ओर संकेत है जब कि हज़रत मूसा का युग समाप्त हुआ तथा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का युग प्रारम्भ हुआ। यद्यपि बीच में हज़रत मसीह आए, परन्तु वह हज़रत मूसा के अधीन नबी थे।

3. अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम और हज़रत मूसा का युग परस्पर एक-दूसरे से मिले

(शेष पृष्ठ ६३४ पर)

سَبِيلَهُ فِى الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦٢﴾

युग) के निकट पहुँचे तो वे वहां अपनी मछली[1] भूल गए, जिस पर उस मछली ने तीव्र गति से भागते हुए समुद्र में अपनी राह ली ।६२।

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٣﴾

फिर जब वे (उस स्थान से) आगे निकल गए[2] तो उस (मूसा) ने अपने नवयुवक साथी से कहा कि हमें हमारा प्रातः काल का भोजन दो। निस्सन्देह हमें अपनी इस यात्रा में थकावट हो गई है ।६३।

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّىْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ عَجَبًا ﴿٦٤﴾

उस ने कहा कि बताइए (अब क्या होगा) जब हम (विश्राम के लिए) उस चट्टान[3] पर ठहरे तो मैं मछली (का विचार) भूल गया और मुझे यह बात शैतान के सिवा किसी ने नहीं भुलाई तथा उस (मछली) ने अनोखे ढंग से समुद्र में अपनी राह ले ली ।६४।

(पृष्ठ ६३३ का शेष)

तो हज़रत ईसा की जाति ने अपने उपासना-गृहों के असली उद्देश्य को भुला दिया तथा जब ईसाई जाति से उपासना का उद्देश्य खोया गया तो फ़रिश्तों ने समझ लिया कि अब उस आख़िरी सुधारक का समय आ गया है जिस का वादा दिया गया हैं और वह अल्लाह के आदेश से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर उतरने लग गए।

1. मूल शब्द 'हूत' अर्थात् मछली से तात्पर्य उपासना-गृह है। मछली को स्वप्न में देखा जाए तो उस का अभिप्राय भले लोगों के उपासना-गृह के होते हैं।

2. यह हज़रत मूसा का मेराज है अर्थात् अति-सूक्ष्म तन्द्रावस्था का दृश्य (कश्फ़) जिस में उन्हों ने अपने अधीन होने वाले मसीह को भी देखा और अपना स्थान लेने वाले रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के भी दर्शन किए।

3. जब उन्नति करने के साधन हाथ आ जाने पर जाति के लोग भोग-विलास में पड़ गए तो वे उपासना-गृह का असली उद्देश्य खो बैठे।

قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبۡغِ ۖ فَارۡتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۙ

उस ने कहा कि यही वह स्थान है जिस की हमें खोज थी। फिर वे अपने पद-चिन्हों को देखते[1] हुए वापस लौटे ।६५।

فَوَجَدَا عَبۡدًا مِّنۡ عِبَادِنَآ اٰتَيۡنٰهُ رَحۡمَةً مِّنۡ عِنۡدِنَا وَعَلَّمۡنٰهُ مِنۡ لَّدُنَّا عِلۡمًا

तो उन्हों ने वहाँ हमारे भक्तों में से एक ऐसा भक्त[2] पाया जिस (के स्वभाव) में हम ने अपने पास से रहमत दी थी और हम ने उसे अपने पास से (विशेष) ज्ञान भी दिया था ।६६।

قَالَ لَهٗ مُوۡسٰى هَلۡ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنۡ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمۡتَ رُشۡدًا

मूसा ने उसे कहा कि क्या मैं इस उद्देश्य से आप के साथ चल सकता हूँ कि जो ज्ञान आप को दिया गया है उस में से कुछ (भलाई की) बातें मुझे भी सिखाएँ ।६७।

قَالَ اِنَّكَ لَنۡ تَسۡتَطِيۡعَ مَعِىَ صَبۡرًا

उस ने कहा कि तू मेरे साथ रह कर कदापि धैर्य नहीं रख सकेगा ।६८।

وَكَيۡفَ تَصۡبِرُ عَلٰى مَا لَمۡ تُحِطۡ بِهٖ خُبۡرًا

और जो बात तेरे ज्ञान से बाहर है उस पर तू धैर्य रख भी कैसे सकता है ? ।६९।

قَالَ سَتَجِدُنِىۡۤ اِنۡ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَاۤ اَعۡصِىۡ لَكَ اَمۡرًا

उस ने कहा कि यदि अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे धैर्यवान पाएँगे और मैं आप के किसी आदेश का उल्लंघन नहीं करूँगा ।७०।

قَالَ فَاِنِ اتَّبَعۡتَنِىۡ فَلَا تَسۡـَٔلۡنِىۡ عَنۡ شَىۡءٍ حَتّٰۤى اُحۡدِثَ

उस (ईश-भक्त) ने कहा कि अच्छा ! यदि तू मेरे साथ चले तो फिर तू किसी भी वस्तु के बारे में मुझ से मत पूछियो जब तक कि

1. अर्थात् ऐसी भविष्यवाणियाँ अपने पीछे छोड़ीं जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के प्रादुर्भाव की सूचना देती थीं ताकि उन की जाति उन भविष्यवाणियों के कारण सावधान हो जाए।

2. इस से अभीष्ट हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम हैं। जिन के शुभ दर्शन हज़रत मूसा को उन के मेराज द्वारा हुए थे।

لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۝

मैं स्वयं उस के बारे में तुझे बताने में पहल न करूँ।७१। (रुकू ९/२१)

فَانْطَلَقَا ۗ حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِي السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ۗ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ۝

फिर वे दोनों वहाँ से चल पड़े, यहाँ तक कि वे एक नौका में सवार हुए, तो उस (ईश-भक्त) ने उस नौका में छेद कर दिया। इस पर उस (मूसा) ने कहा कि क्या आप ने इस में इस लिए छेद किया है कि आप इस में सवार हो कर जाने वालों को डुबो दें। निस्सन्देह आप ने यह एक अनुचित कर्म किया है।७२।

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝

उस (ईश-भक्त) ने कहा कि क्या मैं ने तुझे नहीं कहा था कि तू मेरे साथ रह कर कदापि धैर्य न रख सकेगा ?।७३।

قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ۝

इस पर उस (मूसा) ने कहा कि इस बार आप मुझे न पकड़ें, क्योंकि मैं (आप के आदेश को) भूल गया था और आप मेरी इस बात के कारण मेरे साथ कड़ा व्यवहार न करें।७४।

فَانْطَلَقَا ۗ حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ

फिर वे दोनों वहाँ से चल पड़े, यहाँ तक कि जब वे एक लड़के[1] को मिले तो उस (ईश-भक्त) ने उस की हत्या कर दी। तब उस (मूसा) ने कहा कि (क्या यह ठीक नहीं

1. स्वप्न फल के अनुसार 'लड़के' से तात्पर्य आनन्द और शक्ति होती है। अतएव लड़के की हत्या करने से अभिप्राय यह है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने ऐसे पदार्थ प्रयोग करने से रोका है जो आनन्द और शक्ति पैदा करते हैं जैसे मद-पान और द्यूत-क्रीड़ा आदि और तो और आज-कल के मुसलमान भी आपत्ति करते हैं कि इस्लाम ने लाटरी एवं बीमा से रोक कर आनन्द और ऐशवर्य पर कठोर घात किया है।

نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ۝

कि) आप ने इस समय एक पवित्र एवं निर्दोष व्यक्ति को बिना किसी हत्या का बदला लेने के (अकारण ही) मार डाला है। निश्चय ही आप ने यह बहुत बुरा काम किया है।७५।

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝

उस (ईश-भक्त) ने कहा कि क्या मैं ने तुझे नहीं कहा था कि तू मेरे साथ रह कर कदापि धैर्य नहीं रख सकेगा।७६।

قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا ۝

उस (मूसा) ने कहा कि यदि मैं इस के बाद आप से किसी बात के बारे में कुछ पूछूँ तो निस्सन्देह आप मुझे अपने साथ न रखिएगा (और इस हालत में) निश्चय ही आप मेरे अपने विचार में[1] विवश समझे जाने की हद तक पहुँच चुके होंगे।७७।

فَانْطَلَقَا حَتّٰى اِذَا اَتَيَا اَهْلَ قَرْيَةِ اِسْتَطْعَمَا اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ۝

फिर वे वहाँ से चल पड़े यहाँ तक कि जब वे एक बस्ती के लोगों के पास पहुँचे तो उन्हों ने उन से भोजन माँगा, परन्तु उन्हों ने उन्हें अपना अतिथि बनाने से इन्कार कर दिया। फिर उन्हों ने उस बस्ती में एक ऐसी दीवार पाई जो गिरने ही वाली थी। उस (ईश-भक्त) ने उसे ठीक कर दिया तो उस (मूसा) ने कहा कि यदि आप चाहते तो निश्चय ही इस की कुछ मजदूरी ले सकते थे।७८।

قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝

उस (ईश-भक्त) ने कहा कि मेरे और तेरे बीच यह अलग होने का समय है। जिस बात पर तू धैर्य धारण नहीं कर सका मैं तुझे अभी उस की हक़ीक़त बताता हूँ।७९।

اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِي الْبَحْرِ

वह नौका तो कुछ मिसकीन[2] लोगों की थी जो नदी में काम धन्धा करते थे और उन

1. इस में यह संकेत है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम यहूदियों और ईसाइयों से सहयोग दान की अपील करेंगे, किन्तु वे उसे ठुकरा देंगे। इस्लाम का इतिहास इस बात पर गवाह है।

2. 'मिसकीन' लोगों से अभिप्राय मुसलमान हैं जो नम्र दिल थे। नौका में छेद कर देने से (शेष पृष्ठ ६३९ पर)

فَأَرَدْتُّ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَّلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ۝

के सामने (नदी के उस पार) एक अत्याचारी राजा[1] था जो प्रत्येक नौका बल-पूर्वक छीन लेता था। अतएव मैं ने चाहा कि उस नौका को दोष वाली बना दूँ।८०।

وَأَمَّا الْغُلَٰمُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا أَن يُرْهِقَهُمَا طُغْيَٰنًا وَكُفْرًا ۝

और बालक (की घटना) की हक़ीक़त यह है कि उस के माता-पिता[2] दोनों मोमिन थे तो उस (बालक) की यह दशा देख कर हम डरे कि ऐसा न हो कि बड़ा होकर उन पर उद्दण्डता और इन्कार का आरोप लगवा दे।८१।

فَأَرَدْنَا أَن يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكَوٰةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ۝

अतः हम ने चाहा कि उन का रब्ब इस लड़के के बदले ऐसा लड़का उन को दे दे जो पवित्रता, दयालुता और न्याय को सामने रखते हुए इस से अच्छा हो।८२।

(पृष्ठ ६३८ का शेष)

तात्पर्य था कि अपना धन ज़कात आदि नेक कामों में लगा कर निर्धनों और असहाय लोगों के भले के लिए खर्च करेंगे।

1. राजाओं से तात्पर्य क़ैसर एवं किस्रा थे जो अरब देश पर केवल इस लिए चढ़ाई नहीं करते थे कि वह देश बंजर और मरुस्थल था। अल्लाह ने इसे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के लिए सुरक्षित रखा था।

2. पहले बताया जा चुका है कि मूल शब्द 'ग़ुलाम' से तात्पर्य गति, शक्ति और मूर्खता आदि गुण हैं जो प्रत्येक मनुष्य में पाए जाते हैं। वास्तव में आन्तरिक ज्ञान सम्बन्धी यह बातें हैं भौतिक सम्बन्धी नहीं है। अतएव इन शक्तियों के माता-पिता भी उसी प्रकार के होने चाहिए। ये शक्तियाँ मनुष्य के शरीर और आत्मा से पैदा होती है। अतः गति, शक्ति और मूर्खता के माता-पिता मोमिन होने का अर्थ यह है कि मनुष्य में प्रगति करने का प्रबल साहस पाया जात है। बड़े-बड़े तथा कठिन काम करने और भयंकर विपत्तियों के सहन करने की क्षमता उस में पाई जाती है, परन्तु ये समस्त शक्तियाँ मनुष्य को अल्लाह की निकटता प्राप्त करने के लिए प्रदान की गई हैं। यदि इन शक्तियों को बे-लगाम छोड़

(शेष पृष्ठ ६४० पर)

وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِي الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِيْ ۗ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝

और वह दीवार[1] उस बस्ती के दो अनाथ लड़कों की थी और उस के नीचे उन का कुछ धन गड़ा हुआ था और उन का पिता एक नेक व्यक्ति था। अत: तेरे रब्ब ने चाहा कि वे अपनी युवावस्था को पहुँच जाएँ और बड़े हो कर अपने धन को (स्वयं) निकालें। यह तेरे रब्ब की ओर से (उन पर विशेष) दया हुई है तथा मैं ने यह काम अपने-आप नहीं किया[2]। यह उस बात की वास्तविकता है जिस पर तू धैर्य धारण नहीं कर सका।८३। (रुकू १०/१)

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ۗ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ

और वे तुझ से ज़ुल्क़रनैन[3] के बारे में भी पूछते हैं। तू उन्हें कह कि मैं अवश्य ही उस

(पृष्ठ ६३९ का शेष)

दिया जाए तो फिर ये शक्तियाँ मनुष्य को अधर्म की ओर ले जाती हैं और उस का सर्वनाश कर देती हैं। अत: अल्लाह ने इस्लामी शरीअत द्वारा इन तीनों शक्तियों की हत्या करवा दी है ताकि उस के पश्चात् मनुष्य के अन्दर जो उद्रेक भी काम करे, वह सदाचार एवं संयम की सीमा के अन्दर रहे। (तातिरुल् अन्आम)

1. 'दीवार' से तात्पर्य यहूदियों और ईसाइयों के महापुरुष हैं अर्थात् हज़रत मूसा और हज़रत ईसा और उन के पिता से अभिप्राय हज़रत इब्राहीम हैं तथा धन से आशय वह ज्ञान रूपी ख़ज़ाना है जिसे हज़रत ईसा और हज़रत मूसा की जातियों ने सुरक्षित रखा हुआ था, किन्तु इन लोगों की लापरवाही तथा ध्यान न देने के कारण उस के नष्ट होने और व्यर्थ चले जाने की शंका पैदा हो गई थी। तब उसे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने सुरक्षित कर दिया अर्थात् तौरात एवं इन्जील की मूल शिक्षा को सुरक्षित रखा ताकि जब भी यहूदी और ईसाइयों की चेतना शक्ति जागे तो वे उस से लाभ उठा कर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर ईमान ले आएँ।

2. अपितु ईश-वाणी के अनुसार किया है।

3. 'ज़ुल्क़रनैन' ख़ोरस सम्राट का नाम है जो 'मेद' तथा 'फ़ारस' का राजा था। उसे ज़ुल्क़रनैन इस लिए कहा जाता है कि दानियाल नबी ने उस के बारे में एक स्वप्न देखा था कि दो सींगों वाला

(शेष पृष्ठ ६४१ पर)

مِنْهُ ذِكْرًا ۝

के बारे में तुम्हारे सामने कुछ वर्णन करूँगा ।८४।

اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۝

निस्सन्देह हम ने उसे धरती में हुकूमत दी थी और उसे प्रत्येक वस्तु की प्राप्ती के साधन प्रदान किए थे ।८५।

فَاَتْبَعَ سَبَبًا ۝

तब वह एक रास्ते पर चल पड़ा ।८६।

حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۬ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّاۤ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّاۤ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ۝

यहाँ तक कि जब वह सूर्यास्त होने के स्थान पर पहुँचा तो उसे ऐसा लगा मानों वह (सूर्य) एक गदले[1] सागर में डूब रहा है तथा उस ने उस के पास कुछ लोग[2] बसे हुए देखे तो हम ने उसे कहा कि हे ज़ुल्क़रनैन ! तुझे अनुमति है कि तू चाहे उन्हें अज़ाब दे या उन के सम्बन्ध में अच्छे व्यवहार से काम ले ।८७।

قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ۝

उस ने कहा कि (हाँ ! ऐसा ही करूँगा और) जो कोई अत्याचार करेगा उसे हम अवश्य दण्ड देंगे और वह फिर अपने रब्ब की ओर लौटाया जाएगा और वह उसे कड़ा दण्ड देगा ।८८।

(पृष्ठ ६४० का शेष)

एक मेंढा राह में खड़ा है जिस के बारे में फ़रिश्ते ने कहा कि यह 'मेद' और 'फ़ारस' का राजा है। (दानीयाल 8:20.21)

1. इस से काले सागर का वह भाग अभीष्ट हैं जहाँ ज़ुल्करनैन गया था। वहाँ पानी काले रंग का दिखाई देने के कारण गदला जान पड़ता है। अत: उसे काला सागर कहते हैं।

2. उस स्थान पर जो जातियाँ निवास करती थीं उन्हों ने 'मेद' और 'फ़ारस' की सफलता के बाद दूसरी जातियों के साथ गठजोड़ कर के 'ख़ोरस' अर्थात् ज़ुल्क़रनैन पर आक्रमण कर दिया। इस का परिणाम यह निकला कि 'ख़ोरस' ने भी उन पर चढ़ाई कर दी और विजय पा कर उन्हें अपने अधीन कर लिया।

وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ؕ﴿٨٩﴾

और जो व्यक्ति ईमान लाएगा तथा नेक और उचित काम करेगा उस के लिए (अल्लाह के पास उस के कर्मों के बदले में) अच्छा बदला निश्चित है और हम भी उस के लिए अपनी आज्ञा से आसानी वाली बात कहेंगे ।८९।

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٠﴾

फिर वह एक रास्ते पर चल पड़ा ।९०।

حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ۙ﴿٩١﴾

यहाँ तक कि जब वह सूर्योदय के स्थान पर पहुँचा तो उस ने उस (सूर्य) को ऐसे लोगों[1] पर उदय होते पाया कि जिन के लिए हम ने (उन के और) उस (सूर्य) के बीच कोई ओट[2] नहीं बनाई थी ।९१।

كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩٢﴾

(यह घटना ठीक) इसी प्रकार है और हम ने उस के सब हालात की ख़ूब अच्छी तरह जानकारी रखी हुई है ।९२।

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٣﴾

फिर वह एक रास्ते पर चल पड़ा ।९३।

حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٤﴾

यहाँ तक कि जब वह दो पहाड़ों के बीच पहुँचा तो उस ने उन के इसी ओर कुछ ऐसे लोग देखे जो कठिनाई से उस की बात समझते थे ।९४।

قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰۤى اَنْ تَجْعَلَ

उन्हों ने कहा कि हे ज़ुल्क़रनैन ! निस्सन्देह याजूज और माजूज धरती में फ़साद फैला रहे हैं । अतः क्या हम लोग इस शर्त पर आप के लिए कुछ कर निर्धारित कर दें कि

---

1. इस से बलोचिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान के प्रदेश अभिष्ट हैं जिन्हें ख़ोरस राजा ने जीता था । यह काले सागर से पूर्व की ओर स्थित है ।

2. अर्थात् वे समतल भूमि के लोग थे ।

بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾

आप हमारे तथा उन के बीच एक रोक बना दें।९५।

قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾

उस ने कहा कि इस (प्रकार के कामों) के बारे में जो शक्ति मेरे रब्ब ने मुझे दी है वह (शत्रुओं के उपायों से) बहुत बढ़ कर है। अतः तुम जहाँ तक हो सके मेरी सहायता करो ताकि मैं तुम्हारे और उन के बीच एक रोक बना दूँ।९६।

آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ آتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾

तुम मुझे लोहे[1] के टुकड़े दो। (फिर वह रोक बनाई जाने लगी) यहाँ तक कि जब उस ने (पहाड़ी की) उन दोनों चोटियों[2] के बीच बराबरी[3] पैदा कर दी तो उस ने कहा (कि इस पर आग) धौंको, यहाँ तक कि जब उस ने उसे बिल्कुल आग जैसा बना दिया तो उस ने कहा (कि अब) मुझे पिघला हुआ ताँबा ला दो ताकि मैं उसे इस पर डाल दूँ।९७।

فَمَا اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ﴿٩٧﴾

सो (जब वह दीवार तय्यार हो गई तो) वे (याजूज-माजूज) उस पर चढ़ न सके और न उस में छेद कर सके।९८।

---

1. **अर्थात्** दीवार धातु की बनती हैं। तुम प्रदेश के मूल निवासी हो इस लिए तुम धातु आदि सामान इकट्ठा करो, शेष निर्माण का काम हमारे लोग करेंगे।

2. जिस स्थान पर ज़ुल्क़रनैन ने दीवार बनाई थी वहाँ एक ओर 'हरा सागर' है और दूसरी ओर 'काफ़' पर्वत और यह दोनों ओर से दीवार या रोक का काम दे रहे थे। केवल बीच वाली घाटी सुरक्षित नहीं थी।

3. एक ओर समुद्र था तथा दूसरी ओर पर्वत। इन दोनों में बराबरी से यह अभिप्राय है कि बीच वाली खुली जगह में दीवार बना कर बाँध बना दिया तो शत्रु न तो पर्वत की ओर से तथा न समुद्र की ओर से आ सका। इस प्रकार रोक की दृष्टि से बराबरी हो गई।

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا

(इस पर) उस ने कहा कि यह काम मेरे रब्ब की विशेष कृपा से हुआ है। अतः जब (विश्वव्यापी अज़ाब के बारे में) मेरे रब्ब की प्रतिज्ञा (के पूरा होने) का समय आएगा तो वह उस (रोक) को तोड़ कर धरती से मिला हुआ एक टीला सा बना देगा और मेरे रब्ब की प्रतिज्ञा अवश्य पूरी हो कर रहने वाली है।९९।

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا

और (जब उस के पूरा होने का समय आएगा तो) उस समय हम उन्हें एक-दूसरे के ख़िलाफ़[1] जोश से आक्रमण करते हुए छोड़ देंगे और बिगुल बजाया जाएगा। तब हम उन सब को इकट्ठा कर देंगे।१००।

وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضَا

और हम उस दिन नरक को इन्कार करने वालों के बिल्कुल सामने ले आएँगे।१०१।

الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا

वे (इन्कारी) जिन की आँखें मेरे ज़िक्र (अर्थात् क़ुर्आन-मजीद) की ओर से (लापरवाही) के पर्दा में थीं और वे सुनने की शक्ति भी नहीं रखते थे।१०२। (रुकू ११/२)

اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ

तो क्या (यह सब कुछ देख कर) फिर भी वे लोग जिन्हों ने इन्कार (का रास्ता) अपनाया है यह समझते हैं कि वे मुझे छोड़ कर मेरे बन्दों को अपना सहायक बना सकेंगे। हम ने इन्कार करने वालों की

1. अन्तिम युग में याजूज-माजूज परस्पर एक-दूसरे से युद्ध करेंगे, जैसा कि वर्तमान समय में हो रहा है। बाइबिल के अनुसार याजूज से तात्पर्य रूस और माजूज से इंगलैण्ड है। (हिज़क़ील 39) ये दोनों आज कल क़ुर्आनी आयत के अनुसार युद्ध करने की तय्यारियाँ कर रहे हैं।

نُزُلًا ۝

आवभगत के लिए नरक को तय्यार कर रखा है ।१०३।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِيْنَ أَعْمَالًا ۝

तू उन्हें कह दे कि क्या हम तुम्हें उन लोगों के बारे में बताएं जो कर्मों की दृष्टि से सब से बढ़ कर घाटा पाने वाले हैं ।१०४।

اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ۝

(ये वे लोग हैं) जिन की पूरी दौड़ धूप-इसी सांसारिक जीवन में खो गई है और (उस के साथ) वे (यह भी) समझते हैं कि वे अच्छा काम कर रहे हैं ।१०५।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ۝

ये वे लोग हैं जिन्हों ने अपने रब्ब के निशानों का और उस से मिलने का इन्कार कर दिया है। इसलिए उन के (सारे) कर्म अकारथ चले गए। अतः क़ियामत के दिन हम उन्हें कुछ भी महत्व नहीं देंगे ।१०६।

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ۝

उन का यह बदला अर्थात् नरक इस कारण होगा कि उन्हों ने इन्कार का रास्ता अपनाया और मेरे निशानों और मेरे रसूलों को (अपनी) हँसी का निशाना बनाया ।१०७।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने शुभ एवं उचित कर्म किए हैं, निस्सन्देह उन का निवास-स्थान फ़िरदौस नामक स्वर्ग होंगे ।१०८।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ۝

वे उन में निवास करते चले जाएँगे और उन से अलग होना नहीं चाहेंगे ।१०९।

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ

तू उन्हें कह दे कि यदि (हर-एक) समुद्र मेरे रब्ब की बातों (के लिखने) के लिए

ٱلْبَحْرُ قَبْلَ أَن تَنفَدَ كَلِمَٰتُ رَبِّى وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِۦ مَدَدًا ۝

स्याही बन जाता तो मेरे रब्ब की बातों के समाप्त होने से पहले (हर-एक) समुद्र का पानी) समाप्त हो जाता, यद्यपि (उसे) बढ़ाने के लिए हम उतना (ही) और (पानी समुद्र में) ला डालते ।११०।

قُلْ إِنَّمَآ أَنَا۠ بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰٓ إِلَىَّ أَنَّمَآ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ ۖ فَمَن كَانَ يَرْجُوا۟ لِقَآءَ رَبِّهِۦ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَٰلِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِۦٓ أَحَدًۢا ۝

तू (उन्हें) कह कि मैं केवल तुम्हारे जैसा एक मनुष्य हूँ। (अन्तर केवल इतना है कि) मेरी ओर (यह) वह्य की जाती है कि तुम्हारा उपास्य बस एक ही (सच्चा) उपास्य है। अतः जो व्यक्ति अपने रब्ब से मिलने की आशा रखता हो उसे चाहिए कि शुभ कर्म करे और अपने रब्ब की उपासना में किसी को भी उस का साझी न ठहराए ।१११। (रुकू १२/३)

सूरः मर्यम

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की निन्नावे आयतें एवं छः रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम लेकर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

كٓهٰيٰعٓصٓ ②

काफ़, हा, या, ऐन, साद[1]।२।

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ③

(इस सूरः में) तेरे रब्ब की उस रहमत का वर्णन है जो उस ने अपने भक्त ज़करिय्या पर (उस समम) की।३।

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ④

जब उस ने अपने रब्ब को धीमी आवाज़ से पुकारा।४।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ⑤

और कहा कि हे मेरे रब्ब ! (मेरी दशा तो यह है कि) मेरी सारी हड्डियाँ कमज़ोर हो चुकी हैं और मेरा सिर बुढ़ापे के कारण भड़क उठा है और हे मेरे रब्ब ! मैं तुझ से प्रार्थना करने के कारण कभी भी असफल (और निरुद्देश्य) नहीं रहा।५।

---

1. यह पाँचों खण्डाक्षर हैं। काफ़ = काफ़ी, सर्वस्व, हा = हादी, पथ प्रदर्शक, या = सम्बोधन का चिन्ह, ऐन = अलीम, सर्वज्ञ, साद = सादिक़, सत्यवादी। अर्थात् हे सर्वज्ञ सत्यवादी अल्लाह ! तू सब का पथ प्रदर्शक एवं सर्वस्व है। विवरण के लिए देखिए सूरः बक़रः टिप्पणी आयत 2।

وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۙ

निस्सन्देह मैं (मरने के बाद) अपने सम्बन्धियों (के व्यवहार) से डरता हूँ और मेरी धर्मपत्नी बाँझ है। अतएव तू मुझे अपने पास से एक मित्र (अर्थात् पुत्र) प्रदान कर।६।

يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا

जो मेरा भी वारिस हो तथा जो याक़ूब की संतान (से जो धर्म और संयम हम को विरसा में मिला है उस) का भी वारिस हो और हे मेरे रब्ब! उसे अपना चहेता बनाइयो।७।

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ِۨاسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا

(इस पर अल्लाह ने कहा) हे ज़करिय्या! हम तुझे एक लड़के की शुभ-सूचना देते हैं (जो युवावस्था को पहुँचेगा) उस का नाम यह्या होगा। इस से पहले हम ने किसी को इस नाम से याद नहीं किया।८।

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا

(ज़करिय्या ने) कहा कि हे मेरे रब्ब! मेरे घर में पुत्र कैसे हो सकता है जब कि मेरी पत्नी बाँझ है और मैं बुढ़ापे के अन्तिम चरण को पहुँच चुका हूँ।९।

قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا

(ईशवाणी लाने वाले फ़रिश्ते ने) कहा कि (ठीक!) बात तो इसी तरह है, परन्तु तेरा रब्ब कहता है कि यह बात मेरे लिए आसान है। मैं इस से पहले तुझे पैदा कर चुका हूँ जब कि तू कुछ भी नहीं था।१०।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا

(ज़करिय्या ने) कहा कि हे मेरे रब्ब! मुझे कोई आदेश दे। कहा कि तेरे लिए यह आदेश है कि तू लगातार तीन रातें लोगों से बात-चीत न करे।११।

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ⑪

इस के बाद (ज़करिय्या) मेहराब से निकल कर अपनी जाति के लोगों के पास आए और उन्हें धीमी आवाज़ से कहा कि साँझ-सवेरे[1] अल्लाह की स्तुति करते रहा करो।१२।

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ؕ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ⑫

(इस के बाद यह्या का जन्म हुआ और हम ने उसे कहा) हे यह्या ! तू अल्लाह की किताब को मज़बूती से पकड़ ले और हम ने उसे छोटी आयु में ही अपने आदेश से सम्मानित किया था।१३।

وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ؕ وَكَانَ تَقِيًّا ⑬

(और यह बात) हमारी ओर से दया के रूप में थी और उसे पवित्र करने के लिए थी और वह बड़ा संयमी था।१४।

وَّبَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ⑭

और वह अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने वाला था और अत्याचारी एवं अवज्ञाकारी न था।१५।

وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ

और जब वह पैदा[2] हुआ तब भी उस पर शान्ति थी, फिर जब वह मरेगा और उसे

1. 'साँझ-सवेरे' से दिन और रात का सारा समय अभीष्ट है। मूल शब्द 'बुक़रतन' और 'अशिय्यन' का यही अर्थ है।

2. इसी सूर: की आयत 33 में हज़रत मसीह के बारे में उल्लेख है कि 'जब मेरा जन्म हुआ तब भी मुझ पर शान्ति थी तथा जब मैं मरूँगा तब भी मुझ पर शान्ति होगी। ईसाई इस से मसीह की प्रधानता सिद्ध करते हैं, परन्तु वे यह बात भूल जाते हैं कि यह बात अल्लाह ने हज़रत यह्या के बारे में उन के पिता हज़रत ज़करिय्या को कही थी। अत: यदि यह प्रधानता है तो इस से हज़रत यह्या की प्रधानता हज़रत मसीह से बढ़ कर सिद्ध होती है।

حَيًّا ⑮ — जीवित कर के उठाया जाएगा (तब भी उस पर शान्ति होगी)।१६। (रुकू १/४)

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ⑯

और तू इस किताब में मर्यम के सम्बन्ध में जो उल्लेख है उसे वर्णन कर (विशेषतः यह बात कि) जब वह अपने परिजनों से (अलग हो कर) पूर्व दिशा की ओर एक स्थान पर चली गई।१७।

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۗ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ⑰

और अपने तथा उन (परिजनों) के बीच पर्दा डाल दिया (अर्थात् उन से सम्बन्ध तोड़ कर अपने-आप को छिपा लिया)। उस समय हम ने ईशवाणी लाने वाला अपना फ़रिश्ता (जिब्राईल) भेजा और वह उस के सामने एक स्वस्थ मानव के रूप में प्रकट हुआ।१८।

قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ⑱

(मर्यम ने उसे) कहा कि यदि तेरे अन्दर कुछ भी संयम है तो मैं तुझ से रहमान ख़ुदा की शरण माँगती हूँ।१९।

قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ⑲

(इस पर उस फ़रिश्ते ने) कहा कि मैं तो तेरे रब्ब का भेजा हुआ एक सन्देश लाने वाला हूँ ताकि मैं तुझे (वह्य के अनुसार) एक पवित्र बालक[1] (का समाचार) दूँ (जो जवानी की आयु को पहुँचेगा)।२०।

قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّ

मर्यम ने कहा कि मेरे यहाँ लड़का कहाँ से होगा, क्योंकि अब तक किसी पुरुष ने मुझे

1. यूरोप के कई डाक्टरों ने इस बात की घोषणा की है कि अविवाहिता स्त्री के गर्भ से संतान का पैदा होना केवल सम्भव ही नहीं बल्कि उन्हों ने चिकित्सा-शास्त्र के आधार पर इस के कई उदाहरण प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किए हैं।

لَمْ اَكُ بَغِيًّا ۝٢٠

नहीं छुआ और मैं कभी व्यभिचार और बुरे कामों में नहीं पड़ी ।२१।

قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ۝٢١

(फ़रिश्ते ने) कहा कि बात तो इसी तरह है (जैसे तू ने कही है, परन्तु) तेरे रब्ब ने यह कहा है कि यह बात मेरे लिए आसान है तथा (हम यह बालक इसलिए पैदा करेंगे) कि हम उसे लोगों के लिए एक निशान बनाएँ और अपनी ओर से रहमत (का साधन भी बनाएँ) और इस बात का हमारी ओर से फ़ैसला हो चुका है ।२२।

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ۝٢٢

इस पर मर्यम ने उस (लड़के) को (अपने पेट में) उठा लिया और फिर उसे ले कर एक दूर के स्थान की ओर चली गई ।२३।

فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ۝٢٣

सो (जब वह वहाँ पहुँची तो) उसे बच्चा जनने की पीड़ा (उठी और उसे) विवश करके एक खजूर के तने की ओर ले गई। (जब मर्यम को विश्वास हो गया कि उसे बच्चा होने वाला है तो उस ने यह विचार कर के कि संसार वाले उस पर उँगली उठाएँगे) कहा, हाय ! मैं इस से पहले मर जाती और मेरी याद मिटा दी जाती ।२४।

فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ

अत: फ़रिश्ते ने उसे निचली[1] ओर से पुकार कर कहा कि (हे महिला !) चिन्ता न कर ! अल्लाह ने तेरी निचली ओर एक स्रोत बहा

1. बाइबिल और फ़लस्तीन के भूगोल से विदित होता है कि मर्यम को जब बच्चा हुआ तो उन्हें उन के भावी पति 'बैत-लहम' ले गए थे जो उस समय एक पहाड़ी पर था जिसकी निचली ओर एक स्रोत बहता था उसी ओर से मर्यम को आवाज़ आई थी जो एक फ़रिश्ते ने दी थी ।

تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾

रखा है (उस के पास जा और अपने-आप को तथा बच्चे को साफ़ कर)।२५।

وَهُزِّيٓ إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾

और वह खजूर (जो तेरे निकट होगी उस) की टहनी को पकड़ कर अपनी ओर हिला, वह तुझ पर ताजा फल गिराएगी।२६।

فَكُلِي وَاشْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا ۚ فَإِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا فَقُولِيٓ إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ﴿٢٦﴾

अतः उन्हें खाओ और (स्रोत से पानी भी) पीयो तथा (स्वयं नहा कर और बालक को भी नहला कर) अपनी आँखें ठंढी करो। फिर यदि (इस बीच में) तू किसी पुरुष को देखे तो कह दे कि मैं ने रहमान (अल्लाह) के लिए एक व्रत की मन्नत मान रखी है। अतः मैं आज किसी भी मनुष्य से बात नहीं करूँगी।२७।

فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ ۖ قَالُوا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾

इस के बाद वह उसे ले कर अपनी जाति के लोगों के पास सवार[1] करा कर लाई, जिन्हों ने कहा कि हे मर्यम! तू ने बहुत बुरा काम किया है।२८।

يٰٓأُخْتَ هٰرُونَ مَا كَانَ أَبُوكِ امْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾

हे हारून की बहन[2]! तेरा पिता तो बुरा व्यक्ति नहीं था और तेरी माँ भी व्यभिचारिणी नहीं थी।२९।

1. इस आयत में यह बताया गया है कि जब हज़रत ईसा मसीह प्रौढ़अवस्था को पहुँचे और उन्हें अल्लाह की ओर से नबुव्वत का पद प्राप्त हुआ तो उन की माता उन्हें ले कर अपनी जाति के लोगों के पास आईं।

2. हज़रत मर्यम को हज़रत हारून की बहन कहा गया है। ईसाई आक्षेप करते हैं कि क़ुर्आन ने मूर्खता वश हज़रत ईसा की माता को वह मर्यम समझ लिया है कि जो हज़रत मूसा और हज़रत हारून की बहन थी, किन्तु उन का आक्षेप ठीक नहीं। समस्त जातियों में यह प्रथा प्रचलित है कि बच्चों

(शेष पृष्ठ ६५३ पर)

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ ۖ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٣٠﴾

इस पर उस ने उस बच्चे की ओर संकेत किया। इस पर लोगों ने कहा कि हम इस से किस तरह बातें करें जो कल तक पालने में बैठने वाला बच्चा था।३०।

قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ آتَانِيَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ﴿٣١﴾

(यह सुन कर मर्यम के पुत्र ने) कहा कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ और उस ने मुझे किताब दी है और मुझे नबी बनाया है।३१।

وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿٣٢﴾

और मैं जहाँ कहीं भी हूँ उस ने मुझे बरकत वाला बनाया है और जब तक मैं जीवित हूँ मुझे नमाज़ और ज़कात का विशेष रूप से आदेश दिया है।३२।

وَبَرًّا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿٣٣﴾

और मुझे अपनी माता से अच्छा व्यवहार करने वाला बनाया है तथा मुझे अत्याचारी एवं दुर्भाग्यशाली नहीं बनाया।३३।

وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٤﴾

और जिस दिन मेरा जन्म हुआ था उस दिन भी मुझ पर शान्ति उतरी थी और जब मैं मरूँगा तथा जब मुझे जीवित कर के उठाया जाएगा (उस समय भी मुझ पर शान्ति उतरेगी)।३४।

ذَٰلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ

(देखो !) यह (वास्तव में) मर्यम का पुत्र ईसा है और यह (उस की असली) सच्ची घटना

(पृष्ठ ६५२ का शेष)

के नाम पूर्वजों के नामों पर रखे जाते हैं। यदि हज़रत मर्यम के किसी भाई का नाम हारून हो तो इस में क्या आश्चर्य है। उसे मूसा का भाई ठहराना तो स्वयं ईसाइयों की मन गढ़त बात है। पवित्र क़ुर्आन ने ऐसा नहीं कहा। यही प्रश्न हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से पूछा गया था और आप ने भी यही उत्तर दिया था। (देखिए फ़तहुल्बयान प्रति 6 पृष्ठ 16)

يَمْتَرُوْنَ ۝٣٥

है जिस में वे लोग मतभेद से काम ले रहे हैं ।३५।

مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ سُبْحٰنَهٗ ۚ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝٣٦

यह अल्लाह की शान के ख़िलाफ़ है कि वह कोई पुत्र बनाए। वह इस बात से पवित्र है। जब वह किसी बात के करने का निर्णय कर लेता है तो कहता है (ऐसा) होता जाए तो वैसा ही होने लगता है। (फिर उसे सहायता के लिए पुत्र बनाने की क्या आवश्यकता है) ।३६।

وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۚ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝٣٧

और अल्लाह मेरा भी रब्ब है और तुम्हारा भी। उसी की उपासना करो, यही सीधा रास्ता है ।३७।

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝٣٨

परन्तु विभिन्न गिरोहों ने आपस में एक-दूसरे से मतभेद किया (और सच्चाई को छोड़ दिया)। अतः जिन लोगों ने एक बड़े दिन में हाज़िर होने का इन्कार किया उन पर अज़ाब उतरेगा ।३८।

اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٣٩

जिस दिन वे हमारे सामने हाज़िर होंगे उस दिन उन की सुनने एवं देखने की शक्ति बड़ी तेज़ होगी, किन्तु वे अत्याचारी आज बड़ी भारी पथभ्रष्टता में पड़े हुए हैं ।३९।

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ ۘ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٤٠

और उन्हें उस (क़ियामत के) दिन से डरा जिस दिन अफ़सोस और निराशा छाई हुई होगी। जब सभी बातों का निर्णय हो जाएगा और अब तो ये लोग ग़फ़लत में पड़े हुए हैं तथा ईमान नहीं लाते ।४०।

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٤١﴾	निस्सन्देह हम सारी पृथ्वी के भी वारिस होंगे और उन लोगों के भी जो इस पर रहते हैं और अन्ततः सब लोग हमारी ओर ही लौटा कर लाए जाएँगे ।४१। (रुकू २/५)
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ إِبْرٰهِيمَ ۚ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَّبِيًّا ﴿٤٢﴾	और तू क़ुर्आन के अनुसार इब्राहीम का हाल बयान कर। वह निश्चय ही बड़ा सच्चा था एवं नबी था ।४२।
إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يٰٓأَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ﴿٤٣﴾	(और तू उस समय को भी याद कर और लोगों के सामने बयान कर) जब इब्राहीम ने अपने पिता से कहा था कि हे मेरे पिता ! तू क्यों ऐसी वस्तुओं की पूजा करता है, जो न सुनती हैं न देखती हैं और न तेरे किसी कष्ट को दूर करने का सामर्थ्य रखती हैं ? ।४३।
يٰٓأَبَتِ إِنِّي قَدْ جَآءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِيٓ أَهْدِكَ صِرٰطًا سَوِيًّا ﴿٤٤﴾	हे मेरे पिता ! मुझे एक विशेष ज्ञान दिया गया है जो तुझे नहीं दिया गया। अतएव (पिता होने पर भी) तू मेरा अनुसरण कर। मैं तुझे सीधा रास्ता दिखाऊँगा ।४४।
يٰٓأَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ۖ إِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٥﴾	हे मेरे पिता ! शैतान की पूजा न कर। शैतान निश्चय ही रहमान (अल्लाह) का नाफ़रमान है ।४५।
يٰٓأَبَتِ إِنِّيٓ أَخَافُ أَنْ يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿٤٦﴾	हे मेरे पिता ! मुझे डर है कि तुझे (आज्ञा न मानने के कारण) रहमान (ख़ुदा) की ओर से कोई अजाब न पहुँच जाए जिस के फलस्वरूप तू शैतान का मित्र बन जाए ।४६।
قَالَ أَرَاغِبٌ أَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِي يٰٓإِبْرٰهِيمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ	(इस पर इब्राहीम के पिता ने) कहा कि हे इब्राहीम ! क्या तू मेरे उपास्यों से घृणा कर रहा है ? हे इब्राहीम ! यदि तू इस से नहीं

تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا﴿٤٧﴾	रुकेगा तो मैं तुझे अवश्य संगसार कर दूँगा और (अच्छा यही है कि) तू कुछ समय के लिए मेरी आँखों से ओझल हो जा (ताकि मैं क्रोध में कुछ कर न बैठूँ) ।४७।
قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا﴿٤٨﴾	(इस पर इब्राहीम ने) कहा कि अच्छा ! मेरी ओर से सदैव तुझे शान्ति का आशीर्वाद मिलता रहे। मैं अपने रब्ब से तेरे लिए अवश्य क्षमा की प्रार्थना करूँगा। वह मुझ पर बहुत कृपा करने वाला है ।४८।
وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ڮ عَسٰٓى اَلَّآ اَكُوْنَ بِدُعَاۗءِ رَبِّيْ شَقِيًّا﴿٤٩﴾	और (हे मेरे पिता !) मैं तुझे तथा जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो सभी को छोड़ दूँगा और अपने रब्ब से प्रार्थना करूँगा तथा निश्चय ही मैं अपने रब्ब के पास प्रार्थना करने के कारण दुर्भाग्यशाली नहीं बनूँगा ।४९।
فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا﴿٥٠﴾	फिर जब इब्राहीम उन (अपने लोगों) से भी तथा जिन की वे अल्लाह को छोड़ कर पूजा करते थे (उन से भी) अलग हो गया तो हम ने उसे इस्हाक़ और (इस के बाद) याक़ूब प्रदान किए तथा उन सब को हम ने नबी बनाया ।५०।
وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا﴿٥١﴾ ع	और हम ने उन्हें अपनी रहमत में से एक बहुत बड़ा हिस्सा प्रदान किया तथा उन के लिए सदा रहने वाली अच्छी याद क़ायम की ।५१। (रुकू ३/६)
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰٓى ۡ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ	और तू क़ुर्आन[1] के अनुसार मूसा का भी वर्णन कर। वह हमारा चुना हुआ भक्त था तथा

1. क़ुर्आन-मजीद में हज़रत मूसा के वर्णन का अभिप्राय यह है कि क़ुर्आन मजीद उन की

(शेष पृष्ठ ६५७ पर)

رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٢﴾

रसूल और नबी था।५२।

وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٣﴾

और हम ने उस मूसा को तूर पर्वत की दाहिनी ओर से पुकारा और उसे अपने भेद बताते हुए अपने निकट कर लिया।५३।

وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿٥٤﴾

और हम ने उस (मूसा) को अपनी कृपा से उस के भाई हारून को नबी बना कर (सहायक के रूप में) दिया।५४।

وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٥﴾

(और तू क़ुर्आन के अनुसार इस्माईल का भी वर्णन कर। निस्सन्देह वह भी सच्चे बचन वाला था और रसूल (और) नबी था।५५।

وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿٥٦﴾

और अपने परिवार को नमाज़ एवं ज़कात का विशेष रूप से आदेश देता रहता था और वह अपने रब्ब को बहुत पसन्द था।५६।

وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٧﴾

और तू क़ुर्आन के अनुसार इद्रीस का भी वर्णन कर। वह भी सच्चा नबी था।५७।

وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٨﴾

और हम ने उसे उच्च से उच्च स्थान तक पहुँचाया था।५८।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ

ये सब के सब वह लोग थे जिन पर अल्लाह ने नबियों में से इन्आम किया था। उन (नबियों) में से जो आदम की संतान थे और जो उन लोगों की संतान थे जिन्हें हम ने

(पृष्ठ ६५६ का शेष)

घटनाओं का शुद्ध रूप से वर्णन करता है, किन्तु बाइबिल उन घटनाओं को ग़लत और बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करती है। इस लिए क़ुर्आन-मजीद ने सुधार करना आवश्यक समझा ताकि इतिहास का वास्तविक रूप सामने आ सके।

اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۩ ﴿۵۹﴾

नूह के साथ नौका द्वारा बचाया था तथा जो इब्राहीम और याक़ूब की संतान थे और उन लोगों में से थे जिन्हें हम ने हिदायत दी थी एवं अपने लिए चुन लिया था। जब रहमान (ख़ुदा) का कलाम उन पर पढ़ा जाता था तो वे सजदः करते हुए और रोते हुए (धरती पर) गिर जाते थे।५९।

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿۶۰﴾

फिर उन के बाद एक ऐसी जाति के लोग आए जिन्हों ने नमाज़ को गंवा दिया और अपनी मनोकामनाओं के पीछे चले। अत: वे शीघ्र ही गुमराही के स्थान तक पहुँच जाएँगे।६०।

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ﴿۶۱﴾

सिवाय उस व्यक्ति के जो तौब: (पश्चाताप) कर लेगा और ईमान लाएगा एवं अच्छे कर्म करेगा, ऐसे लोग स्वर्ग में प्रवेश करेंगे तथा उन पर कोई अत्याचार नहीं किया जाएगा।६१।

جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨالَّتِىْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿۶۲﴾

(अर्थात् ऐसे स्वर्ग में) जो सदा-सर्वदा रहने वाले हैं और जिन की प्रतिज्ञा रहमान ने अपने बन्दों से ऐसे समय में की है जब कि वे उन की आँखों से ओझल[1] हैं। अल्लाह की प्रतिज्ञा निश्चय ही पूरी हो कर रहने वाली है।६२।

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا ؕ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿۶۳﴾

वे उस (स्वर्ग) में अनर्थ बात नहीं सुनेंगे बल्कि केवल सुख-शान्ति की बातें सुनेंगे और उन्हें उन में साँझ-सवेरे जीविका मिलेगी।६३।

---

1. इस आयत से सिद्ध होता है कि इस का सम्बन्ध मुसलमानों की उन्नति से है। अन्यथा परलोक के स्वर्ग के विवरण का ज्ञान मुसलमानों को सांसारिक जीवन में किसी समय भी नहीं हो सकता था।

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

यह वह स्वर्ग है जिस का वारिस (उत्तराधिकारी) हम अपने ऐसे लोगों को बनाएँगे जो संयमी होंगे ।६४।

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۖ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾

और (फ़रिश्ते उन्हें कहेंगे कि) हम तो केवल तुम्हारे रब्ब के आदेश से उतरते हैं और जो कुछ हमारे आगे है तथा जो कुछ हमारे पीछे है और जो कुछ इन दोनों दिशाओं के बीच है सब कुछ अल्लाह ही का है और तुम्हारा रब्ब भूलने वाला नहीं ।६५।

رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ ۚ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾ ع

वह आसमानों तथा ज़मीन और जो कुछ इन दोनों के बीच है (उस का भी) रब्ब है । अतः (हे मुसलमान !) उसी की उपासना कर और उसी की उपासना करने में सदा लगा रह । क्या तू उस जैसे गुण वाले किसी और को जानता है ? ।६६। (रुकू ४/७)

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ أَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾

और मनुष्य सदा यह कहता रहेगा कि क्या जब मैं मर जाऊँगा तो पुनः जीवित कर के उठाया जाऊँगा ? ।६७।

أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ﴿٦٧﴾

क्या मनुष्य को यह (बात) याद नहीं कि हम ने उसे इस से पहले पैदा किया था (और उस समय) वह कुछ भी नहीं था ।६८।

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٨﴾

सो तेरे रब्ब की क़सम ! हम उन लोगों को (एक बार फिर) उठाएँगे और शैतानों को भी (उठाएँगे) फिर इन सब को नरक के चारों तरफ़ ऐसी दशा में पेश करेंगे कि वे घुटनों[1] के बल गिरे हुए होंगे ।६९।

1. अर्थात् वे नम्रता पूर्वक प्रार्थना कर रहे होंगे ।

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا

फिर हम हर-एक गिरोह में से ऐसे लोगों को अलग कर लेंगे जो रहमान (अल्लाह) के कट्टर शत्रु थे ।७०।

ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا

और हम अच्छी तरह जानते हैं कि उन में से कौन नरक का पात्र है ।७१।

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا

तुम में से प्रत्येक व्यक्ति उस नरक में जाने[1] वाला है । यह अल्लाह का ऐसा पक्का वादा है जो पूरा हो कर ही रहेगा ।७२।

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا

और हम संयमियों को बचा लेंगे तथा अत्याचारियों को उस में घुटनों के बल गिरे हुए छोड़ देंगे ।७३।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो इन्कार करने वाले लोग ईमान लाने वालों से कहते हैं (बताओ तो) भला हम दोनों गिरोहों में से कौन सा गिरोह पद (अर्थात् सम्मान) की दृष्टि से उत्तम और एक साथ बैठने वाले मित्रों की दृष्टि से अच्छा है ।७४।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا

और हम ने उन से पहले बहुत से युगों के लोगों का सर्वनाश किया है जो सामानों तथा ज़ाहिरी शान में इन लोगों से बहुत बढ़े हुए थे ।७५।

---

1. क़ुर्आन-मजीद से पता चलता है कि नरक दो हैं । एक इस लोक का दूसरा परलोक का । मोमिन इस संसार में ही नरक भोग लेता है अर्थात् इन्कार करने वाले लोग उन्हें नाना प्रकार के कष्ट और दुःख देते हैं । दैवी दुःख भी मोमिनों के लिए नरक के समान है जैसे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने ज्वर को भी मोमिन के लिए एक प्रकार की नरक की आग ठहराया है । (फ़तहुल्बयान प्रति 6 पृष्ठ 36)

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ۝

तू कह दे कि जो व्यक्ति गुमराही में पड़ा हो उसे रहमान (अल्लाह) एक समय तक ढील देता जाता है यहाँ तक कि जब ऐसे लोगों के सामने वह अज़ाब आ जाएगा जिस का उन से वादा किया गया था (अर्थात्) सांसारिक अज़ाब या पूर्ण रूप से (जाति की) तबाही तो उस समय वे जान लेंगे कि कौन सा व्यक्ति सम्मान की दृष्टि से बुरा है और मित्रों की दृष्टि से दुर्बल है।७६।

وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ۝

और अल्लाह हिदायत पाए हुए लोगों को हिदायत में बढ़ाता जाएगा और स्थायी रहने वाले शुभ कर्म अल्लाह की दृष्टि में सर्वश्रेष्ठ हैं। प्रतिफल की दृष्टि से भी और परिणाम की दृष्टि से भी।७७।

اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ۝

क्या तू ने कभी उस व्यक्ति की दशा पर विचार नहीं किया जिस ने हमारी आयतों का इन्कार किया और कहा कि निस्सन्देह मुझे बहुत सा धन[1] एवं बहुत से पुत्र दिए जाएँगे।७८।

اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۝

क्या उस ने परोक्ष का हाल मालूम कर लिया है या रहमान (अल्लाह) से कोई बचन ले लिया है?।७९।

كَلَّا ؕ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ

ऐसा कदापि नहीं[2] होगा। हम उस के इस

1. इस आयत में ईसाइयों के इस मंतव्य का वर्णन है कि हज़रत मसीह के आगमन के पश्चात् मौत का क्रम समाप्त हो जाएगा और ईसाई लोग इसी संसार में अमर-जीवन पाएँगे। मानों जो प्रगति वे इस समय कर चुके हैं वह क़ियामत तक रहेगी।

2. अर्थात् ईसाइयों का यह मंतव्य बिल्कुल असत्य है, क्योंकि यदि ये मरेंगे तो भी दण्ड पाएँगे और यदि संसार में जीवित रहेंगे तो भी अल्लाह उन्हें दण्ड देने का कोई न कोई ढंग निकाल देगा।

مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿۸۰﴾

कथन को सुरक्षित रखेंगे और उस के अज़ाब को लम्बा कर देंगे ।८०।

وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿۸۱﴾

और जिस बात पर वह गर्व कर रहा है उस के हम वारिस[2] बन जाएँगे और वह हमारे पास अकेला ही आएगा ।८१।

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لِيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ﴿۸۲﴾

और इन लोगों ने अल्लाह के सिवा बहुत से उपास्य बना रखे हैं, इस आशा से कि वे उन लोगों के लिए सत्कार का साधन बनेंगे ।८२।

كَلَّا سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿۸۳﴾

ऐसा कदापि नहीं होगा। वे उपास्य एक दिन उन लोगों द्वारा पूजा किए जाने का इन्कार करेंगे और उन के विरुद्ध उठ खड़े होंगे ।८३। (रुकू ५/८)

أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا ﴿۸۴﴾

क्या तुझे ज्ञात नहीं कि हम ने शैतानों को छोड़ रखा है कि वे इन्कार करने वालों को उकसाते रहें ।८४।

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿۸۵﴾

अत: तू उन के विरुद्ध जल्दी में कोई क़दम न उठा। हम ने इन के सर्वनाश के दिन गिन रखे हैं ।८५।

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَٰنِ وَفْدًا ﴿۸۶﴾

जिस दिन हम संयमियों को जीवित कर के रहमान (अल्लाह) के सामने इकट्ठा करेंगे ।८६।

وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿۸۷﴾

और अपराधियों को हाँपते हुए नरक की ओर ले जाएँगे ।८७।

---

2. इस में इस्लाम की उन्नति की भविष्यवाणी है कि जिन मालों पर वे गर्व कर रहे हैं एक दिन अल्लाह उन से ले कर यह माल मुसलमानों को दे देगा।

لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٨﴾	उस दिन किसी को शफ़ाअत (सिफ़ारिश) का अधिकार न होगा सिवाय उस व्यक्ति के जिस ने रहमान (अल्लाह) से प्रण ले रखा है।८८।
وَ قَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٩﴾	और ये लोग कहते हैं कि रहमान (अल्लाह) ने पुत्र बना लिया है।८९।
لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا اِدًّا ﴿٩٠﴾	तू कह दे कि तुम एक बड़ी सख़्त और भयंकर बात कर रहे हो।९०।
تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَ تَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَ تَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩١﴾	निकट है कि (तुम्हारी बात से) आसमान फट कर गिर जाएँ तथा धरती टुकड़े-टुकड़े हो जाए और पहाड़ चूर्ण-विचूर्ण हो जाएँ।९१।
اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩٢﴾	इसलिए कि उन लोगों ने रहमान (अल्लाह) का पुत्र ठहराया है।९२।
وَ مَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٣﴾	और यह रहमान (अल्लाह) की शान के बिल्कुल ख़िलाफ़ है कि वह कोई पुत्र बनाए।९३।
اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ اِلَّاۤ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٤﴾	क्योंकि हर-एक जो आसमान तथा धरती में है वह रहमान (अल्लाह) की सेवा में दास के रूप में पेश होने वाला है।९४।
لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَ عَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٥﴾	(अल्लाह ने) उन्हें घेर रखा है और गिन रखा है।९५।
وَ كُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٦﴾	और वे सब के सब अकेले-अकेले उस की सेवा में पेश होंगे।९६।
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ	निस्सन्देह वे लोग जो ईमान लाए और जिन्हों ने अच्छे कर्म किए हैं रहमान (अल्लाह)

وُدًّا ﴿٩٧﴾

उन के लिए अथाह प्रेम[1] पैदा करेगा।९७।

فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٨﴾

सो हम ने तो इस क़ुर्आन को तेरी भाषा में आसान बना कर उतारा है ताकि तू संयमियों को इस के आधार पर शुभ-समाचार दे तथा इस के द्वारा झगड़ालू जाति को सावधान करे।९८।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٩﴾

और कितनी ही उम्मतें (अर्थात् सम्प्रदाय) हैं जो उन से पहले हो चुकी हैं जिन का हम सर्वनाश कर चुके हैं। क्या तू उन में से किसी को भी किसी इन्द्रिय द्वारा अनुभव कर सकता है या उन की कोई भनक भी सुनता है? ।९९। (रुकू ६/९)

---

1. मूल शब्द 'वुद्द' उस अथाह प्रेम को कहते हैं जो खूंटे या कीले के समान दिल में गड़ा हुआ हो। अतएव इस आयत से अभिप्राय यह है कि अल्लाह अपना प्रेम कीले के समान मोमिनों के दिलों में गाड़ देगा अथवा यह कि मोमिनों के दिलों में मानव-समाज का प्रेम कीले के समान गाड़ देगा।
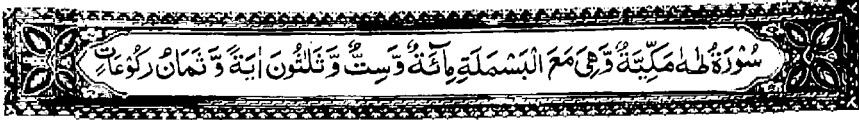
सूरः ताहा

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की एक सौ छत्तीस आयतें एवं आठ रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

طٰهٰ ②

हे सम्पूर्ण शक्तियों वाले महापुरुष[1]!।२।

مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰۤى ③

हम ने तुझ पर यह क़ुर्आन इसलिए नहीं उतारा कि तू दुःख में पड़ जाए।३।

اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ④

यह तो केवल अल्लाह से डरने वाले लोगों के लिए हिदायत और पथ-प्रदर्शक है।४।

تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ⑤

(क़ुर्आन) उस की ओर से उतारा गया है जिस ने धरती और ऊँचे आसमानों की रचना की है।५।

اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ⑥

वह रहमान है जो अर्श पर दृढ़ता से क़ायम हो गया है।६।

---

1. मूल शब्द 'ताहा' खण्डाक्षरों में से नहीं है अपितु अरब देश के विभिन्न घरानों में इस शब्द का अर्थ है— सम्पूर्ण शक्तियों वाला पुरुष। (फ़तहुल्‌बयान) सम्पूर्ण शक्तियों वाले व्यक्ति से इस ओर संकेत किया गया है कि पुरुषार्थ के सभी गुण वीरता, धीरता, दानशीलता और पाप वृत्ति का पूरा मुक़ाबिला करने वाला। इन गुणों में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम सब से बढ़ कर थे। अर्थात् एक उच्चकोटि पुरुष में जो-जो गुण पाए जाने चाहिए वे सब के सब आप में उत्तम रूप से विद्यमान थे।

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ۝٧

उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और जो कुछ इन दोनों के बीच में है तथा वह भी जो गीली मिट्टी के नीचे है।७।

وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ۝٨

यदि तू ऊँची आवाज़ से बोले तो उसे भी अल्लाह सुनता है और यदि धीमी आवाज़ से बोले तो भी उसे सुनता है, क्योंकि वह छिपी हुई बात को भी जानता है तथा जो अत्यन्त गुप्त होती है। (उसे भी जानता है)।८।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ لَهُ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى ۝٩

अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं। उस के बहुत से सद्‌गुण हैं।९।

وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۝١٠

और (इस के प्रमाण में हम कहते हैं कि) क्या तेरे पास मूसा की घटना पहुँची है (या नहीं ?)।१०।

اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۝١١

(अर्थात्) जब उस ने एक आग देखी तो उस ने अपने घर वालों से कहा कि (अपने स्थान पर) ठहरे रहो। मैंने एक आग[1] देखी है। सम्भव है कि मैं वहाँ जा कर उस आग में से कोई अंगारा[2] तुम्हारे लिए ले आऊँ या आग पर (अपने लिए कोई आध्यात्मिक) हिदायत पाऊँ।११।

---

1. 'एक आग' शब्द से विदित होता है कि हज़रत मूसा उसे स्वयं भी कश्फ़ समझते थे, क्योंकि यदि वह एक साधारण आग होती तो वह उसे 'एक आग' न कहते अपितु केवल आग कहते। वास्तविक बात यह है कि उन्हें एक ज्योति दिखाई दी थी। हज़रत मूसा अनुभव करते थे कि जो कुछ देखा है वह अल्लाह की एक तजल्ली है तभी तो उन्हों ने अपने घर वालों से कहा कि मैं ने एक आग देखी है।

2. क्योंकि वह दृश्य आग के रूप में था। अतः उस के विषय में सारे शब्द रूपक बाँध कर बोले

(शेष पृष्ठ ६६७ पर)

فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ﴿١٢﴾	फिर जब वह उस (आग) के पास पहुँचा तो उसे आवाज़[1] दी गई कि हे मूसा ! ।१२।
اِنِّيْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٣﴾	मैं तेरा रब्ब हूँ। अतः तू अपनी दोनों जूतियाँ[2] उतार दे, क्योंकि तू इस पवित्र वादी 'तुवा' में है ।१३।
وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ﴿١٤﴾	और मैंने तुझे अपने लिए चुन लिया है। अत: तेरी ओर जो वह्य की जाती है तू उसे सुन (और अपना) ।१४।
اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ﴿١٥﴾	निस्सन्देह मैं अल्लाह हूँ। मेरे सिवा कोई उपास्य नहीं। अतः तू मेरी ही उपासना कर तथा मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर ।१५।
اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعٰى ﴿١٦﴾	निश्चय ही क़ियामत आने वाली है। निकट है कि मैं उसे प्रकट कर दूँ ताकि प्रत्येक जीव को उस के कर्मों के अनुसार प्रतिफल प्रदान किया जाए ।१६।
فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ	अत: जो व्यक्ति क़ियामत पर ईमान नहीं रखता और अपनी मनोकामनाओं का

(पृष्ठ ६६६ का शेष)

गए हैं। अर्थात् यदि यह तजल्ली किसी विशेष व्यक्ति के लिए है तो मैं अपने लिए हिदायत पाऊँगा और यदि यह ज्योति क़ौम के लिए है तो मैं तुम्हारे लिए आध्यात्मिक ज्योति तथा शिक्षा के साधन लाऊँगा जिस से तुम लोग लाभ उठाओगे।

1, इस से यह अभिप्राय नहीं कि आग मे अल्लाह था, अपितु तात्पर्य यह है कि आग का दृश्य दिखाने वाला अल्लाह था।

2. जूतियों से अभिप्राय सांसारिक व्यवहार है। सांसारिक व्यवहार रिश्ते-नातों के कारण भी होते हैं और जाति के कारण भी होते हैं। अतः सम्बन्ध दो प्रकार के होते हैं जिन्हें दोनों जूतियों का शब्द प्रयोग करके दर्शाया गया है।

هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ⑰	अनुसरण करता है वह तुझे क़ियामत पर ईमान लाने से रोक न दे जिस के फलस्वरूप तेरा सर्वनाश हो जाए ।१७।
وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ⑱	और (हम ने उस समय कहा कि) हे मूसा ! यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है ? ।१८।
قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى ⑲	उस ने कहा कि यह मेरी लाठी है । मैं इस पर सहारा लेता हूँ और इस के द्वारा अपनी बकरियों के लिए (पेड़ों के) पत्ते झाड़ता हूँ और इस के सिवा मेरे लिए इस में दूसरे भी कई लाभ हैं ।१९।
قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ⑳	इस पर उस (अल्लाह) ने कहा कि हे मूसा ! इस लाठी को धरती पर फेंक दो ।२०।
فَاَلْقٰىهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ㉑	सो उस ने उसे धरती पर फेंक दिया । तत्पश्चात् उस ने अचानक देखा कि वह साँप है जो दौड़ रहा है ।२१।
قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۫ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ㉒	इस पर (अल्लाह ने) कहा कि इसे पकड़ ले और डर मत । हम इसे फिर इस की पहली दशा की ओर लौटा देंगे ।२२।
وَاضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً اُخْرٰى ㉓	और अपने हाथ को बग़ल में दबा ले जब तू उसे निकालेगा तो वह सफ़ेद होगा, परन्तु बिना किसी रोग[1] के । यह एक और निशान होगा ।२३।

1. हज़रत मूसा की किताब तौरात ने यह अत्याचार किया है कि हाथ सफ़ेद होने का कारण कोढ़ बताया है । (निर्गमन 4:7) किन्तु क़ुर्आन-मजीद जो हज़रत इस्माईल की सन्तान के एक महापुरुष पर उतारा गया है, वह हज़रत मूसा पर लगाए गए इस आरोप को दूर करता है और बताता है कि हाथ सफ़ेद तो निकला था, परन्तु उस का सफ़ेद होना किसी रोग के कारण न था ।

لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ۝	(और हम यह इसलिए करेंगे) ताकि इस के फलस्वरूप तुझे अपने बड़े-बड़े निशान दिखाएँ।२४।
اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝	तू फ़िरऔन की ओर जा, क्योंकि उस ने उद्दण्डता का व्यहार अपना रखा है।२५। (रुकू १/१०)
قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ۝	(तब मूसा ने) कहा कि हे मेरे रब्ब ! मेरा सीना खोल दे।२६।
وَيَسِّرْ لِيْ اَمْرِيْ ۝	और जो ज़िम्मेदारी मुझ पर डाली गई है उसे पूरा करना मेरे लिए आसान बना दे।२७।
وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ۝	और यदि मेरी ज़बान में कोई गाँठ हो तो उसे भी खोल दे।२८।
يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ۝	(यहाँ तक कि) लोग मेरी बात आसानी से समझने लगें।२९।
وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ ۝	और मेरे परिवार में से मेरा एक सहायक बना।३०।
هٰرُوْنَ اَخِي ۝	(अर्थात्) हारून को जो मेरा भाई है।३१।
اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ ۝	उस के द्वारा मेरी शक्ति सुदृढ़ बना दे।३२।
وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ اَمْرِيْ ۝	और उसे मेरे काम में साझी बना दे।३३।
كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ۝	ताकि हम दोनों अधिक से अधिक तेरी स्तुति करें।३४।
وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ۝	और अधिक से अधिक तुझे याद करें।३५।

اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ۝٣٥

तू हमें भली-भाँति देख रहा है।३६।

قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ۝٣٦

(अल्लाह ने) कहा कि हे मूसा ! जो तू ने माँगा वह तुझे दिया गया।३७।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ۝٣٧

और हम एक बार (इस से पहले भी) तुझ पर उपकार कर चुके हैं।३८।

اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى ۝٣٨

जब हम ने तेरी माँ पर वह्य के द्वारा सब कुछ उतार[1] दिया जो (ऐसे अवसर पर) उतारना आवश्यक था।३९।

اَنِ اقْذِفِيْهِ فِى التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِى الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّىْ وَ عَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَ اَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّىْ ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِىْ ۝٣٩

(जिस का विवरण यूँ है) कि इस (मूसा) को सन्दूक़ में रख दे, फिर उस (सन्दूक़) को नदी में बहा दे। फिर (ऐसा हो कि) हमारे आदेश से नदी उस (सन्दूक़) को तट तक पहुँचा दे ताकि उसे वह व्यक्ति ले जाए जो मेरा भी तथा उस (मूसा) का भी शत्रु है और तुझ पर मैंने अपनी ओर से प्रेम उतारा (अर्थात् लोगों के दिलों में तेरे लिए प्रेम पैदा किया) और उस का परिणाम यह निकला कि तू हमारी आँखों के सामने पाला[2] गया।४०।

---

1. यूरोप के कुछ विद्वान यह आरोप लगाते हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने बाइबिल की बातें मदीना जाने के बाद यहूदियों से सुन कर क़ुर्आन में लिखी हैं। वास्तव में हज़रत ईसा के हालात सूर: 'मर्यम' में आए हैं और हज़रत मूसा के सूर: 'ताहा' में। ये दोनों सूरतें इस्लाम के प्रारम्भिक काल की हैं। (बुख़ारी शरीफ़) अतएव यह आरोप ठीक नहीं है कि मदीने के यहूदियों से सुन कर आप ने यह घटनाएँ वर्णन की हैं, अपितु यहूदियों के मेल-जोल से बहुत पहले अल्लाह ने इन सब बातों से आप को अवगत कर दिया था।

2. अर्थात् मेरे निरीक्षण में। (देखिए अक़्रब)

اِذۡ تَمۡشِيۡۤ اُخۡتُكَ فَتَقُوۡلُ هَلۡ اَدُلُّكُمۡ عَلٰى مَنۡ يَّكۡفُلُهٗ ؕ فَرَجَعۡنٰكَ اِلٰۤى اُمِّكَ كَىۡ تَقَرَّ عَيۡنُهَا وَلَا تَحۡزَنَ ؕ وَقَتَلۡتَ نَفۡسًا فَنَجَّيۡنٰكَ مِنَ الۡغَمِّ وَفَتَنّٰكَ فُتُوۡنًا ۚ فَلَبِثۡتَ سِنِيۡنَ فِىۡۤ اَهۡلِ مَدۡيَنَ ۙ ثُمَّ جِئۡتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوۡسٰى ﴿۴۱﴾

(यह उस समय हुआ) जब तेरी बहन साथ-साथ चलती जाती थी और कहती जाती थी कि हे लोगो ! क्या मैं तुम्हें उस महिला का पता दूँ जो इस का पालन-पोषण करेगी। अतः इस ढंग से हम तुझे तेरी माँ के पास लौटा लाए ताकि उस की आँखें ठंढी हो जाएँ तथा वह शोक-ग्रस्त न हो (और हे मूसा !) तू ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी थी, फिर हम ने तुझे उस भय से मुक्ति प्रदान की और हम ने तुझे कई दूसरी परीक्षाओं में डाल कर अच्छी तरह आजमाया। (जिस के बाद) तू कई वर्ष मद्यन के लोगों में रहा, फिर हे मूसा ! तू उस आयु को पहुँच गया जो हमारा काम करने के योग्य होती है।४१।

وَاصۡطَنَعۡتُكَ لِنَفۡسِىۡ ۚ ﴿۴۲﴾

और मैंने तुझे (आध्यात्मिक उन्नति देते-देते) अपने लिए तय्यार किया।४२।

اِذۡهَبۡ اَنۡتَ وَاَخُوۡكَ بِاٰيٰتِىۡ وَلَا تَنِيَا فِىۡ ذِكۡرِىۡ ۚ ﴿۴۳﴾

(सो जब तू उस आयु को पहुँच गया तो मैंने तुझे कहा कि) तू और तेरा भाई दोनों मेरे निशान ले कर जाओ तथा मुझे याद करने में कोई कमी न करना।४३।

اِذۡهَبَاۤ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۖ ۚ ﴿۴۴﴾

तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ, क्योंकि उस ने उद्दण्डता अपना रखी है।४४।

فَقُوۡلَا لَهٗ قَوۡلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوۡ يَخۡشٰى ﴿۴۵﴾

और तुम दोनों उस से नरमी से बात-चीत करो। सम्भव है कि वह समझ जाए या (हम से) डरने लगे।४५।

قَالَا رَبَّنَاۤ اِنَّنَا نَخَافُ اَنۡ يَّفۡرُطَ عَلَيۡنَاۤ اَوۡ اَنۡ

वे दोनों बोले कि हे हमारे रब्ब ! हम डरते हैं कि वह हम पर अत्याचार न करे अथवा

يَطْغٰى ﴿٤٥﴾

हमारे साथ अत्यन्त कठोरता का व्यवहार न करे ।४६।

قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِيْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰى ﴿٤٦﴾

(अल्लाह ने) कहा कि तुम दोनों रञ्चमात्र भी भय न खाओ । मैं तुम्हारे साथ हूँ । (तुम्हारी प्रार्थना भी) सुनता हूँ और तुम्हारी (हालत भी) देखता हूँ ।४७।

فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۭ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ۭ وَالسَّلٰمُ عَلٰي مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾

अतः तुम दोनों उस के पास चले जाओ और उसे कहो कि हम दोनों तेरे रब्ब के रसूल हैं । अतः हमारे साथ बनी-इस्राईल को भेज दे तथा उन्हें कष्ट मत दे । हम तेरे पास तेरे रब्ब की ओर से एक बड़ा चमत्कार ले कर आए हैं और तुझे बताते हैं कि जो (व्यक्ति हमारी लाई हुई) हिदायत का अनुसरण करेगा (अल्लाह की ओर से) उस पर शान्ति उतरेगी ।४८।

اِنَّا قَدْ اُوْحِيَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰي مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٤٨﴾

हम पर यह वह्य उतारी गई है कि जो व्यक्ति (अल्लाह के निशानों को) झुठलाएगा और पीठ फेर लेगा उस पर अज़ाब उतरेगा ।४९।

قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ﴿٤٩﴾

इस पर (फ़िरऔन ने) कहा कि हे मूसा ! तुम दोनों का रब्ब कौन है ? ।५०।

قَالَ رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰي كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ﴿٥٠﴾

मूसा ने कहा कि हमारा रब्ब वह है जिस ने प्रत्येक वस्तु को (उस की आवश्यकता के अनुसार) अंग प्रदान किए हैं और फिर उन अंगों से काम लेने का ढंग सिखाया है ।५१।

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ﴿٥١﴾

(फ़िरऔन ने) कहा कि (यदि यह बात है) तो पहले लोगों की क्या हालत थी ? (वे तो इन बातों को नहीं मानते थे फिर उन से क्या व्यवहार होगा ?) ।५२।

قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى ۝٥٢

(मूसा ने कहा) उन लोगों का ज्ञान तो मेरे रब्ब को है (उन सब की परिस्थितियाँ उसकी) किताब में सुरक्षित हैं। मेरा रब्ब न तो भटकता है, न भूलता ही है।५३।

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۗ فَاَخْرَجْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ۝٥٣

(वही है) जिस ने इस धरती को तुम्हारे लिए फ़र्श के रूप में बनाया है और तुम्हारे लिए इस में रास्ते भी बनाए हैं तथा आकाश से पानी उतारा है, फिर (तू उन से यह भी कह दे कि) हम ने उस पानी के द्वारा विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों के जोड़े पैदा किए हैं।५४।

كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ۝٥٤

अतः तुम भी खाओ और अपने जानवरों को भी खिलाओ। इस में बुद्धिमानों के लिए बहुत से निशान हैं।५५। (रुकू २/११)

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ۝٥٥

हम ने तुम्हें इस धरती से पैदा किया है और इसी में तुम्हें लौटाएँगे तथा इसी में से तुम्हें दूसरी बार निकालेंगे।५६।

وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ۝٥٦

और हम ने उस (फ़िरऔन) को अपने प्रत्येक प्रकार के निशान दिखाए, परन्तु वह फिर भी झुठलाने पर हठ करता रहा और इन्कार ही करता रहा।५७।

قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ۝٥٧

और कहने लगा (हे मूसा!) क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि तू अपनी जादू बयानी से हमें हमारी धरती से निकाल दे।५८।

فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ

(यदि यह बात है) तो हम भी तेरे मुकाबिले में वैसा ही जादू लाएँगे। अतः तू हमारे तथा

مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَآ أَنتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾

अपने बीच एक निश्चित समय और स्थान नियुक्त कर। हम भी उस से पीछे न हटें और न तू ही हटे। वह स्थान हमारे तथा तुम्हारे लिए एक जैसा हो।५९।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ ٱلزِّينَةِ وَأَن يُحْشَرَ ٱلنَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾

(इस पर मूसा ने) कहा कि तुम्हारे (और हमारे) एकत्रित होने का दिन (तुम्हारे) त्योहार का दिन हो और कुछ दिन चढ़ने पर लोगों को इकट्ठा किया जाए।६०।

فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُۥ ثُمَّ أَتَىٰ ﴿٦٠﴾

इस पर फ़िरऔन पीठ फेर कर चला गया और उस से जो-जो उपाय हो सकते थे उस ने किए और फिर (मूसा की ओर) लौटा।६१।

قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا۟ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُم بِعَذَابٍ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنِ ٱفْتَرَىٰ ﴿٦١﴾

(तब) मूसा ने उन से कहा कि हे लोगो तुम्हारा नाश हो! अल्लाह पर झूठ मत बाँधो। ऐसा न हो कि वह तुम्हें अज़ाब द्वारा पीस डाले और जो कोई (अल्लाह पर) झूठ गढ़ता है वह असफल हो जाता है।६२।

فَتَنَٰزَعُوٓا۟ أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ وَأَسَرُّوا۟ ٱلنَّجْوَىٰ ﴿٦٢﴾

यह सुन कर (फ़िरऔन और उस के साथी) एक-दूसरे से झगड़ने लगे और गुप्त रूप से योजनाएँ बनाने लगे।६३।

قَالُوٓا۟ إِنْ هَٰذَٰنِ لَسَٰحِرَٰنِ يُرِيدَانِ أَن يُخْرِجَاكُم مِّنْ أَرْضِكُم بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ ٱلْمُثْلَىٰ ﴿٦٣﴾

और उन्हों ने कहा कि ये दोनों (मूसा तथा हारून) तो कुछ भी नहीं केवल जादूगर हैं, जो यह चाहते हैं कि तुम्हें अपने जादू के ज़ोर से तुम्हारी धरती से निकाल दें और तुम्हारे श्रेष्ठ धर्म का नाश कर दें।६४।

فَأَجْمِعُوا۟ كَيْدَكُمْ ثُمَّ ٱئْتُوا۟ صَفًّا ۚ وَقَدْ أَفْلَحَ

सो आवश्यक है कि तुम भी अपने उपाय सोच लो, फिर सब के सब एक जत्थे के रूप में आओ और जो व्यक्ति आज विजय पाएगा

اَلۡيَوۡمَ مَنِ اسۡتَعۡلٰى ﴿٦٥﴾	वह अवश्य ही सफलता पाएगा।६५।
قَالُوۡا يٰمُوۡسٰٓى اِمَّاۤ اَنۡ تُلۡقِىَ وَاِمَّاۤ اَنۡ نَّكُوۡنَ اَوَّلَ مَنۡ اَلۡقٰى ﴿٦٦﴾	फिर फ़िरऔन के बुलाए हुए लोगों ने कहा कि हे मूसा ! या तू (अपना उपाय) फेंक (अर्थात् प्रकट कर) अथवा हम तुझ से पहले फेंकें।६६।
قَالَ بَلۡ اَلۡقُوۡا‌ ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمۡ وَعِصِيُّهُمۡ يُخَيَّلُ اِلَيۡهِ مِنۡ سِحۡرِهِمۡ اَنَّهَا تَسۡعٰى ﴿٦٧﴾	तब मूसा ने कहा कि अच्छा तो यही है कि तुम अपने उपाय फेंको (अर्थात् प्रकट करो)। अतः (जो उपाय उन्हों ने किए) उस के फलस्वरूप उन की रस्सियाँ एवं उन की लाठियाँ उन के माया-जाल के कारण मूसा को यूँ दिखाई देने लगे मानों वे दौड़ रहे हैं।६७।
فَاَوۡجَسَ فِىۡ نَفۡسِهٖ خِيۡفَةً مُّوۡسٰى ﴿٦٨﴾	और मूसा अपने मन ही मन में भयभीत हुआ।६८।
قُلۡنَا لَا تَخَفۡ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡاَعۡلٰى ﴿٦٩﴾	तो हम ने वह्य की (हे मूसा !) भयभीत मत हो, क्योंकि तू ही ग़ालिब (विजयी) होगा।६९।
وَاَلۡقِ مَا فِىۡ يَمِيۡنِكَ تَلۡقَفۡ مَا صَنَعُوۡا‌ ؕ اِنَّمَا صَنَعُوۡا كَيۡدُ سٰحِرٍ‌ ؕ وَلَا يُفۡلِحُ السّٰحِرُ حَيۡثُ اَتٰى ﴿٧٠﴾	और जो कुछ तेरे दाहिने हाथ में है उसे धरती पर डाल दे। तो जो कुछ उन्हों ने किया है वह उसे निगल जाएगा (अर्थात् उस का भाँडा फोड़ देगा)। उन्हों ने जो कुछ किया है वह तो छल-कपट करने वाले लोगों का एक छल है तथा जादूगर जिधर से भी आए वह (अल्लाह के मुक़ाबिले में) सफल नहीं हो सकता।७०।
فَاُلۡقِىَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوۡۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوۡنَ	सो (मूसा के लाठी फेंकने के पश्चात् फ़िरऔन के लाए हुए) धूर्त लोग (अपनी कमज़ोरी भाँप गए तो वे अपनी अन्तरात्मा की प्रेरणा

وَمُوْسٰى ۝

से) सजदः में गिराए गए और बोले कि हम हारून एवं मूसा के रब्ब पर ईमान लाते हैं ।७१।

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَ اَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ۫ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ۝

(इस पर फ़िरऔन ने) कहा कि क्या तुम मेरे आदेश से पहले ही उस पर ईमान लाते हो ? ऐसा लगता है कि वह तुम्हारा सरदार है जिस ने तुम्हें ये चतुराइयाँ सिखाई हैं । अतः (इस छल-कपट के फलस्वरूप) मैं तुम्हारे हाथ और पाँव अपने विरोध के कारण काट दूँगा और तुम्हें खजूर के तनों से बाँध कर फाँसी दे दूँगा और तुम्हें पता लग जाएगा कि हम में से कौन अधिक कठोर तथा देर तक रहने वाला अज़ाब दे सकता है ? ।७२।

قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ۗ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝

इस पर उन्हों ने (अर्थात् जादूगरों या फ़िरऔन के साथियों ने) कहा कि हम तुझे उन चमत्कारों पर प्रधानता नहीं दे सकते जो (अल्लाह की ओर से) हमारे पास आए हैं और न उस (अल्लाह) पर जिस ने हमें पैदा किया । अतः जो तेरा वस चल सकता है कर ले, तू केवल इस सांसारिक-जीवन को ही समाप्त कर सकता है ।७३।

اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۗ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝

हम अब अपने रब्ब पर ईमान ला चुके हैं ताकि वह हमारे पापों को क्षमा कर दे और उस छल-कपट (के मुक़ाबिले) को क्षमा कर दे जिस के लिए तूने हमें विवश किया था और अल्लाह सब से उत्तम तथा सब से अधिक क़ायम रहने वाला है ।७४।

اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ۙ لَا

वास्तव में जो व्यक्ति अपने रब्ब के पास अपराधी के रूप में उपस्थित होता है, उसे

يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝٧٥

निश्चय ही नरक मिलता है। वह उस में न तो मरता है और न जीवित ही रहता है।७५।

وَمَنْ يَّأْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ۝٧٦

और जो व्यक्ति मोमिन होने की दशा में ईमान के अनुसार कर्म करते हुए उस (अल्लाह) के पास आएगा तो ऐसा व्यक्ति उत्तम स्थान पाएगा।७६।

جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزٰۗؤُا مَنْ تَزَكّٰى ۝٧٧

(वे स्थान) सदा रहने वाले बाग़ होंगे जिन के नीचे नहरें बहती होंगी और वे उन में निवास करते चले जाएँगे और यह उस व्यक्ति का उचित प्रतिफल है जो पवित्रता को अपनाता है।७७। (रुकू ३/१२)

وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ڏ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ۝٧٨

और हम ने मूसा को वह्य की थी कि मेरे बन्दों (अर्थात् अपनी जाति) को रात के अन्धेरे में निकाल कर ले जा, फिर उन्हें समुद्र में एक राह बता जो सूखी हो। तुम्हें यह डर नहीं होगा कि कोई पीछे से आ कर पकड़ लेगा और न तुम (समुद्र की तबाही से) डरोगे। (इस पर मूसा अपनी जाति के लोगों को ले कर समुद्र की ओर चले गए)।७८।

فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۝٧٩

और फ़िरऔन ने अपनी सेना ले कर उन का पीछा किया और समुद्र ने उसे और उस के साथियों को बिल्कुल ढाँप दिया।७९।

وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ۝٨٠

और फ़िरऔन ने अपनी जाति के लोगों को पथभ्रष्ट किया तथा हिदायत पाने का ढंग न बताया।८०।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَ وٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ﴿٨١﴾

हे इस्राईल की सन्तान ! हम तुम्हें तुम्हारे शत्रु से छुटकारा दिला चुके हैं और इस के बाद हम तुम से तूर पर्वत की दाहिनी ओर मुक़ाबिले पर एक वादा[1] कर चुके हैं और हम ने तुम पर तुरंजबीन एवं बटेर भी उतारे थे (ताकि तुम्हारे लिए रोज़ी का सामान करें) ।८१।

كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ﴿٨٢﴾

(और कहा था कि) जो कुछ हम ने तुम्हें दिया है उस में से पवित्र पदार्थ खाओ तथा उस (जीविका) के विषय में अत्याचार से काम न लेना ताकि कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे ऊपर मेरा प्रकोप उतरे और जिस पर मेरा प्रकोप भड़कता है वह (ऊँचे दर्जे से) गिर जाता है ।८२।

وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٣﴾

और जो व्यक्ति तौबः करे और ईमान लाए तथा उस के अनुकूल उचित कर्म भी करे एवं हिदायत पा जाए तो मैं उस के बड़े से बड़े पाप को भी क्षमा कर दिया करता हूँ ।८३।

1. मुक़ाबिले पर अल्लाह का वादा यह था कि यदि इस्राईल की सन्तान अपनी किताब तौरात पर आचरण करती रहेगी तो अल्लाह उन्हें बरकत देगा, परन्तु इस्राईल के सन्तान की दूसरे भाग ईसाइयों ने उन आदेशों में से 'सब्त' अर्थात् शनिवार को छोड़ दिया जैसा कि स्वयं ईसाई विद्वान इसे स्वीकार करते हैं । ईसाइयों ने एक रूमी राजा के कहने पर शनिवार को जो 'सब्त' का दिन था बदल कर इतवार के दिन को 'सब्त' का दिन घोषित किया । दूसरी ओर यहूदियों ने इस तरह प्रतिज्ञा भंग की कि अज़रा नबी को ख़ुदा ठहरा लिया, फिर साधारण जनता तो अलग रही बार-बार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की हत्या करने के प्रयत्न किए गए, हालाँकि आप के आने का वादा तौरात में था । आप से पहले हज़रत मसीह की हत्या करने के प्रयास भी किए गए थे ।

وَمَآ أَعْجَلَكَ عَن قَوْمِكَ يَٰمُوسَىٰ ﴿٨٣﴾

और (हम ने कहा कि) हे मूसा ! तुम अपनी जाति के लोगों को छोड़ कर किस लिए जल्दी से आ गए हो ? ।८४।

قَالَ هُمْ أُولَآءِ عَلَىٰٓ أَثَرِى وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ ﴿٨٤﴾

(मूसा ने) कहा कि वे लोग मेरे पीछे-पीछे आ रहे हैं और हे मेरे रब्ब ! मैं तेरे पास जल्दी से इसलिए आया हूँ ताकि तू (मेरे इस काम से) प्रसन्न हो जाए ।८५।

قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنۢ بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ ٱلسَّامِرِىُّ ﴿٨٥﴾

(तो अल्लाह ने) कहा कि हम ने तेरी जाति के लोगों को तेरे बाद एक परीक्षा में डाल दिया है और सामिरी ने उन्हें पथभ्रष्ट कर दिया है ।८६।

فَرَجَعَ مُوسَىٰٓ إِلَىٰ قَوْمِهِۦ غَضْبَٰنَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَٰقَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ ٱلْعَهْدُ أَمْ أَرَدتُّمْ أَن يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُم مَّوْعِدِى ﴿٨٦﴾

इस पर मूसा क्रोध से भरे हुए उदास-उदास अपनी जाति की ओर लौट गए (और अपनी जाति से कहा कि) हे मेरी जाति के लोगो ! क्या तुम्हारे रब्ब ने तुम से एक अच्छी प्रतिज्ञा नहीं की थी ? क्या उस प्रतिज्ञा के पूरा होने में कुछ देर हो गई थी ? या तुम चाहते थे कि तुम्हारे रब्ब की ओर से तुम्हारे ऊपर कोई प्रकोप उतरे । सो तुम ने मेरी प्रतिज्ञा को भंग कर दिया ? ।८७।

قَالُوا۟ مَآ أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلَٰكِنَّا حُمِّلْنَآ أَوْزَارًا مِّن زِينَةِ ٱلْقَوْمِ فَقَذَفْنَٰهَا فَكَذَٰلِكَ أَلْقَى ٱلسَّامِرِىُّ ﴿٨٧﴾

उन्हों ने कहा कि हम ने तेरी प्रतिज्ञा को अपनी इच्छा से भंग नहीं किया, अपितु फ़िरऔन की जाति के आभूषणों का जो बोझ हम पर लाद दिया गया था, उसे हम ने फेंक दिया और इस तरह सामिरी ने भी उसे फेंक दिया ।८८।

فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُۥ خُوَارٌ فَقَالُوا۟ هَٰذَآ إِلَٰهُكُمْ

फिर उस ने उन के लिए (अर्थात् हमारे लिए) एक बछड़े का पुतला तय्यार किया जिस में

وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۙ فَنَسِيَ ۝٨٨

से एक निरर्थक[1] आवाज़ निकलती थी। फिर (उस ने और उस के साथियों ने) कहा कि यह तुम्हारा तथा मूसा का उपास्य है और वह इसे भूल (कर पीछे छोड़) गया है।८९।

اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ۝٨٩

(भले ही सामिरी और उस के साथियों ने ऐसा किया) परन्तु क्या वे स्वयं नहीं देखते थे कि यह बछड़ा उन की किसी बात का उत्तर नहीं देता और न उन्हें कोई हानि पहुंचा सकता है और न कोई लाभ ही।९०। (रुकू ४/१३)

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ۝٩٠

और हारून ने (मूसा के लौटने से) पहले ही उन से कह दिया था कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम इस बछड़े के द्वारा परीक्षा में डाले गए हो और तुम्हारा रब्ब तो रहमान (अल्लाह) है। अतः मेरा अनुसरण करो तथा मेरे आदेश को स्वीकार करो (तथा मुश्रिक न बनो)।९१।

قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ۝٩١

(परन्तु उस हठीली जाति ने) कहा कि जब तक मूसा हमारी ओर लौट कर न आए, हम निरन्तर इस की पूजा में लगे रहेंगे।९२।

قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ۙ ۝٩٢

(जब मूसा लौट कर वापस आए तो उन्हों ने हारून से) कहा कि हे हारून! जब तू ने अपनी जाति के लोगों को पथभ्रष्ट होते देखा था तो तुझे किस ने रोका था?।९३।

1. देखिए सूरः आराफ़ टिप्पणी आयत 149।

कि तू मेरे पद-चिन्हों का अनुसरण न करे। क्या तू ने मेरे आदेश की अवज्ञा की ? ।९४।

أَلَّا تَتَّبِعَنِ ۖ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ﴿٩٣﴾

(हारून ने) कहा कि हे मेरी माँ के पुत्र ! मेरी दाढ़ी (के बाल) न पकड़ और न मेरे सिर के बाल ही। मैं तो इस बात से डर गया था कि कहीं तू यह न कहे कि तू ने इस्राईल की सन्तान में फूट डाल दी है और मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया (कि जाति संगठित रहे) ।९५।

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي ۚ إِنِّي خَشِيتُ أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَاءِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ﴿٩٤﴾

(इस पर मूसा सामिरी को सम्बोधित करते हुए) बोले कि हे सामिरी ! तेरा क्या मामिला है ? ।९६।

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾

उस ने कहा कि मैं ने वह कुछ देखा जो इन लोगों ने नहीं देखा था और मैं ने इस रसूल (मूसा) की बातों में से कुछ अपना लीं (और कुछ नहीं अपनाईं)। फिर (अवसर आने पर) मैं ने इन (अपनाई हुई बातों) को छोड़ दिया और मेरे दिल ने यही बात मुझे अच्छी कर के दिखाई थी ।९७।

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَٰلِكَ سَوَّلَتْ لِي نَفْسِي ﴿٩٦﴾

(मूसा ने) कहा कि अच्छा तू जा ! इस संसार में तेरे लिए यही दण्ड है कि तू हर-एक से यही कहता रहे कि मुझे न छुओ (अर्थात् मुझे मूसा ने गंदा ठहराया है) और (मूसा ने सामिरी से यह भी कहा कि) तेरे लिए (दण्ड का) एक समय निश्चित है जिसे तू टला नहीं सकेगा तथा तू अपने उपास्य की ओर देख। जिस के सामने बैठ कर तू उस की पूजा

قَالَ فَاذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَوٰةِ أَنْ تَقُولَ لَا مِسَاسَ ۖ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهُ ۖ وَانْظُرْ إِلَىٰ إِلَٰهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۖ لَّنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ

لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ۝٩٨

किया करता था। हम उसे जलाएँगे[1] और फिर उसे समुद्र में फेंक देंगे।९८।

اِنَّمَآ اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝٩٩

तुम्हारा उपास्य तो केवल अल्लाह है जिस के सिवा दूसरा कोई उपास्य नहीं। वह प्रत्येक बात को जानता है।९९।

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ۝١٠٠

इसी प्रकार हम तेरे सामने पहले लोगों के समाचार वर्णन करते हैं और हम ने तुझे अपने पास से ज़िक्र (अर्थात् क़ुर्आन) दिया है।१००।

مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ۝١٠١

जो इस से मुँह फेर लेगा वह क़ियामत के दिन बहुत बड़ा बोझ उठाएगा।१०१।

خٰلِدِيْنَ فِيْهِ ۭ وَسَاۗءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ۝١٠٢

(ऐसे लोग) इस हालत में देर तक रहेंगे और क़ियामत के दिन यह (बोझ) और भी अधिक दु:खदायी होगा।१०२।

يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَىِٕذٍ زُرْقًا ۝١٠٣

जिस दिन बिगुल फूँका जाएगा तो उस दिन हम अपराधियों को इस हालत में उठाएँगे कि उन की आँखें नीली[2] होंगी।१०३।

---

1. ईसाई लेखक यह आपत्ति करते हैं कि बछड़ा तो सोने का था और सोना जल कर राख नहीं बन सकता। इस का उत्तर यह है कि सामिरी का उद्देश्य धोखा देना था और इस के लिए उस बछड़े के पुतले के मुँह और पूंछ में लकड़ी के खोल लगाने अनिवार्य थे ताकि हवा के आने-जाने पर आवाज़ निकले। सो जब पुतला जलाया गया तो साथ ही लकड़ी के खोल भी राख हो गए, जिसे हज़रत मूसा ने सोने की रेत के साथ ही नदी में फेंकवा दिया।

2. यहाँ यह बात स्पष्ट कर दी गई है कि यहाँ युरोपियन जातियों का वर्णन है जिन की आँखें नीली होती हैं। आगे वाली आयत में बताया गया है कि वे अपनी उन्नति के पश्चात् अवनति के समय कहेंगे कि हम तो केवल दस रहे हैं अर्थात् दस शताब्दियाँ और युरोपियन जातियों की उन्नति का समय इतना ही बनता है।

يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ۝

वे परस्पर धीरे-धीरे कहेंगे कि तुम तो केवल दस (शताब्दियाँ इस संसार में अनुशासक) रहे हो ।१०४।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ۝

जो वे कहेंगे हम उसे भली-भाँति जानते हैं। उन में से अपने धर्म पर सब से बढ़[1] कर चलने वाला जब कहेगा कि तुम तो एक थोड़ा सा समय[2] ही ठहरे रहे हो ।१०५। (रुकू ५/१४)

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ۝

और वे तुझ से पर्वतों[3] के बारे में पूछते हैं। तू उन्हें कह दे कि मेरा रब्ब उन्हें उखाड़ कर फेंक देगा ।१०६।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝

और उन्हें एक सपाट मैदान बना कर छोड़ देगा ।१०७।

لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ۝

कि तू उन में न तो कोई मोड़ देखेगा और न कोई ऊँचाई ही ।१०८।

يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ

उस दिन लोग पुकारने वाले के पीछे चल पड़ेंगे, जिस की शिक्षा में कोई त्रुटि[4] न होगी और रहमान (ख़ुदा की आवाज़) के मुक़ाबिले में (लोगों की) आवाज़ें दब जाएँगी। अतः तू

1. पोप या ऐसा ही कोई बड़ा ईसाई।

2. जब अज़ाब आता है तो प्रगति और आनन्द का समय बहुत थोड़ा सा प्रतीत होता है। इसी की ओर इस आयत में संकेत किया गया है।

3. अर्थात् बड़े और शक्तिशाली लोग। (अक़्ब)

4. जब दूसरी जातियों का सर्वनाश होना प्रारम्भ हो जाएगा और पहाड़ों जैसी सुदृढ़ जातियाँ नष्ट-भ्रष्ट हो जाएँगी तथ लोग हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को मानने लग जाएँगे। जिस की शिक्षा में कोई त्रुटि और बिगाड़ नहीं जैसा कि क़ुर्आन में आप की शिक्षा का यही गुण बताया गया है।

إِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٩﴾	खुसुर-फुसुर[1] के सिवा कुछ न सुनेगा ।१०९।
يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ﴿١١٠﴾	उस दिन किसी को भी शफ़ाअत[2] (सिफ़ारिश) काम न देगी सिवाय उस के जिस के लिए शफ़ाअत करने की आज्ञा रहमान (अल्लाह) देगा और जिस के विषय में वह बात कहने को पसन्द करेगा ।११०।
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ﴿١١١﴾	वह उसे भी जानता है जो उन के आगे आने वाला है और उसे भी जो उन के पीछे बीत चुका है और वे लोग अपने ज्ञान के द्वारा उस (अल्लाह) को घेर नहीं सकते ।१११।
وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١٢﴾	और (उस दिन) जीवित और क़ायम रहने तथा क़ायम रखने वाले अल्लाह के सामने सब लोग (नम्रता से) झुक जाएँगे तथा जो कोई अत्याचार करेगा वह असफल रहेगा ।११२।
وَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ﴿١١٣﴾	और जिस व्यक्ति ने समय की आवश्यकता के अनुसार कर्म किए होंगे और वह मोमिन भी होगा, वह न तो किसी प्रकार के अत्याचार से डरेगा तथा न किसी प्रकार के अधिकार के नष्ट होने से भयभीत होगा ।११३।

1. अर्थात् भय के कारण आवाज़ें दब जाएंगी।

2. इस आयत में ईसाइयों के मंतव्य का खण्डन किया गया है कि वे हज़रत मसीह को 'शफ़ी' (सिफ़ारिश करने वाला) कहते हैं, अपितु इस आयत में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के 'शफ़ी' होने की घोषणा की गई है, क्योंकि केवल आप ही हैं जो रहमान पर ईमान लाने के सम्बन्ध में ज़ोर देते हैं और जिन की सिफ़ारिश को क़ुर्आन ने उचित ठहराया है, किन्तु ईसाई धर्म इस के विरुद्ध रहमानियत के गुण का इन्कार करता हैं। अतएव इस आयत में सिफ़ारिश की आज्ञा केवल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को ही दी गई है।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٤﴾

और इसी प्रकार हम ने इस (किताब) को अरबी भाषा में क़ुर्आन के रूप में उतारा है और इस में हर-एक प्रकार की सावधान करने वाली बातों को खोल-खोल कर बता दिया है, ताकि वे संयम धारण करें या (यह क़ुर्आन) उन के लिए (अल्लाह की) याद का (नए रूप से) सामान पैदा करे।११४।

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿١١٥﴾

अतः अल्लाह जो महाराजाधिराज है वह बड़े गौरव और शान वाला और सदैव क़ायम रहने वाला है और तू क़ुर्आन (की वह्य) उतरने से पहले इस के बारे में जल्दी से काम न ले तथा यह कहता रह कि हे मेरे रब्ब ! मेरे ज्ञान को बढ़ा।११५।

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٦﴾ ع

और हम ने इस से पहले आदम को (एक बात की) ताकीद की थी, परन्तु वह भूल गया तथा हम ने ख़ूब अच्छी तरह जाँच-पड़ताल कर ली कि उस के दिल में हमारा आदेश भंग करने का कोई पक्का इरादा न था।११६। (रुकू ६/१५)

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿١١٧﴾

(और यह भी याद करो) जब हम ने फ़रिश्तों को कहा कि आदम (के जन्म पर धन्यवाद के रूप में अल्लाह) को सजदः करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सजदः किया, परन्तु उस ने इन्कार किया।११७।

فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا

तो हम ने कहा कि हे आदम ! निस्सन्देह यह (इब्लीस) तेरा और तेरे साथियों का शत्रु है। सो यह तुम दोनों (गिरोहों) को स्वर्ग से

يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ۝١١٨

निकाल न दे, जिस के फलस्वरूप तू (और तेरा हर-एक साथी) विपत्ति में पड़ जाए।११८।

اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ۝١١٩

निस्सन्देह इस स्वर्ग[1] में तेरे लिए यह नियत है कि तू भूखा और नंगा न रहे (और न तेरे साथी ही)।११९।

وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ۝١٢٠

और न तू प्यासा रहे तथा न धूप में जले।१२०।

فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ۝١٢١

इस पर शैतान ने उस के दिल में भ्रम[2] डाला और कहा कि हे आदम! क्या मैं तुझे एक वृक्ष का पता दूँ जो सदा बहार है और ऐसे राज्य का भी जो कदापि नष्ट न होगा।१२१।

فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ وَعَصٰۤى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ۝١٢٢

अतः उन दोनों (अर्थात् आदम और उस के साथियों) ने उस वृक्ष में से कुछ खाया (अर्थात् उस का मज़ा चखा) जिस पर उन दोनों की कमज़ोरियाँ उन पर खुल गईं और वे दोनों अपने ऊपर स्वर्ग की शोभा के समान[3] (अर्थात् शुभ-कर्म) लपेटने लगे और आदम ने अपने रब्ब की अवज्ञा की अतः वह ठीक राह से भटक गया।१२२।

---

1. ऐसा प्रतीत होता है कि यह सब से पहली शिक्षा है जो हज़रत आदम को मिली थी कि तेरे अनुशासन का विधान ऐसा होना चाहिए कि जिस के फलस्वरूप उस राज्य में कोई भूखा, नंगा या प्यासा, आदि न रहे।

2. विवरण के लिए देखिए सूरः आराफ़ टिप्पणी आयत 21।

3. देखिए सूरः आराफ़ टिप्पणी आयत 23।

ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾

फिर उस के रब्ब ने उसे चुन लिया और उस पर दया की दृष्टि डाली तथा उसे काम का ठीक ढंग बता दिया।१२३।

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًۢا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾

(और अल्लाह ने) कहा कि तुम दोनों (गिरोह) सब के सब इस में से निकल जाओ। तुम में से कुछ लोग दूसरे कुछ लोगों के शत्रु होंगे। सो यदि मेरी ओर से तुम्हारे पास हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत का अनुसरण करेगा वह कभी पथभ्रष्ट न होगा तथा न वह तबाही में पड़ेगा।१२४।

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾

और जो व्यक्ति मेरे याद दिलाने पर भी मुँह फेर लेगा उसे दुःख भरा जीवन मिलेगा तथा क़ियामत के दिन हम उसे अन्धा उठाएँगे।१२५।

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾

(जिस पर) वह कहेगा कि हे मेरे रब्ब! तूने मुझे क्यों अन्धा उठाया, हालाँकि मैं तो ख़ूब अच्छी तरह देख सकता था?।१२६।

قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾

तो अल्लाह कहेगा कि तेरे पास भी तो मेरी आयतें आई थीं तू ने जिन्हें भुला दिया था। अतः तुझे भी आज (अल्लाह की रहमत बाँटते समय) छोड़ दिया जाएगा।१२७।

وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ

और जो व्यक्ति अल्लाह के विधान से बाहर चला जाता है और अपने रब्ब की आयतों पर ईमान नहीं लाता उस के साथ ऐसा ही होता है और (यह तो सांसारिक व्यवहार है) परलोक का अज़ाब तो इस से भी अधिक

وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٢٨﴾

कड़ा एवं लम्बे समय तक चलने वाला है।१२८।

اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿١٢٩﴾

क्या इन लोगों को इस बात से हिदायत नहीं मिली कि हम ने इन से पहले गुज़री हुई बहुत सी जातियों को नष्ट कर दिया था ? ये लोग उन के घरों में चलते-फिरते हैं। इस में बुद्धिमानों के लिए बड़े चमत्कार हैं।१२९। (रुकू ७/१६)

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٣٠﴾

और यदि तेरे रब्ब की ओर से एक बात पहले न हो चुकी होती और समय भी निश्चित न हो चुका होता तो (इन जातियों के लिए) अज़ाब स्थायी बन जाता।१३०।

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿١٣١﴾

अतएव जो कुछ ये लोग कहते हैं तू उस पर धैर्य धारण कर (क्योंकि दया-भाव से काम लेना तेरे रब्ब की रीति है) और सूर्य के उदय तथा उस के अस्त होने से पहले उस की प्रशंसा के साथ साथ उस की स्तुति भी किया कर तथा रात के विभिन्न भागों और दिन के सभी भागों में भी उस की स्तुति किया कर ताकि तू (उस की कृपा को पा कर) प्रसन्न हो जाए।१३१।

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ڏ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ۭ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٣٢﴾

और हम ने उन लोगों में से कुछ लोगों को सांसारिक-जीवन की चमक-दमक के सामान दे रखे हैं तू उन की ओर अपनी आँखें फैला-फैला कर न देख (क्योंकि उन्हें ये सामान इसलिए दिए गए हैं) कि हम उन के द्वारा उन की परीक्षा लें और तेरे रब्ब की दी हुई रोज़ी सब से अच्छी तथा सदैव रहने वाली है।१३२।

وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۚ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ۚ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ۚ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿١٣٣﴾

और तू अपने घर के लोगों को नमाज़ की ताकीद करता रह और तू स्वयं भी इस पर क़ायम रह। हम तुझ से कोई जीविका नहीं माँगते अपितु हम तुझे जीविका प्रदान कर रहे हैं और संयम का परिणाम ही अच्छा होता है।१३३।

وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٣٤﴾

और वे कहते हैं कि वह अपने रब्ब की ओर से हमारे पास कोई चमत्कार क्यों नहीं लाता। क्या उन के पास वैसा चमत्कार नहीं आया? जैसा कि पहली किताबों में उल्लेख हो चुका है।१३४।

وَلَوْ اَنَّاۤ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ﴿١٣٥﴾

यदि हम उन्हें इस (रसूल) से पहले किसी अज़ाब के द्वारा नष्ट कर देते, तो वे कहते हे हमारे रब्ब! तूने हमारी ओर कोई रसूल क्यों न भेजा (यदि तू ऐसा करता) तो हम तेरे निशानों का अनुसरण करते, इस से पहले कि हम पतित और अपमानित हो जाते।१३५।

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ﴿١٣٦﴾ ع

तू कह दे कि प्रत्येक व्यक्ति अपने परिणाम की प्रतीक्षा में है। अतः तुम भी (अपने परिणाम की) प्रतीक्षा करते रहो। तुम्हें शीघ्र ही प्रतीत हो जाएगा कि कौन सा व्यक्ति सीधे रास्ते पर चलने वालों और हिदायत पाने वालों में से है (और कौन सा नहीं)।१३६। (रुकू ८/१७)
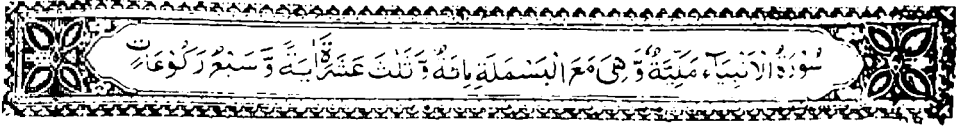
सूरः अल्-अम्बिया

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की एक सौ तेरह आयतें एवं सात रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۝٢

लोगों से हिसाब लेने का समय निकट आ गया है, किन्तु वे (फिर भी) ग़फ़लत में पड़े हुए हैं और मुँह मोड़ रहे हैं।२।

مَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۝٣

उन के पास उन के रब्ब की ओर से कभी भी कोई नई याद दिहानी (अर्थात् अनुस्मरण) नहीं आती, परन्तु वे उसे सुनते भी जाते हैं और उस की हँसी भी उड़ाते जाते हैं।३।

لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَأْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝٤

उन के दिल ग़फ़लत में पड़े हुए हैं। वे लोग जिन्हों ने अत्याचार से काम लिया चुपके-चुपके परामर्श करते हैं (और कहते हैं देखते नहीं) कि यह व्यक्ति तुम्हारे जैसा ही तो एक मनुष्य है। फिर क्या तुम इस की छल-कपट की बातों में आते हो, हालांकि तुम भली-भाँति समझते हो ?।४।

قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ

(इन बातों को सुन कर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने) कहा कि मेरा रब्ब

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۞

उन सारी बातों को जानता है जो आसमान और ज़मीन में (कही जाती) हैं तथा वह बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है ।५।

بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۭ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ۞

बल्कि वे (अर्थात् विरोधी) तो यहाँ तक कहते हैं कि यह (कलाम) बिखरे हुए व्यर्थ स्वप्न हैं बल्कि (बिखरे हुए व्यर्थ स्वप्न भी नहीं) इस ने अपने मन से जान-बूझ कर यह बातें गढ़ ली हैं अपितु वह कवि-स्वभाव रखने वाला एक मनुष्य है (जिस के मस्तिष्क में नाना-प्रकार के विचार उठते रहते हैं)। अतः चाहिए कि वह हमारे पास कोई चमत्कार ले कर आए जिस प्रकार पहले[1] रसूल चमत्कारों के साथ भेजे गए थे ।६।

مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۞

इन से पहली बस्तियों में से भी जिन का हम ने सर्वनाश कर दिया था कोई व्यक्ति ईमान नहीं लाया था, तो फिर क्या ये ईमान ले आएँगे ? ।७।

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۞

और हम तुझ से पहले भी (सदा) पुरुषों को ही रसूल बना कर भेजा करते थे और हम उन की ओर वह्य किया करते थे तथा (हे इन्कार करने वालो !) यदि तुम्हें यह बात मालूम नहीं तो किताब वालों से पूछ कर देख लो ।८।

---

1. मक्का-नगर के विरोधी तो रसूलों के प्रादुर्भाव के सिद्धान्त को नहीं मानते थे। उन का यह आरोप व्यंगात्मक है। इस से अभिप्राय यह है कि तू स्वयं कहता है कि पहले रसूल नाना-प्रकार के चमत्कार ले कर आए थे, फिर तू क्यों चमत्कार नहीं लाता ?

وَ مَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَ مَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ⑨

और हम ने उन रसूलों को ऐसा शरीर नहीं दिया था कि वे भोजन न करते हों और न वे असाधारण आयु पाने वाले लोग थे ।९।

ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَ مَنْ نَّشَآءُ وَ اَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ⑩

और हम ने उन से जो प्रतिज्ञा की थी उसे पूरा कर दिया तथा उन्हें और उन के सिवा जिन्हें चाहा (शत्रुओं से) बचा लिया और जो हद्द से बढ़ने वाले थे उन का सर्वनाश कर दिया ।१०।

لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ⑪

हम ने तुम्हारी ओर एक ऐसी किताब उतारी है जिस में तुम्हारी महानता के सामान हैं, क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ।११। (रुकू १/१)

وَ كَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّ اَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ⑫

और कितनी ही बस्तियाँ हैं जो अत्याचार किया करती थीं सो हम ने उन्हें निर्मूल कर दिया तथा उन के बाद एक और जाति को पैदा कर दिया ।१२।

فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ⑬

तो जब (नष्ट होने वाले लोगों ने) हमारे अज़ाब को भाँप लिया तो (उस से बचने के लिए) दौड़ने लगे ।१३।

لَا تَرْكُضُوْا وَ ارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَ مَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ⑭

(तब हम ने कहा कि) दौड़ो नहीं और उन वस्तुओं तथा अपने घरों की ओर लौट जाओ जिन के द्वारा तुम आनन्दमय जीवन व्यतीत करते थे, ताकि तुम से तुम्हारे कर्मों के बारे पूछ-ताछ की जाए ।१४।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ⑮

उन्हों ने इस का यह उत्तर दिया कि खेद ! हम तो (सारा जीवन) अत्याचार ही करते रहे ।१५।

فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿۱۵﴾

और वे यही बात कहते चले गए यहाँ तक कि हम ने उन्हें कटे हुए एक खेत की तरह बना दिया जिस की सारी शोभा नष्ट हो चुकी थी।१६।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿۱۶﴾

और हम ने आसमान को, ज़मीन को और जो कुछ उन के बीच है केवल खेल के लिए नहीं रचा (अपितु उन के रचने में एक विशेष हिक्मत और उद्देश्य था)।१७।

لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿۱۸﴾

यदि हमें कोई मनोरञ्जन ही आयोजित करना होता तो हम उसे अपने पास ही रखते।१८।

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۚ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿۱۹﴾

किन्तु हम तो सच को झूठ पर दे मारते हैं और वह उस का सिर तोड़ देता है तथा वह (झूठ) तुरन्त ही भाग जाता है और तुम पर तुम्हारी बातों के कारण अफ़सोस है।१९।

وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿۲۰﴾

और जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में है उसी का है और जो कोई उस के पास है वे उस की उपासना से मुँह नहीं मोड़ते और न उस से थकते हैं।२०।

يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿۲۱﴾

वे रात-दिन स्तुति करते हैं और उस से रुकते नहीं।२१।

اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿۲۲﴾

क्या इन लोगों ने धरती में से उपास्य बना लिए हैं और वे (संसार और इस में पाई जाने वाली सभी चीज़ों को) पैदा करते हैं।२२।

لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٢٣﴾

यदि इन दोनों (आकाश और धरती) में अल्लाह के सिवा कुछ और भी उपास्य[1] होते तो ये दोनों नष्ट हो जाते। सो अल्लाह जो अर्श का भी रब्ब है समस्त त्रुटियों से पवित्र है और उन (बातों) से भी जो वे कहते हैं।२३।

لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ﴿٢٤﴾

जो कुछ वह करता है उस की पूछ-ताछ उस से नहीं होती न ही वह किसी के सामने उत्तरदायी होता है हालाँकि वे (लोग) उत्तरदायी होते हैं।२४।

أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ آلِهَةً ۖ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ ۖ هَٰذَا ذِكْرُ مَن مَّعِيَ وَذِكْرُ مَن قَبْلِي ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ ۖ فَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٥﴾

क्या उन्हों ने इस के सिवा उपास्य बना लिए हैं ? तू कह दे कि अपना प्रमाण लाओ। यह (क़ुर्आन) तो उन के लिए भी सम्मान[2] का साधन है जो मेरे साथ हैं तथा जो मुझ से पहले हो चुके हैं उन के लिए भी प्रतिष्ठा का कारण है किन्तु इन में से बहुत से लोग सत्य को नहीं पहचानते, इस लिए उस से मुँह मोड़ते हैं।२५।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ

और हम ने तुझ से पहले जितने भी रसूल भेजे हैं हम उन में से हर-एक की ओर यह वह्य किया करते थे कि वास्तविकता यह है

1. अर्थात् एक से अधिक उपास्यों के लिए आवश्यक था कि उन में से हर-एक उपास्य एक सूर्य मंडल बनाता अन्यथा उन में से कोई भी उपास्य नहीं ठहराया जा सकता था और यदि एक से अधिक सूर्य मंडल होते तो प्राकृतिक नियम भी भिन्न-भिन्न होते जिन के कारण संसार विपत्ति में ग्रसित्र हो जाता तथा नष्ट हो जाता।

2. 'पहले लोगों के लिए' इस प्रकार कि पहले रसूलों के बारे में उन के अनुयायियों ने जो-जो झूठ गढ़ रखे थे क़ुर्आन ने उन सब को दूर कर दिया है। इस प्रकार वह पहलों तथा पिछलों के लिए सम्मान का साधन बन गया।

أَنَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾

कि मैं एक ही ख़ुदा हूँ। अतः मेरी ही उपासना करो।२६।

وَقَالُوا۟ ٱتَّخَذَ ٱلرَّحْمَٰنُ وَلَدًا ۗ سُبْحَٰنَهُۥ ۚ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾

और (ये लोग) कहते हैं कि रहमान (अल्लाह) ने पुत्र बना लिया है (इन की बात सत्य नहीं)। वह तो प्रत्येक त्रुटि से पवित्र है। वास्तविकता यह है कि (जिन्हें ये लोग पुत्र कहते हैं) वे तो अल्लाह के कुछ बन्दे हैं जिन्हें उस की ओर से सम्मान मिला हुआ है।२७।

لَا يَسْبِقُونَهُۥ بِٱلْقَوْلِ وَهُم بِأَمْرِهِۦ يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

वे अल्लाह की बात से एक शब्द भी अधिक नहीं कहते और वे उस के आदेशों का पालन करते हैं।२८।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ٱرْتَضَىٰ وَهُم مِّنْ خَشْيَتِهِۦ مُشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾

वह (अल्लाह) उसे भी जानता है जो उन को भविष्य में पेश आने वाला है तथा उसे भी जो वे पीछे छोड़ आए हैं और वे उस के सिवा किसी के लिए शफ़ाअत नहीं करते, परन्तु जिस के लिए अल्लाह ने यह बात पसन्द की हो और वे उस के डर से भयभीत रहते हैं।२९।

وَمَن يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّىٓ إِلَٰهٌ مِّن دُونِهِۦ فَذَٰلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٢٩﴾

और उन में से जो भी यह कहे कि मैं अल्लाह के सिवा उपास्य हूँ, हम उसे नरक में डालेंगे तथा हम अत्याचारियों को ऐसा ही प्रतिफल दिया करते हैं।३०। (रुकू २/२)

أَوَلَمْ يَرَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ أَنَّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَٰهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ ٱلْمَآءِ كُلَّ شَىْءٍ حَىٍّ

क्या इन्कार करने वालों ने यह नहीं देखा कि आकाश तथा धरती दोनों बन्द थे। अतः हम ने उन्हें खोल[1] दिया और हम ने पानी

1. अर्थात् जब तक अल्लाह ने वह्य नहीं उतारी थी आकाश और धरती के हिदायत पाने का (शेष पृष्ठ ६९६ पर)

أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣١﴾

के द्वारा प्रत्येक सजीव को जीवन प्रदान किया है। अतः क्या वे ईमान नहीं लाते ? ।३१।

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣٢﴾

और हम ने धरती में पर्वत बनाए ताकि ऐसा न हो कि वह (धरती) उन (धरती वालों) के साथ भयंकर भूकम्प में ग्रसित हो जाए तथा हम ने धरती में खुले-खुले रास्ते बनाए हैं ताकि ये लोग उन के द्वारा (विभिन्न स्थानों तक) पहुँचें ।३२।

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿٣٣﴾

और हम ने आसमान को एक ठोस छत (अर्थात् रक्षा का साधन) बनाया है और वे फिर भी उस के निशानों (अर्थात् आसमान से प्रकट होने वाले निशानों) से मुँह मोड़ रहे हैं (हालाँकि वे उन के भले के लिए हैं) ।३३।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٣٤﴾

और वही है जिस ने रात और दिन को तथा सूर्य एवं चन्द्रमा को पैदा किया है। ये समस्त (आकाशीय-ग्रह) अपने मेहवर (अक्ष) पर बिना किसी अड़चन के चल रहे हैं ।३४।

(पृष्ठ ६९५ का शेष)

कोई साधन न था, परन्तु जब अल्लाह ने उसे खोल दिया और वह्य उतारी, तब हिदायत के साधन पैदा हो गए तथा सिद्ध हुआ कि ईशवाणी के बिना कोई जीवन नहीं। आश्चर्य है कि ये लोग फिर भी ईमान नहीं लाते।

आधुनिक विज्ञान ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि जब भी किसी नवीन सूर्य-जगत का सृजन होता है तो वह पहले गेंद की तरह गोलाकार होता है। तदुपरांत आन्तरिक चक्कर के कारण उस के किनारे दूर-दूर तक फेंके जाते हैं और नवीन मंडल बन जाते हैं, जो आन्तरिक धूरी पर चक्कर खाने लग जाते हैं। इस प्रकार एक नवीन सूर्य-जगत की उत्पत्ति हो जाती है।

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ اَفَائِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ۝

और हम ने तुझ से पहले किसी मनुष्य को अस्वाभाविक लम्बी आयु प्रदान नहीं की। यदि तू मर जाए तो क्या वे अस्वाभाविक लम्बी आयु पा कर जीवित रहेंगे ?।३५।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ؕ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ۝

हर-एक जान मौत का मज़ा चखने वाली है और हम तुम्हारी परीक्षा अच्छी और बुरी परिस्थितियों से करेंगे और अन्ततः तुम्हें हमारी ओर ही लौटा कर लाया जाएगा।३६।

وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝

और जब तुझे इन्कार करने वाले लोग देखते हैं तो तुझे केवल एक तुच्छ चीज़ समझते हैं। (और कहते हैं) क्या यही वह व्यक्ति है जो तुम्हारे उपास्यों की त्रुटियाँ गिनाता है ? हालाँकि वे स्वयं रहमान (अल्लाह) के ज़िक्र (अर्थात् याद) का इन्कार करते हैं।३७।

خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ۝

मानव-प्रकृति में उतावलापन रखा गया है। अतएव (याद रखो) मैं (अल्लाह) तुम्हें अपने निशान दिखलाऊँगा। अत: तुम उतावलेपन से काम न लो।३८।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝

और (यह सुन कर) वे कहते हैं कि यदि तुम (मुसलमान) लोग सच्चे हो तो फिर यह वादा कब पूरा होगा ?।३९।

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝

यदि इन्कार करने वाले लोग उस घड़ी को जान लेते जब कि वे अपने मुँहों और अपनी पीठों से आग को हटा नहीं सकेंगे और न किसी की ओर से उन की सहायता की जाएगी (तो वे इतनी शेख़ी न बघारते)।४०।

بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا

किन्तु (वह अज़ाब) अचानक ही उन के पास आ जाएगा और उन्हें हैरान और

وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٤١﴾

परेशान कर देगा। अत: वे उसे रद्द करने की शक्ति नहीं रखेंगे और न उन्हें कोई ढील दी जाएगी।४१।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٤٢﴾

और जो रसूल तुझ से पहले हो चुके हैं उन की भी हँसी उड़ाई गई थी, किन्तु परिणाम यह निकला कि जिन लोगों ने उन रसूलों से हँसी और ठट्ठा किया था उन्हें उन्हीं बातों ने घेर लिया जिन के द्वारा वे नबियों की हँसी उड़ाया करते थे।४२। (रुकू ३/३)

قُلْ مَن يَكْلَؤُكُم بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَٰنِ ۗ بَلْ هُمْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِم مُّعْرِضُونَ ﴿٤٣﴾

तू कह दे कि तुम्हें रात या दिन के समय रहमान ख़ुदा की पकड़ से कौन बचा सकता है? किन्तु (वास्तविकता यह है कि) वे अपने रब्ब की याद से विमुख हो रहे हैं।४३।

أَمْ لَهُمْ آلِهَةٌ تَمْنَعُهُم مِّن دُونِنَا ۚ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنفُسِهِمْ وَلَا هُم مِّنَّا يُصْحَبُونَ ﴿٤٤﴾

क्या उन का समर्थन करने वाले कोई (सच्चे) उपास्य हैं जो उन्हें हमारे अज़ाब से बचा लेंगे? वे (उपास्य) तो स्वयं अपनी रक्षा भी नहीं कर सकते और न हमारे मुक़ाबिले में कोई उन का साथ दे सकता है।४४।

بَلْ مَتَّعْنَا هَٰؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۗ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنقُصُهَا

वास्तविकता यह है कि हम ने उन्हें भी तथा उन के पूर्वजों को भी बहुत सा धन-दौलत प्रदान किया था, यहाँ तक कि उन पर एक लम्बा समय बीत गया। सो क्या वे यह नहीं देखते कि हम उन के देश की ओर बढ़ रहे हैं और उसे किनारों[1] से छोटा करते

1. अर्थात् देश की सीमाएँ और नई नस्लें मुसलमानों के अधीन आती जाती हैं।

مِنْ اَطْرَافِهَا ۭ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝

जा रहे हैं। तो क्या (इस से यही परिणाम निकलता है कि) वे (हम पर) ग़ालिब आ जाएँगे ? ।४५।

قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ڮ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاۗءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ۝

तू उन से कह दे कि मैं तो तुम्हें वह्य के द्वारा सावधान कर रहा हूँ और (ख़ूब समझता हूँ कि) जब (आध्यात्मिक) बहरों को सावधान किया जाए तो वे आवाज नहीं सुन सकते ।४६।

وَلَىِٕنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝

और यदि उन्हें अज़ाब की गर्मी का कोई झोंका लग जाए तो वे अवश्य कहेंगे कि हाय हम पर अफ़सोस ! हम तो अत्याचार ही करते रहे ।४७।

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۭ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ۭ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝

और हम क़ियामत के दिन ऐसे तौल के साधन (अर्थात् पूरा तौलने वाले साधन) पैदा करेंगे कि जिन के कारण किसी जान पर तनिक भी अत्याचार नहीं किया जाएगा और यदि (कोई कर्म) राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसे पेश कर देंगे तथा हम लेखा लेने में काफ़ी हैं ।४८।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاۗءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝

और हम ने मूसा तथा हारून को सच और झूठ में अन्तर कर देने वाला निशान और प्रकाश दिया था और संयमियों के लिए याद दिलाने वाली एक शिक्षा दी थी ।४९।

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ۝

वे (संयमी) जो अपने रब्ब से ग़ैब (परोक्ष) में भी डरते हैं और जज़ा और सज़ा (अर्थात् पुरस्कार तथा दण्ड) मिलने की निश्चित घड़ी से भी डरते रहते हैं ।५०।

وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥١﴾ ع

और यह (क़ुर्आन) याद दिलाने वाली एक ऐसी किताब है जिस में सभी आसमानी किताबों के गुण मानों बह कर आ गए हों, इसे हम ने उतारा है। अतः क्या तुम ऐसी किताब का इन्कार करते हो? ।५१। (रुकू ४/४)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿٥٢﴾

और इस से पहले हम ने इब्राहीम को अच्छी समझ और योग्यता प्रदान की थी और हम उस के भीतर की हालत को ख़ूब जानते थे ।५२।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْۤ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٣﴾

जब उस ने अपने पिता और अपनी जाति के लोगों से कहा कि ये कैसी मूर्तियाँ हैं जिन के सामने तुम बैठे रहते हो? ।५३।

قَالُوْا وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٤﴾

उन्हों ने कहा कि हम ने अपने पूर्वजों को देखा था कि वे इन की उपासना किया करते थे ।५४।

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٥﴾

उस ने कहा कि तब तुम भी तथा तुम्हारे पूर्वज भी एक खुली-खुली गुमराही में पड़े हुए थे ।५५।

قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٦﴾

उन्हों ने कहा कि क्या तू हमारे पास एक हक़ (सच्चाई) ले कर आया है या तू हमारे साथ हँसी-ठट्ठा कर रहा है? ।५६।

قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٧﴾

(इब्राहीम ने) कहा कि वास्तविकता यह है कि तुम्हारा रब्ब आसमानों और ज़मीन का रब्ब है, जिस ने इन को पैदा किया है और मैं तुम्हारे सामने इस बात का गवाह हूँ ।५७।

وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝

और उस ने कहा कि अल्लाह की सौगन्ध ! जब तुम पीठ फेर कर चले जाओगे तो मैं तुम्हारी मूर्तियों के विरुद्ध एक पक्की योजना बनाऊँगा ।५८।

فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ۝

फिर उस ने उन में से बड़ी मूर्ति के सिवा दूसरी सभी मूर्तियों को तोड़-फोड़ दिया ताकि वे (एक बार फिर) उस के पास आएँ ।५९।

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

इस पर उन्हों ने कहा कि हमारे उपास्यों के साथ यह व्यवहार किस ने किया है ? ऐसा करने वाला निश्चय ही अत्याचारियों में से है ।६०।

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ۝

(तब कुछ दूसरे लोगों ने) कहा कि हम ने इब्राहीम नामक एक युवक को इन की कमज़ोरियाँ बताते हुए सुना है ।६१।

قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ۝

(तब जाति के सरदारों ने) कहा कि (यदि यह सच है तो) उसे सब लोगों के सामने लाओ, ताकि वे (उस के बारे में) कोई निर्णय करें ।६२।

قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۝

फिर वे बोले कि हे इब्राहीम ! क्या तूने हमारे उपास्यों के साथ यह काम किया है ? ।६३।

قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ۝

इब्राहीम ने कहा कि किसी करने वाले ने तो यह काम अवश्य किया है। यह सब से बड़ी मूर्ति सामने खड़ी है। यदि ये बोल सकते हैं तो इन (बड़ी और छोटी मूर्तियों) से पूछ कर देख लो ।६४।

इस पर उन्हों ने अपने सरदारों की ओर ध्यान दिया और कहा कि सच्ची बात तो यह है कि अत्याचारी तुम ही हो ।६५।	فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٥﴾
और वे लोग सिरों के बल गिरा दिए गए (अर्थात् कोई उत्तर न दे सके) तथा उन्हों ने कहा कि तुझे तो मालूम है कि ये (मूर्तियाँ) बोला नहीं करतीं ।६६।	ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٦﴾
इब्राहीम ने कहा कि क्या तुम अल्लाह के सिवा ऐसी वस्तु की उपासना करते हो जो न तो तुम्हें लाभ पहुँचाती है और न हानि ही ।६७।	قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٧﴾
(हम) तुम पर खेद ! (करते हैं) तथा उस पर भी जिस की तुम अल्लाह के सिवा उपासना करते हो। क्या तुम लोग बुद्धि से काम नहीं लेते ? ।६८।	اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾
(इस पर वे क्रुद्ध हो कर) कहने लगे कि इस मनुष्य को जला दो और अपने उपास्यों की सहायता करो, यदि तुम ने कुछ करने का निश्चय ही किया है ।६९।	قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٦٩﴾
तब हम ने कहा कि हे आग ! तू इब्राहीम के लिए ठंढी हो जा और उस के लिए सलामती (कल्याणकारी) बन जा ।७०।	قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿٧٠﴾
और उन्हों ने उस से कुछ बुरा व्यवहार करना चाहा किन्तु हम ने उन्हें असफल बना दिया ।७१।	وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿٧١﴾
और हम ने उसे भी तथा लूत को भी उस धरती की ओर ले जा कर बचा लिया जिस में	وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا

لِلْعٰلَمِيْنَ ۝

हम ने सारे जहानों के लिए बरकतें रखी थीं ।७२।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ۭ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ۝

और हम ने उसे इस्हाक़ भी प्रदान किया एवं याक़ूब भी पौत्र-रूप में प्रदान किया तथा हम ने सब को सदाचारी बनाया ।७३।

وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاۗءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ۝

और हम ने उन्हे लोगों का इमाम बनाया। वे हमारे आदेश के अनुसार उन्हें हिदायत देते थे तथा हम ने उन्हें शुभ-कर्म करने, नमाज़ क़ायम करने और जकात देने के लिए वह्य की। वे सब हमारे उपासक थे ।७४।

وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰۗىِٕثَ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ۝

और (हम ने उसे) लूत (भी दिया) जिसे हम ने निर्णय करने की शक्ति[1] प्रदान की एवं ज्ञान भी और उसे उस बस्ती से मुक्ति भी दी जो अत्यन्त बुरे काम करती थी। वे (लूत के नगर-निवासी) एक बुरी जाति अर्थात् अवज्ञाकारी थे ।७५।

وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

और हम ने उस (लूत) को अपनी रहमत में दाख़िल किया। वह हमारे सदाचारी भक्तों में से था ।७६। (रुकू ५/५)

وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝

और नूह को (याद कर) जब उस ने इस (इब्राहीम) की घटना से पहले हमें पुकारा तथा हम ने उस की प्रार्थना को सुना। अतः हम ने उसे और उस के परिवार को भी एक बड़ी घबराहट से बचा लिया ।७७।

1. मूल शब्द 'हुक्म' से तात्पर्य यह है कि उन्हें ऐसा ज्ञान प्रदान किया जिस के द्वारा वे लोगों में निर्णय कर सकते थे।

وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

और हम ने उस की उस जाति के मुक़ाबिले में सहायता की जिस ने हमारे निशानों को झुठलाया था, वह एक अत्यन्त बुरी जाति थी। अतः हम ने उन सब को डुबो दिया।७८।

وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ۝

और (याद करो) दाऊद एवं सुलेमान को भी जब कि वे दोनों एक खेती के बारे में झगड़े का निपटारा कर रहे थे, उस समय जब कि एक जाति के साधारण[1] लोग उसे खा गए थे (अर्थात् उस का सर्वनाश कर दिया था) और हम उन के निर्णय के गवाह थे।७९।

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۖ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۚ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝

हम ने सुलेमान को वास्तविक बात समझा दी और हम ने सब को ही निर्णय करने की शक्ति तथा ज्ञान प्रदान किया था और हम ने दाऊद के साथ पर्वत-निवासियों को भी लगा दिया था। वे सब अल्लाह की स्तुति करते थे और हम यह सब कुछ करने का सामर्थ्य रखते थे।८०।

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْ

और हम ने उसे एक लिबास[2] (पहनावा) बनाने की कला सिखाई थी ताकि वह युद्ध

1. मूल शब्द 'ग़नम' का अर्थ भेड़-बकरियाँ होता है और मुहावरे में प्रायः साधारण लोगों को भेड़-बकरी ही कहा जाता है। आयत का भाव यह है कि हज़रत दाऊद के पड़ोस के साधारण लोग डाकू आदि उन के देश के लोगों को हानि पहुँचाते थे। हज़रत दाऊद ने अपने देश की रक्षा के लिए उन के आक्रमणों को रोका और उन्हों ने आस-पास के लोगों के साथ समझौता करके अपने देश को उन के आक्रमणों से बचा लिया।

2. लड़ाई के अवसर पर रक्षा के लिए कवच का बनाना सिखाया गया।

بَأْسِكُمْ فَهَلْ أَنتُمْ شَٰكِرُونَ ⁝٨١

में तुम्हारे प्राणों की रक्षा करे। अतः क्या तुम शुक्र करने वाले बनोगे? ।८१।

وَلِسُلَيْمَٰنَ ٱلرِّيحَ عَاصِفَةً تَجْرِى بِأَمْرِهِۦٓ إِلَى ٱلْأَرْضِ ٱلَّتِى بَٰرَكْنَا فِيهَا ۚ وَكُنَّا بِكُلِّ شَىْءٍ عَٰلِمِينَ ⁝٨٢

और हम ने सुलेमान के लिए तेज़ चलने वाली वायु को उस के अधीन कर रखा था जो उस की आज्ञा के अनुसार उस धरती की ओर चलती[1] थी जिस में हम ने बरकत रखी थी तथा हम सब कुछ जानते हैं।८२।

وَمِنَ ٱلشَّيَٰطِينِ مَن يَغُوصُونَ لَهُۥ وَيَعْمَلُونَ عَمَلًا دُونَ ذَٰلِكَ ۖ وَكُنَّا لَهُمْ حَٰفِظِينَ ⁝٨٣

और कुछ उद्दण्डी[2] लोग ऐसे थे जो उस के लिए समुद्रों में डुबकी लगाते थे तथा इस के सिवा और दूसरे काम भी करते थे और हम उन की देख-भाल करते थे।८३।

وَأَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُۥٓ أَنِّى مَسَّنِىَ ٱلضُّرُّ وَأَنتَ أَرْحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ ⁝٨٤

और तू अय्यूब को (भी याद कर) जब उस ने अपने रब्ब को पुकार कर कहा कि मेरी दशा यह है कि मुझे कष्ट ने आ घेरा है और हे मेरे रब्ब! तू सब दया करने वालों से बढ़ कर दया करने वाला है।८४।

فَٱسْتَجَبْنَا لَهُۥ فَكَشَفْنَا مَا بِهِۦ مِن ضُرٍّ ۖ وَءَاتَيْنَٰهُ أَهْلَهُۥ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِندِنَا وَذِكْرَىٰ

फिर हम ने उस की प्रार्थना को सुना और जो कष्ट उसे पहुँचा था उसे दूर कर दिया और उसे उस का परिवार भी दिया और उन के सिवा अपनी ओर से कृपा करते हुए और भी प्रदान किए तथा हम ने इस घटना

1. हज़रत सुलेमान के समुद्री जहाज़ शाम देश के उत्तरी भाग से सामान ले कर दक्षिण की ओर आया करते थे अर्थात् फ़लस्तीन की ओर। इस आयत में उसी की ओर संकेत है।

2. इस स्थान में मूल शब्द 'शैतान' विद्रोहियों और उद्दण्डियों के लिए प्रयुक्त हुआ है। फ़ारस की खाड़ी के तट पर निवास करने वाले अहंकारी लोग सुलेमान की सेवा किया करते थे तथा उस के लिए फ़ारस की खाड़ी से मणि-मुक्ता निकाला करते थे जो बहरैन एवं मस्क़त के क्षेत्रों में बड़ी संख्या में पाए जाते हैं और निकाले जाते हैं।

لِلْعٰبِدِيْنَ

को उपासना करने वालों के लिए सदुपदेश का एक साधन बनाया है ।८५।

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ

और इस्माईल[1] को भी (याद करो) और इद्रीस को भी तथा ज़ुल्‌किफ़्ल को भी। ये सब के सब धैर्य रखने वाले थे ।८६।

وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ

और हम ने इन सब को अपनी रहमत में दाख़िल किया था और वे सभी सदाचारी थे ।८७।

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

और ज़न्नून (अर्थात् यूनुस) को भी (याद करो) जब वह क्रोध की अवस्था में चला गया और दिल विश्वास से भरा हुआ था कि हम उसे तंग नहीं करेंगे। सो उस ने हमें विपत्ति-काल में पुकारा (और कहा) कि तेरे सिवा कोई उपास्य नहीं। तू पवित्र है। मैं निश्चय ही अत्याचार करने वालों में से था ।८८।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ وَكَذٰلِكَ نُـنْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ

अत: हम ने उस की प्रार्थना को स्वीकार किया और उसे शोक करने से छुटकारा दिया और हम मोमिनों को इसी प्रकार छुटकारा दिया करते हैं ।८९।

وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا

और ज़करिय्या[2] को भी (याद करो) जब उस ने अपने रब्ब को पुकारा था और कहा

1. इस स्थान पर इस्माईल, इद्रीस तथा ज़ुल्‌किफ़्ल का वर्णन एक साथ कर दिया है हालांकि ये भिन्न-भिन्न समय में हुए है। इस का मूल कारण यह है कि ये समस्त रसूल और पैग़म्बर ऐसे थे जिन्हें शरीअत अर्थात् धार्मिक विधान नहीं मिला था और विपत्तियों में ग्रसित थे। पवित्र क़ुर्आन ने भी इन सब में पाया जाने वाला एक जैसा गुण 'धैर्य' ही ठहराया है और इसी कारण आगे ज़न्नून का भी वर्णन किया गया है।

2. हज़रत ज़करिय्या का उल्लेख इस स्थान पर इस लिए किया है कि इस के पश्चात् हज़रत मर्यम और उस के बेटे का वर्णन है जो हज़रत ज़करिय्या के समय के और उन के नातेदार थे।

وَاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۝

था कि हे मेरे रब्ब ! मुझे अकेला न छोड़ और तू वारिस होने वालों में से सब से अच्छा है ।९०।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۡ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ۭ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ۝

और हम ने उस की प्रार्थना को सुना तथा उसे यह्या प्रदान किया एवं उस की पत्नी को उस के लिए स्वस्थ कर दिया । वे सब लोग नेक कामों के करने में जल्दी करते थे और हमें प्रेम तथा भय से पुकारते थे एवं हमारे लिए विनम्रता पूर्वक जीवन व्यतीत करते थे ।९१।

وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝

और उस स्त्री[1] को भी (याद कर) जिस ने अपने नामूस (सतीत्व) की रक्षा की । अत: हम ने उस पर अपना कुछ कलाम उतारा तथा उसे और उस के बेटे को संसार के लिए एक निशान[2] बनाया ।९२।

اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ڮ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ۝

तुम्हारा यह सम्प्रदाय एक ही सम्प्रदाय है और मैं तुम्हारा रब्ब हूँ । अत: तुम मेरी ही उपासना करो ।९३।

وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ۭ كُلٌّ اِلَيْنَا

और उन्हों ने (अर्थात् नबियों के विरोधियों ने) अपने धर्म को टुकड़े-टुकड़े (कर के अपनी इच्छा के अनुकूल एक टुकड़े को) अपना लिया

---

1. 'स्त्री' के शब्द से हज़रत मर्यम की ओर संकेत किया गया है जिन्हों ने अपने-आप को बुराई से दूर रखा ।

2. दुर्भाग्यवश मुसलमानों ने यह समझ लिया है कि हज़रत मर्यम और हज़रत ईसा-मसीह के सिवा दूसरा कोई व्यक्ति निशान या चमत्कार न था । हालांकि क़ुर्आन-मजीद के प्रत्येक खण्ड का नाम आयत या चमत्कार है । अत: हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम जिन पर सारा क़ुर्आन उतरा है समस्त चमत्कारों का भण्डार थे ।

رٰجِعُوْنَ ۝٩٤ ع

है। हालाँकि वे सब हमारी ओर लौटाए जाएँगे।९४। (रुकू ६/६)

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ۝٩٥

फिर जो व्यक्ति परिस्थिति के अनुकूल कर्म करेगा और साथ ही वह मोमिन भी होगा तो उस की कोशिश को रद्द नहीं किया जाएगा और हम उस के शुभ कर्मों को लिख रखेंगे।९५।

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝٩٦

और हर-एक बस्ती जिस का हम ने सर्वनाश कर दिया है, उस के लिए यह निर्णय कर दिया गया है कि उस के निवासी लौट कर दोबारा इस संसार में नहीं आएंगे।९६।

حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ۝٩٧

यहाँ[1] तक कि जब याजूज और माजूज के लिए द्वार खोल दिया जाएगा और वे हर-एक पहाड़ी एवं हर-एक समुद्र की लहर पर से फलाँगते हुए संसार में फैल जाएँगे।९७।

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٩٨

और (अल्लाह का) सच्चा वादा क़रीब आ जाएगा तो उस समय इन्कार करने वालों की आँखें फटी[2] की फटी रह जाएँगी और वे कहेंगे कि हम पर अफ़सोस! हम तो इस दिन के बारे में एक बड़ी भूल में पड़े रहे बल्कि हम लोग तो अत्याचारी थे।९८।

---

1. इस से यह अभिप्राय नहीं कि याजूज और माजूज से पहले की समस्त जातियाँ जीवित हो जाएँगी, अपितु इस से यह तात्पर्य है कि याजूज और माजूज जब सारे संसार पर छा जाएँगे तो पिछड़ी जातियों में दोबारा स्फूर्ति और स्वाभिमान जाग उठेंगे और वे पुनः उन्नति करने लग जाएँगी। जैसा कि वर्तमान युग में हो रहा है। इसी का नाम इस स्थान में पुनरुत्थान रखा गया है।

2 अर्थात् इन्कार करने वालों में से जो लोग यह समझते हैं कि पददलित जातियों को हम ने सदा के लिए समाप्त कर दिया है उन का पुनरुत्थान होते तथा उन्हें प्रगति करते देख कर आश्चर्य चकित

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ أَنْتُمْ لَهَا وَارِدُونَ ﴿٩٩﴾

(उस समय कहा जाएगा कि) तुम और वे चीज़ें भी जिन की तुम अल्लाह के सिवा उपासना किया करते थे, सब के सब नरक[1] का ईंधन बनेंगी और तुम सब इस में प्रविष्ट होगे ।९९।

لَوْ كَانَ هٰؤُلَاءِ آلِهَةً مَا وَرَدُوهَا ۖ وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٠٠﴾

यदि ये (झूठे उपास्य जिन्हें तुम अल्लाह ठहराते हो) वास्तव में उपास्य होते तो ये लोग नरक में क्यों पड़ते और ये सभी उस में युग-युगान्तर पड़े रहेंगे ।१००।

لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠١﴾

वे उस में चिल्लाएँगे और वे उस में (समझाने वालों में[2] से किसी की) बात नहीं सुनेंगे ।१०१।

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ أُولٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠٢﴾

निस्सन्देह वे लोग जिन के बारे में हमारी ओर से सद्व्यवहार करने की प्रतिज्ञा हो चुकी है, वे उस नरक से दूर रखे जाएँगे ।१०२।

لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿١٠٣﴾

वे उस की आवाज़ तक नहीं सुनेंगे और वे उस अवस्था में सदैव रहेंगे जिस की इच्छा उन के मन में है ।१०३।

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلٰئِكَةُ

उन्हें किसी बड़ी परेशानी का समय भी दु:खित नहीं करेगा और उन से फ़रिश्ते भेंट करेंगे तथा कहेंगे कि यह तुम्हारा वह दिन

---

1. परलोक का नरक तो दिखाई नहीं देता, किन्तु इस आयत में नरक से तात्पर्य वह अपमान है जो क़ुर्आन-मजीद उतरने के पश्चात् इन्कार करने वालों को पहुँचने वाला था और लम्बे समय तक उन के साथ लगा रहने वाला था। जैसा कि विश्व का इतिहास इस का साक्षी है।

2. अर्थात् उस समय ईमान लाना कुछ भी लाभ नहीं देगा।

هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝

है जिस की तुम से प्रतिज्ञा की गई थी ।१०४।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ؕ كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝

जिस दिन हम आकाश को इस प्रकार लपेट देंगे जिस प्रकार बही-खाते लेख को लपेट लेते हैं। जिस प्रकार हम ने तुम्हारी उत्पत्ति पहली बार की थी उसी प्रकार फिर उसे दुहराएँगे[1]। यह हम ने अपने लिए ज़रूरी ठहरा रखा है। हम ऐसा ही करने का इरादा रखते हैं ।१०५।

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ۝

और हम ने ज़बूर में कुछ उपदेशों के पश्चात् यह लिख छोड़ा है कि पवित्र धरती (फ़लस्तीन) के वारिस मेरे नेक लोग होंगे ।१०६।

اِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ۝

इस (भविष्यवाणी) में उस जाति के लिए एक सन्देश[2] है जो उपासना करने वाली है ।१०७।

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝

और हम ने तुझे संसार के लिए केवल रहमत[3] बना कर भेजा है ।१०८।

قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ

तू कह दे कि मुझे तो केवल यह वह्य होती है कि तुम्हारा उपास्य केवल एक ही है।

---

1. अर्थात् इस युग का विनाश कर दिया जाएगा और नई जातियाँ जन्म लेंगी तथा प्रगति करेंगी। जैसा कि इस युग में हो रहा है कि अफ्रीका जो अज्ञात और पिछड़ा हुआ देश समझा जाता था अब उस में नव-जीवन के साथ-साथ प्रगति का संचार हो रहा है।

2. मुसलमानों को इस से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। यदि वे फ़लस्तीन लेना चाहते हैं तो सदाचारी बनें।

3. यह बात ठीक है कि अन्तिम दिनों से यहूदी एक बार फ़लस्तीन पर अधिकार जमा लेंगे, किन्तु मुसलमानों को निराश नहीं होना चाहिए, क्योंकि उन के नबी का प्रादुर्भाव रहमत के रूप में हुआ है उस के साथ सम्बन्ध रखना मुसलमानों को घाटे में नहीं डालेगा।

فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٩﴾

सो क्या तुम इस बात को मानोगे (या नहीं ?) ।१०९।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِيْٓ أَقَرِيْبٌ أَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿١١٠﴾

अतः यदि वे पीठ फेर लें तो तू उन से कह दे कि मैं ने तुम (में से मोमिनों तथा इन्कार करने वालों) को समान रूप में सूचित कर दिया है तथा मैं नहीं जानता कि वह बात जिस की तुम से प्रतिज्ञा की गई थी, निकट है या दूर ।११०।

إِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١١١﴾

अल्लाह खुली बात को भी जानता है तथा तथा उसे भी जो तुम छिपाते हो ।१११।

وَإِنْ أَدْرِيْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلٰى حِيْنٍ ﴿١١٢﴾

और मैं नहीं जानता कि (जो बात ऊपर वर्णित हुई है) कदाचित वह तुम्हारे लिए एक परीक्षा है और उस से तुम्हें एक निश्चित समय तक लाभ पहुँचाने का इरादा है (या सदैव[1] के लिए ?) ।११२।

قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ ع

(इस वह्य के आने पर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने) कहा कि हे मेरे रब्ब ! तू सत्य के अनुकूल निर्णय[2] कर दे और हमारा रब्ब तो रहमान है और (हे इन्कार करने वालो !) जो बातें तुम करते हो उन के विरुद्ध उसी से सहायता माँगी जाती है ।११३। (रुकू ७/७)

---

1. अर्थात् यहूदी फिर कभी भी फ़लस्तीन में प्रवेश नहीं करेंगे।

2. इस आयत में अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के द्वारा मुसलमानों के लिए पहले से ही प्रार्थना करवा दी है कि अल्लाह उन्हें फ़लस्तीन दे दे तथा उन की सच्चाई सिद्ध कर दे। हमें पूर्ण विश्वास है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की प्रार्थना कदापि रद्द नहीं होगी और लोग अपनी आँखों से देख लेंगे कि किस प्रकार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की प्रार्थना की स्वीकृति हुई। इस्राईल को न रूस लाभ दे सकेगा और न अमेरिका।
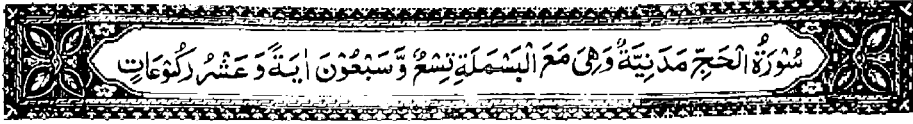
सूरः अल् - हज्ज

[यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की उनासी आयतें एवं दस रुकू हैं ।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ②

हे लोगो ! तुम अपने रब्ब के लिए संयम धारण करो, क्योंकि (निर्णय करने वाला) भूकम्प[1] एक बड़ी बात है ।२।

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّاۤ اَرْضَعَتْ وَ تَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَ تَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَ مَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَ لٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ③

जिस दिन तुम उसे देखोगे कि प्रत्येक दूध पिलाने वाली महिला जिसे दूध पिला रही होगी उसे भूल जाएगी और प्रत्येक गर्भवती-स्त्री अपने गर्भ को गिरा देगी एवं तू लोगों को देखेगा कि वे मतवालों की तरह हैं । हालाँकि वे मतवाले नहीं होंगे परन्तु अल्लाह का अज़ाब बहुत कड़ा है ।३।

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ يَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ④

और लोगों में कुछ ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह के बारे में बिना ज्ञान के वाद-विवाद करते हैं तथा वे हर-एक उद्दण्डी और सत्य से दूर व्यक्ति के पीछे चल पड़ते हैं ।४।

1. अर्थात् अन्तिम महा-विपत्ति जिस से सांसारिक संघर्ष समाप्त हो जाएँगे ।

كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝

(वास्तव में) उन (उद्दण्डियों और सत्य से दूर लोगों) के सम्बन्ध में यह निर्णय किया जा चुका है कि जो कोई ऐसे लोगों में से किसी के साथ मित्रता रखेगा तो वह (सच्चाई से दूर और उद्दण्डी व्यक्ति) उसे भी पथ-भ्रष्ट कर देगा और नरक के अज़ाब की ओर ले जाएगा।५।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۭ وَنُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَاۗءُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـــًٔا ۭ وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً

हे लोगो ! यदि तुम्हें दूसरी बार उठाए जाने के बारे में सन्देह में हो तो (याद रखो) हम ने तुम्हें सर्व प्रथम मिट्टी से पैदा किया था, फिर वीर्य्य से, फिर उन्नति दे कर एक ऐसी अवस्था से जो चिपट जाने का गुण रखती थी, फिर ऐसी अवस्था से कि वह माँस की एक बोटी के समान थी, वह कुछ समय तक तो पूर्ण बोटी के रूप में रही तथा कुछ समय तक अपूर्ण बोटी के रूप में ताकि हम तुम्हारे ऊपर (वास्तविकता) खोल दें और हम जिस वस्तु को चाहते हैं उसे गर्भाशयों में एक निश्चित समय तक क़ायम कर देते हैं, फिर हम तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकालते हैं (फिर बढ़ाते जाते हैं) जिस का परिणाम यह निकलता है कि तुम अपनी मज़बूती की आयु को पहुँच जाते हो और तुम में से कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपनी साधारण आयु तक पहुँच कर मरते हैं तथा कुछ ऐसे भी होते हैं जो बुढ़ापे की अन्तिम सीमा को पहुँच जाते हैं, ताकि बहुत सा ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् ज्ञान से बिल्कुल कोरे हो जाएँ, और तू ज़मीन को देखता है कि वह कभी-कभी अपनी सारी

فَاِذَآ اَنۡزَلۡنَا عَلَيۡهَا الۡمَآءَ اهۡتَزَّتۡ وَرَبَتۡ وَاَنۡۢبَتَتۡ مِنۡ كُلِّ زَوۡجٍۢ بَهِيۡجٍ ۝

शक्ति खो बैठती है। फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह जोश में आ जाती है और बढ़ने लगती है एवं समस्त-प्रकार की सुन्दर खेतियाँ उगाने लगती है।६।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الۡحَـقُّ وَاَنَّهٗ يُحۡىِ الۡمَوۡتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۝

यह इस कारण होता है कि (ज़ाहिर किया जाए कि) अल्लाह ही क़ायम रहने वाली और क़ायम रखने वाली सत्ता है तथा वह मुर्दों को जीवन प्रदान करता है और वह प्रत्येक बात के करने का सामर्थ्य रखता है।७।

وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيۡبَ فِيۡهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبۡعَثُ مَنۡ فِى الۡقُبُوۡرِ ۝

और प्रत्येक वस्तु के लिए जो समय निश्चित है वह अवश्य आ कर रहेगा, इस में रञ्चमात्र भी सन्देह नहीं और अल्लाह निश्चय ही उन को भी जो क़ब्रों में है फिर उठाएगा।८।

وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيۡرِ عِلۡمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيۡرٍ ۝

और लोगों में से कुछ ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह के बारे में बिना ज्ञान, बिना हिदायत तथा बिना किसी रोशन किताब के इस हालत में वाद-विवाद करते हैं।९।

ثَانِىَ عِطۡفِهٖ لِيُضِلَّ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِى الدُّنۡيَا خِزۡىٌ وَّنُذِيۡقُهٗ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ عَذَابَ الۡحَرِيۡقِ ۝

कि वे अपने पहलू मोड़े हुए होते हैं (अर्थात् अभिमान प्रकट करते हैं) ताकि लोगों को अल्लाह की राह से भटका दें। ऐसे लोगों के लिए इस संसार में भी ज़िल्लत होगी और क़ियामत के दिन भी हम जलने वाला अज़ाब पहुँचाएँगे।१०।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتۡ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَـيۡسَ بِظَلَّامٍ

तुम्हारे हाथों ने पहले जो कुछ किया था इस के फलस्वरूप यह बात प्रकट होगी और (इस से विदित होगा) कि अल्लाह

لِّلْعَبِيْدِ ⑩

अपने बंदो पर किसी प्रकार का कदापि अत्याचार नहीं करता।११। (रुकू १/८)

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ٳطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ٳنْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةَ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ⑪

और लोगों में से कुछ ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह की उपासना केवल अनिच्छा से करते हैं। अतः यदि उन्हें कोई लाभ पहुँचे तो वे (इस उपासना पर) प्रसन्न हो जाते हैं और यदि उन्हें कोई कष्ट पहुँचे तो अपने मुँह मोड़ कर फिर जाते हैं। वे संसार में भी हानि में रहते हैं एवं परलोक में भी और यही खुला-खुला घाटा है।१२।

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَ مَا لَا يَنْفَعُهٗ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ⑫

वे अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ को पुकारते हैं जो उन्हें न तो हानि पहुँचाती है और न लाभ ही। यही घोर पथ-भ्रष्टता है।१३।

يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۚ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَ لَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ⑬

वे ऐसे (व्यक्ति) को पुकारते हैं जिस की हानि उस के लाभ से अत्यधिक निकट है। ऐसा स्वामी भी अत्यन्त बुरा है तथा ऐसे साथी भी बहुत बुरे हैं।१४।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ⑭

निस्सन्देह अल्लाह मोमिनों को जो परिस्थिति के अनुसार उचित कर्म भी करते हैं ऐसे बागों में प्रविष्ट करेगा जिन (के छाया) में नहरें बहती हैं। अल्लाह जो चाहे करता है।१५।

مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ

जो व्यक्ति यह विश्वास रखता है कि अल्लाह उस (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम) की कदापि सहायता नहीं करेगा, न इस लोक में तथा न परलोक में, तो उसे चाहिए कि वह एक रस्सी आसमान तक ले जाए (और

فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهُ مَا يَغِيظُ ﴿١٥﴾

उस पर चढ़ जाए) फिर उसे काट डाले[1] फिर वह देखे कि क्या उस का उपाय उस बात को दूर कर देगा जो उसे क्रोध दिला रही है (अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को आसमान से मिलने वाली सहायता एवं विजय) ।१६।

وَكَذٰلِكَ أَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّأَنَّ اللّٰهَ يَهْدِي مَنْ يُّرِيْدُ ﴿١٦﴾

और हम ने इसी प्रकार इस (क़ुर्आन) को खुले-खुले चमत्कार बना कर उतारा है और निश्चय ही अल्लाह जिस के लिए इरादा करता है उसे सही रास्ता दिखा देता है ।१७।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـِٕيْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ أَشْرَكُوْٓا ۖ إِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١٧﴾

निस्सन्देह जो लोग (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर) ईमान लाए तथा वे लोग जो यहूदी बन गए और साबी एवं ईसाई और मजूसी तथा वे लोग भी जिन्हों ने शिर्क को अपनाया निस्सन्देह अल्लाह उन में क़ियामत के दिन निर्णय करेगा। अल्लाह निश्चय ही प्रत्येक वस्तु का निरीक्षक है ।१८।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ۖ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهُ مِنْ

(हे इस्लाम के विरोधी !) क्या तू नहीं देखता कि जो कोई आकाश तथा धरती में है अल्लाह का आज्ञाकारी है और सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, पर्वत, पेड़ एवं चौपाए भी तथा मानव-समाज में से भी बहुत से लोग, किन्तु मानव-समाज में से अधिक संख्या रखने वाला एक गिरोह ऐसा भी है जिस के बारे में अज़ाब का निर्णय हो चुका है और जिसे अल्लाह

1. और पृथ्वी पर गिर जाए, क्योंकि उस की आशा कभी पूरी नहीं होगी। अतएव उस की मौत ही उसे निराशा से बचा सकती है।

مُّكْرِمٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاۗءُ ۝۱۹

अपमानित कर दे उसे कोई सम्मान देने वाला नहीं। अल्लाह जो चाहता है करता है।१९।

هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ۡ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ۭ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ۝۲۰

ये दो परस्पर विरोध करने वाले गिरोह[1] ऐसे हैं जो अपने रब्ब के बारे में झगड़ा कर रहे हैं। अतः जो अल्लाह के गुणों का इन्कार करने वाले हैं उन के लिए आग के वस्त्र बनाए जाएँगे और उन के सिरों पर खौलता हुआ गर्म पानी डाला जाएगा।२०।

يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ۝۲۱

(यहाँ तक कि) उस गर्म पानी के कारण जो कुछ उन के पेट में है वह भी गल जाएगा तथा उन के चमड़े भी (गल जाएँगे)।२१।

وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ۝۲۲

और उन के लिए लोहे के हथौड़े (तय्यार किए जाएँगे)।२२।

كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۤ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝۲۳

जब वे दुःख और चिन्ता के कारण उस अज़ाब से निकलने की कोशिश करेंगे तो फिर उसी की ओर लौटा दिए जाएँगे (और कहा जाएगा) जलाने वाला अज़ाब भोगते चले जाओ।२३। (रुकू २/९)

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۭ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ۝۲۴

अल्लाह निस्सन्देह मोमिनों को जो परिस्थिति के अनुसार कर्म भी करते हैं ऐसे बाग़ों में रखेगा जिन (की छाया) में नहरें बह रही होंगी। उन्हें उस में सोने और मोतियों के जड़ाऊ-कंगन पहनाए जाएँगे तथा उस में उन का पहनावा रेशम का होगा।२४।

1. अर्थात् ईमान लाने वाले तथा इन्कार करने वाले।

وَهُدُوٓا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهُدُوٓا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿٢٥﴾

और उन्हें पवित्र बातों की ओर राह दिखाई जाएगी और प्रशंसा के योग्य अच्छे काम का ढंग बताया जाएगा।२५।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَآءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَن يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾

(किन्तु) वे लोग जो इन्कार करने वाले हैं और अल्लाह की राह से एवं अल्लाह के घर (काबा) की ओर जाने मे रोकते[1] हैं, जिसे हम ने मानव-मात्र के भले के लिए बनाया है, उन के लिए भी जो उस में बैठ कर अल्लाह की उपासना करते हैं और उन के लिए भी जो जंगलों (गाँवों) में निवास करते हैं तथा जो व्यक्ति इस में अत्याचार द्वारा बिगाड़ पैदा करना चाहेगा तो हम उसे पीड़ा-दायक अज़ाब देंगे।२६। (रुकू ३/१०)

وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَن لَّا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا وَطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿٢٧﴾

और (याद कर) जब हम ने इब्राहीम को बैतुल्लाह (काबा) के स्थान पर निवास करने का अवसर प्रदान किया (एवं कहा) कि किसी को हमारा साझी न बनाओ तथा मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों के लिए और खड़े हो कर उपासना करने वालों के लिए तथा रुकू करने वालों के लिए एवं सजद:[2] करने वालों के लिए पवित्र कर।२७।

---

1. मूल शब्द 'अल् आकिफ़' और 'बाद' से यह तात्पर्य है कि बैतुल्लाह (काबा) का द्वार हर-एक व्यक्ति के लिए खुला है, चाहे वह मक्का-निवासी हो या मक्का से बाहर संसार के किसी भी हिस्से का रहने वाला हो। इस में धनवान, निर्धन, पूर्वी-पश्चिमी और काले-गोरे का कोई भेद-भाव नहीं। एक चाकर एक राजा के कंधे से कंधा मिला कर नमाज़ पढ़ सकता है।

2. इस आयत में इस्लामी नमाज़ का चित्र खींचा गया है, जिस में क़ियाम, रुकू और सजद: आदि किया जाता है।

وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّأْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾

और सब लोगों में घोषणा कर दे कि वे हज्ज के इरादे से तेरे पास आया करें, पैदल भी और ऐसी सवारी पर भी जो लम्बी यात्रा के कारण दुबली हो गई हों (ऐसी सवारियाँ) दूर-दूर से गहरे रास्तों से होती हुई आएँगी।२८।

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾

ताकि वे (आने वाले) उन लाभों को देख लें जो उन के लिए (निश्चित किए गए) हैं और कुछ निश्चित दिनों में उन निअमतों के कारण अल्लाह को याद करें, जो उस ने उन्हें दी हैं। (अर्थात्) बड़े जानवरों की क़िस्म से (जैसे ऊँट, गाय आदि)। अतः चाहिए कि वे उन का माँस प्रयोग में लाएँ तथा कष्ट में पड़े हुए लोगों और निर्धनों को खिलाएँ।२९।

ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾

फिर अपनी मैल-कुचैल दूर करें तथा अपनी मनौतियाँ पूरी करें और पुराने घर (काबा) का तवाफ़ (परिक्रमा) करें।३०।

ذٰلِكَ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۗ وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿٣٠﴾

बात यह है कि जो व्यक्ति अल्लाह के निश्चित किए हुए सम्मानित स्थानों का आदर करता है तो यह बात उस के रब्ब के निकट उस के लिए अच्छी होती है। हे मोमिनो! तुम्हारे लिए समस्त चौपाए हलाल ठहराए गए हैं सिवाय उन के जिन का हराम होना क़ुर्आन में वर्णित हो चुका है। अतः चाहिए कि तुम मूर्ति-पूजा के शिर्क से बचो।३१।

حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ۗ وَمَنْ يُّشْرِكْ

और (इसी प्रकार) अपनी उपासना एवं आज्ञाकारिता को केवल अल्लाह के लिए

بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿٣١﴾

विशिष्ट करते हुए झूठ से बचो और तुम किसी को भी अल्लाह का साझी न बनाओ और जो व्यक्ति किसी को अल्लाह का साझी ठहराता है वह आकाश से गिर जाता है तथा पक्षी उसे उचक कर ले जाते हैं और वायु उसे किसी दूसरे स्थान पर फेंक देती है।३२।

ذٰلِكَ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿٣٢﴾

वास्तविकता यह है कि जो व्यक्ति अल्लाह के निर्धारित निशानों का आदर करेगा उस (के इस कर्म) को दिलों का तक़वा ठहराया जाएगा।३३।

لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٣٣﴾

(याद रखो कि) इन क़ुर्बानी के जानवरों से एक समय तक लाभ उठाना तुम्हारे लिए जायज़ है, फिर उन्हें अल्लाह के पुराने घर (काबा) तक पहुँचाना ज़रूरी है।३४। (रुकू ४/११)

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿٣٤﴾

और हम ने प्रत्येक जाति के लिए बलि देने का एक ढंग निश्चित किया है ताकि वे लोग उन चौपायों पर जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान किए हैं अल्लाह का नाम लें। (अतः याद रखो कि) तुम्हारा उपास्य एक ही है। अतः तुम उसी की आज्ञा का पालन करो और जो अल्लाह के लिए विनम्रता प्रकट करने वाले हैं उन्हें शुभ-समाचार सुना दे।३५।

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ

ऐसे लोगों को कि जब उन के सामने अल्लाह का नाम लिया जाता है तो उन के दिल काँप जाते हैं तथा उन लोगों को भी (शुभ-

عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ۝

समाचार सुना दे) जो अपने ऊपर आने वाली विपत्तियों पर धैर्य धारण करते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं एवं हम ने जो कुछ उन्हें दिया है (हमारी प्रसन्नता के लिए) उस में से ख़र्च करते हैं।३६।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ۝

और हम ने क़ुर्बानी के ऊँटों को भी सम्मान के योग्य बनाया है। उन मे तुम्हारे लिए बहुत भलाई है। सो उन्हें पंक्तिबद्ध कर के उन पर अल्लाह का नाम पुकारो और जब उन के पहलू धरती पर लग जाएँ तो उन (के माँस) में से स्वयं भी खाओ तथा उन्हें भी खिलाओ जो अपनी निर्धनता पर धैर्य धारण कर चुके है एवं उन्हें भी खिलाओ जो अपनी निर्धनता के कारण व्याकुल हैं। इसी प्रकार हम ने तुम्हारे लाभ के लिए उन चौपायों को बनाया है ताकि तुम कृतज्ञ बनो।३७।

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ۝

(याद रखो) इन क़ुर्बानियों के माँस तथा रक्त अल्लाह तक नहीं पहुँचते, किन्तु तुम्हारे दिल का तक़वा (संयम) अल्लाह तक पहुँचता है। (वस्तुत:) इस प्रकार अल्लाह ने इन क़ुर्बानियों को तुम्हारी सेवा में लगा दिया है ताकि तुम अल्लाह की हिदायत के कारण उस की बड़ाई का वर्णन करो और तू इस्लाम के आदेशों को पूर्ण-रूप से पूरा करने वालों को शुभ-समाचार दे।३८।

اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ

निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों की ओर से बचाव का सामान करता रहेगा जो ईमान ला चुके हैं। अल्लाह निश्चय ही हर-एक

كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ۝٣٩ ع

ख़यानत करने वाले और इन्कार करने वाले को पसन्द नहीं करता।३९। (रुकू ५/१२)

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۝٤٠

और वे लोग जिन के साथ अकारण युद्ध किया जा रहा है उन्हें भी (अपने बचाव के लिए युद्ध करने की) अनुमति दी जाती है, क्योंकि उन पर अत्याचार किया गया है और अल्लाह उन की सहायता करने का सामर्थ्य रखता है।४०।

الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝٤١

(ये वे लोग हैं) जिन्हें उन के घरों से बिना किसी उचित कारण के केवल इतना कहने पर निकाल दिया गया कि अल्लाह हमारा रब्ब है यदि अल्लाह उन (इन्कार करने वालों) में से कुछ लोगों को दूसरों के द्वारा (शरारत से) न रोकता तो गिरजे एवं यहूदियों के उपासना-गृह और मस्जिदें जिन में अल्लाह के नाम की बहुत स्तुति होती है विनष्ट कर दिए जाते और अल्लाह निश्चय ही उस की सहायता करेगा जो उस (के धर्म) की सहायता करेगा। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा शक्तिशाली और सामर्थ्यवान है।४१।

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝٤٢

ये (अर्थात् स्वदेश त्याग करने वाले मुसलमान) वे लोग हैं कि यदि हम उन्हें संसार में सामर्थ्य प्रदान करें तो वे नमाज़ें क़ायम करेंगे, ज़कात देंगे, भली बातों के करने का आदेश देंगे, बुरी बातों से रोकेंगे और समस्त बातों का परिणाम अल्लाह के हाथ में है।४२।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ﴿٤٢﴾

और यदि (ये शत्रु) तुझे झुठलाते हैं तो इन से पहले नूह की जाति ने भी और आद तथा समूद ने भी।४३।

وَقَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ﴿٤٣﴾

और इब्राहीम की जाति ने भी एवं लूत की जाति ने भी।४४।

وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٤﴾

और मद्यन वालों ने भी (अपने-अपने समय के नबियों को) झुठलाया था तथा मूसा को भी झुठलाया गया था। अतएव मैं ने इन्कार करने वालों को कुछ ढील दी, फिर उन्हें पकड़ लिया। अतः मेरा इन्कार करना कैसा भयानक सिद्ध हुआ।४५।

فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾

और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने इस दशा में नष्ट किया था कि वे अत्याचार कर रही थीं। वे आज अपनी छतों पर गिरी पड़ी हैं और कितने ही कुएं हैं जो बेकार हो चुके हैं तथा कितने ही ऊँचे-ऊँचे दुर्ग हैं जो नष्ट हो चुके हैं।४६।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَاۤ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾

क्या वे धरती में चल फिर कर नहीं देखते ताकि उन्हें ऐसे दिल मिल जाएं जो (इन बातों को) समझने वाले हों या कान मिल जाएं जो (इन बातों को) सुनने वाले हों, क्योंकि वास्तविक बात यह है कि जाहिरी आँखें अन्धी नहीं होती हैं बल्कि दिल अन्धे होते हैं, जो सीनों में हैं।४७।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ۚ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ

ये लोग अज़ाब मांगने में जल्दी करते हैं और अल्लाह अपनी प्रतिज्ञा कदापि झूठी नहीं करता और (कोई-कोई) दिन अल्लाह के पास

مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٨﴾

तुम्हारी गिनती के हज़ार वर्षों के बराबर होता है ।४८।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٩﴾

और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें मैं ने पहले तो ढील दी हालाँकि वे अत्याचार कर रही थीं, फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया और सभी को मेरी ओर ही लौट कर आना है ।४९। (रुकू ६/१३)

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾

तू कह दे कि हे लोगो ! मैं तुम्हारी ओर केवल एक सावधान करने वाले के रूप में आया हूँ ।५०।

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٥١﴾

अतएव जो लोग ईमान लाएँगे और उस (ईमान) के अनुकूल कर्म भी करेंगे, उन्हें (अल्लाह की ओर से) क्षमा और इज़्ज़त वाली रोज़ी मिलेगी ।५१।

وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥٢﴾

और वे लोग जिन्हों ने हमारे निशानों के बारे में (इस उद्देश्य से) प्रयत्न किया कि (वे हमें) असमर्थ बना दें, वे लोग नरक में पड़ने वाले हैं ।५२।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ

और हम ने तुझ से पहले[1] न कोई रसूल भेजा न नबी ही, परन्तु जब भी उस ने कोई इच्छा[2]

1. इस आयत में बताया गया है कि नबी योजनाएँ बनाते हैं और शैतान उन्हें मिटाना चाहते हैं, किन्तु अल्लाह नबियों की योजनाओं को सफल बनाता है तथा शैतान असफल रह जाता है। यह व्यवहार प्रत्येक नबी से हुआ और सब से बढ़ कर हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से हुआ, जो समस्त नबियों के शिरोमणि थे।

2. मूल शब्द 'उम्नियतुन' का अर्थ इच्छा के सिवा इरादा भी होता है। (ताज) तात्पर्य यह है कि हर नबी संसार के सुधार का इरादा करता है, परन्तु शैतान हर-एक नबी की राह में अथवा उस की इच्छा के पूरा होने की राह में बाधाएँ डालता है।

إِذَا تَمَنّٰٓى أَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيٓ أُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٣﴾

की तो शैतान ने उस की इच्छा की राह में रोड़े अटकाए। फिर अल्लाह उस को जो शैतान डालता है मिटा देता है और जो उस के अपने चमत्कार होते हैं उन्हें पक्का कर देता है और अल्लाह बहुत जानने वाला और हिक्मत वाला है ।५३।

لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَإِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ﴿٥٤﴾

परिणाम यह निकलता है कि जो कठिनाइयाँ शैतान डालता है वे उन लोगों के लिए ठोकर का कारण बन जाती हैं जिन के दिलों में बीमारी होती है और जिन के दिल कठोर होते हैं एवं अत्याचारी लोग (अल्लाह की हर बात का) कड़ा विरोध करते हैं ।५४।

وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَإِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٥﴾

और (यह सब कुछ इसलिए होता है) ताकि ज्ञान रखने वाले लोग जान लें कि वह (अर्थात् क़ुर्आन) तेरे रब्ब की ओर से कामिल सच्चाई है और वे उस पर ईमान ले आएँ एवं उन के दिल उस के सामने झुक जाएँ और अल्लाह निश्चय ही मोमिनों को सीधी राह की ओर हिदायत देने वाला है ।५५।

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿٥٦﴾

और इन्कार करने वाले लोग इस (क़ुर्आन) के बारे में उस समय तक सन्देह में पड़े रहेंगे जब कि (विनाश की) घड़ी अचानक आ जाए या उन के पास उस दिन का अज़ाब आ जाए जो अपने पीछे कुछ नहीं छोड़ता ।५६।

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ۗ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۗ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٥٧﴾

उस दिन हुकूमत अल्लाह की ही होगी और वह उन के बीच निर्णय करेगा। अत: वे मोमिन लोग जो ईमान के अनुकूल कर्म भी करते होंगे वे निअमत वाली जन्नतों में निवास करेंगे ।५७।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٥٧﴾

और इन्कार करने वाले लोग तथा हमारी आयतों के झुठलाने वाले तो वे हैं जिन के लिए ज़िल्लत का अज़ाब (निश्चित) है।५८। (रुकू ७/१४)

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٥٩﴾

और वे लोग जो अल्लाह की राह में हिजरत करते हैं, फिर मारे जाते हैं या साधारण मौत से मर जाते हैं, अल्लाह उन्हें उत्तम पुरस्कार देगा और अल्लाह पुरस्कार देने वालों में सब से अच्छा है।५९।

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿٦٠﴾

वह उन्हें अवश्य ऐसे स्थान में दाखिल करेगा जिसे वे पसन्द करेंगे और अल्लाह बहुत जानने वाला एवं बहुत समझ रखने वाला है।६०।

ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦١﴾

यह बात इसी तरह है और जो व्यक्ति उतना ही दण्ड दे जितना कष्ट उसे दिया गया था, परन्तु इस पर भी (उस का शत्रु) उलटा उस पर चढ़ आए तो अल्लाह अवश्य उस की सहायता करेगा। निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बहुत बख़्शने वाला है।६१।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ ﴿٦٢﴾

यह (दण्ड और प्रतिफल का क्रम) इसलिए चलता है कि सिद्ध हो जाए कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल कर देता है तथा दिन को रात में। निस्सन्देह अल्लाह प्रार्थनाओं को बहुत सुनने वाला और (हालात को) बहुत देखने वाला है।६२।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ

यह (प्रार्थनाओं का सुना जाना और हालात से जानकार रहना) इसलिए है कि अल्लाह अपनी

مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾

सत्ता में क़ायम है तथा दूसरे पदार्थों को भी क़ायम रखता है। अतः जिस वस्तु को वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वह नाशवान है और इसलिए कि अल्लाह ही सब से ऊपर है और सब से बड़ा है।६३।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾

क्या तू ने देखा नहीं कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा है जिस से ज़मीन हरी-भरी हो जाती है। निस्सन्देह अल्लाह (अपने बन्दों से) दया का व्यवहार करने वाला है तथा उन की परिस्थितियों को भली-भाँति जानता है।६४।

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾

जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है वह सब उसी का है और निश्चय ही अल्लाह दूसरी सत्ताओं की सहायता से बे-नियाज़ (निःस्पृह) है एवं समस्त स्तुतियों का स्वामी है।६५। (रुकू ८/१५)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۭ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٥﴾

क्या तू ने नहीं देखा कि जो कुछ भी पृथ्वी में है अल्लाह ने उसे तुम्हारे कामों में निःशुल्क लगा रखा है तथा नौकाएँ भी उस के आदेश से समुद्रों में चलती हैं एवं उस ने आकाश[1] को रोक रखा है कि वह उस के आदेश के बिना कहीं धरती पर गिर न जाए। निस्सन्देह अल्लाह लोगों पर कृपा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।६६।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَحْيَاكُمْ ۡ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ

और वही है जिस ने तुम्हें जीवित किया, फिर तुम्हें मौत देगा, फिर तुम्हें जीवित

1. अर्थात् अज़ाब के लिए प्रतिबन्ध लगा दिया है कि वह अल्लाह के विशेष आदेश के बिना न आए।

إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ۝

करेगा। मनुष्य निश्चय ही बड़ा नाशुक्री करने वाला है।६७।

لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُسْتَقِيمٍ ۝

और हम ने प्रत्येक सम्प्रदाय के लिए उपासना की एक विधि निर्धारित कर दी है जिस के अनुसार वे चलते हैं। अत: वे इस (इस्लाम) की विधि के बारे में तुझ से वाद-विवाद न करें (क्योंकि यह अल्लाह की निश्चित की हुई है) और तू उन्हें अपने रब्ब की ओर बुला, क्योंकि तू सीधी राह पर है।६८।

وَإِنْ جَادَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

और यदि वे तुझ से वाद-विवाद करें तो तू कह दे कि अल्लाह तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति जानता है।६९।

اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝

अल्लाह (मेरे और तुम्हारे बीच) उन बातों में क़ियामत के दिन निर्णय करेगा जिन में तुम मतभेद करते हो।७०।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ ذَٰلِكَ فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝

(हे मुहम्मद मुस्तफ़ा!) क्या तुझे ज्ञात नहीं कि अल्लाह प्रत्येक वस्तु को जानता है जो आकाश तथा धरती में है। ये सब कुछ एक किताब में लिखा हुआ है और इस प्रकार (किसी सिद्धान्त को सुरक्षित) कर देना अल्लाह के लिए आसान है।७१।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ۝

और वे लोग अल्लाह के सिवा उन वस्तुओं की उपासना करते हैं जिन (की उपासना) के लिए उस ने कोई प्रमाण नहीं उतारा तथा जिन के बारे में उन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं और अत्याचारियों का कोई भी सहायक नहीं होगा।७२।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِنْ ذَٰلِكُمُ النَّارُ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٢﴾

और जब उस के सामने हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो तू इन्कार करने वाले लोगों के चेहरों पर अप्रसन्नता (के स्पष्ट चिन्ह) देखता है। ऐसा लगता है कि वे उन लोगों पर आक्रमण कर देंगे, जो उन्हें हमारी आयतें पढ़ कर सुना रहे होते हैं। तू कह दे कि क्या मैं तुम्हें इस दशा से भी बढ़ कर एक बुरी दशा की सूचना दूँ? और वह है नरक में पड़ना। अल्लाह ने उस की प्रतिज्ञा इन्कार करने वाले लोगों से की हुई है और वह बुरा ठिकाना है।७३। (रुकू ९/१६)

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَنْقِذُوهُ مِنْهُ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ﴿٧٤﴾

हे लोगो! तुम्हें एक बात बताई जाती है। तुम उसे ध्यान से सुनो। तुम लोग जिन्हें अल्लाह के सिवा पुकारते हो वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकेंगे, भले ही वे सब के सब मिल जाएँ। यदि एक मक्खी उन के सामने से कोई वस्तु उचक ले जाए तो वे उस वस्तु को भी उस से छुड़ा नहीं सकते। यह प्रार्थनाएँ करने वाला भी तथा वह भी जिस से प्रार्थनाएँ की जाती हैं दोनों ही कितने निर्बल हैं।७४।

مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٧٥﴾

उन लोगों ने अल्लाह (के गुणों) का ठीक से अनुमान नहीं लगाया। अल्लाह तो निश्चय ही बड़ा शक्तिशाली और बड़ा ही ग़ालिब (अर्थात् प्रभुत्वशाली) है।७५।

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٧٦﴾

अल्लाह फ़रिश्तों में से अपने रसूल चुनता है तथा मनुष्यों में से भी। अल्लाह बहुत (प्रार्थनाएँ) सुनने वाला एवं (परिस्थितियों को) बहुत देखने वाला है।७६।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۗ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٧٦

उसे उस का भी ज्ञान है जो उन के सामने है तथा उस का भी जो वे पीछे कर आए हैं और समस्त काम उसी की ओर लौटाए जाते हैं ।७७।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝٧٧ السجدة

हे मोमिनो ! रुकू करो, सजदः करो और अपने रब्ब की उपासना करो और नेक काम करो ताकि तुम अपने उद्देश्य को पा सको ।७८।

وَجَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ۗ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِى الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ۗ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ ۗ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۖ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ۗ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝٧٨

और अल्लाह की राह में ऐसा प्रयत्न करो जो परिपूर्ण हो, क्योंकि उस ने तुम्हें गौरव प्रदान किया है तथा धर्म (की शिक्षा) में तुम पर कोई तंगी नहीं डाली । (हे मोमिनो !) तुम अपने पिता इब्राहीम का धर्म (ग्रहण करो, क्योंकि) अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है। इस किताब में भी तथा इस से पहली किताब में भी, ताकि तुम पर रसूल गवाह हो और तुम दूसरे सब लोगों पर गवाह रहो। अतः नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो और अल्लाह को दृढ़ता से पकड़ रखो। वह तुम्हारा स्वामी है। सो वह क्या ही अच्छा स्वामी है और क्या ही अच्छा सहायक है ।७९। (रुकू १०/१७)
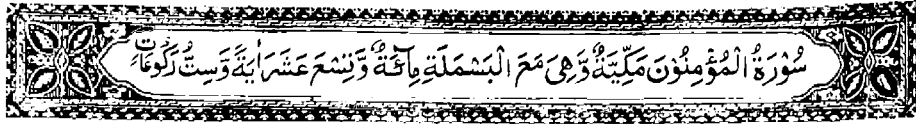
सूरः अल्-मोमिनून

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह् सहित इस की एक सौ उन्नीस आयतें एवं छः रुकू हैं।]

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ①

मैं अल्लाह् का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

قَدۡ اَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ②

कामिल मोमिनों ने अपने उद्देश्य को पा लिया।२।

الَّذِیۡنَ هُمۡ فِیۡ صَلَاتِهِمۡ خٰشِعُوۡنَ ③

वे (मोमिन) जो अपनी नमाज़ों में नम्रता का ढंग अपनाते हैं।३।

وَ الَّذِیۡنَ هُمۡ عَنِ اللَّغۡوِ مُعۡرِضُوۡنَ ④

और जो व्यर्थ बातों से बचते हैं।४।

وَ الَّذِیۡنَ هُمۡ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوۡنَ ⑤

और जो (विधिवत) ज़कात देते हैं।५।

وَ الَّذِیۡنَ هُمۡ لِفُرُوۡجِهِمۡ حٰفِظُوۡنَ ⑥

और जो अपने शर्मगाहों (गुप्त अंगों) की रक्षा करते हैं।६।

اِلَّا عَلٰۤی اَزۡوَاجِهِمۡ اَوۡ مَا مَلَكَتۡ اَیۡمَانُهُمۡ فَاِنَّهُمۡ غَیۡرُ مَلُوۡمِیۡنَ ⑦

सिवाय अपनी पत्नियों के या जिन के मालिक उन के दाहिने[1] हाथ हुए हैं। अतः ऐसे लोगों की किसी प्रकार की कोई निन्दा नहीं की जाएगी।७।

---

1. अर्थात् तुम ने युद्ध के पश्चात् जिन स्त्रियों पर अधिकार पा लिया हो। फिर न तो वे स्वयं स्वतन्त्र हुई हों तथा न दूसरे लोगों ने उन्हें स्वतन्त्र कराया हो अर्थात् तुम्हारे स्वामित्व में आई हुई स्त्रियाँ।

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝٨

और जो लोग इस के सिवा किसी और बात की इच्छा करें तो वे लोग ज़्यादती करने वाले होंगे ।८।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۝٩

और वे लोग (अर्थात् कामिल मोमिन) जो अपनी अमानतों और प्रतिज्ञाओं का ध्यान रखते हैं ।९।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝١٠

और जो लोग अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं ।१०।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۝١١

यही लोग असल वारिस हैं ।११।

الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝١٢

जो फ़िरदौस (स्वर्ग) के वारिस होंगे वे उस में सदैव रहते चले जाएँगे ।१२।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۝١٣

और हम ने मनुष्य को गीली मिट्टी के सत से बनाया ।१३।

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝١٤

फिर उसे एक ठहरने वाले स्थान में वीर्य्य के रूप में रखा ।१४।

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۚ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ

फिर वीर्य्य को प्रगति दे कर ऐसा रूप प्रदान किया कि वह चिपकने वाला एक पदार्थ बन गया, फिर उस चिपकने वाले पदार्थ को माँस की एक बोटी बना दिया, फिर हम ने इस के बाद उस बोटी को हड्डियों के रूप में बदल दिया, फिर हम ने उन हड्डियों पर माँस चढ़ाया । फिर उसे एक और रूप[1] में बदल दिया । अतः बड़ी बरकत वाला

1. अर्थात् पूर्ण रूप से मानव-शरीर का निर्माण कर दिया ।

فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ۝١٥

है वह अल्लाह जो सब से अच्छा पैदा करने वाला है।१५।

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ۝١٦

फिर तुम लोग इस के बाद मरने वाले हो।१६।

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ۝١٧

फिर तुम क़ियामत के दिन उठाए जाने वाले हो।१७।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ۝١٨

और हम ने तुम्हारे ऊपर (के दर्जों के लिए) सात (आध्यात्मिक) पथ बनाए हैं और हम अपनी मख़्लूक़ से ग़ाफ़िल नहीं रहे।१८।

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِى الْاَرْضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ۝١٩

और हम ने आसमान से एक अनुमान के अनुसार पानी उतारा है, फिर उसे ज़मीन में ठहरा दिया तथा हम उसे उठा लेने की भी शक्ति रखते हैं।१९।

فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝٢٠

फिर हम ने तुम्हारे लिए उस से खजूरों और अंगूरों के बाग बनाए। उन में तुम्हारे लिए बहुत से फल (पैदा किए) हैं और उन में से तुम खाते हो।२०।

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ۝٢١

और हम ने तुम्हारे लिए वह पेड़[1] भी उगाया है जो तूरे-सीना से निकलता है जो अपने अन्दर तेल ले कर उगता है एवं खाने वालों के लिए सालन ले कर भी।२१।

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهَا

और तुम्हारे लिए चौपायों में बड़ी शिक्षा (का सामान) है। हम तुम्हें उस वस्तु से

1. यहाँ ज़ैतून के वृक्ष का वृत्तान्त है जिस से तेल निकलता है और वह तेल खाने में भी प्रयोग किया जाता है।

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَّمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٢١﴾

जो उन के पेटों में होती है (दूध) पिलाते हैं एवं उन चौपायों में तुम्हारे लिए और भी अनेक लाभ हैं और तुम उन में से कुछ को खाते भी हो ।२२।

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٢٢﴾ ع

और तुम उन पर तथा नौकाओं पर सवार कराए जाते हो ।२३। (रुकू १/१)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٢٣﴾

और हम ने नूह् को उस की जाति के लोगों की ओर भेजा। उस ने कहा कि हे मेरी जाति के लोगो ! अल्लाह् की उपासना करो। उस के सिवा तुम्हारा और कोई उपास्य नहीं। क्या तुम उस के लिए संयम धारण नहीं करते ।२४।

فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۚۖ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾

इस पर उस की जाति में से इन्कार करने वालों के सरदारों ने कहा कि यह व्यक्ति तो केवल तुम्हारे जैसा एक मनुष्य है जो चाहता है कि तुम्हारे ऊपर प्रधानता प्राप्त करे। यदि अल्लाह् पैग़म्बर भेजना चाहता तो फ़रिश्तों को उतारता। हम ने अपने पहले बाप-दादों में तो इस प्रकार की कोई बात नहीं सुनी ।२५।

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٢٥﴾

यह तो केवल एक मनुष्य है जिसे जुनून (उन्माद) हो गया है। अतः कुछ समय इस के परिणाम की प्रतीक्षा करो ।२६।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٢٦﴾

(इस पर नूह् ने) कहा कि हे मेरे रब्ब ! मेरी सहायता कर, क्योंकि ये लोग मुझे झुठलाते हैं ।२७।

فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَ وَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ۝٢٨

अतः हम ने उस की ओर वह्य की कि (हम ने तुझे जिस) नौका (के बनाने का आदेश दिया है उस) को हमारी आँखों के सामने और हमारे वह्य के अनुसार बना। सो जब हमारा (अज़ाब का) आदेश आ जाए और धरती का स्रोत फूट पड़े तो उस नौका में समस्त जानवरों का एक-एक जोड़ा (जिस का हम आदेश दें) रख ले और अपने परिवार के लोगों को भी सवार कर दे सिवा उन के जिन के विरुद्ध हमारा आदेश पहले से उतर चुका है और जिन्हों ने अत्याचार किया है उन के बारे में मुझ से कोई बात न कर, क्योंकि वे तो अवश्य डुबो दिए जाएँगे।२८।

فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰىنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٢٩

सो जब तू और तेरे साथी नौका में अच्छी तरह से बैठ जाएँ तो तुम में से हर-एक यह कहे कि समस्त स्तुतियों का अधिकारी अल्लाह ही है जिस ने हमें अत्याचारी लोगों से छुटकारा दिलाया।२९।

وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ۝٣٠

और (नौका से उतरते समय) कह कि हे मेरे रब्ब! तू मुझे (इस नौका से) ऐसी हालत में उतार कि मेरे ऊपर बहुत सी बरकतें उतर रही हों, क्योंकि सभी उतारने वालों में से तू सब से अच्छा है।३०।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ۝٣١

इस में बहुत से निशान हैं और हम निश्चय ही बन्दों की परीक्षा लेने वाले हैं।३१।

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝٣٢

फिर हम ने उन के बाद कई और जातियाँ पैदा कीं।३२।

فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ

और हम ने उन्हीं में से उन के लिए रसूल (यह सन्देश देते हुए) भेजा कि अल्लाह की उपासना करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई दूसरा उपास्य नहीं। क्या तुम उस के द्वारा अपने-आप को विनाश से बचाते नहीं ? ।३३। (रुकू २/२)

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ

और इस (नए रसूल) की जाति में से जिन्होंने इन्कार किया था एवं मरने के बाद अल्लाह से मिलने का भी इन्कार किया था तथा जिन्हें हम ने इस लोक में धनवान बनाया उन के सरदारों ने कहा कि यह तो तुम्हारे जैसा एक मनुष्य है। उन्हीं (पदार्थों) में से खाता है जो तुम खाते हो और उन्हीं (पानियों) में से पीता है जो तुम पीते हो ।३४।

وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ

और यदि तुम अपने जैसे एक व्यक्ति की बात मानोगे तो तुम घाटा पाने वालों में से हो जाओगे ।३५।

اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ

क्या वह तुम से यह प्रतिज्ञा करता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी हो जाओगे तथा हड्डियाँ बन जाओगे तो तुम (पुन: जीवित कर के) निकाले जाओगे ? ।३६।

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ

जिस बात की तुम से प्रतिज्ञा की जाती है वह बुद्धि-संगत नहीं है और वह मानने की बात नहीं है ।३७।

اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ

हमारा जीवन तो केवल इसी संसार का जीवन है। कभी तो हम मौत की अवस्था में होते हैं और कभी जीवित अवस्था में तथा हम

بِمَبْعُوْثِيْنَ ۝

मरने के पश्चात् दोबारा कभी नहीं उठाए जाएँगे ।३८।

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ اِفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝

यह तो केवल एक अकेला व्यक्ति है जो अल्लाह पर झूठ गढ़ता है और हम इस (की बातों) को कभी नहीं मानेंगे ।३९।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ۝

(इस पर) उस ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! इन लोगों ने मुझे झुठला दिया है । अतः तू मेरी सहायता कर ।४०।

قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ۝

(तब अल्लाह ने) कहा कि ये लोग थोड़े ही समय में लज्जित हो जाएंगे ।४१।

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

और उन्हें एक अज़ाब ने पकड़ लिया जिस के बारे में पक्की सूचना दी गई थी तथा हम ने उन्हें कूड़ा-करकट बना दिया (और फ़रिश्तों को आदेश दिया कि) अत्याचारियों के लिए अल्लाह की धिक्कार (नियत कर दो) ।४२।

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ۝

फिर उन के बाद हम ने कई और जातियाँ पैदा की ।४३।

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝

कोई जाति अपने समय से आगे नहीं बढ़ती और न उस समय से पीछे रह (कर बच) सकती है ।४४।

ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۭ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا

फिर हम ने लगातार अपने रसूल भेजे । जब कभी किसी जाति के पास उस का रसूल आता था तो वे उसे झुठलाते थे । सो हम उन्हीं में से कुछ लोगों को कुछ दूसरे लोगों के पीछे भेजते चले जाते थे (अर्थात् उन का सर्वनाश करते चले जाते थे) तथा हम ने उन

وَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٥﴾	सब को गुज़रे हुए ज़माने की कहानियाँ[1] बना कर रख दिया (और उन के बारे में फ़रिश्तों को आदेश दिया कि) जो लोग ईमान नहीं लाए उन के लिए अल्लाह की फटकार (नियत कर दो) ।४५।
ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ەۙ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٦﴾	उस के पश्चात् हम ने मूसा और उस के भाई हारून को अपने निशान तथा खुला-खुला प्रभुत्व दे कर भेजा ।४६।
اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَائِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ﴿٤٧﴾	फ़िरऔन और उस के सरदारों की ओर। अतः उन्हों ने अभिमान किया तथा वे उद्दण्डी लोगों में से बन गए ।४७।
فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿٤٨﴾	फिर उन्हों ने कहा कि क्या हम अपने जैसे दो व्यक्तियों पर ईमान लाएँ ? जब कि इन दोनों की जाति हमारी ग़ुलामी कर रही है ।४८।
فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿٤٩﴾	अतः उन्हों ने उन दोनों (मूसा और हारून) को झुठला दिया। परिणाम यह निकला कि वे भी विनाश होने वाले लोगों में से बन गए ।४९।
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٥٠﴾	और हम ने मूसा को (वह) किताब दी (जिस को सब जानते हैं) ताकि वह (और उस की जाति) हिदायत पाएँ ।५०।
وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى	और हम ने मर्यम के पुत्र और उस की माँ को एक निशान बनाया तथा हम ने उन दोनों को एक ऊँचे[2] स्थान पर शरण दी जो रहने

1. अर्थात् उन का नाम-निशान संसार में न रहा।

2. इतिहास में सिद्ध हो चुका है यह ऊँचा स्थान कश्मीर था। बाइबिल, यहूदियों और हिन्दुओं के ऐतिहासिक ग्रन्थों के उल्लेखों से इस बात की पुष्टि होती है।

رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿٥١﴾ ع

के योग्य और बहते हुए पानियों वाली थी।५१। (रुकू ३/३)

يَاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٥٢﴾

(और हम ने कहा कि) हे रसूलो ! पवित्र पदार्थों में से खाओ तथा परिस्थिति के अनुकूल कर्म करो और जो तुम करते हो मैं उसे जानता हूँ।५२।

وَاِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿٥٣﴾

और तुम्हारा यह गिरोह (अर्थात् नबियों का) एक ही गिरोह है और मैं तुम्हारा रब्ब हूँ। अतः तुम विनाश से बचने के लिए मुझे अपने लिए ढाल बनाओ।५३।

فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٤﴾

जिस पर उन्हों ने (अर्थात् इन्कार करने वालों ने) शरीअत को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और प्रत्येक गिरोह ने जो टुकड़ा अपने लिए पसन्द किया उस पर गर्व करने लग गया।५४।

فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٥٥﴾

अतएव तू उन्हें एक समय तक अपनी भूल में पड़ा रहने दे।५५।

اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿٥٦﴾

क्या वे यह विचार करते हैं कि हमारा उन्हें धन और पुत्रों से सहायता देना।५६।

نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٧﴾

उन्हें भले कामों में शीघ्रता से बढ़ा देना है ? (ऐसा नहीं) अपितु वे (वास्तविकता को) समझते नहीं।५७।

اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿٥٨﴾

वे लोग जो अपने रब्ब के डर से काँपते हैं।५८।

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٩﴾

और वे लोग जो अपने रब्ब की आयतों पर ईमान लाते हैं।५९।

وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ۝٦٠

और जो अपने रब्ब का किसी को साझी नहीं ठहराते ।६०।

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوا وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ۝٦١

और जो (अल्लाह के दिए हुए) धन-दौलत (निर्धनों के लिए) ख़र्च करते हैं तथा उन के दिल इस बात से डरते रहते हैं कि उन्हें एक दिन लौट कर अपने रब्ब के पास जाना होगा ।६१।

أُولَٰئِكَ يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ۝٦٢

यही लोग नेकियों में जल्दी करने वाले हैं और वे उन (नेकियों) की ओर आपस में एक-दूसरे से आगे बढ़ते जा रहे हैं ।६२।

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝٦٣

और हम किसी जान के जिम्मे उस की शक्ति से अधिक काम नहीं डालते और हमारे पास कर्मों की एक सूची है जो सच्ची-सच्ची बात को स्पष्ट कर देती है और उन पर कोई अत्याचार नहीं किया जाएगा ।६३।

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمْرَةٍ مِّنْ هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِّن دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَامِلُونَ ۝٦٤

किन्तु उन के दिल तो उस शिक्षा के बारे में ग़फ़लत में पड़े हुए हैं तथा उस के सिवा उन के और भी बहुत से (बुरे) कर्म हैं जो वे कर रहे हैं ।६४।

حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِم بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْأَرُونَ ۝٦٥

यहाँ तक कि जब हम उन में से धनवान लोगों को अज़ाब में पकड़ लेते हैं तो अचानक वे फ़रियाद करने लग जाते हैं ।६५।

لَا تَجْأَرُوا الْيَوْمَ إِنَّكُم مِّنَّا لَا تُنصَرُونَ ۝٦٦

(उस समय हम उन्हें कहते हैं) आज फ़रियाद न करो । हमारी ओर से तुम्हें कोई सहायता नहीं पहुँचेगी ।६६।

قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ۝

तुम्हें मेरी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती थीं, परन्तु तुम उन की ओर ध्यान न दे कर बे-परवाही करते हुए ।६७।

مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖۗ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ۝

और व्यर्थ बातें करते हुए तथा उस से मुँह मोड़ते हुए अपनी एड़ियों के बल फिर जाया करते थे ।६८।

اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝

क्या इन लोगों ने इस कलाम (क़ुर्आन) पर विचार नहीं किया अथवा उन्हें वह (वादा) मिल गया है जो इन के पूर्वजों को नहीं मिला था ।६९।

اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝

और क्या उन्हों ने अपने रसूल को नहीं पहचाना जिस के कारण वह उस का इन्कार कर रहे हैं ? ।७०।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ۝

क्या वे कहते हैं कि उसे जनून (उन्माद) है ? (परन्तु ऐसी बात नहीं) अपितु वह उन के पास हक़ (सच्चाई) ले कर आया है और उन में से बहुत से लोग उस हक़ को पसन्द नहीं करते ।७१।

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝

और यदि हक़ उन की मनोकामनाओं के पीछे चलता तो आसमान और ज़मीन और जो उस के अन्दर निवास करते हैं सब नष्ट हो जाते । वास्तविकता यह है कि हम उन के पास उन के सम्मान का सामान ले कर आए हैं, किन्तु वे अपने सम्मान के सामानों से मुँह मोड़ रहे हैं ।७२।

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖۗ وَّهُوَ خَيْرُ

क्या तू उन से कोई तावान (अर्थात् दण्ड) माँगता है ? (ऐसा नहीं हो सकता) क्योंकि

الرّٰزِقِيْنَ ۝

तेरे रब्ब का दिया हुआ धन बहुत अच्छा है और वह (रब्ब) अच्छी से अच्छी रोज़ी देने वाला है।७३।

وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

और तू उन्हें सीधी राह की ओर बुलाता है।७४।

وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ۝

और जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते वे (सच्चे) रास्ते से हटने वाले हैं।७५।

وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝

और यदि हम उन पर दया कर तथा जो कष्ट उन्हें पहुँच रहा है उसे दूर कर दें तो वे अपनी शरारत में और भी बढ़ जाएँ।७६।

وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ۝

और हम ने उन्हें कड़े अज़ाब में जकड़ रखा है, फिर भी वे अपने रब्ब के सामने विनम्रता से नहीं झुके और न ही उस के सामने गिड़गिड़ाए।७७।

حَتّٰۤى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ۝ ع

यहाँ तक कि जब हम उन पर एक कड़ा अज़ाब का द्वार खोल देंगे तो वे निराश हो कर बैठ जाएँगे।७८। (रुकू ४/४)

وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْئِدَةَ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝

और वह अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए कान, आँखें और दिल पैदा किए हैं, किन्तु तुम लेश-मात्र भी धन्यवाद नहीं करते।७९।

وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝

और वही है जिस ने धरती में तुम्हें फैला दिया है तथा फिर तुम उस की ओर इकट्ठे किए जाओगे।८०।

وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَ

और वही है जो तुम्हें जीवित करता है तथा वही तुम्हें मारेगा और रात-दिन का आगे-

النَّهَارِ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٨١

पीछे आना उसी के अधिकार में है। क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?।८१।

بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٨٢

वास्तविकता यह है कि वे वही बात कहते हैं जो उन से पहले लोगों ने कही थी।८२।

قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝٨٣

उन्हों ने कहा था कि क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी हो जाएँगे तथा हड्डियाँ बन जाएँगे तो हम फिर उठाए जाएँगे ?।८३।

لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨٤

हम से और हमारे पूर्वजों से भी इसी बात की प्रतिज्ञा इस से पहले की गई थी (परन्तु कभी ऐसा नहीं हुआ)। ये तो केवल पहले लोगों की कहानियाँ हैं।८४।

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٨٥

तू कह दे कि यदि तुम्हें ज्ञान हो तो (बताओ) यह सारी ज़मीन तथा जो कुछ इस में है किस का है ?।८५।

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٨٦

निस्सन्देह वे (इस के उत्तर में) कहेंगे अल्लाह का। इस पर तू कह दे कि क्या तुम समझ से काम नहीं लेते ?।८६।

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝٨٧

तू उन से कह दे कि सातों आसमानों और बड़े अर्श (अर्थात् सिंहासन) का रब्ब कौन है ?।८७।

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٨٨

वे तुरन्त कहेंगे कि (ये सब) अल्लाह के हैं। तू कह दे कि क्या फिर भी तुम (उस अल्लाह की सहायता ले कर विनाश से) बचने की कोशिश नहीं करते ?।८८।

قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا

तू कह दे कि हर चीज़ की बादशाही किस के हाथ में है और वह सब को शरण देता

يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

है। हाँ! उस के अज़ाब के ख़िलाफ़ दूसरा कोई शरण नहीं दे सकता। यदि तुम जानते हो (तो इसे समझ सकते हो) ।८९।

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ فَأَنَّى تُسْحَرُونَ ۝

वे (यह प्रश्न सुन कर) तुरन्त कहेंगे, ये सब कुछ अल्लाह के अधिकार में है। इस पर तू कह दे कि फिर तुम्हें धोखा दे कर किधर ले जाया जा रहा है? ।९०।

بَلْ أَتَيْنَاهُمْ بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

वास्तव में हम उन के पास हक़ (सच्चाई) लाए हैं और वे निश्चय ही उस का इन्कार करने वाले हैं ।९१।

مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَٰهٍ إِذًا لَذَهَبَ كُلُّ إِلَٰهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝

अल्लाह ने किसी को पुत्र नहीं बनाया और न उस के साथ कोई उपास्य ही है (यदि ऐसा होता तो) हर-एक उपास्य अपने पैदा किए हुए पदार्थों को अलग कर के ले जाता तथा उन में से कुछ उपास्य दूसरों पर हल्ला बोल देते। जो बातें वे करते हैं अल्लाह उन से पवित्र है ।९२।

عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

उसे परोक्ष का भी ज्ञान है तथा अपरोक्ष का भी। अतः जिन्हें वे उस का साझी ठहराते हैं उन से वह बहुत ऊँचा है ।९३। (रुकू ५/५)

قُلْ رَبِّ إِمَّا تُرِيَنِّي مَا يُوعَدُونَ ۝

तू कह दे कि हे मेरे रब्ब! यदि तू मुझे मेरे जीवन में वह कुछ दिखा दे जिस की उन से प्रतिज्ञा की जा रही है ।९४।

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

तो हे मेरे रब्ब! तू मुझे अत्याचारी जाति के लोगों में से न बनाइयो ।९५।

وَإِنَّا عَلَىٰٓ أَن نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَٰدِرُونَ ۝٩٥

और हम इस बात का सामर्थ्य रखते हैं कि उन से जो वादा करते हैं वह तुझे दिखा[1] दें ।९६।

ٱدْفَعْ بِٱلَّتِى هِىَ أَحْسَنُ ٱلسَّيِّئَةَ ۚ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ۝٩٦

तू उन की बुरी बातों को ऐसी (जवाबी) बातों से दूर कर जो अत्यन्त सुन्दर हों। हम उन की बातों को खूब जानते हैं ।९७।

وَقُل رَّبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَٰتِ ٱلشَّيَٰطِينِ ۝٩٧

और तू कह दे कि हे मेरे रब्ब ! मैं शरारती लोगों की शरारत से तेरी शरण चाहता हूँ ।९८।

وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَن يَحْضُرُونِ ۝٩٨

और हे मेरे रब्ब ! मैं तेरी शरण चाहता हूँ उस से भी कि वे मेरे सामने आ जाएँ ।९९।

حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَ أَحَدَهُمُ ٱلْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ٱرْجِعُونِ ۝

और उस समय जब उन में से किसी को मौत आ जाएगी, वह कहेगा कि हे मेरे रब्ब ! मुझे (संसार में) वापस लौटा दे, मुझे वापस लौटा दे, मुझे वापस लौटा दे ।१००।

لَعَلِّىٓ أَعْمَلُ صَٰلِحًا فِيمَا تَرَكْتُ ۚ كَلَّآ ۚ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ۖ وَمِن وَرَآئِهِم بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ

ताकि मैं (उस स्थान में) जिस को मैं छोड़ आया हूँ (अर्थात् संसार में) परिस्थिति के अनुसार कर्म करूँ (परन्तु ऐसा कदापि नहीं हो सकता)। यह केवल एक मौखिक बात है जिसे वे कह रहे हैं और उन के पीछे एक पर्दा[2]

1. अर्थात् तेरे जीवन में अज़ाब का वादा पूरा कर दें।

2. इस से यह अभिप्राय नहीं कि पुनरुत्थान के दिन इसी स्थान में लौटाए जाएंगे, अपितु अभिप्राय यह है कि उस दिन तो परलोक की अन्तिम समस्या आरम्भ हो जाएगी, वापस लौटने का प्रश्न ही पैदा न होगा और उस दिन तक उन की आत्माओं के वापस लौटने की राह में अल्लाह ने रोक बना रखी है अर्थात् मुर्दे जीवित हो कर इस संसार में लौट कर आ ही नहीं सकते। अब वे लोग विचार करें जो यह कहते हैं 'वली' तथा 'नबी' मुर्दों को जीवित कर दिया करते हैं।

يُبْعَثُوْنَ ۝١٠٠

है जो उस दिन तक पड़ा रहेगा जब कि वे पुनः उठाए जाएँगे। (अतः वे जीवित कर के पुनः इस संसार में नहीं लौटाए जाएँगे)।१०१।

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَلَآ أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ۝١٠١

फिर जब बिगुल फूँका जाएगा तो उस दिन उन के बीच नातेदारी का कोई भी सम्बन्ध नहीं रह जाएगा तथा न वे एक-दूसरे का हाल पूछेंगे।१०२।

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝١٠٢

जिन के कर्मों का बोझ भारी हो जाएगा वे लोग सफल होंगे।१०३।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَأُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا أَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ۝١٠٣

और जिन के बोझ हल्के हो जाएँगे वे लोग घाटे में पड़ेंगे (और अपनी जानों का विनाश करेंगे) तथा नरक में सदा रहेंगे।१०४।

تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ۝١٠٤

उन के मुँहों को आग झुलस देगी और उस में उन का मुँह काला हो जाएगा।१०५।

أَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ۝١٠٥

(और कहा जाएगा कि) क्या तुम्हारे सामने मेरी आयतें नहीं पढ़ी जाती थीं और तुम उन का इन्कार नहीं किया करते थे? ।१०६।

قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ۝١٠٦

वे कहेंगे कि हे हमारे रब्ब! हमारा दुर्भाग्य हम पर छा गया था और हम एक पथभ्रष्ट सम्प्रदाय थे।१०७।

رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظٰلِمُوْنَ ۝١٠٧

हे हमारे रब्ब! हमें इस नरक से निकाल। सो यदि हम (इन पापों की ओर) फिर लौटें तो हम अत्याचारी होंगे।१०८।

قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ۝١٠٨

(अल्लाह) कहेगा कि दूर हो जाओ और) नरक में चले जाओ तथा मुझ से बात न करो।१०९।

إِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ۝١٠٩

बात यह है कि मेरे बन्दों में से एक गिरोह ऐसा था जो कहता था कि हे हमारे रब्ब ! हम ईमान लाए हैं। अतः तू हमें क्षमा कर और हम पर दया कर और तू सब दया करने वालों में से अच्छा है।११०।

فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰىٓ اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ۝١١٠

परन्तु तुम ने उन्हें हँसी का निशाना बना लिया यहाँ तक कि उन्हों ने (तुम्हारे मनो-रञ्जन का पात्र बन कर) तुम को मेरी याद भुला दी और तुम उन से सदा हँसी करते रहे।१११।

إِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝١١١

मैं उन्हें उन के धैर्य के कारण आज उचित बदला दूँगा। निस्सन्देह वे सफल होंगे।११२।

قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ۝١١٢

फिर वह (अल्लाह) कहेगा कि तुम कितने वर्ष ज़मीन में रहे हो ?।११३।

قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ الْعَآدِّيْنَ ۝١١٣

वे कहेंगे कि हम एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा ज़मीन में रहे हैं। तू गिनने वालों से पूछ ले।११४।

قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝١١٤

(इस पर अल्लाह) कहेगा कि यदि तुम बुद्धि से काम लो तो बहुत थोड़ा[1] समय रहे हो।११५।

---

1. पारलौकिक-जीवन की अपेक्षा सांसारिक-जीवन अत्यन्त थोड़ा है और दुःखों से भरा होने के कारण सुख का समय और भी थोड़ा प्रतीत होता है।

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۶﴾

क्या तुम यह समझा करते थे कि हम ने तुम्हें किसी उद्देश्य के बिना पैदा किया है और तुम हमारी ओर लौटाए नहीं जाओगे ? ।११६।

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿۱۱۷﴾

सो अल्लाह बड़ी समझ वाला, बादशाह, क़ायम रखने वाला और क़ायम रहने वाला है। उस के सिवा कोई उपास्य नहीं। वह अर्शे करीम[1] का रब्ब है ।११७।

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۱۸﴾

और जो कोई अल्लाह के सिवा किसी दूसरे उपास्य को पुकारे जिस की (सत्यता पर) कोई युक्ति नहीं, तो उस का लेखा उस के रब्ब के पास है। वास्तविकता यह है कि इन्कार करने वाले लोग कभी सफल नहीं होते ।११८।

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ ع

और तू कह दे कि हे मेरे रब्ब ! क्षमा कर तथा दया कर और तू सब से बढ़ कर दया करने वाला है ।११९। (रुकू ६/६)

---

1. अर्शे करीम :—इज़्ज़त वाला तख़्त, महिमाशाली सिंहासन।
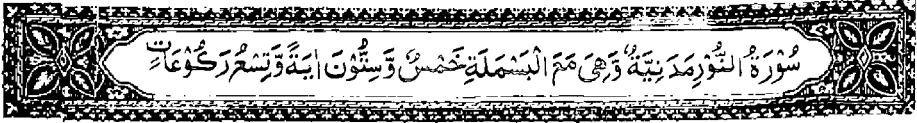
सूरः अल्-नूर

[यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की पैंसठ आयतें एवं नौ रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ⓵

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ⓶

यह एक ऐसी सूरः है जो हम ने उतारी है और जिस पर चलना हम ने फ़र्ज़ (अनिवार्य) किया है और इस में हम ने रोशन आदेश वर्णन किए हैं ताकि तुम सदुपदेश ग्रहण करो।२।

اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۖ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ⓷

व्यभिचार करने वाली स्त्री और व्यभिचार करने वाला पुरुष (यदि उन पर आरोप सिद्ध हो जाए) तो उन में से हर-एक को एक सौ कोड़े लगाओ और यदि तुम अल्लाह तथा क़ियामत के दिन पर ईमान लाते हो तो अल्लाह के आदेश को पूरा करने में इन दोनों प्रकार के अपराधियों के बारे में तुम्हें तरस न आए और चाहिए कि इन दोनों के दण्ड को मोमिनों का एक गिरोह देखे।३।

اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۖ وَّالزَّانِيَةُ

और एक व्यभिचारी (पुरुष) व्यभिचारिणी या शिर्क करने वाली (स्त्री) के सिवा किसी से सम्भोग नहीं करता और न व्यभिचारिणी

لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

(स्त्री) व्यभिचारी अथवा शिर्क करने वाले (पुरुष) के सिवा किसी दूसरे से सम्भोग[1] करती है और मोमिनों पर यह बात हराम ठहराई गई है ।४।

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝

और जो लोग नेक पतिव्रता स्त्रियों पर आरोप लगाते हैं, फिर चार गवाह नहीं ला सकते तो (उन का दण्ड यह है कि) उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ और उन की गवाही कभी स्वीकार न करो तथा वे लोग (अपने इस कुकर्म के कारण इस्लामी शरीअत के) अवज्ञाकारी हैं ।५।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

सिवाय उन लोगों के जो बाद में तौबः कर लें और सुधार कर लें । (सो ऐसा करने पर) अल्लाह निश्चय ही बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है ।६।

---

1. मूल शब्द 'निकाह' से अभिप्राय वह घोषणा ली जाती है जो इस्लामी शरीअत के अनुसार एक पुरुष तथा एक स्त्री को जोड़ा बनाने के बारे में की जाती है, किन्तु अरबी में निकाह का अर्थ प्रायः स्त्री-पुरुष का परस्पर सम्भोग करना होता है । इस अर्थ को दृष्टि में न रख कर लोगों ने इस आयत का हास्यप्रद अर्थ किया है । इस का सीधा-सादा अर्थ यह है कि जब कोई पुरुष व्यभिचारिणी से सम्भोग करेगा तो वह व्यभिचारी ही होगा । उस स्त्री का पति नहीं हो सकता । यदि पति हो तो स्त्री व्यभिचारिणी नहीं होगी । इसी प्रकार इस के विपरीत बात है । वह स्त्री उसी दशा में व्यभिचारिणी कहला सकती है जब कि वह अपने पति को छोड़ कर किसी दूसरे पुरुष से सम्भोग करे और जब एक पराई स्त्री एक पराए पुरुष से सम्भोग करेगी तो वह पुरुष व्यभिचारी तथा वह स्त्री व्यभिचारिणी कहलाएंगे । यह बात स्वाभाविक घटनाओं के विरुद्ध है कि व्यभिचारिणी से व्यभिचारी के सिवा दूसरा कोई पुरुष विवाह नहीं करेगा । संसार में हज़ारों प्रमाण इस के विरुद्ध मिलते हैं कि कई लोग वेश्याओं से इस लिए विवाह कर लेते हैं कि उन स्त्रियों का सुधार हो जाए और बाद में वे पश्चाताप कर के सुधर भी जाती हैं, परन्तु विवाह के समय तक वे व्यभिचारिणी ही कहलाती है ।

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑦

और जो लोग अपनी पत्नियों पर आरोप लगाते हैं तथा उन के पास अपने-आप के सिवा और कोई गवाह नहीं होता तो ऐसे व्यक्तियों में से हर-एक को ऐसी गवाही देनी चाहिए जो अल्लाह की क़सम के साथ चार गवाहियों पर आधारित हो तथा हर-एक गवाही में वह यह कहे कि वह सच्चों में से है ।७।

وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ⑧

और पाँचवीं (गवाही) में कहे कि यदि वह झूठों में से हो तो उस पर अल्लाह की फटकार हो ।८।

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ⑨

और वह पत्नी (जिस पर उस का पति आरोप लगाए) चार गवाहियों द्वारा जो क़सम खा कर दी गई हों अपने-आप से अज़ाब को यह कहते हुए दूर करे कि वह (पति) झूठा है ।९।

وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑩

और पाँचवीं (क़सम) इस प्रकार (खाए) कि अल्लाह का अज़ाब उस स्त्री पर पड़े, यदि वह (आरोप लगाने वाला पति) सच्चा है ।१०।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ⑪ ع

और यदि अल्लाह की कृपा तथा उस की दयालुता तुम पर न होती और ऐसा न होता कि अल्लाह बहुत कृपा करने वाला एवं बड़ी हिक्मतों वाला है (तो तुम लोग नष्ट हो जाते) । ११। (रुकू १/७)

اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ لَا تَحْسَبُوْهُ

वे लोग जिन्हों ने एक बहुत बड़ा झूठा कलंक लगाया था, तुम ही में से एक गिरोह है ।

شَرًّا لَّكُمْ ۚ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُم مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ ۚ وَالَّذِي تَوَلَّىٰ كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٢﴾

तुम उसे अपने लिए बुरा न समझो अपितु वह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा था (क्योंकि उस के कारण तुम्हें हिक्मत से भरी हुई एक शिक्षा मिल गई)। उन में से हर-एक व्यक्ति को जिस मात्रा में उस ने पाप किया था उस का दण्ड मिल जाएगा तथा जो व्यक्ति उस पाप के बड़े भाग का उत्तरदायी था उसे बहुत बड़ा अज़ाब मिलेगा।१२।

لَّوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هَٰذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ﴿١٣﴾

जब तुम ने यह बात सुनी थी तो मोमिन पुरुषों तथा मोमिन महिलाओं ने क्यों न अपनी जाति के सम्बन्ध में अच्छा विचार किया तथा यह न कह दिया कि यह तो एक बहुत बड़ा झूठ है।१३।

لَّوْلَا جَاءُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ ۚ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ فَأُولَٰئِكَ عِندَ اللَّهِ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٤﴾

और वे (झूठ फैलाने वाले) लोग क्यों न इस पर चार गवाह लाए? अत: जब कि वे चार गवाह नहीं लाए तो वे अल्लाह के निर्णय के अनुसार झूठे हैं।१४।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾

और यदि तुम्हारे ऊपर अल्लाह की दया एवं कृपा इस लोक तथा परलोक में न होती तो तुम्हें इस काम के कारण जिस में तुम पड़ गए थे बहुत बड़ा अज़ाब पहुँचाता।१५।

إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُم مَّا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا وَهُوَ عِندَ اللَّهِ عَظِيمٌ ﴿١٦﴾

इस कारण से कि तुम आपस में एक-दूसरे की ज़बान से इस झूठ को सीखने लग गए तथा अपने मुँहों से वह बात कहने लग गए जिस का तुम्हें कोई ज्ञान नहीं था (अल्लाह तुम पर नाराज़ हुआ) और तुम उस बात को एक साधारण सी बात समझते थे, हालाँकि वह अल्लाह के निकट बहुत बड़ी थी।१६।

وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾

और (ऐसा) क्यों न हुआ कि जब तुम ने उस बात को सुना था तो तुरन्त यह कह देते कि यह हमारा काम नहीं कि हम इस बात को आगे दुहराएँ। हे अल्लाह ! तू पवित्र है। यह तो बहुत बड़ा झूठा आरोप है।१७।

يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٨﴾

यदि तुम मोमिन हो तो अल्लाह तुम्हें इस प्रकार की बात करने से सदा के लिए रोकता है।१८।

وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٩﴾

और अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अनुदेश वर्णन करता है और अल्लाह बहुत जानने वाला एवं हिक्मत वाला है।१९।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٠﴾

निस्सन्देह वे लोग जो यह चाहते हैं कि मोमिनों[1] में बुराई फैल जाए, उन के लिए इस लोक में भी तथा परलोक में भी एक बड़ा पीड़ा-दायक अज़ाब है और अल्लाह जानता है तथा तुम नहीं जानते।२०।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢١﴾ ع

और यदि अल्लाह की कृपा तथा दयालुता तुम पर न होती एवं अल्लाह बहुत ही कृपा करने वाला न होता (तो तुम दुःख में पड़ जाते)।२१। (रुकू २/८)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۗ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ۗ

हे मोमिनो ! शैतान के पद चिन्हों का अनुसरण न करो और जो व्यक्ति शैतान के पद-चिन्हों का अनुसरण करता है वह जान ले कि शैतान बुराइयों और नापसंद बातों के

1. बिना पड़ताल के झूठा कलंक लगाने तथा उसे फैलाने से लोगों में बुराइयों और पापों से घृणा कम हो जाती है तथा लोग अश्लील बातों पर निडर हो जाते हैं।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّ لٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢﴾

करने का आदेश देता है। यदि अल्लाह की कृपा एवं दयालुता तुम पर न होती तो तुम में से कोई व्यक्ति कभी भी पवित्र न होता, किन्तु अल्लाह जिसे चाहता है पवित्र ठहराता है और अल्लाह बहुत प्रार्थनाएँ सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है।२२।

وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ اَنْ يُّؤْتُوْٓا اُولِي الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٣﴾

और तुम में से (दीन-व-दुनिया में) प्रधानता रखने वाले एवं धन वाले लोग सौगन्ध न खाएँ कि वे अपने नातेदारों तथा निर्धनों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों की सहायता नहीं करेंगे और चाहिए कि वे सहनशीलता से काम लें और क्षमा करें। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हारे अपराध क्षमा कर दे और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।२३।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٤﴾

वे लोग जो नेक-पतिव्रता महिलाओं पर आरोप लगाते हैं जो कि (शरारत करने वालों की शरारत से) बे-ख़बर हैं और ईमानदार हैं, उन पर संसार में तथा आख़िरत में धिक्कार डाली जाएगी और उन के लिए बड़ा अज़ाब होगा।२४।

يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٥﴾

जिस दिन उन की ज़बानें, हाथ और पाँव उन के कर्मों के बारे में उन के विरुद्ध गवाही देंगे जो वे किया करते थे।२५।

يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿٢٦﴾

तो उस दिन अल्लाह उन्हें उन का ठीक-ठीक बदला देगा और उन्हे विदित हो जाएगा कि अल्लाह ही पूर्ण सच्चाई है, ऐसी सच्चाई जो अपने-आप को स्वयं प्रकट कर देती है।२६।

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَ الْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَ الطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَ الطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿۲۶﴾

बुरी बातें[1] बुरे लोगों के लिए हैं और बुरे लोग बुरी बातों के लिए हैं तथा पवित्र बातें पवित्र लोगों के लिए एवं पवित्र लोग पवित्र बातों के लिए हैं। ये सब लोग उन बातों से पवित्र हैं, जो शत्रु कहते हैं। इन के लिए बख़्शिश और इज़्ज़त वाली रोज़ी (नियत) है।२७। (रुकू ३/९)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَ تُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۸﴾

हे मोमिनो ! अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में तब तक न जाया करो जब तक कि अनुमति न ले लो और (प्रवेश करने से पहले) घर वालों को सलाम न कर लो। यह तुम्हारे लिए अच्छा होगा और इस बात का परिणाम यह निकलेगा कि तुम (भली बातों को सदैव) याद रखोगे।२८।

فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَ اِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿۲۹﴾

और यदि तुम उन घरों में किसी को न पाओ तब भी उन में प्रवेश न करो जब तक कि तुम्हें घर वालों की ओर से अनुमति न मिल गई हो और यदि (कोई घर में हो, परन्तु) तुम्हें कहा जाए कि इस समय चले जाओ तो तुम वापस लौट जाओ। यह तुम्हारे लिए अधिक पवित्र होगा और अल्लाह तुम्हारे कामों को ख़ूब अच्छी तरह जानता है।२९।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ

तुम्हारा ऐसे घरों में दाख़िल होना पाप नहीं जिन में कोई निवास नहीं करता और उन में

1. कई भाष्यकार इस आयत का यह अर्थ करते हैं कि पतित पुरुष पतित स्त्रियों के लिए हैं और पतित स्त्रियाँ पतित पुरुषों के लिए हैं, परन्तु यह बात ठीक नहीं। अरबी में 'बातें' और कर्म दोनों स्त्रीलिंग प्रयुक्त होते हैं अन्यथा कोई व्यभिचारिणी किसी भले पुरुष को धोखा दे कर उस से विवाह कर ले तो उस में पुरुष का क्या दोष ? इसी प्रकार इस के विपरीत समझ लीजिए। पवित्र क़ुर्आन तो केवल यह बात कहता है कि जो नेकियों में प्रसिद्ध हों उन पर व्यभिचार का दोष न लगाओ, क्योंकि यह बात बुद्धि संगत है कि अच्छे पुरुष या नेक स्त्रियाँ शुभ-कर्म ही करेंगे।

فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا
تَكْتُمُونَ ⑳

तुम्हारा सामान रखा है। अल्लाह उसे जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो तथा उसे भी जो तुम छिपाते हो।३०।

قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ
ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ⑳

तू मोमिनों से कह दे कि वे अपनी आँखें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों (गुप्त अंगों) की रक्षा किया करें। यह उन के लिए बड़ी पवित्रता का साधन होगा। जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।३१।

وَقُل لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ
فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا
وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِينَ
زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ
أَوْ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ
بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا
مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ أُولِي الْإِرْبَةِ
مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ عَوْرَاتِ

और मोमिन महिलाओं से कह दे कि वे भी अपनी आँखें नीची रखा करें और अपने गुप्त अंगों की रक्षा किया करें एवं अपने सौन्दर्य को प्रकट न किया करें सिवाय उस के जो मजबूरी और बेबसी से आप ही आप ज़ाहिर[1] हो जाए और अपनी ओढ़नियों को अपनी छातियों पर से गुज़ार कर और उसे ढक कर पहना करें तथा वे केवल अपने पतियों, अपने पिताओं या अपने पतियों के पिताओं या अपने पुत्रों या अपने पतियों के पुत्रों या अपने भाइयों या अपने भाइयों के पुत्रों (भतीजों) या अपनी बहनों के पुत्रों या अपने जैसी स्त्रियों या जिन के स्वामी उन के दाहिने हाथ हुए हैं (अर्थात् लौंडियाँ) या ऐसे अधीन व्यक्तियों (अर्थात् नौकर-चाकर) पर जो अभी युवावस्था को नहीं पहुँचे या ऐसे बच्चों पर जिन्हें अभी स्त्रियों के विशेष सम्बन्धों का ज्ञान नहीं हुआ, अपना सौन्दर्य प्रकट कर सकती हैं तथा इन के सिवा किसी पर भी ज़ाहिर न करें

1. जैसे शरीर का लम्बा, छोटा, मोटा या दुबलापन होना।

النِّسَآءِ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِن زِينَتِهِنَّ وَتُوبُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ ٱلْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

और अपने पाँव (धरती पर ज़ोर से) इसलिए न मारा करें कि वह चीज़ ज़ाहिर हो जाए जिसे वे अपने सौन्दर्य में से छिपा रही है। और हे मोमिनो ! तुम सब के सब अल्लाह की ओर झुक जाओ ताकि तुम सफलता पा सको।३२।

وَأَنكِحُوا۟ ٱلْأَيَٰمَىٰ مِنكُمْ وَٱلصَّٰلِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَآئِكُمْ إِن يَكُونُوا۟ فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ۝

और तुम में से जो विधवाएँ हैं और जो तुम्हारे अपने दासों या दासियों में से नेक हों उन के विवाह कर दिया करो। यदि वे निर्धन हैं तो अल्लाह अपनी कृपा से उन्हें धनवान बना देगा और अल्लाह बहुत बढ़ा-चढ़ा कर देने वाला (और) बहुत जानने वाला है।३३।

وَلْيَسْتَعْفِفِ ٱلَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ وَٱلَّذِينَ يَبْتَغُونَ ٱلْكِتَٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَٰنُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا وَءَاتُوهُم مِّن مَّالِ ٱللَّهِ ٱلَّذِىٓ ءَاتَىٰكُمْ وَلَا تُكْرِهُوا۟ فَتَيَٰتِكُمْ

और चाहिए कि वे लोग जो विवाह करने की शक्ति नहीं रखते वे पवित्रता ग्रहण करें यहाँ तक कि अल्लाह उन्हें धनवान बना दे। तुम्हारे दासों में से जो लोग मुकातबत (स्वतन्त्रता का समझौता) की माँग करें यदि तुम उन में भलाई[1] देखो तो उन से मुकातबत कर लो और (यदि उस के पास पूरा धन न हो तो) जो धन तुम्हें अल्लाह ने दिया है उस में से कुछ धन दे (कर उन की स्वतन्त्रता सम्भव बना) दो और तुम अपनी दासियों को व्यभिचार के लिए विवश न करो, यदि वह

1. जब कि वे धन लुटाने वाले और उस का दुरुपयोग करने वाले न हों अथवा आवारा और लम्पट न हों, किन्तु यदि स्वामी इस बात के लिए तय्यार न हो तो मुकातबत चाहने वाला दास क़ाज़ी (न्यायधीश) द्वारा स्वतन्त्रता पा सकता है, क्योंकि स्वतन्त्रता उस का हक़ है।

عَلَى الْبِغَآءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَن يُكْرِههُّنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِن بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝٣٤

पवित्र[1] रहना चाहती हों ताकि तुम इस के द्वारा सांसारिक[2] जीवन का सामान एकत्रित करो और जो कोई उन्हें विवश करे तो अल्लाह उन स्त्रियों की विवशता के पश्चात् बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला[3] है। (वह उन स्त्रियों को नहीं पकड़ेगा)।३४।

وَلَقَدْ أَنزَلْنَآ إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝٣٥ ع

और हम ने तुम पर खुले-खुले निशान उतारे हैं तथा जो लोग तुम से पहले हो चुके हैं उन की परिस्थिति भी वर्णन की है एवं संयमियों के लिए उपदेशात्मक बातें भी वर्णन कर दी हैं।३५। (रुकू ४/१०)

اللَّهُ نُورُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ مَثَلُ نُورِهِ كَمِشْكٰوةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۖ الْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ ۖ الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ

अल्लाह आसमानों तथा ज़मीन का नूर (ज्योति) है। उस के नूर का विवरण[4] यह है कि जैसे एक ताक़ हो जिस में एक दीपक रखा हो और वह दीपक शीशे के एक ग्लोब के नीचे हो तथा वह ग्लोब ऐसा चमकीला हो मानों वह एक चमकता हुआ नक्षत्र है। वह दीपक एक ऐसे बरकत वाले पेड़ के तेल से जलाया

1. यदि दासियों की इच्छा विवाह करने की हो तो उन्हें इस बात से मत रोको, क्योंकि विवाह से रोकने का परिणाम पापाचार और व्यभिचार निकलेगा।

2. अर्थात् पराई स्त्रियों को दासियाँ बना कर अपने घरों में नौकरों का काम न लो ताकि तुम इस ढंग से उन्हें अपने नौकर बनाए रखो।

3. क़ुर्आन-मजीद का आदेश है कि दासियों का विवाह करो, परन्तु यदि स्वामी इस में रोक बनता है तो स्वामी पर पाप होगा न कि स्त्री पर।

4. अर्थात् जो शिक्षा अल्लाह की ओर से आती है उस का दूसरी शिक्षाओं से मुक़ाबिला करना ऐसा ही है जैसे एक मिट्टी के दिए का एक रिफ्लेकटर या प्रतिबिम्बक लैम्प से।

وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۭ نُوْرٌ عَلٰي نُوْرٍ ۭ يَهْدِي اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۳۶﴾

जा रहा हो कि वह (पेड़[1]) न तो पूर्वी हो न पश्चिमी ही। सम्भव है कि उस का तेल, भले उसे आग न भी छुई हो, भड़क उठे। यह दीपक अनेक नूरों (ज्योतियों) का पुञ्ज (प्रतीत होता) है। अल्लाह जिन के लिए चाहता है उन्हें अपने नूर की राह दिखा देता है और अल्लाह लोगों के लिए (समस्त आवश्यक) बातें वर्णन करता है और अल्लाह हर-एक चीज़ को ख़ूब जानता है।३६।

فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿۳۷﴾

ये दीपक[2] ऐसे घरों में हैं कि अल्लाह ने उन्हें ऊँचा किया जाने का आदेश दे दिया है और उन में उस (अल्लाह) का नाम लिया जाता है और उस की स्तुति का गुण-गान किया जाता है, दिन में भी तथा रात में भी।३७।

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاۗءِ الزَّكٰوةِ ۠ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ﴿۳۸﴾

ये (स्तुति करने वाले) कुछ पुरुष हैं जिन्हें अल्लाह की याद से और नमाज़ के क़ायम करने से तथा ज़कात देने से व्यापार और सौदे का लेन-देन ग़ाफ़िल नहीं करता। वे उस दिन से डरते हैं जिस दिन दिल उलट जाएँगे और आँखें पलट जाएँगी।३८।

لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ

परिणाम यह निकलेगा कि अल्लाह उन्हें उन के कर्मों का सर्वोत्तम प्रतिफल प्रदान करेगा और उन्हें अपनी कृपा से (धन एवं

1. पूर्व और पश्चिम से सम्बन्ध न रखने वाले पेड़ से तात्पर्य ऐसी शिक्षा है जिस में न तो पूर्व के रहने वालों को प्रधानता दी गई हो तथा न पश्चिम-निवासियों का पक्ष लिया गया हो। यह शिक्षा केवल क़ुर्आन-मजीद की ही है।

2. अल्लाह के नूर का प्रमाण यह होगा कि जिन घरों में वह नूर अर्थात् क़ुर्आन-मजीद की शिक्षा होगी वे संसार में सम्मान पाएंगे और उन में हर समय अल्लाह की उपासना की जाती रहेगी।

فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۸﴾

सन्तान में) बढ़ाएगा और अल्लाह जिसे चाहता है बिना हिसाब के ही रोज़ी देता है।३९।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۭ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۳۹﴾

और वे लोग जिन्हों ने इन्कार किया उन के कर्म सराब[1] की तरह हैं, जो एक बहुत बड़े मैदान में दिखाई देता है जिस को प्यासा पानी समझता है यहाँ तक कि जब वह उस के पास जाता है तो वह उसे कुछ भी नहीं पाता और अल्लाह को उस के पास देख लेता है, तब अल्लाह उसे उस का पूरा हिसाब चुका देता है तथा अल्लाह बहुत शीघ्र हिसाब चुकाने वालों में से है।४०।

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِىْ بَحْرٍ لُّجِّىٍّ يَّغْشٰهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿۴۰﴾ ع

या उन (इन्कार करने वालों) के कर्मों की हालत उन अंधेरों जैसी है जो एक अथाह सागर पर छाए हुए हों, जिस पर लहरें उठ रही होती हैं तथा उन लहरों के ऊपर और लहरें उठ रही होती हैं और उन सब के ऊपर एक बादल होता है। ये ऐसे अन्धकार होते हैं जो एक-दूसरे पर छाए होते हैं। जब मनुष्य अपना हाथ निकालता है तो कोशिश करने पर भी उसे देख नहीं सकता और जिसे अल्लाह ज्योति प्रदान न करे उसे कहीं से भी ज्योति प्राप्त नहीं होती।४१। (रुकू ५/११)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ

क्या तू देखता नहीं कि अल्लाह वह है कि जो कोई आसमानों और ज़मीन में निवास करते हैं सब उसी का गुण-गान करते हैं और उसी के सामने पक्षी पंक्ति-बद्ध हो कर उपस्थित

1. रेत का वह मैदान जहाँ पानी का धोखा होता है। मृग-तृष्णा।

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝٤٢

हैं। उन में से प्रत्येक (अपने प्राकृतिक स्वभाव के अनुसार) अपनी उपासना एवं अपने स्तुति-गान को जानता है और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।४२।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝٤٣

और आसमानों तथा ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है और अल्लाह ही की ओर सब को लौट कर जाना है।४३।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ۗ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ۝٤٤

क्या तू ने देखा नहीं कि अल्लाह बादलों को धीरे-धीरे हांक कर लाता है, फिर उन्हें एक-दूसरे के साथ मिला देता है, फिर उन्हें परत पर परत कर देता है, फिर तू देखता है कि उन के भीतर से वर्षा होने लगती है और वह बादलों में से बड़ी-बड़ी चीज़ें गिराता है जिन में से कुछ ओलों जैसी होती हैं और उसे जिस (जाति) तक चाहता है पहुँचा देता है तथा जिस से चाहता है उसे रोक लेता है। निकट होता है कि उस की बिजली की रोशनी कुछ आँखों को अन्धा कर दे।४४।

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ۝٤٥

अल्लाह रात और दिन को चक्कर देता रहता है। इस में समझ रखने वालों के लिए एक महान् शिक्षा है।४५।

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ۗ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ

और अल्लाह ने प्रत्येक चलने वाले जीवधारी को पानी से पैदा किया है। अतः कुछ तो ऐसे हैं जो अपने पेट पर चलते हैं और कुछ ऐसे हैं जो अपने दो पाँव पर चलते हैं तथा कुछ ऐसे हैं जो चार पाँव पर चलते हैं। अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है और अल्लाह

شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

हर एक बात के करने पर सामर्थ्य रखता है।४६।

لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ۭ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

हम ने खुले-खुले निशान उतारे हैं और अल्लाह जिसे चाहता है उसे सीधी राह की ओर हिदायत देता है।४७।

وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۭ وَمَآ اُولٰۗىِٕكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝

और वे कहते हैं कि हम अल्लाह तथा उस के रसूल पर ईमान लाए और हम ने आज्ञा-पालन करने की प्रतिज्ञा कर ली, फिर उन में से एक गिरोह (अपनी प्रतिज्ञा से) विमुख हो जाता है तथा ऐसे लोग कदापि मोमिन नहीं।४८।

وَاِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝

और जब उन्हें अल्लाह और रसूल की ओर इसलिए बुलाया जाता है कि वह उन के बीच निर्णय करे तो उन में से एक गिरोह मुँह मोड़ने लगता है।४९।

وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْٓا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ۝

और यदि कोई बात उन के लिए लाभदायक हो तो वे तुरन्त आज्ञा-पालन का प्रदर्शन करते हुए आ जाते हैं।५०।

اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْٓا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ۭ بَلْ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝

क्या उन के दिलों में कोई रोग है अथवा वे भ्रम में पड़े हुए हैं या वे डरते हैं कि अल्लाह तथा उस का रसूल उन पर अत्याचार करेगा? ऐसा कभी नहीं हो सकता बल्कि वे स्वयं ही अत्याचारी हैं।५१। (रुकू ६/१२)

اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ

जब मोमिन अल्लाह और उस के रसूल की ओर बुलाए जाएँ ताकि वह उन के बीच निर्णय करे तो उन का उत्तर यह हुआ करता

هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

है कि हम ने सुना और हम ने मान लिया और वही लोग सफल हुआ करते हैं ।५२।

وَ مَنْ يُطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝

और जो लोग अल्लाह तथा उस के रसूल की आज्ञा का पालन करें और अल्लाह से डरें एवं उस के लिए संयम धारण करें, वे सफल हो जाते हैं ।५३।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝

और वे लोग अल्लाह की पक्की क़समें खाते हैं कि यदि तू उन्हें आदेश दे तो वे तुरन्त घरों से निकल खड़े होंगे। तुम कह दो कि क़समें न खाओ। हमारा आदेश तो तुम्हारे लिए केवल ऐसी आज्ञा-पालन करने का है जिसे साधारण अर्थ में आज्ञापालन कहते हैं। निस्सन्देह अल्लाह उस की जो तुम करते हो ख़बर रखता है ।५४।

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝

तू कह कि अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करो। सो यदि वे मुंह मोड़ लें तो उस (रसूल) पर केवल उस की ज़िम्मेदारी है जो उस के ज़िम्मे लगाया गया है तथा तुम्हारे ऊपर उस की ज़िम्मेदारी है जो तुम्हारे ज़िम्मे लगाया गया है और यदि तुम उस की आज्ञा का पालन करो तो हिदायत पा लोगे तथा रसूल के ज़िम्मे तो बात को खोल कर पहुँचा देना है ।५५।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ

अल्लाह ने तुम में से ईमान लाने वालों और परिस्थिति के अनुकूल कर्म करने वालों से प्रतिज्ञा की है कि वह उन्हें धरती में ख़लीफ़ा[1]

1. शब्द तो साधारण है, परन्तु तात्पर्य यह है कि तुम में से अधिनायक नियुक्त करेगा। यह (शेष पृष्ठ ७६४ पर)

قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّن بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا وَمَن كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝٥٦

(अधिनायक) बना देगा जिस प्रकार इन से पहले लोगों को ख़लीफ़ा' बनाया था, और जो धर्म उस ने उन के लिए पसन्द किया है उसे वह उन के लिए दृढ़ता से क़ायम कर देगा और वह उन की भय-पूर्ण अवस्था के बाद उन के लिए शान्ति की अवस्था बदल देगा। वे मेरी उपासना करेंगे और किसी को भी मेरा साझी नहीं बनाएंगे तथा जो लोग इस के पश्चात् भी इन्कार करेंगे वे अवज्ञाकारी ठहराए जाएँगे।५६।

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝٥٧

और तुम सब नमाज़ों को क़ायम करो तथा ज़कात दो एवं इस रसूल का अनुसरण करो ताकि तुम पर दया की जाए।५७।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ وَلَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝٥٨ ع

(हे सम्बोधित !) यह विचार कभी न कर कि इन्कार करने वाले लोग अपने उपायों से हमें धरती में असमर्थ बना देंगे। उन का ठिकाना तो नरक है तथा वह बहुत बुरा ठिकाना है।५८। (रुकू ७/१३)

(पृष्ठ ७६३ का शेष)

अरबी भाषा का नियम है कि कभी शब्द तो साधारण होते हैं, परन्तु उन से अभीष्ट एक विशेष व्यक्ति होता है और कभी एक व्यक्ति का वर्णन होता है, किन्तु उस से अभिप्राय एक सम्प्रदाय होता है।

1. पहले लोगों में एक व्यक्ति से सम्बन्ध रखने वाली ख़िलाफ़त थी जैसे हज़रत मसीह और हज़रत मूसा के पश्चात्। अतएव इस उदाहरण से इस आयत का विषय स्पष्ट हो जाता है कि यह ख़िलाफ़त चुनाओं द्वारा होगी न कि जन्म-जन्मान्तर। ईसाइयों में तो ख़िलाफ़त जन्म-जन्मान्तर हो ही नहीं सकती, क्योंकि उन के बड़े पादरियों के लिए तो विवाह करना हराम है तथा यहूदियों में ख़िलाफ़त अधिकतर ईशवाणी के आधार पर क़ायम हुई जैसे यूशा, हज़रत इब्राहीम के ख़लीफ़ा हुए। इसी प्रकार दाऊद भी हज़रत मूसा के ख़लीफ़ा हुए और उन्हें ईश-वाणी होती थी।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ۭ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَاۗءِ ڜ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ۭ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ۭ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰي بَعْضٍ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

हे मोमिनो ! चाहिए कि वे लोग जिन के मालिक तुम्हारे दाहिने हाथ हैं (अर्थात् दास-दासियाँ) और वे लोग जो अभी जवानी को नहीं पहुँचे, वे तीन समय आज्ञा ले कर अन्दर आया करें। प्रातःकाल की नमाज से पहले और जब तुम दोपहर के समय (विश्राम के लिए) अपने वस्त्र उतार देते हो और इशा (रात) की नमाज़ के बाद। यह तीन समय तुम्हारे पर्दा करने के हैं। इन तीन समय के बाद (घर के अन्दर आने-में) न तुम पर कोई पाप है और न उन पर कोई पाप है, क्योंकि तुम में से कुछ लोग अपनी आवश्यकता के अनुसार कभी-कभी दूसरों के पास आते जाते हैं। इसी प्रकार अल्लाह अपने आदेश खोल-खोल कर वर्णन करता है और अल्लाह बहुत जानने वाला एवं बहुत हिक्मत वाला है।५९।

وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

और जब तुम्हारे बच्चे जवानी को पहुंच जाएँ तो वे उसी प्रकार आज्ञा लिया करें जिस प्रकार उन से पहले (बड़े) लोग आज्ञा लिया करते थे। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने आदेश वर्णन करता है और अल्लाह बहुत जानने वाला एवं हिक्मत वाला है।६०।

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاۗءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا

और वे स्त्रियाँ[1] जो बूढ़ी हो गई हैं और विवाह के योग्य नहीं, उन पर कोई पाप नहीं

1. बृद्धा स्त्रियों के लिए पर्दा करना ज़रूरी नहीं, किन्तु यदि उन्हें बाहर जाने की कोई विवशता न हो और वे अपनी इच्छा से घर में ही बैठी रहा करें तो यह बात उन के लिए अल्लाह के निकट अच्छी है।

فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ ۖ وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَهُنَّ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

कि वे वस्त्र उतार कर रख दें, इस प्रकार कि अपने सौन्दर्य को प्रकट न किया करें तथा उन का बचा रहना उन के लिए अच्छा है और अल्लाह बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है ।६१।

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَالَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَفَاتِحَهُ أَوْ صَدِيقِكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا ۚ فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبَارَكَةً طَيِّبَةً ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

अन्धों[1], लंगड़ों, रोगियों और तुम पर कोई रोक नहीं कि अपने घरों से या अपने बाप-दादों के घरों से अथवा अपनी माताओं के घरों (ननिहाल) से या अपने भाइयों के घर से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चाचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामाओं के घरों से या अपनी मासियों के घरों से अथवा जिन के सामान का प्रबन्ध तुम करते हो या अपने मित्रों के घरों से कोई वस्तु ले कर खा लो। (इसी प्रकार) तुम पर कोई पाप नहीं कि तुम सब मिल कर खाओ या अलग-अलग खाओ। अतः जब घरों में प्रवेश करने लगो तो अपने सम्बन्धियों अथवा मित्रों को सलाम कर लिया करो। यह अल्लाह की ओर से बड़ा बरकत वाला और पवित्र आशीर्वाद है। इसी प्रकार अल्लाह अपनी आज्ञाएँ खोल-खोल कर सुनाता है ताकि तुम समझ से काम लो ।६२। (रुकू ८/१४)

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ

केवल वही लोग मोमिन कहलाने के अधिकारी हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाते हैं और जब किसी जातीय काम के लिए उस (रसूल) के पास बैठे हों तो उठ कर नहीं

1. यहूदियों की धार्मिक शिक्षा के अनुसार अन्धे-लंगड़े तथा दूसरे शारीरिक रोगी अपवित्र समझे जाते थे। क़ुर्आन ने उस की त्रुटि को प्रकट किया है।

إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٣﴾

जाने जब तक कि उस (रसूल से) आज्ञा न ले लें। वे लोग जो कि आज्ञा ले कर जाते हैं वे ही अल्लाह और उस के रसूल पर (सच्चा) ईमान रखते हैं। अतः जब वे अपने किसी महत्वपूर्ण काम के लिए तुझ से आज्ञा लें तो तू उन में से जिन्हें चाहे उन्हें आज्ञा दे दे तथा अल्लाह से उन के लिए क्षमा माँग और निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।६३।

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُم بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

(हे मोमिनो!) यह न समझो कि तुम में से रसूल का किसी को बुलाना ऐसा ही है जैसा कि तुम में से किसी एक का किसी दूसरे को बुलाना। अल्लाह उन लोगों को जानता है जो तुम में से (सभा से) पहलू बचा कर भाग जाते हैं। अतः चाहिए कि जो लोग इस रसूल की आज्ञा का विरोध करते हैं इस बात से डरें कि उन्हें अल्लाह की ओर से कोई विपत्ति न आ जाए या उन्हें पीड़ादायक अज़ाब न पहुँच जाए।६४।

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٥﴾

सुनो! जो कुछ आसमानों तथा ज़मीन में है, सब अल्लाह का ही है। तुम जिस (स्थान) पर खड़े हो उस का ज्ञान भी अल्लाह को ही है और जिस दिन वे लोग अल्लाह की ओर लौटाए जाएँगे तो वह उन्हें उन के कर्मों का हाल बताएगा और अल्लाह हर-एक चीज़ को ख़ूब अच्छी तरह जानता है।६५। (रुकू ९/१५)
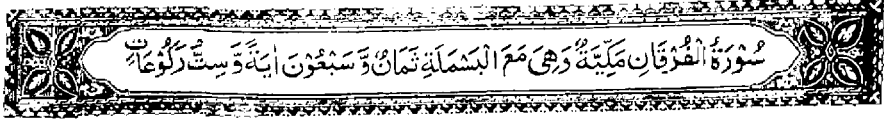
सूरः अल् - फ़ुर्क़ान

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित
इस की अठहत्तर आयतें एवं छः रुकू हैं ।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

تَبٰرَكَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰی عَبْدِهٖ لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرَا ②

वह सत्ता बड़ी बरकत वाली है जिस ने अपने भक्त पर फ़ुर्क़ान[1] उतारा है ताकि वह सब जहानों के लिए सावधान करने वाला बने ।२।

الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ یَكُنْ لَّهٗ شَرِیْكٌ فِی الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِیْرًا ③

वही (सत्ता) है जिस के अधिकार में आसमानों तथा ज़मीन की बादशाही है और जिस ने कोई पुत्र नहीं बनाया एवं उस की बादशाही में कोई साझी नहीं और जिस ने प्रत्येक वस्तु पैदा की है, फिर उस के लिए एक अनुमान निश्चित किया है ।३।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً لَّا یَخْلُقُوْنَ شَیْـًٔا وَّهُمْ یُخْلَقُوْنَ وَلَا یَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا

और इन लोगों ने उस (अल्लाह) के सिवा और उपास्य भी बना रखे हैं, जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते हालाँकि वे स्वयं पैदा किए गए हैं और वे न अपने लिए किसी हानि पर तथा न लाभ पहुँचाने पर शक्ति रखते हैं,

1. ऐसी शिक्षा जो सच और झूठ में अन्तर स्पष्ट कर देती है ।

وَلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ۝

न मौत के मालिक हैं, न जीवन के और न फिर से जी उठने के ।४।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ٰنِافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ۝

और इन्कार करने वाले लोग कहते हैं कि यह तो केवल एक झूठ है जो उस ने गढ़ लिया है तथा उस के गढ़ने में एक और जाति' ने उस की सहायता की है। अतः इन लोगों ने (यह बात कह कर) बहुत बड़ा अत्याचार किया है एवं बहुत बड़ा झूठ बोला है ।५।

وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝

और वे कहते हैं कि यह (क़ुर्आन) तो पहले लोगों की कहानियाँ हैं, जो इस ने लिखवा ली हैं और अब वे साँझ-सवेरे उस के सामने पढ़ कर सुनाई जाती हैं (ताकि वह क़ुर्आन अच्छी तरह लिख ले) ।६।

قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

तू कह दे कि इस क़ुर्आन को तो उस (अल्लाह) ने उतारा है जो आसमानों तथा ज़मीन के भेदों को जानता है। वह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है ।७।

وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۝

और वे कहते हैं कि इस रसूल को क्या हो गया है कि वह खाना भी खाता है तथा बाज़ारों में भी घूमता-फिरता है, इस पर फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया जो इस के साथ खड़ा हो कर लोगों को सावधान करता ? ।८।

اَوْ يُلْقٰٓى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ۭ

या उस पर कोई ख़ज़ाना उतारा जाता अथवा उस के पास कोई बाग़ होता जिस के फल वह

1. इस आरोप का उत्तर क़ुर्आन-मजीद में दूसरे स्थान पर आ चुका है कि क़ुर्आन या इस की सूरः या एक आयत के समान कोई और शिक्षा ले आओ और सब जिन्नों तथा मनुष्यों को सहायता के लिए बुला लो, तुम फिर भी असफल रहोगे।

وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ⑨

खाता तथा अत्याचारी कहते हैं कि तुम तो केवल एक ऐसे व्यक्ति के पीछे चल रहे हो जिसे खाना[1] खिलाया जाता है।९।

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ⑩

देख ! ये तेरे बारे में कैसी-कैसी बातें बनाते हैं और वे पथभ्रष्ट हो चुके हैं। अत: उन्हें (सत्य बात कहने का) कोई मार्ग नहीं सूझता।१०। (रुकू १/१६)

تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ⑪

बहुत बरकत वाला है वह अल्लाह जो चाहे तो तेरे लिए (उन के आँके हुए) उस बाग़ से भी उत्तम बाग़[2] पैदा कर दे, जिस में नहरें बहती हों और तेरे लिए बड़े-बड़े भवन तय्यार कर दे।११।

بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ⑫

सच यह है कि ये लोग क़ियामत का इन्कार कर रहे हैं और हम ने उस व्यक्ति के लिए भड़कने वाले अज़ाब का प्रबन्ध कर रखा है जो क़ियामत का इन्कार करने वाला हो।१२।

اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا ⑬

जब वह (नरक) उन्हें दूर से देखेगा तो वह उस के जोश की और (आने वाली) विपत्ति की आवाज़ सुनेंगे।१३।

وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ⑭

और जब वे उस (नरक) के एक तंग स्थान में जकड़े हुए फेंके जाएँगे तो वे उस समय मौत की इच्छा करेंगे।१४।

---

1. मूल शब्द 'मसहूरा' का अर्थ है ऐसा व्यक्ति जिसे भोजन दिया जाए अर्थात् लोग उसे अपने लाभ के लिए सहायता दें।

2. इतिहास से ऐसा होना सत्य सिद्ध हो चुका है। क़ैसर और किस्रा के बाग़ एवं उन के राज-भवन मुसलमानों को मिले, जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के साधारण सेवक थे।

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ﴿١٥﴾

(तब अल्लाह के फ़रिश्ते उन्हें कहेंगे) आज केवल एक मौत की इच्छा न करो अपितु वार-बार मरने की अभिलाषा करो क्योंकि तुम पर बार-बार अज़ाब आने वाला है ।१५।

قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاۗءً وَّمَصِيْرًا ﴿١٦﴾

तू उन्हें कह दे कि यह (भयानक अन्त) अच्छा है अथवा सदा-सर्वदा क़ायम रहने वाली जन्नत, जिस की प्रतिज्ञा संयमियों से की गई है। वह उन का (ठीक-ठीक) बदला और अन्तिम ठिकाना होगा ।१६।

لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَاۗءُوْنَ خٰلِدِيْنَ ۭ كَانَ عَلٰي رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ﴿١٧﴾

उन्हे उस स्वर्ग में जो कुछ वे चाहेंगे मिलेगा। वे उस में सदैव के लिए निवास करते चले जाएँगे। यह एक ऐसा वादा है जिस का पूरा करना तेरे रब्ब के लिए ज़रूरी है ।१७।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَاۗءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ﴿١٨﴾

और जब वह (अल्लाह) उन्हें तथा उन के झूठे उपास्यों को अपने सामने खड़ा करेगा और फिर उन से कहेगा कि क्या तुम ने मेरे बन्दों को पथ-भ्रष्ट किया था या वे स्वयं ही सीधी राह से भटक गए थे ? ।१८।

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَاۗءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَاۗءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿١٩﴾

तब वे उत्तर में कहेंगे कि तू पवित्र है। हमारा कोई अधिकार नहीं था कि हम तुझे छोड़ कर किसी दूसरे को अपना कार्य-साधक बनाते, किन्तु तूने उन लोगों को तथा उन के पूर्वजों को सांसारिक लाभ (धन-दौलत आदि) दिए यहाँ तक कि उन्हों ने तेरी याद भुला दी और नष्ट होने वाली जाति बन गए ।१९।

فَقَدْ كَذَّبُوكُمْ بِمَا تَقُولُونَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ﴿١٩﴾

सो (इन्कार करने वालों से कहा जाएगा कि देख लो) इन झूठे उपास्यों ने तुम्हारी बातों को झूठला दिया है। अतः तुम आज न तो अज़ाब को हटा सकते हो और न कोई सहायता पा सकते हो एवं तुम में से जो कोई अत्याचारी है हम उसे कड़ा अज़ाब पहुँचाएँगे।२०।

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۭ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ﴿٢٠﴾

और तुझ से पहले हम ने जितने भी रसूल भेजे थे वे सब के सब भोजन किया करते थे तथा बाज़ारों में चलते-फिरते थे और हम ने तुम में से कुछ लोगों को एक-दूसरे के लिए परीक्षा का साधन बनाया है (यह देखने के लिए) कि क्या तुम (मुसलमान) धैर्य धारण करते हो या नहीं ? और (हे मुसलमान !) तेरा रब्ब (परिस्थितियों को) बहुत देखने वाला है।२१। (रुकू २/१७)

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ أَوْ نَرٰى رَبَّنَا ۗ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ أَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿٢١﴾

और उन लोगों ने कह दिया कि जो हमारी मुलाक़ात की आशा नहीं रखते कि हम पर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे गए या हम अपने रब्ब को अपनी आँखों से क्यों नहीं देखते ? उन्हों ने अपने दिलों में अपने-आप को बहुत बड़ा समझा है और शरारत में बहुत आगे बढ़ गए हैं ।२२।

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾

(क्या ये लोग नहीं जानते कि) जिस दिन वे फ़रिश्तों को देखेंगे, उस दिन अपराधियों को कोई शुभ-समाचार नहीं मिलेगा और (वे व्याकुल हो कर) कहेंगे कि हम से दूर ही रहो ।२३।

وَقَدِمْنَآ إِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾

और हम ने उन के हर प्रकार के कर्म की ओर ध्यान दिया जो उन्हों ने किया था तथा उसे वायु में बखेर कर (धूल में) उड़ाए हुए कणों[1] की तरह कर दिया ।२४।

أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّأَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾

और स्वर्ग वाले उस दिन ठिकाने के दृष्टि-कोण से भी अच्छे होंगे तथा सोने (अर्थात् विश्राम) की दृष्टि से भी सर्वोच्च स्थान में होंगे ।२५।

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾

और उस दिन (को याद करो) जब आकाश फट जाएगा तथा बादल सिरों पर मंडला रहे होंगे तथा फ़रिश्ते बार-बार उतारे जाएँगे ।२६।

---

1. मूल शब्द 'हबाउन' का अर्थ हल्का और सूक्ष्म कण है जो कभी-कभी हवा में उड़ता दिखाई देता है । आयत का अर्थ यह है कि हम उन्हें इतना पीसेंगे कि वे धूल के समान बन जाएँगे और हवा में उड़ने लगेंगे तथा उन के मित्र भी उन्हें इकट्ठा न कर सकेंगे ।

اَلْمُلْكُ يَوْمَىِٕذِ ِۨالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ۝

उस दिन बादशाही सचमुच रहमान (ख़ुदा) के अधिकार में होगी तथा यह दिन इन्कार करने वालों के लिए अत्यन्त कठोर होगा।२७।

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ۝

और उस दिन अत्याचारी अपने हाथ काटेगा और कहेगा कि काश ! मैं रसूल के साथ चल पड़ता।२८।

يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ۝

हाय दुर्भाग्य ! काश ! मैं अमुक व्यक्ति को मित्र न बनाता।२९।

لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ۝

उस ने मुझे अल्लाह के ज़िक्र (क़ुर्आन) से ग़ाफ़िल कर दिया, जब कि वह (रसूल के द्वारा) मेरे पास आ चुका था और शैतान अन्ततः मनुष्य को अकेला छोड़ कर चला जाता है।३०।

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ۝

और रसूल ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! मेरी जाति ने तो इस क़ुर्आन को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है।३१।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِىٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ۝

और इसी प्रकार हम ने अपराधियों में से सभी नबियों के शत्रु बनाए हैं और तेरा रब्ब हिदायत देने तथा सहायता करने की दृष्टि से पर्याप्त है।३२।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۛۚ كَذٰلِكَ ۛۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ

और इन्कार करने वाले लोगों ने कहा कि इस नबी पर यह क़ुर्आन एक ही बार क्यों न उतार दिया गया ? एक प्रकार से इन की बात भी ठीक है, किन्तु हम ने (इसे भिन्न-भिन्न समय और कई सूरतों में) इसलिए उतारा कि हम इस क़ुर्आन के द्वारा तेरे दिल

تَرْتِيْلًا ﴿٣٣﴾

को सुदृढ़[1] बनाते रहें और हम ने इसे बहुत अच्छा बनाया है।३३।

وَلَا يَأْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ﴿٣٤﴾

और (तेरी बातों के खण्डन के लिए) वे कोई बात नहीं कहते कि हम उस के उत्तर में एक पक्की बात नहीं कह देते हैं और उस की उत्तम से उत्तम व्याख्या नहीं कर देते हैं।३४।

اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٣٥﴾ ع

जो लोग अपने सरदारों सहित नरक की ओर ले जाए जाएँगे उन का ठिकाना बहुत बुरा होगा तथा उन का रास्ता बड़ी गुमराही का होगा।३५। (रुकू ३/१)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿٣٦﴾

और हम ने मूसा को एक किताब प्रदान की थी तथा हम ने उस के साथ उस के भाई हारून को भी सहायक बना कर भेजा था।३६।

فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿٣٧﴾

और हम ने उन से कहा था कि तुम दोनों उस जाति के लोगों की ओर जाओ जिन्हों ने हमारी आयतों का इन्कार किया है। फिर (जब वे प्रचार कर चुके) हम ने उन झुठलाने वालों का सर्वनाश कर दिया।३७।

وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ

और हम ने नूह की जाति को भी डुबो दिया जब कि उन्हों ने रसूलों का इन्कार किया

1. क़ुर्आन को थोड़ा-थोड़ा कर के उतारने का कारण यह है कि इस प्रकार सारे मुसलमान आसानी से क़ुर्आन को कण्ठस्थ कर सकते थे। दूसरे यह कि एक सूरः में वर्णित भविष्यवाणी जब पूरी हो जाती तो दूसरी सूरः में उन की ओर संकेत किया जा सकता था जिस से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम तथा आप के सहाबा अर्थात् साथियों के दिल सुदृढ़ हो जाते। क़ुर्आन को इकट्ठा उतारने में यह दोनों उद्देश्य पूरे नहीं हो सकते थे।

لِلنَّاسِ اٰيَةً ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۚ

तथा हम ने उन को लोगों के लिए एक (शिक्षा-प्रद) निशान बनाया और हम ने अन्याचारियों के लिए पीड़ा-दायक अज़ाब तय्यार कर रखा है ।३८।

وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۠ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا

और (हम ने) आद, समूद तथा कुएँ वाले लोगों को और उन के बीच बहुत सी जातियों को भी (नष्ट कर दिया) ।३९।

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۫ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا

और हम ने उन में से प्रत्येक जाति के लोगों के लिए हक़ीक़त खोल कर बता दी तथा (जब वे न समझे तो) सब का विनाश कर दिया ।४०।

وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا

और ये (मक्का के इन्कार करने वाले) उस बस्ती के निकट से गुज़र चुके हैं जिस[1] पर हम ने एक कष्ट देने वाली वर्षा की थी। क्या ये लोग उस (बस्ती के निशानों) को नहीं देखते ? वास्तविक बात यह है कि ये लोग दो बारा उठाए जाने की आशा ही नहीं रखते थे ।४१।

وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَھٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا

और जब वे तुझे देखते हैं तो तुझे केवल हँसी-ठट्ठे की एक चीज़ समझते हैं (और कहते हैं) क्या अल्लाह ने इस व्यक्ति को रसूल बना कर भेजा है ? ।४२।

اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا

यदि हम अपने उपास्यों पर दृढ़ता से जमे न रहते तो यह (व्यक्ति) तो हमें इन से पथभ्रष्ट करने ही लगा था और जब ये लोग अज़ाब

1. अर्थात् लूत की जाति।

وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝

को देखेंगे तो इन्हें अवश्य वास्तविकता का ज्ञान हो जाएगा कि कौन अपने आचरण में पथभ्रष्ट था।४३।

اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ۝

(हे रसूल!) क्या तुझे उस व्यक्ति की दशा का ज्ञान हो चुका है जिस ने अपनी मनो-कामनाओं को अपना उपास्य बना लिया था? क्या तू उस व्यक्ति का निरीक्षक है (कि तू उस को ज़बरदस्ती गुमराही से रोके)।४४।

اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝

क्या तू समझता है कि उन में से अधिकतर सुनते या समझते हैं? वे तो केवल पशुओं के समान हैं, अपितु आचरण की दृष्टि से उन से भी बुरे हैं।४५। (रुकू ४/२)

اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۝

(हे क़ुर्आन के सम्बोधित!) क्या तू नहीं जानता कि तेरे रब्ब ने छाया को किस प्रकार लम्बा किया है? और यदि वह चाहता तो उसे एक ही स्थान पर ठहरा हुआ बना देता, फिर हम ने सूरज[1] को उस पर एक गवाह बना दिया।४६।

ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ۝

फिर हम उसे धीरे-धीरे अपनी ओर खींचना प्रारम्भ कर देते हैं।४७।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا

और वही (अल्लाह) है जिस ने रात को तुम्हारे लिए वस्त्र बनाया है तथा निद्रा

1. इस आयत में बताया गया है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम अल्लाह की ओर से भेजे गए सच्चे रसूल हैं, क्योंकि आप की छाया हर घड़ी बढ़ रही है। यदि वे अल्लाह की ओर से न होते तो उन की उन्नति न होती। उन की प्रगति इस बात का प्रमाण है कि उन्हें अल्लाह की सहायता प्राप्त है।

وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿٤٨﴾

को विश्राम का और दिन को फैलने एवं उन्नति करने का साधन।४८।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ﴿٤٩﴾

और वह (अल्लाह) ही है जिस ने हवाओं को अपनी दयालुता से पहले शुभ-समाचार देने के लिए भेजा और हम ने बादलों से पवित्र एवं स्वच्छ पानी उतारा है।४९।

لِّنُحْيِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ﴿٥٠﴾

ताकि हम उस के द्वारा मुर्दा देश (अर्थात् भूमि) को जीवित करें और उस पानी के द्वारा अपने पैदा किए हुए पशुओं और अनेक मनुष्यों को तृप्त करें।५०।

وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٥١﴾

और हम ने उस (पानी) को उन (मानव-समाज) में भली-भाँति फैला दिया ताकि वे शिक्षा प्राप्त करें, किन्तु बहुत से लोग इन्कार के सिवा किसी बात से प्रसन्न नहीं होते।५१।

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ﴿٥٢﴾

और यदि हम चाहते तो प्रत्येक बस्ती में एक सावधान करने वाला (सुधारक या नबी) भेज देते।५२।

فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿٥٣﴾

अतः तू इन्कार करने वाले लोगों की बात न मान और इस (क़ुर्आन) के द्वारा उन से बड़ा जिहाद[1] कर।५३।

وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّ

और वही है जिस ने दो समुद्रों[2] को चलाया है, जिन में से एक तो अति मधुर है और

1. 'जिहाद' से तात्पर्य क़ुर्आन द्वारा सच्चाई का प्रचार करना है।

2. मूल शब्द 'बहर' समुद्र और नदी दोनों के लिए प्रयुक्त होता है। वास्तव में इस स्थान पर धर्मों का मुक़ाबिला है। किसी धर्म की शिक्षा श्रेयस्कर होती है तथा किसी की निकृष्ट। यहाँ उपमा

(शेष पृष्ठ ७७९ पर)

هٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۝

दूसरा नमकीन और कड़ुआ है और उस (अल्लाह्) ने उन दोनों के बीच एक आड़ बना दी है तथा ऐसा प्रबन्ध कर दिया है कि वे एक-दूसरे को दूर[1] रखते हैं और आपस में मिलने नहीं देते ।५४।

وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ۝

और वह (अल्लाह्) ही है, जिस ने पानी[2] से मानव को पैदा किया है। अतएव कभी तो उसे नसब (पैत्रिक वंशावली) और कभी सिहर (ससुराल की वंशावली) बनाया है और तेरा रब्ब प्रत्येक बात के करने पर पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है ।५५।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ۝

और वे (इन्कार करने वाले लोग) अल्लाह के सिवा उन की पूजा करते हैं जो न उन्हें लाभ पहुंचा सकते हैं तथा न कष्ट और इन्कार करने वाले लोग सदैव अपने रब्ब के (प्रचलित धर्मों के) विरुद्ध होते हैं ।५६।

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝

और हम ने तो तुझे केवल शुभ-समाचार देने वाला एवं सावधान करने वाला बनाया है ।५७।

(पृष्ठ ७७८ का शेष)

द्वारा बताया गया है कि समुद्र का पानी कितना कड़ुआ एवं खारा होता है तथा जो नदियाँ उस में आ कर गिरती हैं उन का पानी मीठा होता है। ठीक इसी प्रकार जो शिक्षाएँ अल्लाह् की ओर से आती हैं वे मधुर और श्रेयस्कर होती हैं, किन्तु जो शिक्षाएँ चिरकाल से संसार में विद्यमान हैं और प्रत्यक्ष रूप में इल्हाम या ईश-वाणी से वञ्चित हैं वे कड़ुवी एवं खारी होती हैं जैसे समुद्र का पानी।

1. अर्थात् नदियों एवं समुद्रों को साधारण रूप में मिला दिया है, किन्तु साथ ही ऐसा प्रबन्ध कर दिया गया है कि न तो नदियाँ खारी या कड़ुवी हो सकती हैं तथा न ही समुद्र मधुर हो सकता है।

2. इस से अभिप्राय वीर्य्य है।

قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿۵۸﴾

तू उन से कह दे कि मैं तुम से उस[1] का कोई प्रतिफल[2] नहीं माँगता। हाँ! यदि कोई व्यक्ति अपनी इच्छा से चाहे तो अपने रब्ब की ओर जाने वाली राह को ग्रहण कर ले, (वही मेरा प्रतिफल होगा) ।५८।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ۚ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ﴿۵۹﴾

और तू उस पर भरोसा रख जो जीवित है (तथा सब को जीवित रखता है)। वह सदा के लिए अमर है तथा उस की पवित्रता के साथ साथ उस की स्तुति भी कर और वह अपने बन्दों के पापों को ख़ूब जानता है ।५९।

الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ خَبِيْرًا ﴿۶۰﴾

वह (अल्लाह) जिस ने आसमानों तथा ज़मीन और जो कुछ उन के बीच है उन सब की छः दौरों में रचना की है। फिर वह अर्श पर मज़बूती से क़ायम हो गया। वह रहमान है। अतः (हे मानव!) जब भी तू उस के बारे में कोई प्रश्न पूछे तो ज्ञानवान से पूछ जो बहुत जानने[3] वाला है (और ठीक-ठाक उत्तर दे सकता है) ।६०।

---

1. अर्थात् अल्लाह का सन्देश पहुँचाने का बदला।

2. इस आयत से भली-भाँति स्पष्ट है कि इस्लाम धर्म का प्रचार जब्र से करना उचित नहीं और इस आयत में यह खोल कर बताया गया है कि मैं इस्लाम के प्रचार के बदले में कोई प्रतिफल नहीं चाहता। मेरा प्रतिफल यही है कि यदि किसी का दिल इस्लाम की सच्चाई मान ले तो वह अपनी इच्छा से इस्लाम की आज्ञाओं का पालन करने वाला बन जाए। इस विषय में मैं किसी पर जब्र नहीं कर सकता और न ही करूँगा। इस शिक्षा के होते हुए यह आरोप लगाना कि इस्लाम-धर्म का प्रचार व प्रसार तलवार द्वारा जब्र से किया गया है, इस्लाम पर कितना अत्याचार है। क्या संसार में कोई दूसरा धर्म भी ऐसा है जिस ने अपने प्रचार के विषय में इस प्रकार खुले रूप में स्वतन्त्रता का समर्थन किया हो?

3. अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से पूछो।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَٰنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ﴿٦٠﴾

और जब उन्हें कहा जाता है कि रहमान के सामने सजद: में गिर जाओ तो वे कहते हैं कि रहमान क्या है? क्या हम उस के सामने सजद: करें जिस (के आगे सजद: करने) का तू हमें आदेश देता है? और यह बात उन्हें घृणा में और भी बढ़ा देती है।६१। (रुकू ५/३)

تَبَارَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا ﴿٦١﴾

वह सत्ता बड़ी बरकत वाली है जिस ने आकाश में नक्षत्रों के ठहरने की राशियाँ बनाई हैं और उस में चमकता हुआ दीपक[1] बनाया है और प्रकाश देने वाला चन्द्रमा बनाया है।६२।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ﴿٦٢﴾

वही है जिस ने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने वाला बनाया है, उस व्यक्ति के (हित के) लिए जो शिक्षा प्राप्त करना चाहे अथवा कृतज्ञ बनना चाहे।६३।

وَعِبَادُ الرَّحْمَٰنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ﴿٦٣﴾

और रहमान के सच्चे भक्त वे होते हैं जो धरती पर शान्तिपूर्वक[2] चलते हैं और जब मूर्ख लोग उन से बात[3] करते हैं तो वे कहते हैं कि हम तो तुम्हें शान्ति का आशीर्वाद देते हैं।६४।

وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ﴿٦٤﴾

और वे लोग भी जो अपने रब्ब के लिए रातें सजदों में तथा खड़े हो कर गुज़ार देते हैं।६५।

---

1. अर्थात् निजी प्रकाश वाला सूर्य।
2. अर्थात् अभिमान का प्रदर्शन नहीं करते।
3. अर्थात् जब मूर्ख व्यक्ति उन से मूर्खता की बातें करते हैं।

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾

और वे (अल्लाह के भक्त) कहते हैं कि हे हमारे रब्ब ! हम से नरक का अज़ाब टाल दे। उस का अज़ाब एक बहुत बड़ी तबाही है।६६।

إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٦٦﴾

वह (नरक) अस्थायी ठिकाने के रूप में भी तथा स्थायी ठिकाने के रूप में भी बुरा है।६७।

وَالَّذِيْنَ إِذَآ أَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾

और वे (अल्लाह के भक्त) ऐसे होते हैं कि जब वे ख़र्च करते हैं तो व्यर्थ ख़र्च नहीं करते हैं तथा न कन्जूसी से काम लेते हैं और उन का ख़र्च करना इन दोनों बातों के बीच-बीच रहता है।६८।

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿٦٨﴾

और वे लोग ऐसे होते हैं कि अल्लाह के सिवा किसी दूसरे उपास्य को नहीं पुकारते तथा न किसी जान की हत्या करते हैं, जिसे अल्लाह ने सुरक्षिता प्रदान की हो, सिवाय (शरीअत के) अधिकार के और न व्यभिचार करते हैं तथा जो व्यक्ति ऐसा कुकर्म करेगा, वह अपने पाप का प्रतिफल देख लेगा।६९।

يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ۖ ﴿٦٩﴾

उस के लिए क़ियामत के दिन अज़ाब अधिक किया जाएगा और वह उस में (पतित होकर) रहता चला जाएगा।७०।

إِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾

सिवाय उस व्यक्ति के जिस ने तौबः कर ली और ईमान ले आया तथा ईमान के अनुकूल कर्म किए। अतः ये लोग ऐसे होंगे कि अल्लाह उन के पापों को नेकियों से बदल देगा और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और दयावान् है।७१।

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾

और जो व्यक्ति तौब: करे तथा उस तौब: के अनुकूल कर्म करे तो वह व्यक्ति वास्तविक रूप में अल्लाह की ओर भुकता है ।७२।

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ﴿٧٢﴾

और वे लोग भी (अल्लाह के भक्त हैं) जो भूठी गवाही नहीं देते और जब व्यर्थ बातों के पास से गुज़रते हैं तो (बिना उन में शामिल होने के) मान-मर्यादा के साथ चले जाते हैं ।७३।

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾

और वे लोग भी कि जब उन्हें उन के रब्ब की आयतें याद दिलाई जाएँ तो वे उन के साथ अन्धों और बहरों का सा व्यवहार नहीं करते ।७४।

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ﴿٧٤﴾

और वे भी (रहमान के भक्त हैं) जो यह कहते हैं कि हे हमारे रब्ब! हमें अपनी पत्नियों की ओर से तथा सन्तान की ओर से आँखों की ठंडक प्रदान कर तथा हमें संयमी लोगों का इमाम[1] बना ।७५।

أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ﴿٧٥﴾

ये वे लोग हैं जिन्हें उन की नेकी पर क़ायम रहने के कारण (स्वर्ग में) चौबारे दिए जाएँगे और उन्हें उस में आशीर्वाद दिया जाएगा तथा शान्ति के सन्देश पहुँचाए जाएँगे ।७६।

خَالِدِينَ فِيهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٧٦﴾

वे उस में रहते चले जाएँगे। वह (स्वर्ग) अस्थायी निवास-स्थान की दृष्टि से भी उत्तम है तथा स्थायी निवास-स्थान की दृष्टि से भी ।७७।

---

1. अर्थात् हमारा परिवार और वंश हमारा अनुसरण करे तथा वह संयमी हो। केवल नातेदारी के कारण हमारा पक्ष न ले।

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا

(हे रसूल !) तू उन से कह दे कि मेरे रब्ब को तुम्हारी क्या आवश्यकता है, यदि तुम्हारी ओर से प्रार्थना (और क्षमा की याचना) न हो ? सो जब कि तुम ने (अल्लाह के सन्देश को) झुठला दिया तो अब उस का अज़ाब तुम से चिमटा ही रहेगा ।७८। (रुकू ६/४)
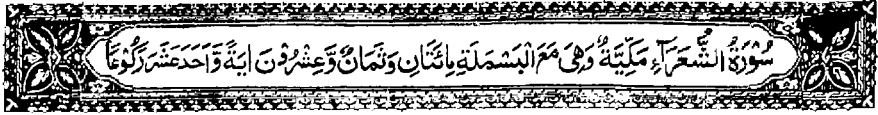
सूर: अल्-शुअरा

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की दो सौ अठाइस आयतें एवं ग्यारह रुकू हैं ।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम लेकर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

طٰسٓمّٓ ②

ताहिर, समीअ (और) मजीद[1] (अल्लाह इस सूर: को उतारने वाला है) ।२।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ③

ये आयतें उस किताब की हैं जो (अपनी बातों को) खोल कर वर्णन करती है ।३।

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ④

क्या तू अपनी जान ही खो देगा कि वे लोग मोमिन[2] क्यों नहीं बन जाते ? ।४।

اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ⑤

यदि हम चाहें तो आकाश से उन के लिए एक ऐसा निशान उतार दें जिस के सामने उन की गर्दनें झुकी की झुकी रह जाएँ ।५।

---

1. मूल शब्द 'ता', 'सीन' (और) 'मीम' से अभिप्राय ताहिर, समीअ और मजीद है । ये अल्लाह के गुणवाचक नाम हैं । जिस का अर्थ है दिलों को पवित्र करने वाला, सुनने वाला और महिमाशाली ।

2. अर्थात् तेरा पवित्र और सहानुभूति से भरा हुआ दिल लोगों के सत्य स्वीकार न करने पर व्याकुल हो जाता है और तेरी यह प्रबल इच्छा है कि वे भी हिदायत पा जाएँ ।

وَ مَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ۝

और रहमान की ओर से कभी कोई नवीन शिक्षा नहीं आती कि जिस से लोग विमुखता प्रकट न करते हों[1] ।६।

فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنْبٰٓؤُا مَا كَانُوا بِهٖ يَسْتَهْزِءُونَ ۝

चूँकि उन्हों ने अल्लाह की आयतों को झुठलाया है इस के फलस्वरूप उन की हँसी की हक़ीक़त उन पर अवश्य खुल जाएगी ।७।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝

क्या वे धरती को नहीं देखते कि हम ने उस में तरह-तरह के उत्तम जोड़े बनाए हैं ।८।

إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۝

इस में एक बहुत बड़ा निशान[2] है, किन्तु उन में से बहुत से लोग ईमान नहीं लाते ।९।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

और निस्सन्देह तेरा रब्ब ही ग़ालिब (और) बार-बार दया करने वाला है ।१०। (रुकू १/५)

وَإِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوسٰٓى أَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ ۝

और (याद कर) जब तेरे रब्ब ने मूसा को पुकारा था (और कहा था) कि अत्याचारी जाति के पास जा ।११।

---

1. परम्परा से यह बात चली आई है कि प्रत्येक नबी का इन्कार किया जाता है। इस लिए अल्लाह ऐसे चमत्कार नहीं दिखाता जिस से लोग विवश हो कर ईमान लाएँ, क्योंकि यदि वह ऐसा करे तो वह कुछ नबियों का पक्षपाती ठहराया जाएगा, परन्तु वह ऐसा नहीं करता।

2. संसार में प्रत्येक वस्तु का जोड़ा है। नेक का जोड़ा नेक और बुरे का जोड़ा बुरा। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के जोड़े और साथी भी सदाचारी एवं पवित्र थे जैसे सहाबा। यदि इन्कार करने वाले अपनी दुष्ट आत्मा और मलिनता के होते हुए मुसलमान हो जाते तो इस का यह अर्थ होता कि एक सदाचारी एवं पवित्र सत्ता को गन्दे और अपवित्र जोड़े मिल गए।

قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ اَلَا يَتَّقُوْنَ ﴿١٢﴾

अर्थात् फ़िरऔन की जाति (के पास जा तथा कह कि) क्या वे संयम धारण नही करते ? ।१२।

قَالَ رَبِّ اِنِّیْۤ اَخَافُ اَنْ یُّكَذِّبُوْنِ ﴿١٣﴾

उस ने कहा कि हे मेरे रब्ब मुझे डर है कि वे मुझे झुठला न दें ।१३।

وَ يَضِيْقُ صَدْرِیْ وَ لَا يَنْطَلِقُ لِسَانِیْ فَاَرْسِلْ اِلٰی هٰرُوْنَ ﴿١٤﴾

और मेरे सीने में घुटन सी है तथा मेरी ज़बान अच्छी तरह चलती नहीं। अत: (मेरे साथ) हारून को भी भेज ।१४।

وَ لَهُمْ عَلَیَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿١٥﴾

और फिर इन लोगों को मेरे विरुद्ध[1] एक आरोप भी है और मुझे डर[2] है कि वे मेरी हत्या न कर दें ।१५।

قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَاۤ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ﴿١٦﴾

कहा कि कदापि नहीं। अत: (हमारा आदेश सुन कर) तुम दोनों ही हमारे निशान ले कर चले जाओ। हम तुम्हारे (एवं तुम्हारे साथियों के) साथ होंगे (और तुम्हारी प्रार्थना को) सुनते रहेंगे ।१६।

فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَاۤ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٧﴾

अत: फ़िरऔन के पास जाओ और उस से कहो कि हम सारे जहानों के रब्ब के भेजे हुए हैं ।१७।

---

1. इस आयत में उस आरोप की ओर संकेत है जो हज़रत मूसा के हाथ से भूलवश एक व्यक्ति की हत्या हो गई थी।

2. इस से यह अभिप्राय है कि सम्भवत: वे क्रोधवश तेरा सन्देश सुनने से पहले ही मेरी हत्या कर दें और तेरा सन्देश सुनने से वञ्चित हो जाएँ। उन्हें अपने मरने का डर नहीं था अपितु जाति के लोगों का सत्य के ग्रहण करने से वञ्चित रह जाने का डर था।

اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ ۝

(इस आदेश के साथ) कि हमारे साथ इस्राईल की संतान को भेज दे।१८।

قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِیْنَا وَلِیْدًا وَّ لَبِثْتَ فِیْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِیْنَ ۝

इस पर (फ़िरऔन) ने कहा कि (हे मूसा!) क्या हम ने तेरा पालन-पोषण उस समय नहीं किया था जब कि तू अभी बच्चा ही था और तूने अपनी आयु के कई वर्ष हम में गुज़ारे हैं ?।१९।

وَ فَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِیْ فَعَلْتَ وَ اَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ۝

और तूने वह कर्म भी किया है जो तू कर चुका है और तू हमारे (उपकारों का) कृतघ्न है।२०।

قَالَ فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّ اَنَا مِنَ الضَّآلِّیْنَ ۝

(मूसा ने) कहा कि वह कर्म (जिस की ओर तूने संकेत किया है) मैं ने उस समय किया था जब कि (वास्तविकता का) मुझे ज्ञान न था।२१।

فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِیْ رَبِّیْ حُكْمًا وَّ جَعَلَنِیْ مِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ۝

अतः उस के नतीजे में जब मुझे तुम से डर लगने लगा तो मैं तुम्हारे पास से भाग कर चला गया। इस पर मेरे रब्ब ने मुझे अपना हुक्म[1] (नुबुव्वत) प्रदान किया और मुझे रसूलों में से (एक रसूल) बना दिया।२२।

وَ تِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَیَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ ۝

और यह (बचपन में मेरा पालन-पोषण करने की) कृपा जिस का तुम एहसान जतला रहे हो (इस बात के सामने है ही क्या कि) तुम ने बनी-इस्राईल की सारी जाति को दास बना रखा है।२३।

---

1. नुबुव्वत की पदवी का प्राप्त होना इस बात का प्रमाण है कि मैंने जान-बूझ कर कोई उत्पात नहीं किया था अन्यथा अल्लाह मुझे इस प्रकार सम्मान न देता।

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٤

इस पर फ़िरऔन ने (लज्जित हो कर बात टालने के उद्देश्य से) कहा कि यह जहानों का रब्ब कौन है ? (जिस की ओर से तुम अपना आना बताते हो) ।२४।

قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝٢٥

(मूसा ने) कहा कि आसमान और जमीन तथा जो कुछ इन दोनों के बीच है उन का रब्ब । यदि तुम में विश्वास करने की इच्छा है ।२५।

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ۝٢٦

(तब) फ़िरऔन ने अपने आस-पास के लोगों मे कहा कि क्या तुम सुनते नहीं ? (कि मूसा क्या कहता है) ।२६।

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَاۗىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٢٧

(मूसा ने) कहा कि वही जो तुम्हारा भी रब्ब है और तुम्हारे पूर्वजों का भी रब्ब था ।२७।

قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ۝٢٨

(इस पर फ़िरऔन ने) कहा कि (हे लोगो !) तुम्हारा वह रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है निश्चय ही पागल[1] है ।२८।

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٢٩

(मूसा ने समझ लिया कि वह बात टालना चाहता है और) कहा कि जहानों का रब्ब वही है जो पूर्व का भी रब्ब है और पश्चिम का भी और जो कुछ इन के बीच है (उन का भी रब्ब है) शर्त यह है कि तुम बुद्धि से काम लो ।२९।

---

1. यह भाव नहीं कि मैं प्रश्न तो कुछ करता हूं और यह उत्तर कुछ और देता है बल्कि भाव यह है कि मूसा उस बात के कहने से नहीं डरता जिस के विरुद्ध मैं अपना विचार प्रकट कर चुका हूँ । यही पागल होने का चिन्ह है ।

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ إِلَٰهًا غَيْرِي لَأَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُونِينَ ۞

(इस पर) फ़िरऔन ने (क्रोध[1] में आ कर) कहा कि यदि तू ने मेरे सिवा कोई दूसरा उपास्य बनाया तो मैं तुझे कारावास में डाल दूँगा ।३०।

قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ۞

उस (मूसा) ने कहा कि क्या ऐसी परिस्थिति में भी कि मैं (वास्तविकता) खोल देने वाली कोई वस्तु (अर्थात् चमत्कार) तेरे पास ले आऊँ ? ।३१।

قَالَ فَأْتِ بِهِ إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۞

(इस पर) फ़िरऔन ने कहा कि यदि तू सच्चा है तो उसे ले आ ।३२।

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ۞

अतः उस (मूसा) ने अपनी लाठी धरती पर रख दी तो अचानक (फ़िरऔन और उस के साथियों ने देखा कि) वह साफ़-साफ़ दिखाई देने वाला एक अजगर है ।३३।

وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّاظِرِينَ ۞ ع

और उस ने अपना हाथ (अपनी बग़ल से) निकाला तो देखने वालों ने अचानक देखा कि वह बिल्कुल सफ़ेद है ।३४। (रुकू २/६)

قَالَ لِلْمَلَإِ حَوْلَهُ إِنَّ هَٰذَا لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ ۞

इस पर फ़िरऔन ने अपने आस-पास के सरदारों से कहा कि यह तो कोई बड़ा जानकार जादूगर है ।३५।

يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُم بِسِحْرِهِ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ۞

यह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारे देश से अपने जादू के ज़ोर से निकाल दे । अतः अब तुम्हारा क्या परामर्श है ? ।३६।

---

1. यदि फ़िरऔन इस अवसर पर यह कहता कि मैं भी वैसा ही रब्ब हूँ तो स्वयं उस की जाति जो नक्षत्र-पूजक थी उस के विरुद्ध हो जाती ।

قَالُوٓا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِينَ ﴿٣٧﴾

वे बोले कि इसे तथा इस के भाई को (कुछ दिन) ढील दे और विभिन्न नगरों की ओर अपने लोग भेजिए जो (योग्य व्यक्तियों को) इकट्ठा कर सकें।३७।

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيمٍ ﴿٣٨﴾

और वे हर बड़े जादूगर और हर बड़े ज्ञानी को तेरे पास ले आएं।३८।

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيقٰتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٣٩﴾

इस पर सभी जादूगर एक नियत दिन पर इकट्ठा किए गए।३९।

وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنتُمْ مُّجْتَمِعُونَ ﴿٤٠﴾

और लोगों से कहा गया कि क्या तुम सब (एक उद्देश्य पर) सहमत होने के लिए तय्यार हो ?।४०।

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ إِن كَانُوا هُمُ الْغٰلِبِينَ ﴿٤١﴾

ताकि यदि जादूगर विजयी हों तो हम उन के कहने पर चलें।४१।

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَئِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِينَ ﴿٤٢﴾

अतः जब जादूगर आ गए तो उन्हों ने फ़िरऔन से कहा कि यदि हम विजयी हुए तो क्या हमें कोई पुरस्कार भी मिलेगा ?।४२।

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٣﴾

(फ़िरऔन ने) कहा कि हाँ ! बल्कि इस परिस्थिति में तुम राज्य-सभा में समीपवर्ती लोगों का सम्मान प्राप्त कर सकोगे।४३।

قَالَ لَهُمْ مُّوسَىٰٓ أَلْقُوا مَآ أَنتُمْ مُّلْقُونَ ﴿٤٤﴾

इस पर मूसा ने उन से कहा कि जो उपाय[1] तुम्हें करना है कर लो।४४।

1. मूल शब्द 'इल्क़ा' का अर्थ है—किसी वस्तु को इस प्रकार फेंकना कि दूसरे लोग उसे देखने लग जाएं। (मुफ़रदात) आयत का भाव यह है कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे प्रकट कर दो ताकि सभी लोग उसे देख सकें।

فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ۝٤٥

इस पर उन्हों ने अपनी रस्सियाँ और अपनी लाठियाँ (मैदान में) डाल दीं और बोले कि फ़िरऔन के प्रताप की सौगन्ध ! हम अवश्य विजयी होंगे ।४५।

فَأَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُوْنَ ۝٤٦

तब मूसा ने भी अपनी लाठी दे मारी तो अचानक वह लाठी उन के झूठों को मलियामेट करने लगी ।४६।

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۝٤٧

तब जादूगर (अल्लाह के लिए) सजद: में गिरा दिए गए ।४७।

قَالُوْا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٨

और उन्हों ने कहा कि हम सब जहानों के रब्ब पर ईमान लाते हैं ।४८।

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝٤٩

जो मूसा और हारून का रब्ब है ।४९।

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ أَنْ اٰذَنَ لَكُمْ إِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَأُوصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِيْنَ ۝٥٠

इस पर फ़िरऔन (झुँझलाकर) बोला कि क्या तुम मेरी आज्ञा से पहले ही ईमान ले आए हो ? यह (व्यक्ति) निश्चय ही तुम्हारा कोई सरदार है जिस ने तुम्हें इस जादू की शिक्षा दी है। अत: शीघ्र ही तुम्हें (अपने परिणाम का) पता चल जाएगा। मैं तुम्हारे हाथों तथा पावों को अपनी अवज्ञा के कारण काट दूँगा और तुम सब को फाँसी पर लटका दूँगा ।५०।

قَالُوْا لَا ضَيْرَ إِنَّا إِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۝٥١

वे बोले कि (इस में) कोई हानि नहीं। अन्तत: हम सब अपने रब्ब की ओर ही लौट कर जाने वाले हैं ।५१।

إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَا أَنْ كُنَّا أَوَّلَ

हमें आशा है कि हमारा रब्ब हमारे पापों को इसी कारण क्षमा कर देगा कि हम सब से

الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٥١ ع

पहले ईमान लाने वालों में से बन गए।५२। (रुकू ३/७)

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝٥٢

और हम ने मूसा की ओर वह्य की कि मेरे बन्दों को रातों-रात ले जा, तुम्हारा पीछा किया जाएगा।५३।

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۝٥٣

इस पर फ़िरऔन ने नगरों की ओर एकत्रित करने वाले लोग भेजवाए।५४।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ۝٥٤

(यह कहते हुए) कि ये लोग (बनी-इस्राईल) तो एक छोटा सा समूह है।५५।

وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ۝٥٥

और इस पर भी ये लोग हमें क्रोध दिला रहे हैं।५६।

وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ۝٥٦

और हम तो एक बड़ी संख्या रखने वाला समुदाय हैं और अत्यन्त सावधान हैं। (अतः हमें इन का मुक़ाबिला करना चाहिए)।५७।

فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝٥٧

तब हम ने उन (फ़िरऔन और उस के साथियों) को बाग़ों और झरनों से निकाल दिया।५८।

وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝٥٨

और (इसी प्रकार) ख़ज़ानों और आदरणीय देश से भी (निकाल दिया)।५९।

كَذٰلِكَ ؕ وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝٥٩

ऐसा ही हुआ और हम ने उन पदार्थों का वारिस[1] इस्राइलियों को बना दिया।६०।

---

1. अभिप्राय यह है कि बनी-इस्राईल को ऐसे देश में ले गए जहाँ ये सब पदार्थ उपलब्ध थे अर्थात् बाग़, स्रोत, धन-दौलत और उत्तम देश—फ़लस्तीन, अन्यथा बनी-इस्राईल फ़िरऔन की घटना के पश्चात् मिस्र देश के शासक नहीं हुए।

فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ۝٦٠

तत्पश्चात् प्रातःकाल वे (फ़िरऔन और इस के साथी इस्राइलियों को रोकने के लिए) उन के पीछे चल पड़े।६१।

فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ۝٦١

फिर जब दोनों गिरोह एक-दूसरे के आमने-सामने हुए तो मूसा के साथियों ने कहा कि हम तो पकड़े गए।६२।

قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ۝٦٢

(मूसा ने) उत्तर दिया कि ऐसा कदापि नहीं होगा। मेरा रब्ब मेरे साथ है और वह मुझे सफलता का मार्ग दिखाएगा।६३।

فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ۭ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ۝٦٣

तब हम ने मूसा की ओर वह्य की कि अपनी लाठी समुद्र पर मार, जिस पर समुद्र फट गया और उस का प्रत्येक भाग मानों एक बड़े टीले की भाँति दिखाई देने लगा।६४।

وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ۝٦٤

और उस समय हम दूसरे गिरोह (अर्थात् फ़िरऔन के गिरोह) को निकट लाए।६५।

وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۝٦٥

और मूसा एवं उस के साथियों को मुक्ति दी।६६।

ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝٦٦

और हम ने दूसरे गिरोह को डुबो दिया।६७।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٦٧

इस घटना में एक बड़ा चमत्कार है किन्तु इन (इन्कार करने वाले लोगों) में से बहुत से लोग मानते ही नहीं हैं।६८।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٦٨ ع

और निस्सन्देह तेरा रब्ब ग़ालिब (अर्थात् प्रभुत्वशाली) और बार-बार दया करने वाला है।६९। (रुकू ४/८)

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ۝

और उन्हें इब्राहीम की घटना पढ़ कर सुना ।७०।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝

जब कि उस ने अपने पिता तथा अपनी जाति के लोगों से कहा कि तुम किस की उपासना करते हो ? ।७१।

قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ۝

उन्हों ने कहा कि हम मूर्तियों की पूजा करते हैं और उन के सामने ध्यान-मग्न बैठे रहते हैं ।७२।

قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ۝

इस पर इब्राहीम ने कहा कि क्या जब तुम उन्हें पुकारते हो तो वे (मूर्तियाँ) तुम्हारी पुकार को सुनती हैं ? ।७३।

اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ۝

या वे तुम्हारे लिए कुछ लाभदायक हैं अथवा कोई हानि पहुँचा सकती हैं ? ।७४।

قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ۝

वे बोले कि ऐसा तो नहीं, परन्तु हम अपने पूर्वजों को ऐसा ही करते देखते चले आए हैं ।७५।

قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۝

उस ने कहा कि क्या तुम जानते हो कि जिन की तुम उपासना करते चले आ रहे हो ।७६।

اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ۝

तुम भी तथा तुम्हारे पूर्वज भी ।७७।

فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

वे सब के सब सारे जहानों के रब्ब के सिवा मेरा सर्वनाश चाहते हैं ।७८।

الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ۝

जिस (रब्ब) ने मुझे पदा किया है वह मुझे हिदायत भी देगा ।७९।

وَالَّذِىْ هُوَ يُطْعِمُنِىْ وَيَسْقِيْنِ ۝

और जिस का गुण यह है कि वही मुझे भोजन कराता तथा वही मुझे पानी पिलाता है।८०।

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ۝

और जब मैं बीमार होता हूँ तो वह मुझे स्वास्थ्य प्रदान करता है।८१।

وَالَّذِىْ يُمِيْتُنِىْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ۝

और जो मुझे मौत देगा तथा फिर जीवित करेगा।८२।

وَالَّذِىْٓ أَطْمَعُ أَنْ يَّغْفِرَ لِىْ خَطِيْٓـَٔتِىْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۝

और उस से मुझे आशा है कि वह दण्ड और बदला देन के समय मेरे पाप क्षमा कर देगा।८३।

رَبِّ هَبْ لِىْ حُكْمًا وَّأَلْحِقْنِىْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۝

हे मेरे रब्ब! मुझे ठीक शिक्षा दे और नेक लोगों में शामिल कर।८४।

وَاجْعَلْ لِّىْ لِسَانَ صِدْقٍ فِى الْاٰخِرِيْنَ ۝

और बाद में आने वाले लोगों में मेरी सच्ची और अमर रहने वाली प्रशंसा मुझे प्रदान कर।८५।

وَاجْعَلْنِىْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ۝

और मुझे निअमतों वाले स्वर्ग के वारिसों में से बना।८६।

وَاغْفِرْ لِأَبِىْٓ إِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ۝

और मेरे पिता को क्षमा कर दे, वह भटक जाने वालों में से था।८७।

وَلَا تُخْزِنِىْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ۝

और जिस दिन लोग जीवित कर के उठाए जाएँ, उस दिन मुझे लज्जित न कीजियो।८८।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ۝

जिस दिन न तो धन कोई लाभ देगा तथा न पुत्र ही (लाभ देंगे)।८९।

إِلَّا مَنْ أَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۝

हाँ! (वही लाभ प्राप्त करेगा) जो अल्लाह के पास पवित्र दिल ले कर आएगा।९०।

وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٩١﴾

और जिस दिन स्वर्ग संयमियों के निकट कर दिया जाएगा ।९१।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿٩٢﴾

और पथभ्रष्ट लोगों के लिए नरक पर से पर्दे उठा दिए जाएँगे ।९२।

وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٩٣﴾

और कहा जाएगा कि कहाँ हैं वे जिन की तुम अल्लाह के सिवा उपासना किया करते थे ।९३।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٩٤﴾

क्या वे तुम्हारी सहायता कर सकते हैं या तुम्हारा बदला ले सकते हैं ? ।९४।

فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿٩٥﴾

अतः उस समय वे और पथभ्रष्ट लोग उस (नरक) में औंधे मुंह गिरा दिए जाएंगे ।९५।

وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿٩٦﴾

और इब्लीस की सेनाएँ सब की सब (भी उस नरक में औंधे मुंह गिरा दी जाएंगी) ।९६।

قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٩٧﴾

वे जब परस्पर एक-दूसरे से उस (नरक) में झगड़ा कर रहे होंगे तो कहेंगे ।९७।

تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٨﴾

अल्लाह की क़सम ! हम खुली-खुली गुमराही में पड़े हुए थे ।९८।

اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٩﴾

जब कि हम तुम्हें सारे जहानों के रब्ब जैसा सम्मान देते थे ।९९।

وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٠٠﴾

और हमें तो अपराधियों ने ही सम्मार्ग से भटकाया था ।१००।

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ﴿١٠١﴾

अतएव (आज) शफ़ाअत (अर्थात् सिफ़ारिश) करने वालों में से हमारी कोई सिफ़ारिश नहीं करता ।१०१।

وَّلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠٢﴾

और न कोई हमारी सहानुभूति प्रकट करने वाला मित्र है।१०२।

فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

अतः यदि हमें लौटने का सामर्थ्य होता तो हम (लौट कर) अवश्य मोमिनों में सम्मिलित हो जाते।१०३।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾

इस (घटना) में एक बहुत बड़ा निशान है किन्तु इन (इन्कार करने वालों) में से बहुत से ईमान नहीं लाते।१०४।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٥﴾

और निश्चय ही तेरा रब्ब ग़ालिब (अर्थात् प्रभुत्वशाली) और बार-बार दया करने वाला है।१०५। (रुकू ५/९)

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٠٦﴾

नूह की जाति के लोगों ने अपने रसूलों का इन्कार किया।१०६।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٠٧﴾

जब कि उन से उन के भाई नूह[1] ने कहा कि क्या तुम संयम धारण नहीं करते ?।१०७।

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٠٨﴾

मैं तुम्हारी ओर एक अमानतदार रसूल हो कर आया हूँ।१०८।

---

1. पवित्र क़ुर्आन में बार-बार एक रसूल के इन्कार को समस्त रसूलों का इन्कार ठहराया गया है। इस से यह संकेत किया गया है कि सब रसूल नुबुव्वत के एक ही रास्ते पर आते रहे हैं। फिर जब कि नुबुव्वत के रास्ते के होते हुए एक रसूल का इन्कार किया जाए तो इस से यह परिणाम निकलता है कि यदि कोई इन्कार करने वाला किसी पहले रसूल के समय में होता तो वह उस रसूल का भी इन्कार कर देता, क्योंकि जो युक्तियाँ और प्रमाण उस रसूल की सच्चाई के लिए थे वे ही युक्तियाँ तथा प्रमाण इस आधुनिक रसूल की सच्चाई के लिए भी हैं। इस आयत का यह अर्थ भी हो सकता है कि हज़रत नूह के अनुयायियों में से बहुत से रसूल उस की अधीनता में आए जिस का इन्कार उस की जाति के लोगों ने किया।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيۡعُوۡنِ

अतः अल्लाह के लिए संयम धारण करो और मेरी आज्ञा का पालन करो।१०९।

وَمَاۤ اَسۡـئَلُكُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ اَجۡرٍ‌ ۚ اِنۡ اَجۡرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ‌

और मैं तुम से इस (सेवा) का कोई बदला नहीं माँगता। मेरा बदला तो समस्त लोकों के रब्ब पर है।११०।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوۡنِ

अतएव अल्लाह के लिए संयम धारण करो और मेरी आज्ञा का पालन करो।१११।

قَالُوۡۤا اَنُؤۡمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الۡاَرۡذَلُوۡنَ

वे (इन्कार करने वाले) बोले कि क्या हम तुझ पर ईमान लाएँ जब कि वास्तविक बात यह है कि नीच लोग ही तेरे अनुयायी हुए हैं।११२।

قَالَ وَمَا عِلۡمِىۡ بِمَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ‌

उस ने कहा कि मुझे क्या पता कि उन के आंतरिक कर्म कैसे हैं ?।११३।

اِنۡ حِسَابُهُمۡ اِلَّا عَلٰى رَبِّىۡ‌ لَوۡ تَشۡعُرُوۡنَ‌

उन का हिसाब करना तो मेरे रब्ब के हाथ में है। काश ! तुम समझो।११४।

وَمَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ‌

और जो व्यक्ति मोमिन हो कर मेरे पास आता है तो मेरा काम यह नहीं कि मैं उसे धुतकार दूं।११५।

اِنۡ اَنَا اِلَّا نَذِيۡرٌ مُّبِيۡنٌ

मैं तो केवल खुले-खुले रूप में सावधान करने वाला (एक मनुष्य) हूँ।११६।

قَالُوۡا لَـئِنۡ لَّمۡ تَنۡتَهِ يٰـنُوۡحُ لَـتَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡمَرۡجُوۡمِيۡنَ

(उन इन्कार करने वाले लोगों ने) कहा कि हे नूह ! यदि तू न रुका तो संगसार किए जाने वालों में से हो जाएगा (अर्थात् हम तुझे पथराव कर के मार देंगे)।११७।

قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوۡمِیۡ کَذَّبُوۡنِ ﴿۱۱۸﴾

इस पर (नूह ने) कहा, हे मेरे रब्ब ! मेरी जाति के लोगों ने मुझे झुठला दिया है।११८।

فَافۡتَحۡ بَیۡنِیۡ وَ بَیۡنَهُمۡ فَتۡحًا وَّ نَجِّنِیۡ وَ مَنۡ مَّعِیَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ ﴿۱۱۹﴾

अतः तू मेरे तथा उन के बीच एक अटल फ़ैसला कर और मुझे तथा मेरे साथी मोमिनों को (शत्रु की बुराई) से बचा ले।११९।

فَاَنۡجَیۡنٰهُ وَ مَنۡ مَّعَهٗ فِی الۡفُلۡکِ الۡمَشۡحُوۡنِ ﴿۱۲۰﴾

अतः हम ने उसे और जो लोग उस के साथ ईमान ला चुके थे एक भरी हुई नौका के द्वारा (बुराई से) बचा लिया।१२०।

ثُمَّ اَغۡرَقۡنَا بَعۡدُ الۡبٰقِیۡنَ ﴿۱۲۱﴾

तदुपरांत जो लोग बच गए थे उन्हें डुबो दिया।१२१।

اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیَةً ؕ وَ مَا کَانَ اَکۡثَرُهُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ ﴿۱۲۲﴾

इस में एक बहुत बड़ा निशान था, परन्तु इन्कार करने वालों में से बहुत से ईमान लाने पर तय्यार नहीं थे।१२२।

وَ اِنَّ رَبَّکَ لَهُوَ الۡعَزِیۡزُ الرَّحِیۡمُ ﴿۱۲۳﴾ ع

और तेरा रब्ब ही ग़ालिब (अर्थात् प्रभुत्व-शाली) एवं बार-बार दया करने वाला है।१२३। (रुकू ६/१०)

کَذَّبَتۡ عَادُ ۣالۡمُرۡسَلِیۡنَ ﴿۱۲۴﴾

(इसी तरह) आद ने भी रसूलों का इन्कार किया था।१२४।

اِذۡ قَالَ لَهُمۡ اَخُوۡهُمۡ هُوۡدٌ اَلَا تَتَّقُوۡنَ ﴿۱۲۵﴾

जब कि उन से उन के भाई हूद ने कहा कि क्या तुम संयम धारण नहीं करते ?।१२५।

اِنِّیۡ لَکُمۡ رَسُوۡلٌ اَمِیۡنٌ ﴿۱۲۶﴾

मैं तुम्हारी ओर एक अमानतदार रसूल बन कर आया हूँ।१२६।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیۡعُوۡنِ ﴿۱۲۷﴾

अतः अल्लाह के लिए संयम धारण करो और मेरी आज्ञा का पालन करो।१२७।

وَمَآ اَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ اَجۡرٍ‌ۚ اِنۡ اَجۡرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ؁

और मैं तुम से इस (सेवा) का कोई बदला नहीं माँगता। मेरा बदला समस्त लोकों के रब्ब के हाथ में है (जिस ने मुझे भेजा है)।१२८।

اَتَبۡنُوۡنَ بِكُلِّ رِيۡعٍ اٰيَةً تَعۡبَثُوۡنَ ؁

क्या तुम हर टीले पर व्यर्थ काम करते हुए (स्मारक रूप में) भवन निर्माण करते हो?।१२९।

وَتَتَّخِذُوۡنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمۡ تَخۡلُدُوۡنَ ؁

और तुम बड़े-बड़े भवन बनाते हो ताकि तुम सदैव क़ायम रहो।१३०।

وَاِذَا بَطَشۡتُمۡ بَطَشۡتُمۡ جَبَّارِيۡنَ ؁

और जब तुम (किसी को) पकड़ते हो तो तुम अत्याचारियों की तरह पकड़ते हो।१३१।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوۡنِ ؁

अतः अल्लाह के लिए संयम धारण करो तथा मेरी आज्ञा का पालन करो।१३२।

وَاتَّقُوا الَّذِىۡۤ اَمَدَّكُمۡ بِمَا تَعۡلَمُوۡنَ ؁

(मैं फिर कहता हूँ कि) उस से डरो जिस ने तुम्हारी उन वस्तुओं से सहायता की है जिन को तुम जानते हो।१३३।

اَمَدَّكُمۡ بِاَنۡعَامٍ وَّبَنِيۡنَ ؁

उस ने तुम्हारी सहायता चौपायों तथा पुत्रों।१३४।

وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوۡنٍ ؁

और बाग़ों तथा स्रोतों द्वारा की है।१३५।

اِنِّىۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ؁

मैं तुम पर एक बड़े दिन के भयंकर अज़ाब के उतरने से डरता हूँ।१३६।

قَالُوۡا سَوَآءٌ عَلَيۡنَاۤ اَوَعَظۡتَ اَمۡ لَمۡ تَكُنۡ مِّنَ الۡوٰعِظِيۡنَ ؁

उन्हों ने कहा कि तेरा उपदेश देना या उपदेश न देना हमारे लिए बराबर है।१३७।

إِنْ هٰذَآ إِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣٨

(क्योंकि जो बातें हम करते हैं) वह तो पहले[1] ज़माने के लोगों के समय से होती चली आ रही है।१३८।

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ۝١٣٩

और हमारे ऊपर कदापि अज़ाब नहीं आएगा।१३९।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۗ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٤٠

सो उन्हों ने उसे झुठला दिया और हम ने उन का सर्वनाश कर दिया। इस घटना में एक बड़ा निशान है, परन्तु उन में से बहुत से मोमिन न बने।१४०।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝١٤١

और निस्सन्देह तेरा रब्ब ग़ालिब (अर्थात् प्रभुत्वशाली) एवं बार-बार दया करने वाला है।१४१। (रुकू ७/११)

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٤٢

समूद (जाति) ने भी रसूलों को झुठलाया था।१४२।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝١٤٣

जब कि उन्हें उन के भाई सालिह ने कहा था कि क्या तुम संयम धारण नहीं करते ?।१४३।

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝١٤٤

मैं तुम्हारी ओर एक अमानतदार रसूल बना कर भेजा गया हूँ।१४४।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝١٤٥

अतः अल्लाह के लिए संयम धारण करो और मेरी आज्ञा का पालन करो।१४५।

---

1. 'बहरे मुहीत' ने भी इस का यही अर्थ किया है कि इस से यह अभिप्राय नहीं कि तेरे जैसे उपदेश पहले लोग भी दिया करते थे, अपितु इसका यह अभिप्राय है कि जिन बातों से तू हमें रोकता है वही बातें पहले समय के लोग भी किया करते थे। (बहरे मुहीत, लेखक अल्लामा अबू हय्यान प्रति 7 पृष्ठ 34) सो यदि वे सुरक्षित रहे थे तो हम क्यों सुरक्षित नहीं रहेंगे।

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٦﴾

और मैं इस (काम) के लिए तुम से कोई बदला नहीं माँगता। मेरा बदला तो लोकों के रब्ब के हाथ में है।१४६।

اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ ﴿١٤٧﴾

क्या (तुम समझते हो कि) जो कुछ इस संसार में है तुम्हें उसी में शान्ति के साथ जीवन व्यतीत करते हुए छोड़ दिया जाएगा ? ।१४७।

فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٤٨﴾

अर्थात् बाग़ों और स्रोतों में ? ।१४८।

وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ﴿١٤٩﴾

और लहलहाते हुए खेतों और खजूरों में, जिन के फल बोझ के कारण टूटे जा रहे हों ? ।१४९।

وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ ﴿١٥٠﴾

और तुम लोग पर्वत खोद-खोद कर (अपनी बड़ाई पर) इतराते हुए घर बनाते हो।१५०।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٥١﴾

अतः अल्लाह के लिए संयम धारण करो तथा मेरी आज्ञा का पालन करो।१५१।

وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٥٢﴾

और उल्लंघन करने वालों की बातों को न मानो।१५२।

الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿١٥٣﴾

वे लोग जो देश में फ़साद फैलाते हैं तथा सुधार नहीं करते।१५३।

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٥٤﴾

इस पर वे (इन्कार करने वाले) बोले कि तुझे केवल भोजन[1] दिया जाता है।१५४।

مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٥٥﴾

तू हमारे जैसा ही एक मनुष्य है। अतएव यदि तू सच्चा है तो कोई चमत्कार प्रकट कर।१५५।

1. देखिए सूरः अल्-फ़ुर्क़ान टिप्पणी आयत 9।

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿١٥٦﴾

उस ने कहा कि यह एक ऊँटनी है। इस के लिए घाट पर पानी पीने के लिए दिन निश्चित है और एक दिन तुम्हारे लिए घाट से पानी लेना निश्चित है।१५६।

وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥٧﴾

और तुम इस ऊँटनी को कोई हानि न पहुँचाना अन्यथा तुम्हें एक बड़े दिन का अज़ाब आ पकड़ेगा।१५७।

فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿١٥٨﴾

(यह सुन कर भी) उन्हों ने उस ऊँटनी की कूँचें काट डालीं और फिर लज्जित हो गए।१५८।

فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٩﴾

तब उन्हें (नियत) अज़ाव ने आ पकड़ा। निस्सन्देह इस घटना में एक बहुत बड़ा चमत्कार था, परन्तु उन में से अधिकतर मोमिनों में सम्मिलित न हुए।१५९।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٠﴾ ع

और तेरा रब्ब निश्चय ही ग़ालिब (और) बार-बार दया करने वाला है।१६०। (रुकू ८/१२)

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٦١﴾

लूत की जाति के लोगों ने भी रसूलों का इन्कार किया।१६१।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٦٢﴾

जब कि उन के भाई लूत ने कहा कि क्या तुम संयम धारण नहीं करते ?।१६२।

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٦٣﴾

मैं तुम्हारी ओर एक अमानतदार रसूल बना कर भेजा गया हूँ।१६३।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٦٤﴾

अतएव अल्लाह के लिए संयम धारण करो एवं मेरी आज्ञा का पालन करो।१६४।

وَمَآ اَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ اَجۡرٍ‌ۚ اِنۡ اَجۡرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَؕ ﴿۱۶۵﴾

और मैं इस (काम) के लिए तुम से कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो केवल लोकों के रब्ब के हाथ में है ।१६५।

اَتَاۡتُوۡنَ الذُّكۡرَانَ مِنَ الۡعٰلَمِيۡنَۙ ﴿۱۶۶﴾

क्या तुम ने संसार की सारी चीज़ों में से नरों को अपने लिए चुन लिया है ? ।१६६।

وَتَذَرُوۡنَ مَا خَلَقَ لَـكُمۡ رَبُّكُمۡ مِّنۡ اَزۡوَاجِكُمۡ‌ؕ بَلۡ اَنۡتُمۡ قَوۡمٌ عٰدُوۡنَ ﴿۱۶۷﴾

और तुम उन्हें छोड़ते हो जिन्हें तुम्हारे रब्ब ने तुम्हारी पत्नियों के रूप में पैदा किया है ? (केवल तुम ऐसा काम ही नहीं करते) अपितु (वास्तविकता यह है कि) तुम (मानव-स्वभाव की) आवश्कताओं को हर प्रकार से भंग करने वाली जाति हो ।१६७।

قَالُوۡا لَـئِنۡ لَّمۡ تَنۡتَهِ يٰلُوۡطُ لَـتَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡمُخۡرَجِيۡنَ ﴿۱۶۸﴾

उन्हों ने कहा कि हे लूत ! यदि तू इस बात से न रुका तो तू देश से निकाले जाने वाले लोगों में सम्मिलित हो जाएगा ।१६८।

قَالَ اِنِّىۡ لِعَمَلِكُمۡ مِّنَ الۡقَالِيۡنَؕ ﴿۱۶۹﴾

उस (लूत) ने कहा कि मैं तुम्हारे काम को घृणा की दृष्टि से देखता हूँ ।१६९।

رَبِّ نَجِّنِىۡ وَاَهۡلِىۡ مِمَّا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۷۰﴾

हे मेरे रब्ब ! मुझे और मेरे परिवार को इन के बुरे कामों से छुटकारा दिला ।१७०।

فَنَجَّيۡنٰهُ وَاَهۡلَهٗۤ اَجۡمَعِيۡنَۙ ﴿۱۷۱﴾

अतः हम ने उसे तथा उस के परिवार को बचा लिया ।१७१।

اِلَّا عَجُوۡزًا فِى الۡغٰبِرِيۡنَ‌ۚ ﴿۱۷۲﴾

सिवाय एक बुढ़िया के जो पीछे रहने वालों में शामिल हो गई ।१७२।

ثُمَّ دَمَّرۡنَا الۡاٰخَرِيۡنَ‌ۚ ﴿۱۷۳﴾

और हम ने (लूत को बचा लेने के बाद) दूसरे सभी पीछे रहने वालों को नष्ट कर दिया ।१७३।

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ

और हम ने उन पर (पत्थरों की) वर्षा की और जिन्हें (अल्लाह की ओर से) सावधान कर दिया जाता है (किन्तु जब वे नहीं रुकते) तो उन पर बरसाई जाने वाली वर्षा अत्यन्त बुरी होती है ।१७४।

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

निस्सन्देह इस घटना में एक बड़ा निशान था, किन्तु इन में से फिर भी बहुत से लोग मोमिन न बने ।१७५।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ

निस्सन्देह तेरा रब्ब वह है जो ग़ालिब (और) बार-बार दया करने वाला है ।१७६। (रुकू ९/१३)

كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ

जंगल[1] के निवासियों ने भी रसूलों का इन्कार किया था ।१७७।

اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ

जब कि उन से शुऐब ने कहा कि क्या तुम संयम धारण नहीं करते ।१७८।

اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ

मैं तुम्हारी ओर एक अमानतदार रसूल बन कर आया हूँ ।१७९।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ

अतएव अल्लाह के लिए संयम धारण करो एवं मेरी आज्ञा[2] का पालन करो ।१८०।

1. देखिए सूरः 'हिज्र' टिप्पणी आयत 79 ।

2. इस से पहले वाली बहुत सी आयतों में अल्लाह के लिए संयम धारण करने का उल्लेख हो चुका है । अब इस आयत में बताया गया है कि अल्लाह के लिए संयम धारण करने का उद्देश्य तभी पूरा हो सकता है जब कि समय के रसूल की आज्ञा का पालन किया जाए, क्योंकि उसी के द्वारा अल्लाह की इच्छा का पता चल सकता है ।

وَمَآ اَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ اَجۡرٍ‌ۚ اِنۡ اَجۡرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ؕ‏ ﴿۱۸۰﴾

और मैं इस (काम) की तुम से कुछ मज़दूरी नहीं माँगता, मेरी मज़दूरी तो केवल समस्त लोकों के रब्ब के हाथ में है।१८१।

اَوۡفُوا الۡـكَيۡلَ وَلَا تَكُوۡنُوۡا مِنَ الۡمُخۡسِرِيۡنَ‌ۚ‏ ﴿۱۸۲﴾

(हे लोगो!) पूरा-पूरा नाप कर दिया करो और (दूसरों को) हानि पहुँचाने वाले न बनो।१८२।

وَزِنُوۡا بِالۡقِسۡطَاسِ الۡمُسۡتَقِيۡمِ‌ۚ‏ ﴿۱۸۳﴾

और सीधी डंडी से तौला करो।१८३।

وَلَا تَبۡخَسُوا النَّاسَ اَشۡيَآءَهُمۡ وَلَا تَعۡثَوۡا فِى الۡاَرۡضِ مُفۡسِدِيۡنَ‌ۚ‏ ﴿۱۸۴﴾

और लोगों को उन की चीज़ें (उन के हक़ से) कम न दिया करो तथा देश में कदापि उपद्रव मत फैलाया करो।१८४।

وَاتَّقُوا الَّذِىۡ خَلَقَكُمۡ وَالۡجِـبِلَّةَ الۡاَوَّلِيۡنَ ؕ‏ ﴿۱۸۵﴾

और जिस ने तुम्हें तथा तुम से पहली मख़्लूक़ को पैदा किया है उस के लिए संयम धारण करो।१८५।

قَالُوۡۤا اِنَّمَاۤ اَنۡتَ مِنَ الۡمُسَحَّرِيۡنَ ۙ‏ ﴿۱۸۶﴾

(इस पर उस की जाति के लोगों ने) कहा कि तू तो ऐसा व्यक्ति है जिसे भोजन दिया जाता है।१८६।

وَمَاۤ اَنۡتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُنَا وَاِنۡ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الۡكٰذِبِيۡنَ‌ۚ‏ ﴿۱۸۷﴾

और तू केवल हमारे जैसा एक मनुष्य है और निस्सन्देह हम तुझे झूठा समझते हैं।१८७।

فَاَسۡقِطۡ عَلَيۡنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ؕ‏ ﴿۱۸۸﴾

अतः यदि तू सच्चा है तो हमारे ऊपर कोई बादल का टुकड़ा गिरा।१८८।

قَالَ رَبِّىۡۤ اَعۡلَمُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ‏ ﴿۱۸۹﴾

(इस पर शुऐब ने) कहा कि मेरा रब्ब तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति जानता है।१८९।

فَكَذَّبُوۡهُ فَاَخَذَهُمۡ عَذَابُ يَوۡمِ الظُّلَّةِ‌ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

परन्तु (उस के समझाने पर भी) उन्हों ने उसे झुठलाया। अतएव उन्हें छाया वाले

عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٩٠﴾

दिन के अज़ाब ने आ पकड़ा (अर्थात् घने और देर तक रहने वाले बादलों के अज़ाब ने)। निस्सन्देह वह एक भारी दिन का भयंकर अज़ाब था।१९०।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۗ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٩١﴾

इस घटना में एक बड़ा निशान था और (उसे देख कर भी) उन (इन्कार करने वालों) में से बहुत से लोग मोमिन न बने।१९१।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٩٢﴾ ع

और निस्सन्देह तेरा रब्ब ग़ालिब (और) बार-बार दया करने वाला है।१९२। (रुकू १०/१४)

وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٩٣﴾

और निस्सन्देह यह (क़ुर्आन) सारे जहानों के रब्ब की ओर से उतारा गया है।१९३।

نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿١٩٤﴾

इसे ले कर एक अमानतदार कलाम लाने वाला फ़रिश्ता (जिब्रील) तेरे दिल पर उतरा है।१९४।

عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿١٩٥﴾

ताकि तू सावधान करने वाले गिरोह में शामिल हो जाए।१९५।

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ﴿١٩٦﴾

(इसे जिब्रील ने अल्लाह के आदेश से) खोल-खोल कर बताने वाली अरबी भाषा में उतारा है।१९६।

وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٩٧﴾

और निस्सन्देह इस का वृत्तान्त पहली किताबों में भी मौजूद था।१९७।

اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٩٨﴾

क्या उन के लिए यह निशान कुछ कम है कि इस (क़ुर्आन) को बनी-इस्राईल के विद्वान भी पहचानते हैं[1]।१९८।

1. अर्थात् वे समझते हैं कि यह क़ुर्आन बनी-इस्राईल के नबियों की भविष्यवाणी के अनुकूल है।

وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ۝١٩٩

और यदि हम इसे (अरबों को छोड़ कर) किसी और पर उतारते ।१९९।

فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ۝٢٠٠

और वह इसे इन (इन्कार करने वालों) के सामने पढ़ कर सुनाता तो वे कभी भी इस पर ईमान[1] न लाते ।२००।

كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝٢٠١

इसी प्रकार हम ने अपराधियों के दिलों में यह बात डाल दी है ।२०१।

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝٢٠٢

(अत:) वे इस पर ईमान नहीं लाएँगे, यहाँ तक कि दु:खदायक अज़ाब देख लें ।२०२।

فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٢٠٣

सो वह अज़ाब अचानक ही उन की बे-ख़बरी में उन पर आ जाएगा ।२०३।

فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ۝٢٠٤

तब वे कहेंगे कि क्या हमें ढील मिल सकेगी ? ।२०४।

اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝٢٠٥

सो (बताओ कि) क्या यही लोग हमारे अज़ाब को जल्दी माँगा करते थे ? ।२०५।

اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ۝٢٠٦

सो क्या तुझे विश्वास नहीं है कि यदि हम उन्हें वर्षों तक लाभ पहुँचाते जाते ।२०६।

ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝٢٠٧

फिर उन के पास वह (अज़ाब) आ जाता जिस की उन से प्रतिज्ञा की जाती है ।२०७।

مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ۝٢٠٨

तो जो कुछ भी उन्हें दिया गया है वह उन से इस (अज़ाब) को टला नहीं सकता था ।२०८।

---

1. अर्थात् वे कहते हैं कि हम अरबी लोग साहित्यिक, सुबोध और सुस्पष्ट भाषा बोलने वाले हैं और यह रसूल दूसरी भाषा बोलने वाला है ।

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ۝٢٠٩

और हम ने किसी बस्ती को बिना उस की ओर नबी भेजने के कभी नष्ट नहीं किया।२०९।

ذِكْرٰى ۛ وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٢١٠

यह इसलिए किया गया ताकि उन्हें शिक्षा प्राप्त हो जाए तथा हम अत्याचारी नहीं।२१०।

وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ۝٢١١

और शैतान इस (क़ुर्आन) को ले कर नहीं उतरे।२११।

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝٢١٢

और न यह काम उन की परिस्थिति के अनुकूल था और न वे उस का सामर्थ्य रखते थे।२१२।

اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ۝٢١٣

वे निस्सन्देह (ईशवाणी के) सुनने से दूर रखे गए हैं।२१३।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ۝٢١٤

अतएव तू अल्लाह के साथ किसी और उपास्य को न पुकार, अन्यथा तू अजाब-ग्रसित लोगों में से हो जाएगा।२१४।

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ۝٢١٥

और तू सब से पहले अपने सब से निकट-सम्बन्धियों को डरा।२१५।

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢١٦

और जो लोग तेरे पास मोमिन बन कर आएँ उन के लिए प्रेम की भुजाएँ झुका दे।२१६।

فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْ بَرِيْۤءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝٢١٧

फिर यदि किसी समय वे तेरी अवज्ञा कर बैठें तो कह दे कि मैं तुम्हारे कर्मों से असन्तुष्ट हूँ।२१७।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝٢١٨

और ग़ालिब (और) बार-बार दया करने वाली सत्ता पर भरोसा रख।२१८।

الَّذِیْ یَرٰىكَ حِیْنَ تَقُوْمُ ﴿٢١٩﴾

जो (अल्लाह्) तुझे उस समय भी देखता है जब तू (नमाज़ के लिए अकेला) खड़ा होता है।२१९।

وَ تَقَلُّبَكَ فِی السّٰجِدِیْنَ ﴿٢٢٠﴾

और उस समय भी जब तू (जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने के लिए) सजदः करने वाले लोगो में इधर-उधर घूम रहा होता है।२२०।

اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿٢٢١﴾

निस्सन्देह वह (अल्लाह ही) बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है।२२१।

هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّیٰطِیْنُ ﴿٢٢٢﴾

क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं।२२२।

تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِیْمٍ ﴿٢٢٣﴾

(शैतान) प्रत्येक झूठे पापी पर उतरते हैं।२२३।

یُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَ اَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿٢٢٤﴾

वे अपने कान (आकाश की ओर) लगाते हैं और उन में से बहुत से झूठे होते हैं।२२४।

وَ الشُّعَرَآءُ یَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿٢٢٥﴾

और कवियों का गिरोह ऐसा होता है कि उन के पीछे चलने वाले लोग पथभ्रष्ट[1] होते हैं।२२५।

اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِیْ كُلِّ وَادٍ یَّهِیْمُوْنَ ﴿٢٢٦﴾

(हे सम्बोधित !) क्या तेरी समझ में (अब तक) नहीं आया कि वे (कविगण) प्रत्येक वादी में निरुद्देश्य[2] घूमते-फिरते हैं।२२६।

1. अर्थात् हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के अनुयायी नेक और संयमी हैं। अतः प्रतीत हुआ कि यह कवि नहीं हैं।

2. अर्थात् कवि लोग जीवन से परे कल्पनाओं के संसार में उड़ान करते हैं।

وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٢٢٦﴾

वे ऐसी बातें कहते हैं जो स्वयं करते नहीं।२२७।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿٢٢٧﴾

(कवियों में से) सिवाय मोमिनों और नेक कर्म करने वालों के और ऐसे लोगों के जो (अपनी कविता में) अल्लाह का वर्णन अधिक से अधिक करते हैं और (निन्दा करने में पहल नहीं करते बल्कि) उत्पीड़ित होने के पश्चात् उचित बदला लेते हैं और वे लोग जो अत्याचारी हैं उन्हें अवश्य प्रतीत हो जाएगा कि किस स्थान की ओर उन्हें लौट कर जाना होगा।२२८। (रुकू ११/१५)
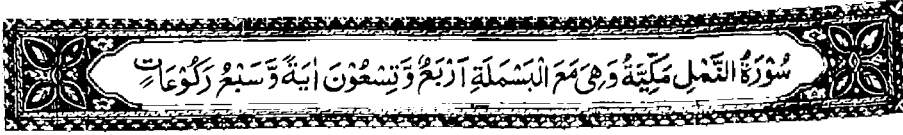
सूरः अल्-नम्ल

[यह सूरः मक्की है और विस्मिल्लाह सहित इस की चौरानवें आयतें एवं सात रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

طٰسٓ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ②

ताहिर, समी। (पवित्र और प्रार्थना का सुनने वाला अल्लाह इस सूरः का उतारने वाला है)। इस की आयतें क़ुर्आन तथा प्रमाण युक्त किताब का हिस्सा हैं।२।

هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ③

(जो) मोमिनों के लिए हिदायत और शुभ-समाचार का (कारण) हैं।३।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ④

(ऐसे मोमिन) जो विधिवत नमाज़ पढ़ते हैं और जकात देते रहते हैं तथा परलोक के जीवन पर (और बाद में आने वाली उन बातों पर जिन का वादा दिया गया है) विश्वास रखते हैं।४।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ⑤

वे लोग जो परलोक के जीवन पर ईमान नहीं लाते, हम ने उन के कर्मों को उन के लिए सुन्दर[1] कर के दिखलाया है। इसलिए वे बहके-बहके फिरते हैं।५।

1. इस से यह अभिप्राय नहीं कि अल्लाह उन के बुरे कर्म उन्हें सुन्दर कर के दिखलाता है, अपितु (शेष पृष्ठ ८१४ पर)

أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ۝٦

उन के लिए दुःखदायक अज़ाब होगा और वे आख़िरत के जीवन में सब से बढ़ कर घाटा पाने वाले होंगे।६।

وَإِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْآنَ مِن لَّدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ۝٧

निस्सन्देह तुझे क़ुर्आन उस (सत्ता) की ओर से मिल रहा है जो अत्यन्त सूक्ष्म-दर्शी एवं महाज्ञानी है।७।

إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِ إِنِّيٓ آنَسْتُ نَارًا سَآتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ آتِيكُم بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ۝٨

(याद करो) जब मूसा ने अपने परिवार से कहा कि मैं ने एक आग देखी[1] है। निस्सन्देह मैं तुम्हारे पास उस (आग) से कोई (महत्वपूर्ण) समाचार लाऊँगा या तुम्हारे पास एक चमकता हुआ अंगारा लाऊँगा ताकि तुम आग सेंको।८।

(पृष्ठ ८१३ का शेष)

तात्पर्य यह है कि प्राकृतिक नियम ही ऐसा है कि जब कोई व्यक्ति सच्ची राह छोड़ कर बुरी राह पर चल पड़ता है तो वह अपने मन को यह झूठ बोल कर सन्तुष्ट कर लेता है कि यही राह अच्छी है। वास्तव में यह मनुष्य के कर्मों का प्राकृतिक परिणाम होता है। क़ुर्आनी परिभाषा में इसे अल्लाह से सम्बन्धित किया गया है, क्योंकि कर्मों का फल अल्लाह देता हैं। प्राकृतिक स्वभाव अल्लाह ने ही पैदा किया हैं और कर्म करने में मनुष्य स्वतन्त्र है। यद्यपि कुकर्म करते-करते एक मनुष्य को बुरे कर्म अच्छे लगते हैं, फिर भी मानवता और अन्तरात्मा उस व्यक्ति को चेतावनी देते रहते हैं कि वास्तव में वह बुरी राह पर जा रहा है।

1. इस आयत का भाव यह है कि हज़रत मूसा ने नुबुव्वत पाने के पश्चात पहले-पहल एक ज्योति के दर्शन किए थे। इस से उन्हों ने यह समझा था कि अब मुझ पर वह्य उतरने वाली है। वह सांसारिक ज्योति नहीं थी अन्यथा उस के लिए 'एक आग' शब्द प्रयुक्त न किया जाता, केवल आग कहा जाता। वास्तव में वह समझते थे कि यह एक कश्फ़ है तभी उन्हों ने अपने परिवार से कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि अल्लाह की कोई ज्योति प्रकट होने वाली है। अत: मैं वहाँ जाता हूँ। यदि यह ज्योति केवल मेरे लिए हुई तो मैं यह महत्वपूर्ण समाचार तुम्हें आ कर सुनाऊँगा और यदि वह मेरी जाति, देश ओर

(शेष पृष्ठ ८१५ पर)

فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۭ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝۹

फिर जब वह उस (आग) के पास आए तो उन्हें आवाज़[1] दी गई कि जो कोई आग में है तथा जो इस के इर्द-गिर्द है, उसे बरकत दी गई है और अल्लाह समस्त लोकों का पालनहार पवित्र है ।९।

يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝۱۰

हे मूसा ! बात यह है कि मैं अल्लाह[2] हूँ जो ग़ालिब और हिक्मत वाला (अर्थात् प्रभुत्वशाली एवं तत्त्वदर्शी) हूँ ।१०।

وَاَلْقِ عَصَاكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى

तू अपनी लाठी फेंक और जब उस ने (लाठी) को देखा कि वह हिल रही है, मानो वह एक

(पृष्ठ ८१४ का शेष)

जनता के लिए हुई तो फिर कोई चमकता हुआ अंगारा अर्थात् कोई ऐसी शिक्षा लाऊँगा जो दिलों में अल्लाह का प्रेम पैदा करे ताकि तुम और जनता उस से लाभ पा सको ।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने जो दृश्य 'हिरा' नामक गुफ़ा में देखा था उस का समाचार सब से पहले अपने परिवार हज़रत ख़दीजा तथा अन्य निकट-सम्बन्धियों को सुनाया था । इस प्रकार आप का सादृश्य हज़रत मूसा से सिद्ध हो जाता है ।

1. इस आयत से सिद्ध होता है कि यह बात सत्य नहीं कि उस आग में अल्लाह था, क्योंकि अल्लाह स्वयं बरकत प्रदान करता है उसे कोई भी बरकत नहीं देता ।

उस दृश्य से यह बताया गया है कि हज़रत मूसा तथा आग के चमत्कार के द्वारा ईश-सत्ता का प्रदर्शन हो रहा है । 'अल्लाह पवित्र है' इस वाक्य में भी इस बात का खण्डन किया गया हैं कि अल्लाह आग में था, क्योंकि 'समस्त लोकों का रब्ब' कह कर उसे स्थानों के बन्धनों से मुक्त कर दिया गया है । फिर उसे 'पवित्र' कह कर कोई भी शरीर धारण करने की त्रुटि से पवित्र ठहराया गया है ।

2. इस का यह अर्थ नहीं कि आग में अल्लाह था अपितु हज़रत मूसा को वह्य द्वारा यह कहा गया था कि देख ! मेरी छवि प्रत्येक वस्तु से व्यक्त होती है । आग से भी तथा उस के निकट वाली वस्तुओं से भी और इस लाठी वाले कश्फ़ी दृश्य से भी जो साँप था । अतएव यह कहना क़ुर्आन एवं बुद्धि के विरुद्ध है कि उस आग में अल्लाह था अपितु जो दृश्य उस आग या लाठी अथवा साँप द्वारा दर्शाए गए थे, वे सब दृश्य मनुष्य को अल्लाह की निकटता प्रदान करते थे न कि वे वास्तव में स्वयं अल्लाह थे ।

مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ اِنِّيْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُوْنَ ⑪

छोटा[1] साँप है तो वह पीठ फेर कर भागा और पीछे मुड़ कर न देखा (तब हम ने कहा) हे मूसा ! डर मत, मैं वह हूँ कि रसूल मेरे यहाँ डरा नहीं करते ।११।

اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑫

किन्तु जिस ने अत्याचार किया फिर उस अत्याचार को छोड़ कर नेकी को अपना लिया, मैं उस के लिए बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला हूँ ।१२।

وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ اِنَّهُمْ

और तू अपना हाथ अपने गरेबान में डाल वह नीरोग उजला निकलेगा । यह उन नौ निशानों[2] में से है जो फ़िरऔन और उस

1. मूल शब्द 'जान्न' का अर्थ इस स्थान में छोटा साँप है। पवित्र क़ुर्आन में दूसरे स्थान पर शब्द 'सुवान' अर्थात् अजगर और तीसरे स्थान हर 'हय्यातुन' अर्थात् साधारण साँप प्रयुक्त हुआ है। यह विभिन्नता नहीं, अपितु इस से तात्पर्य यह है कि छोटा साँप कह कर बताया गया है कि उस की गति-विधि छोटे साँप के समान तीव्र थी और अजगर शब्द उस के शरीर के बड़े होने के कारण तथा साधारण साँप उस की जाति की दृष्टि से बोला गया है। मानों अवसर के अनुसार प्रत्येक शब्द का प्रयोग किया गया है।

2. फ़िरऔन तथा उस की जाति के लिए अल्लाह ने हज़रत मूसा के द्वारा नौ निशान दिखाए थे। उन में से एक अपने हाथ को अपने गरेबान में डाल कर निकालने का था कि निकालने पर वह नीरोग, उजला निकलता था।

अरबी भाषा के मुहावरा में 'हाथ' भाई-बन्धु तथा जाति को भी कहते हैं। अतएव इस से यह उद्देश्य था कि हे मूसा ! अपनी जाति को अपने साथ और अपने सम्पर्क में रख। इस का परिणाम यह होगा कि वह तेरे सम्पर्क और तेरी शिक्षा-दीक्षा से सुधर कर सदाचारी और निर्दोष बन जाएगी एवं उस में कोई त्रुटि और बुराई न रहेगी। इतिहास से विदित होता है कि हज़रत मूसा की जाति में आप के प्रादुर्भाव से पहले अनेक त्रुटियाँ पाई जाती थीं। उस ने हज़रत इब्राहीम की शिक्षा-दीक्षा को भुला दिया था, परन्तु हज़रत मूसा के सम्पर्क में आ कर उस जाति में महा योगी तथा अल्लाह के परम भक्त पैदा होने लगे, किन्तु जब भी वह जाति हज़रत मूसा से दूर होती थी तो उस में दोष एवं बिगाड़ पैदा होने

(शेष पृष्ठ ८१७ पर)

كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿١٣﴾

की जाति की ओर भेजे जाने वाले हैं वह आज्ञा भंग करने वाली जाति है।१३।

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٤﴾

अतएव जब हमारी ओर से आँखें खोल देनें वाले चमत्कार आए तो उन्हों ने कहा कि यह तो खुला-खुला जादू है।१४।

وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٥﴾ ع

और उन्हों ने हठ करते हुए अत्याचार एवं अहंकार से (उन चमत्कारों) का इन्कार कर दिया। हालाँकि उन के दिल उन पर विश्वास कर चुके थे। अतः देख! फ़साद करने वालों का परिणाम कैसा हुआ करता है।१५। (रुकू १/१६)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦﴾

और हम ने दाऊद एवं सुलेमान को ज्ञान प्रदान किया तथा उन दोनों ने कहा कि सब स्तुतियों का अधिकारी अल्लाह ही है, जिस ने हमें अपने अनेक मोमिन बन्दों पर प्रधानता दी है।१६।

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا

और सुलेमान दाऊद का वारिस हुआ तथा उस ने कहा कि हे लोगो! हमें पक्षियों[1] की

(पृष्ठ ८१६ का शेष)

लग जाता था, जैसा कि हज़रत मूसा के पर्वत पर जाने के थोड़े दिनों बाद उन्हों ने बछड़े को उपास्य बना लिया और उस की पूजा करने लगे।

वे नौ निशान जिन की ओर संकेत किया गया है इस का विवरण क़ुर्आन में विभिन्न स्थानों पर आता है। दो निशान अर्थात् 'हाथ का गरेबान से निकलने पर उजला होना' और 'लाठी का साँप बनना' का उल्लेख यहीं पर किया गया है। तीसरा निशान 'अकाल का पड़ना' है। चौथा निशान 'सन्तान का मरना' है। पाँचवाँ निशान 'तूफ़ान' का था। छटा निशान 'टिड्डियों' के दलों का था। सातवाँ निशान 'जूओं' का था। आठवाँ निशान 'मेंढकों' का था और नवाँ निशान 'रक्त' का था।

1. यहाँ पक्षियों से तात्पर्य आध्यात्मिक आकाश में उड़ने वाले ईश-भक्त हैं।

منطق الطير وأوتينا من كل شيء إن هذا لهو الفضل المبين ⑯

भाषा सिखाई गई है तथा प्रत्येक आवश्यक वस्तु (की शिक्षा) हमें दी गई है। यह खुली-खुली कृपा है।१७।

وحشر لسليمن جنوده من الجن والإنس والطير فهم يوزعون ⑰

और (एक बार) सुलेमान के सामने जिन्नों और मनुष्यों तथा पक्षियों में से उस के सेना-दल क्रम के अनुसार खड़े किए गए (फिर उन्हें कूच का आदेश मिला)।१८।

حتى إذا أتوا على واد النمل قالت نملة يأيها النمل ادخلوا مسكنكم لا يحطمنكم سليمن وجنوده وهم لا يشعرون ⑱

यहाँ तक कि वे नम्ला नामक वादी में पहुँचे तो नम्ला[1] जाति में से एक व्यक्ति ने कहा कि हे नम्ला जाति के लोगो! अपने-अपने घरों में चले जाओ, ऐसा न हो कि सुलेमान तथा उस की सेनाएँ (तुम्हारी हालत से) अनजान होने के कारण तुम्हें पैरों तले रौंद[2] डालें।१९।

فتبسم ضاحكا من قولها وقال رب أوزعني أن أشكر نعمتك التي أنعمت علي وعلى والدي

सो सुलेमान उस की बातें सुन कर हँस पड़ा और कहा कि हे मेरे रब्ब! मुझे सामर्थ्य प्रदान कर कि मैं तेरे उन उपकारों का धन्यवाद[3] कर सकूँ जो तू ने मुझ पर और

1. नम्ला नामक वादी समुद्र के किनारे पर युरोशलम के सामने या उस के निकट दमिश्क़ से हिजाज़ की ओर आते हुए एक सौ मील की दूरी पर एक मैदान है जिसे दृष्टांत के रूप में नम्ला वादी कहते हैं। इस क्षेत्र में हज़रत सुलेमान के समय तक अरब तथा मद्‌यन के बहुत से परिवार निवास करते थे। (देखिए प्राचीन व अर्वाचीन चित्र लेखा फ़लस्तीन व शाम और लैलसन्ज इन्साइक्लोपीडिया) नम्ला एक जाति थी जो वहाँ निवास करती थी।

2. इस आयत से यह भी स्पष्ट होता है कि हज़रत सुलेमान की जाति जान-बूझ कर किसी को हानि नहीं पहुँचाती थी, अपितु यदि उसे पता लग जाता कि कोई जाति निर्बल है तो वह उस की रक्षा का प्रयत्न करती थी।

3. अर्थात् जंगली एवं असभ्य लोग भी यह जानते हैं कि मैं उन को जान-बूझ कर हानि नहीं पहुँचाऊंगा। (पुष्टि के लिए देखिए सूरः नम्ला आयत 19)

وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ﴿٢٠﴾

मेरे पिता पर किए हैं तथा ऐसा उचित कर्म करूँ जो तुझे पसन्द हो एवं (हे अल्लाह !) अपनी कृपा से मुझे भी अपने सदाचारी भक्तों में सम्मिलित कर।२०।

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدْهُدَ أَمْ كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ ﴿٢١﴾

और उस ने सब पक्षियों की हाज़िरी ली, फिर कहा कि मुझे क्या हुआ है कि मैं हुद्हुद्[1] को नहीं देखता या वह जान-बूझ कर अनुपस्थित है।२१।

لَأُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَأَذْبَحَنَّهُ أَوْ لَيَأْتِيَنِّي بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿٢٢﴾

निस्सन्देह मैं उसे कड़ा दण्ड दूँगा या उस का वध कर दूँगा या वह मेरे सामने (अपनी अनुपस्थिति की) कोई खुली-खुली दलील (अर्थात् कोई कारण) पेश करेगा।२२।

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطتُ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهِ وَجِئْتُكَ مِن سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَقِينٍ ﴿٢٣﴾

अतः कुछ क्षण रुका (इतने में हुद्हुद् उपस्थित हुआ) और उस ने कहा कि मैं ने उस वस्तु का ज्ञान प्राप्त किया है जो तुझे प्राप्त नहीं तथा मैं सबा (जाति के देश) से तेरे पास (आया हूँ और) एक विश्वसनीय समाचार लाया हूँ।२३।

إِنِّي وَجَدتُّ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِن كُلِّ

(जो यह है कि) मैं ने (वहाँ) एक महिला को देखा है, जो उन (की समस्त जाति)

1. बहुत से आदमी सम्राटों का नाम हुदद था जिस को अरब लोग उच्चारण करते समय हुद्हुद् कहते थे। यह नाम इस्राईली वंश में साधारण रूप से प्रचलित था। हज़रत सुलेमान की राज्य-सभा के एक सरदार का नाम भी हुद्हुद् था। जब हज़रत सुलेमान ने 'मुआव' नामक एक बड़े इन्जीनियर की उस के षड्यन्त्र के कारण हत्या करवा दी तो यह हुद्हुद् नामक सरदार भाग कर मिस्र देश चला गया। तत्पश्चात् क्षमा माँग कर और सिफ़ारिशें करवा कर वापस लौट आया। (देखिए ज्यूश इन्साइक्लोपीडिया)

वास्तव में यह नाम साधारण रूप में प्रचलित था। अतएव सम्भव है कि कुछ दूसरे सरदारों का भी यह नाम हो। अरबी भाषा में हुद्हुद् एक पक्षी का नाम है। अतः कुछ भाष्यकारों ने भूलवश यह समझ लिया कि यह उसी पक्षी का वृत्तान्त है।

شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٤﴾

पर अनुशासन कर रही है और प्रत्येक निअमत उसे प्राप्त है तथा उस का एक विशाल सिंहासन है।२४।

وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٥﴾

और मैं ने उसे तथा उस की जाति को अल्लाह को छोड़ कर सूर्य को सजद: करते देखा है तथा शैतान ने उन को उन के कर्म शोभायमान कर के दिखाए हैं एवं उन्हें सच्ची राह से रोक दिया है जिस के कारण वे हिदायत नहीं[1] पाते।२५।

اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٦﴾

और वे यह हठ करते हैं कि अल्लाह को सजद: न करें जो कि आसमानों तथा ज़मीन की प्रत्येक छिपी हुई तक़दीर (बात) को प्रकट करता है तथा जो कुछ तुम छिपाते तथा प्रकट करते हो उन उपायों को भी जानता है।२६।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٧﴾ السجدة

अल्लाह वह है जिस के सिवा कोई उपास्य नहीं। वह एक विशाल सिंहासन का स्वामी है।२७।

قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٨﴾

(इस पर सुलेमान ने) कहा कि हम देखेंगे कि तूने सच कहा है या तू झूठों में से है।२८।

اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ

तू मेरा यह पत्र ले जा और उसे उन (अर्थात् सबा की जाति के) लोगों के सामने डाल दे, तदुपराँत (नम्र भाव से) पीछे हट कर खड़ा

1. इस से यह अभिप्राय नहीं कि शैतान लोगों को सच्ची राह से ज़बरदस्ती रोकता है, अपितु अरबी भाषा में शैतान का अर्थ सच्चाई से दूर रहने वाला तथा दूर करने वाला है। इस स्थान पर यही तात्पर्य है कि सच्चाई से दूर करने वालों और दूर रहने वालों ने लोगों की दृष्टि में शरीअत और बुद्धि के विपरीत एसी बातें जिन से मानव-प्रकृति घृणा करती है बड़ी सुन्दर कर के दिखाई हैं।

فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ۝٢٩

हो जा तथा देख कि वे क्या उत्तर देते हैं ? ।२९।

قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْٓ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ۝٣٠

(जब उस ने ऐसा किया) तो वह (रानी) बोली कि हे मेरे राज्य के सरदारो ! मेरे सामने एक माननीय पत्र रखा गया है ।३०।

اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝٣١

(जिस का विषय यह है कि) यह पत्र सुलेमान की ओर से है तथा इस में बताया गया है कि हम अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करते हैं जो अनन्त कृपा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है ।३१।

اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۝٣٢ ع

(और कहते हैं कि) हम पर बड़ाई न जतलाओ और हमारे पास आज्ञाकारी बन कर उपस्थित हो जाओ ।३२।

قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْٓ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ۝٣٣

फिर उस (रानी) ने कहा कि हे सरदारो ! मेरे मामिला में अपनी पक्की सलाह दीजिए, क्योंकि मैं कभी कोई निर्णय नहीं करती जब तक कि तुम मेरे पास उपस्थित हो (कर सलाह न दे दो) ।३३।

قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ۝٣٤

(राज्य-दरबारियों ने) कहा कि हम बड़े शक्तिशाली और रणवीर हैं और अन्तिम निर्णय करना आप के हाथ में है। अतएव विचार कर लें कि आप क्या आदेश देना चाहती हैं। (हम उस का पालन करेंगे) ।३४।

قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَ

उस (रानी) ने कहा कि जब सम्राट किसी देश में प्रवेश करते हैं तो उस का विनाश कर देते हैं और उस की जनता में से भद्र

جَعَلُوٓا أَعِزَّةَ أَهْلِهَآ أَذِلَّةً ۚ وَكَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٣٥﴾

पुरुषों को अपमानित कर दिया करते हैं और वे ऐसा ही करते चले आए हैं।३५।

وَإِنِّى مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِم بِهَدِيَّةٍ فَنَاظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُونَ ﴿٣٦﴾

और (मैं ने निर्णय किया है कि) मैं उन की ओर एक उपहार[1] भेजूँगी, फिर देखूंगी कि मेरे दूत क्या उत्तर ले कर वापस लौटते हैं।३६।

فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمَٰنَ قَالَ أَتُمِدُّونَنِ بِمَالٍ فَمَآ ءَاتَىٰنِۦَ اللَّهُ خَيْرٌ مِّمَّآ ءَاتَىٰكُم بَلْ أَنتُم بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ ﴿٣٧﴾

फिर जब वह उपहार सुलेमान के सामने ला कर रखा गया तो उस ने कहा कि क्या तुम धन के द्वारा मेरी सहायता करना चाहते हो ? (याद रखिए) अल्लाह ने जो कुछ मुझे प्रदान किया है वह उस से उत्तम है जो तुम्हें दिया है और (प्रतीत होता है कि) तुम अपने उपहार पर बड़ा अभिमान कर रहे हो।३७।

ارْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَنَّهُم بِجُنُودٍ لَّا قِبَلَ لَهُم بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُم مِّنْهَآ أَذِلَّةً وَهُمْ صَٰغِرُونَ ﴿٣٨﴾

(हे हुद्हुद् !) तू उन की ओर लौट जा और (उन से कह दे कि) मैं एक विशाल सेना ले कर उन के पास आऊँगा, ऐसी सेना कि उन्हें उस के मुक़ाबिले की शक्ति न होगी और मैं उन्हें उस देश से (पराजित करने के पश्चात्) ऐसी हालत में निकाल दूंगा कि वे (साम्राज्य का) आदर खो चुके होंगे।३८।

قَالَ يَٰٓأَيُّهَا الْمَلَؤُا أَيُّكُمْ يَأْتِينِى بِعَرْشِهَا قَبْلَ أَن

(तदुपरांत) उस ने (अपने राज-दरबारियों से सम्बोधित हो कर) कहा कि हे दरबारियो !

---

1. प्राचीन काल में राजाओं की यह नीति थी कि वे अपने से शक्तिशाली सम्राट को घूस दे कर मुंह बन्द कर दिया करते थे। जब रानी बिल्क़ीस के उपहार हज़रत सुलेमान के पास पहुँचे तो उन्हों ने समझा कि रानी ने मुझे असभ्य और निकृष्ट ठहराया है तथा उस के इस कार्य पर अप्रसन्नता प्रकट की।

يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣٩﴾

तुम में से कौन उस के सिंहासन को मेरे पास ले आएगा, इस से पहले कि वे लोग आज्ञाकारी बन कर मेरे सामने आएँ ? ।३९।

قَالَ عِفْرِيتٌ مِّنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَن تَقُومَ مِن مَّقَامِكَ ۖ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ﴿٤٠﴾

(पर्वतीय जातियों में से) एक अहंकारी सरदार ने कहा कि आप के इस स्थान से जाने से पहले मैं वह (सिंहासन) ले आऊँगा और मैं इस बात पर पूरा-पूरा सामर्थ्य रखने वाला एवं अमानतदार हूँ ।४०।

قَالَ الَّذِي عِندَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَن يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَآهُ مُسْتَقِرًّا عِندَهُ قَالَ هَٰذَا مِن فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي أَأَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ ۖ وَمَن شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ كَرِيمٌ ﴿٤١﴾

(इस पर) उस व्यक्ति ने, जिसे (इलाही किताब का) ज्ञान[1] था कहा कि मैं तेरे पास उस सिंहासन को तेरे आँख झपकने से पहले ले आऊँगा । सो जब (सुलेमान ने) उस को अपने पास रखा हुआ देखा तो उस ने कहा कि यह मेरे रब्ब की कृपा के कारण हुआ है ताकि वह मेरी परीक्षा करे कि मैं कृतज्ञता दिखाता हूँ अथवा कृतघ्नता और जो व्यक्ति कृतज्ञता दिखाए तो वह अपने भले के लिए ही ऐसा करता है तथा जो कृतघ्नता प्रकट करे तो निस्सन्देह मेरा रब्ब बे नियाज़ एवं महादानी है ।४१।

قَالَ نَكِّرُوا لَهَا عَرْشَهَا نَنظُرْ أَتَهْتَدِي أَمْ تَكُونُ

(फिर) उस ने कहा कि उस (रानी) के लिए उस का सिंहासन तुच्छ[2] कर के दिखाओ

1. वास्तव में वह देश यहूदियों का था । अतएव उस इब्रानी विद्वान को विश्वास था कि यहूदी मेरे लिए शीघ्रता पूर्वक काम करेंगे। सो उस ने इफ़रीत नामक सभासद से पहले उस रानी का सिंहासन लाने की प्रतिज्ञा की और कहा कि मैं सिंहासन तुरन्त ही ला दूंगा । विभिन्न भाषाओं में आँख झपकने का मुहावरा शीघ्रता के लिए प्रयुक्त होता है । अतएव इसे यहाँ पर शाब्दिक अर्थों में नहीं लिया जा सकता ।

2. अर्थात् एक दूसरा ऐसा उत्तम सिंहासन बनाओ कि उसे देख कर रानी को अपना सिंहासन तुच्छ प्रतीत हो ।

مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٤٢﴾

(हम देखेंगे कि) क्या वह हिदायत पाती है या उन लोगों में से बनती है जो हिदायत नहीं पाते ।४२।

فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿٤٣﴾

सो जब वह आ गई तो (उसे) कहा गया कि क्या तेरा सिंहासन ऐसा ही है ? इस पर वह बोली कि ऐसा लगता है कि मानों यह वही है और हमें इस से पहले ही ज्ञात हो चुका था और हम (तेरे) आज्ञाकारी बन चुके थे ।४३।

وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٤٤﴾

और सुलेमान ने रानी को अल्लाह को छोड़ कर (दूसरे की) उपासना करने से रोका । निस्सन्देह वह इन्कार करने वाली जाति में से थी ।४४।

قِيْلَ لَهَا ادْخُلِى الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۭ قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ڛ قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾

और उसे कहा गया कि महल में प्रवेश करो । अतः जब उस ने उस (महल) को देखा तो उसे अथाह जल समझा और घबरा गई, तब सुलेमान ने कहा कि यह तो महल है जिस में शीशा लगाया गया है । तब वह (रानी) बोली कि हे मेरे रब्ब ! मैं ने अपने-आप पर अत्याचार किया और मैं सुलेमान के साथ समस्त लोकों के रब्ब पर ईमान लाती हूँ[1] ।४५। (रुकू ३/१८)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا

और हम ने समूद जाति की ओर उन के भाई सालिह को रसूल बना कर भेजा था (यह

1. हज़रत सुलेमान के इस उपाय से कि पानी पर शीशा लगा दिया गया था, वह रानी अपनी भूल को समझ गई कि जिस प्रकार शीशे के नीचे पानी दिखाई देता है उसी प्रकार सूर्य का प्रकाश अल्लाह की देन है । अतएव सूर्य की पूजा करना भूल है और अल्लाह एक ही है ।

اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾

कहते हुए) कि अल्लाह की उपासना करो। सो वे (सुनते ही) दो दलों में विभक्त हो गए जो परस्पर झगड़ने लगे।४६।

قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾

उस (सालिह) ने कहा कि हे मेरी जाति ! तुम अच्छी हालत के आने से पहले बुरी हालत के लिए क्यों जल्दी करते हो। क्या तुम अल्लाह से अपने पापों की क्षमा नहीं माँगते हो ताकि तुम पर दया की जाए ?।४७।

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾

उन्हों ने कहा कि (हे सालिह !) हम ने (जितना भी विचार किया है) तुझे तथा तेरे साथियों को मनहूस ही पाया[1] है। उस (सालिह) ने कहा कि तुम्हारी नुहूसत का कारण तो अल्लाह के पास है, अपितु वास्तविकता यह है कि तुम एक ऐसी जाति हो जिसे परीक्षा में डाला गया है।४८।

وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾

और नगर में नौ व्यक्ति ऐसे थे जो देश में उपद्रव फैलाते थे तथा सुधार नहीं करते थे।४९।

قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ

उन्हों ने कहा कि तुम सब इस बात पर अल्लाह की शपथ लो कि हम इस पर तथा इस के परिवार पर रात के समय आक्रमण करेंगे, फिर जो व्यक्ति उस की हत्या का बदला[2] लेने की माँग करने आएगा तो हम

1. अर्थात् तुम लोग अपनी जाति के लिए प्रगति की अपेक्षा उस के विनाश का ही साधन बनोगे।

2. मूल शब्द 'वलिय्युन' ऐसे व्यक्ति को कहते हैं जो किसी के कामों का उत्तरदायी एवं उस का सहायक होता हैं। इसी तरह जो व्यक्ति किसी की हत्या के पश्चात् उस की हत्या का बदला माँगे उसे भी अरबी भाषा में वलिय्युन कहते हैं, क्योंकि ऐसा व्यक्ति उस का सहायक होता है।

لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٥٠﴾

उसे कहेंगे कि हम ने उस के परिवार के विनाश की घटना नहीं देखी तथा हम सच्चे हैं।५०।

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥١﴾

और उन्हों ने एक उपाय किया तथा हम ने भी एक उपाय किया और उन्हें (हमारे उपाय का) ज्ञान नहीं था।५१।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٢﴾

फिर देख! कि उन के उपाय का परिणाम क्या निकला। हम ने उन्हें तथा उन की समस्त जाति को विनष्ट कर दिया।५२।

فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥٣﴾

अतः देख! ये उन के घर हैं जो उन के अत्याचारों के कारण गिरे हुए हैं। इस में ज्ञान रखने वाली जाति के लिए एक बड़ा निशान है।५३।

وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٤﴾

और हम ने उन लोगों को जो ईमान लाए थे तथा संयम से काम लिया था, बचा लिया।५४।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٥٥﴾

और (हम ने) लूत को (भी रसूल बना कर भेजा था) जब कि उस ने अपनी जाति से कहा कि क्या तुम बुरे कर्म करते हो और तुम देख रहे होते हो?।५५।

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿٥٦﴾

क्या तुम स्त्रियों को छोड़ कर पुरुषों के पास काम-वासना के इरादे से जाते हो? वास्तविकता यह है कि तुम एक मूर्ख जाति हो।५६।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْۤا اٰلَ

सो उस की जाति का केवल यह उत्तर था कि (हे लोगो!) लूत के परिवार को अपने

لُوطٍ مِّن قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ۝٥٧

नगर से निकाल बाहर करो। वे ऐसे लोग हैं जो बड़े सदाचारी बनना चाहते हैं।५७।

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَاهَا مِنَ الْغَابِرِينَ ۝٥٨

परिणाम यह निकला कि हम ने उस (लूत) को और उस के परिवार को सिवाय उस की पत्नी के (सब को) बचा लिया। हम ने उस (पत्नी) को पीछे[1] रहने वालों में गिन रखा था।५८।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنذَرِينَ ۝٥٩

और हम ने उन पर एक वर्षा बरसाई और जिन्हें कठोर अज़ाब की चेतावनी पहुँच चुकी हो उन पर बरसने वाली वर्षा बहुत बुरी होती है।५९। (रुकू ४/१९)

قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ۗ آللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ۝٦٠

तू कह दे कि प्रत्येक स्तुति का अल्लाह ही अधिकारी है और उस के वे भक्त, जिन को उस ने चुन लिया हो, उन पर सदैव सलामती उतरती रहती है। क्या अल्लाह उत्तम है या वे पदार्थ जिन को वे (उस का) साझी ठहराते हैं ?।६०।

---

1. अर्थात् वह अपने कुकर्मों के कारण ऐसी दीख पड़ती थी कि वह पीछे रह जाएगी।

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ فَأَنْبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْبِتُوا شَجَرَهَا ۗ أَإِلٰهٌ مَعَ اللّٰهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْدِلُونَ ﴿٦١﴾

(बताओ तो) आसमानों तथा ज़मीन को किस ने पैदा किया है और (किस ने) तुम्हारे लिए बादल से पानी उतारा है? फिर इस पानी के द्वारा हम ने सुन्दर बाग़ उगाए हैं। तुम उन बाग़ों के पेड़ नहीं उगा सकते थे। क्या अल्लाह के साथ कोई और भी उपास्य है? (जो समस्त सृष्टि का प्रबन्ध कर रहा है) किन्तु ये (इन्कार करने वाले) ऐसी जाति के लोग हैं जो उस के साझी बना रहे हैं।६१।

أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَالَهَا أَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ أَإِلٰهٌ مَعَ اللّٰهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

(बताओ तो) किस ने धरती को ठहरने का स्थान बनाया है और उस में नदियाँ बहाई हैं तथा उस के लाभ के लिए पहाड़ बनाए हैं और दो (मीठे तथा खारे) समुद्रों[1] के बीच एक रोक बनाई है? क्या अल्लाह के सिवा कोई और भी उपास्य है? किन्तु वास्तविकता यह है कि उन में से बहुत से लोग जानते नहीं।६२।

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ۗ أَإِلٰهٌ مَعَ اللّٰهِ ۚ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٣﴾

(फिर बताओ तो) कौन किसी बे-सहारे की प्रार्थना सुनता है, जब वह उस (अल्लाह) से प्रार्थना करता है और उस के कष्ट को दूर कर देता है तथा वह, तुम (प्रार्थना करने वालों) को एक दिन सारी धरती का वारिस बना देगा। क्या (इस सर्वशक्तिमान) अल्लाह के सिवा कोई और उपास्य है? तुम कुछ भी शिक्षा ग्रहण नहीं करते।६३।

أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلُ

(बताओ तो) धरती तथा समुद्रों की विपत्तियों में कौन तुम्हें मुक्ति की राह दिखाता है

1. विवरण के लिए देखिए सूर: फ़ुर्क़ान आयत 54।

الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾

और कौन अपनी दयालुता (अर्थात् वर्षा) से पहले मंगल-सूचना के रूप में हवाओं को भेजता है ? क्या अल्लाह के सिवा कोई और उपास्य है ? अल्लाह तुम्हारे शिर्क की बातों से बहुत ऊँचा है ।६४।

اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٤﴾

(बताओ तो) वह जो पहली बार पैदा करता है और फिर इस (सृष्टि के क्रम) को दुहराता रहता है तथा तुम्हें बादलों और भूमि से जीविका प्रदान करता है। क्या (सर्व-शक्तिमान) अल्लाह के सिवा कोई और भी उपास्य है ? तू कह दे कि यदि तुम सच्चे हो तो अपना प्रमाण प्रस्तुत करो (कि उस जैसा दूसरा उपास्य भी है) ।६५।

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۗ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٦٥﴾

तू कह दे कि आसमानों तथा जमीन में जो भी मख़्लूक़ है उन में से किसी को भी अल्लाह के सिवा परोक्ष का ज्ञान नहीं है और उन में से कोई यह भी नहीं जानता कि उन को कब जीवित कर के उठाया जाएगा ।६६।

بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ ۫ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۫ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ ع

अपितु वास्तविकता यह है कि पारलौकिक-जीवन के सम्बन्ध में उन का ज्ञान बिल्कुल समाप्त हो चुका है बल्कि वे उस के बारे में सन्देह में पड़े हुए हैं, अपितु वे उस के सम्बन्ध में सर्वथा अन्धे हैं ।६७। (रुकू ५/१)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا لَمُخْرَجُوْنَ ﴿٦٧﴾

और इन्कार करने वाले कहते हैं कि क्या जब हम तथा हमारे पूर्वज मिट्टी हो जाएँगे तो क्या हम पुनः जीवित कर के निकाले जाएँगे ।६८।

لَقَدْ وُعِدْنَا هَٰذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا مِن قَبْلُ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٩﴾

हम से और हमारे पूर्वजों से भी इस से पहले ऐसी ही प्रतिज्ञा की गई थी, परन्तु ये केवल पहले लोगों की बातें हैं (जो कभी भी पूरी नहीं होतीं) ।६९।

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٧٠﴾

तू कह दे कि धरती पर चलो-फिरो और देखो कि अपराधियों का परिणाम कैसा हुआ था ? ।७०।

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُن فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿٧١﴾

और तू उन के लिए दु:खी न हो और उन की योजनाओं के कारण तंगी महसूस न कर ।७१।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٧٢﴾

और वह कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह (अज़ाब की) प्रतिज्ञा कब पूरी होगी ? ।७२।

قُلْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ رَدِفَ لَكُم بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٧٣﴾

तू कह दे कि सम्भव है कि वह (अज़ाब) जिस के लिए तुम जल्दी कर रहे हो उस का कुछ भाग तुम्हारे पीछे-पीछे चला आ रहा हो ।७३।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٤﴾

और तेरा रब्ब लोगों पर कृपा करने वाला है, परन्तु उन में से बहुत से लोग धन्यवाद नहीं करते ।७४।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٥﴾

और तेरे रब्ब को उन वस्तुओं का भी ज्ञान है जिन्हें उन के सीने छिपा रहे हैं और जिन्हें वे प्रकट कर रहे हैं ।७५।

وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٧٦﴾

और आसमानों तथा ज़मीन में जो कुछ छिपा हुआ है वह स्पष्ट कर देने वाली एक किताब में सुरक्षित है ।७६।

إِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٧٧﴾

यह क़ुर्आन बनी-इस्राईल के सामने बहुत सी ऐसी बातें सुनाता है जिन में वे मतभेद कर रहे हैं ।७७।

وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾

और वह अवश्य ही मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है ।७८।

اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٩﴾

तेरा रब्ब इन (बनी-इस्राईल) के बीच अपने आदेश (अर्थात् क़ुर्आन) के साथ (सच्चा) निर्णय करता है और वह प्रभुत्वशाली एवं महाज्ञानी है ।७९।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۖ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ﴿٨٠﴾

अतः तू अल्लाह पर भरोसा कर। निस्सन्देह तू ठोस तथ्य पर क़ायम है ।८०।

اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٨١﴾

तू (अपनी बातें) मुर्दों को कदापि नहीं सुना सकता और न बहरों को ही अपनी आवाज़ सुना सकता है (विशेषकर) जब कि वे विमुख हो कर चले जाते हैं ।८१।

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِي الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۗ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٢﴾

और तू अन्धों को भी उन की गुमराही से बचा कर हिदायत नहीं दे सकता। तू तो केवल उन्हीं को सुनाता है जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं और वे होते भी आज्ञाकारी हैं ।८२।

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا

और जब उन के सर्वनाश की भविष्य-वाणी पूरी हो जाएगी तो हम उन के लिए धरती से एक कीटाणु[1] निकालेंगे जो उन को

---

1. मूल शब्द 'दाब्बा' से अभिप्राय प्लेग के कीटाणु हैं, जिस के प्रकट होने का समय कलियुग बताया गया है। ऐसे कीटाणु जो किसी के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं तो उस का हनन कर देते हैं। हज़रत (शेष पृष्ठ ८३२ पर)

بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ۝

काटेगा। इस का कारण यह है कि लोग हमारे निशानों पर विश्वास नहीं रखते थे।८३। (रुकू ६/२)

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ۝

और उस दिन (को याद करो) जब हर उस जाति में से जो हमारे निशानों का इन्कार करती रही होगी, हम एक बड़ा गिरोह खड़ा करेंगे, फिर उस (गिरोह) को (उत्तर देने के लिए) विभिन्न गिरोहों में विभाजित कर दिया जाएगा।८४।

حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ۝

और जब वे उस के पास पहुँचेंगे तो वह उन से पूछेगा कि क्या तुम ने इस बात के होते हुए भी हमारे निशानों का इन्कार किया था कि तुम ने ज्ञान के द्वारा उन की पूरी जानकारी प्राप्त नहीं की थी[1]? या यह बताओ कि तुम (इस्लाम के विरुद्ध क्या) षड्यन्त्र रचा करते थे।८५।

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ۝

और उन के अत्याचारों के कारण उन के विरुद्ध की गई भविष्यवाणी पूरी हो जाएगी तथा वे कुछ बात नहीं कर सकेंगे[2]।८६।

(पृष्ठ ८३१ का शेष)

मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने कहा था कि अन्तिम युग में अल्लाह धरती से एक कीटाणु पैदा करेगा। (देखिए 'इब्ने क़सीर' टिप्पणी सूरः नम्ल, किताब 'फ़तहुल्बयान' पृष्ठ 231)। इसी प्रकार दूसरी हदीस में फ़रमाया है कि कलियुग में 'नग़फ़' रोग पैदा होगा। (मुस्लिम शरीफ़)। इन दोनों हदीसों को मिलाने से यह परिणाम निकलता है कि हदीसों में वह समाचार दिया गया था कि अन्तिम युग में प्लेग का रोग संक्रान्त रूप में फैलेगा जो कि एक कीटाणु और फोड़े से सम्बन्ध रखता है।

1. अर्थात् पूर्ण रूप से पड़ताल नहीं की थी। केवल अपनी जाति के सरदारों के भड़काने से ही भड़क उठे थे।

2. अर्थात् कोई युक्ति पेश नहीं कर सकोगे।

اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۸۷﴾

क्या उन्हें ज्ञात नहीं कि हम ने रात को इस लिए बनाया है कि वे इस में विश्राम करें और दिन को देखने की शक्ति देने वाला बनाया है। इस में निश्चय ही ईमान लाने वाली जाति के लिए बड़े निशान हैं।८७।

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿۸۸﴾

और (उस दिन को भी याद करो) जिस दिन बिगुल बजाया जाएगा जिस के फल-स्वरूप आसमानों तथा ज़मीन में जो कोई भी है घबरा जाएगा सिवाय उस व्यक्ति के जिस के लिए अल्लाह चाहेगा (कि वह घबराहट से बचा रहे) और सब के सब उस (अल्लाह) के सामने फ़रमाँबरदार हो कर आएँगे।८८।

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِىَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِىْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَىْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۸۹﴾

और तू पर्वतों को ऐसी दशा में देखता है कि वे अपने स्थान पर जमे हुए हैं, हालाँकि वे बादलों[1] की तरह चल रहे हैं। यह अल्लाह की कारीगरी है जिस ने प्रत्येक वस्तु को सुदृढ़ बनाया है। वह तुम्हारे कर्मों को खूब अच्छी तरह जानता है।८९।

1. इस आयत में पृथ्वी के चलने का वर्णन है, परन्तु प्राचीन काल के भूगोल-लेखक सूर्य को गतिशील तथा पृथ्वी को गतिहीन बताते थे।

पर्वतों के चलने से यह अभिप्राय है कि वे भी पृथ्वी के साथ ही गतिमान हैं, पृथ्वी से अलग उन की कोई गति नहीं और वे परिपुष्ट तथा स्थिर व गतिहीन दीख पड़ने पर भी ऐसे ही गतिशील हैं जिस प्रकार काले बादल आकाश पर स्थिर दीख पड़ते हैं, किन्तु वास्तव में वे प्रतिक्षण चलते-फिरते रहते हैं। मेघों की उपमा केवल गतिशीलता के उपलक्ष्य दी गई है। उन की गति-विधि या वेग आदि के उपलक्ष्य नहीं दी गई।

इस आयत पर कुछ लोगों ने यह आक्षेप किया है कि पर्वतों का चलना क़ुर्आन के लेखक के देश में

(शेष पृष्ठ ७३४ पर)

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿٩٠﴾

और जो व्यक्ति नेकी करेगा उसे उस का अच्छा बदला मिलेगा और ऐसे लोग उस दिन की चिन्ता से (जिस का पहले वर्णन हो चुका है) सुरक्षित रहेंगे ।९०।

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ ۗ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩١﴾

और जो लोग बुरे कर्मों के साथ अल्लाह् की सेवा में हाज़िर होंगे उन के सरदारों को औंधा कर के नरक में गिराया जाएगा और कहा जाएगा कि क्या तुम्हारा यह बदला तुम्हारे कर्मों के अनुकूल नहीं ? ।९१।

اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِىْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَىْءٍ ۫ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩٢﴾

मुझे तो केवल यह आदेश दिया गया है कि मैं इस नगर (मक्का) के रब्ब की उपासना करूँ जिसे अल्लाह् ने सम्मानित किया है और प्रत्येक वस्तु उसी के अधिकार में है तथा मुझे आदेश दिया गया है कि मैं आज्ञाकारियों में से हो जाऊँ ।९२।

وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ

और यह भी कि मैं क़ुर्आन पढ़ कर सुनाऊँ। सो जो व्यक्ति इसे सुन कर हिदायत पा जाएगा तो उस का हिदायत पाना केवल उसी की जान के काम आएगा तथा जो

(पृष्ठ ७३३ का शेष)

होता होगा। वास्तव में उन्हों ने 'पर्वत' शब्द के अर्थों तथा क़ुर्आन की प्रयोगात्मक शैली पर विचार नहीं किया। पर्वत शब्द का अर्थ है :

(1) पर्वत (2) सरदार (3) महान् व्यक्ति (4) पर्वत-निवासी (5) सुदृढ़ वस्तु (6) राज्य-अनुशासन। (अक्रब)

पवित्र क़ुर्आन ने इस शब्द का प्रयोग कहीं साधारण अर्थों में किया है, कहीं सरदार और महान् व्यक्ति अर्थ किया है। मूल शब्द 'जिबाल' के साधारण अर्थों को सामने रखने से इस शब्द का प्रयोग करने में बहुत सी भविष्यवाणियाँ थीं जो अपने-अपने समय पर पूरी हो गईं और भविष्य में भी होंगी।

أَنَا مِنَ الْمُنْذِرِينَ ﴿٩٢﴾

उसे सुन कर पथभ्रष्ट हो जाएगा तो तू उसे कह दे कि मैं तो केवल एक सावधान करने वाला (व्यक्ति) हूं।९३।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

और यह भी कह दे कि अल्लाह ही समस्त स्तुतियों का अधिकारी है। वह तुम्हें अपने चमत्कार दिखाएगा यहाँ तक कि तुम उन्हें पहचान लोगे और तुम्हारा रब्ब तुम्हारे कर्मों से असावधान नहीं है।९४। (रुकू ७/३)
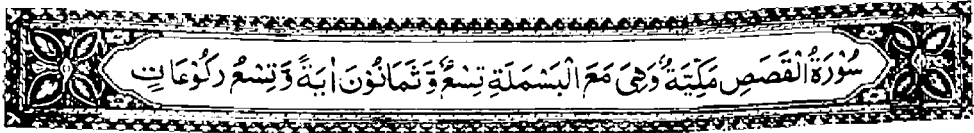
सूरः अल्-क़सस

[यह सूरः मक्की है और बिसमिल्लाह सहित इस की नवासी आयतें एवं नौ रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

طٰسٓمّٓ ②

ताहिर (पवित्र), समी (प्रार्थना स्वीकार करने वाला), मजीद (महान् गौरव वाला) अल्लाह इस सूरः का उतारने वाला है।२।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ③

ये (इस सूरः की आयतें) एक प्रमाण-युक्त किताब की आयतें हैं।३।

نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ④

मोमिन जाति के हित के लिए हम मूसा तथा फ़िरऔन की ठीक-ठीक परिस्थितियाँ तेरे सामने पढ़ते हैं।४।

اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِى الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ⑤

फिरऔन ने अपने देश में बड़े अभिमान से काम लिया था और उस में रहने वालों को अनेक टुकड़ों में विभाजित कर रखा था। वह उन में से एक गिरोह को कमज़ोर करना चाहता था, (इस प्रकार कि) उन के पुत्रों की हत्या करता था और उन की पुत्रियों को जीवित रखता था और निस्सन्देह वह उपद्रवियों में से था।५।

وَنُرِيدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِي الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ۝

और हम ने निश्चय कर रखा था कि जिन लोगों को उस ने देश में कमज़ोर समझ रखा था उन पर उपकार करें तथा उन्हें सरदार बना दें एवं उन्हें (समस्त सुख सामग्री का) वारिस बना दें।६।

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ۝

और उन्हें देश में मज़बूती प्रदान करें तथा फ़िरऔन और हामान एवं उन की सेनाओं को वह कुछ दिखाएँ जिस का उन्हें भय लगा हुआ था।७।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ وَلَا تَحْزَنِيْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝

और हम ने मूसा की माता की ओर वह्य की थी कि उस (मूसा) को दूध पिला। अतः जब तू उस (की जान) के बारे में चिन्तित हो जाए तो तू उसे नदी में डाल दे और डर नहीं और न किसी विगत घटना के कारण भय खा। हम उसे तेरी ओर लौटा कर लाएँगे तथा उसे रसूलों में से एक रसूल बनाएँगे। (सो मूसा की माता ने इस वह्य के अनुसार काम करते हुए मूसा को नदी में डाल दिया)।८।

فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ۗ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ ۝

सो इस के बाद उस (मूसा) को फ़िरऔन के वंश में से एक ने उठा लिया। जिस का परिणाम यह हुआ (कि भविष्य में) एक दिन वह उन के लिए शत्रु सिद्ध हुआ तथा दुःख का कारण बना। फ़िरऔन और हामान[1] तथा उन दोनों की सेनाएँ भूल में पड़े हुए थे।९।

1. कहा जाता है कि हामान फ़िरऔन के राज-दरबारियों में से था। इस लिए सेना को उस की पदवी से सम्बन्धित किया गया है या सम्भव है कि वह सेनापति हो।

وَقَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَ لَكَ ۖ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

और फ़िरऔन के वंश की एक स्त्री[1] ने कहा कि यह मेरी तथा तेरी आँखों की ठंढक का साधन होगा, इस की हत्या न करो। सम्भव है कि एक दिन वह हमें लाभ पहुँचाए या हम उसे पुत्र बना लें और उन्हें वास्तविकता[2] का ज्ञान नहीं था।१०।

وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ۭ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰي قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

और मूसा की माता का दिल (चिन्ता से) मुक्त हो गया। यह हो सकता था कि यदि हम उस के दिल को मोमिन बनाने के लिए मज़बूत न करते तो वह इस घटना का सारा भेद खोल देती।११।

وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۡ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

और उस (मूसा की माता) ने उस (मूसा) की बहन से कहा कि उस के पीछे-पीछे जा। सो वह इसे दूर ही दूर से देखती रही और वे (फ़िरऔन के लोग) बे-ख़बर थे।१२।

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ

और हम ने उस (मूसा) पर पहले से ही दूध पिलाने वाली दाइयों का दूध हराम[3] कर दिया था। सो उस (मूसा की बहन) ने कहा

---

1. इस स्त्री से अभिप्राय फ़िरऔन की पुत्री है। उस की अभिलाषा थी कि वह एक सुन्दर बालक का पालन-पोषण करे। (निर्गमन 2:5)

2. अर्थात् अल्लाह ने उस बालक को फ़िरऔन और उस की जाति के सर्वनाश के लिए उन के घर में रखवाया था।

3. इस से प्रतीत होता है कि मूसा जिस टोकरे में थे वह बहता-बहता नदी के तट पर जा लगा था और मूसा की बहन सावधानी से धीरे-धीरे उस के पीछे जा रही थी। इसी समय में फ़िरऔन की पुत्री ने कई दाइयाँ दूध पिलाने के लिए बुलाईं और उन्हें मूसा को दूध पिलाने का आदेश दिया, परन्तु मूसा ने किसी का भी दूध नहीं पिया, यहाँ तक कि अल्लाह के उपाय के अनुसार वह अपनी माता के पास वापस लौटा दिए गए।

عَلٰۤى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ⑬

कि क्या मैं तुम्हें एक ऐसे घर वालों का पता दूँ जो तुम्हारे लिए इस बच्चे का पालन-पोषण करेंगे और वे इस के हितैषी सिद्ध होंगे ।१३।

فَرَدَدْنٰهُ اِلٰۤى اُمِّهٖ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ⑭ ع

इस प्रकार हम ने उस (मूसा) को उस की माता की ओर लौटा दिया ताकि उस की आँखें ठंढी हों और वह चिन्ता न करे तथा जान ले कि अल्लाह का वादा पूरा हो कर रहता है, किन्तु (इन्कार करने वालों में से) बहुत से लोग जानते नहीं ।१४। (रुकू १/४)

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰۤى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ⑮

और जब वह अपनी युवावस्था[1] को पहुँचा तथा (अपने ऊँचे आचरण पर) मज़बूती से क़ायम हो गया तो हम ने उसे हुक्म और ज्ञान प्रदान किया और हम उपकार करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं ।१५।

وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۗ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۗ

और (एक दिन) उस ने नगर में ऐसे समय में प्रवेश किया जब कि लोग बे-ख़बर[2] थे। उस ने उस नगर में दो व्यक्तियों को देखा जो परस्पर लड़ रहे थे। उन में एक उस के मित्रों के गिरोह में से था और दूसरा उस के शत्रुओं में से था। अत: उस व्यक्ति ने जो उस के गिरोह में से था, दूसरे व्यक्ति के विरुद्ध जो उस के शत्रुओं में से था, उस की सहायता माँगी, तब मूसा ने उस (शत्रु) को एक घूँसा मारा और उस (घूँसे) ने उस का

1. इस से अभिप्राय यह है कि वह ऐसी अवस्था को पहुँचा जिस में वह्य उतरने लगती है अर्थात् तीस वर्ष से ले कर चालीस वर्ष तक या उस से कुछ अधिक ।

2. अर्थात् जब कि वे लोग दोपहर को अथवा आधी रात को अपने-अपने घरों में सुख-शान्ति से सो रहे थे ।

قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٦﴾

काम तमाम कर दिया, फिर मूसा ने कहा कि यह सब घटना शैतानी करतूत[1] से हुई है। वह (शैतान मोमिन का) शत्रु तथा उसे शान्ति के रास्ते से खुल्लम-खुल्ला बहकाने वाला है।१६।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَغَفَرَ لَهٗ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٧﴾

फिर मूसा ने प्रार्थना की कि हे मेरे रब्ब ! मैं ने अपनी जान को कष्ट में डाल दिया है। अतः तू मेरे इस कर्म पर पर्दा डाल दे। सो उस ने उस कर्म पर पर्दा डाल दिया ! वह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।१७।

قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٨﴾

तब मूसा ने निवेदन किया कि हे मेरे रब्ब ! क्योंकि तूने मुझ पर पुरस्कार[2] किया है। अतः मैं भी अपराधियों में से किसी अपराधी की कभी सहायता नहीं करूँगा।१८।

فَاَصْبَحَ فِي الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ قَالَ لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٩﴾

तत्पश्चात् वह प्रातःकाल शत्रुओं से डरता हुआ (सावधानी से) इधर-उधर देखता हुआ नगर में निकला तो क्या देखता है कि जिस व्यक्ति ने कल उस से सहायता माँगी थी, वही उसे फिर सहायता के लिए बुला रहा है। इस पर मूसा ने उसे कहा कि तू निश्चय ही खुला-खुला पथभ्रष्ट है।१९।

---

1. अर्थात् शैतान ने मेरी और फ़िरऔन की जाति के व्यक्तियों को क्रोध दिला कर परस्पर लड़वा दिया और मुझे अपनी जाति के व्यक्ति की सहायता करनी पड़ी जो उत्पीड़ित था तथा फ़िरऔन की जाति का व्यक्ति मर गया।

2. अर्थात् मुझे एक उत्पीड़ित की सहायता का अवसर प्रदान किया है। अतः मैं धन्यवाद के रूप में सदा उत्पीड़ितों की सहायता किया करूँगा और अत्याचारी व्यक्तियों की कभी सहायता नहीं करूँगा।

فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِيْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْاَمْسِ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِى الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ۝٢٠

अतः जब उस ने इरादा किया कि उस व्यक्ति को पकड़ ले जो इन दोनों का शत्रु था तो उस व्यक्ति[1] ने कहा कि हे मूसा ! क्या तू चाहता है कि मेरी हत्या भी उसी प्रकार कर दे जिस प्रकार तू ने कल एक और व्यक्ति की हत्या की थी ? तू केवल यह चाहता है कि निर्बल व्यक्तियों को देश में दबा दे तथा सुधार करने वालों में सम्मिलित होना तेरा उद्देश्य नहीं ।२०।

وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّيْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝٢١

और उस समय एक व्यक्ति नगर के दूसरे किनारे से भागता हुआ आया और कहा, हे मूसा ! (देश के) सरदार लोग परामर्श कर रहे हैं कि तेरी हत्या[2] कर दें। अतः तू इस नगर से निकल जा, मैं तेरे हितैषियों में से हूँ ।२१।

فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٢٢ ع

तब वह उस नगर से डरते हुए निकल गया और वह होशियारी से इधर-उधर देखता जाता था। उस समय उस ने प्रार्थना की कि हे मेरे रब्ब ! मुझे अत्याचार करने वाली जाति से छुटकारा दिला ।२२। (रुकू २/५)

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ

और जब वह मद्यन[3] नगर की ओर चला तो उस ने कहा कि मुझे आशा है कि मेरा

1. जो व्यक्ति इस्राइलियों में से था, उस ने भ्रम में समझा कि मूसा मुझे मारने लगा है और चिल्लाया कि कल की तरह आज भी तुम एक एक व्यक्ति की हत्या करना चाहते हो ।

2. अर्थात् किसी प्रकार कल वाली घटना की भनक उन के कान में पड़ गई है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह व्यक्ति हज़रत मूसा से सहमत और आप के मित्रों में से था ।

3. मिस्र से इब्रानी क्षेत्र की ओर जाते हुए रास्ते में मद्यन नामक नगर आता है। उस समय मद्यन में आद जाति के अरब लोग रहते थे।

يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾

रब्ब मुझे सीधी राह दिखा देगा ।२३।

وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۟ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۭ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ۫ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾

और जब मद्यन नगर के पानी (अर्थात् श्रोत) के पास आया तो उस ने वहाँ लोगों का एक गिरोह खड़ा देखा जो (अपने-अपने पशुओं को) पानी पिला रहे थे और उन से पीछे हट कर खड़ी हुई दो महिलाओं को भी देखा जो अपने चौपायों को (उस जमघटा से परे) हटा रही थी। मूसा ने उन से कहा कि तुम दोनों के सामने कौन सा बड़ा काम है? इस पर उन दोनों स्त्रियों ने कहा कि हम तब तक पानी नहीं पिला सकतीं जब तक कि दूसरे चरवाहे चले न जाएँ तथा हमारा पिता बहुत बूढ़ा हैं। (अतः वह हमारे साथ नहीं आ सका) ।२४।

فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰۤى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَاۤ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾

सो उस ने उन दोनों के लिए (जानवरों को) पानी पिला दिया, फिर एक ओर छाया में चला गया, फिर कहा कि हे मेरे रब्ब! तू जो कुछ भी अपनी कृपा से मुझ पर उतारे मैं उस का मुहताज हूँ ।२५।

فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۡ قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۭ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۫ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾

इस के पश्चात् उन दोनों (लड़कियों) में से एक चलती हुई आई और वह लज्जा कर रही थी और उस ने कहा कि मेरा पिता तुझे बुलाता है ताकि तुझे हमारे लिए (जानवरों को) पानी पिलाने का बदला दे। अतः जब वह उस (लड़की के पिता) के पास आया तथा उसे अपनी सारी कहानी सुनाई तो उस ने कहा कि डर नहीं, अब तू अत्याचारी जाति से छुटकारा पा चुका है ।२६।

قَالَتْ إِحْدٰىهُمَا يٰٓأَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ ۖ إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ ﴿٢٧﴾

इस पर उन (दोनों लड़कियों) में से एक ने कहा कि हे मेरे पिता ! इसे तू नौकर रख ले, क्योंकि जिन को तू नौकर रखे उन में से अच्छा व्यक्ति वही होगा जो शक्तिशाली[1] भी हो और अमानतदार भी ।२७।

قَالَ إِنِّيٓ أُرِيدُ أَنْ أُنكِحَكَ إِحْدَى ابْنَتَيَّ هٰتَيْنِ عَلٰىٓ أَن تَأْجُرَنِي ثَمٰنِيَ حِجَجٍ ۖ فَإِنْ أَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِندِكَ ۖ وَمَآ أُرِيدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ ۚ سَتَجِدُنِيٓ إِن شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿٢٨﴾

तब वह व्यक्ति बोला कि (हे मूसा !) मेरी इच्छा है कि मैं इस शर्त पर अपनी इन दोनों पुत्रियों में से एक का विवाह तुझ से कर दूँ कि तू आठ वर्ष तक मेरी सेवा करे । सो यदि तू (आठ की संख्या के स्थान पर) दस की संख्या से अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर दे तो यह तेरा उपकार होगा और मैं तुझ पर कोई बोझ नहीं डालना चाहता । यदि अल्लाह ने चाहा तो तू मुझे सद्व्यवहार करने वालों में से पाएगा ।२८।

قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ ۖ أَيَّمَا الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ۖ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٢٩﴾

(इस पर मूसा ने) कहा कि यह बात मेरे और तेरे बीच पक्की हो गई । मैं इन दोनों अवधियों में से जो अवधि भी पूरी करूँ मुझ पर कोई आरोप नहीं होगा । जो कुछ हम कहते हैं अल्लाह उस पर गवाह है ।२९। (रुकू ३/६)

فَلَمَّا قَضٰى مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِۦٓ ءَانَسَ مِن

जब मूसा ने निश्चित अवधि पूरी कर ली तथा अपने घर वालों को ले कर चला तो

1. हज़रत मूसा ने बहुत से चरवाहों को हटा कर जानवरों को पानी पिला दिया जो शक्तिशाली व्यक्तियों का काम है । पानी पिलाने के बाद छाया में जा कर एक ओर बैठ जाना और लड़कियों से किसी बदले या धन्यवाद की आशा न रखना एक अमानतदार सदाचारी व्यक्ति का काम है । इन दोनों बातों को सामने रख कर उस लड़की ने ठीक-ठीक परिणाम निकाला था कि यह व्यक्ति शक्तिशाली और अमानतदार है ।

جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝

उस ने तूर पर्वत की ओर से एक आग देखी तो अपने घर वालों से कहा कि तुम यहाँ ठहरो, मैं ने एक आग[1] देखी है। सम्भव है मैं वहाँ से तुम्हारे लिए कोई (आवश्यक) समाचार लाऊँ अथवा आग का कोई अंगारा लाऊँ ताकि तुम सेंको।३०।

فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰٓى اِنِّيْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

फिर जब वह उस आग के पास पहुँचा तो बरकत वाले स्थान के एक मुबारक[2] हिस्से की ओर से एक पेड़ के पास से उसे पुकारा गया कि हे मूसा ! मैं अल्लाह हूँ, समस्त लोकों का रब्ब।३१।

وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۗ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۗ يٰمُوْسٰٓى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۗ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ۝

और यह कि तू अपनी लाठी फेंक दे। अतः जब उस ने उस (लाठी) को हिलते-जुलते देखा, मानों वह एक छोटा साँप है, तो वह पीठ फेर कर भागा और पीछे मुड़ कर भी न देखा। (तब उसे कहा गया) हे मूसा ! आगे बढ़ और डर नहीं। तू शान्ति पाने वालों में से है।३२।

اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ

और अपना हाथ अपने गरेबान में डाल। वह बिना किसी रोग के चमकता हुआ निकलेगा और अपनी भुजा को भय के कारण (ज़ोर से) खींच कर (अपने शरीर से) मिला ले। ये दो प्रमाण (दूसरे प्रमाणों के सिवा) हैं जो

1. विवरण के लिए देखिए सूरः नम्ल टिप्पणी आयत ८।

2. अभिप्राय यह है कि वह मैदान भी मुबारक एवं कल्याणकारी था और पेड़ के समीपवर्ती भूमि भी, जहाँ से आवाज़ आई थी, क्योंकि वहाँ हज़रत मूसा ने अल्लाह की ओर से पैदा की हुई छवि के दर्शन किए थे।

مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝

फ़िरऔन तथा उस के दरबारियों के लिए तेरे रब्ब की ओर से भेजे गए हैं, क्योंकि वे आज्ञा भंग करने वाले लोग है।३३।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝

(मूसा ने) कहा कि हे मेरे रब्ब! मैं ने फ़िरऔन की जाति में से एक व्यक्ति की हत्या की थी। अतः मैं डरता हूँ कि वह मेरी हत्या न कर दें (और तेरा सन्देश[1] न पहुँच सके)।३४।

وَاَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً يُّصَدِّقُنِيْٓ ۡاِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝

और मेरा भाई हारून बात-चीत करने में मेरी अपेक्षा अधिक कुशल है। इसलिए उसे मेरे साथ सहायक के रूप में भेज दे ताकि वह मेरा समर्थन करे। मुझे भय है कि वे मुझे झुठला न दें।३५।

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا ۚ بِاٰيٰتِنَآ ۚ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ۝

कहा कि हम तेरे भाई द्वारा तेरी भुजा को परिपुष्ट करेंगे और तुम दोनों के लिए विजय के सामान पैदा करेंगे। सो वे तुम तक नहीं पहुँच सकेंगे। तुम दोनों तथा जो तुम्हारे अनुयायी होंगे हमारी आयतों के द्वारा विजयी होंगे।३६।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۝

अतः जब मूसा हमारी खुली-खुली आयतें ले कर आया तो फ़िरऔन के साथियों ने कहा कि यह तो एक छल-कपट है जो बना लिया गया है। हम ने तो अपने पूर्वजों से ऐसी बात कभी नहीं सुनी।३७।

1. हज़रत मूसा को अपने प्राणों का डर न था अपितु अल्लाह के सन्देश को लोगों तक पहुँचा न सकने का भय था।

وَقَالَ مُوسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝

और मूसा ने कहा कि मेरा रब्ब उसे भली-भाँति जानता है जो उस की ओर से हिदायत ले कर आया हो और उसे भी जिस का परिणाम अच्छा हो। सच तो यह है कि अत्याचारी कभी सफल नहीं होते ।३८।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝

और फ़िरऔन ने कहा कि हे दरबारियो ! मुझे अपने सिवा तुम्हारा कोई और उपास्य ज्ञात नहीं। अतः हे हामान ! तू मेरे लिए गीली मिट्टी पर आग जला (अर्थात् ईंटें बनवा) फिर मेरे लिए एक दुर्ग तय्यार[1] कर। सम्भव है मैं उस पर चढ़ कर मूसा के अल्लाह का पता कर लूँ और मैं तो उसे झूठों में से समझता हूँ ।३९।

وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ۝

और उस ने भी तथा उस की सेनाओं ने भी बिना किसी हक़ के अभिमान से काम लिया और समझ लिया कि वे हमारी ओर लौट कर नहीं लाए जाएँगे ।४०।

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝

सो हम ने उसे भी तथा उस की सेनाओं को भी पकड़ लिया और उन्हें समुद्र[2] में फेंक दिया। अतः देख ! अत्याचारियों का परिणाम कैसा हुआ ।४१।

وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ

और हम ने उन (फ़िरऔनियों) को सरदार बनाया था जो (अपनी सरदारी के घमण्ड में)

---

1. मिस्र वालों का यह मंतव्य था कि आकाशीय-आत्माएँ ऊँचे स्थानों पर उतरती हैं। अतः वे आध्यात्मिक कला-कौशल की प्राप्ति के लिए गगनचुम्बी भवनों का निर्माण करते थे। मिस्र देश के स्तूप इसी मंतव्य के स्मारक हैं।

2. मूल शब्द 'यम' का अर्थ नदी और समुद्र दोनों हैं। (अक़्रब) इतिहास से पता चलता है कि हज़रत मूसा तथा फ़िरऔन उस स्थान से गुज़रे थे जहाँ से लाल सागर सीना नामक मैदान से मिलता है।

لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٢﴾

लोगों को नरक की ओर बुलाते थे तथा क़ियामत के दिन उन की कोई सहायता नहीं की जाएगी।४२।

وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿٤٣﴾

और इस संसार में भी हम ने उन पर फटकार डाली तथा क़ियामत के दिन भी वे बुरे हाल वाले लोगों में से होंगे।४३। (रुकू ४/७)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْ بَعْدِ مَا اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٤﴾

और हम ने पहली जातियों के विनष्ट करने के बाद मूसा को किताब दी थी, जिस की शिक्षा लोगों को आध्यात्मिक ज्योति प्रदान करती थी तथा वह हिदायत और दयालुता का साधन थी एवं इस उद्देश्य से (दी गई थी) कि वे शिक्षा ग्रहण करें।४४।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٥﴾

और तू (तूर पर्वत के) पश्चिमी किनारे पर नहीं था जब कि हम ने मूसा को रिसालत[1] का काम सौंपा था तथा न तू (उस समय) गवाहों में से एक गवाह ही था।४५।

وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا

किन्तु हम ने अनेक जातियों को पैदा किया, सो उन पर आयु लम्बी[2] हो गई (और वे अपनी भविष्यवाणियों को भूल गए) और तू

1. इस अवसर पर वह प्रसिद्ध भविष्यवाणी हज़रत मूसा को बताई गई थी जिस में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का उल्लेख है। इस आयत में उसी की ओर संकेत है कि तू उस समय तो था नहीं, फिर तू ने मूसा से अपने लिए भविष्यवाणी कैसे करवा ली।

2. हज़रत मूसा की भविष्यवाणियों के होते हुए यहूदियों का इन्कार करना इस कारण से है कि उन की आयु लम्बी हो गई अर्थात् हज़रत मूसा के पश्चात् एक लम्बा समय बीत चुका है जिस के कारण यहूदी लोग उन भविष्यवाणियों को भूल चुके हैं।

كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٦﴾

मद्यन[1] वालों के साथ भी नहीं रहता था कि उन के सामने हमारी आयतें पढ़ कर सुनाता, परन्तु हम ही रसूलों[2] को भेजने वाले हैं।४६।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٧﴾

और तू तूर पर्वत के किनारे पर नहीं था जब कि हम ने (मूसा को) पुकारा, किन्तु यह सब कुछ तेरे रब्ब की ओर से रहमत है ताकि तू उस जाति को सावधान करे जिन के पास तुझ से पहले कोई सावधान करने वाला नहीं आया था ताकि वह शिक्षा प्राप्त[3] कर सकें।४७।

وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ

और यदि यह विचार न होता कि वे अपने कर्मों के कारण किसी विपत्ति के आ जाने पर कहेंगे कि हे हमारे रब्ब! तूने हमारी ओर किसी रसूल को क्यों न भेजा ताकि हम तेरी आयतों का अनुसरण करते तथा मोमिनों में से बन जाते (तो हो सकता था

1. हज़रत मूसा ने मद्यन की ओर दूसरी बार जाते समय हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के विषय में भविष्यवाणी की थी। अतः दूसरी बार फिर मद्यन का उल्लेख भी किया गया है।

2. हज़रत मूसा की किताब में तेरे (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के) विषय में भविष्यवाणियाँ हैं। तेरे प्रादुर्भाव से बहुत समय पहले हज़रत मूसा हो चुके थे। अतएव यह इस बात का प्रमाण है कि वे भविष्यवाणियाँ अल्लाह की ओर से है, क्योंकि तेरे कहने पर हज़रत मूसा ने तेरे विषय में ऐसी भविष्यवाणियाँ नहीं की, फिर जब मूसा मदयन की ओर गए थे तो तू उस समय भी उन के पास नहीं था क्योंकि उस समय तो तेरा प्रादुर्भाव भी नहीं हुआ था। अतः अब जो तुझे नुबुव्वत मिली है यह किसी समझौते के कारण नहीं, अपितु यह अल्लाह की ओर से मिली है तथा अल्लाह ही अपने रसूलों को भेजा करता है।

3. यद्यपि मक्का के निवासी हज़रत इब्राहीम के वंशज थे, किन्तु हज़रत इब्राहीम उन से शताब्दियों पहले हो चुके थे। इसलिए आवश्यक था कि कोई नया नबी आ कर उन का ध्यान अल्लाह की ओर आकृष्ट कराए।

وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٨﴾

कि हम तुझे रसूल बना कर के न भेजते, लेकिन इन्कार करने वालों पर हुज्जत पूरी करना ज़रूरी था) ।४८।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ۚ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۚ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٩﴾

अत: जब उन के पास हमारी ओर से सत्य आ गया तो वे बोले कि इस (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम) को क्यों वैसी शिक्षा नहीं मिली जैसी कि मूसा को मिली थी। क्या उन्हों ने इस से पहले मूसा की शिक्षा का इन्कार नहीं किया था? उन्हों ने तो कह दिया था कि ये दो बड़े जादूगर हैं, जो एक-दूसरे की सहायता करते हैं तथा कह दिया था कि हम इन में से प्रत्येक के दावा का इन्कार करते हैं।४९।

قُلْ فَأْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٥٠﴾

तू कह दे कि (यदि मूसा, हारून तथा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम, सब की बातें झूठी हैं तो) यदि तुम सच्चे हो तो अल्लाह के पास से एक ऐसी किताब लाओ जो इन दोनों किताबों से बढ़ कर हिदायत देती हो ताकि मैं उस का अनुसरण करूँ।५०।

فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ ع

फिर यदि वे कोई उत्तर न दें तो समझ ले कि वे केवल अपनी वासनाओं के पीछे चलते हैं और उस व्यक्ति से बढ़ कर दूसरा कौन भटका हुआ हो सकता है जो अल्लाह की हिदायत को छोड़ कर अपनी मानसिक इच्छाओं का अनुसरण करता है। निस्सन्देह अल्लाह अत्याचारी जाति को सफलता की राह नहीं दिखाता।५१। (रुकू ५/८)

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٢﴾

और हम उन के लिए लगातार वह्य उतारते रहे ताकि वे शिक्षा प्राप्त करें।५२।

الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝

वे लोग जिन्हें हम ने इस क़ुर्आन से पहले किताब दी थी वे इस क़ुर्आन पर (दिल में) ईमान रखते[1] हैं।५३।

وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ۝

और जब वह (क़ुर्आन) उन के सामने पढ़ा जाता है तो वे कहते हैं कि हम इस पर ईमान लाते हैं। यह हमारे रब्ब की ओर से सच्चा कलाम है। हम तो इस दिन से पहले ही मुसलमान थे।५४।

اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝

इन लोगों को इन के धैर्य[1] के कारण दो बार बदला[2] मिलेगा और वे नेकी के द्वारा बुराई को दूर करते हैं तथा जो कुछ हम ने उन्हें प्रदान किया है उस में से ख़र्च करते हैं।५५।

وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِى الْجٰهِلِيْنَ ۝

और (यहूदियों में से मुसलमान होने वाले लोग जब) कोई निरर्थक बात सुनते हैं तो उस से मुँह मोड़ लेते हैं और कहते हैं कि हे इन्कार करने वालो ! हमारे कर्म हमारे लिए हैं और तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए हैं। तुम पर सलामती हो (अर्थात् अल्लाह तुम्हें ईमान प्रदान करे) हम मूर्खों से सम्बन्ध रखना पसन्द नहीं करते।५६।

---

1. अर्थात् वे लोग जो अपनी किताब की भविष्यवाणियों का ज्ञान रखते हैं और उन्हें सच्चा समझते हैं।

1. अर्थात् वे पहली धार्मिक-शिक्षा (तौरात) पर भी क़ायम रहे और पवित्र क़ुर्आन पर भी ईमान ले आए।

2. अर्थात् इस लोक में भी और परलोक में भी।

إنك لا تهدي من أحببت ولكن الله يهدي من يشاء وهو أعلم بالمهتدين ﴿٥٦﴾

तू जिस को पसन्द करे हिदायत[1] नहीं दे सकता किन्तु अल्लाह जिसे चाहे हिदायत देता है तथा वह हिदायत पाने वालों को भली-भाँति जानता है ।५७।

وقالوا إن نتبع الهدى معك نتخطف من أرضنا أولم نمكن لهم حرما آمنا يجبى إليه ثمرات كل شيء رزقا من لدنا ولكن أكثرهم لا يعلمون ﴿٥٧﴾

और वे कहते हैं कि यदि हम उस हिदायत का अनुसरण करें जो तुझ पर उतरी है तो अपने देश से उचक[2] लिए जाएँगे। (तू कह दे) क्या हम ने उन्हें सुरक्षित एवं शान्तिमय स्थान में नहीं रखा जिस की ओर सभी प्रकार के फल लाए जाते हैं? यह हमारी देन है, परन्तु उन में से बहुत से लोग नहीं जानते ।५८।

وكم أهلكنا من قرية بطرت معيشتها فتلك مساكنهم لم تسكن من بعدهم إلا قليلا وكنا نحن الوارثين ﴿٥٨﴾

और बहुत सी बस्तियाँ ऐसी हैं जिन्हें हम ने तबाह कर दिया, जो अपने सामानों की बहुतात के कारण अहंकारी हो गई थीं। अतः (देख) यह उन की बस्तियाँ हैं, जिन में उन के पश्चात् कोई भी नहीं बसा और हम ही उन के वारिस बने ।५९।

وما كان ربك مهلك القرى حتى يبعث في أمها رسولا يتلو عليهم آياتنا وما كنا مهلكي القرى

और तेरा रब्ब जब तक किसी केन्द्रीय बस्ती में ऐसा रसूल न भेज दे, जो उन के सामने हमारी आयतें पढ़ कर सुनाए तब तक उन बस्तियों के समूह[3] (देश) का विनाश

---

1. हिदायत किसी पर ज़बरदस्ती ठूँसी नहीं जा सकती। जो व्यक्ति उसे पाने का अभिलाषा रखता हो उसे ही हिदायत मिलती है। अतएव अल्लाह ने जो दिलों की रहस्यमयी बातों से परिचित है हिदायत का देना अपने हाथ में रखा है।

2. अर्थात् लोग हमारा नाश कर देंगे।

3. अरबी भाषा में गाँवों के समूह से अभिप्राय देश होता है।

اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ

नहीं कर सकता था. (क्योंकि यह न्याय के विरुद्ध है) और हम बस्तियों का कभी सर्वनाश नहीं करते सिवाय इस के कि उन में निवास करने वाले अत्याचारी हो जाएँ।६०।

وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتُهَا وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ

और जो कुछ तुम्हें दिया जाता है वह तो केवल सांसारिक जीवन (के सुख) का सामान है और इस की शोभा है तथा जो अल्लाह के पास है वह सर्वोत्तम एवं शेष रहने वाला है। क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? ।६१। (रुकू ६/९)

اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ

क्या वह व्यक्ति जिस से हम ने अच्छा (अर्थात् आख़िरत के जीवन की सफलता का) वादा किया हो और वह (निश्चय ही) उसे प्राप्त कर लेने वाला हो उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जिसे हम ने केवल सांसारिक-जीवन का कुछ सामान दिया हो और फिर वह क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने (उत्तर देने के लिए) पेश किया जाने वाला हो? ।६२।

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ

और (याद करो) जिस दिन वह (अल्लाह) उन्हें बुलाएगा तथा पूछेगा कि वे झूठे साझी कहाँ हैं जिन्हें तुम मेरे मुक़ाबिले में उपास्य ठहराया करते थे।६३।

قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ

तब वे लोग जिन के लिए हमारे अज़ाब की बात पूरी हो चुकी होगी[1] कहेंगे कि हे हमारे

1. अर्थात् वे या तो मरने के बाद नरक में जा चुके होंगे या इसी संसार के जीवन में उन्हें अज़ाब मिल चुका होगा।

اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَاۤ اِلَيْكَ مَا كَانُوْۤا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾

रब्ब ! ये वे लोग हैं जिन्हें हम ने बहकाया था। हम ने इन को उसी प्रकार बहकाया था जिस प्रकार हम स्वयं बहक गए थे। आज हम तेरे सामने अपनी पथभ्रष्टता से बरी होने की घोषणा करते हैं। वे लोग हमारी उपासना नहीं किया करते थे (अपितु अपने मानसिक विचारों का अनुसरण किया करते थे)।६४।

وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾

और कहा जाएगा कि तुम अपने साझियों को बुलाओ। सो वे उन्हें बुलाएँगे, परन्तु वे उन्हें कोई उत्तर नहीं देंगे तथा (अनेकेश्वरवादी) निश्चित अज़ाब देख लेंगे। काश ! वे हिदायत पा जाते।६५।

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَاۤ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦٥﴾

और उस दिन को भी याद करो जब अल्लाह उन्हें पुकारेगा और कहेगा कि तुम ने रसूलों की बातों का क्या उत्तर दिया था ?।६६।

فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٦٦﴾

अतः उस दिन उन्हें सारे तर्क भूल जाएँगे और वे एक-दूसरे से कुछ न पूछ सकेंगे।६७।

فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿٦٧﴾

अतः जो कोई तौबः करेगा और ईमान लाएगा और परिस्थिति के अनुकूल कर्म करेगा, सम्भव होगा कि वह सफलता पाने वाले लोगों में सम्मिलित हो जाए।६८।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۗ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٨﴾

और तेरा रब्ब जो चाहता है पैदा करता है और जिसे चाहता है चुन लेता है। उन्हें इस बारे में कोई अधिकार प्राप्त नहीं। अल्लाह पवित्र है और उन की शिर्क की बातों से बहुत ऊँचा है।६९।

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝

और तेरे रब्ब को इस का भी ज्ञान है जिसे वे अपने सीनों में छिपाते हैं तथा उस का भी जिसे वे प्रकट करते हैं ।७०।

وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

और वास्तव में अल्लाह ही ऐसी सत्ता है कि उस के सिवा कोई उपास्य नहीं सृष्टि के आरम्भ में भी वही स्तुति के योग्य था और अन्त में भी वही स्तुति का अधिकारी होगा। सारा साम्राज्य उसी के अधिकार में है और तुम सभी को उसी की ओर लौट कर जाना होगा ।७१।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَاۗءٍ ۭ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ۝

तू उन्हें कह दे कि मुझे बताओ तो सही, यदि अल्लाह तुम्हारे लिए रात को क़ियामत के दिन तक लम्बा कर दे तो अल्लाह के सिवा और कौन उपास्य है, जो तुम्हारे पास प्रकाश लाएगा ? क्या तुम सुनते नहीं ? ।७२।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ۭ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝

तू कह दे कि मुझे बताओ तो सही कि यदि अल्लाह दिन को क़ियामत के दिन तक तुम्हारे लिए लम्बा कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन सा उपास्य है जो तुम्हारे पास रात को ले आए जिस में तुम सुख-चैन पाओ ? क्या तुम देखते नहीं ? ।७३।

وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝

और यह उस की दया है कि उस ने तुम्हारे लिए रात तथा दिन बनाए हैं कि उस (रात) में तुम सुख-चैन पाओ और उस (दिन) में तुम उस की कृपा को ढूँढ़ो ताकि तुम कृतज्ञ बनो ।७४।

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَاۗءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝

और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा तथा कहेगा कि कहाँ हैं वे मेरे साझी जिन्हें तुम उपास्य समझा करते थे ? ।७५।

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٧٦﴾ ع

और हम हर-एक सम्प्रदाय में से एक-एक गवाह निकाल कर खड़ा करेंगे, फिर कहेंगे कि अपने-अपने प्रमाण लाओ। तब वे जान लेंगे कि पूर्ण हक़ अल्लाह ही के पास है और उन का सारा गढ़ा हुआ झूठ उन से खोया जाएगा।७६। (रुकू ७/१०)

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوأُ بِالْعُصْبَةِ أُولِي الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ﴿٧٧﴾

क़ारून (वास्तव में) मूसा की जाति में था, परन्तु वह उन्हीं के विरुद्ध अत्याचार[1] करने लग गया और हम ने उसे इतने ख़ज़ाने[2] दिए थे कि उस की कुञ्जियाँ[3] एक शक्तिशाली समूह के लिए उठाना भी कठिन था। (याद कर) जब उस की जाति ने कहा कि इतना अभिमान न कर, निस्सन्देह अल्लाह अभिमान करने वालों को पसन्द नहीं करता।७७।

---

1. अत्याचारी राजाओं का यह नियम होता है कि वे छोटे पदों पर अपनी प्रजा में से कुछ लोगों को नियुक्त कर देते हैं और ये लोग अपनी जाति के लोगों पर अत्याचार करने में उन राजाओं से भी आगे बढ़े होते हैं।

फ़िरऔन ने भी इस सिद्धान्त को अपना रखा था। इस ने माल-विभाग में कुछ कर्मचारी बनी-इस्राइलियों में से नियुक्त कर रखे थे। ये लोग अपनी जाति पर क़िब्तियों से भी बढ़ कर अत्याचार किया करते थे, क्योंकि उन का विचार था कि राजा दूसरी जाति का है। हमारे ऐसे कामों के कारण प्रसन्न हो कर उच्च-पद प्रदान करेगा।

2. वे ख़ज़ाने उस के निजी न थे, अपितु वह फ़िरऔन के माल-विभाग या राज-कोष का वित्त मन्त्री था। माल-विभाग में बनी-इस्राईल बड़े निपुण सिद्ध हो चुके थे। हज़रत यूसुफ़ के समय में भी इस्राइलियों को आर्थिक समस्याओं के सुलझाने का बड़ा अनुभव था और वे दूसरी जातियों से अपने आप को अधिक प्रवीण समझते थे और राज-कोष एवं माल-विभाग के निरीक्षक इन्हीं में से नियुक्त किए जाते थे।

3. यह राज-कोष था जिस का अध्यक्ष क़ारून था। उस समय जब राजा देश का दौरा करते थे तो सैंकड़ों-हज़ारों ऊँटों पर ख़ज़ाने के दोहरे सन्दूक़ रख कर अपने साथ ले जाते थे, क्योंकि उस समय (शेष पृष्ठ ८५६ पर)

وَابْتَغِ فِيمَآ اٰتٰكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِى الْاَرْضِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٧٨﴾

और जो कुछ तुझे अल्लाह् ने प्रदान किया है उस से आख़िरत के जीवन के घर की खोज कर तथा जो हिस्सा तुझे सांसारिक-जीवन से मिला हुआ है उसे भी न भूल। (हम तुझे एक सीमा तक सांसारिक सुविधाओं के प्रयोग से नहीं रोकते) और जिस प्रकार अल्लाह् ने तुझ पर उपकार किया है तू भी लोगों पर उपकार कर तथा देश में उपद्रव फैलाने का प्रयत्न कर। अल्लाह् निश्चय ही उपद्रव फैलाने वालों को पसन्द नहीं करता।७८।

قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِىْ ۚ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ

(क़ारून ने) कहा कि यह समस्त सम्मान मुझे एक ऐसी विद्या के कारण मिला है जो कि

(पृष्ठ ८५५ का शेष)

मोटर, ट्रेन आदि नहीं होते थे और न हीं विभिन्न स्थानों पर राज-कोष बने हुए होते थे। राजा के साथ ही साथ सरकारी ख़ज़ाना भी जाता था। यात्रा में ही सब कर्मचारियों को वेतन दिया जाता था तथा उन के खान-पान की सामग्री भी खरीदी जाती थी, मानो यदि राजा के कर्मचारियों में दस हज़ार व्यक्ति हों और राजा छः मास के दौरे पर जा रहा हो तो तीन-चार हज़ार ऊँट उन के साथ अवश्य होते होंगे। यदि एक ऊँट पर दो-दो सन्दूक हों तो आठ हज़ार सन्दूक होगा। उस समय काठ की कुञ्जियाँ होती थीं। यदि सुरक्षार्थ प्रत्येक सन्दूक़ में दो-दो ताले समझे जाएँ तो सोलह हज़ार कुञ्जियाँ बनती हैं। यदि एक कुञ्जी आधा किलो की समझी जाए तो आठ हज़ार किलो या दो सौ मन या अस्सी क्वन्टल बनते हैं और अस्सी क्वन्टल बोझ बीस-पचीस मनुष्य भी कठिनाई से नहीं उठा सकते, जब कि वे निरन्तर यात्रा में ही रहते हों। यहाँ केवल यह बताया गया है कि कुञ्जियाँ यदि मनुष्य उठाते तो वे एक समूह के लिए थी बोझल होतीं अर्थात् दस-बारह मनुष्य भी उन को कठिनाई से उठा सकते। यदि उन में लोहे के ताले की रीति प्रचलित थी तो भी उस समय लोहे के ताले भी बहुत बोझल बनाए जाते थे। सोलह हज़ार लोहे की कुञ्जियों का बोझ भी इतना भारी था कि दस-बारह व्यक्तियों के लिए उस का उठाना कठिन होता था।

यह जो लिखा गया है कि क़ारून फ़िरऔन के राज-कोष का अध्यक्ष था तो इस का प्रमाण यह है कि आयत में लिखा है कि वह अपनी ही जाति पर अत्याचार करने लग पड़ा था। धनवान् होने के नाते कोई व्यक्ति किसी पर अत्याचार नहीं किया करता, अपितु पद-अधिकारी होने के कारण ही अत्याचार कर सकता है। अतएव पद पाए हुए अधिकारी क़ारून का वृत्तान्त है न कि केवल धनवान क़ारून का, जो कि पदाधिकारी होने के कारण अपनी ही जाति पर अत्याचार किया करता था।

اللهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَمْعًا ۚ وَلَا يُسْأَلُ عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٧٩﴾

केवल मुझे ही प्राप्त है। क्या उसे ज्ञान नहीं था कि उस से पहले अल्लाह ने अनेक नस्लों को निर्मूल कर दिया है जो उस से अधिक शक्तिशाली और उस से अधिक धनवान थीं और अपराधियों[1] से (अज़ाब के समय) उन के पापों के विषय में कोई पूछ-ताछ नहीं की जाती।७९।

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۖ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا يَا لَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٨٠﴾

(एक दिन ऐसा हुआ कि) वह अपनी जाति के सामने ठाट-बाट के साथ निकला, इस पर वे लोग बोल उठे, जो सांसारिक-जीवन के साधन चाहते थे, काश ! हमें भी वही मिलता जो क़ारून को दिया गया है। उसे तो (सांसारिक-धन का एक) बड़ा भाग मिला है।८०।

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِمَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ﴿٨١﴾

और जिन लोगों को ज्ञान दिया गया था वे बोले कि तुम्हारा नाश हो ! अल्लाह की ओर से मिलने वाला प्रतिफल मोमिनों और ईमान के अनुकूल कर्म करने वालों के लिए अति उत्तम होता है और यह फल केवल धैर्यवानों को ही प्राप्त होता है।८१।

فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِينَ ﴿٨٢﴾

फिर हम ने उसे और उस के वंश को बुरी बातों में फंसा दिया और कोई गिरोह भी ऐसा न निकला जो अल्लाह के सिवा उस की सहायता करता और किसी उपाय से भी वह (अपने शत्रु से) बच न सका।८२।

1. अल्लाह की ओर से जो दण्ड मिलता है वह प्राकृतिक होता है। वह दण्ड स्वयं बता देता है कि अपराधी इसी के योग्य था।

وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ۝

और वे लोग जो कल तक उस जैसा स्थान पाने की इच्छा करते थे कहने लग पड़े कि तेरा सर्वनाश हो ! निस्सन्देह अल्लाह ही अपने प्रिय भक्तों में से जिस के लिए चाहता है रोज़ी में वृद्धि प्रदान करता है तथा जिस के लिए चाहता है तंगी पैदा कर देता है। यदि अल्लाह ने हम पर उपकार न किया होता तो हमें भी विपत्तियों का शिकार बना देता। तेरा सर्वनाश हो ! (सत्य तो यही है कि) इन्कार करने वाले लोग कभी सफल नहीं होते।८३। (रुकू ८/११)

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝

यह जो आख़िरत का जीवन है हम उसे उन्हीं लोगों के लिए विशेष कर देते हैं जो देश में अनुचित प्रभुत्व पाने एवं उपद्रव फैलाने के इच्छुक नहीं होते और परिणाम तो संयमियों का ही अच्छा होता है।८४।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

जो व्यक्ति नेक कर्म करे उसे उस से अच्छा बदला मिलेगा तथा जो व्यक्ति बुरे कर्म करेगा तो बुरे कर्म करने वालों को उन के अपने कर्म के बराबर बदला दिया जाएगा।८५।

اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ

वह अल्लाह जिस ने तुझ पर यह क़ुर्आन फ़र्ज़ किया है (अर्थात् तुम्हें इस का उत्तरदायी बनाया है) अपनी सत्ता की सौगन्ध खा कर कहता है कि वह तुझे उस स्थान[1] की ओर

1. मूल शब्द 'अल-मआद' का अर्थ है वह स्थान जिस की ओर लोग बार-बार लौट कर आते हैं। यहाँ इस से मक्का नगर अभीष्ट है, जहाँ लोग हज्ज और उमरा आदि के लिए बार-बार आते हैं।

قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٨٦﴾

लौटा कर लाएगा[1] जिस की ओर लोग बार-बार लौट कर आते हैं। तू कह दे कि मेरे रब्ब को उस का भी पूरा ज्ञान है जो हिदायत पर क़ायम होता है और उस का भी जो खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़ा हुआ है।८६।

وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٧﴾

और तुझे कोई आशा न थी कि तुझ पर एक कामिल किताब उतारी जाएगी, किन्तु तेरे रब्ब की ओर से दया के रूप में ऐसा हुआ। इस लिए तू इन्कार करने वालों का कभी भी सहायक न बनना।८७।

وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٨٨﴾

और तुझे कोई व्यक्ति इस के बाद कि अल्लाह की आयतें तुझ पर उतारी गईं उन से रोकने वाला न बने और तू अपने रब्ब की ओर लोगों को बुला तथा अनेकेश्वरवादियों में सम्मिलित न हो।८८।

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٩﴾ ع

और (हे सम्बोधित !) अल्लाह के सिवा किसी उपास्य को मत पुकार। उस के सिवा कोई उपास्य नहीं है। प्रत्येक वस्तु नष्ट[2] होने वाली है सिवाय उस के जिस की ओर उस (अल्लाह) का ध्यान हो। हुक्म उसी के अधिकार में है और तुम सब उसी की ओर लौटा कर ले जाए जाओगे।८९।

---

1. इस में मक्का की विजय की ओर संकेत है जिस की ओर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को वापस लाने की भविष्यवाणी की गई है और क़ुर्आन के फ़र्ज़ करने से यह बताया गया है कि यदि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम मक्का की ओर लौट कर न आए तो यह पवित्र क़ुर्आन की सत्यता पर एक कलंक होगा, क्योंकि अल्लाह ने यह प्रतिज्ञा क़ुर्आनी शरीयत की शपथ ले कर की है जो उसी की अपार कृपा से पूरी हो कर रहेगी।

2. इस से तात्पर्य समस्त भौतिक पदार्थ हैं, स्वर्ग के पदार्थ अथवा आध्यात्मिक ज्ञान अभीष्ट नहीं, क्योंकि वे नष्ट होने वाले नहीं हैं।
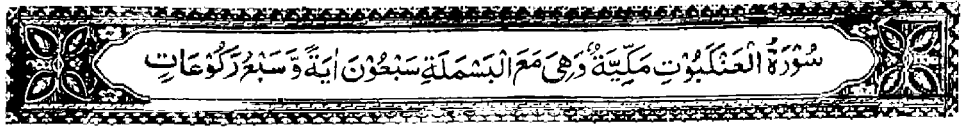
सूर: अल्-अन्कबूत

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की सत्तर आयतें एवं सात रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

الٓمّٓ ②

मैं (अल्लाह) सब से अधिक जानने वाला हूँ।२।

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ③

क्या (इस समय के) लोगों ने यह समझ रखा है कि उन का यह कह देना कि हम ईमान ले आए हैं (काफ़ी होगा) और उन्हें छोड़ दिया जाएगा और उन की परीक्षा नहीं की जाएगी ?।३।

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ④

हालाँकि जो लोग इन से पहले हो चुके हैं हम ने उन की परीक्षा ली थी (और अब भी वह ऐसा ही करेगा)। सो अल्लाह उन्हें भी प्रकट कर देगा जिन्हों ने सच बोला तथा उन्हें भी जिन्हो ने झूठ बोला।४।

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ⑤

क्या जो लोग बुराइयाँ करते हैं वे समझते हैं कि वे हमारे दण्ड से बच जाएँगे ? उनका यह फ़ैसला बहुत बुरा है।५।

مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ

जो कोई अल्लाह से मिलने की आशा रखता है (उसे याद रखना चाहिए कि) अल्लाह का

وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝٦

निश्चित किया हुआ समय अवश्य आने वाला है और वह बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है।६।

وَمَنْ جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ۝٧

और जो व्यक्ति अल्लाह के लिए प्रयत्न करता है वास्तव में वह अपनी ही जान के लिए करता है। अल्लाह समस्त लोकों से बे-नियाज़ है (उसे किसी की उपासना की आवश्यकता नहीं)।७।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝٨

और जो लोग ईमान लाए एवं उन्हों ने ईमान के अनुकूल कर्म भी किए, हम उन से उन के पापों को दूर कर देंगे और जो काम वे करते थे उन के अनुसार जो उत्तम प्रतिफल उन्हें मिल सकता होगा, वह उन्हें प्रदान करेंगे।८।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ۖ وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝٩

और हम ने मनुष्य को अपने माता-पिता से अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया है और (कहा है कि) यदि वे दोनों तुझ से इस बात में वाद-विवाद करें कि तू किसी को मेरा साझी ठहरा दे जिस का वास्तव में तुझे कोई ज्ञान नहीं तो तू उन दोनों की इस आज्ञा का पालन न कर[1], क्योंकि तुम सब को मेरी ओर ही लौट कर आना है और मैं तुम्हारे कर्मों (की अच्छाई-बुराई) से तुम्हें अवगत करूँगा।९।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ۝١٠

और जो लोग ईमान लाए हैं तथा उस ईमान के अनुकूल उन्हों ने कर्म भी किए हैं, हम उन्हें नेक लोगों में सम्मिलित करेंगे।१०।

---

1. माता पिता की आज्ञा का पालन करना ज़रूरी है, परन्तु यहाँ बताया है कि इस विशेष आदेश अर्थात् शिर्क अपनाने में उन का कहना न मानो।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ۭ وَلَىِٕنْ جَاۗءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۭ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ ⑪

और लोगों में से (कुछ ऐसे भी होते हैं) जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान लाए है फिर जब अल्लाह पर ईमान लाने के कारण उन्हें कष्ट दिया जाता है तो वे लोगों के कष्ट को अल्लाह के अज़ाब की भाँति समझ लेते हैं और यदि तेरे रब्ब की ओर से सहायता आती है तो वे कहते हैं कि हम भी तुम्हारे साथ थे। जो कुछ संसार वालों के दिलों में है क्या अल्लाह उसे भली-भाँति नहीं जानता? ।११।

وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ⑫

और अल्लाह उन्हें भी अवश्य प्रकट कर देगा जो ईमान लाए हैं तथा उन्हें भी जो मुनाफ़िक़ हैं ।१२।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ۭ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ⑬

और इन्कार करने वाले लोग मोमिनों से कहते हैं कि तुम हमारा अनुसरण करो हम तुम्हारे पापों को उठा लेंगे, हालाँकि वे उन के पापों को उठा नहीं सकते। निस्सन्देह वे झूठे हैं ।१३।

وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۡ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ⑭

वास्तविकता यह है कि वे अपने पापों का बोझ भी उठाएँगे और साथ ही और लोगों के बोझ भी उठाएँगे (जिन को वे धोखा देते रहे हैं) तथा क़ियामत के दिन उन के जान-बूझ कर झूठ गढ़ने के बारे में उन से पूछा जाएगा ।१४। (रुकू १/१३)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ

और हम ने नूह को उस की जाति की ओर भेजा था। अतः वह उन में नौ सौ[1] पचास

1. इस से हज़रत नूह की अपनी आयु अभीष्ट नहीं, अपितु उन की नुबुव्वत का ज़माना अभीष्ट (शेष पृष्ठ ८६३ पर)

سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ۭ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ⑮

वर्ष तक रहा। सो उस की जाति के लोगों को तूफ़ान ने आ दबाया और वे अत्याचारी थे।१५।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ⑯

अतः हम ने उसे और उस के साथ नौका में बैठने वाले साथियों को बचा लिया और हम ने इस घटना को संसार के सब लोगों के लिए एक निशान बना दिया।१६।

وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ⑰

और हम ने इब्राहीम को (भी रसूल बना कर भेजा था)। जब उस ने अपनी जाति के लोगों से कहा था कि अल्लाह की उपासना करो तथा उस के लिए संयम धारण करो। यदि तुम जानते हो तो यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है।१७।

اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ۭ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ⑱

तुम अल्लाह के सिवा दूसरी सत्ताओं की उपासना करते हो और (धर्म के विषय में) झूठी बातें बनाते हो। वे (सत्ताएँ) जिन की तुम अल्लाह को छोड़ कर उपासना करते हो वे तुम्हें रोज़ी नहीं दे सकतीं। अतः तुम अल्लाह से अपनी रोज़ी माँगो एवं उस की उपासना करो और उसी का धन्यवाद करो। तुम्हें उसी की ओर लौटाया जाएगा।१८।

وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ۭ وَمَا

और यदि तुम मेरी बात को झुठला दो तो (यह कोई अनोखी बात नहीं) तुम से पहली

(पृष्ठ ८६२ का शेष)

है या उन की जाति का वह समय अभीष्ट है जिस में वह सदाचारी रही। हज़रत इब्राहीम भी हज़रत नूह के अनुयायियों में से थे। (सूरः साफ़्फ़ात रुकू 3)अतः हज़रत नूह की आयु पहले हज़रत इब्राहीम तक बढ़ी, फिर हज़रत यूसुफ़ तक बल्कि हज़रत मूसा तक लम्बी हुई।

عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ⑲

जातियों ने भी (अपने रसूलों को) झुठलाया था। रसूल का काम तो केवल खोल-खोल कर पहुँचा देना होता है। (ज़बरदस्ती मनवाना नहीं होता)।१९।

اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ⑳

क्या उन्हें ज्ञात नहीं कि अल्लाह सृष्टि को किस तरह पहली बार पैदा करता है, फिर उसे बार-बार लौटाया जाता है। यह काम अल्लाह के लिए बहुत आसान है।२०।

قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ㉑

तू कह कि देश में चारों ओर घूम-फिर कर देखो कि अल्लाह ने मख़्लूक को किस प्रकार पैदा करना प्रारम्भ किया था, फिर मरने के पश्चात्[1] उन को दो बारा जीवित करता चला गया। अल्लाह प्रत्येक बात के करने का सामर्थ्य रखता है।२१।

يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ㉒

वह जिसे चाहता[2] है अज़ाब देता है और जिस पर चाहता है दया करता है और तुम सभी को उसी की ओर लौटा कर लाया जाएगा।२२।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ㉓

और तुम अल्लाह को उस की इच्छा के विरुद्ध धरती और आकाश में विवश नहीं कर सकोगे और अल्लाह के सिवा न तो तुम्हारा कोई मित्र है और न कोई सहायक ही।२३। (रुकू २/१४)

---

1. इस आयत में पारलौकिक-जीवन का वर्णन नहीं, अपितु इसी संसार की जातियों के उन्नति और अवनति का वर्णन है।

2. पवित्र क़ुर्आन की आयतों के आधार पर पहले बताया जा चुका है कि अल्लाह उसी व्यक्ति को अज़ाब देता है जो उस अज़ाब का पात्र है।

وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ لِقَآىِٕهٖۤ اُولٰٓىِٕكَ يَىِٕسُوْا مِنْ رَّحْمَتِيْ وَ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ۝۲۴

और वे लोग जो अल्लाह की आयतों का तथा उस से मिलने[1] का इन्कार करते हैं वे लोग ऐसे हैं जो मेरी दयालुता से निराश हो चुके हैं और यही लोग हैं जिन्हें पीड़ादायक अज़ाब मिलेगा ।२४।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ۝۲۵

सो उस (इब्राहीम) की जाति का इस के सिवा कोई उत्तर नहीं था कि इस की हत्या कर दो या इसे जला दो । (अतः उन्हों ने उसे आग में डाल दिया) किन्तु अल्लाह ने उसे आग से बचा लिया । निस्सन्देह इस में मोमिनों के लिए बड़े निशान हैं ।२५।

وَ قَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّ يَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا

(इब्राहीम ने) कहा कि तुम ने अल्लाह को छोड़ कर मूर्तियों से सम्बन्ध जोड़ रखा है (और तुम्हारा यह कर्म) केवल सांसारिक-जीवन में दूसरे अनेकेश्वरवादियों से प्रेम[2] भावनाएँ बढ़ाने के लिए है । फिर क़ियामत के दिन तुम में से कुछ लोग दूसरे कुछ लोगों का इन्कार करेंगे तथा तुम में कुछ लोग दूसरे

---

1. वास्तव में अल्लाह का मिलाप मोमिनों को होता है, परन्तु इन्कार करने वालों के लिए वह अज़ाब के रूप में प्रकट होता है और जब कभी उन के दिलों में लज्जा पैदा होती है तो फिर दयालुता एवं क्षमा के रूप में व्यक्त होता है । सो इस आयत का यह अर्थ है कि जो लोग अल्लाह की मुलाक़ात के इन्कारी होते हैं, वास्तव में वे निराशावश यह समझते हैं कि अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा और अपनी दयालुता से अपना कोई चमत्कार नहीं दिखलाएगा । अतएव अल्लाह भी उन के विश्वास के अनुसार उन से व्यवहार करता है तथा पीड़ादायक अज़ाब देता है ।

2. अर्थात् तुम्हारे धर्म का आधार युक्ति पर नहीं है, अपितु उस का उद्देश्य लोगों को प्रसन्न कर के अपनी ओर प्रवृत्त करना है, चाहे अल्लाह अप्रसन्न ही क्यों न हो जाए, किन्तु इस संसार में एक समय ऐसा भी आता है कि लोगों को प्रसन्न करने के लिए इन्कार करने वाले लोग सत्य से इन्कार कर देते हैं तो वही लोग उन के विरोधी बन जाते है । परलोक में भी ऐसा ही समय आएगा और ये सांसारिक मित्र उस समय कुछ काम नहीं देंगे ।

وَمَأْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝٢٦

कुछ लोगों पर फटकार डालेंगे और तुम्हारा ठिकाना नरक होगा तथा जिन्हें तुम सहायक समझते हो उन में से कोई भी तुम्हारी सहायता के लिए नहीं आएगा ।२६।

فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٢٧

इस उपदेश के पश्चात् लूत उस पर ईमान ले आया और (इब्राहीम ने) कहा कि मैं तो अपने रब्ब की ओर हिजरत कर के जाने वाला हूँ। निस्सन्देह वह ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है ।२७।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٢٨

और हम ने उसे इस्हाक़ और याक़ूब प्रदान किए तथा उस की संतान के साथ नुबुव्वत और किताब का विशेष सम्बन्ध जोड़ दिया और हम ने उसे इस लोक में भी उस का प्रतिफल प्रदान किया तथा वह परलोक[1] में भी सदाचारी लोगों में सम्मिलित किया जाएगा ।२८।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۡ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٩

और लूत को भी (हम ने रसूल बना कर भेजा) जब कि उस ने अपनी जाति के लोगों से कहा कि तुम एक ऐसा बुरा काम करते हो कि संसार में तुम से पहले ऐसा बुरा काम किसी ने नहीं किया ।२९।

---

1. इस आयत का एक अर्थ यह है कि अन्तिम समय में भी लोग हज़रत इब्राहीम को सदाचारी और नेक व्यक्ति समझेंगे । अत: आज के युग में जो-जो सम्प्रदाय हैं वे हज़रत इब्राहीम का सत्कार व आदर करते हैं जैसे मुसलमान, यहूदी तथा ईसाई आदि ।

इस का एक अर्थ यह भी हो सकता है कि अन्तिम समय (कलियुग) में जब इब्राहीम का स्वरूप प्रकट होगा, वह भी अपने काम में अल्लाह की दृष्टि में सुयोग्य होगा तथा उस पर आक्षेप करने वाले भूल में होंगे ।

أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ ۙ وَتَأْتُونَ فِي نَادِيكُمُ الْمُنْكَرَ ۖ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝

क्या तुम (स्त्रियों को छोड़ कर) पुरुषों के पास आते हो और डाके डालते हो तथा अपनी सभाओं में घिनौनी[1] बातें करते हो इस पर उस की जाति के लोगों का उत्तर इस के सिवा कुछ नहीं था कि उन्हों ने कह दिया कि यदि तू सच्चे लोगों में से है तो अल्लाह का अज़ाब हम पर उतार दे ।३०।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ ۝ ع

इस पर लूत ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! उपद्रव फैलाने वाली जाति के मुक़ाबिला में मेरी सहायता कर ।३१। (रुकू ३/१५)

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَىٰ قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُو أَهْلِ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۖ إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظَالِمِينَ ۝

और जब हमारे रसूल इब्राहीम के पास समाचार[2] लाए तो उन्हों ने कहा कि हम इस बस्ती का सर्वनाश करने वाले हैं, क्योंकि इस के निवासी अत्याचारी हैं ।३२।

قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا ۚ قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا ۖ لَنُنَجِّيَنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۚ كَانَتْ مِنَ

(इब्राहीम ने उत्तर में) कहा कि उस बस्ती में तो लूत भी रहता है । वे बोले कि हम उस (बस्ती) के निवासियों को भली-भाँति जानते हैं । हम उस (लूत) को तथा उस के परिवार को सिवाय उस की पत्नी के जो

---

1. अर्थात् यात्रियों से हँसी ठट्ठा करते हो अथवा उन पर अत्याचार करते हो ।

2. मूल शब्द 'बुशरा' का अर्थ गम्भीर और महत्वपूर्ण समाचार होता है, चाहे वह समाचार दुःखदायक हो या सुखदायक, जिस का प्रभाव मुखमंडल पर व्यक्त हो जाए ।

रसूल तो मृदुहृदयी होता है । हज़रत इब्राहीम तो क़ुर्आन के कथनानुसार अत्यन्त मृदुहृदयी थे। जब उन्हों ने यह सुना कि लूत की बस्ती के निवासियों का सर्वनाश हो जाएगा तो चिन्ता से उन के चेहरे का रंग उड़ गया ।

इस आयत में रसूलों से तात्पर्य वे सदाचारी लोग हैं जो ईशवाणी के अनुसार पहले हज़रत इब्राहीम के पास आए फिर हज़रत लूत के पास गए । वे फरिश्ते नहीं थे । हज़रत लूत के स्वदेश त्याग के समय उन के सहायक और संरक्षक थे ।

الْغٰبِرِيْنَ ۝

पीछे रहने वालों में शामिल हो जाएगी बचा लेंगे ।३३।

وَلَمَّآ اَنْ جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِیْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّ قَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَ اَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝

और जब हमारे रसूल लूत के पास आए तो उन के कारण उसे दुःख हुआ तथा उस का दिल तंग[1] हो गया और (उस की यह दशा देख कर सन्देश लाने वालों ने) कहा कि किसी भावी बात पर चिन्ता न कर तथा न किसी गुज़री हुई घटना पर खेद प्रकट कर। हम तुझे और तेरे परिवार को बचा लेने वाले हैं सिवाय तेरी पत्नी के जो पीछे रहने वालों में शामिल हो जाएगी ।३४।

اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝

हम इस बस्ती वालों पर उन की अवज्ञा के कारण अज़ाब उतारने वाले हैं ।३५।

وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝

और हम ने बुद्धिमानों के लिए इस बस्ती (की घटना) के द्वारा शिक्षा का एक सुस्पष्ट साधन छोड़ा है ।३६।

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ

और हम ने मद्यन (जाति) की ओर उन के भाई शुऐब को रसूल बना कर भेजा था। उस ने आ कर कहा कि हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की उपासना करो और आख़िरत के जीवन को ध्यान में रखो तथा

---

1. इस का अर्थ यह नहीं कि हज़रत लूत को अतिथि-धर्म का पालन करने का विचार बुरा लगा, अपितु अभिप्राय यह है कि लूत की जाति ने उन्हें इस बात से रोका था कि वह अपरिचित लोगों को घर में न लाया करें। (सूरः हिज्र आयत 70) इस लिए हज़रत लूत इन रसूलों को देख कर दुःखी हुए और उन का दिल तंग हुआ कि ऐसा न हो, मेरी जाति मुझे इन के आतिथ्य से रोके और अतिथियों को दुःख दे। उस समय नगर छोटे-छोटे और दूर-दूर होते थे। लोग डाके के भय से आगन्तुकों को अपने घर लाने से डरते थे। लूत के नगर के लोग भी डाकू थे और दूसरों को भी अपने जैसा समझते थे।

مُفۡسِدِيۡنَ۝

ऐसे फ़साद भरे काम न करो कि तुम्हारे कामों के कारण देश में फ़साद फैल जाए।३७।

فَكَذَّبُوۡهُ فَاَخَذَتۡهُمُ الرَّجۡفَةُ فَاَصۡبَحُوۡا فِىۡ دَارِهِمۡ جٰثِمِيۡنَ۝

इस पर उन्हों ने उसे झुठला दिया और उन्हें एक कंपा देने वाले अज़ाब ने पकड़ लिया, जिस के फलस्वरूप वे अपने घरों में धरती से चिमटे रह गए।३८।

وَعَادًا وَّثَمُوۡدَا۟ وَقَدۡ تَّبَيَّنَ لَـكُمۡ مِّنۡ مَّسٰكِنِهِمۡ‌ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيۡطٰنُ اَعۡمَالَهُمۡ فَصَدَّهُمۡ عَنِ السَّبِيۡلِ وَكَانُوۡا مُسۡتَبۡصِرِيۡنَ۝

और आद एवं समूद जाति को भी (हमारी ओर से एक कंपा देने वाले अज़ाब ने पकड़ लिया) और (हे मक्का निवासियो !) तुम पर उन की बस्तियों की दशा स्पष्ट है तथा शैतान ने उन्हें उन के कर्म शोभायमान[1] कर के दिखाए और उस (शैतान) ने उन को अल्लाह की राह से रोका, हालाँकि वे खूब अच्छी तरह समझते थे।३९।

وَقَارُوۡنَ وَفِرۡعَوۡنَ وَهَامٰنَ‌ وَلَقَدۡ جَآءَهُمۡ مُّوۡسٰى بِالۡبَيِّنٰتِ فَاسۡتَكۡبَرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ وَمَا كَانُوۡا سٰبِقِيۡنَ۝

और हम ने क़ारून, फ़िरऔन तथा हामान को भी कड़ा अज़ाब दिया था और मूसा उन के पास खुले-खुले चमत्कार ले कर आए थे, फिर भी वे न माने, अपितु उन्हों ने अभिमान से काम लिया और (हमारे अज़ाब से) भाग कर बच न सके।४०।

فَكُلًّا اَخَذۡنَا بِذَنۡۢبِهٖ‌ فَمِنۡهُمۡ مَّنۡ اَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِ حَاصِبًا‌ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ اَخَذَتۡهُ

अतः हम ने उन में से प्रत्येक को उस के पाप के कारण पकड़ लिया। सो उन में से कोई तो ऐसा था कि हम ने उन पर पत्थरों की वर्षा की तथा कोई ऐसा था कि उस को किसी

1. वे लोग चिरकाल तक बुरे काम करते रहे यहाँ तक कि उन्हें लत पड़ गई और अन्ततः बुरे काम ही उन्हें अच्छे और सुन्दर प्रतीत होने लग गए।

الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُم مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ ۚ وَمِنْهُم مَّنْ أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤١﴾

और सख़्त अज़ाब ने पकड़ लिया तथा कोई ऐसा था कि हम ने उसे देश में अपमानित कर दिया और कोई ऐसा था कि हम ने उसे डुबो दिया और अल्लाह उन पर अत्याचार करने वाला नहीं था, अपितु वे स्वयं ही अपने-आप पर अत्याचार करते थे ।४१।

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنكَبُوتِ اتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنكَبُوتِ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾

उन लोगों की हालत जिन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को मित्र बनाया है मकड़ी जैसी है, जिस ने अपने लिए एक घर तो बना लिया, परन्तु घरों में सब से कमज़ोर घर मकड़ी का ही होता है। काश ! ये लोग जानते ।४२।

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٤٣﴾

अल्लाह ऐसी हर वस्तु को जानता है जिसे ये लोग उस के सिवा पुकारते हैं और वह ग़ालिब और हिक्मत वाला है ।४३।

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ﴿٤٤﴾

और हम ये उदाहरण लोगों को समझाने के लिए वर्णन करते हैं, परन्तु बुद्धिमानों के सिवा कोई भी उन्हें नहीं समझता ।४४।

خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٥﴾ ع

अल्लाह ने आसमानों तथा ज़मीन को एक विशेष उद्देश्य के लिए पैदा किया है। इस में मोमिनों के लिए एक बड़ा निशान है ।४५। (रुकू ४/१६)

اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ
الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ
اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿٤٥﴾

इस किताब (अर्थात् क़ुर्आन) में से जो तेरी ओर वह्य किया जाता है उसे पढ़ (और लोगों को पढ़ कर सुना) तथा नमाज़ को विधिवत् क़ायम कर। निस्सन्देह नमाज़ समस्त अश्लील और बुरी बातों से रोकती है और निश्चय ही अल्लाह की याद (दूसरे सारे कामों से) श्रेष्ठ है तथा अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है।४६।

وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۖ اِلَّا الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ
اِلَيْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٤٦﴾

और किताब वालों से कदापि वाद-विवाद न करो, परन्तु उत्तम तथा ठोस प्रमाणों के साथ सिवाय उन लोगों के जो उन में से अत्याचारी हों (उन्हें अभियोगात्मक उत्तर दे सकते हो) और उन से कहो कि जो हम पर उतरा है हम उस पर भी ईमान लाते हैं और जो कुछ तुम पर उतर चुका है उस पर भी ईमान लाते हैं और हमारा उपास्य एवं तुम्हारा उपास्य एक है हम उस के आज्ञाकारी हैं।४७।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ
يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَمَا يَجْحَدُ
بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٧﴾

और इसी तरह हम ने तुझ पर यह कामिल किताब उतारी है। अत: वे लोग जिन्हें हम ने यह किताब दी है वे इस पर ईमान लाते हैं और उन लोगों में से (अर्थात् किताब वालों में से भी) कुछ लोग इस पर ईमान लाते हैं और हमारी आयतों का हठ-पूर्वक इन्कार केवल इन्कार करने वाले लोग ही करते हैं।४८।

وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ

और इस (क़ुर्आन) के उतरने से पहले तू कोई किताब नहीं पढ़ता था, न लोगों को सुनाता

إِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٤٨﴾

था और न उसे अपने दाहिने हाथ से लिखता था। यदि ऐसा होता तो झुठलाने वाले सन्देह में पड़ जाते।४९।

بَلْ هُوَ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الظَّالِمُونَ ﴿٤٩﴾

परन्तु यह (क़ुर्आन) तो खुले-खुले निशान हैं उन लोगों के दिलों[1] में जिन्हें ज्ञान दिया गया है और हमारे निशानों का इन्कार अत्याचारी लोगों के सिवा कोई नहीं करता।५०।

وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٠﴾

और वे कहते हैं कि इस के रब्ब की ओर से क्यों इस पर कोई निशान नहीं उतरे? कहो कि निशान तो अल्लाह के पास हैं (वह जब उन की आवश्यकता समझता है तो उतारता है) और मैं तो एक खुला-खुला प्रचेत करने वाला हूँ।५१।

أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرَىٰ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾ ع

क्या उन के लिए (यह निशान) काफ़ी न था कि हम ने तुझ पर एक कामिल किताब (क़ुर्आन) उतारी है जो उन्हें पढ़ कर सुनाई जाती है। इस बात में मोमिनों के लिए तो अति दयालुता एवं सदुपदेश का सामान है।५२। (रुकू ५/१)

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا ۖ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٥٢﴾

तू कह दे कि मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के रूप में निर्णय करने वाला अल्लाह ही काफ़ी है और जो कुछ आसमानों तथा ज़मीन में है वह उसे जानता है और जो लोग झूठ को अपनाते हैं और अल्लाह के आदेशों का इन्कार करते हैं वे ही घाटे मे पड़ने वाले हैं।५३।

1. अर्थात् यहूदियों में से मुसलमान लोगों के दिलों में।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَوْلَآ أَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ وَلَيَأْتِيَنَّهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ٥٣

और वे तुझ से अज़ाब के शीघ्र लाने की माँग करते हैं और यदि एक समय निश्चित न हो चुका होता तो अज़ाब उन के पास आ जाता और अब भी वह उन के पास अवश्य ही अचानक आ जाएगा, ऐसी दशा में कि वे जानते भी न होंगे।५४।

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ٥٤

और वे तुझ से अज़ाव के शीघ्र लाने की माँग करते हैं[1] और निस्सन्देह नरक इन्कार करने वालों का सर्वनाश करने वाला है।५५।

يَوْمَ يَغْشَاهُمُ الْعَذَابُ مِن فَوْقِهِمْ وَمِن تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ٥٥

जिस दिन इन्कार करने वालों को नरक का अज़ाव ऊपर से भी ढाँप लेगा तथा उन के पैरों के नीचे से निकल कर भी घेर लेगा, फिर अल्लाह कहेगा कि अपने कर्मों का फल चखो।५६।

يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضِي وَاسِعَةٌ فَإِيَّايَ فَاعْبُدُونِ ٥٦

हे मेरे मोमिन बन्दो! मेरी धरती बहुत विस्तृत है। इसलिए मेरी ही उपासना करो।५७।

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ٥٧

प्रत्येक जीवधारी मौत का स्वाद चखने वाला है फिर तुम सब को हमारी ओर ही लौटाया जाएगा।५८।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُم مِّنَ

और वे लोग जो ईमान लाते हैं और उस के अनुकूल कर्म भी करते हैं हम उन्हें स्वर्ग

---

1. एक मांग को लगातार आगे-पीछे वर्णन करने से स्पष्ट है कि एक माँग सांसारिक अज़ाव से सम्बन्धित है तथा दूसरी माँग आख़िरत के अज़ाब से सम्बन्ध रखती है। एक माँग से यह अभिप्राय है कि तेरी भविष्यवाणियों के अनुसार संसार में क्यों अज़ाव नहीं आ जाता तथा दूसरी माँग से यह अभिप्राय है कि तेरा विरोध करने के कारण हम क्यों नहीं मर जाते और नरक में क्यों नहीं चले जाते। यहाँ दूसरी माँग के पश्चात् नरक का भी वर्णन है जो पहली माँग में नहीं।

الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا نِعْمَ أَجْرُ الْعٰمِلِينَ ﴿٥٩﴾

में चौबारों में स्थान देंगे (ऐसे स्वर्ग में) जिस (की छाया) में नहरें बहती होंगी। वे उन स्वर्ग धामों में सदैव के लिए निवास करते चले जाएँगे और शुभ-कर्म करने वालों का प्रतिफल बहुत अच्छा होता है।५९।

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٦٠﴾

उन (मोमिनों) का जो (अपने मंतव्य और कर्म पर) जमे रहते हैं तथा अपने रब्ब पर भरोसा करते हैं।६०।

وَكَأَيِّن مِّن دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾

इस संसार में बहुत से जीव-जन्तु ऐसे भी हैं जो अपने साथ (मनुष्यों की भाँति) अपनी अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते। अल्लाह ही उन्हें रोज़ी प्रदान करता है तथा तुम्हें[1] भी और वह प्रार्थनाओं को बहुत सुनने वाला और परिस्थितियों को अच्छी तरह जानने वाला है।६१।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنّٰى يُؤْفَكُونَ ﴿٦٢﴾

और यदि तू उन लोगों से पूछे कि आसमानों तथा ज़मीन की रचना किस ने की है और सूर्य तथा चन्द्रमा को (बिना किसी वेतन और मज़दूरी के) किस ने मानव-समाज की सेवा में लगा रखा है? तो वे कहेंगे अल्लाह ने। (फिर जब वह यह बात जानते हैं) तो वे किधर को बहकाए जा रहे हैं।६२।

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ

अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रोज़ी बढ़ा देता है और जिस के

1. अर्थात् साधारण रूप में हर-एक मनुष्य कमाई कर के आजीविका पैदा करता है, परन्तु जीव-जन्तु और पशु आदि बारीक कीड़े, घास और पत्ते खा कर जीवन निर्वाह करते हैं। अतः जीवधारियों के लिए जीविका का प्रबन्ध करना सिद्ध करता है कि मनुष्य के लिए जीविका का प्रबन्ध अल्लाह ही कर रहा है तथा मनुष्य की कमाई केवल एक पर्दा है।

لَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۶۲﴾

लिए चाहता है तंग कर देता है। अल्लाह निस्सन्देह प्रत्येक वस्तु को अच्छी तरह जानता है।६३।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْیَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَیَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا یَعْقِلُوْنَ ﴿۶۳﴾

और यदि तू उन से पूछे कि बादलों से किस ने पानी उतारा है, फिर उस के द्वारा धरती को उस के मरने के बाद किस ने जीवित किया है? तो वे कहेंगे कि निस्सन्देह अल्लाह ने। तू कह दे कि सब स्तुति अल्लाह ही के लिए है, किन्तु इन (मानव-समाज) में से बहुत से लोग समझते नहीं।६४। (रुकू ६/२)

وَمَا هٰذِهِ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ؕ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِیَ الْحَیَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا یَعْلَمُوْنَ ﴿۶۴﴾

और यह सांसारिक-जीवन केवल एक भ्रम एवं खेल का सामान है तथा परलोक के जीवन का घर ही वास्तव में असली जीवन का घर कहला सकता है। काश! वे लोग जानते।६५।

فَاِذَا رَكِبُوْا فِی الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ یُشْرِكُوْنَ ﴿۶۵﴾

और जब वे लोग नौका में सवार होते हैं तो अपनी श्रद्धा को केवल अल्लाह के लिए विशिष्ट कर के उस से प्रार्थना करते हैं, किन्तु जब वह उन्हें बचा कर भू-स्थल की ओर पहुँचा देता है, तो वे अचानक फिर शिर्क करने लग जाते हैं।६६।

لِیَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَیْنٰهُمْ ۚ وَلِیَتَمَتَّعُوْا ۫

ताकि हम ने जो कुछ उन्हें दिया है उस का इन्कार कर दें (और इस इनाम को अल्लाह के सिवा दूसरे साझियों के लिए मनोनीत कर दें) तथा इस (अस्थायी तौवः) का परिणाम यह होता है कि (अल्लाह उन्हें छोड़ देता है और) वे एक समय तक सांसारिक सामानों से लाभ उठाते हैं। सो (एक दिन यह इनाम

فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝٦٧

समाप्त कर दिया जाएगा और) वे (अपने असली प्रतिफल को) देख लेंगे ।६७।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ۝٦٨

क्या उन्हें ज्ञात नहीं कि हम ने हरम (अर्थात् मक्का) को शान्ति का स्थान बना दिया है और इन लोगों के आस-पास (अर्थात् मक्का के बाहर) से लोग उचक लिए जाते हैं। तो क्या वे झूठ पर तो ईमान लाते हैं और अल्लाह की निअमत का इन्कार करते हैं ।६८।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاۗءَهٗ ۭ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝٦٩

और जो व्यक्ति अल्लाह पर झूठ[1] गढ़े उस से बढ़ कर दूसरा कौन अत्याचारी हो सकता है या (उस व्यक्ति से बढ़ कर) जो सच्ची बात को ऐसे समय झुठलाता है जब कि वह उस के पास आ जाती है? क्या ऐसे इन्कार करने वालों का स्थान नरक में नहीं होना चाहिए? ।६९।

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٧٠ ع

और वे लोग जो हम से मिलने का प्रयास करते हैं हम अवश्य ही उन्हें अपने रास्तों की ओर आने का सामर्थ्य प्रदान करेंगे और निस्सन्देह अल्लाह उपकार करने वालों के साथ है ।७०। (रुकू ७/३)

1. मूल शब्द 'इफ़्तरा' का अर्थ है —

(क) जान-बूझ कर झूठ बोलना, मानों बात तो सच्ची हो, परन्तु उसे जिस से सम्बन्धित किया जाए उस ने वह बात न कही हो।

(ख) बात भी झूठी हो तथा कहने वाले ने भी न कही हो।
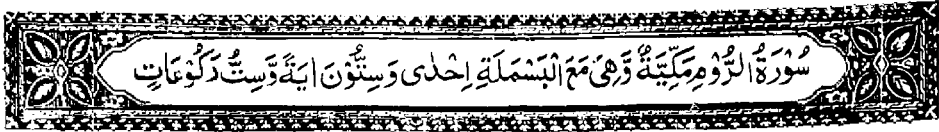
सूरः अल्-रूम

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की इकसठ आयतें एवं छः रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

الٓمّٓ ②

आलिफ़, लाम, मीम[1]। (मैं अल्लाह सब से अधिक जानने वाला हूँ)।२।

غُلِبَتِ الرُّوْمُ ③

रूमी लोग (अर्थात् क़ैसर के साथी) निकटवर्ती क्षेत्र में परास्त[2] हो गए।३।

---

1. विवरण के लिए देखिए सूरः बक़रः टिप्पणी आयत 2)।

2. इस आयत का दो प्रकार से उच्चारण हुआ है। अतएव उच्चारण के अनुसार इस के दो अर्थ हैं-

(क) कि रूमी लोग हिजाज़ के निकटवर्ती क्षेत्र में किस्रा (ईरान) से परास्त हो गए हैं, किन्तु परास्त होने के उपरान्त वे शीघ्र ही पुनः शक्ति प्राप्त कर लेंगे तथा किस्रा को पराजित कर देंगे। चूनाँचे ऐसा हुआ कि यह भविष्यवाणी पूरी हो गई और पहले तो रूमियों की हार हुई, परन्तु फिर रूमियों ने ईरानियों को परास्त कर दिया और यह सूचना बद्र नामक युद्ध के अवसर पर मुसलमानों को मिली और इस प्रकार ये शब्द पूरे हुए कि उस दिन मुसलमान अल्लाह की सहायता के कारण प्रसन्न हो रहे होंगे।

(ख) आयत के दूसरे उच्चारण के अनुसार इस का यह अर्थ होगा कि रूमी ईरानियों से निकटवर्ती क्षेत्र में पराजित हो गए, किन्तु इस पराजय के पश्चात् वे एक बार फिर विजय प्राप्त करेंगे तथा इस

(शेष पृष्ठ ८८० पर)

فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ۝

और वे पराजित होने के पश्चात् फिर कुछ ही वर्षों में दोबारा विजयी हो जाएँगे ।४।

فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ؕ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ؕ وَيَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝

इस घटना से पहले भी अल्लाह का शासन होगा और बाद में भी (उसी का शासन होगा) तथा उस दिन मोमिन लोग अल्लाह की सहायता से बहुत प्रसन्न होंगे ।५।

بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝

अल्लाह जिसे पसन्द करता है उस की सहायता करता है और वह प्रभुत्वशाली तथा बार-बार दया करने वाला है ।६।

وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

अल्लाह की प्रतिज्ञा (को भली-भाँति याद रखो और) अल्लाह अपनी प्रतिज्ञा को कभी झूठा नहीं करता, परन्तु बहुत से लोग इस बात को नहीं समझते ।७।

يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ۝

वे लोग सांसारिक जीवन के ज़ाहिर (अर्थात् उस की भव्यता) को तो भली-भाँति समझते हैं, परन्तु आख़िरत के जीवन से बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं ।८।

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۫ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ

क्या उन्हों ने अपने दिल में कभी यह विचार नहीं किया कि आसमानों तथा ज़मीन और

(पृष्ठ ८७९ का शेष)

विजय के उपरान्त वे एक और जाति (मुसलमानों) से भयंकर हार खाएँगे जैसा कि हज़रत उमर के समय में हुआ । पाँचवीं बार यह भविष्यवाणी प्रसिद्ध विजेता सुल्तान मुहम्मद के समय में पूरी हुई अर्थात् पहले तो जब तक मुसलमान भू-स्थल की ओर से आक्रमण करते रहे क़ुस्तुन्तुनिया का राजा विजयी होता रहा परन्तु जब सुल्तान मुहम्मद ने समुद्री बेड़े से क़ुस्तुन्तुनिया पर आक्रमण किया तो उस समय अल्लाह ने मुसलमानों को विजय प्रदान की तथा उन्हों ने क़ुस्तुन्तुनिया में प्रवेश किया और वे उस पर लगभग एक हज़ार वर्ष से अधिकार जमाए हुए हैं ।

وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ⑨

जो कुछ उन के बीच है, अल्लाह ने उसे किसी हिक्मत के अनुकूल और एक निश्चित समय के लिए पैदा किया है, किन्तु बहुत से लोग अपने रब्ब से मिलने के इन्कारी हैं।९।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ⑩ؕ

क्या वे धरती में घूमे-फिरे नहीं और उन्हों ने यह नहीं देखा कि जो लोग उन से पहले थे उन का क्या परिणाम निकला ? वे तो उन से अधिक शक्तिशाली थे और उन्हों ने धरती को खूब उखेड़ा (अर्थात् हल चलाया) था और उसे इस से अधिक आबाद किया था जितना इन्हों ने किया तथा उनके रसूल उन के पास खुले प्रमाण ले कर आए थे, क्योंकि यह अल्लाह की शान के ख़िलाफ़ था कि वह उन पर अत्याचार करता, अपितु वे लोग स्वयं ही अपने-आप पर अत्याचार कर रहे थे।१०।

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْٓآٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑪ؑ

फिर उन लोगों का परिणाम बुरा ही निकला जिन्हों ने बुरे कर्म किए थे और अल्लाह की आयतों का इन्कार किया था तथा वे अल्लाह की आयतों की हँसी उड़ाया करते थे।११। (रुकू १/४)

اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ⑫

अल्लाह संसार की उत्पत्ति को आरम्भ भी करता है और फिर इस क्रम को दोहराता भी रहता है। फिर तुम सब उसी की ओर लौटा कर ले जाए जाओगे।१२।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ⑬

और जिस दिन क़ियामत आएगी तो अपराधी लोग निराश हो जाएँगे।१३।

وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ⑬

और जिन्हें वे अल्लाह का साझी ठहराते थे उन में से कोई भी उन का सिफ़ारिशी न बनेगा तथा वे अपने मनगढ़त साझियों का इन्कार कर देंगे।१४।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ⑮

और जिस दिन क़ियामत आ जाएगी उस दिन सारे (मुश्रिक) अलग-अलग हो जाएँगे।१५।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ⑯

फिर वे लोग जो ईमान लाए और जिन्हों ने अपने ईमान के अनुकूल कर्म भी किए उन्हें भव्यशाली बाग़ों में प्रसन्नता पहुँचाई जाएगी।१६।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ⑰

और वे लोग जिन्हों ने न माना और हमारी आयतों का और आख़िरत के जीवन के मिलाप का इन्कार किया, वे अज़ाब के सामने लाए जाएँगे।१७।

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ⑱

अतः तुम सायंकाल एवं प्रातःकाल अल्लाह की स्तुति किया करो।१८।

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ⑲

और आसमानों तथा ज़मीन में उसी की स्तुति की जाती है तथा दोपहर के बाद (तीसरे पहर) भी उस की स्तुति करो और ठीक दोपहर (ज़ुहर) के समय भी।१९।

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ⑳ ع

वह सजीव को निर्जीव से निकालता है और निर्जीव को सजीव से निकालता है और धरती को उस के मरने के पश्चात् जीवित करता है तथा इसी प्रकार तुम भी निकाले जाओगे।२०। (रुकू २/५)

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢١﴾

और उस के निशानों में से एक निशान यह भी है कि उस ने तुम्हें मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर इस उत्पत्ति के नतीजे में तुम मनुष्य बन जाते हो और (सारी धरती पर) फैल जाते हो।२१।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٢﴾

और उस के निशानों में से एक निशान यह भी है कि उस ने तुम्हारी ही जाति में से तुम्हारे लिए जोड़े बनाए हैं ताकि तुम उन की ओर (प्रवृत हो कर) सन्तुष्टि प्राप्त करो और तुम्हारे बीच प्रेम और दया-भाव पैदा किए हैं। इस में सोच विचार करने वाली जाति के लोगों के लिए बड़े-बड़े निशान है।२२।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٣﴾

और उस के निशानों में से आसमानों तथा ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी भाषाओं और तुम्हारे रंगों में विभिन्नता भी (शामिल) है। इस में सोच-विचार करने वालों के लिए बड़े-बड़े निशान हैं।२३।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاۗؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٤﴾

और उस के निशानों में से रात तथा दिन के समय तुम्हारा सोना और उस की कृपा को प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना भी (शामिल) है। इस में सुनने वाली जाति के लिए बड़े-बड़े निशान हैं।२४।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٥﴾

और उस के निशानों में से यह भी है कि वह तुम्हें डराने और आशा दिलाने के लिए बिजली की चमक दिखाता है और बादलों से पानी उतारता है, फिर उस पानी के द्वारा धरती को उस के मरने के बाद जीवित करता है। इस में बुद्धिमानों के लिए बड़े-बड़े निशान हैं।२५।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ۭ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ڰ مِّنَ الْاَرْضِ ڰ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ۝

और उस के निशानों में से आसमानों तथा ज़मीन का उस के आदेश से खड़ा रहना भी है। फिर (उस का यह निशान भी प्रकट होगा कि) जब वह तुम्हें धरती से निकलने के लिए एक आवाज़ देगा तो तुम अचानक धरती में से निकलने लगोगे।२६।

وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ۝

और आसमानों तथा ज़मीन में निवास करने वाले सभी उस के आज्ञाकारी हैं।२७।

وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ۭ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ ع

और वह संसार की उत्पत्ति को आरम्भ भी करता है और फिर उसे बार-बार दोहराता रहता है और यह बात उस के लिए अति सुगम है और आसमान तथा ज़मीन में उसी की शान सब से बड़ी है और वह ग़ालिब और हिक्मत वाला है।२८। (रुकू ३/६)

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ۭ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاۗءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَاۗءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ

उस ने तुम्हारे समझाने के लिए तुम्हारी ही जाति की एक उपमा दी है (जो यह है कि) जिन लोगों के स्वामी तुम्हारे दाहिने हाथ होते हैं क्या उन में से कोई उस (धन-सम्पत्ति) में जो हम ने तुम्हें दिया है तुम्हारा बराबर का हिस्सेदार भी होता है? इस प्रकार कि तुम सब (स्वामी व दास) उस (धन-सम्पत्ति) में एक जैसे बराबर के हिस्सेदार हो जाते हो और उन दासों से इस प्रकार डरते हो जिस प्रकार तुम अपने'-

1. अर्थात् जिस प्रकार तुम उन को धन सौंपने से पहले अपने धन के स्वामी थे और जितना चाहते थे अपने लिए ख़र्च कर सकते थे, क्या तुम अपने दासों को इतना अधिकार भी दिया करते हो कि (शेष पृष्ठ ८८५ पर)

نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٢٨

आप से डरते हो। इसी तरह हम बुद्धिमान जाति के लिए निशान खोल-खोल कर वर्णन करते हैं।२८।

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ۭ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝٢٩

अपितु (वास्तविकता यह है कि) अत्याचारी लोग बिना ज्ञान के अपनी वासनाओं का अनुसरण करते हैं तथा जिसे अल्लाह पथ-भ्रष्ट ठहराए उसे कौन हिदायत दे सकता है और ऐसे लोगों का कोई सहायक नहीं होगा।३०।

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۭ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۭ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ڎ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٠

अतः तू अपना सारा ध्यान धर्म में लगा दे, इस प्रकार कि तुम में कोई टेढ़ापन न हो। तू अल्लाह के पैदा किए हुए प्राकृतिक स्वभाव[1] को अपना, (वह प्राकृतिक स्वभाव) जो अल्लाह ने लोगों में पैदा किया है। अल्लाह की रचना में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। यही क़ायम रहने वाला धर्म है, किन्तु बहुत से लोग जानते नहीं।३१।

مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝٣١

अतः तुम सब उस (अल्लाह) की ओर झुकते हुए स्वभाविक और प्राकृतिक धर्म ग्रहण करो तथा उस के लिए संयम धारण करो और नमाज़ को विधिवत पूरा किया करो तथा मुश्रिकों में से मत बनो।३२।

(पृष्ठ ८८४ का शेष)

जिस के फलस्वरूप तुम उन से डरने लगो कि क्या पता ये हमें खाने को भी कुछ देंगे या नहीं और धन-सम्पत्ति पर तुम्हारे अधिकार की कोई निशानी बाकी न रहती हो।

1. जो सहज स्वभाव अल्लाह ने मनुष्य में पैदा किया है वह सदैव क़ायम रहेगा, उसे कोई भी बदल नहीं सकता।

مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ۚ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝

अर्थात् उन (मुश्रिक लोगों) में से (मत बनो) जिन्हों ने अपने धर्म को तितर-बितर कर दिया और (धर्म को टुकड़े-टुकड़े कर के) विभिन्न गिरोहों में बट गए और हर गिरोह यह विचार कर के प्रसन्न है कि जो टुकड़ा उस ने लिया है वही सब से अच्छा है।३३।

وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۝

और जब मनुष्यों को कोई कष्ट पहुँचे तो वे अपने रब्ब की ओर झुकते हुए उसे पुकारते हैं, फिर जब उन्हें उस की ओर से कोई दयालुता पहुँचती है तो उन में से एक गिरोह अपने रब्ब के मुक़ाबिले में साझी बनाने लग जाता है।३४।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوْا ۗ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝

जिस का परिणाम यह होता है कि जो कुछ हम ने उन्हें दिया है वे कार्य-रूप में उस का इन्कार करने लग जाते हैं (तब उन से कहा जाता है कि) तुम जो लाभ संसार से उठाना चाहते हो उठा लो, क्योंकि तुम शीघ्र ही अपना परिणाम देख लोगे।३५।

اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ۝

क्या हम ने उन के लिए (शिर्क के सम्बन्ध में) कोई प्रमाण उतारा है जो उन्हें वह बात बताता है जो वे शिर्क को सिद्ध करने के लिए पेश करते हैं।३६।

1. मुश्रिक लोग चूँकि मूर्तियों, फ़रिश्तों, आत्माओं और मनुष्यों में से विभिन्न प्रकार के उपास्य बनाते हैं इसलिए वे कभी एक केन्द्र पर केन्द्रित नहीं हो सकते। हाँ! एक अल्लाह के मानने वाले ही एक केन्द्र पर इकट्ठे हो सकते हैं। जिस प्रकार वे लोग जो अपने-आप को भिन्न-भिन्न देशों के नागरिक कहें वे एकत्रित नहीं हो सकते। एकत्रित होने के लिए जरूरी है कि वे अपने-आप को एक ही देश का नागरिक ठहराएँ।

وَإِذَآ أَذَقْنَا ٱلنَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا۟ بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾

जब हम लोगों से दयालुता का व्यवहार करते हैं तो वे उस से प्रसन्न हो जाते हैं और यदि उन्हें उन के पहले कर्मों के कारण कोई कष्ट पहुँचे तो वे अचानक निराश हो जाते हैं ।३७।

أَوَلَمْ يَرَوْا۟ أَنَّ ٱللَّهَ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾

क्या उन्हों ने नहीं देखा कि अल्लाह् जिस के लिए पसन्द करता है उस की रोज़ी बढ़ा देता है तथा जिस के लिए चाहता है उस की रोज़ी तंग कर देता है। इस बात में ईमान लाने वाले लोगों के लिए बहुत से निशान हैं ।३८।

فَـَٔاتِ ذَا ٱلْقُرْبَىٰ حَقَّهُۥ وَٱلْمِسْكِينَ وَٱبْنَ ٱلسَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ ٱللَّهِ ۖ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾

(हे क़ुर्आन पढ़ने वाले ! जब अल्लाह् तेरी रोज़ी बढ़ा दे तो) तुम्हें चाहिए कि नातेदारों, निर्धनों और यात्रियों को उन का हक़ दिया करो। यह बात उन लोगों के लिए बहुत अच्छी है जो अल्लाह् की प्रसन्नता पाना चाहते हैं तथा वही लोग सफलता पाने वाले हैं ।३९।

وَمَآ ءَاتَيْتُم مِّن رِّبًا لِّيَرْبُوَا۟ فِىٓ أَمْوَٰلِ ٱلنَّاسِ فَلَا يَرْبُوا۟ عِندَ ٱللَّهِ ۖ وَمَآ ءَاتَيْتُم مِّن زَكَوٰةٍ تُرِيدُونَ

और जो धन तुम ब्याज[1] लेने के लिए देते हो ताकि वह लोगों के धन-दौलत में बढ़े तो वह धन अल्लाह् के निकट नहीं बढ़ता

---

1. पवित्र क़ुर्आन के अनुसार ब्याज दो प्रकार का है-

(क) वह ब्याजी-कारोबार जो निर्धनों से मिल कर किया जाता है। इस से भी रोका गया है।

(ख) इस आयत में उस ब्याजी-कारोबार का उल्लेख है जो धनी लोगों से किया जाता है ताकि वे धनवान् उसे व्यापार आदि में लगाएँ ताकि इस प्रकार धन देने वाले का धन ब्याज से बढ़ता रहे।

कुछ मुसलमानों का यह विचार है कि धनवानों या कम्पनी वालों को रुपया ब्याज के लिए देना

(शेष पृष्ठ ८८६ पर)

وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ۝

और तुम जो कुछ अल्लाह की प्रसन्नता पाने के लिए ज़कात के रूप में देते हो तो याद रखो कि ऐसे लोग ही अल्लाह के निकट धन बढ़ा रहे हैं।४०।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ ع

अल्लाह वह है जिस ने तुम्हें पैदा किया है, फिर उस ने तुम्हें रोज़ी दी है, फिर वह तुम्हें मृत्यु देगा, फिर वह तुम्हें जीवित करेगा। क्या तुम्हारे (अपने बनाए हुए) साझियों में से भी कोई ऐसा है जो इस काम का कोई हिस्सा कर सकता हो? वह इन के शिर्क से पवित्र एवं ऊँची शान वाला है।४१। (रुकू ४/७)

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝

(इस युग में) थल एवं जल में लोगों के कर्मों के कारण बिगाड़ फैल गया है जिस का परिणाम यह निकलेगा कि अल्लाह लोगों को उन के कुछ कर्मों का दण्ड (इसी संसार में) देगा ताकि वह (अपने कुकर्मों से) रुक जाएँ।४२।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ۝

तू कह दे कि धरती (अर्थात् देश) में घूमो-फिरो और देखो कि जो लोग तुम से पहले थे उन का क्या परिणाम हुआ था। उन में से बहुत से मुश्रिक थे।४३।

(पृष्ठ ८८५ का शेष)

अथवा बैंक में ब्याज में रुपया लगाना इस्लाम में वर्जित नहीं है, किन्तु यह आयत बिल्कुल स्पष्ट करती है कि इस प्रकार का ब्याजी-कारोबार करना भी वर्जित है। पवित्र क़ुर्आन का उतारने वाला अल्लाह अन्तर्यामी परमब्रह्म है। यह पहले ही से जानता था कि एक समय आएगा कि मुसलमान ब्याज को वैध ठहराएंगे। अत: उस ने भविष्य में पैदा होने वाली शंकाओं का समाधान भी इसी आयत में कर दिया।

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَىٕذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾

अतः तू अपना ध्यान क़ायम रहने वाले धर्म की ओर फेर दे, उस दिन के आने से पहले कि जिसे टलाने के लिए अल्लाह की ओर से कोई उपाय नहीं उतरा। जिस दिन वे (ईमान लाने वाले और इन्कार करने वाले) एक-दूसरे से अलग-अलग हो जाएँगे[1] ।४४।

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾

जिस ने इन्कार किया उस के इन्कार करने की विपत्ति उसी पर पड़ेगी और जिस ने अपने ईमान के अनुकूल कर्म किए वह अपने भले के लिए ही तय्यारी कर रहा है ।४५।

لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ۗ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٥﴾

ताकि अल्लाह मोमिनों और अपने ईमान के अनुकूल कर्म करने वालों को अपनी कृपा से प्रतिफल प्रदान करे। निस्सन्देह वह इन्कार करने वालों से प्रेम नहीं करता ।४६।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٤٦﴾

और उस के चमत्कारों में से वायु को शुभ-समाचार देते हुए चलाना भी एक चमत्कार है तथा वह (अल्लाह) इसलिए ऐसा करता है कि तुम्हें अपनी दयालुता (का फल) चखाए और नौकाएं उस की आज्ञा से चलें और तुम उस की कृपा पा सको और तुम धन्यवादी बन जाओ ।४७।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ۗ وَكَانَ حَقًّا

और हम ने कई रसूल तुझ से पहले उन की जातियों की ओर भेजे थे। सो वे खुले-खुले चमत्कार ले कर उन के पास आए तथा हम ने अपराधियों से ठीक-ठीक प्रतिशोध लिया

1. अर्थात् मुसलमान विजयी होंगे और अपनी अनुशासन पद्धति चलाएँगे, जिस का वृत्तान्त सूरः तौबः में किया गया है।

عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٤٧

और मोमिनों की सहायता करना हमारा कर्त्तव्य है।४८।

اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝٤٨

अल्लाह वह है जो हवाओं को भेजता है, फिर वह हवाएँ बादल के रूप में भाप को उठाती हैं, फिर वह जैसे चाहता है उसे आकाश में फैला देता है तथा वह उसे टुकड़ियों[1] में बाँट देता है और तू वर्षा को देखता है कि वह उस (बादल) में से होती है, फिर जब अल्लाह उस बादल को अपने बन्दों में से जिस तक पहुँचाना पसन्द करे पहुँचा देता है तो वे अचानक प्रसन्न हो जाते हैं।४९।

وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ۝٥٠

यद्यपि वे इस (वर्षा) के उतरने से पहले बिल्कुल निराश हो गए थे।५०।

فَانْظُرْ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٥١

सो (हे सम्बोधित !) अल्लाह की दयालुता के निशान देख कि वह धरती को किस प्रकार उस के मरने के बाद जीवित करता है। यही अल्लाह है जो क़ियामत के दिन मुर्दों को जीवित करेगा तथा वह प्रत्येक बात के करने पर पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है।५१।

وَلَىِٕنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْ بَعْدِهٖ يَكْفُرُوْنَ ۝٥٢

और यदि हम हवा चलाएँ तथा ये लोग उस (खेती) को पीले रंग की देखें तो वे इस दृश्य को देखने के बाद (शिक्षा प्राप्त करने की अपेक्षा) कृतघ्न बन जाएँगे।५२।

فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝٥٣

(अतः तू उन्हें ऐसा करने दे) क्योंकि न तो तू मुर्दों को सुना सकता है तथा न बहरों को उस समय सुना सकता है जब कि वे पीठ फेर कर लौट जाएँ।५३।

---

1. बादल को अनेक टुकड़ियों में बाँट देता है ताकि लम्बे-चौड़े क्षेत्र की सिंचाई हो सके।

وَمَآ اَنۡتَ بِهٰدِ الۡعُمۡىِ عَنۡ ضَلٰلَتِهِمۡ‌ؕ اِنۡ تُسۡمِعُ اِلَّا مَنۡ يُّؤۡمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمۡ مُّسۡلِمُوۡنَ ۝

और न तू अन्धों को उन की पथभ्रष्टता से हटा कर सीधी राह पर ला सकता है। तू तो केवल उन्हीं को सुना सकता है जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं और वे आज्ञाकारी बन जाते हैं।५४। (रुकू ५/८)

اَللّٰهُ الَّذِىۡ خَلَقَكُمۡ مِّنۡ ضُعۡفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنۡۢ بَعۡدِ ضُعۡفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنۡۢ بَعۡدِ قُوَّةٍ ضُعۡفًا وَّشَيۡبَةً‌ ؕ يَخۡلُقُ مَا يَشَآءُ‌ ۚ وَهُوَ الۡعَلِيۡمُ الۡقَدِيۡرُ ۝

अल्लाह वही है जिस ने तुम्हें इस हालत में पैदा किया कि तुम्हारे अन्दर निर्बलता पाई जाती थी, फिर उस ने निर्बलता के बाद शक्ति प्रदान की। इस शक्ति के बाद निर्बलता तथा बुढ़ापा दिया और वह जो कुछ चाहता है पैदा करता है और वह बहुत ज्ञान वाला और सामर्थ्यवान है।५५।

وَيَوۡمَ تَقُوۡمُ السَّاعَةُ يُقۡسِمُ الۡمُجۡرِمُوۡنَ ۙ مَا لَبِثُوۡا غَيۡرَ سَاعَةٍ‌ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوۡا يُؤۡفَكُوۡنَ ۝

और जिस दिन निश्चित समय आ जाएगा तो अपराधी लोग सौगन्ध खाएँगे कि वे कुछ क्षणों के सिवा[1] (संसार में) नहीं रहे। वे इसी प्रकार बहकी-बहकी बातें बनाते हैं।५६।

وَقَالَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ وَالۡاِيۡمَانَ لَقَدۡ لَبِثۡتُمۡ فِىۡ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوۡمِ الۡبَعۡثِ‌ فَهٰذَا يَوۡمُ الۡبَعۡثِ وَ

और वे लोग कहेंगे जिन्हें ज्ञान एवं ईमान प्रदान किया गया है कि तुम अल्लाह के लेखे के अनुसार उस दिन तक ठहरे रहे हो जो तुम्हारे फिर से उभरने[2] के लिए निश्चित था

1. यहाँ ईसाइयों की उस दशा की ओर संकेत किया गया है जो इटली देश में ईसाइयों के फैल जाने के पश्चात् हुई थी। उस समय वे उस दुःख भरे दौर से गुज़र चुके थे जो कहफ़ नामक साथियों के समय में उन पर बीता था जिस के उपरान्त कुछ समय तक उन्हें उन्नति प्राप्त हुई थी, किन्तु इस्लाम धर्म की प्रगति के समय वे फिर गिरे और फिर इस्लाम के उन्नति काल में उन पर पतन का जो दौर आया तो उसे याद कर के वे खेद प्रकट करने लगे कि हमें भोग-विलास के लिए बहुत ही कम समय मिला, अधिक समय कष्टों में ही बीता।

2. इस आयत के शब्द बताते हैं कि यह संसार में जातीय-उत्थान का वर्णन है न कि परलोक में पुनर्जीवन का।

لٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۝

तथा (याद रखो कि) यही फिर से उभरने[1] का दिन है, किन्तु तुम जानते नहीं ।५७।

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ۝

अतः आज अत्याचारियों को उन का कोई बहाना लाभ नहीं देगा और न ही उन्हें क्षमा कर के ड्योढ़ी तक आने का अवसर दिया जाएगा ।५८।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۭ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ۝

और हम ने इस क़ुर्आन में सब सच्चाइयाँ खोल-खोल कर वर्णन कर दी हैं और यदि तू उन के पास कोई निशान लाए तो इन्कार करने वाले लोग अवश्य कहेंगे कि तुम लोग तो केवल झूठी बातें करने वाले हो ।५९।

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰي قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ۝

इसी तरह अल्लाह अज्ञानी लोगों के दिलों पर मुहर[2] लगा देता है ।६०।

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ۝

सो (हे क़ुर्आन के सम्बोधित !) धैर्य से (अपने ईमान पर) क़ायम रह । अल्लाह की प्रतिज्ञा अवश्य पूरी हो कर रहेगी और चाहिए कि जो लोग विश्वास नहीं रखते वे तुझे छल-कपट से (तेरे स्थान से) हटा न दें ।६१। (रुकू ६/९)

---

1. इस आयत में बताया गया है कि तुम भूल में हो । इस्लाम की प्रगति के युग में तुम्हारा अन्तिम विनाश नहीं होगा, अपितु तुम्हारा अन्तिम विनाश इस्लाम के पुनरुत्थान के समय होगा , जब तुम्हारा वह सर्वनाश होगा तो फिर तुम अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दि की तरह शान से नहीं उठ सकोगे ।

2. इस आयत से पता चलता है कि अल्लाह किसी के दिल पर अकारण मुहर नहीं लगाता। पहले तो मनुष्य झूठ के पीछे चलना प्रारम्भ करता है, फिर एक समय बीतने पर जब कि वह बुरे कर्मों को अच्छा समझने लगता है तो उस के दिल पर मुहर लग जाती है ।
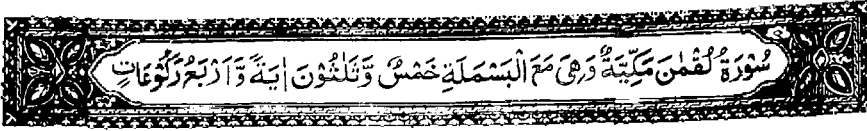
सूर: लुक़मान

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह् सहित इस की पैंतीस आयतें एवं चार रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह् का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

الٓمّٓ ②

अलिफ़, लाम, मीम[1] (मैं अल्लाह् सब से अधिक जानने वाला हूँ)।२।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ③

ये (इस सूर: की आयतें) उस कामिल किताब की आयतें हैं जो बड़ी हिक्मतों वाली है।३।

هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ④

और अपने कर्त्तव्य को ठीक ढंग से करने वाले लोगों के लिए हिदायत और दयालुता का साधन है।४।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ⑤

वे लोग जो नमाज़ को विधिवत पूरा करते हैं तथा (निर्धनों और अनाथों के लिए) ज़कात देते रहते हैं तथा आख़िरत के जीवन पर विश्वास रखते हैं।५।

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ⑥

ये लोग अपने रब्ब की ओर से आने वाली हिदायत पर दृढ़ता से क़ायम हैं एवं ऐसे लोग ही (प्रत्येक क्षेत्र में) सफल होंगे।६।

---

1. विवरण के लिए देखिए सूर: बक़र: टिप्पणी आयत 2।

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِىْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّ يَتَّخِذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝

और लोगों में से कुछ ऐसे हैं जो (अपना धन नष्ट कर के) मनोरंजन की बातें अपनाते रहते हैं ताकि बिना ज्ञान के लोगों को अल्लाह की राह से रोकें और उस (अर्थात् अल्लाह की राह) को हँसी की चीज़ बना लेते हैं। इन लोगों के लिए अपमान-जनक अज़ाब होगा।७।

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِىْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝

और जब ऐसे व्यक्ति के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वह अभिमान करते हुए अपनी पीठ फेर लेता है, मानों उस ने उन्हें सुना ही नहीं। (वह यहाँ तक बेपरवाही से काम लेता है) मानों उस के कानों में बहरापन है। अतः तू उसे एक पीड़ादायक अज़ाब की सूचना दे दे।८।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ۝

निस्सन्देह वे लोग जो ईमान लाए और जिन्हों ने उस के अनुकूल कर्म किए उन्हें निअमतों वाले बाग़ मिलेंगे।९।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

जिन में वे निवास करते चले जाएँगे। यह अल्लाह का किया हुआ पक्का वादा है और वह ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है।१०।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ؕ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝

उस ने आसमानों को बिना स्तम्भों के पैदा किया है जैसा कि तुम देखते हो और ज़मीन में पहाड़ इसलिए डाल रखे हैं कि वह तुम्हें ले कर भयंकर भूकम्प में न पड़ जाए तथा उस में प्रत्येक प्रकार के जीव-जन्तु फैलाए और बादलों से पानी उतारा है, फिर उस में प्रत्येक प्रकार के उत्तम जोड़े पैदा किए हैं।११।

هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۱﴾
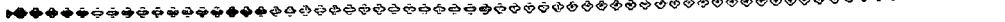
यह अल्लाह की मख़्लूक़ है। अतः तुम मुझे दिखलाओ कि उस के सिवा जिन को तुम उस के साझी ठहराते हो उन्हों ने क्या पैदा किया है? (कुछ भी नहीं) बल्कि सच यह है कि अत्याचारी लोग खुली-खुली पथभ्रष्टता में हैं।१२। (रुकू १/१०)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۱۲﴾

और हम ने लुक़मान को हिक्मत दी थी और कहा था कि अल्लाह का धन्यवाद कर तथा जो व्यक्ति भी धन्यवाद करता है उस के धन्यवाद का लाभ उसी को पहुँचता है तथा जो व्यक्ति कृतघ्नता प्रकट करता है (उसे याद रखना चाहिए कि) अल्लाह किसी प्रकार के धन्यवाद का मुहताज नहीं और वह बड़ी स्तुति वाला है।१३।

وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۳﴾

और (याद करो) जब लुक़मान ने अपने पुत्र को उपदेश देते हुए कहा कि हे मेरे पुत्र! किसी को अल्लाह का साझी मत ठहरा, क्योंकि शिर्क निश्चय ही बहुत बड़ा अत्याचार है।१४।

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ

और हम ने यह कहते हुए कि मेरा और अपने माता-पिता का धन्यवाद कर, मनुष्य को अपने माता-पिता के बारे में (उपकार करने का) ताक़ीद से आदेश दिया था और उस की माता ने उसे कमज़ोरी के (एक दौर के) बाद कमज़ोरी (के दूसरे दौर) में उठाया था और उस का दूध छुड़ाना दो वर्ष[1] की अवधि में

1. सूरः 'अहक़ाफ़' आयत 16 में कहा गया है कि बच्चे का गर्भाशय मे रहना और दूध छुड़ाना (शेष पृष्ठ ८९४ पर)

إِلَيَّ الْمَصِيرُ ⑮

था। (याद रखो कि तुझे) मेरी ओर ही लौट कर आना होगा।१५।

وَإِنْ جَاهَدَاكَ عَلَىٰٓ أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا وَاتَّبِعْ سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ إِلَيَّ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑯
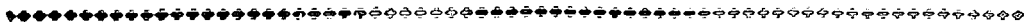
और यदि वे दोनों तुझ से वाद-विवाद करें कि तू किसी को मेरा साझी ठहरा ले जिस का तुझे कोई भी ज्ञान नहीं, तो तू उन दोनों का कहना न मान। हाँ! संसार सम्बन्धी बातों में उन से अच्छा बरताव कर तथा उस व्यक्ति के पीछे चल जो मेरी ओर झुकता है और तुम सब मेरी ओर ही लौटोगे। उस समय मैं तुम्हारे वह कर्म तुम्हें बता दूँगा जो तुम करते रहे हो।१६।

يَٰبُنَيَّ إِنَّهَآ إِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمَٰوَٰتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ⑰

(लुक़मान ने कहा कि) हे मेरे पुत्र! बात यह है कि यदि कोई कर्म राई के एक दाने के बराबर भी हो और वह (कर्म किसी) पत्थर में या आसमानों में अथवा ज़मीन में छिपा हुआ हो तो भी अल्लाह उसे ज़ाहिर कर देगा। अल्लाह अति सूक्ष्म और छिपे हुए भेदों को पा लेने वाला और बहुत ख़बर रखने वाला है।१७।

يَٰبُنَيَّ أَقِمِ الصَّلَوٰةَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَآ أَصَابَكَ إِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ

हे मेरे पुत्र! नमाज़ को (विधिवत) क़ायम रख और भली बातों के करने की आज्ञा देता रह तथा बुरी बातों से रोकता रह और जो (कष्ट) तुझे पहुँचे उस पर धैर्य धारण कर।

(पृष्ठ ८९३ का शेष)

तीस महीनों में पूरा होता है, किन्तु यहाँ दो वर्ष कहा गया है। इस का कारण यह है कि कई बच्चे शीघ्र पैदा हो जाते हैं तथा निर्बल होते हैं और कुछ अधिक दिनों में जन्म लेते है और सुदृढ़ होते हैं। दूसरी आयत में बताया गया है कि जब बच्चा निर्बल हो एवं शीघ्र जन्म ले ले तो उस के दूध पिलाने की अवधि लम्बी कर दी जाए ताकि वह परिपुष्ट हो जाए।

عَزْمِ الْاُمُوْرِ ⑱

निस्सन्देह यह बात बड़े साहस वाले कामों में से है ।१८।

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ⑲

और अपने गाल लोगों के सामने (क्रोध से) मत फुला तथा धरती में अभिमान से मत चल । निस्सन्देह अल्लाह किसी भी अहंकारी और शेख़ी बघारने वाले से प्रेम नहीं करता ।१९।

وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ۚ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ⑳

और दरमियानी चाल चल तथा अपनी आवाज़ को भी धीमी रख, क्योंकि आवाजों में से अधिक घिनौनी आवाज़ गदहे की आवाज है (जो बहुत ऊँची होती है) ।२०। (रुकू २/११)

اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ۗ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ㉑

क्या तुम लोगों ने नहीं देखा कि जो कुछ आसमानों तथा ज़मीन में है उसे अल्लाह ने तुम्हारी सेवा में लगा रखा है और तुम पर अपनी निअमतें चाहे वे ज़ाहिर हों अथवा छिपी हों पानी की तरह बहा दी हैं तथा लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो बिना ज्ञान, बिना हिदायत और बिना किसी रोशन किताब के प्रमाण के अल्लाह के बारे में विवाद करते हैं ।२१।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ۚ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ㉒

और जब उन्हें कहा जाता है कि जो कुछ अल्लाह ने उतारा है उस का अनुसरण करो तो वे कहते हैं कि नहीं, हम तो उसी का अनुसरण करेंगे जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है । क्या यदि शैतान (उन के पूर्वजों के द्वारा) उन्हें नरक के अज़ाब की ओर बुला रहा हो ? (तब भी वे ऐसा करेंगे) ।२२।

وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝

और जो व्यक्ति अपना ध्यान अल्लाह की ओर फेर देता है तथा वह अपने कर्म करने में भी पूरा-पूरा सावधान रहता है, तो वह ऐसा है कि मानों उस ने एक ठोस कड़े को पकड़ लिया है तथा समस्त कामों का परिणाम अल्लाह के हाथों में है।२३।

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ۗ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

और जो लोग इन्कार करें उन का इन्कार तुझे दुःखी न करे। उन्हें अन्ततः हमारी ओर ही लौटना पड़ेगा, फिर हम उन्हें उन के कर्मों की वास्तविकता से सूचित करेंगे। निस्सन्देह अल्लाह सीने के भीतर की समस्त बातों को जानता है।२४।

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝

हम उन्हें कुछ समय तक सांसारिक लाभ पहुँचाएँगे, फिर हम उन्हें विवश कर के अति कठोर अज़ाब की ओर ले जाएँगे।२५।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۗ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۗ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

यदि तू उन से पूछे कि आसमानों तथा ज़मीन को किस ने पैदा किया है? तो वह निश्चय ही कहेंगे कि अल्लाह ने। तू उन्हें कह, (ठीक है) हर-एक स्तुति के योग्य अल्लाह ही है, परन्तु इन (इन्कार करने वालों) में से बहुतों को इस बात का ज्ञान नहीं।२६।

لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝

आसमानों तथा ज़मीन में जो कुछ भी है अल्लाह का ही है। निस्सन्देह अल्लाह ही वह सत्ता है जो (प्रत्येक प्रकार की उपासना और प्रशंसा के लिए) किसी का मुहताज नहीं है (किन्तु साथ ही) वह समस्त स्तुतियों का अधिकारी भी है।२७।

وَلَوْ اَنَّ مَا فِی الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾

और धरती पर जितने पेड़ हैं यदि उन की क़लमें बन जाएँ तथा समुद्र स्याही से भरपूर हो जाएँ इसी प्रकार उस में स्याही के सात समुद्र और मिला दिए जाएँ, तो भी अल्लाह के निशान समाप्त नहीं होंगे। अल्लाह निश्चय ही ग़ालिब और हिक्मत वाला है।२८।

مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٩﴾

तुम सब को पैदा करना और तुम्हारा जीवित कर के उठाया जाना केवल एक व्यक्ति के पैदा करने की तरह है निस्सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला और बहुत देखने वाला है।२९।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِی النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِی الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِیْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٣٠﴾

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह रात को दिन में समो देता है तथा दिन को रात में और उस ने सूर्य एवं चन्द्रमा को सेवा में लगा रखा है। इन में से प्रत्येक निश्चित समय तक के लिए चलता चला जाता है और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को अच्छी तरह जानता है।३०।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِیُّ الْكَبِيْرُ ﴿٣١﴾

यह सब कुछ इसलिए हो रहा है कि अल्लाह सत्य है और क़ायम रहने वाला है और इसलिए कि जिन को वे लोग इस (अल्लाह) के सिवा पुकारते हैं वे झूठे तथा विनष्ट होने वाले हैं और अल्लाह निश्चय ही बहुत ऊँचा और बड़ी शान वाला है।३१। (रुकू ३/१२)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِیْ فِی الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ

क्या तू ने देखा नहीं कि नौकाएँ अल्लाह की निअमतों[1] के साथ समुद्र में चलती हैं ताकि

1. निअमत या पुरस्कार से तात्पर्य वह सामग्री है जो मानव-जाति के काम आती है और जिसे ले कर जहाज आदि विभिन्न देशों की ओर जाते रहते हैं।

مِّنْ اٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣١﴾

वह तुम्हें अपने निशान दिखाए। इस में बहुत बड़े धैर्यवान् और बहुत बड़े कृतज्ञ व्यक्ति के लिए बहुत से निशान हैं।३२।

وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٢﴾

और जब उन्हें कोई पानी की लहर छाया के समान ढाँप लेती है, तो वे अपनी उपासना को केवल अल्लाह के लिए ही विशेष मानकर उसे पुकारते हैं, फिर जब वह उन्हें भू-स्थल की ओर बचा कर ले आता है तो उन में से कुछ लोग दरमियानी चाल चलते रहते हैं (और कुछ लोग दोबारा वही अत्याचार एवं शिर्क करने लग जाते हैं) और हमारी आयतों का इन्कार केवल प्रतिज्ञा भंग करने वाले एवं कृतघ्न लोग ही किया करते हैं।३३।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـــًٔا ۭ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿٣٣﴾

हे लोगो ! अपने रब्ब के लिए संयम धारण करो और उस दिन से डरो जिस दिन कोई पिता भी अपने पुत्र के काम न आ सकेगा तथा न कोई पुत्र ही अपने पिता के काम आ सकेगा। अल्लाह का वादा अवश्य पूरा हो कर रहता है। तुम्हें सांसारिक जीवन धोखा में न डाल दे और न धोखा देने वाला शैतान ही तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा में डाले।३४।

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿٣٤﴾

क़ियामत (या किसी जाति के अन्तिम निर्णय के दिन) का ज्ञान अल्लाह ही को है और वही वर्षा करता है तथा जो कुछ गर्भाशयों में है उसे जानता है। कोई नहीं जानता कि वह कल क्या काम करेगा तथा न कोई यह जानता है कि वह किस धरती में मरेगा। निस्सन्देह अल्लाह ही जानने वाला और ख़बर रखने वाला है।३५। (रुकू ४/१३)
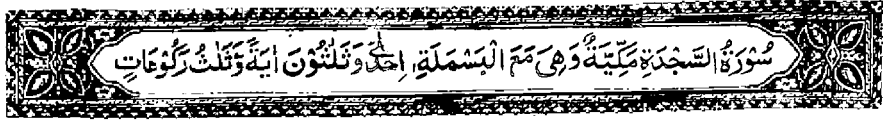
सूरः अल्-सजदः

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित
इस की इकतीस आयतें एवं तीन रुकू हैं ।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

الٓمّٓ ②

मैं अल्लाह हूँ जो सब से अधिक जानने वाला हूँ ।२।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ③

इस किताब का लोकों के रब्ब की ओर से उतारा जाना एक विश्वसनीय बात है, जिस में कोई सन्देह नहीं ।३।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ④

क्या वे लोग यह कहते हैं कि इस व्यक्ति (अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम) ने इस (क़ुर्आन) को अपने पास से गढ़ लिया है ? ऐसा नहीं, अपितु यह किताब तेरे रब्ब की ओर से उतरने वाली (और क़ायम रहने वाली) है ताकि तू उस जाति को सावधान करे जिस में तुझ से पहले कोई रसूल नहीं आया ताकि वे हिदायत पावें ।४।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ

अल्लाह वह है जिस ने आसमानों तथा ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के बीच है, उसे

سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝

छः[1] दौरों में पैदा किया, इस के बाद वह मज़बूती से अर्श (अर्थात् अनुशासन के सिंहासन) पर विराजमान हो गया। तुम्हारा उस अल्लाह् के सिवा कोई भी वास्तविक मित्र नहीं और न कोई सिफ़ारिश करने वाला। क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते? ।५।

يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝

वह (अल्लाह्) आसमान से ज़मीन तक अपने हुक्म को अपनी योजना के अनुसार लागू करेगा, फिर वह उस की ओर एक ऐसे समय में चढ़ना शुरू करेगा जिस का अनुमान ऐसे हज़ार[2] वर्षों का है जिस के अनुसार तुम संसार में गिनती करते हो।६।

ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ

यह ग़ैब (परोक्ष) और हाज़िर (अपरोक्ष) बातों का जानने वाला (अल्लाह्) है जो प्रभुत्वशाली

---

1. छः दौरों में अथवा छः महान परिवर्तनों में इस संसार की उत्पत्ति हुई। मूल शब्द 'यौम' (दिन) का अर्थ अरबी भाषा में समय और युग होता है चाहे वह करोड़ों, अरबों वर्ष या उस से भी अधिक लम्बा हो। लोगों ने भूल-वश दिन का अर्थ सूर्योदय से ले कर सूर्यास्त तक का समझ लिया है। आयत का अभिप्राय यह है कि छः दौरों में चाहे हर-एक दौर कितना ही लम्बा हो धरती तथा आकाश की सृष्टि की गई है और सातवां दौर सृष्टि को पूरा कर देने का आया। जब अल्लाह् ने अर्श से अपने विधान को उतारना प्रारम्भ किया, मानो उस के साम्राज्य ने पूर्णतया साकार रूप धारण कर लिया। इस प्रकार सृष्टि का उद्देश्य पूरा हो गया।

2. बहाई लोग इस आयत का ग़लत अर्थ करके मुसलमानों को धोखा देते हैं कि इस्लाम का जीवन केवल एक हज़ार वर्ष है, फिर वह मन्सूख़ हो जाएगा और बहाई धर्म उस का स्थान लेगा। हालांकि आयत का अर्थ स्पष्ट है कि इस्लाम हज़ार वर्ष में आसमान पर चढ़ेगा। इस का अर्थ मन्सूख होने का कदापि नहीं हो सकता, अपितु इस आयत में बताया गया है कि एक हज़ार वर्ष तक मुसलमान इस संसार में कमज़ोर होते चले जाएंगे, तदुपरांत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की भविष्यवाणियों के अनुसार इस्लाम को मज़बूत बनाने वाला सुधारक आ जाएगा। वास्तविक स्थिति यह है कि इसी सूरः की आयत 10 में लिखा है कि अल्लाह् कुछ महान विभूतियों को चुन लेता है और उन पर ईश-वाणी उतारता है।

الرَّحِيمُ ۝٧

एवं बार-बार दया करने वाला है[1] ।७।

الَّذِىٓ اَحۡسَنَ كُلَّ شَىۡءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلۡقَ الۡاِنۡسَانِ مِنۡ طِيۡنٍ ۝٨

जिस ने जो कुछ भी पैदा किया है सर्वोत्तम शक्तियों से पैदा किया है और मनुष्य को गीली मिट्टी से पैदा किया है ।८।

ثُمَّ جَعَلَ نَسۡلَهٗ مِنۡ سُلٰلَةٍ مِّنۡ مَّآءٍ مَّهِيۡنٍ ۝٩

फिर उस की नस्ल को साधारण सी बहने वाली चीज़ के तत्त्व (वीर्य्य) से पैदा किया है ।९।

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيۡهِ مِنۡ رُّوۡحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمۡعَ وَالۡاَبۡصَارَ وَالۡاَفۡـِٕدَةَ ؕ قَلِيۡلًا مَّا تَشۡكُرُوۡنَ ۝١٠

फिर उसे पूर्ण शक्तियाँ प्रदान कीं और उस में अपनी ओर से आत्मा[2] डाली तथा तुम्हारे लिए कान, आँख और दिल बनाए, परन्तु तुम लेश मात्र भी धन्यवाद नहीं करते ।१०।

وَقَالُوۡٓا ءَاِذَا ضَلَلۡنَا فِى الۡاَرۡضِ ءَاِنَّا لَفِىۡ خَلۡقٍ جَدِيۡدٍ ؕ بَلۡ هُمۡ بِلِقَآءِ رَبِّهِمۡ كٰفِرُوۡنَ ۝١١

और वे कहते हैं कि जब हम धरती में मिल जाएँगे तो क्या हमें नया जीवन दे कर नए रूप में खड़ा कर दिया जाएगा ? (ये लोग इस नए जीवन के इन्कारी नहीं) अपितु अपने रब्ब से मिलने के इन्कारी[3] हैं ।११।

قُلۡ يَتَوَفّٰىكُمۡ مَّلَكُ الۡمَوۡتِ الَّذِىۡ وُكِّلَ بِكُمۡ ثُمَّ

तू कह कि वह मौत का फ़रिश्ता जो तुम्हारे लिए नियुक्त किया गया है, अवश्य ही

1. अर्थात् वह इस्लाम धर्म का पुनरुत्थान करेगा ।

2. अर्थात् शरीर पूरा बन जाने के पश्चात् शरीर सम्बन्धी आत्मा डाली और आध्यात्मिकता की पूर्ति के पश्चात् उस पर ईशवाणी उतारी ।

3. अर्थात् यदि मरने के पश्चात् दोबारा जी उठने की शिक्षा होती और कर्मों का लेखा लेने की बात न होती तो बड़ी खुशी से मान लेते, किन्तु अल्लाह के सामने पेश होने और कर्मों का फल पाने का वर्णन है इसलिए इन्कार करते हैं ।

إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ⑪

तुम्हारी जान निकालेगा, फिर तुम अपने रब्ब की ओर लौटाए जाओगे ।१२। (रुकू १/१४)

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا رُءُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ⑫

और यदि तुझे उस दशा का ज्ञान हो जाए जब कि अपराधी लोग अपने रब्ब के सामने अपना सिर झुकाए[1] खड़े होंगे तथा कह रहे होंगे कि हे हमारे रब्ब ! हम ने (जो कुछ तू ने कहा था) उसे देख लिया और सुन लिया। अत: अब तू हमें वापस लौटा दे ताकि हम तेरे आदेश के अनुसार कर्म करें, अब हम ने तेरी बात का पूरा-पूरा विश्वास कर लिया है ।१३।

وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدَاهَا وَلَٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ⑬

और यदि हम चाहते तो प्रत्येक व्यक्ति को उस की परिस्थितियों के अनुकूल हिदायत दे देते, किन्तु मेरी बात पूरी हो गई कि मैं अवश्य ही नरक को जिन्नों तथा मनुष्यों से भरूँगा ।१४।

فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا إِنَّا نَسِينَاكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ⑭

अत: आज के दिन की भेंट को भूल जाने के कारण और अपने कर्मों के कारण चिरकाल तक रहने वाले अज़ाब का मज़ा चखो और (याद रखो कि) हम ने भी (आज) तुम्हें भुला दिया है (अर्थात् हमें तुम्हारी परवाह नहीं) ।१५।

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا

हमारी आयतों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उन्हें उन के सम्बन्ध में याद कराया जाता है तो वे सजद: करते हुए धरती

---

1. इस आयत में बताया गया है कि यदि तू उस समय का दृश्य अब देख पाए तो तुझे विदित हो जाएगा कि वे अत्यन्त लज्जा अनुभव कर रहे होंगे ।

وَسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ⑮

पर गिर जाते हैं और अपने रब्ब की स्तुति और महिमा करते हैं तथा अहंकार नहीं करते।१६।

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۡ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ⑯

और उन मोमिनों के पहलू उन के बिस्तरों से अलग हो जाते हैं (अर्थात् तहज्जुद के समय उपासना करने के लिए) और वे अपने रब्ब को उस की ओर से आने वाले अज़ाबों से बचने के लिए तथा उस की दयालुता पाने के लिए पुकारते हैं और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है उस में से अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं।१७।

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ⑰

और (वास्तविक बात यह है कि) किसी व्यक्ति को ज्ञात नहीं कि इन मोमिनों के लिए उन के कर्मों के फलस्वरूप आँखें ठंढी करने वाली क्या-क्या चीज़ें छिपा कर रखी गई हैं।१८।

اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ۗ لَا يَسْتَوٗنَ ⑱

क्या जो व्यक्ति मोमिन हो वह उस जैसा हो सकता है जो आज्ञाकारी न हो ? ऐसे लोग कदापि एक समान नहीं हो सकते।१९।

اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۡ نُزُلًۢا بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ⑲

वे लोग जो ईमान लाए हैं और उन्हों ने उस के अनुकूल कर्म किए हैं उन के रहने के लिए उत्तम स्वर्ग होंगे। यह उन के कर्मों के अनुसार अतिथि-सत्कार होगा।२०।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَآ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ

और जो लोग आज्ञा से बाहर निकल गए हैं उन को रहने के लिए नरक मिलेगा। वे जब कभी उस में से निकलने का इरादा करेंगे तो उसी की ओर लौटा दिए जाएँगे तथा उन्हें

النَّارِ الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٠﴾

कहा जाएगा कि अब नरक के उस अजाब को चखो जिसे तुम झुठलाया करते थे ।२१।

وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾

और उस आने वाले बड़े अज़ाब से पहले हम (इस संसार का) छोटा अज़ाब भी उन्हें चखाएँगे ताकि वे (अल्लाह की ओर) लौटें (और तौबः करें तथा आख़िरत के अजाब से बच जाएँ) ।२२।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾

और जिस व्यक्ति को उस के रब्ब की आयतें याद दिलाई जाएँ, किन्तु वह फिर भी उन से मुँह मोड़े तो उस से बढ़ कर दूसरा कौन अत्याचारी हो सकता है ? निस्सन्देह हम अपराधियों से बदला लेंगे ।२३। (रुकू २/१५)

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُن فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَائِهِ ۖ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾

और हम ने मूसा को किताब दी थी । अतः तू भी एक कामिल किताब के मिलने के बारे में सन्देह न कर और हम ने उस (किताब) को बनी-इस्राईल के लिए हिदायत बनाया था ।२४।

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾

और हम ने उन में से इमाम[1] बनाए थे जो हमारे आदेशों के अनुसार लोगों को हिदायत देते थे, इस कारण से कि उन्हों ने धैर्य[2] से काम लिया तथा वे हमारी आयतों पर पूर्ण विश्वास रखते थे ।२५।

---

1. अर्थात् उन्हें सुधारक बनाया और उन पर वह्य उतारी थी कि लोगों का सुधार करो ।

2. अर्थात् जब कभी संसार में धर्म की ग्लानि हुई तब कुछ भले लोगों ने धर्म की रक्षा और अल्लाह के सच्चे ग्रन्थों का प्रचार प्रारम्भ किया, परन्तु जो लोग बुरी अवस्था में पहुँच चुके थे उन्हों ने

(शेष पृष्ठ ९०५ पर)

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٦﴾

तेरा रब्ब तो वह है जो उन (ईशवाणी पहुँचाने वालों और उन के विपक्षियों) में क़ियामत के दिन ऐसी बातों में निर्णय करेगा जिन में वे मतभेद किया करते थे ।२६।

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسٰكِنِهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيٰتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٧﴾

क्या उन्हें इस बात से शिक्षा प्राप्त नहीं हुई कि हम ने उन से पहले बहुत से युगों के लोगों का सर्वनाश कर दिया था और अब ये लोग उन्हीं के घरों में चलते-फिरते हैं। निस्सन्देह इस में बहुत से निशान हैं, परन्तु क्या वे सुनते नहीं ? ।२७।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعٰمُهُمْ وَأَنفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٨﴾

क्या उन्हों ने देखा नहीं कि हम एक बंजर भूमि की ओर पानी को हाँक कर ले जाते हैं, फिर उस (पानी) के द्वारा खेती उगाते हैं जिस से उन के चौपाए भी खाते हैं तथा वे स्वयं भी खाते हैं। क्या वे देखते नहीं ? ।२८।

وَيَقُولُونَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ إِن كُنتُمْ صٰدِقِينَ ﴿٢٩﴾

और वे कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो बताओ कि यह विजय[1] जिस का तुम वर्णन करते हो, कब होगी ? ।२९ ।

(पृष्ठ ९०४ का शेष)

उन भले लोगों पर अत्याचार करने प्रारम्भ कर दिए किन्तु वे अपनी शिक्षा-दीक्षा और प्रचार आदि कामों पर धीरता से जमे रहे तथा उन्हों ने अत्याचार सहन किए। अन्ततः अल्लाह् ने उन के निःस्वार्थ बलिदान को देख कर उन पर वह्य उतारी और उन्हें उस युग का सुधारक नियुक्त कर दिया ताकि जो काम वे पहले अपनी रुचि से किया करते थे अब ईशवाणी के अनुसार करने लग जाएँ ।

1. यहाँ विजय से तात्पर्य इन्कार करने वालों के विनाश की वह सूचना है जिस की चर्चा पहले हो चुकी है कि क़ियामत के अज़ाब से पहले इस संसार में भी उन्हें अज़ाब मिलेगा ताकि वे शिक्षा ग्रहण करें। आयत 27 में कहा गया है कि उन से पहले के लोगों का भी सर्वनाश किया गया था। क्या यह उन से भी शिक्षा प्राप्त नहीं करते कि उन की बारी भी आने वाली है। उन विगत लोगों का देश इन्हें मिला है तो उन लोगों जैसे बुरे कर्म करने पर दण्ड भी तो इन्हीं को भोगना पड़ेगा ।

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝٢٩

तू कह दे कि उस विजय[1] के दिन इन्कार करने वालों को उन का ईमान लाभ नहीं देगा तथा न उन्हें ढील दी जाएगी ।३०।

فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ۝٣٠

अतएव तू उन्हें छोड़ दे और (उन के परिणाम की) प्रतीक्षा कर । वे भी कुछ समय तक अभी और प्रतीक्षा करेंगे ।३१। (रुकू ३/१६)

1. विजय के समय ईमान लाने वाले लोग सांसारिक लाभ तो कुछ हासिल कर लेते हैं, परन्तु परलोक के पुरस्कार उन्हें कम ही मिलते हैं, सिवाय इस के कि यदि वे अच्छे कर्मों में बहुत बढ़ जाएँ और ईमान लाने में देर लगाने का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) दे दें ।

सूरः अल्-अहज़ाब

[यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की चौहत्तर आयतें एवं नौ रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ②

हे नबी! अल्लाह के लिए संयम धारण कर और इन्कार करने वालों और मुनाफ़िक़ों की बात न मान। निस्सन्देह अल्लाह बहुत जानने वाला और बड़ी हिक्मत वाला है।२।

وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ③

और केवल उस वह्य पर चलो जो तेरे रब्ब की ओर से तुझ पर उतारी जाती है। अल्लाह तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति जानता है।३।

وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ④

और अल्लाह पर भरोसा रख और अल्लाह कार्य-साधक होने के नाते काफ़ी है।४।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـئِْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ

अल्लाह ने किसी मनुष्य के सीने में दो दिल नहीं बनाए और न तुम्हारी पत्नियों ही को जिन्हें तुम कभी माता कह देते हो, तुम्हारी

اُدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِى السَّبِيْلَ ۝

मातारँ बनाया है तथा न तुम्हारे ले-पालकों को तुम्हारा बेटा बनाया है। ये सब तुम्हारे मुंह की बातें हैं और अल्लाह ही सच्ची बात कहता है एवं वही सीधी राह दिखाता है।४।

اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ۚ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ ۙ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

उन (ले-पालकों) को उन के बापों का पुत्र कह कर पुकारो। यह अल्लाह के निकट अधिक न्याय पूर्ण बात है और यदि तुम्हें यह ज्ञात नहीं कि उन के पिता कौन हैं, तो फिर भी वे तुम्हारे धार्मिक भाई हैं और धार्मिक मित्र हैं तथा जो तुम भूल-चूक से पहले कर चुके हो उस के बारे में तुम पर कोई पाप नहीं, परन्तु जिस बात पर तुम्हारे दिल निश्चय कर चुके हों (उस पर पकड़ होगी) और अल्लाह (हर तौबः करने वाले के लिए) बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।६।

اَلنَّبِىُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ۗ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّآ اَنْ تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ۗ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝

नबी मोमिनों से उन की अपनी जानों की अपेक्षा भी अधिक निकट[1] है और उस की धर्म-पत्नियाँ उन की माताएँ हैं। (नाता न रखने वाले) मोमिनों और मुहाजिरों की अपेक्षा (नाते रखने वाले) सम्बन्धी अल्लाह की किताब के अनुसार एक-दूसरे के अधिक निकट हैं। हाँ ! अपने मित्रों के साथ तुम्हारा अच्छा व्यवहार करना (ठीक बात है)। यह बात क़ुर्आन में लिखी जा चुकी है।७।

1. इस से यह अभिप्राय है कि अपने सम्बन्धियों की जो बातें बताना उचित नहीं तथा जिन बातों को गुप्त रखना मनुष्य के लिए उचित है उस से बढ़ कर नबी के विषय में सावधान रहने की आवश्यकता (शेष पृष्ठ ९०९ पर)

وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۙ﴿٨﴾

और (याद करो) जब कि हम ने नबियों से उन पर डाली गई एक विशेष बात की प्रतिज्ञा ली थी तथा तुझ से भी (प्रतिज्ञा ली थी) और नूह एवं इब्राहीम तथा मूसा और मर्यम के पुत्र ईसा से भी तथा हम ने उन सब से पक्का बचन[1] लिया था ।८।

لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٩﴾ ع

ताकि अल्लाह सच्चे लोगों से उन की सच्चाई के बारे में प्रश्न करे तथा उस ने इन्कार करने वालों के लिए एक दुःखदायक अज़ाब तय्यार कर रखा है ।९। (रुकू १/१७)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ

हे मोमिनों ! अल्लाह की उस निअमत को याद करो जो उस ने तुम पर उस समय की जब तुम पर कुछ सेना-दल चढ़ आए थे और हम ने उन की ओर एक वायु[2] भेजी थी तथा ऐसी सेनाएँ भेजी थीं

(पृष्ठ ९०८ का शेष)

होती है । इसी लिए अल्लाह ने नबी को मोमिनों का पिता और उस की पत्नियों को माताएं ठहराया है, क्योंकि यदि इस प्रकार नबी और उस की पत्नियों को दूसरे मोमिनों से बढ़ कर सम्मान न दिया जाता तो जिन बातों को छिपाना अनिवार्य था वह छिपाई न जातीं तथा जिन बातों को प्रकट करना अभीष्ट था वह प्रकट न होतीं । इतिहास से सिद्ध है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की पत्नियों ने आप की किसी बात को नहीं छिपाया । अत: इस से यह अभिप्राय नहीं कि नबी कोई पाप करता है जिसे छिपाया जाना चाहिए था, अपितु वास्तविक उद्देश्य यह होता है कि यदि नबी के समस्त कामों का पता उन के अनुयायियों को लग जाए जो वह अपने घर में करता था जिन्हें उस की पत्नियों के सिवा दूसरा कोई नहीं जानता था, तो अनुयायी उन कामों का अनुसरण करने के प्रयत्न कर के कष्टों में पड़ जाते ।

1. इस वचन में सूर: 'आले-इम्रान' की आयत 82 की ओर संकेत है कि प्रत्येक नबी को उस के बाद में आने वाले नबी का शुभ समाचार दिथ गया था । उस की जाति के लिए उस नबी पर ईमान लाना अनिवार्य ठहराया गया था ।

2. इस में अहज़ाब नामक युद्ध का वर्णन है, जिस दिन शत्रु को विजय पाने का पूर-पूरा विश्वास था । ठीक उसी दिन एक तेज़ हवा चली और रात के समय शत्रु के कैम्पों में आग बुझ गई, जिसे अरब-निवासी अशुभ मानते थे । ऐसा देख कर सब सेना-पति अपने साथियों को ले कर भाग गए तथा मुसलमान उन के आक्रमण से बच गए ।

تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ⑩

जो तुम्हें दिखाई नहीं देती थीं और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति देखता है ।१०।

اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ⑪

(हाँ ! उस समय को याद करो) जब कि तुम्हारे शत्रु तुम्हारे ऊपर की ओर से भी चढ़ आए थे और नीचे की ओर से भी आ गए थे और जब कि आँखें घबराहट से टेढ़ी हो गईं थीं तथा कलेजे मुँह को आ गए थे और तुम अल्लाह के बारे में भिन्न-भिन्न शंकाओं में पड़ गए थे ।११।

هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ⑫

उस समय मोमिन लोग एक (भयंकर) परीक्षा में डाल दिए गए थे और वे बुरी तरह झंझोड़े गए थे ।१२।

وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اِلَّا غُرُوْرًا ⑬

और (उस समय को भी याद करो) जब कि मुनाफ़िक़ लोग तथा जिन के दिलों में रोग था कहने लग गए थे कि अल्लाह और उस के रसूल ने हम से केवल एक झूठी प्रतिज्ञा की थी ।१३।

وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰٓاَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۚ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ⑭

और जब कि उन में से एक गिरोह यह भी कहने लग गया था कि हे मदीना वालो ! अब तुम्हारे लिए कोई ठिकाना नहीं है । अतः (इस्लाम धर्म से) इन्कार कर दो और उन में से एक गिरोह नबी से आज्ञा माँगने लग गया था और कहने लग गया था कि हमारे घर शत्रु की मार में हैं, हालाँकि वे घर शत्रु की मार में नहीं थे । वे लोग केवल भाग जाने का इरादा कर रहे थे ।१४।

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ

और यदि मदीना की विभिन्न दिशाओं से उन पर सेनाएँ चढ़ाई कर दें और फिर उन

لَاٰتَوۡهَا وَمَا تَلَبَّثُوۡا بِهَاۤ اِلَّا يَسِيۡرًا ﴿١٥﴾

(इन्कार करने वालों) की ओर से इस्लाम धर्म त्यागने की माँग की जाए तो ये अवश्य उन की इस माँग को मान लेंगे, किन्तु वे इस के पश्चात् उस (मदीना) में थोड़ा सा ही रहने पाएँगे[1]।१५।

وَلَقَدۡ كَانُوۡا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنۡ قَبۡلُ لَا يُوَلُّوۡنَ الۡاَدۡبَارَ ؕ وَكَانَ عَهۡدُ اللّٰهِ مَسۡـُٔوۡلًا ﴿١٦﴾

और (सत्य यह है कि) इस से पहले इन (मुनाफ़िक़ों) ने अल्लाह से बचन किया था कि वे कभी पीठ नही फेरेंगे (और अटल रहेंगे) तथा अल्लाह से किए जाने वाले बचन के बारे में अवश्य प्रश्न किया जाएगा।१६।

قُلۡ لَّنۡ يَّنۡفَعَكُمُ الۡفِرَارُ اِنۡ فَرَرۡتُمۡ مِّنَ الۡمَوۡتِ اَوِ الۡقَتۡلِ وَاِذًا لَّا تُمَتَّعُوۡنَ اِلَّا قَلِيۡلًا ﴿١٧﴾

तू उन से कह दे कि यदि तुम मौत से या क़त्ल से भागोगे तो तुम्हारा भागना तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं देगा तथा इस दशा में तुम कुछ भी लाभ नहीं उठा सकोगे[2]।१७।

قُلۡ مَنۡ ذَا الَّذِىۡ يَعۡصِمُكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ اِنۡ اَرَادَ بِكُمۡ سُوۡٓءًا اَوۡ اَرَادَ بِكُمۡ رَحۡمَةً ؕ وَلَا يَجِدُوۡنَ لَهُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيۡرًا ﴿١٨﴾

तू कह दे कि यदि वह तुम्हें दण्ड देना चाहे तो कौन है जो तुम्हें उस की पकड़ से बचाएगा ? या यदि वह तुम पर दया करना चाहे (तो कौन उस से तुम्हें वञ्चित कर सकेगा) ? वे अल्लाह के सिवा अपने लिए न कोई मित्र पाएँगे और न कोई सहायक (अर्थात् जब भी काम आएगा तो अल्लाह ही आएगा)।१८।

---

1. इस्लाम धर्म छोड़ देने पर भी इन्कार करने वाले लोग उन का पिंड नहीं छोड़ेंगे, क्योंकि उन के दिलों में मुसलमान कहलाने वाले प्रत्येक व्यक्ति के बारे में द्वेष और विष भरा हुआ है, चाहे वह मुसलमान केवल नाम का ही हो।

2. अर्थात् यदि तुम भागोगे तो इन्कार करने वाले लोग तुम्हारी हत्या कर देंगे या अल्लाह इस्लाम को शीघ्र ही विजयी बना देगा तथा मुसलमान तुम्हें दण्ड देंगे जैसा कि आगामी आयत से व्यक्त होता है।

قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٩﴾

अल्लाह उन लोगों को भली-भाँति जानता है जो तुम में से दूसरों को (जिहाद से) पीछे हटाते थे और अपने भाइयों से कहते थे कि हमारी ओर आ जाओ (और जिहाद के लिए न जाओ) तथा वे स्वयं भी शत्रु से बिल्कुल ही युद्ध नहीं करते थे ।१९।

اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٢٠﴾

वे तुम्हारे बारे में बहुत कन्जूसी करने वाले हैं (अर्थात् वे कभी नहीं चाहते कि तुम्हें कोई भलाई पहुँचे) और जब उन पर भय का कोई समय आए तो तू उन्हें देखेगा कि वे तेरी ओर इस प्रकार देखते हैं कि उन की आँखों के डेले बिल्कुल उस मनुष्य की भाँति घूम रहे होते हैं जो मरण-शैय्या पर हो, फिर जब भय का समय बीत जाता है तो तुम्हारे ऊपर (व्यंग रूप में) कृपाण जैसी काटने वाली ज़बानें चलाते हैं। वे हर भलाई के बारे में कन्जूसी से काम लेते हैं (कि वह तुम्हें न मिले)। ये लोग वास्तव में ईमान लाए ही न थे। अतः अल्लाह ने उन के (इस्लाम के विरुद्ध) सारे प्रयत्न असफल बना दिए और अल्लाह के लिए यह बात आसान थी ।२०।

يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِي الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَلَوْ

और ये लोग तो अब भी यही आशा लगाए बैठे हैं कि काश अभी शत्रु की सेनाएं चली न गई हों, हालाँकि (इन्कार करने वालों की) सेना वापस लौट आए तो (उन के लौटने पर प्रसन्नता की अपेक्षा) ये लोग इच्छा करेंगे कि काश ! वे जंगली लोगों में निवास कर रहे होते (और हे मोमिनों !) तुम्हारे बारे में

كَانُوا فِيكُمْ مَّا قٰتَلُوٓا اِلَّا قَلِيلًا ۝٢٠

(लोगों से) पूछ-ताछ कर रहे होते[1] और यदि ये (आवश्यकता के अवसर पर) तुम्हारे साथ रहते तो भी तुम्हारी ओर से कदापि न लड़ते।२१। (रुकू २/१८)

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيرًا ۝٢١

तुम्हारे लिए (अर्थात् ऐसे लोगों के लिए) जो अल्लाह और क़ियामत के दिन से मिलने की आशा रखते हैं और अल्लाह को बहुत याद करते हैं, अल्लाह के रसूल में बहुत अच्छा नमूना (आदर्श) है (जिस का उन्हें अनुसरण करना चाहिए)।२२।

وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُونَ الْاَحْزَابَ قَالُوا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُولُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُولُهٗ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّا اِيمَانًا وَّتَسْلِيمًا ۝٢٢

अतः जब सच्चे मोमिनों ने आक्रमणकारी सेनाओं को देखा तो कहा कि यह तो वे ही (सेनाएँ)[2] हैं जिन की प्रतिज्ञा अल्लाह और उस के रसूल ने हम से की तथा अल्लाह और उस के रसूल ने सर्वथा सत्य कहा था और इस घटना ने उन्हें ईमान एवं आज्ञा पालन करने में और भी बढ़ाया।२३।

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ وَمَا

इन मोमिनों में से कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हों ने उस वचन को जो उन्हों ने अल्लाह से किया था, सत्य कर दिखाया। सो कुछ तो ऐसे हैं जिन्हों ने अपने इरादा को पूरा कर दिया (अर्थात् लड़ते हुए मारे गए और वीर

1. वे लोगों से पूछ-ताछ कर रहे होते कि मुसलमान अभी जीवित हैं या उन का सर्वनाश हो चुका है।

2. आदरणीय क़ुर्आन में अह्ज़ाब (संयुक्त दलों) के आक्रमण करने की पहले से ही सूचना दी गई थी। देखिए सूरः क़मर आयत 46 और सूरः साद आयत 12। यहाँ उसी आक्रमण की ओर संकेत किया गया है।

بَدَّلُوا تَبۡدِيلًا ﴿٢٣﴾

गति पा ली) और उन में से कुछ ऐसे भी हैं जो अभी प्रतीक्षा कर रहे हैं तथा उन्हों ने अपने इरादा में कोई कमज़ोरी नहीं आने दी ।२४।

لِيَجۡزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيۡنَ بِصِدۡقِهِمۡ وَيُعَذِّبَ الۡمُنٰفِقِيۡنَ اِنۡ شَآءَ اَوۡ يَتُوۡبَ عَلَيۡهِمۡ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوۡرًا رَّحِيۡمًا ﴿٢٤﴾

इस का परिणाम यह होगा कि अल्लाह ऐसे सच्चे लोगों को उन की सच्चाई का बदला देगा और यदि चाहेगा तो मुनाफ़िक़ों को अज़ाब देगा अथवा उन पर दया करेगा और निस्सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है ।२५।

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِغَيۡظِهِمۡ لَمۡ يَنَالُوۡا خَيۡرًا وَكَفَى اللّٰهُ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ الۡقِتَالَ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيۡزًا ﴿٢٥﴾

और (वास्तविकता यह है कि) अल्लाह ने क्रोध से भरे हुए इन्कार करने वालों को (मदीना से) वापस लौटा दिया तथा किसी प्रकार का लाभ उन्हें प्राप्त नहीं हुआ और अल्लाह ने मोमिनों की ओर से स्वयं युद्ध किया और अल्लाह सर्वशक्तिमान और प्रभुत्वशाली है ।२६।

وَاَنۡزَلَ الَّذِيۡنَ ظَاهَرُوۡهُمۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ مِنۡ صَيَاصِيۡهِمۡ وَقَذَفَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمُ الرُّعۡبَ فَرِيۡقًا تَقۡتُلُوۡنَ وَتَاۡسِرُوۡنَ فَرِيۡقًا ﴿٢٦﴾

और उस (अल्लाह) ने उन (किताब वालों) को जिन्हों ने ऐसे (चढ़ाई करने वाले मुश्रिकों) की सहायता की थी उन के दुर्गों से उतार दिया और उन के दिलों में तुम्हारी धाक बिठा दी यहाँ तक कि तुम उन में से एक हिस्से को क़त्ल करने और एक हिस्से को बन्दी बनाने के योग्य हो गए ।२७।

وَاَوۡرَثَكُمۡ اَرۡضَهُمۡ وَدِيَارَهُمۡ وَاَمۡوَالَهُمۡ وَاَرۡضًا لَّمۡ تَطَـُٔوۡهَا وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

और उन की धरती, घरों और उन के धन का तुम्हें वारिस बना दिया तथा उस धरती का भी जिस पर अभी तुम्हारे पैर[1] नहीं पड़े

1. अर्थात् ख़ैबर का क्षेत्र । यहाँ यह भविष्यवाणी की गई है कि ख़ैबर को मुसलमान जीत लेंगे, फिर ऐसा ही हुआ ।

شَيْءٍ قَدِيرًا ﴿٢٨﴾ ع

और अल्लाह प्रत्येक बात के करने पर पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है।२८। (रुकू ३/१९)

يَاأَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِأَزْوَاجِكَ إِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيَوٰةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ أُمَتِّعْكُنَّ وَأُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٢٩﴾

हे नबी ! अपनी पत्नियों से कह कि यदि तुम संसार और उस की शोभा चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें कुछ सांसारिक सामान दे देता हूँ और तुम्हें अच्छे ढंग से विदा कर देता हूँ।२९।

وَإِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ وَالدَّارَ الْآخِرَةَ فَإِنَّ اللّٰهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٣٠﴾

और यदि तुम अल्लाह और उस के रसूल एवं पारलौकिक-जीवन के घर को चाहती हो तो अल्लाह ने तुम में से इस्लाम पर पूर्ण रूप से क़ायम रहने वालियों के लिए बहुत बड़ा पुरस्कार नियत कर रखा है।३०।

يٰنِسَاءَ النَّبِيِّ مَنْ يَأْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ يُضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيرًا ﴿٣١﴾

हे नबी की धर्म-पत्नियों ! यदि तुम में से कोई उत्तम ईमान के ख़िलाफ़ बात[1] करे तो उस का दण्ड दोगुना किया जाएगा और यह बात अल्लाह के लिए आसान है।३१।

1. मूल शब्द 'फ़ाहिश:' उस बुरे कर्म को कहते हैं जिस की बुराई दिखाई दे। चूंकि नबी की पत्नियों को उत्तम से उत्तम नेक कर्म करने की शिक्षा दी गई है इसलिए यदि उन से कोई ऐसा काम हो जाए जो उत्तम दर्जे की नेकी तो नहीं, किन्तु एक साधारण सी नेकी है तब भी अरबी भाषा के मुहावरा में उसे फ़ाहिश: कहा जाएगा।

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

और तुम में से जो कोई अल्लाह् एवं उस के रसूल की आज्ञा का पालन करेगी तथा उस (आज्ञा-पालन की शान के) अनुकूल कर्म भी करेगी तो हम उसे पुरस्कार भी दो गुना प्रदान करेंगे और हम ने ऐसी हर-एक पत्नी के लिए इज़्ज़त की रोज़ी तय्यार की हुई है।३२।

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾

हे नबी की पत्नियों ! यदि तुम अपने (गौरवमय) स्थान को समझो तो तुम साधारण स्त्रियों जैसी नहीं हो। अत: हाव-भाव से बात न कहा करो ताकि ऐसा न हो कि जिस किसी के मन में रोग है वह तुम्हारे बारे में कोई बुरा विचार करे और सदैव लोगों को भली बातें कहा करो।३३।

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾

और अपने घरों में बैठी रहा करो तथा प्राचीन काल की अज्ञानता (की रीति-रिवाज) के अनुसार अपना शृंगार (पराए लोगों पर) प्रकट न किया करो और नमाज़ को विधिवत पूरा किया करो और ज़कात दिया करो और अल्लाह् तथा उस के रसूल की आज्ञा का पालन किया करो। हे (नबी के) घर वालो ! अल्लाह् तुम में से हर-तरह की गन्दगी दूर करना तथा तुम्हें पूर्ण रूप से पवित्र करना चाहता है।३४।

وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾ ع

और तुम्हारे घरों में अल्लाह की जो आयतें और हिक्मत की बातें पढ़ी जाती हैं उन्हें याद रखो। अल्लाह् बहुत दया करने वाला एवं ज्ञान रखने वाला है।३५। (रुकू ४/१)

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِينَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِينَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِينَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِينَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِينَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِينَ اللّٰهَ كَثِيرًا وَّالذّٰكِرٰتِ أَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّأَجْرًا عَظِيمًا ۝

निस्सन्देह कामिल मुसलमान पुरुष और कामिल मुसलमान महिलाएँ तथा कामिल आज्ञाकारी पुरुष और कामिल आज्ञाकारी महिलाएँ और कामिल सच बोलने वाले पुरुष एवं कामिल सच बोलने वाली महिलाएँ और कामिल धैर्यवान पुरुष एवं कामिल धैर्यवान महिलाएँ तथा कामिल रूप में विनम्रता प्रकट करने वाले पुरुष और कामिल रूप में विनम्रता प्रकट करने वाली महिलाएँ तथा कामिल दान देने वाले पुरुष और कामिल दान देने वाली महिलाएँ तथा कामिल व्रतधारी पुरुष और कामिल व्रतधारिणी महिलाएँ और पूर्ण रूप से अपने गुप्त अंगों की रक्षा करने वाले पुरुष और पूर्ण रूप से अपने गुप्त अंगों की रक्षा करने वाली महिलाएँ और अल्लाह को बहुत याद करने वाले पुरुष एवं अल्लाह को बहुत याद करने वाली महिलाएँ, इन सब के लिए अल्लाह ने बख़्शिश (क्षमा) के सामान और बहुत बड़ा पुरस्कार तय्यार कर रखा है।३६।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُولُهٗٓ أَمْرًا أَنْ يَّكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ ۗ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُولَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِينًا ۝

और किसी भी मोमिन पुरुष और मोमिन महिला के लिए उचित नहीं कि जब अल्लाह और उस का रसूल किसी बात का निर्णय कर दें तो वे फिर भी अपनी उस बात का निर्णय अपनी ही इच्छा से करें और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल की अवज्ञा करता है वह खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़ जाता है।३७।

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِيٓ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ

और (हे नबी ! याद कर) जब तू उस से जिस पर अल्लाह ने और तू ने पुरस्कार किया था, कहता था कि अपनी पत्नी को

مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۗ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝

अपने पास रोक रख (तथा तलाक़ न दे) और अल्लाह् के लिए संयम धारण कर एवं तू उस बात को अपने दिल[1] में छिपाता था जिसे अल्लाह् प्रकट करने वाला था और तू लोगों से डरता था, हालाँकि अल्लाह् ही सब से बढ़ कर इस बात का अधिकारी है कि तू उस से डरे। अतएव जब ज़ैद ने उस स्त्री के बारे में अपनी इच्छा पूरी कर ली (अर्थात् तलाक़ दे दी) तो हम ने उस महिला का तुझ से विवाह् कर दिया ताकि मोमिनों के दिलों में अपने ले-पालक बेटों की पत्नियों से विवाह करने के बारे में उन्हें तलाक़ मिल जाने के बाद किसी प्रकार की कोई खटक न रहे और अल्लाह् का निर्णय तो अवश्य पूरा हो कर रहना था।३८।

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرَا ۝

अल्लाह् ने जिस काम का पूरा करना नबी का कर्त्तव्य ठहराया है उस के बारे में उस पर कोई दोष नहीं। यही रीति अल्लाह् ने पहले लोगों में प्रचलित कर रखी थी और अल्लाह् का हुक्म तो पूरा हो कर ही रहने वाला है (उसे कोई टला नहीं सकता)।३९।

الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ

(यही रीति पहले नबियों में प्रचलित थी) जो अल्लाह् का सन्देश लोगों तक पहुँचाते थे और उसी से डरते थे तथा अल्लाह् के

---

1. हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को पता लग गया था कि हज़रत ज़ैद अपनी पत्नी ज़ैनब को तलाक़ देना चाहते हैं। आप इस बात को गुप्त रख कर हज़रत ज़ैद को समझाते थे ताकि लोगों को ठोकर न लगे कि एक अच्छे वंश की लड़की का विवाह् स्वतन्त्र किए हुए एक दास से करके हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने कोई अच्छा काम नहीं किया, बल्कि फ़साद और दंगे का द्वार खोल दिया है।

أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۝

सिवा किसी दूसरे से नहीं डरते थे और (कर्मों का) लेखा लेने के लिए अल्लाह काफ़ी है ।४०।

مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

मुहम्मद तुम में से किसी पुरुष के न पिता थे न हैं (न होंगे) किन्तु वह अल्लाह के रसूल हैं, बल्कि (इस से भी बढ़ कर) नबियों की मुहर[1] हैं तथा अल्लाह प्रत्येक बात को खूब जानता है ।४१। (रुकू ५/२)

1. अर्थात् आप के प्रमाणित करने और आप की शिक्षा की गवाही के बिना नुबुव्वत या विलायत अर्थात् भक्ति-पद और ईश-मैत्री के गौरव पूर्ण स्थान तक कोई व्यक्ति नहीं पहुँच सकता । कुछ भाष्यकारों ने नबियों की मुहर के स्थान पर इस का अर्थ 'अन्तिम नबी' किया है, परन्तु इस से भी हमारे अर्थों में कोई अन्तर नहीं पड़ता । आप के मेराज को सामने रखा जाए तो नबियों का स्थान मुस्नद अहमद पुत्र हम्बल के अनुसार यों बनता है :—

सिद्रतुल्मुन्तहा	हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम
सातवाँ आकाश	हज़रत इब्राहीम
छटा आकाश	हज़रत मूसा
पाँचवाँ आकाश	हज़रत हारून,
चौथा आकाश	हज़रत इद्रीस
तीसरा आकाश	हज़रत यूसुफ़
दूसरा आकाश	हज़रत ईसा तथा हज़रत यहया
पहला आकाश	हज़रत आदम
पृथ्वी-निवासी	

इस तालिका को देखिए तो जो पृथ्वी-निवासियों के स्थान पर खड़ा होगा उस की दृष्टि सर्व प्रथम हज़रत आदम पर पड़ेगी और सब से अन्त में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर । मानों सब नबियों में से अन्तिम नबी वह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को ही ठहराएगा ।

(शेष पृष्ठ ९२० पर)

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۝

हे मोमिनो ! अल्लाह् को बहुत याद किया करो ।४२।

وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝

और प्रातः तथा सायंकाल उस की स्तुति किया करो ।४३।

هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ۝

वही है जो तुम पर अपनी ओर से कृपा करता है और उस के फ़रिश्ते भी तुम्हें आशीर्वाद देते हैं ताकि वे तुम्हें अंधकार (अज्ञानता) से निकाल कर प्रकाश (ज्ञान) की ओर ले जाए और वह मोमिनों पर बार-बार दया करने वाला है ।४४।

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ وَّاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ۝

जब वे उस से मिलेंगे तो उन्हें आशीर्वाद का उपहार शान्ति[1] के रूप में मिलेगा और वह उन के लिए बड़े आदर वाला प्रतिफल तय्यार करेगा ।४५।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّ

हे नबी ! हम ने तुझे इस हालत में भेजा है कि तू (संसार वालों का) निरीक्षक[2] भी

(पृष्ठ ९१९ का शेष)

इस के अतिरिक्त यदि उस हदीस पर विचार करें कि हज़रत आदम अभी पैदा भी नहीं हुए थे तब भी मैं 'ख़ातमुन्नबीय्यीन' था तो भी नबियों की वंशावली में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को पद की दृष्टि से सर्वोत्तम स्थान प्राप्त है । अतएव जब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम मेराज में सब से ऊपर गए तो मुहम्मदी-पद ही नुबुव्वत का अन्तिम चरण ठहरा । इस प्रकार भी वही अर्थ ठीक रहा जो हम ने किया है अर्थात् ख़त्मे नुबुव्वत (अन्तिम नबी) का यह अर्थ है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का पद सब नबियों से सर्व श्रेष्ठ है ।

1. इस से अभिप्राय यह है कि जब मोमिन लोग मरने के बाद जीवित होंगे तो उन की सन्तुष्टि के लिए अल्लाह् की ओर से शान्ति-रूपी आशीर्वाद का उपहार दिया जाएगा और उस शाब्दिक आशीर्वाद को साकार रूप देने के लिए उन मोमिनों को आदर और सत्कार वाली वस्तुएँ प्रदान की जाएँगी ।

2. निरीक्षक से यह अभिप्राय नहीं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम अपने समय के लोगों पर

(शेष पृष्ठ ९२१ पर)

نَذِيْرًا ﴿۴۶﴾

है और (मोमिनों को) शुभ-समाचार देने वाला भी है तथा (विरोधियों को) सावधान करने वाला भी है।४६।

وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿۴۷﴾

और अल्लाह की आज्ञा से उस की ओर बुलाने वाला तथा एक प्रकाशमान् सूर्य[1] बना कर भेजा है।४७।

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ﴿۴۸﴾

और मोमिनों को शुभ-समाचार दे दे कि उन्हें अल्लाह की ओर से एक बहुत बड़ा पुरस्कार मिलेगा।४८।

وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۴۹﴾

और इन्कार करने वालों तथा मुनाफ़िक़ों की बात कदापि न मान और उन के दुःख देने कि ओर ध्यान न दे और अल्लाह पर भरोसा कर और अल्लाह काम बनाने के लिए काफ़ी है।४९।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿۵۰﴾

हे ईमान लाने वालो! जब तुम मोमिन स्त्रियों से विवाह करो, फिर यदि उन्हें छूने से पहले ही तलाक़ दे दो तो तुम्हारा यह अधिकार नहीं कि उन से इद्दत की माँग करो। अतः चाहिए कि उन्हें कुछ सांसारिक लाभ पहुँचाओ और अच्छा व्यवहार करते हुए उन्हें विदा करो।५०।

(पृष्ठ ९२० का शेष)

दारोगा के रूप में नियुक्त किए गए हैं। पवित्र क़ुर्आन में लिखा है कि तुझे किसी पर दारोगा नियुक्त नहीं किया गया। यहाँ केवल यह तात्पर्य है कि तू आदर्श रूप में उन का निरीक्षक होगा, जब्रन नहीं।

1. इस स्थान पर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का नाम प्रकाश करने वाला दीपक या सूर्य रखा गया है अर्थात् आप के प्रकाश से प्रकाशित हो कर अनेक लोग तय्यार होते रहेंगे जो संसार को प्रकाशित करते रहेंगे जैसे चन्द्रमा सूर्य से प्रकाश ले कर अन्धकार को दूर कर देता है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْٓ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّآ اَفَاۗءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۡ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۤ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ قَدْ عَلِمْنَا مَا

हे नबी ! तेरी वर्तमान पत्नियों में से जिन को तू उन के महर[1] दे चुका है, हम ने उन्हें तेरे लिए जायज़ कर दी हैं इसी प्रकार भविष्य[2] के लिए वे महिलाएँ जिन के मालिक तेरे दाहिने हाथ हुए हैं जिन्हें अल्लाह युद्ध के पश्चात् तेरे अधिकार में लाया है तथा तेरे चाचा की पुत्रियाँ, तेरी फूफी की पुत्रियाँ, तेरे मामू की पुत्रियाँ और तेरी मौसियों की पुत्रियाँ, जिन्हों ने तेरे साथ हिजरत की है और ऐसी मोमिन स्त्री भी जिस ने अपने-आप को नबी के लिए समर्पित कर दिया, परन्तु शर्त यह है कि नबी भी उस से विवाह का इरादा करे[3] यह आदेश[4] विशेष कर तेरे ही लिए है; दूसरे मोमिनों के लिए नहीं।

---

1. पत्नियाँ तो सब के लिए वैध ही होती है, किन्तु हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की पत्नियों का उल्लेख इस लिए किया है कि इसी सूरः की आयत 29 में कहा गया है कि हे धर्मपत्नियो ! यदि तुम्हारे दिल में सांसारिक लाभ पाने की अभिलाषा हो तो मैं तुम्हें माया दे कर विदा कर देता हूँ। सो इस बात का निर्णय होना था। इस के पश्चात् किसी भी पत्नी ने नहीं कहा कि मुझे माया दे कर छोड़ दिया जाए। जिस से विदित होता है कि उन सभी के दिलों में धर्म से प्रेम था और सांसारिक माया की इच्छा नहीं थी। इस आयत में बताया गया है कि उन्हों ने अपने दिलों में माया छोड़ देने और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के साथ रहने का निर्णय कर लिया था। इस लिए वे हर तरह जायज़ थीं।

2. यह केवल एक आज्ञा है आदेश नहीं। फिर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने इस आज्ञा से कभी लाभ नहीं उठाया। इस आयत में केवल उन्हीं स्त्रियों का वर्णन है जो युद्ध के अवसर पर लड़ाई के मैदान में पकड़ी जाएँ। साधारण स्त्रियों पर यह आदेश लागू नहीं होता।

3. पवित्र क़ुर्आन की इस आयत से स्पष्ट होता है कि यह आदेश केवल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के लिए नहीं बल्कि सब नबियों के लिए है चाहे ये विगत समय के हों या भविष्य में होने वाले हों। साधारण मुसलमानों के लिए यह आदेश नहीं।

4. हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने ऐसी किसी स्त्री से विवाह नहीं किया। ये सारी बातें

(शेष पृष्ठ ९२३ पर)

فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْٓ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥١﴾

हम ने उन (मुसलमानों) पर उन की पत्नियों और उन की दासियों के बारे में जो बात ज़रूरी ठहराई है उसे भली-भाँति जानते हैं। ताकि तुझ पर कोई अनुचित प्रतिबन्ध न रहे और अल्लाह् बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है।५१।

تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْٓ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ۭ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۭ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ

तू उन पत्नियों में से जिसे चाहे अलग[1] रख और जिसे चाहे अपने पास रख और उन पत्नियों में से जिन्हें तू ने (किसी स्थान में) अलग कर दिया है किसी को अपने पास ले आए तो तुझ पर कोई दोष नहीं। यह व्यवहार इस बात के निकट है कि उन की आँखें ठंढी हों तथा वे चिन्ता न करें और जो

(पृष्ठ ९२२ का शेष)

आदेश के रूप में नहीं हैं। अत: विरोधियों का यह आरोप ठीक नहीं कि आप ने यह आदेश विशेष कर अपने लिए उतार लिया है। वस्तुत: आप ने इन आज्ञाओं को कभी नहीं अपनाया। इस के अतिरिक्त आयत 3 से स्पष्ट होता है कि यह आदेश केवल कुछ पत्नियों के विषय में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के पवित्र विचार को व्यक्त करने के लिए हैं न कि आप के लिए कोई विशेष राह खोलने के लिए।

1. इसी सूर: की आयत 29 में कहा गया था कि हे पत्नियों! यदि तुम्हें इस्लाम की अपेक्षा सांसारिक माया पाने का विचार अच्छा लगता हो तो मैं तुम्हें सांसारिक धन दे कर विदा किए देता हूँ परन्तु इस आयत में बताया गया है कि पत्नियों ने मौन रह कर यह निर्णय किया कि वे सांसारिक माया की अपेक्षा धर्म को प्रधानता देती हैं, किन्तु पति को भी तो यह अधिकार होना चाहिए कि यदि वह किसी पत्नी को माया-मोह वाली समझे तो उसे तलाक़ दे दे। अत: इन दोनों आयतों का विषय एक ही है। इस आयत के बाद किसी स्त्री की तलाक़ नहीं हुई। सूर: अहज़ाब की आयत 51 से सिद्ध होता है कि आप की किसी पत्नी ने माया को धर्म पर प्रधानता नहीं दी, तो आप ने भी इस आयत के उपरांत किसी पत्नी को तलाक़ नहीं दी। मानों आप का भी यही निर्णय था कि यद्यपि अल्लाह् ने मुझे तलाक़ देने का अधिकार दे दिया है, फिर भी इन पत्नियों ने एक उच्च आदर्श दिखाया है। अत: मुझे इन पत्नियों के बारे में तलाक़ का अधिकार नहीं बर्तना चाहिए।

اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿۵۲﴾

कुछ तू ने उन्हें दिया[1] है उस पर सब की सब प्रसन्न हो जाएँ और अल्लाह तुम्हारे दिलों की बातें जानता है तथा वह बहुत जानने वाला और बड़ी सूझ-बूझ से काम लेने वाला है।५२।

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيْبًا ﴿۵۳﴾

इस के बाद तेरे[2] लिए इन के सिवा अन्य स्त्रियाँ हलाल नहीं और न यह हलाल है कि तू इन पत्नियों को बदल कर दूसरी पत्नियों से विवाह करे, भले ही तुझे उन का सौन्दर्य कितना ही अच्छा लगे, सिवाय उन स्त्रियों के जिन के स्वामी तुम्हारे दाहिने हाथ हो चुके हैं और अल्लाह हर-एक बात का निरीक्षक है।५३। (रुकू ६/३)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ ۙ وَلٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَ

हे मोमिनो ! तुम नबी के घरों में खाने पर बुलाए जाने के सिवा कदापि प्रवेश न किया करो और न ही भोजन पकने की प्रतीक्षा में बैठे रहा करो तथा न ही बातें करने के शौक में बैठे[3] रहा करो। हाँ जब तुम्हें बुलाया जाए तो अवश्य चले जाया करो। फिर जब भोजन कर चुको तो अपने घरों को चले[4] जाया

1. हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की पत्नियाँ आप के आचरण से परिचित थीं। जब अल्लाह ने आप पर बात छोड़ दी तो वे प्रसन्न हो गईं कि अब जो कुछ होगा ठीक ही होगा।

2. इस से यह अभिप्राय है कि ऊपर बताई गई स्त्रियों को छोड़ कर कोई दूसरी स्त्री तेरे लिए वैध नहीं। अर्थात् हिजरत करने वाली नातेदार जायज़ स्त्रियों में से किसी के साथ विवाह कर सकता है, किन्तु इन के सिवा किसी और से नहीं। इस प्रकार आदेश का क्षेत्र सीमित कर दिया गया है। यह केवल एक इजाज़त थी। इस से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने कभी लाभ नहीं उठाया।

3. अर्थात् ठीक समय पर रसूल के घर आना-जाना चाहिए ताकि उन का समय नष्ट न हो।

4. इस से यह अभिप्राय नहीं कि केवल रसूल के घर में बिना आज्ञा भोजन के लिए न जाया

(शेष पृष्ठ ९२५ पर)

لَا مُسْتَأْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ؗ وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ الْحَقِّ ؕ وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْئَلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ ؕ وَمَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَاۤ اَنْ تَنْكِحُوْۤا اَزْوَاجَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ۵۴

करो। यह बात (व्यर्थ बैठे रहना या समय से पहले आ जाना) रसूल को कष्ट में डालती है, किन्तु वह तुम्हारी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए तुम (को रोकने) से संकोच करता था, परन्तु अल्लाह सत्य बात कहने से नहीं झिझकता और जब तुम उन (रसूल की पत्नियों) से कोई घरेलू चीज़ माँगो तो पर्दा के पीछे से माँगा करो। यह बात तुम्हारे दिलों तथा उन के दिलों के लिए अच्छी है और अल्लाह के रसूल को कष्ट देना तुम्हारे लिए ठीक नहीं और न यह ही ठीक है कि तुम इस के बाद कभी उस की धर्मपत्नियों से विवाह करो, क्योंकि अल्लाह के निर्णय के अनुसार यह बात बहुत बुरी है।५४।

اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۵۵

यदि तुम किसी बात को प्रकट करो अथवा छिपाओ तो भी अल्लाह हर-एक बात को भली-भाँति जानता है।५५।

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْۤ اٰبَآئِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآئِهِنَّ وَلَا

इन (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की धर्मपत्नियों) पर अपने पिताओं या अपने

(पृष्ठ ८७९ का शेष)

करो, क्योंकि दूसरे स्थान पर वर्णित है कि हर मुसलमान के घर में बिना आज्ञा प्रवेश करना वर्जित है। अत: यहाँ इस ओर संकेत किया गया है कि चूंकि क़ुर्आन-मजीद के अनुसार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम मुसलमानो के आध्यात्मिक पिता हैं और आप की पत्नियाँ उन की माताएं हैं। इसलिए इस से यह बात निकलती थी कि रसूल के घर बिना अनुमति के प्रवेश करना वैध है। अत: इस आयत से उस का निषेध किया गया है। दूसरी बात यह है कि बच्चे अपने माता-पिता के घर में देर तक बैठे रहते हैं, परन्तु रसूल तो आध्यात्मिक पिता होता है। उस की संतान तो हज़ारों होती हैं। यदि उस के घर उस की सारी सन्तान (मुसलमान) बारी-बारी आने लगे तो एक दिन छोड़ दूसरा दिन और दूसरा महीना भी बीत जाएगा तो इस प्रकार नबी कष्ट में पड़ेगा। अतएव इस आयत में उन सभी बातों पर प्रतिबन्ध लगाए गए हैं जिन से रसूल को कष्ट पहुँच सकता था।

إِخْوَانِهِنَّ وَلَآ أَبْنَآءِ إِخْوَانِهِنَّ وَلَآ أَبْنَآءِ أَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِينَ اللّٰهَ ۗ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٥٦﴾

पुत्रों[1] अथवा अपने भाइयों या अपने भतीजों अथवा अपने भाँजों या अपने जैसी दूसरी महिलाओं अथवा अपने अधीन दासियों के सामने होने में कोई प्रतिबन्ध नहीं और अल्लाह् के लिए संयम धारण करो। अल्लाह् प्रत्येक वस्तु को देख रहा है।५६।

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٥٧﴾

निस्सन्देह अल्लाह् इस नबी पर अपनी कृपा कर रहा है और उस के फ़रिश्ते भी (उसे आशीर्वाद दे रहे हैं अतः) हे मोमिनो! तुम भी इस रसूल पर दरूद भेजते रहो और उन के लिए प्रार्थना करते रहा करो और (पूरे जोश के साथ) उन के लिए शान्ति माँगते रहा करो।५७।

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٥٨﴾

वे लोग जो अल्लाह् और उस के रसूल को कष्ट पहुँचाते हैं अल्लाह् उन्हें इस संसार में भी तथा आख़िरत में भी अपने क़ुर्ब (सामीप्य) से वञ्चित कर देता है और उस ने उन के लिए अपमान-जनक अज़ाब तय्यार कर रखा है।५८।

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٥٩﴾ ع

वे लोग जो मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को बिना इस के कि उन्हों ने कोई अपराध किया हो दुःख देते हैं, मानों उन लोगों ने अपने ऊपर भयंकर झूठ और खुले-खुले पाप का बोझ उठा लिया है।५९। (रुकू ७/४)

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِينَ

हे नबी! अपनी पत्नियों, अपनी पुत्रियों तथा मोमिनों की पत्नियों से कह दे कि वे (जब

1. यह सर्वसाधारण आदेश है।

يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ۗ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٦٠

बाहर निकलें तो) अपनी बड़ी[1] चादरों को अपने सिरों पर से आगे खींच कर अपने सीनों तक ले आया करें। ऐसा करना इस बात को सम्भव बना देता है कि वे पहचानी जाएँ और उन्हें कोई कष्ट न दे सके तथा अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।६०।

لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَاۤ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٦١

मुनाफ़िक़ और वे लोग जिन के दिलों में रोग है तथा वे लोग जो मदीने में झूठी बातें फैलाते फिरते हैं। यदि वे इन बातों से नहीं रुकेंगे तो हम तुझे इन लोगों के ख़िलाफ़ (एक दिन) खड़ा कर देंगे, फिर वे तेरे साथ इस नगर में बहुत ही थोड़े समय तक पड़ोसियों के रूप में रह सकेंगे।६१।

مَّلْعُوْنِيْنَ ۛۚ اَيْنَمَا ثُقِفُوْۤا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ۝٦٢

वे जहाँ कहीं भी तुम्हारे वश में आएँ तो चाहिए कि पकड़े जाएँ और क़त्ल कर दिए जाएँ (क्योंकि वे अल्लाह की दया से वञ्चित कर दिए गए हैं)।६२।

سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۝٦٣

अल्लाह की उस रीति को (अपनाओ) जो उन लोगों में प्रचलित थी, जो तुम से पहले हो चुके हैं और तू कभी भी अल्लाह की रीति में कोई परिवर्तन नहीं पाएगा।६३।

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۗ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ

लोग तुझ से अन्त कर देने वाली घड़ी के बारे में पूछते हैं। तू कह दे कि उस का ज्ञान तो

---

1. इस आयत में पर्दा का विवरण है। अरब देश की स्त्रियाँ बाहर निकलते समय पंजाबी स्त्रियों की तरह छोटी चादरों से सीने ढाँकती थीं और बड़ी चादरों से घूँघट निकालती थीं। इसी से मिलता-जुलता रिवाज पंजाब में भी पाया जाता है। अल्लाह कहता है कि स्त्रियाँ जब भी बाहर निकलें तो सिर पर ओढ़ी हुई बड़ी चादरों को सिर से खींच कर सीने तक ला कर घूँघट निकालें कि मुँह नंगा न हो।

اللّٰهِ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ﴿٦٣﴾

केवल अल्लाह को है और तुम्हें क्या पता कि कदाचित वह घड़ी निकट ही हो ।६४।

إِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ﴿٦٤﴾

निस्सन्देह अल्लाह ने इन्कार करने वालों को अपने क़ुर्ब (निकटता) से वञ्चित कर दिया है और उन के लिए भड़कने वाला एक अज़ाब तय्यार किया है ।६५।

خٰلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٦٥﴾

जिस में वे सदैव रहते चले जाएँगे और वहाँ न कोई मित्र पाएँगे तथा न कोई सहायक ही ।६६।

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يٰلَيْتَنَا أَطَعْنَا اللّٰهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا ﴿٦٦﴾

जिस दिन उन के प्रमुख व्यक्तियों को आग पर उलटाया-पलटाया जाएगा और वे कहेंगे काश ! हम अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करते ।६७।

وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا ﴿٦٧﴾

और (साधारण लोग) कहेंगे कि हे हमारे रब्ब ! हम ने अपने सरदारों तथा बड़े लोगों की आज्ञा का पालन किया। सो उन्हों ने हमें सच्ची राह से भटका दिया ।६८।

رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا ﴿٦٨﴾ ع

हे हमारे रब्ब ! तू उन्हें दो-गुना अज़ाब दे और उन्हें अपनी दयालुता से बिल्कुल दूर कर दे ।६९। (रुकू ८/५)

يٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسٰى فَبَرَّأَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوا وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيهًا ﴿٦٩﴾

हे मोमिनो ! तुम उन लोगों की भाँति न बनो जिन्हों ने मूसा को दुःख दिया था, जिस पर अल्लाह ने उसे उन की बातों से निर्दोष ठहरा दिया था तथा वह अल्लाह के पास बड़ी शान रखता है ।७०।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝

हे मोमिनो ! अल्लाह् के लिए संयम धारण करो और सीधी-सीधी (अर्थात् सच्ची) बात कहा करो।७१।

يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝

(यदि तुम ऐसा करोगे) तो अल्लाह् तुम्हारे कर्मों को ठीक कर देगा और तुम्हारे दोष क्षमा कर देगा तथा जो व्यक्ति अल्लाह् और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करे वह महान सफलता पा लेता है।७२।

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ۝

हम ने कामिल अमानत (शरीअत) को आसमानों तथा ज़मीन और पर्वतों के सामने रखा था, किन्तु उन्होंने उस के उठाने से इन्कार कर दिया और उस से डर गए, परन्तु मनुष्य ने उसे उठा लिया। निश्चय ही वह अपनी जान पर बहुत अत्याचार[1] करने वाला एवं परिणाम से बे-परवाह था।७३।

لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ ع

(शरीअत का बोझ लाद देने का) फल यह हुआ कि मुनाफ़िक़ पुरुषों और मुनाफ़िक़ स्त्रियों को तो अल्लाह् ने अज़ाब दिया तथा मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों पर कृपा की और अल्लाह् है ही बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला।७४। (रुकू ९/६)

---

1. मूल शब्द 'ज़ुल्मन' से अभिप्राय है अपनी जान पर अत्याचार करने वाला अर्थात् अपने मन एवं इन्द्रियों को अवैध पदार्थों के प्रयोग करने से रोकने वाला।
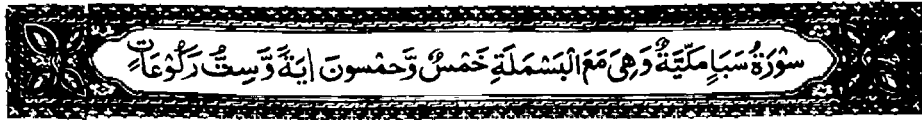
सूरः सबा

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की पचपन आयतें एवं छः रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ۗ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ②

हर-एक प्रकार की स्तुति अल्लाह ही के लिए है और जो कुछ आसमानों तथा ज़मीन में है सब उसी का है तथा (जिस प्रकार वह आदि[1] से स्तुति के योग्य है), अन्त में भी वही स्तुति के योग्य है और वह बड़ा हिक्मत[2] वाला और हर-एक बात जानने वाला है।२।

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا

जो कुछ ज़मीन में दाख़िल[3] होता है, वह उसे भी जानता है और जो कुछ उस से बाहर

1. मूल वाक्य में 'आदि' शब्द नहीं है केवल 'अन्त' शब्द है, परन्तु अरबी भाषा का नियम है कि जो प्रतियोगी शब्द एक दूसरे के मुक़ाबिले में हों उन में से एक का विलोप कर देते हैं और फिर वाक्य में से उस का अर्थ निकाल लेते हैं। यहाँ अन्त (आख़िरत) शब्द था। अतः हम ने आदि अर्थ का शब्द निकाल लिया।

2. अर्थात् अल्लाह ने वाणी उतारने में बड़ी हिक्मत रखी है, क्योंकि इस के द्वारा मानव हिदायत पाता है तथा अल्लाह से सम्बन्ध जोड़ लेता है और वह हर-एक बात को जानता है अर्थात् वह यह जानता था कि मानव उस के हिदायत के बिना कमाल तक नहीं पहुँच सकता।

3. पृथ्वी के भीतर और पाताल में रहने वाले जीव-जन्तुओं तथा उस में से निकलने वाले जीव-

(शेष पृष्ठ ९३१ पर)

يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۚ وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ③

निकलता है उसे भी जानता है एवं उसे भी जो आसमान से उतरता है तथा उसे भी जो आसमान की ओर चढ़ता है और वह बार-बार दया करने वाला और बहुत क्षमा करने वाला है।3।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۖ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عَالِمِ الْغَيْبِ ۖ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ④

और इन्कार करने वालों ने कहा कि हम अपनी जाति के सर्वनाश की अन्तिम घड़ी नहीं देखेंगे। तू कह दे ऐसा नहीं मुझे अपने उस रब्ब की सौगन्ध! जो ग़ैब का जानने वाला है और आसमानों तथा ज़मीन में से कोई वस्तु चाहे वह लाल चूँटी के बराबर हो अथवा उस से भी छोटी या उस से बड़ी हो, उस की दृष्टि से छिपी नहीं रहती। यह घड़ी तुम अवश्य देखोगे, क्योंकि वह स्पष्ट कर देने वाले एक लेख में सुरक्षित है।४।

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ⑤

(उस घड़ी का आना इसलिए भी ज़रूरी है) ताकि अल्लाह मोमिनों और ईमान के अनुकूल कर्म करने वालों को उन के ईमान तथा कर्मों के अनुसार प्रतिफल प्रदान करे। निस्सन्देह वे ऐसे लोग हैं जिन्हें अल्लाह की ओर से क्षमा तथा इज़्ज़त वाली रोज़ी सदा ही मिलती रहेगी।५।

وَالَّذِينَ سَعَوْ فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ

और वे लोग जो हमारे निशानों के बारे में हमें असमर्थ बनाने का प्रयत्न करते हैं उन्हें

(पृष्ठ ९३० का शेष)

जन्तुओं सभी को जानता है। इसी प्रकार नीचे गिरने वाली जातियों को भी जानता है जो ऊपर से नीचे गिर रही होती हैं तथा उन्नति करने वाली जातियों को भी जानता है जो मानों धरती से आसमान की ओर चढ़ रही होती हैं।

مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ⑥

उन के पाप के कारण पीड़ादायक अज़ाब पहुँचेगा।६।

وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ⑦

और वे लोग जिन्हें ज्ञान दिया गया है उस बात को सच्ची समझते हैं जो तेरे रब्ब की ओर से उतरी है और वे यह भी जानते हैं कि (वह शिक्षा) सामर्थ्य रखने वाले और स्तुति वाले अल्लाह की ओर ले जाती है।७।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ⑧

और इन्कार करने वाले लोग कहते हैं कि हे लोगो! क्या हम तुम्हें ऐसे व्यक्ति का पता बताएँ जो तुम्हें बताता है कि जब तुम मरने के बाद चूर्ण-विचूर्ण कर दिए जाओगे तो फिर तुम जुड़ कर एक नई मख़्लूक़ के रूप में बदल जाओगे।८।

اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ۗ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ⑨

क्या वह व्यक्ति अल्लाह पर झूठ गढ़ रहा है या उसे पागलपन है? यूँ नहीं, अपितु जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वे (ऐसे बुरे विचारों के कारण अभी से) अज़ाब और भयंकर पथभ्रष्टता में पड़े हुए हैं।९।

اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۚ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ⑩ ع

क्या उन्हों ने उस वस्तु की ओर ध्यान नहीं दिया जो उन्हें आकाश और धरती से उन के आगे और पीछे से घेरे हुए हैं। यदि हम चाहें तो उन्हें उन्हीं के देश में विपत्ति-ग्रस्त कर दें अथवा उन पर बादलों के कुछ टुकड़े[1] गिरा दें। इस में झुकने वाले मनुष्य के लिए एक निशान है।१०। (रुकू १/७)

1. अर्थात् उन के देश में लगातार वर्षा होती रहे और उन का सर्वनाश हो जाए।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ۭ يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ﴿١١﴾

और हम ने दाऊद पर अपनी ओर से कृपा की थी (और कहा था कि) हे पर्वत-निवासियो[1] ! और हे पक्षियो[2] ! तुम भी उस के साथ अल्लाह की स्तुति करो और हम ने उस के लिए लोहा नरम कर दिया था ।११।

اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١٢﴾

(और कहा था कि) पूरे-पूरे आकार के कवच बनाओ तथा उन के कुण्डल छोटे-छोटे रखो और (हे दाऊद के साथियो !) अपने ईमान के अनुकूल कर्म करो। मैं तुम्हारे कर्मों को देख रहा हूँ ।१२।

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ۭ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ

और हम ने सुलेमान के लिए ऐसी हवा[3] चलाई थी जिस का प्रातःकाल का चलना एक महीना के बराबर[4] होता था और सायंकाल का चलना भी एक महीना के बराबर होता था और हम ने उस के लिए ताँबे[5] का स्रोत पिघला दिया था और हम ने उसे जिन्नों[6] का एक दल भी दिया था जो

1. अर्थात् हे पर्वतनिवासियो ! तुम भी हज़रत दाऊद पर ईमान लाओ और अल्लाह की स्तुति करने में उन के साथ सम्मिलित हो जाओ।

2. अर्थात् सदाचारी लोग। विवरणार्थ देखिए सूरः मायदः टिप्पणी आयत 111।

3. ईरान की खाड़ी से अन्ताकिया तक हवा उत्तम गति से चलती रहती थी जिस से हज़रत सुलेमान के समय में समुद्री व्यापार गहमा-गहमी से होता था।

4. वायु के प्रातः और सायंकाल एक महीना के बराबर चलने से अभिप्राय यह है कि अनुकूल वायु व्यापारी जहाज़ को इतना दूर पहुँचा देती थी कि जितनी यात्रा एक महीना में एक यात्री कर सकता था और सायंकाल तक उतनी ही लम्बी यात्रा कर के लौट जाता था। मानो आप के राज्य-काल में वायु से काम लिया जाता था और व्यापार चमक उठा था।

5. अर्थात् ताँबा पिघलाने वाली औद्योगिक कारखाने बनाने का सामर्थ्य प्रदान किया था।

6. विवरण के लिए देखिए सूरः नम्ल टिप्पणी आयत 40।

يَدَيۡهِ بِاِذۡنِ رَبِّهٖ ؕ وَمَنۡ يَّزِغۡ مِنۡهُمۡ عَنۡ اَمۡرِنَا نُذِقۡهُ مِنۡ عَذَابِ السَّعِيۡرِ ⑬

उस के रब्ब की आज्ञा से उस के अधीन उस के आदेश के अनुसार काम करता था और (यह भी कह दिया था कि) उन में से जो कोई भी हमारे आदेशों से फिरेगा हम उसे भड़कता हुआ अज़ाब देंगे ।१३।

يَعۡمَلُوۡنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنۡ مَّحَارِيۡبَ وَتَمَاثِيۡلَ وَجِفَانٍ كَالۡجَوَابِ وَقُدُوۡرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعۡمَلُوۡۤا اٰلَ دَاوٗدَ شُكۡرًا ؕ وَقَلِيۡلٌ مِّنۡ عِبَادِيَ الشَّكُوۡرُ ⑭

वह जो कुछ चाहता था जिन्न (उद्दण्ड जातियों के सरदार) उस के लिए बनाते थे अर्थात् मस्जिदें, ढली हुई प्रतिमाएँ तथा बड़े-बड़े लगन जो हौज़ों के समान होते थे एवं भारी-भारी देगें जो हर समय चूल्हों पर रखी रहती थीं (और हम ने कहा) हे दाऊद के परिवार के लोगो! धन्यवाद करते हुए कर्म करो और मेरे बन्दों में से बहुत थोड़े लोग कृतज्ञ होते हैं ।१४।

فَلَمَّا قَضَيۡنَا عَلَيۡهِ الۡمَوۡتَ مَا دَلَّهُمۡ عَلٰى مَوۡتِهٖۤ اِلَّا دَآبَّةُ الۡاَرۡضِ تَاۡكُلُ مِنۡسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الۡجِنُّ اَنۡ لَّوۡ كَانُوۡا يَعۡلَمُوۡنَ الۡغَيۡبَ مَا لَبِثُوۡا فِى الۡعَذَابِ الۡمُهِيۡنِ ؕ ⑮

फिर जब हम ने उस के लिए मौत का निर्णय कर दिया तो उन (उद्दण्डी जातियों) को उस की मृत्यु की समाचार केवल धरती के एक कीड़े[1] ने दिया जो उस की लाठी (साम्राज्य) को खा रहा था। फिर जब वह गिर गया तो जिन्नों पर खुल गया कि यदि उन्हें परोक्ष का ज्ञान[2] होता तो वे अपमानजनक अज़ाब में पड़े न रहते ।१५।

---

1. अर्थात् सुलेमान का वारिस माया का लोभी था। वह कोई अच्छा व्यक्ति न था। हज़रत सुलेमान के पश्चात् लोग उस के व्यवहार के कारण उस से बिदक गए और विद्रोह शुरू हो गया। (देखिए बाइबिल राजाओं का वृत्तान्त पहला भाग-12)।

2. अर्थात् यदि उन्हें इस बात का पहले ज्ञान होता कि हज़रत सुलेमान जैसे शक्तिशाली सम्राट के साम्राज्य का एक दिन सर्वनाश हो जाएगा तो वे उस आने वाले स्वतन्त्रता दिवस की मधुर स्मृति में उन की आज्ञा का पालन ही न करते।

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ ۖ جَنَّتَانِ عَن يَمِينٍ وَشِمَالٍ ۖ كُلُوا مِن رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَرَبٌّ غَفُورٌ ﴿١٦﴾

सबा जाति के लिए उन के देश में एक बड़ा निशान दो बाग़ों के रूप में था जिन में से एक दाहिनी ओर था तथा एक बाईं ओर (और हम ने उन से कह रखा था कि) अपने रब्ब की दी हुई रोज़ी में से खाओ तथा उस का धन्यवाद करो। तुम्हारा नगर एक सुन्दर नगर है और तुम्हारा रब्ब बहुत क्षमा करने वाला है।१६।

فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُم بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ أُكُلٍ خَمْطٍ وَأَثْلٍ وَشَيْءٍ مِّن سِدْرٍ قَلِيلٍ ﴿١٧﴾

फिर भी उन्हों ने (हक़ से) मुँह मोड़ लिया तब हम ने उन पर एक ऐसी बाढ़ भेजी जो प्रत्येक वस्तु का सर्वनाश करती जाती थी और हम ने उन के दो उत्तम बाग़ों के स्थान पर दो ऐसे बाग़ दिए जिन के फल कड़ुए-कसैले थे जिन में झाऊ पाया जाता था या कुछ थोड़ी सी जंगली बेरियाँ थीं।१७।

ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُم بِمَا كَفَرُوا ۖ وَهَلْ نُجَازِي إِلَّا الْكَفُورَ ﴿١٨﴾

हम ने उन्हें यह दण्ड उन की कृतघ्नता के कारण दिया था और हम कृतघ्न लोगों को ही ऐसा बदला दिया करते हैं।१८।

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَقَدَّرْنَا فِيهَا السَّيْرَ ۖ سِيرُوا فِيهَا لَيَالِيَ وَأَيَّامًا آمِنِينَ ﴿١٩﴾

और हम ने उन के तथा उन की बस्तियों के बीच जिन्हें हम ने बरकत दी थी बहुत सी बस्तियाँ बसा दीं जो एक-दूसरे के आमने-सामने और आस-पास थीं और हम ने एक बस्ती से दूसरी बस्ती तक आने-जाने की यात्रा छोटी कर दी थी तथा कहा था कि रातों को भी तथा दिनों को भी उन में पूर्ण निश्चिन्त हो कर यात्रा किया करो।१९।

فَقَالُوا رَبَّنَا بَاعِدْ بَيْنَ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ

परन्तु उन्हों ने (धन्यवाद करने की अपेक्षा) यह कहा कि हे हमारे रब्ब ! हमारी यात्रा

فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۲۰﴾

को लम्बी[1] बना दे (ताकि यात्रा का आनन्द आए) और उन्हों ने स्वयं अपने-आप पर अत्याचार किया। अतः हम ने उन का नाम तक मिटा दिया और उन्हें पुराने समय की कहानियाँ बना दिया[2] तथा उन्हें विनष्ट कर के चूर्ण-विचूर्ण कर दिया। इस बात में प्रत्येक धैर्यवान और बड़े धन्यवादी के लिए बहुत से निशान हैं।२०।

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۱﴾

और इब्लीस ने उन के बारे में अपना विचार सत्य सिद्ध कर दिया तथा मोमिनों के गिरोह के सिवा शेष लोगों (अर्थात् इन्कार करने वालों) ने उन का अनुसरण किया।२१।

وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ؕ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿۲۲﴾

वास्तव में उस (शैतान) को उन पर कोई अधिकार न था। (यह केवल इस कारण हुआ) ताकि हम उन लोगों को जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों से जिन्हें आख़िरत के बारे में सन्देह हैं श्रेष्ठता प्रदान कर के उन के अन्दर की हक़ीक़त खोल दें और तेरा रब्ब हर बात का निरीक्षक है।२२। (रुकू २/८)

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ

तू कह दे कि जिन लोगों को तुम अपने विचार के अनुसार अल्लाह के सिवा पुकारते हो उन्हें

1. हज़रत सुलेमान का साम्राज्य फ़लस्तीन और उस के परे एक और देश से ले कर यमन, देश सहित अरब सागर के तट तक फैला हुआ था और अदन से ले कर फ़ारस की खाड़ी तक सारा अरब देश उन के अधीन था, परन्तु आप के पश्चात् उस का ह्रास हुआ तो अरब देश स्वतन्त्र हो गया और देश में अराजकता फैलने से नगर उजड़ गए तथा यात्रा लम्बी और कठिन बन गई।

2, अर्थात् उन का इतिहास ऐसा मिटा कि उन की घटनाएं लोगों को कहानियाँ प्रतीत होने लगीं।

مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ۝

(अपनी सत्यता के लिए) बुला लो । वे (आसमानों तथा ज़मीन में) एक छोटी चींटी के बराबर भी किसी वस्तु के मालिक नहीं तथा उन दोनों (के स्वामित्व) में उन का कुछ भी साझा नहीं और न उस का उन में से कोई सहायक है ।२३।

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ۭ حَتّٰٓى اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ۭ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝

और अल्लाह के पास उस व्यक्ति की सिफ़ारिश और शफ़ाअत के सिवा जिसे उस ने सिफ़ारिश की आज्ञा दी हो (अथवा जिस व्यक्ति के बारे में अल्लाह ने सिफ़ारिश करने की आज्ञा दी हो) किसी दूसरे की सिफ़ारिश काम नहीं देती यहाँ तक कि जब उन (सिफ़ारिश की आज्ञा पाने वालों) के दिलों पर से भय जाता रहता है तो दूसरे लोग उन से कहते हैं कि अभी तुम्हारे रब्ब ने तुम से क्या कहा था ? इस पर वे उत्तर देते हैं कि जो कुछ कहा था सच ही कहा था तथा वह बड़ी शान वाला एवं बड़े अधिकारों वाला है ।२४।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّآ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

और तू कह दे कि (हे लोगो !) आसमानों तथा ज़मीन से तुम्हें कौन रोज़ी प्रदान करता है । (फिर स्वयं ही इस प्रश्न के उत्तर में) कह कि अल्लाह (और कौन) और मैं तथा तुम[1] या तो हिदायत पर क़ायम हैं अथवा खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़े हुए हैं ।२५।

1. इस आयत में दो गिरोहों का वर्णन है और उन दोनों के प्रतिफल का भी एक साथ वर्णन किया गया है अब अर्थ करते समय पहले प्रतिफल को पहले गिरोह की ओर तथा दूसरे प्रतिफल को दूसरे गिरोह की ओर लौटाया जाएगा और अर्थ इस प्रकार हो जाएगा कि मैं तो हिदायत पर हूँ और तुम्हारे भाग में पथभ्रष्टता आएगी ।

قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّاۤ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٦﴾

तू कह दे कि (यदि हम तुम्हारे विचार के अनुकूल अपराधी हैं तो) हमारे अपराधों के बारे में तुम से पूछा नहीं जाएगा तथा न ही हम से तुम्हारे कर्मों के बारे में पूछा जाएगा।२६।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٧﴾

और यह भी कह दे कि हमारा रब्ब (एक दिन) तुम्हें और हमें (एक युद्ध के मैदान में) इकट्ठा करेगा, फिर सत्य और न्याय के साथ हम दोनों के बीच निर्णय कर देगा तथा वह सब से उत्तम और श्रेष्ठ निर्णय करने वाला है एवं वह प्रत्येक बात को अच्छी तरह जानता है।२७।

قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَاۤءَ كَلَّا بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٨﴾

तू कह दे कि मुझे दिखाओ तो सही कि जिन्हें तुम साझी बना कर उस के साथ मिलाते हो (उस का कोई साझी बनाना) कदापि उचित नहीं, अपितु सत्य बात यह है कि अल्लाह ग़ालिब (और) बड़ी हिक्मतों वाला है।२८।

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَاۤفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾

और हम ने तुझे मानव[1]-मात्र की ओर ऐसा रसूल बना कर भेजा है जो (मोमिनों को) शुभ-समाचार सुनाता है तथा (इन्कार करने वालों को) सावधान करता है, परन्तु लोगों में से बहुत से लोग इस सत्य को नहीं जानते।२९।

---

1. अरबी के मूल शब्द का यह अर्थ है कि किसी वस्तु को इस प्रकार एकत्रित किया जाए कि उस का कोई भाग बाहर न रहे। यह आयत इस बात का प्रबल प्रमाण है कि भले ही कोई व्यक्ति यहूदी हो या ईसाई अथवा किसी अन्य धर्म का अनुयायी। चाहे वह क़ियामत तक किसी शताब्दी में पैदा हो वह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की नुबुव्वत के अधीन है। ऐसा दावा बाइबिल, इन्जील तथा वेद आदि किसी धर्म-ग्रन्थ ने नहीं किया। सब धर्मों, सब युगों तथा सब जातियों की ओर होने का दावा केवल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का ही है जो इस आयत से सिद्ध है।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٣٠

और वे (आवेश में आ कर) कह देते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह (समस्त विश्व को रिसालत का सन्देश देने का) वादा कब पूरा होगा ? ।३०।

قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ۝٣١ ع

तू कह दे कि तुम्हारे लिए एक दिन[1] की अवधि निश्चित है। तुम न तो उस से एक घड़ी पीछे रह सकोगे तथा न एक घड़ी आगे ही बढ़ सकोगे ।३१। (रुकू ३/९)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖۚ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ ِۨالْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَاۤ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ۝٣٢

और इन्कार करने वाले लोग कहते हैं कि हम न तो इस क़ुर्आन को मानते हैं न उन भविष्यवाणियों को जो इस के सम्बन्ध में की गई हैं और यदि तू अत्याचारियों को उस समय देखे जब वे अपने रब्ब के सामने खड़े किए जाएँगे और उन में से कुछ लोग दूसरे लोगों के साथ विवाद कर रहे होंगे तथा कमज़ोर लोग घमण्डी लोगों से कह रहे होंगे कि यदि तुम न होते तो हम अवश्य ही ईमान लाते ।३२।

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْۤا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ۝٣٣

तब घमण्डी लोग कमज़ोर लोगों से प्रत्युत्तर में कहेंगे कि जब हिदायत तुम्हारे पास आ गई थी तो क्या हम ने तुम्हें उस से रोका था ? (कभी नहीं) अपितु तुम स्वयं ही अपराधी थे ।३३।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ

और वे लोग जिन्हें कमजोर समझा गया था, घमण्डी लोगों से कहेंगे कि (हम यूँ ही अपराधी

1. एक दिन से तात्पर्य एक हज़ार वर्ष है। हदीस शरीफ़ के अनुसार इस्लाम की उन्नति के पहले तीन सौ वर्ष इस एक हज़ार वर्ष में जोड़ने से यह वादा तेरहवीं शताब्दी हिजरी तक चलेगा और चौदहवीं शताब्दी से इस्लाम का उन्नति-काल पुनः प्रारम्भ हो जाएगा।

الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَأْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ۭ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۭ وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْٓ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

नहीं बन गए) बल्कि तुम्हारे रात-दिन के उपायों ने हमें ऐसा बना दिया जब कि तुम हमें अल्लाह के आदेशों का इन्कार कर देने तथा उस का साझी बनाने की शिक्षा दिया करते थे और जब (उस उद्दण्डता और सकर्शी के फलस्वरूप) उन्हों ने एक भयंकर अज़ाब देखा तो उन लोगों ने(जो अपने को बड़ा समझते थे) अपनी लज्जा को छिपाना प्रारम्भ कर दिया[1] और उन में से जो कट्टर इन्कार करने वाले होंगे, हम उन की गर्दनों में तौक़ डाल देंगे। उन्हें जो दण्ड दिया जाएगा वह उन के कर्मों के अनुसार ठीक-ठीक होगा।३४।

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝

और हम ने किसी बस्ती में सावधान करने वाला रसूल नहीं भेजा कि उस बस्ती के धनवान लोगों ने यह न कहा हो कि (हे रसूलो !) हम तुम्हारी रिसालत (अर्थात् पैग़म्बरी) का इन्कार करते हैं।३५।

وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ۝

और वे यह भी कहते रहे हैं कि हम तुम से धन एवं सन्तान में बढ़े हुए हैं और हम पर कभी भी अज़ाब नहीं आएगा।३६।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ ع

तू कह दे कि मेरा रब्ब जिस के लिए चाहता है रोज़ी बढ़ाता है और जिस के लिए चाहता है तंग कर देता है, परन्तु लोगों में से बहुत से लोग जानते नहीं।३७। (रुकू ४/१०)

وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا

और तुम्हारे धन तथा संतानें ऐसी चीज़ नहीं कि तुम्हें हमारा क़ुर्ब (निकटता) प्रदान कर

1. कि हम तो इस बात से प्रसन्न थे कि हमें अल्लाह का साझी ठहराया जाता है, परन्तु आज हमें एक बड़ा अज़ाब मिल रहा है।

زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِى الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿۳۸﴾

सकें। हाँ! जो कोई ईमान लाता है और उस के अनुकूल उचित कर्म करता है (वही हमारा क़ुर्ब (निकटता पा सकता है) तथा ऐसे ही लोगों को उन के शुभ-कर्मों का प्रतिफल बढ़ा-चढ़ा कर मिलेगा तथा वे चौबारों में शान्तिमय-जीवन व्यतीत करेंगे।३८।

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِىْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِى الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿۳۹﴾

और वे लोग जो हमारे निशानों के बारे में हमें असफल करने के लिए प्रयत्न करते हैं, वे लोग कठोर अज़ाब के सामने पेश किए जाएँगे।३९।

قُلْ اِنَّ رَبِّىْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَىْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۴۰﴾

तू कह दे कि मेरा रब्ब अपने बन्दों में से जिस की रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है तथा जिस की चाहता है तंग कर देता है और जो कुछ भी तुम ख़र्च करो उस का परिणाम वह अवश्य निकालेगा और वह सारे रोज़ी देने वालों में से सब से अच्छा है।४०।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿۴۱﴾

और जिस दिन वह (अल्लाह) उन सब को एकत्रित करेगा फिर वह फ़रिश्तों से कहेगा कि क्या ये लोग तुम्हारी उपासना किया करते थे?।४१।

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿۴۲﴾

वे कहेंगे कि तू पवित्र है, इन को छोड़ कर केवल तू ही हमारा मित्र है बल्कि वास्तविकता यह है कि वे केवल काल्पनिक और छिपी रहने वाली सत्ताओं की उपासना किया करते थे और उन में से बहुत से उन सत्ताओं पर ईमान लाते थे।४२।

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۗ وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٢﴾

अत: उन से कहा जाएगा कि आज तुम में से कोई भी एक-दूसरे को न तो लाभ पहुँचा सकेगा तथा न हानि और हम अत्याचारियों से कहेंगे कि उस नरक का अज़ाब चखो जिसे तुम झुठलाते थे ।४३।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَن يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُكُمْ ۚ وَقَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا إِفْكٌ مُّفْتَرًى ۚ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٤٣﴾

और जब उन के सामने हमारे खुले खुले आदेश पढ़ कर सुनाए जाते हैं, तो वे कहते हैं कि यह केवल ऐसा व्यक्ति है जो तुम्हें उन (सत्ताओं) की उपासना से रोकना चाहता है जिन की उपासना तुम्हारे पूर्वज किया करते थे तथा वे कहते हैं कि यह क़ुर्आन मनगढ़त झूठ है और जब उन के पास कामिल सच्चाई आ जाती है तो इन्कार करने वाले लोग विवश हो कर यह कहते हैं कि यह तो एक खुला-खुला छल-कपट[1] है ।४४।

وَمَا آتَيْنَاهُم مِّن كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا ۖ وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِن نَّذِيرٍ ﴿٤٤﴾

और हम ने उन्हें कोई (आसमानी) किताबें नहीं दीं जिन्हें वे पढ़ते हों (और उन में ऐसी व्यर्थ बातें लिखी हों) और न हम ने उन की ओर तुझ से पहले कोई ऐसा डराने वाला भेजा है (कि जिस ने ऐसी व्यर्थ बातें उन्हें सिखाई हों) ।४५।

وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَغُوا مِعْشَارَ

और जो लोग उन से पहले थे उन्हों ने भी (अपने रसूलों को) झुठलाया ही था और इस समय के लोगों को उस शक्ति

1. मूल शब्द 'सिह्र' का अर्थ जादू भी है और मनोहर बात भी। अत: इन्कार करने वाले लोग जब यह देखते हैं कि पवित्र क़ुर्आन की सच्चाई लोगों का मन मोह रही है तो वे अपने साथियों को छल देने के लिए कहते हैं कि मुहम्मद साहब कुछ मन-मोहक बातें कह देते हैं अन्यथा वे हैं झूठे ।

مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۣ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝

का दसवाँ भाग भी नहीं मिला जो हम ने उन से पहले लोगों को दी थी, किन्तु इन लोगों ने (पहलों की रुसवाई एवं दण्ड देख लेने पर भी) हमारे रसूलों का इन्कार ही किया था। सो (अब देख लें कि इन परिस्थितियों में) मेरे इन्कार का परिणाम (अज़ाब) कैसा होता है।४६। (रुकू ५/११)

قُلْ اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۣ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ۝

तू कह दे कि मैं तुम्हें बस एक का उपदेश देता हूँ। वह यह बात है कि तुम अल्लाह के सामने दो-दो और अकेले-अकेले खड़े हो जाओ, फिर सोचो (तो अवश्य यही परिणाम निकलेगा) कि तुम्हारा यह रसूल पागल नहीं है। वह तो तुम को भविष्य में आने वाले कठोर अज़ाब से सावधान करने वाला है।४७।

قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝

तू कह दे कि मैं ने तुम से (रिसालत के प्रचार के लिए) जो भी बदला माँगा हो वह तुम ही ले लो। मेरा बदला केवल अल्लाह पर है और वह प्रत्येक वस्तु को देख रहा है।४८।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝

(उन से) कह दे कि मेरा रब्ब निश्चय ही झूठ को सत्य द्वारा टुकड़े-टुकड़े कर रहा है वह प्रत्येक गुप्त बात को भली-भाँति जानता है।४९।

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ۝

तू कह दे कि कामिल हक़ आ गया है एवं झूठ कोई चीज़ पैदा नहीं करता और न किसी विनष्ट पदार्थ को पुनः वापस ही ला सकता है[1]।५०।

1. अभिप्राय यह है कि सच्चे और सफल आन्दोलन सच्चाई से पैदा होते हैं। झूठ कोई भी सफल

(शेष पृष्ठ ९४४ पर)

قُلْ اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِيْٓ اِلَيَّ رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ۝

तू कह दे कि यदि मैं पथभ्रष्ट हूँ तो मेरी पथभ्रष्टता की विपत्ति मेरी ही जान पर पड़ेगी और यदि मैं हिदायत पर हूँ तो केवल उस वह्य के कारण हूँ जो मेरे रब्ब ने मुझ पर उतारी है। निस्सन्देह वह प्रार्थनाओं को बहुत सुनने वाला एवं बन्दों के निकट ही रहने वाला है।५१।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۝

और यदि तू उस परिस्थिति को देखे जब ये (अल्लाह के अज़ाब के कारण) घबरा जाएँगे तथा उन्हें भागने की कोई राह नहीं मिलेगी और वे निकट के एक मकान से पकड़ लिए जाएँगे (तो तुझे विदित हो जाएगा कि ये लोग कितने डरपोक हैं)।५२।

وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ۝

और कहेंगे कि हम इस (कलाम) पर ईमान ला चुके हैं, परन्तु उन्हें इस (ईमान) का पाना इतनी दूर जा चुकने के पश्चात् कैसे सम्भव हो सकता है ?।५३।

وَّقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُوْنَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ۝

और वे इस से पहले इस का इन्कार कर चुके हैं तथा दूर बैठे बिना सोच-विचार के व्यर्थ आक्षेप लगाते रहे हैं।५४।

(पृष्ठ ९४३ का शेष)

आन्दोलन नहीं चला सकता जो सच के मुक़ाबिले से ठहर सके और जब सच आ जाए तथा झूठ मिट जाए तब झूठ में यह शक्ति नहीं होती कि वह अपने मुर्दा आन्दोलन को जीवित कर सके। (देखिए सूरः बनीइस्राईल रुकू 9) हाँ ! यह शक्ति केवल सच को ही प्राप्त है कि वह मर-मर कर अमर बनता रहता है और अपने शत्रुओं को असफल बनाता रहता है जैसा कि इस्लाम का पुनरुत्थान इस बात का प्रबल प्रमाण है।

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ
بِأَشْيَاعِهِم مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍ ﴿٥٥﴾ ع

और उन के तथा उन की कामनाओं के बीच रोक डाल दी गई है जैसा कि उन से पहले उन्हीं जैसे लोगों से व्यवहार किया था, वे भी एक ऐसी शंका में पड़े थे जो व्याकुलता पैदा करने वाली थी।५५। (रुकू ६/१२)
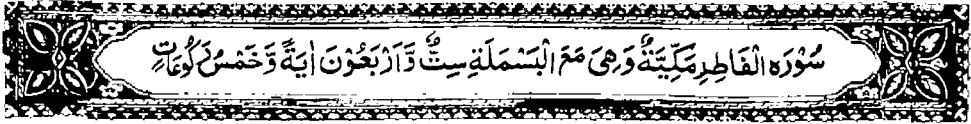
सूर: अल् - फ़ातिर

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की छियालीस आयतें एवं पांच रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ؕ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

हर प्रकार की स्तुति अल्लाह ही के लिए है जो आसमानों तथा ज़मीन को(एक नवीन[1] व्यवस्था के अनुसार) पैदा करने वाला है और फ़रिश्तों को ऐसी परिस्थिति में रसूल बना कर भेजने वाला है जब कि उन के पंख कभी तो दो-दो होते हैं और कभी तीन-तीन और कभी चार-चार। (उन फ़रिश्तों के पंख) पैदा करने में वह (अल्लाह) जितनी चाहता है बढ़ोतरी[2] कर देता है। अल्लाह प्रत्येक बात के करने पर पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है।२।

1. मूल शब्द 'फ़ातिर' का अर्थ है बिल्कुल नए सिरे से पैदा करना। आकाश और पृथ्वी की सृष्टि तो पहले हो चुकी थी। अत: दो सृष्टियों के उपलक्ष्य और फ़ातिर शब्द को दृष्टि में रखते हुए अनुवाद में 'नवीन व्यवस्था के अनुसार' शब्द बढ़ाए गए हैं।

2. इस स्थान पर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की वह्य की ऊँची शान बताई गई है कि इस रसूल पर ऐसे फ़रिश्ते उतरेंगे जो अल्लाह के कई-कई गुणों को स्पष्ट करने वाले होंगे, दो-दो गुणों के, तीन-तीन के और चार-चार के, परन्तु इन पर ही बस नहीं, अल्लाह चाहेगा तो पवित्र क़ुर्आन की वह्य लाने वाले फ़रिश्तों के पंखों की संख्या अर्थात् अल्लाह के उन गुणों को जिन को वह प्रकट करने वाले होंगे बढ़ा देगा।

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْ بَعْدِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

अल्लाह लोगों के लिए जो भी दया का द्वार खोले, उसे कोई बन्द करने वाला नहीं तथा दयालुता के जिस द्वार को वह बन्द कर दे उसे उस के बाद कोई चालू करने वाला नहीं और वह बड़ा ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है।३।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۖ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝

हे लोगो ! अल्लाह की जो निअमत तुम पर उतरी है उसे याद करो। क्या अल्लाह के सिवा कोई दूसरा पैदा करने वाला है जो आकाश और पृथ्वी से तुम्हें रोज़ी प्रदान करता हो ? उस के सिवा कोई उपास्य नहीं, फिर तुम किधर को बहका कर ले जाए जा रहे हो।४।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝

यदि ये लोग तुझे झुठलाते हैं तो (क्या चिन्ता है) तुझ से पहले जितने रसूल हो चुके हैं उन्हें भी झुठलाया गया था और सारी बातें (निर्णय के लिए) अल्लाह ही के सामने पेश की जाएँगी।५।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝

हे लोगो ! अल्लाह की प्रतिज्ञा निश्चय ही सत्य है। अतः तुम्हें सांसारिक-जीवन धोखे में न डाले और अल्लाह के बारे में तुम्हें कोई धोखा देने वाला धोखा न दे।६।

اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ۚ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝

निस्सन्देह शैतान तुम्हारा शत्रु है। अतः तुम उसे शत्रु ही समझो। वह अपने साथियों को केवल इसलिए बुलाता है कि वे नरक वाले बन जाएं।७।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

वे लोग जिन्हों ने इन्कार किया है उन के लिए कठोर अज़ाब निश्चित है और वे लोग जो

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝

ईमान ला चुके हैं और उन्हों ने अपने ईमान के अनुकूल कर्म भी किए उन के लिए क्षमा और बहुत बड़ा पुरस्कार है।८। (रुकू १/१३)

اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ۭ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ڮ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝

क्या जिस व्यक्ति को उस के बुरे कर्म शोभायमान कर के दिखाए गए हों और वह उस को अच्छा समझता हो (वह हिदायत पा सकता है?) अतः याद रखो कि अल्लाह जिसे चाहता है उस का नाश कर देता है तथा जिसे चाहता है (अर्थात् योग्य पाता है) उसे सफलता का मार्ग दिखा देता है। अतः तेरी जान उन की चिन्ता में निराशा और दुःख के कारण न चली जाए। अल्लाह उन के कर्मों को भली-भाँति जानता है। (सो अल्लाह का दण्ड कर्मों के अनुसार होता है, अकारण नहीं)।९।

وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ۝

और अल्लाह हवाएँ भेजता है जो बादलों को उठाती हैं, फिर हम उन्हें मुर्दा-देश की ओर चला कर ले जाते हैं तथा इस के द्वारा बंजर भूमि को जीवित करते हैं। इसी प्रकार मरने के बाद जी उठने का नियम है।१०।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ۭ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ۭ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ

जो कोई सम्मान चाहता है उसे याद रखना चाहिए कि सब सम्मान अल्लाह के हाथ में है। पवित्र बातें उसी की ओर चढ़ती है[1] और ईमान के अनुकूल किया हुआ कर्म उन्हें उठाता है और जो लोग (तुम्हारे विरुद्ध) बुरी योजनाएँ बनाते हैं उन के लिए कठोर

1. अर्थात् पवित्र बातों को अल्लाह स्वीकार करता है।

وَمَكْرُ أُولَٰئِكَ هُوَ يَبُورُ ⑩

अज़ाब निश्चित है तथा उन लोगों की योजनाएँ मलियामेट होने वाली हैं।११।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُعَمَّرٍ وَلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهِ إِلَّا فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ⑪

और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर तुम्हें जोड़ों के रूप में बनाया और कोई स्त्री गर्भवती नहीं होती तथा न वह बच्चा जनती है, परन्तु वह सब अल्लाह के ज्ञान के अनुसार होता है और न कोई लम्बी आयु वाला लम्बी आयु पा सकता है तथा न किसी की आयु में कोई कमी की जा सकती है, किन्तु वह एक नियम के अनुसार होती है। यह बात अल्लाह के लिए बिल्कुल आसान है।१२।

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ هَٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَائِغٌ شَرَابُهُ وَهَٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۖ وَمِنْ كُلٍّ تَأْكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُونَ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا ۖ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ⑫

और ऐसे दो समुद्र कदापि एक समान नहीं हो सकते कि उन में से एक तो मीठा एवं मनभाता हो और उस का पानी पीने पर गले से आसानी से उतर जाता हो और दूसरा अत्यन्त खारा, गला जला देने वाला हो, फिर भी तुम उन दोनों समुद्रों (या नदियों) से ताज़ा माँस खाते हो तथा उन में से आभूषणों के रूप में प्रयुक्त होने वाले पदार्थ निकालते हो (अर्थात् मोती आदि) जिन्हें तुम पहनते हो और तुम नौकाओं को देखते हो कि उन (समुद्रों) में लहरों को चीरती हुई चली जाती है ताकि तुम उस (अल्लाह) की कृपा को ढूँढ़ो और ताकि तुम कृतज्ञ बन जाओ।१३।

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ

वह रात को दिन में तथा दिन को रात में प्रविष्ट करता है और उस ने सूर्य एवं चन्द्रमा को सब की सेवा में लगा रखा है।

مُسَمًّى ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ﴿۱۴﴾

इन में से प्रत्येक निश्चित समय तक के लिए चलता चला जा रहा है। यह है तुम्हारा रब्ब ! साम्राज्य उसी का है और जिन्हें तुम उस के सिवा पुकारते हो वे खजूर की गुठली के बीच वाले छिलके[1] के बराबर भी किसी वस्तु के स्वामी नहीं ।१४।

اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ﴿۱۵﴾ ع

यदि तुम उन्हें बुलाओ तो वे तुम्हारी प्रार्थना कदापि नहीं सुनेंगे और यदि सुन भी लें तो तुम्हारे लाभ के लिए उसे स्वीकार नहीं कर सकेंगे और फिर क़ियामत के दिन तुम्हारे शिर्क का इन्कार कर देंगे और तुझे जानकर[2] से बढ़ कर कोई भी शुभ-समाचार नहीं दे सकता ।१५। (रुकू २/१४)

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۱۶﴾

हे लोगो ! तुम अल्लाह के मुहताज हो, परन्तु अल्लाह किसी का भी मुहताज नहीं अपितु वह समस्त प्रकार की स्तुतियों का स्वामी है (अर्थात् दूसरों की आवश्यकताएँ पूरी करता है) ।१६।

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿۱۷﴾

यदि वह चाहे तो तुम सब को नष्ट कर दे और एक नई मख़्लूक़ पैदा कर दे ।१७।

وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿۱۸﴾

और ऐसा कर देना अल्लाह के लिए कोई कठिन बात नहीं है ।१८।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ

और कोई बोझ उठाने वाली जान किसी दूसरे का बोझ नहीं उठा सकती और यदि

---

1. यह अरबी भाषा का मुहावरा है और इस से अभिप्राय यह है कि कृत्रिम उपास्य ईश्वरीय साम्राज्य में किसी पदार्थ के नाम मात्र भी स्वामी नहीं हैं।

2. अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के सिवा जिन को वह्य होती है।

إِلَى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۗ إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۚ وَمَن تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿١٩﴾

कोई बोझ मे दबा हुआ व्यक्ति अपने बोझ को उठाने के लिए दूसरों को (सहायतार्थ) पुकारे तो उस का लेशमात्र बोझ नहीं उठाया जाएगा। वह भले ही कितना निकट-सम्बन्धी क्यों न हो। तू तो केवल उन लोगों को सावधान कर सकता है जो एकान्त में भी अपने रब्ब से डरते हैं तथा नमाज़ विधिवत पढ़ते है और जो व्यक्ति पवित्र होता है वह अपनी जान के भले के लिए पवित्र होता है और अन्ततः सभी को अल्लाह् की ओर ही लौट कर जाना है।१९।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ﴿٢٠﴾

और अन्धा तथा आँखों वाला बराबर नहीं हो सकते।२०।

وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ﴿٢١﴾

और न ही अन्धेरा तथा प्रकाश (बराबर हो सकते हैं)।२१।

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ﴿٢٢﴾

और न छाया तथा धूप (बराबर हो सकते हैं)।२२।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَن يَشَاءُ ۖ وَمَا أَنتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِي الْقُبُورِ ﴿٢٣﴾

और न सजीव तथा निर्जीव (बराबर हो सकते हैं)। निस्सन्देह अल्लाह् जिसे चाहता है सुना सकता है, किन्तु जो क़ब्रो में दबे हुए हैं तू उन्हें नहीं सुना सकता।२३।

إِنْ أَنتَ إِلَّا نَذِيرٌ ﴿٢٤﴾

तू तो केवल एक सावधान करने वाला है।२४।

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ﴿٢٥﴾

हम ने तुझे क़ायम रहने वाला, तथ्य दे कर शुभ-समाचार देने वाला एवं सावधान करने वाला बना कर भेजा है और कोई जाति ऐसी नहीं जिस में (अल्लाह् की ओर से) कोई न कोई सावधान करने वाला न आया हो।२५।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿٢٦﴾

और यदि ये लोग तुझे झुठलाते हैं तो उन लोगों ने भी (अपने समय के रसूलों को) झुठलाया था जो उन से पहले हो चुके थे। उस समय के रसूल भी उन के पास युक्तियाँ और कुछ शिक्षाएँ ले कर आए थे और (उन में से कुछ रसूल) प्रकाश करने वाली किताब ले कर आए थे।२६।

ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٢٧﴾ ع

फिर मैं ने इन्कार करने वालों को उन के झुठलाने के कारण अज़ाब से जकड़ लिया। अतः देखो मेरे इन्कार का परिणाम (अज़ाब) कैसा होता है ? ।२७। (रुकू ३/१५)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ۭ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿٢٨﴾

क्या तू ने देखा नहीं कि अल्लाह ने बादलों से पानी बरसाया है ? फिर हम ने उस से विभिन्न रंगों के फल पैदा किए हैं और भिन्न-भिन्न रंगों के पहाड़ भी (जो एक-दूसरे से बढ़ कर होते हैं) कुछ सफ़ेद, कुछ लाल और कुछ विभिन्न रंगों के काले भी।२८।

وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ۭ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿٢٩﴾

और लोगों, चौपायों तथा पशुओं में से भी कुछ ऐसे होते हैं कि उन में से हर-एक का रंग एक-दूसरे से अलग होता है। वास्तविकता इसी प्रकार है और अल्लाह के बन्दों में से केवल ज्ञानी लोग ही उस से डरते हैं। अल्लाह निश्चय ही बड़ा प्रभुत्वशाली और बहुत क्षमा करने वाला है।२९।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ

वे लोग जो अल्लाह की किताब को पढ़ते हैं और विधिवत नमाज़ क़ायम करते हैं तथा जो कुछ हम ने उन्हें प्रदान किया है उस में से अल्लाह की राह में गुप्त तथा व्यक्त रूप से

اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ۝

ख़र्च करते हैं, ये लोग ही वास्तव में ऐसे व्यापार की खोज में हैं जो कदापि विनष्ट नहीं होगा।३०।

لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝

क्योंकि इस का परिणाम यह होगा कि अल्लाह उन के कर्मों का पूरा-पूरा प्रतिफल प्रदान करेगा और उस के सिवा अपनी कृपा से अधिक भी देगा (जिस के कारण उन की दशा इस सांसारिक-जीवन से हज़ारों गुना अच्छी होगी)। निस्सन्देह वह बहुत क्षमा करने वाला और बड़ा क़दर करने वाला है।३१।

وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ۝

और हम ने वह बात जो इस क़ुर्आन में से तुझ पर वह्य के द्वारा उतारी है वह सच्ची हैं और पूरी हो कर रहने वाली है तथा इस से पहले जो वह्य उतारी जा चुकी है उसे पूरा करने वाली भी है। निस्सन्देह अल्लाह अपने बन्दों को जानता है और उन की परिस्थितियों को देखता है।३२।

ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ۝

फिर (हक़ीक़त यह है कि हम ने वह्य उतरने के वाद) अपनी किताब का वारिस (उत्तराधिकारी) सदा उन्हीं लोगों को बनाया है जिन्हें हम ने अपने बन्दों में से चुन लिया। अतः उन में से कुछ तो अपनी जान पर अत्याचार करने वाले सिद्ध हुए तथा कुछ ऐसे निकले जो बीच की चाल चलने वाले थे और कुछ ऐसे निकले जो अल्लाह की आज्ञा के अनुसार परोपकार करने में दूसरों से आगे बढ़ जाने वाले थे। यह (अल्लाह की) अपार कृपा है।३३।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٣٣﴾

इस का बदला सदा रहने वाले ऐसे स्वर्ग होंगे जिन में वे सदाचारी लोग प्रवेश करेंगे और उन्हें सोने के कंगन एवं मणि-मुक्ता के आभूषण पहनाए जाएँगे तथा उस में उन के वस्त्र रेशम के बने होंगे।३४।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۭ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ﴿٣٤﴾

और वे कहेंगे कि हर प्रकार की स्तुति अल्लाह ही के लिए है जिस ने हमारी चिन्ता को दूर कर दिया। निस्सन्देह हमारा रब्ब बहुत क्षमा करने वाला और बड़ा क़दर करने वाला है।३५।

الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾

वह (अल्लाह) जिस ने अपनी कृपा से हमें रहने के लिए ऐसे स्थान पर रखा है जहाँ हमें न तो कोई कष्ट है और न कोई थकन।३६।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿٣٦﴾

और वे लोग जिन्हों ने इन्कार किया उन्हें नरक की आग जलाएगी। न तो उन पर मौत का निर्णय लागू होगा कि वे मर जाएँ और न नरक के अज़ाब में ही उन के लिए कोई कमी की जाएगी। हम हर-एक नाशुक्री करने वाले के साथ ऐसा ही व्यवहार किया करते हैं।३७।

وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ

और वे उस नरक में चिल्लाएँगे (और कहेंगे) कि हे हमारे रब्ब! हमें इस नरक से निकाल दे तो हम शुभ कर्म करेंगे, उन कामों के विपरीत जो हम इस से पहले अपने जीवन में

1. यह एक रूपक है। प्राचीन काल में राजा जिन लोगों को सत्कार देते थे तो उन्हें जड़ाऊ जोड़ा देते थे और उन्हें मणि-मुक्ता के हार और जड़ाऊ कंगन पहनाते थे।

فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ۖ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ۝۳۸

किया करते थे। (हम उन से कहेंगे) क्या हम ने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी थी कि जिस में शिक्षा पाने की इच्छा रखने वाला शिक्षा पा लेता है और फिर तुम्हारे पास सावधान करने वाले भी तो आए थे? (फिर तुम ने उन की बात को क्यों न स्वीकार किया?) सो अब यह अज़ाब भुगतो, क्योंकि अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं होता।३८। (रुकू ४/१६)

اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝۳۹

अल्लाह आसमानों तथा ज़मीन की छिपी बातों का जानने वाला है। वह सीने की बातों को भी भली-भाँति जानता है।३९।

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰۗىِٕفَ فِي الْاَرْضِ ۭ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۭ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ۝۴۰

वही है जिस ने तुम्हें संसार में (पहले लोगों का) स्थान लेने वाला बनाया है। अतः जो व्यक्ति इन्कार करेगा उस के इन्कार का दण्ड उसे ही मिलेगा और इन्कार करने वालों का इन्कार करना उन के रब्ब के निकट उन्हें केवल अप्रसन्नता और घाटे में ही बढ़ाता है।४०।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَاۗءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰي بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا اِلَّا

तू कह दे कि मुझे बताओ तो सही तुम्हारे (मनगढ़त) साझी जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो (यदि वे दीख नहीं पड़ते तो) मुझे उन की वह मख़्लूक़ दिखाओ जो उन्हों ने धरती में पैदा की है या क्या उन का आसमानों के बनाने में कोई साझेदारी है? क्या हम ने उन्हें कोई किताब दी है कि वे उस की बताई हुई कोई युक्ति अपने पास रखते हैं? (ऐसा कुछ नहीं) बल्कि अत्याचारी

غُرُوْرًا ﴿٤١﴾

लोग परस्पर एक-दूसरे से केवल छल-कपट वाली प्रतिज्ञा करते हैं ।४१।

اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَ لَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤٢﴾

अल्लाह ही ने आसमानों तथा ज़मीन को इस बात से रोक रखा है कि ये अपने निश्चित स्थानों से हट जाएँ और यदि वे हट जाएँ तो फिर कोई भी उन्हें (विनष्ट होने से) रोक नहीं सकेगा। निस्सन्देह वह बड़ा बुद्धिमान और क्षमा करने वाला है ।४२।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿٤٣﴾

और वे अल्लाह की पक्की क़समें खाते हैं कि यदि उन के पास कोई नबी आ जाए तो वे दूसरे समस्त सम्प्रदायों में से हर-एक से बढ़ कर हिदायत पाने वाले बन जाएँगे, परन्तु जब उन के पास नबी आया तो उस का आना उन्हें घृणा में बढ़ाने का ही कारण बना ।४३।

اِسْتِكْبَارًا فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿٤٤﴾

क्योंकि वे धरती में बड़ा बनना चाहते थे और बुरे उपाय करना चाहते थे और बुरे उपाय उन के करने वालों का ही सर्वनाश किया करते हैं। अतः क्या वे केवल पहले लोगों की रीति (अर्थात् अज़ाब) की ही प्रतीक्षा तो नहीं कर रहे? (और यदि तू विचार करे) तो तू अल्लाह के सिद्धान्त में कदापि कोई परिवर्तन नहीं पाएगा और न तू कभी अल्लाह के सिद्धान्त को टलते हुए देखेगा ।४४।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَمَا

क्या वे धरती में चले-फिरे नहीं (यदि ऐसा करते) तो देखते कि उन से पहले गुज़रे हुए लोगों का क्या परिणाम निकला? हालाँकि वे शक्ति में इन से बढ़ कर थे और कोई

كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ۗ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ۝٤٥

बात अल्लाह को पृथ्वी और आकाश में अपने इरादे में असफल नहीं बना सकती। निस्सन्देह वह बहुत जानने वाला एवं बहुत सामर्थ्य रखने वाला है।४५।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ۝٤٦ ع

और अल्लाह यदि लोगों को उन के कर्मों के कारण पकड़ता तो धरती पर किसी प्राणी को जीवित न छोड़ता, किन्तु वह एक समय तक उन्हें ढील देता है, फिर जब उन का निश्चित समय आ जाता है तो (सिद्ध हो जाता है कि) अल्लाह अपने बन्दों को भली-भाँति देख रहा था।४६। (रुकू ५/१७)

سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اَرْبَعٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ
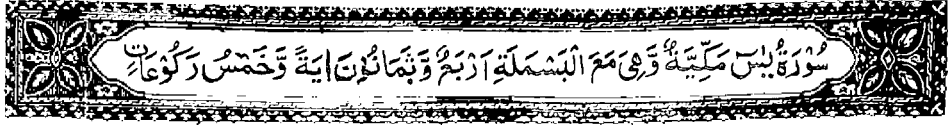
सूरः यासीन

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की चौरासी आयतें एवं पाँच रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

يٰسٓ ②

हे सय्यद[1] !।२।

وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ③

हम हिक्मत भरे क़ुर्आन को (तेरे सय्यद होने की) गवाही के रूप में पेश करते हैं।३।

اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ④

निस्सन्देह तू रसूलों में से है।४।

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ⑤

और सम्मार्ग पर क़ायम है।५।

تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ⑥

(और क़ुर्आन) प्रभुत्वशाली और अपार कृपा करने वाले (अल्लाह) की ओर से उतारा गया है।६।

لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ⑦

इस उद्देश्य से कि तू उस जाति के लोगों को सावधान करे जिन के पूर्वजों को सावधान नहीं किया गया था और वे ग़ाफ़िल पड़े थे।७।

1. मूल शब्द 'स' खण्डाक्षर है जो सय्यद के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

हमारा कथन[1] उन में से बहुतों के बारे में पूरा हो गया तो भी वे ईमान नहीं लाते।८।

اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ۝

हम ने उन की गर्दनों में तौक़[2] डाल रखे हैं जो उन की ठुड्डियों तक चढ़ गए हैं तथा वे (कष्ट से बचने के लिए अपनी) गर्दनें ऊँची कर रहे हैं।९।

وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝

और हम ने उन के आगे भी एक रोक[3] बना दी है तथा उन के पीछे भी एक रोक बना दी है और उन्हें ढाँप दिया है। अत: वे देख नहीं सकते।१०।

وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

और (उन्हें) तेरा डराना या न डराना उन के लिए एक जैसा है। वे (जब तक अपने दिल में परिवर्तन नहीं करेंगे) कभी ईमान नहीं लाएँगे।११।

اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ

तू तो केवल उसे ही सावधान कर सकता है जो उपदेश को मान लिया करता है और रह़मान से एकान्त में भी डरता है। अतएव

---

1. इस कथन से अभीष्ट इसी सूर: की आयत 31 है। खेद है लोगों पर कि उन के पास कभी कोई रसूल नहीं आया जिस का उन्हों ने इन्कार न किया हो और जिस का उपहास न किया हो।

2. तौक़ से अभिप्राय मनगढ़त रीति-रिवाजों के बन्धन हैं। धार्मिक-विधान के आने से पहले मनुष्य उन रीतियों में जकड़ा हुआ होता है कि वह उन रूढ़ियों की निर्गलता पर ठीक ढंग से विचार भी नहीं करता, किन्तु वह अपनी जाति से चोरी-छिपे उन रूढ़ियों के कष्ट दायक प्रभाव से बचना भी चाहता है जो मनुष्य को आपत्ति का अनुभव होने पर भी बुद्धि से काम नहीं लेने देती।

3. आगे-पीछे रोक बनाने से यह अभिप्राय है कि एक ओर तो मनुष्य स्त्री-बच्ची या नवजात-पीढ़ी के प्रचलित रीति-रिवाजों को अपनाने के लिए विवश किया जाता है तो दूसरी ओर उस पर जाति के बड़े लोग रूढ़ियों को पूरा करने के लिए ज़ोर देते हैं। इस प्रकार मनुष्य आपत्ति के आभास होने पर भी सोच-विचार नहीं कर सकता।

فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ⑫

तू ऐसे व्यक्ति को अपार क्षमा और सम्मान वाले बदले का समाचार सुना दे।१२।

اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ⑬

हम ही मुर्दों को जीवित करते हैं और वे जो कुछ भावी-जीवन के लिए आगे भेजते हैं उसे भी सुरक्षित रखते हैं तथा जो कर्म उन्हों ने संसार में किए थे उन का जो फल निकलेगा हम उसे भी सुरक्षित रखते हैं और प्रत्येक वस्तु को हम ने एक खुली हुई किताब में गिन रखा है।१३। (रुकू १/१८)

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ⑭

और तू उन के सामने एक गाँव वालों की हालत बता जब कि उन के पास उन के रसूल आए।१४।

اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ⑮

अर्थात् जब हम ने उन के पास पहले तो दो रसूल भेजे, किन्तु उन्हों ने उन दोनों को झुठला दिया, इस पर हम ने एक तीसरा रसूल भेज कर (पहले दो रसूलों को) शक्ति[1] प्रदान की, फिर उन सब ने मिल कर अपनी जाति के लोगों से कहा कि हम तुम्हारे रब्ब की ओर से तुम को एक सन्देश देने के लिए तुम्हारे पास भेजे गए हैं।१५।

قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ⑯

उन्हों ने कहा कि तुम तो हमारे जैसे मनुष्य हो और रहमान ने कोई वस्तु (ईशवाणी के रूप में) नहीं उतारी। तुम केवल झूठ बोल रहे हो।१६।

---

1. इस आयत में बताया गया है कि हम ने पहले दो रसूल भेजे, फिर उन का समर्थन करने के लिए एक तीसरा रसूल भेजा है। इस से स्पष्ट है कि यह तीसरा रसूल भी वही बातें कहता था जो बातें पहले दो रसूल कहते थे अन्यथा यदि वह कोई नई बातें कहता तो उन का समर्थन कैसे कर सकता था। इस आयत से सिद्ध है कि शरीअत के बिना भी नबी आया करते हैं।

قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ⑯

उन्हों ने कहा कि हमारा रब्ब इस बात को जानता है कि हम तुम्हारी ओर रसूल बना कर भेजे गए हैं ।१७।

وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ⑰

और हमारा काम केवल यह है कि हम खोल-खोल कर प्रचार कर दें ।१८।

قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَ لَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ⑱

इस पर इन्कार करने वालों ने कहा कि हम तो तुम्हारा अपनी ओर आना ही अशुभ समझते हैं। यदि तुम अपनी बातों से नहीं रुकोगे तो हम तुम्हें संगसार कर देंगे और हमारी ओर से तुम्हें पीड़ादायक अज़ाब पहुँचेगा ।१९।

قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ⑲

वे बोले कि तुम्हारे कर्म तो तुम्हारे साथ हैं (और तुम जहाँ कहीं भी होगे तुम्हारे कर्मों का बुरा परिणाम निकलता रहेगा) और क्या तुम यह बात इसलिए कहते हो कि हम तुम्हें अच्छे काम करने की याद दिलाते हैं, अपितु सत्य बात तो यह है कि तुम सीमा का उल्लंघन करने वाली जाति हो। (इसलिए निश्चय ही दण्ड भोगोगे) ।२०।

وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ⑳

और नगर के दूसरे किनारे से एक व्यक्ति भागता हुआ आया तथा उस ने कहा कि हे मेरी जाति! रसूलों का अनुसरण करो ।२१।

اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّ هُمْ مُّهْتَدُوْنَ ㉑

उन का अनुसरण करो जो तुम से कोई बदला नहीं माँगते और वे हिदायत पाए हुए व्यक्ति हैं ।२२।

وَمَا لِيَ لَآ أَعۡبُدُ ٱلَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيۡهِ تُرۡجَعُونَ ﴿٢٢﴾

और मुझे क्या हुआ है कि मैं उस रब्ब की उपासना न करूँ जिस ने मुझे पैदा किया है और तुम सब उसी की ओर लौटा कर ले जाए जाओगे।२३।

ءَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةً إِن يُرِدۡنِ ٱلرَّحۡمَٰنُ بِضُرّٖ لَّا تُغۡنِ عَنِّي شَفَٰعَتُهُمۡ شَيۡـٔٗا وَلَا يُنقِذُونِ ﴿٢٣﴾

क्या मैं उसे छोड़ कर कोई और उपास्य अपना सकता हूँ? यदि रहमान (अल्लाह) मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे तो इन (उपास्यों) की सिफ़ारिश मुझे कोई लाभ नहीं दे सकती तथा न वे मुझे (उस की हानि से) बचा सकते हैं।२४।

إِنِّيٓ إِذٗا لَّفِي ضَلَٰلٖ مُّبِينٍ ﴿٢٤﴾

(यदि मैं ऐसा करूँ) तो निस्सन्देह मैं खुली-खुली पथभ्रष्टता में ग्रसित हूँगा।२५।

إِنِّيٓ ءَامَنتُ بِرَبِّكُمۡ فَٱسۡمَعُونِ ﴿٢٥﴾

मैं तुम्हारे रब्ब पर ईमान लाया हूँ। अतः मेरी बात सुनो।२६।

قِيلَ ٱدۡخُلِ ٱلۡجَنَّةَۖ قَالَ يَٰلَيۡتَ قَوۡمِي يَعۡلَمُونَ ﴿٢٦﴾

(तब उसे अल्लाह की ओर से) कहा गया कि स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा। तब उस ने कहा कि काश! मेरी जाति के लोगों को (मेरे परिणाम) का पता लग जाता।२७।

بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ ٱلۡمُكۡرَمِينَ ﴿٢٧﴾

कि किस प्रकार मेरे रब्ब ने मुझे मुक्ति प्रदान की है तथा मुझे सम्मान वाले लोगों में सम्मिलित किया है।२८।

وَمَآ أَنزَلۡنَا عَلَىٰ قَوۡمِهِۦ مِنۢ بَعۡدِهِۦ مِن جُندٖ مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنزِلِينَ ﴿٢٨﴾

उस के पश्चात् हम उस की जाति पर (सर्वनाश के लिए) आकाश से कोई सेना नहीं उतारी तथा न हम (ऐसी सेना) उतारा ही करते हैं।२९।

إِن كَانَتۡ إِلَّا صَيۡحَةٗ وَٰحِدَةٗ فَإِذَا هُمۡ خَٰمِدُونَ ﴿٢٩﴾

उन पर केवल एक भयंकर अज़ाब आया और वे अपनी सारी मान-मर्यादा विनष्ट कर बैठे।३०।

يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٠﴾

हाय खेद ! (इन्कार करने वाले) बन्दों पर कि जब कभी भी उन के पास कोई रसूल आता है तो वे उसे घृणा की दृष्टि से देखने लग जाते हैं (और हँसी करने लगते हैं) ।३१।

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٣١﴾

क्या उन्हों ने देखा नहीं कि उन से पहले हम कितनी ही बस्तियों का सर्वनाश कर चुके हैं (और यह भी कि जिन का सर्वनाश किया गया था) वे वापस नहीं लौटते ।३२।

وَإِن كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٣٢﴾ ع

और निश्चय ही सब लोग हमारे सामने पेश किए जाएँगे ।३३। (रुकू २/१)

وَآيَةٌ لَّهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ﴿٣٣﴾

और उन (इन्कार करने वालों) के लिए निर्जीव (बंजर) भूमि भी एक निशान है। हम ने उसे सजीव बनाया एवं उस में से अनाज निकाला है। सो ये उस से खाते हैं ।३४।

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ﴿٣٤﴾

और हम ने भूमि में खजूरों एवं अंगूरों के बाग़ भी उगाए हैं तथा उस में स्रोत फोड़ निकाले हैं ।३५।

لِيَأْكُلُوا مِن ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٥﴾

ताकि वे उस (बाग़) के फल (आवश्यकतानुसार) खाएँ और (बाग़) को उन के हाथों ने नहीं उगाया (अपितु हम ने उगाया है)। क्या वे धन्यवाद नहीं करते ? ।३६।

سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾

पवित्र है वह सत्ता जिस ने प्रत्येक प्रकार के जोड़े पैदा किए हैं। उस में से भी जिसे भूमि उगाती है तथा उस की अपनी जानों में से भी और उन पदार्थों में से भी जिन्हें वे नहीं जानते ।३७।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ۟

और उन के लिए रात भी एक बड़ा निशान है जिस में से हम दिन को खींच कर निकाल लेते हैं, जिस के पश्चात् वे अचानक अन्धकार में रह जाते हैं ।३८।

وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۟

और सूर्य एक निश्चित स्थान की ओर चला जा रहा है । यह प्रभुत्वशाली एवं ज्ञान रखने वाले (अल्लाह) का निश्चित नियम है ।३९।

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ۟

और चन्द्रमा को (देखो कि) हम ने उस के लिए भी मंजिलें निर्धारित कर दी हैं यहाँ तक कि वह (अपनी मंज़िलों पर चलते-चलते) एक पुरानी शाखा[1] जैसा बन कर दो बारा लौट आता है ।४०।

لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۭ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۟

सूर्य की यह शक्ति नहीं कि वह (अपनी वार्षिक गति में) किसी समय चन्द्रमा के पास जा पहुँचे तथा न रात (चन्द्रमा) की शक्ति है कि वह आगे बढ़ कर (सूर्य को) पकड़[2] ले, अपितु ये सब के सब एक निश्चित मार्ग पर बड़ी सरलता से चलते चले जाते हैं ।४१।

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۟

और उन के लिए यह भी निशान है कि हम उन की सन्तान को भरी हुई नौकाओं में उठाए फिरते हैं ।४२।

---

1. तात्पर्य यह है कि चन्द्रमा जब दोबारा निकलता है तो वह ऐसा दिखाई देता है जैसे एक वृक्ष की मुड़ी हुई पुरानी शाखा होती है ।

2. इस आयत में बताया गया है कि सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र गण प्रकृतिक नियम के अनुसार सूर्य-मंडल में अपने-अपने निश्चित मार्गों पर बिना किसी रोक-टोक के बड़ी सरलता से घूम रहे हैं । इस में से किसी में भी यह शक्ति नहीं कि वह अपना निश्चित मार्ग छोड़ कर दूसरे से जा टकराए, क्योंकि यदि ऐसा हो तो सारा सूर्य-मंडल नष्ट हो जाए ।

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ۝	और हम उन के लिए इसी प्रकार की दूसरी वस्तुएँ भी पैदा करेंगे, जिन्हें वे सवारी के काम में लाएँगे[1] ।४३।
وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ۝	और यदि हम चाहें तो उन का सर्वनाश कर दें. तत्पश्चात् उन की फ़रियाद सुनने वाला कोई न होगा और न वे हमारी दयालुता के सिवा किसी दूसरे उपाय से बचाए जाएँगे ।४४।
اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝	और वे केवल एक (निश्चित) समय तक सांसारिक लाभ उठाएँगे ।४५।
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝	और जब उन से कहा जाए कि जो कुछ तुम्हारे आगे आने वाला है (उस से बचो) तथा जो कर्म तुम पहले कर चुके हो उन के परिणाम से भी बचने का यत्न[2] करो ताकि तुम पर दया की जाए (तो वे उस उपदेश की हँसी उड़ाते हैं और कुछ लाभ नहीं उठाते) ।४६।
وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝	और उन के रब्ब के निशानों में से कोई महत्त्वपूर्ण निशान प्रकट होता है तो वे उस से भी विमुख हो जाते हैं ।४७।
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ	और जब उन से कहा जाता है कि जो कुछ तुम्हें अल्लाह ने दिया है उस में से खर्च करो तो इन्कार करने वाले लोग मोमिनों से कहते

1. इस से अभिप्राय भविष्य मे ज़ाहिर होने वाली सवारियाँ हैं जैसे रेल, मोटर, जहाज़ आदि। (विवरण के लिए देखिए सूरः नहल टिप्पणी आयत 9)।

2. अर्थात् भविष्य के लिए विनय और प्रार्थना कर के तथा विगत बातों पर पश्चाताप कर के दया के पात्र बनो।

اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٧﴾

हैं कि क्या हम उन को खिलाएँ जिन्हें अल्लाह चाहता तो स्वयं भी खिला सकता था ? तुम (तो अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध शिक्षा दे कर) खुली खुली पथभ्रष्टता में पड़े हुए हो ।४८।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾

और वे कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो हमें बताओ कि वह (अज़ाब की) प्रतिज्ञा कब पूरी होगी ? ।४९।

مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ﴿٤٩﴾

वे तो केवल अचानक आ जाने वाले अज़ाब की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो उन्हे आ पकड़ेगा और वे वाद-विवाद में ही लगे हुए होंगे ।५०।

فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٠﴾

उस समय वे न तो परस्पर एक-दूसरे को कोई उपदेश दे सकेंगे और न अपने परिवार की ओर वापस जा (कर उन्हें समझा) सकेंगे । ।५१। (रुकू ३/२)

وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿٥١﴾

और जब बिगुल बजाया जाएगा तथा वे अचानक क़ब्रों में से निकल कर अपने रब्ब की ओर भाग खड़े होंगे ।५२।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٢﴾

(वे परस्पर एक-दूसरे से) कहेंगे कि खेद ! हमें किस ने क़ब्रों से निकाल कर खड़ा कर दिया है। यह तो वही बात है जिस की प्रतिज्ञा रहमान (अल्लाह) ने हम से की थी तथा रसूलों ने जो कुछ कहा था वह सत्य ही कहा था ।५३।

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٥٣﴾

यह अचानक आने वाला एक अज़ाब होगा जिस के फलस्वरूप वे सब के सब एकत्रित कर के हमारे सामने लाए जाएँगे ।५४।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٥﴾

और उस दिन किसी जान पर लेश-मात्र भी अत्याचार नहीं किया जाएगा और तुम्हें तुम्हारे कर्मों के अनुसार ही प्रतिफल प्रदान किया जाएगा।५५।

اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿٥٦﴾

स्वर्गवासी उस दिन एक महत्वपूर्ण[1] काम (ईशभक्ति) करने में लगे होंगे और (अपनी परिस्थिति को देख कर) खुशी से हँस रहे होंगे।५६।

هُمْ وَ اَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿٥٧﴾

वे भी और उन के साथी भी सुसज्जित सिंहासनों पर तकिए लगाए बैठे होंगे (और अल्लाह की दयालुता की) छाया में होंगे।५७।

لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿٥٨﴾

उन के लिए उन स्वर्गों में फल प्रस्तुत किए जाएँगे और जो कुछ वे माँगेंगे वह उन्हें दिया जाएगा।५८।

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿٥٩﴾

और उन्हें सलाम कहा जाएगा, जो बार-बार दया करने वाले रब्ब की ओर से उन के लिए एक सन्देश होगा।५९।

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٦٠﴾

और (हम यह भी कहेंगे कि) हे अपराधियो ! आज तुम (मोमिनों से) अलग हो जाओ।६०।

اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦١﴾

हे आदम की सन्तान ! क्या मैं ने तुम्हारे ऊपर यह ज़िम्मेदारी नहीं डाली थी कि तुम कदापि शैतान की उपासना न करना ? क्योंकि वह तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है।६१।

وَّاَنِ اعْبُدُوْنِيْ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦٢﴾

और केवल मेरी उपासना करो कि यही सीधी राह है।६२।

---

1. अर्थात् वे अल्लाह को याद कर रहे होंगे।

وَلَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ۚ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ۝٦٢

और शैतान तो बहुत से लोगों का सर्वनाश कर चुका है। क्या तुम्हारी समझ में यह बात नहीं आती ? ।६३।

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝٦٣

(देखो !) यह नरक है जिस की तुम से प्रतिज्ञा की जाती थी ।६४।

اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝٦٤

अपने इन्कार के कारण आज इस में प्रविष्ट हो जाओ ।६५।

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٦٥

उस दिन हम (उन के इन्कार के कारण) उन के मुँहों पर मुहर लगा देंगे (अर्थात् बोलने की आवश्यकता न होगी) और उन के हाथ हम से बातें करेंगे तथा उन के पाँव उन के कुकर्मों पर गवाही[1] देंगे ।६६।

وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ۝٦٦

और यदि हम चाहें तो उन की आँखों को अन्धा कर दें, फिर वे बिना देखे एक राह की खोज में चल पड़ें, परन्तु ऐसी दशा में वे (सत्य-पथ को) कैसे देख सकते हैं ? ।६७।

وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ۝٦٧ ع

और यदि हम चाहें तो जहाँ वे हैं वहीं उन की प्रतिष्ठा विनष्ट कर दें, फिर वे न तो कहीं आगे जाने का सामर्थ्य पाएँ तथा न वापस लौटने का ही मार्ग पाएं ।६८। (रुकू ४/३)

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى الْخَلْقِ ۚ اَفَلَا

और हम जिस व्यक्ति को लम्बी आयु प्रदान करते हैं उसे शारीरिक शक्तियों में कमज़ोर करते जाते हैं। क्या वे फिर भी नहीं

1. शारीरिक अंगों के बातें करने का उदाहरण यह है कि आतशक के रोगी की नाक और कंठ पर इस रोग का बड़ा प्रभाव पड़ता है। मानो शरीर के यह अंग किसी व्यक्ति के मौन रहने पर भी पुकार-पुकार कर कह देते हैं कि इस व्यक्ति ने व्यभिचार किया है।

يَعْقِلُوْنَ ۝

समझते[1] ? ।६९।

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ۝

और हम ने उसे (अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को) कविता कहना नहीं सिखाया और न यह काम उस की शान के लिए उचित ही था। यह क़ुर्आन तो केवल एक उपदेश है और बार-बार पढ़ने वाली किताब है जो (साथ प्रमाण भी) बताती है ।७०।

لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝

ताकि जो सजीव है उसे सावधान कर दे और इन्कार करने वालों के बारे में अल्लाह का निर्णय पूरा हो जाए ।७१।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ۝

क्या वे नहीं देखते कि हम ने उन के लिए अपनी विशेष शक्ति से चौपाए बनाए हैं और वे उन के स्वामी हैं ।७२।

وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ۝

और हम ने उन चौपायों को उन के अधीन कर दिया है। अतएव उन में से कुछ पर तो वे सवार होते हैं और कुछ को वे खाते हैं ।७३।

وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۭ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ۝

और उन से भी अनेक प्रकार के लाभ उठाते हैं तथा वे उन से पीने की सामग्री भी प्राप्त करते हैं। क्या वे धन्यवाद नहीं करते ? ।७४।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝

और उन लोगों ने अल्लाह के सिवा कुछ और उपास्य बना रखे हैं कि कदाचित किसी समय उन की सहायता की जाए ।७५।

---

1. अर्थात् इस्राइलियों ने लम्बी आयु पाई है और अब उन के पतन का समय आ चुका है, क्योंकि जातियों की उपमा भी लोगों जैसे होती है।

لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ جُندٌ مُّحْضَرُونَ ﴿٧٥﴾	वे (उपास्य) उन की कोई सहायता नहीं कर सकते, बल्कि वे उलटा उन के विरूद्ध मिल कर एक सेना के रूप में इकट्ठे हो कर गवाही देंगे।७६।
فَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٦﴾	अतः तू उन की बातों से चिन्तित न हो, हम उसे भी जानते हैं जिसे वे छिपाते हैं तथा उसे भी जो प्रकट करते हैं।७७।
أَوَلَمْ يَرَ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ﴿٧٧﴾	क्या मनुष्य को ज्ञात नहीं कि हम ने उसे वीर्य्य से पैदा किया है, फिर वह पैदा होने के बाद अचानक कट्टर झगड़ालू बन जाता है।७८।
وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَن يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٧٨﴾	और हमारी सत्ता के बारे में बातें बनाने लग जाता है तथा अपनी पैदाइश (के उद्देश्य) को भूल जाता है और कहने लग जाता है कि जब हड्डियाँ सड़-गल जाएँगी तो भला उन्हें कौन जीवित करेगा ? ।७९।
قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿٧٩﴾	तू कह दे कि ऐसी हड्डियों को वही जीवित करेगा जिस ने उन को पहली बार पैदा किया था और वह हर-एक प्रकार की मख़्लूक़ की हालत को भली-भाँति जानता है।८०।
الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنتُم مِّنْهُ تُوقِدُونَ ﴿٨٠﴾	वह (अल्लाह) जिस ने तुम्हारे लिए हरे वृक्षों में से आग पैदा की है। सो तुम उस के आधार पर आग जलाते हो।८१।
أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُم	क्या वह जिस ने आसमानों तथा ज़मीन की सृष्टि की है इस बात का सामर्थ्य नहीं रखता कि उन जैसी दूसरी मख़्लूक़ पैदा कर दे ?

بَلٰى وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾

ऐसा विचार (कि वह पैदा करने में असमर्थ है) सत्य नहीं, अपितु वह बहुत पैदा करने वाला (और) बहुत जानने वाला है।८२।

اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾

उस की बात तो यूँ है कि जब कभी वह यह इरादा कर लेता है कि अमुक चीज़ हो जाए तो वह उस के बारे में यह कह देता है कि इस प्रकार हो जाए तो वह (क्रमशः) उसी प्रकार हो जाती है।८३।

فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ ع

वह सत्ता पवित्र है जिस के हाथ में समस्त पदार्थों का शासन है और जिस की ओर तुम सब को लौटा कर ले जाया जाएगा।८४। (रुकू ५/४)
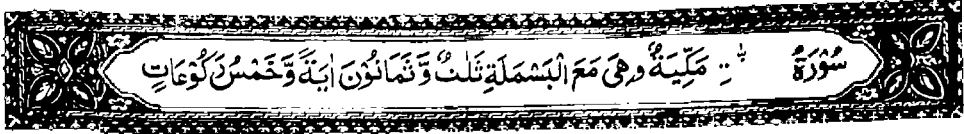
सूरः अल्-साफ़्फ़ात

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह् सहित इस की एक सौ तिरासी आयतें एवं पाँच रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह् का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ②

(मैं) उन सत्ताओं को गवाही के रूप में पेश करता हूँ जो (सत्य के शत्रुओं के सामने) पंक्तिबद्ध[1] खड़ी हैं।२।

فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ③

जो बुरे काम करने वालों को डाँटती हैं।३।

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ④

और ज़िक्र (क़ुर्आन) को पढ़-पढ़ कर सुनाती हैं।४।

اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ⑤

निस्सन्देह तुम्हारा उपास्य अकेला उपास्य है।५।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ⑥

वह आसमानों का भी रब्ब है और ज़मीन का भी एवं जो कुछ इन दोनों के बीच है उस का भी और समस्त प्रकार के प्रकाश के उदय होने वाले स्थानों का भी।६।

اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ِۨالْكَوَاكِبِ ⑦

हम ने निकटवर्ती आकाश को नक्षत्रों द्वारा सजाया है।७।

1. अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के साथी।

وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝٨

और हम ने उसे प्रत्येक उद्दण्डी शैतान से सुरक्षित किया है ।८।

لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝٩

वे (उद्दण्डी शैतान) ऊपर की शक्तिशाली[1] सत्ताओं की बात नहीं सुन[2] सकते और सब ओर से उन को (कोड़े[3] मार-मार कर) दूर किया जाता है ।९।

دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝١٠

और उन के लिए स्थायी (रूप में) अज़ाब है ।१०।

اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝١١

परन्तु उन में से जो व्यक्ति कोई (एक-आध) बात दुष्टता से उड़ा[4] ले जाए तो उस के पीछे एक शिहाबे साक़िब (उल्का) लग जाती है ।११।

فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ۝١٢

अतः तू उन से पूछ कि सृष्टि की दृष्टि से उन का पैदा करना अधिक कठिन है अथवा (उन के सिवा विश्व की व्यवस्था) जो हम ने बनाई है (अधिक कठिन है ?)। हम ने उन्हें चिपकने वाली मिट्टी से बनाया है ।१२।

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ۝١٣

अपितु वास्तविकता यह है कि तू (उन की बातों पर) आश्चर्य करता है और वे (तेरी बातों को) तुच्छ समझते हैं ।१३।

---

1. अर्थात् फ़रिश्तों की ।

2. भाव यह है कि वास्तविकता को प्राप्त नहीं कर सकते केवल ज़ाहिरी रूप में सुनते हैं ।

3. जब शैतान के स्वरूप संसार में नबियों के इल्हाम को ले कर और उसे बिगाड़ कर लोगों के सामने पेश करना चाहते हैं तो अल्लाह का अज़ाब तुरन्त उतारता है और उन्हें कोड़े मार-मार कर भगा दिया जाता है ।

4. अर्थात् यदि कोई व्यक्ति विरोधी होने के कारण पवित्र क़ुर्आन का कोई भाग इस उद्देश्य से उड़ा ले जाए ताकि वह उसे बिगाड़ कर लोगों को छल दे कर पथभ्रष्ट करे तो अल्लाह ने ऐसे धूर्तों का मुंह बन्द करने के लिए अपने बन्दे नियुक्त कर रखे हैं जो क़ुर्आनी प्रकाश के द्वारा उन शैतानों को निरुत्तर कर देते हैं ।

وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ﴿١٤﴾

और जब उन्हें उपदेश दिया जाता है तो वे शिक्षा ग्रहण नहीं करते ।१४।

وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ﴿١٥﴾

और जब कोई निशान देखते हैं तो उस की हँसी उड़ाते हैं ।१५।

وَقَالُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿١٦﴾

और कहते हैं कि यह तो एक खुला-खुला पाखण्ड है ।१६।

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿١٧﴾

क्या जब हम मर जाएँगे तथा मिट्टी हो जाएँगे और हड्डियाँ रह जाएँगे तो हमें पुनः उठा कर खड़ा कर दिया जाएगा ? ।१७।

أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ﴿١٨﴾

और हमारे पूर्वजों को भी ? ।१८।

قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَاخِرُونَ ﴿١٩﴾

तू कह दे कि हाँ-हाँ अपितु तुम अपमानित हो जाओगे ।१९।

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٢٠﴾

वह घड़ी तो केवल एक डाँट (जैसी) है कि (जैसे ही वह डाँट पड़ेगी) वे (जीवित हो कर) देखने लगेंगे ।२०।

وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿٢١﴾

और कहेंगे कि हाय ! हम पर खेद !! यही तो फल प्राप्ति का दिन है ।२१।

هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٢﴾ ع

(और अल्लाह की ओर से आवाज़ आएगी) यह निर्णय का वह दिन है जिस का तुम इन्कार किया करते थे ।२२। (रुकू १/५)

احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا

(हम फ़रिश्तों से कहेंगे कि) जिन्हों ने अत्याचार किया था उन को भी तथा उन के साथियों को भी और (अल्लाह को छोड़ कर) जिन की वे उपासना किया करते थे

يَعْبُدُوْنَ ﴿٢٢﴾	इन सब को जीवित कर के खड़ा कर दो।२३।
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ﴿٢٣﴾	(और) अल्लाह के सिवा (जिन की वे उपासना किया करते थे) उन सब को नरक की ओर ले जाओ।२४।
وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ﴿٢٤﴾	फिर (वहाँ तक ले जा कर) उन्हें खड़ा कर दो, क्योंकि वहाँ उन से कुछ प्रश्न किए जाएँगे।२५।
مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿٢٥﴾	(और उन से पूछा जाएगा) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम एक-दूसरे की सहायता नहीं करते ?।२६।
بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿٢٦﴾	वास्तविकता यह है कि (सहायता करना तो अलग रहा) वे उस दिन हथियार ही डाल देंगे।२७।
وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٧﴾	और उन में से एक गिरोह दूसरे से वाद-विवाद करेगा।२८।
قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿٢٨﴾	(और) उसे सम्बोधित कर के कहेगा कि तुम सदा हमारी दाहिनी[1] ओर से आते थे।२९।
قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٩﴾	(उन के काल्पनिक उपास्य उत्तर में) कहेंगे कि यूँ नहीं, वास्तव में तुम्हारे अन्दर ईमान नहीं था।३०।
وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿٣٠﴾	और हमें तुम पर कोई आधिपत्य नहीं था अपितु तुम एक उद्दण्डी जाति थे।३१।

1. 'दाहिनी ओर' धर्म के लिए प्रयुक्त होती है और भाव यह है कि वे धर्मध्वजी बन कर हमें छल देते थे।

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَآ ۖ إِنَّا لَذَآئِقُونَ ﴿٣٢﴾	अतः आज हम सब के बारे में हमारे रब्ब की बात पूरी हो गई कि हम (अज़ाब का स्वाद) चखने वाले हैं ।३२।
فَأَغْوَيْنَٰكُمْ إِنَّا كُنَّا غَٰوِينَ ﴿٣٣﴾	और (यह सत्य है कि) हम ने तुम्हें पथभ्रष्ट किया था, क्योंकि हम स्वयं भी पथभ्रष्ट थे ।३३।
فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِى ٱلْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٤﴾	अतः उस दिन वे सब अजाब में साझी होंगे ।३४।
إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِٱلْمُجْرِمِينَ ﴿٣٥﴾	हम अपराधियों के साथ ऐसा ही किया करते हैं ।३५।
إِنَّهُمْ كَانُوٓا۟ إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٦﴾	जब कभी उन से कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं, तो वे अभिमान से काम लेते थे ।३६।
وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُوٓا۟ ءَالِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍۭ ﴿٣٧﴾	और कहा करते थे कि क्या हम अपने उपास्यों को एक कवि और पागल के कहने पर छोड़ दें ।३७।
بَلْ جَآءَ بِٱلْحَقِّ وَصَدَّقَ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿٣٨﴾	वास्तविकता यह है कि वह (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम) कामिल सच्चाई ले कर आया है और पहले के सब रसूलों को सच्चा ठहराता है ।३८।
إِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا۟ ٱلْعَذَابِ ٱلْأَلِيمِ ﴿٣٩﴾	(हे इन्कार करने वालो !) निस्सन्देह तुम दुःख देने वाले अज़ाब (का स्वाद) चखने वाले हो ।३९।
وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٠﴾	और जो कुछ तुम करते थे उसी के अनुसार दण्ड पाओगे ।४०।

إِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤١﴾

किन्तु अल्लाह के चुने हुए बन्दे (अज़ाब से सुरक्षित रहेंगे) ।४१।

أُولٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤٢﴾

अपितु उन्हें जानी-बूझी[1] रोज़ी मिलेगी ।४२।

فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُونَ ﴿٤٣﴾

(अर्थात्) फल-मेवे और उन का सम्मान किया जाएगा ।४३।

فِي جَنّٰتِ النَّعِيمِ ﴿٤٤﴾

निअमतों वाले बाग़ों में ।४४।

عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِينَ ﴿٤٥﴾

वे सिंहासनों पर आमने-सामने बैठेंगे ।४५।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِينٍ ﴿٤٦﴾

(स्रोत के) पानियों से भरे हुए गिलास उन के पास लाए जाएँगे ।४६।

بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِينَ ﴿٤٧﴾

जो सफ़ेद होंगे तथा पीने वालों के लिए स्वादिष्ट होंगे ।४७।

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ﴿٤٨﴾

न तो उन से सिर-दर्द होगा और न वे लोग उन के कारण बुद्धि खो बैठेंगे ।४८।

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِينٌ ﴿٤٩﴾

और उन के पास मृगनयनी, नीची दृष्टि रखने वाली स्त्रियाँ होंगी ।४९।

كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ﴿٥٠﴾

मानों वे ढके हुए अण्डे[2] हैं ।५०।

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُونَ ﴿٥١﴾

फिर वे परस्पर एक-दूसरे से प्रश्न पूछने के लिए ध्यान देंगे ।५१।

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ﴿٥٢﴾

और उन में से कोई यह कहेगा कि मेरा एक साथी होता था ।५२।

---

1. वह रोज़ी जिस का वर्णन क़ुर्आन मजीद में किया गया है ।
2. अर्थात् अत्यन्त सुन्दर, पवित्र और स्वच्छ ।

يَقُوْلُ اَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ۝

वह कहा करता था कि क्या तू भी (क़ियामत पर) ईमान रखने वालों में से है ? ।५३।

ءَاِذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ۝

(यदि यह बात सच है तो बताइए कि) जब हम मर जाएँगे तथा मिट्टी एवं हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हमें हमारे कर्मों का बदला दिया जाएगा ? ।५४।

قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ۝

इस पर वह (मोमिन) कहेगा कि क्या तुम में से कोई ऐसा व्यक्ति है जो झाँक कर यह देखे कि उस व्यक्ति की क्या दशा है ? ।५५।

فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ۝

फिर वह स्वयं ही जानकारी का प्रयत्न करेगा और अपने सांसारिक साथी को नरक में पड़ा हुआ देखेगा ।५६।

قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ۝

फिर वह उस से कहेगा कि अल्लाह की क़सम ! तू तो मेरा भी सर्वनाश करने लगा था ।५७।

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۝

और यदि मेरे रब्ब की कृपा न होती तो आज मैं भी नरक के सामने पेश किए जाने वाले लोगों में से होता ।५८।

اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ۝

(हे नरक-वासी) ! अब तू बता कि क्या अब हमें मौत नहीं ? ।५९।

اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ۝

सिवाय हमारी पहली मौत के और हमें कोई अज़ाब नहीं दिया जाएगा ? ।६०।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

निस्सन्देह यह (मोमिन का पद) बड़ी सफलता है ।६१।

और कर्म वीरों को यही पद पाने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए ।६२।	لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ۝٦١
क्या यह आतिथ्य श्रेष्ठ है अथवा थूहर का पेड़ ? ।६३।	اَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ۝٦٢
हम ने उसे अत्याचारियों के लिए परीक्षा का एक साधन बनाया है ।६४।	اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ۝٦٣
वह एक ऐसा पेड़ है जो नरक के पेंदे से उगता है ।६५।	اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ۝٦٤
उस का फल ऐसा होता है जैसे साँपों के सिर ।६६।	طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ۝٦٥
अतः वे उस पेड़ से खाएँगे और उस से अपना पेट भरेंगे ।६७।	فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۝٦٦
और इस के सिवा उन के (पीने के) पानी में खौलता हुआ पानी डाला जाएगा ।६८।	ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ۝٦٧
फिर उन सब को लौटा कर नरक की ओर ले जाया जाएगा ।६९।	ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى الْجَحِيْمِ ۝٦٨
उन्हों ने अपने पूर्वजों को पथभ्रष्ट पाया ।७०।	اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ۝٦٩
और वे स्वयं भी उन्हीं के पद-चिह्नों पर दौड़ पड़े ।७१।	فَهُمْ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ۝٧٠
और उन से पहले अनेक पहली जातियाँ भी पथभ्रष्ट हो चुकी हैं ।७२।	وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٧١
और हम उन में रसूल भेज चुके हैं ।७३।	وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ۝٧٢

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۙ﴿۷۳﴾	फिर देखो ! जिन्हें डराया गया था उन का परिणाम क्या निकला ? ।७४।
اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۧ﴿۷۴﴾ ع	सिवाय अल्लाह के श्रद्धालु भक्तों के ।७५। (रुकू २/६)
وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ۖ﴿۷۵﴾	और हमें नूह् ने भी पुकारा था और हम बड़ा अच्छा जवाब देने वाले हैं ।७६।
وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۖ﴿۷۶﴾	और हम ने उसे भी तथा उस के परिवार को भी बहुत बड़ी घबराहट से मुक्ति दी थी ।७७।
وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ۖ﴿۷۷﴾	और संसार में केवल उस की नस्ल को ही शेष रखा था ।७८।
وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۖ﴿۷۸﴾	तथा उस के बाद आने वाली जातियों में उस की अच्छी याद क़ायम रखी थी ।७९।
سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۹﴾	समस्त जातियों की ओर से नूह् पर सलामती की प्रार्थना हो रही है ।८०।
اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۸۰﴾	हम परोपकार करने वालों को इसी प्रकार प्रतिफल देते हैं ।८१।
اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۱﴾	वह हमारे मोमिन बन्दों में से था ।८२।
ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿۸۲﴾	और दूसरे लोगों को हम ने डुबो दिया था ।८३।
وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ۘ﴿۸۳﴾	और उसी के गिरोह में से इब्राहीम भी था ।८४।
اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿۸۴﴾	जब वह अपने रब्ब के सामने एक ऐसा दिल ले कर आया था जो (शिर्क से) पवित्र था ।८५।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٦﴾

और उस समय उस ने अपने पिता तथा अपनी जाति से पूछा था कि तुम किस की उपासना करते हो ? ।८६।

اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٧﴾

क्या झूठ की ? अर्थात् अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्यों को चाहते हो ? ।८७।

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٨﴾

अतएव बताओ कि तुम्हारा समस्त लोकों के रब्ब के विषय में क्या विचार है ? ।८८।

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِى النُّجُوْمِ ﴿٨٩﴾

फिर उस ने नक्षत्रों की ओर देखा ।८९।

فَقَالَ اِنِّىْ سَقِيْمٌ ﴿٩٠﴾

और कहा कि मैं रोगी[1] होने वाला हूँ ।९०।

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿٩١﴾

अत: वे लोग[2] उसे छोड़ कर चले गए ।९१।

فَرَاغَ اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَأْكُلُوْنَ ﴿٩٢﴾

और वह भी उन के देवताओं (मूर्तियों) की ओर चुपके से चला गया तथा उन्हें देख कर कहा कि क्या तुम कुछ खाते नहीं ? ।९२।

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿٩٣﴾

तुम्हें क्या हुआ कि तुम बोलते भी नहीं हो ? ।९३।

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًاۢ بِالْيَمِيْنِ ﴿٩٤﴾

फिर चुपके से अपने दाहिने हाथ से उन पर एक भरपूर प्रहार किया ।९४।

---

1. हज़रत इब्राहीम ने अपनी जाति के रीति-रिवाज के अनुसार नक्षत्रों की चाल से अनुमान लगाया। यूँ तो पवित्र क़ुर्आन बता चुका है कि हज़रत इब्राहीम इन बातों पर विश्वास नहीं रखते थे, परन्तु अपनी जाति के लोगों को लज्जित करने के लिए उन्हों ने कहा कि तुम्हारे ज्योतिष के सिद्धान्त के अनुसार तो मैं रोगी होने वाला हूँ, किन्तु देखिएगा कि अल्लाह मुझे कैसी शक्ति प्रदान करता है तथा तुम्हें झूठा सिद्ध करता है।

2. क्योंकि वे नक्षत्रों के प्रभाव में विश्वास रखते थे और इस विचार से कि यह तो रोगी हो कर मरने ही वाला है।

فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ۝

जब लोगों को समाचार मिला तो वे उस की ओर भागते हुए आए।९५।

قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ۝

(इब्राहीम ने उन्हें) कहा कि क्या तुम अपने ही हाथों से बनाई हुई (मूर्तियों) की उपासना करते हो ?।९६।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ۝

वास्तव में अल्लाह ही ने तुम्हें पैदा किया है और तुम्हारे कर्मों[1] को भी।९७।

قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِي الْجَحِيْمِ۝

उन सब लोगों ने कहा कि इस के इर्द-गिर्द एक दीवार बना दो (और उस कुण्ड में अग्नि जलाओ) फिर इसे उस धधकती हुई आग में डाल दो।९८।

فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ۝

और उन्हों ने उस के साथ चालाकी[2] करनी चाही, परन्तु हम ने उन्हें अपमानित कर दिया।९९।

وَقَالَ اِنِّيْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ۝

और इब्राहीम ने कहा कि मैं अपने रब्ब की ओर जाऊँगा। वह अवश्य ही मुझे सफलता का मार्ग दिखाएगा।१००।

رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ۝

(और कहा कि) हे मेरे रब्ब ! मुझे सदाचारी सन्तान प्रदान कर।१०१।

---

1. इस का यह अर्थ नहीं कि मनुष्य के समस्त कर्म विवशतावश होते हैं अपितु तात्पर्य यह है कि हाथ और पाँव जिन से मनुष्य कर्म करता वह अल्लाह ही की रचना हैं अन्यथा यदि अल्लाह ज़बरदस्ती करता तो सारे संसार को हिदायत देता। वह दुराचार के लिए कदापि ज़ोर नहीं देता और उपकार तथा भलाई का काम ज़बरदस्ती कराने से भी कोई लाभ नहीं। अतः वह भलाई के कामों के लिए भी किसी को बाध्य नहीं करता।

2. मूल शब्द 'क़ैद' जब अल्लाह के लिए प्रयुक्त हो तो अर्थ उपाय आदि होता है, किन्तु जब यह शब्द मनुष्य के लिए प्रयुक्त हो तो इस का अर्थ छल, कपट, धूर्तता आदि होता है।

तब हम ने उसे एक धैर्यवान बालक की शुभ-समाचार (सुनाई) ।१०२।	فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠٢﴾
फिर जब वह बालक उस के साथ तेज़ चलने के योग्य हो गया तो उस ने कहा कि हे मेरे पुत्र ! मैं ने तुझे स्वप्न में देखा है कि (मानों) मैं तुझे ज़िबह्[1] कर रहा हूँ । अतएव तू निर्णय कर कि इस बारे में तेरा क्या विचार है ? (तो पुत्र ने) उत्तर दिया कि हे मेरे पिता ! जो कुछ तुझे अल्लाह् कहता है वही कर । यदि अल्लाह् ने चाहा तो तू मुझे अपने ईमान पर क़ायम रहने वाला पाएगा ।१०३।	فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّيْٓ اَرٰى فِي الْمَنَامِ اَنِّيْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ؗ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٣﴾
फिर जब वे दोनों आज्ञा-पालन करने के लिए तय्यार हो गए और उस (पिता) ने उस (पुत्र) को माथे के बल गिरा[2] दिया ।१०४।	فَلَمَّآ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿١٠٤﴾
और हम ने उस (इब्राहीम) को पुकार कर कहा कि हे इब्राहीम ! ।१०५।	وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿١٠٥﴾

1. इस स्वप्न का वास्तविक अर्थ यह था कि तुझे मक्का की बर्बर भूमि में छोड़ कर आने वाला हूँ जो एक प्रकार की मौत ही है । यह स्वप्न-फल शाब्दिक रूप में पूरा हुआ, यद्यपि छुरी से ज़िबह् करना पूरा न हुआ ।

2. हज़रत इस्माईल को मक्का में छोड़ आना मौत के समान था, परन्तु हज़रत इस्माईल का ज़िबह् किया जाना क़ुर्आन और बाईबिल दोनों से सिद्ध नहीं होता । बाइबिल में लिखा है कि जब हज़रत इब्राहीम हज़रत इस्माईल की बलि देने लगे तो उन्हें एक अलौकिक आवाज़ सुनाई दी कि हे इब्राहीम ! तू अपना हाथ बालक पर न चला और न उस से कुछ कर, क्योंकि अब मैं जान गया कि तू अल्लाह से डरता है । फिर उन्हों ने पीछे देखा तो एक मेंढा पाया जिसे उन्हों ने हज़रत इस्माईल के बदले ज़िबह् कर दिया । (उत्पत्ति 22:11.14)

हदीसों में कहीं भी हज़रत इस्माईल को छुरी से ज़िबह् करने का प्रमाण नहीं मिलता, अपितु ऐसा है कि हज़रत इब्राहीम उन्हें तथा उन की माता को मक्का में छोड़ आए थे और फिर जब हज़रत इस्माईल जवान हुए तो उस समय हज़रत इब्राहीम फ़लस्तीन से उन्हें मिलने आए थे ।

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

तू अपना स्वप्न पूरा कर चुका। हम उपकार करने वालों को इसी भांति प्रतिफल[1] दिया करते हैं।१०६।

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ

निस्सन्देह यह एक खुली हुई परीक्षा थी।१०७।

وَفَدَيْنَاهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ

और हम ने उस (इस्माईल) का फ़िद्य:[2] एक महान बलिदान द्वारा दे दिया।१०८।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ

और उस के पश्चात् आने वाली जातियों में उस का शुभ-संस्मरण रखा।१०९।

سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ

इब्राहीम पर सलामती हो।११०।

---

1. अर्थात् तू और तेरा पुत्र बलिदान होने के लिए तय्यार हो गए और इस प्रकार अल्लाह ने अपना सामीप्य तुम्हें वरदान के रूप में प्रदान किया जो परोपकार करने वालों का प्रतिफल है।

2. इस्राईली लोग कहते हैं कि बलिदान के लिए हज़रत इस्हाक़ को चुना गया था और वही पहलौठा था, परन्तु क़ुर्आन हज़रत इस्माईल का नाम लेता है और यही सत्य है। बाइबिल के विवेचनात्मक अध्ययन से सिद्ध होता है कि पहलौठा पुत्र बलिदान होगा और उस के कथनानुसार पहलौठा सब से बड़ा पुत्र इस्माईल ही था न कि इस्हाक़ (देखिए उत्पत्ति 15:18) अत: बलिदान के वृत्तान्त में हज़रत इस्माईल ही अभीष्ट हैं न कि कोई दूसरा। स्वप्न का वास्तविक स्वप्न-फल तो यह था कि हज़रत इस्माईल को एक प्रकार की मरुभूमि में छोड़ दिया जाए। अतएव जब इस्माईल बलिदान होने के लिए तय्यार हो गए तो अल्लाह ने कहा कि शारीरिक रूप में उन की हत्या करने से अच्छा फ़िद्य: यह है कि उन को जंगल में हर समय मौत के लिए छोड़ दिया जाए। सो तुम और तुम्हारा पुत्र इस बलिदान को स्वीकार करो तो अल्लाह के प्यारे बन जाओगे और यह इस बात का प्रमाण होगा कि तुम ने अपने पुत्र को बलि-वेदी पर चढ़ा दिया है और यह कि तुम्हारे पुत्र ने अपनी रुचि से बलि होना स्वीकार कर लिया है।

इस के अतिरिक्त मेंढे को फ़िद्य: (प्रायश्चित) के रूप में बलि देना बाइबिल में लिखा है। (उत्पत्ति 22:14) परन्तु इस बलिदान की रीति हज़रत इस्माईल की सन्तान में अरब देश में प्रचलित चली आ रही है और आज तक सभी मुसलमानों में वह रीति क़ायम है, लेकिन उस बलि की कोई रीति हज़रत इस्हाक़ के नाम से न तो यहूदियों में और न ही ईसाइयों में क़ायम है।

كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١١﴾	हम परोपकार करने वालों को इसी भाँति प्रतिफल दिया करते हैं।१११।
اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾	निस्सन्देह वह हमारे मोमिन बन्दों में से था।११२।
وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٣﴾	और हम ने उसे इस्हाक़ का भी शुभ-समाचार दिया था जो नबी था तथा सदाचारी लोगों में से था।११३।
وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ؕ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿١١٤﴾ ع	और हम ने उस (इब्राहीम) पर और इस्हाक़ पर बरकतें उतारीं और उन की सन्तान में से भी कुछ लोग पूरे-पूरे आज्ञाकारी थे तथा कुछ लोग अपनी जानों पर खुला-खुला अत्याचार करने वाले थे ।११४। (रुकू ३/७)
وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١١٥﴾	और हम ने मूसा एवं हारून पर भी उपकार किया था।११५।
وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿١١٦﴾	और हम ने उन दोनों को तथा उन की जाति के लोगों को एक बड़े चिन्ता-जनक दुःख से मुक्ति प्रदान की थी।११६।
وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٧﴾	और हम ने उन सब की सहायता की जिस का परिणाम यह निकला कि वे विजयी हुए।११७।
وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٨﴾	और हम ने उन्हें एक कामिल किताब प्रदान की थी जो समस्त आदेशों को खोल-खोल कर वर्णन करती थी।११८।
وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٩﴾	और हम ने उन दोनों को सम्मार्ग दर्शाया था।११९।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝١٢٠

और भविष्य में आने वाली जातियों में उन के लिए अच्छी याद बाकी रखी ।१२०।

سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝١٢١

मूसा एवं हारून पर सदा शान्ति होती रहे ।१२१।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٢٢

हम परोपकारियों को इसी प्रकार प्रतिफल दिया करते हैं ।१२२।

اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٢٣

वे दोनों हमारे मोमिन भक्त थे ।१२३।

وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٢٤

निस्सन्देह इल्यास हमारे रसूलों में से था ।१२४।

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝١٢٥

(याद करो) जब उस ने अपनी जाति के लोगों से कहा कि क्या तुम संयम धारण नहीं करते ? ।१२५।

اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ ۝١٢٦

क्या तुम बअल (नामक) मूर्ति को पुकारते हो और जो सर्वश्रेष्ठ पैदा करने वाला (अल्लाह) है उसे छोड़ते हो ? ।१२६।

اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٢٧

जो तुम्हारा भी रब्ब है तथा तुम्हारे पूर्वजों का भी रब्ब है ।१२७।

فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۝١٢٨

(यह सुन कर) उस की जाति ने उसे झुठलाया। सो निस्सन्देह वे अज़ाब के लिए पेश किए जाएँगे ।१२८।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝١٢٩

सिवाय अल्लाह के विशिष्ट-भक्तों के (उन से यह व्यवहार नहीं होगा) ।१२९।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝١٣٠

और हम ने पीछे आने वाली जातियों में उस (इल्यास) की अच्छी याद बाकी रखी ।१३०।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣١﴾
इल्यासीन[1] पर सदा शान्ति रहे।१३१।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾
हम परोपकारियों को इसी प्रकार प्रतिफल दिया करते हैं।१३२।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٣﴾
वह (पहला इल्यास) हमारे मोमिन बन्दों में से था।१३३।

وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٤﴾
और निस्सन्देह लूत भी रसूलों में से था।१३४।

اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣٥﴾
(उस समय को याद करो) जब हम ने उस को और उस के परिवार को बचाया।१३५।

اِلَّا عَجُوْزًا فِى الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٣٦﴾
सिवाय एक बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में से थी।१३६।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٣٧﴾
फिर हम ने शेष सभी का सर्वनाश कर दिया।१३७।

وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ﴿١٣٨﴾
और तुम उन (के निवास-स्थानों) पर से कभी तो प्रातःकाल गुज़रते हो।१३८।

وَبِالَّيْلِ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٣٩﴾
और कभी सायंकाल गुज़रते[2] हो। क्या तुम फिर भी समझ-बूझ से काम नहीं लेते? ।१३९। (रुकू ४/८)

---

1. 'इल्यासीन' इल्यास का बहुवचन है। यहूदी तथा इस्लामी साहित्य से विदित होता है कि इल्यास तीन हैं। एक इल्यास जो हज़रत मूसा से पहले हुए थे और एक हज़रत याह्या जिन का नाम भविष्यवाणी में इल्यास आया था। (देखिए मती 11:13.14) तथा हज़रत मसीह ने भी उन्हें इल्यास ही ठहराया है और एक अन्तिम युग में आने वाला इल्यास जो मसीह मौऊद और इमाम महदी से पहले उसी प्रकार प्रकट होना था जिस प्रकार हज़रत मसीह नासरी के लिए याह्या थे। यह तीसरे इल्यास हज़रत सैय्यद अहमद बरेलवी थे, जिन का मज़ार बालाकोट ज़िला हज़ारा में है।

2. विवरण के लिए देखिए सूरः 'हिज्र' टिप्पणी आयत 77)।

وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ

और निस्सन्देह यूनुस भी रसूलों में से था।१४०।

اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ

(याद करो) जब वह भाग कर एक ऐसी नौका की ओर गए जो भर जाने वाली थी (और तूफ़ान ने उन को घेर लिया और वह डुबने के निकट हो गए)।१४१।

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ

तब उन्हों ने फ़ाल (शकुन) निकाला और वे उस के अनुसार नदी में फेंके[1] जाने वाले हो गए।१४२।

فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ

इस पर उसे एक बड़ी मछली ने निगल लिया जब कि वह अपने-आप को मलामत कर रहा था।१४३।

فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ

और यदि वह स्तुति करने वालों में से न होता।१४४।

---

1. हज़रत यूनुस का प्रादुर्भाव नैनवा वालों की ओर हुआ था। नैनवा वालों ने आपको न माना। आप ने अल्लाह् के संकेत के अनुसार उन के सर्वनाश की भविष्यवाणी की और स्वयं वहाँ से चले गए। इस के पश्चात् विनाश के कुछ चिन्हों को देख कर जाति के सभी लोग भयभीत हो गए तथा वे ईमान ले आए। जाति के हार्दिक परिवर्तन के कारण अल्लाह् ने आने वाले अज़ाब को टाल दिया।

स्मरण रखना चाहिए कि डराने वाली भविष्यवाणियों में चाहे वे साधारण रूप में बिना शर्त के ही हों तथापि उन में कोई न कोई शर्त छिपी होती है ताकि भय का प्रभाव अधिक हो जाए और मनुष्य अल्लाह् के सामने सविनय झुक जाए। (रूहुल मआनी प्रति 4 पृष्ठ 190 मुद्रित मिस्र)।

हज़रत यूनुस जिस नौका द्वारा नदी पार कर रहे थे उस नदी में बाढ़ आ गई और डूब जाने की आशंका हो गई। तब नौका वालों ने सभी सवारों का क़ुर्आ डाला जो हज़रत यूनुस के नाम का निकला। इस के आधार पर रीति के अनुसार आप को नदी में डाल दिया गया। फिर आप को एक मछली ने निगल लिया। तीन दिन के पश्चात् उस ने आप को नदी के तट पर एक विस्तृत मैदान में उगल दिया और आप जीवित थे। कुछ दिनों के पश्चात् आप अपनी जाति की ओर लौट आए। वे लोग आप पर ईमान ला चुके थे। अतः आप उन को शिक्षा-दीक्षा देने लग गए। विवरणार्थ देखिए बाइबिल पुस्तक यूना तथा इस्लामी भाष्य एवं इतिहास।

لَلَبِثَ فِىۡ بَطۡنِهٖۤ اِلٰى يَوۡمِ يُبۡعَثُوۡنَ ﴿۱۴۴﴾	तो उस मछली के पेट में क़ियामत तक पड़ा रहता (अर्थात् मर जाता)।१४५।
فَنَبَذۡنٰهُ بِالۡعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيۡمٌ ﴿۱۴۵﴾	फिर हम ने उसे एक खुले मैदान में फेंक[1] दिया जब कि वह रोगी था।१४६।
وَاَنۡۢبَتۡنَا عَلَيۡهِ شَجَرَةً مِّنۡ يَّقۡطِيۡنٍ ﴿۱۴۶﴾	और हम ने उस के पास ही लौकी का एक पेड़ (बेल) उगाया।१४७।
وَاَرۡسَلۡنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلۡفٍ اَوۡ يَزِيۡدُوۡنَ ﴿۱۴۷﴾	और हम ने उसे रसूल बना कर एक लाख से कुछ अधिक व्यक्तियों की ओर भेजा।१४८।
فَاٰمَنُوۡا فَمَتَّعۡنٰهُمۡ اِلٰى حِيۡنٍ ﴿۱۴۸﴾	अतः वे सब ईमान ले आए और हम ने उन्हें दीर्घ काल तक सांसारिक लाभ पहुँचाए।१४९।
فَاسۡتَفۡتِهِمۡ اَلِرَبِّكَ الۡبَنَاتُ وَلَهُمُ الۡبَنُوۡنَ ﴿۱۴۹﴾	अतः तू इन (मक्का वालों) से पूछ कि क्या तेरे रब्ब की तो कन्याएँ हैं, किन्तु इन के लिए पुत्र ? ।१५०।
اَمۡ خَلَقۡنَا الۡمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمۡ شٰهِدُوۡنَ ﴿۱۵۰﴾	क्या हम ने फ़रिश्तों को स्त्री-रूप में पैदा किया है और वे उन की पैदाइश के गवाह हैं ? ।१५१।
اَلَاۤ اِنَّهُمۡ مِّنۡ اِفۡكِهِمۡ لَيَقُوۡلُوۡنَ ﴿۱۵۱﴾	(सावधानी से सुनो) वे अपने मनगढ़त झूठ के अनुसार यह बातें करते हैं।१५२।
وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمۡ لَكٰذِبُوۡنَ ﴿۱۵۲﴾	कि अल्लाह की भी सन्तान है, किन्तु वे सर्वथा झूठे हैं।१५३।
اَصۡطَفَى الۡبَنَاتِ عَلَى الۡبَنِيۡنَ ﴿۱۵۳﴾	क्या उस ने पुत्रों को छोड़ कर पुत्रियाँ चुन ली हैं[2] ? ।१५४।

1. अर्थात् मछली के दिल में यह बात डाली कि वह हज़रत यूनुस को मैदान में उगल दे।
2. इन्कार करने वाले लोग कई प्रकार के हैः- कुछ अल्लाह के लिए पुत्र तथा कुछ पुत्रियाँ निर्धारित

(शेष पृष्ठ ९९० पर)

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٥﴾	तुम्हें क्या हो गया कि तुम ऐसे मूर्खता पूर्ण निर्णय करते हो ? ।१५५।
اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٦﴾	क्या तुम समझ से काम नहीं लेते ? ।१५६।
اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥٧﴾	क्या तुम्हारे पास कोई खुली-खुली युक्ति है ? ।१५७।
فَأْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٥٨﴾	यदि तुम सच्चे हो तो अपनी उस किताब को लाओ जिस में ऐसा लिखा है ।१५८।
وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٥٩﴾	और यह लोग उस (अल्लाह) के तथा उन (जिन्नों) के बीच नाता जोड़ते हैं, हालाँकि जिन्न नाम पाने वाले (पर्वतीय एवं बड़े लोग) भली-भाँति जानते हैं कि (यदि वह सत्यपथगामी न होंगे तो) उन्हें भी अज़ाब दिखाया जाएगा ।१५९।
سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٦٠﴾	अल्लाह उन की बयान की हुई बातों से पवित्र[1] है ।१६०।
اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦١﴾	सिवाय अल्लाह के भक्तों के (वे ऐसी बातें नहीं करते) ।१६१।
فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ﴿١٦٢﴾	अत: (सुन लो कि) तुम और जिन की तुम उपासना करते हो ।१६२।

(पृष्ठ ९८९ का शेष)

करते हैं जैसे ईसाई हज़रत मसीह को और यहूदी हज़रत उज़ैर को अल्लाह का पुत्र ठहराते हैं, परन्तु मक्का तथा भारत के मूर्तिपूजक अल्लाह की पुत्रियाँ मानते हैं। पवित्र क़ुर्आन ने दोनों प्रकार के विचारों का खण्डन किया है और अनेक स्थानों पर बताया है कि अल्लाह पुत्र तथा पुत्रियों दोनों से पवित्र है।

1. अर्थात् फ़रिश्ते अल्लाह की पुत्रियाँ नहीं, अपितु उपासक भक्त हैं।

مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ۝١٦٢

वे अल्लाह के विरुद्ध किसी को बहका नहीं सकते।१६३।

اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ۝١٦٣

सिवाय उस दुर्भाग्यशाली व्यक्ति के जो नरक में जाने वाला है।१६४।

وَمَا مِنَّآ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ۝١٦٤

और हम सब के लिए एक निश्चित स्थान है।१६५।

وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ۝١٦٥

और हम सब[1] अल्लाह के सामने पंक्तिबद्ध खड़े हैं।१६६।

وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ۝١٦٦

और हम सब स्तुति करने वाले हैं।१६७।

وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ۝١٦٧

और कभी ये लोग (मक्का-निवासी) कहा करते थे।१६८।

لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٦٨

यदि पहली जातियों की तरह हमारी ओर भी रसूल[2] आता।१६९।

لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝١٦٩

तो हम भी अल्लाह के महान् भक्त बन जाते।१७०।

فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝١٧٠

अतः उन्हों ने उस (अल्लाह) का इन्कार कर दिया और वे शीघ्र ही अपने परिणाम को समझ लेंगे।१७१।

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٧١

और हमारा निर्णय हमारे भक्तों (रसूलों) के लिए पहले ही चुका है (जो यह है)।१७२।

---

1. अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम और आप के साथी जो जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ा करते थे।

2. मूल शब्द 'ज़िक्र' है जिस का अर्थ पवित्र क़ुर्आन में रसूल भी आया है। सूरः तलाक़ आयत 12।

اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٣﴾	कि उन की सहायता की जाएगी ।१७३।
وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٤﴾	और हमारे सेना-दल (मोमिन) ही विजयी होंगे ।१७४।
فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٥﴾	अत: तू उन से एक समय के लिए मुँह मोड़ ले ।१७५।
وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٦﴾	और उन्हें भली-भाँति देखता रह। वे भी शीघ्र ही (अपना परिणाम) देख लेंगे ।१७६।
اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٧٧﴾	क्या ये लोग हमारे भयंकर अज़ाब की शीघ्र माँग कर रहे हैं ? ।१७७।
فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٨﴾	अत: जब वह (अज़ाब) उन के आँगनों में उतरेगा तो वह जाति जिसे सावधान किया गया है उस की सुबह अत्यन्त बुरी होगी ।१७८।
وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٩﴾	और (हम फिर कहते हैं कि) उन से कुछ समय के लिए मुँह मोड़ ले ।१७९।
وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٨٠﴾	और उन की दशा देखते रहो और निस्सन्देह वे भी (अपना परिणाम) देख लेंगे ।१८०।
سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٨١﴾	तेरा रब्ब जो समस्त बड़ाइयों का स्वामी है उन की बयान की हुई बातों से पवित्र है ।१८१।
وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨٢﴾	और रसूलों पर सदैव शान्ति उतरती रहेगी ।१८२।
وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٣﴾ ع ٩	और प्रत्येक प्रकार की स्तुति का केवल अल्लाह ही अधिकारी है जो समस्त लोकों का रब्ब है ।१८३। (रुकू ५/९)
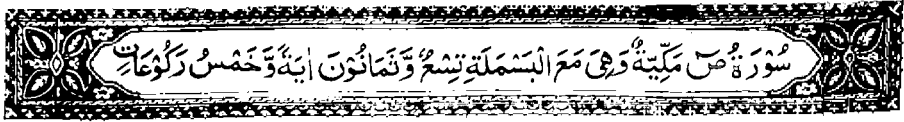
सूरः साद

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह् सहित
इस की नवासी आयतें एवं पांच रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह् का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِي الذِّكْرِ ②

साद[1]। हम इस दावा के प्रमाण में क़ुर्आन को गवाही के रूप में पेश करते हैं जो समस्त प्रकार के उपदेशों से भरा हुआ है ।२।

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّ شِقَاقٍ ③

किन्तु जिन्हों ने इन्कार किया है वे अभिमान में हैं और (अपने झूठ को सत्य सिद्ध करने के लिए) विभेद करना उन्हों ने अपनी शैली बना ली है ।३।

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ④

हम ने उन से पहले कितनी ही जातियों का सर्वनाश किया है जिस पर उन्हों ने फ़रियाद की, किन्तु यह समय मुक्ति पाने का नहीं होता ।४।

وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ

और वे आश्चर्य प्रकट करते हैं कि उन के पास उन्हीं की जाति में से सावधान करने

---

1. मूल शब्द 'साद' का अर्थ सादिक़ अर्थात् सच्चा के हैं। तात्पर्य यह है कि इस क़ुर्आन को सच्चे अल्लाह् ने उतारा है।

هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝

वाला आ गया और इन्कार करने वाले लोग कहते हैं कि यह तो एक कपटी (और) झूठा है।५।

اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ۝

क्या इस ने अनेक उपास्यों को एक[1] उपास्य बना दिया है? यह तो बड़ी विचित्र बात है।६।

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ يُّرَادُ ۝

और उन में से सरदार लोग बोले कि यहाँ से चलो तथा अपने उपास्यो पर पक्के हो कर जमे रहो। निस्सन्देह यह (क़ुर्आन का दावा) ऐसी बात है जिस में कुछ षड्यन्त्र है।७।

مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝

हम ने इस (प्रकार की बात) की चर्चा अपने से पहले वाली जाति में कदापि नहीं सुनी। यह केवल एक झूठ है।८।

ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَيْنِنَا ۭ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ۝

क्या हमारी सारी जाति के लोगों में से इसी पर उपदेश उतरा है? वास्तविकता यह है कि उन्हें मेरी ओर से उपदेश उतरने में ही सन्देह है। (वास्तव में यह सन्देह नहीं कि इस व्यक्ति पर उपदेश उतरा है या नहीं) अपितु (बात यह है कि) उन्हों ने अब तक अज़ाब नहीं भोगा।९।

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ۝

क्या तेरे प्रभुत्वशाली एवं क्षमा करने वाले रब्ब की दया के भण्डार उन्हीं के अधिकार में हैं (कि चाहे दें चाहे न दें?)।१०।

---

1. वे लोग यह आश्चर्य करते हैं कि उपास्य तो वास्तव में कई हैं, परन्तु यह व्यक्ति केवल एक ही उपास्य बताता है तो कदाचित् इस ने समस्त उपास्यों (मूर्तियों) को कूट-काट कर एक उपास्य बना दिया है। इस प्रकार वे अपनी मूर्खता को हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से सम्बन्धित करते थे।

أَمْ لَهُم مُّلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ ﴿١١﴾

क्या आसमानों तथा ज़मीन और जो कुछ उन के बीच है इन सब का अनुशासन उन्हीं के अधिकार में है ? यदि ऐसा है तो चाहिए कि रस्सों के द्वारा ऊपर[1] चढ़ जाएँ ।११।

جُندٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ﴿١٢﴾

हम एक (संयम-रहित, मन-मुख) सुसंगठित[2] सेना की सूचना देते हैं जो (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के स्थान पर आक्रमण करेगी) अन्ततः वहाँ से भाग जाएगी ।१२।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ﴿١٣﴾

इन से पहले नूह की जाति और आद तथा फ़िरऔन ने भी जो बड़ा शक्तिशाली था झुठलाया था ।१३।

وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ لْـَٔيْكَةِ ۚ أُولَـٰٓئِكَ الْأَحْزَابُ ﴿١٤﴾

समूद और लूत की जाति ने तथा ऐका[3] वालों ने (भी झुठलाया था) । ये सब (संयम-रहित, मन-मुख लोग के) एक संगठित दल थे ।१४।

إِن كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿١٥﴾ ع

इन में से प्रत्येक ने रसूलों को झुठलाया था । अतः अन्त में मेरा अज़ाब आ के ही रहा ।१५। (रुकू १/१०)

وَمَا يَنظُرُ هَـٰٓؤُلَآءِ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مَّا لَهَا مِن فَوَاقٍ ﴿١٦﴾

और ये लोग अचानक आने वाले एक अज़ाब की प्रतीक्षा कर रहे हैं जिस में कुछ देर नहीं होगी ।१६।

---

1. ऊपर चढ़ कर कोई लिखी हुई किताब इलाही प्रमाण के रूप में ले आएँ जिसे वे सारे पढ़ सकें जैसा कि वे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से माँग किया करते थे । माँग के लिए देखिए सूरः बनी इस्राईल रुकू 10 ।

2. इस आयत में 'अहज़ाब' नामक युद्ध के प्रति भविष्यवाणी है । यह आयत अहज़ाब के युद्ध से पहले उतरी थी और उस में अहज़ाब के आक्रमणकारी मुन्किरों की पराजय की सूचना दी गई है ।

3. 'ऐका' के लिए देखिए सूरः हिज्र टिप्पणी आयत 79 ।

وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ⑯

और कहते हैं कि हे हमारे रब्ब ! जो कुछ भी हमारा हिस्सा है वह हमें जल्दी से हिसाब लेने के समय से पहले ही दे दे।१७।

اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ⑰

वे जो कुछ कहते हैं उस पर तू धैर्य धारण कर और हमारे भक्त दाऊद को याद कर जो बड़ा शक्तिशाली था। निस्सन्देह वह बार-बार अल्लाह की ओर झुकने वाला था।१८।

اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَ الْاِشْرَاقِ ⑱

हम ने पर्वत-निवासियों को उस के अधीन कर दिया था और वे साँझ-सवेरे स्तुति करने में लगे रहते थे।१९।

وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ ⑲

और ऊँची उड़ान[1] उड़ने वाले मनुष्यों को एकत्रित कर के उस के साथ लगा दिया था। वे सब के सब अल्लाह की ओर झुकने वाले थे।२०।

وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ⑳

और हम ने उस की हुकूमत को मज़बूत बना दिया था तथा उसे हिक्मत और ठोस प्रमाण दिए थे।२१।

وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ㉑

और क्या तुम्हें उन शत्रुओं का पता है जब कि वे दीवार फाँद कर अन्दर आ गए थे।२२।

اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا

जब वे दाऊद के पास आए तो वह उन्हें देख कर घबरा गया। उन्हों ने कहा कि डरिये नहीं। (हम परस्पर) झगड़ने वाले दो व्यक्ति हैं। हम में से एक (व्यक्ति) दूसरे पर

---

1. मूल शब्द 'तैर' और 'जिबाल' के अर्थों के स्पष्टीकरण के लिए देखिए सूरः सबा टिप्पणी आयत 11 ।

بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾

अत्याचार कर रहा है। अतः तू हमारे बीच न्याय से निर्णय कर दे तथा अन्याय न किजियो और हमें सीधी राह दिखाइयो।२३।

اِنَّ هٰذَآ اَخِیْ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِیَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِیْ فِی الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾

यह मेरा भाई है इस की निन्नानवे[1] दुम्बियाँ हैं और मेरी केवल एक ही दुम्बी है, फिर भी यह कहता है कि अपनी दुम्बी मुझे दे दे तथा वाद-विवाद में मुझे दबाता जाता है।२४।

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖ وَاِنَّ كَثِیْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَیَبْغِیْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَقَلِیْلٌ مَّا هُمْ

(दाऊद ने) कहा कि उसने तेरी दुम्बी माँग कर अत्याचार[2] से काम लिया है। एक साथ मिल कर रहने वाले बहुत से ऐसे होते हैं जो एक-दूसरे पर अत्याचार करते हैं सिवाय मोमिन और उन लोगों के जो ईमान के अनुकूल कर्म करते हैं और वे लोग थोड़े हैं।

1. कुछ भाष्यकारों ने यहूदियो की कहानियों के आधार पर कहा है कि हज़रत दाऊद की निन्नानवे पत्नियाँ पहले थीं, फिर उन्हें हित्तीउरिया अपने एक सेना-पति की पत्नी पसन्द आ गई। उन्हों ने उस सेना-पति को जान-बूझ कर युद्ध के भयानक स्थान पर भेजवा दिया ताकि वह वहाँ मारा जाए। उस के युद्ध में मर जाने के बाद उसकी पत्नी 'बतसेबा' को दाऊद ने अपने रणवास में दाखिल कर लिया। अल्लाह ने हज़रत दाऊद को शिक्षा देने के लिए फ़रिश्तों को उन के राज-भवन में भेजा, जिन्हों ने (अल्लाह बचाए) यह दुम्बियों वाला झूठ बना लिया। (विवरण के लिए देखिए स्मोएल-2 अध्याय 11)

किन्तु वास्तविक बात यह है कि जब हज़रत दाऊद का अनुशासन काल लम्बा हो गया तो उन के शत्रुओं ने उन के विरुद्ध षड्यन्त्र आरम्भ कर दिए यहाँ तक कि उन की हत्या करने का निश्चय करके रात के समय दीवार फाँद कर उन के घर घुस गए, परन्तु हज़रत दाऊद को चौकस पा कर डर गए कि एक ही आवाज़ पर सारे संरक्षक एकत्रित हो जाएँगे। इस पर उन्हों ने यह मनगढ़त बात बना ली। वास्तव में उन्हों ने अपने विचार में हज़रत दाऊद पर यह आरोप लगाया था कि तुम शक्तिशाली हो कर अपने आस-पास के निर्बल एवं थोड़ी संख्या वाले वंशों को खाते जाते हो, किन्तु उन की यह बात सत्य न थी। हज़रत दाऊद का राज्य-क्षेत्र बहुत छोटा था तथा उन के आस-पास के रजवाड़े इराक़ तक फैले हुए थे और उन की संख्या भी हज़रत दाऊद के वंश से कहीं अधिक थी, फिर यह कि हज़रत दाऊद उन पर किसी प्रकार का कोई भी अत्याचार नहीं करते थे।

1. ऐसी अवस्था में जब कि यह रूपक सत्य हो, अन्यथा उन्हें ज्ञान था कि वे झूठ बोल रहे हैं।

وَظَنَّ دَاوُدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ ۝٢٥

और दाऊद समझ[1] गया कि हम ने उसे परीक्षा[2] में डाला है (अर्थात् शत्रुओं के सिर उठाने के कारण)। अतः उस ने अपने रब्ब से क्षमा माँगी और आज्ञा पालन करते हुए धरती पर गिर गया और (अल्लाह की ओर) ध्यान दिया।२५।

فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ۭ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝٢٦

तब हम ने उस की सब कमज़ोरियों[3] को ढाँप दिया। वास्तव में दाऊद हमारा प्यारा भक्त था और उसे हमारे पास अच्छा ठिकाना[4] मिलेगा।२६।

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِي الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ۝٢٧

(हम ने उसे) कहा कि हे दाऊद ! हम ने तुझे धरती में ख़लीफ़ा बनाया है। अतः तू लोगों में न्याय से आदेश दे और अपनी अभिलाषा का अनुसरण न कर, वह तुझे अल्लाह की राह से भटका देगी। वे लोग जो अल्लाह की राह से भटक जाते हैं उन्हें कठोर दण्ड मिलता है, क्योंकि वे हिसाब के दिन को भुला बैठते हैं।२७। (रुकू २/११)

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاۗءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا

और हम ने आसमानों तथा ज़मीन और जो कुछ इन दोनों के बीच है उसे व्यर्थ जाने

1. अर्थात् शत्रुओं में ऐसा साहस पैदा हो जाना बताता है कि देश में उपद्रव सिर उठा रहा है।

2. इस प्रकार की कोई घटना सम्राट के साथ कदापि पेश नहीं आ सकती जब तक अल्लाह की इच्छा भी वैसी ही न हो जाए। अतएव हम ने 'उसे परीक्षा में डाला' शब्द प्रयुक्त किए हैं कि यह निर्णय ईश-इच्छा के अनुसार है।

3. अर्थात् ऐसी कमज़ोरियाँ और त्रुटियाँ जिन के कारण यह घटना घटी। वे त्रुटियाँ शारीरिक और अनुशासन सम्बन्धी थीं, आध्यात्मिक त्रुटियाँ न थी।

4. यदि वास्तव में हज़रत दाऊद किसी परस्त्री और निर्बल वंशों को अत्याचार द्वारा अपने अधीन करते तो अल्लाह के प्रिय भक्त कैसे बन सकते थे।

ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ۝٢٨

वाला नहीं बनाया। यह विचार उन लोगों का है जो इन्कार करने वाले हैं। अतः इन्कार करने वालों का विनाश आग के अज़ाब के कारण होने वाला है।२८।

اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۡ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ۝٢٩

क्या हम मोमिनों को और ईमान के अनुकूल कर्म करने वालों को ऐसे लोगों के बराबर समझ लें जो धरती में उपद्रव फैलाने वाले हैं या संयमियों को दुराचारियों के समान समझ लें ?।२९।

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٣٠

यह (क़ुर्आन) एक किताब है जिसे हम ने तेरी ओर उतारा है। यह समस्त गुणों का भंडार है ताकि वे उस (अल्लाह) की बातों पर ध्यान दें और ताकि बुद्धिमान लोग शिक्षा ग्रहण करें।३०।

وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ۭ نِعْمَ الْعَبْدُ ۭ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝٣١

और हम ने दाऊद को सुलेमान प्रदान किया। वह बहुत ही अच्छा भक्त था। वह अल्लाह की ओर बहुत झुकने वाला था।३१।

اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ۝٣٢

(और याद कर) जब उस के सामने सायं-काल उत्तम प्रकार के घोड़े लाए गए।३२।

فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۝٣٣ وقفة

तो उस ने कहा कि मैं संसार की उत्तम वस्तुओं से इसलिए प्रेम करता हूँ कि वे मुझे मेरे रब्ब की याद दिलाती[1] हैं। यहाँ तक कि वे घोड़े ओट में आ गए।३३।

---

1. कुछ भाष्यकारों ने कहा है कि घोड़े देखते-देखते नमाज़ का समय जाता रहा था, किन्तु यह बात नहीं, अपितु तात्पर्य यह है कि मैं ने घोड़े अल्लाह के प्रेम के लगाव के कारण खरीदे हैं अर्थात् जिहाद के लिए। यही बात नबी की शान के अनुकूल है।

رُدُّوۡهَا عَلَىَّ ؕ فَطَفِقَ مَسۡحًۢا بِالسُّوۡقِ وَالۡاَعۡنَاقِ ۝

(उस ने कहा) उन को मेरी ओर लाओ। (जब घोड़े आए) तो वह उन की पिण्डलियों और गर्दनों पर थपकने[1] लगा।३४।

وَلَقَدۡ فَتَنَّا سُلَيۡمٰنَ وَاَلۡقَيۡنَا عَلٰى كُرۡسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ۝

और हम ने सुलेमान की परीक्षा की और उस के सिंहासन पर एक बे-जान[2] शरीर को बैठाने का निर्णय कर लिया। (फिर जब यह दृश्य उस ने आध्यात्मिक आँखों द्वारा देख लिया) तो वह अपने रब्ब की ओर झुक गया।३५।

قَالَ رَبِّ اغۡفِرۡ لِىۡ وَهَبۡ لِىۡ مُلۡكًا لَّا يَنۡۢبَغِىۡ لِاَحَدٍ مِّنۡۢ بَعۡدِىۡ ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡوَهَّابُ ۝

और उस ने (अपने पुत्र के विषय में अल्लाह से ज्ञान पा कर) कहा कि हे मेरे रब्ब ! मेरी कमज़ोरियों को ढाँप दे तथा मुझे ऐसा साम्राज्य प्रदान कर जो मेरे पश्चात् आने वाली सन्तान को विर्सा[3] में न मिले। निस्सन्देह तू बहुत क्षमा करने वाला है।३६।

فَسَخَّرۡنَا لَهُ الرِّيۡحَ تَجۡرِىۡ بِاَمۡرِهٖ رُخَآءً حَيۡثُ

और हम ने हवा को उस की सेवा में लगा दिया जो उन के आदेश के अनुसार जिधर

---

1. पवित्र क़ुर्आन के मूल शब्द 'मसह्' का अर्थ थपकना और काट डालना दोनों होते हैं। कुछ भाष्यकारों ने एक भूल की कि उन्हों ने यह अर्थ कर दिया कि घोड़ों को वापस मंगवा कर इस क्रोध में कि उन के देखने में नमाज़ का समय जाता रहा तथा क्रोध-वश उन घोड़ों को काट डाला, किन्तु ऐसा कार्य एक पागल व्यक्ति का तो हो सकता है, अल्लाह के किसी रसूल का नहीं हो सकता। वास्तव में यहाँ पर बताया है कि हज़रत सुलेमान ने घोड़े वापस मंगवाए और उन की पीठों आदि पर हाथ फेर-फेर कर थपकने और प्यार करने लगे कि मैं ने ऐसे उत्तम घोड़े जिहाद के लिए तय्यार किए हैं।

2. 'बे-जान शरीर' से यह अभिप्राय है कि हज़रत सुलेमान का उत्तराधिकारी एक ऐसा पुत्र होगा जो आध्यात्मिकता से वञ्चित होगा और उस में मानसिक प्रवृत्ति प्रबल रूप में होगी।

3. मूल शब्द 'मुल्क' से तात्पर्य नुबुव्वत अर्थात् आध्यात्मिक साम्राज्य है और नुबुव्वत ही ऐसा धन है जिस का कोई उत्तराधिकारी नहीं हो सकता। अतएव हज़रत सुलेमान ने प्रार्थना की कि हे अल्लाह ! मुझे आध्यात्मिक वरदान दे। सांसारिक उन्नति जो सन्तान द्वारा विनष्ट हो सकती है मुझे उस की इच्छा नहीं है।

वह जाना चाहते थे उधर ही वह धीमी चाल चलने लगती ।३७।	اَصَابَ ۝
इसी तरह हम ने उद्दण्डी शैतानों अर्थात् उन में से इन्जीनियरों, वस्तु-कलाकारों और डूबकी लगाने वालों को उस की सेवा में लगा रखा था ।३८।	وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّ غَوَّاصٍ ۝
और दूसरे कुछ और लोगों को भी जो बेड़ियों[1] में जकड़े रहते थे ।३९।	وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ۝
हमारी यह असीम देन[2] है। अतएव तू इन जातियों पर उपकार कर या जितना उचित समझे उन से कठोरता[3] का व्यवहार कर ।४०।	هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝
और उस (सुलेमान) को हमारा क़ुर्ब (सामीप्य) हासिल था तथा हमारे पास उस का बड़ा अच्छा ठिकाना है ।४१। (रुकू ३/१२)	وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝ ع
और हमारे भक्त अय्यूब को याद कर जब उस ने अपने रब्ब को यह कहते हुए पुकारा कि मुझे एक मुन्किर दुश्मन ने बड़े कष्ट और विपत्ति में डाला है ।४२।	وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ۝

1. प्राचीन काल में दासों को विशेष कर उन दासों को जो समुद्रों में काम करते थे, बेड़ियों में जकड़े रखते थे ताकि वे नौका से कूद कर भाग न जाएँ। रोम का इतिहास इस का साक्षी है। इस स्थान पर समुद्र में काम करने वाले नाविकों आदि का ही वर्णन है, क्योंकि पहले नौकाओं आदि का उल्लेख हुआ है जो दूर-दूर जाती थीं।

2. अर्थात् हमारी कृपा से ही ऐसे शक्तिशाली बेड़े तुझे मिले हुए हैं और उद्दण्डी जातियों पर अधिकार प्राप्त हुआ है।

3. इस से विदित होता है कि युद्ध के बन्दियों पर इतने प्रतिबन्ध लगाए जा सकते हैं कि वे भाग न सकें। इस से अधिक कठोर व्यवहार उचित नहीं।

ارْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هَٰذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ﴿٤٢﴾

(हम ने उसे कहा कि) अपनी सवारी को एड़ी मार। यह सामने स्नान करने का पानी है जो ठंडा भी है और पीने के योग्य भी।४३।

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٤٣﴾

और हम ने उसे उस का परिवार भी प्रदान किया एवं उन जैसे और भी अपनी कृपा से प्रदान किए और बुद्धिमानों के लिए शिक्षा प्राप्ति के साधन भी प्रदान किए।४४।

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِهِ وَلَا تَحْنَثْ ۗ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٤٤﴾

(और अय्यूब से कहा कि) अपने हाथ में खजूर की गुफ्फेदार एक टहनी[1] पकड़ ले और उस की सहायता से तीव्र-गति से यात्रा[2] कर (अर्थात् उस टहनी से मार-मार कर सवारी के जानवर को दौड़ा) और सत्य से (हट कर) असत्य की ओर न झुक[3]। हम ने उस (अय्यूब) को धैर्यवान पाया था। वह बहुत श्रेष्ठ भक्त था। निस्सन्देह वह अल्लाह की ओर बहुत झुकने वाला था।४५।

وَاذْكُرْ عِبَادَنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ أُولِي الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ ﴿٤٥﴾

और हमारे भक्तों इब्राहीम और इस्हाक़ एवं याक़ूब को भी याद कर जो पुरुषार्थी और दूरदर्शी थे।४६।

---

1. पर्वत-निवासी व्यक्ति पत्तों वाली लम्बी टहनी हाथ में लेकर घोड़े को मार-मार कर दौड़ाते हैं। इसी दशा का इस स्थान पर वर्णन है। इस से प्रतीत होता है कि हज़रत अय्यूब पर्वत-निवासी थे। भाष्य 'फ़तहुलबयान' में मूल शब्द 'ज़िग्स' का अर्थ लिखा है—'खजूर की गुफ़्फ़ेदार टहनी'। (प्रति 8 पृष्ठ 117)

2. मूल शब्द 'ज़रब' का अर्थ यात्रा करना भी होता है। (अक़रबुलमवारिद)

3. मूल शब्द 'हिन्स' का अर्थ है सत्य से असत्य की ओर प्रवृत्त होना। इस में यह संकेत किया गया है कि शत्रु तुझे सम्मार्ग से विचलित कर के अपनी ओर लाना चाहते हैं, यद्यपि तू स्वभावतः ऐसा नहीं कर सकता तथापि शत्रुओं के विरोध के कारण तुझे कष्ट पहुंचेंगे। अतएव हम तुझे आदेश देते हैं कि एक सवारी पर बैठ जा तथा एड़ियाँ और टहनियाँ मार-मार कर उसे दौड़ा और शीघ्र ही शत्रु का देश छोड़ दे ताकि शत्रु का तुझ पर कोई अधिकार न रहे और तू उन की नास्तिकता से जिस प्रकार आध्यात्मिक रूप में सुरक्षित है शारीरिक रूप में भी सुरक्षित हो जाए।

إِنَّا أَخْلَصْنَاهُم بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿٤٧﴾

हम ने उन को एक विशेष बात के लिए चुन लिया था और वह वास्तविक घर (आख़िरत) की याद थी ।४७।

وَإِنَّهُمْ عِندَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤٨﴾

और वे सब हमारे निकट बड़ी शान वाले और बड़े नेक लोग थे ।४८।

وَاذْكُرْ إِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ وَكُلٌّ مِّنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤٩﴾

और इस्माईल और यस्अ (यसायह) को और ज़ुल्किफ़्ल (हिज़्क़ील) को याद करो । ये सब के सब हमारे सदाचारी भक्तों में से थे ।४९।

هَٰذَا ذِكْرٌ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٥٠﴾

उन लोगों के पदचिन्हों का अनुसरण करने के लिए यह (शिक्षा) एक याददिहानी (अनुस्मारक) है और संयमियों के लिए निश्चय ही अति उत्तम ठिकाना निश्चित है ।५०।

جَنَّاتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْأَبْوَابُ ﴿٥١﴾

(अर्थात्) सदा-सर्वदा रहने वाले बाग़ जिन के द्वार उन के लिए सदैव खुले रहेंगे ।५१।

مُتَّكِئِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ﴿٥٢﴾

और वे उस में टेक लगाए बैठे हुए होंगे । उन्हें उस में प्रत्येक प्रकार का फल जो बड़ी मात्रा में होगा मिलेगा और इसी प्रकार पीने के पदार्थ भी ।५२।

وَعِندَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ ﴿٥٣﴾

और उन के पास नीची निगाह रखने वाली बराबर आयु वाली स्त्रियाँ होंगी ।५३।

هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٤﴾

ये वे बातें हैं जिन के क़ियामत के दिन मिलने की तुझ से प्रतिज्ञा की जाती है ।५४।

إِنَّ هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِن نَّفَادٍ ﴿٥٥﴾

यह हमारी देन है जो कदापि समाप्त नहीं हो सकती ।५५।

هٰذَا ۗ وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ۙ﴿۵۵﴾

यह (मोमिनों के लिए) है, किन्तु उद्दण्डियों के लिए बहुत बुरा ठिकाना है।५६।

جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۵۶﴾

अर्थात् नरक, जिस के भीतर वे प्रवेश करेंगे और वह निवास के लिए बहुत बुरा स्थान है।५७।

هٰذَا ۙ فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ۙ﴿۵۷﴾

यह (इन्कार करने वालों के लिए) है। अतः चाहिए कि वे उसे चखें अर्थात् गर्म पानी और घावों का धोवन।५८।

وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖٓ اَزْوَاجٌ ؕ﴿۵۸﴾

और इसी (गिरोह) के समान कुछ गिरोह और भी होंगे (जिन के कर्म परस्पर मिलते-जुलते होंगे)।५९।

هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًۢا بِهِمْ ؕ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿۶۰﴾

(उन में से एक गिरोह पहले वाले गिरोह की ओर संकेत करके कहेगा कि) यह भी एक गिरोह है जो तुम्हारे साथ नरक में प्रवेश करेगा तथा उन्हें कोई भी स्वागतम् कहने वाला नहीं होगा। वे अवश्य ही नरक में प्रवेश करेंगे।६०।

قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ۫ لَا مَرْحَبًۢا بِكُمْ ؕ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿۶۱﴾

(इस पर) वह गिरोह (जिस से यह बात कही जाएगी) कहेगा कि हमारी बात छोड़ो, तुम भी तो ऐसे ही लोग हो कि जिन्हें स्वागतम् कहने वाला कोई नहीं। तुम ने (हमें बहका-बहका कर) इस नरक को हमारे लिए आगे भेजा था और वह अत्यन्त बुरा ठिकाना है।६१।

قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا

इस पर वह गिरोह (जिस से वे यह बात कहेंगे) कहेगा कि हे हमारे रब्ब ! जिस किसी

فِي النَّارِ ۝٦١

ने (भी तेरी दृष्टि में) हमारे लिए इस नरक को आगे भेजा है तू उसे अधिक से अधिक आग का अज़ाब दे।६२।

وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِنَ الْأَشْرَارِ ۝٦٢

और (उस समय नरक वाले लोग) कहेंगे कि हमें क्या हुआ कि हम आज उन लोगों को नहीं देखते जिन्हें हम बुरा ठहराया करते थे।६३।

أَتَّخَذْنَاهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْأَبْصَارُ ۝٦٣

क्या हम उन्हें (ऐसे ही मनगढ़त विचारों के कारण) तुच्छ समझते थे या इस समय हमारी आंखें टेढ़ी हो गई हैं? (कि वे हमें दिखाई नहीं देते)।६४।

إِنَّ ذَٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ۝٦٤

नरक वालों का यह झगड़ा एक सच्ची बात है और ऐसा ही हो कर रहेगा।६५। (रुकू ४/१३)

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٦٥

तू उन से कह दे कि मैं तो केवल सावधान करने वाला हूँ। अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं। वह अकेला एवं प्रभुत्वशाली है।६६।

رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝٦٦

वह आसमानों तथा ज़मीन का रब्ब है और जो कुछ उन दोनों के बीच है उस का भी। वह प्रभुत्वशाली है (और) क्षमावान[1] है।६७।

1. संसार में मनुष्य ऐसा करते हैं कि जब वे किसी पर अधिकार जमा लें तो अपने शत्रुओं को मलियामेट कर देते हैं, किन्तु अल्लाह ऐसा है कि वह शक्तिशाली भी है तथा महान् क्षमावान भी अर्थात् सभी इन्कार करने वाले उस के आधिपत्य में हैं फिर भी वह दण्ड देने में ढील देता है। इस आयत में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के आचरण का वर्णन है। हज़रत आइशा के कथनानुसार अल्लाह के

(शेष पृष्ठ १००६ पर)

قُلۡ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيۡمٌ ﴿٦٨﴾

तू कह दे कि यह एक बहुत बड़ा समाचार है।६८।

اَنۡتُمۡ عَنۡهُ مُعۡرِضُوۡنَ ﴿٦٩﴾

परन्तु तुम इस से विमुख हो रहे हो।६९।

مَا كَانَ لِيَ مِنۡ عِلۡمٍۢ بِالۡمَلَاِ الۡاَعۡلٰٓى اِذۡ يَخۡتَصِمُوۡنَ ﴿٧٠﴾

मुझे गौरवशाली फ़रिश्तों का कोई ज्ञान नहीं था जब कि वे यह वाद-विवाद कर रहे थे (कि इस युग में सुधार करने के लिए कौन सा व्यक्ति उपयुक्त है)।७०।

اِنۡ يُّوۡحٰٓى اِلَىَّ اِلَّاۤ اَنَّمَاۤ اَنَا نَذِيۡرٌ مُّبِيۡنٌ ﴿٧١﴾

मुझे तो केवल यह वह्य की जाती है कि मैं खोल-खोल कर बताने वाला नज़ीर (अर्थात् नबी) हूं।७१।

اِذۡ قَالَ رَبُّكَ لِلۡمَلٰٓـئِكَةِ اِنِّىۡ خَالِـقٌۢ بَشَرًا مِّنۡ طِيۡنٍ ﴿٧٢﴾

(याद कर) जब कि तेरे रब्ब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं गीली मिट्टी से एक मनुष्य पैदा करने वाला हूँ।७२।

فَاِذَا سَوَّيۡتُهٗ وَنَفَخۡتُ فِيۡهِ مِنۡ رُّوۡحِىۡ فَقَعُوۡا لَهٗ سٰجِدِيۡنَ ﴿٧٣﴾

अतः जब मैं उसे पूरा बना लूँ तथा उस में अपनी वाणी फूँक दूँ तो तुम लोग आज्ञाकारी हो कर उस के सामने झुक जाओ।७३।

فَسَجَدَ الۡمَلٰٓـئِكَةُ كُلُّهُمۡ اَجۡمَعُوۡنَ ﴿٧٤﴾

सो सब फ़रिश्तों ने उस की आज्ञा का पालन किया।७४।

اِلَّاۤ اِبۡلِيۡسَ ؕ اِسۡتَكۡبَرَ وَكَانَ مِنَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٧٥﴾

सिवाय इब्लीस के, जिस ने अभिमान किया और वह पहले से ही इन्कार करने वाला था।७५।

(पृष्ठ १००५ का शेष)

सारे गुण आप में पाए जाते हैं। (बुख़ारी) यद्यपि यह शब्द अल्लाह के सम्बन्ध में कहे गए हैं, परन्तु इस से अभीष्ट हज़रत रसूले करीम हैं। आप ने मक्का विजय पर यही उच्च आदर्श दिखाया जब कि आप के सारे शत्रु जो रात-दिन आप को तथा आप के साथियों को असह्य दुःख दिया करते थे, वे आप के सामने लाए गए तो आप ने कहा कि जाओ। तुम में से किसी को कोई पकड़ नहीं। (सीरत हल्बिया व ज़ुर्क़ानी प्रति 2 पृष्ठ 302, 303 मुद्रालय अज़हरिया मिस्र)।

قَالَ يَٰٓإِبۡلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَن تَسۡجُدَ لِمَا خَلَقۡتُ بِيَدَيَّۖ أَسۡتَكۡبَرۡتَ أَمۡ كُنتَ مِنَ ٱلۡعَالِينَ ۝٧٦

अल्लाह ने कहा कि हे इब्लीस ! तुझे किस ने इस बात से रोका कि जिस को मैं ने अपने दोनों हाथों से बनाया था उस की आज्ञा का पालन करता । क्या तू ने अपने-आप को बड़ा समझा अथवा तू वास्तव में मेरी आज्ञा का पालन करने से ऊपर है ? ।७६।

قَالَ أَنَا۠ خَيۡرٞ مِّنۡهُ خَلَقۡتَنِي مِن نَّارٖ وَخَلَقۡتَهُۥ مِن طِينٖ ۝٧٧

शैतान ने कहा कि कम से कम मैं इस व्यक्ति (आदम) से अवश्य ही अच्छा हूँ। तूने मुझे आग से पैदा किया है तथा उसे गीली[1] मिट्टी से पैदा किया है ।७७।

قَالَ فَٱخۡرُجۡ مِنۡهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٞ ۝٧٨

इस पर (अल्लाह ने) कहा कि इस स्थान से निकल जा, क्योंकि तू हमारी ओर से फटकारा गया है ।७८।

وَإِنَّ عَلَيۡكَ لَعۡنَتِيٓ إِلَىٰ يَوۡمِ ٱلدِّينِ ۝٧٩

और जज़ा सज़ा (अर्थात् कर्मों का फल पाने) के समय तक तुझ पर हमारी फटकार पड़ती रहेगी ।७९।

قَالَ رَبِّ فَأَنظِرۡنِيٓ إِلَىٰ يَوۡمِ يُبۡعَثُونَ ۝٨٠

इस पर उस ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! (यदि ऐसा ही करना है) तो मुझे उस समय तक ढील दे जब तक उन्हें जीवित करके पुनः खड़ा कर दिया जाए ।८०।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ ٱلۡمُنظَرِينَ ۝٨١

इस पर (अल्लाह ने) कहा कि अच्छा ! तो तू अपने-आप को ढील पाने वालों में से समझ ले ।८१।

إِلَىٰ يَوۡمِ ٱلۡوَقۡتِ ٱلۡمَعۡلُومِ ۝٨٢

यह ढील एक निश्चित समय तक होगी ।८२।

1. आग से पैदा करने के अर्थों के लिए देखिए सूरः आराफ़ टिप्पणी आयत 13 ।

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٣﴾

तब उस ने कहा कि मुझे तेरे आदर की सौगन्ध ! मैं इन में से सब के सब को ।८३।

اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٨٤﴾

सिवाय तेरे चुने हुए भक्तों के शेष सब लोगों को पथभ्रष्ट करूँगा ।८४।

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ ﴿٨٥﴾

तब (अल्लाह ने) कहा कि वास्तविकता यह है और मैं वास्तविक बात ही कहा करता हूँ ।८५।

لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٦﴾

कि मैं नरक को तुझ से तथा उन से जो तेरा अनुसरण करेंगे सब से भर दूँगा ।८६।

قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ﴿٨٧﴾

तू कह दे कि मैं इस (प्रचार) पर तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगता और न मेरा स्वभाव बनावट से बात करने का है ।८७।

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٨﴾

यह (क़ुर्आन) तो समस्त लोकों के लिए शिक्षा-प्रद किताब है ।८८।

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ﴿٨٩﴾

और तुम कुछ समय के पश्चात् इस के समाचार[1] सुन लोगे ।८९।

1. अर्थात् इस की भविष्यवाणियाँ पूरी हो जाएँगी ।
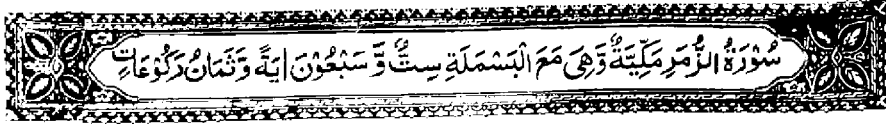
सूरः अल्-ज़ुमर

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की छिहत्तर आयतें एवं आठ रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूं) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ②

इस किताब का उतरना अल्लाह की ओर से है, जो ग़ालिब और समस्त काम हिक्मतों के अधीन करने वाला है।२।

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ③

हम ने तेरी ओर यह सत्यपूर्ण धर्म-ग्रन्थ (क़ुर्आन) उतारा है। अतः तू अल्लाह के लिए आज्ञापालन को विशिष्ट करते हुए उस की उपासना कर।३।

اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ

सुनो! शुद्ध आज्ञाकारिता अल्लाह ही का हक़ है और जो लोग उसे छोड़ कर अन्य सत्ताओं को मित्र बनाते हैं (यह कहते हुए) कि हम उन की उपासना केवल इसलिए करते हैं कि वे हमें अल्लाह का सामीप्य[1] प्रदान कर दें। अल्लाह उन के बीच उन बातों के विषय में जिन में वे मतभेद करते हैं निर्णय करेगा।

1. वर्तमान युग के अधर्मी इस बहाना से शिर्क के कीचड़ में फंसे हुए हैं, परन्तु प्राचीन काल के मुश्रिकों में से भी कुछ लोग शिर्क की यही दार्शनिकता बताया करते थे।

كفار ﴿٣﴾

निस्सन्देह अल्लाह झूठे एवं कृतघ्न व्यक्ति को सफलता का मार्ग नहीं दिखाता ।४।

لو اراد الله ان يتخذ ولدا لاصطفى مما يخلق ما يشاء سبحنه هو الله الواحد القهار ﴿٤﴾

यदि अल्लाह पुत्र बनाने का इरादा रखता तो अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहता चुन लेता। वह (सचमुच के पुत्र के कलंक से) पवित्र है। बात यह है कि अल्लाह एक है और प्रभुत्व-शाली है।५।

خلق السموت والارض بالحق يكور اليل على النهار ويكور النهار على اليل وسخر الشمس والقمر كل يجري لاجل مسمى الا هو العزيز الغفار ﴿٥﴾

उस ने आसमानों तथा ज़मीन को पूर्ण सूक्ष्म दार्शनिकता के साथ पैदा किया है। वह रात को दिन पर तथा दिन को रात पर आच्छादित कर देता है और सूर्य एवं चन्द्रमा को उस ने (एक सिद्धान्त के अधीन) काम पर लगा रखा है। दोनों में से प्रत्येक एक निश्चित समय के लिए एक (निश्चित) मार्ग पर चल रहा है। सुनो ! वह बड़ा प्रभुत्व-शाली और बहुत क्षमा करने वाला है।६।

خلقكم من نفس واحدة ثم جعل منها زوجها وانزل لكم من الانعام ثمنية ازواج يخلقكم في بطون امهتكم خلقا من بعد خلق في ظلمت ثلث ذلكم الله ربكم له الملك لا اله الا هو فانى تصرفون ﴿٦﴾

उस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया है, फिर उस ने उसी जिन्स में से उस का जोड़ा बनाया और उस ने तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ जोड़े बनाए हैं। वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भाशयों में पैदा करता है अर्थात् एक उत्पत्ति के पश्चात् क्रमशः दूसरी उत्पत्ति में परिवर्तन करते हुए तीन अन्धेरों में से गुज़ार कर। यह अल्लाह तुम्हारा रब्ब है। शासन उसी के अधीन है। केवल वही एक उपास्य है। अतः तुम कहाँ बहकाए जाते हो।७।

ان تكفروا فان الله غني عنكم ولا يرضى لعباده

यदि तुम इन्कार करो तो अल्लाह तुम्हारा मुहताज नहीं और वह अपने बन्दों के प्रति

الْكُفْرَ ۚ وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٧﴾

इन्कार को कदापि पसन्द नहीं करता और यदि तुम धन्यवाद करो तो वह उसे तुम्हारे लिए पसन्द करता है और बोझ उठाने वाली कोई जान दूसरे का बोझ नहीं उठा सकती और तुम सब को अपने रब्ब की ओर ही लौट कर जाना होगा, तब वह तुम्हें जो कर्म तुम करते थे वह बताएगा। वह सीने के भीतर वाली छिपी हुई बातों को भी जानने वाला है।८।

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَنْدَادًا لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ﴿٨﴾

और जब कभी मनुष्य को कोई कष्ट पहुँचता है तो वह अपने रब्ब की ओर ध्यान देते हुए उसे पुकारता है, फिर जब वह मनुष्य को अपनी ओर से वरदान प्रदान कर देता है तो मनुष्य उस उद्देश्य को भूल जाता है जिस के लिए वह उसे पुकारता था तथा अल्लाह के साझी नियुक्त कर देता है ताकि उस के मार्ग से लोगों को भटका दे। तू कह दे कि (हे मानव !) अपने इन्कार के कारण कुछ समय तक लाभ उठा ले, अनन्तः तू नरक में पड़ने वाला है।९।

أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٩﴾

क्या जो व्यक्ति रात की घड़ियों में सजदः और क़ियाम[1] की अवस्था में आज्ञा पालन करने का आदर्श दिखलाता है तथा क़ियामत से डरता है और अपने रब्ब की दया की आशा रखता है (वह अवज्ञाकारियों की भाँति हो सकता है ?) तू कह दे कि क्या ज्ञानी और अज्ञानी एक हो सकते हैं ? शिक्षा तो केवल बुद्धिमान लोग ही प्राप्त किया करते हैं।१०। (रुकू १/१५)

1. नमाज़ पढ़ते हुए उपासक की वह दशा जिस में वह सीधा खड़ा होता है।

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

(इसी तरह) तू कह दे कि हे मेरे मोमिन बन्दो! अपने रब्ब के लिए संयम धारण करो। वे लोग जो इस संसार में (अल्लाह के) आदेशों को पूर्ण रूप से पूरा करते हैं उन के लिए (आख़िरत में) उत्तम प्रतिफल निश्चित है और अल्लाह की धरती विशाल[1] है। धैर्यवानों को उन का प्रतिफल बिना हिसाब के पूरा-पूरा[2] दिया जाएगा।११।

قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۝

तू कह दे कि मुझे आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह की इस प्रकार उपासना करूँ कि आज्ञाकारिता को केवल उसी के लिए विशेष कर दूं।१२।

وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝

और मुझे आदेश मिला है कि मैं सब से बढ़ कर आज्ञाकारी बनूं।१३।

قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝

कह दे कि यदि मैं अपने रब्ब की अवज्ञा करूं तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ।१४।

قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُ دِيْنِيْ ۝

(और फिर) कह दे कि मैं अल्लाह की उपासना अपनी आज्ञाकारिता को केवल उसी से सम्बन्धित करते हुए करता हूँ।१५।

فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ

(रहे तुम) सो तुम अल्लाह के सिवा जिस की चाहो उपासना करो और (यह भी) कह दे

1. यदि किसी स्थान पर मोमिन को कष्ट पहुँचे तो उन्हें देश-त्याग कर के किसी दूसरे स्थान पर चले जाना चाहिए।

2. अर्थात् उन का प्रतिफल होगा भी बे-हिसाब और अनगिनत होते हुए भी बढ़ता ही चला जाएगा।

الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

कि पूरे रूप में हानि उठाने वाले लोग वे ही हैं जिन्हों ने अपने-आप को भी तथा अपने नातेदारों को भी क़ियामत के दिन घाटे में डाल दिया। सुनो ! यही खुला-खुला घाटा है।१६।

لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ؕ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿١٧﴾

उन के ऊपर तथा उन के नीचे आग की छाया[1] होगी। यह वह वस्तु है जिस से अल्लाह अपने बन्दों को डराता है, हे मेरे बन्दो ! मेरे लिए संयम धारण करो।१७।

وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ يَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٨﴾

और जो उद्दण्डी लोगों की आज्ञा का पालन करने से बचते हैं तथा अल्लाह की ओर झुकते हैं उन के लिए बहुत बड़ा शुभ-समाचार है। अतः तू मेरे उन बन्दों को शुभ-समाचार सुना दे।१८।

الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿١٩﴾

जो हमारी बात को सुनते हैं और फिर उस में से सर्वोत्तम आदेश का अनुसरण करते हैं, वही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और वही लोग समझ वाले हैं।१९।

اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ؕ اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِى النَّارِ ﴿٢٠﴾

क्या यह मनुष्य जिस के लिए अज़ाब की भविष्यवाणी पूरी हो चुकी हो (उसे कोई बचा सकता है और) क्या तू आग में पड़ने वालों को बचा सकता है ?।२०।

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۬ؕ وَعْدَ

किन्तु वे लोग जो अपने रब्ब के लिए संयम धारण करते हैं उन्हें कई मंजिलों वाले मकान दिए जाएँगे जिन के ऊपर और ठोस मंजिलें बनी हुई होंगी। उन के नीचे नहरें बहती

1. अर्थात् उन का ओढ़ना-बिछौना आग होगी।

اللّٰهِ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ﴿٢١﴾

होंगी। यह अल्लाह का पक्का बचन है और अल्लाह अपने बचन भंग नहीं किया करता।२१।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطٰمًا ۚ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٢٢﴾ ع

क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश से पानी उतारा, फिर उसे धरती में से स्रोत के रूप में चलाया है, फिर वह उस पानी के द्वारा भिन्न-भिन्न रंगों की खेती उगाता है, फिर वह पकने पर आ जाती है तो तू उसे पीला पीला देखता है, फिर अल्लाह उसे घास-फूस की भाँति कूड़ा बना देता है। इस में समझ वाले लोगों के लिए बड़ी शिक्षा है।२२। (रुकू २/१६)

أَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ أُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٣﴾

क्या अल्लाह, जिस का सीना आज्ञा पालन के लिए खोल दे और उसे अपने रब्ब की ओर से प्रकाश भी मिला हो (वह उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जो ऐसा नहीं)। अतः उन पर खेद ! जिन के दिल अल्लाह की याद के बारे में कठोर हैं। वे खुली-खुली पथ-भ्रष्टता में भटक रहे हैं।२३।

اللّٰهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِيْنُ

अल्लाह वह है जिस ने उत्तम से उत्तम बात अर्थात् ऐसी किताब उतारी है जो मिलती-जुलती[1] भी है तथा उस के विषय भी अति उत्तम[2] हैं। जो लोग अपने रब्ब से डरते हैं

---

1. पवित्र क़ुर्आन की कुछ आयतें तो ऐसी हैं जिन का विषय बाइबिल और पिछली पुस्तकों से मिलता-जुलता है और कुछ आयतें ऐसी हैं जो नए-नए विषय वर्णन करती हैं और बड़ी शान वाली हैं। उन के महत्व को कोई भी पहली पुस्तक नहीं पहुँचती।

2. मूल शब्द 'मसानी' का अर्थ मोड़ के और दोतारा के तार के हैं जिसे बहुधा नखों से बजाया (शेष पृष्ठ १०१५ पर)

جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾

उन के शरीर के रौंगटे उस के पढ़ने से खड़े हो जाते हैं, फिर उन की त्वचाएँ एवं दिल विनम्र हो कर अल्लाह की याद में झुक जाते हैं। यह (क़ुर्आन) अल्लाह की हिदायत है जिस के द्वारा वह जिसे चाहता है सत्यपथ दर्शाता है और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे उसे कोई भी हिदायत नहीं दे सकता।२४।

اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٢٥﴾

क्या वह व्यक्ति जो अपने मुंह[1] को क़ियामत के दिन कठोर अज़ाब (नरक) से बचने के लिए ढाल बनाता है (वह स्वर्ग में जाने वाले के बराबर हो सकता है ?) और अत्याचारियों से कहा जाएगा कि अपने कर्मों का फल भोगो।२५।

كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

उन से पहले वाले लोग भी झुठला चुके हैं, फलस्वरूप उन पर ऐसी-ऐसी दिशाओं से अज़ाब आया जिन का उन्हें ज्ञान नहीं था।२६।

فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾

और अल्लाह ने उन्हें सांसारिक जीवन में भी अपमानित किया तथा क़ियामत में जो अज़ाब आएगा यदि वे समझें तो वह इस से भी बड़ा (भयानक) होगा।२७।

(पृष्ठ १०१४ का शेष)

जाता है। नखों को अरबी भाषा में ज़ुफ़र कहते हैं। इसी को अंग्रेज़ी में परिवर्तित करके उस बाजा का नाम ज़फ़र (Zafer) रखा गया है, जिस से मनमोहक ऊँचा और मधुर स्वर निकलता है। अत: इस आयत में पवित्र क़ुर्आन की यह प्रशंसा की गई है कि पहली पुस्तकों की अपेक्षा इस की शिक्षा अत्यन्त मधुर, सुरीली और शानवाली है।

1. क़ियामत के दिन इन्कार करने वाले लोग अज़ाब की कठोरता के कारण ऐसे व्याकुल हो जाएँगे कि अपने मुंहों को सुरक्षित रखने की अपेक्षा जो वस्तुत: सुरक्षित रखने के योग्य हैं उन्हीं को ढाल के रूप में आगे कर देंगे तथा पेटों पर घसीटते हुए नरक में जा पड़ेंगे।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝

और हम ने इस क़ुर्आन में प्रत्येक प्रकार की बातें वर्णन कर दी हैं ताकि वे (मुन्किर) शिक्षा प्राप्त करें।२८।

قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝

हम ने इसे क़ुर्आन बनाया है जो अपना अभिप्राय खोल-खोल कर बताने वाला है। इस में कोई टेढ़ा-पन नहीं। (यह इसलिए उतरा है) ताकि लोग संयम धारण करें।२९।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

अल्लाह उस मनुष्य की दशा को (शिक्षार्थ) वर्णन करता है, जिस के कई स्वामी हैं, जिन में परस्पर मतभेद भी है और एक दूसरा मनुष्य है जो पूरे का पूरा एक ही व्यक्ति की सम्पत्ति है। क्या ये दोनों[1] व्यक्ति अपनी परिस्थिति में बराबर हो सकते हैं? प्रत्येक प्रकार की स्तुति अल्लाह ही के लिए है, परन्तु उन में से बहुत से लोग जानते नहीं।३०।

اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ۝

तू भी एक दिन मरने वाला है और वे भी मरने वाले हैं।३१।

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ۝

फिर तुम सब के सब क़ियामत के दिन अपने रब्ब के सामने अपने-अपने मन्तव्यों एवं कर्मों को पेश करोगे।३२। (रुकू ३/१७)

---

1. अर्थात् एकेश्वरवादी और अनेकेश्वरवादी।

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ اِذْ جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِىْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝

और उस व्यक्ति से बढ़ कर दूसरा कौन अत्याचारी हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े तथा अल्लाह की ओर से आने वाले सत्य को झुठलाए जब कि वह उस के पास आ जाए। क्या इन्कार करने वालों का ठिकाना नरक नहीं है ?।३३।

وَالَّذِىْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖۤ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝

और हर-एक ऐसा व्यक्ति जो अल्लाह की ओर से सच्ची शिक्षा लाए तथा ऐसा व्यक्ति भी जो ऐसी शिक्षा को सच्चा सिद्ध करे तो ऐसे लोग ही संयमी होते हैं।३४।

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الْمُحْسِنِيْنَ ۝

वे जो कुछ चाहेंगे वह उन्हें अपने रब्ब के पास मिलेगा। निस्सन्देह परोपकारियों का प्रतिफल ऐसा ही होता है।३५।

لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِىْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِىْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

ताकि अल्लाह उन के कर्मों के बुरे हिस्सों को ढाँप दे और उन का प्रतिफल उन कर्मों के अनुकूल दे दे, जो उन के कर्मों में से सर्वश्रेष्ठ हैं।३६।

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ وَيُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝

क्या अल्लाह अपने बन्दों के लिए काफ़ी नहीं ? वे लोग तुझे उन से डराते हैं जो उस (अल्लाह) के सिवा हैं तथा जिसे अल्लाह गुमराह समझे उसे हिदायत देने वाला कोई नहीं।३७।

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِى انْتِقَامٍ ۝

और जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता। क्या अल्लाह ग़ालिब और बदला[1] लेने पर अधिकार नहीं रखता ?।३८।

1. इन्कार करने वाले तो यह कोशिश करते थे कि किसी तरह मोमिन लोग पथभ्रष्ट हो जाएँ,
(शेष पृष्ठ १०१८ पर)

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ۗ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۗ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٣٩﴾

और यदि तू उन से पूछे कि आसमानों तथा जमीन को किस ने पैदा किया है तो वे अवश्य ही कहेंगे कि अल्लाह ने। तू कह दे कि क्या तुम्हें ज्ञात है कि तुम अल्लाह के सिवा किसे पुकारते हो? यदि अल्लाह मुझे हानि पहुँचाना चाहे तो क्या वे (झूठे उपास्य) उस की हानि को दूर कर सकते हैं? या अल्लाह यदि मुझ पर दया करना चाहे तो क्या वे (उपास्य) उस की दया को रोक सकते हैं? तू कह दे कि मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है। भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।३९।

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٠﴾

तू कह दे कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम अपनी-अपनी जगह पर कर्म करो, मैं भी अपनी जगह पर कर्म करूँगा। अतः तुम्हें अवश्य विदित हो जाएगा।४०।

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٤١﴾

कि किस पर ऐसा अज़ाब आता है जो उसे ज़लील कर देता है और किस पर वह अज़ाब आता है जो स्थाई होता है।४१।

اِنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا

निस्सन्देह हम ने यह किताब हक़ और हिक्मत के साथ लोगों के समझाने के लिए तुझ पर उतारी है। अतः जिस ने हिदायत पा ली

(पृष्ठ १०१७ का शेष)

किन्तु मोमिनों के त्याग के कारण अल्लाह चाहता था कि मोमिन बढ़ें फलें। अतएव इस आयत में बताया कि क्या अल्लाह इस बात का सामर्थ्य नहीं रखता है कि जो उस की अपनी अभिलाषा है उसे पूरा करे तथा जो उस के शत्रुओं की इच्छा है उसे असफल बना दे।

وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝

उस का लाभ उसी की जान को होगा तथा जो कोई गुमराह हो गया उस की गुमराही का दण्ड उसी पर पड़ेगा और तू उन पर कार्य-साधक के रूप में नियुक्त नहीं किया गया ।४२। (रुकू ४/१)

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

अल्लाह हर एक व्यक्ति की जान उस की मौत के समय निकालता है और जिसे मौत नहीं आई उस की जान निद्रा के समय अपने अधिकार में कर लेता है, फिर वह जिस की मौत का आदेश दे चुका होता है उस की जान को रोके रखता है तथा दूसरी जान को निश्चित समय के लिए वापस लौटा देता है। इस बात में सोचने-समझने वाली जाति के लोगों के लिए निशान हैं ।४३।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَاۗءَ ۭ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْــــًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ۝

क्या उन्हों ने अल्लाह के सिवा दूसरों को सिफ़ारिशी बना रखा है ? तू कह दे कि यदि उन के अधिकार में कोई भी शक्ति न हो और न उन्हें (किसी प्रकार की) सूझ-बूझ ही हो ? (फिर भी उन्हें सिफ़ारिशी ठहराओगे ?) ।४४।

قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۭ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

तू कह दे कि सिफ़ारिश का अधिकार सब का सब अल्लाह ही के हाथ में हैं (वह जिसे चाहता है यह अधिकार देता है)। आसमानों तथा ज़मीन का साम्राज्य उसी का है और तुम उसी की ओर वापस लौटाए जाओगे ।४५।

وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ

और जब एक ही अल्लाह का वर्णन किया जाता है तो जिन लोगों का क़ियामत पर ईमान नहीं होता उन के दिल (ऐसे उपदेश

لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۚ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝

से) घृणा[1] करने लग जाते हैं तथा जब उन (मूर्तियों) का वर्णन किया जाता है जो अल्लाह् के मुक़ाबिले में बिल्कुल तुच्छ हैं, तो वे अचानक प्रसन्न होने लगते हैं ।४६।

قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

तू कह दे कि हे अल्लाह् ! आसमानों तथा ज़मीन के पैदा करने वाले, परोक्ष तथा अपरोक्ष को जानने वाले, तू ही अपने बंदों के बीच उन समस्त बातों का निर्णय करने वाला है जिस में वे मतभेद करते हैं ।४७।

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ وَبَدَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ۝

और यदि अत्याचारी लोग जो कुछ पृथ्वी में है उस के स्वामी होते बल्कि उतना ही और भी उन के पास होता तो वे क़ियामत के दिन अज़ाब से बचने के लिए उसे फ़िद्‌य: के रूप में दे देते और अल्लाह् की ओर से उन पर वह सब कुछ खुल जाएगा जिस का उन्हें अनुमान भी नहीं था ।४८।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝

और उन पर उन के कर्मों की बुराइयाँ खुल जाएँगी तथा जिस अज़ाब के बारे में वे हँसी किया करते थे वही उन्हें सब ओर से घेर लेगा ।४९।

فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِنَّا ۙ قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلٰى عِلْمٍ ۚ بَلْ

और मनुष्य को जब कोई हानि पहुँचती है तो वह हमें पुकारने लग जाता है और जब हम अपने पास से कोई उपकार करते है तो वह कहता हैं कि यह निअमत मुझे अपनी विद्या के बल-बूते पर मिली है, (परन्तु यह बात ठीक) नहीं, अपितु उस का मिलना एक

1. अर्थात् अनकेश्वरवादी लोग अकेश्वरवाद के वर्णन पर बहुत चिढ़ते हैं ।

هِيَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

परीक्षा है, किन्तु उन में से बहुत से लोग जानते नहीं ।५०।

قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝

यही बात उन से पहले के लोग भी कह चुके हैं, फिर भी उन के कर्म उन के काम न आए ।५१।

فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ؕ وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝

अपितु उन के कर्मों की बुराइयों ने उन्हें आ पकड़ा और इस युग के लोगों में से जो अत्याचारी हैं उन्हें भी उन के कर्मों की बुराइयाँ पकड़ लेंगी तथा वे अल्लाह को उस के इरादा से रोक न सकेंगे ।५२।

اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रोज़ी में बहुतात पैदा कर देता है तथा (जिस के लिए चाहता है) तंगी पैदा कर देता है और इस में मोमिनों के लिए बड़े-बड़े निशान हैं ।५३। (रुकू ५/२)

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

तू उन्हें (हमारी ओर से) कह दे कि हे मेरे बन्दो! जिन्हों ने अपनी जानों पर (पाप कर के) अत्याचार किया है अल्लाह की दयालुता से निराश न हों। अल्लाह पापों को क्षमा कर देता है। वह क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है ।५४।

وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝

और तुम सब अपने रब्ब के सामने झुक जाओ, उस अज़ाब के उतरने से पहले-पहले उस (अल्लाह) के पूर्ण रूप से आज्ञाकारी बन जाओ कि जिस के उतरने के बाद तुम्हारी सहायता के लिए कोई न पहुँच सकेगा ।५५।

وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ

और जो कुछ तुम्हारी ओर उतरा है उस में से अपनी स्थिति के अनुसार सब से उत्तम

قَبْلِ اَنْ يَّأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝٥٦

आदेश[1] का अनुसरण करो, इस से पहले कि तुम्हें अचानक अज़ाब आ पकड़े और तुम्हें कुछ पता भी न चले ।५६।

اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ۝٥٧

ताकि ऐसा न हो कि तुम में से कोई व्यक्ति यह कहने लगे कि मैं ने अल्लाह के सम्बन्ध में जो कमी की है उस के कारण मुझ पर अफ़सोस ! मैं तो (ईशवाणी को) तुच्छ समझता रहा था ।५७।

اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝٥٨

अथवा कोई यह कहने लगे कि यदि अल्लाह मुझे (ज़बरदस्ती) हिदायत दे देता तो मैं भी संयमियों में से होता ।५८।

اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٥٩

या जब अज़ाब को देखे तो कहने लगे कि यदि मुझे वापस लौट जाने का अवसर मिल जाता तो मैं परोपकारियों में सम्मिलित हो जाता ।५९।

بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٦٠

ऐसा कदापि नहीं हो सकता, अपितु तेरे पास हमारे निशान आ चुके थे फिर भी तू ने उन का इन्कार किया तथा अभिमान से काम लिया और इन्कार करने वालों में शामिल हो गया ।६०।

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ۗ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝٦١

और क़ियामत के दिन तू उन लोगों को देखेगा जिन्हों ने अल्लाह पर झूठ गढ़ा था कि उन के मुँह काले होंगे। क्या अभिमानियों का स्थान नरक नहीं है ? ।६१।

---

1. अर्थात् अधिक से अधिक जितनी क्षमता हो उस के अनुसार कर्म करने का प्रयत्न करो ।

وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ
السُّوْءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾

और अल्लाह् संयमियों को उन की शान के अनुकूल सफलता प्रदान कर के हर प्रकार के दु:ख और चिन्ता से मुक्ति देगा, न तो उन्हें कोई कष्ट होगा और न उन्हें किसी (विगत त्रुटि) पर चिन्ता होगी ।६२।

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿٦٣﴾

अल्लाह् समस्त प्रकार के पदार्थों का पैदा करने वाला है तथा वह प्रत्येक काम के करने के लिए काफ़ी है ।६३।

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٤﴾

आसमानों तथा जमीन की कुञ्जियाँ उसी के हाथ में हैं और जो लोग अल्लाह् की आयतों का इन्कार करते हैं वही घाटे में पड़ते हैं ।६४। (रुकू ६/३)

قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿٦٥﴾

तू कह दे कि हे मूर्खो ! क्या तुम मुझे आदेश देते हो कि मैं अल्लाह् के सिवा किसी दूसरी सत्ता की उपासना करूँ ? ।६५।

وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ
اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ
الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٦﴾

हालाँकि अल्लाह की ओर से तेरी ओर तथा तुझ से पहले नबियों की ओर वह्य की गई है (और हर-एक नबी को कहा गया था) कि यदि तू शिर्क को अपनाएगा तो तेरे समस्त कर्म नष्ट हो जाएँगे और तू उन लोगों में से हो जाएगा जो घाटा उठाने वाले होते हैं ।६६।

بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٧﴾

(अतः ऐसा न कर) अपितु अल्लाह् की उपासना कर तथा कृतज्ञ बन्दों में शामिल हो जा ।६७।

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا

और उन्हों ने अल्लाह के गुणों का ठीक अनुमान नहीं लगाया, हालाँकि धरती सारी

قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٦٨

की सारी उसी के स्वामित्व में है और आसमान (तथा ज़मीन दोनों) क़ियामत के दिन उस के दाहिने हाथ में लिपटे[1] हुए होंगे। वह पवित्र है और उन के शिर्क के मंतव्यों से बहुत ऊँचा है।६८।

وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ۝٦٩

और बिगुल बजाया जाएगा तो आसमान और ज़मीन में जो कोई भी है उस पर एक प्रकार की बेहोशी छा जाएगी, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे अल्लाह् बचाना चाहेगा। फिर दूसरी बार बिगुल बजाया जाएगा तथा वे सब के सब अचानक (अपने सम्बन्ध में निर्णय की) प्रतीक्षा करते हुए खड़े हो जाएँगे।६९।

وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِاْىْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٧٠

और ज़मीन अपने रब्ब के प्रकाश से प्रकाशित हो जाएगी और किताब सामने रख दी जाएगी तथा नबियों एवं दूसरे गवाहों को लाया जाएगा। फिर उन समस्त लोगों के बीच सच्चाई के अनुसार ठीक-ठीक निर्णय कर दिया जाएगा तथा उन पर कुछ भी अत्याचार नहीं किया जाएगा।७०।

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ

और हर-एक जान ने जो कमाया होगा उसे उस के अनुसार पुरा-पूरा प्रतिफल प्रदान किया जाएगा और वह (अल्लाह्) उन के

1. 'लिपटे हुए' होने से तात्पर्य यह है कि जब मनुष्य किसी वस्तु को अपने हाथ में लपेट लेता है तो वह उस के हाथ से बाहर निकल नहीं सकती जैसे कोई व्यक्ति रेत को हाथ में पकड़ ले तो दबाने से वह उस की मुट्ठी से बाहर निकल जाएगी, किन्तु यदि रूई को लपेट ले तो वह दबाने से और भी उस की मुट्ठी की पकड़ में आ जाती है बाहर नहीं निकल सकती। अतएव दाहिने हाथ में लपेटे जाने से यह अभिप्राय है कि दाहिना हाथ शक्ति का द्योतक है। उस में ज़मीन और आसमान लिपटे होंगे मानों अल्लाह् के पूर्ण आधिपत्य और क़ब्ज़े में होंगे।

أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾ ع

कर्मों से भली-भाँति जानकार है ।७१। (रुकू ७/४)

وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧٢﴾

और इन्कार करने वाले लोगों को नरक की ओर गिरोह के गिरोह बना कर हाँक कर कर ले जाया जाएगा यहाँ तक कि वे जब उस के निकट पहुँच जाएँगे तो उस के द्वार खोल दिए जाएँगे और उन से उस के कर्मचारी कहेंगे कि क्या तुम्हारी ओर तुम्हारी ही जाति में से रसूल नहीं आए थे, जो तुम्हारे सामने तुम्हारे रब्ब की आयतें पढ़ कर सुनाते थे तथा तुम्हें आज के दिन की भेंट से सावधान करते थे ? वे कहेंगे कि हाँ ! ऐसा ही हुआ था, किन्तु इन्कार करने वाले लोगों के लिए अज़ाब की भविष्यवाणी पूरी होनी ही थी (अर्थात् हम इन्कार करने वाले ही थे) ।७२।

قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٣﴾

उन से कहा जाएगा कि नरक के द्वारों में से प्रविष्ट हो जाओ। इस दशा में कि इस में एक लम्बे समय तक रहना पड़ेगा। सो अभिमानियों का ठिकाना बहुत बुरा है ।७३।

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ﴿٧٤﴾

और जो लोग संयम धारण करते थे उन्हें स्वर्ग की ओर गिरोह के गिरोह बना कर ले जाया जाएगा यहाँ तक कि जब वे स्वर्ग तक पहुँच जाएँगे तो उस के द्वार खोल दिए जाएँगे तथा उस के कर्मचारी उन से कहेंगे कि तुम पर सदा शान्ति रहे। तुम ने बहुत अच्छी हालत पाई है। अत: इस स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ। तुम सदा-सर्वदा के लिए इसमें रहोगे ।७४।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا

और वे कहेंगे कि हर प्रकार की स्तुति के योग्य अल्लाह ही है जिस ने हम से अपनी

الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝

प्रतिज्ञा पूरी कर दी और हमें इस भू-भाग का वारिस बना दिया। हम स्वर्ग में जहाँ चाहेंगे रहेंगे। अतः (सिद्ध हुआ कि) पूरे रूप में कर्म करने वालों का पुरस्कार बहुत ही उत्तम होता है।७५।

وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ ع

और तू उस दिन फ़रिश्तों को देखेगा कि वे अर्श के आस-पास घेरा बनाए हुए खड़े हो कर अपने रब्ब की स्तुति के साथ-साथ उस की पवित्रता का गुणगान भी कर रहे हैं तथा उन लोगों में पूरे न्याय के साथ निर्णय कर दिया जाएगा और कहा जाएगा कि प्रत्येक प्रकार की स्तुति का अल्लाह ही अधिकारी है, जो समस्त लोकों का रब्ब है।७६। (रुकू ८/५)

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتٌّ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّتِسْعُ رُكُوْعَاتٍ
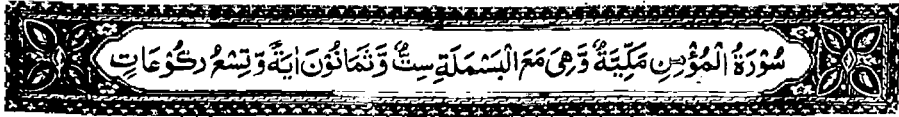
सूर: अल्-मोमिन

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की छियासी आयतें एवं नौ रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम लेकर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

حٰمٓ ②

हा[1], मीम। यह सूर: अल्लाह की स्तुति और उस की बड़ाई को सिद्ध करती है।२।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ③

यह किताब प्रभुत्वशाली तथा ज्ञान रखने वाले अल्लाह की ओर से उतरी है।३।

غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِۙ ذِى الطَّوْلِؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَؕ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ④

जो पापों को क्षमा करने वाला तथा तौब: स्वीकार करने वाला है (और इसी कारण स्तुति के योग्य है)। दण्ड देने में कड़ा[2] है। बड़ा उपकार करने वाला है। उस के सिवा कोई उपास्य नहीं। उसी की ओर लौट कर जाना है।४।

مَا يُجَادِلُ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ

अल्लाह की आयतों पर इन्कार करने वालों के सिवा कोई भी झगड़े के रूप में वाद-विवाद

1. मूल अक्षर 'हा', 'मीम' खण्डाक्षर हैं। 'हा'—हमीद के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है अर्थात् स्तुति के योग्य। 'मीम'—मजीद के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है अर्थात् महिमाशाली।

2. अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला है, परन्तु उस का दण्ड भी अत्यन्त कठोर होता है, वह मनुष्य के दण्ड जैसा नहीं होता।

كَفَرُوا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ۝

नहीं करता। सो उन का भिन्न-भिन्न देशों में (व्यापार के लिए स्वतन्त्र रूप में) घूमना-फिरना तुझे धोखे में न डाले (क्योंकि उन के कर्म ही उन के विनाश का कारण बनेंगे) ।५।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ وَجَادَلُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝

इन से पहली जातियों ने भी (अपने रसूलों का) इन्कार किया था। नूह की जाति ने भी तथा उन के पश्चात् विभिन्न जातियों ने भी (अपने नबियों के विरुद्ध जत्थे बना लिए) और प्रत्येक जाति ने अपने रसूल के बारे में यह निश्चय कर लिया कि उसे पकड़ लें तथा झूठे प्रमाणों से विवाद प्रारम्भ कर दिया ताकि अपनी कठहुज्जती से सत्य को उस के स्थान से हटा दें। अतः मैं ने उन्हें पकड़ लिया। अब बताओ मेरा दण्ड कैसा हुआ ? ।६।

وَكَذَٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۝

और इस प्रकार तेरे रब्ब का निर्णय इन्कार करने वालों के बारे में पूरा हो गया कि वे नरक वाले हैं ।७।

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝

वे फ़रिश्ते जो अर्श को उठाए हुए हैं और जो उस के आस-पास हैं वे अपने रब्ब की स्तुति के साथ-साथ उस की पवित्रता का बखान भी करते हैं और उस स्तुति पर पूरा ईमान रखते हैं तथा मोमिनों के लिए क्षमा माँगते हैं (और कहते हैं कि) हे हमारे रब्ब ! तू ने प्रत्येक वस्तु को अपनी दयालुता एवं ज्ञान से घेर रखा है। अतः तौबः करने वालों को और अपने मार्ग पर चलने वालों को क्षमा कर तथा उन्हें नरक के अज़ाब से बचा ले ।८।

رَبَّنَا وَاَدۡخِلۡهُمۡ جَنّٰتِ عَدۡنِ ِالَّتِىۡ وَعَدْتَّهُمۡ وَمَنۡ صَلَحَ مِنۡ اٰبَآئِهِمۡ وَاَزۡوَاجِهِمۡ وَذُرِّيّٰتِهِمۡ‌ؕ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ۙ‏ ⑨

हे हमारे रब्ब ! उन्हें और उन के पूर्वजों और उन की पत्नियों और उन की सन्तान में से जो नेक हों उन सब को स्थाई स्वर्गों में प्रविष्ट कर, जिन की तू ने उन से प्रतिज्ञा कर रखी है। तू ग़ालिब और बड़ी हिक्मत वाला है।९।

وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ‌ؕ وَمَنۡ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوۡمَئِذٍ فَقَدۡ رَحِمۡتَهٗ‌ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ⑩

और तू उन्हें समस्त दुःखों से बचा और जिसे तू उस दिन दुःखों से बचा ले तो निस्सन्देह तू ने उस पर दया की और यह महान् सफलता है।१०। (रुकू १/६)

اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يُنَادَوۡنَ لَمَقۡتُ اللّٰهِ اَكۡبَرُ مِنۡ مَّقۡتِكُمۡ اَنۡفُسَكُمۡ اِذۡ تُدۡعَوۡنَ اِلَى الۡاِيۡمَانِ فَتَكۡفُرُوۡنَ ⑪

और निस्सन्देह (मौत के बाद) इन्कार करने वालों से कहा जाएगा कि तुम आज जितनी घृणा अपने-आप से करते हो, अल्लाह की घृणा (जो वह) तुम से करता है इस से कहीं अधिक है। (याद करो) जब तुम्हें ईमान लाने की ओर बुलाया जाता था तो तुम इन्कार किया करते थे।११।

قَالُوۡا رَبَّنَاۤ اَمَتَّنَا اثۡنَتَيۡنِ وَاَحۡيَيۡتَنَا اثۡنَتَيۡنِ فَاعۡتَرَفۡنَا بِذُنُوۡبِنَا فَهَلۡ اِلٰى خُرُوۡجٍ مِّنۡ سَبِيۡلٍ ⑫

वे कहेंगे कि हे हमारे रब्ब ! तू ने हमें दो बार मौत[1] दी और दो बार जीवित[2] किया। अतः हम अपनी त्रुटियों को स्वीकार करते हैं। अतः (तू बता कि) अब (इस पकड़ से) बच निकलने का कोई उपाय[3] भी है ? ।१२।

1. एक मौत जन्म से पहले तथा दूसरी जीवन के बाद।

2. एक जीवन वह है जब कि शिशु माता के गर्भ से निकला और उस ने सांस ली और दूसरी बार जब वह इस संसार में जीवन व्यतीत कर के मरेगा तथा क़ियामत के दिन पुनः जीवित किया जाएगा।

3. वे कहेंगे कि मरने के बाद दो बार हमें जीवन प्राप्त हुआ, परन्तु फिर भी हम ने शिक्षा प्राप्त

(शेष पृष्ठ १०३० पर)

ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗۤ اِذَا دُعِیَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَ اِنْ یُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ؕ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِیِّ الْكَبِیْرِ ⑫

तुम्हारी यह दशा केवल इसलिए है कि जब अल्लाह को पुकारा जाता था तो तुम इन्कार कर देते थे, किन्तु जब उस का साझी ठहराया जाता था तो तुम ईमान लाते थे। अतः (आज सिद्ध हो गया कि) बड़ी शान वाले और विस्तार साम्राज्य वाले अल्लाह का ही अनुशासन है।१३।

هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمْ اٰیٰتِهٖ وَ یُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ وَ مَا یَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ یُّنِیْبُ ⑬

वही तुम्हें अपने निशान दिखाता है और तुम्हारे लिए आकाश से रोजी उतारता है, परन्तु शिक्षा केवल वही हासिल करता है जो अल्लाह की ओर झुकता है।१४।

فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ وَ لَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ⑭

अतः अपनी आज्ञाकारिता केवल अल्लाह के लिए विशिष्ट करते हुए उसी को पुकारो चाहे इन्कार करने वाला बुरा ही क्यों न माने।१५।

رَفِیْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ یُلْقِی الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰی مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِیُنْذِرَ یَوْمَ التَّلَاقِ ⑮

वह ऊंचे दर्जों वाला (है) अर्श का मालिक है। अपनी आज्ञा से अपने भक्तों में से जिस पर चाहता है अपना कलाम उतारता है ताकि वह (भक्त अल्लाह की) भेंट के दिन से लोगों को डराए।१६।

(पृष्ठ १०२९ का शेष)

नहीं की तो क्या हमारा यह पाप क्षमा हो सकेगा अथवा कोई ऐसा उपाय भी है जिस से क्षमा मिल सके ?

पवित्र क़ुर्आन से प्रतीत होता है कि इस लोक में तो ऐसा अवसर है कि लोग समय के नबी को मान कर अपने पापों से तौबः करें तो उन के पिछले सारे पाप धुल जाते हैं और दूसरा अवसर मरने के पश्चात् शफ़ाअत का है जिस के बारे में पवित्र क़ुर्आन में प्रमाण आ चुके हैं कि नबियों और फ़रिश्तों द्वारा जिन्हें अल्लाह शफ़ाअत की आज्ञा देगा, कुछ लोग मोक्ष प्राप्त कर सकेंगे। (तिर्मिज़ी प्रति 2 पृष्ठ 66 मुद्रित मुज्तबाई दिल्ली और बुख़ारी प्रति 4 किताबुर्रिक़ाक़)

يَوْمَ هُمْ بَارِزُونَ ۚ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝

जिस दिन वे लोग सब के सब अल्लाह् के सामने उपस्थित होंगे उन की कोई बात अल्लाह् से छिपी हुई नहीं रहेगी। उस दिन शासन किस का होगा ? केवल अल्लाह् ही का जो अकेला है तथा सब पर ग़ालिब है।१७।

الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۚ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

उस दिन प्रत्येक जान को उस के कर्मों का बदला दिया जाएगा एवं उस दिन किसी प्रकार का कोई अत्याचार नहीं होगा। अल्लाह् शीघ्र[1] ही लेखा ले लेता है।१८।

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ۝

और तू उन्हें उस दिन से सावधान कर जो निकट से निकट तर होता जा रहा है, जब कि दिल चिन्ता से भरे हुए (होंगे और) मुँह तक आ जाएँगे। उस दिन अत्याचारियों का न तो कोई मित्र होगा तथा न कोई सिफ़ारिश करने वाला ही कि जिस की बात स्वीकार की जाए।१९।

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ۝

अल्लाह् आँखों[2] की ख़यानत तक को जानता है और उसे भी जिसे सीने छिपाए हुए हैं।२०।

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ

और अल्लाह् सदा न्याय के अनुकूल निर्णय करता है और जिन्हें ये लोग अल्लाह् के सिवा पुकारते हैं वे तो कोई भी निर्णय नहीं कर

1. यह अर्थ नहीं कि बुरे कर्मों का दण्ड तुरन्त ही मिल जाता है, अपितु तात्पर्य यह है कि लेखा लेने में उसे थोड़ा समय लगता है और पुरस्कार देने की नींव तुरन्त ही पड़ जाती है।

2. बुरी निगाह् या क्रोध या घृणा से किसी को देखना जिसे मानव भय या लज्जा के कारण शब्दों में प्रकट नहीं कर सकता।

الْبَصِيرُ ۝٢١ ع

सकते। निस्सन्देह अल्लाह बहुत जानने वाला (और) बहुत देखने वाला है।२१। (रुकू २/७)

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ۝٢٢

क्या ये लोग धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि इन से पहले लोगों का कैसा परिणाम हुआ था? वे लोग तो शक्ति और अपने पीछे[1] छोड़े हुए निशानों की दृष्टि से इन लोगों से बहुत बढ़-चढ़ कर थे, परन्तु अल्लाह ने उन के पापों के कारण विनष्ट कर दिया तथा उन्हें अल्लाह की पकड़ से बचाने वाला कोई भी न हुआ।२२।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝٢٣

यह इस कारण था कि उन के पास रसूल खुले-खुले निशान ले कर आते रहे और उन्हों ने सदा इन्कार से काम लिया। अत: अल्लाह ने भी उन का सर्वनाश कर दिया। वह बड़ा शक्तिशाली है और उस का अज़ाब भी बहुत कड़ा होता है।२३।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُبِينٍ ۝٢٤

और हम ने मूसा को भी अपने निशानों के साथ तथा खुले-खुले प्रमाण दे कर।२४।

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ۝٢٥

फ़िरऔन, हामान तथा क़ारून की ओर भेजा[2] था, परन्तु उन्हों ने कहा कि यह व्यक्ति धोखा देने वाला एवं झूठा है।२५।

---

1. उन के दुर्गों तथा महलों के खण्डर सिद्ध करते हैं कि इन लोगों को वह कला-कौशल प्राप्त नहीं हो सका जो इन से पहले लोगों को प्राप्त था।

2. फ़िरऔन सम्राट था। हामान भी उस का एक उच्च कोटि का इन्जीनियर था और सम्भवत: देश में बड़ा प्रभावशाली व्यक्ति समझा जाता था। क़ारून स्वयं तो बनी-इस्राईल में से था, परन्तु फ़िरऔन ने उसे धन-कोश पर नियुक्त कर रखा था। वह राजस्व (Revenue) का पदाधिकारी था। अत: जाति पर उस का प्रभाव भी बहुत था। इसी कारण तीनों नाम इकट्ठे लिए गए हैं।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْٓا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ۭ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝٢٦

जब वह (मूसा) हमारी ओर से सत्य ले कर उन के पास आया तो उन्हों ने कहा कि जो लोग ईमान ला कर इस के साथ सम्मिलित हो गए हैं उन के बेटों को क़त्ल कर दो एवं उन की स्त्रियों को जीवित रखो और इन्कार करने वालों के उपाय सदा उलटे ही पड़ते[1] हैं।२६।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ۝٢٧

और फ़िरऔन ने कहा कि मुझे छोड़ो[2] ताकि मैं मूसा की हत्या कर दूँ और चाहिए कि वह अपने रब्ब को पुकारे। मैं इस बात से डरता हूँ कि वह तुम्हारे धर्म को बदल न दे या देश में कोई उपद्रव न फैला दे।२७।

وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝٢٨ ع

(इस पर) मूसा ने कहा कि मैं अपने तथा तुम्हारे रब्ब से प्रत्येक अभिमानी की शरारत से शरण माँगता हूँ जो लेखा लेने के दिन पर ईमान नहीं लाता।२८। (३/८)

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ

और फ़िरऔन के लोगों में से एक व्यक्ति जो ईमान ला चुका था, परन्तु अपने ईमान को छिपाए हुए था, उस ने कहा कि हे लोगो! क्या तुम एक मनुष्य की हत्या केवल इसलिए करते हो कि वह कहता है कि अल्लाह मेरा

1. साधारण रूप में देखने से कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि नबी के मुक़ाबिले में इन्कार करने वालों के उपाय सफल रहे, किन्तु ऐसा बहुत कम समय के लिए होता है। वास्तविक सफलता वही होती है जो स्थाई हो, परन्तु इन्कार करने वालों को स्थाई सफलता कदापि नहीं मिलती अपितु स्थाई सफलता नबियों और उन के अनुयायियों को ही मिलती है।

2. अर्थात् जब मैं मूसा की हत्या करने के लिए तैयार हो चुका हूँ तो उस के विरुद्ध मुझे कोई परामर्श न दो।

بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٩﴾

रब्ब है और वह तुम्हारे रब्ब की ओर से निशान भी लाया है ? यदि वह झूठा है तो उस के झूठ का दण्ड उसे ही मिलेगा और यदि वह सच्चा है तो उस की बताई हुई (कुछ डराने वाली) भविष्यवाणियाँ तुम्हारे सम्बन्ध में पूरी हो जाएँगी । अल्लाह सीमा का उल्लंघन करने वाले तथा झूठ बोलने वाले को कदापि सफल नहीं करता[1] ।२९।

يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۫ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ۚ قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٠﴾

हे मेरी जाति के लोगो ! आज तुम्हारा ऐसा राज्य है कि तुम देश पर प्रभुत्व जमाए बैठे हो । अतः बताओ कि यदि अल्लाह का अज़ाब हम पर उतरा तो उस के मुक़ाबिले में कौन हमारी सहायता करेगा ? फ़िरऔन ने कहा कि मैं तुम्हें वही बताता हूँ जो मुझे ठीक दिखाई देता है और मैं तुम्हें केवल हिदायत की राह बताता हूँ ।३०।

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣١﴾

और वह व्यक्ति जो (वास्तव में) ईमान ला चुका था उस ने कहा कि हे मेरी जाति के लोगो ! गुज़री हुई बड़ी-बड़ी जातियों के सर्वनाश के दिन की तरह मैं तुम्हारे नाश के दिन से भी डरता हूँ ।३१।

مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣٢﴾

जैसा कि नूह की जाति पर, आद और समूद पर बीती एवं उन लोगों पर भी जो उन के बाद हुए तथा अल्लाह अपने बन्दों पर अत्याचार करना नहीं चाहता ।३२।

1. इस का यह अर्थ नहीं कि जो अत्यधिक झूठ बोले उसे सफल नहीं करता अपितु अभिप्राय यह है कि लेश मात्र झूठ भी सहन नहीं किया जा सकता ।

وَيٰقَوْمِ اِنِّىْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٣﴾

और हे मेरी जाति के लोगो ! मैं तुम्हारे बारे में उस दिन से डरता हूँ जिस दिन लोग एक-दूसरे को सहायता के लिए पुकारेंगे ।३३।

يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٤﴾

जिस दिन तुम पीठ दिखा कर (इलाही जत्थों के सामने से) भाग जाओगे तथा अल्लाह् के मुक़ाबिले में तुम्हारा कोई भी रक्षक नहीं होगा और जिसे अल्लाह् गुमराह् ठहरा दे उसे कोई भी हिदायत नहीं दे सकता ।३४।

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِىْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ۗ حَتّٰۤى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۗ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۚ ﴿٣٥﴾

और इस से पहले यूसुफ़ प्रमाण ले कर तुम्हारे पास आ चुका है, परन्तु जो कुछ वह तुम्हारे पास लाया था तुम उस के बारे में शंका में रहे यहाँ तक कि जब उस का देहांत हो गया तो तुम ने (निराशा से) यह कहना प्रारम्भ[1] किया कि अल्लाह् उस के बाद किसी रसूल को कदापि नहीं भेजेगा । इस प्रकार अल्लाह् प्रत्येक सीमोल्लंघी और शंका में पड़ने वाले को पथभ्रष्ट ठहराता है ।३५।

الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِىْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۗ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ

जो लोग अल्लाह् की आयतों के बारे में जो उन के पास आई हो बिना किसी तर्क के प्रतिवाद करते हों (उन्हें विदित होना चाहिए कि) यह अल्लाह् और मोमिनों के निकट बहुत बुरा है । अल्लाह् इसी प्रकार अभिमानी

1. जैसे साधारण मुसलमान कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के बाद अल्लाह् का कोई नबी नहीं होगा ।

جَبَّارٍ ﴿٣٦﴾

लोगों के पूरे के पूरे दिल' पर मुहर लगा देता है।३६।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿٣٧﴾

और फ़िरऔन ने कहा कि हे हामान! मेरे लिए एक महल बना ताकि मैं उन राहों पर जा पहुँचूं।३७।

اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۭ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْۗءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ۭ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٨﴾ ع

जो आसमान की राहें हैं और इस तरह मूसा के अल्लाह से जानकारी पा सकूँ, क्योंकि मैं उसे झूठा समझता हूँ और इस प्रकार फ़िरऔन की दृष्टि में उस के बुरे कर्म शोभायमान कर के दिखाए गए थे और वह (अपनी शरारत के कारण) सत्य-पथ से रोका गया था और फ़िरऔन की योजना असफलता के रूप में ही प्रकट होने वाली थी।३८। (रुकू ४/९)

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٩﴾

और वह व्यक्ति जो ईमान लाया था उस ने कहा कि हे मेरी जाति के लोगो! मेरा अनुसरण करो। मैं तुम्हें हिदायत की राह दिखाऊँगा।३९।

يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۡ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ

हे मेरी जाति के लोगो! यह सांसारिक जीवन केवल थोड़े दिनों का लाभ है और

1. साधारण रूप में यह शब्द होने चाहिए थे कि 'अल्लाह प्रत्येक अभिमानी के दिल पर मुहर लगा देता है' परन्तु पवित्र क़ुर्आन कहता है कि अभिमानी के पूरे दिल पर मुहर लगा देता है। पवित्र क़ुर्आन का यह प्रयोग अद्वितीय है, क्योंकि प्रत्येक अभिमानी के दिल पर मुहर लगाने से वह बात नहीं निकलती जो पूरे अहंकारी के पूरे के पूरे दिल पर मुहर लगने से निकलती है। इस दूसरी बात से यह परिणाम निकलता है कि हिदायत के विभिन्न मार्ग होते है। एक पथभ्रष्ट व्यक्ति भी हिदायत का कोई मार्ग पा सकता है, परन्तु जो पूरा अहंकारी हो उस के हिदायत पाने के सारे मार्ग बन्द हो जाते हैं तथा दिल के हर-एक हिस्से पर मुहर लग जाती है। उस के लिए हिदायत पाने का कोई मार्ग भी खुला नहीं रहता।

هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾

निस्सन्देह पारलौकिक जीवन ही स्थायी ठिकाना है ।४०।

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾

जो व्यक्ति बुरे कर्म करेगा उसे उस के अनुसार फल मिलेगा और जो कोई ईमान के अनुकूल कर्म करेगा चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री, परन्तु शर्त यह है कि वह ईमान में सच्चा हो तो वह तथा उस के साथी स्वर्ग में जाएँगे और उन्हें उस में बिना हिसाब ही पुरस्कार दिए जाएँगे ।४१।

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾

और हे मेरी जाति के लोगो ! मेरा भी क्या अनोखा हाल है कि मैं तो तुम्हें मुक्ति की ओर बुलाता हूँ और तुम मुझे नरक की ओर बुलाते हो ।४२।

تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۡ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾

तुम मुझे इस उद्देश्य से बुलाते हो कि मैं अल्लाह का इन्कार करूँ और उस के साझी उन (सत्ताओं) को ठहराऊँ जिन की साझेदारी के सम्बन्ध में मुझे कोई ज्ञान नहीं और मैं तुम्हें एक सामर्थ्य सम्पन्न (और) क्षमा करने वाली सत्ता की ओर बुलाता हूँ ।४३।

لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾

इस में कोई सन्देह नहीं कि तुम मुझे उस सत्ता की ओर बुलाते हो जिस की कोई प्रभावशाली आवाज़ न तो इस लोक में है तथा न परलोक ही में होगी और वस्तुतः हम सब को अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है और यह कि सीमा का उल्लंघन करने वाले लोग नरक वाले हैं ।४४।

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ۭ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى

अतः मैं तुम्हें जो उपदेश देता हूँ तुम उसे शीघ्र ही याद करोगे और (मैं तुम्हारी

اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝۴۴

धमकियों से नहीं डरता) मैं अपना मामिला अल्लाह को सौंपता हूँ। निस्सन्देह अल्लाह अपने बन्दों का निरीक्षक है।४५।

فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ۝۴۵

इस पर अल्लाह ने उस मोमिन व्यक्ति को उन (मुन्किरों) के उपायों की बुराइयों से बचा लिया तथा फ़िरऔन के लोगों को दुःखदायी अज़ाब ने चारों ओर से घेर लिया।४६।

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۣ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ۝۴۶

अर्थात् आग ने, जिस के सामने वे साँझ-सवेरे पेश किए जाते हैं और जब निश्चित घड़ी आएगी (तो फ़रिश्तों से कहा जाएगा कि) फ़िरऔन के साथियों को कड़े अज़ाब में प्रविष्ट करो।४७।

وَاِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ۝۴۷

और (उस समय को भी याद करो) जब कि वे (अर्थात् फ़िरऔन के साथी) नरक की आग में पड़े हुए प्रतिवाद कर रहे होंगे और उन में से कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कह रहे होंगे कि हम तुम्हारे अधीन थे, तो क्या आज तुम हमें आग के अज़ाब के किसी हिस्से से बचा सकते हो ?।४८।

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۝۴۸

बड़े लोग कहेंगे कि हम सब ही इस अज़ाब में पड़े हुए हैं। अल्लाह ने अपने बन्दों के बीच जो निर्णय करना था कर दिया।४९।

وَقَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ۝۴۹

और नरक-वासी नरक के पदाधिकारियों से कहेंगे कि तुम अपने रब्ब को पुकारो कि अज़ाब का कुछ समय तो हमारे लिए घटा दे।५०।

قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ قَالُوْا

वे कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल युक्तियाँ ले कर नहीं आए थे ? वे कहेंगे कि

بَلٰى ۚ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝٥٠

हाँ ! क्यों नहीं ? इस पर वे (नरक के पदाधिकारी) कहेंगे कि अब तुम (जितना चाहो) पुकारते चले जाओ और इन्कार करने वालों की प्रार्थना व्यर्थ ही जाती है।५१। (रुकू ५/१०)

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ۝٥١

हम अपने रसूलों की और उन पर ईमान लाने वालों की इस संसार में भी अवश्य ही सहायता करेंगे तथा उस दिन जब कि गवाह पेश होंगे।५२।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ۝٥٢

जिस दिन अत्याचारियों को उन का बहाना कोई लाभ नहीं देगा और उन पर अल्लाह की फटकार पड़ेगी और रहने के लिए बुरा घर मिलेगा।५३।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ۝٥٣

और निस्सन्देह हम ने मूसा को हिदायत दी थी और बनी-इस्राईल को उस किताब (अर्थात् तौरात) का उत्तराधिकारी बना दिया था।५४।

هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ۝٥٤

जो बुद्धिमानों के लिए हिदायत और उपदेश का साधन थी।५५।

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ۝٥٥

अतः तू धैर्य धारण कर। अल्लाह की प्रतिज्ञा अवश्य पूरी हो कर रहेगी तथा जो तेरे पाप लोगों ने किए हैं उन की भी उन के लिए क्षमा माँगता रह और साँझ-सवेरे अपने रब्ब की पवित्रता के साथ-साथ स्तुति भी करता रहा कर।५६।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ

वे लोग जो अल्लाह की आयतों के बारे में बिना किसी ऐसी युक्ति के जो अल्लाह की

اَتٰهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٥٧﴾

ओर से उन के पास आई हो वाद-विवाद करने में लगे रहते हैं। उन के दिलों में बड़ी-बड़ी इच्छाएँ हैं जिन्हें वे कदापि नहीं पा सकेंगे। अतः तू अल्लाह की शरण माँगता रह। निस्सन्देह वह बहुत सुनने वाला और बहुत देखने वाला है।५७।

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٨﴾

आसमानों तथा ज़मीन का पैदा करना मानव के पैदा करने से बहुत बड़ा काम है, परन्तु बहुत से लोगों को इस का ज्ञान नहीं।५८।

وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٩﴾

और अन्धे तथा आँखों वाले बराबर नहीं हो सकते और जो लोग ईमान ला चुके हैं एवं उन्हों ने ईमान के अनुकूल कर्म भी किए वे दुराचारी लोगों के (बराबर नहीं हो सकते)। तुम लोग बिल्कुल शिक्षा प्राप्त नहीं करते।५९।

اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦٠﴾

और इस में कोई सन्देह नहीं कि विनाश[1] की घड़ी अवश्य आने वाली है, किन्तु बहुत से लोग ईमान नहीं लाते।६०।

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ﴿٦١﴾ ع

और तुम्हारा रब्ब कहता है कि मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी प्रार्थना सुनूंगा। जो लोग हमारी उपासना के सम्बन्ध में अभिमान से काम लेते हैं वे अवश्य अपमानित हो कर नरक में प्रवेश करेंगे।६१। (रुकू ६/११)

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ

अल्लाह वह है जिस ने तुम्हारे लिए रात बनाई है ताकि तुम उस में विश्राम करो और

1. मूल शब्द 'अस्साअत'—घड़ी से अभीष्ट संसार में विनाश की घड़ी भी हो सकती है तथा क़ियामत की भी। संसार में तो विनाश-काल को इन्कार करने वाले लोग देख सकते हैं। अतः इस अर्थ को प्रधान समझना चाहिए तथा क़ियामत का विनाशकारी समय दिखाई नहीं देता। अतः इस अर्थ को गौण अर्थात् दूसरे दर्जे पर समझना चाहिए।

مُبْصِرًا إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦٢﴾

दिन को दिखाने वाला बनाया है। अल्लाह लोगों पर बड़ी कृपा करने वाला है, परन्तु लोगों में से बहुत से धन्यवाद नहीं करते।६२।

ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٦٣﴾

यह अल्लाह तुम्हारा वह रब्ब है जिस ने समस्त पदार्थ पैदा किए हैं। इस के सिवा कोई उपास्य नहीं, फिर बताओ तो सही कि तुम्हें बहका कर किधर ले जाया जा रहा है।६३।

كَذَٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٦٤﴾

इसी प्रकार उन लोगों को मूर्खता पूर्ण बातों की ओर बहका कर ले जाया जाता है जो अल्लाह की आयतों का हठ से इन्कार करते हैं।६४।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٥﴾

अल्लाह वह है जिस ने धरती को तुम्हारे लिए ठहरने का स्थान बनाया है और आकाश को भवन के रूप में (रक्षा के लिए बनाया है) और उस ने तुम्हें विभिन्न प्रकार की शक्तियाँ प्रदान की हैं और फिर उन शक्तियों को अति उत्तम एवं सुदृढ़ बनाया है तथा तुम्हें पवित्र रोज़ी प्रदान की है। यह अल्लाह है जो तुम्हारा रब्ब भी है। सो अल्लाह बहुत बरकत वाला है जो समस्त लोकों का रब्ब है।६५।

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٦﴾

वह स्वयं जीवित है (और दूसरों को जीवन देने वाला है)। उस के सिवा कोई उपास्य नहीं और अल्लाह के लिए उपासना को विशिष्ट बनाते हुए उसी को पुकारो। अल्लाह ही हर-प्रकार की स्तुति का अधिकारी है जो समस्त लोकों का रब्ब है।६६।

قُلْ اِنِّیْ نُهِیْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِیَ الْبَیِّنٰتُ مِنْ رَّبِّیْ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٦٦﴾

तू कह दे कि मुझे इस से रोका गया है कि मैं उन की उपासना करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, विशेष करके जब मेरे पास मेरे रब्ब की ओर से खुले-खुले निशान भी आ चुके हैं और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं समस्त लोकों के रब्ब ही की आज्ञा का पालन करूँ।६७।

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ یُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُیُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ یُّتَوَفّٰی مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّی وَّ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

वही है जिस ने तुम्हारी (मानव-मात्र) की उत्पत्ति (पहले दौर में) मिट्टी से की, फिर (दूसरे दौर में) वीर्य्य से, फिर (तीसरे दौर में) रक्त के एक लोथड़े से, फिर उस से तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकालता है, फिर इस का परिणाम यह होता है कि तुम अपनी युवावस्था को पहुँच जाते हो, फिर उस का फल यह निकलता है कि तुम अपने बुढ़ापे को पहुँच जाते हो और तुम में से किसी की जान उस (वृद्धावस्था) से पहले ही निकाल ली जाती है और वह ऐसा इसलिए करता है कि तुम उस अवधि तक पहुँच जाओ जो तुम्हारे लिए निश्चित की गई है और ताकि तुम (इस ढील से लाभ उठा कर) बुद्धि से काम लो।६८।

هُوَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓی اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿٦٨﴾

वह अल्लाह ही है जो जीवित करता है तथा मारता है। अतः जब वह किसी बात के करने का निर्णय कर देता है तो उस के बारे में कहता है कि हो जा! सो वह (क्रमशः) हो जाती है।६९। (रुकू ७/१२)

اَلَمْ تَرَ اِلَی الَّذِیْنَ یُجَادِلُوْنَ فِیْٓ اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰی یُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾

क्या तू ने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों के बारे में झगड़ते रहते हैं। वे किधर बहका कर ले जाए जाते हैं?।७०।

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۛ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٠﴾

ये ऐसे लोग हैं जिन्हों ने हमारी किताब का, हमारे रसूल का और जो सन्देश वे लाए हैं उन सब का इन्कार कर दिया है। अत: अब ये शीघ्र ही अपना परिणाम देख लेंगे।७१।

اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ۭ يُسْحَبُوْنَ ﴿٧١﴾

जब उन की गर्दनों में ज़ंजीरें और तौक़ होंगे।७२।

فِي الْحَمِيْمِ ۙ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ﴿٧٢﴾

और वे गर्म पानी में घसीटे जाएँगे, फिर नरक में झोंक दिए जाएँगे।७३।

ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٣﴾

फिर उन से कहा जाएगा कि वे उपास्य कहाँ हैं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा (उस का) साझी बनाते थे।७४।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْــــًٔا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾

वे कहेंगे कि इस समय वे हम से खोए गए हैं, (फिर कहेंगे) यूँ नहीं वास्तविकता यह है कि हम इस से पहले किसी को भी अल्लाह का साझी ठहराते ही न थे। इसी प्रकार अल्लाह इन्कार करने वालों को पथभ्रष्ट ठहराता है।७५।

ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ﴿٧٥﴾

(वास्तविकता) यही है कि जिस के कारण तुम बिना किसी प्रमाण के फूले नहीं समाते थे और जिस के कारण तुम अकारण ही इतराया करते थे।७६।

اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٦﴾

(अब जा कर) नरक के द्वारों में प्रवेश करो (क्योंकि तुम्हारे लिए निर्णय हो चुका है कि) तुम इस में रहते चले जाओगे और अभिमानियों का ठिकाना अत्यन्त बुरा है।७७।

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٧٨﴾

अतः तू धैर्य धारण कर। अल्लाह् की प्रतिज्ञा अवश्य पूरी हो कर रहेगी और यदि हम तुझे उन बातों में से कुछ बातें जिन बातों की उन से प्रतिज्ञा की जाती है (तेरे जीवन में दिखा दें अथवा तुझे मौत दे दें तो कुछ भविष्यवाणियाँ तेरी मौत के बाद पूरी होंगी और इस में कोई हर्ज नहीं) क्योंकि वे हमारी ओर ही लौटाए जाएँगे (तो उन का परिणाम उन पर खुल जाएगा)।७८।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٧٩﴾ ع

और हम ने तुझ से पहले कई रसूल भेजे थे तथा हम ने कुछ रसूलों का वृत्तान्त तेरे सामने कर दिया है और कुछ का नहीं किया तथा किसी रसूल का यह बस नहीं था कि वह उस की आज्ञा के बिना कोई वाणी ले आए और जब अल्लाह का आदेश आ जाता है तो न्याय के अनुकूल निर्णय कर दिया जाता है तथा झूट बोलने वाले लोग घाटे में पड़ जाते हैं।७९। (रुकू ८/१३)

اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٨٠﴾

अल्लाह् वही है जिस ने तुम्हारे लिए चौपाए पैदा किए हैं ताकि तुम उन में से कुछ सवारी के काम लाओ और उन में से कुछ (का माँस) खाओ।८०।

وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِىْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٨١﴾

और इन में तुम्हारे लिए और भी अनेक लाभ हैं और यह कि तुम इन पर बोझ लाद कर अपनी हार्दिक आवश्यकता पूरी कर लिया करो तथा इन चौपायों पर और नौकाओं पर तुम्हें सवार किया जाता है।८१।

وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَىَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ

और वह (अल्लाह्) तुम्हें अपने निशान दिखाता है। अतः तुम अल्लाह के निशानों

تُنْكِرُوْنَ ﴿٨١﴾

में से किस निशान का इन्कार कर सकते हो ? ।८१।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾

क्या इन लोगों ने धरती में घूम-फिर कर नहीं देखा कि उन से पहले लोगों का क्या परिणाम निकला था ? उन की तो देश में संख्या और शक्ति भी इन से कहीं अधिक थी तथा वास्तु-कला में भी कहीं अधिक (दक्ष) थे, किन्तु उन के कर्मों ने उन्हें कोई लाभ नहीं दिया था ।८२।

فَلَمَّا جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨٣﴾

और जब उन के पास उन के रसूल निशान ले कर आए तो उन के पास जो थोड़ा सा ज्ञान था उस पर गर्व करने लगे तथा जिस अज़ाब की वे हँसी उड़ाया करते थे उसी ने उन्हें घेर लिया ।८३।

فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ﴿٨٤﴾

और जब उन्हों ने हमारा अज़ाब देखा तो पुकार उठे कि हम तो अल्लाह को एक ही ठहराते हुए उस पर ईमान लाते हैं तथा हम जिन चीज़ों को उस का साझी ठहराया करते थे उन का इन्कार करते हैं ।८४।

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ۭ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾ ع

अतः जब उन्हों ने हमारा अज़ाब देख लिया तो उन्हें उन के ईमान ने कोई लाभ न पहुँचाया । यही अल्लाह की निश्चित रीति है जो उस के बन्दों में प्रचलित है और उस समय इन्कार करने वाले लोग घाटे में पड़ गए ।८५। (रुकू ९/१४)

सूर: हा-मीम अल्-सजद:

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की पचपन आयतें एवं छ: रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

حٰمٓ ②

हमीद[1] और मजीद (स्तुति के योग्य और गौरवशाली अल्लाह के गुण इस सूर: में वर्णन हुए हैं)।२।

تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ③

यह क़ुर्आन अनन्त कृपा करने वाले एवं बार-बार दया करने वाले (अल्लाह) की ओर से उतरा है।३।

كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ④

(और) ऐसी किताब है जिस की आयतें ख़ूब खोल कर बयान की गई हैं और जो बार-बार पढ़ी जाएँगी तथा वह ऐसी भाषा में है जो अपना अर्थ स्वयं खोल-खोल कर बताती है, परन्तु यह उन्हीं को लाभ पहुँचाती है जो (आध्यात्मिक) ज्ञान रखते हों।४।

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا

(सदाचारियों को) शुभ-समाचार देने वाली और (कुकर्मियों को) सावधान करने वाली

1. विवरणार्थ देखिए सूर: बक़र: टिप्पणी आयत 2।

يَسْمَعُوْنَ ۝٥

है, फिर भी उन में से बहुतों ने मुंह मोड़ लिया तथा वे उसे सुनने के लिए भी तय्यार नहीं ।५।

وَ قَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَ فِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّ مِنْۢ بَيْنِنَا وَ بَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ۝٦

और कहते हैं कि जिस बात की ओर तुम हमें बुलाते हो उसे मानने से हमारे दिल पर्दों में हैं (अर्थात् हमारे दिलों पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकती) तथा हमारे कानों में बहरापन है (जिस के कारण हम तुम्हारी बात सुन ही नहीं सकते) और हमारे तथा तुम्हारे बीच एक पर्दा[1] है। अतः तू (अपने मंतव्य के अनुसार) कर्म कर, हम (अपने मंतव्य के अनुसार) कर्म करेंगे ।६।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۝٧

तू कह दे कि मैं भी तुम्हारी तरह का एक मनुष्य हूँ। मेरी ओर वह्य की जाती है कि तुम्हारा उपास्य केवल एक ही है। अतः उसे याद कर के मजबूती दिखलाओ और उस से क्षमा माँगते रहो और (याद रखो कि) मुश्रिकों के लिए अज़ाब निश्चित है ।७।

الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝٨

वे मुश्रिक जो न तो ज़कात देते हैं तथा न आख़िरत पर ईमान रखते हैं ।८।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٩ ع

ع ١٥

निस्सन्देह वे लोग जो ईमान भी लाए और उन्हों ने उस के अनुकूल कर्म भी किए उन के लिए समाप्त न होने वाला बदला निश्चित है ।९। (रुकू १/१५)

1. पर्दा से तात्पर्य स्वभाव का भिन्न-भिन्न होना है।

قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَ تَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ؕ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠

तू कह दे कि क्या तुम उस रब्ब का इन्कार करते हो और उस के साझी ठहराते हो जिस ने पृथ्वी को दो दौरों में पैदा किया। यह अल्लाह तो सब जहानों का रब्ब है।१०।

وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَ بٰرَكَ فِيْهَا وَ قَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ؕ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝١١

और उस ने धरती के ऊपर पहाड़ बनाए हैं तथा इस में बड़ी बरकत रखी है और इस में निवास करने वालों के खाने-पीने[1] के लिए हर चीज़ को एक अनुमान के अनुसार बना दिया है। येसब कुछ चार दौरों में किया है। यह बात सभी[2] पूछने वालों के लिए बराबर हैं।११।

ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَ هِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَ لِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ۝١٢

फिर उस ने आकाश की ओर ध्यान दिया और वह (आकाश) केवल एक प्रकार के कुहरा के समान था। उस (अल्लाह) ने उस (आकाश) से तथा धरती से कहा कि तुम दोनों स्वेच्छापूर्वक या अनिच्छापूर्वक मेरी आज्ञा का पालन करने के लिए आ जाओ, तो वे दोनों बोले कि हम आज्ञाकारी बन कर आ गए हैं।१२।

---

1. इस आयत में यह संकेत किया गया है कि किसी समय पृथ्वी को गल्ला पैदा करने के योग्य नहीं समझा जाएगा, परन्तु अल्लाह इसका खण्डन करता है कि हम ने धरती में ऐसी क्षमता पैदा कर दी है कि वह आवश्यकता के अनुसार खाद्य-पदार्थ तय्यार करेगी चाहे भूमि से पैदा कर के चाहे नवीन खाद्य-पदार्थों की खोज से अथवा सूर्य की किरणों की सहायता से।

2. अर्थात् सभी लोगों के पूछने पर हमारा यही उत्तर होगा। यही कारण हैं कि संसार में दो सौ वर्षों से भिन्न-भिन्न देशों में खाद्य-समस्या विचाराधीन चली आ रही है। सब लोगों को ऊपर लिखित उत्तर का अध्ययन करना चाहिए कि यही हमारे रब्ब का निर्णय है।

فَقَضٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿١٣﴾

फिर उन्हें सात आसमानों के रूप में दो दौरों में बनाया तथा प्रत्येक आसमान में जो कुछ होना था उस की क्षमता उस में रख दी और हम ने निचले आसमान को प्रकाश से सुशोभित किया और (शोभा के अतिरिक्त) उस में रक्षा के लिए भी (सामान पैदा किए) और यह ग़ालिब जानने वाले अल्लाह का निश्चित किया हुआ अनुमान है।१३।

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ﴿١٤﴾

फिर यदि ये विमुख हो जाएँ तो तू इन से कह दे कि मैं ने तुम्हें उस अज़ाब से सावधान कर दिया है जो आद और समूद के अज़ाब जैसा है।१४।

اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿١٥﴾

अर्थात् जब उन के पास आगे से भी और उन के पीछे से भी रसूल आए[1] यह कहते हुए कि अल्लाह के सिवा किसी की उपासना न करो तो उन्हों ने उन्हें यह उत्तर दिया कि यदि हमारे रब्ब की इच्छा होती तो वह स्वयं हम पर फ़रिश्ते उतारता। अतः हम उस शिक्षा का इन्कार करते हैं जिस के साथ तुम्हें भेजा गया है।१५।

فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿١٦﴾

और आद की जाति ने धरती में बिना किसी अधिकार के अभिमान से काम लिया और कहा कि हम से बढ़ कर कौन शक्तिशाली है ? क्या उन्हों ने देखा नहीं कि जिस अल्लाह ने उन्हें पैदा किया है वह उन से अधिक शक्तिशाली है और वे हमारी आयतों का हठ पूर्वक इन्कार करते थे।१६।

1. अर्थात् जाति के उत्थान के समय लगातार रसूल आते रहे।

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِيٓ أَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيقَهُمْ عَذَابَ ٱلْخِزْيِ فِي ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ ٱلْءَاخِرَةِ أَخْزَىٰ ۖ وَهُمْ لَا يُنصَرُونَ ﴿١٦﴾

अतः हम ने उन पर अशुभ दिनों में एक आँधी भेजी ताकि हम उन्हें इस लोक में अपमान-जनक अज़ाब का मज़ा चखाएँ तथा आख़िरत के जीवन का अज़ाब इस से भी बढ़ कर अपमान-जनक है और वहाँ उन की किसी रूप में भी सहायता नहीं की जाएगी।१७।

وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَٰهُمْ فَٱسْتَحَبُّوا۟ ٱلْعَمَىٰ عَلَى ٱلْهُدَىٰ فَأَخَذَتْهُمْ صَٰعِقَةُ ٱلْعَذَابِ ٱلْهُونِ بِمَا كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ ﴿١٧﴾

और समूद जाति को हम ने हिदायत का मार्ग दिखाया था, किन्तु उन्हों ने हिदायत पर गुमराही को प्रधानता दी। अतः उन्हें एक अपमान-जनक अज़ाब ने उन के बुरे कर्मों के कारण आ घेरा।१८।

وَنَجَّيْنَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَكَانُوا۟ يَتَّقُونَ ﴿١٨﴾

और जो लोग संयमी एवं मोमिन थे उन्हें हम ने बचा लिया।१९। (रुकू २/१६)

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَآءُ ٱللَّهِ إِلَى ٱلنَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٩﴾

और जिस दिन अल्लाह के शत्रु (अर्थात् इन्कार करने वाले लोग) जीवित कर के नरक की आग की ओर ले जाए जाएँगे, फिर उन्हें भिन्न-भिन्न श्रेणियों में बाँट दिया जाएगा।२०।

حَتَّىٰٓ إِذَا مَا جَآءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَٰرُهُمْ وَجُلُودُهُم بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿٢٠﴾

यहाँ तक कि जब वे नरक के निकट पहुँचेंगे तो उन के कान[1], आँखें और चमड़े उन के बुरे कर्मों के कारण उन के विरुद्ध गवाही देंगे।२१।

وَقَالُوا۟ لِجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدتُّمْ عَلَيْنَا ۖ قَالُوٓا۟

और वे अपने चमड़ों से कहेंगे तुम ने हमारे विरुद्ध क्यों गवाही दी तो उन के चमड़े उत्तर

1. अंगों के गवाही देने के विषय में देखिए सूरः यासीन टिप्पणी आयत 66। इस बात के समझने के लिए ग्रामोफ़ोन और टेलीवीज़न आदि आविष्कारों ने बहुत आसानी पैदा कर दी है।

أَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَّإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢١﴾

में कहेंगे कि हम से उसी अल्लाह् ने बात करवाई है जिस ने हर चीज़ से बात करवाई है। उस ने तुम्हें पहली बार भी पैदा किया था और तुम फिर भी उसी की ओर लौटाए जाओगे।२२।

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ أَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾

और तुम अपने पाप इस भय से नहीं छिपाया करते थे कि ऐसा न हो कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें एवं तुम्हारे चमड़े तुम्हारे विरुद्ध गवाही न दे दें, अपितु तुम्हें पूर्ण विश्वास था कि अल्लाह् को तुम्हारी अनेक बातों का तो ज्ञान ही नहीं[1] ।२३।

وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدٰىكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

और यही वह बुरा विचार था जो तुम ने अपने रब्ब के विषय में बना लिया जिस ने तुम्हारा सर्वनाश कर दिया तथा तुम हर प्रकार से हानि उठाने वालों में से हो गए।२४।

فَإِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ وَإِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ﴿٢٤﴾

अत: यदि यह लोग धैर्य से काम लें तो तब भी उन का ठिकाना आग है और यदि ये लोग अल्लाह् के सामने पेश होना चाहें तो भी उन्हें उस (अल्लाह्) के सामने पेश होने की आज्ञा नहीं दी जाएगी।२५।

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ

और हम ने उन के साथ कुछ ऐसे साथी लगा दिए हैं जिन्हों ने उन्हें उन के कर्म शोभायमान करके दिखाए तथा उन पर वही आदेश लागू हुआ था जो जिन्नों तथा मनुष्यों में से उन से पहले बीते हुए सम्प्रदायों पर लागू

1. तुम निडर हो कर इस लिए पाप करते थे कि तुम्हारे विरुद्ध कोई गवाही देने वाला नहीं है।

اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ۝ ع

हुआ था (अर्थात् यह) कि वे घाटा पाने वालों में से हो जाएँगे ।२६। (रुकू ३/१७)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ۝

और इन्कार करने वालों ने कहा कि इस क़ुर्आन की शिक्षा को मत सुनो और इस के सुनाने के समय शोर मचा दिया करो ताकि तुम इस प्रकार ग़ालिब आ जाओ ।२७।

فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

अतः हम इस के फलस्वरूप इन्कार करने वालों को कठोर अज़ाब देंगे और उन्हें उन के बहुत ही बुरे कर्मों का फल देंगे ।२८।

ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ۭ جَزَآءً ۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝

अल्लाह के शत्रुओं का बदला यही आग है अर्थात् उन्हें उस में रहने के लिए लम्बे समय तक घर मिलेगा। उन्हें यह बदला इसलिए मिलेगा कि वे हमारे आदेशों का हठ से इन्कार किया करते थे ।२९।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ۝

और इन्कार करने वाले लोग कहेंगे कि हे हमारे रब्ब ! तू हमें जिन्नों एवं मनुष्यों में से वे लोग दिखा जो हमें गुमराह किया करते थे ताकि हम उन्हें अपने पैरों के नीचे मसल डालें और वे इस के फलस्वरूप घोर अपमानित[1] हो जाएँ ।३०।

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ

वे लोग जिन्होंने कहा कि अल्लाह हमारा रब्ब है, फिर अपने इस मंतव्य पर स्थिरता

---

1. संसार में बहकाने वाले लोग आदरणीय समझे जाते हैं। क़ियामत के दिन ऐसे छोटे लोग जो उन बड़े लोगों की आज्ञा का पालन किया करते थे अल्लाह से प्रार्थना करेंगे कि यदि तू उन्हें हमारे सुपुर्द कर दे तो हम उन्हें अपने पाँवों के नीचे मलें ताकि उन का सारा आदर मलियामेट हो जाए तथा वे तुच्छ व्यक्ति बन कर रह जाएँ ।

عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝٣٠

से जमे रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे, यह कहते हुए कि डरो नहीं और न किसी बिगत भूल का भय खाओ तथा उस स्वर्ग[1] के पाने पर प्रसन्न हो जाओ जिस की तुम से प्रतिज्ञा की गई थी।३१।

نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ۝٣١

हम इस संसार में भी तुम्हारे मित्र हैं तथा आख़िरत में भी तुम्हारे मित्र रहेंगे और उस स्वर्ग में जो कुछ तुम्हारा मन चाहेगा वह तुम्हें मिलेगा और तुम जो कुछ माँगोगे वहाँ तुम्हें वह भी मिलेगा।३२।

نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ۝٣٢ ع

यह क्षमा करने वाले और अनन्त कृपा करने वाले अल्लाह की ओर से आतिथ्य रूप में होगा।३३। (रुकू ४/१८)

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝٣٣

और उस व्यक्ति से बढ़ कर किस की बात अच्छी होगी जो लोगों को अल्लाह की ओर बुलाता है तथा अपने ईमान के अनुकूल कर्म करता है और कहता है कि मैं तो आज्ञा पालन करने वालों में से हूँ।३४।

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۭ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ۝٣٤

और पुण्य एवं पाप बराबर नहीं हो सकते। तू बुराई का उत्तर बहुत अच्छे व्यवहार से दे। इस का परिणाम यह निकलेगा कि वह व्यक्ति कि उस के और तेरे बीच शत्रुता पाई जाती है तेरे अच्छे व्यवहार को देख कर तेरा हार्दिक मित्र बन जाएगा।३५।

وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰىهَآ

और (अत्याचार सहन करने पर भी) इस (प्रकार के व्यवहार करने) का सामर्थ्य केवल

1. क़ुर्आन-मजीद में लोक तथा परलोक दोनो प्रकार के स्वर्गों का वर्णन है और इस स्थान पर दोनों ही समझे जा सकते हैं।

إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ۝٣٦

उन्हीं लोगों को मिलता है जो बड़े धैर्यवान हैं या फिर उन्हें जिन्हें (अल्लाह की ओर से परोपकार करने का) एक बहुत बड़ा हिस्सा मिला है।३६।

وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝٣٧

और यदि शैतान (अर्थात् वह सत्ता जो अल्लाह से दूर हो) तुझे कोई कष्ट पहुँचाए तो (तुरन्त बदला लेने के लिए तय्यार न हो जाया कर बल्कि) तू अल्लाह से शरण माँगा कर (कि वह तुम्हें इस तुच्छ आचरण से बचाए)। निस्सन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है।३७।

وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝٣٨

और रात भी उस के निशानों में से है तथा दिन भी, सूर्य भी एवं चन्द्रमा भी। न तो सूर्य को सजद: करो न चन्द्रमा को। केवल अल्लाह को सजद: करो जिस ने उन दोनों को पैदा किया यदि तुम पक्के एकेश्वरवादी हो।३८।

فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِندَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ۩ ۝٣٩

फिर यदि यह लोग अभिमान करें तो याद रख कि वे लोग जिन्हें तेरे रब्ब का क़ुर्ब (सामीप्य) मिला हुआ है वे रात-दिन उस की स्तुति करते हैं और वे कभी नहीं थकते।३९।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنَّكَ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَإِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ۚ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُحْيِي الْمَوْتَىٰ

और उस के निशानों में से एक यह भी है कि तू कभी भूमि को उजाड़-बंजर देखता है, फिर जब हम उस पर पानी उतारते हैं तो वह एक नया जीवन पा लेती है तथा (हरियाली को) ख़ूब बढ़ाती है। वह (अल्लाह) जिस ने इस भूमि को नया जीवन दिया है निस्सन्देह वह

إِنَّهُۥ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

मुर्दों को भी जीवित करेगा। वह प्रत्येक बात के करने का सामर्थ्य रखता है।४०।

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا أَفَمَن يُلْقَىٰ فِي النَّارِ خَيْرٌ أَم مَّن يَأْتِي آمِنًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤٠﴾

जो लोग हमारी आयतों में से हेर-फेर कर के ग़लत अर्थ निकालते रहते हैं वे हम से छिपे नहीं। क्या वह व्यक्ति जो नरक में डाला जाए अधिक अच्छा है या वह जो क़ियामत के दिन शान्ति-पूर्वक हमारे पास आएगा ? हे लोगो ! तुम जो कुछ चाहो[1] करो। अल्लाह तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति देख रहा है।४१।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ﴿٤١﴾

जो लोग इस शिक्षा (क़ुर्आन) का इन्कार करते हैं जब कि वह उन के पास आया, हालाँकि वह बड़े आदर वाली एक किताब है (वे अपने हाथों अपना विनाश कर रहे हैं)।४२।

لَّا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ تَنزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾

झूठ न तो इस के आगे[2] से आ सकता है तथा न इस के पीछे से। वह (क़ुर्आन) बड़ी हिक्मतों वाले और महान् स्तुतियों वाले अल्लाह की ओर से उतरा है।४३।

مَّا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِن قَبْلِكَ

तुझे केवल वही बातें कही जाती हैं जो तुझ से पहले वाले रसूलों से कही गई थीं। तेरा

1. इस का यह अर्थ नहीं कि मनुष्य जो चाहे करे उसे कोई पकड़ नहीं होगी। अल्लाह ने अच्छाई और बुराई दोनों स्पष्ट कर दी है। अब यदि कोई व्यक्ति अच्छाई का ज्ञान रखते हुए बुराइ करे तो वह स्वयं उत्तरदायी है। इस के विषय में यही कहा जाएगा कि वह अपनी इच्छा से बुराई कर रहा है और यह नहीं कहा जाएगा कि उसे यह कर्म करने के लिए विवश किया जा रहा है।

2. पवित्र क़ुर्आन एक ऐसी किताब है कि झूठ इस के सामने ठहर नहीं सकता। इस की शिक्षाओं को लागू करने के फल स्वरूप झूठ को कोई सहायता नहीं मिल सकती। ऐसा इस लिए है कि इस क़ुर्आन को बड़ी हिक्मत वाले एवं गुणों के भण्डार वाले अल्लाह ने उतारा है।

إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَّذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٤٤﴾

रब्ब बड़ा क्षमा करने वाला है, परन्तु उस का अज़ाब भी बड़ा पीड़ादायक होता है ।४४।

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا أَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى أُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ ﴿٤٥﴾ ع ١٩

यदि हम इस क़ुर्आन को आजमी[1] बनाते (अर्थात् अरबी भाषा के सिवा किसी अन्य भाषा में उतारते) तो वे (मक्का वाले) कह सकते थे कि इस की आयतें खोल-खोल कर क्यों वर्णन नहीं की गईं । क्या आजमी भाषा और अरबी नबी कुछ भी समानता रखते हैं ? तू कह दे कि वह मोमिनों के लिए हिदायत और स्वास्थ्य[2] देने वाला है तथा जो लोग ईमान ही नहीं लाते उन के कानों में तो बहरापन है और वह (अर्थात् उस की वास्तविकता) उन के लिए छिपा हुआ है । वे लोग ऐसे ही हैं जैसे किसी को दूर[3] के स्थान से पुकारा जाए ।४५। (रुकू ५/१९)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ

और हम ने मूसा को भी एक उत्तम प्रकार की किताब दी थी, परन्तु उस के बारे में भी मतभेद किया गया था । यदि एक बात तेरे रब्ब की ओर से पहले से न हो चुकी होती

1. 'अजमी' का अर्थ है गूंगा । यह शब्द अरब के सिवा दूसरों पर बोला जाता है । मानों अजमी वह है जो अरबी न हो और उसकी भाषा अस्पष्ट हो । इस प्रकार जो भाषा साहित्यिक गुणों को पूरे ढंग से वर्णन न कर सके उसे अजमी कहा जाएगा ।

2. अभिप्राय यह है कि जो रसूल मानव-मात्र के लिए प्रकट होना था उस का प्रादुर्भाव तो एक ही देश में होना था और प्रारम्भ में एक ही जाति उस की सम्बोधित हो सकती थी । दूसरी जातियों को उस जाति के लोगों से शिक्षा प्राप्त कर के संसार में फैलाना था । अतः बताया गया है कि पवित्र क़ुर्आन को हम ने अरबी भाषा में उतारा है । सो मक्का वालों में से जो लोग ईमान लाएंगे उन्हें इस क़ुर्आन से हिदायत और स्वास्थ्य में वृद्धि मिलेगी दूसरे लोग उन से इन बातों को सीख लेंगे ।

3. जब कोई व्यक्ति दूर हो और वह अन्धा भी हो तो उसे हिदायत देना कठिन होता है । दूर होने के कारण वह आवाज़ सुन नहीं सकता तथा अन्धा होने कारण वह संकेतों को भी नहीं समझ सकता ।

لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝

तो उन लोगों का निर्णय कभी का हो चुका होता। वे इस (क़ुर्आन) के बारे में एक ऐसे भ्रम में पड़े हुए हैं जो उन की शान्ति को भंग कर देता है।४६।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝

जो व्यक्ति ईमान के अनुकूल कर्म करे उस का लाभ उसी की जान को होता है तथा जो व्यक्ति बुरे कर्म करे उस का अज़ाब भी उसी को मिलता है और तेरा रब्ब अपने बन्दों पर रञ्चमात्र भी अत्याचार नहीं करता।४७।

اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۭ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ اَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ۭ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَاۗءِيْ ۙ قَالُوْٓا اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ ۝

क़ियामत का ज्ञान उसी की ओर लौटाया जाता है (अर्थात् क़ियामत का पूर्ण ज्ञान उसी को है) और गाभों में से कोई फल नहीं निकलता तथा स्त्रियाँ भी अपने पेटों में कुछ नहीं उठातीं और न जनती हैं, परन्तु वह अल्लाह को ज्ञात होता है। जिस दिन वह उन लोगों को पुकारेगा और कहेगा कि कहाँ हैं मेरे साझी ? तो वे (उत्तर में) कहेंगे कि हम ने तुझे खोल कर बता दिया है कि हम में से कोई भी इस बात का गवाह नहीं।४८।

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ۝

और वे जिन उपास्यों को इस से पहले पुकारा करते थे वे उन से खोए जाएँगे तथा उन्हें विश्वास हो जाएगा कि उन के लिए भाग कर बच जाने का कोई भी स्थान नहीं।४९।

لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَاۗءِ الْخَيْرِ ۡ وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـــُٔوْسٌ قَنُوْطٌ ۝

मानव अच्छे पदार्थ माँगने से कदापि नहीं थकता, किन्तु यदि उसे कभी कोई कष्ट पहुँचे तो (पहली हालत को भूल कर) निराश हो जाता है।५०।

وَلَىِٕنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّاۗءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ ۙ وَمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَاۗىِٕمَةً ۙ وَّلَىِٕنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا ۡ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝

और यदि हम उसे दुःख पहुँच जाने के बाद दयालुता का मज़ा चखाएँ तो वह कहता है कि यह तो मेरा हक़ ही है और मुझे पूरा विश्वास है कि क़ियामत कदापि नहीं आएगी और यदि मुझे मेरे रब्ब की ओर लौटाया भी गया तो भी मेरे लिए उस के पास (इस लोक से) उत्तम पुरस्कार मौजूद होंगे और हम इन्कार करने वालों को अवश्य उन के कर्मों के बारे में सूचित करेंगे और उन को अत्यन्त कड़ा अज़ाब देंगे।५१।

وَاِذَآ اَنۡعَمۡنَا عَلَى الۡاِنۡسَانِ اَعۡرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوۡ دُعَآءٍ عَرِيۡضٍ ﴿۵۲﴾

और जब हम मनुष्य पर कृपा करते हैं तो वह मुँह फेर लेता है और हम से दूर एक किनारे पर हो जाता है तथा जब उसे कोई कष्ट पहुँचता है तो फिर लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ करता है ।५२।

قُلۡ اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ كَانَ مِنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرۡتُمۡ بِهٖ مَنۡ اَضَلُّ مِمَّنۡ هُوَ فِىۡ شِقَاقٍۢ بَعِيۡدٍ ﴿۵۳﴾

तू उन से कह दे कि मुझे बताओ तो सही कि यदि यह (क़ुर्आन) अल्लाह की ओर से हो और तुम इस का इन्कार कर दो तो उस व्यक्ति से बढ़ कर दूसरा कौन गुमराह होगा जो हक़ से बहुत दूर भाग जाए ? ।५३।

سَنُرِيۡهِمۡ اٰيٰتِنَا فِى الۡاٰفَاقِ وَفِىۡۤ اَنۡفُسِهِمۡ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمۡ اَنَّهُ الۡحَـقُّ ؕ اَوَلَمۡ يَكۡفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ شَهِيۡدٌ ﴿۵۴﴾

हम इन लोगों को अपने निशान अवश्य ही सारे संसार के ओर-छोर में दिखाएँगे और उन की अपनी जानों (और वंशों) में भी। यहाँ तक कि यह बात उन के लिए बिल्कुल खुल जाएगी कि यह क़ुर्आन तथ्य है। क्या तेरे रब्ब का समस्त पदार्थों पर निरीक्षक होना उन के लिए काफ़ी नहीं है ।५४।

اَلَاۤ اِنَّهُمۡ فِىۡ مِرۡيَةٍ مِّنۡ لِّقَآءِ رَبِّهِمۡ ؕ اَلَاۤ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىۡءٍ مُّحِيۡطٌ ﴿۵۵﴾ ع

सावधान ! ये लोग अपने रब्ब से मिलने के बारे में सन्देह में पड़े हुए हैं। कान खोल कर सुनो ! अल्लाह प्रत्येक वस्तु को घेरे हुए है (तथा उस के विनाश करने का सामर्थ्य रखता है) ।५५। (रुकू ६/१)
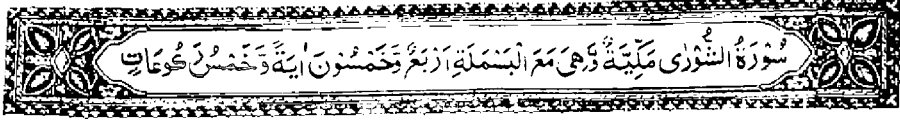
सूर: अल्-शूरा

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की चव्वन आयतें एवं पाँच रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

حٰمٓ ②

हमीद[1], मजीद। (यह सूर: स्तुति वाले, गौरवशाली)।२।

عٓسٓقٓ ③

अलीम, समी, क़ादिर। (ज्ञान वाले, बहुत सुनने वाले और सर्वशक्तिमान् अल्लाह ने उतारी है)।३।

كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ④

इसी प्रकार अल्लाह तुझ पर भी वह्य उतारता है और जो लोग तुझ से पहले हो चुके हैं उन पर भी (वह्य उतार चुका है)। वह ग़ालिब और हिक्मत वाला भी है।४।

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ⑤

आसमानों तथा जमीन में जो कुछ भी है सब उसी का है और वह बड़ी शान वाला है। उस का अनुशासन हर प्रकार की मख़्लूक़ पर फैला हुआ है।५।

1. विवरण के लिए देखिए सूर: बक़र: टिप्पणी आयत 2।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝	निकट है कि आकाश अपने ऊपर से (शक्तिशाली सत्ता के आदेश के कारण) फट कर गिर पड़े, हालाँकि फ़रिश्ते अपने रब्ब की पवित्रता एवं स्तुति[1] भी कर रहे हैं और जो लोग धरती में हैं उन के लिए क्षमा भी माँग रहे हैं। सुनो! अल्लाह बहुत क्षमा[2] करने वाला और अनन्त दया करने वाला है।६।
وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝	जो लोग अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को अपना संरक्षक बनाते हैं, अल्लाह ने उन के विरुद्ध पड़ने वाले समस्त कर्मों को सुरक्षित कर रखा है और तू उन का निरीक्षक नहीं (अल्लाह ही निरीक्षक है)।७।
وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ	और इसी प्रकार हम ने (अपने निरीक्षक होने के प्रमाण में) क़ुर्आन को तेरी ओर अरबी भाषा में उतारा है ताकि तू देश के केन्द्र के लोगों को और उस के चारों ओर

1. इस में बताया गया है यद्यपि फ़रिश्ते मानव-मात्र की मुक्ति के लिए प्रार्थनाएं कर रहे हैं और अल्लाह की स्तुति एवं उसकी पवित्रता का गुण-गान भी कर रहे हैं तथापि मनुष्य इतना मलिन हो गया कि सृष्टि का स्वामी इस का विनाश करना चाहता है। उस के विनाशकारी आदेश के सामने फ़रिश्तों का प्रार्थनाएँ करना कुछ महत्व नहीं रखता।

2. यहाँ इस ओर संकेत किया गया है कि फ़रिश्तों के क्षमा माँगने पर भी अल्लाह का सांसारिक व्यवस्था भंग कर देना तथा मनुष्य का सर्वनाश करना उस की क्षमा शीलता एवं दयालुता के विरुद्ध नहीं, क्योंकि संसार में जिन-जिन लोगों का सर्वनाश होगा उन के पापों के कारण ही होगा। अत: सुनो! कह कर बताया कि अल्लाह के गुण क्षमा शीलता, दयालुता आदि पूर्ण रूप से तो आख़िरत में प्रकट होंगे, क्योंकि यदि इस संसार के लोगों पर अज़ाब न आए तथा मौत अच्छे रूप में मोमिनों का स्वागत न करे तो अल्लाह की क्षमा शीलता एवं दयालुता कैसे प्रकट हो? अत: इन गुणों की अभिव्यक्ति के लिए अनिवार्य है कि इन्कार करने वाले लोग अज़ाब से मर कर नरक में दण्ड भोगें तथा मोमिन शुभ कर्म करते हुए मरने के बाद स्वर्ग में जा कर पुरस्कार पाएं।

فِيهِۚ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ﴿٧﴾

के रहने वालों को सचेत करे और ताकि तू उस दिन से सचेत करे जिस दिन सब लोग इकट्ठे किए जाएँगे, जिस के आने में लेशमात्र सन्देह नहीं। उस दिन एक गिरोह स्वर्ग में जाएगा तथा एक गिरोह नरक में जाएगा।८।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِن يُدْخِلُ مَن يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِۚ وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُم مِّن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٨﴾

और यदि अल्लाह अपनी इच्छा से काम करता (अर्थात् ज़बरदस्ती करता) तो इन सब को एक सम्प्रदाय बना देता, किन्तु वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है और अत्याचारियों को न तो कोई शरण देने वाला है तथा न उन का कोई सहायक है।९।

أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَۖ فَاللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٩﴾ ع

क्या उन्हों ने अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को शरण देने वाला बना लिया है? अत: (याद रहे कि) अल्लाह ही शरण देने वाला है तथा वही मुर्दों को जीवित करता है और वह अपने हर-एक इरादा को पूरा करने का सामर्थ्य रखता है।१०। (रुकू १/२)

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِن شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿١٠﴾

और जिस किसी बात में तुम्हारा मतभेद हो जाए तो उस का अन्तिम निर्णय अल्लाह ही के हाथ में है। यह है तुम्हारा अल्लाह! जो मेरा रब्ब है। मैं उस पर भरोसा रखता हूँ और उसी की ओर झुकता हूँ।११।

فَاطِرُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِۚ جَعَلَ لَكُم مِّنْ أَنفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًاۖ يَذْرَؤُكُمْ فِيهِۚ

वह आसमानों तथा ज़मीन का पैदा करने वाला है। उस ने तुम्हारी ही जिन्स से तुम्हारे साथी बनाए हैं तथा चौपायों के भी जोड़े बनाए हैं और इस प्रकार वह तुम्हें

لَیْسَ کَمِثْلِهٖ شَیْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ⑪

धरती पर बढ़ाता[1] है। उस जैसा कोई नहीं और वह बहुत सुनने वाला एवं देखने वाला है।१२।

لَهٗ مَقَالِیْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ یَّشَآءُ وَیَقْدِرُ ۚ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ⑫

आसमानों तथा ज़मीन की कुञ्जियाँ भी उस के हाथ में हैं। वह जिस के लिए चाहता है रोज़ी में वृद्धि प्रदान करता है तथा जिस के लिए चाहता है उस की रोज़ी में तंगी पैदा कर देता है। वह प्रत्येक बात को भली-भाँति जानता है।१३।

شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّیْنِ مَا وَصّٰی بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِیْٓ اَوْحَیْنَآ اِلَیْكَ وَمَا وَصَّیْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِیْمَ وَمُوْسٰی وَعِیْسٰٓی اَنْ اَقِیْمُوا الدِّیْنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِیْهِ ۚ كَبُرَ عَلَی الْمُشْرِكِیْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَیْهِ ۚ اَللّٰهُ یَجْتَبِیْٓ اِلَیْهِ مَنْ یَّشَآءُ وَیَهْدِیْٓ اِلَیْهِ مَنْ یُّنِیْبُ ⑬

उस (अल्लाह) ने तुझे (सिद्धान्तिक रूप में) वही धर्म दिया है जिस की ताकीद उस ने नूह को की थी और जो हम ने तुझ पर अब (क़ुर्आन द्वारा) उतारा और जिस की ताकीद हम ने इब्राहीम मूसा तथा ईसा को की थी और वह यह था कि (अल्लाह के) आदेशों का पालन करते हुए उन्हें संसार में क़ायम करो तथा इस (धर्म) के बारे में कदापि मतभेद न किया करो। मुश्रिकों पर वह शिक्षा बड़ी बोझल है जिस की ओर तू उन्हें बुलाता है, हालाँकि अल्लाह जिसे पसन्द करता है उसे इस (धर्म) के लिए चुन लेता है और वह शिक्षा उसी को मिलती है जो सदा अल्लाह की ओर झुका रहता है।१४।

وَمَا تَفَرَّقُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ

और इन्कार करने वालों ने धर्म के विषय में तब तक विभेद नहीं किया, परन्तु इस बात के बाद कि जब उन के पास एक कामिल ज्ञान (क़ुर्आन) आ गया तथा उन्हों ने यह विभेद (किसी बुद्धि संगत तर्क के आधार पर नहीं

1. अर्थात् सन्तान में बरकत दे कर धरती को बढ़ाता है।

بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكِتَابَ مِن بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿١٥﴾

किया अपितु) आपस के ईर्ष्या-द्वेष के कारण किया है और यदि तेरे रब्ब की ओर से एक निश्चित समय के लिए एक बात का निर्णय[1] न हो चुका होता तो इन इन्कार करने वालों का सर्वनाश कभी का हो चुका होता और वे लोग जिन्हें उन (पहले लोगों) के बाद किताब का वारिस बनाया गया है वे इस किताब के कारण एक ऐसे भ्रम में पड़ गए हैं जो उन के दिलों में दुःख पैदा कर रहा है ।१५।

فَلِذَٰلِكَ فَادْعُ ۖ وَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ ۖ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ ۖ وَقُلْ آمَنتُ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِن كِتَابٍ ۖ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۖ لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۖ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۖ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿١٦﴾

अत: तू लोगों को इसी धर्म की ओर बुला और जिस प्रकार तुझे आदेश दिया गया है उसी प्रकार धर्म पर दृढ़ता से क़ायम रह तथा उन की इच्छाओं का अनुसरण न कर और कह दे कि अल्लाह ने अपनी किताब से जो कुछ उतारा है मैं उस पर ईमान रखता हूँ एवं मुझे आदेश दिया गया है कि मैं तुम्हारे बीच न्याय-संगत निर्णय करूँ। अल्लाह हमारा भी तथा तुम्हारा भी रब्ब है। हमारे कर्म हमारे साथ हैं और तुम्हारे कर्म तुम्हारे साथ। हमारे तथा तुम्हारे बीच कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह हमें एक दिन एकत्रित करेगा और हम सभी को उसी की ओर लौट कर जाना है ।१६।

وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا اسْتُجِيبَ

और वे लोग जो अल्लाह के बारे में वाद-विवाद करते हैं जब कि (बहुत से लोग)

1. तात्पर्य यह है कि विभिन्न इन्कार करने वालों के सम्बन्ध में बहुत सी भविष्यवाणियाँ क़ुर्आन और हदीसों में हैं। यदि उन का अभी तुरन्त ही सर्वनाश कर दिया जाए तो उन भविष्यवाणियों के अपने-अपने समय पर पूरा होने की कोई सम्भावना नहीं रहती।

لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ⑰

उस की बात स्वीकार कर चुके हैं तो उन की युक्ति उन के रब्ब के सामने तोड़ी जाने वाली है। उन पर प्रकोप उतरेगा तथा उन के लिए कड़ा अज़ाब निश्चित है।१७।

اَللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ⑱

अल्लाह वही है जिस ने सत्य के साथ इस कामिल किताब (क़ुर्आन) एवं मीज़ान[1] को उतारा है और तुम्हें किस (बात) ने बताया है कि निश्चित समय निकट आ गया है।१८।

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِي السَّاعَةِ لَفِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ⑲

जो लोग इस पर ईमान नहीं लाते वे उसे शीघ्र[2] लाना चाहते हैं और मोमिन तो उस से डरते रहते हैं। उन्हें पूरा विश्वास है कि वह घटना अवश्य हो कर रहेगी। सुनो! जो लोग क़ियामत के बारे में सन्देह करते हैं वे परले दर्जे की गुमराही में पड़े हुए हैं।१९।

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ⑳ ع

अल्लाह अपने बन्दों के छिपे भेदों को जानता है। जिसे चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसे चाहता है कम देता है। वह बड़ा शक्तिशाली एवं प्रभुत्वशाली है।२०। (रुकू २/३)

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ

जो कोई आख़िरत की खेती चाहता है हम उस के लिए उस की (आख़िरत की) खेती

1. क़ुर्आन-मजीद का एक नाम 'मीज़ान'-तुला भी है, क्योंकि इस में जो बात कही जाती है वह तर्क संगत होती है और तर्क को सारे संसार में साक्षी के रूप में माना गया है। पवित्र क़ुर्आन प्रत्येक बात युक्ति-युक्त कहता है। अतः वह तुला है, क्योंकि जो बात उस की तुला में पूरी उतरे वही सत्य है। शेष सब बातें असत्य हैं, क्योंकि वे बुद्धि के तुला में पूरी नहीं उतरतीं।

2. इन्कार करने वाले लोग यह बात नहीं मानते कि उन्हें अज़ाब मिलेगा। वे कहते रहते हैं अज़ाब शीघ्र लाओ, क्योंकि उन के कथनानुसार अज़ाब आ ही नहीं सकता तो उह शीघ्र आए या देर से आए उन के बराबर है।

وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۝٢١

बढ़ाते चले जाते हैं और जो कोई इस लोक की खेती चाहता है हम उस (को इसी लोक की खेती) में से उस का हिस्सा दे देते हैं (अर्थात् उसे सांसारिक लाभ मिल जाता है) परन्तु आख़िरत में उस का कोई हिस्सा नहीं होता ।२१।

اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْ بِهِ اللّٰهُ ۭ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٢٢

क्या उन के लिए कोई ऐसे साझी हैं जिन्हों ने उन के लिए ऐसी धार्मिक शिक्षा आयोजित की है जिस का अल्लाह ने आदेश नहीं दिया ? यदि (अल्लाह की ओर से) अन्तिम निर्णय न हो चुका होता तो उन के बीच निर्णय[1] कर दिया जाता और अत्याचारियों को निश्चय ही पीड़ा-दायक अज़ाब पहुँचेगा ।२२।

تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۭ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَاۗءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ۝٢٣

तू अत्याचारियों को देखता है कि वे अपने कर्मों के कारण डर रहे हैं हालाँकि वह (अज़ाब जिस का वादा है) अवश्य उतरने वाला है और जो लोग ईमान लाए एवं उन्हों ने ईमान के अनुकूल कर्म किए वे घने बाग़ों में होंगे । उन के लिए उन के रब्ब के पास वह सब कुछ होगा जिस की उन्हें अभिलाषा होगी । यही बड़ा वरदान है ।२३।

ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۭ قُلْ لَّآ اَسْـَٔــلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ

यही वह बात है जिस का शुभ-समाचार अल्लाह अपने मोमिन बन्दों को देता है ऐसे मोमिन बन्दों को जो ईमान के अनुकूल कर्म करते हैं । तू कह दे कि मैं अपनी सेवा का

1. अर्थात् उन का सर्वनाश हो जाता, परन्तु अल्लाह का अटल निर्णय पवित्र क़ुर्आन में मौजूद है कि जब तक पूर्ण रूप से तर्क-वितर्क न हो जाए किसी जाति का विनाश नहीं किया जाता । अतएव उन्हें ढील मिल रही है ।

فِی الۡقُرۡبٰی ؕ وَ مَنۡ یَّقۡتَرِفۡ حَسَنَۃً نَّزِدۡ لَہٗ فِیۡہَا حُسۡنًا ؕ اِنَّ اللّٰہَ غَفُوۡرٌ شَکُوۡرٌ ﴿۲۴﴾

कोई बदला तुम से नहीं माँगता सिवाय उस प्रेम के जो निकट सम्बन्धी नातेदारों[1] से किया जाता है और जो व्यक्ति कोई भी नेकी का काम करता है हम उस की नेकी को उस के लिए और भी सुन्दर[2] बना देते हैं। अल्लाह् बहुत क्षमा करने वाला और क़दर करने वाला है।२४।

اَمۡ یَقُوۡلُوۡنَ افۡتَرٰی عَلَی اللّٰہِ کَذِبًا ۚ فَاِنۡ یَّشَاِ اللّٰہُ یَخۡتِمۡ عَلٰی قَلۡبِکَ ؕ وَ یَمۡحُ اللّٰہُ الۡبَاطِلَ وَ یُحِقُّ الۡحَقَّ بِکَلِمٰتِہٖ ؕ اِنَّہٗ عَلِیۡمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ ﴿۲۵﴾

क्या वे यह कहते हैं कि इस व्यक्ति (ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्तफ़ा सल्लअम) ने अल्लाह् पर झूठ गढ़ लिया है? सो यदि अल्लाह् चाहे तो तेरे दिल पर मुहर[3] लगा दे और अल्लाह् सदैव झूठ का सर्वनाश करता है तथा सत्य को अपने निशानों द्वारा क़ायम करता है। वह् दिलों की बातों को ख़ूब जानता है।२५।

وَ ہُوَ الَّذِیۡ یَقۡبَلُ التَّوۡبَۃَ عَنۡ عِبَادِہٖ وَ یَعۡفُوۡا عَنِ السَّیِّاٰتِ وَ یَعۡلَمُ مَا

वही अपने वन्दों की तौब: स्वीकार करता है और उन की भूलों को क्षमा करता है तथा

1. रसूल होने के नाते यह माँग करता हूँ कि जो प्रेम नातेदारों से किया जाता है वैसा प्रेम मुझ से भी करो। मानों प्रत्येक मोमिन को अपने परिजनों से बढ़ कर अल्लाह् और उस के रसूल से प्रेम करना चाहिए, अर्थात् उस की बात के मुक़ाविले में किसी नातेदार की बात को प्रधानता नहीं देनी चाहिए। (विवरण के लिए देखिए सूर: तौब: आयत 24)

2. अर्थात् वे नेकियों पर इस प्रकार लपकते हैं जैसे प्रेमी किसी सुन्दर वस्तु पर गिरता है।

3. अर्थात् यदि झूठ बोलता तो उस का संयम नष्ट हो जाता और दिल पर मुहर लग जाती परन्तु यह तो क़ुर्आन उतरने के बाद संयम में और भी बढ़ गया। अत: शत्रु का आरोप झूठा है। इन्कार करने वाले लोगों के लिए भी 'मुहर' शब्द प्रयुक्त हुआ है, परन्तु वहाँ उस का यह अर्थ है कि दिलों में तक़वा या संयम प्रवेश नहीं कर सकता, क्योंकि वे सीमा से आगे निकल चुके हैं, किन्तु ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्तफ़ा सल्लअम समय के ऐसे स्थान पर पहुँच चुके हैं कि उन के दिल में किसी प्रकार के बुरे विचार प्रवेश नहीं कर सकते। आप ने कहा है कि मेरा शैतान भी मुसलमान हो चुका है। (मुस्लिम शरीफ़ प्रति 2 पृष्ठ 474 प्रकाशित मिस्र और मुस्नद अह़मद प्रति 6 पृष्ठ 115 प्रकाशित मुद्रणालय अज़हर, मिस्र)।

تَفۡعَلُوۡنَ ﴿٢٦﴾

जो कुछ तुम करते हो वह उसे जानता है।२६।

وَ یَسۡتَجِیۡبُ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ یَزِیۡدُہُمۡ مِّنۡ فَضۡلِہٖ ؕ وَ الۡکٰفِرُوۡنَ لَہُمۡ عَذَابٌ شَدِیۡدٌ ﴿٢٧﴾

और मोमिन एवं ईमान के अनुकूल कर्म करने वालों की प्रार्थनाओं को स्वीकार करता है और अपनी कृपा से (जितने प्रतिफल के वे अधिकारी होते हैं उस से भी) अधिक उन्हें प्रदान करता है तथा इन्कार करने वालों के लिए कड़ा अज़ाब निश्चित है।२७।

وَ لَوۡ بَسَطَ اللّٰہُ الرِّزۡقَ لِعِبَادِہٖ لَبَغَوۡا فِی الۡاَرۡضِ وَ لٰکِنۡ یُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا یَشَآءُ ؕ اِنَّہٗ بِعِبَادِہٖ خَبِیۡرٌۢ بَصِیۡرٌ ﴿٢٨﴾

और यदि अल्लाह अपने बन्दों की रोज़ी में बहुतात पैदा कर देता तो वे देश में बड़ी सरकशी दिखाने लग जाते, किन्तु वह जो कुछ चाहता है एक अनुमान के अनुसार उतारता है। वह अपने बन्दों की परिस्थितियों को जानने वाला और उन की हालत को देखने वाला है।२८।

وَ ہُوَ الَّذِیۡ یُنَزِّلُ الۡغَیۡثَ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا قَنَطُوۡا وَ یَنۡشُرُ رَحۡمَتَہٗ ؕ وَ ہُوَ الۡوَلِیُّ الۡحَمِیۡدُ ﴿٢٩﴾

और वही है जो निराशा के बाद वर्षा उतारता है तथा अपनी रहमत फैलाता है और वही सच्चा शरण-दाता एवं समस्त प्रकार की स्तुतियों का स्वामी है।२९।

وَ مِنۡ اٰیٰتِہٖ خَلۡقُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ مَا بَثَّ فِیۡہِمَا مِنۡ دَآبَّۃٍ ؕ وَ ہُوَ عَلٰی جَمۡعِہِمۡ اِذَا یَشَآءُ قَدِیۡرٌ ﴿٣٠﴾ ع

और आसमानों तथा ज़मीन की उत्पत्ति तथा इन दोनों के बीच उस ने जो जीवधारी फैलाए हैं सब उस के निशानों में से हैं तथा जब वह चाहेगा तो इन सब को इकट्ठा करने पर सामर्थ्यवान होगा।३०। (रुकू ३/४)

وَ مَاۤ اَصَابَکُمۡ مِّنۡ مُّصِیۡبَۃٍ فَبِمَا کَسَبَتۡ اَیۡدِیۡکُمۡ وَ یَعۡفُوۡا عَنۡ کَثِیۡرٍ ﴿٣١﴾

और जो विपत्ति तुम पर आए वह तुम्हारे कर्मों के कारण आती है और अल्लाह तुम्हारे बहुत से अपराधों को क्षमा कर देता है।३१।

وَمَآ اَنۡتُمۡ بِمُعۡجِزِیۡنَ فِی الۡاَرۡضِ ۚۖ وَمَا لَکُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ مِنۡ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیۡرٍ ﴿۳۲﴾

और तुम (अल्लाह को) धरती पर अपना इरादा पूरा करने में असफल नहीं कर सकते एवं अल्लाह के सिवा तुम्हें कोई भी शरण देने वाला नहीं और न तुम्हारा कोई सहायक ही है।३२।

وَمِنۡ اٰیٰتِہِ الۡجَوَارِ فِی الۡبَحۡرِ کَالۡاَعۡلَامِ ﴿۳۳﴾

और उस के निशानों में से समुद्रों में चलने वाले पर्वतों की तरह ऊँचे-ऊँचे जहाज़ भी हैं।३३।

اِنۡ یَّشَاۡ یُسۡکِنِ الرِّیۡحَ فَیَظۡلَلۡنَ رَوَاکِدَ عَلٰی ظَہۡرِہٖ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیٰتٍ لِّکُلِّ صَبَّارٍ شَکُوۡرٍ ﴿۳۴﴾

यदि वह चाहे तो हवा को खड़ा कर दे और वे समुद्र के ऊपर खड़े के खड़े रह जाएँ। इस में प्रत्येक धैर्यवान् और धन्यवाद करने वाले के लिए निशान हैं।३४।

اَوۡ یُوۡبِقۡہُنَّ بِمَا کَسَبُوۡا وَیَعۡفُ عَنۡ کَثِیۡرٍ ﴿۳۵﴾

या यदि वह चाहे तो जहाज़ वालों को उन के कर्मों के कारण विनष्ट कर दे तथा वह बहुत से पापों को क्षमा कर देता है।३५।

وَّیَعۡلَمَ الَّذِیۡنَ یُجَادِلُوۡنَ فِیۡۤ اٰیٰتِنَا ؕ مَا لَہُمۡ مِّنۡ مَّحِیۡصٍ ﴿۳۶﴾

और वह उन लोगों को जानता है जो हमारे निशानों के बारे में वाद-विवाद करते हैं। उन के लिए भागने का कोई स्थान नहीं।३६।

فَمَاۤ اُوۡتِیۡتُمۡ مِّنۡ شَیۡءٍ فَمَتَاعُ الۡحَیٰوۃِ الدُّنۡیَا ۚ وَمَا عِنۡدَ اللّٰہِ خَیۡرٌ وَّاَبۡقٰی لِلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَلٰی رَبِّہِمۡ یَتَوَکَّلُوۡنَ ﴿۳۷﴾

और तुम्हें जो कुछ भी दिया गया है वह सांसारिक-जीवन का सामान है और जो अल्लाह के पास है वह मोमिनों और अपने रब्ब पर भरोसा करने वालों के लिए बहुत अच्छा और सदा-सर्वदा रहने वाला है।३७।

وَالَّذِیۡنَ یَجۡتَنِبُوۡنَ کَبٰٓئِرَ الۡاِثۡمِ وَالۡفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوۡا ہُمۡ یَغۡفِرُوۡنَ ﴿۳۸﴾

और (उन के लिए) जो बड़े-बड़े पापों और व्यभिचार से बचते हैं तथा जब उन्हें क्रोध आता है तो क्षमा कर देते हैं।३८।

وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٨﴾

और जो अपने रब्ब की आवाज़ को मान लेते हैं तथा नमाज़ें जमाअत के साथ पढ़ते हैं एवं उन का ढंग यह है कि अपनी समस्त समस्याओं को आपस में सलाह मशवरा से तय कर लेते हैं तथा जो कुछ हम ने उन्हें दिया है उस में से ख़र्च करते हैं।३९।

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾

और जब उन पर कोई अत्याचार होता है तो वे बदला तो लेते हैं (परन्तु यह बात याद रखते हैं)।४०।

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

कि बुराई का बदला उतना ही है (जितनी की गई हो) और जो व्यक्ति क्षमा कर दे और सुधार करना अपने सामने रखे तो उसे प्रतिफल देना अल्लाह के ज़िम्मा है। वह (अल्लाह) अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता।४१।

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤١﴾

और जो लोग अपने ऊपर अत्याचार हो चुकने के पश्चात् उचित बदला लेते हैं उन पर किसी प्रकार का आरोप नहीं।४२।

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾

आपत्ति केवल ऐसे लोगों पर है जो दूसरे लोगों पर अत्याचार करने में पहल करते हैं और धरती पर बिना किसी हक़ के ज़्यादती करने लग जाते हैं। ऐसे लोगों को दुःखदायी अज़ाब मिलेगा।४३।

وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿٤٣﴾ ع

और जिस ने धैर्य धारण किया और क्षमा कर दिया तो उस का यह काम बड़े साहस पूर्ण कामों में से है।४४। (रुकू ४/५)

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ۚ ۴۵

और जिसे अल्लाह गुमराह ठहरा दे तो उस (अल्लाह) को छोड़ कर उस का कोई भी सहायक नहीं हो सकता और तू अत्याचारियों को देखेगा जब कि वे अज़ाब को आता हुआ देखेंगे तो कहेंगे कि क्या इस अज़ाब को लौटाने का भी कोई उपाय है ? ।४५।

وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ۴۶

और तू उन्हें देखेगा कि वे उस अज़ाब के सामने प्रस्तुत किए जाएँगे और वे अपमान के कारण सिर झुकाए हुए नीची निगाहों से देख रहे होंगे तथा मोमिन कहेंगे कि वास्तविक घाटा पाने वाले यही लोग हैं जिन्हों ने अपने-आप को तथा अपने परिवार को क़ियामत के दिन घाटे में डाला । कान खोल कर सुन लो ! अत्याचारी लोग एक स्थायी अज़ाब में होंगे ।४६।

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ۴۷

और उन्हें शरण देने वाला कोई नहीं होगा जो अल्लाह के मुक़ाबिले में उन की सहायता कर सके तथा जिसे अल्लाह गुमराह समझता है उसे राह पर लाने का कोई उपाय नहीं ।४७।

اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ۴۸

तुम अपने रब्ब की आवाज़ का (उसे स्वीकार करते हुए) हाँ में उत्तर दो, इस से पहले कि वह समय आ जाए जिसे अल्लाह के मुक़ाबिले में लौटाने वाला कोई नहीं । उस दिन तुम्हारे लिए शरण की कोई जगह नहीं होगी और न तुम्हारे लिए इन्कार करने की कोई गुन्जाइश नहीं होगी ।४८।

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ

फिर भी यदि वे मुँह मोड़ लें तो (मोड़ते रहें) हम ने तुझे उन का निरीक्षक बना कर नहीं

إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنسَانَ كَفُورٌ ﴿٤٨﴾

भेजा। तेरे जिम्मा तो केवल बात को पहुँचा देना है और जब हम मनुष्य को अपनी ओर से कभी अपनी रहमत पहुँचाते हैं तो वह इस पर प्रसन्न हो जाता है और यदि उसे उस के ही किसी कर्म के कारण कष्ट पहुँचे तो मनुष्य कृतघ्न बन जाता है (और हमारे पहले समस्त वरदानों का इन्कार कर देता है) ।४९।

لِّلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ يَهَبُ لِمَن يَشَاءُ إِنَاثًا وَيَهَبُ لِمَن يَشَاءُ الذُّكُورَ ﴿٤٩﴾

आसमानों तथा जमीन में अल्लाह का ही अनुशासन है। वह जो कुछ चाहता है पैदा करता है। जिसे चाहता है पुत्रियाँ देता है, जिसे चाहता है पुत्र देता है ।५०।

أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَاثًا ۖ وَيَجْعَلُ مَن يَشَاءُ عَقِيمًا ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾

या पुत्र तथा पुत्रियाँ दोनों मिले-जुले प्रदान करता है जिसे चाहता है बाँझ बना देता है। निस्सन्देह वह बहुत ज्ञानवान और सामर्थ्यवान है ।५१।

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِن وَرَاءِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ عَلِيٌّ حَكِيمٌ ﴿٥١﴾

और किसी मनुष्य के बस की यह बात नहीं कि अल्लाह उस से वह्य[1] के सिवा अथवा पर्दे के पीछे से बोलने के सिवा किसी और रूप में बातें करे या (उस की ओर फ़रिश्तों में से) रसूल बना कर भेजे जो उस के आदेश से जो बात वह कहे वह उसे पहुँचा दे। वह बड़ी शान वाला है और बड़ी हिक्मत वाला है ।५२।

1. 'वह्य' का वास्तविक अर्थ यह है-ऐसा संकेत जो शीघ्रता से किया जाए और उस का ज्ञान दूसरों को न हो सके। अल्लाह की वाणी को इस लिए वह्य कहते हैं कि यह शीघ्रता से उतरती है उस के सिवा किसी को उसका ज्ञान नहीं हो सकता। हाँ! उस व्यक्ति को हो सकता है जिसे अल्लाह स्वयं उस में सम्मिलित कर ले।

(शेष पृष्ठ १०७३ पर)

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ۭ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِنَا ۭ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

और हम ने इसी तरह् तेरी ओर अपने आदेश से वाणी उतारी है। तू नहीं जानता था कि किताब क्या वस्तु है तथा न तू यह् जानता था कि ईमान क्या है? किन्तु हम ने इस (वह्य) को प्रकाश बना दिया है, इस के द्वारा हम अपने भक्तों में से जिसे चाहते हैं सत्य-पथ दर्शा देते हैं और निस्सन्देह तू लोगों को सन्मार्ग की ओर ला रहा है।५३।

صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ۝ ع

अल्लाह् के मार्ग की ओर जो उस का भी मालिक है जो आसमानों में है और उस का भी जो ज़मीन में है। सुनो! समस्त बातें अल्लाह् की ओर जाती हैं (अर्थात् सब बातों का आदि और अन्त अल्लाह् ही के हाथ में है)।५४।
(रुकू ५/६)

(पृष्ठ १०७३ का शेष)

इस आयत में अल्लाह् ने अपने भक्त से बात करने के तीन ढंग बताए हैं।

(क) ईश-वाणी सीधे रूप में भक्त पर उतरे।

(ख) अल्लाह् की ओर वाणी शब्दों में न उतरे अपितु विषय को विवरणात्मक दृष्टाँतों के रूप में अथवा साधारण दृश्यों में दिखाया जाए। इसी को इस आयत में 'पर्दे के पीछे' शब्दों से वर्णन किया गया है, अर्थात् वास्तविक उद्देश्य पर्दे के पीछे रहता है।

(ग) अल्लाह् अपनी वाणी फ़रिश्तों पर उतारे और फ़रिश्ता उस ईश-वाणी को भक्त तक पहुँचा दे।
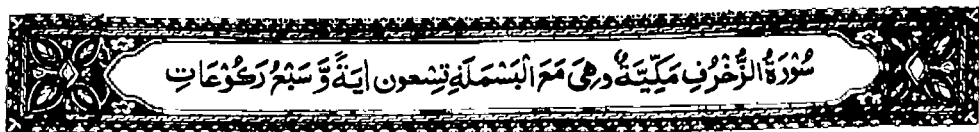
सूरः अल् - ज़ुख़रुफ़

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह् सहित इस की नव्वे आयतें एवं सात रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह् का नाम लेकर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

حٰمٓ ②

हमीद, मजीद (स्तुति वाले एवं महिमाशाली अल्लाह् की ओर से यह सूरः उतरी है)।२।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ③

हम इस किताब की शपथ लेते हैं जो अपने विपयों को खोल-खोल कर बताने वाली है।३।

اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ④

हम ने इस किताब को क़ुर्आन बनाया है, जो अरबी[1] में है ताकि तुम समझो।४।

وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ⑤

और यह (क़ुर्आन) उम्मुल्किताब[2] में है तथा हमारे निकट बड़ा महिमाशाली एवं बड़ी हिक्मतवाला है।५।

---

1. 'क़ुर्आन' शब्द इस लिए प्रयोग किया गया है कि इस में यह संकेत है कि यह किताब बार-बार पढ़ी जाया करेगी और 'अरबिय्यन' शब्द से इस ओर संकेत किया गया है कि इस का पढ़ना बहुत सरल होगा एवं इस का भाव समझना भी आसान होगा, क्योंकि इस की प्रत्येक बात तर्क संगत है।

2. मूल शब्द 'उम्मुल्किताब' का अर्थ है किताब की माँ। इस स्थान पर एक रूपक का प्रयोग

(शेष पृष्ठ १०७५ पर)

أَفَنَضْرِبُ عَنكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا أَن كُنتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ⑤

क्या हम तुम्हारे सामने इस ज़िक्र (अर्थात् क़ुर्आन) का प्रचार करना केवल इसलिए छोड़ दें कि तुम सीमा का उल्लंघन करने वाले लोग हो ? ।६।

وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِن نَّبِيٍّ فِي الْأَوَّلِينَ ⑦

और हम ने पहली जातियों में अनेक रसूल भेजे हैं ।७।

وَمَا يَأْتِيهِم مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ⑧

और उन के पास कोई रसूल नहीं आता था जिस की वे हँसी न उड़ाते हों ।८।

فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُم بَطْشًا وَمَضَىٰ مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ⑨

और हम ने उन से अधिक शक्तिशाली लोगों को (इन्कार करने के कारण) विनष्ट कर दिया था (फिर उन के विनाश करने में क्या कठिनाई है ?) और इन लोगों के सामने पहले लोगों के हालात बीत ही चुके हैं ।९।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ⑩

और यदि तू उन से पूछे कि आसमानों तथा ज़मीन को किस ने पैदा किया है तो वे कहेंगे कि उन्हें शक्तिशाली और महाज्ञानी सत्ता ने पैदा किया है ।१०।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ⑪

जिस ने धरती को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया और उस में तुम्हारे लिए मार्ग बनाए ताकि तुम हिदायत पाओ ।११।

(पृष्ठ १०७४ का शेष)

किया गया है कि समस्त धर्म-शास्त्र किसी न किसी सिद्धान्त के अधीन होते हैं और वह सिद्धान्त धर्म-ग्रन्थ के लिए माता के रूप में होता है। जिस प्रकार एक स्त्री मानव-जाति के लिए माता होती है सो इसी प्रकार यह क़ुर्आन इन अर्थों में 'उम्मुलकिताब में है' कि अल्लाह ने सिद्धान्तिकरूप में जो किताबें संसार में उतारनी थीं उन में यह क़ुर्आन सम्मिलित था। मानों अनादि काल से यह बात अल्लाह के सामने थी कि वह संसार को हिदायत की राह दिखाने के लिए क़ुर्आन को उतारेगा।

وَالَّذِىْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ⑪

और उस ने बादलों से एक अनुमान के अनुसार पानी बरसाया, फिर उस ने एक मुर्दा भूमि को जीवित किया है। इसी तरह तुम भी (जीवित कर के) निकाले जाओगे।१२।

وَالَّذِىْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ ۙ ⑫

और उसी ने तुम्हारे लिए सब प्रकार के जोड़े पैदा किए हैं और इसी प्रकार चौपायों को पैदा किया है तथा नौकाएँ बनाई हैं जिन पर तुम सवार होते हो।१३।

لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ۙ ⑬

जब तुम उन पर ठीक से बैठ जाओ तो फिर अपने रब्ब के उपकारों को याद करो और यह कहो कि पवित्र है वह रब्ब जिस ने हमें उन पर अधिकार दिया है, हालाँकि हम उन्हें अपनी शक्ति से अपने अधीन नहीं कर सकते थे।१४।

وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ⑭

और निस्सन्देह हम अपने रब्ब की ओर लौट कर जाने वाले हैं।१५।

وَجَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ۭ ⑮ ع

(परन्तु हाल यह है कि) वे उस में से एक भाग अल्लाह के बन्दों के लिए निश्चित[1] करते हैं। निस्सन्देह मनुष्य खुला-खुला कृतघ्न है।१६। (रुकू १/७)

اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّاَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ⑯

(उन से पूछो तो सही कि) क्या उस ने अपनी मख़्लूक़ में से अपने लिए तो पुत्रियाँ बना ली हैं तथा उन्हें पुत्र प्रदान कर के प्रधानता दी?।१७।

---

1. अर्थात् वे उन लोगों को इन वस्तुओं का स्वामी ठहरा देते हैं।

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٨﴾

और उन में से जब किसी को उस चीज़ की सूचना दी जाती है जिसे वह रहमान (अल्लाह) से सम्बन्धित करता है तो उस का मुँह काला हो जाता है और वह क्रोध से भर जाता है।१८।

أَوَمَن يُنَشَّأُ فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿١٩﴾

क्या वह जिस का पालन-पोषण आभूषणों में हुआ है और झगड़े में अपने दिल की बात खुल कर नहीं कह सकती (वह अल्लाह के हिस्से में आती है तथा सामर्थ्य वाला लड़का मनुष्य के हिस्से में ?)।१९।

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَٰنِ إِنَاثًا ۚ أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ﴿٢٠﴾

और उन्हों ने फ़रिश्तों को जो रहमान के बन्दे हैं, स्त्रियाँ ठहराया है। क्या वे उन की उत्पत्ति के समय मौजूद थे ? यदि यह बात ठीक है तो अवश्य ही उन की गवाही लिखी जाएगी तथा उन से (क़ियामत के दिन) प्रश्न किया जाएगा।२०।

وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَٰنُ مَا عَبَدْنَاهُم ۗ مَّا لَهُم بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢١﴾

और वे कहते हैं रहमान (ख़ुदा) चाहता तो हम उस के सिवा दूसरे उपास्यों की उपासना न करते। यह बात वे केवल ढकोसले से कहते हैं। उन्हें इस का वास्तविक ज्ञान कुछ भी नहीं।२१।

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِّن قَبْلِهِ فَهُم بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ﴿٢٢﴾

क्या हम ने उन्हें इस क़ुर्आन से पहले कोई ऐसी किताब दी है (जिस में यह बात लिखी हो) कि वे उस के द्वारा प्रमाण पकड़ रहे हैं ?।२२।

بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِم

ऐसा नहीं, अपितु वास्तविकता यह है कि वे इस बात पर हठ करते हैं कि हम ने

مُّهۡتَدُوۡنَ ﴿۲۲﴾

अपने पूर्वजों को एक पंथ पर पाया था तथा हम भी उन के पीछे-पीछे उन्हीं के पद-चिह्नों पर चलते जाएँगे।२३।

وَكَذٰلِكَ مَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ فِىۡ قَرۡيَةٍ مِّنۡ نَّذِيۡرٍ اِلَّا قَالَ مُتۡرَفُوۡهَاۤ ۙ اِنَّا وَجَدۡنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّ اِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمۡ مُّقۡتَدُوۡنَ ﴿۲۳﴾

और (हे रसूल !) हम ने तुझ से पहले किसी बस्ती में कोई रसूल नहीं भेजा कि इन्हीं की तरह उस के धन-दौलत वाले लोगों ने यह न कह दिया हो कि हम ने अपने पूर्वजों को एक पंथ पर पाया था और हम उन्हीं के पदचिन्हों पर चलेंगे।२४।

قٰلَ اَوَلَوۡ جِئۡتُكُمۡ بِاَهۡدٰى مِمَّا وَجَدۡتُّمۡ عَلَيۡهِ اٰبَآءَكُمۡ ؕ قَالُوۡۤا اِنَّا بِمَاۤ اُرۡسِلۡتُمۡ بِهٖ كٰفِرُوۡنَ ﴿۲۴﴾

(इस पर प्रत्येक रसूल ने) उत्तर दिया कि क्या यदि मैं तुम्हारे पास उस से उत्तम शिक्षा ले आऊँ जिस पर तुम ने अपने पूर्वजों को पाया था (तब भी तुम उसी पर हठ करते रहोगे ?) तो उन्हों ने उत्तर दिया कि जो शिक्षा दे कर तुम्हें भेजा गया है हम उस का इन्कार करते हैं।२५।

فَانۡتَقَمۡنَا مِنۡهُمۡ فَانۡظُرۡ كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿۲۵﴾ ع

सो हम ने उन से बदला लिया। अतः देख ले कि झुठलाने वालों का क्या परिणाम निकला ?।२६। (रुकू २/८)

وَاِذۡ قَالَ اِبۡرٰهِيۡمُ لِاَبِيۡهِ وَقَوۡمِهٖۤ اِنَّنِىۡ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعۡبُدُوۡنَ ۙ ﴿۲۶﴾

और (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने पिता तथा अपनी जाति के लोगों से कहा था कि जिन की तुम उपासना करते हो मैं उन से विरक्त हूँ।२७।

اِلَّا الَّذِىۡ فَطَرَنِىۡ فَاِنَّهٗ سَيَهۡدِيۡنِ ﴿۲۷﴾

सिवाय उस (अल्लाह) के जिस ने मुझे पैदा किया। निस्सन्देह वह मुझे हिदायत देगा।२८।

وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِىۡ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُوۡنَ ﴿۲۸﴾

और इब्राहीम ने उस शिक्षा को अपने सन्तान में क़ायम रहने वाली यादगार के रूप में छोड़ा ताकि वे शिर्क से रुक जाएँ।२९।

بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۝

वास्तविकता यह है कि मैं ने इन लोगों को तथा इन के पूर्वजों को सांसारिक लाभ पहुँचाया यहाँ तक कि इन के पास हक़ भी आ गया और खोल-खोल कर बताने वाला रसूल भी।३०।

وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝

और जब उन के पास हक़ आ गया तो उन्हों ने कहा कि ये तो केवल मन मोहक बातें हैं और हम इस के मानने से इन्कार करते हैं।३१।

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ۝

और यह भी आपत्ति की कि यह क़ुर्आन दोनों बड़े नगरों में से किसी महान् व्यक्ति[1] पर क्यों नहीं उतारा गया।३२।

اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۭ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ۭ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝

क्या वे तेरे रब्ब की रहमत को बाँटते हैं? (यह क्यों कर हो सकता है) हम ने उन के बीच सांसारिक-जीवन सम्बन्धी रोज़ी का सामान बाँटा है और उन में से कुछ लोगों को दूसरे कुछ लोगों पर प्रधानता दी है जिस के फलस्वरूप कुछ बड़े लोग दूसरे कुछ छोटे लोगों को नीच समझने लगते हैं और तेरे रब्ब की रहमत उस सारे धन-दौलत से अच्छी है जो वे इकट्ठा करते हैं।३३।

وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ

और यदि यह डर न होता कि सारे लोग एक ही प्रचलन के हो जाएंगे तो हम रहमान (ख़ुदा) का इन्कार करने वाले लोगों की

---

1 अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम। एक अनाथ पर क्यों उतरा? यदि हम (जाति के सरदारों) को मनवाना था तो यह ईशवाणी तायफ़ और मक्का नगर के किसी महान् व्यक्ति पर उतरनी चाहिए थी। यह एक पुराना आरोप है जो आज तक लगाया जाता है। इस युग के लोग भी यही आरोप सुधारकों पर लगाते हैं।

عَلَيۡهَا يَظۡهَرُوۡنَ ۝٣٤

छतों तथा सीढ़ियों को चाँदी का बना देते जिन पर वे चढ़ते हैं।३४।

وَلِبُيُوۡتِهِمۡ اَبۡوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيۡهَا يَتَّكِـُٔوۡنَ ۝٣٥

और उन के घरों के द्वार भी (चाँदी के बना देते) तथा वे सिंहासन भी जिन पर वे टेक लगाते हैं (चाँदी के बना देते)।३५।

وَزُخۡرُفًا ؕ وَاِنۡ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ؕ وَالۡاٰخِرَةُ عِنۡدَ رَبِّكَ لِلۡمُتَّقِيۡنَ ۝٣٥

बल्कि सोने का बना देते, किन्तु ये सब इस संसार के जीवन का सामान है तथा तेरे रब्ब का निर्णय के अनुसार आख़िरत (का सुख) संयमियों के लिए ही विशेष कर दिया गया है।३६। (रुकू ३/९)

وَمَنۡ يَّعۡشُ عَنۡ ذِكۡرِ الرَّحۡمٰنِ نُقَيِّضۡ لَهٗ شَيۡطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيۡنٌ ۝٣٦

और जो कोई रहमान (ख़ुदा) की याद से मुँह मोड़ लेता है हम उस पर शैतान जैसे गुण रखने वाले को नियुक्त कर देते हैं और वह उस का साथी हो जाता है।३७।

وَاِنَّهُمۡ لَيَصُدُّوۡنَهُمۡ عَنِ السَّبِيۡلِ وَيَحۡسَبُوۡنَ اَنَّهُمۡ مُّهۡتَدُوۡنَ ۝٣٧

और वे (शैतान) उन्हें ठीक एवं सीधे रास्ते से रोकते रहते हैं, परन्तु वे फिर भी इस भ्रम में हैं कि वे सत्य-पथ पर चलने वाले हैं।३८।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيۡتَ بَيۡنِىۡ وَبَيۡنَكَ بُعۡدَ الۡمَشۡرِقَيۡنِ فَبِئۡسَ الۡقَرِيۡنُ ۝٣٨

(किन्तु) जब वह हमारे पास आ जाता है तो (सारे भ्रम दूर हो जाते हैं और वह) कहने लगता है काश! मुझ में और (हे शैतान) तुझ में पूर्व-पश्चिम की दूरी होती। अतः (मनुष्य की गवाही से सिद्ध हो गया कि) यह (शैतान) बहुत बुरा साथी है।३९।

وَلَنۡ يَّنۡفَعَكُمُ الۡيَوۡمَ اِذۡ ظَّلَمۡتُمۡ اَنَّكُمۡ فِى الۡعَذَابِ

और (हम उस दिन लोगों से कहेंगे कि) जब तुम अत्याचार कर चुके हो तो यह बात तुम्हें कुछ लाभ नहीं दे सकती, कि तुम

مُشْتَرِكُوْنَ ۝

तथा तुम्हें बहकाने वाले दोनों ही अज़ाब में साझेदार हो ।४०।

اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

क्या तू बहरे को सुना सकता है और अन्धे को मार्ग दिखा सकता है और इसी तरह जो खुली-खुली गुमराही में पड़ा हुआ है (उसे मार्ग दिखा सकता है ?) ।४१।

فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ۝

अतः यदि हम तुझे इस संसार से ले भी जाएँ (अर्थात् मौत दे दें) तो भी हम उन से बदला अवश्य लेंगे ।४२।

اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ۝

या हम तुझे वह चीज़ दिखा देंगे जिस की हम ने उन से प्रतिज्ञा[1] की हुई है । (याद रखें) हम उन पर पूरा-पूरा अधिकार रखते हैं ।४३।

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيْٓ اُوْحِيَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

और तू उस वाणी को दृढ़ता से पकड़ ले जो तेरी ओर वह्य की गई है, क्योंकि तू सम्मार्ग पर है ।४४।

وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْــَٔلُوْنَ ۝

और यह (वाणी) तेरे लिए और तेरी जाति के लोगों के लिए सम्मान व आदर का कारण है और तुम से तुम्हारे कर्मों के सम्बन्ध में अवश्य पूछ-ताछ की जाएगी ।४५।

وَسْــَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا

और हम ने तुझ से पहले जिन रसूलों को भेजा था उन से पूछ[2] ! क्या हम ने (अपनी

1. इन्कार करने वालों पर तेरे जीवन में वह अज़ाब आएँगे जिन का वादा दिया गया है और तेरे देहान्त के बाद भी । दोनों बातों पर अल्लाह अधिकार रखता है ।

2. इस से तात्पर्य यह है कि जो शिक्षा पहले रसूलों को दी गई थी उस के विषय में इन्कार करने वालों से पूछो कि तुम्हारे पास वे शिक्षाएँ मौजूद हैं ? क्या उन में एक से अधिक उपास्यों का उल्लेख है ? यदि ऐसा नहीं तो फिर तुम अपने रसूलों के विरुद्ध ऐसा प्रचार क्यों करते हो ?

مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ﴿۴۶﴾ ع

किताबों में) रह्मान (ख़ुदा) के सिवा दूसरे उपास्यों का भी वर्णन किया था जिन की उपासना की जाती थी ? ।४६। (रुकू ४/१०)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهٖ فَقَالَ اِنِّيْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۷﴾

और हम ने मूसा को फ़िरऔन तथा उस के दरबारियों की ओर अपने निशान दे कर भेजा था और उस ने उन्हें कहा था कि मैं सब जहानों के रब्ब की ओर से रसूल बन कर आया हूँ ।४७।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ﴿۴۸﴾

फिर जब वह उन के पास हमारे निशान ले कर आया तो वे सुनते ही उस की हँसी उड़ाने लगे ।४८।

وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِيَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۴۹﴾

और हम उन्हें जो निशान भी दिखाते थे वह अपने से पहले निशान से बढ़ कर होता था और हम ने उन्हें अज़ाब में ग्रसित कर लिया था ताकि वे (अपने बुरे कर्मों से) लौट जाएँ ।४९।

وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿۵۰﴾

परन्तु वे फिर भी यही कहते जाते थे कि हे जादूगर ! अपने रब्ब के सामने हमारे लिए उन समस्त प्रतिज्ञाओं को पेश करके प्रार्थना कर जो प्रतिज्ञाएँ उस ने तुझ से की हैं। (यदि अज़ाब टल गया) तो हम अवश्य ही हिदायत पा लेंगे ।५०।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿۵۱﴾

फिर हम ने जब उन से अज़ाब टला दिया तो वे तुरन्त ही प्रतिज्ञा भंग करने लग गए ।५१।

وَنَادٰى فِرْعَوْنُ فِيْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِيْ

और फ़िरऔन ने अपनी जाति में यह घोषणा करा दी कि हे मेरी जाति के लोगो ! क्या

مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِيْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٥٢﴾

मिस्र का अनुशासन मेरे अधीन नहीं और (देखो) ये नदियाँ मेरे अधीन बह रही हैं, क्या तुम देखते नहीं ? ।५२।

اَمْ اَنَا خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ مَهِيْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ ﴿٥٣﴾

क्या मैं उस व्यक्ति से जो तुच्छ है और खुल कर बात भी नहीं कर सकता अच्छा हूँ (या वह अच्छा है ?) ।५३।

فَلَوْلَآ اُلْقِيَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ﴿٥٤﴾

(यदि वह अच्छा है) तो उस पर स्वर्ण-कंगन क्यों नहीं उतरे या उस के साथ फरिश्ते क्यों नहीं आए जो (उस की रक्षा के लिए) उस के इर्द-गिर्द एकत्रित हों ? ।५४।

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٥﴾

सो इस प्रकार उस ने अपनी जाति को बहका दिया और उन्हों ने उस की बात मान ली तथा वे लोग अल्लाह की प्रतिज्ञा को भंग करने वाले थे ।५५।

فَلَمَّآ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٦﴾

फिर जब उन्हों ने हमें क्रोध दिलाया तो हम ने उन से बदला लिया और उन सब को डुबो दिया ।५६।

فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ﴿٥٧﴾ ع

और हम ने उन्हें (बीती हुई एक) कहानी बना दिया तथा पीछे आने वालों के लिए शिक्षा प्रद साधन भी बना दिया ।५७। (रुकू ५/११)

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ﴿٥٨﴾

और मर्यम के पुत्र की घटना जब भी (क़ुर्आन में) वर्णन की जाती है तो तेरी जाति इस (बात) पर शोर[1] मचाने लग जाती है ।५८।

1. जब वे मर्यम के पुत्र के पुनः आने का समाचार क़ुर्आन में पढ़ते हैं तो भी शोर मचा देते हैं (शेष पृष्ठ १०८४ पर)

وَقَالُوٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ۚ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

और वह यह भी कहने लग जाती है कि क्या हमारे उपास्य[1] अच्छे हैं अथवा वह (ईसा) अच्छा है? यह बात तेरे सामने केवल झगड़ा करने के उद्देश्य से कहते हैं। वास्तविक बात यह है कि इस जाति के लोगों का स्वभाव ही सत्य के विरुद्ध वाद-विवाद करना है।५९।

اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٦٠﴾

वह (ईसा) तो केवल एक बन्दा था। हम ने उस पर पुरस्कार किया था और उसे इस्राईल की संतान के लिए शिक्षाप्रद साधन बनाया था।६०।

وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِي الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ﴿٦١﴾

और यदि हम चाहते[2] तो तुम में से कुछ लोगों को फ़रिश्ते बना देते जो धरती में तुम्हारे स्थान पर आबाद होते।६१।

(पृष्ठ १०८३ का शेष)

कि क्या वह हमारे उपास्यों से उत्तम है कि हमारे उपास्य तो नरक में फेंके जाते हैं तथा उसे संसार के लिए वापस लाया जाता है? वास्तव में दोनों बातों में आकाश-पाताल का अन्तर है। हज़रत मसीह स्वयं अपने-आप को एक मनुष्य ठहराते हैं। वह एक सदाचारी व्यक्ति थे उन का मुक़ाबिला मुश्रिकों या उन के सरदारों से नहीं हो सकता।

1. 'हमारे उपास्य' से अभीष्ट वे महान् विभूतियाँ हैं जिन्हें वे अल्लाह से बढ़ कर महानता देते हैं, चाहे वे उन के सामने नतमस्तक न भी होते हों।

2. हज़रत मसीह पर फ़रिश्ते उतरे क्योंकि वह आध्यात्मिक रूप में फ़रिश्ता बन गया था। यदि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के या आप के पश्चात् के लोग भी मसीह का स्वरूप बन जाते तो उन पर भी फ़रिश्ते उतरने लग जाते। इस में आश्चर्य की कोई बात नहीं। आधुनिक युग के मुसलमान केवल हठ से ऐसा हो सकने का इन्कार कर रहे हैं।

وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦٢﴾

और वह (क़ुर्आन) अन्तिम घड़ी का ज्ञान[1] प्रदान करता है। अतः तुम उस घड़ी के बारे में सन्देह न करो तथा (हे लोगो!) मेरा अनुसरण करो। यही सीधी राह है।६२।

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٣﴾

हक़ से दूर हट जाने वाला व्यक्ति तुम्हें सीधी राह से न रोके। वह तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है।६३।

وَلَمَّا جَآءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٦٤﴾

और जब ईसा[2] (अपने दूसरे प्रादुर्भाव के समय) खुले-खुले प्रमाणों के साथ आएगा तो कहेगा कि मैं तुम्हारे पास हिक्मत की बातें ले कर आया हूँ और इसलिए आया हूँ कि तुम्हें वे बातें समझा दूँ जिन में तुम मतभेद से काम लेते हो। अतः अल्लाह का संयम धारण करो और मेरा अनुसरण करो।६४।

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦٥﴾

अल्लाह ही मेरा तथा तुम्हारा रब्ब है। अतः उसी की उपासना करो। यही सीधी राह है।६५।

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ

सो यह सुन कर उस के विरोधी गिरोह परस्पर भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें करने

1. 'अन्तिम घड़ी' अर्थात् क़ियामत का ज्ञान प्रदान करने का यह अर्थ है कि संसार में जो बड़ी-बड़ी तबाहियाँ होने वाली हैं उन का उल्लेख पवित्र क़ुर्आन में है। मुसलमानों के प्रारम्भिक तथा अन्तिम पतन का भी और ईसाइयों के प्रारम्भिक तथा अन्तिम सर्वनाश का भी। इसी प्रकार दूसरी महान् जातियों के विनाश का भी उल्लेख है।

2. इस स्थान पर हज़रत ईसा के दूसरी बार आने का वर्णन है, क्योंकि इस आयत से पहले वाली आयत में भी इसी का वृत्तान्त था।

ظَلَمُوْا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿۶۶﴾

लग गए। अतः जिन लोगों ने अत्याचार किया उन के लिए दुःखदायक समय के अज़ाब द्वारा उन का सर्वनाश निश्चित है।६६।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۶۷﴾

वे केवल क़ियामत की प्रतीक्षा कर रहे हैं जिस का अचानक आना निश्चित किया गया है, किन्तु वे इसे नहीं समझते।६७।

اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ ﴿۶۸﴾ ع ۱۲

उस दिन सिवाय संयमियों के बहुत से मित्र एक-दूसरे के शत्रु होंगे।६८। (रुकू ६/१२)

يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿۶۹﴾

(अल्लाह उन से कहेगा कि) हे मेरे बन्दो! आज तुम्हें किसी प्रकार का भय नहीं तथा न किसी विगत त्रुटि के शोक में ग्रसित ही हो सकते हो।६९।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿۷۰﴾

(ये पुरस्कार पाने वाले वे लोग होंगे) जो हमारी आयतों पर ईमान लाए थे और जिन्हों ने आज्ञा पालन करने वालों जैसा जीवन व्यतीत किया था।७०।

اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ ﴿۷۱﴾

(अल्लाह उन से कहेगा) तुम भी और तुम्हारे साथी भी प्रसन्नता से स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ।७१।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ وَفِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۷۲﴾

उन के पास सोने के थाल और कटोरे बार-बार लाए जाएँगे तथा उस स्वर्ग में जो कुछ उन का मन चाहेगा और जो कुछ आँखों को अच्छा लगेगा मौजूद होगा तथा (कहा जाएगा कि) तुम इस में सदैव रहते चले जाओगे।७२।

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

और यह वह स्वर्ग होगा जिस का वारिस तुम्हें तुम्हारे कर्मों के कारण बनाया जाएगा ।७३।

لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝

तुम्हारे लिए उस में बहुत से फल होंगे। तुम उन में से अपनी आवश्यकता के अनुसार खाओगे ।७४।

اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ۝

निस्सन्देह अपराधी लोग नरक में युग-युगान्तर तक पड़े रहेंगे ।७५।

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ۝

उन के अज़ाब में किसी समय कमी नहीं की जाएगी (अर्थात् वह अज़ाब लगातार रहेगा) और वे इस में निराश हो जाएँगे ।७६।

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ۝

और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वे स्वयं ही अपने-आप पर अत्याचार कर रहे थे ।७७।

وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۚ قَالَ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ ۝

और वे पुकारेंगे कि हे मालिक (अर्थात् नरक के अध्यक्ष) तेरे रब्ब को चाहिए कि हमें मौत दे दे। वह कहेगा कि तुम देर तक इस में रहोगे ।७८।

لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ۝

(अल्लाह कहता है कि) हम तुम्हारे पास सत्य ले कर आए थे, परन्तु तुम में से बहुत से लोग सत्य से घृणा करते थे ।७९।

اَمْ اَبْرَمُوْٓا اَمْرًا فَاِنَّا

क्या उन लोगों[1] ने (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर) आक्रमण करने का कोई निर्णय

1. यह कितना बड़ा निशान है कि यह सूरः मक्की है। इस में एक तो यह बताया गया है कि मक्का के इन्कार करने वाले लोग हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के विरुद्ध एक भयंकर षड्यन्त्र रचेंगे तथा दूसरा यह कि वे उस में असफल रहेंगे और हम उन का सर्वनाश कर देंगे। ये दोनों भविष्यवाणियाँ पूरी हो गईं। क़ुर्आन के विरोधियों को इस से इन्कार करने का अब कोई स्थान नहीं।

مُبْرِمُوْنَ ﴿٨٠﴾	कर लिया है ? (यदि ऐसा है) तो हम ने भी उन के सर्वनाश का निर्णय कर लिया है ।८०।
اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَ نَجْوٰىهُمْ ۭ بَلٰى وَ رُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٨١﴾	क्या वे इस भ्रम में हैं कि हम उन की गुप्त बातों और गुप्त परामर्शों को नहीं सुनते। यह बात नहीं अपितु हमारे रसूल[1] उन के पहलू में बैठे लिख रहे हैं ।८१।
قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ڰ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٢﴾	तू कह दे कि यदि रहमान (ख़ुदा) का कोई पुत्र[2] होता तो सब से पहले मैं उस की उपासना करता ।८२ ।
سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٨٣﴾	आसमानों तथा ज़मीन ,एवं अर्श का रब्ब (शिर्क के सब अवगुणों से) पवित्र है जो मुश्रिक वर्णन करते हैं ।८३।
فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَ يَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٨٤﴾	अतः (हे रसूल !) तू उन्हें छोड़ दे कि वे कीचड़ उछालते रहें तथा उस समय तक खेल-कूद में लगे रहें कि वे अपने अज़ाब के उस समय को पा लें जिस की उन से प्रतिज्ञा की गई थी ।८४।

1. कुछ भाष्यकारों ने इस का अभिप्राय फ़रिश्ते समझा है, किन्तु सूरः नूर रुकू 3 आयत 25 से विदित होता है कि केवल फ़रिश्ते ही नहीं, मनुष्य का अपना शरीर भी प्रत्येक कर्म के लिए एक निशान रखता है और वह निशान क़ियामत के दिन उन के अपराधों को प्रकट कर देगा। अतः यहाँ रसूल से अभिप्राय मनुष्य के अपने अंग प्रति अंग भी हो सकते हैं। वर्तमान युग के डाक्टरों की खोज से भी प्रतीत होता है कि मनुष्य के वीर्य्य का हर-एक कीटाणु अपने पुरखों के कुछ आचरण चिन्ह अपने भीतर रखता है। जब कभी वह चिन्ह अपना प्रभुत्व जमा लेता है तो फिर उस से पैदा होने वाली सन्तान उसी आचरण को प्रकट करती है। मानों एक व्यक्ति के न केवल कर्म ही सुरक्षित रहते हैं अपितु कई पीढ़ियों तक के संस्कार सुरक्षित रहते हैं तथा वीर्य्य द्वारा वे चिन्ह सन्तान में चलते-चले जाते हैं।

2. मैं अल्लाह से प्यार करने वाला हूँ और उस का आज्ञाकारी हूँ, परन्तु बेटा होने में न तो कोई युक्ति उस की समर्थक है तथा न कोई आकाशीय प्रमाण ही। अतः मैं पुत्र के विचार का हर तरह खण्डन करता हूँ।

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٨٥﴾

और वह (अल्लाह) ही आसमानों तथा ज़मीन में अकेला उपास्य है और वह बड़ी हिक्मतों वाला और बहुत जानने वाला है।८५।

وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٦﴾

और बड़ी बरकत प्रदान करने वाला है वह सत्ता जो आसमानों तथा ज़मीन और जो कुछ उन के बीच है उन सब के साम्राज्य का स्वामी है तथा क़ियामत का ज्ञान केवल उसी को हासिल है और उसी की ओर तुम्हें लौटाया जाएगा।८६।

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٨٧﴾

और जिन्हें ये लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे सिफ़ारिश करने के अधिकारी नहीं, परन्तु सिफ़ारिश का हक़ केवल उसे ही है जो सच की गवाही[1] दे और वे (इन्कार करने वाले इस वास्तविकता को) भली-भाँति समझ सकते हैं।८७।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٨٨﴾

और यदि तू उन से पूछे कि उन्हें किस ने पैदा किया है? तो वे अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर वे किस ओर बहका कर ले जाए जा रहे हैं!।८८।

وَقِيلِهِ يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٩﴾

और हमें इस रसूल की इस बात की सौगन्ध! जब उस ने कहा था कि हे मेरे रब्ब! यह जाति तो ऐसी है कि किसी भी सच्चाई पर ईमान नहीं लाती।८९।

1. अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम। इस आयत ने बता दिया कि सिफ़ारिश केवल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की सुनी जाएगी, क्योंकि आप के शत्रुओं ने भी आप का नाम सच्चा और अमीन रखा था और बनी-इस्राईल के कुछ नबियों ने भी आप को सच्चा कह कर पुकारा था। (देखिए यशायह 9:6)

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَ قُلْ سَلٰمٌ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٠﴾

(हम ने उसे उत्तर दिया था कि) उन्हें छोड़ दे और केवल यह प्रार्थना किया कर कि तुम्हारे ऊपर अल्लाह की शान्ति उतरे तो इस का परिणाम यह निकलेगा कि वे (सत्य को) जानने लग जाएँगे।९०। (रुकू ७/१३)
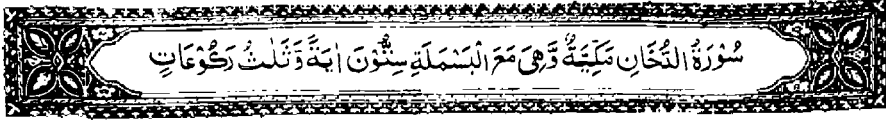
सूरः अल्-दुख़ान

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की साठ आयतें एवं तीन रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

मैं अल्लाह् का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

حٰمٓ ۝

हमीद, मजीद। (स्तुति वाले और महिमा-शाली अल्लाह् की ओर से यह सूरः उतारी हुई है)।२।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝

हम (इस सच्चाई के प्रमाण में खोल-खोल कर) बताने वाली किताब की शपथ लेते हैं (अर्थात् इसे गवाही के रूप में प्रस्तुत करते हैं)।३।

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ۝

हम ने इस किताब को बरकत वाली एक रात में उतारा है, क्योंकि हम पथ-भ्रष्टों को सदा ही सावधान करते चले आए हैं।४।

فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ

उस रात[1] में सभी हिक्मत वाली बातें

1. वह रात जिस में नबी का प्रादुर्भाव होता है और वह नबी अपनी शिक्षाएँ संसार वालों को सुनाता है। वह रात बड़ी पुनीत एवं बरकत वाली होती है। उस समय सारे संसार में बिगाड़ पैदा हो चुका होता है, किन्तु वास्तव में उस समय अल्लाह् की इच्छा सच्चा ज्ञान उतारने की होती है और इस (शेष पृष्ठ १०९२ पर)

حَكِيْمٍ ۝

वर्णन[1] की जाती हैं ।५।

اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ۝

ह्र-एक वह बात[2] जिस का हम ने अपने पास से आदेश दिया है, हम ऐसे अवसर पर सदैव ही रसूलों को भेजा करते हैं ।६।

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

यह तेरे रब्ब की ओर से रहमत[3] के रूप में होता है । वह बहुत प्रार्थनाएँ सुनने वाला और दिलों के भेद जानने वाला है ।७।

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝

(ऐसा होना) उस रब्ब की ओर से है जो आसमानों तथा ज़मीन और जो कुछ उन के बीच है उन सब का रब्ब है शर्त यह है कि तुम्हारा विचार विश्वास करने का हो ।८।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝

उस के सिवा कोई उपास्य नहीं । वह जीवित भी करता है तथा मारता भी है वह तुम्हारा भी रब्ब है तथा तुम्हारे पूर्वजों का भी रब्ब था ।९।

(पृष्ठ १०९१ का शेष)

कारण वह साधारण सी दिखाई देने वाली रात सब से अच्छी रात होती है और यह कोई नई बात नहीं अपितु हज़रत आदम के समय से यह परम्परा चली आ रही है एवं क़ुर्आन मजीद की यह आयत सिद्ध करती है कि क़ियामत तक चलती चली जाएगी ।

1. आयत के इस भाग में स्पष्ट कर दिया गया है कि यह रात ऐसी है जिस में नबी संसार को ईश्वरीय ज्ञान प्रदान करते हैं और वह ज्ञान तत्व पूर्ण होता है ।

2. इस में यह बताया गया है कि यह शिक्षा वास्तव में हमारी ही ओर से होती है और हम ही उसे उतारने वाले होते हैं चाहे लोग इस का कितना ही इन्कार करें ।

3. इस शिक्षा का उतारना मानव-समाज के किसी हक़ के कारण नहीं होता अपितु केवल अल्लाह की कृपा से ही होता है । वह अपने भक्तों की प्रार्थनाओं को सुनता है जो समय के बिगाड़ के कारण की जाती है तथा वह उस सर्वनाश की नींव को देखता है जो लोग अपने बुरे कर्मों से रख रहे होते हैं ।

بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ ⑩

किन्तु वे भ्रम में पड़े हुए हैं और खेल में लगे हुए हैं।१०।

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ⑪

अतः तू उस दिन की प्रतीक्षा कर जिस दिन आकाश पर खुला-खुला धुआँ[1] प्रकट होगा।११।

يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑫

जो सब लोगों पर छा जाएगा। यह पीड़ादायक अज़ाब होगा।१२।

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ⑬

(लोग उस को देख कर कहने लगेंगे कि) हे हमारे रब्ब ! यह अज़ाब हम से हटा दे। हम ईमान ले आते हैं।१३।

أَنَّى لَهُمُ الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ⑭

उस दिन उन्हें ईमान लाने की शक्ति कहाँ से मिलेगी, हालाँकि उन के पास तथ्य स्पष्ट करने वाला एक रसूल आ चुका है (जिसे उन्हों ने नहीं माना)।१४।

ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ⑮

और उस से मुंह मोड़ कर चले गए और कहने लगे कि यह किसी का सिखाया हुआ पागल है।१५।

إِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيلًا إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ⑯

हम थोड़े समय के लिए अज़ाब दूर कर देंगे, परन्तु तुम फिर वही (करतूतें) करने लग जाओगे।१६।

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى إِنَّا

जिस दिन हम तुम्हें एक बड़ी पकड़ में ले लेंगे (तो तुम पर खुल जाएगा कि) हम बदला

1. आयत के शब्द बताते हैं कि यहाँ परमाणु-बम और हाइड्रोजन बमों का वर्णन है जिन के फेंके जाने से सारा वायु-मण्डल धुएं से भर जाता है। इस समय वैज्ञानिक इन बमों को क़ियामत का लक्षण भी बता रहे हैं।

مُنۡتَقِمُوۡنَ ۝

लेने का सामर्थ्य रखते हैं।१७।

وَلَقَدۡ فَتَنَّا قَبۡلَهُمۡ قَوۡمَ فِرۡعَوۡنَ وَجَآءَهُمۡ رَسُوۡلٌ كَرِيۡمٌ ۝

और हम ने इन से पहले फ़िरऔन की जाति की भी परीक्षा की थी तथा उन के पास एक आदरणीय रसूल आया था।१८।

اَنۡ اَدُّوۡۤا اِلَىَّ عِبَادَ اللّٰهِ‌ؕ اِنِّىۡ لَـكُمۡ رَسُوۡلٌ اَمِيۡنٌ ۝

(और उस ने उन्हें कहा था कि) अल्लाह के बन्दों को मेरे सपुर्द कर दो। मैं तुम्हारी ओर एक अमानतदार रसूल बना कर भेजा गया हूँ।१९।

وَّاَنۡ لَّا تَعۡلُوۡا عَلَى اللّٰهِ‌ۚ اِنِّىۡۤ اٰتِيۡكُمۡ بِسُلۡطٰنٍ مُّبِيۡنٍ‌ۚ ۝

और इस आदेश के साथ भेजा गया हूँ कि अल्लाह की बातों में अत्याचार से काम न लो (तथा मेरी लाई हुई युक्तियों पर विचार करो)। निस्सन्देह मैं तुम्हारी ओर एक खुला-खुला प्रमाण लाने वाला हूँ।२०।

وَاِنِّىۡ عُذۡتُ بِرَبِّىۡ وَرَبِّكُمۡ اَنۡ تَرۡجُمُوۡنِ‌ ۝

और मैं तुम्हारे रब्ब तथा अपने रब्ब से शरण माँगता हूँ कि कहीं तुम मुझे उतावलेपन में संगसार न कर दो।२१।

وَاِنۡ لَّمۡ تُؤۡمِنُوۡا لِىۡ فَاعۡتَزِلُوۡنِ ۝

और यदि तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो (इतना तो करो कि) मुझे एक दम अकेला छोड़ दो।२२।

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنَّ هٰٓؤُلَاۤءِ قَوۡمٌ مُّجۡرِمُوۡنَ ۝

इस पर मूसा ने अपने रब्ब को पुकारा और कहा कि यह जाति तो अपराधिनी है। (मुझ पर इस के ईमान लाने की सम्भावना नहीं)।२३।

فَاَسۡرِ بِعِبَادِىۡ لَيۡلًا اِنَّكُمۡ

तब (अल्लाह ने) कहा कि तू मेरे बन्दों को रातों-रात निकाल कर ले जा और इस बात

مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٢٣﴾

से सावधान रहो कि फ़िरऔन की जाति तुम्हारा पीछा करेगी ।२४।

وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۭ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٤﴾

और समुद्र को टीलों पर से पार करते हुए पीछे छोड़[1] जा। वह (फ़िरऔन का) सेना-दल तो डूब कर ही रहेगा ।२५।

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٢٥﴾

उन्हों ने (अर्थात् फ़िरऔन की जाति ने) अपने पीछे बहुत से बाग़ ।२६।

وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٢٦﴾

और स्रोत तथा खेतियाँ और अत्यन्त सुखदायी स्थान ।२७।

وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿٢٧﴾

और ऐसे निवास-स्थान छोड़े जिन में वे प्रसन्नता पूर्वक रहा करते थे ।२८।

كَذٰلِكَ ۣ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿٢٨﴾

ऐसा ही हुआ और हम ने उन समस्त पदार्थों का वारिस एक दूसरी[2] जाति को बना दिया ।२९।

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاۗءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿٢٩﴾

अतः आसमानों तथा ज़मीन ने उन पर विलाप[3] नहीं किया और उन्हें ढील नहीं दी गई ।३०। (रुकू १/१४)

---

1. अर्थात् टीलों पर से चलते-चलते जहाँ से कि पानी पीछे हट चुका हो समुद्र को पार कर जाग्रो।

2. इस से अभीप्ट बनी-इस्राईल हैं, जिन्हें कुछ समयोपरांत बड़ा सत्कार एवं गौरव मिला तथा उन्हों ने एक बार मिस्र को पद-दलित कर दिया था।

फ़िरऔन और उस की जाति की सन्तान भी इस से अभीप्ट है। यद्यपि उन्हों ने फ़िरऔन जैसा गौरव तो प्राप्त नहीं किया, परन्तु वे बड़ी हद तक मिस्र देश पर कुशलता पूर्वक राज्य करते रहे।

3. अर्थात् न तो आकाशीय लोगों को कुछ दुःख हुआ तथा न धरती के रहने वालों को ही।

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ مِنَ ٱلْعَذَابِ ٱلْمُهِينِ ﴿٣٠﴾

और हम ने बनी-इस्राईल को फ़िरऔन की ओर से दिए जाने वाले अपमान-जनक अज़ाब से छुटकारा दिलाया था ।३१।

مِن فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ عَالِيًا مِّنَ ٱلْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾

और वह (फ़िरऔन) बड़ा अभिमानी और हद से बढ़ा हुआ था ।३२।

وَلَقَدِ ٱخْتَرْنَـٰهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى ٱلْعَـٰلَمِينَ ﴿٣٢﴾

और हम ने बनी-इस्राईल को अपने समय की समस्त जातियों के आधार पर प्रधानता दी थी ।३३।

وَءَاتَيْنَـٰهُم مِّنَ ٱلْـَٔايَـٰتِ مَا فِيهِ بَلَـٰٓؤٌا۟ مُّبِينٌ ﴿٣٣﴾

और हम ने उन के पास ऐसे निशानों में से एक निशान भेजा था जिस में उन की कठिन परीक्षा थी ।३४।

إِنَّ هَـٰٓؤُلَآءِ لَيَقُولُونَ ﴿٣٤﴾

ये (मक्का के) लोग कहते हैं ।३५।

إِنْ هِىَ إِلَّا مَوْتَتُنَا ٱلْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ﴿٣٥﴾

हम केवल पहली बार ही मरेंगे तथा हमें पुन: जीवित कर के खड़ा नहीं किया जाएगा ।३६।

فَأْتُوا۟ بِـَٔابَآئِنَآ إِن كُنتُمْ صَـٰدِقِينَ ﴿٣٦﴾

अत: यदि तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों को पुन: इस संसार में ला कर दिखा दो ।३७।

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ أَهْلَكْنَـٰهُمْ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾

क्या वे उत्तम हैं या तुब्बा की जाति के लोग और जो लोग तुब्बा से पहले थे (भौतिक शक्तियों में उन से बढ़ कर थे) हम ने उन सब का सर्वनाश कर दिया। निस्सन्देह वे लोग अपराधी थे ।३८।

وَمَا خَلَقْنَا ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَـٰعِبِينَ ﴿٣٨﴾

और आसमान तथा ज़मीन और जो कुछ इन के बीच है हम ने इन्हें खेलते हुए पैदा नहीं किया ।३९।

مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾

हम ने उन्हें सदा-सर्वदा क़ायम रहने वाले उद्देश्य के लिए पैदा कि था, परन्तु उन लोगों में से बहुत से नहीं जानते ।४०।

اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٠﴾

निर्णय का दिन उन सब का निश्चित समय है ।४१।

يَوْمَ لَا يُغْنِىْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾

जिस दिन कोई मित्र किसी दूसरे मित्र की आवश्यकता को पूरा न कर सकेगा तथा न उन में से किसी की सहायता की जाएगी ।४२।

اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٤٢﴾

केवल (उसी की सहायता की जाएगी) जिस पर अल्लाह् दया करेगा। वह ग़ालिब और अनन्त कृपा करने वाला है ।४३। (रुकू २/१५)

اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ﴿٤٣﴾

निस्सन्देह थूहड़[1] का वृक्ष ।४४।

طَعَامُ الْاَثِيْمِ ﴿٤٤﴾

पापियों का भोजन है ।४५।

كَالْمُهْلِ يَغْلِىْ فِى الْبُطُوْنِ ﴿٤٥﴾

पीप के समान बदमज़ा जो पिघलाए हुए तांबे की भाँति पेटों में खौलेगा ।४६।

كَغَلْىِ الْحَمِيْمِ ﴿٤٦﴾

जिस प्रकार गर्म पानी खौलता है ।४७।

خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ اِلٰى سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٤٧﴾

(और हम फ़रिश्तों से कहेंगे कि) इस पापी को पकड़ लो और इसे नरक के बीच तक घसीटते हुए ले जाओ ।४८।

ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيْمِ ﴿٤٨﴾

फिर इस के सिर पर बहुत सा गर्म पानी डाल दो जिस से उसे अत्यन्त गर्मी का दुःख पहुँचेगा ।४९।

---

1. 'थुहड़' शब्द क़ुर्आन में घृणित वस्तुओं के लिए प्रयुक्त होता है। (देखिए मुफ़दात पृष्ठ 212)

ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ﴿۵۰﴾	(और हम उस व्यक्ति से कहेंगे कि) तू इस अज़ाब का स्वाद चख! तू (अपने विचार में) सामर्थ्यवान्[1] और आदर वाला था ।५०।
اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ تَمْتَرُوْنَ ﴿۵۱﴾	(फिर कहेंगे) यही तो है जिस के विषय में तुम सन्देह किया करते थे ।५१।
اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ﴿۵۲﴾	निस्सन्देह संयमी लोग एक शान्तिमय स्थान में रहेंगे ।५२।
فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿۵۳﴾	अर्थात् स्वर्गों और स्रोतों वाले स्थानों में ।५३।
يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿۵۴﴾	वे बारीक तथा मोटे रेशम पहनेंगे और एक-दूसरे के आमने-सामने बैठे होंगे ।५४।
كَذٰلِكَ ۗ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿۵۵﴾	(ऐसा ही होगा) और हम उन्हें साथी के रूप में काली और मोटी-मोटी आँखों वाली स्त्रियाँ देंगे ।५५।
يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ﴿۵۶﴾	वे उस स्वर्ग में हर प्रकार के फल मंगवाएँगे और शान्तिमय जीवन व्यतीत करेंगे ।५६।
لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَوَقٰهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿۵۷﴾	उन्हें उन (स्वर्गों) में कोई मौत नहीं आएगी, सिवाय पहली मौत के (जो आख़िरत के जीवन से पहले आ चुकी है) और अल्लाह उन्हें नरक के अज़ाब से बचा लेगा ।५७।
فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۵۸﴾	यह भी तेरे रब्ब की ओर से कृपा के रूप में होगा (न कि लोगों के किसी हक़ के रूप में) और यह एक महान् सफलता है ।५८।

1. यह व्यंगात्मक कथन है और इस से अभिप्राय यह है कि तू अपने-आप को अभिमान वश ऐसा ही समझता था ।

فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٩﴾

अतः सुन ले कि हम ने इस क़ुर्आन को सरल बना कर तेरी भाषा में उतारा है ताकि ये लोग (अरब वाले) इस से शिक्षा प्राप्त कर सकें।५९।

فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع

अतः तू भी परिणाम की प्रतीक्षा कर और वे भी प्रतीक्षा करेंगे।६०। (रुकू ३/१६)
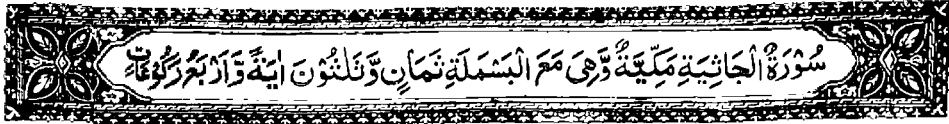
सूर: अल्-जासिय:

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह् सहित
इस की अड़तीस आयतें एवं चार रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह् का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

حٰمٓ ②

ह़मीद, मजीद। (स्तुति वाला और महिमा-शाली अल्लाह् इस सूर: का उतारने वाला है)।२।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ③

प्रभुत्वशाली एवं तत्त्वदर्शी अल्लाह् की ओर से यह किताब उतारी गई है।३।

اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ④

ईमान लाने वालों के लिए आसमानों तथा ज़मीन में बड़े-बड़े निशान हैं।४।

وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ⑤

और इसी प्रकार तुम्हारे पैदा करने में तथा उस में कि जो वह (अल्लाह्) जीवधारियों में से (धरती पर) फैलाता है, विश्वास करने वाली जाती के लिए निशान हैं।५।

وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ

और रात एवं दिन के आगे-पीछे आने-जाने में भी और जो अल्लाह् ने रोज़ी का आधार (अर्थात् पानी) बादलों से उतारा है, फिर

الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٥

उस से भूमि को उस की मौत के पश्चात् जीवित किया है (उस में भी) और वायु को इधर-उधर चलाने में भी बुद्धिमान जाति के लिए निशान हैं।६।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦

ये सब अल्लाह के निशान हैं जिन्हें हम तेरे सामने पूरी सच्चाई के साथ वर्णन करते हैं। फिर (बताओ तो) अल्लाह और उस के निशानों को छोड़ कर तुम किस बात पर ईमान लाओगे ?।७।

وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝٨

हर-एक झूठे और पापी के लिए अज़ाब निश्चित है।८।

يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٩

जो व्यक्ति अल्लाह की उन आयतों को सुनता है जो उस के सामने पढ़ी जाती हैं, परन्तु फिर भी अभिमान के साथ अपनी ही सब बातों पर हठ करता रहता है, मानों उस ने अल्लाह की आयतें सुनी ही नहीं। अतः ऐसे लोगों को दुःखदायक अज़ाब का समाचार दो।९।

وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا ۨاتَّخَذَهَا هُزُوًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝١٠

और जब वह व्यक्ति हमारी आयतों में से किसी का समाचार सुनता है तो उस से हँसी करने लग जाता है। ऐसे लोगों को अपमान-जनक अज़ाब मिलेगा।१०।

مِنْ وَّرَاۗىِٕهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَاۗءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١١

उन के आगे नरक है और उन के कर्म उन्हें कुछ भी लाभ नहीं पहुँचाएँगे तथा न वे उपास्य ही (लाभ पहुँचा सकेंगे) जिन्हें उन्हों ने अल्लाह के सिवा अपना रखा है और उन्हें एक बड़ा अज़ाब पहुँचेगा।११।

هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ﴿١١﴾	यह एक सच्ची हिदायत है और उन्हों ने अपने रब्ब की आयतों का इन्कार किया है उन्हें मूर्ति-पूजा के कारण पीड़ादायक अज़ाब मिलेगा।१२। (रुकू १/१७)
اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾	अल्लाह वही है जिस ने समुद्र को तुम्हारी सेवा में लगा रखा है ताकि उस के आदेश से उस में नौकाएँ चलें और ताकि तुम (उन के द्वारा) उस की कृपा को ढूंढ़ो और ताकि तुम धन्यवाद करो।१३।
وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾	और जो कुछ आसमानों तथा ज़मीन में है उस ने सब का सब तुम्हारी सेवा में लगा रखा है। इस में सोच-विचार करने वाली जाति के लोगों के लिए बड़े-बड़े निशान हैं।१४।
قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾	तू मोमिनों से कह दे कि जो लोग अल्लाह के दण्ड से नहीं डरते उन्हें क्षमा कर दें। इस का परिणाम यह होगा कि अल्लाह स्वयं ऐसी जाति को उस के कर्मों का फल देगा।१५।
مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۫ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٥﴾	जो कोई ईमान के अनुकूल कर्म करता है उस का लाभ उसी को मिलता है तथा जो कोई बुरे कर्म करता है उस की हानि भी उसी को पहुँचती है और फिर तुम अपने रब्ब की ओर लौटा कर ले जाए जाओगे।१६।
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾	और हम ने बनी-इस्राईल को किताब, हुकूमत तथा नुबुव्वत दी थी और पवित्र पदार्थों में से रोज़ी प्रदान की थी तथा उस समय के लोगों पर उन्हें प्रधानता दे रखी थी।१७।

وَاٰتَیۡنٰھُمۡ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الۡاَمۡرِ ۚ فَمَا اخۡتَلَفُوۡۤا اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَھُمُ الۡعِلۡمُ ۙ بَغۡیًۢا بَیۡنَھُمۡ ؕ اِنَّ رَبَّکَ یَقۡضِیۡ بَیۡنَھُمۡ یَوۡمَ الۡقِیٰمَۃِ فِیۡمَا کَانُوۡا فِیۡہِ یَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿۱۸﴾

और हम ने उन्हें खुली-खुली शरीअत दी थी, परन्तु उन्हों ने उसी समय उस के बारे में मतभेद किया जब उन के पास पूर्ण ज्ञान (क़ुर्आन) आ गया। यह मतभेद उन की पारस्परिक सरकशी के कारण था। तेरा रब्ब उन में क़ियामत के दिन उन की मतभेद पूर्ण बातों में निर्णय करेगा।१८।

ثُمَّ جَعَلۡنٰکَ عَلٰی شَرِیۡعَۃٍ مِّنَ الۡاَمۡرِ فَاتَّبِعۡھَا وَ لَا تَتَّبِعۡ اَھۡوَآءَ الَّذِیۡنَ لَا یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۹﴾

और हम ने तुझे शरीअत के एक मार्ग[1] पर क़ायम किया है। अतः तू उस का अनुसरण कर और उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न कर जो ज्ञान नहीं रखते।१९।

اِنَّھُمۡ لَنۡ یُّغۡنُوۡا عَنۡکَ مِنَ اللّٰہِ شَیۡئًا ؕ وَ اِنَّ الظّٰلِمِیۡنَ بَعۡضُھُمۡ اَوۡلِیَآءُ بَعۡضٍ ۚ وَ اللّٰہُ وَلِیُّ الۡمُتَّقِیۡنَ ﴿۲۰﴾

वे अल्लाह के मुक़ाबिले में तुझे कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकते और अत्याचारी लोग परस्पर एक-दूसरे को शरण देने वाले हैं तथा अल्लाह संयमियों को शरण देने वाला है।२०।

ھٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَ ھُدًی وَّ رَحۡمَۃٌ لِّقَوۡمٍ یُّوۡقِنُوۡنَ ﴿۲۱﴾

ये (शिक्षाएँ) लोगों के लिए बुद्धिसंगत प्रमाण हैं तथा विश्वास[2] रखने वाली जाति के लोगों के लिए हिदायत और दयालुता का कारण हैं।२१।

اَمۡ حَسِبَ الَّذِیۡنَ اجۡتَرَحُوا السَّیِّاٰتِ اَنۡ نَّجۡعَلَھُمۡ

क्या जिन लोगों ने बुरे कर्म किए हैं उन का यह विचार कि हम उन्हें मोमिनों एवं ईमान

1. शरीअत की विभिन्न विधियाँ हैं जैसे तौरात प्रतिशोध एवं प्रतिकार लेने पर बल देती है और इन्जील क्षमा करने एवं दयालुता का व्यवहार करने पर, परन्तु इस्लाम इन दोनों के बीच-बीच सुधार का मार्ग अपनाता है अर्थात् सहृदयता के समय सहृदयता तथा कठोरता के समय कठोर व्यवहार करने की शिक्षा हज़रत मूसा और हज़रत मसीह की शिक्षाओं से भिन्न है।

2. यदि मानव-इतिहास पर विचार किया जाए तो विदित होगा कि अत्याचारी सदा ही अत्याचारियों की सहायता करते आए है और अल्लाह सदैव संयमियों की सहायता करता आया है तथा उन्हें शरण देता आया है।

كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۭ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٢٢﴾

के अनुकूल कर्म करने वालों जैसा आदर देंगे यहाँ तक कि उन दोनों का जीवन-मरण एक बराबर[2] हो जाएगा ? वे बहुत बुरा निर्णय करते हैं ।२२। (रुकू २/१८)

وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٣﴾

और अल्लाह ने आसमानों तथा ज़मीन को एक अटल नियम के अनुसार पैदा किया है तथा इस का परिणाम यह निकलेगा कि प्रत्येक व्यक्ति को उस के कर्म के अनुसार फल मिलेगा तथा उन में से किसी पर भी अत्याचार नहीं किया जाएगा ।२३।

اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ۭ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

क्या तू ने उस व्यक्ति की परिस्थिति पर विचार किया है जिस ने अपनी कामवासनाओं को ही अपना उपास्य बना लिया है तथा अल्लाह ने अपने पूर्ण ज्ञान के आधार पर उसे पथभ्रष्ट ठहराया है और उस के कानों और उस के दिल पर मुहर लगा दी है और उस की आँखों पर पर्दा डाल दिया है। अतः अब अल्लाह के (इस कार्य के) बाद कौन उसे हिदायत दे सकेगा ? क्या तुम शिक्षा प्राप्त नहीं करते ? ।२४।

وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٢٥﴾

और वे कहते हैं कि हमारे लिए केवल यही सांसारिक जीवन निश्चित है। यही जीवन व्यतीत करते हुए हम मरेंगे तथा इसी का आनन्द लेते हुए जीवित रहेंगे तथा ज़माना (काल) ही हमें (अपने प्रभाव से) विनष्ट करता है, किन्तु उन्हें इस बात का कोई वास्तविक ज्ञान नहीं । वे केवल ढकोसले कर रहे हैं ।२५।

---

2. अर्थात् जीवन में भी तथा मरण में भी उन से एक जैसा व्यवहार किया जाएगा।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَن قَالُوا ائْتُوا بِآبَائِنَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो उन का इस के सिवा कोई उत्तर नहीं होता कि वे यह कह देते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों को जीवित कर के ले आओ।२६।

قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

तू कह दे कि अल्लाह ही तुम्हें जीवित करता है और फिर वही तुम्हें मृत्यु देगा, फिर वही तुम्हें क़ियामत के दिन तक एकत्रित[1] करता चला जाएगा और इस में कोई सन्देह नहीं, परन्तु बहुत से लोगों को इस का ज्ञान नहीं।२७। (रुकू ३/१९)

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَخْسَرُ الْمُبْطِلُونَ ۝

और आसमानों तथा ज़मीन का साम्राज्य अल्लाह ही का है तथा जिस समय निश्चित घड़ी आ जाएगी उस समय झूठ बोलने वाले बड़ा घाटा पाने वाले होंगे।२८।

وَتَرَىٰ كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَىٰ إِلَىٰ كِتَابِهَا الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

और तू प्रत्येक सम्प्रदाय को देखेगा कि वह धरती पर घुटनों के बल गिरा हुआ होगा। हर-एक सम्प्रदाय को अपनी शरीअत[2] की ओर बुलाया जाएगा। उस दिन तुम्हें तुम्हारे कर्मों के अनुसार प्रतिफल दिया जाएगा।२९।

---

1. इस का यह अर्थ है कि मृत्यु तथा जीवन अल्लाह के ही अधिकार में हैं और वही मरने के पश्चात् आत्माओं को क़ियामत तक जीवित रखता चला जाएगा, परन्तु यह बातें आँखों से ओझल होती है। अत: बहुत से लोग इसे नहीं जानते।

2. हर-एक जाति का निर्णय सब से पहले तो उस की अपनी शरीअत अर्थात् धर्म-विधान के अनुसार होगा, क्योंकि वह दूसरी शरीअत को तो झूठ समझते थे, परन्तु क्या वे अपनी शरीअत की शिक्षाओं पर पूरा-पूरा चलते थे? वर्तमान युग पर दृष्टि डाली जाए तो इस सिद्धान्त के उपलक्ष्य न तो मुसलमान मुक्ति पा सकते हैं तथा न कोइ दूसरी जाति, क्योंकि दूसरी शरीअतों को तो छोड़िए, वे अपनी ही शरीअत पर नहीं चलते।

هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۭ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٣٠

और हम कहेंगे देखो) यह हमारी किताब[1] है जो तुम्हारे विरुद्ध सच्ची गवाही दे रही है। तुम जो कुछ कर्म किया करते थे हम उन्हें लिखते जाते थे।३०।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝٣١

अतः जो लोग मोमिन थे और जिन्हों ने शुभ कर्म किए थे उन्हें उन का रब्ब अपनी रहमत (की छत्र-छाया) के तले रखेगा और यही खुली-खुली सफलता है।३१।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۣ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝٣٢

और जो लोग इन्कार करने वाले थे (उन से कहा जाएगा कि) क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़ कर सुनाई नहीं जाती थीं? किन्तु फिर भी तुम अभिमान करते थे और तुम अपराधी जाति के लोगों में सम्मिलित हो गए थे।३२।

وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ۝٣٣

और जब उन से यह कहा जाता है कि अल्लाह का बचन तो सच्चा है और संसार का अन्तिम विनाश अवश्य होने वाला है, उस में कोई सन्देह नहीं तो इस पर वे कह देते हैं कि हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या वस्तु है। हमें तो उस के विषय में केवल भ्रम सा है और हमें उस पर कोई विश्वास नहीं।३३।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٣٤

और उस समय उन पर उन के कर्मों के दोष खुल जाएँगे तथा वही बातें उन्हें घेरे में ले लेंगी जिन की वे हंसी[2] उड़ाया करते थे।३४।

---

1. अर्थात् मनुष्य के कर्मों का सूची-पत्र।
2. जिन बातों का वे इन्कार किया करते थे वही बातें सच-मुच उन की आँखों के सामने आ जाएंगी।

وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنْسٰكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَأْوٰكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِينَ ۝٣٥

और उन से कहा जाएगा कि आज हम ने तुम्हें उसी प्रकार छोड़ दिया है जिस प्रकार तुम ने इस दिन के मिलने के विचार को छोड़ दिया था और तुम्हारा ठिकाना आग होगा और कोई भी तुम्हारी सहायता करने वाला नहीं होगा।३५।

ذٰلِكُمْ بِأَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝٣٦

यह इसलिए होगा कि तुम ने अल्लाह की आयतों को हँसी का निशाना बना लिया था और सांसारिक-जीवन ने तुम्हें धोखा दे दिया था। अतः वे आज न तो उस अज़ाब से निकाले जाएंगे तथा न उन की ओर से अल्लाह को प्रसन्न करने के प्रयत्न स्वीकार किए जाएंगे।३६।

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٣٧

और अल्लाह जो आसमानों तथा ज़मीन का रब्ब है और समस्त लोकों का भी रब्ब है। सब स्तुतियाँ उसी के लिए हैं।३७।

وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣٨

और आसमानों तथा ज़मीन में सब बड़ाई उसी की है और वह ग़ालिब और हिक्मत वाला है।३८। (रुकू ४/२०)
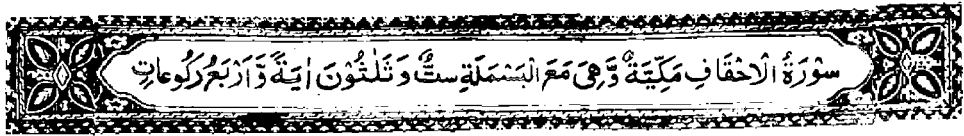
सूरः अल्-अहक़ाफ़

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की छत्तीस आयतें एवं चार रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

حٰمٓ ②

हमीद, मजीद। (स्तुति वाला और गौरवशाली अल्लाह इस सूरः का उतारने वाला है)।२।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ③

प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी अल्लाह की ओर से इस किताब को उतारा गया है।३।

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ④

(और वह कहता है कि) हम ने आसमानों तथा ज़मीन और जो कुछ इन के बीच है उसे अकारण पैदा नहीं किया और न कोई समय निश्चित करने के बिना उसे पैदा किया है तथा वे लोग जो अल्लाह की ओर से डराये जाने और सावधान किए जाने का इन्कार करते हैं वे ही इस (किताब) से मुँह मोड़ते हैं।४।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ

तू कह दे कि मुझे बताओ तो सही कि जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो उन्हों ने धरती की किन-किन चीज़ों को पैदा किया

اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٥﴾

है या उन का आसमान के पैदा करने में कुछ हाथ है ? यदि तुम इस बात में सच्चे हो तो इस से पहले वाली किसी किताब की युक्ति प्रस्तुत करो अथवा (यदि कोई किताब ऐसी नहीं और) तुम सच्चे हो तो बुद्धि संगत कोई तर्क ही पेश करो ? ।५।

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٦﴾

और उस व्यक्ति से बढ़ कर दूसरा कौन पथभ्रष्ट हो सकता है जो अल्लाह के सिवा उन सत्ताओं को पुकारता है जो क़ियामत तक उस की किसी प्रार्थना को स्वीकार नहीं कर सकतीं, अपितु वे उन की प्रार्थनाओं से बिल्कुल बे-ख़बर हैं ।६।

وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿٧﴾

और जब लोगों को पुनः जीवित करके उठाया जाएगा तो वे (झूठे उपास्य[1]) उन के शत्रु होंगे तथा उन की उपासना से इन्कार करेंगे ।७।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٨﴾

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो इन्कार करने वाले लोग सच्चाई की बात सुन कर कहते हैं कि यह तो एक खुला-खुला जादू है (फिर हम इसे कैसे मान लें) ।८।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ

क्या वे ये कहते हैं कि वह क़ुर्आन इस ने अपने पास से गढ़ लिया है ? तू उन से कह दे कि यदि मैं ने उसे अपने पास से गढ़ लिया है तो (मैं अल्लाह के दण्ड का भागी हूँ और) तुम मुझे अल्लाह के अज़ाब के किसी हिस्से से बचा नहीं सकते। वह उन बातों को

1. जिन उपास्यों का पहली आयत में उल्लेख हो चुका है।

كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۗ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

भली-भाँति जानता है जो तुम निरर्थक ही करते रहते हो। वह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह के रूप में काफ़ी है और वह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।९।

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ۗ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

तू कह दे कि मैं संसार में कोई पहला रसूल तो नहीं आया हूँ (मुझ से पहले भी कई और रसूल हो चुके हैं) और मैं नहीं जानता कि अल्लाह मेरे साथ क्या व्यवहार करेगे और न यह कि तुम्हारे साथ क्या व्यवहार होगा ? मैं तो केवल उस वह्य का अनुसरण करता हूँ जो मुझ पर उतरी है और मैं तो केवल खुला-खुला सचेत करने वाला हूँ।१०।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ ع

तू कह दे कि मुझे बताओ तो सही कि यदि मेरी वह्य अल्लाह की ओर से हुई और तुम ने उस का इन्कार कर दिया इस बात के होते हुए भी कि बनी-इस्राईल में से एक गवाह (अर्थात् मूसा) गवाही दे चुका है कि उस जैसा एक रसूल[1] प्रकट होगा (तो क्या यह बात आश्चर्य-जनक नहीं होगी कि जो पहले हो चुका था) वह तो ईमान ले आया, परन्तु तुम लोग (जिन के समय में उस का प्रादुर्भाव हुआ) अभिमान से काम ले रहे हो ? अल्लाह अत्याचारियों को कभी हिदायत की राह नहीं दिखाता।११। (रुकू १/१)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا

और इन्कार करने वाले लोग मोमिनों से कहते है कि यदि क़ुर्आन में कोई अच्छी शिक्षा होती

1. इस में तौरात की व्यवस्था नामक किताब 18:18 वाली उस भविष्यवाणी की ओर संकेत किया गया है कि "मै उन के लिए उन के भाइयों में से तेरे जैसा एक नबी भेजूंगा"।

سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ۭ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ⑪

तो ये मोमिन हम से पहले उस पर ईमान न लाते, क्योंकि इन (इन्कार करने वालों) पर उस की सत्यता स्पष्ट नहीं हुई। वे (असफलता के कारण क्रोध से यही बात) कहेंगे कि यह तो एक पुराना झूठ है, (जो पहले लोग भी अल्लाह के बारे में बोलते आए हैं) ।१२।

وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ۭ وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ڰ وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ⑫

हालाँकि इस से पहले मूसा की किताब आ चुकी है जो पथ-प्रदर्शक भी थी और वह रहमत भी थी तथा यह (क़ुर्आन) एक ऐसी किताब है जो अपने से पहले वाली किताबों की सत्यता सिद्ध[1] करती है और अरबी भाषा में है. ताकि जिन्हों ने अत्याचार किया उन्हें डराए तथा जो लोग अल्लाह की आज्ञा के अनुसार काम करते हैं उन्हें शुभ-समाचार सुनाए ।१३।

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ⑬

(अर्थात्) वे लोग जो यह कहते हैं कि अल्लाह ही हमारा रब्ब है फिर वे इस पर दृढ़ता से क़ायम हो जाते हैं, सो ऐसे लोगों को न तो भविष्य की किसी बात का कोई भय होगा तथा न ही विगत समय की किसी त्रुटि की चिन्ता होगी ।१४।

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ⑭

ये लोग स्वर्ग में जाने वाले हैं। वे अपने पिछले कर्मों के फलस्वरूप उस में रहते चले जाएंगे ।१५।

1. यसायह 21:13.17 में अरब देश में एक नबी के प्रादुर्भाव होने के बारे में भविष्यवाणी की गई है। उस में बताया गया है कि उस नबी को अपने देश से हिजरत करनी पड़ेगी और अपने विरोधियों से युद्ध भी करना पड़ेगा जिस में वह विजयी होगा तथा उस के शत्रु अपमानित होंगे।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

और हम ने मनुष्य को अपने माता-पिता से उपकार करने की शिक्षा दी थी, क्योंकि उस की माता ने कष्ट सहन कर के उसे अपने गर्भ में उठाए रखा था और उसे पीड़ा के साथ जन्म दिया था और उसे गर्भ में उठाने और उस के दूध छुड़ाने पर तीस[1] महीने लगे थे, फिर जब मनुष्य अपनी पूर्ण यौवनावस्था अर्थात् चालीस वर्ष को पहुँच गया तो उस ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! मुझे इस का सामर्थ्य दे कि मैं तेरी इस निअमत का धन्यवाद करूँ जो तू ने मुझ पर तथा मेरे माता-पिता पर की है तथा (इस का भी सामर्थ्य दे कि) मैं ऐसे अच्छे कर्म करूँ जिन्हें तू पसन्द करे और मेरी सन्तान का भी सुधार कर। मैं तेरी ओर झुकता हूँ और तेरे आज्ञाकारी बन्दों में से हूँ।१६।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۝

(जो लोग ऐसा करेंगे) वही लोग ऐसे होंगे जिन के अच्छे कर्मों को स्वीकार करेंगे तथा उन के अपराधों को क्षमा कर देंगे। ये लोग स्वर्ग में जाएँगे। यह एक सच्चा वचन है जो अनादि काल में मोमिनों से किया जा रहा है।१७।

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَكُمَا أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ

और एक ऐसा व्यक्ति (भी होता है) जो अपने माता-पिता से कहता है कि तुम पर अफ़सोस ! क्या तुम मुझे पक्के तौर पर यह समाचार देते हो कि मुझे जीवित कर के धरती से निकाला जाएगा ? हालाँकि इस से पहले अनेक शताब्दियाँ बीत चुकी हैं (और

1. देखिए सूरः लुक़्मान आयत 15 ।

مِنْ قَبْلِيْ ۚ وَهُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ اللّٰهَ وَيْلَكَ اٰمِنْ ۖ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ⑱

कोई व्यक्ति भी जीवित हो कर लौटा नहीं) तथा वे दोनों माता-पिता अल्लाह से फ़रियाद करते हुए कहते हैं कि बच्चे ! तुझ पर अफ़सोस ! अल्लाह पर ईमान ला। अल्लाह का वादा अवश्य पूरा हो कर रहेगा। इस पर वह उन्हें उत्तर में कहता है कि यह तो पहले लोगों की केवल कहानियाँ हैं।१८।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ⑲

ऐसे ही लोग हैं जिन पर उन सम्प्रदायों में से जो उन से पहले हो चुके हैं, चाहे वे जिन्नों[1] में से थे अथवा मानव जाति में से थे अज़ाब की भविष्यवाणी पूरी हो गई। वे लोग घाटा पाने वाले थे।१९।

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ⑳

और उन को उन के कर्मों के अनुसार दर्जे मिलेंगे और यह इसलिए होगा कि अल्लाह उन के कर्मों का पूरा-पूरा प्रतिफल प्रदान करेगा और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा।२०।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ۭ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ㉑ ع

और जिस दिन इन्कार करने वालों को नरक के सामने पेश किया जाएगा (तो कहा जाएगा) कि तुम अपने सारे पुरस्कार सांसारिक-जीवन में प्राप्त कर चुके हो तथा सांसारिक-जीवन से जितना लाभ उठाना था उठा चुके हो। अतः आज तुम्हें धरती में अधिकार के विना अभिमान करने एवं अवज्ञा के कारण अपमान-जनक दण्ड दिया जाएगा।२१। (रुकू २/२)

---

1. विवरण के लिए देखिए सूरः सबा टिप्पणी आयत 15।

وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ ۭ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖٓ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٢١﴾

और (हे रसूल !) आद के भाई (हूद) को भी याद कर, जब उस ने अपनी जाति को अह़क़ाफ़[1] में डराया था और उस (हूद) से पहले भी कई रसूल हो चुके थे तथा उस के बाद भी प्रकट हुए तथा उन में से प्रत्येक यह शिक्षा देता था कि अल्लाह के सिवा किसी की उपासना न करो। मैं तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन[2] के अज़ाब से डरता हूँ ।२२।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٢﴾

उन लोगों ने कहा कि क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि हमें अपने उपास्यों से हटा दे ? यदि इसी तरह है और तू सच्चा है तो जिस (चीज़) की हम से प्रतिज्ञा करता है उसे हमारे पास ले आ ।२३।

قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ڮ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٣﴾

(हूद ने) कहा कि वास्तविक ज्ञान तो अल्लाह के पास है और मैं तो तुम तक केवल वह शिक्षा पहुँचाता हूँ जिस के पहुँचाने की ज़िम्मेदारी अल्लाह ने मुझ पर डाली है, परन्तु मैं देखता हूँ कि तुम एक मूर्ख जाति हो ।२४।

---

1. मूल शब्द 'अह़क़ाफ़' का अर्थ है—रेत के ऊँचे-ऊँचे टीले। यह नाम उस जाति के परिणाम के कारण रखा गया है क्योंकि पहले वह हरी-भरी भूमि थी, परन्तु क़ुर्आन के कथनानुसार उन पर एक भयंकर आँधी चली, जो लगातार सात दिन और सात रात चलती रही जिस से उन का सर्वनाश हो गया। (सूरः अल्हाक़ा रुकू 1) और उस आँधी के कारण उन के देश में रेत के अनेक टीले बन गए जिन के नीचे वह जाति दब गई।

2. भयंकर दण्ड का थोड़ा सा समय भी लम्बे युग जैसा प्रतीत होता है। इस लिए क़ुर्आन-मजीद में अज़ाब के दिन को प्रायः बड़ा दिन कहा गया है, क्योंकि अज़ाब का दिन समाप्त होता दिखाई नहीं देता।

فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ۚ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ۚ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾

अतः जब उस की जाति ने उस अज़ाब को एक बादल के रूप में अपनी वादियों की ओर बढ़ते देखा तो कहने लगे कि यह ऐसा बादल है जो हम पर वर्षा करेगा (हम ने कहा) नहीं, यह वह (अज़ाब) है जिस के शीघ्र आने की तुम माँग किया करते थे। यह एक हवा है जिस में दुःखदायी अज़ाब छिपा हुआ है।२५।

تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍۢ بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٦﴾

यह हवा अपने रब्ब के आदेश से प्रत्येक वस्तु को नष्ट करती चली जाएगी। अतः परिणाम यह निकला कि उन का प्रातःकाल ऐसा हुआ कि उन के केवल घर ही दिखाई देते थे (सारी जाति रेत में दब गई थी) हम अपराध करने वाली जाति को इसी प्रकार बदला दिया करते हैं।२६।

وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ۖ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ اَبْصَارُهُمْ وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٢٧﴾ ع

और हम ने उन्हें ऐसी शक्ति प्रदान की थी जो तुम्हें नहीं दी गई और हम ने उन्हें तुम्हारी तरह कान, आँखें और दिल भी प्रदान किए थे। (परन्तु उन्हों ने भी तुम्हारी तरह इन से लाभ न उठाया)। अतः उन के कानों, आँखों और दिलों ने उन्हें कुछ भी लाभ न पहुँचाया, क्योंकि वे अल्लाह की आयतों का इन्कार करने पर हठ करते थे और वे जिस अज़ाब की हँसी उड़ाया करते थे उसी ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया।२७। (रुकू ३/३)

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا

और हम उन बस्तियों का भी सर्वनाश कर चुके हैं जो तुम्हारे आस-पास हैं और हम ने निशानों को खोल-खोल कर वर्णन कर

الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾

दिया है ताकि (इन निशानों से सम्बन्ध रखने वाले) अपनी हठ छोड़ दें।२८।

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا
اٰلِهَةً ۭ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٩﴾

फिर उन लोगों ने उन की क्यों सहायता न की जिन्हें उन्हों ने अल्लाह के सिवा इसलिए उपास्य बना रखा था कि वे उन्हें अल्लाह तक पहुँचा दें बलिक वे अवसर आने पर उन की आँखों से ओझल हो गए और यह उन के अल्लाह पर झूठ गढ़ने तथा स्वयं झूठ बोलने का फल है।२९।

وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ
فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى
قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٣٠﴾

और जब हम तेरी ओर जिन्नों[1] में से कुछ लोगों को लौटा कर ले आए जो क़ुर्आन सुनने की इच्छा रखते थे, सो जब वे (क़ुर्आन पढ़ने की सभा में) पहुँचे, तो उन्हों ने आपस में कहा चुप हो जाओ, फिर जब क़ुर्आन का पढा जाना समाप्त हुआ तो वे अपनी जाति की ओर वापस लौट गए और जा कर इस्लाम का प्रचार प्रारम्भ कर दिया।३०।

قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى
طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣١﴾

और अपनी जाति से कहा कि हे हमारी जाति के लोगो! हम ने एक ऐसी किताब सुनी है जो मूसा के बाद उतारी गई है तथा जो किताबें उस से पहले उतरी हैं उन्हें सत्य सिद्ध करती है और सत्य एवं सीधी राह दिखाती है।३१।

---

1. इस आयत में 'जिन्न' शब्द दृष्टाँत के रूप में यहूदियों के एक प्रतिनिधि मण्डल के सम्बन्ध में बोला गया है जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का समाचार सुन कर गुप्त रूप से आप से मिलने आया और ये लोग एराक़ देश के नसीबीन नामक स्थान के निवासी थे। चूँकि वे लोग दूर से आए थे और गुप्त रूप में हज़रत से मिले ताकि उन की जाति और अरब के लोग उन के शत्रु न बन जाएँ। (फ़तहुल्बयान प्रति 8 पृष्ठ 355)

يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَ اٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٣٢

हे हमारी जाति के लोगो ! अल्लाह् की ओर से नई किताब लाने वाले व्यक्ति की आवाज़ को स्वीकार करो एवं उस पर ईमान लाओ। परिणाम स्वरूप अल्लाह् तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा तथा तुम्हें आने वाले एक दुःखदायक अज़ाब से सुरक्षित रखेगा।३२।

وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ۚ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٣٣

और जो व्यक्ति अल्लाह् की ओर बुलाने वाले की आवाज़ को नहीं सुनता वह इस (ईश-भक्त) को संसार में पराजित नहीं कर सकता और अल्लाह् के सिवा उसे शरण देने वाला कोई भी नहीं। ऐसे लोग खुले रूप में पथभ्रष्ट होते हैं।३३।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِيَ الْمَوْتٰى ۚ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٣٤

क्या वे देखते नहीं कि वह अल्लाह् जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है और वह उन्हें पैदा करने में थका नहीं, वह इस बात का सामर्थ्य रखता है कि वह मुर्दों को जीवित करे। वह अपने प्रत्येक इरादे को पूरा करने में सामर्थ्यवान् है।३४।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ۭ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝٣٥

और जिस दिन इन्कार करने वाले लोगों को (नरक की) आग के सामने खड़ा किया जाएगा और कहा जाएगा कि क्या यह सत्य नहीं ? वे कहेंगे कि हाँ, हाँ ! हमें अपने रब्ब की सौगन्ध (यह बिल्कुल सत्य है)। तब वह (अल्लाह्) कहेगा कि अच्छा तुम अपने इन्कार के कारण अज़ाब चखो।३५।

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا

अतः (हे रसूल !) तू भी (उसी प्रकार) धैर्य धारण कर जिस प्रकार तुझ से पहले दृढ़ संकल्प रखने वाले रसूल धैर्य धारण कर चुके

تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ۭ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ۭ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝

हैं और उन के लिए यह प्रार्थना न कर कि उन पर जल्दी अज़ाब आ जाए। जिस दिन वे अपने उस अज़ाब को देखेंगे जिस का वादा दिया गया है तो उन की दशा ऐसी होगी कि मानों वे इस लोक में थोड़ा सा समय ही रहे हैं। यह बात (उन इन्कार करने वालों के लिए) केवल एक उपदेश के रूप में कही गई है तथा इन्कार करने वाली जाति के लोगों के सिवा किसी का विनाश नहीं किया जा सकता।३६। (रुकू ४/४)
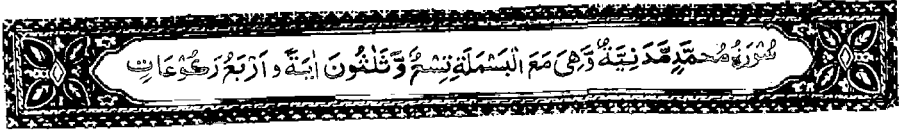
सूर: मुहम्मद

[यह सूर: मदनी है और बिसमिल्लाह सहित
इस की उन्तालीस आयतें एवं चार रुकू हैं ।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ②

वे लोग जिन्हों ने इन्कार किया तथा अल्लाह की राह से रोका, अल्लाह ने उन के कर्मों को नष्ट कर दिया ।२।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ③

और जो ईमान ले आए तथा उन्हों ने ईमान के अनुकूल कर्म किए और जो (अल्लाह के रसूल) मुहम्मद पर उतरा उस पर ईमान ले आए और वही उन के रब्ब की ओर से सत्य है । अल्लाह उन की बुराइयों को ढाँप देगा और उन की दशा को सुधार देगा ।३।

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ④

यह इसलिए किया गया कि जिन्हों ने इन्कार किया था उन्हों ने झूठ का अनुसरण किया था और जो ईमान लाए थे वे अपने रब्ब की ओर से आने वाले सत्य के पीछे चले थे । अल्लाह इसी प्रकार लोगों के सामने उन की वास्तविक दशा बताता है ।४।

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ۭ

अत: (चाहिए कि) जब तुम इन्कार करने वालों से लड़ाई के मैदान में मुठभेड़ करो तो

حَتّٰىٓ اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ۚ ذٰلِكَ ۛ وَلَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا۟ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ۗ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝

गर्दनें[1] काटो यहाँ तक कि जब तुम अच्छी तरह उन का लहू बहा चुको तो पूरी शक्ति से उन के बन्धन कसो। फिर या तो परोपकार कर के उन्हें (छोड़ दो) या युद्ध का हरजाना ले कर (छोड़ दो) यहाँ तक कि लड़ाई अपने अस्त्र-शस्त्र रख दे (अर्थात् समाप्त हो जाए)। यह सब कुछ परिस्थितियों के अनुसार हुआ है और यदि अल्लाह चाहता तो वह स्वयं ही उन से बदला ले लेता, किन्तु उस ने चाहा कि तुम्हारी एक-दूसरे के द्वारा परीक्षा करे। जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए अल्लाह उन के कर्मों को कदापि अकारथ नहीं जाने देगा।५।

سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝

वह उन्हें अवश्य ही सफलता की ओर ले जाएगा और उन की दशा सुधार देगा।६।

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝

और उन्हें उस स्वर्ग में प्रविष्ट करेगा जो उस ने उन्हें पहले से बता रखा है।७।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝

हे मोमिनो! यदि तुम अल्लाह की सहायता[2] करोगे तो वह तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे पैरों को जमा देगा।८।

1. कुछ लोग इन आयतों पर आपत्ति करते हैं, परन्तु वास्तविक बात यह है कि आज भी युद्ध होते हैं और प्रत्येक युद्ध में विपक्षी सैनिक शत्रु की गर्दन ही काटता है। यदि यह कहा जाए कि फिर इस आज्ञा का वर्णन ही क्यों किया गया? तो इस का उत्तर यह है कि इस्लाम की शान्ति पूर्ण शिक्षा के कारण इस बात की आशंका थी कि यदि यह आयत न उतरती तो मुसलमान युद्ध में भी शत्रु को क़त्ल करना हराम समझते।

2. अर्थात् अल्लाह के धर्म की सहायता करो, क्योंकि अल्लाह स्वयं किसी की सहायता का मुहताज नहीं।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ⑨

और जो इन्कार करने वाले हैं उन पर खेद है तथा अल्लाह़ उन के कर्मों को नष्ट कर देगा ।९।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ⑩

क्योंकि उन्हों ने अल्लाह़ की उतारी हुई वाणी को पसन्द नहीं किया है । अत: अल्लाह़ ने भी उन के कर्मों को अकारथ कर दिया ।१०।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ⑪

क्या उन्हों ने धरती में चल-फिर कर नहीं देखा कि जो लोग उन से पहले गुज़र चुके हैं उन का परिणाम क्या हुआ ? अल्लाह़ ने उन पर कड़ा अज़ाब उतारा था तथा (आज-कल के) इन्कार करने वाले लोगों की दशा भी उन्हीं जैसी होगी ।११।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ⑫

यह इसलिए होगा कि अल्लाह़ मोमिनों का सहायक है और इन्कार करने वालों का कोई सहायक नहीं ।१२। (रुकू १/५)

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ⑬

अल्लाह़ मोमिनों और ईमान के अनुकूल कर्म करने वालों को ऐसे बाग़ों में प्रविष्ट करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी तथा जिन्हों ने इन्कार किया है वे कुछ सांसारिक लाभ प्राप्त करेंगे । वे इस प्रकार खाए-पीएँगे जिस प्रकार चौपाए खाते-पीते हैं और उन का ठिकाना नरक होगा ।१३।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْٓ اَخْرَجَتْكَ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ⑭

और बहुत सी बस्तियाँ ऐसी थीं जो तेरी इस बस्ती से जिस ने तुझे निकाल दिया है अधिक शक्तिशाली थीं तथापि हम ने उन्हें नष्ट कर दिया तथा उन का कोई भी सहायक न बन सका ।१४।

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ⑮

क्या वह व्यक्ति जो अपने रब्ब की ओर से खुले-खुले प्रमाण पर क़ायम रहता हो उन के बराबर हो सकता है जिन के बुरे कर्म उन्हें शोभायमान करके दिखाए गए हों और जो अपनी ही मनोकामनाओं के पीछे चलते हों ? ।१५।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۖ فِيْهَآ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ⑯

जिन स्वर्गों की संयमियों से प्रतिज्ञा की गई है उन में ऐसे पानी की नहरें होंगी जिस में सड़ायँध नहीं होगी और ऐसे दूध की नहरें होंगी जिस का स्वाद कदापि नहीं बदलेगा और शराब की ऐसी नहरें होंगी जो पीने वालों को स्वादिष्ट लगेंगी और स्वच्छ एवं शुद्ध मधु की नहरें भी होंगी और उन्हें उन स्वर्गों में प्रत्येक प्रकार के फल मिलेंगे तथा अपने रब्ब की ओर से क्षमा भी मिलेगी। (क्या ये स्वर्ग-वासी) उन लोगों जैसे हो सकते हैं जो चिरकाल तक नरक की आग में रहने के पात्र ठहराए गए हैं और जिन्हें ऐसा गर्म पानी पिलाया जाएगा जो उन की अंतड़ियों को काट डालेगा ? ।१६।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۟ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ⑰

और उन में से कुछ ऐसे भी हैं जो देखने में तो मानों तेरी ओर कान लगाते हैं, परन्तु जब वे तेरे पास से उठ कर चले जाते हैं तो उन लोगों से कहते हैं जिन्हें ज्ञान दिया गया है कि इस (रसूल) ने अभी-अभी क्या कहा था ? वे लोग ऐसे हैं जिन के दिलों पर अल्लाह ने मुहर कर दी है और वे अपनी मनोकामनाओं के पीछे चल पड़े हैं ।१७।

وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ

और वे लोग जो कि हिदायत पाते हैं अल्लाह उन्हें हिदायत में और भी बढ़ाता जाता है

تَقْوٰىهُمْ ﴿١٨﴾

तथा उन्हें उन की परिस्थिति के अनुसार संयम प्रदान करता है।१८।

فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿١٩﴾

अतः वे तो केवल अन्तिम निर्णय की घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह उन के पास अचानक आ जाए। सो उस के लक्षण तो प्रकट हो चुके हैं और जब उस की वास्तविकता उन के सामने आ जाएगी तो (बताएँ) उस समय उन्हें कौन सी वस्तु लाभ देगी ?।१९।

فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿٢٠﴾

और जान ले कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं और तेरे सम्बन्ध में (तेरे विरोधियों ने) जो पाप किए हैं उन के लिए क्षमा माँगता रह तथा मोमिन पुरुषों एवं मोमिन स्त्रियों के लिए भी क्षमा की प्रार्थना करता रह कि अल्लाह उन की त्रुटियों को क्षमा कर दे और अल्लाह तुम्हारे इधर-उधर चलने-फिरने और किसी स्थान पर ठहरने को भली-भाँति जानता है।२०। (रुकू २/६)

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ

और मोमिन कहते हैं कि क्यों (इस पर) कोई ऐसी सूरः[1] नहीं उतरती (जिस में युद्ध का आदेश हो)। अतः जब कोई ऐसे मज़बूत (आदेश वाली) सूरः उतरती है और उस में युद्ध का वर्णन होता है तो तू उन लोगों को देखता है जिन के दिलों में रोग है, वे तेरी ओर ऐसे व्यक्ति की भाँति देखते हैं जिस पर

1. मोमिनों को शरीअत के अनुदेश अपनाने की इतनी उत्सुकता होती है कि वे प्रतीक्षा करते रहते हैं कि अल्लाह का कोई आदेश उतरे तो वे उस का तुरन्त पालन करें, परन्तु मुनाफ़िक़ों की यह दशा होती है कि जब बलिदान होने का कोई आदेश उतरता है तो मानों उन्हें मौत आ जाती है।

عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَأَوْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٠﴾

मौत की मूर्च्छा[1] छाई हो। सो उन के लिए (अल्लाह की ओर से) सर्वनाश निश्चित है।२१।

طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾

(वास्तव में यह होना चाहिए था कि वे ऐसा कहते कि) हमारा काम तो आज्ञा-पालन करना एवं लोगों को नेक बातें बताना है। फिर जब बात पक्की हो जाती (अर्थात् लड़ाई छिड़ जाती) तो यदि वे अल्लाह के सामने सच्चे बनते (अर्थात् जो आज्ञापालन की प्रतिज्ञा की थी उसे पूरी करते) तो यह उन के लिए अच्छा होता।२२।

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِن تَوَلَّيْتُمْ أَن تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾

सो क्या यह बात सम्भव[2] नहीं कि यदि तुम मुँह मोड़ लो तो (फिर भी) धरती में उपद्रव फैलाने का कारण बन जाओ तथा रिश्ते-नाते को तोड़ दो।२३।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمَىٰ أَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾

ये ही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने फटकार डाली है और उन को बहरा कर दिया है तथा उन की आँखों की ज्योति नष्ट कर दी है।२४।

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾

क्या वे क़ुर्आन पर विचार नहीं करते ? क्या उन के दिलों पर ऐसे ताले हैं जो उन के अपने मन[3] की उपज हैं ?।२५।

---

1. अर्थात् ऐसी मूर्च्छा जो मृत्यु के समय आती है जिस में आँखें फटी की फटी रह जाती हैं।

2. क्या तुम लोग देखते नहीं कि इस्लामी युद्ध उपद्रव नहीं फैलाते। यदि ये युद्ध न हों और नि:सहाय लोगों की रक्षा न की जाए तो उपद्रव एवं अशान्ति फैलती है। अत: कोई मोमिन ऐसे हिक्मत से भरे हुए युद्धों से घबरा नहीं सकता।

3. अर्थात् अल्लाह ने वे ताले नहीं लगाए अपितु वे उन के बुरे कर्मों के कारण उन के दिलों पर लगे हैं।

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِم مِّن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٦﴾

वे लोग जो हिदायत के खुल जाने पर विमुख हो गए, शैतान ने उन्हें उन के कर्म सुन्दर कर के दिखलाए हैं और उन को (झूठी) आशाएँ दिलाई हैं।२६।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٧﴾

यह इसलिए हुआ कि वे उन लोगों को कह रहे हैं जो अल्लाह की शिक्षा को पसंद नहीं करते कि हम तुम्हारी कुछ बातों[1] का अनुसरण करेंगे और अल्लाह उन के भेदों को जानता है।२७।

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٨﴾

सो उस समय क्या दशा होगी जब कि फ़रिश्ते उन की जान निकाल रहे होंगे और उन के मुँहों तथा पीठों पर कोड़े लगा रहे होंगे ?।२८।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٩﴾ ع

यह इसलिए होगा कि जिस बात को अल्लाह ने पसंद नहीं किया वे उस के पीछे चल पड़े तथा अल्लाह की प्रसन्नता (की प्राप्ती) को बुरा समझा। अतः अल्लाह ने भी उन के कर्म अकारथ कर दिए।२९। (रुकू ३/७)

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَن لَّن يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٣٠﴾

क्या वे लोग जिन के दिलों में रोग है यह समझते हैं कि अल्लाह उन के दिलों की ईर्ष्या-द्वेष को कभी प्रकट नहीं करेगा ?।३०।

وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُم بِسِيمَاهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ

और यदि हम चाहें तो तुझ पर उन की वास्तविकता खोल दें और तू उन के चेहरों से उन्हें पहचान ले तथा (अब भी) तू उन्हें

1. अभिप्राय यह है कि इस्लाम के मुक़ाबिले में हम एक सीमा तक तुम्हारा साथ देंगे। हाँ ! यदि फँस ही गए तो विवशता है।

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ۝

उन की बात-चीत के ढंग से पहचान लेता है और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को जानता है।३१।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَ الصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا۟ اَخْبَارَكُمْ ۝

और हम अवश्य ही तुम्हारी परीक्षा लेंगे उस समय तक कि हम तुम में से अल्लाह की राह में जिहाद करने वालों तथा धैर्य धारण करने वालों को जान[1] लें और हम तुम्हारे आन्तरिक बातों की अवश्य परीक्षा लेंगे।३२।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ شَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ۝

और जिन लोगों ने इन्कार किया है और (लोगों को) अल्लाह की राह से रोकते हैं तथा हिदायत के खुल जाने के बाद रसूल से मतभेद करते हैं, ये लोग अल्लाह को कुछ भी हानि नहीं पहुँचाएंगे बल्कि वह (अल्लाह) उन के कर्मों को अकारथ कर देगा।३३।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْۤا اَعْمَالَكُمْ ۝

हे ईमान वालो ! अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करो तथा अपने कर्मों को विनष्ट न करो।३४।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۝

निस्सन्देह जिन्हों ने इन्कार किया है और लोगों को अल्लाह की राह से रोका है फिर वे उसी दशा में मर भी गए हैं कि वे इन्कार करने वालों में से ही थे तो अल्लाह उन्हें कभी क्षमा नहीं करेगा।३५।

فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى السَّلْمِ ۖۗ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖۗ

अतः हे मोमिनो ! आलसी मत बनो जिस

1. अर्थात् ऐसे लोगों को प्रकट कर दें।

وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٦﴾

के फलस्वरूप समझौते[1] की ओर बुलाना प्रारम्भ कर दो, अन्ततः तुम ही विजयी रहोगे और अल्लाह तुम्हारे साथ है तथा वह तुम्हारे कर्मों में कभी कमी नहीं आने देगा।३६।

اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ ۭ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔــلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ﴿٣٧﴾

यह सांसारिक जीवन खेल-कूद और बे-परवाही का सामान है और यदि तुम ईमान लाओ और संयम को अपनाओ तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारा प्रतिफल प्रदान करेगा और वह तुम्हारे धन तुम से नहीं माँगता।३७।

اِنْ يَّسْـَٔــلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿٣٨﴾

यदि वह तुम से तुम्हारी दौलत माँगे और इस पर तुम से हठ करे तो तुम कंजूसी से काम ले सकते हो, परन्तु वह (अल्लाह) अवश्य तुम्हारे दिलों से ईर्ष्या-द्वेष निकाल देगा।३८।

هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَاۗءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَاۗءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ﴿٣٩﴾

सुनो! तुम वे लोग हो जिन्हें इसलिए बुलाया गया है कि अल्लाह की राह में ख़र्च करो, किन्तु तुम में से कुछ ऐसे होते हैं जो कंजूसी से काम लेते हैं और जो भी कंजूसी से काम ले वह अपनी जान के बारे में ही कंजूसी से काम लेता है अन्यथा अल्लाह तो किसी चीज़ का मुहताज नहीं है, परन्तु तुम ही मुहताज हो और यदि तुम विमुख हो जाओ तो वह तुम्हारे स्थान पर एक और जाति बदल कर ले आएगा और वे लोग तुम्हारी तरह (आलसी) नहीं होंगे।३९। (रुकू ४/८)

1. इस्लाम सन्धि और समझौते की शिक्षा तो देता है, परन्तु इस बात से रोकता है कि डरपोक बन कर सन्धि की जाए।

सूर: अल्-फ़तह

[यह सूर: मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की तीस आयतें एवं चार रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ②

हम ने तुझे एक खुली-खुली विजय प्रदान की है।२।

لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ③

जिस का परिणाम[1] यह होगा कि अल्लाह तेरे सम्बन्ध में किए गए उन पापों को ढाँप देगा जो पहले हो चुके हैं और उन्हें भी जो अब तक नहीं हुए (किन्तु भविष्य में होने की सम्भावना है) उन्हें भी ढाँप देगा तथा तुझ पर अपनी निअमत पूरी करेगा और तुझे सीधी राह दिखाएगा।३।

---

1. यह सूर: हुदैबिय: की सन्धि के सम्बन्ध में है। इस में बताया गया है कि मक्का की विजय से पहले एक विजय और आने वाली है अर्थात् हुदैबिय: की सन्धि। जिस में अरब के बहुत से ख़ानदान हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से समझौता करेंगे, तो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को चाहिए कि उस समय सहनशीलता से काम लें और अरब लोग जो-जो पाप पहले कर चुके हैं उन के लिए भी अल्लाह से क्षमा माँगे तथा उन पापों के लिए भी जो हुदैबिय: की सन्धि और मक्का विजय के बीच के समय में होने वाले हैं अन्यथा यह अभिप्राय नहीं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने कोई पाप किया था।

(शेष पृष्ठ ११२९ पर)

وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ۝

और अल्लाह् तेरी भव्यपूर्ण सहायता करेगा ।४।

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ۭ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝

वह (अल्लाह) ही है जिस ने मोमिनों के दिलों पर सन्तुष्टी उतारी ताकि उन्हें जो ईमान पहले प्राप्त था उस के साथ और ईमान भी प्राप्त हो जाए। अल्लाह् के सेना दल आसमानों में भी तथा ज़मीन में भी हैं और अल्लाह् बहुत जानने वाला एवं बहुत हिक्मत वाला है ।५।

لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝

(मोमिनों का ईमान बढ़ाना) इस कारण होगा कि वह (अल्लाह) मोमिन पुरुषों तथा मोमिन स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करे जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। वे उन में सदा-सर्वदा रहते चले जाएँगे और ताकि वह (अल्लाह) उन के पापों[1] को मिटा दे और अल्लाह् के निकट यह बड़ी सफलता है ।६।

وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّاۗنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۭ عَلَيْهِمْ دَاۗىِٕرَةُ

और ताकि मुनाफ़िक़ पुरुषों एवं मुनाफ़िक़ स्त्रियों और मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) पुरुषों तथा मुश्रिक स्त्रियों को कड़ा अज़ाब[2] दे जो

(पृष्ठ ११२८ का शेष)

जहाँ-जहाँ भी 'ज़म्ब' शब्द प्रयोग हुआ है विजय के अवसर पर ही हुआ है। सो हर-एक समझ सकता है कि ज़म्ब से तात्पर्य आप का किया हुआ कोई पाप नहीं अपितु आप के बारे में अरब के ख़ानदानों अथवा इन्कार करने वालों का पाप अभीष्ट है ।

1. ईमान की बढ़ोती के कारण एक तो आख़िरत के पुरस्कारों में वृद्धि हो जाएगी, दूसरे ने पापों से भी मुक्त हो जाएँगे ।

2. मोमिनों का ईमान में बढ़ जाना मुनाफ़िक़ पुरुषों और स्त्रियों के लिए अज़ाब का कारण बन

(शेष पृष्ठ ११३० पर)

السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۚ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝٧

अल्लाह के बारे में बुरा विचार रखने वाले हैं। विपत्ति का चक्कर उन्हीं पर आएगा। अल्लाह ने उन पर दैवी प्रकोप उतारा है तथा उन्हें अपने पास से दूर हटा दिया है और उन के लिए उस ने नरक तय्यार कर रखा है जो अत्यन्त बुरा ठिकाना है।७।

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝٨

और आसमानों तथा ज़मीन के सेना दल अल्लाह ही के हैं और अल्लाह बड़ा ग़ालिब और हिक्मत वाला है।८।

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ۝٩

हम ने तुझे (अपने गुणों के लिए) गवाह और मोमिनों के लिए शुभ-समाचार देने वाला तथा (इन्कार करने वालों के लिए) सावधान करने वाला बना कर भेजा है।९।

لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ۚ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝١٠

ताकि तुम उस के द्वारा अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और उस की सहायता करो और उस का सम्मान करो और प्रातः (और) सायं-काल उस का स्तुति गान करो।१०।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ۚ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى

वे लोग जो तुझ से बैअत (दीक्षा) करते हैं वे अल्लाह की ही बैअत करते हैं। अल्लाह का हाथ उन के हाथ पर है। अतः जो कोई उस प्रण को तोड़ेगा तो उस के तोड़ने का बुरा

(पृष्ठ ११२९ का शेष)

जाएगा, क्योंकि वे तो यह आशा लगाए बैठे थे कि ऐसी परिस्थितियों में मोमिन भटक जाएँगे, परन्तु परिणाम उलटा निकला कि वे ईमान में और भी बढ़ गए। अतः मुनाफ़िक़ों तथा मुश्रिकों के दिलों में मानसिक जलन के अतिरिक्त और कुछ भी पैदा न हुआ तथा उन लोगों के हाथ भी कुछ न आया जो अल्लाह के बारे में बुरे-बुरे विचार रखते थे और समझते थे कि उन की योजनाएँ इस्लाम को हानि पहुँचाएँगी।

نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝

परिणाम भी उसी की जान पर पड़ेगा और जो कोई उस प्रण को पूरा करेगा जो उस ने अल्लाह से किया था तो अल्लाह उसे उस का बड़ा अच्छा बदला देगा ।११। (रुकू १/९)

سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۗ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۗ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝

आराब[1] में से जो पीछे छोड़ दिए गए थे अवश्य कहेंगे कि हमारे धन और परिवार ने हमें फँसाए रखा (अतः हम इस यात्रा पर नहीं जा सके)। सो तू हमारे लिए क्षमा माँग। वे अपनी ज़बान से वह बात कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं है। तू कह दे कि यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि पहुँचाना चाहे या कोई लाभ देना चाहे तो कौन है जो उस के विरुद्ध तुम्हारे लिए कुछ भी कर सकता है? ऐसा कदापि नहीं अपितु अल्लाह तुम्हारे कर्मों को जानता है ।१२।

بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُوْرًا ۝

वास्तविक बात यह है कि तुम ने यह विचार कर लिया था कि रसूल और मोमिन लोग कदापि अपने परिवार की ओर बच कर वापस नहीं आएंगे और यह बात तुम्हारी दृष्टि में शोभायमान कर के दिखाई गई थी (और तुम मन ही मन में बहुत प्रसन्न थे) तथा तुम (मोमिनों और अल्लाह के विषय में) बुरा विचार रखते थे (वास्तव में मोमिन तो नहीं) अपितु तुम स्वयं विनष्ट होने वाले लोगों में सम्मिलित हो गए थे ।१३।

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا

और जो व्यक्ति अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान नहीं लाता (वह याद रखे कि)

1. 'आराब' से तात्पर्य वे अरब लोग हैं जो जंगलों में रहते थे। इन आयतों में इन लोगों में से जो मुनाफ़िक़ थे और आमिर, असद तथा ग़तफ़ान के ख़ानदान से सम्बन्ध रखते थे उन का ही वर्णन किया गया है।

لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ⑬

हम ने इन्कार करने वालों के लिए भड़कने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है।१४।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ⑮

और आसमानों तथा ज़मीन के अनुशासन पर अल्लाह ही का आधिपत्य है। वह जिसे चाहता है क्षमा प्रदान करता है तथा जिसे चाहता है कठोर अज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।१५।

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ⑯

जब तुम ग़नीमत[1] का माल एकत्रित करने के लिए चलोगे तो पीछे छोड़े गए लोग कहेंगे कि हमें आज्ञा दी जाए कि हम भी तुम्हारे पीछे चलें। उन की यह इच्छा होगी कि अल्लाह के निर्णय को बदल डालें। तू कह दे कि तुम कदापि हमारे पीछे नहीं आ सकते। तुम्हारे बारे में यही निर्णय है जो अल्लाह इस से पहले कर चुका है। इस पर वे कहेंगे कि वास्तव में तुम हमारे साथ ईर्ष्या करते हो, किन्तु सत्य यह है कि वे समझ से बिल्कुल कोरे हैं।१६।

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ

आराब में से जो लोग पीछे छोड़े गए हैं तू उन्हें कह दे कि तुम्हें अवश्य ही एक ऐसी जाति से युद्ध करने के लिए बुलाया[2] जाएगा जो युद्ध-कला में अत्यन्त प्रवीण[3] है। तुम

1. युद्ध में विजय के बाद मिले हुए धन-दौलत को ग़नीमत का माल कहते हैं। यहाँ पर तबूक से लाए गए धन या ख़ैबर के युद्ध से मिला हुआ माल अभीष्ट है।

2. इस आयत में सम्राट किस्रा (ईरान) और क़ैसर (रूम) के साथ युद्ध करने का संकेत है। इस आयत मे मुनाफ़िक़ों से कहा गया है कि यदि उन के साथ युद्धों में पुरुषार्थ से काम लोगे तो तुम्हारे दोष क्षमा कर दिए जाएँगे अन्यथा दैवी प्रकोप में ग्रसित हो जाओगे।

3. इस में यह संकेत है कि वे युद्ध लम्बे समय तक चलते चले जाएँगे।

فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۷﴾

उन से उस समय तक युद्ध करोगे कि वे मुसलमान[1] हो जाएँ। यदि तुम (उस समय अल्लाह की आवाज़) स्वीकार करोगे तो अल्लाह तुम्हें अति उत्तम प्रतिफल प्रदान करेगा और यदि तुम (आदेश से) मुँह मोड़ोगे जिस प्रकार पहले लोगों ने मुँह मोड़ा था तो अल्लाह तुम्हें पीड़ादायक अज़ाब देगा।१७।

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۸﴾ ع

न तो किसी अन्धे पर दोष[2] है तथा न किसी लंगड़े पर और न किसी रोगी पर (कि वह असमर्थ होते हुए भी युद्ध में शामिल हो) तथा जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा का पालन करे वह उसे ऐसे स्वर्ग में प्रविष्ट करेगा जिस के नीचे नहरें बहती होंगी और जो कोई आदेश से मुँह मोड़ेगा तो अल्लाह उसे पीड़ादायक अज़ाब देगा।१८। (रुकू २/१०)

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ

अल्लाह मोमिनों से उस समय बिलकुल प्रसन्न हो गया जब वे वृक्ष[3] के नीचे बैअत कर रहे थे और उस ने उस (आस्था) को जो उन के दिलों में थी भली-भाँति जान लिया। अतः उस के फलस्वरूप उस ने उन के दिलों में

2. इस में यह आदेश नहीं है कि जब तक वे लोग मुसलमान न हो जाएँ तब तक उन से युद्ध करो, अपितु वास्तविक बात यह है कि वे शत्रु जब तक मुसलमान (आज्ञाकारी) नहीं बन जाएँगे तब तक वे तुम से युद्ध करते चले जाएँगे जैसा कि रूम और फ़ारस वालों ने किया था।

1. कि वे असमर्थ होने पर भी युद्ध में हिस्सा लें।

2. यहाँ हुदैबियः की बैअत का वृत्तान्त है जब कि सहाबा मरने की शपथ ले कर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के हाथ में हाथ दे कर बैअत कर रहे थे।

عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿١٩﴾	शान्ति उतारी तथा उन्हें शीघ्र ही होने वाली एक विजय[1] प्रदान की।१९।
وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٢٠﴾	और बहुत सी ग़नीमतों का धन भी प्रदान किया जिसे वे अपने अधिकार में ला रहे थे और अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है।२०।
وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢١﴾	अल्लाह ने तुम्हारे साथ बहुत सी ग़नीमतों की प्रतिज्ञा की है जो तुम अपने आधिपत्य में लाओगे और यह वर्तमान[2] ग़नीमत का धन तुम्हें उन प्रतिज्ञाओं में से शीघ्रता से प्रदान कर दिया है तथा लोगों के हाथों को तुम से रोक[3] दिया है ताकि ये (घटनाएँ) मोमिनों के लिए एक निशान बन जाएँ और वह (अल्लाह) इस के द्वारा तुम्हें सम्मार्ग दिखाए।२१।
وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢٢﴾	और (इस के अतिरिक्त) एक (विजय)[4] और भी है जो अभी तक तुम्हें प्राप्त नहीं हुई। अल्लाह ने उस का निर्णय कर छोड़ा है तथा अल्लाह अपने इरादे को पूरा करने का पूरा-पूरा सामर्थ्य रखता है।२२।
وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا	और यदि इन्कार करने वाले (हुदैबियः की सन्धि के समय) तुम से लड़ते तो वे तुरन्त

1. अर्थात् ख़ैबर की विजय।
2. ख़ैबर के माल-दौलत।
3. हुदैबियः के अवसर पर।
4. इस आयत में बताया: गया है कि ख़ैबर की विजय के उपरान्त और भी अनेक विजय होंगी।

يَجِدُونَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيرًا ﴿٢٣﴾

पीठ दिखा कर भाग जाते, और कोई शरण देने वाला न पाते तथा न कोई सहायक ही।२३।

سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيلًا ﴿٢٤﴾

अल्लाह की उस रीति को याद रखो जो सदा-सर्वदा से चली आ रही है और तू अल्लाह की नियत रीति में कदापि कोई परिवर्तन नहीं पाएगा।२४।

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿٢٥﴾

और वह अल्लाह ही है जिस ने उन के हाथों को तुम से तथा तुम्हारे हाथों को उन से मक्का की वादी में रोक दिया जब कि तुम (परिस्थितियों के अनुसार) उन पर विजय पा चुके थे और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को देख रहा था (वह जानता था कि तुम लड़ने से नहीं डरते)।२५।

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ مَحِلَّهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُّؤْمِنَاتٌ لَّمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَئُوهُمْ فَتُصِيبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا

वे (तुम्हारे शत्रु) ही थे। जिन्हों ने इन्कार किया और तुम्हें मस्जिदे-हराम से रोका और इसी प्रकार क़ुर्बानी के जानवरों को रोका जो (मक्का के लिए) अर्पित हो चुके थे (उन्हें इस बात से रोक दिया) कि वे अपने निश्चित स्थान तक पहुँच जाएँ और यदि मक्का में कुछ मोमिन पुरुष और कुछ मोमिन स्त्रियाँ ऐसी न होतीं जिन्हें तुम नहीं जानते थे और यह डर न होता कि तुम उन्हें अनजाने में कुचल दोगे और उस के फलस्वरूप तुम पर कलंक लगाया जाएगा (तो हम तुम्हें लड़ने देते, परन्तु अल्लाह ने रोक रखा) ताकि अल्लाह जिसे चाहता है उसे अपनी रहमत (दयालुता) में प्रविष्ट कर ले। यदि वे (गुप्त मोमिन) इधर-उधर हो गए होते तो हम उन

لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٢٦﴾

(मक्का निवासियों) में से जो इन्कार करने वाले थे उन को दुःखदायी अज़ाब पहुँचा देते।२६।

اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَ اَهْلَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمًا ﴿٢٧﴾

उस समय को याद करो जब इन्कार करने वाले लोगों ने अपने दिलों में ऐसे पक्षपात को प्रेरणा दी जो अज्ञानता के युग के पक्षपात वाली प्रेरणा थी। इस पर अल्लाह ने अपनी ओर से आने वाली सन्तुष्टी अपने रसूल एवं मोमिनों के दिलों पर उतारी और संयम की रीति पर उन के पाँव जमा दिए, क्योंकि वही इस के अधिक योग्य और अधिकारी थे तथा अल्लाह प्रत्येक बात को जानता है।२७। (रुकू ३/११)

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَ مُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٨﴾

अल्लाह ने अपने रसूल को उस स्वप्न[1] का विषय पूर्ण रूप से सच्चा कर दिखाया जिस में यह वृत्तान्त था कि यदि अल्लाह ने चाहा तो तुम मस्जिदे-हराम में शान्ति-पूर्वक अवश्य प्रवेश करोगे और पूर्ण रूप से अपने सिरों के बाल मुड़वाए हुए अथवा छोटे करवाए हुए होगे, किसी से न डरते होंगे। अतः अल्लाह ने वह सब कुछ जान लिया जो तुम नहीं जानते थे और उस ने इस से पहले ही एक और विजय[2] रख दी है।२८।

1. हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने स्वप्न में देखा था कि आप 'काबा' का तवाफ़ (परिक्रमा) कर रहे हैं। इस स्वप्न को पूरा करने के लिए आप मक्का की यात्रा के लिए चल पड़े, परन्तु हुदैबिया के स्थान पर रोक दिए गए। अतः इन्कार करने वालों ने प्रार्थना की कि इस वर्ष तवाफ़ न करें। हम अगामी वर्ष आप का मार्ग छोड़ देंगे तो उस समय तवाफ़ कर लीजिएगा। इस प्रार्थना को आप ने स्वीकार कर लिया और इस बात को समझौते में सम्मिलित कर लिया। उसी प्रतिज्ञा की ओर इस आयत में संकेत है।

2. यहाँ पुनः ख़ैबर की विजय का बर्णन हुआ है।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝۲۹

वह अल्लाह ही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सत्यधर्म दे कर भेजा है ताकि वह उसे सब धर्मों पर ग़ालिब कर दे और अल्लाह ही काफ़ी गवाह है।२९।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّاۗءُ عَلَي الْكُفَّارِ رُحَمَاۗءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۡ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ۭ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ښ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ڔ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْــَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ

मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उन के साथ हैं वे इन्कार करने वालों के विरुद्ध बड़ा जोश रखते हैं, परन्तु वे आपस में एक-दूसरे से अत्यन्त मृदुलता का व्यवहार करने वाले हैं। तू जब उन्हें देखेगा तो तू उन्हें शिर्क से मुक्त और अल्लाह का आज्ञाकारी पाएगा। वे अल्लाह की कृपा तथा उस की प्रसन्नता पाने की खोज में लगे रहते हैं। उन की पहचान उन के चेहरों पर सजदों के निशानों के रूप में है। उन की यह दशा तौरात में वर्णित है और इन्जील में उन की दशा इस प्रकार वर्णन की गई है कि वे खेती[1] के समान होंगे जिस ने पहले तो अपना अंकुर निकाला, तत्पश्चात् उसे (प्राकृतिक और भौतिक खाद्य-पदार्थों के आधार पर) सुदृढ़ बनाया तथा वह अंकुर और सुदृढ़ हो

1. इसे आयत में उस भविष्यवाणी की ओर संकेत किया गया है जिस का उल्लेख मती 13:3.9 में है कि 'एक किसान बीज बोने निकला और बोते समय कुछ बीज रास्ते के किनारे पर गिरे तथा पक्षियों ने उन्हें चुग लिया और कुछ पथरीली धरती पर गिरे यहाँ उन्हें पर्याप्त मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण शीघ्र अंकुरित हो गए तथा जब सूर्य निकला तो जल गए और जड़ न होने के कारण सूख गए तथा कुछ झाड़ियों में गिरे। झाड़ियों ने बढ़ कर उन्हें दबा लिया तथा कुछ अच्छी ज़मीन में गिरे और फल लाए।'

इस आयत में बताया गया है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की उम्मत में आने वाले मसीह की जाति भी ऐसी ही होगी जैसे अच्छे ज़मीन में बोया हुआ बीज। अल्लाह उस में ऐसी बरकत देगा कि एक-एक बीज से साठ गुना, सत्तर गुना अपितु सौ-सौ गुना ग़ल्ला पैदा होगा, किन्तु यह तुरन्त नहीं होगा बल्कि धीरे-धीरे होगा।

فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۗ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝

गया। फिर अपनी जड़ पर दृढ़ता से क़ायम हो गया यहाँ तक कि वह किसान को पसन्द आने लग गई। इस का परिणाम यह निकलेगा कि इन्कार करने वाले उन्हें देख-देख कर जलेंगे। अल्लाह ने मोमिनों और ईमान के अनुकूल कर्म करने वालों से यह प्रतिज्ञा की है कि उन्हें क्षमा (करेगा) और बहुत बड़ा प्रतिफल प्राप्त होगा।३०। (रुकू ४/१२)
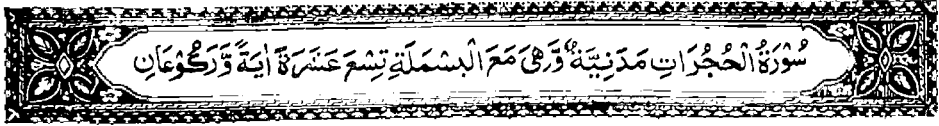
सूर: अल्-हुजुरात

[यह सूर: मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की उन्नीस आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ②

हे मोमिनो ! अल्लाह और उस के रसूल के सामने बढ़-बढ़ कर बातें न किया करो और अल्लाह के लिए संयम धारण करो। अल्लाह बहुत सुनने वाला एवं बहुत जानने वाला है।२।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ③

हे मोमिनो ! नबी की आवाज़ से अपनी आवाज़ ऊँची न किया करो तथा न उस के सामने इस प्रकार बोला करो जिस प्रकार तुम परस्पर एक दूसरे के सामने ऊँची आवाज़ से बोलते हो। ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म विनष्ट हो जाएँ और तुम्हे ज्ञान भी न हो।३।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ④

वे लोग जो रसूल के सामने अपनी आवाज़ें दबा कर रखते हैं वही हैं जिन के दिलों का अल्लाह ने संयम के लिए पूरी तरह निरीक्षण कर लिया है और उन के लिए बख़्शिश और बहुत बड़ा प्रतिफल निश्चित है।४।

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِن وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ⑤

जो लोग तुझे कमरों की दीवारों के पीछे से आवाजें देते हैं उन में से बहुत से मूर्ख हैं ।५।

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑥

यदि वे उस समय तक प्रतीक्षा करते कि तू बाहर निकल कर उन की ओर आ जाता तो यह उन के लिए अच्छा होता और अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है ।६।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ ⑦

हे मोमिनो ! यदि कोई अवज्ञाकारी तुम्हारे पास कोई महत्वपूर्ण समाचार लाए तो उस की छान-बीन कर लिया करो, ऐसा न हो कि तुम अनजाने में किसी जाति पर आक्रमण कर दो तथा फिर तुम अपने किए पर पछताओ ।७।

وَاعْلَمُوا أَنَّ فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ ۚ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الرَّاشِدُونَ ⑧

और जान लो कि इस समय अल्लाह का रसूल तुम में मौजूद है यदि वह बहुत से कामों में तुम्हारी ही बात मान लिया करे तो तुम कष्ट में पड़ जाओ, किन्तु अल्लाह ने तुम्हारी दृष्टि में ईमान को बहुत प्रिय बनाया है तथा तुम्हारे दिलों में उसे सुन्दर रूप दे कर दिखाया है और तुम्हारी दृष्टि में इन्कार, अवज्ञा तथा पाप को अप्रिय कर के दिखाया है । सो वे लोग ही सीधी राह पर हैं (जो इस आयत पर आचरण करते हैं) ।८।

فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَنِعْمَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ⑨

यह अल्लाह की कृपा और निअमत है और अल्लाह भली-भाँति जानने वाला और हिक्मत वाला है ।९।

وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَاۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْاؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ⑩

और यदि मोमिनों के दो गिरोह[1] आपस में लड़ पड़ें तो उन दोनों में सन्धि[2] करा दो। फिर सन्धि हो चुकने के पश्चात् यदि उन में से कोई एक दल दूसरे पर आक्रमण करे तो सब मिल कर आक्रमण करने वाले के विरुद्ध युद्ध करो यहाँ तक कि वह अल्लाह के आदेश की ओर लौट आए और यदि वह अल्लाह के आदेश की ओर लौट आए तो उन (दोनों लड़ने वालों) में न्याय[3] संगत सन्धि करा दो और न्याय को सामने रखो। अल्लाह न्याय करने वालों को पसन्द करता है।१०।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ⑪ ع ١٣

मोमिनों[4] का नाता आपस में केवल भाई-भाई का सा है। अतः तुम अपने दो भाइयों के बीच जो आपस में लड़ते हों, सन्धि करा दिया करो और अल्लाह के लिए संयम धारण करो ताकि तुम पर दया की जाए।११। (रुकू १/१३)

---

1. इस आयत में संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) का चित्र खींचा गया है। खेद है कि लीग आफ़ नेशन इस सिद्धान्त को पूरे रूप से न अपना सकी और असफल हो गई।

संयुक्त राष्ट्र संघ भी एक प्रकार के आतंक से डर रहा है और असफलता के चिन्ह प्रकट हो रहे हैं। जब तक इस आयत में बताए गए प्रतिबन्धों को न अपनाया जाएगा तो यह संघ भी सफल न होगा।

2. मूल शब्द 'मोमिन' से धोखा न खाना चाहिए। यह शब्द केवल इस लिए आया है कि मुसलमान जातियाँ मुसलमानों में ही निर्णय करा सकती हैं अन्यथा यह आयत सिद्धान्तिक रूप में समस्त जातियों के लिए अनुदेश है।

3. अर्थात् सन्धि कराते समय अपने ही लाभ सामने न रखो। वास्तविक समस्या का समाधान कर दिया करो।

4. जब कभी मतभेद हो भी जाए तो याद रखना चाहिए कि उन का आपस में बहुत बड़ा सम्बन्ध भाई-चारे का है। छोटे-छोटे झगड़े इस्लामी भाई-चारे को तोड़ने का कारण नहीं बनने चाहिए।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝١٢

हे मोमिनो ! कोई जाति किसी दूसरी जाति को तुच्छ समझ कर उस से हँसी-ठट्ठा न किया करे। सम्भव है कि वह जाति उस से अच्छी हो और न (किसी जाति की) स्त्रियाँ दूसरी (जाति की) स्त्रियों को हीन समझ कर उन से हँसी-ठट्ठा किया करे। हो सकता है कि वे (दूसरी स्त्रियाँ) उन से अच्छी हों और न तुम आपस में एक-दूसरे को ताने (व्यंग) दिया करो और न एक-दूसरे को बुरे नामों से पुकारा करो, क्योंकि ईमान लाने के पश्चात् अवज्ञा करना एक अत्यन्त घृणित नाम (अर्थात् फ़ासिक़) का पात्र बना देता है और जो व्यक्ति तौब: न करे वह अत्याचारी होगा।१२।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ۝١٣

हे ईमान वालो ! बहुत से गुमानों से बचते रहा करो, क्योंकि कुछ गुमान पाप बन जाते हैं और टोह से काम न लिया करो और तुम में से कोई भी दूसरे की चुगली न किया करे। क्या तुम में से कोई व्यक्ति अपने मुर्दा भाई का माँस खाना पसन्द करेगा ? (यदि यह बात तुम से सम्बन्धित की जाए तो) तुम इसे पसंद[1] नहीं करोगे और अल्लाह के लिए संयम धारण करो। अल्लाह तौब: स्वीकार करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।१३।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى

हे लोगो ! हम ने तुम्हें पुरुष और स्त्री से पैदा किया है और तुम्हें कई दलों तथा वंशों[2]

1. चुगली इतनी बुरी बला है तो फिर ऐसी बुरी वस्तु क्यों अपनाते हो ?

2. जातियाँ और संतति केवल परिचय के लिए हैं। जो व्यक्ति उन्हें गर्व तथा अभिमान का साधन बनाता है वह इस्लाम के विरुद्ध आचरण करता है।

وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآىِٕلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿۱۴﴾

में विभाजित कर दिया है ताकि तुम एक-दूसरे को पहचान सको। तुम में से अल्लाह के निकट सत्कार के अधिक योग्य वही है जो सब से बढ़ कर संयमी है। निस्सन्देह अल्लाह बहुत ज्ञान रखने वाला और बहुत जानने वाला है।१४।

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۵﴾

आराब[1] कहते हैं कि हम ईमान ला चुके हैं। तू उन से कह दे कि तुम वास्तव में ईमान नहीं लाए हो, किन्तु तुम यह कहा करो कि हम ने साधारण रूप में मान लिया है, क्योंकि (हे आराब !) अभी ईमान तुम्हारे दिलों में वस्तुतः प्रविष्ट नहीं हुआ और हे मोमिनो ! यदि तुम अल्लाह और उस के रसूल की सच्चे दिल से आज्ञा पालन करोगे तो वह तुम्हारे कर्मों में से कोई कर्म भी अकारथ नहीं जाने देगा। अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।१५।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿۱۶﴾

मोमिन वही होते हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाते हैं, फिर किसी शंका में नहीं पड़ते और अपने माल-दौलत तथा प्राणों द्वारा अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं। यही लोग सच्चे हैं।१६।

قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۷﴾

तू कह दे कि क्या तुम अल्लाह को अपने धर्म से परिचित कराते हो ? हालांकि अल्लाह तो उसे भी जानता है जो आसमानों में है तथा जो ज़मीन में है और अल्लाह (इस के सिवा भी) हर-एक वस्तु को जानता है।१७।

1. आराब से अभिप्राय जंगलों में रहने वाले ऐसे अरब लोगों से है जो शिक्षा और दीक्षा से कोरे थे।

يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٨﴾

ये (आराब) तुझ पर अपने इस्लाम लाने का एहसान (उपकार) जताते हैं। तू कह दे कि अपने इस्लाम लाने का एहसान मुझ पर न रखो। वास्तविकता यह है कि अल्लाह ही तुम्हें हिदायत देने का तुम्हारे ऊपर एहसान रखता है। यदि तुम (अपने इस कथन में) सच्चे हो (कि तुम ईमान ला चुके हो) तो इस सत्य को स्वीकार करो।१८।

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ ع

अल्लाह आसमानों की छिपी बात भी जानता है तथा ज़मीन की भी और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति देख रहा है।१९। (रुकू २/१४)

سُوْرَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتٌّ وَّ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ
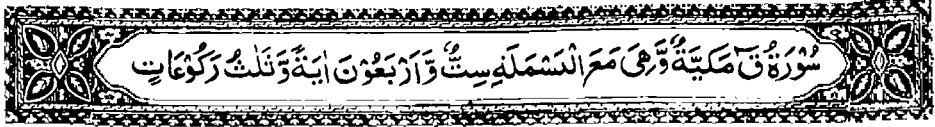
सूरः अल्-क़ाफ़

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की छियालीस आयतें एवं तीन रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

قٓ ۚ وَ الْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ②

क़ाफ़[1] (सर्वशक्तिमान् अल्लाह इस सूरः को उतारने वाला है)। हम इस गौरवशाली क़ुर्आन को (इस सूरः की सत्यता के लिए) गवाही के रूप में पेश करते हैं।२।

بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ③

परन्तु ये लोग आश्चर्य करते हैं कि उन के पास उन्हीं में से डराने (तथा सचेत करने) वाला एक व्यक्ति आया है और इन्कार करने वाले लोग कहते हैं कि यह एक विचित्र सी बात प्रतीत होती है।३।

ءَاِذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ④

कि क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी हो जाएँगे तो फिर जीवित हो जाएँगे ? यह लौटना तो (बुद्धि से) दूर बात है।४।

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَ عِنْدَنَا

हमें भली-भाँति वह भी ज्ञात है जो धरती उन में से कम करती है (तथा वह भी जो

1. 'क़ाफ़' खण्डाक्षर है। इस का अर्थ है—'क़ादिर' अर्थात् सर्वशक्तिमान् अल्लाह।

كِتٰبٌ حَفِيظٌ ۝٥

अधिक[1] करती है) और हमारे पास ऐसी किताब है जो प्रत्येक वस्तु को सुरक्षित रखती है।५।

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَّرِيجٍ ۝٦

बात यह है कि इन लोगों ने सत्य का इन्कार कर दिया जब वह उन के पास आया। अत: वे एक ऐसे विचार में पड़े हुए हैं जिस में (सच और झूठ की) मिलावट है।६।

أَفَلَمْ يَنظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا مِن فُرُوجٍ ۝٧

क्या उन्हों ने अपने ऊपर आकाश को नहीं देखा कि हम ने उसे कैसा बनाया है और उसे सुन्दरता प्रदान की है तथा उस में कोई त्रुटि नहीं है।७।

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ۝٨

और हम ने धरती को बिछाया है तथा उस में पहाड़ बनाए हैं एवं हम ने उस में समस्त प्रकार के सुन्दर जोड़े बनाए हैं।८।

تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝٩

हमारे सामने झुकने वाले हर-एक व्यक्ति के लिए इस में शिक्षा और हितोपदेश की बातें हैं।९।

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَارَكًا فَأَنبَتْنَا بِهِ جَنَّاتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ۝١٠

और हम ने बादलों से बरकत वाला पानी उतारा है, फिर हम उस के द्वारा बाग़ उगाते हैं तथा काटे जाने वाली खेती के दाने भी।१०।

وَالنَّخْلَ بَاسِقَاتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيدٌ ۝١١

और खजूर के ऊँचे-ऊँचे वृक्ष भी (उगाते हैं) जिन में फलों के गुच्छे लगते हैं जो एक-दूसरे पर अच्छी तरह चढ़े हुए होते हैं।११।

---

1. इस आयत में कम करने का भाव यह है कि मरने के बाद उन के शरीर को मिट्टी खा जाती है और अधिक करने से यह अभिप्राय है कि मिट्टी जो खाद्य पदार्थ निकालती है उस के खाने-पीने से शरीर प्रफुल्लित होता है।

رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذَٰلِكَ الْخُرُوجُ ﴿١٢﴾

हम ने लोगों को रोज़ी देने के लिए (ऐसा किया है) तथा हम उस पानी के द्वारा मुर्दा देश को जीवित करते हैं। इसी प्रकार मरने के बाद निकलना भी होगा।१२।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ وَثَمُودُ ﴿١٣﴾

इन से पहले नूह की जाति ने और कुँवें वालों ने और समूद ने।१३।

وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ﴿١٤﴾

और आद जाति ने एवं फ़िरऔन ने तथा लूत के भाइयों ने।१४।

وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ﴿١٥﴾

और वन[1] के रहने वालों ने और तुब्बा की जाति (यमन के लोगों) ने हमारे रसूलों को झुठलाया था। अन्ततः मेरे कठोर अज़ाब की प्रतिज्ञा पूरी हो कर रही।१५।

أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٦﴾

क्या हम पहली बार पैदा कर के थक गए हैं? (नहीं) किन्तु वास्तविकता यह है कि वे दूसरी बार पैदा होने के बारे में भ्रम में पड़े हुए हैं।१६। (रुकू १/१५)

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ﴿١٧﴾

और हम ने मनुष्य को पैदा किया है तथा उस के मन में जो-जो भ्रम पैदा होते हैं हम उन्हें भली-भाँति जानते हैं और हम उस (मनुष्य) से उस की जान की रग से भी अधिक निकट हैं।१७।

إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ

जब कि दाहिने[2] तथा बायें बैठे हुए दो गवाह

1. शाब्दिक अर्थ तो 'वन-निवासी' है, परन्तु इस से तात्पर्य वह बन है जो यमन से फ़लस्तीन जाते हुए मद्यन के निकट पड़ता है।

1. मानव-मात्र के साथ ऐसे फ़रिश्ते या शरीर के अवयव निश्चित हैं जो उस के कर्मों को सुरक्षित करते जाते हैं। इस स्थान पर उन्हीं का वर्णन है।

قَعِيْدٌ ﴿١٨﴾

उस की समस्त गतिविधियों को सुरक्षित करते जाते हैं।१८।

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿١٩﴾

और मनुष्य कोई बात नहीं करेगा कि उस के पास उस का कोई निरीक्षक या संरक्षक न हो।१९।

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿٢٠﴾

और मौत की बेहोशी अवश्य आएगी तो हम उस समय उस (असावधान-मानव) से कहेंगे कि यह वह दशा है जिस से तू बचना चाहता था।२०।

وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿٢١﴾

और बिगुल बजाया जाएगा। यह अज़ाब के वादा का दिन होगा।२१।

وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّ شَهِيْدٌ ﴿٢٢﴾

और प्रत्येक जान (इस अवस्था में) आएगी कि उस के साथ एक हाँकने वाला भी लगा हुआ होगा तथा एक गवाह भी।२२।

لَقَدْ كُنْتَ فِىْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ﴿٢٣﴾

(और हम कहेंगे) तू इस दिन से असावधान था। सो अन्ततः हम ने तेरा पर्दा खोल दिया। सो आज के दिन तेरी दृष्टि बहुत तेज़[1] है (और तू सब कुछ देख रहा है)।२३।

وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَىَّ عَتِيْدٌ ﴿٢٤﴾

और उस का साथी कहेगा कि तनिक इसे भी देखो जो मेरे पास तय्यार[2] है। (अर्थात् उस के कर्मों का सूची-पत्र)।२४।

---

1. अर्थात् आज तू अपने अच्छे और बुरे कर्मों को अच्छी तरह समझ रहा है तथा वह सांसारिक दशा भूल गया है जब कि तू अपने प्रत्येक कथन और कर्म के शुभ होने पर हठ किया करता था।

2. मानव-अंग या फ़रिश्ते कहेंगे कि इस के कथनों तथा कर्मों का सारा अभिलेख (रिकार्ड) हमारे पास है।। अतः यह किसी प्रकार से भी इन्कार नहीं कर सकता। हमारा अभिलेख देख लीजिए, सारी परिस्थिति खुल जाएगी।

اَلْقِيَا فِىْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٢٥﴾	फिर हम उन दोनों (हाँकने वाले और गवाह) से कहेंगे कि प्रत्येक इन्कार करने वाले, सच्चाई के शत्रु ।२५।
مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبٍ ﴿٢٦﴾	परोपकार से रोकने वाले, सीमोंल्लंघी और सन्देह करने वाले को तुम दोनों नरक में डाल दो ।२६।
الَّذِىْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِى الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ﴿٢٧﴾	जो अल्लाह के साथ दूसरे उपास्य बनाता था। अतः तुम उसे आज कठोर अज़ाब में डाल दो ।२७।
قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَاۤ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِىْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٢٨﴾	उस का साथी[1] कहेगा कि हे हमारे रब्ब ! मैं ने इस से कोई सरकशी नहीं करवाई अपितु यह स्वयं ही परले दर्जे की पथभ्रष्टता में पड़ा हुआ है ।२८।
قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَىَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ﴿٢٩﴾	(इस पर अल्लाह) कहेगा कि मेरे पास झगड़ा मत करो और याद रखो कि मैं तो तुम्हें पहले हीं अज़ाब का समाचार भेज चुका हूँ ।२९।
مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَىَّ وَمَاۤ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٣٠﴾ ع	और मेरे सामने कोई बात बदल कर नहीं की जा सकती[2] तथा न मैं अपने बन्दों पर किसी प्रकार का कोई अत्याचार करने वाला[3] हूँ ।३०। (रुकू २/१६)

1. अब तो मनुष्य यह कहता है कि मुझे अल्लाह ने पथभ्रष्ट किया, परन्तु क़ियामत के दिन उस के निरीक्षक फ़रिश्ते अथवा उस के शरीर के निरीक्षक अंग कहेंगे कि इस के पथ विचलित होने का कारण हम नहीं, अपितु यह स्वयं ही पथभ्रष्ट हुआ था और स्वयं ही अपनी पथभ्रष्टता का उत्तरदायी है।

2. मैं ने जो गवाह फ़रिश्तों में से अथवा मनुष्य के अंगों में से मानव पर नियुक्त किए हैं वे इतना साहस नहीं कर सकते कि मेरे सामने बात को बदल कर पेश करें, क्योंकि वे केवल गवाह ही नहीं अपितु उन के पास अभिलेख भी होगा तथा अभिलेख को कोई झुठला नहीं सकता।

3. अर्थात् मैं ने गवाही का ऐसा प्रबन्ध कर दिया है कि उस का इन्कार नहीं किया जा सकता और न मेरे दण्ड को अत्याचार ठहराया जा सकता है।

يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ٣١

हम उस दिन नरक से कहेंगे कि क्या तू भर गया ? वह कहेगा कि क्या कुछ और भी है ? ।३१।

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ٣٢

और उस दिन स्वर्ग संयमियों के इतना निकट[1] कर दिया जाएगा कि वे उसे अनुभव करने लगेंगे ।३२।

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيْظٍ ٣٣

और कहा जाएगा कि तुम में से हर-एक विनम्र और शरीअत के रक्षक से इसी पुरस्कार की प्रतिज्ञा की गई थी ।३३।

مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبٍ ٣٤

जो मन में रहमान (ख़ुदा) से डरता था तथा विनम्र दिल के साथ उस के पास आया था ।३४।

ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ٣٥

(हम कहेंगे कि) उन सब को शान्ति के साथ स्वर्ग में प्रविष्ट कर दो । यह वह बरकत वाला दिन है जो कदापि समाप्त नहीं होगा ।३५।

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ٣٦

उन्हें उस में जो कुछ वे चाहेंगे मिलेगा और हमारे पास उन्हें देने के लिए उस से भी अधिक है ।३६।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ

और हम उन से पहले बहुत सी जातियों का सर्वनाश कर चुके हैं । वे उन से बढ़ कर पकड़ करने की शक्ति रखती थीं, परन्तु उन्हों ने (अज़ाब के समय) अपनी रक्षा के

---

1. मोमिन उस दिन स्वर्ग को भली-भाँति देखेंगे ताकि उन के दिल सन्तुष्ट हों या इस से यह अभिप्राय है कि अन्तिम युग में धर्म की इतनी व्याख्या होगी कि प्रत्येक मोमिन अपने दिल में स्वर्ग को निकट पाएगा ।

هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٦﴾

लिए (देश के ओर-छोर में) सुरंगें[1] बिछा दीं किन्तु (यह बात तो स्पष्ट है कि) अल्लाह के अज़ाब से बचे रहने की सम्भावना कहाँ हो सकती है ? ।३७।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ﴿٣٧﴾

इस में हर उस व्यक्ति के लिए उपदेश है जो सोचने-समझने वाला दिल रखता है या जो सुनने के लिए कान लगाता और सोच-विचार से काम लेता है ।३८।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿٣٨﴾

और हम ने आसमानों, ज़मीन तथा जो कुछ उन के बीच है उन सब को छः दौरों में पैदा किया है और हम लेशमात्र भी नहीं थके[2] ।३९।

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ﴿٣٩﴾

अतः जो कुछ वे कहते हैं उस पर धैर्य धारण कर तथा सूर्योदय और सूर्यास्त से पहले अपने रब्ब की स्तुति किया कर ।४०।

وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ﴿٤٠﴾

और रात के समय भी उस की पवित्रता का गुणगान किया कर और प्रत्येक उपासना के अन्त में भी (ऐसा ही किया कर) ।४१।

وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٤١﴾

और हे नबी ! याद रख कि एक दिन पुकारने वाला निकटवर्ती[3] स्थान से पुकारेगा ।४२।

---

1. अर्थात् देश में ऐसी परिस्थितियाँ पैदा कर दीं ताकि वे उस अज़ाब से सुरक्षित रह सकें, किन्तु दैवी-प्रकोप और दण्ड से बचने के लिए मनुष्य की योजनाएँ तथा उपाय कहाँ काम दे सकते हैं ?

2. बाइबिल में लिखा है कि अल्लाह ने संसार की रचना की और थक गया, सातवें दिन इसने विश्राम किया। (उत्पत्ति 21:27) क़ुर्आनी शिक्षा कितनी गौरवशाली और ईशसत्ता के उपयुक्त है जब कि बाइबिल की शिक्षा ईश सत्ता के उपलक्ष्य घिनौनी एवं त्याग देने योग्य है।

3. तात्पर्य यह है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल॰अम के अनुयायियों में से भी अल्लाह ऐसे

(शेष पृष्ठ ११५२ पर)

يَّوۡمَ يَسۡمَعُوۡنَ الصَّيۡحَةَ بِالۡحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوۡمُ الۡخُرُوۡجِ ﴿٤٣﴾

जिस दिन सब लोग पूरा हो कर रहने वाले एक अज़ाब की आवाज़ सुनेंगे। यह जीवित हो कर निकलने का दिन होगा[1] ।४३।

اِنَّا نَحۡنُ نُحۡیٖ وَنُمِيۡتُ وَاِلَيۡنَا الۡمَصِيۡرُ ﴿٤٤﴾

हम ही जीवित करते हैं तथा मौत भी देते हैं और हमारी ही ओर सब को लौट कर आना है।४४।

يَوۡمَ تَشَقَّقُ الۡاَرۡضُ عَنۡهُمۡ سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشۡرٌ عَلَيۡنَا يَسِيۡرٌ ﴿٤٥﴾

जिस दिन धरती उन के उत्पात के कारण फट जाएगी और वे उस से शीघ्रता[2] से निकलेंगे। यह मुर्दों को जीवित कर देना हमारे लिए आसान है।४५।

نَحۡنُ اَعۡلَمُ بِمَا يَقُوۡلُوۡنَ وَمَاۤ اَنۡتَ عَلَيۡهِمۡ بِجَبَّارٍ ۚ فَذَكِّرۡ بِالۡقُرۡاٰنِ مَنۡ يَّخَافُ وَعِيۡدِ ﴿٤٦﴾

हम उन की बातों को ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं और तू उन पर एक अत्याचारी राजा के रूप में नियुक्त नहीं किया गया। अतः तू क़ुर्आन द्वारा केवल उस व्यक्ति को उपदेश दे जो मेरे अज़ाब की भविष्यवाणी से डरता है।४६। (रुकू ३/१७)

(पृष्ठ ११५१ का शेष)
व्यक्तियों को खड़ा करता रहेगा जो मक्का वालों को सावधान करते रहेंगे। फिर ऐसा ही हुआ कि हज़रत अबूबकर, हज़रत उमर, हज़रत उसमान, हज़रत अली और हज़रत ज़ुबैर के पुत्र हज़रत अब्दुल्लाह मक्का वालों में से प्रकट होते रहे और उन्हें सावधान करते रहे।

1. हज़रत अबूबकर के समय मदीना नगर के आस-पास की जातियाँ इस्लाम से फिर गई थीं, किन्तु हज़रत अबूबकर उन्हें पुनः इस्लाम की ओर लाए। इसी प्रकार हज़रत उमर के समय में क़ैसर और किस्रा के आतंक के कारण मुसलमानों के वंश कंपित हो उठे थे, परन्तु हज़रत उमर ने उपदेशों और प्रवचनों से उन में नवोत्साह भरा तथा उन्हें साथ ले कर क़ैसर और किस्रा को पराजित किया।

2. वे अज़ाब आने पर अपना स्थान छोड़ कर इधर-उधर भागेंगे, किन्तु उन्हें बचने का कोई रास्ता नहीं मिलेगा।
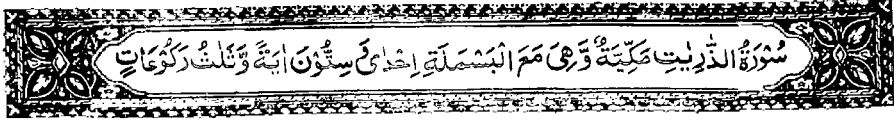
सूर: अल्-ज़ारियात

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की इकसठ आयतें तथा तीन रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूं) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ②

हम उन (हवाओं) को गवाही के रूप में पेश करते हैं जो (बादलों को) उड़ाए फिरती है।२।

فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ③

फिर (वर्षा का) बोझ उठा लेती हैं।३।

فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ④

फिर धीमी चाल से चलती हैं।४।

فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ⑤

और अन्तत: हमारे आदेश (अर्थात् वर्षा) को धरती में बाँट देती हैं।५।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ⑥

तुम्हारे साथ जो प्रतिज्ञा की जाती है वह अवश्य ही पूरी हो कर रहेगी[1]।६।

---

1. इन आयतों में सहाबा को अथवा उन के प्रचार सम्बन्धी प्रयत्नों को हवाओं के समान ठहराया गया है और बताया गया है कि सहाबा या उन के प्रचार सम्बन्धी प्रयत्न पवित्र क़ुर्आन के पानी को चारों ओर उड़ा कर ले जाएँगे और उन की प्रचार सम्बन्धी चेष्टाएँ दिन-प्रतिदिन उत्तरोत्तर बढ़ती चली जाएँगी यहाँ तक कि उन के प्रचार सम्बन्धी उठाए हुए बादल पानी से भर जाएँगे और फिर वे लोगों के दिलों

(शेष पृष्ठ ११५४ पर)

وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ۝

और कर्मों का प्रतिफल अवश्य मिल कर रहेगा।७।

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۝

इस के प्रमाण के लिए हम उस आकाश को पेश करते हैं जिस में नक्षत्रों के मार्ग[1] हैं।८।

اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۝

तुम सब एक विभेद-पूर्ण बात में पड़े हुए हो।९।

يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ۝

जिस के कारण केवल वही व्यक्ति हक़ से फेरा जाता है जिस के हक़ से फिराए जाने का आदेश हो चुका है।१०।

قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ۝

अटकल-पच्चू बातें करने वालों का सर्वनाश हो गया।११।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ۝

जो गुमराही की अथाह गहराइयों में पड़े हुए सच्चाई को भुला रहे हैं।१२।

يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ۝

वे पूछते हैं कि कर्मों के प्रतिफल देने का समय कब आएगा ?।१३।

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ۝

(तू कह दे) उस समय (आएगा) जब उन्हें आग का अज़ाब दिया जाएगा।१४।

(पृष्ठ ११५३ का शेष)

पर इस्लाम धर्म का इस प्रकार प्रभाव जमा देंगे कि उन के प्रचार सम्बन्धी प्रयत्न सुगमता से फैलते चले जाएँगे तथा नास्तिकता उन के सामने मन्द पड़ जाएगा। इस का परिणाम यह होगा कि वे इस्लाम को संसार के भिन्न-भिन्न देशों में फैला देंगे और अन्ततः इस्लाम विजयी हो जाएगा। इस प्रकार जिस सफलता का समाचार दिया जा रहा है वह पूरा हो जाएगा।

1. इस से अभिप्राय सूर्य मंडल में विचरने वाले नक्षत्रों के मार्ग हैं।

ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ۭ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝١٤

(और कहा जाएगा कि) अपना अज़ाब चखो। यह वही अज़ाब है जिसे तुम शीघ्रता से माँगा करते थे।१५।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝١٥

संयमी लोग बाग़ों और स्रोतों वाले स्थानों में निवास करेंगे।१६।

اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ۝١٦

उन का रब्ब उन्हें जो कुछ देगा वे उसे लेते जाएँगे। वे उस समय से पहले पूरे रूप से आज्ञाकारी थे।१७।

كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ۝١٧

वे रातों को थोड़ा ही सोया करते थे।१८।

وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝١٨

और वे प्रात: के समय भी इस्तग़फ़ार (अर्थात् क्षमा की प्रार्थना) किया करते थे।१९।

وَفِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّاۗىِٕلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝١٩

और उन के धन में माँगने वालों का भी हक़ था तथा उन का भी जो माँग[1] नहीं सकते थे।२०।

وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ۝٢٠

और विश्वास करने वालों के लिए धरती में अनेक प्रमाण हैं।२१।

وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ۭ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝٢١

और स्वयं तुम्हारी जानों में भी। क्या तुम देखते नहीं?।२२।

وَفِي السَّمَاۗءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ۝٢٢

और आसमान में तुम्हारी रोज़ी भी है तथा (इस के सिवा) जो कुछ वादा किया जाता है वह भी है।२३।

---

1. ऐसे मूक प्राणी जो बोल नहीं सकते और ऐसे भद्र पुरुष जो माँगने में अपना अपमान समझते हैं।

فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَاۤ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ۝ ع

अतः आसमानों और ज़मीन के रब्ब की क़सम ! (कि जब यह बातें पूरी होंगी तो विदित हो जाएगा कि) यह (क़ुर्आन) उसी प्रकार एक सत्य है जिस प्रकार तुम्हारा बातें करना ।२४। (रुकू १/१८)

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ۝

क्या इब्राहीम के सत्कार योग्य अतिथियों का समाचार तुझे नहीं पहुँचा ? ।२५।

اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۝

जब वे उस के पास आए तो उन्हों ने कहा कि (हम तुझे) सलाम (करते हैं) । उस ने कहा कि (मैं भी कहता हूँ कि) तुम्हारे लिए (अल्लाह की ओर से) सदा के लिए सलामती निश्चित[1] है (और मन में कहा कि) ये लोग अपरिचित जान पड़ते हैं ।२६।

فَرَاغَ اِلٰۤى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ۝

फिर वह चुपके से अपने घर वालों की ओर चला गया और भूना हुआ एक बछड़ा ले आया ।२७।

فَقَرَّبَهٗۤ اِلَيْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۝

और उसे उन के सामने रख दिया, फिर कहा कि क्या आप कुछ खान-पान नहीं करेंगे ? ।२८।

فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ ؕ وَبَشَّرُوْهُ

और (दिल में) उन से कुछ डर अनुभव किया। वे (इस बात को भाँप गए और) कहने लगे कि

1. यह बात केवल अल्लाह ही कह सकता है पर इस स्थान पर इस का सम्बन्ध हज़रत इब्राहीम से जोड़ा गया है । इस से यह अभिप्राय है कि हज़रत इब्राहीम को पता लग गया था कि वे लोग आध्यात्मिकता में कितना ऊँचा स्थान रखते हैं और वे अल्लाह की कृपा की छाया में विचरते हैं । अतः विश्वास पूर्वक कह दिया कि मैं भी कहता हूँ कि तुम्हारे लिए अल्लाह की ओर से सदा के लिए सलामती एवं शान्ति निश्चित है ।

بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٢٩﴾	डरो नहीं और उसे एक ज्ञानवान् पुत्र का शुभ-समाचार सुनाया ।२९।
فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَ قَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ﴿٣٠﴾	इतने में उस की धर्म-पत्नी आगे आई जो लजा[1] रही थी । अतः उस ने अपने हाथ अपने मुंह पर मारे और बोली कि मैं तो एक बुढ़िया-बाँझ हूँ ।३०।
قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٣١﴾	उन्हों ने कहा कि (यह ठीक है कि) तू ऐसी ही है, परन्तु तेरे रब्ब ने वही कहा है (जो हम ने बताया है) । निस्सन्देह वह बड़ी हिक्मत वाला और बड़े ज्ञान वाला है ।३१।

1. मूल शब्द 'सर्रातिन्' का अर्थ चेहरे का कालिमा भी होता है । अतः अभिप्राय यह है कि लज्जा के कारण उस के चेहरे का रंग बदल गया था ।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝٣٢

(इस पर इब्राहीम ने) कहा कि हे रसूलो! तुम्हें कौन सा महत्त्वपूर्ण काम सौंपा गया है? ।३२।

قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ۝٣٣

उन्हों ने कहा कि हम एक अपराधी जाति के लोगों की ओर भेजे गए हैं ।३३।

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ ۝٣٤

ताकि उन पर गीली मिट्टी से बने हुए कंकड़ बरसाएँ ।३४।

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ۝٣٥

जिन पर तेरे रब्ब की ओर से सीमोल्लंघियों को दण्ड देने के लिए निशान लगाया गया है ।३५।

فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٣٦

और उस बस्ती में जितने मोमिन थे हम ने उन सब को निकाल लिया ।३६।

فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝٣٧

और हम ने उस बस्ती में अपने आज्ञाकारियों का केवल एक ही घर पाया ।३७।

وَتَرَكْنَا فِيْهَآ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝٣٨

और हम ने उस (बस्ती) में एक ऐसा निशान छोड़ा जो सदैव उन लोगों के काम आएगा जो कि पीड़ादायक अज़ाब से डरने वाले होंगे ।३८।

وَفِيْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝٣٩

और मूसा की घटना में भी (अनेक निशान थे)। हम ने उसे जब फ़िरऔन की ओर एक खुला-खुला निशान दे कर भेजा ।३९।

فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ

और वह (फ़िरऔन) विमुख हो कर अपने देवालय[1] की ओर लौट गया तथा कहने लगा

---

1. मूल शब्द 'रुकुन' का अर्थ है शक्ति प्राप्त करने का स्थान। आयत का भाव यह है कि फ़िरऔन अपने शक्ति भण्डार की ओर लौट गया। फ़िरऔन को उस के मंतव्य के अनुसार समस्त शक्तियाँ बैल के मन्दिर से मिलती थीं। अतः हम ने अनुवाद में देवालय इन्हीं अर्थों को ध्यान में रख कर लिखा है।

أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٣٩﴾

कि मूसा बड़ी चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाला और पागल है।४०।

فَأَخَذْنٰهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٤٠﴾

इस पर हम ने उसे तथा उस के सेना-दलों को पकड़ लिया और उन सब को समुद्र में फेंक दिया तथा आज तक उन पर फटकार पड़ रही है।४१।

وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ﴿٤١﴾

और (हम ने) आद की घटना में भी (अनेक निशान छोड़े हैं उस समय) जब कि हम ने उन पर एक भयंकर आँधी चलाई थी।४२।

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ ﴿٤٢﴾

वह जिस वस्तु पर भी चलती थी उसे विनष्ट कर देती थी और उसे गली हुई हड्डियों की भाँति बना देती थी।४३।

وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتّٰى حِينٍ ﴿٤٣﴾

और समूद में भी (हम ने निशान छोड़े हैं) जब उन से कहा गया कि एक समय तक लाभ उठाओ[1]।४४।

فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٤٤﴾

और उन्हों ने अपने रब्ब के आदेश की अवज्ञा की तथा उन्हें एक अज़ाब ने आ पकड़ा और वे देखने के देखते रह गए।४५।

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنْتَصِرِينَ ﴿٤٥﴾

वे न तो बच रहने के लिए खड़े[2] रह सके तथा न वे किसी की सहायता ही प्राप्त कर सके।४६।

وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا

और हम उन से पहले नूह की जाति के लोगों का सर्वनाश कर चुके थे। वह आज्ञा भंग

1. इस से यह अभिप्राय है कि कुछ समय के पश्चात् तुम्हें अज़ाब पकड़ लेगा जिस के पश्चात् तुम सांसारिक साधनों से लाभ उठाने के योग्य नहीं रहोगे।

2. उन्हें इतनी भी शक्ति न मिली कि वे अपने पाँव पर खड़े हो कर बच सकते।

قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝٤٦

करने वाली जाति के लोग थे।४७। (रुकू २/१)

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ۝٤٧

और हम ने आसमान को भी अनेक गुणों से बनाया[1] है तथा हम बहुत शक्ति रखते हैं।४८।

وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ۝٤٨

और हम ने ज़मीन को एक बिछौना के रूप में बनाया है और हम बहुत अच्छा बिछौना बनाने वाले हैं।४९।

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝٤٩

और हम ने समस्त प्रकार की वस्तुओं के (नर-नारी) जोड़े बनाए हैं ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।५०।

فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٥٠

अतः (चाहिए कि) तुम अल्लाह की ओर दौड़ो। मैं उस की ओर से तुम्हारे लिए खुले रूप में सावधान करने वाला बन कर आया हूँ।५१।

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ ۭ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٥١

और तुम अल्लाह के साथ किसी दूसरे को उपास्य न बनाओ। मैं उस की ओर से तुम्हें खुला-खुला सावधान करने वाला हूँ।५२।

كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ۝٥٢

इसी प्रकार[2] जो रसूल उन से पहले आते रहे उन्हें लोगों ने यही कहा कि वे मन-मोहक बातें करने वाले अथवा पागल हैं।५३।

1. मूल शब्द 'बिऐदिन' का अर्थ है कई हाथों से बनाया। शब्द कोष में हाथ का अर्थ है—शक्ति, सामर्थ्य, अधिकार, बल। अल्लाह की शक्ति के लिए धार्मिक परिभाषा में 'गुण' शब्द प्रयुक्त होता है। इसलिए हम ने अनुवाद किया है कि 'हम ने आसमान को भी अनेक गुणों से बनाया है' अर्थात् आसमान की रचना में अल्लाह की शक्ति का हाथ भी था और पवित्रता का भी एवं स्तुति का भी हाथ था। अतएव अनेक गुण आसमान से प्रकट होते हैं।

2. जिस प्रकार हज़रत मूसा और हज़रत मसीह की बातों को लोगों ने न माना तथा उन से पहले वाले रसूलों को भी सच्चा न समझा, उन्हें झूठा ठहराते रहे।

اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٥٣﴾

क्या वे इस बात के कहने की एक-दूसरे को वसीय्यत[1] कर गए थे ? (कदापि नहीं) बल्कि वे सब के सब उद्दण्डी लोग हैं (इसी कारण उन के दिलों में एक ही प्रकार के गन्दे विचार पैदा होते हैं) ।५४।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿٥٤﴾

अत: (हे नबी !) तू उन से मुँह फेर ले, क्योंकि तुझे उन के बुरे कर्मों के कारण कोई उलाहना नहीं दिया जाएगा ।५५।

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾

और याद दिलाता रह, क्योंकि याद दिलाना मोमिनों को लाभ देता है ।५६।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾

और मैं ने जिन्नों तथा मनुष्यों को अपनी उपासना के लिए पैदा किया है ।५७।

مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ﴿٥٧﴾

मैं उन से कोई रोजी नहीं माँगता तथा न मैं उन से यह चाहता हूँ कि वे मुझे भोजन कराएँ ।५८।

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿٥٨﴾

अल्लाह ही सब को भोजन कराने वाला है और वह बड़ी शक्ति वाला है ।५९।

فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٥٩﴾

अत: जिन्हों ने अत्याचार किया है उन के लिए भी ऐसे ही डोल (अर्थात् बदले) हैं जैसा कि उन के साथियों के लिए थे। अत: उन्हें चाहिए कि वे मुझ से अजाब माँगने की शीघ्रता न करें ।६०।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع ٣

और जिन्हों ने इन्कार किया है उन का उस दिन सर्वनाश होने वाला है जिस को उन से प्रतिज्ञा की जाती है ।६१। (रुकू ३/२)

---

1. समस्त विरोधी नास्तिकता को सिद्ध करने के लिए एक ही प्रकार के प्रमाण पेश करते थे। मानों वे एक-दूसरे को सिखा गए थे कि इस प्रकार नबियों का इन्कार कर देना ।
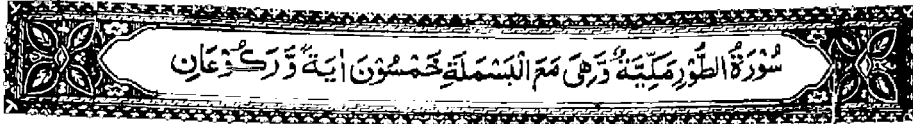
सूरः अल्-तूर

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह् सहित
इस की पचास आयतें तथा दो रुकू हैं।]

मैं अल्लाह् का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①
मैं तूर[1] को गवाही के रूप में पेश करता हूँ।२।	وَالطُّوْرِ ②
और (इस) लिखी[2] हुई किताब को भी।३।	وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ③
जो खुले[3] हुए काग़ज़ों पर (लिखी गई है)।४।	فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ④
और काबा[4] को जो सदा-सर्वदा आबाद रहेगा।५।	وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ⑤

1. हज़रत मूसा को अल्लाह् की ओर से तूर पर्वत पर किताब मिली थी, जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की सत्यता पर गवाह है।

2. लिखी हुई किताब से अभीष्ट क़ुर्आन-मजीद है जिस से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की सत्यता सूर्य की तरह सिद्ध होती है।

3. खुले हुए कागज़ों से यह तात्पर्य है कि वह किताब (क़ुर्आन) बार-बार पढ़ी जाएगी। एक सच्चा मुसलमान उसे इस लिए अपने घर में रखता है कि वह उसे हर समय पढ़ता रहे और वह हर समय खुली रहे।

4. हज़रत इब्राहीम के पश्चात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने हज्ज को ज़रूरी ठहराया है। मुसलमान सदा हज्ज करते रहेंगे और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की सच्चाई सिद्ध होती रहेगी।

और उस छत को जो सदैव ऊँची[1] रहेगी ।६।	وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ۝٦
और जोश मारने वाले समुद्र[2] को ।७।	وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ۝٧
निस्सन्देह तेरे रब्ब की ओर से अज़ाब अवश्य आ कर रहेगा ।८।	اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝٨
उसे कोई भी दूर करने वाला नहीं ।९।	مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۝٩
जिस[3] दिन बादल लहरें मारने लगेगा ।१०।	يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ۝١٠
और पर्वत[4] अपने पूर्ण गति से चलेंगे ।११।	وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝١١
अतः उस दिन झुठलाने वालों पर अज़ाब उतरेगा ।१२।	فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١٢
(अर्थात् उन लोगों पर) जो गन्द उछाल-उछाल कर खेल रहे थे ।१३।	الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ۝١٣
जिस दिन उन सब को नरक की आग की ओर धक्के दे कर ले जाया जाएगा ।१४।	يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۝١٤
और कहा जाएगा कि यही वह आग है जिस का तुम इन्कार किया करते थे ।१५।	هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ۝١٥

1. सदैव ऊँची रहने वाली छत से अभिप्राय काबा है और तात्पर्य यह है कि अल्लाह सदैव उस का सम्मान क़ायम रखेगा।

2. पवित्र क़ुर्आन समुद्र को आध्यात्मिक ज्ञान का निशान ठहराता है। अतः जोश मारने वाले समुद्र से तात्पर्य क़ुर्आनी-ज्ञान का भण्डार है जिस में से ज्ञान भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकट होता रहेगा तथा इस्लाम की सत्यता सिद्ध करता रहेगा।

3. मूल शब्द 'समा' का अर्थ बादल और आकाश होता है। इस स्थान पर इस का अर्थ बादल है। अभिप्राय यह है कि क़ुर्आन-मजीद के द्वारा अल्लाह की दया के बादल संसार पर छा जाएँ।

4. पर्वत से अभिप्राय है – महान् व्यक्ति या बड़े-बड़े सुसंगठित राज्य। तात्पर्य यह है कि जब क़ुर्आन की शिक्षाएँ विस्तार रूप से फैलेंगी तो अरब का प्राची। अनुशासन, क़ैसर और किस्रा की साम्राज्य प्रथा छिन्न-भिन्न हो जाएगी।

أَفَسِحْرٌ هَٰذَآ أَمْ أَنتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ﴿١٥﴾

क्या यह बनावट की बात थी या वस्तुतः तुम अब भी देख नहीं रहे ? ।१६।

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوٓا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

(यदि यह केवल एक भ्रम है तो बे धड़क) उस में प्रवेश कर जाओ और चाहे धैर्य धारण करो या धैर्य धारण न करो यह तुम्हारे लिए एक जैसा है। (जो होना है वह अवश्य हो कर रहेगा)। तुम्हें केवल तुम्हारे कर्मों का फल ही दिया जा रहा है ।१७।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّٰتٍ وَنَعِيمٍ ﴿١٧﴾

संयमी लोग स्वर्गों और निअमतों में होंगे ।१८।

فَٰكِهِينَ بِمَآ ءَاتَىٰهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَىٰهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿١٨﴾

उन्हें जो कुछ उन का रब्ब देगा वे उस पर प्रसन्न होंगे तथा उन का रब्ब उन्हें नरक के दण्ड से बचा लेगा ।१९।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيٓـًٔا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

(और कहेगा कि) खाओ और पीयो (जो तुम्हें दिया जाता है)। वह तुम्हारे कर्मों के कारण तुम्हारे लिए बरकत वाला होगा ।२०।

مُتَّكِـِٔينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ وَزَوَّجْنَٰهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٢٠﴾

वे उस दिन पंक्तियों में बिछे हुए सिंहासनों पर टेक लगाए बैठे होंगे तथा हम उन्हें मोटी सुन्दर आँखों वाली स्त्रियाँ जोड़े के रूप में प्रदान करेंगे ।२१।

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَٰنٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ أَلَتْنَٰهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَيْءٍ كُلُّ امْرِيٍٕ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ﴿٢١﴾

और जो लोग ईमान ला चुके हैं और उन की संतान भी ईमान के बारे में उन का अनुसरण करती है। हम उन के साथ उन की संतान को भी स्वर्ग में इकट्ठा कर देंगे और उन के (पूर्वजों के) कर्मों में भी कोई कमी नहीं करेंगे। प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के प्रतिफल के लिए बन्धक[1] है ।२२।

1. कोई भी अपने कर्मों का फल भोगने से इधर-उधर हो कर बच नहीं सकता।

وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢٢﴾

और हम उन्हें उन की इच्छा के अनुसार भाँति-भाँति के फल तथा भाँति-भाँति का मांस प्रस्तुत करेंगे।२३।

يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ﴿٢٣﴾

वे उस में ऐसे प्यालों[1] के बारे में झगड़ा करेंगे जिस का परिणाम न तो बकवास करना होगा और न पाप ही करना होगा।२४।

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٢٤﴾

और हर समय जवान सेवक उन की सेवा में मौजूद रहेंगे। मानों वे पर्दों में लिपटे हुए मोती[2] हैं।२५।

وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٥﴾

और वे परस्पर ध्यान से एक-दूसरे से वार्तालाप करेंगे।२६।

قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ﴿٢٦﴾

और कहेंगे कि हम लोग पहले[3] अपने निकट-सम्बन्धियों में अपने परिणाम से डरा करते थे।२७।

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾

परन्तु अल्लाह ने हम पर कृपा की और हमें गर्म लू के अज़ाब से बचा लिया।२८।

اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿٢٨﴾ ع

हम पहले से उस (अल्लाह) को पुकारा करते थे। वह बड़ा अच्छा व्यवहार करने वाला एवं अनन्त कृपा करने वाला है।२९। (रुकू १/३)

---

1. मरने के पश्चात् जिस वस्तु का नाम मदिरा रखा गया है उस से तात्पर्य ईश-प्रेम की मदिरा है। इस से मस्तिष्क में कोई विकार पैदा नहीं होता और न मनुष्य गाली-गलोच करता है।

2. अर्थात् पवित्र और शुद्ध आचरण वाले।

3. हम संसार में अनेक अवसरों पर इन्कार करने वाले लोगों की धमकियों से घबरा जाया करते थे, किन्तु आज हमें प्रत्येक प्रकार की विजय और शान्ति प्राप्त है।

فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ ۝٣٠

अतः (हे रसूल !) तू लोगों को उपदेश देता जा, क्योंकि तू अपने रब्ब की कृपा से न तो काहिन है और न पागल ही ।३०।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ۝٣١

क्या वे यह कहते हैं कि यह व्यक्ति कवि है और हम इस के लिए काल-चक्र में पड़ने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ? ।३१।

قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ۝٣٢

तू कह दे कि प्रतीक्षा करते चले जाओ, क्योंकि मैं भी तुम्हारे लिए प्रतीक्षा कर रहा हूँ ।३२।

اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ۝٣٣

क्या उन्हें उन की बुद्धि यही बात सिखाती है या फिर वे अक्खड़ जाति के लोग हैं ? ।३३।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝٣٤

अथवा वे यह कहते हैं कि उस ने अपने पास से झूठ-मूठ बात गढ़ ली है ? वास्तविक बात यह है कि वे (ईशवाणी के आने पर) ईमान ही नहीं रखते ।३४।

فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ۝٣٥

यदि वे सच्चे हैं तो इस जैसा कोई और कलाम ले आएँ ।३५।

اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ۝٣٦

क्या उन्हें किसी उद्देश्य के बिना ही पैदा किया गया है अथवा वे स्वयं ही अपने-आप को पैदा करने वाले हैं ? ।३६।

اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ۝٣٧

क्या उन्हों ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है ? (नहीं) अपितु वास्तविकता यह है कि ये लोग (आसमान और ज़मीन के पैदा करने वाले पर) विश्वास ही नहीं रखते ।३७।

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ﴿٣٨﴾

क्या उन के पास तेरे रब्ब के ख़ज़ाने हैं या वे दारोगे हैं ? ।३८।

اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٩﴾

क्या उन के पास कोई सीढ़ी है जिस पर चढ़ कर वे (अल्लाह की बातें) सुनते हैं ? अतः चाहिए कि उन का सुनने वाला (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की भाँति) कोई सुस्पष्ट युक्ति पेश करे ।३९।

اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ﴿٤٠﴾

क्या अल्लाह के लिए तो पुत्रियाँ हैं तथा तुम्हारे लिए पुत्र ? ।४०।

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤١﴾

क्या तू उन से कोई प्रतिफल माँगता है कि वे उस चट्टी के कारण दबे जा रहे हैं ? ।४१।

اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤٢﴾

क्या उन्हें परोक्ष का ज्ञान है जिसे वे लिख लेते हैं ? ।४२।

اَمْ يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا ۚ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِيْدُوْنَ ﴿٤٣﴾

क्या वे तेरे विरुद्ध कोई षड्यन्त्र रचना चाहते हैं ? याद रखो कि उन इन्कार करने वालों के विरुद्ध ही (अल्लाह की ओर से) उपाय किए जाएँगे ।४३।

اَمْ لَهُمْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٤﴾

क्या अल्लाह के सिवा उन का कोई और उपास्य है ? (याद रखो) अल्लाह उन के शिर्क से पवित्र है ।४४

وَاِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ ﴿٤٥﴾

और यदि वे आकाश में बादल का कोई टुकड़ा बरसता हुआ देखें तो कहते हैं कि यह तो केवल एक घना बादल है ।४५।

فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ

अतः तू उन्हें (उन की मूर्खता में) छोड़ दे, यहाँ तक कि वे अपने निश्चित दिन को देख लें जिस में (उन पर कड़ा अज़ाब उतारा

يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾

जाएगा और) डर के मारे वे बेहोश कर दिए जाएँगे ।४६।

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ﴿٤٦﴾

जिस दिन उन्हें उन का कोई उपाय कुछ लाभ न देगा तथा न उन की सहायता ही की जाएगी ।४७।

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

और अत्याचारियों को इस के अतिरिक्त और भी अज़ाब पहुँचेंगे किन्तु उन में से अधिकतर लोग नहीं जानते ।४८।

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٤٨﴾

और तू अपने रब्ब के आदेश पर क़ायम रह, क्योंकि तू हमारी आँखों के सामने (हमारे संरक्षण में) है और चाहिए कि जब तू (उपासनार्थ) खड़ा हो तो हमारी स्तुति के साथ-साथ हमारी पवित्रता का गुणगान भी करता रह ।४९।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿٤٩﴾

और इसी प्रकार (जब तू) रात के समय खड़ा हो तो उस (अल्लाह) की पवित्रता का यशोगान करता रह और जब नक्षत्रगण पीठ फेर[1] लें तब भी ।५०। (रुकू २/४)

---

1. अर्थात् जब रात समाप्त होने को हो ।
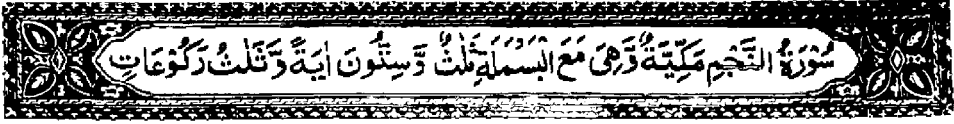
सूरः अल्-नजम

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित
इस की तिरसठ आयतें एवं तीन रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ②

मैं सुरय्या[1] नामक नक्षत्र को इस बात की गवाही के लिए पेश करता हूँ जब वह (आध्यात्मिक दृष्टि से) नीचे आ जाएगा।२।

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ③

कि तुम्हारा साथी न तो रास्ता भूला हुआ है और न पथभ्रष्ट[2] ही है।३।

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ④

और वह अपनी मन चाही बातें नहीं करता।४।

اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ⑤

बल्कि वह (क़ुर्आन) केवल अल्लाह की ओर से उतरने वाली वह्य है।५।

---

1. यह उस भविष्यवाणी की ओर संकेत है जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने की है कि "यदि ईमान सुरय्या नामक नक्षत्र पर चला जाएगा तो पारसी जाति का एक व्यक्ति उसे वहाँ से वापस ले आएगा।

2. जब उस महान् पुरुष का प्रादुर्भाव होगा तो हर एक व्यक्ति पर खुल जाएगा कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की शिक्षा कामिल थी। वह न तो रास्ता भूले हुए थे और न पथभ्रष्ट थे तथा न मानसिक-विषयवासनाओं ही के वशीभूत थे।

عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۝

इस (कलाम) को महान् शक्तियों वाले (अल्लाह्) ने सिखाया है ।६।

ذُوْ مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰى ۝

जिस की शक्तियाँ बार-बार प्रकट होने वाली हैं और जो अपनी शक्तियों को प्रकट करने के लिए इस समय अर्श पर क़ायम हो गया है ।७।

وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ۝

और प्रत्येक सूक्ष्मदर्शी को उस के प्रकट होने के चिन्ह् आकाश के किनारों पर दिखाई दे रहे हैं ।८।

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۝

और वह[1] (अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम अल्लाह् से मिलने के लिए) उस के निकट हुए तथा वह् (अल्लाह् भी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से मिलने के लिए) ऊपर से नीचे आ गया[1] ।९।

---

1. संसार वालों की व्याकुलता देख कर उन पर दया करते हुए हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने आध्यात्मिक रूप में अल्लाह् से मिलने के लिए ऊपर चढ़ना प्रारम्भ किया । जिस पर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से मिलने के लिए अल्लाह् के प्रेम में भी एक जोश पैदा हुआ तथा वह् भी नीचे उतरने लगा ताकि मुहम्मदियत के प्रेम-बिन्दु से मिल जाए और वे दोनों इस प्रकार परस्पर मिल गए जिस प्रकार दो धनुषों को मिला कर एक बाण चलाया जाए अर्थात् इस भाँति कि जहाँ एक धनुष का बाण पड़े दूसरे धनुष का बाण भी वहीं पड़े । दो धनुष इसलिए कहा कि दो धनुषों की डोरी कड़ी हो जाती है और बाण की चोट अधिक ज़ोर से पड़ती है ।

इस आयत से सिद्ध होता है कि मेराज आध्यात्मिक रूप से हुआ था न कि शारीरिक रूप से तथा यह् दो बार हुआ था न कि एक बार जैसा कि कुछ मुसलमानों का विचार है । कुछ भाष्यकारों ने इस आयत से धोखा खा कर 'इस्रा' की आयतों को 'मेराज' की आयतें ठहरा दिया है । वास्तव में इस्रा की घटना इसी संसार से सम्बन्धित है, परन्तु 'मेराज' में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की आत्मा आकाश पर गई थी और इसी के बारे में बताया है कि यह घटना दो बार हुई थी । एक बार 'दना' के रूप में अर्थात् जब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम अल्लाह् से मिलने के लिए गए थे तथा दूसरी बार 'तदल्ला' के रूप में अर्थात् जब अल्लाह् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से मिलने के लिए ऊपर से नीचे आया ।

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنٰى ⑩	और वे दोनों दो धनुषों के मिले हुए वतर (अर्थात् अर्ध गोलाकार की डोरी) के रूप में बदल गए और होते-होते उस से भी अधिक निकट हो गए।१०।
فَأَوْحٰى إِلٰى عَبْدِهٖ مَا أَوْحٰى ⑪	अतः उस ने अपने भक्त पर वह्य उतारी जिस का वह निर्णय कर चुका था।११।
مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأٰى ⑫	(हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के) दिल ने जो कुछ देखा था वही बताया।१२।
أَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ⑬	क्या तुम उस (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम) से उस (दृश्य) के बारे में झगड़ते हो जो उस ने आकाश पर देखा था?।१३।
وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً أُخْرٰى ⑭	वस्तुतः उस ने यह (दृश्य) एक बार नहीं देखा, अपितु दो[2] बार देखा है।१४।
عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ⑮	(अर्थात्) एक ऐसी बेरी[3] के पास जो अन्तिम सीमा पर है।१५।

1. मूल शब्द 'दना' का अर्थ है अर्श के निकट होना और तदल्ला का अर्थ है एक व्यक्ति सामीप्य प्राप्ती के उदेद्श्य से दूसरे व्यक्ति की ओर बढ़े तो दूसरा व्यक्ति भी उस के निकट होने का प्रयत्न करे।

2. पहली बार उस समय देखा जब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम अल्लाह का सामीप्य पाने का प्रयत्न कर रहे थे तथा दूसरी बार उस समय जब अल्लाह आप की ओर उतर कर आया।

3. बेरी के वृक्ष के बारे में यह समझा जाता है कि उस में अमृत का गुण पाया जाता है। इसीलिए मुर्दों के शरीर को बेरी के पत्ते उबाल कर उस पानी से नहलाते हैं ताकि वे सड़े नहीं। इस स्थान पर 'सिद्रा' (बेरी) शब्द से इसी की ओर संकेत है और बताया है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर अल्लाह 'सिद्रा' (बेरी) द्वारा उतरा अर्थात् आप को ऐसी शिक्षा दी है जो सड़ कर विकार ग्रस्त होने वाली नहीं थी,

(शेष पृष्ठ १०७२ पर)

عِندَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَىٰ ⑮	उसी के पास वह स्वर्ग है जो सदा का ठिकाना है।१६।
إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ ⑯	और यह दृश्य देखा भी उस समय था जब बेरी को उस[1] वस्तु ने ढाँप लिया था जो ऐसे समय में ढाँप लिया करती है।१७।
مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ ⑰	उस समय उस की निगाह न तो टेढ़ी[2] हुई और न आगे ही निकली।१८।
لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ ⑱	उस समय उस ने अपने रब्ब के बड़े-बड़े निशानों में एक बड़ा निशान देखा।१९।
أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ ⑲	तुम भी तनिक 'लात' और 'उज़्ज़ा' का हाल सुनाओ। (क्या उन की भी यही शान है ?)।२०।
وَمَنَاةَ الثَّالِثَةَ الْأُخْرَىٰ ⑳	और तीसरे 'मनात' का भी, जो उन के सिवा और है।२१।
أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ ㉑	क्या तुम्हारे लिए तो पुत्र हैं और उस (अल्लाह) के लिए पुत्रियाँ ?।२२।
تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ ㉒	यह तो बहुत ही भद्दा बटवारा है।२३।

(पृष्ठ १०७१ का शेष)

बल्कि दूसरों को सड़ने से बचाने वाली है, जैसे बताया है कि पहले समय की समस्त किताबें पवित्र क़ुर्आन द्वारा सुरक्षित कर दी गई हैं। (सूरः बय्यनः आयत 4) क्योंकि उन सब का तत्व क़ुर्आन कदापि नष्ट नहीं होगा और इस के साथ ही इस के द्वारा वे शिक्षाएं भी जीवित रहेंगी।

1. अर्थात् ईश्वरीय चमत्कार।

2. अर्थात् 'मेराज' के देखने में किसी भूल की सम्भावना नहीं थी। वह एक बड़ी शान वाला कश्फ़ था। केवल एक साधारण स्वप्न या एक साधारण सा कश्फ़ नहीं था।

إِنْ هِيَ إِلَّآ أَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوهَآ أَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ أَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ إِنْ يَّتَّبِعُوْنَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾

ये तो केवल कुछ नाम हैं जो तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिए हैं (अन्यथा इन में वास्तविकता कुछ भी नहीं)। अल्लाह ने इन (मूर्तियों) के लिए कोई युक्ति नहीं उतारी। वे केवल एक भ्रम और कुछ मानसिक इच्छाओं के पीछे चल रहे हैं और उन के पास उन के रब्ब की ओर से हिदायत आ चुकी है, (किन्तु वे फिर भी नहीं समझते) ।२४।

أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿٢٤﴾

क्या मनुष्य जो भी इच्छा करता है वह उसे मिल जाती है? ।२५।

فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْأُوْلٰى ﴿٢٥﴾

सो याद रहे कि आख़िरत तथा संसार की समस्त निअमतें अल्लाह के ही अधीन हैं ।२६। (रुकू १/५)

وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَّأْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾

और आकाश में बहुत से फ़रिश्ते हैं कि उन की शफ़ाअत (अर्थात् सिफ़ारिश) किसी को कुछ लाभ नहीं देगी, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे अल्लाह ऐसा करने की आज्ञा दे, जिसे वह अपनी इच्छा के अनुकूल पाता हो और उसे पसन्द करता हो ।२७।

إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنْثٰى ﴿٢٧﴾

जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते वे फ़रिश्तों के नाम स्त्रियों जैसे रखते हैं ।२८।

وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ۭ إِنْ يَّتَّبِعُوْنَ إِلَّا الظَّنَّ ۚ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ﴿٢٨﴾

और उन्हें इस बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं। वे केवल भ्रम में पड़े हुए हैं और भ्रम सत्य के मुक़ाबिले में कुछ भी लाभ नहीं देता ।२९।

فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۞

और जो व्यक्ति हमारे ज़िक्र[1] से मुँह फेर लेता है तथा सांसारिक जीवन के सिवा और कुछ नहीं चाहता। तू भी उस से मुँह फेर ले तथा उस का अनुसरण न कर।३०।

ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ۞

यह है उन लोगों के ज्ञान की चरमसीमा। निस्सन्देह तेरा रब्ब उस व्यक्ति को भली-भाँति जानता है जो उसके रास्ते से भटक जाता है तथा उसे भी जानता है जो सम्मार्ग को अपना लेता है।३१।

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ۚ ۞

और आसमानों तथा ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह् के आधिपत्य में है। उस का यह परिणाम होता है कि जिन्हों ने पाप किया वह उन के कर्मों के अनुसार उन्हें बदला देता है, परन्तु जिन्हों ने नेकी की उन्हें अच्छा फल प्रदान करता है।३२।

اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِىْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۚ ۞ ع

ऐसे लोग जो बड़े पापों और अश्लील बातों से बचते रहते हैं, परन्तु यह कि (भूल से) छोटे से अपराध को भी छूएं (फिर पछताने लगें) तो तेरा रब्ब बड़े विशाल रूप में क्षमा करने वाला है। वह तुम्हें उस समय से भली-भाँति जानता है जब उस ने तुम्हें धरती से पैदा किया और जब कि तुम अपनी माताओं के पेट में छिपे हुए थे। अतः अपनी जानों को पवित्र मत ठहराओ। अल्लाह् ही संयमियों को ख़ूब अच्छी तरह जानता है।३३। (रुकू २/६)

---

1. पवित्र क़ुर्आन में 'ज़िक्र' रसूल के लिए भी प्रयुक्त हुआ है और क़ुर्आन के लिए भी। यहाँ ज़िक्र से अभिप्राय हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम भी हो सकते हैं और क़ुर्आन मजीद भी।

اَفَرَءَيۡتَ الَّذِىۡ تَوَلّٰىۙ ﴿۳۴﴾	क्या तू उस व्यक्ति को जानता है जिस ने (तेरी वह्य से) मुँह फेर लिया? ।३४।
وَاَعۡطٰى قَلِيۡلًا وَّاَكۡدٰى ﴿۳۵﴾	और अल्लाह की राह में थोड़ा सा (दान) दिया तथा फिर कंजूसी से काम लेने लगा ।३५।
اَعِنۡدَهٗ عِلۡمُ الۡغَيۡبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿۳۶﴾	क्या उस के पास परोक्ष का ज्ञान है और वह अपना परिणाम देख रहा है? ।३६।
اَمۡ لَمۡ يُنَبَّاۡ بِمَا فِىۡ صُحُفِ مُوۡسٰىۙ ﴿۳۷﴾	क्या मूसा की किताबों में जो कुछ है उसे उस का ज्ञान नहीं दिया गया? ।३७।
وَاِبۡرٰهِيۡمَ الَّذِىۡ وَفّٰىۙ ﴿۳۸﴾	और विश्वास-पात्र इब्राहीम की किताबों का भी (ज्ञान नहीं दिया गया?) ।३८।
اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزۡرَ اُخۡرٰىۙ ﴿۳۹﴾	(जो यह है कि) कोई बोझ[1] उठाने वाली जान दूसरे का बोझ नहीं उठा सकती ।३९।
وَاَنۡ لَّيۡسَ لِلۡاِنۡسَانِ اِلَّا مَا سَعٰىۙ ﴿۴۰﴾	और मनुष्य को वही मिलता है जिस की वह कोशिश करता है ।४०।
وَاَنَّ سَعۡيَهٗ سَوۡفَ يُرٰى ﴿۴۱﴾	(और उन किताबों में लिखा है कि) वह (मनुष्य) अपनी कोशिशों का परिणाम अवश्य देख लेगा ।४१।
ثُمَّ يُجۡزٰٮهُ الۡجَزَآءَ الۡاَوۡفٰىۙ ﴿۴۲﴾	और उसे पूरा-पूरा प्रतिफल मिलेगा ।४२।
وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الۡمُنۡتَهٰىۙ ﴿۴۳﴾	और यह भी कि (विगत तथा वर्तमान समस्त जातियों का) अन्तिम निर्णय तेरे रब्ब के हाथ में है ।४३।

1. ईसाई लोग कहते हैं कि इस से यह अभिप्राय है कि कफ्फ़ारा केवल निर्दोष व्यक्ति ही दे सकता है और ऐसा व्यक्ति केवल हज़रत मसीह था। वास्तविक बात यह है कि क़ुर्आन-मजीद एवं बाइबिल के अनुसार निर्दोष व्यक्ति केवल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ही थे। इस आयत का केवल यह अर्थ है

(शेष पृष्ठ ११७६ पर)

وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ۝

और यह कि वही हँसाता है तथा वही रुलाता है ।४४।

وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ۝

और वही मौत देता है तथा वही जीवित करता है ।४५।

وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝

और उसी ने सब (जीवधारियों) को नर तथा मादा के रूप में पैदा किया है ।४६।

مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ۝

(अर्थात् सब को) वीर्य्य से (पैदा किया है) जब वह (माँ के पेट में) डाला जाता है ।४७।

وَاَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ۝

और यह कि दूसरी बार पैदा करना भी उसी पर है ।४८।

وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ۝

और यह कि वही धनवान बनाता है तथा वही निर्धन बनाता है ।४९।

وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ۝

और वही 'शिएरा' (नामक नक्षत्र) का स्वामी है ।५०।

وَاَنَّهٗۤ اَهْلَكَ عَادَا ۨالْاُوْلٰى ۝

और उसी ने पहली आद जाति का विनाश किया था ।५१।

وَثَمُوْدَاۡ فَمَاۤ اَبْقٰى ۝

और उन के पश्चात् समूद का भी और अज़ाब ने उन का कुछ नहीं छोड़ा था ।५२।

وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ۝

और उन से पहले नूह की जाति का भी। वे बहुत अत्याचार किया करते थे तथा बड़े अक्खड़ और सरकश थे ।५३।

(पृष्ठ १०८३ का शेष)

कि जो व्यक्ति बोझ उठाने की हालत में पैदा किया गया हो वह किसी दूसरे का बोझ नहीं उठा सकता, क्योंकि वह तो अल्लाह के आदेशों के अधीन है। अतः बोझ तो केवल अल्लाह ही उठा सकता है जिसे कोई आदेश देने वाला नहीं।

وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ﴿٥٣﴾	और उथल-पुथल की हुई बस्तियों को भी उस ने ऊपर से नीचे गिराया था ।५४।
فَغَشّٰهَا مَا غَشّٰى ﴿٥٤﴾	फिर उन्हें उस वस्तु ने ढाँप[1] लिया जो ऐसे अवसरों पर ढाँप लिया करती है ।५५।
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿٥٥﴾	अतः तू अपने रब्ब की किस-किस निअमत पर शंका करेगा ।५६।
هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿٥٦﴾	हमारा यह रसूल भी पहले रसूलों जैसा एक रसूल है ।५७।
اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ﴿٥٧﴾	(इस जाति के निर्णय की) घड़ी निकट आ गई है ।५८।
لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾	अल्लाह के सिवा उसे कोई टला नहीं सकता ।५९।
اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ﴿٥٩﴾	क्या तुम इस बात पर आश्चर्य करते हो ? ।६०।
وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ﴿٦٠﴾	और हँसते हो तथा रोते नहीं ? ।६१।
وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿٦١﴾	और तुम आश्चर्य-चकित खड़े हो। (ठीक निर्णय करने में असमर्थ हो) ।६२।
فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ﴿٦٢﴾	(सो उठो) और अल्लाह के सामने सजद: करो तथा उसी की उपासना करो ।६३। (रुकू ३/७)

1. अर्थात् दैवी प्रकोप।
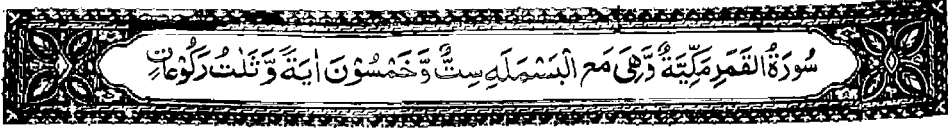
सूरः अल्-क़मर

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की छप्पन आयते एवं तीन रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ②

(अरब के) सर्वनाश की घड़ी आ गई है और चाँद[1] फट गया है ।२।

وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ③

और यदि वे कोई निशान देखेंगे तो अवश्य मुँह फेर लेंगे तथा कह देंगे कि यह तो केवल एक धोखा है जो सदा से चला आ आता[2] है। ।३।

وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ④

और उन्हों ने झुठला दिया तथा अपनी इच्छाओं के पीछे चले और प्रत्येक कार्य के (पूरा होने के) लिए एक समय निश्चित होता है ।४।

---

1. अरब देश के लोग चाँद को अरब के शासन का चिन्ह मानते थे और यहूदी भी यही विश्वास रखते थे अत: चन्द्रमा के फट जाने और अरब के राज्य के सर्वनाश का एक अर्थ यह है कि 'साअत' (घड़ी) अर्थात् अरब के सर्वनाश की घड़ी आ गई है और चन्द्रमा अर्थात् अरब के पुराने शासन का विकास चूर्ण-विचूर्ण हो गया है।

2. इस से यह अभिप्राय है कि ऐसी छल-कपट भरी बातें सदैव ही नबी कहते चले आए हैं।

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ۝٥

और उन के पास ऐसी परिस्थितियाँ आ चुकी हैं जिन में चेतावनी के साधन थे ।५।

حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ۝٦

और ऐसी हिक्मत की बातें भी थीं जो प्रभावशाली थीं, परन्तु (खेद है कि) डराने वाले (रसूल) ने उन्हें कोई लाभ न पहुँचाया ।६।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝٧

अतः तू उन से मुँह फेर ले और उस समय की प्रतीक्षा कर कि बुलाने वाला उन्हें एक अप्रिय बात (अर्थात् अज़ाब) की ओर बुलाएगा ।७।

خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۝٨

उन की आँखें झुकी हुई होंगी । वे क़ब्रों से इस प्रकार निकलेंगे मानों वे बिखरी हुई टिड्डियां हैं ।८।

مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝٩

वे बुलाने वाले की ओर भागे जा रहे होंगे और इन्कार करने वाले लोग यह भी कहते जा रहे होंगे कि यह तो बड़े कष्ट वाला दिन है ।९।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ۝١٠

उन से पहले नूह की जाति ने झुठलाया और हमारे भक्त की बातों को झुठलाया तथा कहा कि यह पागल है और (हमारी मूर्तियों की ओर से) इस पर फटकार डाली गई है ।१०।

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ۝١١

अन्ततः उस ने अपने रब्ब से प्रार्थना की और कहा कि शत्रु ने मुझे दबा लिया है । अतः तू मेरा बदला ले ।११।

فَفَتَحْنَاۤ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝١٢

जिस पर हम ने आसमान के द्वार एक जोश से बहने वाले पानी के द्वारा खोल दिए ।१२।

وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰۤى اَمْرٍ

और हम ने ज़मीन में भी स्रोत फोड़ दिए । अतः (आसमान का) पानी (ज़मीन के साथ)

قَدْ قُدِرَ ﴿١٣﴾	एक ऐसी बात के लिए इकट्ठा हो गया जिस का निर्णय हो चुका था ।१३।
وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ﴿١٤﴾	और हम ने उस (नूह) को तख़्तों और कीलों से बनी हुई एक वस्तु (नौका) पर उठा लिया ।१४।
تَجْرِىْ بِاَعْيُنِنَا جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ﴿١٥﴾	वह हमारी आँखों के सामने (हमारे संरक्षण में) चलती थी । यह उस व्यक्ति का प्रतिफल था जिस का इन्कार किया गया था ।१५।
وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٦﴾	और हम ने इस घटना को (आने वाली जातियों के लिए) एक निशान के रूप में छोड़ा[1] । सो क्या कोई शिक्षा प्राप्त करने वाला है ? ।१६।
فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ﴿١٧﴾	और देखो। मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा (कड़ा तथा ठीक) था ।१७।
وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٨﴾	हम ने क़ुर्आन को कार्य रूप में अपनाने के लिए आसान बनाया है। अतः क्या कोई शिक्षा प्राप्त करने वाला है ? ।१८।
كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ﴿١٩﴾	आद ने भी अपने रसूल का इन्कार किया था। फिर देखो मेरा अज़ाब (कैसा कड़ा) तथा मेरा डराना कैसा (सच्चा) था ।१९।
اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِىْ يَوْمِ نَحْسٍ	हम ने उन पर एक ऐसी हवा भेजी जो तेज़ चलने वाली थी और एक देर तक रहने वाली

1. संसार के प्रायः सभी जातियों के इतिहास से एक भयंकर बाढ़ का वृत्तान्त मिलता है जो संसार के एक बड़े भू-भाग पर आई थी और हज़रत नूह के समय की बाढ़ जैसी थी ।

مُّسْتَمِرٍّ ﴿٢٠﴾

अशुभ[1] घड़ी में चलाई थी ।२०।

تَنْزِعُ النَّاسَ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢١﴾

वह लोगों को इस प्रकार उखाड़ फेंकती थी, मानों वे खजूर के ऐसे तने हैं जिन के भीतर का गूदा खाया हुआ था ।२१।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٢٢﴾

अतः देखो ! मेरा अज़ाब (कैसा कड़ा) तथा मेरा डराना कैसा (सच्चा) था ।२२।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٢٣﴾ ع

और हम ने क़ुर्आन को कार्य रूप में अपनाने के लिए बहुत आसान बनाया है। अतः क्या कोई शिक्षा प्राप्त करने वाला है ? ।२३। (रुकू १/८)

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٤﴾

समूद ने भी नबियों[2] का इन्कार किया था ।२४।

فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ اِنَّآ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٢٥﴾

और कहा था कि क्या हम अपने में से ही एक व्यक्ति का (जो हमारी ओर भेज दिया गया है) अनुसरण करें ? यदि हम ऐसा करेंगे तो घोर पथभ्रष्टता और जलने वाले अज़ाब में पड़ जाएँगे ।२५।

ءَاُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ﴿٢٦﴾

क्या अल्लाह की वह्य हम में से केवल उस पर उतरी है ? वास्तविकता यह है कि वह बड़ा झूठा और अभिमानी है ।२६।

---

1. अशुभ से यह अभिप्राय नहीं कि कोई समय अशुभ होता है तथा कोई शुभ, अपितु तात्पर्य यह है कि वह समय उस जाति के लिए अशुभ हो गया था।

2. समूद जाति की ओर हज़रत सालिह आए थे। इसलिए इस स्थान पर केवल हज़रत सालिह का वर्णन है, परन्तु उन के इन्कार को समस्त नबियों का इन्कार कहा गया है। इस का यह कारण है कि समस्त नबियों की सच्चाई के प्रमाण एक जैसे होते हैं। अतः एक नबी का इन्कार करना समस्त नबियों का इन्कार समझा जाता है।

سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ﴿٢٦﴾

हम ने कहा कि उन्हें कल (भविष्य में) विदित हो जाएगा कि कौन झूठा तथा अभिमानी है ? ।२७।

اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾

(हम ने उन्हें कहा कि) हम एक ऊँटनी उन की परीक्षा के लिए भेजने वाले हैं। (अत: हे सालिह !) इन के परिणाम की प्रतीक्षा कर और धैर्य से काम ले ।२८।

وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾

और उन्हें कह दे कि उन के तथा तेरे बीच पानी का बटवारा कर दिया गया है। हर-एक गिरोह् अपने पीने के समय पर आया करे ।२९।

فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾

इस पर उन्हों ने अपने सरदार को बुलाया जिस पर वह आ गया और ऊँटनी की कूँचें[1] काट दीं ।३०।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾

फिर देखो ! मेरा अज़ाब (कैसा कड़ा) और मेरा डराना कैसा (सच्चा) था ।३१।

اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوْا كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾

हम ने उन पर एक ही अज़ाब उतारा और वे एक बाड़ बनाने वाले (वृक्षों से) गिराए हुए चूरे की तरह हो गए ।३२।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾

और हम ने क़ुर्आन को कार्य रूप में अपनाने के लिए आसान बनाया है। अत: क्या कोई शिक्षा प्राप्त करने वाला है ? ।३३।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍۭ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾

लूत की जाति ने भी नबियों को झुठलाया था ।३४।

---

1. विवरण के लिए देखिए सूर: आराफ़ टिप्पणी आयत 78 ।

إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّآ ءَالَ لُوطٍ نَّجَّيْنَٰهُم بِسَحَرٍ ﴿٣٥﴾

हम ने उन के सर्वनाश के लिए भी कंकड़ों से भरी हुई आँधी चलाई (जिस ने लूत के परिवार के सिवा शेष सब को नष्ट कर दिया)। हाँ ! प्रातः काल (जब वह अज़ाब आया तो) हम ने लूत के परिवार को बचा लिया ।३५।

نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِى مَن شَكَرَ ﴿٣٦﴾

यह हमारी ओर से एक निअमत थी। जो व्यक्ति धन्यवाद करता है उसे हम इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान किया करते हैं।३६।

وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا۟ بِٱلنُّذُرِ ﴿٣٧﴾

और उस (लूत) ने उन को हमारे अज़ाब की सूचना पहले से ही दे दी थी, परन्तु वे नबियों से प्रतिवाद करने लग गए।३७।

وَلَقَدْ رَٰوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِۦ فَطَمَسْنَآ أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا۟ عَذَابِى وَنُذُرِ ﴿٣٨﴾

और उन्हों ने उसे अपने अतिथियों के विरुद्ध बहकाना[1] चाहा और हम ने उन की आँखों पर पर्दा डाल दिया और कहा कि मेरे अज़ाब और मेरे डराने का मज़ा चखो।३८।

وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٩﴾

और प्रातः काल ही उन पर एक ऐसा अज़ाब आ गया जो आ कर ही रहने वाला था।३९।

فَذُوقُوا۟ عَذَابِى وَنُذُرِ ﴿٤٠﴾

(हम ने उन से कहा कि) मेरे अज़ाब और मेरे डराने का मज़ा चखो।४०।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا ٱلْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٤١﴾

हम ने क़ुर्आन को कार्य रूप में अपनाने के लिए आसान बनाया है। सो क्या कोई शिक्षा प्राप्त करने वाला है ?।४१। (रुकू २/९)

وَلَقَدْ جَآءَ ءَالَ فِرْعَوْنَ ٱلنُّذُرُ ﴿٤٢﴾

और फ़िरऔन की जाति के पास भी नबी आए थे।४२।

1. अर्थात् उसे कहा कि उन्हें नगर से निकाल दो।

كَذَّبُوا بِآيٰتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنٰهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٣﴾

परन्तु फ़िरऔन की जाति ने हमारी सारी आयतों को झुठलाया, जिस पर हम ने उन्हें एक सामर्थ्यवान् और शक्तिशाली की तरह अज़ाब से पकड़ लिया ।४३।

أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ أُولٰٓئِكُمْ أَمْ لَكُم بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٤﴾

(हे मक्का वालो !) क्या तुम में से इन्कार करने वाले उन पहले लोगों से अच्छे हैं ? अथवा तुम्हारे लिए पहली किताबों में अज़ाब से सुरक्षित रहना लिखा हुआ है ? ।४४।

أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ﴿٤٥﴾

क्या वे कहते हैं कि हम एक जत्था हैं जो ग़ालिब आ कर रहेंगे ? ।४५।

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ﴿٤٦﴾

उन के जत्थे को जल्द[1] ही पराजित किया जाएगा और वे पीठ फेर कर भाग जाएँगे ।४६।

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهٰى وَأَمَرُّ ﴿٤٧﴾

बल्कि उन के सर्वनाश की घड़ी की प्रतिज्ञा की गई है और वह प्रतिज्ञा वाली घड़ी बहुत नाश करने वाली और कड़ी होगी ।४७।

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلٰلٍ وَسُعُرٍ ﴿٤٨﴾

(निश्चय ही) अपराधी लोग गुमराही और जलाने वाले अज़ाब में पड़े होंगे ।४८।

يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٩﴾

जिस दिन वे अपने सरदारों सहित आग में घसीटे जाएँगे (और उन्हें कहा जाएगा) कि नरक का अज़ाब चखो ।४९।

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٥٠﴾

हम ने प्रत्येक वस्तु को एक अनुमान के अनुसार पैदा किया है ।५०।

---

1. इस आयत मे अहज़ाब नामक युद्ध की भविष्यवाणी है और यह इस्लाम धर्म की सच्चाई का निशान है ।

وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ۝٥٠

और हमारा आदेश आँख के झपकने की तरह तुरन्त पूरा हो जाता है ।५१।

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝٥١

और हम तुम्हारे जैसे लोगों का पहले भी विनाश कर चुके हैं और क्या (इस बात को जान कर भी) कोई शिक्षा पाने वाला है ? ।५२।

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ ۝٥٢

और प्रत्येक काम जो उन्हों ने किया है वह किताबों में मौजूद है ।५३।

وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ۝٥٣

और हर छोटी और बड़ी बात लिखी[1] हुई है ।५४।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ۝٥٤

निश्चय ही मोमिन स्वर्गों में तथा विभिन्न प्रकार की समृद्धियों में होंगे ।५५।

فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝٥٥

एक ऐसे स्थान में जो सदा रहने वाला होगा और वे सर्व-शक्तिमान् सम्राट के पास होंगे (अर्थात् वह कभी अपमानित नहीं होंगे) ।५६। (रुकू ३/१०)

1. 'लिखी हुई' से अभिप्राय है कि वह बात सुरक्षित होगी जैसा कि सूर: यासीन आयत 66 में उल्लेख है कि क़ियामत के दिन पापियों के विरुद्ध उन के हाथ, पाँव, त्वचा और उन की ज़बान गवाही देंगे ।
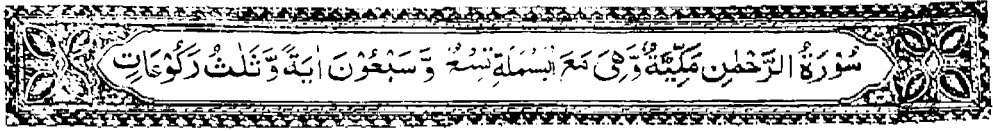
सूर: अल्-रहमान

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की उन्नासी आयतें तथा तीन रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اَلرَّحْمٰنُ ۙ
वह रहमान (अल्लाह) ही है।२।

عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۞
जिस ने क़ुर्आन सिखाया है।३।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۙ
उस ने मनुष्य को पैदा किया।४।

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ○
और उसे अच्छे ढंग से बात करना सिखाया।५।

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۞
सूर्य और चन्द्रमा एक नियमित ढंग से चल रहे हैं।६।

وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ○
और जड़ी बूटियाँ तथा वृक्ष भी अल्लाह के आगे झुके हुए हैं।७।

وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۙ ۞
और हम ने आसमान को ऊँचा किया है तथा मानव-जाति के लिए बराबरी का नियम लागू किया है।८।

اَلَّا تَطْغَوْا فِى الْمِيْزَانِ ۞
(यह कहते हुए) कि न्याय के तुला को कदापि न झुकाओ।९।

وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ⑩	और न्याय से पूरा तौल बनाए रखो तथा तौल में कमी न करो ।१०।
وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ⑪	और हम ने धरती को सारी मख़्लूक़ के भले के लिए बनाया है ।११।
فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ⑫	इस में फल भी हैं और गुच्छेदार फलों वाली खजूरों के वृक्ष भी हैं ।१२।
وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ⑬	और इस (धरती) में दाने भी हैं जिन पर छिलका भी होता है तथा सुगन्धित फूल भी हैं ।१३।
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ⑭	सो बताओ तो सही कि तुम दोनों (मानव एवं जिन्न) अपने रब्ब की निअमतों[1] में से किस किस का इन्कार करोगे ? ।१४।
خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ⑮	उस ने मनुष्य को बजती हुई सूखी मिट्टी से पैदा किया ।१५।
وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ⑯	और जिन्नों को आग की लपट से पैदा किया है ।१६।
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ⑰	अतः बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।१७।
رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ⑱	वह दोनों पूर्व दिशाओं का भी रब्ब है तथा दोनों पश्चिम[2] दिशाओं का भी रब्ब है ।१८।

1. निअमत का अर्थ है—सम्पत्ति, दान, प्रदान, उपकार और अनुकम्पा आदि ।

2. यह धरती के गोलाकार होने की ओर संकेत है जिस के कारण दो पूर्व तथा दो पश्चिम दिशाएं बन जाती हैं ।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٩﴾

अब बताओ कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।१९।

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ﴿٢٠﴾

उस ने दो समुद्रों को इस प्रकार चलाया है कि वे एक समय में आपस में मिल[1] जाएँगे ।२०।

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ﴿٢١﴾

(इस समय) उन के बीच एक ओट है जिस के कारण वे एक-दूसरे में दाख़िल नहीं हो सकते ।२१।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٢﴾

अब बताओ कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।२२।

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٣﴾

उन दोनों समुद्रों में से मोती और मूँगे निकलते हैं ।२३।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٤﴾

अतः बताओ कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।२४।

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَـٰٔتُ فِي الْبَحْرِ

और उस की बनाई हुई नौकाएँ भी हैं और उस के बनाए हुए जहाज़ भी हैं जो समुद्रों में

---

1. इस में नहर स्वेज़ और नहर पनामा के बारे में भविष्यवाणी है। बताया है कि दो समुद्र एक-दूसरे के निकट हैं, किन्तु उन के बीच एक भू-भाग है। एक दिन वे आपस में मिल जाएँगे। उन दो समुद्रों की यह पहचान है कि उन में से मोती तथा मूँगे निकलते हैं।

यह दोनों पदार्थ नहर स्वेज़ और पनामा के समुद्रों से बड़ी संख्या में निकलते हैं। इन नहरों के द्वारा लाल सागर तथा भूमध्य सागर को स्वेज़ द्वारा मिला दिया गया है और फिर प्रशान्त महा सागर को आन्ध्र महासागर से पनामा द्वारा मिला दिया गया है।

كَالْاَعْلَامِ ۝٢٥	पहाड़ों[1] की तरह दिखाई देते हैं ।२५।
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٢٦	सो बताओ कि तुम अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ?।२६। (रुकू १/११)
كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝٢٧	इस (धरती) पर जो कोई भी है अन्ततः विनाशवान् है ।२७।
وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۝٢٨	और केवल वही सुरक्षित रह सकता है जिस की ओर तेरे प्रताप वाले और सम्मान वाले अल्लाह का ध्यान हो ।२८।
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٢٩	अब बताओ कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ?।२९।
يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ۝٣٠	आसमानों तथा ज़मीन में जो कोई भी है वह अपनी आवश्कताओं को उसी से माँगता है। वह हर समय एक नवीन[2] अवस्था में होता है ।३०।
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣١	अतः बताओ कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ?।३१।

1. इस विशाल काय समुद्री जहाजों से अभीष्ट वे जहाज हैं जो हमारे इस युग में निकले हैं। यह एक भविष्यवाणी थी जो पूरी हो चुकी है। आज कल समुद्रों की यात्रा करने वाले इस भविष्यवाणी की सत्यता के गवाह हैं।

2. अभिप्राय यह है कि उस के गुण इतने असीम हैं कि वह क्षण-प्रतिक्षण अपने नए-नए गुण प्रकट करता रहता है। मनुष्य के गुणों के समान उस के गुण सीमित नहीं हैं।

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿٣٢﴾

हे दोनों प्रबल[1] शक्तियो ! हम तुम दोनों के लिए फ़ारिग़[2] हो रहे हैं ।३२।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٣﴾

फिर बताओ[3] तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।३३।

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٤﴾

हे जिन्न और मानव-दल[4] ! यदि तुम यह शक्ति रखते हो कि आसमानों[5] तथा ज़मीन के किनारों से निकल भागो तो निकल कर दिखा दो । तुम बिना प्रमाण के कदापि नहीं निकल सकते[6] ।३४।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٥﴾

अत: बताओ कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।३५।

---

1. अर्थात् रूस और अमेरीका की शक्तियों का संघ और जोड़ ।

2. कुछ समय ढील दे कर उन दोनों का सर्वनाश कर देंगे ।

3. सर्वनाश के समय उन से पूछा जाएगा कि क्या तुम पर अल्लाह की असीम कृपा नहीं हुई थी तथा यह कि तुम धर्म का उपहास नहीं किया करते थे ?

4. जिन्नों से तात्पर्य धनवान् लोग हैं और मानव समूह से अभिप्राय जन साधारण है ।

आज कल एक ओर तो धनवान् अर्थात् अमेरिका का गिरोह है और दूसरी ओर जन साधारण अर्थात् रूस का गिरोह है ।

5. दोनों दल ऐसे राकेट तय्यार कर रहे हैं कि जिन की सहायता से दूर-दूर के सितारों तक पहुँच जाएँ, किन्तु अल्लाह कहता है कि वे इस में सफलता प्राप्त नहीं कर सकेंगे । वे अधिक से अधिक उन्हीं सितारों तक पहुँच सकेंगे जो इस धरती से खुली आँखों से दिखाई देते हैं ।

6. तुम आकाशीय शिक्षा का मुक़ाबिला बल प्रयोग कर के नहीं कर सकते तथा न ही उस से अपनी शक्ति के बल-बूते पर छुटकारा पा सकते हो । केवल एक ही उपाय है कि तुम प्रमाणों के साथ आकाशीय शिक्षा का खण्डन कर दो ।

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ وَّ نُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿٣٦﴾

तुम पर अग्नि[1] की एक ज्वाला और तांबा[2] भी गिराया जाएगा। अतः तुम दोनों कदापि ग़ालिब नहीं आ सकते।३६।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٧﴾

अब बताओ कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ?।३७।

فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٨﴾

जब आकाश फट जाएगा और लाल चमड़े की तरह हो जाएगा (वह अन्तिम निर्णय की घड़ी होगी)।३८।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٩﴾

अब बताओ कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ?।३९।

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّ لَا جَآنٌّ ﴿٤٠﴾

उस निर्णय के दिन न तो मनुष्य से उस के पापों[3] के विषय में पूछा जाएगा तथा न जिन्न से।४०।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤١﴾

अब बताओ तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ?।४१।

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَ الْاَقْدَامِ ﴿٤٢﴾

अपराधी अपने चेहरों के निशानों से पहचान लिए जाएँगे और अपने माथे के बालों एवं पैरों से पकड़ लिए जाएँगे।४२।

---

1. इस में कास्मिक रेज़ (Cosmic Rays) की ओर संकेत है।

2. इस के द्वारा बमों की ओर संकेत किया गया है।

3. यह बात नहीं कि वे स्वतन्त्र होंगे अपितु अभिप्राय यह है कि उन के पापों का दण्ड उन्हें घेर लेगा। उन से पूछने की कोई आवश्यकता नहीं होगी।

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ

अब तुम बताओ कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।४३।

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِىۡ يُكَذِّبُ بِهَا الۡمُجۡرِمُوۡنَ

यह वह नरक है जिस का अपराधी लोग इन्कार करते हैं ।४४।

يَطُوۡفُوۡنَ بَيۡنَهَا وَبَيۡنَ حَمِيۡمٍ اٰنٍ

(जब उस नरक में प्रवेश करने का दिन आएगा[1] तो) वे उस के भीतर और खौलते हुए पानी के बीच घूम रहे होंगे ।४५।

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ

अब बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।४६। (रुकू २/१२)

وَلِمَنۡ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ

और जो व्यक्ति अपने रब्ब की शान से डरता रहता है उस के लिए दो स्वर्ग निश्चित हैं (अर्थात् लौकिक और पारलौकिक) ।४७।

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ

फिर बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ।४८।

ذَوَاتَاۤ اَفۡنَانٍ

दोनों स्वर्ग अनेक टहनियों वाले होंगे (अर्थात् उन के वृक्ष बहुत घने होंगे) ।४९।

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ

फिर बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।५०।

---

1. उन्हें चारों ओर दोनों प्रकार से विपत्ति दिखाई देगी अर्थात् यदि युद्ध के लिए तय्यारी करेंगे तो आर्थिक कठिनाइयों में फंस जाएंगे और यदि तय्यारी छोड़ देंगे तो युद्ध में शत्रु का शिकार बन जाएंगे ।

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥١﴾

इन दोनों में से दो स्रोत बह रहे होंगे ।५१।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٢﴾

फिर बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।५२।

فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٣﴾

उन दोनों में हर-प्रकार के मेवे दो-दो प्रकार के होंगे ।५३।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٤﴾

फिर बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।५४।

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۢ بَطَآىِٕنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٥﴾

(स्वर्ग-निवासी) बिछौनों पर ऐसे तकिए लगाए हुए होंगे जिन के अस्तर मोटे रेशम के होंगे तथा दोनों बाग़ों के फल (बोझ से) झुके हुए होंगे ।५५।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٦﴾

अतः बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।५६।

فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٧﴾

इन स्वर्गों में नीची निगाहों वाली स्त्रियाँ[1] होंगी जिन से इन (स्वर्ग-निवासियों) से पहले न तो किसी मनुष्य ने तथा न जिन्नों ही ने सम्पर्क[2] रखा होगा ।५७।

---

1. यहाँ मुख्य रूप से आध्यात्मिक पुरस्कार अभीष्ट हैं और यह बात भी सामने रखनी चाहिए कि इस स्थान पर केवल स्त्री कहा है तथा इस से तात्पर्य मनुष्य की इस संसार वाली धर्म-पत्नी भी हो सकती है जिसे आख़िरत में सौन्दर्य प्रदान किया जाएगा।

2. सम्पर्क न रखने का अर्थ यह है कि किसी पराए पुरुष से उन का सम्पर्क न रहा होगा और वे नेक और पवित्र होंगी।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٨﴾

सो बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ! ।५८।

كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٩﴾

मानो वे स्त्रियाँ याक़ूत[1] और मरजान होंगी ।५९।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٠﴾

अतः तुम बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।६०।

هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿٦١﴾

क्या उपकार का प्रतिफल उपकार के सिवा कुछ और भी हो सकता है ? ।६१।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٢﴾

अतः बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ।६२।

وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ﴿٦٣﴾

और इन दोनों स्वर्गों के अतिरिक्त दो स्वर्ग और भी हैं ।६३।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٤﴾

अतः बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।६४।

مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٥﴾

यह दोनों (स्वर्ग) हरे-भरे होंगे ।६५।

---

1. उन के रंग में सफ़ेदी तथा लालिमा मिली हुई होगी और वे बहुत कोमल एवं सुकुवार शरीर वाली होंगी । याक़ूत अर्थात् लाल मणि जो अपने लाल रंग के कारण प्रसिद्ध है तथा मरजान अर्थात् **मूंगा** अपनी कोमलता और सफ़ेदी व लाली की मिलावट होने के कारण प्रसिद्ध है । अतः इन दोनों शब्दों के प्रयोग से उन स्त्रियों में पाए जाने वाले गुणों की ओर संकेत है ।

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٦٦

अब बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।६६।

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ۝٦٧

इन दोनों (स्वर्गों) में दो स्रोत बड़े जोश से फूट रहे होंगे ।६७।

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٦٨

सो बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।६८।

فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ۝٦٩

उन में मेवे भी होंगे और खजूरें तथा अनार भी ।६९।

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٧٠

फिर बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।७०।

فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ۝٧١

इन बागों में भली और सुन्दर महिलाएँ होंगी ।७१।

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٧٢

अतः बताओ कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।७२।

حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ۝٧٣

वे महिलाएँ काली आँखों वाली (मृगनयनी) होंगी और ख़ेमों के अन्दर रखी गई होंगी ।७३।

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٧٤

अतः बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।७४।

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ﴿٧٥﴾

उन्हें पहले न तो (स्वर्ग में जाने वाले) किसी मानव ने तथा न किसी जिन्न ही ने छुआ[1] होगा।७५।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٦﴾

सो बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।७६।

مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٧﴾

वे (स्वर्ग-निवासी) ख़ेमों के खुले तथा हरे-भरे बिछौनों पर जो अति उत्तम एवं सुन्दर होंगे तकियों पर टेक लगाए बैठे होंगे।७७।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٨﴾

अत: बताओ तो सही कि तुम दोनों अपने रब्ब की निअमतों में से किस-किस का इन्कार करोगे ? ।७८।

تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٧٩﴾

तेरे रब्ब का नाम बड़ी बरकत वाला है जो प्रताप और सम्मान वाला है।७९। (रुकू ३/१३)

1. अर्थात् वे अपने ही पतियों के पास होंगी।
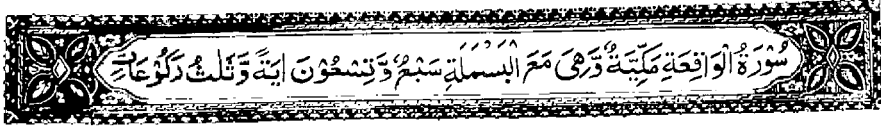
सूरः अल्-वाक़िअः

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की सतानवे आयतें एवं तीन रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①	मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।
إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ②	जब वह बात जिस के अटल होने का निर्णय हो चुका है कार्य रूप में घटित[1] होगी।२।
لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ③	उस घटना को उस के निश्चित समय पर आने से टलाने वाली कोई (चीज़) नहीं।३।
خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ④	वह कुछ लोगों को नीचा करने वाली तथा कुछ लोगों को ऊँचा[2] करने वाली है।४।
إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ⑤	जिस दिन धरती को हिला दिया जाएगा।५।
وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ⑥	और पर्वतों को चूर्ण-विचूर्ण कर दिया जाएगा।६।

1. अर्थात् क़ियामत आ कर रहेगी।

2. मुसलमानों और इन्कार करने वालों के बीच निर्णय करने वाली घड़ी अवश्य आएगी। इन्कार करने वाले लोग चाहे कितना भी उपाय करें उसे उस के आने के समय से टला नहीं सकते और जब वह घड़ी आएगी तो वह कुछ लोगों को ऊँचा कर देगी अर्थात् इन्कार करने वाले जो आज विजयी हैं तो उस दिन पराजित हो जाएँगे और मुसलमान आज पराजित हैं तो उस दिन विजयी होंगे।

فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنۢبَثًّا ﴿٧﴾

अतः वे ऐसे हो जाएँगे जैसे वायु में चारों ओर उड़ने वाले सूक्ष्म कण ।७।

وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ﴿٨﴾

और तुम तीन दलों में बट जाओगे ।८।

فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿٩﴾

एक तो दाहिने हाथ वाले होंगे और तुझे क्या पता कि दाहिने हाथ वाले कैसे होंगे ? ।९।

وَاَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ﴿١٠﴾

और एक बाएँ हाथ वाले होंगे और तुझे क्या पता कि बाएँ हाथ वाले कैसे होंगे ? ।१०।

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ﴿١١﴾

और एक दल ईमान एवं कर्म में आगे बढ़ जाने वालों का होगा । अतः वे तो प्रत्येक दशा में दूसरों से आगे ही रहेंगे ।११।

اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿١٢﴾

और वे लोग (अल्लाह् के) निकट रहने वाले होंगे ।१२।

فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿١٣﴾

वे निअमत वाले स्वर्गों में रहेंगे ।१३।

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٤﴾

पहले ईमान लाने[1] वालों में उन की संख्या अधिक होगी ।१४।

وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٥﴾

और बाद में ईमान लाने वालों में उन की संख्या कम होगी ।१५।

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ﴿١٦﴾

वे जड़ाऊ सिंहासनों पर ।१६।

مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿١٧﴾

टेक लगाए हुए एक-दूसरे के आमने-सामने बैठे होंगे ।१७।

---

1. जिस युग में भी सत्य सन्देश आता है तो जो लोग प्रारम्भ में ईमान लाते हैं उन में से अधिक संख्या ऊँचे स्थान प्राप्त करने वालों की होती है और जो लोग उसे प्रगति कर लेने के समय मानते हैं उन में ऊँचा स्थास पाने वाले थोड़े होते हैं ।

يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۝

उन के पास सेवा के लिए नवयुवक-सेवक बड़ी संख्या में आएँगे जो कि सदा अपनी नेकी पर क़ायम रखे जाएँगे ।१८।

بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ ۙ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۝

वे गिलास, लोटे और स्रोतों (के पानी) से भरे हुए प्याले ले कर आएँगे ।१९।

لَّا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنزِفُونَ ۝

(उन प्यालों आदि को पी कर) स्वर्ग-निवासियों को न तो उन्माद होगा तथा न वे फ़ुज़ूल बातें करेंगे ।२०।

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ۝

और (इसी प्रकार युवक-सेवक) उन स्वर्गियों के पास ऐसे फलों के थाल ले कर आएंगे जिन्हें वे पसन्द करेंगे ।२१।

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۝

और पक्षियों में से उन पक्षियों का माँस जिन्हें वे (स्वर्ग-निवासी) पसन्द करेंगे (ले कर आएँगे) ।२२।

وَحُورٌ عِينٌ ۝

और काली पुतलियों वाली एवं बड़ी-बड़ी आँखों वाली (मृग नयनी) महिलाएँ होंगी ।२३।

كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۝

जो सुरक्षित मोतियों[1] की तरह होंगी (जो बहुमूल्य होने के कारण छिपा कर रखे जाते हैं) ।२४।

جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

ये सब कुछ मोमिनों के अच्छे कर्मों के कारण प्रतिफल के रूप में मिलेगा ।२५।

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ۝

वे (मोमिन) स्वर्ग में न तो फ़ुज़ूल बातें सुनेंगे और न पाप ही की कोई बात ।२६।

1. अर्थात् वे नेक और पवित्र होंगी ।

إِلَّا قِيلًا سَلَٰمًا سَلَٰمًا ﴿٢٧﴾

हाँ ! ऐसी बात सुनेंगे जिस में शान्ति ही शान्ति होगी ।२७।

وَأَصْحَٰبُ ٱلْيَمِينِ مَآ أَصْحَٰبُ ٱلْيَمِينِ ﴿٢٨﴾

और तू दाहिनी ओर के लोगों का भी हाल सुन और तुझे क्या पता कि दाहिनी ओर के लोग क्या हैं ? ।२८।

فِى سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿٢٩﴾

वे बिना काँटों की बेरियों के बाग़ों में रहेंगे ।२९।

وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ ﴿٣٠﴾

और केलों के (बाग़ों में) जिन के फल एक-दूसरे पर चढ़े हुए होंगे ।३०।

وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ﴿٣١﴾

और ऐसी छाया में जो बहुत लम्बी होगी ।३१।

وَمَآءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٣٢﴾

और ऐसे पानियों में जो गिराए[1] जा रहे होंगे ।३२।

وَفَٰكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٣﴾

और बहुत से फलों में ।३३।

لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٤﴾

न तो वे काटे[2] जाएँगे और न उन से उन (स्वर्ग-निवासियों) को रोका[3] जाएगा ।३४।

وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ﴿٣٥﴾

और रूपवती पत्नियों के साथ रहेंगे ।३५।

إِنَّآ أَنشَأْنَٰهُنَّ إِنشَآءً ﴿٣٦﴾

हम ने ही उन को बना रखा है ।३६।

فَجَعَلْنَٰهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٧﴾

और उन्हें कुमारियाँ पैदा किया है ।३७।

---

1. अर्थात् झरनों के पास ।
2. वे 'काटे न जाएँगे' से तात्पर्य यह है कि वे कदापि समाप्त नहीं होंगे ।
3. 'न उन से उन को रोका जाएगा' से तात्पर्य यह है कि उन का प्रयोग मोमिनों के लिए पूर्ण रूप से वैध होगा और वे उन के मालिक होंगे ।

عُرُبًا اَتْرَابًا ﴿٣٧﴾

अति सुन्दर और स्वर्ग-निवासियों की हम उम्र (अर्थात समायु होंगी) ।३८।

لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٣٨﴾

(जिन्हें) दाहिनी ओर वाले गिरोह के लिए (पैदा किया गया है) ।३९। (रुकू १/१४)

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٩﴾

यह गिरोह प्रारम्भ में ईमान लाने वाले लोगों में से भी बड़ी संख्या वाला होगा ।४०।

وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٠﴾

और बाद में ईमान लाने वाले लोगों में से भी बड़ी संख्या वाला होगा ।४१।

وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾

और बायीं ओर वाले (लोगों का भी हाल सुन) और तुझे क्या पता कि बायीं ओर के लोग कैसे होंगे ? ।४२।

فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ﴿٤٢﴾

वे गर्म हवाओं और गर्म पानियों में रहेंगे ।४३।

وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ﴿٤٣﴾

और ऐसी छाया में रहेंगे जो काले धुएँ के समान होगी ।४४।

لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾

वह न तो ठंढी होगी तथा न उस के नीचे रहना सम्मान प्रदान करेगा ।४५।

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٥﴾

वे इस से पहले संसार में बड़े सुख से रहते थे ।४६।

وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ﴿٤٦﴾

और महा पाप (शिर्क) पर हठ करते थे ।४७।

وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٧﴾

वे कहा करते थे कि जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ बन जाएंगे तो क्या हमें पुनः जीवित कर के खड़ा किया जाएगा ? ।४८।

اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿٤٩﴾

या हमारे पूर्वजों के साथ भी ऐसा ही होगा ? ।४९।

قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿٥٠﴾

तू कह दे कि पहले भी तथा पिछले भी ।५०।

لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٥١﴾

सब के सब निश्चित दिन की प्रतिज्ञा की ओर एकत्रित कर के ले जाए जाएँगे ।५१।

ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿٥٢﴾

फिर तुम हे झुठलाने वाले गुमराहो ! ।५२।

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٣﴾

थूहर[1] के पेड़ में से खाओगे ।५३।

فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٤﴾

और उस से पेट भरोगे ।५४।

فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٥﴾

और फिर उस पर गर्म पानी पिओगे ।५५।

فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٦﴾

और प्यासे ऊँट की तरह पीते जाओगे ।५६।

هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٧﴾

उन के कर्मों के फल पाने के दिन यह आतिथ्य के रूप में होगा ।५७।

نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٨﴾

हम ने तुम्हें पैदा किया है। फिर तुम हमारी बात को सच्चा क्यों नहीं ठहराते ? ।५८।

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٩﴾

और उस चीज़ की हालत तो बताओ जो तुम स्त्री के गर्भ में गिराते हो ।५९।

ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٦٠﴾

क्या तुम उसे पैदा करते हो या हम उसे पैदा करते हैं ।६०।

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٦١﴾

हम ने तुम्हारे बीच मौत का क्रम जारी किया है और हम से कोई भी आगे[2] नहीं निकल सकता ।६१।

---

1. अर्थात् अत्यन्त दुःखदायक अज़ाब सहन करना पड़ेगा ।
2. हमारे इस नियम को कोई तोड़ नहीं सकता ।

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۲﴾

और कोई व्यक्ति भी इस बारे में हमें असमर्थ नहीं बना सकता कि हम तुम्हें बदल[1] कर तुम्हारे जैसी और जातियाँ ले आएँ तथा (न कोई इस बात में विवश कर सकता है कि) हम तुम्हें किसी ऐसी हालत में पैदा कर दें जिसे तुम अब नहीं जानते।६२।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۶۳﴾

और तुम पहली पैदाइश (अर्थात् जन्म) को तो जानते ही हो, फिर तुम्हें क्या हो गया है कि तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते ?।६३।

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿۶۴﴾

क्या तुम को मालूम है जो तुम बोलते हो ?।६४।

ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿۶۵﴾

क्या तुम उसे उगाते हो या हम ही उसे उगाते हैं ?।६५।

لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿۶۶﴾

यदि हम चाहते तो उसे बिल्कुल जला हुआ चूरा बना देते, फिर तुम केवल बातें ही बनाते रह जाते।६६।

اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿۶۷﴾

और कहते कि हम पर तो चट्टी पड़ गई है।६७।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿۶۸﴾

बल्कि सच यह है कि हम अपने परिश्रम के फल से सर्वथा वंचित हो गए हैं।६८।

اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿۶۹﴾

उस पानी को तो देखो जिस को तुम पीते हो।६९।

---

1. आवागमन के मानने वाले कहते हैं कि यह आवागमन की शिक्षा है। यहाँ मरने के पश्चात् के जीवन का वर्णन है, किन्तु आवागमन में इसी लोक में पुनर्जन्म का सिद्धान्त माना जाता है। यहाँ यह बताया गया है कि अब तो तुम प्रतिष्ठित हो, परन्तु हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के विरोध के कारण तुम्हारी एक और दशा होगी जो अपमान जनक होगी।

ءَ اَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ۝

क्या तुम ने उसे बादल से उतारा है या हम उसे उतारते हैं ? ।७०।

لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ۝

यदि हम चाहते तो उसे कड़ुआ बना देते। फिर तुम क्यों धन्वान नहीं करते ? ।७१।

اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ۝

भला उस आग का हाल तो बताओ जिसे तुम जलाते हो ।७२।

ءَ اَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُوْنَ ۝

क्या तुम ने उस (आग) के पेड़ को पैदा किया है अथवा हम उसे पैदा करते हैं ? ।७३।

نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ۝

और हम ने उसे शिक्षा-प्रद[1] और यात्रियों के लाभ के लिए बनाया है ।७४।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝ ع

अत: तू अपने महिमाशाली रब्ब के नाम की स्तुति कर ।७५। (रुकू २/१५)

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ۝

अत: मैं नक्षत्रों के टूटने को गवाही के रूप में पेश करता हूँ ।७६।

وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ۝

यदि तुम जानते हो तो यह गवाही बहुत बड़ी (गवाही) है ।७७।

اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ۝

निस्सन्देह यह क़ुर्आन बड़ा महिमाशाली है ।७८।

---

1. गीली लकड़ी आसानी से नहीं जलती। अल्लाह उस गीली लकड़ी को सुखा देता है तो वह बहुत आसानी से जलने लग जाती है। इसी तरह एक समय में जातियाँ जीवित हो जाती हैं और उन का विनाश नहीं हो सकता, परन्तु दूसरे समय में वे अपनी शक्ति खो बैठती हैं और सूखी लकड़ी की तरह जल पड़ती हैं।

فِیْ کِتٰبٍ مَّکْنُوْنٍ ۙ﴿۷۹﴾

और एक छिपी[1] हुई किताब में मौजूद है।७९।

لَّا یَمَسُّہٗۤ اِلَّا الْمُطَہَّرُوْنَ ﴿ؕ۸۰﴾

इस क़ुर्आन की वास्तविकता को वे लोग ही पाते हैं जो पवित्र[2] होते हैं।८०।

تَنْزِیْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۸۱﴾

इस का उतरना सारे जहानों के रब्ब की ओर से है।८१।

اَفَبِہٰذَا الْحَدِیْثِ اَنْتُمْ مُّدْہِنُوْنَ ﴿ۙ۸۲﴾

क्या तुम इस कलाम के बारे में मुदाहिनत (चापलूसी) से काम ले रहे हो ?।८२।

وَ تَجْعَلُوْنَ رِزْقَکُمْ اَنَّکُمْ تُکَذِّبُوْنَ ﴿۸۳﴾

और तुम ने अपना कर्त्तव्य केवल यह बना रखा है कि तुम झुठलाते हो।८३।

فَلَوْلَاۤ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿ۙ۸۴﴾

अतः क्यों न हुआ कि जब जान गले तक आ पहुँची।८४।

وَ اَنْتُمْ حِیْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿ۙ۸۵﴾

और तुम उस समय (निराश हो कर चारों ओर) देखने लगे (कि तुम अपने बचने का कोई सामान कर सकते)।८५।

---

1. 'छिपी हुई किताब' से तात्पर्य मानव-प्रकृति है, क्योंकि पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा मानव-प्रकृति के अनुकूल है। इसी कारण हर-एक मनुष्य जो हठ न करे इसे मानने के लिए विवश है। पवित्र क़ुर्आन कहता है कि तुम प्राकृतिक स्वभाव को अपनाओ जिन के अनुकूल मानव को पैदा किया गया है (सूरः रूम रुकू 4) अर्थात् अल्लाह ने मानव-प्रकृति में कुछ सच्चाइयाँ रखी हैं और उसे निर्णय करने वाली शक्ति प्रदान की है। जब मनुष्य उसे प्रयोग में लाता है तो उस पर पवित्र क़ुर्आन की सत्यता खुल जाती है, क्योंकि वह एक छिपी हुई किताब अर्थात् मानव-प्रकृति में विद्यमान है।

2. मूल शब्द 'मस्स' का अर्थ छूना है, किन्तु मुहावरे में इस का अर्थ है किसी विषय की ओर मनुष्य की इतनी रुचि हो जाए कि उस के सूक्ष्म तत्त्व भी उस पर प्रकट होने लगें।

इस आयत का भावार्थ यह है कि क़ुर्आन मजीद का ज्ञान ऐसे लोगों पर ही प्रकट होता है जो अल्लाह के निकट पवित्र ठहराए जाते हैं न कि मनुष्य के निकट। अन्यथा अल्लाह जिन्हें महापुरुष बना कर भेजता है लोग उन पर आक्षेप करते ही रहते हैं जैसे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर ईसाई लोग आज तक आक्षेप कर रहे हैं। इसी तरह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के बाद जो-जो महान् विभूतियां प्रकट हुईं उन पर भी कुछ लोग आज तक आक्षेप करते चले आ रहे हैं।

وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿٨٦﴾

(उस समय तुम पर और तुम्हारे नातेदारों पर खुल गया कि) हम तुम्हारी अपेक्षा इस मरने वाले के प्राणों के अधिक निकट हैं, परन्तु यह सच्चाई तुम पर पहले नहीं खुली थी।८६।

فَلَوْلَآ إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿٨٧﴾

सो यदि तुम्हें कोई प्रतिफल नहीं मिलना था और तुम इस बात में सच्चे हो तो यह क्यों न हुआ ? ।८७।

تَرْجِعُوْنَهَآ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٨٨﴾

कि तुम उस अवस्था को (जो मौत के समय होती है) वापस लौटा सकते।८८।

فَأَمَّآ إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٨٩﴾

अतः जो कोई अल्लाह का निकटवर्ती है।८९।

فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿٩٠﴾

उस के लिए तो सुख-शान्ति निश्चित है और इसी प्रकार निअमतों वाला स्वर्ग भी।९०।

وَأَمَّآ إِنْ كَانَ مِنْ أَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩١﴾

और यदि वह व्यक्ति दाहिनी ओर के लोगों में से है।९१।

فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ أَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩٢﴾

तो उसे कहा जाता है कि हे दाहिनी ओर के गिरोह वाले ! तुझे सदैव शान्ति मिलती रहे।९२।

وَأَمَّآ إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٩٣﴾

और यदि वह मरने वाला सत्य के विरोधियों तथा पथभ्रष्टों में से होगा।९३।

فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٩٤﴾

तो ऐसे व्यक्ति की मेहमानी गर्म पानी से की जाएगी।९४।

وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿٩٥﴾

और उस का ठिकाना नरक होगा।९५।

إِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٦﴾

यह बात बिलकुल सच्चाई के अनुकूल है।९६।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٧﴾ ع ٣

अतः तू अपने महिमाशाली रब्ब की स्तुति कर।९७। (रुकू ३/१६
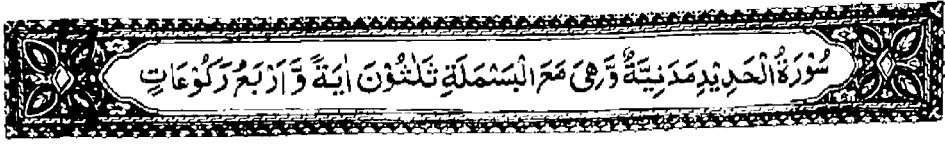
सूर: अल्-हदीद

[यह सूर: मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की तीस आयतें एवं चार रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ②

आसमानों तथा ज़मीन में जो कुछ है वह अल्लाह का यशोगान कर रहा है और वह प्रभुत्वशाली एवं तत्त्वदर्शी है।२।

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ③

आसमानों तथा ज़मीन की हुकूमत उसी की है। वह जीवित करता है तथा मारता भी है और वह प्रत्येक वस्तु पर प्रभुत्व रखता है।३।

هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ④

वह आदि भी है और अन्त भी तथा प्रत्यक्ष भी है और अप्रत्यक्ष भी और वह हर-एक चीज़ को जानता है।४।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ

उसी ने आसमानों तथा ज़मीन को छः वक़्तों (अर्थात् दौरों) में पैदा किया है, फिर वह अर्श पर मज़बूती से क़ायम हो गया। वह उसे भी जानता है जो धरती में प्रवेश[1] होता है तथा उसे भी जो उस से निकलता है और उसे भी

1. विवरणार्थ देखिए सूर: 'सबा' टिप्पणी आयत 3।

السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ⑤

जो आकाश से उतरता है और उसे भी जो उस की ओर चढ़ता है और तुम जहाँ भी जाओ वह तुम्हारे साथ रहता है और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति जानता है ।५।

لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ⑥

आसमानों और ज़मीन की हुकूमत भी उसी की है और सारी बातें उसी की ओर (निर्णय के लिए) लौटाई जाएँगी ।६।

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑦

वह रात को दिन में समो देता है तथा दिन को रात में और वह दिलों की बातों को भली-भाँति जानता है ।७।

آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُم مُّسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ۖ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَأَنفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ⑧

हे लोगो ! अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और तुम्हें (पहली जातियों के बाद) जिस (सम्पत्ति) का मालिक बनाया है उस में से ख़र्च करो और तुम में से जो लोग मोमिन हैं और वे अल्लाह की राह में ख़र्च करते रहते है उन्हें बहुत बड़ा प्रतिफल मिलेगा ।८।

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۙ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ⑨

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह और रसूल पर ईमान नहीं लाते तथा (अल्लाह का) रसूल तुम्हें केवल इसलिए बुलाता है कि तुम अपने रब्ब पर ईमान लाओ । यदि तुम मोमिन हो तो अल्लाह तुम से एक बचन[1] ले चुका है ।९।

هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُم

वह (अल्लाह) ही है जो अपने बन्दों पर खुले-खुले निशान उतारता है जिस का परिणाम

1. मानव-प्रकृति में अल्लाह पर ईमान* लाना एवं उस की ओर खिंचे चले जाना गुप्त रूप में विद्यमान है ।

مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۰﴾

यह होता है कि वह उन निशानों द्वारा तुम्हें अन्धकार से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाता है और निस्सन्देह अल्लाह बहुत कृपा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है ।१०।

وَ مَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ لِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْا ؕ وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۱﴾ ع

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते। हालाँकि आसमानों तथा ज़मीन की मीरास[1] अल्लाह ही की है। हे मोमिनो ! जिस ने अल्लाह की राह में विजय से पहले ख़र्च किया तथा उस की राह में युद्ध किया वह उस व्यक्ति के बराबर नहीं हो सकता जिस ने विजय के बाद ख़र्च किया और विजय के बाद युद्ध किया। विजय से पहले ख़र्च करने वाले तथा युद्ध करने वाले उत्तम श्रेणी के हैं और अल्लाह ने दोनों प्रकार के लोगों से भलाई की प्रतिज्ञा कर रखी है। अल्लाह तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति जानता है ।११। (रुकू १/१७)

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَ لَهٗٓ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿۱۲﴾

क्या कोई है जो (अपने धन का) अच्छा भाग काट कर अल्लाह को दे ताकि वह उसे उस के लिए बढ़ाए तथा उस के लिए एक उत्तम प्रतिफल निश्चित है ।१२।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ بِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ

जिस दिन तू मोमिन पुरुषों तथा मोमिन स्त्रियों को देखेगा कि उन का नूर उन के सामने भी तथा उन की दाहिनी ओर भी भागता जाएगा (और उस दिन अल्लाह और

1. इस भौतिक संसार में जो कुछ मनुष्य के हाथ में है उसे अन्ततः मनुष्य यहीं छोड़ कर जाएगा और वह सब कुछ अल्लाह ही के क़ब्ज़ा में आ जाएगा।

جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٢﴾

उस के फ़रिश्ते कहेंगे) आज तुम्हें कई प्रकार के बाग़ों का शुभ-समाचार दिया जाता है। (ऐसे बाग़) जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। ये (शुभ-समाचार पाने वाले लोग) उन स्वर्गों में रहते चले जाएँगे और यह बहुत बड़ी सफलता है।१३।

يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ۭ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ۭ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿١٣﴾

जिस दिन मुनाफ़िक़ पुरुष तथा मुनाफ़िक़ स्त्रियाँ मोमिनों से कहेंगे कि हमारी भी कुछ प्रतीक्षा करो। हम तुम्हारे नूर से कुछ रोशनी ले लें। उस समय उन से कहा जाएगा कि अपने पीछे[1] की ओर लौट जाओ तथा वहाँ जाकर नूर की तलाश करो। फिर (अल्लाह की ओर से) उन के तथा मोमिनों के बीच एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी, जिस में एक द्वार होगा। उस के भीतर दया[2] का एक दृश्य होगा और उस के बाहर की ओर सामने ही अज़ाब दिखाई दे रहा होगा।१४।

يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ

वे (मुनाफ़िक़) मोमिनों से पुकार कर कहेंगे, कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे ? वे (मोमिन) उत्तर देंगे, हाँ, हाँ ! किन्तु तुम ने स्वयं ही अपनी जानों को कठोर अज़ाब में डाला और तुम (हमारे सर्वनाश की) प्रतीक्षा करते रहे तथा सन्देह से काम लेते रहे तथा तुम्हारी

---

1. आख़िरत में संसार के कर्मों के अनुकूल ही नूर अर्थात् प्रकाश मिलता है। यदि तुम्हें शक्ति है तो संसार में वापस लौट जाओ।

2. अर्थात् मोमिनों को जिधर जाना है उधर अल्लाह की रहमत होगी और इन्कार करने वालों के पीछे अज़ाब होगा, जिस से वे भाग कर भी अपना बचाव न कर सकेंगे।

وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ أَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿١٥﴾

कामनाएँ तुम्हें उस समय तक धोखा देती रहीं कि अल्लाह का निर्णय आ गया और अल्लाह के (सभी कामों के) बारे में तुम्हें शैतान धोखा देता रहा ।१५।

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ مَأْوٰىكُمُ النَّارُ ۭ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦﴾

अतः आज के दिन (हे मुनाफ़िक़ो !) न तुम से और न इन्कार करने वालों से कोई फ़िद्यः (अर्थात् प्रतिदान) स्वीकार किया जाएगा। तुम सब का ठिकाना नरक है। वही तुम्हारे साथ सदा के लिए सम्बन्ध रखने वाली वस्तु है और वह बुरा ठिकाना है ।१६।

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ۭ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿١٧﴾

अब हम मोमिनों से कहते हैं कि क्या अब तक उन के दिल अल्लाह की याद के लिए और उस कलाम के लिए जो हक़ के साथ उतरा है झुकते नहीं ? और (मोमिनों को) चाहिए कि वे उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिन्हें उन से पहले किताब दी गई थी, किन्तु (अल्लाह की कृपा के उतरने का) समय उन के लिए लम्बा हो गया, जिस के फलस्वरूप उन के दिल कठोर हो गए और उन में से बहुत से प्रतिज्ञा भंग करने वाले हो गए थे ।१७।

اِعْلَمُوْٓا أَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٨﴾

याद रखो कि अल्लाह धरती को उस के मरने के पश्चात् जीवित करता है। हम ने अपने निशान तुम्हारे लिए खोल-खोल कर वर्णन कर दिए हैं ताकि तुम समझ से काम लो ।१८।

إِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَأَقْرَضُوا

निस्सन्देह दान देने वाले पुरुष तथा दान देने वाली स्त्रियाँ और वे लोग जिन्हों ने अल्लाह

اللّٰہَ قَرْضًا حَسَنًا یُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِیْمٌ ﴿١٩﴾

के लिए अपने धन का एक अच्छा हिस्सा काट कर अलग कर दिया है, उन के धन-दौलत को उन के लिए बढ़ाया जाएगा और उन्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान किया जाएगा।१९।

وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖۤ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّیْقُوْنَ ۖۗ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ؕ وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِیْمِ ﴿٢٠﴾

और जो लोग अल्लाह पर और उस के रसूलों पर ईमान लाए वे ही अपने रब्ब के पास सिद्दीक़ों और शहीदों का दर्जा[1] पाने वाले हैं। उन्हें उन का प्रतिफल पूरा-पूरा मिलेगा और इसी प्रकार उन का प्रकाश भी उन्हें मिलेगा तथा वे जिन्हों ने इन्कार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वे नरक वाले होंगे।२०। (रुकू २/१८)

اِعْلَمُوْۤا اَنَّمَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِیْنَةٌ

हे लोगो ! जान लो कि सांसारिक जीवन एक खेल और मनोररञ्जन है और शोभा पाने,

1. कुछ लोगों का विचार है कि अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाने के फलस्वरूप एक मनुष्य सिद्दीक़ और शहीद के पद तक पहुँच सकता है, नुबुव्वत के पद तक नहीं पहुँच सकता, परन्तु सूर: निसा रुकू 9 में अल्लाह ने कहा है कि जो लोग भी अल्लाह और इस रसूल की आज्ञा का पालन करेंगे वे उन लोगों में से होंगे जिन्हें अल्लाह ने पुरस्कार प्रदान किया है अर्थात् नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों और सालिह (सदाचारी) लोगों में से होंगे और ये लोग बहुत अच्छे मित्र हैं। (सूर: निसा आयत 70) इन दोनों आयतों पर विचार करने से प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि सूर: हदीद में तो यह कहा गया है कि जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए वे ही सिद्दीक़ों और शहीदों का पद प्राप्त करने वाले हैं, किन्तु सूर: निसा में 'अर्रसूल' शब्द प्रयुक्त किया है जिस से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ही अभीष्ट हैं और कहा गया है कि जो लोग अल्लाह और इस रसूल (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम) की आज्ञा का पालन करेंगे वे नबियों और सिद्दीक़ों तथा शहीदों और सालिह व्यक्तियों का पद प्राप्त करेंगे। अत: विदित हुआ कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से पहले सभी रसूलों की आज्ञा पालन करने के फलस्वरूप एक मनुष्य केवल सिद्दीक़ और शहीद के पद को प्राप्त कर सकता था, किन्तु हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की आज्ञा पालन करने के फलस्वरूप एक व्यक्ति नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों और सालिह व्यक्तियों का पद प्राप्त कर सकता है।

وَتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۖ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ۖ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۚ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢١﴾

आपस में अभिमान करने तथा एक-दूसरे पर धन और सन्तान द्वारा बड़ाई जताने का साधन है। इस की हालत बादलों से पैदा होने वाली खेती की सी है, जिस का उगना किसानों को बहुत पसन्द आता है और वह बहुत लहलहाती है, परन्तु अन्त में तू उसे पीले रंग की हालत में देखता है। तत्पश्चात् वह सड़े-गले चूरे जैसे हो जाती है और आख़िरत में (माया के लोभी लोगों के लिए) कड़ा अज़ाब निश्चित है और कुछ लोगों के लिए अल्लाह की ओर से क्षमा और उस की प्रसन्नता निश्चित है तथा सांसारिक जीवन केवल एक धोखे का सामान है।२१।

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٢﴾

(हे लोगो !) तुम अपने रब्ब की ओर से आने वाले क्षमा तथा ऐसे स्वर्ग की ओर तीव्र गति से बढ़ो, जिस का मूल्य आकाश तथा धरती के मूल्य के समान है और जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाने वालों के लिए तय्यार की गई है। यह अल्लाह की कृपा है, वह जिसे पसन्द करता है उसे देता है और अल्लाह बड़ी कृपा करने वाला है।२२।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ۚ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٢٣﴾

धरती पर कोई विपत्ति नहीं आती और न तुम्हारी जानों पर ही कोई विपत्ति आती है, परन्तु हम ने उस के आने से पहले ही उसे निश्चित[1] कर दिया होता है। यह बात अल्लाह के लिए बहुत आसान है।२३।

1. इस से यह अभिप्राय नहीं कि हर-एक बुरा अथवा अच्छा बदला निश्चित है और भाग्य में लिखा हुआ है, अपितु अभिप्राय यह है कि प्रत्येक कर्म का फल अल्लाह ने निश्चित कर दिया है। अतः जो कोई जैसा-जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही बदला मिलता है। सो बदले का पैदा करने वाला स्वयं मानव है न कि अल्लाह। वह तो केवल सिद्धान्त बनाने वाला है।

لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿٢٣﴾

ताकि तुम्हें अपनी त्रुटि पर कोई अफ़सोस न हो और न तुम उस पर इतराओ जो अल्लाह् तुम्हें दे तथा अल्लाह् हर-एक इतराने वाले घमण्डी को पसन्द नहीं करता ।२४।

الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۗ وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٤﴾

ऐसे लोग जो स्वयं भी कन्जूसी से काम लेते हैं और दूसरों को भी कन्जूसी की शिक्षा देते हैं तथा जो व्यक्ति इस प्रवचन से मुँह फेर ले तो याद रखे कि वास्तव में अल्लाह् बेनियाज है और वास्तविक स्तुति का अधिकारी है ।२५।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۖ وَأَنزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢٥﴾

ع ٣ / ١٩

हम ने अपने रसूलों को खुले निशानों के साथ भेजा है और उन के साथ किताब तथा (न्याय) तुला भी उतारी है ताकि लोग न्याय किया करें और हम ने लोहा भी उतारा है जिस में घोर युद्ध का सामान है तथा लोगों के लिए और भी अनेक प्रकार के लाभ हैं और इन सब को इस लिए पैदा किया है कि अल्लाह् जान ले कि उस की तथा उस के रसूलों की ग़ैब की हालत में कौन सहायता करता है तथा अल्लाह् बड़ी शक्ति वाला और ग़ालिब है ।२६। (रुकू ३/१९)

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ ۖ فَمِنْهُم مُّهْتَدٍ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٢٦﴾

और हम ने नूह और इब्राहीम को भी रसूल बना कर भेजा था और उन की सन्तान से नुबुव्वत और किताब को ख़ास कर दिया था। सो उन में से कुछ लोग हिदायत पाने वाले थे और बहुत से लोग आज्ञा भंग करने वाले थे ।२७।

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى

फिर हम ने उन के (अर्थात् नूह और इब्राहीम की सन्तान के) बाद उन के पद-चिह्नों पर

ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنْجِيلَ ۝ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً ۚ وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۖ فَآتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ ۖ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٢٨﴾

अपने रसूल भेजे तथा मर्यम के पुत्र ईसा को भी उन के पद-चिन्हों पर चलाया तथा उसे इन्जील दी और जो उस के अनुयायी बने, हम ने उन के दिलों में कोमलता और दयालुता पैदा की और उन्हों ने कुँवारे रहने की राह को अपनाया जिसे उन्हों ने स्वयं ही अपनाया था। हम ने यह आदेश उन के लिए जरूरी नहीं ठहराया था, फिर भी उन्हों ने यह राह अल्लाह की प्रसन्नता पाने के लिए अपनाई थी, परन्तु उन्हों ने इस की ओर पूरा ध्यान नहीं दिया। अतः उन में से जो मोमिन थे हम ने उन्हें उचित प्रतिफल प्रदान किया तथा उन में से बहुत से प्रतिज्ञा भंग करने वाले थे।२८।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرَسُولِهِ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٩﴾

हे ईमान वालो ! अल्लाह के लिए संयम धारण करो और उस के रसूल पर ईमान लाओ, तब अल्लाह तुम्हें अपनी दयालुता से दो गुना हिस्सा देगा और तुम्हारे लिए नूर (प्रकाश) निश्चित कर देगा, जिस की सहायता से तुम चलोगे और तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा तथा अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और अनन्त कृपा करने वाला है।२९।

لِئَلَّا يَعْلَمَ أَهْلُ الْكِتَابِ أَلَّا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ ۙ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٣٠﴾ ع

और हम यह इसलिए कहते हैं ताकि किताब वाले यह न समझें कि मुसलमानों को अल्लाह की कृपा में से कुछ भी नहीं मिला है, अपितु यह समझें कि कृपा तो अल्लाह के हाथ में है। वह जिसे चाहता है उसे देता है और अल्लाह बहुत कृपा करने वाला है।३०। (रुकू ४/२०)

सूर: अल्-मुजादल:

[यह सूर: मदनी है और बिस्मिल्लाह् सहित इस की तेईस आयतें एवं तीन रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह् का नाम ले कर (पढ़ता हूं) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ②

अल्लाह् ने उस स्त्री की प्रार्थना सुन ली जो अपने पति के बारे में तुझ से झगड़ती थी तथा अल्लाह् से फ़रियाद करती थी और अल्लाह् तुम दोनों की बात-चीत सुन रहा था। निस्सन्देह अल्लाह् बहुत सुनने वाला और बहुत देखने वाला है।२।

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ③

(सो याद रखो कि) तुम में से जो लोग अपनी पत्नियों को माँ कह बैठें तो ऐसा कहने से वे उन की माएँ नहीं हो जातीं। उन की माएँ वे ही हैं जिन्हों ने उन्हें पैदा किया है, परन्तु वे एक भद्दी और झूठी बात कहते हैं और निस्सन्देह अल्लाह् बहुत क्षमा करने वाला और बहुत बख़्शने (अर्थात् क्षमा करने) वाला है।३।

وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآىِٕهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ

और वे लोग जो अपनी पत्नियों को माँ कह देते हैं, फिर इस के बाद (अल्लाह् के रोकने पर भी) जो कुछ उन्हों ने कहा था उस की

لِمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مِّن قَبْلِ أَن يَتَمَاسَّا ۚ ذَٰلِكُمْ تُوعَظُونَ بِهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝٣

ओर लौट[1] आते हैं। उन के लिए ज़रूरी है कि वे दोनों आपसी मिलाप से पहले एक दास को स्वतन्त्र करें। यह वह बात है जिस का तुम्हें उपदेश दिया है और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति जानता है।४।

فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِن قَبْلِ أَن يَتَمَاسَّا ۖ فَمَن لَّمْ يَسْتَطِعْ فَإِطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ۚ ذَٰلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۗ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝٤

और जो व्यक्ति (दास) न पाए वह लगातार दो महीने के रोज़े रखे, इस से पहले कि वे दोनों आपस में मिलें और जिस में यह भी शक्ति न हो तो वह साठ निर्धनों को भोजन कराए। यह आदेश इसलिए दिया गया है ताकि तुम अल्लाह और उस के रसूल की बात को मान लिया करो और यह अल्लाह की सीमाएँ हैं और इन्कार करने वालों के लिए पीड़ादायक अज़ाब निश्चित है।५।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُبِتُوا كَمَا كُبِتَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ وَقَدْ أَنزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝٥

जो लोग अल्लाह तथा इस के रसूल के आदेशों के विरुद्ध जाते हैं वे अपमानित किए जाएँगे जैसे उन से पहले लोग अपमानित किए गए और हम अपने खुले-खुले आदेश उतार चुके हैं और जो लोग (इन सुस्पष्ट आदेशों का) इन्कार करेंगे उन्हें अपमान-जनक अज़ाब मिलेगा।६।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۚ أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝٦ ع

जिस दिन अल्लाह उन सब को इकट्ठा करके उठाएगा और उन्हें उन के कर्मों से सूचित करेगा जो अल्लाह ने तो गिन रखे हैं, परन्तु वे उन्हें भुला बैठे हैं और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का निरीक्षक है।७। (रुकू १/१)

1. अर्थात् पुनः वही बुरे कर्म करते हैं।

الم تر ان الله يعلم ما في السموت وما في الارض ما يكون من نجوى ثلثة الا هو رابعهم ولا خمسة الا هو سادسهم ولا ادنى من ذلك ولا اكثر الا هو معهم اين ما كانوا ثم ينبئهم بما عملوا يوم القيمة ان الله بكل شيء عليم ○

क्या तू नहीं जानता कि आसमानों और जमीन में जो कुछ भी है अल्लाह उसे जानता है? संसार में कोई तीन मनुष्य अलग परामर्श करने वाले नहीं होते जब कि वह उन का चौथा न हो तथा न ही पाँच परामर्श करने वाले होते हैं जब कि वह उन का छटा न हो और न इस संख्या से कम होते हैं न अधिक कि वह (प्रत्येक परिस्थिति में) उन के साथ होता है चाहे वे कहीं भी (परामर्श कर रहे) हों। फिर क़ियामत के दिन वह उन्हें उन के कर्मों से सूचित करेगा। अल्लाह हर-एक चीज को जानने वाला है।८।

الم تر الى الذين نهوا عن النجوى ثم يعودون لما نهوا عنه ويتنجون بالاثم والعدوان ومعصيت الرسول واذا جاءوك حيوك بما لم يحيك به الله ويقولون في انفسهم لولا يعذبنا الله بما نقول حسبهم جهنم يصلونها فبئس المصير ○

क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिन को गुप्त षड्यन्त्रों से रोका गया है फिर भी जिस चीज़ से उन्हें रोका गया है वे उस की ओर लौटते ही रहते हैं तथा पाप और अत्याचार और रसूल की अवज्ञा की बातों के बारे में परामर्श करते हैं और जब वे तेरे पास आते हैं तो तुझे ऐसे शब्दों में दुआ (अर्थात् आशीर्वाद) देते हैं जिन शब्दों में अल्लाह[1] ने दुआ नहीं दी और अपने दिलों में कहते हैं कि अल्लाह क्यों हमारी (मुनाफ़िक़त की) बात के कारण हमें अज़ाब नहीं देता? उन लोगों के लिए नरक काफ़ी है। वे उस में प्रवेश करेंगे तथा वह अत्यन्त बुरा ठिकाना है।९।

1. वह दुआ में अतिशयोक्ति से काम लेते हैं ताकि उन के बारे में अच्छा विचार हो अन्यथा वे वास्तव में उस दुआ के मानने वाले नहीं होते। अतः यह कहते हैं कि यदि वह व्यक्ति सच्चा है तो हमारे इतने बड़े झूठ पर भी हमें दण्ड क्यों नहीं मिलता।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۱۰﴾

हे मोमिनो ! तुम जब कभी गुप्त[1] परामर्श करो तो पाप और अत्याचार की बातों पर गुप्त परामर्श न किया करो और न रसूल की अवज्ञा की बातों पर, अपितु भलाई एवं संयम की बातों पर परामर्श किया करो और अल्लाह के लिए संयम धारण करो जिस की ओर तुम सब को जीवित कर के लौटाया जाएगा ।१०।

اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱﴾

गुप्त परामर्श करने का ढंग[2] शैतान की ओर से आया है और इस का उद्देश्य यह है कि वह मोमिनों को चिन्ता में डाले तथा वह उन्हें अल्लाह की आज्ञा के बिना कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकता और चाहिए कि मोमिन केवल अल्लाह पर भरोसा रखें ।११।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِى الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۲﴾

हे मोमिनो ! जब तुम से यह कहा जाए कि सभाओं में खुल कर बैठो, तो खुल कर बैठ जाया करो। अल्लाह भी तुम्हारे लिए कुशादगी (अर्थात् विस्तार) के साधन उपलब्ध करेगा और जब तुम्हें कहा जाए कि उठ जाओ, तो उठ जाया करो। जो लोग मोमिन हैं और वे वास्तविक ज्ञान रखने वाले हैं अल्लाह उन की पदवियों को बढ़ाएगा और जो तुम कहते हो अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है ।१२।

---

1. यहाँ गुप्त परामर्श से तात्पर्य वह परामर्श है जो भलाई के बारे में हो और आयत 11 में जिस परामर्श से रोका गया है वह ऐसा परामर्श है जो बुराई के बारे में हो, वह उचित नहीं जैसा कि इसी आयत में इस का उल्लेख किया गया है।

2. अर्थात् ऐसे परामर्श जो बुरे कामों से सम्बन्धित हों।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٣﴾

हे ईमान वालो ! जब तुम रसूल से अलग परामर्श लेना चाहो तो ऐसा परामर्श लेने से पहले कुछ सदक़ा (दान) दिया करो। यह तुम्हारे लिए अच्छा होगा तथा दिल को पवित्र करने का साधन होगा। (यह आदेश केवल सामर्थ्य रखने वालों के लिए है) यदि तुम्हें (सदक़ा के लिए कुछ) न मिले तो (चिन्ता न करो)। अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।१३।

ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ ع

क्या तुम परामर्श करने से पहले सदक़ा देने से डर[1] गए ? सो चूँकि तुम ने ऐसा नहीं किया और अल्लाह ने तुम पर कृपा कर दी है। अत: तुम नमाज़ें क़ायम करो तथा ज़कात दो और अल्लाह तथा उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो और जो कुछ तुम करते हो उसे अल्लाह भली-भाँति जानता है।१४। (रुकू २/२)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٥﴾

क्या तू ने उन लोगों की ओर भी देखा जिन्हों ने ऐसी जाति से मित्रता गाँठी जिन पर अल्लाह ने अज़ाब उतारा था ? ऐसे लोग न तो तुम में से हैं तथा न उन ही में से हैं और वे जान-बूझ कर झूठी बात पर क़समें खाते हैं।१५।

---

1. यह डर सदक़ा देने के कारण से न था, अपितु सदक़ा जो व्यापक अर्थ रखता था इस के बारे में मुसलमानों को यह डर हो सकता था कि उतना दान दिया है अथवा नहीं, जितना अल्लाह के आदेश में अभीष्ट था। अत: इस का उत्तर दिया है कि जब तुम सदक़ा देने के लिए तय्यार हो तो फिर तुम्हारा यह भ्रम ही है कि उतना सदक़ा दिया या नहीं जिस का आदेश था। तो इस का यह अर्थ है कि तुम ने केवल वह सदक़ा नहीं दिया जिस के देने की तुम्हें शक्ति न थी और शक्ति से अधिक देना पहले ही क्षमा किया गया है, क्योंकि पहली आयत में बताया गया है कि यदि तुम्हें न मिले तो क्षमा के योग्य है और न पाने से तात्पर्य है कि अपनी इच्छा के अनुसार शक्ति न हो।

अल्लाह ने उन के लिए कड़ा अज़ाब तय्यार कर रखा है। उन के कर्म अत्यन्त बुरे हैं।१६।	اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۭ اِنَّهُمْ سَاۗءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ⑯
उन्हों ने अपनी क़समों को ढाल[1] बना रखा है और वे (इन क़समों के द्वारा) लोगों को अल्लाह की राह से रोकते हैं। अतः उन्हें अपमान-जनक अज़ाब मिलेगा।१७।	اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ⑰
अल्लाह के मुक़ाबिले में न तो उन के धन तथा न उन की सन्तान ही उन्हें कोई लाभ दे सकेंगी। ये लोग नरक वाले हैं। वे उस में निवास करते चले जाएँगे।१८।	لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْــــًٔا ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۭ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ⑱
जिस दिन अल्लाह उन सब को एकत्रित कर के उठाएगा तो उस के सामने भी उसी प्रकार क़समें खाएँगे जिस प्रकार तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं तथा विचार यह करेंगे कि वे बड़े पक्के और उचित सिद्धान्तों पर क़ायम हैं। सुनो! ये लोग (अपनी क़समों के होते हुए भी) झूठे हैं।१९।	يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰي شَيْءٍ ۭ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ⑲
शैतान उन पर ग़ालिब हो चुका है तथा उस ने अल्लाह की याद उन्हें भुला दी है। ये लोग शैतान का गिरोह हैं और सुन रखो कि शैतान का गिरोह अन्ततः घाटा पाने वाला है।२०।	اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰـىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۭ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ⑳
निस्सन्देह जो लोग अल्लाह तथा उस के रसूल का विरोध करते हैं उन की गिनती अत्यन्त अपमानित लोगों में होगी।२१।	اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَاۗدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اُولٰۗىِٕكَ فِي الْاَذَلِّيْنَ ㉑

1. अर्थात् क़समें खाते हैं और समझते हैं कि अब हमारी बात पर विश्वास करना चाहिए। वास्तविकता यह है कि अल्लाह ने क़सम और गवाही अलग-अलग बातों के लिए निश्चित कर रखी है।

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢٢﴾

अल्लाह ने निर्णय कर रखा है कि मैं तथा मेरे रसूल ही ग़ालिब होंगे। निस्सन्देह अल्लाह शक्तिशाली और प्रभुत्वशाली है।२२।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ۭ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۭ اُولٰۗىِٕكَ حِزْبُ اللّٰهِ ۭ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٢٣﴾ ع

तू ऐसी कोई जाति नहीं पाएगा जो अल्लाह तथा अन्तिम दिन पर भी ईमान रखती हो तथा अल्लाह और उस के कट्टर विरोधियों से भी प्रेम रखती हो, चाहे ऐसे लोग उन के पिता हों या बेटे या भाई हों अथवा उन के नातेदारों में से हों। यही मोमिन हैं, जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान अंकित कर दिया है और अपनी ओर से कलाम (वाणी) भेज कर उन की सहायता की है तथा वह उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। वह उन में निवास करते चले जाएँगे। अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया और वे अल्लाह से प्रसन्न हो गए। वे अल्लाह का गिरोह हैं और सुन रखो कि अल्लाह का गिरोह ही सफल हुआ करता है।२३। (रुकू ३/३)
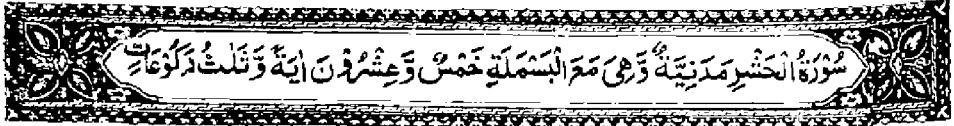
सूर: अल्-हश्र

[यह सूर: मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित
इस की पचीस आयतें एवं तीन रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ (जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ②

आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह की स्तुति कर रहा है और वह (अल्लाह) प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।२।

هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ

वह (अल्लाह) ही है जिस ने किताब वाले इन्कारियों को प्रथम युद्ध[1] के अवसर पर उन के घरों से निकाला और तुम यह विचार भी नहीं कर सकते थे कि वे निकलेंगे और वे यह विचार करते थे कि उन के दुर्ग अल्लाह के मुक़ाबिले में उन्हें बचा लेंगे और अल्लाह उन के पास उधर[2] से आया जिधर से उन्हें गुमान तक न था तथा उस ने उन के दिलों में रोब (आतंक) डाल दिया।

1. इस से अभिप्राय वह युद्ध है जो यहूदियों के वंश 'बनू-नज़ीर' से मूसलमानों का हुआ। (फ़तहुल्बयान प्रति 9 पृष्ठ 263)

2. पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध होता है कि कुछ स्थानों पर अल्लाह तथा फ़रिश्तों के आने से अभिप्राय विपत्ति अथवा अज़ाब होता है। यहाँ भी यही मुहावरा प्रयोग में लाया गया है।

الرُّعْبَ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِي الْأَبْصَارِ ③

वे अपने घरों को (कुछ तो) स्वयं अपने हाथों से और (कुछ) मोमिनों के हाथों से नष्ट कर रहे थे। अतः हे बुद्धिमानों! शिक्षा ग्रहण करो।३।

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ④

और यदि अल्लाह ने उन के लिए देश निकाला[1] निश्चित न कर रखा होता तो उन्हें इस संसार में भी अज़ाब देता तथा आख़िरत में तो उन के लिए नरक का अज़ाब निश्चित है ही।४।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَنْ يُشَاقِّ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑤

यह सब कुछ इसलिए हुआ कि उन्हों ने अल्लाह तथा उस के रसूल से मतभेद किया तथा जो अल्लाह से मतभेद करता है उसे याद रखना चाहिए कि निस्सन्देह अल्लाह का अज़ाब अत्यन्त कठोर होता है।५।

مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَىٰ أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ⑥

तुम ने खजूर के वृक्षों[2] की किसी जड़ को नहीं काटा या उसे जड़ों पर खड़ा नहीं रहने दिया, परन्तु यह अल्लाह के आदेश से था और इसलिए था कि अवज्ञाकारियों को अपमानित किया जाए।६।

और जो कुछ अल्लाह ने उन (विमुख[3] होने वाले लोगों) का धन अपने रसूल को दिया।

---

1. तौरात में लिखा है कि एक ऐसा समय आएगा जब यहूदियों को देश से निकाल दिया जाएगा। (देखिए यशायाह 23-18)

2. इस आयत में भी बनू-नज़ीर के युद्ध का उल्लेख है जिन के खजूर के वृक्ष काटने की आज्ञा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने दी थी। (बुखारी व मुस्लिम शरीफ़ रवायत हज़रत अब्दुल्लाह पुत्र हज़रत उमर)।

3. यह घटना भी बनू-नज़ीर से सम्बन्धि है, जिन्हों ने पहले तो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से विश्वासघात किया, परन्तु जब युद्ध हुआ तो डर गए तथा इस शर्त पर सन्धि कर ली कि मदीना छोड़ कर चले जाएँगे। (फ़तहुल्बयान प्रति 9 पृष्ठ 264)

وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

(तुम्हें ज्ञात ही है कि) तुम ने अपने घोड़े तथा ऊँट इस धन की प्राप्ती के लिए नहीं दौड़ाए थे, किन्तु अल्लाह अपने रसूलों को जिस (धन) का चाहता है स्वामी बना देता है और अल्लाह प्रत्येक बात (के करने) पर सामर्थ्यवान् है ।७।

مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۭ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۤ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

अल्लाह ने बस्तियों[1] के लोगों का जो धन अपने रसूल को प्रदान किया वह अल्लाह, रसूल, परिजनों, नातेदारों, अनाथों, निर्धनों और यात्रियों के लिए है ताकि वह धन-दौलत तुम्हारे धनवानों[2] में ही न घूमती रहे तथा रसूल जो कुछ तुम्हें प्रदान करे उसे ले लो तथा जिस से रोके उस से रुक जाओ एवं अल्लाह के लिए संयम धारण करो । निस्सन्देह अल्लाह का अज़ाब अत्यन्त कठोर होता है ।८।

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا

यह (धन उपर्युक्त लोगों के सिवा) निर्धन मुहाजरीन का हक़ है जिन्हें उन के घरों से और धन-दौलत से (अधिकार छीन कर) निकाल दिया गया था । वे अल्लाह की कृपा

1. अर्थात् ख़ैबर का धन जो छोटी-छोटी बस्तियों में विभाजित था ।

2. अर्थात् वह धन-दौलत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को इसलिए दी थी कि निर्धनों में बाँटी जाए, इसलिए नहीं कि धनवानों को मिले तथा उन के धन की वृद्धि का कारण बने । इस आज्ञा से प्रकट होता है कि यद्यपि ख़ैबर की भूमि तथा बाग़ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम और आप के परिजनों को मिले थे, परन्तु वास्तविक उद्देश्य यह था कि वे ऐसे मुसलमानो में बाँटें जाएँ जो सहायता के योग्य हों । इस स्थान पर शीओं के विचार का खण्डन किया गया है जो ख़ैबर के फ़िदक़ नामी बाग़ के सम्बन्ध में झगड़ा उठाते हैं । वास्तविक बात यह है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के पास ख़ैबर के बाग़ अस्थाई रूप में थे ताकि आपका परिवार उन से आजीविका प्राप्त कर सके न कि स्थायी अर्थात् विरासत के रूप में । अतः हज़रत अबू-बकर का निर्णय ठीक था और शीओं का इस पर आक्षेप आदि ठीक नहीं ।

وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝

और उस की प्रसन्नता चाहते हैं और सदैव अल्लाह की एवं उस के रसूल की सहायता करते रहते हैं। वे लोग ही सच्चे हैं।९।

وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ڕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

और (वह धन-दौलत उन लोगों के लिए भी है) जो मदीना में पहले से निवास रखते थे और (हिजरत करने वालों के आने से पहले) ईमान ला चुके थे तथा उन से प्रेम करते थे जो उन की ओर हिजरत कर के आए तथा अपने दिलों में उस धन के लिए कोई लालसा नहीं रखते थे जो कि उन्हें दिया गया था और वे स्वयं निर्धन होने पर भी मुहाजरीन को अपने-आप पर प्रधानता देते थे और जिन लोगों को अपनी जान की कन्जूसी से सुरक्षित रखा जाए ऐसे समस्त लोग सफल होने वाले हैं।१०।

وَالَّذِيْنَ جَاۗءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ ع

और जो लोग[1] इन के बाद आए वे (प्रार्थना करते हुए) कहते हैं कि हे हमारे रब्ब ! हमें तथा हमारे उन भाइयों को क्षमा कर जो हम से पहले ईमान ला चुके हैं और हमारे दिलों में मोमिनों के प्रति ईर्ष्या पैदा न होने दे। हे हमारे रब्ब ! तू बहुत दयावान् एवं अनन्त कृपा करने वाला है।११। (रुकू १/४)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَىِٕنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ

क्या तू ने उन (मुनाफ़िक़ों) को नहीं देखा जो किताब वालों में से अपने इन्कार करने वाले भाइयों को कहते हैं कि यदि तुम्हें (मदीना से)

1. यह आयत उन लोगों के विचार का खण्डन करती है जो सहाबा को बुरा कहते हैं, क्योंकि यह आयत बताती है कि मोमिन की यह पहचान है कि वह अपने से पहले ईमान लाने वालों का नाम आदर एवं सत्कार से ले तथा उन के लिए प्रार्थना करे।

مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِن قُوتِلْتُمْ لَنَنصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ⑪

निकाला गया तो हम भी तुम्हारे साथ ही निकल जाएँगे तथा तुम्हारे विरुद्ध कदापि किसी की बात नहीं मानेंगे और यदि तुम्हारे साथ युद्ध किया गया तो हम तुम्हारी सहायता करेंगे और अल्लाह गवाही देता है कि वे झूठे हैं ।१२।

لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِن قُوتِلُوا لَا يَنصُرُونَهُمْ وَلَئِن نَّصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنصَرُونَ ⑫

यदि उन (किताब वालों) को निकाल दिया गया तो ये (मुनाफ़िक़) उन के साथ कदापि नहीं निकलेंगे और यदि उन (किताब वालों) से युद्ध किया गया तो ये (मुनाफ़िक़) कदापि उन की सहायता नहीं करेंगे और यदि सहायता की भी तो (ऐसे झूठे दिल से करेंगे कि) युद्ध छिड़ते ही पीठ दिखा कर भाग जाएँगे और (वे उन की सहायता तो क्या करेंगे, ख़तरे के समय) उन की अपनी सहायता करने वाला कोई नहीं होगा ।१३।

لَأَنتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِم مِّنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ⑬

(हे मोमिनो !) उन (मुनाफ़िक़ों) के दिलों में तुम्हारा डर अल्लाह से भी अधिक है । यह बात इस कारण है कि वह एक ऐसा गिरोह है जिसे कुछ भी समझ नहीं है ।१४।

لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى مُّحَصَّنَةٍ أَوْ مِن وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُم بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ ⑭

वे तुम्हारे साथ कदापि युद्ध नहीं करेंगे सिवाय इस के कि वे मज़बूत चार-दीवारी वाली बस्ती में दीवारों के पीछे बैठे हों । उन की आपस की लड़ाई बहुत सख़्त होती है । तू उन को एक जाति समझता है, परन्तु उन के दिल आपस में फटे हुए होते हैं । इस का कारण यह है कि वे एक ऐसी जाति (के लोग) हैं जो बुद्धिहीन हैं ।१५।

كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٦﴾

उन की दशा उन जातियों जैसी है जो उन से कुछ ही समय पहले हो चुकी हैं। उन्हों ने अपने बुरे कर्मों का परिणाम देख लिया तथा उन्हें पीड़ा-जनक अज़ाब मिला।१६।

كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٧﴾

उन (मुनाफ़िक़ों) की दशा शैतान से मिलती है जब कि वह मनुष्य से तो यह कहता है कि इन्कार कर, किन्तु जब वह (मनुष्य) इन्कार कर देता है तो (शैतान) उस से कहता है कि मैं तुझ से अलग हूँ। मैं अल्लाह से डरता हूँ जो सब जहानों का रब्ब है।१७।

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٨﴾ ع

अत: उन दोनों का परिणाम यह होता है कि वह दोनों ही नरक में जा पड़ते हैं तथा उसी में रहते चले जाएँगे और अत्याचारियों का बदला ऐसा ही होता है।१८। (रुकू २/५)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ ۢبِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾

हे मोमिनो ! अल्लाह के लिए संयम धारण करो और चाहिए कि प्रत्येक जान इस बात को ध्यान में रखे कि उस ने कल (अर्थात् परलोक) के लिए क्या आगे भेजा है ? तुम सब के सब अल्लाह के लिए संयम धारण करो। निस्सन्देह अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे भली-भाँति जानता है।१९।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰهُمْ اَنْفُسَهُمْ ۚ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٢٠﴾

और उन लोगों की तरह मत बनो जिन्हों ने अल्लाह को भुला[1] दिया। सो अल्लाह ने ऐसा किया कि उन का अपना लाभ भी उन को भुला दिया। ये लोग अवज्ञाकारी हैं।२०।

---

1. अल्लाह को भुला देने का यह परिणाम निकलता है कि मनुष्य ऐसे बुरे कर्मों में फंस जाता है जो स्वयं उस की जान के लिए विपत्ति का कारण बन जाते हैं।

لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۭ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ۝

नरक-निवासी तथा स्वर्ग-निवासी एक जैसे नहीं हो सकते। स्वर्ग-निवासी लोग ही सफल हैं।२१।

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰي جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝

यदि हम क़ुर्आन किसी पहाड़[1] पर उतारते तो तू उसे देखता कि वह (विनय से) झुक जाता तथा अल्लाह के भय से टुकड़े-टुकड़े हो जाता और यह बातें जो हम तुझ से कहते हैं ये सब मनुष्यों के लिए हैं ताकि वह सोचें।२२।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝

अल्लाह ही है जिस के सिवा कोई उपास्य नहीं। वह परोक्ष और अपरोक्ष को जानता है। वही अनन्त कृपा करने वाला है और वही बार-बार दया करने वाला है।२३।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

(सत्य यह है कि) अल्लाह वह है जिस के सिवा कोई उपास्य नहीं। वह बादशाह है, स्वयं पवित्र है (तथा दूसरों को पवित्र करता है)। वह निष्कलंक है (तथा दूसरों को सुरक्षित रखता है)। वह सब को शान्ति देने वाला है और सब का निरीक्षक है। प्रभुत्वशाली है तथा टूटे हुए समस्त दिलों को जोड़ता है। बड़ा महिमाशाली है। ये लोग जिन पदार्थों को उस का साझी ठहराते हैं, अल्लाह उन सब से पवित्र है।२४।

---

1. पहाड़ से अभिप्राय ऐसे लोग हैं जो अपनी जाति में पहाड़ों की भाँति स्थान रखते हैं। अतएव पहाड़ से तात्पर्य पत्थर से बने हुए पहाड़ नहीं, अपितु अल्लाह कहता है कि पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह से भयभीत होने की जो शिक्षा है यदि यह किसी बड़े प्रताप रखने वाले व्यक्ति पर भी उतरती तो वह भी अल्लाह के सामने टुकड़े-टुकड़े हो कर गिर जाता।

هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۭ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

(सत्य यही है कि) अल्लाह हर चीज़ को पैदा करने वाला तथा सब पदार्थों का आविष्कारक भी है और प्रत्येक वस्तु को उस की स्थिति के अनुसार उसे आकृति एवं रूप प्रदान करने वाला है। उस के अनेक उत्तम गुण हैं। जो कुछ आसमानों तथा ज़मीन में है उसी की स्तुति कर रहा है और वह प्रभुत्वशाली एवं तत्त्वदर्शी है।२५। (रुकू ३/६)

सूरः अल्-मुम्तहिनः

[यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की चौदह आयतें तथा दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۖ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ

हे मोमिनो ! मेरे तथा अपने शत्रुओं को गहरा मित्र न बनाया करो। तुम तो उन्हें प्रेम के सन्देश भेजते हो, हालाँकि वे उस सत्य के इन्कारी हैं, जो तुम्हारी ओर आया है। वे तुम्हें और रसूल को घरों[1] से केवल इसलिए निकालते हैं कि तुम सब के सब अल्लाह पर जो तुम्हारा रब्ब है ईमान ला चुके हो। यदि तुम मेरी राह में कोशिश करने और मेरी प्रसन्नता पाने के लिए निकलो तो तुम में से कुछ लोग चोरी-छिपे उन की ओर प्रेम[2] का सन्देश भेजते हैं, परन्तु मुझे पूरा

1. अर्थात् शत्रु आक्रमण करने में पहल करते हैं जिस के कारण हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम और आप के साथियों को भी घर से बाहर निकलना पड़ता है।

2. इस में कुछ मुसलमानों की ओर संकेत है जिन्हों ने इस विचार से कि मुसलमानों की विजय तो अवश्य ही होगी। अतः उन्हों ने मक्का में अपने नातेदारों को बचाने के लिए मक्का नगर पर चढ़ाई करने वाली मुसलमान-सेना की सूचना पहले से मक्का के इन्कार करने वाले लोगों को भेजवा दी थी, परन्तु अल्लाह ने वह्य द्वारा इस बात का ज्ञान हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को दे दिया और सूचना देने वाला पकड़ा गया। (बुख़ारी शरीफ़ किताबुल् मुग़ाज़ी)।

وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝٢

ज्ञान है जो तुम छिपाते हो तथा जो प्रकट करते हो और तुम में से जो कोई ऐसा करे वह समझ ले कि वह सीधी राह से भटक गया ।२।

اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ۝٣

यदि वे तुम पर अधिकार पा लें तो तुम जान लोगे कि वे तुम्हारे शत्रु हैं और अपने हाथ तथा ज़बानों का प्रयोग करके तुम्हारे सर्वनाश के लिए प्रयत्नशील हैं और उन की इच्छा यही रहती है कि काश ! तुम इन्कार करने वाले बन जाओ ।३।

لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٤

तुम्हें न तो तुम्हारे निकट सम्बन्धी और न तुम्हारी सन्तान क़ियामत के दिन कोई लाभ पहुँचा सकती है। उस दिन अल्लाह ही निर्णय करेगा और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति देख रहा है ।४।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۫ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ

इब्राहीम और उस के साथियों में तुम्हारे लिए एक उत्तम आदर्श मौजूद है। जब उन्हों ने अपनी जाति के लोगों से कहा कि हम तुम से तथा अल्लाह के सिवा तुम्हारे उपास्यों से बेज़ार हैं। हम तुम्हारी बातों का इन्कार करते हैं तथा हमारे और तुम्हारे बीच शत्रुता एवं द्वेष उस समय तक के लिए जाहिर हो गया है कि तुम अल्लाह पर ईमान ले आओ। हाँ हम इब्राहीम की प्रतिज्ञा को जो उस ने अपने पिता से की थी, अलग करते हैं, वह यह थी कि मैं तेरे लिए क्षमा की प्रार्थना[1] करूँगा, किन्तु अल्लाह के मुक़ाबिले

1. क़ुर्आन-मजीद में दूसरे स्थान पर आता है कि मुनाफ़िक़ों के लिए भी क्षमा की प्रार्थना न करो।

(शेष पृष्ठ १२३३ पर)

لَكَ وَمَآ اَمۡلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنۡ شَیۡءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَیۡكَ تَوَكَّلۡنَا وَاِلَیۡكَ اَنَبۡنَا وَاِلَیۡكَ الۡمَصِیۡرُ ۝

से मैं तेरी किसी प्रकार की सहायता करने की शक्ति नहीं रखता (और इब्राहीम ने यह भी कहा था कि) हे हमारे रब्ब ! हम तुझ पर भरोसा करते हैं और तेरी ओर झुकते हैं तथा तेरी ओर ही लौट कर जाना है ।५।

رَبَّنَا لَا تَجۡعَلۡنَا فِتۡنَةً لِّلَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا وَاغۡفِرۡ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَكِیۡمُ ۝

हे हमारे रब्ब ! हमें इन्कार करने वाले लोगों के लिए ठोकर का कारण न बना तथा हमारे अपराध क्षमा कर। हे हमारे रब्ब ! तू प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है ।६।

لَقَدۡ كَانَ لَكُمۡ فِیۡهِمۡ اُسۡوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنۡ كَانَ یَرۡجُوا اللّٰهَ وَالۡیَوۡمَ الۡاٰخِرَ ؕ وَمَنۡ یَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الۡغَنِیُّ الۡحَمِیۡدُ ۝ ع

उन लोगों में तुम्हारे लिए एक उत्तम आदर्श है अर्थात् प्रत्येक ऐसे व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और क़ियामत के दिन के देखने की आशा रखता है तथा जो कोई पीठ फेर ले वह याद रखे कि अल्लाह किसी का मुहताज नहीं है तथा अनेक स्तुतियों का अधिकारी है ।७। (रुकू १/७)

عَسَی اللّٰهُ اَنۡ یَّجۡعَلَ بَیۡنَكُمۡ وَبَیۡنَ الَّذِیۡنَ عَادَیۡتُمۡ مِّنۡهُمۡ مَّوَدَّةً ؕ وَاللّٰهُ قَدِیۡرٌ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ۝

सम्भव है कि अल्लाह तुम्हारे तथा उन लोगों के बीच जो इन्कार करने वाले लोगों में से तुम्हारे शत्रु हैं प्रेम पैदा कर दे और अल्लाह इस का सामर्थ्य रखता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और अपार दया करने वाला है ।८।

(पृष्ठ १२३२ का शेष)

यह इस के विपरीत नहीं, क्योंकि इस आयत से केवल इतना ही सिद्ध होता है कि इब्राहीम के चाचा जिन का यहाँ उल्लेख है मुनाफ़िक़ न थे, अपितु धर्म के सम्बन्ध में आत्म-भ्रान्ति में पड़े हुए थे। वास्तव मे सत्संकल्प से शिर्क को अपनाए हुए थे। इस लिए उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करना उचित था, किन्तु सूर: तौब: आयत 114 से विदित होता है कि एक समय ऐसा आया जब हज़रत इब्राहीम को मालूम हो गया कि उन के चाचा दुविधा में नहीं, अपितु वह वास्तव में सच्चे धर्म के शत्रु हैं तो उन्हों ने उस से असम्बन्धता प्रकट कर दी।

لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ⑧

अल्लाह तुम्हें उन लोगों से भलाई और न्याय का व्यवहार करने से नहीं रोकता, जिन्हों ने धार्मिक मतभेद के कारण तुम्हारे साथ लड़ाई नहीं की तथा जिन्हों ने तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला। अल्लाह न्याय करने वालों को पसन्द करता है।९।

اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰٓي اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ⑨

अल्लाह तुम्हें केवल उन लोगों से (मित्रता करने से) रोकता है जिन्हों ने धार्मिक भेद-भाव के कारण तुम्हारे साथ लड़ाई की और जिन्हों ने तुम्हें घरों से निकाला अथवा तुम्हारे निकालने के लिए तुम्हारे दूसरे शत्रुओं की सहायता की तथा जो लोग भी ऐसे लोगों से मैत्री रखें वे अत्याचारी हैं।१०।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَاۗءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ۭ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۭ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ

हे मोमिनो! जब तुम्हारे पास मोमिन महिलाएँ हिजरत कर के आएँ तो उन की अच्छी तरह परीक्षा कर लिया करो। अल्लाह उन के ईमान को भली-भाँति जानता है, किन्तु यदि तुम भी जान लो कि वे मोमिन महिलाएं हैं तो उन्हें इन्कार करने वाले लोगों की ओर मत लौटाओ न वे (महिलाएँ) उन (इन्कार करने वाले लोगों) के लिए वैध हैं तथा न वे (इन्कार करने वाले) उन (मोमिन स्त्रियों) के लिए वैध हैं और चाहिए कि इन्कार करने वालों ने जो उन (स्त्रियों के विवाह) पर ख़र्च किया हो वह उन्हें वापस लौटा दो तथा (जब तुम उन महिलाओं को इन्कार करने वालों से स्वतन्त्र करवा लो तो) उन के महर दे देने की दशा में यदि तुम उन से विवाह कर लो तो तुम्हारे ऊपर कोई

أُجُورَهُنَّ ۚ وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَاسْأَلُوا مَا أَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْأَلُوا مَا أَنْفَقُوا ۚ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ۖ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١﴾

आपत्ति नहीं तथा इन्कार करने वाली स्त्रियों के सतीत्व को अपने अधिकार में न रखो और जो कुछ तुम ने उन पर ख़र्च किया है (यदि वे भाग कर इन्कार करने वालों की ओर चली जाएँ तो) वह इन्कार करने वालों से माँग[1] लो और (यदि इन्कार करने वालों की स्त्रियाँ इस्लाम धर्म ग्रहण कर के मुसलमानों के पास आ जाएँ तो) जो कुछ उन्हों ने (अर्थात् इन्कार करने वालों ने अपने विवाह पर) ख़र्च किया है वह मुसलमानों से माँग[2] लें। यह तुम्हारे लिए अल्लाह का आदेश है। वह तुम्हारे बीच निर्णय करता है और अल्लाह जानने वाला और हिक्मत वाला है।११।

وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَا أَنْفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾

और यदि तुम्हारी पत्नियों में से कोई भाग कर इन्कार करने वालों के पास चली जाए और इस के बाद तुम्हारे हाथ में भी इन्कार करने वाली स्त्री (युद्ध के बन्दी के रूप में) आए तो तुम उन लोगों को जिन की पत्नियाँ भाग कर इन्कार करने वालों से जा मिली हैं उन के वास्तविक ख़र्च के बराबर जो उन्हों ने अपने विवाहों पर किया था दे दो[3] तथा अल्लाह के लिए संयम धारण करो जिस पर तुम ईमान रखते हो।१२।

---

1. सरकार द्वारा अपने ख़र्च की माँग इन्कार करने वालों से की जाए।

2. अर्थात् इन्कार करने वाले लोग भी ऐसी स्त्रियों के ख़र्च की माँग सरकार द्वारा मुसलमानों से करें। मानों दोनों आयतों में इस प्रकार के हक़ सरकार के द्वारा लेने-देने मान लिए गए हैं।

3. जो मुसलमान अपनी पत्नियों के भाग जाने अथवा युद्ध में बन्दी बन जाने के कारण हानि उठाएँ, सरकार उस का बदला युद्ध में बन्दी के रूप में पकड़ी हुई स्त्री से पूरा न करे, अपितु अपनी ओर से आर्थिक हानि का बदला दे ताकि स्त्री जाति का जो सम्मान इस्लाम क़ायम करना चाहता है उसे धक्का न लगे।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾

हे नबी ! जब तेरे पास स्त्रियाँ मुसलमान हो कर आएँ और बैअत करने की इच्छा करें, इस शर्त पर कि वे किसी को अल्लाह का साझी नहीं ठहराएँगी तथा न चोरी करेंगी और न व्यभिचार करेंगी और न अपनी सन्तान की हत्या करेंगी और न किसी पर झूठा आरोप लगाएँगी और भली-बातों में तेरी अवज्ञा नहीं करेंगी तो उन की बैअत ले लिया कर एवं उन के लिए क्षमा माँगा कर। अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला एवं दया करने वाला है।१३।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَىِٕسُوْا مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا يَىِٕسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿١٣﴾ ع

हे मोमिनो ! किसी ऐसी जाति से मैत्री न रखो जिस पर अल्लाह अप्रसन्न[1] है। वे लोग आख़िरत के जीवन से ऐसे निराश हो गए हैं जिस प्रकार इन्कार करने वाले लोग क़ब्रों में पड़े हुए लोगों से निराश हो चुके हैं।१४। (रुकू २/८)

---

१. अभिप्राय यह है कि जिन लोगों पर अल्लाह अप्रसन्न नहीं होता वे अपनी शत्रुता में सीमा पार नहीं करते, परन्तु जिन पर अल्लाह अप्रसन्न होता है वे शत्रुता एवं द्वेष में सीमा पार कर जाते हैं। इस कारण उन से सम्पर्क स्थापित करना अनुचित हो जाता है।
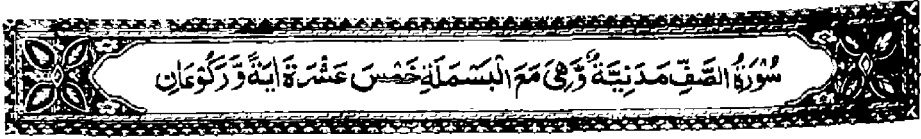
सूर: अल् - सफ़्फ़

[यह सूर: मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित
इस की पन्द्रह आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

आसमानों तथा ज़मीन में जो कुछ भी है अल्लाह की स्तुति कर रहा है तथा वह ग़ालिब और हिक्मत वाला है।२।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝

हे मोमिनो! तुम वे बातें क्यों कहते हो जो करते नहीं ?।३।

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝

अल्लाह के निकट वह बात बहुत बुरी है जिसे तुम कहो, किन्तु स्वयं उसे करो नहीं।४।

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝

अल्लाह तो उन लोगों को पसन्द करता है जो उस की राह में पंक्ति-बद्ध हो कर लड़ते हैं। मानों वे एक ऐसी दीवार हैं जिस की मज़बूती के लिए सीसा पिघला कर डाला गया हो।५।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ

और (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति के लोगों से कहा कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम मुझे क्यों दु:ख देते हो? हालाँकि तुम

تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ
اللَّهُ قُلُوبَهُمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

जानते हो कि मैं अल्लाह की ओर से तुम्हारे पास रसूल बन कर आया हूँ, परन्तु जब इस के होते हुए भी वे लोग सीधी राह से भटक गए तो अल्लाह ने उन के दिलों को टेढ़ा कर दिया तथा अल्लाह अवज्ञाकारियों को सफलता का मार्ग नहीं दिखाता ।६।

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي
رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ
التَّوْرَاةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي
اسْمُهُ أَحْمَدُ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا
سِحْرٌ مُبِينٌ ۝

और (याद करो) जब मर्यम के पुत्र ईसा ने अपनी जाति से कहा कि हे इस्राईल की सन्तान ! मैं अल्लाह की ओर से तुम्हारे पास रसूल बन कर आया हूँ । जो (कलाम) मेरे आने से पहले उतर चुका है अर्थात् तौरात, मैं उस की भविष्यवाणियों को पूरा करता हूँ तथा एक ऐसे रसूल की सूचना भी देता हूँ जो मेरे बाद आएगा जिस का नाम अहमद[1] होगा । फिर जब वह रसूल प्रमाणों के साथ आ गया तो उन्हों ने कहा कि यह तो खुला-खुला धोखा है ।७।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ
يُدْعَى إِلَى الْإِسْلَامِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ

और इस से बढ़ कर अत्याचारी दूसरा कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े ? हालाँकि वह इस्लाम[2] धर्म की ओर बुलाया

---

1. इस आयत में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के सम्बन्ध में भविष्यवाणी है जो बर्नबास की इन्जील में लिखी हुई है । ईसाई इसे झूठी इन्जील ठहराते हैं, किन्तु यह पोप के पुस्तकालय में मौजूद है । इस के सिवा यह भी प्रमाण है कि प्रचलित इन्जीलों में फ़ार्क़लीत का समचार दिया गया है और उस का अर्थ अहमद ही बनता है । अतः इस आयत में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का प्रत्यक्ष तथा आप के एक स्वरूप का अप्रत्यक्ष रूप में समाचार दिया गया है ।

2. इस आयत में इस बात को स्पष्ट किया गया है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के स्वरूप के विषय में विशेष ध्यान देना चाहिए जो यद्यपि है तो भविष्यवाणी का अप्रत्यक्ष रूप में प्रतीक, परन्तु इस्लाम स्वीकार करने का उसे निमन्त्रण दिया जाएगा । हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम तो स्वयं संसार वालों को इस्लाम धर्म स्वीकार करने का निमन्त्रण देते थे ।

الظّٰلِمِيْنَ ⑧

जाता है। अतः अल्लाह अत्याचारियों को कदापि हिदायत नहीं देता।८।

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ⑨

वह चाहते हैं कि अपने मुँहों से अल्लाह के नूर को बुझा दें तथा अल्लाह अपने नूर को पूरा कर के छोड़ेगा, चाहे इन्कार करने वाले लोग कितना ही बुरा समझें।९।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ⑩

वह अल्लाह ही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत के साथ तथा सच्चा धर्म दे कर भेजा है ताकि समस्त धर्मों पर उस को प्रभुत्व प्रदान करे, चाहे मुश्रिक कितना ही बुरा समझें।१०। (रुकू १/९)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ⑪

हे मोमिनो! क्या मैं तुम्हें एक ऐसे व्यापार की सूचना दूँ जो तुम्हें पीड़ादायक अज़ाब से बचा लेगा।११।

تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ⑫

(वह व्यापार यह है कि) तुम अल्लाह तथा उस के रसूल पर ईमान लाओ और अपने तन-मन-धन से अल्लाह की राह में जिहाद करो। यदि तुम समझो तो यह तुम्हारे लिए उत्तम है।१२।

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ⑬

(ऐसा करने पर) वह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा तथा तुम्हें उन जन्नतों (स्वर्ग धामों) में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं और वह सदा क़ायम रहने वाले स्वर्ग के पवित्र भवनों में रखेगा। यह महान् सफलता है (जो वह तुम्हें देगा)।१३।

وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ

इस के सिवा एक और वस्तु भी है जिसे तुम बहुत चाहते हो, वह अल्लाह की सहायता

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ⑬

है और एक शीघ्र प्राप्त होने वाली विजय है तथा मोमिनों को शुभ-समाचार पहुँचा दे (कि उन्हें शीघ्र ही प्राप्त होने वाली एक और विजय भी होगी)।१४।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ⑮

हे मोमिनो ! तुम अल्लाह के धर्म के सहायक बन जाओ जैसा कि मर्यम के पुत्र ईसा ने जब अपने हवारियों (अर्थात् साथियों) से कहा कि अल्लाह के (निकट ले जाने वाले) कामों में कौन मेरा सहायक है तो वह बोले कि हम अल्लाह के (धर्म के) सहायक हैं। अतः बनी-इस्राईल का एक गिरोह तो ईमान ले आया तथा दूसरे गिरोह ने इन्कार कर दिया, जिस पर हम ने मोमिनों की उन के शत्रुओं के विरुद्ध सहायता की और मोमिन विजयी हो गए।१५। (रुकू २/१०)
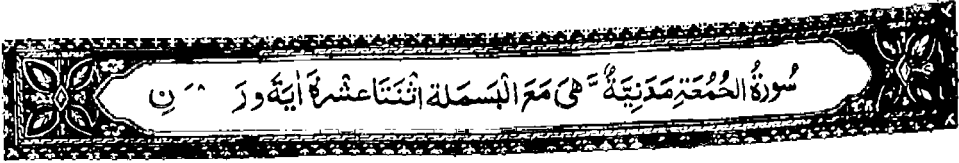
सूरः अल्-जुमुअः

[यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की बारह आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ②

आसमानों तथा ज़मीन में जो कुछ है वह अल्लाह की स्तुति करता है। उस (अल्लाह) की जो बादशाह भी है और पवित्र भी है (तथा समस्त गुणों का भंडार है) और ग़ालिब और हिक्मत वाला है।२।

هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْأُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ③

वही अल्लाह है जिस ने एक अनपढ़ जाति में उन्हीं में से एक व्यक्ति को रसूल बना कर भेजा (जो अनपढ़ होने पर भी) उन्हें अल्लाह के आदेश सुनाता है और उन को पवित्र करता है तथा उन्हें किताब और हिक्मत की शिक्षा देता है, हालाँकि वे इस से पहले बड़ी भूल में थे।३।

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

और इन के सिवा एक-दूसरी जाति[1] के लोगों में भी वह इस को भेजेगा जो अभी तक इन

1. इस आयत में उस हदीस की ओर संकेत पाया जाता है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम (शेष पृष्ठ १२४२ पर)

الْحَكِيْمُ۝٤

से नहीं मिली तथा वह ग़ालिब और हिक्मत वाला है ।४।

ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ۝٥

यह अल्लाह की कृपा है जिसे चाहता है देता है तथा अल्लाह बड़ी कृपा वाला है ।५।

مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ۚ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ۝٦

जिन लोगों के लिए तौरात की आज्ञा का पालन करना ज़रूरी ठहराया गया है, परन्तु इस के होते हुए भी ये उस (की शिक्षा) पर नहीं चले, उन की उपमा गदहे जैसी है जो बहुत सी किताबें उठाए होता है, (किन्तु जानता कुछ नहीं) । अल्लाह के आदेशों का इन्कार करने वाली जाति की दशा अत्यन्त बुरी होती है तथा अल्लाह अत्याचारी जाति को कदापि सफलता नहीं देता ।६।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ۝٧

तू कह दे कि हे यहूदियो ! यदि तुम्हारा यह दावा है कि सारे संसार के लोगों को छोड़ कर केवल तुम ही अल्लाह के मित्र हो तथा उस की शरण में हो तो यदि तुम (इस दावा में) सच्चे हो तो मौत की इच्छा[1] करो ।७।

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗۤ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ۝٨

परन्तु वे अपने पिछले कर्मों के कारण कदापि मुबाहिला के लिए तय्यार नहीं होंगे और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है ।८।

(पृष्ठ १२४१ का शेष)

से सहाबा अर्थात् आप के साथियों ने पूछा कि हे अल्लाह के रसूल ! यह दूसरी जाति के लोग कौन हैं ? तो आप ने हज़रत सलमान फ़ारसी के कन्धे पर हाथ रख कर कहा कि यदि एक समय ईमान सुरय्या नक्षत्र तक भी उड़ गया तो फ़ारस वालों की सन्तान में से एक अथवा एक से अधिक व्यक्ति उसे वापस लौटा लाएँगे । इस में इमाम मेहदी की शुभ-सूचना दी गई है ।

1. अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम से मुबाहिला कर लो ।

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلَاقِيكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩﴾

तू कह दे कि वह मौत जिस से तुम भागते हो, निस्सन्देह एक दिन तुम को अवश्य ही आ पकड़ेगी। फिर तुम परोक्ष और अपरोक्ष बातों के जानने वाले अल्लाह की ओर लौटाए जाओगे तथा वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों के बारे में सूचित करेगा।९। (रुकू १/११)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٠﴾

हे मोमिनो ! जब तुम्हें जुमुअः के दिन नमाज़ के लिए बुलाया जाए तो अल्लाह की याद के लिए जल्दी से आ जाया करो तथा क्रय-विक्रय को छोड़ दिया करो। यदि तुम्हें कुछ भी ज्ञान है तो यह बात तुम्हारे लिए अच्छी है।१०।

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١١﴾

और जब नमाज़ पूरी हो जाए तो धरती में फैल जाया करो तथा अल्लाह की कृपा की खोज किया करो एवं अल्लाह को बहुत याद किया करो ताकि तुम सफल हो जाओ।११।

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انْفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَائِمًا قُلْ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿١٢﴾

और जब यह लोग व्यापार अथवा खेल-कूद की बात देखते हैं तो तुझ से अलग हो कर उधर चले जाते हैं और तुझे अकेला छोड़ देते हैं। तू उन से कह दे कि जो कुछ अल्लाह के पास है वह खेल-कूद की बात बल्कि व्यापार से भी अच्छा[1] है और अल्लाह अच्छी रोज़ी देने वाला है।१२। (रुकू २/१२)

1. कई बार मुनाफ़िक़ व्यापार तथा खेल-कूद के कारण हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को अकेले छोड़ कर चले जाते थे। उन्हें समझाने के लिए बताया है कि जो कुछ अल्लाह के पास है वह खेल-कूद और व्यापार से भी अच्छा है।

सूरः अल्-मुनाफ़िक़ून

[यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की बारह आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ②

जब तेरे पास मुनाफ़िक़ आते हैं तो कहते हैं कि हम क़सम खा कर गवाही देते हैं कि तू अल्लाह का रसूल है और अल्लाह जानता है कि तू उस का रसूल है, किन्तु (साथ ही) अल्लाह क़सम खा कर यह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ झूठे हैं।२।

اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ③

उन्हों ने अपनी क़समों को (तेरी पकड़ से बचने के लिए) ढाल बना लिया है तथा वे अल्लाह की राह से लोगों को रोकते हैं। जो कुछ वे करते हैं बहुत बुरा है।३।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ④

वे लोग यह काम इसलिए करते हैं कि वे पहले ईमान लाए, फिर उन्हों ने इन्कार कर दिया जिस के फलस्वरूप उन के दिलों पर मुहर[1] लगा दी गई अब वे समझते नहीं।४।

1. अल्लाह की ओर से मुहर अकारण नहीं लगी, अपितु उस का कारण उन लोगों के अपने ही बुरे कर्म थे जो गुप्त थे। वही गुप्त कर्म मुहर लगाने का कारण बने हैं।

وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ وَ اِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝

जब तू उन्हें देखता है तो उन के हृष्ट-पुष्ट शरीर तुझे बहुत भाते हैं और यदि वे कोई बात करते हैं (तो ऐसी चतुराई से कि) तू उन की बात को (उन की परिस्थितियों के जानने पर भी) सुन लेता है। (वे सभा में इस प्रकार बैठे हुए होते हैं) मानों वे बड़े-बड़े शहतीर हैं जो (दीवार से) अटकाए हुए हैं। जब (क़ुर्आन में) किसी अज़ाब का समाचार उतरे तो वे समझते हैं कि यह हमारे ही बारे में है। वे पक्के शत्रु हैं। अतः तू उन से सावधान रह। अल्लाह उन्हें नष्ट करे। वे कहाँ से भटकाए जा कर (सीधी राह से दूर) ले जाए जाते हैं? ।५।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ۝

और जब उन से कहा जाता है कि आओ अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करे तो अपने सिर (अभिमान एवं इन्कार से) फेर लेते हैं और तू उन्हें देखता है कि वे सच्ची राह से लोगों को बहका रहे हैं तथा वे अभिमान के रोग में पड़े हुए हैं ।६।

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝

तू उन के लिए क्षमा की प्रार्थना करे अथवा न करे उन के लिए बराबर है, क्योंकि अल्लाह उन को कदापि क्षमा नहीं करेगा (जब तक कि वे स्वयं तौबः न करें)। अल्लाह अवज्ञाकारी जाति को सफलता नहीं देता ।७।

هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝

यही लोग हैं जो कहते हैं कि अल्लाह के रसूल के पास जो लोग रहते हैं उन पर ख़र्च न करो, यहाँ तक कि वे (भूख से विवश हो कर) भाग जाएँ, हालाँकि आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ाने अल्लाह के पास हैं, किन्तु मुनाफ़िक़ नहीं समझते ।८।

يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ۭ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ⑨

वे कहते हैं कि यदि हम लौट कर मदीना की ओर गए तो जो मदीना का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति है वह मदीना के सब से अपमानित[1] व्यक्ति को उस से निकाल देगा और आदर तो अल्लाह तथा उस के रसूल और मोमिनों को ही हासिल है लेकिन मुनाफ़िक़ जानते नहीं ।९। (रुकू १/१३)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ⑩

हे मोमिनो ! तुम्हें तुम्हारे धन और तुम्हारी सन्तान अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें तथा जो लोग ऐसा करेंगे वे ही घाटा पाने वाले होंगे ।१०।

وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ⑪

और (हे मोमिनो !) जो कुछ हम ने तुम्हें दिया है उस में से मौत आने से पहले-पहले ख़र्च कर लो ताकि ऐसा न हो कि (मौत आने पर ख़र्च न करने वाले को) कहना पड़े कि हे हमारे रब्ब ! तू ने मुझे क्यों थोड़ी सी ढील न दी ताकि मैं उस ढील में कुछ दान दे लेता तथा सदाचारी बन जाता ।११।

وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَاۗءَ اَجَلُهَا ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ⑫

परन्तु जब किसी की मौत आ जाती है तो अल्लाह उसे ढील नहीं दिया करता और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति जानता है ।१२। (रुकू २/१४)

---

1. अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य पुत्र सलूल ने जो मुनाफ़िक़ों का मुखिया था यह बात 'मुस्तलक़' नामक युद्ध के अवसर पर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की ओर संकेत करते हुए मुसलमानों को परस्पर लड़वाने के लिए कही थी, किन्तु इस बात का ज्ञान उस के अपने पुत्र को हो गया जो एक श्रद्धालु मोमिन था। जब सेना मदीना वापस लौटी तो वह आगे बढ़ कर मदीना के प्रवेश द्वार पर खड़ा हो गया तथा अपनी तलवार तान कर अपने पिता से कहा कि ऊँट से नीचे उतर आ और मदीना के सभी लोगों के सामने ऊँची आवाज़ से यह कहो कि मदीना का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम हैं तथा सब से अधम और हीन प्राणी मैं हूँ। जब तक यह न कहोगे मदीना में प्रवेश न कर सकोगे और यदि भागने का कोई प्रयास करोगे तो मैं तुम्हारा सिर काट दूंगा। इस पर अब्दुल्लाह भयभीत हो गया और उस ने सभी लोगों के सामने उक्त बात कही तब उस के पुत्र ने उसे मदीना में प्रवेश करने दिया। (सीरत-हल्बियः)।

सूरः अल्-तग़ाबुन

[यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित
इस की उन्नीस आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता) हूँ जो अनन्त कृपा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।१।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ②

आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह की स्तुति कर रहा है। राज्य भी उसी का है और स्तुति भी उसी की है तथा वह हर-चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।२।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ③

वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया। सो तुम में से कोई तो इन्कार करने वाला बन जाता है तथा कोई ईमान लाने वाला बन जाता है और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा है।३।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ④

उस ने आसमानों और ज़मीन को एक विशेष उद्देश्य के लिए पैदा किया है और उसी ने तुम्हारे रूप-रंग बनाए हैं तथा तुम्हारे रूप-रंग को अति उत्तम बनाया है और उसी की ओर तुम्हें लौट कर जाना है।४।

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ

आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह उसे जानता है और उस काम को भी जानता

وَمَا تُعۡلِنُوۡنَ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ ۝

है जिसे तुम छिपाते हो अथवा प्रकट करते हो तथा अल्लाह् दिल की बातों को भी जानता है।५।

اَلَمۡ يَاۡتِكُمۡ نَبَؤُا الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ قَبۡلُ فَذَاقُوۡا وَبَالَ اَمۡرِهِمۡ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۝

क्या तुम्हें अपने से पहले इन्कार करने वाले लोगों के समाचार नहीं पहुँचे ? उन्हों ने अपने कुकर्मों का फल भोगा और उन के लिए पीड़ा-जनक अज़ाब निश्चित है।६।

ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتۡ تَّاۡتِيۡهِمۡ رُسُلُهُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ فَقَالُوۡۤا اَبَشَرٌ يَّهۡدُوۡنَنَا ۡ فَكَفَرُوۡا وَتَوَلَّوۡا وَّاسۡتَغۡنَى اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ غَنِىٌّ حَمِيۡدٌ ۝

यह इसलिए हुआ कि उन के पास उन के रसूल स्पष्ट प्रमाण ले कर आते रहे, किन्तु वह यही उत्तर देते रहे कि क्या हमें मानव-रूप में आने वाले लोग ही हिदायत देंगे ? (यदि हिदायत देनी होती तो आसमान से फ़रिश्ते उतरते)। अतः उन्हों ने इन्कार किया तथा मुँह मोड़ लिया और अल्लाह् ने भी उन के ईमान से बे-नियाज़ी प्रकट की एवं अल्लाह् हर-एक से बे-नियाज़ है और सब स्तुतियों का अधिकारी है।७।

زَعَمَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اَنۡ لَّنۡ يُّبۡعَثُوۡا ؕ قُلۡ بَلٰى وَرَبِّىۡ لَتُبۡعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلۡتُمۡ ؕ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيۡرٌ ۝

इन्कार करने वाले लोग समझते हैं कि वे कदापि (जीवित करके) नहीं उठाए जाएँगे। तू कह दे कि जैसा तुम समझते हो ऐसा नहीं होगा, अपितु मुझे अपने रब्ब की क़सम ! तुम्हें जीवित करके उठाया जाएगा, फिर तुम्हें तुम्हारे कर्मों से परिचित किया जाएगा और यह बात अल्लाह् के लिए आसान है।८।

فَاٰمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ وَالنُّوۡرِ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلۡنَا ؕ وَاللّٰهُ

अतः हे लोगो ! अल्लाह् तथा उस के रसूल पर ईमान लाओ तथा उस नूर (अर्थात्

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ⑨

क़ुर्आन) पर भी जो हम ने उतारा है और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को जानता है ।९।

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ⑩

जिस दिन तुम सब को इकट्ठा करने के दिन (अर्थात् क़ियामत के दिन जीवित कर के) इकट्ठा करेगा, यह हार-जीत के फ़ैसला का दिन होगा तथा जो कोई अल्लाह पर ईमान लाता है और उस के अनुकूल कर्म करता है, अल्लाह भी उस की बुराइयों को ढाँप देता है और उस का प्रवेश ऐसे स्वर्ग में करता है जिन के नीचे नहरें बहती हैं। वे उन में सदैव के लिए निवास करते चले जाएँगे। यह महान् सफलता है ।१०।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑪

और जिन्हों ने इन्कार किया तथा हमारी आयतों को झुठलाया, वे नरक वाले हैं। वे नरक में निवास करते चले जाएँगे तथा वह अत्यन्त बुरा ठिकाना है ।११। (रुकू १/१५)

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ⑫

कोई विपत्ति नहीं आती, परन्तु अल्लाह की आज्ञा से और जो कोई अल्लाह पर ईमान लाता है वह उस के दिल को सफलता की राहों की ओर फेर देता है तथा अल्लाह हर-चीज़ को जानता है ।१२।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰي رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ⑬

और अल्लाह तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो, परन्तु यदि तुम फिर जाओ तो हमारे रसूल के ज़िम्मा तो बात को खोल कर पहुँचा देना ही है ।१३।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑭

अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं तथा मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए ।१४।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٥﴾

हे मोमिनो ! तुम्हारी पत्नियों तथा तुम्हारी सन्तानों में से कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारे शत्रु हैं। अतः उन से सावधान रहो और यदि तुम क्षमा कर दो और दरगुज़र कर दो (अर्थात् छोड़ दो) तथा मुआफ़ कर दो तो अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और अनन्त कृपा करने वाला है।१५।

اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۗ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾

तुम्हारे धन-दौलत तथा तुम्हारी सन्तान केवल परीक्षा का एक साधन हैं और अल्लाह के पास बहुत बड़ा बदला है।१६।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٧﴾

अतः जितना हो सके अल्लाह के लिए संयम धारण करो और इस की बात सुनो तथा उस की आज्ञा का पालन करो और अपने धन उस की राह में ख़र्च करते रहो। यह तुम्हारी जानों के लिए अच्छा होगा और जो लोग अपने दिल की कंजूसी से बचाए जाते हैं वे ही सफल होते हैं।१७।

اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٨﴾

यदि तुम अल्लाह के लिए अपने धन-दौलत में से एक अच्छा भाग काट कर अलग कर दो तो वह उस भाग को तुम्हारे लिए बढ़ाएगा तथा तुम्हारे लिए क्षमा के साधन पैदा करेगा और अल्लाह गुणों का आदर करने वाला और सहनशील है।१८।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٩﴾ ع
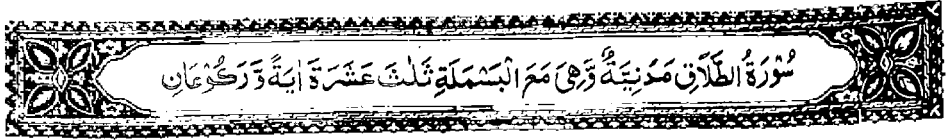
वह परोक्ष और अपरोक्ष का जानने वाला है और ग़ालिब और हिक्मत वाला है।१९। (रुकू २/१६)

سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلٰثَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّرُكُوْعَانِ

सूरः अल्-तलाक़

[यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की तेरह आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۭ لَا تَدْرِيْ

हे नबी[1] ! (और उस के मानने वालो !) जब तुम पत्नियों को तलाक़ दो तो उन्हें निश्चित[2] समय के अनुसार तलाक़ दो और तलाक़ के बाद समय का अन्दाज़ा रखो तथा अल्लाह के लिए जो तुम्हारा रब्ब है संयम धारण करो। उन्हें उन के घरों से न निकालो और न वे स्वयं निकलें सिवाय इस के कि वे एक खुले पाप[3] में ग्रसित हों और यह अल्लाह की सीमाएँ हैं तथा जो कोई अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करता है वह अपनी जान पर

---

1. सम्बोधन में शब्द नबी है, परन्तु अभीष्ट उस के मानने वाले हैं, क्योंकि अनुसरण करने वाले नबी के अधीन होते हैं।

2. अर्थात् क्रोध की अवस्था में तलाक़ न दो अपितु ऐसी दशा में तलाक़ दो जब कि वे मासिक-धर्म की अवस्था में न हों अपितु पवित्र हों और उस से पहले सम्भोग भी न किया हो। फलस्वरूप सारा क्रोध दूर हो चुका हो और कामवासना ने उत्तेजित हो कर प्रेम-भावनाएँ पैदा कर दी हों ताकि तलाक़ तक बात ही न पहुँचे।

3. अभिप्राय यह है कि यदि वे निकलेंगी तो वे एक खुले पाप मे ग्रसित होंगी।

لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ۝

अत्याचार करता है। (हे तलाक़ देने वाले !) तुझे ज्ञान नहीं कि सम्भव है अल्लाह इस घटना के बाद कुछ और प्रकट करे।२।

فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝

फिर जब स्त्रियाँ इद्दत की अन्तिम सीमा को पहुँच जाएँ तो उन्हें उचित ढंग से रोक लो अथवा उन्हें उचित ढंग से अलग कर दो तथा अपने में से दो न्याय करने वाले गवाह बना लो और अल्लाह के लिए सच्ची गवाही दो। तुम में से जो कोई अल्लाह तथा अन्तिम दिन (अर्थात् क़ियामत) पर ईमान रखता है उस को यह शिक्षा दी जाती है और जो व्यक्ति अल्लाह के लिए संयम धारण करेगा अल्लाह उस के लिए कोई न कोई राह निकाल देगा।३।

وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝

और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जहाँ से उसे रोज़ी प्राप्त होने की आशा तक न होगी तथा जो कोई अल्लाह पर भरोसा करता है वह (अल्लाह) उस के लिए काफ़ी है। निस्सन्देह अल्लाह अपने उद्देश्य को पूरा कर के छोड़ता है। अल्लाह ने हर-चीज़ का अन्दाज़ा कर रखा है।४।

وَالّٰٓـئِيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ وَّالّٰٓـئِيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَاُولَاتُ

और (तुम्हारी धर्म-पत्नियों में से) वे (स्त्रियाँ) जो मासिक-धर्म से निराश हो चुकी हों यदि (उन की इद्दत के सम्बन्ध में) तुम्हें शंका हो तो उन की इद्दत तीन मास है और इसी प्रकार उन की भी जिन को मासिक[1]-धर्म

1. अर्थात् उस समय मासिक धर्म रुक चुका हो अथवा आरम्भ से आता ही न हो जैसा कि कई स्त्रियों को यह रोग होता है।

الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ
اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ٥

नहीं होता और जो स्त्रियाँ गर्भवती हों उन की इद्दत बच्चा पैदा होने तक है और जो कोई अल्लाह के लिए संयम धारण करे अल्लाह उस के काम में आसानी पैदा कर देता है ।५।

ذَٰلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ إِلَيْكُمْ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يُكَفِّرْ
عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا ٦

यह अल्लाह का आदेश है जो उस ने तुम्हारी ओर उतारा है तथा जो कोई अल्लाह के लिए संयम धारण करे वह (अल्लाह) उस के अपराधों को मिटा देता है और उस के प्रतिफल को बढ़ा देता है ।६।

أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ وُجْدِكُمْ وَ
لَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِنْ كُنَّ أُولَاتِ
حَمْلٍ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ
أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۖ وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُمْ
بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُ أُخْرَىٰ ٧

(हे मुसलमानो ! तलाक़ दी हुई स्त्रियों को हक़ देना मत भूलो) उन्हें वहीं रखो जहाँ तुम अपनी शक्ति के अनुसार रहते हो तथा उन्हें किसी प्रकार का दुःख न पहुँचाओ इस लिए कि उन्हें तंग कर के (घर से) निकाल दो और यदि वे गर्भवती हों तो उस समय तक उन के लिए ख़र्च करो जब तक वे बच्चे को जन्म न दे दें तथा यदि वे तुम्हारी सन्तान को दूध पिलाएँ तो उन्हें उचित उजरत (अर्थात् बदला) दो तथा रीति-रिवाज के अनुसार परस्पर परामर्श द्वारा उस का निर्णय करो यदि परस्पर किसी निर्णय पर सहमत न हो सको तो कोई दूसरी स्त्री उस बच्चे को दूध पिलाए ।७।

لِيُنْفِقْ ذُو سَعَةٍ مِنْ سَعَتِهِ ۖ وَ
مَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ
مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا

चाहिए कि धनवान् पुरुष (दूध पिलाने वाली स्त्री पर) अपनी शक्ति के अनुसार ख़र्च करे तथा जो धनवान् नहीं वह अल्लाह की दी हुई शक्ति के अनुसार ख़र्च करे । अल्लाह किसी जीव को ऐसे आदेश नहीं देता जो उस

إِلَّا مَآ اٰتٰىهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ﴿٨﴾

की शक्ति से बढ़ कर हों, अपितु ऐसे ही आदेश देता है जिन्हें पूरा करने की शक्ति भी उन्हें दी गई हो। अतएव यदि कोई व्यक्ति अल्लाह के आदेशों पर चलते हुए दूध पिलाने वाली स्त्री को मजदूरी ठीक-ठीक देगा तो यदि वह तंगी की हालत में भी है तो अल्लाह इस के बाद उस के लिए आसानी पैदा कर देगा।८। (रुकू १/१७)

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٩﴾

और अनेक बस्तियाँ हैं, जिन्हों ने अपने रब्ब की आज्ञा का तथा रसूलों का इन्कार किया, इस पर हम ने उन से कड़ा हिसाब लिया तथा उन पर बड़ा अज़ाब उतारा।९।

فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ﴿١٠﴾

और उन्हों ने अपने बुरे कर्मों का दण्ड भोग लिया तथा उन का परिणाम घाटा ही निकला।१०।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ ۖۛ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ﴿١١﴾

ऐसे लोगों के लिए अल्लाह ने कड़ा अज़ाब निश्चित कर रखा है। अतः मोमिनो में से हे बुद्धिमानो ! अल्लाह के लिए संयम धारण करो। अल्लाह ने निश्चय ही तुम्हारे लिए गौरव का सामान-ज़िक्र उतारा है।११।

رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۚ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ

अर्थात् रसूल जो तुम्हें अल्लाह की ऐसी आयतें सुनाता है जो (प्रत्येक भलाई-बुराई को) खोल देती है। जिस का परिणाम यह निकलता है कि मोमिन लोग जो अपने ईमान के अनुकूल कर्म करते हैं वे अन्धकार से निकल कर प्रकाश में आ जाते हैं तथा जो भी अल्लाह पर ईमान लाए और उस के अनुकूल कर्म करे वह उसे ऐसे स्वर्गों में

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ⑫

प्रविष्ट करेगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। वे उस में सदैव निवास करते चले जाएँगे। अल्लाह ने ऐसे व्यक्ति के लिए उत्तम जीविका प्रदान की हुई है।१२।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۭ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ⑬ ع

अल्लाह वही है जिस ने सात आसमानों को पैदा किया है तथा ज़मीन को भी आसमानों की गिनती के अनुसार (पैदा किया है)। उन (आसमानों तथा ज़मीनों) के बीच उस का आदेश उतरता रहता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर-एक चीज़ के करने का सामर्थ्य रखता[1] है और इसी तरह अल्लाह हर-चीज़ को अपने ज्ञान द्वारा घेरे हुए है[2]।१३। (रुकू २/१८)

---

1. चाहे तुम पथभ्रष्ट हो कर कितने ही दूर क्यों न चले जाओ फिर भी वह अपनी ओर से हिदायत भेज कर तुम्हें वापस ला सकता है।

2. अर्थात् ईश-ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को उस की आन्तरिक क्षमता के अनुसार मिलता है जिस से विदित होता है कि अल्लाह ने मनुष्य की समस्त शक्तियों को अपने ज्ञान द्वारा घेर रखा है।
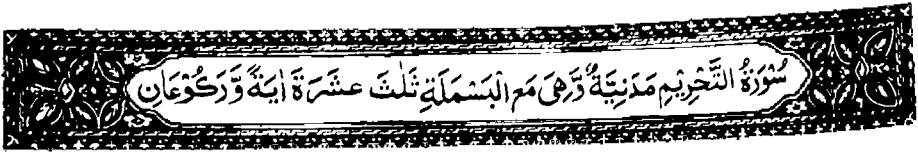
सूरः अल्-तहरीम

[यह सूरः मदनी है और बिसमिल्लाह सहित इस की तेरह आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ②

हे नबी! तू उस चीज़ को क्यों हराम ठहराता है जिसे अल्लाह ने तेरे लिए हलाल ठहराया है। तू अपनी धर्म-पत्नियों की प्रसन्नता चाहता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और अपार कृपा करने वाला है।२।

قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ③

अल्लाह ने ऐसी क़समों का खोलना (अर्थात् तोड़ना) तुम्हारे लिए ज़रूरी ठहराया है (जिस से अशान्ति पैदा होने की सम्भावना हो) और अल्लाह तुम्हारा स्वामी है और वह बहुत जानने वाला और हिक्मत वाला है।३।

وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَ

और याद करो जब नबी ने अपनी पत्नियों में से किसी एक से एक बात कही, फिर जब उस ने वह बात किसी (दूसरी) को बता दी तथा अल्लाह ने इस (त्रुटि) का समाचार उस (नबी) को दे दिया तो उस ने बात का

أَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ۗ قَالَ نَبَّاَنِیَ الْعَلِیْمُ الْخَبِیْرُ ﴿۳﴾

कुछ भाग पत्नी को बता दिया और कुछ भाग को टाल दिया। तत्पश्चात् जब उस ने इस घटना का वर्णन उस (पत्नी) से किया तो उस ने कहा कि आप को यह समाचार किस ने दिया है? इस पर उस (नबी) ने कहा कि मुझे यह समाचार महाज्ञानी और बड़े जानकार अल्लाह ने दिया है।४।

اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَ اِنْ تَظٰهَرَا عَلَیْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَ جِبْرِیْلُ وَ صَالِحُ الْمُؤْمِنِیْنَ ۚ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِیْرٌ ﴿۴﴾

फिर उस ने कहा कि हे दोनों पत्नियो! यदि तुम अपनी भूल पर अल्लाह के पास पश्चाताप करो तो तुम दोनों के दिल तो पहले ही इस बात की ओर झुके हुए हैं (और तौब: करने के लिए तय्यार हैं) और यदि तुम एक-दूसरे की सहायता के लिए तय्यार रहोगी तो याद रखो कि अल्लाह इस रसूल का मित्र है। इसी प्रकार जिब्रील और सभी मोमिन भी इस के सिवा फ़रिश्ते भी नबी की पीठ पर हैं।५।

عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ یُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَیْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَیِّبٰتٍ وَّ اَبْكَارًا ﴿۵﴾

उस के रब्ब के लिए यह आसान है कि यदि वह तुम्हें तलाक़ दे दे तो वह तुम से अच्छी पत्नियाँ बदल कर उसे दे दे, जो मुसलमान भी हों, मोमिन भी, आज्ञा पालन करने वाली, तौब: करने वाली, उपासना करने वाली, रोज़ा रखने वाली और विधवा भी हों तथा कुमारियाँ भी।६।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَیْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ

हे मोमिनो! अपने परिवार को भी तथा अपने-आप को भी नरक से बचाओ जिस का ईंधन विशेष रूप से (इन्कार करने वाले लोग) होंगे तथा पत्थर भी (जिस से मूर्तियाँ[1] बनती हैं)

1. प्रश्न हो सकता है कि पत्थर की मूर्तियों को आग में डालने से क्या उद्देश्य है? वे तो जड़

(शेष पृष्ठ १२५८ पर)

شِدَادٌ لَّا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝

उस नरक पर ऐसे फ़रिश्ते नियुक्त हैं जो किसी की विनती तथा खुशामद सुनने वाले नहीं अपितु अपना कर्त्तव्य पूरा करने में बड़े सतर्क हैं और अल्लाह ने उन्हें जो आदेश दिया है वे उस की अवज्ञा नहीं करते तथा जो कुछ उन्हें कहा जाता है वही करते हैं ।७।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۖ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

हे इन्कार करने वाले लोगो ! आज बहाने मत बनाओ । तुम्हें तुम्हारे कर्मों के अनुसार बदला मिलेगा ।८। (रुकू १/१९)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ ۖ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

हे मोमिनो ! अल्लाह की ओर सच्ची तौब: के साथ झुक जाओ (मुनाफ़िक़त की कोई मिलावट न हो) कोई आश्चर्य की बात नहीं कि तुम्हारा रब्ब तुम्हारे पापों को मिटा दे और तुम्हें ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करे जिन के नीचे नहरें बहती हैं । उस दिन जिस दिन अल्लाह अपने नबी को अपमानित नहीं करेगा तथा न उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए हैं । उन का नूर उन के आगे-आगे भी भागता जाएगा तथा उन के दाहिनी ओर भी । वे कहेंगे कि हे हमारे रब्ब ! हमारे नूर को हमारे लिए पूरा कर दे तथा हमें क्षमा कर । तू प्रत्येक बात पर सामर्थ्य रखता है ।९।

(पृष्ठ १२५७ का शेष)

पदार्थ हैं । इस का उत्तर यह है कि यद्यपि मूर्तियाँ जड़ हैं, परन्तु इन्कार करने वाले लोग तो उन में ईश्वरीय गुण मानते थे । उन को नरक में डालने से इन्कार करने वाले लोगों को अपने मंतव्य की निरर्थकता सिद्ध होती दीख पड़ती थी और जड़ पदार्थ होने के कारण मूर्तियों पर कोई अत्याचार न था ।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑩

हे नबी ! इन्कार करने वाले लोगों और मुनाफ़िक़ों के विरुद्ध खूब प्रचार कर और उन का कोई प्रभाव स्वीकार[1] न कर और (समझ ले कि) उन का ठिकाना नरक है तथा वह बहुत बुरा ठिकाना है ।१०।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ امْرَاَتَ لُوْطٍ ۚ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ⑪

अल्लाह इन्कार करने वाले लोगों की अवस्था नूह और लूत की पत्नियों जैसी बताता है वे दोनों हमारे सदाचारी भक्तों से विवाही हुई थीं, किन्तु उन दोनों ने इन दोनों (भक्तों) से विश्वासघात किया था तथा वे दोनों अल्लाह के अज़ाब के समय उन (पत्नियों) के किसी काम न आ सके[2] और उन दोनों स्त्रियों से कहा गया था कि नरक में जाने वालों के साथ तुम भी नरक में चली जाओ ।११।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَ

और अल्लाह मोमिनों की दशा फ़िरऔन की पत्नी जैसी बताता है जब कि उस ने अपने रब्ब से कहा कि हे मेरे रब्ब ! तू मेरे लिए

---

1. अरबी शब्द 'ग़िल्ज़तुन' का अर्थ किसी वस्तु की ऐसी कठोरता है जिस में कोई वस्तु घुस न सके । इस आयत का अभिप्राय यह है कि इन्कार करने वालों का किसी प्रकार का कोई प्रभाव स्वीकार न कर अर्थात् यदि किसी समय वे आक्रमण करें तो दिल में यह विचार न कर कि सम्भव है वे इस्लामी साम्राज्य को कोई हानि पहुँचाएँ अथवा इस्लाम की प्रगति में कोई बाधा बन जाएँ, क्योंकि उन्हें हम ने अपने वश में किया हुआ है और तेरे वश में भी कर दिया हैं । उन का सर्वनाश निश्चित है । अतः यह सम्भव ही नहीं कि यदि अस्थायी रूप में उन्हें कोई उन्नति मिल जाए तो उस के परिणाम स्वरूप वे मुसलमानों को कोई हानि पहुँचा सकें ।

2. प्रत्येक मनुष्य से अल्लाह का व्यवहार अलग-अलग होता है । यदि कोई सदाचारी व्यक्ति है तो वह अपना ही बोझ उठा सकता है दूसरे का नहीं उठा सकता । अतः किसी सदाचारी व्यक्ति की पत्नी बन जाने से कोई स्त्री किसी रिआयत पाने की अधिकारिणी नहीं बन जाती, अपितु उस की ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है ।

نَجِّنِیۡ مِنۡ فِرۡعَوۡنَ وَعَمَلِہٖ وَنَجِّنِیۡ مِنَ الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۱۲﴾

भी अपने पास एक घर स्वर्ग में बना दे और मुझे फ़िरऔन और उस के कुकर्मों से बचा और इसी प्रकार अत्याचार करने वाली (उस की) जाति से छुटकारा दे ।१२।

وَ مَرۡیَمَ ابۡنَتَ عِمۡرٰنَ الَّتِیۡۤ اَحۡصَنَتۡ فَرۡجَہَا فَنَفَخۡنَا فِیۡہِ مِنۡ رُّوۡحِنَا وَ صَدَّقَتۡ بِکَلِمٰتِ رَبِّہَا وَ کُتُبِہٖ وَ کَانَتۡ مِنَ

और फिर अल्लाह मोमिनों की अवस्था मर्यम जैसी बताता है जो इम्रान[1] की सुपुत्री थी। जिस ने अपने सतीत्व की रक्षा की और हम ने उस में अपना कलाम डाला था तथा उस ने उस कलाम[2] की जो उस के रब्ब ने उस पर उतारा था पुष्टि[3] कर दी थी और वह उस (अल्लाह) की किताबों पर भी ईमान लाई थी[4] और (होते-होते ऐसी अवस्था ग्रहण कर चुकी थी कि) उस ने परम आज्ञाकारियों

---

1. कुछ आक्षेप करने वाले कहते हैं कि इम्रान तो हज़रत मूसा के पिता थे और हज़रत मर्यम उन के डेढ़ हज़ार वर्ष के बाद पैदा हुई थीं । इस से प्रतीत होता है कि क़ुर्आन उतारने वाले को इतिहास का भी ज्ञान नहीं, परन्तु यह आक्षेप ठीक नहीं है । हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के सामने भी इसी प्रकार का प्रश्न किया गया था तो आप ने बताया था कि यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं । प्रत्येक जाति में यह रीति प्रचलित है कि वे बड़े लोगों के नाम बरकत के रूप में अपनी सन्तान का भी रख लेते हैं । अंत: हज़रत मर्यम के पिता का नाम भी यदि उस परम्परा के अनुसार उन के पिता ने बरकत के लिए इम्रान रख लिया हो तो उस में कौन सी आश्चर्य की बात है ।

1. कुछ लोग कहते हैं कि हज़रत मसीह 'रूह' थे क्योंकि वह हज़रत मर्यम के पेट में डाली गई थी, किन्तु यह ना समझी की बात है । रूह अर्थात् आत्मा कलाम भी होता है । अतएव इस का केवल यह अर्थ है कि हम ने मर्यम पर अपना कलाम उतारा था तथा उसे इल्हाम अर्थात् आकाशवाणी द्वारा हज़रत मसीह के जन्म का समाचार दे दिया था ।

2. हज़रत मर्यम इस बात पर ईमान ला चुकी थीं कि वस्तुत: मुझे अल्लाह की ओर से एक पुत्र प्रदान किए जाने वाला है ।

1. हज़रत मसीह के बारे में जो भविष्यवाणियाँ पुराने ग्रन्थों मे थीं हज़रत मर्यम ने केवल वह्य के आधार पर ही उन पर ईमान नहीं रखा था अपितु उन ग्रन्थों की भविष्यवाणियों के कारण भी उस का उन पर ईमान था ।

का स्थान प्राप्त कर लिया[1] था।१३। الْقٰنِتِيْنَ ﴿١٣﴾ ع
(रुकू २/२०)

1. मूल शब्द 'मिनलक़ानितीन' पुलिंग प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार अर्थ यह बनता है कि हज़रत मर्यम स्त्री जाति में से हो कर भी आज्ञाकारी व्यक्तियों में सम्मिलित हो गईं। अर्थात् अल्लाह ने उसे उन्नति प्रदान करते-करते वह गौरवमय स्थान प्रदान किया जो कामिल पुरुषों को उस की ओर से प्रदान किया जाता है।

यह एक भविष्यवाणी थी कि भविष्यत्काल में अल्लाह की ओर से एक ऐसा व्यक्ति प्रकट होगा जिस को पहले मर्यम का नाम दिया जाएगा और फिर प्रगति करते-करते उसे ईसा का नाम दिया जाएगा।
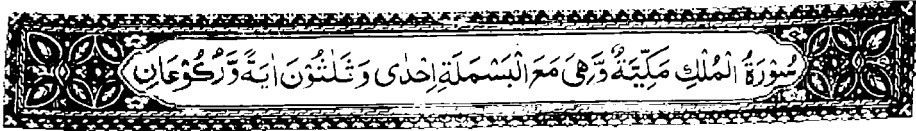
सूर: अल्-मुलक

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की एकतीस आयतें एवं दो रुकू हैं.।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूं) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ②

वह अल्लाह बहुत बरकत वाला है जिस के हाथ में साम्राज्य है और वह प्रत्येक इरादा के पूरा करने का सामर्थ्य रखता है ।२।

الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ③

उस ने मृत्यु तथा जीवन को इसलिए पैदा किया है ताकि वह तुम्हारी परीक्षा करे कि तुम में से कौन अधिक अच्छे कर्म करने वाला है। वह प्रभुत्वशाली और बहुत क्षमा करने वाला है ।३।

الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۭ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ۭ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ④

वही है जिस ने क्रमशः ऊपर-तले सात आसमान बनाए हैं और तू रहमान (ख़ुदा) की रचना में कोई त्रुटि नहीं देखता और तू अपनी आँख को इधर-उधर घुमा-फिरा कर अच्छी तरह से देख ले। क्या तुझे अल्लाह की रचना में कहीं भी कोई त्रुटि दिखाई देती है ? ।४।

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ۝

फिर बार-बार दृष्टि को घुमा-फिरा, वह अन्ततः असफल हो कर तेरी ओर वापस लौट आएगी और वह थकी हुई होगी (परन्तु उसे कोई त्रुटि दिखाई नहीं देगी)।५।

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ۝

और हम ने निचले आकाश को दीपकों के साथ सजाया है तथा उन (दीपकों) को शैतानों के लिए पथराव का साधन बनाया है और हम ने उन (शैतानों) के लिए एक भड़कने वाला अज़ाब निश्चित किया है।६।

وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

और जिन्हों ने अपने रब्ब का इन्कार किया है उन्हें नरक का अज़ाब मिलेगा तथा वह अत्यन्त बुरा ठिकाना है।७।

إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورُ ۝

जब वे उस (नरक) में डाले जाएँगे तो वे उस में उस की एक भयानक चीख़ सुनेंगे (जैसे गदहे के रेंकने की चीख़) और वह (नरक) बड़े जोश में होगा।८।

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ۝

सम्भव है कि वह क्रोध के कारण फट पड़े। जब भी कोई गिरोह उस में डाला जाएगा उस नरक के द्वारपाल उन से पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई नबी नहीं आया था ?।९।

قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ۝

वे कहेंगे कि हाँ! हमारे पास नबी तो अवश्य आया था, किन्तु हम ने उसे झुठला दिया था और उस से कहा था कि अल्लाह ने कुछ भी नहीं उतारा (सब तुम्हारा झूठ है)। तुम एक खुली गुमराही में पड़े हो।१०।

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١١﴾

और उन लोगों ने यह भी कहा कि यदि हम में सुनने की शक्ति होती अथवा बुद्धिमान होते तो हम कदापि नरकगामी न बनते ।११।

فَاعْتَرَفُوا بِذَنْبِهِمْ فَسُحْقًا لِّأَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١٢﴾

अतः उन्हों ने अपने पापों को स्वीकार कर लिया। सो (हे फ़रिश्तो !) नरक के निवासियों के लिए धिक्कार निश्चित कर दो ।१२।

إِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّأَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١٣﴾

निस्सन्देह जो लोग एकान्त में अपने रब्ब से डरते हैं उन लोगों को क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल मिलेगा ।१३।

وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهٖ إِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٤﴾

और (हे लोगो !) तुम अपनी बात छिपाए रखो या प्रकट करो वह (अल्लाह) दिलों की बातों को भी भली-भाँति जानता है ।१४।

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٥﴾

क्या ऐसा हो सकता है कि जिस ने पैदा किया हो वह ही भीतर का भेद न जाने हालाँकि वह गुप्त से गुप्त रहस्यों को भी जानता है और वह बहुत जानने वाला है ।१५। (रुकू १/१)

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ وَإِلَيْهِ النُّشُوْرُ ﴿١٦﴾

वही है जिस ने तुम्हारे लिए धरती को निवास के योग्य बनाया है। अतः उस की वादियों में जहाँ चाहो जाओ उस (अल्लाह) की दी हुई रोजी में से खाओ और उसी की ओर लौट कर जाना है ।१६।

ءَأَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ أَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُوْرُ ﴿١٧﴾

क्या तुम आसमान में रहने वाली सत्ता से इस बात से सुरक्षित हो चुके हो कि वह तुम्हें संसार में अपमानित कर दे और तुम देख लो कि वह (धरती) चक्कर खा रही है (और तुम विनाश के निकट हो) ।१७।

أَمْ أَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ﴿١٨﴾

क्या तुम आकाश में रहने वाली सत्ता से इस बात से सुरक्षित हो चुके हो कि वह तुम्हारे ऊपर पत्थरों की वर्षा कर दे। सो (जिस रूप में भी मेरा प्रकोप उतरेगा) तुम जान लोगे कि मेरा डराना कैसा कठोर था।१८।

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿١٩﴾

और उन से पहले लोगों ने भी रसूलों को झुठलाया था, फिर (उन्हों ने देखा या न देखा कि) मेरा अज़ाब कैसा कठोर था।१९।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ وَيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَٰنُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ﴿٢٠﴾

क्या उन्हों ने अपने ऊपर उड़ने वाले पक्षियों को नहीं देखा कि वे पंक्तिबद्ध उड़ रहे हैं और कभी अपने पंखों को समेट लेते हैं। रहमान (अल्लाह) ही उन्हें रोकता[1] है। वह हर-एक चीज़ से भली-भाँति परिचित है।२०।

أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ جُندٌ لَّكُمْ يَنصُرُكُم مِّن دُونِ الرَّحْمَٰنِ ۚ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ﴿٢١﴾

क्या वे लोग जो तुम्हारी सेना कहलाते हैं रहमान (अल्लाह) के मुक़ाबिले में तुम्हारी सहायता कर सकेंगे? इन्कार करने वाले लोग तो केवल धोखे में पड़े हुए हैं।२१।

أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ بَل لَّجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ﴿٢٢﴾

क्या वह सत्ता जो तुम्हें रोज़ी देती है यदि वह अपनी रोज़ी को रोक ले (तो कोई दूसरा है जो तुम्हें रोज़ी प्रदान करे?) वास्तविकता यह है कि वे उद्दण्डता और सत्य से दूर भागने (की आदत) में बढ़ गए हैं।२२।

أَفَمَن يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ أَمَّن يَمْشِي

क्या वह व्यक्ति जो अपने मुँह के बल औंधा चलता है हिदायत में उस व्यक्ति के बराबर

---

1. अर्थात् उस ने तुम्हें भूकम्पों और रोगों से सुरक्षित रखा है, नहीं तो पक्षी आसमान में उड़ते हुए प्रतीक्षा कर रहे हैं कि तुम अज़ाब में ग्रसित हो तो वे झपट कर तुम्हारे शव नोच खाएं।

سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٢﴾

हो सकता है जो सीधा चलता है (और वह) है भी सीधी राह पर ? ।२२।

قُلْ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٣﴾

तू कह दे कि वह अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें पैदा किया है और तुम्हारे लिए कान, आँखें और दिल बनाए हैं, किन्तु तुम तनिक भी धन्यवाद नहीं करते ।२४।

قُلْ هُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

तू कह दे कि वही है जिस ने धरती में तुम्हें पैदा किया है तथा तुम पुनः उसी की ओर जीवित करके ले जाए जाओगे ।२५।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾

और वे कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह प्रतिज्ञा कब पूरी होगी ? ।२६।

قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۠ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٦﴾

तू कह दे कि इस का ज्ञान केवल अल्लाह ही को है और मैं तो केवल खोल-खोल कर सावधान करने वाला हूँ ।२७।

فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْۗـــَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾

और जब वे उस (वादा दिए गए अज़ाब) को निकट आता देखेंगे तो इन्कार करने वाले लोगों के मुँह बिगड़ जाएँगे तथा उन से कहा जाएगा कि यही वह वस्तु है जिसे तुम बार-बार बुला रहे थे ।२८।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾

तू कह दे कि मुझे बताओ तो सही कि यदि अल्लाह मुझे तथा मेरे साथियों को नष्ट कर दे अथवा हमारे ऊपर दया कर दे तो भी इन्कार करने वाले[1] लोगों को पीड़ादायक अज़ाब से कौन शरण देगा ।२९।

---

1. अर्थात् हमारे मरने के बाद यदि इन्कार करने वाले लोगों को अज़ाब ने पकड़ा तो हमारी मौत में उन को क्या लाभ होगा ।

قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾

तू कह दे कि रहमान (अल्लाह) के सिवा कोई नहीं। हम उसी पर ईमान लाए हैं और हम ने उसी पर भरोसा किया है। अतः तुम्हें शीघ्र ही प्रतीत हो जाएगा कि कौन खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़ा हुआ है।३०।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿٣٠﴾ ع

तू यह भी कह दे कि मुझे बताओ तो सही कि यदि तुम्हारा पानी धरती के पाताल में लुप्त हो जाए तो अल्लाह के सिवा दूसरा कौन तुम्हारे लिए बहने वाला पानी लाएगा।३१। (रुकू २/२)
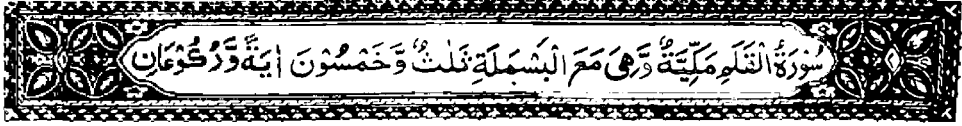
सूरः अल्-क़लम

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की तिरपन आयतें तथा दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ②

हम क़लम और दवात तथा उसे जो उन के द्वारा लिखा जाता है गवाही के रूप में पेश करते हुए कहते[1] हैं।२।

مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ③

कि तू अपने रब्ब की कृपा से पागल नहीं है।३।

وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ④

और तुझे अल्लाह की ओर[2] से एक ऐसा बदला मिलेगा जो कभी समाप्त न होगा।४।

---

1. पवित्र क़ुर्आन में जितनी भी क़समें खाई गई हैं वे वास्तव में उन वस्तुओं को गवाही के रूप में पेश करने के लिए हैं। यहाँ भी यही अभिप्राय है। अल्लाह कहता है कि क़लम और दवात और समस्त विद्याएँ जो उन के द्वारा लिखी जाती हैं इस बात पर गवाह हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पागल नहीं हैं।

2. यह दूसरी गवाही है कि पागल के कार्य तो विफल रहते हैं, किन्तु हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को तो वह बदला मिलेगा जो क़ियामत तक चलता चला जाएगा तथा कदापि घटेगा नहीं, अर्थात् यदि कभी मुसलमानों की कमज़ोरी के कारण उस से ह्रास पैदा हुआ तो अल्लाह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के ऐसे प्रतिनिधि खड़ा करता रहेगा जो इस्लाम को उस के वास्तविक रूप में संसार के सामने पेश करते रहेंगे।

وَإِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيمٍ ۝٥

और तू (अपनी शिक्षा और कर्म में) बहुत[1] ऊँचे शिष्टाचार पर क़ायम है ।५।

فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُونَ ۝٦

अतः तू भी शीघ्र देख लेगा तथा वे भी देख लेंगे (कि अल्लाह की सहायता[2] से वे वंचित रहते हैं अथवा तू ?) ।६।

بِأَيِّكُمُ الْمَفْتُونُ ۝٧

और उन्हें विदित हो जाएगा कि तुम दोनों में से कौन पथभ्रष्ट है ? ।७।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝٨

तेरा रब्ब उसे भी भली-भाँति जानता है जो उस की राह से भटक गया है तथा उसे भी जो हिदायत पाने वाले लोगों में शामिल है ।८।

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِينَ ۝٩

(और जब तू अपने रब्ब की हिदायत पर क़ायम है और तेरा इन्कार करने वाले नष्ट होने वाले हैं तो) तू उन झुठलाने वालों की बात न मान ।९।

وَدُّوا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُونَ ۝١٠

ये (इन्कार करने वाले लोग) चाहते हैं कि तू अपने धर्म के बारे में कुछ नरमी करे तो वे भी (अपने वर्ताव में कुछ) नरमी करेंगे ।१०।

وَ لَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ

और तू उस व्यक्ति की बात कदापि न मान जो क़समें खाता है (किन्तु अल्लाह की ओर

---

1. यह तीसरा प्रमाण आप के पागल न होने का बताया है कि पागल तो व्यर्थ काम करता है, परन्तु हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम बहुत ऊंचे शिष्टाचार दिखाते हैं, फिर उन्हें पागल कैसे कहा जा सकता है ।

2. यह चौथा प्रमाण है कि आप पागल नहीं हैं । बताया है कि क्या पागल को भी अल्लाह की सहायता मिला करती है ? सो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का परिणाम तो ऐसा निकला कि अपनों और बेगानों ने उसे असाधारण ठहराया तो क्या उसे पागल कहने वाला स्वयं पागल होगा या वह ?

مَّهِينٍ ﴿١٠﴾

से सहायता न आने पर) वह अपमानित[1] का अपमानित ही रहता है ।११।

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيمٍ ﴿١١﴾

जिसे भले व्यक्तियों पर ताना (व्यंग) करने तथा उन की चुगलियाँ करने की लत पड़ी हुई हैं ।१२।

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿١٢﴾

जो लोगों को नेकियों से रोकने वाला, सीमोल्लंघी तथा पापी है ।१३।

عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ ﴿١٣﴾

वह बकवादी भी है तथा अल्लाह का बन्दा हो कर शैतान से सम्बन्ध रखने वाला भी ।१४।

أَن كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ﴿١٤﴾

केवल इस कारण कि वह बड़ा धनवान है तथा उस की बहुत सी सन्तान और साथी हैं ।१५।

إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ءَايَٰتُنَا قَالَ أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿١٥﴾

जब उस के सामने हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वह कहता है कि यह तो पहले लोगों की कहानियाँ हैं ।१६।

سَنَسِمُهُۥ عَلَى ٱلْخُرْطُومِ ﴿١٦﴾

हम शीघ्र ही उस की नाक पर दाग़ लगाएंगे (और उस को अपनी सहायता से वंचित कर देंगे) ।१७।

إِنَّا بَلَوْنَٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ أَصْحَٰبَ ٱلْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا۟

हम ने इन शत्रुओं को ऐसी ही परीक्षा में डाला है जिस परीक्षा में उन बाग़ों वाले लोगों को डाला था जिन्हों ने आपस में एक-दूसरे को

1. गवाही लेने का ढंग बुद्धि तथा शरीअत ने नियुक्त कर दिया है। जो व्यक्ति बुद्धि के विपरीत अपनी ही बात को सत्य सिद्ध करने के लिए क़समें खाता है, परन्तु अल्लाह का व्यवहार उस का समर्थन न कर के उसे अपमानित ही करता रहता है तो वह चाहे लाख क़समें खाए उस की बात को कभी भी नहीं मानना चाहिए।

क़समें[1] खा कर कहा था कि हम प्रातः ही जा कर अपने बाग़ के फल तोड़ेंगे।१८।	لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿١٨﴾
और अल्लाह का नाम नहीं लिया था।१९।	وَلَا يَسْتَثْنُونَ ﴿١٩﴾
परिणाम यह निकला कि रात के समय उन के बाग़ पर एक अज़ाब आ गया जब कि वे सो रहे थे।२०।	فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿٢٠﴾
जब प्रातःकाल देखा गया तो वह बाग़ ऐसा ही हो गया जैसा कि कटा[2] हुआ था।२१।	فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ﴿٢١﴾
फिर ऐसा हुआ कि प्रातःकाल ही उन्हों ने परस्पर एक-दूसरे को बुलाया और कहा।२२।	فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ﴿٢٢﴾
कि यदि तुम्हारा इरादा बाग़ के फल काटने का है तो इसी समय अपने बाग़ की ओर चलो।२३।	أَنِ اغْدُوا عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِن كُنتُمْ صَارِمِينَ ﴿٢٣﴾
फिर वे चले गए और वे धीरे-धीरे यह कहते जाते थे।२४।	فَانطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَافَتُونَ ﴿٢٤﴾
कि आज तुम्हारी उपस्थिति में कोई निर्धन बाग़ में प्रविष्ट न होने पाए।२५।	أَن لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُم مِّسْكِينٌ ﴿٢٥﴾

1. इस स्थान पर बाग़ वालों से अभीष्ट हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम और आप के मक्का वाले नातेदार हैं जिन के लिए अल्लाह ने पवित्र क़ुर्आन के रूप में स्वर्ग उतारा, परन्तु उन्हों ने उस स्वर्ग से लाभ प्राप्त करने के बदले लोगों को इस स्वर्ग से वंचित करने के लिए प्रयत्न करने प्रारम्भ कर दिए और परस्पर यह समझौता किया कि ऐसे समय में इस स्वर्ग में चलो जब कोई और आने वाला न हो और मक्का वाले यही करते थे कि जो व्यक्ति आप की बातें सुनने के लिए आता उसे बहका देते थे अथवा जब आप बातें करते तो उस समय शोर मचा देते ताकि कोई आप की बातें सुन न पाए और न उस से लाभ उठा सके।

2. इन इन्कार करने वाले लोगों का परिणाम उन बाग़ वालों की तरह होगा और वह यह है कि ये लोग अपने कर्मों का फल पाने से वंचित रहेंगे।

وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿٢٦﴾

और प्रातः होने से पहले वे कंजूसी करने का निर्णय कर चुके थे ।२६।

فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ﴿٢٧﴾

फिर जब उन्हों ने उस बाग़ को देखा तो कहा कि हम तो राह भूल आए हैं ।२७।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٢٨﴾

वास्तविकता यह है कि हम (अपने फलों से) बिल्कुल वंचित हो गए हैं ।२८।

قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ﴿٢٩﴾

उन में से जो अच्छा व्यक्ति था उस ने कहा कि क्या मैं ने तुम्हें नहीं कहा था कि तुम अल्लाह की स्तुति क्यों नहीं करते ? ।२९।

قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣٠﴾

वे बोले हमारा रब्ब समस्त त्रुटियों से पवित्र है। हम ही अत्याचारी थे ।३०।

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿٣١﴾

फिर वे एक-दूसरे को कोसते हुए बोले ।३१।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿٣٢﴾

और कहने लगे कि हम पर खेद ! हम उद्दण्डी बन गए ।३२।

عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٣﴾

सम्भव[1] है कि (यदि हम तौबः से काम लें तो) हमारा रब्ब उस से उत्तम बाग़ हमें प्रदान करे। हम अवश्य अपने रब्ब की ओर झुकेंगे ।३३।

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ۗ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ ع

इसी प्रकार से अज़ाब उतरा करता है तथा यदि वे जानें तो क़ियामत का अज़ाब इस सांसारिक अज़ाब से बहुत बढ़ कर है ।३४। (रुकू १/३)

1. अर्थात् परिणाम देख कर मक्का के कुछ लोग पश्चाताप कर लेंगे। फिर वास्तव में ऐसा ही हुआ तथा उन्हें पुरस्कार भी मिले।

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّٰتِ ٱلنَّعِيمِ ۝

संयमियों के लिए उन के रब्ब के पास निअमतों से भरे हुए बाग़ होंगे।३५।

أَفَنَجْعَلُ ٱلْمُسْلِمِينَ كَٱلْمُجْرِمِينَ ۝

क्या हम मुसलमानों को अपराधियों के समान समझ लेंगे ? ३६।

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝

तुम्हें क्या हो गया है तुम कैसा निर्णय करते हो ?।३७।

أَمْ لَكُمْ كِتَٰبٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ۝

क्या तुम्हारे पास कोई (अल्लाह की) किताब है जिस में यह बात पढ़ते हो ?।३८।

إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ۝

कि जो कुछ तुम पसंद करोगे वह तुम्हें मिलेगा।३९।

أَمْ لَكُمْ أَيْمَٰنٌ عَلَيْنَا بَٰلِغَةٌ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ ۝

अथवा क्या तुम ने हम से किसी क़सम के साथ वादे लिये हुए हैं जो क़ियामत तक चलते चले जाएँगे तथा यह कि जो तुम कह दोगे वही तुम्हें मिल जाएगा।४०।

سَلْهُمْ أَيُّهُم بِذَٰلِكَ زَعِيمٌ ۝

इन से तनिक पूछो तो कि इन में से इस बात का कौन उत्तरदायी है ?।४१।

أَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ فَلْيَأْتُوا۟ بِشُرَكَآئِهِمْ إِن كَانُوا۟ صَٰدِقِينَ ۝

क्या इन लोगों के पक्ष में इन के अपने बनाए हुए कोई अल्लाह के साझी हैं ? अतः यदि वे सच्चे हैं तो उन साझियों को पेश करें।४२।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَن سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى ٱلسُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ۝

जिस दिन विपत्ति का समय आ जाएगा और उन्हें सजदः करने के लिए बुलाया जाएगा तो उन्हें सजदः करने की भी शक्ति नहीं होगी।४३।

خَٰشِعَةً أَبْصَٰرُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ

उन की आँखें लज्जा से झुकी हुई होंगी और उन के चेहरों पर धिक्कार पड़ी हुई होगी

وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

और एक समय वह था कि उन्हें सजदों[1] के लिए बुलाया जाता था तथा उन्हें कोई रोग न था ।४४।

فَذَرْنِي وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٥﴾

अतः तू मुझे तथा उन्हें जो इस किताब को झुठलाते हैं, छोड़ दे। हम उन्हें क्रमशः विनाश की ओर उन दिशाओं से खींच कर लाएँगे, जिन का उन्हें ज्ञान भी नहीं ।४५।

وَاُمْلِيْ لَهُمْ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿٤٦﴾

और मैं उन्हें ढील दूंगा। मेरा उपाय बड़ा सुदृढ़ है (अन्ततः वह उन्हें विनष्ट कर देगा) ।४६।

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٧﴾

क्या तू उन से कुछ प्रतिफल माँगता है और वे उस चट्टी के कारण बोझ से दबे हुए हैं ? ।४७।

اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤٨﴾

क्या उन के पास ग़ैब (अर्थात् परोक्ष) का ज्ञान है और वे उसे लिखते जाते हैं ? ।४८।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوْتِ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ﴿٤٩﴾

अत; तू अपने रब्ब के आदेश पर जमा रह तथा मछली[2] वाले की तरह न बन। जब उस ने अपने रब्ब को पुकारा और वह दुःख से भरा हुआ था ।४९।

لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿٥٠﴾

यदि उस के रब्ब की कृपा उस के दुःख का उपाय न करती, तो उसे एक चटियल मैदान में फेंक दिया जाता तथा उस की संसार में निन्दा की जाती ।५०।

---

1. उस समय उन्हों ने सजदः (अर्थात् आज्ञा का पालन) करने से इन्कार किया, फिर अब जब कि शिर्क का कलंक उन के दिल पर देर तक लगा रहा है तो ये सजदः किस प्रकार कर सकते हैं।

2. हज़रत यूनुस की तरह मत बन अर्थात् जाति के विनाश का निर्णय शीघ्र ही माँग। समय आने पर अल्लाह स्वयं निर्णय कर देगा।

فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٥٠

किन्तु उस के रब्ब ने उस को चुन लिया तथा उसे सदाचारी बन्दों में शामिल कर लिया ।५१।

وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ۝٥١

और ऐसा हो सकता था कि इन्कार करने वाले लोगों ने जब तुझ से क़ुर्आन सुना था तो अपनी क्रोध पूर्ण आँखों से देख कर तुझे अपने स्थान से फिसला देते तथा वे कहते जाते हैं कि यह व्यक्ति तो पागल है ।५२।

وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝٥٢

हालाँकि यह (क़ुर्आन) तो समस्त संसार के लिए बरकत[1] ले कर आया है ।५३।
(रुकू २/४)

---

1. फिर ऐसी बरकत वाली किताब लाने वाला पागल किस प्रकार हो सकता है ?

सूरः अल्-हाक़्क़ा

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की तिरपन आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।१।

اَلْحَآقَّةُ ②

वह पूरा हो कर रहने वाला समाचार जो क़ुर्आन ने बताया है।२।

مَا الْحَآقَّةُ ③

क्या तुम्हें पता है कि वह क्या है ?।३।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ④

और तुझे किस ने बताया है कि वह पूरा हो कर रहने वाला समाचार क्या है ?।४।

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ⑤

समूद और आद ने भी क़ारिअः (अर्थात् अज़ाब) को झुठलाया था (जो उस समय के अज़ाब की ख़बर थी)।५।

فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ⑥

समूद जाति के लोग एक ऐसे अज़ाब से तबाह किए गए जो सख़्ती में चरम-सीमा तक पहुँच गया था।६।

وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ⑦

और आद एक ऐसे अज़ाब से तबाह किए गए जो वायु के रूप में आया था। वह (वायु) लगातार तथा तेज़ चलती थी।७।

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٨﴾

उस (अल्लाह) ने वायु को लगातार सात रातों और आठ दिन तक उन की तबाही के लिए नियत कर रखा था। सो इस जाति का परिणाम तुम्हें ज्ञात है कि वह बिल्कुल ढेर हो गई। मानों वे खजूर के एक खोखले वृक्ष की जड़ें हैं जिन्हें तेज़ आँधी ने गिरा दिया हो।८।

فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ﴿٩﴾

(हे सम्बोधित !) अब बता कि तुझे उन का कोई बचा हुआ चिन्ह दिखाई देता है ? ।९।

وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿١٠﴾

और फ़िरऔन तथा जो लोग उस से पहले (हो चुके) थे (इस संसार में) अपराधी हो कर आए एवं (लूत जाति के लोगों की) वे बस्तियाँ भी जो पाप के कारण उलटाई गई थीं।१०।

فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿١١﴾

उन्हों ने अपने रब्ब के रसूल की अवज्ञा की थी। अतः अल्लाह ने उन्हें भी एक ऐसे अज़ाब में पकड़ा जो बढ़ता चला जाता था (तथा अत्यन्त कठोर था)।११।

اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِى الْجَارِيَةِ ﴿١٢﴾

हम ने (नूह के समय) जब पानी ऊँचा होना प्रारम्भ हुआ तो तुम लोगों को एक नौका में सवार कर दिया था।१२।

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ﴿١٣﴾

ताकि हम उस (घटना) को तुम्हारे लिए एक (शिक्षा प्रद) निशान[1] ठहराएँ तथा सुनने वाले कान उसे सुनें।१३।

فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿١٤﴾

अतः जब बिगुल में एक ही बार ज़ोर से हवा फूँकी जाएगी।१४।

---

1. अर्थात् ऐसा ही हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की जाति के साथ होगा और वह भी विभिन्न प्रकार के अज़ाबों में ग्रसित हो जाएगी।

وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿١٥﴾	और पृथ्वी और पर्वतों को उनके स्थानों से उठा लिया जाएगा और वे कण-कण हो (कर बिखर) जाएँगे ।१५।
فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٦﴾	उस दिन निश्चित[1] घटना घटित हो जाएगी ।१६।
وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ﴿١٧﴾	और आसमान[2] फट जाएगा तथा वह उस दिन बिल्कुल कमज़ोर दिखाई देगा ।१७।
وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ۗ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٨﴾	और फ़रिश्ते उस के किनारों[3] पर होंगे तथा उस दिन तेरे रब्ब के अर्श को आठ फ़रिश्ते[4] उठा रहे होंगे ।१८।
يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٩﴾	उस दिन तुम अल्लाह के सामने पेश किए जाओगे और कोई बात तुम से छिपी[5] नहीं रहेगी ।१९।
فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا	सो जिस के दाहिने हाथ में उस के कर्मों का सूची-पत्र दिया जाएगा वह दूसरे साथियों से

1. अर्थात् जिस दिन 'हाक़्क़ा' अज़ाब की भविष्यवाणी पूरी हो जाएगी तो मक्का के सरदारों तथा जनसाधारण का सर्वनाश होने लगेगा और उन्हें पराजय पर पराजय होगी ।

2. मक्का-निवासियों का आसमान अर्थात् उन का धर्म बिल्कुल खोखला हो जाएगा तथा जनता के दिलों से उस की सच्चाई पर विश्वास नहीं रहेगा ।

3. इसमें बताया गया है कि वही मुसलमान जिन्हें इन्कार करने वाले लोग अपना शत्रु समझा करते थे अज़ाब के समय उन की रक्षा के लिए अल्लाह से प्रार्थनाएँ कर रहे होंगे ।

4. यह जो कहा गया है कि 'उस दिन तेरे रब्ब का अर्श आठ फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे' इस से इस ओर संकेत है कि सूरः फ़ातिहः में तो अल्लाह के चार गुणों का वर्णन है अर्थात् रब्ब, रहमान, रहीम और मालिकेयौमिद्दीन, किन्तु मक्का की विजय के समय अल्लाह के गुण इस प्रबलता से प्रकट होंगे कि मानों वे चार के स्थान पर आठ हो जाएँगे तथा सारी धरती पर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का तेज तथा प्रताप चमक रहा होगा ।

5. अर्थात् तुम्हारा सारा लेखा तुम्हारे सामने पेश कर दिया जाएगा ।

كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾

कहेगा कि आओ-आओ मेरे कर्मों के पत्र को देखो[1] ।२०।

اِنِّیْ ظَنَنْتُ اَنِّیْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾

मुझे पूर्ण विश्वास था कि मैं एक दिन अपने हिसाब को देखूँगा[2] ।२१।

فَهُوَ فِیْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾

सो ऐसा व्यक्ति जीवन के बहुत अच्छे दिन देखेगा ।२२।

فِیْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾

और ऊँचे बागों में निवास करेगा ।२३।

قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾

उस के फल झुके हुए होंगे ।२४।

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـئًا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِی الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾

(और उन से कहा जाएगा कि) तुम ने जो कर्म पहले समय में किए थे, उन के फलस्वरूप मनभाता (फल) खाओ और (स्रोतों का) पानी पीयो कि इन में से हर-एक चीज़ तुम्हें खूब पचेगी ।२५।

وَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِیْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾

और जिस व्यक्ति के बाएँ हाथ में उस के कर्म का सूची-पत्र दिया जाएगा वह कहेगा कि काश ! मुझे मेरा पत्र न दिया जाता ।२६।

وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾

और मुझे पता ही न लगता कि मेरा हिसाब क्या है ? ।२७।

يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾

काश ! मेरी मौत मुझे बिल्कुल ही समाप्त कर देती ।२८।

---

1. दाहिना हाथ बरकत पाने का निर्देशक है । अत: जिस के दाहिने हाथ में उस का कर्म-पत्र दिया जाएगा वह समझ लेगा कि मेरे लिए अच्छा निर्णय हुआ है तथा मेरे कर्मों को नेक टहराया गया है। अतएव वह अपने साथियों को बुलाएगा और कहेगा कि आओ और मेरा परिणाम तथा मेरे कर्मों का सूची-पत्र देखो ।

2. अभिप्राय यह है कि क़ियामत पर ईमान रखने के कारण मैं उस दिन के लिए तय्यारी कर रहा था । अत: उस का लाभ मुझे प्राप्त हो गया और अल्लाह ने मेरे बारे में निर्णय कर दिया है कि मेरा यह भक्त जीवन के अच्छे दिन देख लेगा ।

مَآ أَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ﴿٢٩﴾

मेरे धन ने मुझे आज कोई लाभ न दिया।२९।

هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطٰنِيَهْ ﴿٣٠﴾

और मेरा प्रभुत्व जाता रहा।३०।

خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ﴿٣١﴾

(उस समय अल्लाह फ़रिश्तों से कहेगा) इसे पकड़ लो तथा इस की गर्दन में तौक़ डालो।३१।

ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ﴿٣٢﴾

और उसे जहन्नम में झोंक दो।३२।

ثُمَّ فِىْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ﴿٣٣﴾

फिर एक ज़ंजीर में जो बहुत लम्बी है इस को जकड़ दो।३३।

إِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ﴿٣٤﴾

यह विस्तृत साम्राज्य वाले अल्लाह पर ईमान नहीं लाया था।३४।

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿٣٥﴾

और निर्धनों को भोजन कराने के लिए (लोगों को) प्रेरणा नहीं दिलाता था।३५।

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ﴿٣٦﴾

अतः उस दिन उस का कोई मित्र न होगा।३६।

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ﴿٣٧﴾

और उसे घावों के धोवन[1] के सिवा कोई भोजन नहीं मिलेगा।३७।

لَّا يَأْكُلُهٗٓ إِلَّا الْخٰطِـُٔوْنَ ﴿٣٨﴾

यह भोजन केवल पापी लोग खाते हैं।३८। (रुकू १/५)

فَلَآ أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾

हम गवाही के रूप में उसे भी पेश करते हैं जिसे तुम देखते हो।३९।

1. जिस प्रकार एक अत्याचारी जब अपने उन अत्याचारों पर दिल से विचार करता है तो उस के मन में इस पर घृणा पैदा होती है उसी घृणा की ओर संकेत करते हुए अत्याचारों को घावों का धोवन (पीप) ठहराया है।

وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ۝٤٠

और जिसे तुम नहीं देखते ।४०।

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝٤١

यह (क़ुर्आन) एक आदरणीय रसूल की वाणी है ।४१।

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَا تُؤْمِنُونَ ۝٤٢

और किसी कवि की वाणी नहीं, परन्तु खेद है कि तुम ईमान नहीं लाते ।४२।

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ ۝٤٣

और न यह किसी 'काहिन' (पादरी या पण्डित) की बातें हैं, परन्तु तुम बिल्कुल ही शिक्षा ग्रहण नहीं करते ।४३।

تَنْزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝٤٤

यह (किताब) लोकों के रब्ब की ओर से उतारी गई है ।४४।

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ ۝٤٥

और यदि यह व्यक्ति झूठा इल्हाम गढ़ कर हमारे नाम से सम्बन्धित कर देता चाहे वह एक ही होता ।४५।

لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۝٤٦

तो निस्सन्देह हम इस को अपने दाहिने हाथ से पकड़ लेते ।४६।

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۝٤٧

और उस की गर्दन की रग काट देते ।४७।

فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِينَ ۝٤٨

सो ऐसी अवस्था में तुम में से कोई भी उसे अल्लाह के अज़ाब से न बचा सकता ।४८।

---

1. बहाई सम्प्रदाय के लोग कहते हैं कि बहाउल्लाह इसलिए सच्चा है कि उसे दावा के पश्चात् एक लम्बे समय तक जीवित रहने का अवसर मिला, परन्तु यह कथन असत्य है। बहाउल्लाह ने इल्हाम पाने का दावा नहीं किया। वह तो अपने-आप को स्वयं ख़ुदा कहता था और ख़ुदाई का दावा इतना निर्बल है कि इस की वास्तविकता हर-एक व्यक्ति समझ सकता है। केवल इल्हाम के दावा से धोखा लगता है। इसलिए अल्लाह ने झूठे इल्हाम का दण्ड तो बताया, किन्तु ख़ुदाई का दावा करने वाले का वह दण्ड नहीं बताया, क्योंकि प्रत्येक समझदार व्यक्ति स्वयं इस का खण्डन कर सकता है।

وَإِنَّهُ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾	और यह क़ुर्आन तो अल्लाह से डरने वालों के लिए शिक्षा (एवं बड़ाई) का साधन है ।४९।
وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنكُم مُّكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾	और हम भली-भाँति जानते हैं कि तुम में से (क़ुर्आन) को झुठलाने वाले भी हैं ।५०।
وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٥٠﴾	और यह (भी जानते हैं कि यह) क़ुर्आन इन्कार करने वालों के दिलों में पछतावा[1] पैदा करता है ।५१।
وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ﴿٥١﴾	और इस की सच्चाई यक़ीनी तौर पर स्पष्ट है ।५२।
فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٥٢﴾ ع	अत: तू अपने महिमाशाली रब्ब के नाम से उस की पवित्रता का यशोगान कर ।५३। (रुकू २/६)

1. क़ुर्आन की शिक्षा को देख कर प्राय: इन्कार करने वाले लोगों के दिलों में यह अभिलाषा पैदा होती है कि काश ! ऐसी शिक्षा हमारे पास भी होती और हम वाद-विवाद में इस प्रकार अपमानित न होते ।
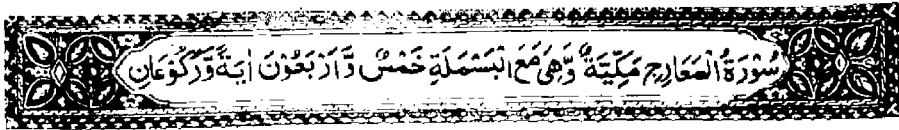
सूरः अल्-मआरिज

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की पैंतालीस आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) वार-बार दया करने वाला है।१।

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ۝٢

पूछने वाला पूछता है (इन्कार करने वालों पर) अटल अज़ाब कब आएगा।२।

لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ۝٣

(याद रखो कि) इन्कार करने वालों को उस से बचाने वाला कोई नहीं (अतः समय के बारे में पूछना निरर्थक है)।३।

مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ ۝٤

यह (अज़ाब) क्रमशः उन्नति देने वाले अल्लाह की ओर से आएगा।४।

تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۝٥

साधारण फ़रिश्ते तथा ईशवाणी लाने वाले फ़रिश्ते उस (अल्लाह) की ओर उतने समय में चढ़ते हैं जिस का अन्दाज़ा पचास[1] हज़ार वर्ष के बराबर होता है।५।

---

1. कुछ गणितज्ञ जिन्हों ने गणित विद्या के आधार पर संसार की आयु का अनुमान लगाया है। उन्हों ने लगभग पचास हज़ार वर्ष ही संसार की सारी आयु बताई है। सो यदि उन का अनुमान ठीक है तो इस का यह अर्थ है कि इस आयत में संसार की समस्त आयु की ओर संकेत है। ईश-भक्तों ने हज़रत (शेष पृष्ठ १२८४ पर)

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ٦

अतः तू अच्छी तरह धैर्य धारण कर ।६।

إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ٧

ये लोग उस (दिन) को बहुत दूर समझते हैं ।७।

وَنَرَاهُ قَرِيبًا ٨

किन्तु हम इसे बहुत निकट देखते हैं ।८।

يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ ٩

उस दिन (प्रचण्ड ताप के कारण) आकाश पिघलाए हुए ताँबे जैसा हो जाएगा ।९।

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ١٠

और पर्वत धुनी हुई ऊन[1] जैसे हो जाएँगे ।१०।

وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ١١

और उस दिन कोई मित्र किसी मित्र के बारे में कोई प्रश्न नहीं करेगा ।११।

يُبَصَّرُونَهُمْ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ ١٢

क्योंकि उस दिन प्रत्येक व्यक्ति की दशा उस के मित्र को दिखा दी जाएगी। उस दिन अपराधी इच्छा प्रकट करेगा कि काश! वह आज के दिन अपने पुत्रों को बलिदान कर के अपने-आप को अज़ाब से बचा ले ।१२।

وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ١٣

और अपनी पत्नी तथा अपने भाई ।१३।

وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ١٤

और अपने नातेदारों को जिन के हाँ वह शरण लिया करता था ।१४।

(पृष्ठ १२८३ का शेष)

आदम से ले कर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के युग तक संसार की आयु पाँच हज़ार वर्ष ठहराई है, परन्तु अनुमान अलग-अलग हिसाब से लगाए जाते हैं। आदम की सन्तान से नबियों के प्रादुर्भाव की आयु सम्भव है सात हज़ार वर्ष हो और भू-भागों की उत्पत्ति के उपलक्ष्य संसार की आयु पचास हज़ार वर्ष हो। अतः यह कोई मतभेद नहीं।

1. ऐसे-ऐसे आविष्कार होंगे जैसे अणु-बम तथा हाईड्रोजन-बम कि जिन के गिरने से पर्वतों जैसी सुदृढ़ वस्तुएँ भी रूई के गालों के समान उड़ जाएँगी।

وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ثُمَّ يُنْجِيْهِ ﴿١٥﴾

और संसार में जो कुछ भी है (उसे बलिदान कर के) वह अपने-आप को अज़ाब से बचा ले।१५।

كَلَّا اِنَّهَا لَظٰى ﴿١٦﴾

सुनो! यह अज़ाब जिस का समाचार सुनाया गया है (आग की) लपट वाला अज़ाब है।१६।

نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ﴿١٧﴾

सिर तक की त्वचा को उखाड़ देने वाला अज़ाब है।१७।

تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ﴿١٨﴾

जो व्यक्ति उस से भागना चाहेगा तथा पीठ फेर लेगा, वह उसे भी अपनी ओर बुलाएगा।१८।

وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ﴿١٩﴾

और उसे भी जो सारी आयु संसार में धन इकट्ठा करता रहा तथा ढेरों-ढेर धन इकट्ठा करने में सफल हो गया।१९।

اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ﴿٢٠﴾

मानव-प्रकृति में रंग बदलने का स्वभाव पाया जाता है।२०।

اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ﴿٢١﴾

जब उसे कोई कष्ट पहुँचे तो व्याकुल हो जाता है।२१।

وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ﴿٢٢﴾

और जब उसे कोई लाभ पहुँचे तो कन्जूसी करने लग जाता है (और नहीं चाहता कि उस का कोई साझी हो)।२२।

اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ﴿٢٣﴾

सिवाय नमाज़ पढ़ने वालों के।२३।

الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ﴿٢٤﴾

जो अपनी नमाज़ों पर सदैव क़ायम रहते हैं।२४।

وَالَّذِيْنَ فِىْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ﴿٢٥﴾

और जिन के धन-दौलत में एक निश्चित भाग निर्धन माँगने वालों का भी होता है।२५।

لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿٢٥﴾

और उन का भी होता है जो माँग नहीं[1] सकते ।२६।

وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٢٦﴾

और जो लोग प्रतिफल पाने के दिन को सच्चा मानते हैं ।२७।

وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿٢٧﴾

और जो लोग अपने रब्ब के अज़ाब से डरते हैं ।२८।

اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ﴿٢٨﴾

(सच यही है) कि उन के रब्ब के अज़ाब से कोई अपनी शक्ति से बच नहीं सकता ।२९।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ﴿٢٩﴾

और वे लोग भी जो अपनी गुप्त इन्द्रियों की रक्षा करते हैं ।३०।

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ﴿٣٠﴾

सिवाय अपनी धर्म पत्नियों या दासियों के उन की कोई निन्दा नहीं की जाएगी ।३१।

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ﴿٣١﴾

किन्तु जो लोग इस से आगे बढ़ने की कामना करते हैं, वे सीमोल्लंघी हैं ।३२।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ﴿٣٢﴾

(इसी प्रकार वे लोग भी अज़ाब से सुरक्षित हैं) जो अपने पास रखी हुई अमानतों तथा अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा करते हैं ।३३।

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ﴿٣٣﴾

और जो अपनी गवाहियों पर क़ायम रहते हैं (अर्थात् किसी से डर कर झूठी गवाही नहीं देते) ।३४।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٣٤﴾

और वे लोग भी जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं ।३५।

1. जैसे पशु-पक्षी और न माँगने वाले निर्धन लोग ।

أُولٰٓئِكَ فِي جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ ع

वे स्वर्ग में सम्मान के साथ ठहराए जाएँगे।३६। (रुकू १/७)

فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ﴿٣٧﴾

सो इन्कार करने वालों को क्या हो गया है कि तेरी ओर क्रोध से सिर उठाए भागे चले आ रहे हैं ?।३७।

عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ﴿٣٨﴾

दाहिनी ओर से भी तथा बाईं ओर से भी, भिन्न-भिन्न टोलियों के रूप में।३८।

اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ﴿٣٩﴾

क्या उन में से प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि उसे निअमतों वाले स्वर्ग में प्रविष्ट कर दिया जाए (चाहे वह लौकिक हो अथवा पारलौकिक)।३९।

كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٠﴾

ऐसा कदापि नहीं होगा। हम ने उन्हें ऐसी चीज़ से पैदा किया है जिसे वे जानते हैं।४०।

فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ﴿٤١﴾

सो मैं (इस क़ुर्आन को उतारने वाले) पूर्व-पश्चिम के रब्ब को गवाह के रूप में पेश करता हूँ कि हमें इस बात का सामर्थ्य प्राप्त है।४१।

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٤٢﴾

कि इस जाति का सर्वनाश कर के एक दूसरी उत्तम जाति पैदा कर दें तथा हमें इस इरादा से कोई रोक नहीं सकता।४२।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٣﴾

तू उन्हें छोड़ दे कि वे सच्चाई को गदला करते रहें तथा हँसी-खेल में पड़े रहें, उस समय तक कि वे उस दिन को देख लें जिस की उन से प्रतिज्ञा की जाती है।४३।

جس दिन वे क़ब्रों से जीवित हो कर निकलेंगे और तीव्र गति से भाग रहे होंगे, मानों वे विशेष स्तम्भों की ओर[1] भागते जा रहे हैं।४४।	يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ۟
उन की आँखें लज्जा से झुकी हुई होंगी और उन के चेहरों पर फटकार पड़ी होगी। यह वह दिन है जिस की उन से प्रतिज्ञा की जाती है।४५। (रुकू २/८)	خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۟ ع

1. इस स्थान पर यदि सांसारिक प्रलय अभीष्ट हो तो तात्पर्य यह होगा कि जब लौकिक अज़ाब आ जाएगा और इन्कार करने वाले लोगों में भय के कारण एक नव-जागृति पैदा हो जाएगी तो वे अपनी क़ब्रों में से तीव्र-गति से बाहर आ जाएँगे अर्थात् उन में जीवन की किरणें फूट पड़ेंगी जैसा कि मक्का की विजय के पश्चात् मक्का वालों में नव-जीवन का संचार हुआ। विशेष स्तम्भों की ओर भागे जाने का अर्थ यह है कि उस दिन अज़ाब से शरण पाने के लिए वे अपने सरदारों की ओर भाग कर आएँगे जैसा कि मक्का की विजय के अवसर पर हुआ। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने जब यह घोषणा की कि जो व्यक्ति अपने घर का द्वार बन्द कर के भीतर बैठ जाएगा और जो व्यक्ति अबू-सुफ़ियान के घर में या बिलाल के झण्डे के नीचे या काबा में आ जाएगा उन सब को शरण दी जाएगी। तो वे पागलों की भाँति बचने के लिए उन स्तम्भों की ओर भागे।
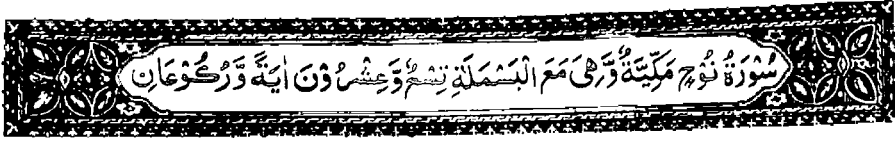
सूरः नूह

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित
इस की उन्तीस आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ②

हम ने नूह को उस की जाति की ओर यह कह कर भेजा था कि अपनी जाति के लोगों को उस समय के आने से पहले सावधान कर जब कि उन पर पीड़ादायक अज़ाब उतरे।२।

قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ③

उस ने (अपनी जाति के लोगों से) कहा था कि हे मेरी जाति के लोगो! मैं तुम्हारी ओर एक खुला-खुला डराने वाला (नबी) हो कर आया हूँ।३।

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ④

(और तुम से कहता हूँ कि) केवल अल्लाह की ही उपासना करो तथा उसी के लिए संयम धारण करो और मेरी आज्ञा का पालन करो।४।

يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَاۗءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ

वह तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा और तुम्हें एक निश्चित समय तक ढील देगा और यदि तुम जानते हो तो समझ लो कि अल्लाह किसी जाति के सर्वनाश के लिए

تَعْلَمُونَ ﴿٥﴾

जो समय निश्चित करता है जब वह समय आ जाता है तो उसे आगे-पीछे नहीं किया जा सकता ।५।

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ﴿٦﴾

फिर उस ने (अल्लाह से) कहा कि हे मेरे रब्ब ! मैं ने अपनी जाति के लोगों को रात के समय भी पुकारा तथा दिन के समय भी पुकारा ।६।

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ﴿٧﴾

परन्तु वे मेरे प्रचार के कारण और भी दूर भागने लगे ।७।

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ﴿٨﴾

और मैं ने जब कभी उन्हें उपदेश दिया ताकि वे मान लें और तू उन्हें क्षमा कर दे, तो उन्हों ने अपनी अंगुलियाँ अपने कानों में डाल लीं और अपने (सिरों पर) वस्त्रों को लपेट लिया और इन्कार पर हठ किया और बड़े अभिमान से काम लिया ।८।

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ﴿٩﴾

फिर मैं ने उन्हें ऊँची आवाज़ से (भाषण द्वारा) उपदेश दिया ।९।

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ﴿١٠﴾

फिर मैं ने उन्हें ज़ाहिर में समझाने के बाद एकान्त में भी उपदेश दिया ।१०।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ﴿١١﴾

और मैं ने उन से कहा कि अपने रब्ब से क्षमा माँगो। वह बहुत क्षमा करने वाला है ।११।

يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ﴿١٢﴾

यदि तुम तौबः करोगे तो वह वर्षा करने वाले बादलों को तुम्हारी और भेजेगा ।१२।

وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ

और धन-दौलत और सन्तान से तुम्हारी सहायता करेगा तथा तुम्हारे लिए बाग़

جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ﴿۱۳﴾

उगाएगा और तुम्हारे लिए नदियाँ बहाएगा ।१३।

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ﴿۱۴﴾

तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह से हिक्मत की आशा नहीं रखते ? ।१४।

وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ﴿۱۵﴾

हालाँकि उस ने तुम्हें प्रगति करने की अनेक शक्तियाँ दे कर भेजा है ।१५।

اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ﴿۱۶﴾

क्या तुम ने देखा नहीं कि अल्लाह ने किस प्रकार सात आसमान पैदा किए हैं ? जो (विधि के अनुसार) एक-दूसरे के अनुकूल[1] हैं ।१६।

وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿۱۷﴾

और उस ने चन्द्रमा को इन (आसमानों) में प्रकाश का साधन बनाया है और सूर्य को आसमानों में एक दीपक के समान बनाया है ।१७।

وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ﴿۱۸﴾

और अल्लाह ने तुम्हें धरती से पैदा किया एवं तुम्हें विकास प्रदान किया ।१८।

ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ﴿۱۹﴾

फिर वह तुम्हें लौटा कर उसी में ले जाएगा और उसी से निकालेगा ।१९।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ﴿۲۰﴾

और अल्लाह ने धरती को समतल बनाया है ।२०।

لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿۲۱﴾ ع

ताकि तुम उस की खुली-खुली राहों पर चलो ।२१। (रुकू १/९)

قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ

फिर नूह ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! उन्हों ने मेरी अवज्ञा की है और (मुझे छोड़ कर)

---

1. सारा सूर्य-मण्डल अल्लाह के एक होने पर गवाह है ।

يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗۤ اِلَّا خَسَارًا ۝

उस के पीछे चल पड़े हैं जिस का धन तथा सन्तान उसे आध्यात्मिक घाटे में बढ़ाता गया।२२।

وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ۝

और (मेरे विरुद्ध) उन्हों ने बड़े-बड़े षड्यन्त्र रचे।२३।

وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ وَنَسْرًا ۝

और (अपनी जाति से) कहते रहे हैं कि तुम लोग अपने उपास्यों को न छोड़ना, न वद्द को छोड़ना, न सुवा को, न यागूस को, तथा न याऊक़ को और न नस्र[1] को।२४।

وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ۝

और उन्हों ने बहुत से लोगों को पथभ्रष्ट कर दिया है। (हे रब्ब!) अत्याचारियों को केवल असफलता में ही बढ़ाईयो।२५।

مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ۝

वे अपने पापों के कारण डुबो दिए गए और आग में प्रविष्ट किए गए तथा अल्लाह के सिवा उन्होंने अपने लिए कोई सहायक न पाया।२६।

وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ۝

और नूह ने यह भी प्रार्थना की कि हे मेरे रब्ब! धरती पर इन्कार करने वाले लोगों का कोई घर बचा[2] न रहे।२७।

---

1. ये नाम नक्षत्रों और उन की राशियों के आधार पर हैं। मक्का और ताएफ़ वालों ने अपनी मूर्तियों के भी यही नाम रखे हुए थे। ईसाई कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने मक्का की मूर्तियों को हज़रत नूह की जाति की ओर सापेक्षित किया है, हालाँकि भ्रम-पूर्ण बातें एक-दूसरे का अनुकरण होती हैं। मूर्तियाँ भी भ्रम-मात्र हैं। मक्का वालों ने अपने पूर्वजों से सुन कर अपनी मूर्तियों के ये नाम रख लिए हैं।

2. यह शाप नहीं कि सारे इन्कार करने वाले लोग मारे जाएँ, अपितु आशीर्वाद है कि सारी जाति ईमान ले आए और कोई व्यक्ति भी इन्कार करने वाला शेष न रहे।

إِنَّكَ إِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾

यदि तू उन्हें इसी तरह छोड़ देगा तो यह तेरे दूसरे बन्दों को भी पथभ्रष्ट करेंगे और वे दुराचारी[1] और इन्कार करने वाले के सिवा किसी बच्चे को जन्म नहीं देंगे।२८।

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾ ع

हे मेरे रब्ब ! मुझे और मेरे माता-पिता को एवं प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को जो मेरे घर में मोमिन हो कर प्रवेश करता है उसे क्षमा कर दे और सब मोमिन पुरुषों एवं महिलाओं को भी तथा ऐसा हो कि अत्याचारी केवल विनाश में ही बढ़ें। (उन्हें सफलता प्राप्त न हो)।२९। (रुकू २/१०)

1. अर्थात् यदि यह लोग इन्कार करने की अवस्था में रहे तो दूसरों को भी इन्कार करने वाला बना देंगे और जो सन्तान पैदा होगी उस से शिर्क का पालन कराएँगे। इस से यह तात्पर्य नहीं कि अल्लाह की ओर से पैदा होने वाली सन्तान शिर्क को अपनाते हुए पैदा होती है।
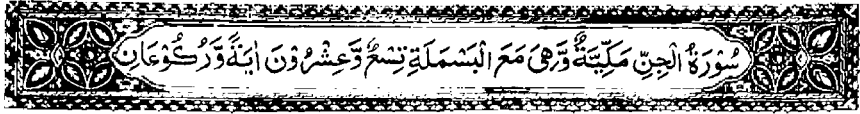
सूर: अल् - जिन्न

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की उन्तीस आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ②

तू कह दे कि मुझे वह्य की गई है कि जिन्नों[1] में से कुछ लोगों ने तुझ से (क़ुर्आन) सुना। अत: वापस जा कर उन्हों ने अपनी जाति के लोगों से कहा कि हम ने एक विचित्र क़ुर्आन सुना है।२।

يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ۭ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ③

वह हिदायत की ओर ले जाता है, जिस के फलस्वरूप हम उस पर ईमान ले आए हैं और हम भविष्य में किसी को अपने रब्ब का साझी नहीं ठहराएँगे।३।

---

1. इस से पहले भी जिन्नों के आने का उल्लेख हो चुका है और वहाँ पर बताया गया है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के पास कुछ जिन्न आए थे। यहाँ अल्लाह ने आप को वह्य द्वारा बताया है कि कुछ जिन्नों ने आप का क़ुर्आन सुना है। अत: यह घटना और है तथा पहली घटना और थी। इस घटना को और जिन्नों को समझने के बारे में देखिए सूर: अहक़ाफ़ आयत नं० 22 और सूर: सबा आयत नं० 13।

सूर: अहक़ाफ़ में जिन जिन्नों का वृत्तान्त है हम इतिहास तथा हदीस से सिद्ध कर चुके है कि वे कुछ यहूदी लोग थे। अत: यहाँ भी जिन्नों से अभिप्राय मक्का से बाहर के यहूदी हैं जिन को क़ुर्आन का पता चला तथा वे उसे सुनने के लिए आए थे, किन्तु अपनी जाति के लोगों के डर से छिप कर आए और क़ुर्आन सुन कर वापस चले गए।

وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ۝

और सच यह है कि हमारा रब्ब अत्यन्त महिमाशाली है और न उस ने कभी कोई पत्नी बनाई है तथा न कोई पुत्र[1] बनाया है।४।

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ۝

यह भी सच है कि हम में से मूर्ख लोग अल्लाह के बारे में अनुचित बातें कहा करते थे।५।

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۙ۝

और हमारा यह विचार था कि मनुष्य तथा जिन्न अल्लाह के बारे में तो झूठ नहीं बोल सकते।६।

وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۙ۝

और यह भी वास्तविकता है कि मनुष्यों में से कुछ लोग ऐसे थे जो जिन्नों में से कुछ व्यक्तियों की शरण माँगा करते थे। सो इस का परिणाम यह निकला कि (इस बात ने) जिन्नों को अभिमान में और भी बढ़ा दिया।७।

وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ۝

और निस्सन्देह वे (यहूदी) भी विश्वास रखते थे जिस प्रकार तुम विश्वास रखते हो कि अल्लाह किसी को नबी बना कर नहीं भेजेगा[2]।८।

---

1. इस से विदित होता है कि वे ईसाई प्रभाव से प्रभावित थे, क्योंकि उन्हों ने अपना जो मंतव्य बताया है वह ईसाइयों का है यहूदियों का नहीं। इतिहास से भी सिद्ध है कि ईसाइयों की उन्नति के युग में कुछ यहूदी भी ईसाई प्रभाव के अधीन आ गए थे।

2. उन के यहूदी होने का प्रमाण पवित्र क़ुर्आन से मिलता है। क़ुर्आन बताता है कि जब यूसुफ़ का देहान्त हो गया तो उस के मानने वालों ने कहा कि अब भविष्य में कोई रसूल नहीं आएगा। इस स्थान पर भी जिन्नों के मुँह से उसी मंतव्य को दुहराया गया है कि तुम विश्वास रखते थे कि भविष्य में अल्लाह किसी को रसूल नियुक्त नहीं करेगा, क्योंकि ख़ातमुन्नबिय्यीन का प्रादुर्भाव हो चुका है। मुसलमान इस आयत पर विचार करें तथा अपने परिणाम को सोचें।

وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّ شُهُبًا ۙ﴿٩﴾

और हम ने आसमान को छूआ[1], परन्तु हम ने उसे बलवान् रक्षकों और शिहाबे-साक़िब (उल्का) से भरा हुआ पाया ।९।

وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ﴿١٠﴾

और हम (पहले) उस में (आसमानी बातें) सुनने के लिए बैठा करते थे, परन्तु अब जो कोई (आसमानी बातें) सुनने की कोशिश करता है तो वह एक (विनाशकारी) आग की लपट वाले नक्षत्र को अपनी घात[2] में पाता है ।१०।

وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۙ﴿١١﴾

और हम नहीं जानते कि इस आने वाले के द्वारा धरती में निवास करने वाले लोगों के लिए किसी अज़ाब का निर्णय किया गया है अथवा उन के लिए उन के रब्ब ने हिदायत का निर्णय किया है ।११।

وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۙ﴿١٢﴾

और हम में से कुछ भले लोग भी हैं तथा कुछ इस के उलट भी हैं। हम विभिन्न राहों पर जा रहे थे ।१२।

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۙ﴿١٣﴾

और हमारा पूर्ण विश्वास था कि हम इस संसार में अल्लाह को असफल नहीं कर सकते तथा न उसे भाग-दौड़ कर के असफल बना सकते हैं ।१३।

وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ يُّؤْمِنْ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا

और हम ने तो जब हिदायत की बात सुनी उस पर ईमान ले आए और जो व्यक्ति अपने रब्ब पर ईमान लाता है, तो वह न किसी

1. अर्थात् आसमानों के रहस्य का ज्ञान जानने के प्रयत्न किए।

2. अर्थात् जो व्यक्ति इस्लाम में झूठी बातें मिलाना चाहता है जैसे पहले वर्णित हुआ तो अल्लाह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की बरकत से उस के विनाश के साधन कर देता है।

رَهَقًا ﴿١٣﴾

हानि से तथा न किसी अत्याचार से डरता है।१४।

وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿١٤﴾

और हम में से कुछ लोग आज्ञाकारी हैं तथा कुछ अत्याचारी भी हैं और जो कोई आज्ञाकारी बनता है वही हिदायत का इच्छुक होता है।१५।

وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾

और जो अत्याचार से काम लेते हैं वही नरक का ईंधन बनते हैं।१६।

وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ﴿١٦﴾

और (हे रसूल ! मैं ने निर्णय कर दिया था कि) यदि ये (मक्का वाले) हमारे बताए हुए डगर पर चल पड़ते तो हम उन को मन चाहा पानी पिलाते।१७।

لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾

ताकि हम उस के द्वारा उन की परीक्षा करें और जो व्यक्ति अपने रब्ब की याद से मुँह मोड़ता है तो वह (अल्लाह) उसे ऐसे अज़ाब के रास्ते पर चलाता है जो बढ़ता ही जाता है और उन्हों ने भी वही रास्ता अपनाया है)।१८।

وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾

और हम ने यह भी निर्णय किया था कि मस्जिदें सदैव अल्लाह ही का स्वामित्व ठहराई जाएँ। अतः हे लोगो ! तुम उन में उस के सिवा किसी को मत पुकारो।१९।

وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ ع

और हमें दिखाई दे रहा है कि जब अल्लाह का भक्त (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम) उस की ओर बुलाने के लिए खड़ा होता है तो ये (मक्का वाले) उस के ऊपर झपट कर आ गिरते हैं।२०। (रुकू १/११)

قُلْ إِنَّمَآ أَدْعُوا رَبِّي وَلَآ أُشْرِكُ بِهٖٓ أَحَدًا ﴿٢١﴾

तू कह दे कि मैं तो केवल अपने रब्ब को पुकारता हूँ और उस का किसी को साझी नहीं ठहराता ।२१।

قُلْ إِنِّي لَآ أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿٢٢﴾

और यह भी कह दे कि तुम्हें किसी प्रकार की हानि पहुंचाने अथवा हिदायत देने की मुझ में शक्ति नहीं ।२२।

قُلْ إِنِّي لَنْ يُّجِيرَنِي مِنَ اللّٰهِ أَحَدٌ ۙ وَّلَنْ أَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٣﴾

(अपितु यह भी) कह दे कि (यदि अल्लाह मुझ पर अज़ाब उतारे तो) मुझे अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाला कोई नहीं तथा उसे छोड़ कर मेरा कोई ठिकाना नहीं ।२३।

إِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ۚ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَإِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ﴿٢٤﴾

मेरा काम तो केवल इतना है कि मैं अल्लाह की बात और उस का संदेश पहुँचा दूँ तथा जो लोग अल्लाह और उस के रसूल की बात नहीं मानते उन्हें नरक मिलता है । वे उस में देर तक निवास करते चले जाएँगे ।२४।

حَتّٰٓى إِذَا رَأَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَّأَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٥﴾

हाँ ! जब वे उस अज़ाब को (जिस का वादा दिया गया है) देख लेंगे तो जान लेंगे कि (उन का तथा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का मुक़ाबिला सामने रखते हुए) सहायक की दृष्टि से कौन निर्बल है और संख्या[1] की दृष्टि से कौन कम है ।२५।

قُلْ إِنْ أَدْرِيْٓ أَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ أَمْ يَجْعَلُ لَهٗ

तू कह दे कि मैं नहीं जानता कि वह घड़ी जिस का तुम्हें वादा दिया गया है निकट

1. निर्णय का समय आने पर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के अनुयायियों की संख्या बढ़ जाएगी तथा इन्कार करने वालों की संख्या घट जाएगी जैसा कि वास्तविक रूप में हुआ । यह एक महान् भविष्यवाणी थी जो अपने समय पर पूरी हो चुकी है विशेषत: जब यह देखा जाए कि यह सूरः मक्की है जब मुसलमान कमज़ोर और थोड़े थे ।

رَبِّيْٓ اَمَدًا ۝٢٥

है अथवा अल्लाह उस के लिए कोई लम्बी अवधि निश्चित करेगा।२६।

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۝٢٦

ग़ैब का जानने वाला वही है। वह अपने ग़ैब पर किसी को ग़ालिब नहीं करता।२७।

اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ۝٢٧

सिवाय ऐसे रसूल के जिसे वह इस काम के लिए पसंद[1] कर लेता है और इस रसूल की यह शान है कि इस के दाहिने भी तथा पीछे भी संरक्षक फ़रिश्तों का दल चलता है।२८।

لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۝٢٨

तांकि अल्लाह जान ले कि उन रसूलों ने अपने रब्ब के सन्देश को लोगों तक पहुँचा दिया है तथा जो कुछ उन के पास है उसे घेरे में रखता है और प्रत्येक वस्तु को गिन रखता है।२९। (रुकू २/१२)

1. अर्थात् वह उसे प्रचुर मात्रा में ग़ैब अर्थात् परोक्ष का ज्ञान देता है।

सूरः अल्-मुज़्ज़म्मिल

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की इक्कीस आयतें तथा दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ②

हे चादर में लिपटे हुए! (अल्लाह की दयालुता की प्रतीक्षा करने वाले!)।२।

قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ③

रातों को उठ-उठ कर उपासना कर, जिस से हमारा अभिप्राय यह है कि रात का अधिक भाग उपासना में व्यतीत किया कर।३।

نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ④

अर्थात् उस का आधा[1] भाग अथवा आधे से कुछ कम कर दे।४।

اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ⑤

अथवा उस पर कुछ और बढ़ा दे तथा क़ुर्आन को मधुर स्वर से पढ़ा करो।५।

اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ⑥

हम तुम पर एक ऐसा कलाम उतारने वाले हैं जो (दायित्व की दृष्टि से) अत्यन्त बोझल है।६।

---

1. कुछ रातें बहुत छोटी होती हैं। उन में स्वास्थ्य के उपलक्ष्य बहुत थोड़ा सा भाग जागा जाता है, किन्तु फ़रमाता है कि जब दिन-रात बराबर हों तो रात का आधा भाग जागा करो तथा आधा भाग सोया करो और जब रातें लम्बी हों तो अधिक समय जागा करो तथा थोड़ा समय सोया करो और जब जागो तो उस में क़ुर्आन पढ़ा करो।

إِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيلًا ۝٧

रात का उठना मन को लताड़ने का सफल गुर है तथा रात को जागने वालों को सच[1] की आदत पड़ जाती है ।७।

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ۝٨

तुझे दिन के समय बहुत से काम[2] होते हैं ।८।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۝٩

और चाहिए कि तू अपने रब्ब के गुणों को याद किया कर तथा उसी से दिल लगाया कर ।९।

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۝١٠

वह पूर्व और पश्चिम का रब्ब है उस के सिवा कोई उपास्य नहीं है । अत: उसी को अपना कार्य साधक बना ।१०।

وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ۝١١

और जो कुछ वे विरोधी कहते हैं, उस पर धैर्य धारण कर तथा अच्छा व्यवहार करते हुए उन से अलग हो जा ।११।

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ۝١٢

और निअमत वाले (धनवान्) इन्कार करने वालों को और मुझ को अकेला छोड़ दे और तू उन्हें कुछ ढील[3] दे ।१२।

إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا ۝١٣

हमारे पास विभिन्न प्रकार की बेड़ियाँ और नरक है ।१३।

وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ۝١٤

और ऐसा भोजन भी है जो गले में फंसता है तथा पीड़ादायक अज़ाब भी है ।१४।

---

1. उपासना के कारण उस की आध्यात्मिकता कामिल हो जाती है और वह झूठ से रुक जाता है।

2. रात को उपासना करने की आज्ञा हम ने इसलिए दी है कि दिन में लोग भेंट करते रहते हैं और अपनी सांसारिक आवश्यकताएँ पेश करते रहते हैं अथवा धार्मिक प्रश्न पूछते रहते हैं ।

3. अतएव तू उन के शीघ्र सर्वनाश के लिए शाप न दे । मैं स्वयं ही उन्हें विनष्ट कर दूंगा ।

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ⑮

जिस दिन पृथ्वी एवं पर्वत काँपेंगे तथा पर्वत ऐसे टीलों की तरह हो जाएँगे जो अपने-आप फिसल जाते हैं (उस दिन वह अज़ाब आएगा)।१५।

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ⑯

हे लोगो ! हम ने तुम्हारी ओर एक ऐसा रसूल भेजा हैं जो तुम्हारा निरीक्षक है, ऐसा ही जैसा कि फ़िरऔन की ओर रसूल भेजा था।१६।

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ⑰

फिर फ़िरऔन ने उस रसूल की अवज्ञा की थी और हम ने उसे एक विपत्ति-जनक अज़ाब में ग्रसित कर लिया था।१७।

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ⑱

और बताओ तो ! यदि तुम ने उस दिन का इन्कार किया जो युवकों को बूढ़ा बना देता है तो तुम किस प्रकार अज़ाब से सुरक्षित रहोगे।१८।

السَّمَاءُ مُنفَطِرٌ بِهِ ۚ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ⑲

आकाश स्वयं ही उस अज़ाब से फट जाने वाला है। यह उस (अल्लाह) का बचन है जो पूरा हो कर रहेगा।१९।

إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ⑳ ع

यह क़ुर्आन एक उपदेश है। अतः जो चाहे अपने रब्ब की ओर जाने वाली राह पर चल पड़े।२०। (रुकू १/१३)

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن ثُلُثَيِ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَن لَّن تُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ

तेरा रब्ब जानता है कि तू रात के दो-तिहाई भाग से कुछ कम समय नमाज़ के लिए खड़ा रहता है तथा कभी-कभी आधे भाग के बरावर एवं कभी एक-तिहाई के बराबर और इसी तरह तेरे कुछ साथी भी तथा अल्लाह रात-दिन को घटाता-बढ़ाता रहता

فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ
سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ
فِى الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ
يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖؗ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَ
اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا
حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ
عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا
اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۰﴾

है। अल्लाह् जानता है कि तुम नमाज़ के समय का पूर्ण रूप से अनुमान नहीं लगा सकते। सो उस ने तुम पर दया की है; अत: चाहिए कि क़ुर्आन में से जितना हो सके तुम रात के समय पढ़ लिया करो। अल्लाह् जानता है कि तुम से कुछ रोगी भी होंगे तथा कुछ व्यापार के लिए यात्रा पर भी निकलेंगे और कुछ लोग अल्लाह् की राह में जिहाद करने के लिए निकलेंगे। अत: (हम बिना किसी प्रतिबन्ध के कहते हैं कि) क़ुर्आन में से जितना हो सके पढ़ लिया करो तथा नमाज़ें विधिवत् पूरी किया करो और ज़कात दिया करो और अल्लाह् को प्रसन्न करने के लिए अपने धन का एक उत्तम भाग काट कर अलग कर दिया करो तथा जो भलाई भी तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे तुम अल्लाह् के पास पा लोगे। वह उत्तम परिणाम निकालने वाला और बढ़-चढ़ कर प्रतिफल प्रदान करने वाला है और अल्लाह् से क्षमा माँगा करो। अल्लाह् वहुत क्षमा करने वाला और अनन्त दया करने वाला है।२१। (रुकू २/१४)

सूरः अल्-मुद्दस्सिर

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की सत्तावन आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ②

हे बरसाती कोट पहन कर खड़े होने वाले[1]!।२।

قُمْ فَاَنْذِرْ ③

खड़ा हो जा तथा दूर-दूर जा कर लोगों को सावधान कर।३।

وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ④

और अपने रब्ब की बड़ाई वर्णन कर।४।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ⑤

और अपने सम्पर्क में रहने वाले लोगों को पवित्र कर।५।

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ⑥

और शिर्क को मिटा दे।६।

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ⑦

और इस विचार से परोपकार न कर कि इस के बदले में तुझे अधिक मिलेगा।७।

---

1. मूल शब्द 'मुद्दस्सिर' का साधारण अर्थ कम्बल ओढ़ने वाला किया जाता है। इस अर्थ के अतिरिक्त इस शब्द के निम्नलिखिय अर्थ शब्द-कोष में लिखे हैं। (क) घोड़े के पास खड़ा होने वाला जो आदेश मिलते ही कूद कर घोड़े पर सवार हो जाए! (ख) वस्त्र पहन कर तय्यार हो जाने वाला, परन्तु 'दिसार' उस वस्त्र को कहते हैं जो कुर्ते आदि के ऊपर पहना जाए। (अक़्रब)

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝٨

और अपने रब्ब को प्रसन्न करने के लिए धैर्य धारण कर ।८।

فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ۝٩

और जब बिगुल बजाया जाएगा ।९।

فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ۝١٠

तो यह एक भयंकर दिन होगा ।१०।

عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ ۝١١

(वह दिन) इन्कार करने वालों के लिए कदापि आसान[1] नहीं होगा ।११।

ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ۝١٢

(हे रसूल !) मुझे तथा उस को जिसे मैं ने असहाय पैदा किया था, अकेला छोड़ दे ।१२।

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَّمْدُودًا ۝١٣

और मैं ने उस के लिए बहुत धन पैदा किया था ।१३।

وَبَنِينَ شُهُودًا ۝١٤

और ऐसी सन्तान भी जो हर समय उस के आगे-पीछे फिरती थी ।१४।

وَمَهَّدتُّ لَهُ تَمْهِيدًا ۝١٥

और मैं ने उस की उन्नति के लिए अनेक साधन जुटाए थे ।१५।

ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ۝١٦

फिर भी वह यह लालच करता है कि मैं इस से अधिक उसे प्रदान करूँ ।१६।

---

1. सेना को एकत्रित करने के लिए बिगुल बजाया जाता है । इस स्थान पर उपमा के रूप में बिगुल का वृत्तान्त है तथा बताया गया है कि एक दिन इन्कार करने वाले लोगों को एकत्रित करके हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के सामने पेश किया जाएगा और यद्यपि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम उन को क्षमा कर देंगे तथापि यह दिन इन्कार करने वाले लोगों के लिए अत्यन्त कठोर होगा, क्योंकि वे सारी आयु यह कहते रहे थे कि हम विजय प्राप्त करेंगे और वे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को एक अनुभव हीन बालक कहा करते थे, परन्तु जब इस अनुभव हीन बालक ने मक्का विजय कर लिया और इन्कार करने वाले लोग इस के सामने उपस्थित हुए एवं उस की ओर से क्षमा की सूचना सुनने के लिए विवश हुए, तो प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि उन के लिए वह समय कितना कठोर होगा ।

كَلَّاۗ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًاۗ

सुनो ! वह मेरी आयतों का शत्रु था ।१७।

سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًاۗ

अतः मैं भी उसे एक ऐसे अज़ाब में ग्रसित करूँगा जो हर समय बढ़ता चला जाएगा ।१८।

اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَۙ

उस ने (मेरी आयतों को सुना और उन पर) विचार किया तथा अनुमान लगाया ।१९।

فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَۙ

उस का सर्वनाश हो । उस ने कैसा अनुचित अनुमान लगाया ।२०।

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَۙ

हम फिर कहते हैं कि उस का सर्वनाश हो । उस ने कैसा अनुचित अनुमान लगाया ।२१।

ثُمَّ نَظَرَۙ

उस ने फिर विचार किया ।२२।

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَۙ

फिर उस ने त्योरी चढ़ाई तथा मुँह बना लिया ।२३।

ثُمَّ اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَۙ

फिर पीठ फेर ली तथा अभिमान से काम लिया ।२४।

فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُۙ

और कहा कि यह तो एक झूठ है जो पहले लोगों का अनुकरण है ।२५।

اِنْ هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِۗ

यह तो केवल मानवीय वाणी है ।२६।

سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ

हम उस (व्यक्ति) को नरक में डालेंगे ।२७।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُۗ

और तुझे क्या मालूम कि सक़र (अर्थात् नरक) क्या वस्तु है ।२८।

لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُۚ

वह नरक कुछ भी शेष नहीं रहने देता तथा अज़ाब पहुँचाने का कोई ढंग नहीं छोड़ता ।२९।

لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ

वह खाल को जला देता है।३०।

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ

उस पर उन्नीस दारोग़े नियुक्त हैं।३१।

وَمَا جَعَلْنَا أَصْحٰبَ النَّارِ إِلَّا مَلٰٓئِكَةً وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ أَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ

और हम ने नरक के दारोग़े केवल फ़रिश्तों[1] में से नियुक्त किए हैं और उन की गिनती केवल इन्कार करने वालों की परीक्षा के रूप में बताई है और इस का परिणाम यह निकलेगा कि किताब वालों को विश्वास हो जाएगा तथा मोमिनों के ईमान में वृद्धि होगी और न तो किताब वाले शंका करेंगे एवं न मोमिन ही। परिणाम यह होगा कि जिन के दिलों में रोग है वे तथा दूसरे इन्कार करने वाले लोग कहेंगे कि यह बात कहने से अल्लाह का क्या अभिप्राय है? अल्लाह ऐसे ही उस व्यक्ति को गुमराह ठहराता है जिस के सम्बन्ध में निश्चय कर लेता है तथा जिस के बारे में निश्चय कर लेता है उसे हिदायत दे देता है और तेरे रब्ब के सेना-दलों को सिवाय उस के कोई नहीं जानता तथा यह (क़ुर्आन) मानव-समाज के लिए केवल एक उपदेश है।३२। (रुकू १/१५)

كَلَّا وَالْقَمَرِ

सुनो! हम चन्द्रमा को गवाही के रूप में पेश करते हैं।३३।

وَالَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ

और अन्धकार को जब वह पीठ फेर लेता है।३४।

1. अभिप्राय यह है कि नरक में रखने का मूल कारण तो फ़रिश्ते ही होंगे, क्योंकि इतने लोगों को रोकने की शक्ति फ़रिश्तों में ही है। हाँ! कभी-कभी फ़रिश्तों से अपना सदृश्य बता कर मनुष्य भी उन का काम करने लग जाएँगे।

وَالصُّبْحِ إِذَآ أَسْفَرَ ﴿٣٥﴾

और प्रातः को जब वह उज्ज्वल हो जाता है ।३५।

إِنَّهَا لَإِحْدَى الْكُبَرِ ﴿٣٦﴾

कि यह (घड़ी जिस का वृत्तान्त हुआ है) बड़ी-बड़ी चीज़ों में से एक है ।३६।

نَذِيرًا لِّلْبَشَرِ ﴿٣٧﴾

मनुष्य को डराने वाली है ।३७।

لِمَن شَآءَ مِنكُمْ أَن يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ﴿٣٨﴾

उस मनुष्य को जो चाहता है कि कोई ऐसी नेकी करे जो आख़िरत में उस के काम आए अथवा किसी बुराई से पीछे हट जाए जिस की उसे लत पड़ चुकी है ।३८।

كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ﴿٣٩﴾

हर-एक जान ने जो कुछ किया है वह उस के बदले में रेहन (अर्थात् बन्धक) है ।३९।

إِلَّآ أَصْحَٰبَ الْيَمِينِ ﴿٤٠﴾

सिवाय दाहिनी ओर वाले लोगों के ।४०।

فِى جَنَّٰتٍ يَتَسَآءَلُونَ ﴿٤١﴾

कि वे स्वर्गों में होंगे ।४१।

عَنِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٢﴾

और अपराधियों से प्रश्न करेंगे ।४२।

مَا سَلَكَكُمْ فِى سَقَرَ ﴿٤٣﴾

कि तुम्हें कौन सी वस्तु नरक की ओर ले गई है ? ।४३।

قَالُوا۟ لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ﴿٤٤﴾

वे उत्तर देंगे कि हम नमाज़ें नहीं पढ़ा करते थे ।४४।

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ ﴿٤٥﴾

और हम असहाय व्यक्तियों को भोजन नहीं कराया करते थे ।४५।

وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَآئِضِينَ ﴿٤٦﴾

और व्यर्थ बातें करने वालों के साथ मिल कर व्यर्थ बातें किया करते थे ।४६।

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٤٧﴾

और हम प्रतिफल मिलने के दिन के इन्कारी थे ।४७।

حَتّٰۤى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ؕ (۴۸)

यहाँ तक कि हमें मौत आ गई ।४८।

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ؕ (۴۹)

अत: ऐसे लोगों को सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश कोई लाभ नहीं देगी ।४९।

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۙ (۵۰)

इन लोगों को क्या हो गया है कि उपदेश से इस तरह मुँह मोड़ते हैं कि ।५०।

كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۙ (۵۱)

मानो वे बिदके हुए गदहे हैं ।५१।

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ؕ (۵۲)

जो शेर को देख कर भागे हैं ।५२।

بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۙ (۵۳)

वास्तविकता यह है कि उन में से प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि उस के हाथ में खुली हुई किताब दी जाए ।५३।

كَلَّا ؕ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ؕ (۵۴)

यह आशा पूरी होने वाली नहीं, अपितु वास्तविकता बात यह है कि वे क़ियामत से नहीं डरते ।५४।

كَلَّاۤ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ۚ (۵۵)

सुनो ! यह वाणी एक आदेश है ।५५।

فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ؕ (۵۶)

अत: जो चाहे वह इस से शिक्षा प्राप्त करे ।५६।

وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۠ (۵۷) ع

और इन्कार करने वाले लोग अल्लाह के इरादे के बिना कदापि उपदेश प्राप्त नहीं कर सकेंगे (और यह कोई असम्भव बात नहीं, क्योंकि) वह (अल्लाह) संयम भी प्रदान करने वाला है तथा क्षमा भी ।५७। (रुकू २/१६)

सूरः अल्-क़ियामत

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की इक्तालीस आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूं) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ②

मैं क़ियामत के दिन की क़सम खाता हूँ (अर्थात् उसे गवाही के रूप में पेश करता हूँ)।२।

وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ③

और मैं लानत-मलामत करने वाली जान को भी गवाही के रूप में पेश करता हूँ।३।

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ④

क्या मनुष्य यह विचार करता है कि हम उस की हड्डियाँ इकट्ठी नहीं करेंगे ?।४।

بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ⑤

नहीं, नहीं ! हम तो इस पर सामर्थ्य रखते हैं कि उस के जोड़-जोड़ को फिर से बना दें।५।

بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ⑥

वास्तविकता यह है कि मनुष्य चाहता है कि वह भविष्य में भी दूषित और बुरे कामों में विचरता रहे।६।

يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ⑦

वह पूछता रहता है कि क़ियामत का दिन कब होगा ?।७।

فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ﴿٨﴾

सो जब आँखें पथरा जाएँगी ।८।

وَخَسَفَ الْقَمَرُ ﴿٩﴾

और चाँद को ग्रहण लग जाएगा ।९।

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ﴿١٠﴾

और सूर्य एवं चन्द्रमा को (ग्रहण[1] लगने की अवस्था में) एकत्रित कर दिया जाएगा ।१०।

يَقُولُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ﴿١١﴾

उस समय मनुष्य कहेगा कि अब मैं भाग कर कहाँ जा सकता हूँ ।११।

كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿١٢﴾

सुनो ! आज अज़ाब से बचने के लिए कोई स्थान नहीं ।१२।

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ﴿١٣﴾

किन्तु उस दिन तेरे रब्ब के पास ही ठिकाना होगा ।१३।

يُنَبَّأُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ﴿١٤﴾

उस दिन मनुष्य को उन कामों से सूचित किया जाएगा जो उसे नहीं करने चाहिए थे, परन्तु उस ने कर लिए और उन कामों से भी जो उसे करने चाहिए थे, किन्तु उस ने नहीं किए ।१४।

بَلِ الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ﴿١٥﴾

वास्तविकता यह है कि मनुष्य अपने-आप को ख़ूब अच्छी तरह देख रहा है (और जानता है कि वह कितने पानी में है) ।१५।

وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ ﴿١٦﴾

चाहे वह ज़बान से कितनी ही सफ़ाई पेश करे ।१६।

لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ﴿١٧﴾

हे नबी ! तू अपनी ज़बान को न हिला[2] कि यह क़ुर्आन शीघ्र ही उतारा जाए ।१७।

---

1. यह कलियुग में प्रकट होने वाली एक महत्त्वपूर्ण भविष्यवाणी की ओर संकेत है कि रमज़ान के महीने में सूर्य और चन्द्रमा को ग्रहण लगेगा ।

2. अभिप्राय यह है कि क़ुर्आन के शीघ्र उतरने के लिए प्रार्थना न कर, क्योंकि यह अल्लाह का एक अटल नियम है और यह असम्भव है कि समय आ जाए और अल्लाह उसे न उतारे ।

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ﴿١٨﴾

इस का एकत्रित करना भी हमारे ज़िम्मा है तथा संसार को सुनाना भी (हमारे ज़िम्मा है) ।१८।

فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ﴿١٩﴾

अतः जब हम इसे पढ़ लिया करें तो हमारे पढ़ने के बाद तू भी पढ़ लिया कर ।१९।

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ﴿٢٠﴾

और यह भी हमारे ज़िम्मा है कि हम इसे तेरी ज़बान से लोगों को खोल कर सुना दें ।२०।

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ﴿٢١﴾

सुनो ! तुम शीघ्र प्राप्त होने वाली निअमत को पसन्द करते हो ।२१।

وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ﴿٢٢﴾

और बाद में आने वाली निअमत की ओर ध्यान नहीं देते ।२२।

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ ﴿٢٣﴾

उस दिन कुछ लोग प्रसन्न चित्त होंगे ।२३।

إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٤﴾

अपने रब्ब की ओर ध्यान लगाए बैठे होंगे ।२४।

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ﴿٢٥﴾

और कुछ लोग उस दिन मुंह बनाए बैठे होंगे ।२५।

تَظُنُّ أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٦﴾

क्योंकि वे विचार करेंगे कि उन से कमर तोड़ देने वाला व्यवहार किया जाएगा ।२६।

كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٧﴾

सुनो ! जब जान कंठ तक पहुँच जाएगी ।२७।

وَقِيلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿٢٨﴾

और कहा जाएगा कि आज कोई ऐसा व्यक्ति है जो झाड़-फूंक से उसे अच्छा कर दे ? ।२८।

وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٩﴾

और प्रत्येक विश्वास कर ले कि अब विदा की घड़ी आ गई है ।२९।

وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٣٠﴾

और मौत की घड़ी आ जाए ।३०।

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ۝٣٠

उस दिन तेरे रब्ब की ओर ही जाना है ।३१। (रुकू १/१७)

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ ۝٣١

सो क्या हुआ कि ऐसे व्यक्ति ने न तो दान दिया तथा न नमाज़ ही पढ़ी ।३२।

وَلَٰكِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝٣٢

बल्कि (सच्चाई को) झुठलाता रहा और (उस से) पीठ फेर ली ।३३।

ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّىٰ ۝٣٣

(और फिर लज्जित होने की अपेक्षा) अपने घर की ओर अभिमान से अकड़ता हुआ चला गया ।३४।

أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ۝٣٤

(हे मनुष्य !) तेरा सत्यानाश हो ! ।३५।

ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ۝٣٥

हम फिर कहते हैं कि तेरा सत्यानाश हो ।३६।

أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَن يُتْرَكَ سُدًى ۝٣٦

क्या मनुष्य यह समझता है कि उसे बे-लगाम छोड़ दिया जाएगा ? ।३७।

أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّن مَّنِيٍّ يُمْنَىٰ ۝٣٧

क्या वह किसी समय एक बिन्दु मात्र (वीर्य) नहीं था जो अपने उचित स्थान में डाला गया ? ।३८।

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ۝٣٨

फिर वह चिपटने वाला एक लोथड़ा बन गया। फिर उस (अल्लाह) ने उसे एक और रूप में ढाला और अन्ततः उसे परिपूर्ण बना दिया ।३९।

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۝٣٩

और उसे जोड़ा-जोड़ा कर के बनाया अर्थात् नर-मादा के रूप में ।४०।

أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ۝٤٠

क्या यह (अल्लाह) इस बात की शक्ति नहीं रखता कि मुर्दों को फिर जीवित कर दे ।४१। (रुकू २/१८)
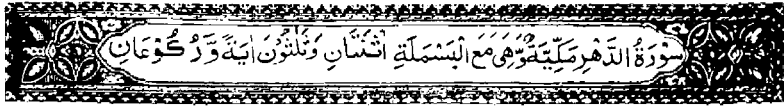
सूरः अल्-दहर

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की बत्तीस आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ②

क्या मनुष्य पर वह घड़ी नहीं आई जब कि वह कुछ भी न था और उस के कामों को याद नहीं करता था।२।

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ③

हम ने मानव की उत्पत्ति एक ऐसे वीर्य्य से की है जिस से विभिन्न शक्तियाँ मिली हुई थीं ताकि हम उस की परीक्षा करें। फिर हम ने उस को बहुत सुनने वाला (और) देखने वाला बना दिया।३।

اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ④

हम ने उसे उस की परिस्थिति के अनुसार मार्ग दिखाया। अब चाहे तो वह कृतज्ञता प्रकट करे चाहे कृतघ्नता।४।

اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۟ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ⑤

हम ने इन्कार करने वाले लोगों के लिए ज़न्जीरें, तौक़ तथा नरक तय्यार कर रखे हैं।५।

اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ⑥

अल्लाह के नेक बन्दे ऐसे प्याले पिएँगे जिन में कपूर का गुण समोया गया होगा।६।

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝٦

यह (कपूर[1]) एक स्रोत होगा जिस में से अल्लाह के भक्त पिएँगे। वे प्रयत्न[2] कर के उस स्रोत को धरती फाड़ कर निकालते हैं।७।

يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝٨

वे अपनी मनौतियाँ पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिस दिन की बुराई सारे संसार में फैली हुई होगी।८।

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۝٩

और उस (अल्लाह) के प्रेम के कारण निर्धन, अनाथ तथा बन्दी लोगों को भोजन कराते हैं।९।

اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝١٠

और कहते जाते हैं कि हे लोगो! हम तुम्हें केवल अल्लाह की प्रसन्नता पाने के लिए भोजन कराते हैं। हम तुम से न तो किसी प्रतिफल की माँग करते हैं और न तुम्हारा धन्यवाद चाहते हैं।१०।

اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ۝١١

और हम अपने रब्ब से उस दिन का भय रखते हैं, जब लोगों का डर के मारे मुँह बिगड़ा हुआ होगा तथा भौवें चढ़ी हुई होंगी।११।

فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ۝١٢

सो अल्लाह उन्हें उस दिन की हानि से बचाएगा और उन्हें प्रफुल्लता एवं प्रसन्नता प्रदान करेगा।१२।

وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۝١٣

और उन लोगों को नेकियों पर क़ायम रहने के कारण (रहने के लिए) बाग़ और (पहनने के लिए) रेशम प्रदान करेगा।१३।

1. वह स्रोत जिस में कपूर का गुण होगा उस का नाम भी कपूर होगा अर्थात् वह बुरी भावनाओं को शीतल कर देगा।

2. वह स्रोत उन के कर्मों के कारण फाड़ा जाएगा।

مُتَّكِـِٔيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ﴿۱۳﴾

वे उस बाग़ में सिंहासनों पर टेक लगाए बैठे होंगे। वे न तो उस बाग़ में भयानक गर्मी देखेंगे तथा न भयंकर सर्दी ही।१४।

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ﴿۱۴﴾

और उस बाग़ की छाया उन पर झुकी हुई होगी एवं उस के फल उन के निकट कर दिए जाएँगे।१५।

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ﴿۱۵﴾

और चाँदी के बर्तन एवं लोटे तथा ऐसी सुराहियाँ (ले कर) जो शीशे की होंगी बार-बार उन के पास आएँगे।१६।

قَوَارِيْرَا۟ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ﴿۱۶﴾

यह साधारण दृष्टि में शीशे[1] के दिखाई देने वाले बर्तन वास्तव में चाँदी के होंगे, जिन को अल्लाह के फ़रिश्ते अपनी कला-कौशल से बनाएँगे, यहाँ तक कि वे शीशे की भाँति चमकने लग जाएँगे।१७।

وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ﴿۱۷﴾

और मोमिनों को उन स्वर्गों में ऐसे गिलासों से पानी पिलाया जाएगा जिन में सोंठ की मिलावट होगी।१८।

عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ﴿۱۸﴾

उस स्वर्ग में एक स्रोत सल्सबील[2] नामक भी होगा (जिस में से मोमिन पीएँगे)।१९।

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ﴿۱۹﴾

और उन के पास सदैव सेवा करने वाले नवयुवक बार-बार उपस्थित होते रहेंगे। जब तू उन सेवकों को देखेगा तो उन के सम्बन्ध में समझेगा कि वे बिखरे हुए मोती हैं।२०।

---

1. वे बर्तन शीशे के नहीं होंगे अपितु वे बहुत कोमल होंगे और शीशे की भाँति स्वच्छ होंगे, जिन में मुंह दिखाई देता होगा।

2. यह एक उपमा है।

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ﴿٢٠﴾

और जब तू उन को देखेगा तो तुझे एक बड़ी निअमत और एक बड़ी बादशाहत दिखाई देगी।२१।

عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُندُسٍ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ وَحُلُّوا أَسَاوِرَ مِن فِضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ﴿٢١﴾

उन (स्वर्ग-वासियों) के ऊपर बारीक हरे रेशम के वस्त्र होंगे और मोटे रेशम के भी तथा उन्हें चाँदी के कँगन पहनाए जाएँगे एवं उन का रब्ब उन्हें पवित्र करने वाली शराब (अर्थात् पीने वाली चीज़) पिलाएगा।२२।

إِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُم مَّشْكُورًا ﴿٢٢﴾ ع

(और कहा जाएगा कि हे स्वर्ग वासियो !) यह प्रतिफल तुम्हारे लिए निश्चित है और तुम्हारे प्रयत्नों को आदर की दृष्टि से देखा गया है।२३। (रुकू १/१९)

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنزِيلًا ﴿٢٣﴾

हम ने तुझ पर क़ुर्आन थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है।२४।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا أَوْ كَفُورًا ﴿٢٤﴾

अत: अपने रब्ब के आदेश पर क़ायम रह तथा लोगों में से पापी और कृतघ्न व्यक्ति की आज्ञा का पालन न कर।२५।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٢٥﴾

और अपने रब्ब को साँझ-सवेरे याद किया कर।२६।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ﴿٢٦﴾

और रात के समय भी उस के सामने सजद: किया कर तथा रात को देर तक उस की स्तुति किया कर।२७।

إِنَّ هٰؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ﴿٢٧﴾

ये लोग सांसारिक पुरस्कार की अभिलाषा करते हैं तथा अपने पीछे एक भयंकर दिन को छोड़ जाते हैं।२८।

نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾

हम ने ही उन को पैदा किया है तथा उन के जोड़ सुदृढ़ बनाए हैं और हम जब भी चाहेंगे तो उन जैसी दूसरी मख़्लूक़ पैदा करके उन के स्थान पर खड़ी कर देंगे ।२९।

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾

यह एक उपदेश है । अतः जो चाहे वह अपने रब्ब की ओर पहुंचाने वाला मार्ग अपना ले ।३०।

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾

और तुम अल्लाह के इरादे के बिना ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि अल्लाह बहुत ज्ञान वाला एवं तत्त्वदर्शी[1] है ।३१।

يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾

वह जिसे चाहता है उसे अपनी दया में प्रविष्ट कर लेता है और अत्याचारियों के लिए तो उस ने अज़ाब निश्चित कर ही रखा है ।३२। (रुकू २/२०)

1. यह सम्भव नहीं कि उस का ज्ञान किसी व्यक्ति को सच्ची राह पाने के योग्य ठहराए, परन्तु फिर भी वह उसे गुमराही में भटकने दे ।
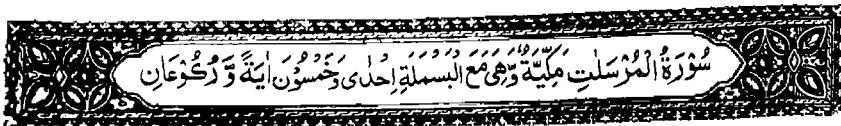
सूर: अल्-मुर्सलात

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की इकावन आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ②

मैं गवाही के रूप में उन सत्ताओं[1] को पेश करता हूँ जो पहले धीरे-धीरे चलाई जाती हैं।२।

فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ③

फिर वे तीव्र[2]-गति से चलने लग जाती हैं।३।

وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ④

और मैं संसार में फैला[3] देने वाली सत्ताओं को भी गवाही के रूप में पेश करता हूँ।४।

فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ⑤

और सच तथा झूठ[4] में विभेद कर देने वाली सत्ताओं को।५।

---

1. इस आयत में उन घोड़ों को अथवा उन सहाबा को जो धोड़ों पर सवार होते थे गवाही के रूप में पेश किया है कि अल्लाह् उन को सदाचार के प्रचार के लिए धीरे-धीरे संसार में फैलाएगा, क्योंकि मूल शब्द 'मुर्सलात' का यही अर्थ है।

2. अर्थात् पहले सहाबा धीरे-धीरे संसार में फैलेंगे, किन्तु फिर शक्तिशाली होते चले जाएँगे तथा उन की उन्नति तीव्र-गति से होती चली जाएगी।

3. इस आयत में भी सहाबा का वर्णन है कि वे अन्तत: इस्लाम धर्म को संसार में फैला देंगे।

4. इस आयत में भी सहाबा का वर्णन किया गया है कि वे अन्तत: सच और झूठ में खुला-खुला अन्तर कर के दिखला देंगे।

فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۙ﴿۵﴾

और ईशवाणी सुनाने वाली सत्ताओं को ।६।

عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۙ﴿۶﴾

इस उद्देश्य से भी कि लोगों पर प्रमाण सिद्ध हो जाए तथा इस उद्देश्य से भी कि लोगों को सावधान कर दिया जाए ।७।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ؕ﴿۷﴾

तुम को जिस बात का बचन दिया जाता है वह पूरी हो कर रहेगी ।८।

فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۙ﴿۸﴾

और जब नक्षत्र[1] मंद पड़ जाएँगे ।९।

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۙ﴿۹﴾

और आकाश में छेद[2] हो जाएँगे ।१०।

وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۙ﴿۱۰﴾

और जब पर्वत[3] उड़ाए जाएँगे ।११।

وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ؕ﴿۱۱﴾

और जब समस्त रसूल[4] अपने निश्चित समय पर लाए जाएँगे ।१२।

لِاَیِّ یَوْمٍ اُجِّلَتْ ؕ﴿۱۲﴾

(और लोगों से कहा जाएगा कि) यह बात किस दिन के लिए नियुक्त की गई थी ? ।१३।

لِیَوْمِ الْفَصْلِ ۚ﴿۱۳﴾

(एक) निर्णय करने वाले दिन के लिए ।१४।

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا یَوْمُ الْفَصْلِ ؕ﴿۱۴﴾

और तुझे क्या मालूम कि निर्णय करने वाला दिन क्या है ? ।१५।

---

1. अर्थात् पण्डित तथा ज्ञानी लोग विगड़ जाएंगे ।

2. अर्थात् फिर से ईशवाणी का उतरना प्रारम्भ हो जाएगा ।

3. विश्व के राजे-महाराजे विनष्ट कर दिए जाएंगे ।

4. एक ऐसे सुधारक का प्रादुर्भाव होगा जिसे समस्त नबियों के नाम से मनोनीत किया जाएगा अर्थात् उस के विषय में हज़रत मूसा, ईसा, कृष्ण, रामचन्द्र तथा बुद्ध आदि सब की भविष्यवाणियां होंगी । इसी प्रकार ईश-भक्तों की भी भविष्यवाणियां होंगी जैसे हज़रत इमाम अहमद सरहिन्द शरीफ़ वाले और निअमतुल्लाह वली आदि ।

وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ⑲

निस्सदेह उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश होगा।१६।

اَلَمۡ نُهۡلِكِ الۡاَوَّلِيۡنَ ⑯

क्या हम ने पहली जातियों का विनाश नहीं किया ?।१७।

ثُمَّ نُتۡبِعُهُمُ الۡاٰخِرِيۡنَ ⑱

फिर हम क्या उन के पश्चात् आने वाली जातियों को उन के पद-चिन्हों[1] पर नहीं चलाएँगे।१८।

كَذٰلِكَ نَفۡعَلُ بِالۡمُجۡرِمِيۡنَ ⑲

हम अपराधियों के साथ ऐसा ही व्यवहार किया करते हैं[2]।१९।

وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ⑳

निस्सन्देह उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश होगा।२०।

اَلَمۡ نَخۡلُقۡكُّمۡ مِّنۡ مَّآءٍ مَّهِيۡنٍ ۙ㉑

और हम उन्हें कहेंगे कि क्या हम ने तुम्हें एक तुच्छ पानी (अर्थात् वीर्य्य) से पैदा नहीं किया ?।२१।

فَجَعَلۡنٰهُ فِيۡ قَرَارٍ مَّكِيۡنٍ ۙ㉒

और फिर उसे एक ऐसे स्थान (गर्भाशय) में रख दिया जो वास्तविक रूप में उसे सुरक्षित रखने के योग्य था।२२।

اِلٰى قَدَرٍ مَّعۡلُوۡمٍ ۙ㉓

और जितना समय उस वीर्य्य का गर्भाशय में रखना उचित था हम ने उतना समय उसे गर्भाशय में रखा।२३।

---

1. उन का भी सर्वनाश किया जाएगा तथा उन से अनोखा व्यवहार नहीं होगा।

2. इतिहास बताता है कि अपराधियों से ऐसा ही व्यवहार होता चला आया है। अत: कोई कारण नहीं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के समय के अपराधियों के साथ पहले जैसा व्यवहार न हो।

فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ۝٢٣
और हम ने एक अनुमान निश्चित[1] किया और हम क्या ही अच्छा अनुमान लगाने वाले हैं।२४।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٢٤
उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश होगा।२५।

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ۝٢٥
क्या हम ने धरती को समेटने वाली नहीं बनाया[2] ?।२६।

اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ۝٢٦
जीवित तथा निर्जीव दोनों को समेटने वाली।२७।

وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ۝٢٧
और हम ने उस से सुदृढ़ ऊँचे-ऊँचे पर्वत बनाए जिन के फलस्वरूप तुम्हें मीठा[3] पानी पिलाया है।२८।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٢٨
उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश होगा।२९।

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝٢٩
(हम उन से कहेंगे कि) जिस वस्तु को तुम झुठलाते थे उसी की ओर जाओ।३०।

---

1. इस से यह तात्पर्य है कि प्रत्येक बच्चे के लिए कोई अलग नियम नहीं होता अपितु हम ने इस के लिए प्राकृतिक रूप में एक अनुमान निश्चित कर दिया है और जब से संसार की सृष्टि हुई है उस अनुमान के अनुसार काम होता चला आ रहा है अर्थात् विभिन्न प्रकार के प्राणी पूर्ण उत्पत्ति के लिए विभिन्न अवधियों तक अपनी-अपनी माताओं के गर्भों में रहते हैं।

2. जीवित प्राणी धरती के ऊपर बसते हैं तथा मृतक उस में गाड़ दिए जाते हैं अथवा उन की भस्म उस की नदियों में प्रवाहित कर दी जाती हैं।

3. हम ने संसार में आध्यात्मिक तथा सांसारिक विभूतियों का प्रादुर्भाव किया तथा सांसारिक एवं आध्यात्मिक पानी जो अत्यन्त मधुर होता है उन आध्यात्मिक विभूतियों तथा सामाजिक नेताओं के द्वारा लोगों को ईशवाणी सुना-सुना कर उन की आध्यात्मिक प्यास बुझाती हैं तथा सांसारिक लोग नहरों और ट्यूबवैल द्वारा उन तक मीठा पानी पहुँचाते हैं।

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِىْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾

अर्थात् उस छाया की ओर जिस के तीन पहलू[1] हैं ।३१।

لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِىْ مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾

न तो वह छाया देता है तथा न गर्मी से सुरक्षित रखता है ।३२।

اِنَّهَا تَرْمِىْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾

बल्कि वह इतनी ऊँची लपटें मारता है जो दुर्ग के समान होती हैं ।३३।

كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾

इतनी ऊँची कि मानों वह बड़े-बड़े जहाजों के बाँधने वाले पीले रंग के रस्से प्रतीत होते हैं ।३४।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٤﴾

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश होगा ।३५।

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

यह ऐसा दिन होगा (कि उस दिन अपराधी लोग अपनी इच्छा से) बोल नहीं सकेंगे ।३६।

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿٣٦﴾

और उन्हें (अल्लाह की ओर से भी बोलने की) आज्ञा नहीं दी जाएगी कि वे कोई बहाना कर सकें[2] ।३७।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٧﴾

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश होगा ।३८।

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾

यह निर्णय का दिन होगा जिस में हम तुम्हें भी तथा पहली जातियों को भी इकट्ठा कर देंगे ।३९।

---

1. अन्तिम युग में इस्लाम धर्म को न मानने वालों का शरणागार ऐसा होगा जो वास्तव में शरणागार न कहला सकेगा बल्कि वह कष्ट भोगने का साधन होगा ।

2. अर्थात् उस दिन स्वयं उन के विरुद्ध गवाही दे रहे होंगे और किसी दूसरी गवाही की आवश्यकता नहीं होगी ।

فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ۝٣٩

अतः यदि तुम्हारे पास कोई उपाय है तो उस उपाय को मेरे विरुद्ध बरता ।४०।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝٤٠

निस्सन्देह उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश होगा ।४१। (रुकू १/२१)

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَٰلٍ وَّعُيُونٍ ۝٤١

निस्सन्देह उस दिन संयमी लोग छाया और नहरों वाले स्थानों में होंगे ।४२।

وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۝٤٢

और अपने रुचिकर फलों में घिरे हुए होंगे (जो उन्हें उन की अभिलाषा के अनुसार मिलेंगे) ।४३।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝٤٣

और उन से कहा जाएगा कि मनोहर फल खाओ तथा शुद्ध पानी पियो। यह तुम्हारे कर्मों का बदला होगा ।४४।

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝٤٤

हम परोपकार करने वालों को इसी तरह बदला दिया करते हैं ।४५।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝٤٥

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश होगा ।४६।

كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُّجْرِمُونَ ۝٤٦

हम उन से कहते हैं कि खाओ-पियो और इस संसार का थोड़ा सा लाभ उठा लो, तुम अपराधी हो ।४७।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝٤٧

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश होगा ।४८।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ۝٤٨

उन लोगों का जिन्हें जब कभी कहा जाता है कि एकेश्वरवाद पर क़ायम हो जाओ तो वे एकेश्वरवाद पर क़ायम नहीं होते बल्कि शिर्क (अर्थात् अनेकेश्वरवाद) को अपनाते हैं ।४९।

وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ۝٥٠

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश होगा।५०।

فَبِاَيِّ حَدِيۡثٍ بَعۡدَهٗ يُؤۡمِنُوۡنَ ۝٥١

अत: वे बताएँ तो सही कि इस क़ुर्आन के बाद वे किस किताब पर ईमान लाएँगे।५१। (रुकू २/२२)
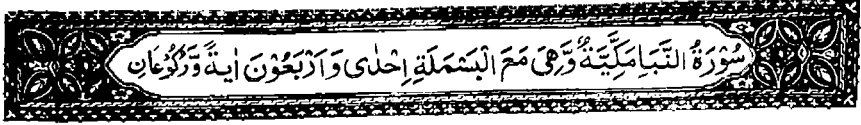
सूर: अल् - नबा

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की इकतालीस आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ②

ये लोग किस चीज के बारे में एक-दूसरे से (आश्चर्य से) पूछ रहे हैं ?।२।

عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ③

क्या उस (फ़ैसला कर देने वाले दिन से सम्बन्ध रखने वाले) महत्वपूर्ण समाचार के बारे में ?।३।

الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ④

जिस के बारे में ये लोग (क़ुर्आन की बताई हुई हक़ीक़त से) मतभेद रखते हैं।४।

كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ⑤

ख़ूब अच्छी तरह याद रखें कि वास्तविकता उन के आस्थाओं के ख़िलाफ़ है और एक दिन वे इसे जान लेंगे।५।

ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ⑥

हम फिर कहते हैं कि बात उन के आस्थाओं के ख़िलाफ़ है और ये लोग उस भविष्यवाणी को अवश्य जान लेंगे जो इस सूर: में वर्णित है।६।

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهٰدًا ۝	(वे सोचें तो सही कि) क्या हम ने ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया ? ।७।
وَّالْجِبَالَ أَوْتَادًا ۝	और पर्वतों को खूटों के रूप में नहीं गाड़ा ? ।८।
وَّخَلَقْنٰكُمْ أَزْوَاجًا ۝	और (यह भी याद रखो कि) हम ने तुम सब को जोड़ा-जोड़ा बनाया है ।९।
وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝	और हम ने तुम्हारी निद्रा को विश्राम का साधन बनाया है ।१०।
وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۝	और हम ने रात को पर्दा के रूप में बनाया है ।११।
وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۝	और हम ने दिन को जीवन प्रकट करने का साधन बनाया है ।१२।
وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۝	और हम ने तुम्हारे ऊपर सात ऊँचे और सुदृढ़ आकाश बनाए हैं ।१३।
وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۝	और हम ने एक प्रकाशमान सूर्य भी बनाया है ।१४।
وَّأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ۝	और हम ने घने बादलों से बहुत मात्रा में बहने वाला पानी भी उतारा है ।१५।
لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ۝	ताकि हम उस के द्वारा अनाज और वनस्पतियाँ निकालें ।१६।
وَّجَنّٰتٍ أَلْفَافًا ۝	और घने बाग़ उगाएँ ।१७।
إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ۝	निस्सन्देह यह फ़ैसले का दिन एक नियत समय पर आने वाला है ।१८।

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَأْتُوْنَ أَفْوَاجًا ۝١٩

जिस दिन कि बिगुल बजाया जाएगा फिर तुम गिरोह के गिरोह हमारे सामने आओगे ।१९।

وَفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ۝٢٠

और आसमान खोल दिया जाएगा, यहाँ तक कि वह द्वार[1] ही द्वार हो जाएगा ।२०।

وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۝٢١

और पर्वत[2] (अपने स्थान से) चलाए जाएँगे यहाँ तक कि वे मृग[3] तृष्णा (के समान) हो जाएँगे ।२१।

إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝٢٢

निश्चय ही नरक इन लोगों की घात में (लगी हुई) है ।२२।

لِّلطَّاغِيْنَ مَاٰبًا ۝٢٣

वह उद्दण्डियों के लिए ठहरने का स्थान है ।२३।

لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ أَحْقَابًا ۝٢٤

वे उस में वर्षों तक रहते चले जाएँगे ।२४।

---

1. अर्थात् आसमान से इतने निशान ज़ाहिर होंगे मानो आसमान में द्वार बन गए हैं । मोमिन के लिए बहुत निअमत और दयालुता उतरेगी तथा इन्कार करने वालों के लिए अज़ाब ज़ाहिर होगा ।

2. पर्वत से अभिप्राय पहाड़, राजा और विद्वान लोग हैं । आयत का भाव यह है कि :

(क) पर्वतों को डाईनामेट से उड़ा कर सड़कें, सुरंगें, छोटे मार्ग और मैदान बना दिए जाएँगे ।

(ख) धर्म के विरुद्ध खड़े होने वाले पर्वतों के समान शासक और उन का अनुशासन नष्ट कर दिया जाएगा ।

3. मूल शब्द सराब का अर्थ है मृगतृष्णा अर्थात् रेत का वह मैदान जिस पर सूरज की किरणों के पड़ने पर पानी का धोखा होता है । भाव यह है कि अन्तिम युग में लोग राजाओं के नाम सुनेंगे, परन्तु जब निकट हो कर देखेंगे तो मृगतृष्णा के समान दीख पड़ेंगे क्योंकि पूर्ण रूप से यह व्यक्त हो जाएगा कि शासन जनता का है और राजा केवल नाम मात्र के हैं । यदि इस आयत को धार्मिक व्यवस्था-सम्बन्धी समझा जाए तो इस का यह अर्थ होगा कि अल्लाह आध्यात्मिक ज्ञानियों और पण्डितों को पर्वत बनाएगा, परन्तु जब कभी साधारण जनता धर्म के विकास के लिए कोशिश करेगी तो धर्मध्वजी और नाम-मात्र के विद्वान उन के मार्ग में रोड़े अटकाएँगे, परन्तु अल्लाह ऐसे धर्मध्वजी विद्वानों की योजनाओं को असफल बना देगा ।

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ﴿٢٥﴾	(वहाँ उन लोगों की हालत यह होगी कि) वे न तो वहाँ किसी प्रकार की ठंढक (का अनुभव करेंगे) तथा न कोई पीने की चीज़ पाएँगे (जो उन की प्यास बुझा सके) ।२५।
إِلَّا حَمِيمًا وَّغَسَّاقًا ﴿٢٦﴾	हाँ ! परन्तु अल्लाह उन्हें खौलता हुआ तथा (असहनीय) ठंढा पानी देगा ।२६।
جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿٢٧﴾	(इस तरह उन्हें उन के कर्मों के) अनुसार प्रतिफल[1] (दिया जाएगा) ।२७।
إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ﴿٢٨﴾	निस्सन्देह वे अपने दिलों में किसी प्रकार का हिसाब लिए जाने के बारे में डर नहीं रखते थे ।२८।
وَّكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٩﴾	और हमारे निशानों को सख़्ती से झुठलाते थे ।२९।
وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ﴿٣٠﴾	और हम ने तो हर-एक चीज़ को अच्छी तरह गिन रखा है ।३०।
فَذُوقُوا فَلَن نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ﴿٣١﴾ ع	अतः अपने-अपने कर्मों के अनुकूल अज़ाब चखो और हम तुम्हें अज़ाब पर अज़ाब देते चले जाएँगे ।३१। (रुकू १/१)
إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ﴿٣٢﴾	निस्सन्देह संयमियों के लिए सफलता (निश्चित) है ।३२।
حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ﴿٣٣﴾	(अर्थात्) बाग़ और अंगूर ।३३।

1. धर्म की बातों पर चलने में वे ठंढक अर्थात् सुस्ती दिखाते थे इस कारण उन्हें असहनीय ठंढा पानी दिया जाएगा, किन्तु धर्म के विरुद्ध काम करने में गर्मी अर्थात् तेज़ी दिखाते थे इसलिए उन्हें खौलता हुआ पानी दिया जाएगा ।

وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ۝

और समान आयु वाली नवयुवतियाँ ।३४।

وَّكَاْسًا دِهَاقًا ۝

और भरे हुए प्याले ।३५।

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ۝

न तो वे उन (स्वर्गों) में व्यर्थ बातें सुनेंगे और न ही उन की बातों को कभी कोई झुठलाएगा ।३६।

جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ۝

उन्हें तेरे रब्ब की ओर से ऐसा बदला दिया जाएगा जो उन की हालत के अनुकूल पुरस्कार होगा ।३७।

رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ۝

(तेरे उस रब्ब की ओर से जो) आसमानों और ज़मीन तथा इन दोनों के बीच जो कुछ है उन सब का रब्ब है और अनन्त कृपा करने वाला है। वे उस के सामने (बिना आज्ञा के) बात करने का साहस नहीं रखेंगे ।३८।

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ۝

(यह उस दिन होगा) जिस दिन कामिल रूह और फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध खड़े होंगे और वह बात न कर सकेंगे सिवाय उस के जिसे रहमान (ख़ुदा) ने आज्ञा दी होगी और (ऐसा व्यक्ति समय के अनुकूल तथा) ठीक-ठीक बात कहेगा ।३९।

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ۝

यह दिन आ कर रहने वाला है। अतः तुम में से जो (व्यक्ति) चाहे अपने रब्ब के पास (अपना) ठिकाना बना ले ।४०।

اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۖ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ

हम ने तुम्हें एक निकटवर्ती (समय में आने वाले) अज़ाब से ख़ूब अच्छी तरह सावधान कर दिया है जिस दिन मनुष्य उस चीज़ को

اِلَيۡهِ يٰلَيۡتَنِيۡ كُنۡتُ تُرٰبًا ۝٤١ ع

देख लेगा जो उस के हाथों ने आगे भेजी है[1] तथा इन्कार करने वाला (उस दिन) कहेगा कि क्या अच्छा होता कि मैं मिट्टी होता ।४१।
(रुकू २/२)
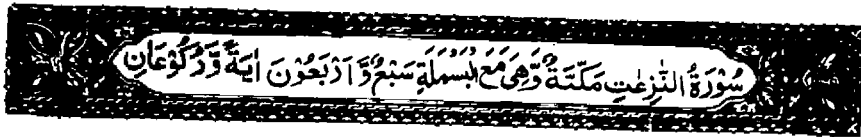
सूर: अल्-नाज़िआत

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की सैंतालीस आयतें एवं दो रुकू हैं।]

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝١

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ जो) अनन्त कृपा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है ।१।

وَالنّٰزِعٰتِ غَرۡقًا ۝٢

मैं उन सत्ताओं को गवाही के रूप में पेश करता हूँ जो पूरी रुची से धार्मिक ज्ञान को खींचती हैं[2] ।२।

1. जो कर्म वह कर चुका है उस का बदला देख लेगा।

2. यहाँ सहाबा के दलों का वृत्तान्त है और बताया गया है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के साथी ऊँचे तथा उत्तम प्रकार के सदाचार को क़ायम करने के लिए ज़ोर लगाते थे। कुछ भाष्यकारों का कहना है कि यहाँ फ़रिश्तों का वृत्तान्त है। बात यह है कि यहाँ इन सत्ताओं को गवाही के रूप में पेश किया है और फ़रिश्तों की गवाही का कोई अर्थ नहीं निकलता क्योंकि फ़रिश्तों की गवाही को न इन्कार करने वाले समझ सकते हैं और न मोमिन। हाँ सहाबा की गवाही को सब समझ सकते हैं। अत: यहाँ सहाबा का ही वृत्तान्त है।

وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ

और उन सत्ताओं को जो बहुत अच्छी तरह गिरह[1] बाँधती हैं ।३।

وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ

और उन सत्ताओं को भी जो दूर-दूर निकल[2] जाती हैं ।४।

فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ

फिर (मुक़ाबिले में एक-दूसरे से) ख़ूब आगे निकल जाती[3] हैं ।५।

فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ

फिर (सांसारिक) काम चलाने के उपायों[4] में लग जाती हैं ।६।

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ

(इन गुणों वाली जाति के प्रकट होने का वह दिन होगा) जिस दिन युद्ध (की तय्यारी) करने वाली (जाति) युद्ध की तय्यारी[5] करे गी ।७।

تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۗ

उस (युद्ध की तय्यारी) के बाद (उसी प्रकार की) पीछे[6] आने वाली एक और घड़ी आएगी ।८।

---

1. अर्थात् अल्लाह से अपना लगाव मज़बूत करते हैं ।

2. अर्थात् सहाबा के दल जो इस्लाम के प्रचार के लिए देश-विदेश फिरते थे ।

3. सहाबा में नेकी में एक-दूसरे से बढ़ने का उत्साह पाया जाता था, जिस के कारण वे नेकी में एक-दूसरे से बढ़ने की कोशिश में कोई कठिनाई अनुभव नहीं करते थे और उन की सारी कोशिश ऐसी ही थी जैसे तैरने वाले को तैरने में पानी के कारण आसानी होती है ।

4. अर्थात् मानव-समाज का सुधार और उस की उन्नति उन के जीवन का लक्ष्य होता है ।

5. अर्थात् ऊपर की आयतें वह समय बताती हैं जब मुसलमान इन्कार करने वाले लोगों के आक्रमणों से बचने के लिए और अपनी रक्षा के लिए युद्ध करने पर विवश हो जाएँगे ।

6. अर्थात् जब मुसलमान युद्ध करने पर विवश हो जाएँगे तो फिर अस्त्र-शस्त्र हाथ से न रखेंगे, बल्कि आक्रमण पर आक्रमण करते ही रहेंगे यहाँ तक कि विजयी हो जाएँगे ।

قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ﴿۹﴾	उस दिन कुछ लोगों के दिल धड़क[1] रहे होंगे ।९।
اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ﴿۱۰﴾	और उन की आँखें डर से झुकी हुई होंगी ।१०।
يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ ؕ﴿۱۱﴾	वे कहेंगे कि क्या हमें अपनी राह पर उलटे पाँव लौटाया जाएगा ? ।११।
ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ؕ﴿۱۲﴾	क्या (उस हालत में भी कि) जब हम सड़ी - गली - हड्डियाँ हो जाएँगे[2] (ऐसा होगा ?) ।१२।
قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۘ﴿۱۳﴾	वे कहते हैं (यदि ऐसा हुआ तब तो यह बड़े घाटे वाला लौटना होगा ।१३।
فَاِنَّمَا هِىَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ﴿۱۴﴾	(और यह भी याद रखो कि) यह युद्ध की सूचना तो केवल एक डाँट[3] थी ।१४।
فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ؕ﴿۱۵﴾	अतः (वे उस डाँट के बाद) तुरन्त (युद्ध के) मैदान में उपस्थित[4] होंगे ।१५।
هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۘ﴿۱۶﴾	क्या तुझे मूसा की बात भी पहुँची है ।१६।

1. अर्थात् उस दिन इन्कार करने वाले लोग कायरता दिखाने लग जाएँगे ।

2. अर्थात् इस्लाम के प्रभुत्व पा लेने की बात जब पूरी होगी तो इन्कार करने वाले लोग कहेंगे कि अब क्या यह दूसरी बात कि हमें मरने के बाद जीवित कर के उठाया जाएगा, वह भी पूरी होगी ?

3. अर्थात् इन्कार करने वालों का दण्ड केवल यह नहीं था कि वे बद्र के युद्ध में पराजित हुए बल्कि इस प्रकार की अनेकों पराजय उन्हें मिलेंगी ।

4. अर्थात् जब युद्धों का ठीक समय आएगा तो इन्कार करने वाले लोग भी बार-बार आक्रमण करने की ओर ध्यान देंगे, परन्तु अन्ततः पराजित होंगे ।

جब कि उसे उस के रब्ब ने पवित्र वादी अर्थात् 'तुवा'[1] में पुकारा था ।१७।	اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٧﴾
(और कहा था कि) फ़िरऔन की ओर जा क्योंकि वह विद्रोही बन रहा है ।१८।	اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿١٨﴾
और उसे कह कि क्या तुझे (इस बात की भी कुछ) इच्छा है कि तू पवित्र हो जाए ।१९।	فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰۤى اَنْ تَزَكّٰى ﴿١٩﴾
और (इस के फलस्वरूप) मैं तुझे तेरे रब्ब की राह दिखाऊँ तथा तू अल्लाह से डरने[2] लगे ।२०।	وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ﴿٢٠﴾
अतः (मूसा गए और उन्हों ने) उसे एक बहुत बड़ा चमत्कार दिखाया ।२१।	فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ﴿٢١﴾
जिस पर उस ने मूसा को झुठलाया और अवज्ञा की ।२२।	فَكَذَّبَ وَعَصٰى ﴿٢٢﴾
इस पर यह ज़्यादती की कि उस ने फ़साद करने की योजनाएँ बनाते हुए सच्चाई से मुँह मोड़ा ।२३।	ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ﴿٢٣﴾
अतः (उस ने अपने राजदरबारियों को) इकट्ठा किया और देश में घोषणा भी करा दी ।२४।	فَحَشَرَ فَنَادٰى ﴿٢٤﴾

1. मूल शब्द 'तुवा' का अर्थ चक्कर खाने के होते हैं । अतः इस का भाव यह है कि वह ऐसी वादी थी जहाँ से मनुष्य अल्लाह की ओर फिरता है अर्थात् आध्यात्मिक रूप में उस के विकास के सामान किए जाते हैं ।

2. हज़रत मूसा ने पहले गुज़रे हुए तथा बाद में आने वाले समस्त नबियों की रीति के अनुसार यही किया कि फ़िरऔन से कहा कि अच्छी बात यही है कि मुझे स्वीकार कर के मेरे आदेशों को ग्रहण करो तथा मेरे आगमन को अपने लिए प्रकोप का कारण न बनाओ ।

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى

और (लोगों को इकट्ठा कर के) कहा कि मैं तुम्हारा सब से बड़ा रब्ब हूँ।२५।

فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى

इस पर अल्लाह ने उसे लोक तथा परलोक के अज़ाब में ग्रस्त करने के लिए पकड़ लिया।२६।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى

निस्सन्देह इस (घटना) में उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह से डरता है शिक्षा (हासिल करने का सामान) है।२७। (रुकू १/३)

ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ بَنٰهَا

(सोचो तो सही) क्या तुम्हें (दोबारा) पैदा करना ज़्यादा कठिन है अथवा आसमान को (पैदा करना) जिसे उस ख़ुदा ने बनाया है।२८।

رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا

उस की ऊँचाई को और ऊँचा किया है फिर उसे बिना किसी दोष के बनाया है।२९।

وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا

और उस की रात को तो अन्धकारमय बनाया है परन्तु उस की दोपहर को (प्रकाशवान कर के) ज़ाहिर किया है।३०।

وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا

और उस के साथ (उसी समय में) जमीन को भी बिछाया है।३१।

اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰىهَا

फिर (उस में से) उस का पानी और उस का चारा निकाला है।३२।

وَالْجِبَالَ اَرْسٰىهَا

और पर्वतों को भी उस ने उस में गाड़ा है।३३।

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ

(यह सब कुछ) तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के लाभ के लिए (उस ने किया है)।३४।

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَىٰ

अत: जब वह भयंकर आपत्ति आएगी।३५।

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعَىٰ

जिस दिन मनुष्य अपने किए को याद करेगा।३६।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَنْ يَرَىٰ

और नरक उस के लिए जो उसे (बुद्धि की आँख से) देखेगा ज़ाहिर कर दी जाएगी।३७।

فَأَمَّا مَنْ طَغَىٰ

अत: जिस ने उद्दण्डता की।३८।

وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا

और इस लोक के जीवन को (पारलौकिक जीवन पर) प्रधानता दी।३९।

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ

निस्सन्देह नरक ही उस का ठिकाना है।४०।

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ

और जिस ने अपने रब्ब की बड़ी शान से भय खाया और अपने मन को गिरी हुई इच्छाओं से रोका।४१।

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ

निस्सन्देह स्वर्ग ही उस का ठिकाना है।४२।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا

वे तुझ से उस घड़ी के बारे में पूछते हैं कि वह कब आएगी ?।४३।

فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرَاهَا

तुझे उस के (आने के) वर्णन करने से क्या सम्बन्ध ?।४४।

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا

उस (घड़ी के समय की) अन्तिम सीमा का निश्चित करना तो तेरे रब्ब से सम्बन्धित है।४५।

إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَخْشَاهَا

तू तो केवल उस को जो इस (विपत्ति) से डरता है सावधान करने वाला है।४६।

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا

वे जिस दिन उसे देखेंगे (तो उन की हालत ऐसी होगी) मानों वे एक साँझ या उस की एक प्रात: संसार में रहे है।४७। (रुकू २/४)

सूरः अबस

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की तैंतालीस आयतें तथा एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ ②

(क्या) त्योरी चढ़ाई और मुँह मोड़ लिया।२।

اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ③

केवल इस बात पर कि उस के पास एक अन्धा (जिसे जानकार लोग जानते हैं) आया ?।३।

وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىٓ ④

और (हे रसूल) कौन सी बात तुझे यह बता सकती थी कि वह अवश्य पवित्र हो जाएगा।४।

اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ⑤

या (शिक्षा देने वाली बातों को) याद करेगा तो यह याद करना उसे लाभ देगा।५।

اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ⑥

क्या यह हो सकता है कि जो व्यक्ति (सच्चाई से) बेपरवाही करे।६।

فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ⑦

(उस की ओर) तो तू खूब ध्यान दे ? (हालाँकि यह बात सारे (क़ुर्आन के ख़िलाफ़ है)।७।

وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكَّىٰ ۝٨

और तू ऐसा कर भी किस तरह सकता है जब कि उस के हिदायत न पाने की तुझ पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं ।८।

وَأَمَّا مَن جَاءَكَ يَسْعَىٰ ۝٩

और जो कोई तेरी ओर भागता हुआ आए ।९।

وَهُوَ يَخْشَىٰ ۝١٠

और वह (साथ ही खुदा से भी) डरता हो ।१०।

فَأَنتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ ۝١١

तो (आपत्ति करने वाले के कथनानुसार) तू उस की ओर कोई ध्यान नहीं देता है ।११।

كَلَّا إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝١٢

ऐसा बिल्कुल नहीं (यह सब आरोप निर्मूल हैं) निस्सन्देह यह क़ुर्आन तो एक उपदेश[1] है ।१२।

فَمَن شَاءَ ذَكَرَهُ ۝١٣

अतः जो चाहे उसे अपने मन में बिठा ले ।१३।

فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝١٤

यह क़ुर्आन ऐसे सहीफ़ों (पवित्र किताबों) में है जो इज़्ज़त वाले ।१४।

مَّرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝١٥

बड़ी ऊँची शान वाले और पवित्र हैं ।१५।

بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۝١٦

वे (सहीफ़े लिखने वालों और दूर-दूर) यात्रा[2] करने वालों के हाथों में हैं ।१६।

كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝١٧

(ऐसे लोगों के हाथों में) जो बड़ी इज़्ज़त वाले हैं और बड़े ऊँचे सदाचारी हैं ।१७।

قُتِلَ الْإِنسَانُ مَا أَكْفَرَهُ ۝١٨

सत्यनाश हो मनुष्य का वह कैसा नाशुक्रा है ? ।१८।

---

1. और इस उपदेश के साथ कोई तलवार नहीं उतारी गई कि जबरदस्ती लोगों को मुसलमान बनाया जाए । जो चाहे माने, जो चाहे न माने ।

2. अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के सहाबा क़ुर्आन-मजीद को ले कर दूर-दूर फैल जाएंगे ।

مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ۝١٨

(वह विचार तो करे कि) अल्लाह ने उसे किस चीज़ से पैदा किया है।१९।

مِنْ نُّطْفَةٍ ۭ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۝١٩

(वह जानता होगा कि निस्सन्देह उसे वीर्य्य से (पैदा किया है पहले तो) उसे पैदा किया फिर उस के लिए (उन्नति का एक) अन्दाज़ा नियत किया।२०।

ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ۝٢٠

फिर उस की राह को आसान बनाया और उसे खूब ही आसान बनाया।२१।

ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ۝٢١

फिर (पूरी आयु के बाद) उसे मौत दी, फिर उसे (नियत) क़ब्र[1] में रखा।२२।

ثُمَّ اِذَا شَاۗءَ اَنْشَرَهٗ ۝٢٢

फिर जब चाहेगा तो उसे दोबारा उठा कर खड़ा[2] कर देगा।२३।

كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ۝٢٣

(जो तुम समझते हो ऐसा) कदापि[3] नहीं। देखते नहीं कि उसे (अर्थात् मनुष्य को) जो आदेश मिला था अभी तक उस ने उसे पूरा[4] नहीं किया।२४।

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ۝٢٤

अतः चाहिए कि मनुष्य अपने भोजन की ओर देखे।२५।

---

1. इस से अभिप्राय यह है कि संसार में तो उस को उस के नातेदार उसे क़ब्र में रखते हैं परन्तु मनुष्य की असली क़ब्र वह है जिस में अल्लाह जीवात्मा को रखता है।

2. इस आयत से स्पष्ट है कि यहाँ संसार की क़ब्र अभीष्ट नहीं, अपितु इस से तात्पर्य परलोक की क़ब्र है और भाव यह है कि अल्लाह मनुष्य को परलोक में एक दूसरा जीवन प्रदान करेगा।

3. अर्थात् तुम यह समझते हो कि मनुष्य को मरने के बाद कोई जीवन नहीं मिलेगा ऐसा कदापि नहीं।

4. अभिप्राय यह है कि जब मनुष्य ने अल्लाह की भेजी हुई शरीअत अर्थात् धार्मिक-विधान का पालन नहीं किया तो यह कैसे सम्भव है कि उस का लेखा न लिया जाए और लेखा लेने की हालत में यह ज़रूरी है कि उसे मरने के बाद फिर जीवित किया जाए।

أَنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا

और (देखे कि) हम ने बादलों से खूब वर्षा की है ।२६।

ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا

फिर ज़मीन को अच्छी तरह फाड़ा है ।२७।

فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا

फिर उस फाड़ने के फलस्वरूप हम ने उस में तरह-तरह के अनाज पैदा किए हैं ।२८।

وَعِنَبًا وَقَضْبًا

और इसी तरह अंगूर और वनस्पतियाँ ।२९।

وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا

तथा ज़ैतून और खजूरें ।३०।

وَحَدَائِقَ غُلْبًا

और उस के साथ ही घने बाग़ भी ।३१।

وَفَاكِهَةً وَأَبًّا

और मेवे भी तथा सूखी घास (और झाड़ियाँ भी) ।३२।

مَتَاعًا لَكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ

(यह सब) तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के लाभ के लिए (पैदा किया गया[1]) है ।३३।

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ

फिर (यह भी तो सोचो कि) जब कान फाड़ने वाली (विपत्ति) आएगी ।३४।

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ

जिस दिन कि मनुष्य अपने भाई से दूर भागेगा ।३५।

وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ

और इसी तरह अपनी माता और अपने पिता से भी ।३६।

وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ

और अपनी पत्नी तथा अपने पुत्रों से भी ।३७।

---

1. अर्थात् मनुष्य द्वारा लगाए हुए वृक्षों अथवा स्वयं पैदा होने वाले पौधों के फल और उन पर लगने वाले फूलों को तो मनुष्य प्रयोग में लाता है, किन्तु उन के पत्ते तथा गिरे हुए फल पशु-पक्षी भी खा लेते हैं । अतः यह सब कुछ मनुष्य तथा पशु-पक्षियों के लाभ के लिए पैदा किया गया है ।

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴿٣٨﴾

उस दिन प्रत्येक व्यक्ति की हालत ऐसी होगी कि वह उसे अपनी ही ओर उलझाए रखेगी।३८।

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٩﴾

उस दिन कुछ लोगों के चेहरे रोशन होंगे।३९।

ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٤٠﴾

हँसते हुए बहुत प्रसन्न।४०।

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤١﴾

और कुछ लोगों के चेहरे उस दिन ऐसे होंगे कि मानों उन पर धूल छाई हुई है।४१।

تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤٢﴾

और (उन की भीतर की हालत बताने के लिए) उन के चेहरों पर एक ऐसी कालिख लग जाएगी (जो ऐसे समय लग जाया करती है)।४२।

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٣﴾ ع

यही लोग इन्कारी तथा दुराचारी ठहराए जाएँगे।४३। (रुकू १/५)
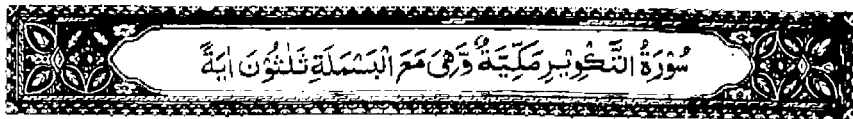
सूरः अल्-तकवीर

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की तीस आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿١﴾

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

जब सुर्य के (प्रकाश) को लपेट दिया जाएगा[1] ।२।	إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ②
और जब नक्षत्र[2] धुँधले हो जाएँगे ।३।	وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ③
और जब पर्वत चलाए[3] जाएँगे ।४।	وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ④
और जब दस महीने की गाभिन ऊंटनियाँ[4] छोड़ दी जाएँगी ।५।	وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ⑤
और जब जंगली[5] एकत्रित किए जाएँगे ।६।	وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ⑥

1. यह उस अस्थाई कमज़ोरी की ओर संकेत है जो भविष्य में मुसलमानों पर आने वाली थी। क़ुर्आन-मजीद में हज़रत मुहम्मद-मुस्तफ़ा सल्लअम को सूर्य कहा गया है (सूरः अहज़ाब आयत 47) और इस आयत में बताया गया है कि एक समय ऐसा आएगा कि सूर्य पर पर्दा डाल दिया जाएगा अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का सम्मान लोगों के दिलों में उतना नहीं रहेगा जिस के आप अधिकारी हैं।

2. नक्षत्रों से अभीष्ट हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के सहाबा (साथी) हैं। इस आयत में बताया गया है कि अन्तिम युग में सहाबा के सुगुण—जैसे नेकी, भलाई, संयम, ज्ञान तथा अन्य प्रकार के कला-कौशल को अपनाया नहीं जाएगा और जाति की मान-मर्यादा उस जाति के लोगों के दिलों से मिट जाएगी।

3. पर्वतों के चलाने से अभिप्राय यह है कि :

(क) पर्वतों पर रास्ते और सड़कें बना दी जाएँगी।

(ख) आवश्यकता के अनुसार पर्वतों को डाइनामेट से उड़ाया जाएगा और उन में अधोमार्ग बनाए जाएँगे।

(ग) पर्वतों से अभिप्राय सरदार तथा बड़े लोग भी होते हैं। आशय यह है कि उस युग में पर्वत जैसी सत्ता रखने वाले बड़े-बड़े लोग, राजा महाराजा आदि अपनी सत्ता खो बैठेंगे।

4. अर्थात् रेल मोटरो का आविष्कार हो जाएगा तब हिजाज़ देश में ऊँटों पर यात्रा नाम मात्र के लिए रह जाएगी। दस महीने की गाभिन ऊँटनी इसलिए कहा है कि जब ऊँटनी के गर्भ पर दस माह हो जाएँ तो उस के बच्चे के कारण उस का मूल्य बढ़ जाता है और तब ही उसे छोड़ा जा सकता है जब ऊंट की आवश्यकता न रहे। रेल, मोटर, वायुयान आदि के आविष्कार से यह भविष्यवाणी पूरी हो गई है।

5. अर्थात् (क) चिड़ियाघर बनाए जाएँगे जहाँ नाना प्रकार के पशु-पक्षी रखे जाएँगे। (ख) इस का एक अर्थ यह भी है कि असभ्य लोग सभ्य बन जाएंगे। (ग) यह भी अर्थ है कि असभ्य जातियों को उन के देशों से निकाल दिया जाएगा जैसे अमेरिका और आस्ट्रेलिया में हुआ। मूल शब्द 'हुशिरत' का एक अर्थ देश से निकाल देना भी है।

وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝٧
और जब नदियों (के पानी) को (दूसरी नदियों अथवा नहरों में) मिला[1] दिया जाएगा[2] ।७।

وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ۝٨
और जब (विभिन्न प्रकार के) लोग एकत्रित[3] किए जाएँगे ।८।

وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ۝٩
और जब जीवित ही गाड़ दी जाने वाली (कन्या) के बारे में प्रश्न[4] किया जाएगा ।९।

بِاَيِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ۝١٠
कि किस अपराध के बदले में उस की हत्या की गई थी ।१०।

وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝١١
और जब किताबें फैला[5] दी जाएँगी ।११।

وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ۝١٢
और जब आसमान की खाल[6] उतारी जाएगी ।१२।

---

1. यह आज के युग के बारे में भविष्यवाणी है और अन्तिम युग में इंजीनियरिंग (यन्त्र-कला) के विकास की ओर संकेत करती है। अतः इस समय भारत, अमेरिका और रूस में कई नदियाँ परस्पर मिलाई गई हैं तथा जर्मनी में तो इस शताब्दी के प्रथम चरण से ही मिलाई जा चुकी हैं।

2. मूल शब्द 'सज्जर' का अर्थ किसी चीज़ को सुखा देने के भी होते हैं और इसी लिए भाष्यकारों ने यह अर्थ किया है कि नदियाँ सुखा दी जाएँगी। किन्तु इस का अर्थ यह भी है कि अपनी इच्छा से योजना के अनुसार नदियों का पानी निकाल कर दूसरे स्थान पर ले जाएं और यही नहरों का सिद्धान्त है। अतः दोनों बातों को सामने रखते हुऐ यही अर्थ बनता है कि नहरें निकाल कर नदियों को सुखा दिया जाएगा न कि उन का पानी भाप बना कर उड़ाया जाएगा।

3. अर्थात् यात्रा बड़ी आसान हो जाएगी। विभिन्न देशों के लोग रेलों तथा वायुयानों द्वारा परस्पर मिलने के योग्य हो जाएंगे।

4. लड़कियों का जीवित गाड़ा जाना विधान के अनुसार अपराध माना जाएगा।

5. उस युग में छापेखाने बहुत हो जाएंगे।

6. अर्थात् खगोल विद्या में बहुत उन्नति होगी।

وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾

और जब नरक को भड़काया[1] जाएगा।१२।

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾

और जब स्वर्ग को निकट[2] कर दिया जाएगा।१४।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾

(उस दिन) हर जान जो कुछ उस ने हाज़िर किया है जान लेगी।१५।

فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾

अतः ऐसा नहीं (जो तुम विचार करते हो) मैं गवाही के रूप में पेश करता हूँ चलते-चलते पीछे हट जाने वालों को।१६।

الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾

जो साथ ही नाक की सीध चलने वाले (भी हैं और फिर) घरों में बैठे रहने[3] वाले भी हैं।१७।

وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾

और रात को (गवाही के तौर पर पेश करता हूँ) जब वह जाने लगे।१८।

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾

और प्रातः को जब वह साँस[4] लेने लगती है।१९।

---

1. अर्थात् उस अन्तिम युग में पाप बहुत बढ़ जाएँगे और पापों के बढ़ने के कारण नरक मानव के पास आ जाएगा।

2. धर्म की हिक्मतें और उस का तत्त्व ज्ञान इस तरह खोल कर बताया जाएगा कि लोगों के लिए धर्म की बातों को मानना और उन पर चलना आसान हो जाएगा।

3. यहाँ नष्ट होने वाली जातियों के चिन्ह बताए गए थे। मुसलमानों को विशेष रूप से इस पर विचार करना चाहिए।

एक चिन्ह तो यह बताया है कि ख़तरे के समय पीछे हट जाना और दूसरा चिन्ह यह है कि परिणाम पर ध्यान दिए बिना ही किसी काम को करने का साहस कर लेना और तीसरा चिन्ह यह है कि सब काम छोड़ कर घर में बैठ जाना!

4. अर्थात् मुसलमानों के लिए विनाश का काल स्थायी नहीं होगा। रात के बाद सुबह आएगी।

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿٢٠﴾	निस्सन्देह वह (क़ुर्आन) एक सम्मानित रसूल[1] का कलाम है।२०।
ذِي قُوَّةٍ عِندَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ﴿٢١﴾	(जो रसूल) शक्ति वाला और अर्श वाले रब्ब के निकट बहुत बड़ा दर्जा रखने वाला है।२१।
مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ﴿٢٢﴾	और जो मुता भी है (अर्थात् इस योग्य है कि उस का अनुसरण किया जाए) तथा साथ ही वह अमीन[2] भी है।२२।
وَمَا صَاحِبُكُم بِمَجْنُونٍ ﴿٢٣﴾	और तुम्हारा साथी कदापि पागल नहीं।२३।
وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ ﴿٢٤﴾	और निस्सन्देह उस ने उस ग़ैब (अर्थात् परोक्ष की बातों) को खुले क्षितिज[3] में देखा है।२४।
وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿٢٥﴾	और वह परोक्ष के समाचार बताने में कदापि कन्जूस नहीं है।२५।
وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ﴿٢٦﴾	और न वह (अर्थात् उस पर उतरने वाला कलाम) धुतकारे हुए शैतान की (कही हुई) बात है।२६।

1. यहाँ यह तात्पर्य नहीं कि क़ुर्आन-मजीद हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का कलाम है अपितु इस आयत का भाव यह है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम अल्लाह से घनिष्ट सम्बन्ध रखते हैं और फ़रिश्ते यह कलाम ले कर आते हैं। अत: यह कलाम अल्लाह का भी है और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का भी है क्योंकि संसार वालों ने उन के मुँह से यह कलाम सुना, परन्तु क़ुर्आन-मजीद ने इस बात पर ज़्यादा ज़ोर दिया है कि यह अल्लाह का कलाम है जैसा कि इस में वर्णन है। "निस्सन्देह यह क़ुर्आन संसार के रब्ब की ओर से उतारा गया है। इसे ले कर एक अमानतदार फ़रिश्ता तेरे दिल पर उतरा है ताकि तू सावधान करने वाले गिरोह में शामिल हो जाए" (सूर: शोअरा आयत 192 से 195 तक)।

2. क्योंकि यह रसूल है इस पर अल्लाह का कलाम उतरना चाहिए था और फिर उस के असाधारण दावा के बाद एक बड़ी फ़रमाँबरदार जमाअत उस को मिली है इसलिए वह सच्चा है और विरोधियों के अपने कहने के अनुसार यह अमीन अर्थात् विश्वास पात्र भी है। अत: जब यह कहता है कि यह अल्लाह का कलाम है तो उस का यह दावा झूठा नहीं हो सकता।

3. मूल शब्द 'उफ़ुक़' अर्थात् क्षितिज। दृष्टि की पहुँच की अन्तिम सीमा का वह स्थान है जहाँ पर पृथ्वी और आकाश मिले हुए दिखाई देते हैं।

فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ﴿٢٧﴾

फिर इस बात के होते हुए तुम कहाँ जाते हो।२७।

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿٢٨﴾

यह तो केवल सारे जहानों के लिए एक उपदेश है।२८।

لِمَن شَآءَ مِنكُمْ أَن يَسْتَقِيمَ ﴿٢٩﴾

(विशेषकर) उस के लिए जो तुम में से सीधी राह पर चलने का इच्छुक हो।२९।

وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٣٠﴾ ع

और तुम यह नहीं चाह सकते परन्तु वही जो अल्लाह की इच्छा[1] के अनुकूल हो जो सारे जहानों का रब्ब है।३०। (रुकू १/६)
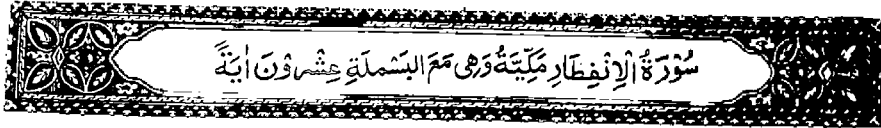
सूरः अल्-इन्फ़ितार

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की बीस आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ﴿١﴾

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

1. इस से यह तात्पर्य नहीं कि अल्लाह ने कोई भाग्य नियत कर रखा है कि अमुक व्यक्ति नेक होगा तथा अमुक व्यक्ति बुरा होगा। क़ुर्आन मजीद ऐसे किसी मन्तव्य को मिथ्या ठहराता है। इस आयत में क़ुर्आन-मजीद की एक और आयत की ओर संकेत किया गया है जिस का अर्थ यह है कि मैं ने जिन्नों तथा मनुष्य को केवल इस लिए पैदा किया है कि वह मेरी भक्ति करें। इसी तरह एक और आयत की ओर संकेत है जिस का अर्थ है कि हम ने प्रत्येक मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ शक्तियाँ दे कर भेजा है। अतः आयत 30 में यह बताया गया है कि अल्लाह की यह इच्छा ज़ाहिर हो चुकी है कि तुम्हारा सुधार किया जाए तथा तुम्हें कामिल और पूरे मोमिन बनाया जाए। इस लिए तुम इस के ख़िलाफ़ नहीं जा सकते।

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ۝١

जब आसमान फट जाएगा[1] ।२।

وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۝٢

और जब नक्षत्र झड़ जाएँगे[2] ।३।

وَاِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝٣

और जब समुद्र फाड़ कर मिला दिए जाएँगे[3] ।४।

وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ۝٤

और जब क़ब्रें खोद कर इधर-उधर बिखेर दी जाएँगी[4] ।५।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ ۝٥

तब उस बड़ी (अपराध करने वाली) जान[5] को (जिस का यहाँ वर्णन है) पता लग जाएगा कि क्या कुछ उस ने आगे भेजा है तथा क्या कुछ पीछे छोड़ा[6] है ।६।

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۝٦

हे मानव ! तुझे किस ने तेरे रब्ब के बारे में अहंकारी बना दिया[7] है ।७।

---

1. उस समय संसार में शिर्क और नासतिकता इतने फैल जाएँगे कि अल्लाह ज़मीन पर अज़ाब उतारने का फ़ैसला कर देगा ।

2. अर्थात् ज्ञानी लोग संसार में लुप्त हो जाएँगे अथवा हिदायत देने वाले लोग थोड़े रह जाएँगे ।

3. अर्थात् बड़े-बड़े जल-डमरू मध्य (दो बड़े समुद्रों को मिलाने वाला समुद्र का पतला भाग) बनाए जाएँगे जैसे पानामा और स्वेज़ ।

4. अर्थात् प्राचीन काल के फ़िरऔन राजाओं की क़ब्रें खोद कर उन में से उन राजाओं के शव निकाल कर फ्राँस, रूस और इंगलैंड आदि विभिन्न देशों में पहुँचा दिए जाएँगे ।

5. यहाँ जान से अभिप्राय ईसाई धर्म है क्योंकि शिर्क तथा नास्तिकता का प्रसार उसी के द्वारा संसार में फैल रहा है ।

6. अर्थात् अल्लाह ऐसी निशानियाँ पैदा करेगा जिन में ईसाई धर्म के पतन के लक्षण स्पष्ट हो जाएँगे और ईसाई जाति को विदित हो जाएगा कि हम ने कितने घिनौने कर्म किए हैं और हम अपने पीछे ऐसे निशान छोड़े जा रहे हैं जो लोगों के दिलों में हमारे बारे में घृणा पैदा करते रहेंगे ।

7. इस में यूरोप के दर्शन शास्त्र अर्थात् फिलासफ़ी की ओर संकेत किया गया है कि इस के जानने वाले लोग अपने-आप को शरीअत (मज़हबी क़ानून) और अल्लाह से ऊँचा समझते हैं और सोचते हैं कि उन्हें अल्लाह ने पैदा नहीं किया है बल्कि अपने ग़लत फिलासफ़ी के आधार पर यह समझते हैं कि हम अपने-आप ही पैदा हो गए हैं ।

الَّذِىْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۙ

उस रब्ब के बारे में जिस ने तुझे पैदा किया, फिर तुझे (अर्थात् तेरी भीतरी शक्तियों को) ठीक किया, फिर तुझे उचित शक्तियाँ प्रदान कीं ।८।

فِىْٓ اَىِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ؕ

फिर जो रूप उस ने पसन्द किया उस में तुझे ढाला ।९।

كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ۙ

ऐसा कदापि नहीं (जैसा तुम विचार करते हो) बल्कि तुम तो जज़ा सज़ा अर्थात् बदला दिए जाने को झुठलाते हो ।१०।

وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ۙ

और निस्सन्देह तुम पर (तुम्हारे रब्ब की ओर से) निरीक्षक नियुक्त हैं ।११।

كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ۙ

जो बहुत भले सज्जन और हर एक बात को लिखने वाले हैं ।१२।

يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ

तुम जो कुछ भी करते हो वे उसे जानते हैं ।१३।

اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِىْ نَعِيْمٍ ۚ

निस्सन्देह नेकियों में बढ़ जाने वाले लोग सदा निअमत में (रहते) हैं ।१४।

وَاِنَّ الْفُجَّارَ لَفِىْ جَحِيْمٍ ۖ

और दुराचारी लोग निस्सन्देह नरक में रहते हैं ।१५।

يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ

वे (विशेष रूप से) बदला दिए जाने के दिन उस में दाख़िल होंगे ।१६।

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ؕ

और वे किसी तरह भी उस से बच कर छिप नहीं सकते ।१७।

وَمَآ أَدۡرَىٰكَ مَا يَوۡمُ ٱلدِّينِ ۝١٨

और (हे सम्बोधित !) तुझे किस ने बताया है कि बदला दिया जाने का समय क्या है।१८।

ثُمَّ مَآ أَدۡرَىٰكَ مَا يَوۡمُ ٱلدِّينِ ۝١٩

फिर हम तुझे कहते हैं कि तुझे किस ने बताया है कि जज़ा सज़ा अर्थात् बदला दिए जाने का समय क्या है।१९।

يَوۡمَ لَا تَمۡلِكُ نَفۡسٌ لِّنَفۡسٍ شَيۡـًٔا ۖ وَٱلۡأَمۡرُ يَوۡمَئِذٍ لِّلَّهِ ۝٢٠ ع

(यह समय) उस दिन होगा जिस में कोई जान किसी दूसरी जान को लाभ पहुंचाने का कुछ भी अधिकार न रखेगी और सब फ़ैसला उस दिन अल्लाह ही के हाथ में होगा।२०। (रुकू १/७)
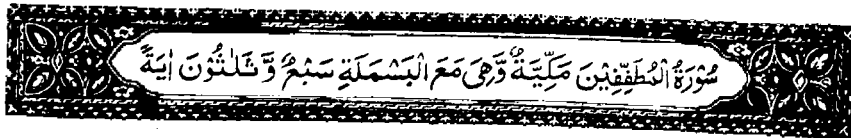
सूरः अल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की सैंतीस आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ۝١

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूं) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

1. अर्थात् यह बदला अगले जहान अर्थात् आख़िरत में मिलेगा जब कोई मित्र दूसरे मित्र को लाभ नहीं पहुंचा सकेगा।

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ۝٢	खरीदने और बेचने वाली चीज़ों में तौल कम कर के देने वालों के लिए अज़ाब (ही अज़ाब) है ।२।
الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ۝٣	(उन के लिए) जो तौल कर लेते हैं तो पूरा-पूरा लेते हैं ।३।
وَإِذَا كَالُوهُمْ أَو وَّزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ۝٤	और जब दूसरों को तौल कर देते हैं तो फिर तौल में कमी कर देते हैं ।४।
أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُم مَّبْعُوثُونَ ۝٥	क्या यह लोग विश्वास नहीं करते कि वे (जीवित कर के) उठाए जाएँगे ।५।
لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝٦	उस महत्वपूर्ण समय (का निर्णय देखने) के लिए ।६।
يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝٧	जिस समय सब लोग सारे जहानों के रब्ब (का निर्णय सुनने) के लिए खड़े होंगे ।७।
كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَّارِ لَفِي سِجِّينٍ ۝٨	ऐसा नहीं (जो यह लोग समझते हैं) दुराचारियों के कर्मों (का बदला देने) का आदेश निश्चय ही एक सदा रहने[1] वाली किताब में है ।८।
وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ۝٩	और तुझे किस ने बताया कि सिज्जीन क्या है ? ।९।
كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ۝١٠	वह ऐसा आदेश है जो (आदि काल से) लिखा हुआ है ।१०।
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝١١	उस दिन झुठलाने वालों के लिए अज़ाब (ही अज़ाब) होगा ।११।

1. मूल शब्द 'सिज्जीन' का अर्थ कठोर और स्थायी है और भाव यह है कि इन्कार करने वाले लोगों के लिए अज़ाब कठोर तथा स्थायी होगा (फ़तहुल्बयान—भाग 10) ।

الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ⑪	उन झुठलाने वालों के लिए जो बदला के दिन का इन्कार करते हैं ।१२।
وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ⑫	और उस का इन्कार नहीं कर सकता किन्तु वही जो सीमा से निकला हुआ और महापापी है ।१३।
اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ⑬	जब ऐसे लोगों के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाएँ तो वह कह देते हैं कि यह तो पहले लोगों की कहानियाँ हैं' ।१४।
كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ⑭	ऐसा कदापि नहीं (जैसा वे कहते हैं) बल्कि (सच्ची बात यह है कि) उन के दिलों पर उन कुकर्मों के कारण जो वे कर चुके हैं ज़ंग (मोर्चा) लग चुका है ।१५।
كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ⑮	बल्कि यूँ कहो कि वे उस दिन अपने रब्ब के सामने आने से निस्सन्देह रोके जाएँगे ।१६।
ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ⑯	फिर वे अवश्य ही नरक में प्रवेश करेंगे ।१७।
ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ⑰	फिर उन से कहा जाएगा यही तो वह (परिणाम) है जिस का तुम इन्कार किया करते थे ।१८।
كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ⑱	तुम्हारे विचारों के ख़िलाफ़ नेक लोगों (के बदले) का आदेश निस्सन्देह (इल्लिय्यीन') में है ।१९।
وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ⑲	और तुझे किस ने बताया कि 'इल्लिय्यून' क्या है ।२०।

1. 'इल्लिय्यीन' का अर्थ ऐसे महापुरुष जो आध्यात्मिक रूप से ऊँची पदवी रखने वाले और दूसरों से श्रेष्ठतर हों ।

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٢١﴾	वह ऐसा आदेश है जो (आदिकाल से) लिखा हुआ[1] है ।२१।
يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٢﴾	जिसे अल्लाह के निकटवर्ती लोग (स्वयं अपनी आँखों से) देखेंगे ।२२।
اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٣﴾	नेकी में बढ़े हुए लोग निस्सन्देह निअमत के स्थान में रखे जाएँगे ।२३।
عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٤﴾	सिंहासनों पर (बैठे सब हाल) देख रहे होंगे ।२४।
تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ﴿٢٥﴾	तू (यदि उन्हें देखे) तो उन के चेहरों पर निअमत की प्रफुल्लता की झलक देखेगा ।२५।
يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٦﴾	उन्हें मुहर की हुई शुद्ध मदिरा पिलाई जाएगी ।२६।
خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ۗ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿٢٧﴾	उस के अन्त में कस्तूरी होगी और चाहिए कि इच्छा करने वाले लोग ऐसी ही चीज़ की इच्छा करें ।२७।
وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٨﴾	और उस में तस्नीम[2] की मिलावट होगी ।२८।
عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٩﴾	तस्नीम से (हमारा अभिप्राय) उस स्रोत से है जिस से अल्लाह के निकटवर्ती लोग पीएँगे ।२९।
اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٠﴾	वे लोग जो अपराधी हुए निस्सन्देह मोमिनों से हँसी-ठट्ठा किया करते थे ।३०।

1. अर्थात् 'इल्लीय्यून' (ऐसे भद्रपुरुष हैं) जिन के बारे मे विशेष आदेश होते हैं और अल्लाह के निकटवर्ती लोग अपनी आँखों से उन आदेशों को पढ़ेंगे और प्रसन्न होंगे।

1. तस्नीम का अर्थ है ऊँची शान, प्रतिष्ठा और महिमा। अत: तस्नीम की मिलावट से तात्पर्य यह है कि तस्नीम का पानी उन स्वर्गवासियों के पानी में मिला हुआ होगा। जिस के कारण उन का मरतबा ऊँचा होता चला जाएगा।

وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ﴿٣٠﴾

और जब उन के पास से निकलते थे तो एक-दूसरे को आँख से संकेत किया करते थे ।३१।

وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ﴿٣١﴾

और जब अपने घरों की ओर लौटते थे तो (मुसलमानों के ख़िलाफ़) ख़ूब बातें बनाते हुए लौटते थे ।३२।

وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ﴿٣٢﴾

और जब भी उन्हें देखते थे कहते थे कि यह लोग तो बिल्कुल गुमराह हैं ।३३।

وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ﴿٣٣﴾

और सच यह है कि वे उन पर निरीक्षक बना कर नहीं भेजे गए थे[1] ।३४।

فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ﴿٣٤﴾

अतः जो लोग ईमान लाए वे इस (जज़ा-सज़ा अर्थात् बदले के) दिन इन्कार करने वालों पर हँसेंगे ।३५।

عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ﴿٣٥﴾

सिंहासनों पर बैठे हुए उन की (समस्त परिस्थितियाँ) देख रहे होंगे ।३६।

هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾ ع

(और परस्पर कहेंगे कि) क्या इन्कार करने वालों को जो कुछ वे किया करते थे उस का पूरा बदला मिल गया (या नहीं ?) ।३७। (रुकू १/८)

---

1. इस आयत में बताया गया है कि किसी के दिल के विश्वास और मन्तव्य पर फ़तवा (धार्मिक आज्ञा) लगाना उचित नहीं क्योंकि हो सकता है कि उस के दिल की बात फ़तवा लगाने वाले पर जाहिर न हो और झूठा फ़तवा लगा दे ।

सूरः अल्-इन्शिक़ाक़

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की छब्बीस आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ②

जब आसमान फट जाएगा[1]।२।

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ③

और अपने रब्ब की बात सुनने के लिए कान धरेगा[2] और यही उस का कर्त्तव्य[3] है।३।

وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ④

और ज़मीन फैला दी जाएगी[4]।४।

---

1. अर्थात् जब आसमान से लगातार निशान ज़ाहिर होने लग जाएँगे।

2. निशानों की बहुतात के कारण बड़े-बड़े लोग और विद्वान भी अल्लाह की बातों पर विचार करने के लिए तय्यार हो जाएँगे।

3. अर्थात् मानव का कर्त्तव्य तो यह है कि आसमानी निशान ज़ाहिर हों या न हों वह अपनी बुद्धि से ही काम ले कर अल्लाह की ओर झुक जाए और निशानों के ज़ाहिर होने की प्रतीक्षा न करे, किन्तु वह ऐसा नहीं करता।

4. अर्थात् उस युग में यह सिद्ध हो जाएगा कि अनेक मंडल जो ज़ाहिर में आसमान के साथ सम्बन्धित नज़र आते हैं वह ज़मीन का ही अंग हैं, जैसे चन्द्रमा और मंगल नक्षत्र आदि। विज्ञान ने यह रहस्य इस युग में खोला है। पहले ऐसा नहीं हुआ था। बल्कि इस से बढ़ कर यह बात है कि इन मण्डलों को पृथ्वी का भाग समझ कर कुछ लोग यह प्रयत्न कर रहे हैं कि राकेट द्वारा उन तक पहुंच जाएं या उन्हें भी निवास के लिए पृथ्वी का एक भाग सिद्ध कर दें। यदि ऐसा हो जाए अथवा किसी दूसरे ढंग से चन्द्रमा और अन्य मण्डलों से ऐसे लाभ उठाए जा सकें जिस से पृथ्वी को लाभ हो तो इस का भाव यही होगा कि ज़मीन फैल गई है।

وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ۝٥

और जो कुछ उस में है वह उसे निकाल[1] फेंकेगी तथा ख़ाली हो जाएगी[2] ।५।

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝٦

और अपने रब्ब की बात सुनने के लिए कान धरेगी[3] और यही उस पर फ़र्ज़[4] है ।६।

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۝٧

हे मानव ! तू अपने रब्ब की ओर अपनी पूरी शक्ति[5] लगा कर जाने वाला है और फिर उस से मिलने वाला है ।७।

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۝٨

अत: जिस के सीधे हाथ[6] में उस के कर्मों का सूची-पत्र दिया जायगा ।८।

---

1. भाव यह है कि उस युग में भूगर्भ-विज्ञान बहुत विस्तृत हो जाएगा और पृथ्वी के सूक्ष्म रहस्य ज़ाहिर हो जाएंगे जैसा कि आज कल पृथ्वी के विभिन्न वर्गों का ज्ञान हो रहा है और उस से पृथ्वी तथा आकाश की आयु का अनुमान लगाया जा रहा है । उन वर्गों के उपलक्ष्य ऐसे अनेक लाभ प्राप्त किए जा रहे हैं जिन से मानव-समाज को लाभ पहुँच रहा है ।

2. 'ख़ाली हो जाएगी' से यह अभिप्राय नहीं कि कोई भी गुण उस में नहीं रहेगा, अपितु तात्पर्य यह है कि इतनी मात्रा में पृथ्वी के रहस्य प्रकट होंगे कि ऐसा प्रतीत होगा कि मानो कोई भी रहस्य उस से शेष नहीं रह गया है ।

3. यहाँ ज़मीन से अभिप्राय ज़मीन के रहने वाले हैं और तात्पर्य यह है कि जिस समय यह बातें ज़ाहिर होंगी अल्लाह क़ुर्आन-मजीद के प्रचार के लिए ऐसे सामान पैदा करेगा कि ज़मीन के रहने वाले इस पर आश्चर्य करने लग जाएँगे ।

4. इस में यह संकेत है कि उस अन्तिम युग के आने से पहले भी उस का यही कर्त्तव्य था, परन्तु अफ़सोस ! कि उस ने अन्तिम युग अर्थात् उस दिन की प्रतीक्षा की कि ज़मीन से भी निशान ज़ाहिर होने लगे तथा आसमान से भी ।

5. अर्थात् अल्लाह के दर्शन पूरी ज़िन्दगी परिश्रम करने के बाद प्राप्त होते हैं सिवाय इस के कि जिस के लिए अल्लाह चाहे ।

6. सीधे हाथ का भाव नेकी है । अत: सीधे हाथ में कर्मपत्र देने का अर्थ यह है कि उस व्यक्ति की नेकियाँ बहुत होंगी और उस के सीधे हाथ में कर्मपत्र आते ही उसे पता चल जाएगा कि वह स्वर्ग में जाने वाला है ।

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ۝٩

तो उस से जल्दी ही उस का आसान हिसाब[1] ले लिया जाएगा ।९।

وَّيَنْقَلِبُ اِلٰٓى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۝١٠

और वह अपने परिवार की ओर प्रसन्न-चित्त लौटेगा ।१०।

وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ۝١١

और जिसे उस की पीठ के पीछे से उस के कर्मों का सूची-पत्र दिया जाएगा ।११।

فَسَوْفَ يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۝١٢

वह जल्दी ही अपने मुंह से अपनी तबाही को बुलाएगा[2] ।१२।

وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ۝١٣

और भड़कती हुई आग में दाख़िल होगा[3] ।१३।

اِنَّهٗ كَانَ فِيْٓ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۝١٤

वह अपने परिवार में बहुत प्रसन्न रहा करता था[4] ।१४।

اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ۝١٥

(और) वह विश्वास रखता था कि सम्पन्न होने के बाद उसे कभी तंगी नहीं आएगी ।१५।

بَلٰٓى اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ۝١٦

परन्तु ऐसा तो (अवश्य) होना था, क्योंकि निश्चय ही उस का रब्ब उसे देख रहा था[5] ।१६।

---

1. सीधे हाथ में कर्मों का सूचीपत्र मिलने से उसे पता चल जाएगा कि अल्लाह ने उस का हिसाब ले लिया है और उस को स्वर्गवासी ठहरा दिया है और इस से ज्यादा आसान हिसाब और क्या हो सकता है ।

2. अर्थात् उस समय ऐसे विधर्मी पर यह बात खुल जाएगी कि वह बहुत बड़ा अज़ाब पाने वाला है और वह समझेगा कि इस अज़ाब से बचने का एक ही साधन है कि उसे बिल्कुल मिटा दिया जाए और वह ख़ुदा से प्रार्थना करेगा कि मुझे अज़ाब न दो मुझे मिटा दो ।

3. अर्थात् उस की प्रार्थना स्वीकार नहीं की जाएगी और उसे नरक में डाल दिया जाएगा ।

4. अर्थात् वह संसार में बड़ा घमण्डी था और अपने परिवार में प्रसन्न चित्त रहा करता था मानों वह बड़ा सफल व्यक्ति है ।

5. अल्लाह कहता है कि उस का यह विचार ग़लत निकला क्योंकि ख़ुदा उस के कर्मों को देख रहा था तथा उस के कर्मों के अनुसार उसे दण्ड देने के लिए घात में बैठा हुआ था ।

فَلَآ اُقۡسِمُ بِالشَّفَقِ ۝١٧	और हम उन के विचार के ग़लत होने के प्रमाण में शफ़क़[1] (संध्या की लाली) को पेश करते हैं।१७।
وَالَّيۡلِ وَمَا وَسَقَ ۝١٨	और रात को भी और उसे भी जिसे वह समेट लेती है।१८।
وَالۡقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ۝١٩	और चन्द्रमा[2] को भी जब वह तेरहवीं का हो जाए (गवाही के तौर पर पेश करते हैं)।१९।
لَتَرۡكَبُنَّ طَبَقًا عَنۡ طَبَقٍ ۝٢٠	तुम अवश्य ही क्रमशः इन हालतों को पहुँचोगे।२०।
فَمَا لَهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۝٢١	और इन इन्कार करने वालों को क्या हुआ है कि ईमान नहीं लाते।२१।
وَاِذَا قُرِئَ عَلَيۡهِمُ الۡقُرۡاٰنُ لَا يَسۡجُدُوۡنَ ۝٢٢	और जब उन के सामने क़ुर्आन पढ़ा जाए तो सजदः नहीं करते।२२।
بَلِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يُكَذِّبُوۡنَ ۝٢٣	बल्कि इन्कार करने वाले अपने इन्कार में इतने बढ़ गए हैं कि वह (क़ुर्आन की सच्चाई) को झुठलाने लग गए हैं।२३।
وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا يُوۡعُوۡنَ ۝٢٤	और अल्लाह उसे जिसे वे अपने दिलों में छिपाए हुए हैं खूब जानता है।२४।

1. अर्थात् जिस तरह शफ़क़ (अर्थात् संध्या की लाली) का समय छोटा होता है इसी प्रकार जब इस्लामी सूर्य अस्त होगा तो वह समय भी छोटा होगा तथा पुनः सूर्योदय का समय निकट हो जाएगा।

2. जिस प्रकार तेरहवीं, चौदहवीं, पन्द्रहवीं और सोलहवीं का चाँद पूरा होता है इसी तरह तेरहवीं, चौदहवीं, पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में पूर्ण रूप से इस्लाम की उन्नति होती चली जाएगी।

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

अतः उन के छिपे हुए विचारों तथा और ज़ाहिरी कर्मों के कारण उन्हें पीड़ादायक अज़ाब की सूचना दे दे।२५।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

परन्तु वे लोग जो ईमान लाए और उन्हों ने परिस्थिति के अनुकूल कर्म किए उन्हें एक न समाप्त होने वाला अच्छा (बदला) मिलने वाला है।२६। (रुकू १/९)
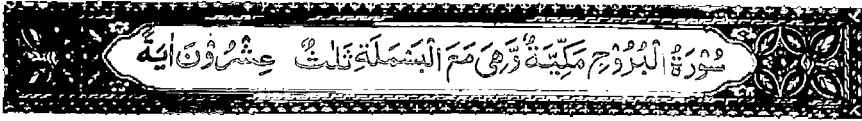
सूरः अल्-बुरूज

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की तेईस आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝

मैं अल्लाह का नाम ले कर पढ़ता हूँ जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ۝

मैं बुर्जों (राशि-चक्रों) वाले आसमान[1] को गवाही के रूप में पेश करता हूँ।२।

1. आसमान के उन काल्पनिक स्थानों को 'बुर्ज' या 'राशि-चक्र' कहते हैं जिन के बारे में यह समझा जाता है कि सूर्य उन में से गुज़रता है। अतः यहाँ यह कहा गया है कि मैं बुर्जों वाले आसमान को गवाही के रूप में पेश करता हूँ अर्थात् रूहानी और आध्यात्मिक आसमान के जो सूर्य हैं उन की आध्यात्मिक उन्नति को गवाही के रूप में पेश करता हूँ अर्थात् जैसे-जैसे वे अपनी आध्यात्मिक उड़ान में विकास करेंगे। क़ुर्आन-मजीद की सच्चाई की गवाही देते चले जाएँगे।

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۝

और उस दिन को भी (गवाही के रूप में पेश करता हूँ) जिस का वादा[1] दिया गया है ।३।

وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ۝

और (जिस का वादा दिया गया है उस) गवाह[2] को और उस व्यक्ति को जिस के बारे में पहली धर्म-पुस्तकों में भविष्यवाणी पाई जाती है ।४।

قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۝

खाइयों[3] वाले विनष्ट हो गए ।५।

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۝

अर्थात् (खाइयों में) आग (भड़काने वाले) जिस में खूब ईंधन[4] (झोंका गया) था ।६।

اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ۝

जब वे उस आग पर (धरना[5] मार कर) बैठे हुए थे ।७।

وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ۝

और वे मोमिनों से जो कुछ (मामिला) कर रहे थे उन का दिल उस की वास्तविकता को समझता[6] था ।८।

---

1. अर्थात् वह दिन जब मानव अपने रब्ब की कृपा से अपने रब्ब को पा लेगा ।

2. अर्थात् उस दिन एक ऐसा महापुरुष जाहिर होगा जो अल्लाह से वह्य और इल्हाम पा कर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की सच्चाई की गवाही देगा तथा दूसरी ओर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के वक्तव्य में उस की सच्चाई पर गवाही होगी । अतः वह शाहिद अर्थात् गवाही देने वाला भी होगा और मशहूर भी होगा अर्थात् उस के लिए गवाही दी गई होगी ।

3. अर्थात् सच्चे धर्मों के शत्रु सदा ही मोमिनों का नाश करने के लिए आग भड़काते रहते हैं किन्तु उन का नाश करने में असफल रहते हैं और स्वयं उन का नाश हो जाता है ।

4. अर्थात् यह आग जो सच्चे धर्मों या धार्मिक सुधारकों के ख़िलाफ़ भड़काई जाती है साधारण आग नहीं होती बल्कि बार-बार शत्रुता के ईंधन से उसे भड़काया जाता है ।

5. अर्थात् सच्चाई के दुश्मन उस आग के पास बैठे रहते हैं ताकि जब वह कुछ कम हो तो उस में ईंधन डाल दें ।

6. अर्थात् यद्यपि मोमिनों और सुधारकों का विरोध करने वाले उन्हें दुःख देते हैं, परन्तु उन के दिल गवाही देते हैं कि वे अत्याचार कर रहे हैं और कई बार उन के मुँह से निकल जाता है कि यह बहुत बुरी बात है ।

وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّاۤ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ

और वे उन से केवल इस लिए शत्रुता करते थे कि वे प्रभुत्वशाली और सब स्तुतियों के मालिक अल्लाह् पर क्यों ईमान लाए[1] ।९।

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ؕ

वह अल्लाह् जिस के आधिपत्य में आसमान और ज़मीन का राज्य है और (यह नहीं सोचते कि) अल्लाह् प्रत्येक वस्तु (की परिस्थिति) को जानता[2] है ।१०।

اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ؕ

वे लोग जिन्हों ने मोमिन पुरुषों और मोमिन महिलाओं को अज़ाब में ग्रसित किया, फिर (अपने कुकर्म से) तौबः अर्थात् पश्चाताप भी न किया। निस्सन्देह उन्हें नरक का अज़ाब मिलेगा और इस लोक में भी उन्हें (दिल) जलाने वाला अज़ाब मिलेगा ।११।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ؕ

और जो लोग ईमान लाए और साथ ही उस ईमान के अनुकूल उन्हों ने कर्म भी किए उन्हें बाग़ मिलेंगे जिन के नीचे नहरें[3] बहती होंगी और यही महान सफलता है ।१२।

اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ؕ

निस्सन्देह तेरे रब्ब की पकड़ बहुत सख़्त[4] हुआ करती है ।१३।

---

1. यह आयत पहली आयत का समर्थन करती है अर्थात् उन विरोधियों के विरोध की कोई आधार-शिला नहीं होती बल्कि ईर्ष्या-द्वेष ही उस का कारण होता है।

2. अर्थात् उन का विरोध जितने-जितने ईर्ष्या और द्वेष के कारण होगा उसी के अनुसार उन्हें दण्ड मिलेगा।

3. पवित्र क़ुर्आन-मजीद में बार-बार यह आया है कि स्वर्ग के नीचे नहरें बहती हैं। वस्तुतः जो नहरें बाग़ों में बहती हैं वे उन के नीचे नहीं बहतीं। इस के बारे में याद रखना चाहिए कि सांसारिक बाग़ों में जो नहरें बहती हैं वह सरकार अथवा किसी बड़े ज़मींदार के अधीन होती हैं किन्तु अल्लाह् कहता है कि स्वर्ग में बहने वाली नहरें उन में निवास करने वालों के आधिपत्य में होंगी और वे वहाँ के वृक्षों तथा पानियों के भी पूरे-पूरे मालिक होंगे।

4. इस लिए उस से बचने के लिए कोशिश करनी चाहिए।

إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ⑬

(क्योंकि) वही संसार के अज़ाब को प्रारम्भ करता है और (यदि कोई जाति पाप करने से न रुके तो) बार-बार अज़ाब लाता है।१४।

وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ⑭

और इस के साथ ही वह अत्यन्त क्षमा करने वाला और बहुत ज़्यादा प्रेम[1] करने वाला भी।१५।

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ⑮

वह अर्श[2] का मालिक और बड़ी शान वाला है।१६।

فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ⑯

जिस बात का इरादा कर ले उसे कर के रहने वाला है।१७।

هَلْ أَتٰىكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ⑰

क्या तुम्हें सच्चाई के शत्रुओं के सेना-दलों का समाचार नहीं मिला।१८।

فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ⑱

अर्थात् फ़िरऔन और समूद के सेना-दलों का।१९।

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ⑲

वास्तविकता तो यह है कि इन्कार करने वाले लोग इन्कार की बीमारी में ग्रसित हैं।२०।

وَّاللَّهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيطٌ ⑳

हालाँकि अल्लाह उन्हें उन के पीछे से घेरने वाला है।२१।

---

1. अर्थात् अल्लाह के अज़ाब देने से यह नहीं समझना चाहिए कि वह दयाहीन है। क़ुर्आन-मजीद इस बात से भरा हुआ है कि अल्लाह इन्कार करने वाले लोगों पर भी कभी इस लोक में तथा कभी परलोक में दया करता है।

2. अर्श से अभिप्राय अल्लाह की हुकूमत है और बड़ी शान वाले अर्श का मालिक होने से अभिप्राय यह है कि अल्लाह ऐसे विधानों द्वारा संसार में हुकूमत करता है जिस से उस की बड़ी शान ज़ाहिर होती है तथा अत्याचार सिद्ध नहीं होता।

بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿٢٢﴾

यह भी एक सच्चाई है कि वह क़ुर्आन (जो इन बातों की सूचना दे रहा है) एक गौरव-शाली कलाम है और हर जगह तथा हर युग में पढ़ा[1] जाने वाला कलाम है।२२।

فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿٢٣﴾

(तथा इस की और विशेषता यह है कि) वह लौहे-महफ़ूज़[2] में है।२३। (रुकू १/१०)

سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَمَانِيْ عَشْرَةَ اٰيَةً
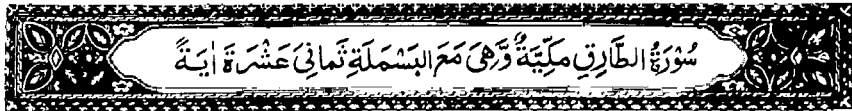
सूरः अल्-तारिक़

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की अठारह आयतें एक एवं रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿١﴾

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ﴿٢﴾

मैं आसमान को तथा प्रातःकाल के नक्षत्र को गवाही के तौर पर पेश करता हूँ।२।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ﴿٣﴾

और तुझे किस चीज ने बताया है कि प्रातःकाल का नक्षत्र क्या है ?।३।

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿٤﴾

यह नक्षत्र (वह है) जो बहुत चमकता है।४।

1. यह अर्थ हम ने क़ुर्आन शब्द का किया है, क्योंकि इस का अर्थ है वह किताब जिसे सदैव पढ़ा जाए।
2. अर्थात् क़ुर्आन क़ियामत तक कायम रहेगा।

إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ٤

(हम पूरी शक्ति से कहते हैं कि ऐसी) कोई जान नहीं जिस पर एक निरीक्षक (खुदा की ओर से) नियुक्त न हो ।५।

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ٥

अतः मनुष्य को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है ।६।

خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ٦

वह एक उछलने वाले पानी से पैदा किया गया है ।७।

يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ٧

वह (पानी अथवा मनुष्य) पीठ और सीने (की हड्डियों) के बीच[1] से निकलता है ।८।

إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ٨

वह (खुदा) उस के दोबारा लौटाने पर भी निस्सन्देह सामर्थ्य रखता है ।९।

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ٩

उस दिन जब छिपे हुए भेद ज़ाहिर किए जाएँगे ।१०।

فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ١٠

जिस के फलस्वरूप न तो (अपने ऊपर से विपत्ति दूर करने की) कोई शक्ति उस (मनुष्य) के पास रहेगी और न उस का कोई सहायक होगा ।११।

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ١١

मैं गवाही के तौर पर उस बादल को पेश करता हूँ जो पानी से भरा हुआ बार-बार बरसता है ।१२।

وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ١٢

और उस ज़मीन को भी गवाही के तौर पर पेश करता हूँ जो वर्षा होने के बाद फट कर रोंआँ निकालती है ।१३।

---

1. अर्थात् सन्तान पैदा करने वाले यन्त्रों से जो पीठ और सीने की हड्डियों के बीच होते हैं । यह पवित्र क़ुर्आन का कमाल है कि नंगी से नंगी बात को सूक्ष्म संकेत में वर्णन कर देता है ।

إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝١٤

यह गवाही इस बात पर है कि वह (क़ुर्आन) निस्सन्देह अटल[1] तथा अन्तिम बात है।१४।

وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۝١٥

और वह कोई व्यर्थ[2] और कमज़ोर[3] कलाम (वाणी) नहीं।१५।

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۝١٦

वे लोग निस्सन्देह इस क़ुर्आन के ख़िलाफ़ बड़े छल-कपट से काम लेंगे।१६।

وَأَكِيدُ كَيْدًا ۝١٧

और मैं (ख़ुदा) उन के ख़िलाफ़ ख़ूब उपाय करूँगा (और सच्चाई खुल जाएगी)।१७।

فَمَهِّلِ الْكَافِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ۝١٨

अतः (हे रसूल!) इन्कार करने वाले लोगों को ढील[4] दो, हाँ! उन्हें कुछ दिन की और ढील दो (ताकि वे जो ज़ोर लगाना चाहें लगा लें)।१८। (रुकू १/११)

1. अर्थात् जब अल्लाह ने इस संसार की तृप्ति के लिए वर्षा उतारी है और एक ही बार नहीं की वल्कि थोड़े-थोड़े समय के बाद वह वर्षा करता रहता है तो यह क्योंकर हो सकता था कि आवश्यकता पड़ने पर आध्यात्मिक वर्षा न हो जो क़ुर्आन या उस का समर्थन करने वाली वह्य और ईशवाणियाँ हैं।

2. ऊपर के प्रमाणों से यह भी सिद्ध होता है कि क़ुर्आन एक फ़ैसला करने वाली किताब है क्योंकि वह प्रत्येक बात को प्रमाणो के साथ वर्णन करता है। यदि उस के प्रमाण सत्य सिद्ध न होंगे तो वह स्वयं झूठा हो जाएगा और यदि उस के प्रमाण सच्चे होंगे तो वह स्वयं सच्चा सिद्ध हो जाएगा। इस के ख़िलाफ़ दूसरी किताबें बिना प्रमाण के बात करती हैं इसलिए उन के सच्चे या झूठे होंने का अन्तर निकालना कठिन हो जाता है।

3. इस स्थान में बादलों और ज़मीन को पवित्र क़ुर्आन की सच्चाई के लिए पेश किया गया है अर्थात् जिस तरह वर्षा होती है और ज़मीन रोआँ निकालती है। इसी तरह पवित्र क़ुर्आन-मजीद के उतरने पर बहुत पवित्र और नेक सन्तति पैदा होगी और ऐसी उत्तम सन्तति पैदा होगी जो सिद्ध कर देगी कि पवित्र क़ुर्आन अन्तिम किताब है और इस के बाद किसी और किताब की आशा रखना व्यर्थ है। न तो इस क़ुर्आन में कोई कमज़ोरी है और न ही कोई निरर्थक बात है। जो बात भी इस में वर्णन हुई है बड़ा लाभ देने वाली और बड़ी मज़बूत है।

4. इस आयत में बताया गया है कि इन्कार करने वाले लोग क़ुर्आन-मजीद के ख़िलाफ़ हर प्रकार के उपाय करेंगे, यदि क़ुर्आन-मजीद झूठा होता तो कदापि सफल न होता, परन्तु चूंकि वे अल्लाह की ओर

(शेष पृष्ठ १३६५ पर)

सूर: अल्-आला

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की बीस आयतें तथा एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ②

हे रसूल ! तू अपने ऊंची शान वाले रब्ब के नाम के बे-ऐब (निष्कलंक) होने का वर्णन कर।२।

الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى ③

(वह) जिस ने (मनुष्य को) पैदा किया और उसे बे-ऐब[1] (निष्कलंक) बनाया।३।

(पृष्ठ १३६४ का शेष)

ओर से है जब वे लोग अल्लाह के कलाम को मिटाने की कोशिश करेंगे तो अल्लाह भी उन्हें मिटाने के उपाय करेगा और इस का परिणाम यही निकलेगा कि अल्लाह विजयी होगा और वे परास्त हो जाएँगे, हाँ ! जैसा कि अल्लाह का नियम है अज़ाब कुछ देर के बाद आया करता है और इसी की ओर इस आयत में संकेत किया है जिस में कहा है कि हे रसूल इन्कार करने वाले लोगों को ढील दे अर्थात् ढील देने के फल-स्वरूप वे अपना सारा ज़ोर इस्लाम के मिटाने में लगा देंगे और उन्हें यह कहने का अवसर नहीं मिलेगा कि हमें अर्थात् मुसलमानों को विनष्ट करने का समय नहीं मिला। अत: जब उन्हें समय मिल जाएगा तो फिर उन का मुँह बन्द हो जाएगा।

1. इस आयत में बताया गया है कि मानव-प्रकृति में आध्यात्मिक प्रगति का असीम उत्साह भरा गया है और उसे जिज्ञासा वृति प्रदान की गई है जो इस बात का प्रमाण है कि मानव-जाति की रचना करने वाला बे-ऐब और निर्दोष है। यदि वह स्वयं निर्दोष न होता तथा सारे गुणों का भण्डार न होता तो वह ऐसा मनुष्य कैसे पैदा कर सकता था।

وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَىٰ ۝٣

और जिस ने (उस की शक्तियों का) अनुमान लगाया और (उन के अनुसार) उसे हिदायत दी ।४।

وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَىٰ ۝٤

और जिस ने धरती से चारा निकाला ।५।

فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَىٰ ۝٥

फिर उसे काले रंग का कूड़ा-करकट बना दिया ।६।

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسَىٰ ۝٦

(हे मुसलमान !) हम तुझे इस तरह पढ़ाएंगे कि उस के फलस्वरूप तू भूलेगा नहीं[1] ।७।

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَىٰ ۝٧

सिवाय उस के जिसे अल्लाह भुलाना चाहे[2] । वह निस्सन्देह जाहिर को भी जानता है और उसे भी जो छिपा हुआ है ।८।

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرَىٰ ۝٨

और (हे मुसलमान !) हम तेरे लिए (सफ़लताओं और) आसानियों की प्राप्ती सहल कर[3] देंगे ।९।

---

1. अर्थात् क़ुर्आन-मजीद मुसलमानों के दिलों में इस तरह रचा दिया जाएगा कि उन में से कोई न कोई वर्ग क़ियामत तक इस से बहुत ज्यादा प्रेम करेगा तथा इस से पढ़ने-पढ़ाने में लगा रहेगा । मुसलमानों में सदा ऐसे महापुरुषों का प्रादुर्भाव होता रहेगा जो पवित्र क़ुर्आन का झण्डा ऊँचा रखेंगे ।

2. इस से विदित होता है कि सच्चाई से दूर अल्लाह नहीं करता बल्कि मनुष्य स्वयं ही सच्चाई से दूर होता है । इसी लिए कहता है कि हमारा काम तो यह है कि हम क़ुर्आन-मजीद मुसलमानों को सिखाएंगे किन्तु यदि मुसलमानों में से कुछ दुर्भागी उसे भुलाना चाहें तो चूंकि अल्लाह उन के जाहिर तथा उन के अन्दर की बात को जानता है वह उन के इरादा में रोक नहीं बनेगा और कहेगा कि जब यह स्वयं विनष्ट होना चाहते हैं तो होने दो ।

3. इस आयत में बताया गया है कि पवित्र क़ुर्आन-मजीद जो मानव-प्रकृति के अनुकूल है उस पर चलना कुछ भी कठिन नहीं और यदि कोई व्यक्ति इस पर चलना चाहे तो अल्लाह भी उस की सहायता करता है और उस पर चलना और भी आसान कर देता है ।

فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ۝

अतः तुम भी उपदेश[1] दो (क्योंकि) सदुपदेश सदा ही लाभदायक सिद्ध होता रहा है ।१०।

سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۝

जो (ख़ुदा से) डरता है वह निश्चय ही शिक्षा प्राप्त करेगा ।११।

وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۝

और (इस के ख़िलाफ़) जो बहुत दुर्भागी होगा वह इस से मुँह मोड़ता रहेगा[2] ।१२।

الَّذِيْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۝

वही जो बहुत बड़ी आग में दाख़िल होने वाला[3] है ।१३।

ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝

फिर (उस में दाख़िल होने के बाद) न तो मरेगा और न जीवत[4] रहेगा ।१४।

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۝

जो पवित्र बनेगा वह निस्सन्देह सफ़ल होगा ।१५।

---

1. अर्थात् जब अल्लाह मनुष्य को हिदायत देता है तो मनुष्य के लिए भी ज़रूरी है कि वह भी अल्लाह का अनुसरण करते हुए दूसरे मनुष्यों को सदुपदेश देता रहे और यह कभी न समझे कि दुराचारी तथा पथभ्रष्ट व्यक्ति हिदायत नहीं पा सकते बल्कि आशा रखे कि जिस व्यक्ति के दिल में लेश-मात्र भी अल्लाह का भय होगा वह अवश्य उपदेश प्राप्त कर लेगा ।

2. अर्थात् वही व्यक्ति पवित्र क़ुर्आन से मुँह मोड़ेगा जिस के कुकर्मों ने उस के दिल पर मुहर लगा दी होगी ।

3. अर्थात् जिस के कुकर्मों के कारण अल्लाह ने फ़ैसला कर दिया होगा कि उसे नरक की आग में डाला जाए ।

4. अर्थात् वह अज़ाब बहुत कठोर होगा उस अज़ाब को उस की तीव्रता के कारण मृत्यु भी कह सकते हैं तथा जीवन भी, क्योंकि तेज़ जलाने वाली आग के कारण उस का चमड़ा सख्त हो जाएगा और उस की चेतना शक्ति कम हो जाएगी । अतः नरक में मनुष्य की हालत ऐसी होगी कि न वह मुर्दा कहला सकेगा तथा न जीवित ।

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ⑯

परन्तु यदि (पवित्र बनने के लिए साथ-साथ) उस ने अपने रब्ब का नाम भी लिया हो और नमाज़ पढ़ता रहा हो ।१६।

بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ⑰

किन्तु (हे विरोधियो !) तुम लोग तो लौकिक-जीवन को (आख़िरत के जीवन पर) प्रधानता देते हो ।१७।

وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ⑱

हालाँकि परलोक (अर्थात् आख़िरत का जीवन) बहुत उत्तम और स्थायी है ।१८।

اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ⑲

निस्सन्देह यही बात पहली किताबों में भी लिखी है ।१९।

صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ⑳

(अर्थात्) इब्राहीम और मूसा की किताबों[1] में ।२०। (रुकू १/१२)

---

1. अर्थात् यह शिक्षा ऐसी साधारण है कि सारे रसूलों की शिक्षा का जो-जो भाग भी सुरक्षित है उस से क़ुर्आन का समर्थन होता है । पहले नबियों की शिक्षा को सुरक्षित रखने का बहुत कम प्रयास किया गया हैं । केवल यहूदियों ने अपनी किताब 'तालमूद' में कुछ नबियों और सुधारकों की शिक्षा को संग्रह करने का प्रयत्न किया गया है । उस के पढ़ने से पता चल सकता है कि क़ुर्आन-मजीद की अनेक सच्चाईयाँ पहले नबियों द्वारा भी वर्णन होती रही हैं जो इस बात का प्रमाण हैं कि क़ुर्आन-मजीद के विशेष अंश पहली क़िताबों में भी मौजुद हैं ।
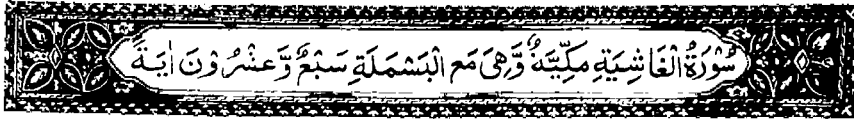
सूर: अल्-ग़ाशिय:

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की सताईस आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह् का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ②

क्या तुझे संसार पर छा जाने वाली विपत्ति का भी समाचार पहुँचा है।२।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ③

उस दिन[1] जब वह (विपत्ति छा जाएगी) कुछ चेहरे उतरे हुए होंगे।३।

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ④

(वह) परिश्रम कर रहे होंगे और थक कर चूर हो रहे होंगे।४।

تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ⑤

(किन्तु इस परिश्रम से कोई लाभ नहीं होगा) और वह सम्प्रदाय एक भड़कती हुई आग में दाख़िल होगा।५।

تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ⑥

और उस सारे सम्प्रदाय को खौलते हुए स्रोत से पानी पिलाया जाएगा।६।

---

1. यहाँ उस अज़ाब की सूचना दी गई है जो अन्तिम युग में मानव-जाति पर आने वाला है और बताया गया है कि जब वह अज़ाब आएगा तो अपराधी लोगों के चेहरे उतरे हुए और सहमे हुए होंगे और वे उस विपत्ति से छुटकारा पाने के लिए पूरा ज़ोर लगाएँगे।

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ ضَرِيعٍ ⑥	उस को सूखे शिब्रिक़[1] घास के सिवा दूसरा कोई भोजन नहीं मिलेगा ।७।
لَا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ⑦	जो न तो उन्हें हृष्ट-पुष्ट करेगा और न भूख (के कष्ट) से बचाएगा ।८।
وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاعِمَةٌ ⑧	उस दिन कुछ दूसरे चेहरे प्रसन्न होंगे ।९।
لِسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ⑨	अपनी पिछली कोशिशों पर सन्तुष्ट होंगे ।१०।
فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ⑩	ऊँचे स्वर्ग में रह रहे होंगे ।११।
لَا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً ⑪	वे उस में कोई व्यर्थ बात नहीं सुनेंगे ।१२।
فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ⑫	उस में बहता हुआ एक स्रोत होगा ।१३।
فِيهَا سُرُرٌ مَرْفُوعَةٌ ⑬	और उस (स्वर्ग) में ऊँचे सिंहासन भी रखे होंगे ।१४।
وَأَكْوَابٌ مَوْضُوعَةٌ ⑭	और पानी पीने के कटोरे रखे होंगे ।१५।
وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ⑮	और सहारा लेने वाले तकिये (सहारा लेने के लिए) पंक्तियों में रखे होंगे ।१६।
وَزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ⑯	और क़ालीनें बिछी हुई होंगी ।१७।

1. अरबी भाषा में 'ज़री' और 'शिब्रिक़' दो शब्द हैं जिन से अभीष्ट ऐसी घास है जो बिना जड़ के होती है । सूखी घास को 'ज़री' और हरी घास को शिब्रिक अर्थात् अमर वेल कहते हैं और इस का विशेष गुण यह है कि इस के खाने से कोई लाभ नहीं होता अर्थात् न तो इस के खाने से मनुष्य के स्वास्थ्य में वृद्धि होती है और न ही वह हृष्ट-पुष्ट हो सकता है । अतः पवित्र क़ुर्आन ने भी इस का यही अर्थ किया है कि नरक-निवासियों को ऐसे भोजन नहीं मिलेंगे जो स्वास्थ्य वर्द्धक हों बल्कि ऐसे भोजन मिलेंगे जो न तो शक्ति बढ़ाएँगे तथा न उन से भूख ही मिटेगी ।

أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝

क्या वे बादलों[1] को नहीं देखते कि वह किस तरह पैदा किए गए हैं ? ।१८।

وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝

और आसमान[2] (को नहीं देखते कि) कैसे ऊँचा किया गया है । १९।

وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝

और पर्वतों[3] को नहीं देखते कि किस तरह गाड़े गए हैं ।२०।

وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝

और ज़मीन को नहीं देखते कि किस तरह समतल[4] बनाई गई है ।२१।

فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنتَ مُذَكِّرٌ ۝

अतः उपदेश दे क्योंकि तू तो केवल उपदेश देने वाला है ।२२।

---

1. मूल शब्द 'इबिल' का साधारण अर्थ 'ऊँट' है परन्तु इस शब्द का अर्थ बादल भी शब्दकोश में लिखा है (मुफ़दात) अल्लाह इस आयत में कहता है कि बादल एक स्थान से उठते हैं और सारे संसार में फैल जाते है । क्या क़ुर्आन के विरोधी यह भी नहीं समझते कि बादलों को पैदा करने वाला ख़ुदा जिस ने उन के द्वारा सारे संसार में पानी फैला दिया है, क्या क़ुर्आन-मजीद के आध्यात्मिक पानी को सारे संसार में नहीं फैला सकता ?

2. अर्थात् जिस तरह यह आसमान ऊँचा किया गया है इसी तरह आध्यात्मिक आसमान अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को ऊँचा किया जाएगा ।

3. मूल शब्द 'जबल' का अर्थ पर्वत है और इस का अर्थ बड़े लोग भी होते हैं । चूंकि पहले हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के सहाबा (साथियों) का वृत्तान्त है इस लिए यहाँ जबल से अभीष्ट भी मुसलमानों के बड़े-लोग ही लिए जाएँगे और इस आयत का अर्थ यह होगा कि क्या वे सहाबा को नहीं देखते कि वे किस प्रकार गाड़े हुए हैं अर्थात् शत्रुओं के भयंकर आक्रमणों पर भी अपने स्थान पर डटे हुए हैं और अपने स्थान से इधर-उधर नहीं होते ।

4. इस से वह भू-भाग अभीष्ट है जिस पर सहाबा अपने घोड़े दौड़ाते थे । इस में बताया गया है कि इन्कार करने वाले धरती को नहीं देखते कि वह मुसलमानों के लिए किस तरह समतल बनाई गई है जिधर चाहते हैं धावा मारते हैं और कोई उन के सामने खड़ा नहीं होता ।

لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾

तू उन लोगों पर निरीक्षक नियुक्त नहीं है।२३।

إِلَّا مَنْ تَوَلَّىٰ وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾

किन्तु जिस ने पीठ फेर ली और इन्कार किया।२४।

فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ﴿٢٤﴾

इस के परिणाम स्वरूप अल्लाह उसे सब से बड़ा अज़ाब देगा।२५।

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾

निस्सन्देह उन्हें हमारी ही ओर लौटना है।२६।

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

फिर उन से लेखा लेना भी निस्सन्देह हमारा ही काम है।२७। (रुकू १/१३)
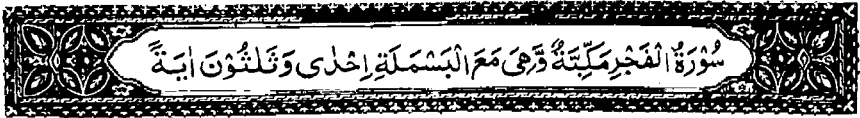
सूरः अल्-फ़ज्र

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की इकतीस आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿١﴾

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

وَالْفَجْرِ ﴿٢﴾

मैं गवाही के तौर पर एक आने वाली सुबह[1] को पेश करता हूँ।२।

1. अर्थात् मदीना की ओर हिजरत करने को।

وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾	और दस[1] रातों को भी ।३।
وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾	और एक जुफ़्त (युग्म) को और एक वत्र (अयुग्म) को ।४।
وَالَّيْلِ إِذَا يَسْرِ ﴿٤﴾	और (ऊपर वर्णन की हुई दस रातों के बाद आने वाली) रात को जब यह चल[2] पड़े ।५।
هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ﴿٥﴾	क्या इस में बुद्धिमानों के लिए कोई क़सम अर्थात् गवाही) है (या नहीं ?) ।६।
اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾	क्या तू जानता है कि तेरे रब्ब ने आद जाति के लोगों से क्या व्यवहार किया ।७।
اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٧﴾	अर्थात् आद-इरम से जो बड़े-बड़े भवनों वाले थे ।८।
الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾	वे लोग जिन के समान कोई जाति उन देशों में पैदा नहीं की गई थी ।९।
وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾	और क्या समूद (के बारे में भी तुझे कुछ जानकारी है) जो घाटियों में चट्टानें खोद कर (अपने घर) बनाते थे ।१०।

1. इस सूरः के उतरने के बाद दस वर्ष हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम मक्का नगर में रहे जो कष्ट के वर्ष थे और रात के समान थे। इस के बाद हिजरत हुई जिस में जुफ़्त (युग्म) का दृश्य भी था तथा वत्र (अयुग्म) का भी अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम और हज़रत अबूबकर हिजरत में शामिल थे और अल्लाह जो एक है आसमान से उन के साथ शामिल था (सूरः तौबः आयत 40)।

2. इस में बताया गया है कि हिजरत के बाद जब मदीना में कष्टों भरी रात आएगी तो वह जल्दी ही समाप्त हो जाएगी।

وَفِرْعَوْنَ ذِى الْاَوْتَادِ ۝١١

और फ़िरऔन (के बारे में भी तुझे कुछ पता है) जो पर्वतों[1] का मालिक था।११।

الَّذِيْنَ طَغَوْا فِى الْبِلَادِ ۝١٢

वे (पर्वत) जिन्हों ने नगरों में घोर उपद्रव फैला रखा था।१२।

فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ۝١٣

और उपद्रव में बढ़ते ही जाते थे।१३।

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۝١٤

जिस पर तेरे रब्ब ने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया।१४।

اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝١٥

तेरा रब्ब निस्सन्देह घात में लगा हुआ है।१५।

فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ ۝١٦

अतः (देखो तो) मनुष्य की हालत को कि जब उस का रब्ब उसे परीक्षा में डालता है और उसे आदर प्रदान करता है तथा उसे निअमत देता है तो वह कहता है कि (मैं ऐसी शान वाला हूँ कि) मेरे रब्ब ने भी मेरा सम्मान किया।१६।

وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ۝١٧

और जब अल्लाह उसे परीक्षा में डालता है और उस की रोज़ी को तंग कर देता है तो वह कहता है कि मेरे रब्ब ने (अकारण) मेरा निरादर किया।१७।

كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۝١٨

(अल्लाह अकारण ही दण्ड नहीं देता) बल्कि (अपराध तुम्हारा अपना है कि) तुम अनाथ का आदर नहीं करते थे।१८।

1. पर्वतों से अभिप्राय सरदार हैं और भाव यह है कि फ़िरऔन के सरदार लोग जो पर्वत कहलाने के योग्य थे तथा मिस्र के अनुशासन को अपने बल-बूते और शक्ति में चला रहे थे।

وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝١٩

और न निर्धन को भोजन कराने की एक-दूसरे को प्रेरणा दिलाते थे ।१९।

وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۝٢٠

और विर्सा[1] का धन सारे का सारा (भोग-विलास में) उड़ा देते थे ।२०।

وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝٢١

और तुम धन से बहुत ज़्यादा प्रेम करते थे ।२१।

كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝٢٢

सुनो ! जब ज़मीन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाएगा[2] ।२२।

وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝٢٣

और तेरा रब्ब इस शान[3] में आएगा कि फ़रिश्ते पंक्ति-बद्ध हो कर खड़े होंगे ।२३।

وَجِايْٓءَ يَوْمَئِذٍۢ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ

और उस दिन नरक निकट लाया जाएगा[4] ।

---

1. मरने वाला जो धन छोड़ जाता है वह विर्सा का धन कहलाता है ।

2. अर्थात् इन्कार करने वाले लोगों में फूट पड़ जाएगी और वे अलग-अलग हो जाएँगे या मुसलमान जिन क्षेत्रों में विजय प्राप्त करेंगे उन में रहने वाली जातियों में फूट पड़ जाएगी तथा वे संगठित हो कर मुसलमानों का मुक़ाबिला नहीं कर सकेंगे ।

3. अर्थात् अल्लाह और उस के फ़रिश्ते जब इन्कार करने वाले लोगों की ओर आते हैं तो अज़ाब ले कर उतरते हैं (देखिए सूरः हश्र आयत 3 और सूरः बक़रः आयत 211) ऐसा ही उस समय होगा और अल्लाह का आना तथा फ़रिश्तों का आना बताएगा कि उन लोगों का विनाश होने वाला है । इतिहास में आता है कि बद्र नामक युद्ध के अवसर पर इन्कार करने वालों ने फ़रिश्तों को देखा था जो उन पर तलवारें चलाते थे तथा उन पर पत्थर बरसाते थे और उन्हें उन फ़रिश्तों को साक्षात देखने का इतना विश्वास था कि जब बाद में मुसलमान उन से मिले तो उन्हों ने उन से कहा कि तुम्हारे पहलू में इस प्रकार की वर्दी पहने हुए युद्ध में एक सवार लड़ रहा था और उस सहाबी ने भी उस का अनुमोदन किया कि हाँ ! मैं ने भी देखा था। प्रतीत होता है कि बद्र के अवसर पर यह कश्फ़ी दृश्य मोमिनों तथा इन्कार करने वालों को दिखाया गया था ।

4. अर्थात् वह दण्ड भोगने का दिन होगा और इन्कार करने वालों को नरक दिखाई देने लग जाएगा ।

الْإِنْسَانُ وَأَنَّى لَهُ الذِّكْرَى ﴿٢٤﴾

उस अज़ाब के समय मनुष्य चाहेगा कि वह उपदेश हासिल करे किन्तु वह समय उपदेश से पूरा-पूरा लाभ उठाने का नहीं होगा[1] ।२४।

يَقُولُ يَالَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ﴿٢٥﴾

वह कहेगा काश ! मैं ने अपने इस जीवन के लिए कुछ आगे भेजा[2] होता ।२५।

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ﴿٢٦﴾

अत: उस दिन अल्लाह् के अज़ाब जैसा उसे कोई अज़ाब नहीं देगा ।२६।

وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ﴿٢٧﴾

और न उस की पकड़ जैसी कोई और पकड़ होगी ।२७।

يَاأَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٨﴾

हे वह जान जिसे शान्ति प्राप्त हो चुकी है ।२८।

ارْجِعِي إِلَى رَبِّكِ رَاضِيَةً

अपने रब्ब की ओर लौट[3] आ (इस हालत में

1. अल्लाह् की भेजी हुई किताबों में सदा दया की शिक्षा दी जाती है । फ़िरऔन आख़िरी समय में ईमान लाया तो उस के बारे में भी यही आदेश हुआ कि हम तुम्हारी सारी प्रार्थना तो स्वीकार नहीं कर सकते किन्तु तुम्हारे शरीर को सुरक्षित रखेंगे । (सूर: यूनुस आयत 93)

यही हालत मक्का-निवासियों की हुई जब मक्का पर विजय पा ली गई तो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने घोषणा कर दी कि अब तुम्हें कोई लानत-मुलामत नहीं की जाती और तुम्हें क्षमा दी जाती है । इस का भाव यही था कि वे क़त्ल और मौत के अज़ाब से बचाए गए हैं किन्तु उन को वह पद प्राप्त नहीं हुआ जो सब से पहले ईमान लाने वाले सहाबा को प्राप्त हुआ था । अल्लाह् पवित्र क़ुर्आन में कहता है कि जो लोग मक्का की विजय के बाद ईमान लाए वे उन लोगों के बराबर नहीं हो सकते जो उस में पहले ईमान लाए थे । (सूर: हदीद आयत 11)

2. अर्थात् परिणाम निकलने के समय चाहे इस लोक में निकले अथवा परलोक में वही कर्म मनुष्य के काम आते हैं जो वह पहले कर चुका है ।

3. इस में बताया गया है कि कामिल और पूरा सन्तोष अल्लाह् के मिलाप से ही प्राप्त होता है और मिलाप उस सहयोग का नाम है कि अल्लाह् की ओर से जो कुछ आए उसे मानव सहर्ष स्वीकार करे और मनुष्य जो काम भी करे वह अल्लाह् को प्यारा लगे ।

مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾

कि तू उस से प्रसन्न और वह तुझ से प्रसन्न है ।२९।

فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ﴿٢٩﴾

फिर (तेरा रब्ब तुझे कहता है कि) आ ! मेरे (विशेष) बन्दो और भक्तों में दाखिल[1] हो जा ।३०।

وَادْخُلِي جَنَّتِي ﴿٣٠﴾

और आ ! मेरे स्वर्ग में भी दाखिल हो जा ।३१। (रुकू १/१४)
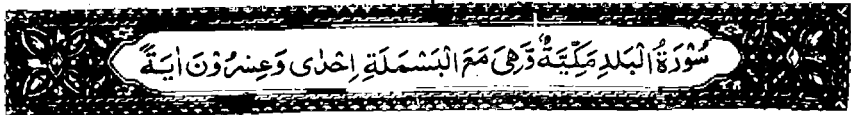
सूर: अल्-बलद

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की इक्कीस आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿١﴾

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) वार-वार दया करने वाला है ।१।

لَا أُقْسِمُ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾

(सुन लो ! तुम्हारी बात झूठी है) मैं इस बस्ती (मक्का) को तेरी सच्चाई के तौर पर पेश करता हूँ ।२।

وَأَنتَ حِلٌّ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ﴿٣﴾

और (कहता हूँ कि हे मुहम्मद !) तू (एक दिन) फिर इस बस्ती (मक्का) में वापस आने वाला है ।३।

---

1. जब मनुष्य ऊपर बताए गए स्थान तक पहुँच जाता है तो अल्लाह कहता है कि तू मेरे विशेष भक्तों में शामिल हो गया है जो निस्सन्देह और निश्चय ही स्वर्ग में जाएँगे ।

وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۝

और पिता[1] को भी और पुत्र को भी (गवाही के तौर पर पेश करता हूँ) ।४।

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي كَبَدٍ ۝

हम ने निस्सन्देह मानव-जाति को परिश्रम के वशीभूत बनाया[2] है ।५।

أَيَحْسَبُ أَن لَّن يَقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ۝

क्या वह यह समझता है कि उस पर किसी का ज़ोर नहीं चलेगा ? ।६।

يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ۝

वह कहता है कि मैं ने तो ढेरों-ढेर धन लुटा[3] दिया है ।७।

أَيَحْسَبُ أَن لَّمْ يَرَهُ أَحَدٌ ۝

क्या वह यह समझता है कि उसे कोई देखने वाला नहीं[4] है ? ।८।

---

1. यहाँ पिता और पुत्र से तात्पर्य हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल हैं जिन्हों ने मक्का-बस्ती का निर्माण किया था । वे दोनों भी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की सच्चाई के गवाह हैं क्योंकि उन दोनों ने मक्का की आधार-भूत शिला रखते समय यह प्रार्थना की थी कि इस में पवित्र करने वाले लोग आ कर बसें, किन्तु हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के समय में उस में अनेकेश्वरवादी बस रहे थे। अत: यह बात जरूरी थी कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम विजय प्राप्त करें और हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल की भविष्यवाणी भी पूरी हो जाए ।

2. अर्थात् मक्का की विजय आसानी से सम्भव नहीं बल्कि इस के लिए घोर परिश्रम की आवश्यकता होगी ।

3. अर्थात् चाहे ढेरों-ढेर धन-दौलत इस्लाम को मिटाने के लिए लुटा दें फिर भी इस्लाम विजयी होगा और वे असफल रहेंगे ।

4. अर्थात् परिणाम तो अल्लाह पैदा करता है । सांसारिक साधनों से परिणाम नहीं निकलते । इस लिए जब अल्लाह देख रहा है कि उन के दिलों में शिर्क और इन्कार है और वे अच्छे कर्म दिखावे के लिए करते हैं तो निस्सन्देह अल्लाह उन के कर्मों के कारण उन्हें सुख नही देगा बल्कि उन को अज़ाब ही देगा ।

أَلَمْ نَجْعَل لَّهُ عَيْنَيْنِ ⑧

क्या हम ने उस के लिए दो आँखें पैदा नहीं कीं[1] ? ।९।

وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ⑨

और ज़बान भी तथा दो होंठ भी पैदा नहीं किए[2] ? ।१०।

وَهَدَيْنَٰهُ ٱلنَّجْدَيْنِ ⑩

फिर हम ने उसे (हिदायत तथा गुमराही के) दोनों रास्ते भी बता दिए[3] हैं ।११।

فَلَا ٱقْتَحَمَ ٱلْعَقَبَةَ ⑪

परन्तु वह फिर भी शिखर पर न चढ़ा[4] ।१२।

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا ٱلْعَقَبَةُ ⑫

और तुझे किस ने बताया है कि शिखर क्या है (और किस चीज़ का नाम है) ? ।१३।

فَكُّ رَقَبَةٍ ⑬

(शिखर पर चढ़ना दास की) गर्दन छुड़ाना है । (अर्थात् उसे स्वतन्त्र कराना है) ।१४।

أَوْ إِطْعَٰمٌ فِى يَوْمٍ ذِى مَسْغَبَةٍ ⑭

या भूख के दिन भोजन कराना है ।१५।

---

1. अर्थात् दिल की आँखें जिस से वह सच्चाई को समझ सकता है ।

2. अर्थात् ज़बान और होंठों से अपनी शंकाओं को प्रकट करे और इस तरह शंका-समाधान के बाद अपने दिल को पवित्र करे ।

3. अर्थात् पवित्र क़ुर्आन ने स्पष्ट कर दिया है कि हिदायत क्या है और गुमराही क्या है । इस के बाद भी यदि कोई व्यक्ति गुमराही की ओर जाए तो यह उस का अपना दोष है क्योंकि अल्लाह ने आध्यात्मिक आँखें भी दी हुई हैं और यदि आँख से कोई चीज़ दीख न पड़े तो ज़बान और ओंठों से पूछ कर वह अपनी शंकाओं को दूर कर सकता है और इस तरह उन के सारे बहाने तोड़ दिए हैं और अल्लाह का कलाम तथा ईशवाणी उतार कर उन पर स्पष्ट कर दिया है कि हिदायत क्या है तथा गुमराही क्या है । आध्यात्मिक आँखें दे कर उन्हें इस बात की शक्ति दे दी है कि ईशवाणी के गुणों को पहचान सकें और ज़बान तथा हिदायत दे कर इस योग्य बनाया है कि यदि ईशवाणी का कोई भाग समझ में न आए तो दूसरे लोगों से पूछ कर उस को समझ लें ।

1. अर्थात् इतने अनेक साधनों के होते हुए फिर भी इन्कार करने वाला मनुष्य उन्नति के शिखर पर न चढ़ सका बल्कि गुमराही के गढ़े में गिरा रहा ।

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ⁽١٦⁾

अनाथ को जो नातेदार[1] हो।१६।

أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ⁽١٧⁾

या असहाय को जो धरती पर गिरा[2] हुआ हो।१७।

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ⁽١٨⁾

फिर (शिखर पर चढ़ना यह था कि इन कामों के सिवा) यह उन में से बन जाता जो ईमान लाए तथा जिन्हों ने परस्पर एक दूसरे को धैर्य धारण करने का उपदेश दिया और एक-दूसरे को दया करने का उपदेश[3] दिया।१८।

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ⁽١٩⁾

यही लोग तो बरकत वाले होंगे।१९।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ⁽٢٠⁾

और जिन्हों ने हमारी आयतों का इन्कार किया वे दुर्भाग्यशाली होंगे।२०।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُؤْصَدَةٌ ⁽٢١⁾

उन पर भट्ठी की आग का दण्ड उतरेगा।२१। (रुकू १/१५)

---

1. अर्थात् आध्यात्मिक उन्नति तभी मिलती है जब मानव संसार में दासता को मिटा दे अथवा दरिद्रता को दूर करे और इसी तरह अनाथों तथा असहाय लोगों की सुख-सुविधा का प्रबन्ध करे।

2. अर्थात् ऐसा असहाय व्यक्ति जिस का कोइ सहायक न हो क्योंकि जिस के मित्र होते हैं यदि वह धरती पर गिर भी जाए तो उस के मित्र उसे सहारा दे कर उठा लेते हैं। यह दरिद्र जिस को उठाना मुसलमानों का कर्त्तव्य है वह दरिद्र और असहाय है जिस का कोई भी सहायक नहीं होता वह यदि गिर जाता है तो उस को उठाने वाला कोई नहीं होता।

3. शिखर पर चढ़ने का कुछ स्पष्टीकरण पहले किया गया है अब कुछ और खोल कर वर्णन करता है और बताता है कि केवल शुभ-कर्म ही लाभ-प्रद नहीं होते जब तक कि मनुष्य ईमान न लाए और फिर केवल स्वयं अपने ईमान लाने पर ही सन्तुष्ट न हो बल्कि दूसरों को भी ईमान लाने और शुभ-कर्म करने की प्रेरणा देता रहे।
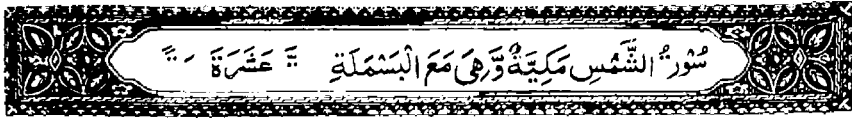
सूर: अल् - शम्स

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित
इस की सोलह आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम लेकर (पढ़ता हूं) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ②

मैं सूर्य को गवाही के रूप में पेश करता हूँ और ज़ुहा के समय को भी अर्थात् जब वह चढ़ने के बाद ऊँचा होता जाता है।२।

وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ③

और चन्द्रमा को जब वह सूर्य के पीछे[1] आता है।३।

وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا ④

और दिन[2] को (भी गवाही के रूप में पेश करता हूँ) जब वह उस (सूर्य) को ज़ाहिर कर देता है।४।

1. अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को इस्लाम की सच्चाई के लिए गवाह के रूप में पेश करता हूँ क्योंकि वह उदय होने के बाद साधारण और नीच अवस्था से असाधारण और बहुत ऊंची अवस्था को पहुँच जाएँगे और सदा रहने वाली एक किताब संसार के सामने पेश कर के अपने-आप को सूर्य सिद्ध करेंगे।

2. अर्थात् अल्लाह उन मुजद्दिदों और सुधारकों को हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की सच्चाई के लिए पेश करता है जो आप के बाद आएंगे, क्योंकि वे आने वाले जो कुछ हासिल करेंगे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का अनुसरण करने से हासिल करेंगे।

3. यहाँ दिन को गवाही के रूप में पेश किया गया है जब वह सूर्य को ज़ाहिर कर देता है। भाव यह है कि जब इस्लाम की उन्नति का समय आएगा जो दिन के समान होगा तो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की सत्ता उत्तरोत्तर स्पष्ट होती चली जाएगी।

وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشٰهَا ۝

और रात[1] को भी (गवाही के रूप में पेश करता हूँ) जब वह उस (सूर्य) के प्रकाश को आँखों से ओझल कर देती है ।५।

وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰهَا ۝

और आसमान[2] को और उस के बनाए जाने को भी ।६।

وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ۝

और ज़मीन को भी तथा उस के बिछाए जाने को भी (गवाही के रूप में पेश करता हूँ) ।७।

وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰهَا ۝

और मानव की आत्मा को भी और उस के दोष[3] रहित बनाए जाने को भी (गवाही के रूप में पेश करता हूँ) ।८।

فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰهَا ۝

कि उस (अल्लाह) ने (मनुष्य पर) उस की कुकर्मी (की राहों को भी) और उस की नेकी और संयम (की राहों) को भी अच्छी तरह खोल दिया है ।९।

---

1. अर्थात् उस समय को गवाही के रूप में पेश करता हूँ जब कि संसार में अधर्म का अन्धकार फैल जाएगा। उस समय हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का प्रकाश संसार वालों की दृष्टि से ओझल हो जाएगा।

2. इस आयत में यह बताया गया है कि इस्लाम की उन्नति निस्सन्देह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के प्रकाश को प्रकट करने वाली होगी और इस्लाम की अवनति हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के प्रकाश को लोगों की दृष्टि से छिपा देगी, किन्तु आसमान और उस के बनाए जाने की हिक्मत बता रही हैं कि सच्चाई सदैव विजयी होती रहेगी चाहे इस लोक में चाहे परलोक में। अतः अस्थायी रोक से व्याकुल नहीं होना चाहिए।

3. इस आयत में इस ओर संकेत किया गया है कि मानव-प्रकृति को अल्लाह ने पवित्र बनाया है। अतः यह बात असम्भव है कि सारा संसार या संसार का कुछ भाग सदा के लिए हिदायत पाने से वञ्चित हो जाए।

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ⑩

अतः जिस ने इस (जान) को पवित्र किया वह तो (समझो कि) सफल हो गया ।१०।

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ⑪

और जिस ने उस को मिट्टी में गाड़ दिया (समझ लो कि) वह असफल हो गया ।११।

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ⑫

समूद जाति ने अपनी घोर उद्दण्डता के कारण समय के नबी को झुठलाया था ।१२।

اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ⑬

उस समय जब कि उस की जाति में से सब से बड़ा दुर्भाग्यशाली उस (समय के नबी) के विरोध के लिए खड़ा हुआ ।१३।

فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ⑭

इस पर उन (अर्थात् सूमद की जाति) को अल्लाह के रसूल (सालिह) ने कहा कि अल्लाह के लिए वक़्फ़ (समर्पण) की हुई ऊँटनी से बचते रहो और इसी तरह उस के पानी पिलाने के मामिले में भी हर प्रकार की उद्दण्डता छोड़ दो ।१४।

فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ⑮

किन्तु उन्हों ने उस नबी की बात न मानी बल्कि उसे झुठलाया और (वह) ऊँटनी (जिस से बचते रहने का उन्हें आदेश दिया गया था उस) की कूँचें काट दीं जिस के कारण अल्लाह ने उन्हें मलियामेट करने का फ़ैसला कर दिया और ऐसे उपाय किए कि उसी तरह हो भी गया ।१५।

وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ⑯ ع

और वह (इसी तरह) इन (मक्का-निवासियों) के परिणाम की भी कोई परवाह नहीं करेगा । ।१६। (रुकू १/१६)
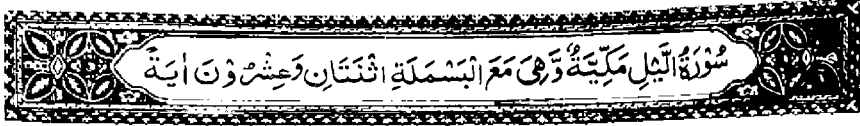
सूरः अल्-लैल

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की बाईस आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ②

मैं रात को गवाही के रूप में पेश करता हूँ जब वह ढाँप[1] ले।२।

وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ③

और दिन[2] को भी (मैं गवाही के रूप में पेश करता हूँ) जब वह खूब अच्छी तरह प्रकाशमान हो जाए।३।

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ④

और नर तथा मादा[3] के पैदा होने को भी (गवाही के रूप में पेश करता हूँ)।४।

---

1. अर्थात् जब भी संसार में धार्मिक अन्धकार छा जाता है। यदि कोई समझ से काम ले तो उसे विदित हो जाएगा कि वे ही दिन ऐसे होते हैं जब कि यह संसार सुधारकों से ख़ाली होता है।

2. अर्थात् जब कभी संसार में सदाचार और नेकी का युग आए तो विचार करने से अच्छी तरह मालूम हो जाएगा कि इस युग में सुधारकों ने प्रयत्न कर के इस्लाम का नूर लोगों के दिलों में दाख़िल कर दिया है।

3. अर्थात् मानव समाज में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो लोगों को सम्मार्ग पर चलने का उपदेश देते हैं। वह 'नर' कहलाने के अधिकारी होते हैं तथा कुछ लोग ऐसे होते हैं जो उन के उपदेश से प्रभावित हो कर सम्मार्ग पर चल पड़ते है मानों वे लोग 'मादा' का गुण रखते है।

إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ۝٥

कि तुम्हारी कोशिशें निस्सन्देह भिन्न-भिन्न[1] हैं।५।

فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ۝٦

अतः जिस ने (अल्लाह की राह में दान) दिया और संयम धारण किया।६।

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ۝٧

और नेक बात की पुष्टि की।७।

فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَىٰ ۝٨

उसे तो हम अवश्य ही आसानी के अवसर प्रदान करेंगे।८।

وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ۝٩

और ऐसा (व्यक्ति) जिस ने कन्जूसी से काम लिया और बे-परवाही की।९।

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَىٰ ۝١٠

और नेक बात को झुठलाया।१०।

فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَىٰ ۝١١

उसे हम कष्ट (का सामान) पहुँचाएँगे।११।

وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّىٰ ۝١٢

और जब उस का नाश होगा तो उस का धन उसे कोई लाभ न पहुँचा सकेगा।१२।

إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ۝١٣

हिदायत देना निस्सन्देह हमारे ही ज़िम्मा है।१३।

وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ۝١٤

और हर बात का अन्त और आदि हमारे ही अधिकार में है।१४।

فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ۝١٥

अतः याद रखो कि मैं ने तो तुम को एक भड़कती हुई आग से सावधान कर दिया है।१५।

---

1. अर्थात् मुसलमानों और इन्कार करने वालों की कोशिशें भिन्न-भिन्न हैं। इन में से एक तो हिदायत के लिए कोशिश कर रहा है तथा दूसरा गुमराही के लिए कोशिश कर रहा है।

उस में सिवाय किसी दुर्भाग्यशाली के और कोई दाख़िल नहीं होगा।१६।	لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ۝١٦
(ऐसा दुर्भाग्यशाली) जिस ने सच्चाई को झुठलाया और सच से मुँह मोड़ लिया।१७।	الَّذِىْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝١٧
और जो बड़ा संयमी होगा वह अवश्य उस से दूर रखा जाएगा।१८।	وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝١٨
(ऐसा संयमी) जो अपना धन (इस लिए अल्लाह की राह में) देता है कि (उस से) आध्यात्मिक पवित्रता ग्रहण करे।१९।	الَّذِىْ يُؤْتِىْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۝١٩
और किसी का उस पर उपकार नहीं होता जिस का बदला उतारने का उसे विचार हो।२०।	وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ۝٢٠
हाँ! परन्तु अपने गौरवशाली रब्ब की प्रसन्नता हासिल करना (उस का उद्देश्य होता है)।२१।	اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ۝٢١
और वह (अल्लाह) अवश्य उस से प्रसन्न हो जाएगा।२२। (रुकू १/१७)	وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۝٢٢
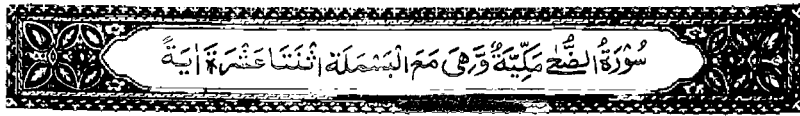
सूरः अल्-ज़ुहा

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह् सहित इस की बारह आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह् का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

وَالضُّحٰى ②

मैं दिन को (गवाही के रूप में पेश करता हूँ) जब वह रोशन[1] हो जाए।२।

وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ③

और रात[2] को भी (गवाही के रूप में पेश करता हूँ) जब उस का अन्धकार चारों ओर फैल जाए।३।

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ④

कि न तेरे रब्ब ने तुझे छोड़ा[3] है और न वह तुझ से अप्रसन्न हुआ है।४।

---

1. अर्थात् जब भी इस्लाम की प्रगति होगी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की सच्चाई ज़ाहिर हो जाएगी।

2. अर्थात् जब कभी धर्म में दीर्घ काल के लिए कमजोरी पैदा होगी तो यह सिद्ध हो जाएगा कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के नूर के प्रसार में कुछ बाधाएँ पैदा हो गई हैं इसलिए संसार उन के नूर से पूर्ण रूप से लाभ नहीं उठा रहा है।

3. इस में बताया गया है कि संसार में अन्धकार का छा जाना इस बात का प्रमाण नहीं होगा कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम झूठे हैं बल्कि इस बात का प्रमाण होगा कि मानव-प्राणी में विकार आ गया है और उस के सुधार के लिए नया सूर्य (सुधारक) उदय होने वाला है जो फिर से इस्लाम को विजयी कर देगा।

وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ ۝٥

और तू देख कि तेरी हर बाद में आने वाली घड़ी पहली से श्रेष्ठतर[1] होती है ।५।

وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ۝٦

और अवश्य तेरा रब्ब तुझे वह कुछ दे कर रहेगा जिस पर तू प्रसन्न[2] हो जाएगा ।६।

أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ۝٧

क्या (इस जीवन में उस का व्यवहार तेरे साथ असाधारण नहीं रहा और) उस ने तुझे अनाथ पा कर (अपनी छाया के नीचे) स्थान नहीं दिया ।७।

وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ۝٨

और उस ने जब तुझे (अपनी जाती के प्रेम में) मुग्ध[3] पाया तो उन के सुधार की ठीक राह तुझे बता दी ।८।

وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ ۝٩

और तुझे जब बहुत बाल-बच्चों वाला पाया तो (अपनी कृपा से) धनवान बना दिया ।९।

---

1. अर्थात् जब भी संसार में कोई विकार पैदा होता है तो अल्लाह तेरा समर्थन करने वाले व्यक्ति खड़े कर देता है और क़ियामत (महाप्रलय) तक खड़े करता रहेगा । यह इस बात का प्रमाण होगा कि तू सच्चा है ।

2. इस से तात्पर्य यह है कि जब अन्त तक तुझे सफ़लता ही प्राप्त होती जाएगी तो तेरी प्रसन्नता में क्या सन्देह हो सकता है ।

3. कुछ भाष्यकारों ने लिखा है कि मूल शब्द 'ज़ाल्लुन' का अर्थ यह है कि तू पथ-भ्रष्ट एवं गुमराह था । अतः हम ने तुझे हिदायत दी । परन्तु शब्द कोष 'मुफ़रदाते राग़िब' में इस का अर्थ प्रेम में मुग्ध होना भी लिखा है । अतः इस के अनुसार आयत का भाव यह हुआ कि हे रसूल तू अपनी जाति के लोगों की हिदायत पाने की इच्छा में मुग्ध था । अतः हम ने तुझे वह राह बता दी जिस से तू अपनी जाति का सुधार कर सके ।

फ़अम्मल् यतीम फ़ला तक़्हर् — فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ⑩

अतः (इन उपकारों के फलस्वरूप) तू भी अनाथों को उभारने में लगा[1] रह।१०।

وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ⑪

और तू माँगने वालों को न झिड़क।११।

وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ⑫ ع

और तू अपने रब्ब की निअमत[2] की अवश्य ही चर्चा करता रह।१२। (रुकू १/१८)

सूरः अलम्-नश्रह

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की नौ आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) वार-वार दया करने वाला है।१।

---

1. अर्थात् उन अनाथों की हालत ऐसी न हो कि वे समझें कि उन का पालन-पोषण लोगों के दान से हो रहा है। जिस से उन का साहस दब जाए। बल्कि लोग उनका पालन-पोषण अपने नातेदारों की तरह करें जिस से उन का साहस ऊँचा रहे। जैसा कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के साथ हुआ, यद्यपि आप भी अनाथ थे, परन्तु आप को आप के दादा और चाचा ने पुत्रों से भी अच्छा रखा। अतः अल्लाह आदेश देता है कि ऐसी कोशिश करो कि लोग अनाथों को अपने नातेदारों की तरह समझें ताकि उन में उत्साह-हीनता का विचार पैदा न हो, बल्कि उन का साहस सदा बढ़ता रहे।

2. सांसारिक निअमतें तो निश्चय ही आप को शासक हो जाने के बाद बहुत मिल गई थीं जिन का प्रकाशन आप मुसलमान जनता की सहायता कर के किया करते थे, किन्तु यहाँ विशेष रूप से यह वर्णन है कि अल्लाह ने पवित्र क़ुर्आन के रूप में जो निअमत तुझे दी है उसे सारे संसार में फैलाता रह।

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝	क्या हम ने तेरे लिए तेरे सीने को खोल नहीं दिया ? ।२।
وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝	और तेरे इस बोझ को तुझ पर से उतार कर फेंक नहीं दिया ।३।
الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝	ऐसा बोझ[1] जिस ने तेरी कमर तोड़[2] रखी थी ।४।
وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝	और तेरे ज़िक्र को भी हम ने ऊँचा कर दिया है ।५।
فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝	अतः याद रखो कि इस तंगी के साथ एक बड़ी सफलता नियत है ।६।
اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝	हाँ ! निस्सन्देह इस तंगी के साथ एक और भी बड़ी सफ़लता[3] (निश्चित) है ।७।

1. अर्थात् कामिल शरीअत (क़ुर्आन) तुझ पर उतार दी है ताकि तू अल्लाह की हिदायत की रोशनी में चले और आश्चर्य चकित न हो ।

2. आप इसी व्याकुलता में 'हिरा' नामक गुफ़ा में जाते थे कि मैं अपनी बुद्धि से अल्लाह को पाने तथा मानव समाज का सुधार करने में कैसे सफ़ल हो सकता हूँ । अल्लाह ने अपनी विशेष हिदायत अर्थात् पवित्र क़ुर्आन द्वारा आप की व्याकुलता को दूर कर दिया । इस का विवरण सूरः 'अलक़' में आता है ।

3. मूल शब्द 'युस्र'—आसानी से इस ओर संकेत किया गया है कि वह बार-बार आएगी, परन्तु उस्र-तंगी के बारे में बताया है कि वह एक निश्चित समय तक रह कर दूर हो जाती है । इस आयत में यह भविष्यवाणी की गइ है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर संकट का कोई ऐसा समय नहीं आएगा जो स्थायी होगा । किन्तु सुख के समय ऐसे आएँगे जो स्थायी कहला सकेंगे । अतः मक्का और अरब के लोगों का आठ वर्ष के भीतर विनाश हो गया, किन्तु हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने जब मक्का पर विजय प्राप्त की और इस्लामी राज्य की आधारभूत शिला रखी गई तथा मुसलमानों के लिए आसानी की राहें खुली तो यह राज्य विभिन्न रूपों में बदलता हुआ आज तक चला आ रहा है और इसी युग से कई एक देशों में इस्लामी राज्य की स्थापना हो गई है ।

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝٨

अत: जब भी तुझे समय[1] मिले तो (अल्लाह से मिलने के लिए) फिर कोशिश में लग जा।८।

وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝٩

और तू अपने रब्ब की ओर ध्यान दे।९। (रुकू १/१९)
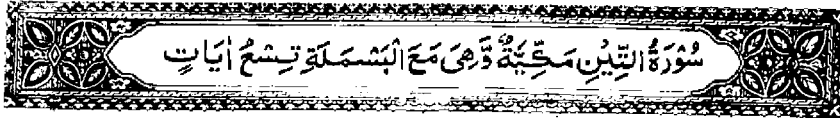
सूर: अल्-तीन

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की नौ आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۝٢

मैं अंजीर[2] को और ज़ैतून[3] को गवाही के रूप में पेश करता हूँ।२।

---

1. अर्थात् जब भी तुझे शासन-सम्बन्धी कामों और मुसलमानों की शिक्षा-दीक्षा से फ़ुरसत मिले तो आध्यात्मिक यात्रा में लग जा क्योंकि वह तेरी न समाप्त होने वाली यात्रा है और उस से फ़ुरसत मिलने का कोई प्रश्न ही नहीं।

2. 'अंजीर' शब्द से हज़रत आदम की ओर संकेत किया गया है जो यह है कि मानव-प्रकृति को उत्तम रूप में पैदा किया है क्योंकि हज़रत आदम के बारे में बाइबिल में लिखा है कि हज़रत आदम को अल्लाह ने अपने रूप पर बनाया। (उत्पत्ति 1)

पवित्र क़ुर्आन में आया है कि अल्लाह ने उस को अपना ख़लीफ़ा (अधिनायक) बनाया है। अत: दोनों किताबों की सहमती से पता चलता है कि आदम की सन्तान उस के गुण ले कर नेक और सदाचारी पैदा होगी तथा उस की उत्पत्ति में बुराई की जड़ नहीं आएगी बल्कि नेकी की जड़ आएगी। इसी की ओर संकेत करने के लिए अंजीर को गवाही के रूप में पेश किया गया है।

3. ज़ैतून का वर्णन इस लिए किया गया है कि ज़ैतून की शाखा हज़रत नूह की घटना को याद

(शेष पृष्ठ १३९२ पर)

وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ۝

और इसी तरह सीनीन[1] पर्वत को ।३।

وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۝

और इस शान्तिमय-नगर[2] मक्का को भी ।४।

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝

(यह सभी गवाहियाँ बताती हैं कि) निस्सन्देह हम ने मानव को अच्छी से अच्छी अवस्था में पैदा किया है ।५।

(पृष्ठ १३९१ का शेष)

दिलाती है । तौरात में लिखा है कि हज़रत नूह की नौका जब 'जूदी' अर्थात् 'अरारात' पर पहुँची तो हज़रत नूह ने विभिन्न प्रकार के पक्षियों को छोड़ा ताकि वे पता लगा कर आएँ कि कहीं धरती भी दिखाई देती है या नहीं । अन्त में उन्हों ने कबूतरी छोड़ी जब वह लौट कर आई तो उस के मुँह में जैतून की ताज़ा पत्ती थी जिस से हज़रत नूह ने समझ लिया कि अब अल्लाह की कृपा हो गई है और धरती दिखाई देने लग गई है फिर ऐसा हुआ कि वह अपने साथियों के साथ वहाँ उतर गए। जहाँ हज़रत नूह की नौका रुकी थी उस स्थान का नाम पवित्र क़ुर्आन-मजीद ने 'जूदी' रखा है और बाइबिल ने 'अरारात' रखा है। शब्दकोष देखने से ज्ञात होता है कि इन दोनों शब्दों के अर्थों में कोई भेद नहीं । अरारात अरबी शब्द है। हज़रत नूह चूंकि इराक़ निवासी थे इस कारण उन के लिए इस शब्द का उच्चारण सरल था और जूदी का अर्थ दया एवं उपकार है अर्थात् वह स्थान जहाँ अल्लाह की दयालुता और उपकार प्रकट हों। 'रात' का अर्थ है 'शरण चाही' (अक़रब)। अरारात का अर्थ हुआ 'मैं शरणागार को अपने सामने देख रहा हूँ'। अत: इस में भी जूदी वाला अर्थ आ गया ।

1. सीना—यह शब्द एक-वचन है, परन्तु यहाँ इस का प्रयोग बहुवचन हुआ है । इस का कारण यह है कि सीना पर्वतों की श्रृंखला का नाम है ।

2. मक्का नगर को हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल ने शान्तिमय ठहराया है। यद्यपि इस बात पर हज़ारों वर्ष बीत चुके थे तथापि अरब लोग आज तक उस के सत्कार का ध्यान रखते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि मक्का से सम्बन्ध रखने वाला धर्म सच्चा है । अत: एक समय आया कि मक्का मुसलमानों के अधिकार में आ गया और इस्लाम ही मक्का का धर्म कहलाया और फिर मुसलमानों के सम्बन्ध के कारण मक्का को एक और नवीन शान्ति मिली जो आज तक चलती चली जा रही है बल्कि वह शान्ति ऐसी है जो इस से पहले भी उसे प्राप्त न थी, क्योंकि पहले मक्का निवासी अपनी इच्छा के अनुसार महीनो को आगे-पीछे कर के उस की शान्ति को भंग कर देते थे, परन्तु अब इस्लाम ने ऐसे बारह महीने निश्चित कर दिए हैं कि जिन्हें आगे-पीछे करने का किसी को साहस नहीं । इसलिए हरम के क्षेत्र

(शेष पृष्ठ १३९३ पर)

ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۝٦

फिर हम ने उसे नीच से नीच दशा की ओर लौटा दिया ।६।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٧

सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और जिन्हों ने परिस्थिति के अनुकूल उचित कर्म किए। अत: उन के लिए एक न समाप्त होने वाला नेक बदला होगा ।७।

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝٨

अत: इस (वास्तविकता के खुल जाने) के बाद कौन सी चीज़ तुझ को जज़ा-सज़ा अर्थात् बदला दिए जाने के बारे में झुठलाती है ।८।

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝٩

क्या (अब भी कोई विचार कर सकता है कि) अल्लाह सब शासकों से बड़ा शासक नहीं है ? ।९। (रुकू १/२०)

(पृष्ठ ११५१ का शेष)

की रक्षा पूरे वर्ष होती है। इस से पहले मक्का वालों के अपने विचारों के अधीन हुआ करता था।

हरम शब्द का अर्थ है सत्कार योग्य चीज़ और परिभाषा में मक्का के चारों तरफ़ चार-चार मील तक का जो क्षेत्र है वह हरम कहलाता है क्योंकि उस क्षेत्र में किसी जीवधारी का मारना निषिद्ध है।
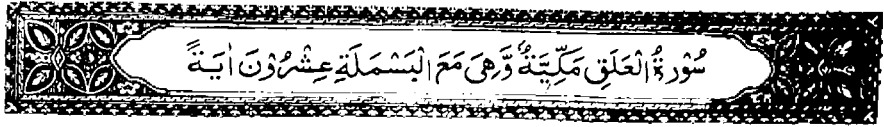
सूर: अल्-अलक़

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की बीस आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۝٢

अपने रब्ब का नाम ले कर पढ़[1] जिस ने (सारी चीज़ों को) पैदा किया।२।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝٣

(और जिस ने) मनुष्य को एक ख़ून के लोथड़े से पैदा किया।३।

اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۝٤

(फिर हम कहते हैं कि क़ुर्आन को) पढ़ कर सुनाता रह क्योंकि तेरा रब्ब करीम[2] है (अर्थात् बहुत कृपा करने वाला है)।४।

---

1. कुछ भाष्यकारों तथा ईसाइयों ने भूल से लिखा है कि 'हिरा' नामक गुफ़ा में फ़रिश्ते ने रेशम पर लिखा हुआ एक लेख दिखा कर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को कहा था कि 'पढ़ो', परन्तु वास्तविकता यह है कि मूल शब्द 'इक़्रा' का अर्थ पढ़ने के सिवा दुहराना भी है। अत: इस सूर: में बताया गया है कि जब फ़रिश्ता पहली बार वह्य ले कर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के पास आया तो उस ने आप से कहा कि जो कुछ मैं कहता जाऊं, उसे दुहराते जाओ।

2. अर्थात् जितना तू क़ुर्आन पढ़ कर सुनाएगा, उतना ही तेरे रब्ब की शान और मानव-जाति का सम्मान उजागर होगा।

الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِۙ

वह रब्ब जिस ने क़लम के साथ ज्ञान सिखाया है (और भविष्य में भी सिखाएगा) ।५।

عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْؕ

उस ने मनुष्य को वह कुछ सिखाया है जो वह पहले नहीं जानता था ।६।

كَلَّاۤ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَیَطْغٰۤیۙ

(जैसा वे समझते हैं वैसा) नहीं बल्कि मनुष्य निश्चय ही सीमा का उल्लंघन कर रहा है ।७।

اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰیؕ

इस तरह कि वह अपने-आप को (अल्लाह की कृपा से) बे-परवाह समझता है ।८।

اِنَّ اِلٰی رَبِّكَ الرُّجْعٰیؕ

वास्तविकता यह है कि तेरे रब्ब की ओर ही लौट कर जाना है ।९।

اَرَءَیْتَ الَّذِیْ یَنْهٰیۙ

(हे सम्बोधित !) तू मुझे उस व्यक्ति की हालत की ख़बर दे ।१०।

عَبْدًا اِذَا صَلّٰیؕ

जो एक (भक्ति करने वाले) बन्दे को जब वह नमाज़ में व्यस्त होता है (नमाज़ से) रोकता[1] है ।११।

اَرَءَیْتَ اِنْ كَانَ عَلَی الْهُدٰۤیۙ

(हे सम्बोधित) तू (मुझे) बता तो सही कि वह (नमाज़ पढ़ने वाला बन्दा) यदि हिदायत पर हो ।१२।

اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰیؕ

या संयम से काम लेने का आदेश देता हो ।१३।

---

1. 'बन्दे' शब्द से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की ओर संकेत किया गया है और बताया गया है कि जब आप अल्लाह के पवित्र घर 'काबा' में नमाज़ पढ़ते थे तो इन्कार करने वाले आ कर आप के सिर और पवित्र शरीर पर धूल मिट्टी डाल देते थे और एक बार तो उन्हों ने आप की पीठ पर ऊँट की ओझड़ी रख दी थी जिस के कारण आप सजदः से सिर न उठा सकते थे ।

أَرَءَيْتَ إِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰٓ

और उसे रोकने वाला (हिदायत का) इन्कार करने वाला हो और उस से मुँह फेरता हो (तो फिर उस रोकने वाले का क्या परिणाम होगा) ? ।१४।

أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ ٱللَّهَ يَرَىٰ

क्या वह (इतना भी) नहीं जानता कि अल्लाह हर-एक चीज़ को जानता है ? ।१५।

كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنتَهِ لَنَسْفَعًۢا بِٱلنَّاصِيَةِ

जिस तरह वह चाहता है उस तरह नहीं होगा बल्कि यदि वह (अपने इस बुरे कर्म से) न रुका तो हम उस के माथे के बालों को पकड़ कर ज़ोर से घसीटेंगे ।१६।

نَاصِيَةٍ كَٰذِبَةٍ خَاطِئَةٍ

ऐसे माथे की चुटिया जो झूठी और अपराधिनी[1] भी है ।१७।

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُۥ

अत: (इन्कार करने वाले को) चाहिए कि वह अपनी सभा बुलाए ।१८।

سَنَدْعُ ٱلزَّبَانِيَةَ

हम भी अपनी पुलिस[2] को बुलाएँगे ।१९।

كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَٱسْجُدْ وَٱقْتَرِب ۩ (السجدة)

शत्रु की इच्छा के अनुसार बात नहीं होगी । (अत: हे नबी !) तू इस (प्रकार के इन्कार करने वाले) की आज्ञा का पालन न कर और (केवल अपने रब्ब के सामने) सजद: कर और (इस सजद: के नतीजे में अपने रब्ब के) निकट होता जा ।२०। (रुकू १/२१)

1. अर्थात् वास्तव में वह मनुष्य गिरा हुआ ही है, परन्तु वह चुटिया उस की महत्ता और आदर का चिह्न होती है । अतएव वह झूठी और अपराधिनी है, क्योंकि वह महापापी को एक महान् व्यक्ति प्रकट करती है ।

2. यहाँ पर पुलिस से तात्पर्य अज़ाब देने वाले फ़रिश्ते हैं जो इस संसार में भी और परलोक में भी सच्चाई का इन्कार करने वालों को दण्ड देते रहते हैं ।
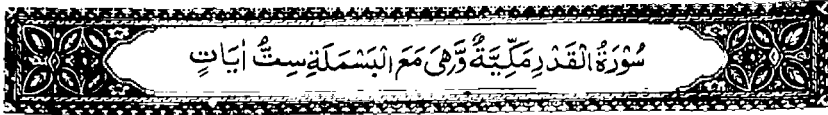
सूरः अल्-क़द्र

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की छः आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ②

हम ने निस्सन्देह इस क़ुर्आन को एक (महत्व-पूर्ण) भाग्यशाली रात[1] में उतारा है।२।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ③

और (हे सम्बोधित!) तुझे क्या पता कि यह (महत्वपूर्ण) रात जिस में तक़दीरें (भाग्य) उतरती हैं क्या चीज़ है?।३।

---

1. इस से यह अभिप्राय है कि नबी का समय रात के समान होता है, परन्तु वह रात ऐसी होती है जिस में अल्लाह की ओर से भविष्य के बारे में फ़ैसले होते हैं।

इस सूरः में बताया गया है कि पवित्र क़ुर्आन-मजीद को हम ने तक़दीरें अर्थात् भाग्य उतारने वाली रात में उतारा है अर्थात् भविष्य में जो कुछ इस संसार को पेश आने वाला है वह इस क़ुर्आन में वर्णन कर दिया गया है।

इस का एक अर्थ यह भी है कि हम ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम को महत्वपूर्ण और भाग्यशाली रात में उतारा है।

لَيۡلَةُ الۡقَدۡرِ ۙ خَيۡرٌ مِّنۡ اَلۡفِ شَهۡرٍ ؕ﴿۴﴾

यह महत्वपूर्ण तक़दीरों वाली (अर्थात् भाग्यशाली) रात तो हज़ार महीनों[1] से भी अच्छी है।४।

تَنَزَّلُ الۡمَلٰٓئِکَۃُ وَالرُّوۡحُ فِیۡہَا بِاِذۡنِ رَبِّہِمۡ ۚ مِنۡ کُلِّ اَمۡرٍ ۙ﴿۵﴾

(प्रत्येक प्रकार के) फ़रिश्ते और कामिल रूह (आत्मा) उस रात में अपने रब्ब के उपदेश से सारे (आध्यात्मिक एवं सांसारिक) मामिले ले कर उतरते हैं।५।

سَلٰمٌ ۟ۛ ہِیَ حَتّٰی مَطۡلَعِ الۡفَجۡرِ ٪﴿۶﴾

फिर फ़रिश्तों के उतरने के बाद तो सलामती (ही सलामती) होती है। यह अवस्था उषा काल के उदय होने तक रहती है।६। (रुकू १/२२)

1. हदीसों से पता चलता है कि एक हज़ार वर्ष गुमराही एवं पथभ्रष्टता के होंगे। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम कहते हैं कि सब से अच्छी शताब्दी वह है जिस में मैं हूँ, फिर वह शताब्दी अच्छी होगी जो इस के बाद आएगी, फिर उस के बाद आने वाली शताब्दी भी अर्थात् तीसरी शताब्दी भी अच्छी होगी, फिर गुमराही और अन्धकार का युग होगा। (मिश्कात शरीफ़) अतः हज़ार महीने से तात्पर्य हज़ार वर्ष है और वर्ष भी वे जिन में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की शीतल छाय सिकुड़ गई थी और बुराई फैल गई थी। इसी की ओर संकेत कर के बताया गया है कि यह आध्यात्मिक रात का युग जिस में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का प्रादुर्भाव हुआ या पवित्र क़ुर्आन उतरा रात होने पर भी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के कारण गुमराही के हज़ार वर्ष से उत्तम होगा।

2. अर्थात् नबी की विजय तक अल्लाह के फ़रिश्ते उस के साथ रहते हैं और उस समय तक साथ नहीं छोड़ते जब तक सफलता प्राप्त नहीं हो जाती। 'फ़रिश्तो के उतरने के बाद तो सलामती ही सलामती अर्थात् शान्ति ही शान्ति होती है' का अर्थ यह है कि यद्यपि वह युग अन्धकार से भरा होता है तथापि अल्लाह नबी के कारण उस युग में अनेक बरकतें उतारता है और वह बरकतें उतरती रहती हैं जब तक उषा काल का उदय न हो जाए अर्थात् वह समय जिस में गुमराही के बाद हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का आध्यात्मिक प्रादुर्भाव होगा।
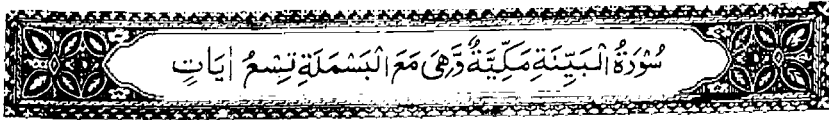
सूर: अल्-बय्यिन:

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की नौ आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ②

वे लोग जिन्हों ने इन्कार किया है अर्थात् किताब वाले और मुश्रिक दोनों ही कभी (इन्कार करने से) रुकने वाले न थे जब तक कि उन के पास स्पष्ट प्रमाण[1] न आ जाता।२।

رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ③

अर्थात् अल्लाह की ओर से आने वाला एक रसूल जो (उन्हें ऐसी) पवित्र किताबें पढ़ कर सुनाता।३।

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ④

जिन में क़ायम रहने वाला आदेश[2] हो।४।

1. तात्पर्य यह है कि किताब वाले उचित या अनुचित रूप में एक आध्यात्मिक आसमानी किताब से सम्बन्धित हैं। अत: जब तक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम क़ुर्आन-मजीद ले कर न आते उन के सुधार की कोई सम्भावना न थी।

2. अर्थात् वह स्पष्ट किताब भी ऐसी लाए जिस में सदा अटल रहने वाली सच्चाइयाँ हों ताकि यहूदियों और ईसाइयों पर खुल जाए कि हमारी किताबें तो त्रुटि पूर्ण हैं जो मिटने वाली हैं, किन्तु स्थायी और क़ायम रहने वाली किताब वही है जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम लाए हैं। अत: उस पर ईमान लाए बिना कोई चारा नहीं।

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝

और (आश्चर्य वाली बात यह है कि) जिन लोगों को (क़ुर्आन जैसी कामिल) किताब दी गई है वह उस स्पष्ट प्रमाण (अर्थात् रसूल) के आने के बाद ही (विभिन्न गिरोहों[1]) में बट गए हैं ।५।

وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۙ حُنَفَاءَ وَ يُقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَ ذٰلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ ۝

हालाँकि उन्हें यही आदेश दिया गया था कि वे केवल एक ही अल्लाह की उपासना करें और उपासना को केवल उसी के लिए विशिष्ट कर दें (इस हालत में कि) वे अपनी नेक भावनाओं में दृढ़ विश्वास रखने वाले हों और (फिर इस बात की भी आज्ञा दी गई थी कि) नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ा करें और ज़कात दें और यही (सदा सच्चाई पर) क़ायम रहने वाला धर्म है ।६।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ أُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝

निस्सन्देह किताब वालों और मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) में से इन्कार पर जमे रहने वाले लोग नरक की आग में दाख़िल होंगे। वे उस में रहते चले जाएँगे। वे ही सब से बुरे लोग हैं ।७।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ أُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝

परन्तु वे लोग जो किताब वालों और अनेकेश्वरवादियों में से ईमान ला चुके हैं और उन्हों ने ईमान के अनुकूल नेक और अच्छे कर्म भी किए हैं वे ही सब से अच्छे लोग हैं ।८।

---

1. अर्थात् जिन किताब वालों के समय में पवित्र क़ुर्आन-मजीद उतरा है वे पहले तो अपनी झूठी कहानियों पर प्रसन्न थे, परन्तु अब वे लोग ही पवित्र क़ुर्आन-मजीद की सच्ची बातों के सामने तौरात की झूठी बातों को पेश कर के विभेद से काम लेते हैं।

جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۝٩

उन का बदला उन के रब्ब के पास स्थायी बाग़ होंगे जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। वे उन में रहते चले जाएँगे। अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया तथा वे उस (अल्लाह) से प्रसन्न हो गए। यही (बदला) उस की प्रतिष्ठा के अनुकूल है जो अपने रब्ब से डरता है।९। (रुकू १/२३)
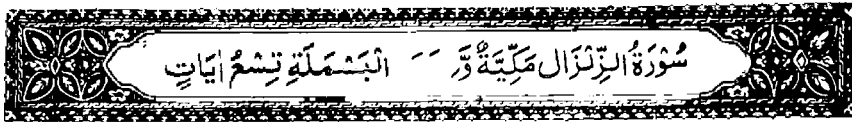
सूरः अल्-ज़िल्ज़ाल

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की नौ आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝٢

जब ज़मीन को अच्छी तरह हिला[1] दिया जाएगा।२।

1. अर्थात् ज़मीन के अन्दर और बाहर भूकम्प आएँगे जैसा कि आज कल ज़मीन के अन्दर के लावे के कारण भी उस में भूकम्प आ रहे हैं और अणु-बमों एवं हाईड्रोजन-बमों के कारण भी उस के बाहर भूकम्प आ रहे हैं और आध्यात्मिक रूप में भी ऐसे-ऐसे आन्दोलन चल रहे हैं जिस के कारण ज़मीन के रहने वालों के दिल दहल गए हैं।

وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۝

और ज़मीन अपना बोझ निकाल कर फेंक देगी[1] ।३।

وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۝

और मनुष्य कह उठेगा कि इसे क्या हो गया[2] है ।४।

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۝

उस दिन वह अपनी (सब गुप्त[3]) ख़बरों को वर्णन कर देगी ।५।

بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ۝

इसलिए कि तेरे रब्ब ने उस (ज़मीन) के बारे में वह्य कर रखी है ।६।

يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۝

उस दिन लोग विभिन्न दलों[4] के रूप में एकत्रित होंगे, ताकि अपनी-अपनी कोशिशों के परिणामों को देख लें ।७।

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝

फिर जिस ने कण-भर भी भलाई[5] की होगी वह उस (के प्रतिफल) को देख लेगा ।८।

---

1. इस से यह अभिप्राय है कि जितनी विद्याएँ और ज्ञान इस संसार में छिपे हुए थे वे ज़ाहिर होने लग जाएँगे चाहे वे धार्मिक हों अथवा सांसारिक, जैसा कि इस समय विज्ञान भी प्रगतिशील है तथा पवित्र क़ुर्आन का ज्ञान भी नए से नए रूप में खुल रहा है ।

2. अर्थात् उस युग में मानव आश्चर्य-चकित हो जाएगा और कहेगा कि बात क्या है जो कि आज ज़मीन के अन्दर से भी लावा फूट रहा है और बाहर से भी भूकम्पों के सामान किए जा रहे हैं और आध्यात्मिक तौर पर भी ऐसे आन्दोलन चला दिए गए हैं जिन में ज़मीन के रहने वालों के दिल दहल गए हैं ।

3. अन्तिम युग अर्थात् कलियुग के बारे में जितनी भविष्यवाणियाँ थीं वह सब पूरी हो जाएँगी। मानों उस दिन ज़मीन अपने गुप्त भण्डारों को ज़ाहिर कर देगी ।

4. अभिप्राय यह है कि वह समय स्वतन्त्रता का होगा और भिन्न-भिन्न दल यह घोषणा करेंगे कि हमारे दल का यह नाम है और यह काम है और ऐसा करने से उन का उद्देश्य यह होगा कि लोग उन के नाम और काम को देख कर उन के दल में शामिल हो जाएँ और संसार वाले उन के बारे में यह कह दें कि उन का ही दल सर्व-श्रेष्ठ है ।

5. इस में बताया गया है कि उस अन्तिम युग में मानव-समाज के साथ अल्लाह वैसा व्यवहार करेगा जैसे उस के कर्म होंगे और कोई जाति तभी अच्छा फल पा सकेगी जब कि वह नेक होगी ।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝٩

और जिस ने कण-भर भी बुराई[1] की होगी वह उस (के परिणाम) को देख लेगा।९। (रुकू १/२४)
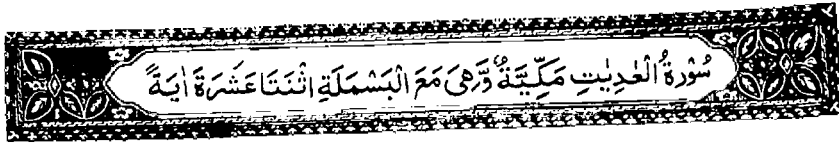
सूर: अल्-आदियात

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की बारह आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ जो) अनन्त कृपा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।१।

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۝٢

मैं गवाही के रूप में उन सम्प्रदायों को पेश करता हूँ जो घोड़ों पर सवार हो कर इस तरह बे-तहाशा दौड़ते हैं कि उन के घोड़ों के मुँहों से आवाज़ निकलने लग जाती[2] है।२।

---

1. अर्थात् कोई जाति भी निकृष्ट और बुरी होते हुए लोगों को धोखा नहीं दे सकेगी।

2. इस आयत में इस्लाम की सच्चाई को सिद्ध करने के लिए सहाबा (अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम के साथियों) को पेश किया गया है। यद्यपि यहाँ 'घोड़ों' शब्द प्रयुक्त हुआ है परन्तु घोड़ा चूँकि स्वयं नहीं चलता बल्कि उसे सवार चलाता है इस लिए इस से तात्पर्य घोड़े पर सवार होने वाली जमाअतें हैं अर्थात् सहाबा जो जिहाद करते थे।

فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۝

फिर उन घुड़सवारों को जिन की सवारियाँ चोट मार कर चिनगारियाँ निकालती[1] हैं ।३।

فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۝

फिर प्रातःकाल ही धावा[2] करने वालों को ।४।

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۝

जिस के फलस्वरूप वे उस (प्रातःकाल) में धूल उड़ाते[3] हैं ।५।

فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۝

और सेना-दल में घुस जाते हैं[4] ।६।

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۝

मनुष्य अपने रब्ब का निस्सन्देह बड़ा ही कृतघ्न है[5] ।७।

وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۝

और वह निस्सन्देह इस पर (अपने कथन और अपने कर्म से) गवाही दे रहा है ।८।

---

1. इस आयत का विवरण भी वही है जो आयत 2 की टिप्पणी में लिखा है ।

2. इस आयत ने सारा भेद खोल दिया है कि इस स्थान पर सहावा का वर्णन है न कि केवल सवारियो का क्योंकि यहाँ प्रातःकाल धावा करने का वर्णन है ओर ऐसी सावधानी से आक्रमण करना घोड़े का काम नही बल्कि सवार का काम है ।

3. अर्थात् जब वे आक्रमण करते हैं तो केवल रास्तों पर से ही चिनगारियाँ नहीं निकलतीं बल्कि ऐसा कोलाहल मचता है कि जिस गाँव पर उन्हों ने धावा बोला होता है वहाँ के लोग व्याकुल हो कर गाँव से वाहर निकल आते हैं और सारा वातावरण धूल से भर जाता है ।

4. अर्थात् यह घुड़-सवारों का जत्था जो आक्रमण करता है उस जाति के लोगों को देख कर जिन पर आक्रमण किया गया है डर नहीं जाता बल्कि बड़ी वीरता से उन के भीतर घुस जाते हैं जिस के फल-स्वरूप हाथों-हाथ युद्ध होने लगता है ।

5. इस आयत में सहाव से युद्ध करने वालों का वृत्तान्त है कि वे बड़े कृतघ्न हैं । सहावा तो उन के सामने अल्लाह का कलाम पेश करते हैं, परन्तु वे उन का आदर तथा सत्कार करने के वजाय उलटे उन से युद्ध करते हैं ।

وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۝٩

अत: फिर भी वह निस्सन्देह धन के प्रेम में बहुत बढ़ा हुआ[1] है ।९।

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُوْرِ ۝١٠

क्या ऐसा मनुष्य नहीं जानता कि जब वे लोग जो क़ब्रों में हैं उठाए जाएँगे ।१०।

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُوْرِ ۝١١

और जो कुछ सीनों में (छिपा हुआ) है निकाल लिया जाएगा[2] ।११।

اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ۝١٢

उस दिन उन का रब्ब निस्सन्देह उन का निरीक्षक होगा ।१२। (रुकू १/२५)
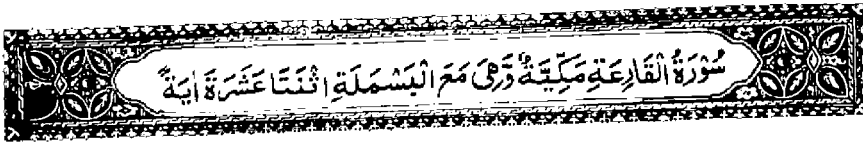
सूर: अल्-क़ारिअ:

[यह सूर: मक्की है और विस्मिल्लाह सहित इस की बारह आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

1. अर्थात् यह इन्कार करने वाले लोग इतना भी नहीं समझते कि मुसलमान जिन के लिए अल्लाह ने विजय निश्चित कर रखी है उन के साथ युद्ध करने का परिणाम तो यह निकलेगा कि उन के धन नष्ट हो जाएँगे, परन्तु वे लोभवश और अपनी अज्ञानता के कारण उन से लड़ाई करते चले जाते हैं इस विचार से कि हो सकता है कि कोई ऐसा उपाय बन जाए कि हम विजयी हो जाएँ और धन-दौलत हमें मिल जाए ।

2. यदि इन आयतों को इस संसार को सामने रखते हुए लगाया जाए तो यह अभिप्राय होगा कि (शेष पृष्ठ १४०६ पर)

(इस संसार पर) एक भयंकर विपत्ति आने वाली है।२।	اَلْقَارِعَةُ ۝
और तुझे क्या पता कि वह विपत्ति कैसी है।३।	مَا الْقَارِعَةُ ۝
और फिर हम कहते हैं कि (हे सम्बोधित !) तुझे क्या पता कि वह भयानक विपत्ति क्या है ? ।४।	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝
(यह विपत्ति जब आएगी) उस समय लोग बिखरे हुए पतंगों की तरह आश्चर्य-चकित फिर रहे होंगे।५।	يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۝
और पर्वत[1] धुनी हुई ऊन के समान हो जाएँगे।६।	وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۝
उस समय जिस के (कर्मों) का पलड़ा भारी होगा।७।	فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝
वह तो बहुत अच्छी और पसंदीदा हालत में होगा।८।	فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝

(पृष्ठ १४०५ का शेष)

वे इन्कार करने वाले लोग जो जाहिर में तो जीवित हैं, किन्तु धार्मिक दृष्टि से क़ब्रों में हैं (अर्थात् मरे हुए हैं)। जब उन को इस्लाम के मुक़ाबिल पर खड़ा कर दिया जाएगा तो उन के दिलों में जो भेद छिपे हुए हैं वे जाहिर कर दिए जाएँगे अर्थात् दिलों में तो वे इस्लाम की बहुत सी सच्चाइयों को मान चुके हैं केवल जाहिर में इस्लाम का मुकाबिला कर रहे हैं।

1. जैसा कि हम पहले भी कई बार लिख चुके हैं अरबी शब्दकोष में पर्वत का अर्थ 'बड़े लोग' भी है और यहाँ पर यही अर्थ अभीष्ट है। भाव यह है कि जब वह अति भयंकर विपत्ति आएगी अर्थात् इन्कार करने वाले लोगों की हार होगी तो उस संकट-काल में बजाय इस के कि बड़े-बड़े लोग इकट्ठा हो कर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर हमला करें इधर-उधर भागते फिरेंगे।

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝

और जिस व्यक्ति के कर्मों के पलड़े हल्के होंगे ।९।

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝

उस का ठिकाना हाविया¹ (अर्थात् नरक) होगा ।१०।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ ۝

और (हे सम्बोधित !) तुझे क्या मालूम है कि यह हाविया (नरक) क्या है ।११।

نَارٌ حَامِيَةٌ ۝

यह एक धधकती हुई आग है ।१२। (रुकू १/२६)
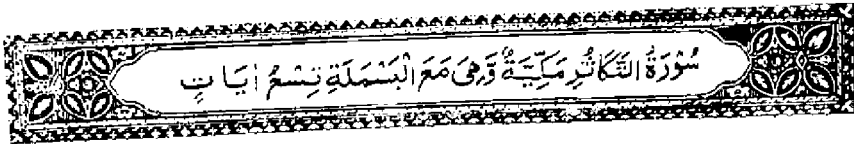
सूरः अल्-तकासुर

[यह सूरः मक्की है और बिसमिल्लाह सहित इस की नौ आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

1. मूल शब्द 'उम्म' का अर्थ माता है किन्तु हम ने इस का अर्थ ठिकाना किया है। इस का कारण यह है कि पवित्र क़ुर्आन ने माता को भी मानव के ठहरने का स्थान ठहराया है। (देखिए सूरः मोमिनून रुकू 1)।

तुम्हें एक-दूसरे से आगे बढ़ने[1] की इच्छा ने बे-परवाह कर दिया है (और तुम इसी तरह बे-परवाह और ग़ाफ़िल रहोगे) ।२।	اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۝
यहाँ तक कि तुम क़ब्रों में जा पहुँचोगे[2] ।३।	حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝
(ख़ूब याद रखो कि) तुम लोग शीघ्र ही (क़ुर्आन-मजीद की बताई हुई सच्चाई को) जान लोगे ।४।	كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝
फिर-हम कहते हैं कि तुम्हारी हालत वैसी नहीं जैसी तुम समझते हो और) जल्दी ही तुम्हें ज्ञात हो जाएगा (कि वास्तव में तुम्हारी अन्दर की हालत वही है जो क़ुर्आन-मजीद ने वर्णन की है) ।५।	ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝
(वास्तिव में वास्तविकता तुम्हारे विचारों के अनुसार) विल्कुल नहीं है। काश ! तुम असल वास्तविकता को यक़ीनी ज्ञान की सहायता से जान सकते ।६।	كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝
(तव तुम्हें विदित हो जाता है कि) तुम अवश्य ही (इसी संसार में) नरक को देखोगे ।७।	لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝

1. इस आयत में यह संकेत किया गया है कि इन्कार करने वाले लोगों में नेकी तो कोई नहीं थी परन्तु वे छल-कपट द्वारा मुसलमानों से आगे बढ़ने के इच्छुक थे और इस का परिणाम यह निकला था कि वे अपने बनावटी कर्मों को असली कर्म समझ लेते थे और इस तरह धर्म के तत्त्व से बे-परवाह हो जाते थे।

2. अर्थात् मौत तक उन का यही हाल चला जाता था सिवाय कुछ ऐसे लोगों के जिन्हें अल्लाह स्वयं हिदायत दे देता था। स्वयं हिदायत पाने और अल्लाह की दी हुई हिदायत से लाभ उठाने में बहुत बड़ा अन्तर है। स्वयं हासिल की हुई हिदायत को अल्लाह से सम्बन्धित नहीं कर सकते।

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ۝

और फिर इस के बाद तुम उसे विश्वास की आँखों से (आख़िरत में) भी देख लोगे ।८।

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۝

फिर (यह भी याद रखो कि) तुम से उस दिन (हर बड़ी) निअमत के बारे में पूछा जाएगा (कि तुम ने उस का शुक्र किया है या नहीं ।९। (रुकू १/२७)
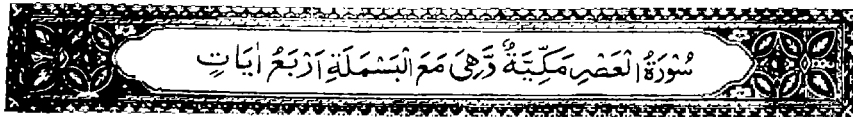
सूरः अल् - अस्र

[यह सूरः मक्की है और बिसमिल्लाह सहित इस की चार आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

وَالْعَصْرِ ۝

मैं (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम) के समय[1] को गवाही के रूप में पेश करता हूँ ।२।

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝

कि निस्सन्देह (रसूलों और पैग़म्बरों का विरोधी) मनुष्य सदा ही घाटे में रहता है ।३।

1. पवित्र क़ुर्आन-मजीद में मूल शब्द 'अल्-अस्र' व्यक्तिवाचक संज्ञा है अल्-अस्र का अर्थ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का समय किया है ।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

परन्तु वे लोग जो (रसूलों पर) ईमान ले आए और फिर उन्हों ने हालात के अनुसार अच्छे कर्म किए और सच्चाई के सिद्धान्तों पर क़ायम रहने का एक-दूसरे को उपदेश दिया और (सामने आने वाली कठिनाइयों पर) धैर्य धारण करने की एक-दूसरे को प्रेरणा देते रहे (ऐसे लोग कभी भी घाटे में नहीं पड़ सकते ।४। (रुकू १/२८)

सूरः अल्-हुमजः

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की दस आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ۝

हर चुगली करने वाले और अवगुण ढूँढ़ने वाले के लिए अज़ाब-ही-अज़ाब है ।२।

الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝

जो धन को इकट्ठा करता है और उस की गिनती करता रहता है ।३।

يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهٗ أَخْلَدَهٗ ۝

वह समझता है कि उस का धन उस के नाम को सदा जीवित रखेगा ।४।

كَلَّا لَيُنۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ	परन्तु ऐसा बिल्कुल नहीं (जैसा उस का विचार है बल्कि वह) निस्सन्देह अपने धन के साथ हुतमः[1] (नरक) में फेंका जाएगा ।५।
وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ	और (हे सम्बोधित !) तुझे क्या पता है कि यह हुतमः क्या चीज़ है ? ।६।
نَارُ اللّٰهِ الْمُوقَدَةُ	यह हुतमः अल्लाह की खूब भड़काई हुई आग है ।७।
الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْـِٕدَةِ	जो दिलों के अन्दर तक जा पहुँचेगी[2] ।८।
إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ	फिर वह (आग) चारों ओर से बन्द कर दी जाएगी ताकि उस का ताप उन को और भी अधिक कष्ट-दायक प्रतीत हो ।९।
فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ	और वे लोग उस समय[3] ऊँचे स्तम्भों के साथ बंधे हुए होंगे ।१०। (रुकू १/२९)

1. मूल शब्द 'हुतमः' से अभिप्राय नरक है क्योंकि हुतमः का अर्थ होता है जिस को तोड़ा जाए। पवित्र क़ुर्आन-मजीद और हदीसों से ज़ाहिर होता है कि अल्लाह अपने बन्दों पर दया कर के अन्ततः नरक को समाप्त कर देगा। सूरः क़ारिअः में है कि मानव सदा के लिए नरक में नहीं रहेगा, बल्कि जिस तरह माँ के पेट में कुछ समय के लिए रहता है इसी तरह कुछ समय के लिए नरक में रहेगा। फिर नरक से बाहर की खुली वायु अर्थात् स्वर्ग में आ जाएगा। इसी तरह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम ने हदीस में कहा है कि नरक पर एक ऐसा समय आएगा कि उस में कोई प्राणी नहीं होगा और ठंढी वायु उस के द्वारों को खटखटा रही होगी (तफ़सीर मुआलमुत्तन्ज़ील सूर-हूद की आयत फ़अम्मल्लज़ीना शक़ु के नीचे)। इस हदीस से भी क़ुर्आन-मजीद की इस आयत की पुष्टि होती है।

2. अर्थात् मानव के दिल में जो विकार होंगे उन को भी यह आग जला कर भस्म कर देगी।

3. अर्थात् जब अल्लाह का अज़ाब आएगा तो अल्लाह की दयालुता चाहेगी कि उन को नरक से बाहर निकाले, किन्तु उन के पूर्वजों की रीति-रिवाज जिन पर वे चलते थे उन को नरक में रखने के लिए बाध्य करेंगे क्योंकि उन्हीं के कारण उन्हों ने ऐसे बुरे कर्म किए थे जिन के फलस्वरूप वे नरक के कठोर अज़ाब के पात्र बन गए।
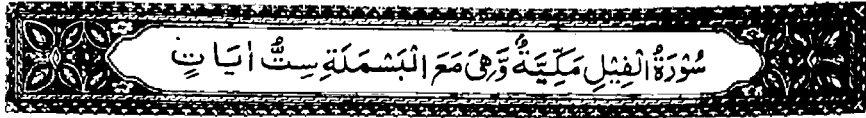
सूरः अल्-फ़ील

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की छः आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ②

(हे मुहम्मद) क्या तुझे पता नहीं कि तेरे रब्ब ने हाथियों का (प्रयोग करने) वालों के साथ कैसा व्यवहार किया[1]।२।

اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ③

क्या (उन को आक्रमण से पहले विनष्ट कर के) उन की योजना को असफल नहीं बना दिया।३।

وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ④

और (उस के बाद) उन के शवों पर झुण्ड-के-झुण्ड पक्षी भेजे।४।

---

1. 'अबरहा' एबेसीनिया की हुकूमत की ओर से यमन का राज्यपाल था और उस ने अल्लाह के घर 'काबा' को गिराने की इसलिए क़सम खाई थी कि किसी अरब व्यक्ति ने गिर्जे में शौचादि कर दिया था। इस आयत में अबरहा की घटना की ओर संकेत है कि उस के आक्रमण के समय उस को क्या क्या दण्ड मिला।

تَرۡمِيۡهِمۡ بِحِجَارَةٍ مِّنۡ سِجِّيۡلٍ ۝
जो उन (के माँस) को पत्थरों[1] पर मारते और (नोचते) थे ।५।

فَجَعَلَهُمۡ كَعَصۡفٍ مَّاۡكُوۡلٍ ۝
अतः इस के फलस्वरूप उस ने उन्हें ऐसे भूसे की तरह कर दिया जिसे पशुओं ने खा[2] लिया हो ।६। (रुकू १/३०)
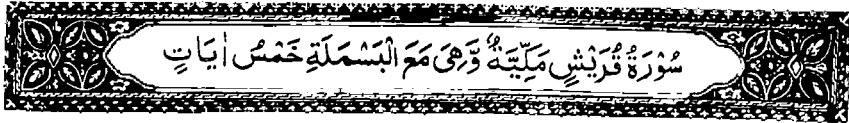
सूर: क़ुरैश

[यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की पाँच आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝
मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

لِاِيۡلٰفِ قُرَيۡشٍ ۝
(दूसरे उद्देश्यों के सिवा) क़ुरैश के दिलों में प्रेम पैदा करने के लिए[3] ।२।

---

1. चील आदि पक्षी जब शवों को खाते हैं तो उन्हें इस तरह खाते हैं कि पहले मुर्दे के माँस का एक टुकड़ा उठा कर ले जाते हैं और उस टुकड़े को पकड़ कर बार-बार पत्थर पर मारते हैं और फिर खाते हैं। पत्थर पर मारने का कारण यह होता होगा कि यदि माँस पर धूल अथवा बालू आदि लग गई हो तो वह हट जाए !

2. अर्थात् जैसे खाया हुआ भूसा किसी काम का नहीं रहता इसी तरह हाथी वाले लोग बिल्कुल नाकारा हो गए।

3. इस आयत में मूल शब्द 'लिईलाफ़' में 'ल' अक्षर यह बताने के लिए प्रयुक्त हुआ है कि इस सूर: का सम्बन्ध पहली सूर: से है, अर्थात् अबरहा के सर्वनाश की घटना इसलिए घटी कि मक्का के लोग सहलपूर्वक इधर-उधर घूम सकें।

إِلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝

अर्थात् उन के दिलों को गर्मी और सर्दी के ऋतुओं की यात्रा से प्रेम पैदा करने के लिए (हम ने अबरहा का सर्वनाश किया)।३।

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝

अतः उन के लिए जरूरी है कि वे क़ुरैश इस घर (अर्थात् काबा) के रब्ब की उपासना करें।४।

الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّ اٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝

जिस ने उन्हें हर प्रकार की भूख (की हालत) में भोजन कराया और (हर प्रकार के) भय की हालत में शान्ति प्रदान की।५। (रुकू १/३१)

سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَمَانِ اٰيَاتٍ

सूरः अल्-माऊन

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की आठ आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝

(हे सम्बोधित !) क्या तू ने उस व्यक्ति को पहचाना जो धर्म को झुठलाता है।२।

فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝

वही तो है जो अनाथ को धुतकारा करता था।३।

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝	और वह दरिद्र, निःसहाय को भोजन कराने के लिए (लोगों को कदापि) प्रेरणा नहीं देता था।४।
فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝	और उन नमाज़ पढ़ने वालों के लिए भी तबाही और विनाश है।५।
الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝	जो अपनी नमाज़ों से असावधान रहते हैं।६।
الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝	और जो लोग केवल दिखावे से काम लेते[1] हैं।७।
وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝	और वे अपने घर के साधारण सामान को भी देने से (अपने-आप को तथा दूसरों को) रोकते रहते[2] हैं।८। (रुकू १/३२)

1. भाव यह है कि उस व्यक्ति का भी नाश होगा जो धर्म को झुठलाता था और अनाथ को धुतकारता था, और निःसहाय को खाना खिलाने की प्रेरणा नहीं दिलाता था और वह भी जो नमाज़ें दिल लगा कर नहीं पढ़ता था, बल्कि दिखावे के लिए पढ़ता था।

2. अर्थात् उस का दिल ऐसा कठोर हो जाता है कि दरिद्र तथा निर्धनों को वह सामान और चीज़ें देने से भी बचता है जो वे कुछ दिनों के लिए माँग कर और फिर लौटा देने के वादे पर लेते हैं और वह दूसरे लोगों को भी कहता है कि निर्धनों को कोई चीज माँगने पर न दिया करो यद्यपि वे निर्धन यह वादा भी करें कि माँग कर ले जाने वाली चीज को लौटा देंगे।
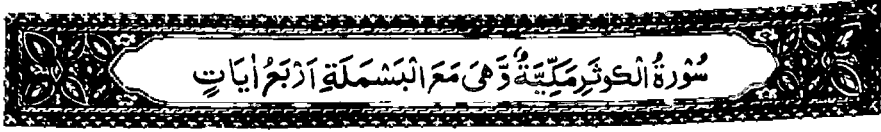
सूरः अल् - कौसर

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित
इस की चार आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ②

(हे नबी !) निस्सन्देह हम ने तुझे कौसर[1] प्रदान किया है।२।

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ③

अतः तू (इस के धन्यवाद में) अपने रब्ब की बहुत ज़्यादा भक्ति कर और उसी के लिए क़ुर्बानियाँ (बलिदान) कर।३।

1. मूल शब्द 'कौसर' का अर्थ हर चीज़ की बहुतात है तथा ऐसे व्यक्ति के लिए भी इस का प्रयोग होता है जो महा दानी हो तथा बहुत दान और पुण्य करने वाला हो जैसा कि हदीसों में हज़रत मसीह के बारे में आता है कि जब वे आएंगे तो वे लोगों को धन देंगे, किन्तु लोग उस धन को स्वीकार नहीं करेंगे। अतः यहाँ आने वाले एक उम्मती का वर्णन है अर्थात् वह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम का आध्यात्मिक रूप में पुत्र होगा। अतः इस सूरः में बताया गया है कि इन्कार करने वाले कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की नर सन्तान न होने के कारण वे अबतर अर्थात् हीन होंगे, किन्तु वे किस तरह अबतर हो सकते हैं जब कि उन की आध्यात्मिक सन्तान में एक ऐसा व्यक्ति ज़ाहिर होने वाला है जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की शिक्षा के भण्डार लुटाएगा यहाँ तक कि लोग उस के दिए हुए धन को लेने से इन्कार कर देंगे और ऐसा धन जिस के लेने से लोग इन्कार करते हैं ज्ञान के ही भण्डार होते हैं अन्यथा ज़ाहिरी और साधारण धन आदि किसी के पास करोड़ों पौंड भी हों और उसे एक पौंड भी दिया जाए तो वह उसे तुरन्त स्वीकार कर लेता है।

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ④ ع ٣٣

और विश्वास रख कि तेरा विरोधी ही नर सन्तान से वञ्चित[1] होगा ।४। (रुकू १/३३)

1. अर्थात् तेरा शत्रु आध्यात्मिक सन्तान से वञ्चित है और क़ुर्आन-मजीद से सिद्ध है कि आध्यात्मिक सन्तान मिलने से मनुष्य उस गिरोह में शामिल होता है जिन से अल्लाह कलाम करता है और जिन्हें इल्हाम और वह्य होती है। ऐसी आध्यातिमक सन्तान केवल हज़रत मुहम्मद-मुस्तफ़ा सल्लअम को मिलेगी। आप के शत्रुओं को नहीं मिलेगी। जैसा कि सूर: अह्ज़ाब आयत 41 में अल्लाह ने कहा है। इस आयत में संकेत है कि इन्कार करने वालों की सन्तान अल्लाह की कृपा से वञ्चित रहेगी, इसलिए उन की सन्तान नर सन्तान नहीं कहला सकेगी सिवाय इस के कि यह इन्कार करने वाले लोग हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर ईमान ले आएँ जैसे अबू-जह्ल का पुत्र इक्रमा और अबू-सुफ़ियान का पुत्र मुआविय: हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम पर ईमान ले आए।
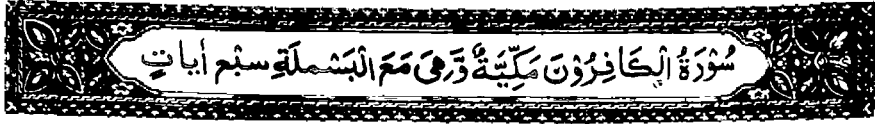
सूरः अल्-काफ़िरून

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की सात आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ②

(हम हर समय के मुसलमान से कहते हैं कि (तू (अपने समय के इन्कार करने वालों से) कहता चला जा कि सुनो! हे इन्कार करने वालो।२।

لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ③

मैं तुम्हारे ढंग के अनुसार भक्ति नहीं करता।३।

وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ④

और न तुम मेरे ढंग के अनुसार भक्ति करते हो।४।

وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ⑤

और न मैं उन की उपासना करता हूँ जिन की तुम उपासना करते चले आए हो।५।

وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ⑥

और न तुम उस की उपासना करते हो जिस की मैं उपासना कर रहा हूँ।६।

لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ⑦ ع

(उक्त घोषणा से यह परिणाम निकलता है कि) तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिए (काम करने का एक ढंग नियत करता) है और मेरा धर्म मेरे लिए (दूसरा ढंग काम करने का निश्चित करता है)।७। (रुकू १/३४)

सूरः अल्-नस्र

[यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की चार आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝١

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝٢

जब अल्लाह की सहायता और पूर्ण विजय आ जाएगी ।२।

وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝٣

और तू यह देख लेगा कि अल्लाह के धर्म में लोग दलों-के-दल दाख़िल होंगे ।३।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝٤
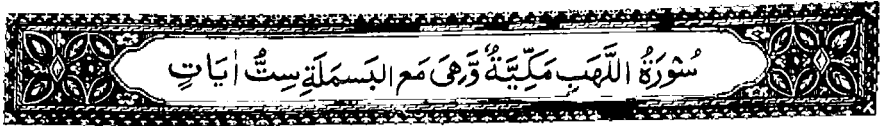
उस समय तू अपने रब्ब की स्तुति के साथ-साथ उस की पवित्रता का यशोगान करने में लगा रहियो और (मुसलमानों की शिक्षा-दीक्षा में जो त्रुटियाँ हुई हों उन पर) उस ख़ुदा से पर्दा डालने की प्रार्थना कीजियो। निस्सन्देह वह अपने बन्दे की ओर रहमत और दयालुता के साथ लौट-लौट कर आने वाला है ।४। (रुकू १/३५)

सूरः अल्-लहब

[यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इस की छः आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

تَبَّتْ يَدَآ اَبِیْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ②

अबू-लहब[1] (आग की लपट के पिता) के दोनों हाथ सुन्न हो गए और वह स्वयं भी सुन्न हो कर रह गया है।२।

مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ③

उस के धन ने उसे कोई लाभ[2] नहीं दिया और न उस की कोशिशों[3] ने (कोई लाभ) दिया है।३।

---

1. इस में या तो अबू-लहब के रंग की ओर संकेत है जो बहुत सफ़ेद था या उस के स्वभाव की ओर संकेत है जो बहुत ही क्रोधी था या इस्लाम के हर शत्रु की ओर उस की भीतरी हालत को देखते हुए संकेत है या अमेरिका और रूस की ओर संकेत है कि इन दोनों ने अपने दो-दो सहायक बना रखे हैं ताकि युद्ध के समय काम आएँ। हाथ का अर्थ सहायक भी हो सकता है क्योंकि हाथ से भी सहायता अथवा प्रतिरक्षा की जा सकती है। अल्लाह कहता है कि चूँकि यह दोनो दल भूल में होंगे। एक दल त्रिमूर्ति उपासक होगा और दूसरा नास्तिक। अतः हम ने इन दोनों दलों के दोनों हाथों को सुन्न कर दिया है अर्थात् इन के जो बड़े-बड़े साथी हैं उन के सर्वनाश के सामान पैदा कर दिए हैं और इसी तरह इन दोनों दलों के भी सर्वनाश के सामान तय्यार कर दिए हैं।

2. अर्थात् वे धनवान होंगे, किन्तु उन का धन उन को कोई लाभ नहीं देगा।

3. उन्हें महान वैज्ञानिक साधन उपलब्ध होंगे किन्तु वह भी उन्हें कोई लाभ नहीं देंगे।

سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝

वह अवश्य आग[1] में पड़ेगा जो लपटों वाली होगी।४।

وَّامْرَاَتُهٗ ۭ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝

और उस की पत्नी भी जो ईंधन उठा-उठा कर लाती है (आग में पड़ेगी)।५।

فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝

उस की (पत्नी की) गर्दन में खजूर का बटा हुआ सख़्त[3] रस्सा बाँधा जाएगा !।६। (रुकू १/३६)

1. अर्थात् वे अन्ततः अवश्य ही लौकिक या पारलौकिक अज़ाब में पड़ेंगे। वह वैसी ही लपटों वाली आग होगी जैसा उन का दिल इस्लाम के विरुद्ध ईर्ष्या-द्वेष से भड़क रहा है।

2. पत्नी से अभिप्राय अधीन लोग हैं अर्थात् देश की जनता और अभिप्राय यह है कि वे जो मित्र विदेशों में बनाएँगे उन का भी सर्वनाश होगा तथा उन का धन और उन के दूसरे साधन विनष्ट हो जाएंगे और उन की जनता का भी विनाश हो जाएगा। इस का कारण यह है कि जनता भी भड़काई हुई आग में ईंधन डालती जाती थी तथा उन को आवेश दिलाती जाती थी।

3. चूँकि यह प्रजातन्त्रात्मक राज्य होंगे। अतः जनता और उपासकों का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध होगा जिसे तोड़ा नहीं जा सकता। इसलिए यहाँ खजूर के रस्से का उल्लेख किया है क्योंकि वह टूटता नहीं और यह बताया गया है कि उन शासकों की जनता उन्हें उत्तेजित करती रहेगी कि युद्ध करने के लिए और सामान पैदा करो जिस की ओर ईंधन उठा-उठा कर लाने में संकेत किया गया है।

सूर: अल्-इख़लास

[यह सूर: मक्की है और बिसमिल्लाह सहित इस की पाँच आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ②

(हम हर युग के मुसलमान को आदेश देते हैं कि) तू (दूसरे लोगों से) कहता[1] चला जा कि (वास्तविक) बात यह है कि अल्लाह अपनी सत्ता में अकेला[2] है।२।

---

1. मूल शब्द 'क़ुल' (कह दे) अन्तिम तीन सूरतों से पहले प्रयुक्त किया गया है। इस में यह संकेत है कि हमारा यह सन्देश आगे और लोगों को पहुँचा दो। अब यह ज़रूरी बात है कि जब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम अल्लाह का सन्देश लोगों तक पहुँचा देंगे तो उस के बाद भी लोग 'क़ुल' शब्द का पाठ करते रहेंगे इसलिए उन का भी कर्त्तव्य हो जाएगा कि वे इस सन्देश को दूसरे लोगो तक पहुँचाएँ। अत: 'क़ुल' कह कर इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि तुम हमारी इस शिक्षा को अपने-आप तक ही सीमित न रखो बल्कि उसे दूसरों तक पहुँचाओ, फिर तुम से सुनने वाले लोग दूसरे लोगों को सुनाएँ यहां तक कि सारे संसार में अल्लाह का सन्देश पहुँच जाए।

2. मूल शब्द 'अहद' का अर्थ है 'अकेला' अरबी भाषा में 'एक' शब्द को वर्णन करने के लिए दो शब्दों का प्रयोग किया जाता है 'वाहिद' और 'अहद'। 'वाहिद' का अर्थ होता है एक किन्तु इस के बोलने से दूसरे की ओर ध्यान जाता है और कहने वाला समझता है कि एक के बाद दो है, दो के बाद तीन है। अत: यह शब्द एक का अर्थ तो बताता है किन्तु एक से अधिक की सम्भावना को रद्द नहीं करता। इस के विपरीत 'अहद' का अर्थ है अकेला। अकेले के बाद दोकेला नहीं कहते। अत: इस शब्द का अर्थ

(शेष पृष्ठ १४२३ पर)

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝

अल्लाह् वह (सत्ता) है जिस के सब मुहताज[1] हैं (और वह स्वयं किसी का मुहताज नहीं) ।३।

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝

न उस ने किसी को जना तथा न वह जना गया[2] है ।४।

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

और उस के गुणों में कोई भी उस का साझी नहीं[3] ।५। (रुकू १/३७)

(पृष्ठ १४२२ का शेष)

यह होता है कि इस सत्ता के साथ ऐसी ही किसी दूसरी सत्ता के होने की सम्भावना ही नहीं। इस सूर: में अल्लाह के पूर्ण एकेश्वरवाद का वर्णन है और इस शब्द को ला कर अल्लाह ने अपनी कामिल तौहीद (अर्थात् पूर्ण एकेश्वरवाद की) घोषणा कर दी है।

1. मूल शब्द 'समद' का अर्थ है 'बेनिआज़' अर्थात् जो किसी का मुहताज न हो किन्तु उस के सारे ही मुहताज हों अर्थात् कोई ऐसा नहीं जो उसकी सहायता के बिना क़ायम रह सके। इस शब्द में भी कामिल तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद को पूर्ण रूप से स्पष्ट किया गया है और बताया है कि इस संसार में जो भी चीज़ें पाई जाती हैं वह उस अल्लाह के बिना गुज़ारा नहीं कर सकतीं। हाँ अल्लाह को इन चीजों की सहायता की कोई आवश्यकता नहीं।

'समद' का अर्थ सदा क़ायम रहने वाले के भी हैं और बड़ा महिमाशाली के भी हैं। यह दोनों अर्थ भी कामिल तौहीद को सिद्ध करते हैं। जो सदा क़ायम रहेगा उस का कोई मुक़ाबिला नहीं कर सकता और जो महिमा और गौरव में इतना बढ़ जाएगा कि कोई दूसरी चीज़ उस तक नहीं पहुंच सकती सो इस का भी यही भाव है कि वह अकेला है।

2. यह आयत भी कामिल तौहीद, अर्थात् पूर्ण एकेश्वरवाद का प्रमाण है, क्योंकि जिस ने किसी को जन्म न दिया हो वह या तो बाँझ होता है या फिर ऐसी सत्ताओं में से होता है जो परिवर्तनशील नहीं होतीं जैसे पर्वत तथा नदियाँ आदि। किन्तु ख़ुदा के बारे में कहा गया है कि वह बड़ी शान वाला है इसलिए पर्वतों तथा नदियों को उस से कोई सम्बन्ध नहीं और 'न वह जना गया है' के शब्द भी कामिल तौहीद को सिद्ध करते हैं क्योंकि अल्लाह के सिवा कोई सत्ता इस लोक में ऐसी दिखाई नहीं देती जिस को किसी ने जन्म न दिया हो।

3. पहले अल्लाह की ज़ाती तौहीद (व्यक्तिगत एकेश्वरवाद) का वर्णन किया था। अब सिफ़ाती

(शेष पृष्ठ १४२४ पर)

सूर: अल्-फ़लक़

[यह सूर: मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इस की छः आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह् का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।१।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ②

(हम हर युग के मुसलमान से कहते हैं कि) तू (दूसरे लोगों से) कहता चला जा कि मैं सारी मख़्लूक़ के रब्ब से उस की शरण माँगता हूँ ।२।

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ③

उस की हर मख़्लूक़ की (व्यक्त और अव्यक्त) बुराई से (बचने के लिए) ।३।

(पृष्ठ १४२३ का शेष)

तौहीद अर्थात् अल्लाह के गुणों के उपलक्ष्य एकेश्वरवाद के विषय को वर्णन किया है ।

यह बात याद रखनी चाहिए कि गुणों में साझी होने का यह अर्थ नहीं कि उस के गुणों से मिलती-जुलती कोई बात मनुष्य से नहीं हो सकती। मनुष्य भी देखने वाला और सुनने वाला है और अल्लाह भी देखने वाला और सुनने वाला है। अतः ज़ाहिर में तो यह एक समान प्रतीत होता है, परन्तु अल्लाह देखने वाला है और वह बिना आँखों के देखता है। वह सुनने वाला है किन्तु बिना कानों के सुनता है वह बिना किसी यन्त्र के देखने वाला और सुनने वाला है। अतः मनुष्य भी देखता है और सुनता है किन्तु वह उस के गुणों में साझी नहीं हो सकता।

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ④

और अन्धकार[1] करने वाले की हर शरारत से बचने के लिए जब कि वह अंधेरा कर देता है।४।

وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ⑤

और समस्त ऐसे प्राणियों की शरारत[2] से बचे रहने के लिए भी जो आपस के सम्बन्धों की गाँठ में (आपसी सम्बन्ध तोड़वाने के विचार से) फूँके मारते हैं।५।

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ⑥

और प्रत्येक ईर्ष्या करने वाले[3] की शरारत से भी जब वह ईर्ष्या करने पर तुल जाता है।६। (रुकू १/३८)

---

1. मूल शब्द 'ग़ासिक़' का अर्थ अरबी भाषा में चाँद भी होता है और 'ग़सक़' का अर्थ है जब अन्धेरा कर दे, और चाँद तभी अन्धेरा करता है जब उसे ग्रहण लगे। अत: इस आयत में बताया गया है कि हे अल्लाह ! तू हम को उस युग की बुराइयों से बचा जिस युग में चन्द्रमा को ग्रहण लगेंगे यह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लअम की उस हदीस की ओर संकेत है कि हमारे इमाम महदी के लिए दो चिन्ह नियुक्त है कि उस के समय में सूर्य और चन्द्रमा को ग्रहण लगेगा। (दार-क़ुतनी)

अत: इस आयत में इमाम महदी के समय की ओर संकेत किया गया है और मुसलमानों को प्रार्थना करने की प्रेरणा दी गई है कि हे ख़ुदा ! हमें इस बात से बचाए रखियो कि हम इमाम महदी का इन्कार कर दें।

2. अर्थात् ऐसा कर कि जो लोग हमें इमाम महदी से दूर रखें हम उन के छल-कपट में न आएं।

3. इस में यह संकेत पाया जाता है कि इमाम महदी द्वारा इस्लाम को बहुत जल्दी प्रगति मिलेगी और इमाम महदी के विरोधी उस से इर्ष्या-द्वेष रखेंगे। अत: उस समय के मुसलमान को प्रार्थना सिखाई गई है कि प्रत्येक ऐसे ईर्ष्या करने वाले से हमें बचाए।

सूरः अल्-नास

[यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह् सहित इस की सात आयतें एवं एक रुकू है।]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

मैं अल्लाह् का नाम ले कर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है।१।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ②

(हम हर युग के मुसलमान से कहते हैं कि) तू (दूसरे लोगों को) कहता चला जा कि मैं समस्त मानव प्राणी के रब्ब से (उस की) शरण माँगता हूँ।२।

مَلِكِ النَّاسِ ③

वह रब्ब जो समस्त मानव-समाज का सम्राट[1] भी है।३।

اِلٰهِ النَّاسِ ④

और समस्त मानव-जाति का उपास्य[2] भी है।४।

---

1. इस आयत में इस ओर संकेत किया गया है कि अन्तिम युग में कई सम्राट इस्लाम का विरोध करने के लिए खड़े हो जाएँगे। अत: मुसलमानों को सिखाया गया है कि वे प्रार्थना करें कि हमारा वास्तविक सम्राट (अर्थात् अल्लाह् हमें सांसारिक सम्राटों कि शरारत से बचाए रखे।

2. इस आयत में बताया गया है कि हमारा वास्तविक सम्राट अर्थात् अल्लाह् समस्त संसार का उपास्य भी है, यद्यपि लोग उस के मुक़ाबिले में झूठे उपास्य प्रस्तुत करते हैं किन्तु मैं अपने वास्तविक उपास्य से यह प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे झूठे उपास्यों की शरारत से बचाए रखे।

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۵ الْخَنَّاسِ ۝	मैं उस की शरण माँगता हूँ हर-एक भ्रम डालने वाले की शरारत[1] से जो (हर प्रकार के भ्रम डाल कर) पीछे हट जाता है ।५।
الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝	और जो मानव-जाति के दिलों में शंकाएँ पैदा कर देता है ।६।
مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝	चाहे वह (उपद्रवकारी) छिपी[2] रहने वाली सत्ताओं में से हो और चाहे साधारण मनुष्यों में से हो ।७। (रुकू १/३९)

1. इस आयत में बताया गया है कि अन्तिम युग में जब कि झूठे राजाओं तथा झूठे उपास्यों का ज़ोर होगा तो ऐसे लोग भी पैदा हो जाएँगे जो दिलों में शंकाएँ डालने वाले होंगे जैसे प्रोफैसर आदि। अतः अल्लाह से यह भी प्रार्थना करते रहो कि ऐसे दार्शनिकों की शरारत से भी वह मुसलमानों की रक्षा करता रहे। तत्पश्चात् ऐसे दार्शनिकों के काम का ढंग बताया है कि वे लोगों के दिलों में शंकाएँ पैदा करते हैं तथा स्वयं पीछे हट जाते हैं अर्थात् ऐसी पुस्तकें लिखते हैं जिन से धर्म के ख़िलाफ़ शंकाएँ तो पैदा हो जाती हैं, किन्तु साधारण दृष्टि से वे पुस्तकें धर्म के ख़िलाफ़ दिखाई नहीं देतीं।

2. इस स्थान पर मूल शब्द 'जिन्न' छिपे रहने वालों के लिए प्रयोग हुआ है तथा 'अन्नास' शब्द साधारण मनुष्यों के लिए। अभिप्राय यह है कि यह शंकाएं ढालने वाले कभी तो विदेशी होंगे जो दिखाई नहीं देंगे और कभी साधारण जनता में से होंगे जो अपनी ज़ोर की आवाज़ों से मोमिनों के दिलों में शंकाएं पैदा करेंगे।

دُعَاءُ خَتْمِ الْقُرْاٰنِ

क़ुर्आन समाप्ति पर प्रार्थना

اَللّٰهُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِیْ فِیْ قَبْرِیْ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِیْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِیْمِ وَاجْعَلْهُ لِیْ اِمَامًا وَّ نُوْرًا
وَّ هُدًی وَّ رَحْمَةً اَللّٰهُمَّ ذَکِّرْنِیْ مِنْهُ مَا نَسِیْتُ وَ عَلِّمْنِیْ مِنْهُ مَا جَهِلْتُ
وَارْزُقْنِیْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ الَّیْلِ وَاٰنَآءَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِیْ حُجَّةً یَّا رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ

हे अल्लाह ! मेरी क़ब्र में मेरी घबराहट को दूर कर। हे मेरे अल्लाह ! मुझ पर पवित्र क़ुर्आन की बरकत से दया कर और उसे मेरे लिए इमाम, (अर्थात् पथ-प्रदर्शक) प्रकाश, हिदायत और रहमत बना। हे अल्लाह ! जो कुछ मैं क़ुर्आन-मजीद से भूल चुका हूँ वह मुझे याद दिला दे तथा जो मुझे नहीं आता वह मुझे सिखा दे और दिन-रात मुझे इसका पाठ करने का सामर्थ्य प्रदान कर और हे सब जहानों के रब्ब ! इसे मेरे भले के लिए प्रमाण के रूप में बना दे।

★ संशोधन-तालिका ★

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
झ	3	मानव प्राणी के	मानव प्राणी का
झ	4	मानव जाति के	मानव जाति का
झ	9	बोले जाने वाली	बोली जाने वाली
झ	22	भारत	भारत की
झ	23	नैपाली जैसे	नैपाली जैसी
ञ	3	तफ़सीर सग़ीर का	तफ़सीर सग़ीर को
ठ	3	निर्बलता	दुर्बलता
ठ	5	सहृदय	हार्दिक
ण	15	अभीष्ट	अभिप्राय
न	25	आध्यात्मिक दृष्टिकोण	आध्यात्मिक दृष्टि
थ	34	संरक्षक	संरक्षण
द	24	विद्यामान	विद्यमान
5	14	'आलमो'	'अना'
6	25	वातस्व	वास्तव
8	5	उन मोमिन लोगों से	(उन मोमिनों से)
8	8	उनके अहंकार	उनकी अद्दण्डताओं
8	22	'शैतान'	'शयातीन'
10	4	जीविका	आजीविका
12	9	(फिर एक दिन----	फिर (एक दिन----
12	21	हर बात की वास्तविकता और हक़ीक़त को	हर बात (की वास्तविकता और हक़ीक़त) को
14	17	(अधिनायक)	(उत्तराधिकारी)
17	5	हमने उन्हें कहा कि निकल जाओ।	हमने उन्हें कहा कि (यहाँ से) निकल जाओ।
17	11	रब्ब से प्रार्थना की कुछ बातें सीखीं।	रब्ब से प्रार्थना सम्बन्धी कुछ बातें सीखीं।
23	15	पीयो	पियो
24	1	उनहें	उन्हें

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
26	22	उपमेय	उपमान
27	28	1. इस से अभीष्ट हज़रत मसीह की फाँसी वाली घटना है ।	1. यहाँ हज़रत मसीह की फाँसी वाली घटना अभीष्ट है ।
28	8	तुम्हारे दिल सख़्त उन गए	तुम्हारे दिल सख़्त हो गए ।
28	15	कछ	कुछ
32	17	रुहुलक़ुदुस	रूहुलक़ुदुस
36	20	अनुसरण करते हैं	अनुसरण करते थे
41	22	उचित न था कि (मस्जिदों)	उचित न था कि उन (मस्जिदों)
42	22	तुम्हें	तुझे
50	13	नियुक्त	नियत
52	21	बैतुलमक़दस	बैतुलमुक़द्दस
55	3	तुम	तू
56	2	सुसस्जित	सुसज्जित
62	15	ढरों ढेर	ढेरों ढेर
72	2	तो (गुज़रे ज़माने में) पूर्वजों को	तो (गुज़रे ज़माने में) अपने पूर्वजों को
73	2	यह वादा	(यह वादा)
73	10	(श्रद्धा) पर	(श्रद्धा) से
73	20	(की पच्च) पाप करने के लिए उकसाती है ।	(का अभिमान) पाप करने के लिए उकसाता है ।
81	12	पहचान की	(पहचान की)
81	18	आवश्यकता वालों	ज़रूरतमन्दों
89	5	रीति-रिवाज़	मर्यादा
91	1	कोई प्रतिज्ञा न करो	कोई समझौता न कर लो
100	15	धरती उथल पुथल हो जाती	धरती पर उथल-पुथल हो जाता
130	7	सज़द	सजदा
130	12	(शुकनार्थ)	(शकुनार्थ)
133	29	प्रतिष्ठता	प्रतिष्ठा
134	12,13	हाल हाल	स्थिति स्थिति
135	15	प्रतिद्वन्दियों	प्रतिद्वन्द्वियों
139	6	किए गए अपने	की गई अपनी
144	6	वे	वह
145	12	डोरी	रस्सी
148	3	और जो नेकी करे उसका अपमान नहीं किया जाएगा ।	और जो नेकी भी वे करें उसको तुच्छ नहीं समझा जाएगा
148	20	नष्ट भ्रष्ट	नष्ट

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
149	28	नष्ट-भ्रष्ट	ध्वस्त
154	14	धन्यवाद करन वालों	धन्यवाद करने वालों
155	2	निर्बलता ही दिखाई	हीनता ही प्रकट की
170	15	निकट सम्न्नन्धियों	निकटवर्ती सम्बन्धियों
175	25	मारूफ़ (विशेष अरुचिकर)	प्रसिद्ध अरुचिकर
175	30	परस्पर भिन्न हैं	भिन्न-भिन्न हैं
176	1	अश्लील	अरुचिकर
192	25	प्रमाणक	प्रामाणिक
210	13	वृद्धि धनवान	ऐश्वर्य सम्पन्न
211	20,21	तो (प्रत्येक दशा में) अल्लाह उन दोनों से (तुम) सबसे बढ़कर भलाई करनेवाला है।	तो (दोनों अवस्थाओं में) अल्लाह उन दोनों को (तुम से) अधिक हितैषी है।
215	15	करगे	करें गे
217	1	उनके	उनकी
218	2	आशंका	सन्देह
232	28	अनुशासक	बादशाह
237	23	अनुदेश अनुशासकों	काम सरकार
241	1	उनका कर्त्तव्य ठहराया	उनके लिए निश्चित किया
241	12	इन्कार	अत्याचार
247	5	मी	भी
258	19,20,25	चारागाह	चरागाह
261	25	प्रतिशिक्षण	प्रशिक्षण
263	21,23	जीविका	आजीविका
282	21	हँसी-खेल	मनोविनोद और खेल कूद
293	20	शेभायमान	सुन्दर
311	21,24	बोझ	तौल
312	1	हमने तुम्हें पृथ्वी में	हमने अवश्यमेव तुम्हें पृथ्वी में
321	4	उस समय वे तो हम से गुम हो गए	उस समय यह लोग उत्तर देंगे कि वे तो हम से गुम हो गए
335	24	शुऐय	शुऐब
345	25	बस्त्राउन	बलाउन
357	4	बदल	बदले
358	9.10	इन्सानों को रहमत के लिए पैदा किया	इन्सानों को (रहमत के लिए) पैदा किया।
375	24	जागरणावस्था	जागृतावस्था

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
384	9	उत्तम	प्रतिष्ठित
423	17	मैं	में
425	17	उज्जवल	उज्ज्वल
431	4	होंगे	होंगे
440	20	यही वह सफलता है जो बड़ी शान वाली है।	यही (वह सफलता है जो बड़ी शान वाली और) महान् सफलता (कहला सकती) है।
448	10	आ चुका ह, व	आ चुका है, वे
454	25	टिप्पणी आयत न० 11	टिप्पणी आयत नं० 99
480	13	हिचकी जैसी साँस रही होंगी	हिचकी जैसी साँसें निकल रही होंगी।
501	24	और	ओर
501	28	ओर	और
519	ऊपर	अल्-राद 12	अल्-राद 13
565	11	अवश्य	आवश्यक
591	17	ओर	और
647	3	निन्नावे	निन्नानवे
649	23	यह	यही
662	22	हाँपते	हाँकते
675	27	अर्न्तआत्मा	अन्तरात्मा
694	24	ग्रसिब	ग्रस्त
704	16	पर्वत-निवासियों-को भी लगा दिया था।	पर्वत-निवासियों को भी और पक्षियों को भी काम पर लगा दिया था।
709	9	युग-युगान्तर	युगों
710	17	ससार	संसार
713	8	तुम्हें	तुम
723	1	झूठलाते हैं	झुठलाते हैं
723	4	लुत	लूत
758	18	नक्षज्ञ	नक्षत्र
851	20	जा	जो
855	24	इस्राइलियों	इस्राईलियों
856	9	प्रयत्न कर	प्रयत्न न कर
867	23	मृदुहृदयी	मृदुलहृदयी
898	30	अल्ल:ह	अल्लाह
916	17	श्रृगार	श्रृङ्गार

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
921	12	कि	की
936	17	सन्देह हैं	सन्देह है
937	1	सत्यता	सहायता
939	ऊपर	सबा ३३	सबा ३४
942	,,		सबा ३४
950	12	जानकर	जानकार
953	14	हैं	है
964	16	आगे बढ़ कर (सूर्य को) पकड़ ले,	आगे बढ़ कर दिन को (अर्थात् सूर्य को) पकड़ ले,
972	3	तिणसी	तिरासी
988	5	डुबने	डूबने
996	7	झूकने	झुकने
1001	5	डूबकी	डुबकी
1006	27	मुद्रालय	मुद्रणालय
1019	22	हैं	है
1021	19	अल्लाह पापों को	अल्लाह समस्त पापों को
1037	18	एक सामर्थ्य सम्पन्न (और) क्षमा करने वाली सत्ता	एक सामर्थ्यवान (और) क्षमाशील सत्ता
1044	17	झूट	झूठ
1054	9	स	से
1199	18	भोतियों	मोतियों
1203	10	बोलते	बोते
1204	4	धन्वाद	धन्यवाद
1206	10	सकते	सके
1223	4	(पढ़ता हूँ (जो	(पढ़ता हूँ) जो
1233	1	सें	में
1274	ऊपर	अल्-क़लम ६९	अल्-क़लम ६८
1292	ऊपर	नूह—७२	नूह ७१
1293	ऊपर	नूह—७२	नूह ७१
1294	,,	अल्-जिन्न ७३	अल्-जिन्न ७२
1297	17	और	(और
1319	3	इकावन	इक्यावन'
1319	7	में गवाही के रूप में	मैं गवाही के रूप में
1326	15	उनके आस्थाओं	उनकी आस्थाओं
1326	17	उनके आस्थाओं	उनकी आस्थाओं

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
1326	17	अनुशासन	शासन
1333	10	(यदि ऐसा हुआ	(यदि ऐसा हुआ)
1339	3	निस्सन्देह	निस्सन्देह)
1341	9-10	ऐसी कालिख लग जाए गी (जो ऐसे समय लग जाया करती है)	ऐसी कालिमा भी छाई होगी (जो ऐसे समय में छाया करती है)
1342	1	सुर्य	सूर्य
1342	13	सुगुण	सद्गुण
1346	अन्तिम	पूरे	पूरा
1347	13	नास्तिकता इतने फैल जाएँ गे	नास्तिकता इतनी फैल जाए गी।
1353	16	किया करते ने	किया करते थे,
1382	12	कुर्कमों	कुकर्मों
1383	10	सूमद	समूद
1391	ऊपर	अल्-तीन ९४	अल्-तीन ९५
1392	,,	,, ९४	,, ९५
1393	,,	,, ९४	,, ९५
1394	,,	अल्-अलक़ ९५	अल्-अलक़ ९६
1395	,,	,, ९५	,, ९६
1396	,,	,, ९५	,, ९६
1397	,,	अल्-क़द्र ९६	अल्-क़द्र ९७
1398	,,	,, ९६	,, ९७
1408	13	वास्तिव	वास्तव
1409	8	अल-अस	अल्-अस्र
1425	21	इर्ष्या-द्वेष	ईर्ष्या-द्वेष
1426	17	सम्राटों कि शरारत	सम्राटों की शरारत
1427	16	शंकाएँ ढालने वाले	शंकाएँ डालने वाले
1428	10	इसका पाठ करने का सामर्थ्य प्रदान कर	इसकी तिलावत (पाठ करने) की तौफ़ीक़ (शक्ति) प्रदान कर